

تفسير معاني

القرآن الكريم

باللغة البنغالية

বাংলা তাফসীর

কুর'আনুল কারীম

অনুবাদঃ

প্রফেসর ডঃ মুহাম্মদ মুজীবুর রহমান



দারুসসালাম

রিয়াদ • জেদ্দা • আল-বোবায় • শায়জাহ
ঢাকা • লাহোর • লন্ডন • হিউস্টন • নিউ ইয়র্ক



ALL RIGHTS RESERVED © جميع حقوق الطبع محفوظة

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording or by any information storage and retrieval system, without the written permission of the publisher.

3rd Edition: January 2007

HEAD OFFICE

P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A. Tel: 0096 -1-4033962/4043432 Fax: 4021659
E-mail: riyyadh@dar-us-salam.com, darussalam@awalnet.net.sa Website: www.dar-us-salam.com

K.S.A. Darussalam Showrooms:

Riyadh

Olaya branch: Tel 00966-1-4614483 Fax: 4644945

Malaz branch: Tel 00966-1-4735220 Fax: 4735221

- **Jeddah**
Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270
- **Madinah**
Tel: 00966-503417155 Fax: 04-8151121
- **Al-Khobar**
Tel: 00966-3-8692900 Fax: 8691551
- **Khamis Mushayt**
Tel & Fax: 00966-072207055

U.A.E

- **Darussalam, Sharjah U.A.E**
Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624
Sharjah@dar-us-salam.com.

PAKISTAN

- **Darussalam, 36 B Lower Mall, Lahore**
Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072
- **Rahman Market, Ghazni Street, Urdu Bazar Lahore**
Tel: 0092-42-7120054 Fax: 7320703
- **Karachi, Tel: 0092-21-4393936 Fax: 4393937**
- **Islamabad, Tel: 0092-51-2500237**

U.S.A

- **Darussalam, Houston**
P.O Box: 79194 Tx 77279
Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431
E-mail: houston@dar-us-salam.com
- **Darussalam, New York** 486 Atlantic Ave, Brooklyn
New York-11217, Tel: 001-718-625 5925
Fax: 718-625 1511
E-mail: darussalamny@hotmail.com

U.K

- **Darussalam International Publications Ltd.**
Leyton Business Centre
Unit-17, Etlow Road, Leyton, London, E10 7BT
Tel: 0044 20 8539 4885 Fax: 0044 20 8539 4889
Website: www.darussalam.com
Email: info@darussalam.com
- **Darussalam International Publications Limited**
Regents Park Mosque, 146 Park Road
London NW8 7RG Tel: 0044- 207 725 2246

AUSTRALIA

- **Darussalam:** 153, Lakemba St, Lakemba (Sydney)
NSW 2195, Australia
Tel: 0061-2-97407188 Fax: 0061-2-97407199
Mobile: 0061-414580813 Res: 0061-2-97580190
Email: abumuaaz@hotmail.com

CANADA

- **Islamic Books Service**
2200 South Sheridan way Mississauga,
Ontario Canada L5K 2C8
Tel: 001-905-403-8406 Ext. 218 Fax: 905-8409

HONG KONG

- **Peacetech**
A2, 4/F Tsim Sha Mansion
83-87 Nathan Road Tsimbatsui
Kowloon, Hong Kong
Tel: 00852 2369 2722 Fax: 00852-23692944
Mobile: 00852 97123624

MALAYSIA

- **Darussalam International Publication Ltd.**
No.109A, Jalan SS 21/1A, Damansara Utama,
47400, Petaling Jaya, Selangor, Darul Ehsan, Malaysia
Tel: 00603 7710 9750 Fax: 7710 0749
E-mail: darussalam@streamyx.com

FRANCE

- **Editions & Librairie Essalam**
135, Bd de Ménilmontant- 75011 Paris
Tél: 0033-01- 43 38 19 56/ 44 83
Fax: 0033-01-43 57 44 31 E-mail: essalam@essalam.com.

SINGAPORE

- **Muslim Converts Association of Singapore**
32 Onan Road The Galaxy
Singapore- 424484
Tel: 0065-440 6924, 348 8344 Fax: 440 6724

SRI LANKA

- **Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4**
Tel: 0094 115 358712 Fax: 115-358713

INDIA

- **Islamic Dimensions**
56/58 Tandel Street (North)
Dongri, Mumbai 4000 009, India
Tel: 0091-22-3736875, Fax: 3730689
E-mail: sales@irf.net

SOUTH AFRICA

- **Islamic Da'wah Movement (IDM)**
48009 Qualbert 4078 Durban, South Africa
Tel: 0027-31-304-6883 Fax: 0027-31-305-1292
E-mail: idm@ion.co.za

تفسير معاني
القرآن الكريم
باللغة البنغالية

ترجمه

الدكتور / محمد مجيب الرحمن

إيست ميدو - نيويورك بأمریکا

الأستاذ ورئيس قسم اللغة العربية والتعليم الإسلامي

بجامعة راجشاهي، بنغلاديش (سابقاً)

المدير في مركز التعليم الإسلامي الحكومي (سابقاً)

عضو لجمعية أهل الحديث، بنغلاديش

راجعه

الدكتور / عبد الله فاروق السلفي

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش (سابقاً)

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

Interpretation of the Meanings

THE QUR'ÂN

In the Bangla Language

By: Prof. Dr. Muhammad Mujibur Rahman

تفسير معاني
القرآن الكريم
باللغة البنغالية

ترجمه

الدكتور / محمد مجيب الرحمن

إيست ميدو - نيويورك بأمریکا

الأستاذ ورئيس قسم اللغة العربية والتعليم الإسلامي

بجامعة راجشاهي، بنغلاديش (سابقاً)

المدير في مركز التعليم الإسلامي الحكومي (سابقاً)

عضو لجمعية أهل الحديث، بنغلاديش

راجعه

الدكتور / عبد الله فاروق السلفي

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش (سابقاً)

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

Interpretation of the Meanings

THE QUR'ÂN

In the Bangla Language

By: Prof. Dr. Muhammad Mujibur Rahman

This Online Version of Qu'ran is Published By

www.QuranerAlo.com

Scanned By

SHADMAN SAQUIB

and

NURUL HASSAN RAKIB

May Allaah accept us, our Vows and Allegiance and Da'wah efforts and help us to fulfill all our dreams and mission!

Ameen.

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

প্রথম প্রকাশ

নভেম্বরঃ ২০০১ ইংরেজী

রামায়ানঃ ১৪২২ হিজরী

অগ্রহায়ণঃ ১৪০৮ বাংলা

ভূতীয় সংস্করণ

জানুয়ারীঃ ২০০৭ ইংরেজী

জিলহজ্জঃ ১৪২৭ হিজরী

পৌষঃ ১৪১৩ বাংলা

প্রহসভ্যঃ প্রকাশকের

সদর দফতর

পোঃ বক্সঃ ২২৭৪৩, রিয়াদঃ ১১৪১৬, সৌদি আরব ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪০৩৩৯৬২-৪০৪৩৪৩২

ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-১-৪০২১৬৫৯

E-mail: Darussalam@awalnet.net.sa Website: <http://www.dar-us-salam.com>

শা খা স মু হ :

বিক্রম কেম্ব্রিসমূহ

রিয়াদ, সৌদি আরব

উলাহিয়াঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৬১৪৪৮৩ ফ্যাক্সঃ ৪৬৪৪৯৪৫

মালাবঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৭৩৫২২০ ফ্যাক্সঃ ৪৭৩৫২২১

সুলাহিয়াঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-২৮৬০৪২২

জেন্দাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-২-৬৮৭৯২৫৪ ফ্যাক্সঃ ৬৩৩৬২৭০

মদীনাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৫০৩৪১৭১৫৫ ফ্যাক্সঃ ০৪-৮১৫১১২১

আল-শোবায়ঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৩-৮৬৯২৯০০ ফ্যাক্সঃ ৮৬৯১৫৫১

ধানীল মুশীতঃ ফোন+ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-০৭২২০৭০৫৫

আরব আমীরাত

ফোনঃ ০০৯৭১-৬-৫৬৩২৬২৩ ফ্যাক্সঃ ৫৬৩২৬২৪

E-mail: Sharjah@dar-us-salam.com

পাকিস্তান

দারুসসালাম, ৩৬/বি লয়ার মল, লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭২৪ ০০২৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩৫৪০৭২

রহমান মার্কেট, পজনী স্ট্রীট, উর্দুভাজার লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭১২০০৫৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩২০৭০৩

কারাচী ফোনঃ ০০৯২-২১-৪৩৯৩৯৩৬ ফ্যাক্সঃ ৪৩৯৩৯৩৭

ইসলামাবাদ ফোনঃ ০০৯২-৫১-২৫০০২৩৭

মুক্তরাষ্ট্র

দারুসসালাম, হিউস্টন

পি.ও. বক্সঃ ৭৯১৯৪ টিএক্স ৭৭২৭৯

ফোনঃ ০০১-৭১৩-৭২২০৪১৯ ফ্যাক্সঃ ৭২২০৪৩১

E-mail: sales@dar-us-salam.com

দারুসসালাম, নিউ ইয়র্ক

৪৮৬ আটলান্টিক এভিনিউ, ব্রুকলীন

নিউইয়র্ক ১১২১৭, ফোনঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ৫৯২৫

ফ্যাক্সঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ১৫১১

E-mail: darussalamny@hotmail.com

মুক্তরাষ্ট্র

লন্ডনঃ দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন লিমিটেড

লিওটন বিজনেস সেন্টার

ইউনিট-১৭, হুটলো রোড, লিওটন, লন্ডন, ই১০ ৭ বিটি

ফোনঃ ০০৪৪ ২০ ৮৫৩৯ ৪৮৮৫ ফ্যাক্সঃ ৮৫৩৯ ৪৮৮৯

Website: www.darussalam.com

E-mail: info@darussalam.com

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন লিমিটেড

রিজেন্ট পার্ক মসজিদ, ১৪৬ পার্ক রোড,

লন্ডন এনডব্লিউ ৮ ৭ আর জি

ফোনঃ ০০৪৪-২০৭ ৭২৫ ২২৪৬

কানাডা

ইসলামীক বুকস সার্ভিস

২২০০ সাউথ শেরীডান ওয়ায়ে মিসিসাগো

ওয়ানটারিও কানাডা এলএকে ২সি৮

ফোনঃ ০০১-৯০৫-৪০৩৮৪০৬ এক্সিট-২১৮

ফ্যাক্সঃ ৯০৫-৮৪০৯

মালয়েশিয়া

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন লিমিটেড

১০৯/এ, জালাল এসএস২১/১এ, ডামানসারা উটামা

৪৭৪০০, পিটালিন জায়া, সিলানুর, দারুল ইহসান

মালয়েশিয়া, ফোনঃ ০০৬০৩-৭৭১০ ৯৭৫০

ফ্যাক্সঃ ৭৭১০০৭৪৯

E-mail: Darussalam@streamyx.com

ফ্রান্স

ইসলাম লাইব্রেরী

১৩৫, বিডি ডি মেনিলমোনটেন্ট-৭৫০১১ প্যারিস

ফোনঃ ০০৩৩-০১-৪৩ ৩৮ ১৯ ৫৬/ ৪৪ ৮৩

ফ্যাক্সঃ ০০৩৩-০১- ৪৩ ৫৭ ৪৪ ৩১

E-mail: essalam@esslam.com

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি

আরবী ও ইসলামিক স্টাডিজ বিভাগ

রাজশাহী বিশ্ববিদ্যালয়, বাংলাদেশ

সদস্য, বাংলাদেশ জম্ঈয়তে আহলে হাদীস

প্রাক্তন পরিচালক, ইসলামিক এডুকেশন সেন্টার

ইস্ট মিডো, নিউ ইয়র্ক-১১৫৫৪, যুক্তরাষ্ট্র

সম্পাদনায়ঃ

প্রফেসর ড. আব্দুল্লাহ ফারুক সালাফি

প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি

ডিপার্টমেন্ট অব দা'ওয়া এন্ড ইসলামীক স্টাডিজ

ইন্টারন্যাশনাল ইসলামীক ইউনিভার্সিটি

চিটাগং, বাংলাদেশ।



দা রু স সা লা ম

রিয়াদ • জেদ্দা • আল-খোবার • শারজাহ

লাহোর • লন্ডন • হিউস্টন • নিউ ইয়র্ক

Download more Authentic Bangla Books at

www.QuranerAlo.com



إلى من يهمه الأمر

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، وبعد!

فإن الأستاذ الدكتور محمد مجيب الرحمن أستاذ ورئيس القسم العربي والدراسات الإسلامية بجامعة راجشاهي وعضو جمعية أهل الحديث ، بنغلاديش ومدير قسم التعليم الإسلامي العالي بميدو الشرقية بالولايات المتحدة الأمريكية أحد الدعاة الجهادية وقادة الفكر الإسلامي في أرجاء بنغلاديش وله شهرة واسعة في الأوساط العلمية وهو من المجيدين المتقنين لشتى اللغات وهو كذلك صاحب خبرة طويلة وتجارب محصنة في مجال العلوم الشرعية وإنه قام بترجمة معاني القرآن الكريم باللغة البنغالية المسمى -القرآن الكريم بنغلا تفسير- ترجمة صحيحة وافية حيث إنها تنقل إلى القراء الكرام روح القرآن وأهدافه النبيلة وتعاليمه السمحة بأسلوب رصين وذلك خلال فترة عمله ومحاضراته في جامعة راجشاهي الحكومية ببنغلاديش ثم خلال فترة عمله في المركز الثقافي الإسلامي بمدينة نيو يورك، الولايات المتحدة الأمريكية وإنني أرى أن الترجمة المذكورة تستحق الطبع والنشر في داخل البلاد وخارجها ليستفيد بها المسلمون الناطقون باللغة البنغالية وإنهم في أمس الحاجة إلى مثل هذه الترجمة التي وفيت بالغرض شرعياً ولغوياً وأدبياً وبلاغياً وقد قدم صاحبها خدمة جليلة في حقل تفسير القرآن الكريم باللغة البنغالية كما أن المذكور يتحلى بالأخلاق الفاضلة والسير الحميدة ويتمسك بالعبقيرة السالمة من شوائب الشرك والبدعة. والله ولي التوفيق وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين .

كتبه

الحمد لله
 (د. عبد الله فاروق السلفي)

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية
 الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش.

Head
 Dept. of Da'wah & Islamic Studies
 International Islamic University Chittagong

সূচী পত্র

১. সূরা ফাতিহা	01	২৯. সূরা আনকাবূত	734
২. সূরা বাকারা	04	৩০. সূরা রুম	747
৩. সূরা আল-ইমরান	91	৩১. সূরা লোকমান	756
৪. সূরা আন-নিসা	143	৩২. সূরা সাজ্জদাহ.....	763
৫. সূরা মায়িদা	190	৩৩. সূরা আহযাব.....	768
৬. সূরা আন'আম	232	৩৪. সূরা সাবা.....	785
৭. সূরা 'আরাফ	281	৩৫. সূরা ফাতির	795
৮. সূরা আনফাল.....	333	৩৬. সূরা ইয়াসীন	803
৯. সূরা তাওবা	352	৩৭. সূরা সাফফাত.....	814
১০. সূরা ইউনুস	391	৩৮. সূরা সোয়াদ.....	829
১১. সূরা হূদ	416	৩৯. সূরা যুমার	839
১২. সূরা ইউসুফ.....	445	৪০. সূরা মু'মিন	852
১৩. সূরা রা'দ	469	৪১. সূরা হা-মীম আস্সাজ্জদাহ ..	867
১৪. সূরা ইবরাহীম	479	৪২. সূরা শূরা.....	878
১৫. সূরা হিজর.....	493	৪৩. সূরা যুখরুফ.....	888
১৬. সূরা নাহল.....	504	৪৪. সূরা দুখান.....	900
১৭. সূরা বানী ইসরাইল	529	৪৫. সূরা জাসিয়া.....	905
১৮. সূরা কাহ্ফ	549	৪৬. সূরা আহক্বাফ.....	912
১৯. সূরা মারইয়াম	573	৪৭. সূরা মুহাম্মাদ.....	920
২০. সূরা ত্বা-হা	587	৪৮. সূরা ফাত্হ.....	928
২১. সূরা আশ্শিয়া.....	607	৪৯. সূরা হুজুরাত	935
২২. সূরা হাজ্জ	623	৫০. সূরা ক্বা'ফ.....	939
২৩. সূরা মু'মিনুন	639	৫১. সূরা যারিয়াত	944
২৪. সূরা নূর.....	652	৫২. সূরা তূর	951
২৫. সূরা ফুরকান	668	৫৩. সূরা নাজম.....	955
২৬. সূরা শুআ'রা.....	680	৫৪. সূরা কামার.....	962
২৭. সূরা নাম্বল.....	700	৫৫. সূরা রহমান	968
২৮. সূরা কাসাস.....	715	৫৬. সূরা ওয়াকি'আহ.....	974

৫৭.	সূরা হাদীদ.....	981
৫৮.	সূরা মুজাদালাহ.....	988
৫৯.	সূরা হাশর.....	993
৬০.	সূরা মুমতাহিনাহ.....	1000
৬১.	সূরা সাফ্ফ.....	1004
৬২.	সূরা জুমআ'হ.....	1007
৬৩.	সূরা মুনাফিকুন.....	1009
৬৪.	সূরা তাগাবুন.....	1012
৬৫.	সূরা তালাক.....	1015
৬৬.	সূরা তাহরীম.....	1019
৬৭.	সূরা মুল্ক.....	1023
৬৮.	সূরা কলম.....	1027
৬৯.	সূরা হাক্কাহ.....	1032
৭০.	সূরা মা'আরিজ.....	1037
৭১.	সূরা নূহ.....	1040
৭২.	সূরা জ্বীন.....	1044
৭৩.	সূরা মুয্যাম্মিল.....	1047
৭৪.	সূরা মুদ্দাসসির.....	1050
৭৫.	সূরা কিয়ামাহ.....	1055
৭৬.	সূরা দাহর.....	1058
৭৭.	সূরা মুরসালাত.....	1061
৭৮.	সূরা নাবা.....	1066
৭৯.	সূরা নাযি'আত.....	1069
৮০.	সূরা আ'বাসা.....	1072
৮১.	সূরা তাক্ভীর.....	1075
৮২.	সূরা ইনফিতার.....	1078
৮৩.	সূরা মুতাফ্ফিফীন.....	1080
৮৪.	সূরা ইনশিকাক.....	1083
৮৫.	সূরা বুরূজ.....	1085
৮৬.	সূরা তা'-রিক.....	1086

৮৭.	সূরা আ'লা.....	1088
৮৮.	সূরা গাশিয়াহ.....	1089
৮৯.	সূরা ফাজর.....	1091
৯০.	সূরা বালাদ.....	1094
৯১.	সূরা শামস.....	1096
৯২.	সূরা লাইল.....	1097
৯৩.	সূরা দুহা.....	1099
৯৪.	সূরা আলাম নাশরাহ...	1100
৯৫.	সূরা তীন.....	1100
৯৬.	সূরা আ'লাক.....	1101
৯৭.	সূরা কাদর.....	1103
৯৮.	সূরা বাইয়্যিনাহ.....	1103
৯৯.	সূরা যিলযাল.....	1104
১০০.	সূরা আদিয়াত.....	1105
১০১.	সূরা কা'রি'আহ.....	1106
১০২.	সূরা তাকাসুর.....	1107
১০৩.	সূরা আসর.....	1108
১০৪.	সূরা হুমাযাহ.....	1108
১০৫.	সূরা ফীল.....	1109
১০৬.	সূরা কুরাইশ.....	1109
১০৭.	সূরা মাউন.....	1110
১০৮.	সূরা কাওসার.....	1111
১০৯.	সূরা কা'ফিরুন.....	1111
১১০.	সূরা নাসর.....	1112
১১১.	সূরা লাহাব.....	1112
১১২.	সূরা ইখলাস.....	1113
১১৩.	সূরা ফালাক.....	1114
১১৪.	সূরা নাস.....	1115

This PDF Qur'an contain Interactive Link. Interactive link means CONTENTS pages are linked with their appropriate pages. So, when you click on a topic from the CONTENTS page, it will automatically direct you to the relevant page.

প্রকাশকের নিবেদন

সমস্ত প্রশংসা নিবেদন করছি বিশ্বজগতের রব, আল্লাহর জন্য যিনি আল-কুরআন অবতীর্ণ করেছেন মানব জাতির হেদায়েত ও কল্যাণের নিমিত্তে। দরুদ ও সালাম মুহাম্মাদ (ﷺ)-এর প্রতি এবং তাঁর পরিবার ও সাহাবীদের উপর বর্ষিত হোক।

বিশ্বে এখন প্রায় পঁয়ত্রিশ/চল্লিশ কোটি বাংলাভাষী রয়েছে। তাদের বেশিরভাগই হলেন মুসলমান। তারা দেশে-বিদেশে নিজ ভাষায় আল-কুরআন অধ্যয়ন করতে আগ্রহী। কিয়ামত পর্যন্ত আল-কুরআন মানবতার মুক্তির দিশারী এতে কোন সন্দেহ নেই। দুনিয়ার শান্তি ও আখেরাতের মুক্তির জন্য-এর অধ্যয়ন, চর্চা ও বাস্তবায়ন অবশ্যস্বাভাবী।

উল্লেখ্য যে, আল-কুরআনের অনুবাদ গ্রন্থের মর্যাদা (মূল) কুরআনের সমপর্যায়ভুক্ত নয়। তবুও অনুবাদ মানুষকে স্ব-ভাষায় কুরআনের ভাবার্থ বুঝতে ও তার দ্বারা উপকৃত হতে এবং দুনিয়া ও আখেরাতের জীবনকে সমৃদ্ধশালী করতে সাহায্য করে।

এ তরজমা দারুসসালামের দীর্ঘদিনের আশা-আকাঙ্ক্ষার বাস্তবায়ন। এ মহৎ কাজে বাংলাদেশের বিশিষ্ট শিক্ষাবিদ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান তাঁর অনূদিত তাফসীর ইবনে কাসীর-এর কুরআনের তরজমা অংশটি দিয়ে আমাদের সে ইচ্ছা পূর্ণ করেছেন।

বাংলাভাষায় কুরআনুল কারীমের এই নির্ভরযোগ্য তরজমা বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকাদের হাতে তুলে দিতে পারায় আমি সর্বপ্রথমে আল্লাহ রাক্বুল আলামীনের শুকরিয়া আদায় করছি।

প্রকাশনা পরিষদের অক্লান্ত পরিশ্রমের ফলে সংশোধিতরূপে সত্তুর-এর প্রকাশনা সম্ভব হয়েছে। ড. আব্দুল্লাহ ফারুক, মুহাম্মাদ আব্দুর রব আফফান, আজমল হুসাইন, সাইফুল ইসলাম ও জনাব মুহিববুর রহমান, বর্ণবিন্যাসকারী ও ডিজাইনার জনাব আসাদুল্লাহসহ যারা এ অনুবাদ প্রকাশনায় সক্রিয়ভাবে সহযোগিতা করেছেন তাদের সকলের প্রতি রইল আমার আন্তরিক কৃতজ্ঞতা ও শুভেচ্ছা।

হাদীসের সাহায্য ছাড়া কুরআনের অর্থ অনুধাবন করা যায় না। তাই প্রয়োজনীয় ক্ষেত্রে সহীহ হাদীসের অনুবাদের মাধ্যমে টীকা সংযোজন করা হয়েছে। তবে হাদীস অনুবাদের ক্ষেত্রে মূল আরবী গ্রন্থ দেখে করা হয়েছে। অধিকাংশ হাদীসই সহীহ আল-বুখারী থেকে নেয়া হয়েছে।

বাংলাভাষী সকল পর্যায়ের মুসলমান ভাইদের পবিত্র কুরআনের অর্থ বুঝে পড়ার আগ্রহের প্রতি লক্ষ্য রেখে তরজমা সহজ, বোধগম্য ও প্রাজ্ঞল করার চেষ্টা করা

হয়েছে, যাতে তেলাওয়াতের সাথে সাথে তাঁরা কুরআন মাজিদের অর্থও বুঝতে পারেন।

২০০১ সালে প্রকাশিত তরজমায় যেসব ক্রটি-বিচ্যুতির ব্যাপারে চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকা ও গবেষকমণ্ডলী পরামর্শ দিয়েছেন তাঁদেরকে আন্তরিক ধন্যবাদ জানাচ্ছি, মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন। এবারের প্রকাশনায় ঐ সব ক্রটি সংশোধনের যথাসাধ্য চেষ্টা করা হয়েছে।

মানুষ ভুলের উর্ধ্বে নয়, সে হিসেবে এই অনুবাদেও ভুল-ভ্রান্তি থাকতে পারে। সুবিজ্ঞ পাঠক-পাঠিকার নিকট অনুরোধ অনুবাদে অনিচ্ছাকৃতভাবে কোনরূপ ভুল ধরা পড়লে দারুস্‌সালাম দফতরে মেহেরবানী করে জানাবেন। ইনশাআল্লাহ ভুলের সংশোধন আগামী সংস্করণে অবশ্যই করা হবে।

পবিত্র আল-কুরআনের বাংলা এ তরজমা গ্রন্থটি দ্বারা ইসলামকে জানার ব্যাপারে বাংলাভাষী জনগণ উপকৃত হলে আমাদের শ্রমও সার্থক হবে। পাঠকদের নিকট এটি গৃহীত হবে বলে আশা করছি। আল্লাহ আমাদের উত্তম আমলগুলো কবুল করুন এবং ভুল-ক্রটিগুলো ক্ষমা করুন। আমীন।

রিয়াদঃ জানুয়ারী, ২০০৭

আব্দুল মালিক মুজাহিদ

জেনারেল ম্যানেজার

অনুবাদকের আরম্ভ

মানবকুলের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ তারাই যারা পবিত্র কুরআনের শিক্ষা গ্রহণ ও শিক্ষা দানে নিয়োজিত। নবী আকরামের (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এই পবিত্র বাণী সকল যুগের জ্ঞান-তাপস ও মনীষীদের উদ্ধুদ্ধ করেছে পাক কুরআনের অনুবাদ ও ব্যাখ্যা প্রণয়ন করার কাজে।

আল্লাহ পাকের লাখো শুকরিয়া, ‘তাকসীর ইবনে কাসীরের’ ব্যাপক জনপ্রিয়তা, কল্যাণকারিতা এবং অপরিসীম গুরুত্বের কথা অনুধাবন করে তা বাংলায় ভাষান্তরিত করে প্রায় বিশ বছর আগে বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকার হাতে অর্পণ করতে সক্ষম হয়েছিলাম।

আন্তর্জাতিক খ্যাতি সম্পন্ন প্রকাশনা প্রতিষ্ঠান ‘দারুসসালাম’ সেই তাকসীর থেকে কুরআনের ‘তরজমা অংশটুকু’ প্রকাশের উদ্যোগ নেয় ২০০১ সালে। এবার তারা পুনঃপ্রকাশের উদ্যোগ নিয়েছে এর জনপ্রিয়তার কারণে। ভবিষ্যতে ‘পূর্ণাঙ্গ তাকসীর’ প্রকাশের পরিকল্পনা তাদের রয়েছে। আল্লাহ তা’আলা তাদের কামিয়াব করুন এবং উপযুক্ত যা’জা দান করুন।

আপ্রাণ চেষ্টা সত্ত্বেও একান্ত অনিচ্ছাকৃতভাবে এতে কিছু মুদ্রণ প্রমাদ, তরজমার উপস্থাপনা এবং অন্যান্য ত্রুটি-বিচ্যুতি পরিলক্ষিত হয়েছিল। যেসব বিষয়ে সুধী পাঠক মহলের পক্ষ থেকে অনুবাদকের দৃষ্টি আকর্ষণ করা হয়েছে, (মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন)। সেগুলো পরম কৃতজ্ঞতা ও ধন্যবাদসহ গৃহীত হয়েছে। এই কল্যাণময় কাজটিকে আরো উন্নতমানের এবং একান্ত রুচিশীলভাবে সম্পন্ন করে পরিমার্জিত আকারে প্রকাশ করা হয়েছে।

এই তরজমা যদি চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকার মনের কোণে রুহানী আনন্দ দিয়ে কুরআনের মহাশিক্ষাকে তাদের দৈনন্দিন জীবনের প্রতিটি পর্যায়ে পূর্ণাঙ্গ রূপলাভের সংকল্প জাগিয়ে তুলতে পারে, আর এর আলোকেই যদি তারা গড়ে তুলতে পারেন তাদের জীবনধারা, তবেই পরিশ্রম ও সাধনাকে আমি সফল ও সার্থক মনে করবো।

আটলান্টিক, নিউজার্সি, মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র

বিনয়ানত

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

সহায়ক গ্রন্থ

- ১। “মিসবাহুল মুনীর” (সংক্ষিপ্ত তাফসীর ইবনে কাসীর)
- ২। তাফসীরে জালালাইন
- ৩। তাইসীর আল-কারীমুর রহমান
- ৪। আল-কুরআন ওয়ার্ড বাই ওয়ার্ড (উর্দু)
- ৫। কুরআনুল কারীম (মাওলানা আব্দুল হাকীম কর্তৃক রচিত)
- ৬। টীকাঃ হাদীসসমূহ বুখারী ও মুসলিম।

সূরাঃ ফাতিহা মাক্কী

(আয়াতঃ ৭ রুকুঃ ১)

سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا رُكُوعًا ۱

১. আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি
পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۱

২. আল্লাহর জন্য সমস্ত প্রশংসা যিনি
জগতসমূহের প্রতিপালক।^২

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۲

৩. যিনি পরম করুণাময়, অতিশয়
দয়ালু।

الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۳

৪. যিনি প্রতিফল দিবসের মালিক।

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۴

৫. আমরা শুধুমাত্র আপনারই ইবাদত
করি এবং আপনারই নিকট সাহায্য
প্রার্থনা করি।

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۵

১। “ফাতিহা” (ফাতিহা অর্থঃ সূচনা, ভূমিকা ও সূত্রপাত করা)। এ সূরাটিকে ফাতিহাতুল কিতাব ও উম্মুল কিতাবও বলা হয়। কারণঃ মুসহাফের (কুরআন মজিদের) প্রথমে এ সূরাটি লিখিত এবং নামাযের মধ্যে এর ধারাই কির’আত আরম্ভ করা হয় বলেও একে এ নামে অভিহিত করা হয়েছে। (বুখারী কিতাবুত তাফসীর, ফাতিহাতুল কিতাব অনুচ্ছেদ।)

২। আবু সাঈদ ইবনুল মু’আল্লা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (একদিন) আমি মসজিদে নববীতে (নফল) নামায পড়ছিলাম। ঠিক এ সময় রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে ডাকলেন; কিন্তু আমি তাঁকে কোন জবাব দিলাম না। পরে গিয়ে আমি তাঁকে বললামঃ হে আল্লাহর রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [আপনি যে সময় আমাকে ডেকেছিলেন] আমি তখন নামায পড়ছিলাম। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথা শুনে তাকে বললেনঃ আল্লাহ তা’আলা কি বলেননিঃ অর্থঃ “আল্লাহ্ এবং রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর আহ্বানে সাড়া দাও, যখন তোমাদেরকে কোন কাজের প্রতি আহ্বান করেন।” (সূরা আনফাল, আয়াতঃ ২৪)

তারপর আমাকে বললেনঃ তুমি মসজিদ থেকে বের হওয়ার আগে আমি তোমাকে কুরআনের এমন একটি সূরা শিখিয়ে দেবো যা গুরুত্বের দিক দিয়ে সবচাইতে বড়। তারপর তিনি আমার হাত চেপে ধরলেন। যখন তিনি মসজিদ থেকে বেরিয়ে যেতে উদ্যত হলেন তখন আমি তাঁকে বললামঃ আপনি কি বলেননি যে, কুরআনের সবচাইতে গুরুত্বপূর্ণ সূরা আমাকে শিখিয়ে দেবেন? তিনি বললেনঃ সেই সূরাটি হলো আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন। আমাকে ‘সাবউল মাসানী’ বা বার বার পঠিত এ সাতটি আয়াত ও মহান কুরআন দান করা হয়েছে। (অর্থাৎ সূরা ফাতিহাকে “সাবউল মাসানী” বলা হয় এ জন্য যে সূরাটিতে মোট সাতটি আয়াত আছে, যা নামাযে বার বার পঠিত হয়ে থাকে।) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৪)

৬. আমাদেরকে সরল সঠিক পথ-
প্রদর্শন করুন।

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٦﴾

৭. তাদের পথ, যাদের প্রতি আপনি
অনুগ্রহ করেছেন; তাদের নয় যাদের
প্রতি আপনার গযব বর্ষিত হয়েছে;
এবং তাদেরও নয় যারা পথভ্রষ্ট। ২-৩-৪

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۗ غَيْرِ
الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ﴿٧﴾

১। আদি বিন হাতেম (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, তিনি বলেনঃ (مغضوب عليهم) দ্বারা ইয়াহুদী সম্প্রদায়কে বুঝানো হয়েছে। (যারা সত্যকে জেনে শুনেও তা থেকে দূরে সরে গেছে এবং ইচ্ছাকৃতভাবে আমল পরিত্যাগ করেছে।) আর (ضالين) দ্বারা নাসারা বা খ্রিস্টানগণকে বুঝানো হয়েছে। (যাদের সঠিক পথ সম্পর্কে কোন ধারণা ও জ্ঞান নেই।) (তিরমিযী)

২-৩-৪। আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি ওহী অবতীর্ণ হবার পূর্বে বালদাহ নামক স্থানের নিম্নভাগে য়ায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সাথে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে সাক্ষাত হয়। তারপর (কুরাইশদের পক্ষ থেকে) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তরখান বিছানো হলো। তিনি তা থেকে খেতে অস্বীকার করলেন (এবং য়ায়েদের সামনে ঠেলে দিলেন; কিন্তু তিনিও তা খেতে অস্বীকার করলেন।) অতঃপর য়ায়েদ (কুরাইশদের লক্ষ্য করে) বললেন, তোমাদের মূর্তির নামে তোমরা যা যবেহ কর তা আমি কিছুতেই খেতে পারি না। আমি তো কেবলমাত্র তাই খেয়ে থাকি যাতে যবেহ করার সময় আল্লাহর নাম উচ্চারণ করা হয়। য়ায়েদ ইবনে আমর কুরাইশদের যবেহের নিন্দা করতেন এবং তাদের উক্ত আচরণের প্রতিবাদ ও তার ক্রটির প্রতি ইঙ্গিত করে বলতেন, বকরীকে সৃষ্টি করলেন আল্লাহ এবং তিনিই তাঁর আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, তিনিই তার জন্য মাটি থেকে ঘাস ও লতা-পাতা উৎপন্ন করেন। এতো কিছু পরও তোমরা তাকে গাইরুল্লাহর নামে যবেহ কর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৬)

ইবনে উমর থেকে (অপর এক সনদে) বর্ণিত য়ায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইল সত্য দ্বীন সম্পর্কে জানা ও তার অনুসরণ করার জন্য শাম (সিরিয়া) দেশে গিয়ে এক ইয়াহুদী আলেমের সাথে সাক্ষাত করেন এবং তাকে তাদের দ্বীন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে বললেন, আমি হয়তোবা আপনাদের দ্বীন গ্রহণ করতে পারি। সুতরাং আমাকে (আপনাদের দ্বীন সম্পর্কে) কিছু বলুন। ইয়াহুদী আলেম বললেন, আপনি আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না যে পর্যন্ত আল্লাহর আযাব থেকে আপনার অংশ আপনি গ্রহণ না করেন। য়ায়েদ বললেন আমি তো আল্লাহর আযাব থেকে (বাঁচার জন্যই) ভয়ে পালিয়ে এসেছি। আল্লাহ পাকের আযাব বিন্দুমাত্রও সহ্য করার ক্ষমতা আমার নেই এবং তা বরদাস্ত করার সাধ্যও রাখি না। তাহলে অন্য কোন ধর্ম সম্পর্কে (মেহেরবানী) করে আমাকে পথ দেখাতে পারবেন কি? ইয়াহুদী আলেম বললেনঃ ধীনে হানীফ ছাড়া অন্য কোন সত্য দ্বীন আমার জানা নেই। য়ায়েদ বললেনঃ ধীনে হানীফ কি? তিনি বললেন তাহল ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি (ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম) ইয়াহুদী কিংবা খ্রিস্টান (কোন দলেরই) ছিলেন না। তিনি একমাত্র আল্লাহ ব্যতীত অন্য কিছুই ইবাদত করতেন না। অতঃপর য়ায়েদ সেখান থেকে বের হয়ে এক খ্রিস্টান আলেমের সঙ্গে সাক্ষাত করলেন এবং তাঁকেও পূর্বের ন্যায় জিজ্ঞেস করলেন। উক্ত আলেম বললেন যে পর্যন্ত আপনি আল্লাহর লা'নতের অংশ গ্রহণ না করবেন সে পর্যন্ত আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না। য়ায়েদ বললেন আল্লাহর লা'নত থেকে (মুক্তি পাওয়ার জন্যই) আমি পালিয়ে বেড়াচ্ছি। আল্লাহর লা'নত কিংবা তাঁর গযবের বিন্দুমাত্রও আমি বরদাশত করতে পারব না, না আমার তা বরদাশত করার কোন সাধ্য আছে। অতঃপর উক্ত আলেমকেও বললেনঃ তা'হলে আপনি কি আমাকে অন্য কোন দ্বীন (ধর্ম)-এর কথা বলে দিতে পারবেন? উত্তরে উক্ত আলেম

বললেন, অন্য কোন ধর্মের কথা আমি জানি না, তবে (দ্বীনে) হানীফ ব্যতীত। যায়েদ জিজ্ঞাসা করলেন, হানীফ কি? তিনি বললেন, তা'হল ইব্রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি ইয়াহুদী ও ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না। তিনি আল্লাহ্‌ ছাড়া অন্য কিছুই ইবাদত করতেন না। যায়েদ যখন দেখলেন যে ইব্রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের সত্যতার ব্যাপারে তারা সকলেই একমত, তাদের মন্তব্য শুনে বেরিয়ে এলেন এবং বাহিরে এসে দু'হাত তুলে বললেন, হে আল্লাহ্‌! আমি তোমাকে সাক্ষি রেখে বলছি যে, নিশ্চয় আমি ইব্রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের প্রতি রয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৮)

* লাইছ বলেন, হিশাম তার পিতা ও আসমা বিনতে আবু বকরের বরাত দিয়ে আমাকে লিখেছেন যে, আসমা বলেনঃ একদিন, আমি যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলকে দেখলাম যে, তিনি কা'বা ঘরের সাথে নিজের পিঠ লাগিয়ে দাঁড়িয়ে (কুরাইশদেরকে লক্ষ্য করে) বলছেন, হে কুরাইশ দল! আল্লাহ্‌র কসম! আমি ছাড়া তোমাদের কেউ ইব্রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের অনুসারী নয়। আর তিনি জীবন্ত প্রোথিত নবজাত শিশুকন্যাকে জীবিত করতেন। যখন কোন ব্যক্তি তার মেয়েকে হত্যা করতে চাইত তখন তিনি তাকে বলতেন, একে হত্যা করো না। তোমার পরিবর্তে আমি তার ভরণ-পোষণের ভার নেব। এ বলে তিনি তাকে নিয়ে যেতেন। মেয়েটা যখন বড় হতো, তিনি তার পিতাকে বলতেন, তুমি চাইলে আমি মেয়েটাকে তোমাকে দিয়ে দিব। আর তুমি যদি চাও তবে আমিই মেয়েটার ভরণ-পোষণ করে যাব। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪২৮)

* উবাদা বিন সামিত (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্‌ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি নামাযে সূরা ফাতিহা পাঠ করবে না তার নামাযই হবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৬)

* আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্‌ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন ইমাম সাহেব আমীন বলে তখন তোমরাও আমীন বল। কেননা (ঐ সময়) ফেরেশতারাও আমীন বলে থাকে। যে ব্যক্তির আমীন বলা ফেরেশতাদের আমীন বলার সাথে মিলে যায় তার পূর্ববর্তী গোনাহ মাফ করে দেয়া হয়। (আমীন অর্থ হচ্ছে “হে আল্লাহ্‌! আপনি কবুল করুন।”) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৫)

সূরাঃ বাকারাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ২৮৬, রুকূ'ঃ ৪০)

আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি পরম
করুণাময় ও অতি দয়ালু।

سُورَةُ الْبَقَرَةِ مَدِينَةُ

أَيَّانَهَا ۲۸۶ رُكُوعًا ۴۰

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আলিফ-লাম-মীম^১

الْمَآءِ ①

২. এটা ঐ গ্রন্থ যার মধ্যে কোনরূপ
সন্দেহ নেই; আল্লাহ ভীরুদের
(পরহেজগারদের) জন্যে এ গ্রন্থ
হিদায়াত বা মুক্তিপথের দিশারী।ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ
هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ②৩. যারা অ-দৃষ্ট বিষয়গুলোতে বিশ্বাস
স্থাপন করে, এবং নামায প্রতিষ্ঠিত
করে ও আমি তাদেরকে যে জীবনো-
পকরণ দান করেছি তা হতে ব্যয়
করে থাকে।^২الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ
الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ③৪. এবং যারা তোমার প্রতি যা
অবতীর্ণ করা হয়েছে ও তোমার পূর্বে
যা অবতীর্ণ করা হয়েছিল, তদ্বিষয়ে
বিশ্বাস স্থাপন করে এবং পরকালের
প্রতি যারা দৃঢ় বিশ্বাস রাখে।وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا
أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ
يُوقِنُونَ ④৫. এরাই তাদের প্রভুর পক্ষ হতে
প্রাপ্ত হিদায়াতের উপর প্রতিষ্ঠিত
রয়েছে এবং এরাই সফলকাম।أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ⑤

১। الم এই ধরণের অক্ষরগুলিকে হ্রস্ব-আল মুকাত্তা'আত (বিচ্ছিন্ন বর্ণমালা) বলা হয়। এগুলিকে পৃথক পৃথকভাবে পড়া হয়। কুরআন মজিদের বহু সূরার (উনত্রিশটি সূরার প্রথমে) প্রারম্ভে এরূপ হরফ বা অক্ষর ব্যবহৃত হয়েছে। এর অন্তর্নিহিত তাৎপর্য আল্লাহই অবগত আছেন। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

২। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ইসলামের ভিত্তি পাঁচটি স্তম্ভের উপর স্থাপিতঃ (১) এ সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহ্ ছাড়া সত্য কোন মা'বুদ নেই এবং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহর রাসূল। (২) নামায কয়েম করা। (৩) যাকাত প্রদান করা। (৪) হজ্জ পালন করা। (৫) রমজান মাসে সিয়াম (রোজা) পালন করা। (বুখারী, হাদীস নং ৮)

৬. নিশ্চয় যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের তুমি সতর্ক কর বা না কর, উভয়টা তাদের জন্য সমান, তারা বিশ্বাস স্থাপন করবে না।

৭. আল্লাহ তাদের অন্তরসমূহের উপর ও তাদের কর্ণসমূহের উপর মোহরাংকিত করে দিয়েছেন এবং তাদের চক্ষুসমূহের উপর আবরণ পড়ে আছে এবং তাদের জন্য রয়েছে গুরুতর শাস্তি।

৮. আর মানুষের মধ্যে এমন লোক আছে যারা বলে, আমরা আল্লাহর উপর এবং বিচার দিবসের উপর ঈমান এনেছি, অথচ তারা মোটেই ঈমানদার নয়।

৯. তারা আল্লাহ ও মুমিনদের সঙ্গে প্রতারণা করে, প্রকৃত অর্থে তারা নিজেদের ব্যতীত আর কারও সঙ্গে প্রতারণা করে না, অথচ তারা এ সম্বন্ধে বোধই রাখে না।

১০. তাদের অন্তরে ব্যাধি (রোগ) রয়েছে, উপরন্তু আল্লাহ তাদের ব্যাধি আরও বাড়িয়ে দিয়েছেন এবং তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে যেহেতু তারা মিথ্যা বলতো।

১১. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করো না তখন তারা বলে আমরা তো শুধু সংশোধনকারী।

১২. সাবধান! তারাই অশান্তি সৃষ্টিকারী; কিন্তু তারা বুঝে না।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ
أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

حَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ
وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ﴿٧﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ
وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

يُخَدِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۗ وَمَا
يَخْدِعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۗ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۗ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾

إِنَّا لَهُم مَّبْغُضُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾

১৩. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়, লোকেরা যেরূপ ঈমান এনেছে তোমরাও অনুরূপ ঈমান আন; তখন তারা বলেঃ নির্বোধেরা যেরূপ ঈমান এনেছে আমরাও কি সেরূপ ঈমান আনবো? সাবধান! নিশ্চয়ই তারাই নির্বোধ কিন্তু তারা অবগত নয়।

১৪. এবং যখন তারা মু'মিনদের সাথে মিলিত হয় তখন তারা বলেঃ আমরা ঈমান এনেছি এবং যখন তারা নিজেদের দলপতি ও দুষ্ট নেতাদের সাথে নির্জনে মিলিত হয়, তখন বলেঃ আমরা তোমাদের সঙ্গেই আছি, আমরা তো শুধু ঠাট্টা-বিক্রপ করে থাকি।

১৫. আল্লাহ তাদের সঙ্গে ঠাট্টা-বিক্রপ করছেন এবং তাদেরকে তাদের নিজেদের অবাধ্যতার মধ্যে বিভ্রান্ত হয়ে ফিরার জন্য ঢিল দেন।

১৬. এরা তারাই, যারা সুপথের পরিবর্তে বিপথকে ক্রয় করেছে, সুতরাং তাদের বাণিজ্য লাভজনক হয়নি এবং তারা সঠিক-সরল পথে পরিচালিত হয়নি।

১৭. এদের দৃষ্টান্ত ঐ ব্যক্তির দৃষ্টান্তের ন্যায় যে অগ্নি প্রজ্জ্বলিত করলো, অতঃপর অগ্নি যখন তার পার্শ্ববর্তী সমস্ত স্থান আলোকিত করলো, তখন আল্লাহ তাদের আলো

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا أَنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

وَإِذَا الْقَوْمُ الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۗ وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شُيُطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَءُونَ ﴿١٤﴾

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالََةَ بِالْهُدَىٰ ۖ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۗ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ ۖ لَّا يَبْصُرُونَ ﴿١٧﴾

১। অর্থাৎ তারা যেমন মুসলমানদের সাথে ঠাট্টা-বিক্রপের আচরণ করে আল্লাহ তায়ালাও তাদের সাথে অনুরূপ আচরণ করতঃ তাদেরকে অপমাণিত ও লাঞ্চিত করেন। প্রকৃতপক্ষে আল্লাহর পক্ষ হতে এটি ঠাট্টা নয়; বরং তাদের ঠাট্টা-বিক্রপের শাস্তি ও প্রতিদান। (আহসানুল বয়ান)

ছিনিয়ে নিলেন এবং তাদেরকে অন্ধকারের মধ্যে ছেড়ে দিলেন, সুতরাং তারা কিছুই দেখতে পায় না।

১৮. তারা বধির, মূক ও অন্ধ অতএব তারা (সঠিক পথের দিকে) প্রত্যাভর্তন হবে না।

صُمُّوا كُمْ عُمَىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾

১৯. অথবা আকাশ হতে পানি বর্ষণের ন্যায় যাতে অন্ধকার, গর্জন ও বিদ্যুৎ রয়েছে, তারা বজ্রধ্বনি বশতঃ মৃত্যু ভয়ে তাদের কর্ণসমূহে স্ব-স্ব অঙ্গুলি গুঁজে দেয় এবং আল্লাহ অবিশ্বাসীদের পরিবেষ্টনকারী।

أَوْ كَصَيْبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَّجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

২০. যেন বিদ্যুৎ তাদের দৃষ্টি হরণ করে ফেলবে, যখন তিনি তাদের জন্য একটু আলো (বিদ্যুত) প্রজ্জ্বলিত করেন তখন, তাতে তারা চলতে থাকে এবং যখন তাদের উপর অন্ধকারাচ্ছন্ন করেন তখন তারা দাঁড়িয়ে থাকে এবং যদি আল্লাহ ইচ্ছা করেন নিশ্চয় তাদের শ্রবণ শক্তি ও তাদের দর্শন শক্তি হরণ করতে পারেন। নিশ্চয় আল্লাহ সর্ব বিষয়ের উপর শক্তিমান।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَحْطِفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ط وَكُوشَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ط إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

২১. হে মানব মন্তলী! তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের ইবাদত কর যিনি তোমাদেরকে ও তোমাদের পূর্ববর্তীদেরকে সৃষ্টি করেছেন, যেন তোমরা ধর্মভীরু (পরহেজগার) হও।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾

২২. যিনি তোমাদের জন্যে যমীনকে শয্যা ও আকাশকে ছাদ স্বরূপ করেছেন এবং যিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন, অতঃপর তার দ্বারা

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً س وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ

তোমাদের জন্যে উপজীবিকা স্বরূপ ফলপুঞ্জ উৎপাদন করেন, অতএব তোমরা জেনে শুনে আল্লাহর সাথে কাউকে শরীক করো না ১

مِنَ الشِّرْكَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ؕ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ
أندَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۳۶﴾

২৩. এবং আমি আমার বান্দার প্রতি যা অবতীর্ণ করেছি, তাতে তোমরা যদি সন্দিহান হও তবে তৎ সদৃশ একটি 'সূরা' তৈরি করে নিয়ে এসো এবং আল্লাহ্ ব্যতীত তোমাদের সাহায্যকারীদেরকেও ডেকে নাও; যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

وَأَنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا
فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّمَّنْ مِثْلِهِ ۖ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ
مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿۳۷﴾

২৪. অনন্তর যদি তোমরা তা করতে না পার এবং তোমরা তা কখনও করতে পারবে না, তা হলে তোমরা সেই জাহান্নামকে ভয় কর যার ইন্ধন মানুষ ও প্রস্তরপুঞ্জ যা অবিশ্বাসীদের জন্যে প্রস্তুত করে রাখা হয়েছে।

إِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَكُنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ
الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۗ
أَعَدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿۳۸﴾

২৫. আর যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকার্যবলী সম্পাদন করে থাকে, তাদেরকে সুসংবাদ প্রদান কর যে, তাদের জন্যে এমন বেহেশত রয়েছে যার তলদেশ দিয়ে নদীসমূহ প্রবাহিত হতে থাকবে; যখন তা হ'তে তাদেরকে উপজীবিকার জন্যে ফলপুঞ্জ প্রদান করা হবে তখন তারা বলবে— আমাদের এটা তো পূর্বেই

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا
مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي
رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ
فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿۳ۯ﴾

১। আবু ওয়ায়েল থেকে বর্ণিত, তিনি আমার বিন সুরাহবিল থেকে এবং তিনি আব্দুল্লাহ্ বিন মাস'উদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেন যে, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করেছিলাম যে, আল্লাহর নিকট সবচেয়ে বড় গোনাহ কোনটি? তিনি বললেন যে, তুমি আল্লাহর সাথে কাউকে শরীক কর, অথচ তিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন। আমি বললাম নিচয়ই এটি একটি বড় গোনাহ। এরপর কোনটি? তিনি বললেনঃ তোমার সাথে আহার গ্রহণ করবে এই ভয়ে তোমার সন্তানকে হত্যা করা। আমি বললাম এর পর কোনটি? তিনি বললেনঃ তোমার প্রতিবেশীর স্ত্রীর সাথে জিন্দা (ব্যভিচার) করা। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৭)

প্রদত্ত হয়েছিল এবং তাদেরকে এর দ্বারা ওর সদৃশ প্রদান করা হবে এবং তাদের জন্যে তন্মধ্যে পবিত্র সহধর্মিনীগণ থাকবে এবং সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

২৬. নিশ্চয় আল্লাহ মশা অথবা তদপেক্ষা ক্ষুদ্রতর দৃষ্টান্ত বর্ণনা করতে লজ্জাবোধ করেন না, সুতরাং যারা ঈমান এনেছে তারা তো বিশ্বাস করবে যে, এ উপমা তাদের প্রভুর পক্ষ হতে খুবই স্থানোপযোগী হয়েছেঃ আর যারা কাফির হয়েছে, সর্বাবস্থায় তারা এটাই বলবে এসব নগণ্য বস্তুর উপমা দ্বারা আল্লাহর উদ্দেশ্যই বা কি? তিনি এর দ্বারা অনেককে বিপথগামী করে থাকেন এবং এর দ্বারা অনেককে সঠিক পথ প্রদর্শন করেন, আর এর দ্বারা তিনি শুধু ফাসিকদেরকেই (পাপীষ্ট, অনাচারী) বিপথগামী করে থাকেন।

২৭. যারা আল্লাহর সঙ্গে দৃঢ়ভাবে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হওয়ার পর তা ভঙ্গ করে এবং ঐসব সম্বন্ধ ছিন্ন করে যা অবিচ্ছিন্ন রাখতে আল্লাহ নির্দেশ দিয়েছেন এবং যারা ভূপৃষ্ঠে বিবাদ সৃষ্টি করে, তারাই পূর্ণ ক্ষতিগ্রস্ত।^১

২৮. কিরূপে তোমরা আল্লাহকে অশ্রদ্ধা করছো? অথচ তোমরা নিরীহ ছিলে, পরে তিনিই তোমাদেরকে সঞ্জীবিত করেছেন,

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ط فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ؕ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا كُبِضُ بِهِ كَثِيرًا ۖ وَيَهْدَىٰ بِهِ كَثِيرًا ط وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

الَّذِينَ يَبْعُثُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ط أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ؕ ثُمَّ يُمِيتَكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾

১। ইবনে সিহাব থেকে বর্ণিত, তিনি মুহাম্মাদ বিন জুবাইর বিন মুতয়িম থেকে বর্ণনা করেন, জুবাইর বিন মুতয়িম তাকে জানিয়েছেন যে, নিশ্চয়ই তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছে যে আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্নকারী জান্নাতে প্রবেশ করবেনা। (বুখারী, হাদীস নং ৫৯৮৪)

পুনরায় তিনি তোমাদেরকে নির্জীব করবেন, পরে আবার জীবন্ত করবেন, অবশেষে তোমাদেরকে তাঁরই দিকে প্রতিগমন করতে হবে।

২৯. তিনি তোমাদের জন্যে পৃথিবীতে যা কিছু আছে— সমস্তই সৃষ্টি করেছেন; অতঃপর তিনি আকাশের প্রতি মনঃসংযোগ করেন, অতঃপর সপ্ত আকাশ সুবিন্যস্ত করেন এবং তিনি সর্ব বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

৩০. এবং যখন তোমার রব ফেরেশতাগণকে বললেনঃ নিশ্চয় আমি পৃথিবীতে প্রতিনিধি সৃষ্টি করবো, তারা বললোঃ আপনি কি যমীনে এমন কাউকে সৃষ্টি করবেন যে, তারা সেখানে বিবাদ সৃষ্টি করবে এবং রক্তপাত করবে? আর আমরাই তো আপনার প্রশংসা গুণগান করছি এবং আপনারই পবিত্রতা বর্ণনা করে থাকি। তিনি বললেনঃ নিশ্চয় আমি যা পরিষ্কৃত আছি তা তোমরা অবগত নও।

৩১. এবং তিনি আদমকে সমস্ত নাম শিক্ষা দিলেন,^১ অনন্তর তৎসমুদয় ফেরেশতাদের সামনে উপস্থাপিত করলেন; তৎপর বললেনঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে আমাকে এসব বস্তুর নামসমূহ জানাও।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ۗ وَّ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَّ یَسْفِكُ الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۗ قَالَ اِنِّىْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْبِئُوْنِیْ بِأَسْمَاءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٣١﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঈমানদারগণ কিয়ামতের দিন একত্রিত (সমবেত) হয়ে বলবেঃ আমরা আমাদের রবের কাছে কাউকে সুপারিশকারী নিয়োগ করছি না কেন? তাই তারা আদম (আলাইহিস্‌সালাম)—এর কাছে গিয়ে বলবে, আপনি সমগ্র মানব জাতির পিতা, আল্লাহ পাক আপনাকে নিজ হাতে সৃষ্টি করেছেন এবং তাঁর ফেরেশতা দিয়ে আপনাকে সিজদা করিয়েছেন আর সব কিছু জিনিসের নাম

৩২. তারা বলেছিল— আপনি পরম পবিত্র; আপনি আমাদেরকে যা শিক্ষা দিয়েছেন তদ্ব্যতীত আমাদের কোনই জ্ঞান নেই; নিশ্চয়ই আপনি মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

قَالُوا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۗ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۲﴾

আপনাকে শিখিয়েছেন। এ মসিবত থেকে রক্ষা পেয়ে যাতে আমরা শান্তি লাভ করতে পারি সেজন্য আপনি আপনার রবের কাছে আমাদের জন্য শাফায়াত করুন। তিনি বলবেনঃ আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তিনি তাঁর গোনাহের কথা স্মরণ করে লজ্জিত হবেন এবং বলবেনঃ তোমরা নূহের (আলাইহিস্‌সালাম) কাছে যাও। কারণ আল্লাহ পাক তাঁকে পৃথিবীবাসীর জন্য সর্বপ্রথম রাসূল হিসেবে পাঠিয়েছিলেন। তাই ঈমানদারগণ তাঁর (নূহ আলাইহিস্‌সালাম)-এর কাছে আসলে তিনি বলবেন, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তিনি আল্লাহর কাছে তাঁর সেই প্রার্থনার কথা স্মরণ করে লজ্জাবোধ করবেন, যে প্রার্থনা করার বিষয়ে তাঁর কোন জ্ঞান ছিল না। তাই তিনি বলবেন তোমরা বরং হযরত ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর কাছে যাও। সবাই তখন তাঁর নিকটে আসবেন। তিনিও বলবেন, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তোমরা বরং মুসা (আঃ)-এর কাছে যাও কারণ তিনি আল্লাহর এমন এক বান্দা, যার সঙ্গে আল্লাহ পাক কথা বলেছেন এবং তাঁকে তাওরাত কিতাব দান করেছিলেন। অতঃপর সবাই তাঁর (হযরত মুসা আলাইহিস্‌সালাম)-এর কাছে উপস্থিত হলে তিনিও তার অপারগতার কথা জানিয়ে বলবেন যে, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তিনি এক ব্যক্তিকে অন্যায়ভাবে হত্যা করার কারণে (শাফায়াতের জন্য) তার রবের সামনে যেতে লজ্জাবোধ করবেন। তিনি বলবেন, তোমরা বরং আল্লাহর বান্দা ও তাঁর রাসূল এবং আল্লাহর কালিমা ও রূহ ঈসার (আঃ) কাছে যাও। তিনিও তার অপারগতার কথা জানিয়ে বলবেন, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তোমরা বরং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে যাও। তিনি আল্লাহর এমন সম্মানিত বান্দা, আল্লাহ পাক যার আগের ও পরের সমস্ত পোনাহ্ মাফ করে দিয়েছেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন তখন সবাই আমার কাছে আসবে। আমি আমার রবের কাছে হাজির হওয়ার অনুমতি প্রার্থনা করবো। আমাকে অনুমতি দেয়া হবে। আমি আমার রবকে দেখামাত্র সিজদায় পড়ে যাবো। যতক্ষণ তিনি চাইবেন ততক্ষণ আমি সিজদার অবস্থায় থাকবো। অতঃপর আমাকে বলা হবে, আপনি মাথা উঠান আপনি প্রার্থনা করুন। যা প্রার্থনা করবেন, তা দেয়া হবে। আর যা বলতে চান বলুন, শুনা হবে। আর শাফায়াত করুন। আপনার শাফায়াত গ্রহণ করা হবে। তখন আমি মাথা উঠাবো এবং এমনভাবে আল্লাহর প্রশংসা করবো, যেভাবে আমাকে তিনি শিখিয়ে দিবেন। তার পর শাফায়াত করবো। শাফায়াত ব্যাপারে আমাকে একটি সীমা নির্দিষ্ট করে দেয়া হবে। (যারা সীমার মধ্যে পড়ে) তাদের সবাইকে জান্নাতে পৌঁছিয়ে আমি ফিরে আসবো। আমি আমার রবকে দেখামাত্র পূর্বের মত সিজদায় পড়ে যাবো। এবার পূর্ণবার আমাকে একটি সীমা নির্দিষ্ট করে দেয়া হবে। ঐ সীমার মধ্যে পড়ে এমন সবার জন্য আমি শাফায়াত করবো এবং তাদেরকে জান্নাতে পৌঁছিয়ে দেবো। এভাবে তৃতীয়বারও করবো। তারপর চতুর্থবারও ফিরে এসে বলবো। কুরআন যাদেরকে আটকিয়ে রেখেছে এবং যাদের জন্য স্থায়ীভাবে জাহান্নাম নির্ধারিত, এখন শুধু তারা ছাড়া আর কেউ দোযখে নেই। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৬)

আবু আব্দুল্লাহ্ (ইমাম বুখারী) বলেনঃ কুরআন যাদেরকে আটকিয়ে রেখেছে (তারা ছাড়া আর কেউ দোযখে নেই) এ কথার অর্থ হল আল্লাহর বান্দাঃ (خالدين فيها) “তারা স্থায়ীভাবে জাহান্নামে শান্তি ভোগ করবে।” (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৬)

৩৩. তিনি বলেছিলেন হে আদম, তুমি তাদেরকে ঐ সকলের নামসমূহ জানিয়ে দাও; অতঃপর যখন সে তাদেরকে ঐগুলোর নামসমূহ জানিয়ে দিল, তখন তিনি বলেছিলেনঃ আমি কি তোমাদেরকে বলিনি যে, নিশ্চয় আমি ভূমণ্ডল ও নভোমণ্ডলের অদৃশ্য বিষয় অবগত আছি এবং তোমরা যা প্রকাশ কর ও যা গোপন কর আমি তাও পরিজ্ঞাত আছি।

৩৪. এবং যখন আমি ফেরেশতা-গণকে বলেছিলাম যে, তোমরা আদমকে সিজদা কর, তখন ইবলিস ব্যতীত সকলে সিজদা করেছিল; সে অগ্রাহ্য করলো ও অহংকার করলো এবং কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

৩৫. এবং আমি বললাম হে আদম! তুমি ও তোমার সহধর্মিণী জান্নাতে অবস্থান কর এবং তা হতে যা ইচ্ছা স্বচ্ছন্দে ভক্ষণ কর; কিন্তু ঐ বৃক্ষের নিকটবর্তী হয়ো না— অন্যথা তোমরা অত্যাচারীগণের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

৩৬. অনন্তর শয়তান তাদের উভয়কে সেখান থেকে পদস্থলিত করলো, তৎপরে তারা যেখানে ছিল তথা হতে তাদেরকে বহির্গত করলো; এবং আমি বললাম— তোমরা নীচে নেমে যাও, তোমরা পরস্পর পরস্পরের শত্রু; এবং পৃথিবীতেই তোমাদের জন্যে এক নির্দিষ্টকালের অবস্থিতি ও ভোগ-সম্পদ রয়েছে।

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ الْغَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٧﴾

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ طُأْبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٨﴾

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

فَازْلَهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٠﴾

৩৭. অনন্তর আদম স্বীয় প্রতিপালক হতে কতিপয় বাক্য শিক্ষা করলেন, আল্লাহ তখন তাঁর তাওবা কবুল করে তাঁকে ক্ষমা করলেন। নিশ্চয় তিনি ক্ষমাশীল, করুণাময়।

৩৮. আমি বললামঃ তোমরা সবাই এখান (জান্নাত) হতে নিচে নেমে যাও; অনন্তর আমার পক্ষ হতে তোমাদের নিকট যে হেদায়েত উপস্থিত হবে পরে যে আমার সেই হেদায়েতের অনুসরণ করবে বশ্ততঃ তাদের কোনই ভয় নেই এবং তারা চিন্তিত হবে না।

৩৯. আর যারা অবিশ্বাস করবে ও আমার নিদর্শনসমূহে মিথ্যারোপ করবে তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা সদা অবস্থান করবে।

৪০. হে ইসরাঈল বংশধর, আমি তোমাদেরকে যে নেয়ামত দান করেছি তা স্মরণ কর এবং আমার অঙ্গীকার পূর্ণ কর, আমিও তোমাদের অঙ্গীকার পূর্ণ করবো এবং তোমরা শুধু আমাকেই ভয় কর।

৪১. এবং আমি যা অবতীর্ণ করেছি তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর, তোমাদের সাথে যা আছে তা তারই সত্যতা প্রমাণকারী এবং এতে তোমরাই প্রথম অবিশ্বাসী হয়ো না এবং আমার আয়াতসমূহের পরিবর্তে সামান্য মূল্য গ্রহণ করো না এবং তোমরা বরং আমাকেই ভয় কর।

৪২. আর তোমরা সত্যকে মিথ্যার সাথে মিশ্রিত করো না এবং সে সত্য

فَتَلَقَىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۗ
إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾

يٰٓبَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ ۗ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونَ ﴿٤٠﴾

وَأْمِنُوا بِمَا أُنزِلَتْ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۗ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾

وَلَا تَلْبَسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ ۗ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ

গোপন করো না যেহেতু তোমরা তা
অবগত আছ ৷

وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۳۷﴾

৪৩. আর তোমরা নামায প্রতিষ্ঠিত
কর ও যাকাত প্রদান কর এবং
রুকু'কারীদের সাথে রুকু' কর ।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا
مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿۳۸﴾

৪৪. তবে কি তোমরা লোকদেরকে
সৎকার্যে আদেশ করছো এবং
তোমাদের নিজেদের ভুলে যাচ্ছ—
অথচ তোমরা গ্রন্থ পাঠ কর; তবে কি
তোমরা হৃদয়ঙ্গম করছো না? ৷

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ
وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿۳۹﴾

৪৫. এবং তোমরা ধৈর্য ও নামাযের
মাধ্যমে সাহায্য প্রার্থনা কর এবং অবশ্যই
তা' কঠিন; কিন্তু বিনীতগণের পক্ষে নয় ।

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ
إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿۴০﴾

১। আতা ইবনে ইয়াসার (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ আমি আব্দুল্লাহ্ ইবনে আমার ইবনে আ'স (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর সাথে সাক্ষাত করে তাঁকে বললামঃ তাওরাতে বর্ণিত রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কিছু বৈশিষ্ট্যের কথা আমাকে অবহিত করুন। তিনি বললেন হ্যাঁ ঠিক কথা, আল্লাহর কসম! তাওরাতে তাঁর এমন কিছু বৈশিষ্ট্য ও গুণাবলী উল্লেখ রয়েছে যা কুরআনে বর্ণিত হয়েছে। “হে নবী! আমি তো তোমাকে পাঠিয়েছি সাক্ষীরূপে এবং সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রূপে।” (সূরাঃ আল-আহযাবঃ ৪৫) এবং অশিক্ষিতদের রক্ষাকারী হিসাবে প্রেরণ করেছি। তুমি আমার বান্দা এবং রাসূল। আমি তোমার নাম রেখেছি মুতাওয়াক্কিল বা ভরসাকারী, তিনি কঠিন হৃদয়ের অধিকারী নন, দুঃস্বপ্ন এবং বাজারে সোরগোল সৃষ্টিকারী নন, এবং তিনি কোন মন্দ দ্বারা মন্দকে প্রতিহতকারী নন। বরং তিনি ক্ষমা এবং মাফকারী এবং ততক্ষণ পর্যন্ত আল্লাহ্ তাঁকে দুনিয়া থেকে উঠিয়ে নিবেন না যতদিন না ব্রাহ্ম সমাজ সঠিক পথের দিশা পাবে। অর্থাৎ সমাজবাসী লা-ই-লাহা ইল্লাল্লাহর সাক্ষী দিবে এবং এর দ্বারা অন্ধের চোখ, বধিরের কান ও বন্ধ অস্ত্র খুলবে। (বুখারী, হাদীস নং ২১২৫)

২। সূলাইমান থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, আমি আবু ওয়েলকে বলতে শুনেছি। ওসামা (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলা হল যে, আপনি তাঁকে (ওসামান) (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে কিছু বলছেন না কেন? তিনি বললেন আমি তাঁকে গোপনে ব্যক্তিগতভাবে বলেছি। আর তা এজন্যই যে, আমি চাই না যে, তাঁর অনুপস্থিতিতে তাঁর বদনাম রটিয়ে সর্বপ্রথম আমি ফেতনা-ফ্যাসাদের দরজা খুলি। এবং আমি এটাও চাই না যে, যখন দুইজনের মধ্যে একজন আমীর নিযুক্ত হয় তখন তাঁকে সন্তুষ্ট করানোর জন্য বলব যে তুমি ভাল। কেননা আমি যখন থেকে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, কিয়ামতের দিন এক ব্যক্তিকে আনা হবে, অতঃপর তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে, এবং গাধা চক্রাকারে ঘুরে যেমন গম পিষে তেমন তাকে দোষে পিষ্ট করা হবে। (শান্তি দেওয়া হবে) এবং জাহান্নামবাসীরা চতুর্পার্শে সমবেত হয়ে জিজ্ঞেস করবে হে ওমুক ব্যক্তি তুমি কি আমাদেরকে পৃথিবীতে সৎকাজের আদেশ এবং অসৎ কাজের নিষেধ করতে না? সে বলবে আমি তোমাদেরকে সৎকাজের আদেশ দিতাম, অথচ নিজে তা, করতাম না এবং অসৎ কাজ থেকে নিষেধ করতাম কিন্তু নিজে তা, করতাম। (বুখারী, হাদীস নং ৭০৯৮)

৪৬. যারা ধারণা করে যে, নিশ্চয় তারা তাদের প্রতিপালকের সাথে সম্মিলিত হবে এবং তারা তাঁরই দিকে প্রতিগমন করবে।

الَّذِينَ يُظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقُوا رَبَّهُمْ وَإِنَّهُمْ إِلَيْهِ رُجْعُونَ ﴿٤٦﴾

৪৭. হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদেরকে যে নেয়ামত দান করেছি তা স্মরণ কর এবং নিশ্চয় আমি তোমাদেরকে সমগ্র পৃথিবীর উপর শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি।

يٰٓبَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

৪৮. এবং তোমরা সে দিবসকে ভয় কর, যেদিন কোন ব্যক্তি অন্য ব্যক্তি হতে কিছুমাত্র উপকৃত হবে না এবং কোন ব্যক্তি হতে কোন সুপারিশও গৃহীত হবে না, কোন ব্যক্তি হতে কোন বিনিময়ও গ্রহণ করা হবে না এবং তাদেরকে সাহায্য করাও হবে না।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يَقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾

৪৯. এবং যখন আমি তোমাদেরকে ফির'আউনের সম্প্রদায় হতে বিমুক্ত করেছিলাম— তারা তোমাদেরকে কঠোর শাস্তি প্রদান করতো, তোমাদের পুত্রগণকে হত্যা করতো ও তোমাদের কন্যাগণকে জীবিত রাখতো এবং এতে তোমাদের প্রতিপালক হতে তোমাদের জন্যে মহাপরীক্ষা ছিল।

وَإِذْ نَجَّيْنَاكُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يَدَّبْحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذُلِّكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾

৫০. এবং যখন আমি তোমাদের জন্য সমুদ্রকে বিভক্ত করেছিলাম, তৎপর তোমাদেরকে উদ্ধার করেছিলাম ও ফির'আউনের স্বজনবৃন্দকে নিমজ্জিত করেছিলাম এমতাবস্থায় তোমরা তা প্রত্যক্ষ করছিলে।

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَآغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾

৫১. এবং যখন আমি মূসার সঙ্গে চল্লিশ রজনীর অঙ্গীকার করেছিলাম, অনন্তর

وَإِذْ عَدَدْنَا مَوْثِقَ آلِ مُوسَىٰ لِيَلْبَنَّا لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ثُمَّ أَخَذْنَا

তার পরে তোমরা গো-বৎসকে (মা'বুদ হিসেবে) গ্রহণ করেছিলে এবং তোমরা অত্যাচারী ছিলে।

৫২. তা সত্ত্বেও আমি তোমাদেরকে মার্জনা করেছিলাম— যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

৫৩. আর যখন আমি মূসাকে গ্রহণ ও ফুরকান (প্রভেদকারী) দিয়েছিলাম, যেন তোমরা সুপথ প্রাপ্ত হও।

৫৪. আর যখন মূসা (ﷺ) স্বীয় সম্প্রদায়কে বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! নিশ্চয় তোমরা গো-বৎসকে (ইবাদতের জন্যে) গ্রহণ করে তোমাদের নিজেদের প্রতি অত্যাচার করেছো; অতএব তোমরা তোমাদের সৃষ্টিকর্তার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, আর তোমরা পরস্পরকে হত্যা কর তোমাদের সৃষ্টিকর্তার নিকট এটাই তোমাদের জন্য কল্যাণকর; অনন্তর তিনি তোমাদের প্রতি ক্ষমা দান করেছিলেন, নিশ্চয় তিনি ক্ষমাশীল, করুণাময়।

৫৫. এবং যখন তোমরা বলেছিলেঃ হে মূসা! আমরা আল্লাহকে প্রকাশ্যভাবে দর্শন না করা পর্যন্ত তোমাকে বিশ্বাস করবো না— তখন বিদ্যুৎ (বজ্র) তোমাদেরকে আক্রমণ করেছিল ও তোমরা তা প্রত্যক্ষ করেছিলে।

৫৬. তৎপর তোমাদের মৃত্যুর পর আমি তোমাদেরকে সঞ্জীবিত করেছিলাম, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

الْعَجَلِ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥١﴾

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾

وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَى بَارِيكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ عِنْدَ بَارِيكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَى لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾

ثُمَّ بَعَثْنَاكُمْ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾

৫৭. এবং আমি তোমাদের উপর মেঘমালার ছায়া দান করেছিলাম এবং তোমাদের প্রতি 'মান্না'^১ ও 'সালওয়া' অবতীর্ণ করেছিলাম; আমি তোমাদের যে উপজীবিকা দান করেছি সে পবিত্র জিনিস হতে ভক্ষণ কর; এবং তারা আমার কোন অনিষ্ট করেনি, বরং তারা নিজেদেরই অনিষ্ট করেছিল।

৫৮. এবং যখন আমি বললামঃ তোমরা এ নগরে প্রবেশ কর, অতঃপর তা হতে ইচ্ছামত ভক্ষণ কর এবং নতশিরে দ্বারে প্রবেশ কর ও তোমরা বলঃ আমরা ক্ষমা প্রার্থনা করছি, তাহলে আমি তোমাদের অপরাধসমূহ ক্ষমা করবো এবং অচিরেই সৎকর্মশীলগণকে অধিকতর দান করবো।

৫৯. অনন্তর যারা অত্যাচার করেছিল— তাদেরকে যা বলা হয়েছিল, তৎপরিবর্তে তারা সে কথার পরিবর্তন করলো, পরে অত্যাচারীরা যে দুষ্কার্য করেছিল, তজ্জন্যে আমি তাদের উপর আকাশ হতে শাস্তি অবতীর্ণ করেছিলাম।^২

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّٰنَ
وَالسَّلْوَىٰ طُكُّوْا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا
ظَلَمُونَا وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا
حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَبِّحُوا
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ
فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾

১। সাঈদ বিন যয়েদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ব্যাণ্ডের ছাতা, 'মান্না' (একপ্রকার খাদ্য যা আল্লাহ বনী ইসরাঈলের জন্য আকাশ থেকে প্রত্যহ অবতীর্ণ করতেন) এবং এর পানি চোখের আরোগ্য। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৮)

২। আমের বিন সা'দ বিন আবি ওয়াল্লাস সে তার পিতা থেকে বর্ণনা করেন যে, নিশ্চয়ই সে তার পিতাকে ওসামা বিন যয়েদকে জিজ্ঞেস করতে শুনেছেন যে, আপনি তাউন (প্লেগ মহামারী) সম্পর্কে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট থেকে কি কিছু শুনেছেন? ওসামা বললেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ প্লেগ মহামারী এক প্রকার আসমানী গজব যা সর্ব প্রথম বনি ইসরাঈলের এক ফ্রুপের উপর আপতিত হয়েছিল। অথবা যারা তোমাদের পূর্বে ছিল তাদের উপর আপতিত হয়েছিল। যখন স্তনবে যে কোন এলাকায় এ রোগ দেখা দিয়েছে, তখন তোমরা সেখানে যেও না। আর যদি এমন জায়গায় ছড়িয়ে পড়ে যেখানে তোমরা অবস্থান করছ, তাহলে পালানোর উদ্দেশ্যে সেখান থেকে অন্য

৬০. এবং যখন মূসা (عليه السلام) স্বীয় সম্প্রদায়ের জন্যে পানি প্রার্থনা করেছিলেন তখন আমি বলেছিলাম তুমি স্বীয় লাঠি দ্বারা প্রস্তরে আঘাত কর; অনন্তর তা হতে বারটি ঝর্ণা প্রবাহিত হলো; প্রত্যেকেই স্ব-স্ব ঘাট জেনে নিল; তোমরা আল্লাহর উপজীবিকা হতে ভক্ষণ কর ও পান কর এবং পৃথিবীতে শান্তি ভঙ্গকারী রূপে বিচরণ করো না।

৬১. এবং যখন তোমরা বলেছিলেঃ হে মূসা, আমরা একইরূপ খাদ্যে ধৈর্যধারণ করতে পারি না, অতএব তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রভুর নিকট প্রার্থনা কর— যেন তিনি আমাদের জন্মভূমিতে যা উৎপন্ন হয়, তা হতে শাক-সজ্জি, কাঁকড়, গম, মসুর এবং পেঁয়াজ উৎপাদন করেন; সে বলেছিলঃ যা উৎকৃষ্ট তোমরা কি তার সঙ্গে যা নিকৃষ্ট তার বিনিময় করতে চাও? কোন নগরে উপনীত হও প্রার্থিত দ্রব্যগুলো অবশ্যই প্রাপ্ত হবে এবং তাদের উপর লাঞ্ছনা ও দারিদ্র নিপতিত হলো এবং তারা আল্লাহর ক্রোধে পতিত হলো এহেতু যে, নিশ্চয় তারা আল্লাহর নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করতো ও অন্যায়ভাবে নবীগণকে হত্যা করতো; এবং এ কারণেও যে, তারা অবাধ্যাচরণ করেছিল ও সীমা অতিক্রম করেছিল।

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرِبَهُمْ كَلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رَزَقِ اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُثْمِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّيْهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصِلَهَا ۗ قَالَ اسْتَبْدِلُونِ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۗ إِهِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّلِيلَةُ ۗ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝

কোথাও চলে যেও না। আবু নজর বলেনঃ এর অর্থ হল— পালিয়ে যাওয়ার উদ্দেশ্যে যেন সে এলাকা ত্যাগ না করে। (অন্য কোন প্রয়োজনে যেতে কোন বাধা নেই।) ওখান থেকে বের হইও না। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৭৩)

৬২. নিশ্চয় মুসলমান, ইয়াহুদী, খ্রিস্টান এবং সাবেঈন সম্প্রদায়, (এদের মধ্যে) যারা আল্লাহর প্রতি ও কিয়ামতের প্রতি বিশ্বাস রাখে এবং ভাল কাজ করে, তাদের জন্যে তাদের প্রভুর নিকট পুরস্কার রয়েছে, তাদের কোন প্রকার ভয় নেই এবং তারা চিন্তিতও হবে না।

৬৩. এবং যখন আমি তোমাদের অস্বীকার গ্রহণ করেছিলাম এবং তোমাদের উপর তুর পর্বত সমুচ্চ করেছিলাম যে, আমি তোমাদেরকে যা দিয়েছি (কিতাব) তা দৃঢ়রূপে ধারণ কর এবং এতে যা আছে তা স্মরণ কর— যাতে তোমরা নিষ্কৃতি পেতে পারে।

৬৪. এরপর পুনরায় তোমরা ফিরে গেলে, অতএব যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ এবং তাঁর করুণা না থাকতো, তবে অবশ্য তোমরা বিনাশ প্রাপ্ত হতে।

৬৫. এবং অবশ্যই তোমরা অবগত আছ যে, তোমাদের মধ্যে যারা শনিবারের সীমা লংঘন করেছিল, আমি তাদেরকে বলেছিলাম যে, তোমরা ঘৃণিত বানর হয়ে যাও।

৬৬. অনন্তর আমি এটা তাদের সমসাময়িক ও তাদের পরবর্তীদের জন্যে শিক্ষা এবং আল্লাহ্ ভীরুগণের জন্যে উপদেশ স্বরূপ করেছিলাম।

৬৭. এবং যখন মূসা (عليه السلام) নিজ সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ নিশ্চয় আল্লাহ, তোমাদেরকে আদেশ

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّالِيْنَ
وَالصَّابِغِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ
فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِرِينَ ﴿٦٥﴾

فَجَعَلْنَاهَا لَكُلِّهَا لَيْسَ بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ
أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُرُوطًا

করছেন যে, তোমরা একটি গরু 'যবহ' কর, তারা বলেছিলঃ তুমি কি আমাদেরকে উপহাস করছ? তিনি বলেছিলেন, আমি আল্লাহর নিকট আশ্রয় প্রার্থনা করছি, যেন আমি মূর্খদের অন্তর্গত না হই।

৬৮. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা কর যে, তিনি আমাদেরকে যেন সেটা কি কি গুণ বিশিষ্ট হওয়া দরকার তা বলে দেন, তিনি বলেছিলেনঃ তিনি (আল্লাহ) বলেছেন যে, নিশ্চয় সেই গরু বয়োবৃদ্ধ নয় এবং শাবকও নয়—এ দুয়ের মধ্যবর্তী, অতএব তোমরা যেরূপ আদিষ্ট হয়েছে তা করে ফেল।

৬৯. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রভুর নিকট প্রার্থনা কর যে, তিনি ওর বর্ণ কিরূপ তা আমাদেরকে বলে দেন; তিনি বলেছিলেনঃ আল্লাহ বলেছেন যে, নিশ্চয় গরুও বর্ণ গাঢ় পীত, ওটা দর্শকগণকে আনন্দ দান করে। (দৃষ্টি নন্দন)

৭০. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা কর যে, তিনি যেন ওটা কিরূপ তা আমাদের জন্যে বর্ণনা করেন, কেননা আমাদের নিকট সকল গরুই একই ধরণের এবং আল্লাহ ইচ্ছা করলে আমরা সুপথগামী হবো।

قَالَ اَعُوذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۶۷﴾

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۗ قَالَ اِنَّهُ
يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقْرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بَكْرٌ ۗ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَلِكَ ۗ فَاَعْلَمُوْا مَا تُوْمَرُوْنَ ﴿۶۸﴾

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا ۗ
قَالَ اِنَّهُ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقْرَةٌ صَفْرَاءٌ
فَاقْبَحْ لَوْنُهَا تَسْرُّ النَّظْرِيْنَ ﴿۶۹﴾

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۗ
اِنَّ الْبَقَرَ تَشْبَهُ عَلَيْنَا وَاِنَّا لَآرِ
سَاءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۷۰﴾

৭১. তিনি বললেনঃ নিশ্চয় তিনি বলেছেন যে, অবশ্যই সে গরু সুস্থকায়, নিষ্কলংক, গুটা কর্ম বা ভূ-কর্মণের জন্যে লাগানো হয়নি এবং ক্ষেতে পানি সেচনেও নিযুক্ত হয়নি, তারা বলেছিল—এক্ষণে তুমি সত্য প্রকাশ করেছ, অতঃপর তারা গুটা যবাহ্ করলো যা তাদের করবার ইচ্ছা ছিল না।

৭২. এবং যখন তোমরা এক ব্যক্তিকে হত্যা করার পর তদ্বিষয়ে বিরোধ করেছিলে এবং তোমরা যা গোপন করেছিলে আল্লাহ তার প্রকাশকারী।

৭৩. তৎপর আমি বলেছিলামঃ ওর (গাভীর) কিছু অংশ দ্বারা তাকে (মৃতকে) আঘাত কর; এই রূপে আল্লাহ মৃতকে জীবিত করেন এবং স্বীয় নিদর্শনসমূহ প্রদর্শন করেন—যাতে তোমরা হৃদয়ঙ্গম কর।

৭৪. অনন্তর এরপর তোমাদের হৃদয় প্রস্তরের ন্যায় কঠিন বরং তদপেক্ষা কঠিনতর হলো এবং নিশ্চয় প্রস্তর হতেও প্রস্রবণ নির্গত হয় এবং নিশ্চয় সেগুলোর মধ্যে কোন কোনটি বিদীর্ণ হয়, তৎপরে তা হতে পানি নির্গত হয় এবং নিশ্চয় ঐগুলোর মধ্যে কোনটি আল্লাহর ভয়ে পতিত হয়, এবং তোমরা যা করছো তৎপ্রতি আল্লাহ অমনোযোগী নন।

৭৫. তোমরা কি আশা কর যে, তোমাদের কথায় তারা ঈমান আনবে? অথচ তাদের মধ্যে এমন

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولَ تُثِيرُ
الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ
فِيهَا ط قَالُوا لَنْ نَجِدَ بِالْحَقِّ ط فَاذْبَحُوهَا
وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

وَأَذَقْتُمْ نَفْسًا فَاذْرَعْتُمْ فِيهَا ط وَاللَّهُ مُخْرِجٌ
مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

فَلَمَّا أَضْرَبُوهَا بَعْضُهَا ط كَذَلِكَ يُعْجِبُ اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ ط وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ
كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ط وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ
لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ط وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشْفَقُ
فِيخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ط وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ
خَشْيَةِ اللَّهِ ط وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ
مِنْهُمْ يَسْعَوْنَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يَحْرَفُونَهُ

কতক লোক গত হয়েছে যারা আল্লাহর কালাম শুনতো, অতঃপর তাকে বুঝার পর তাকে বিকৃত করতো, অথচ তারা জানতো।

৭৬. আর যখন তারা মু'মিনদের সাথে মিলিত হয় তখন বলে—আমরা ঈমান এনেছি, আর যখন তাদের কেউ কারও (ইয়াহুদীদের) নিকট একাকী হয়, তখন তারা বলেঃ তোমরা কি মুসলমানদেরকে এমন কথা বলে দাও যা আল্লাহ তোমাদের নিকট প্রকাশ করেছেন? পরিণামে তারা তোমাদেরকে তোমাদের প্রতি-পালকের সম্মুখে তর্কে পরাজিত করবে। তোমরা কি বুঝ না?

৭৭. তারা কি জানেনা যে, তারা যা শুণ্ড রাখে এবং যা প্রকাশ করে আল্লাহ সবই জানেন?

৭৮. এবং তাদের মধ্যে অনেক অশিক্ষিত লোক আছে, যারা প্রবৃত্তি ব্যতীত কোন গ্রন্থ অবগত নয় এবং তারা শুধু কল্পনাসমূহ রচনা করে থাকে।

৭৯. তাদের জন্যে আফসোস! যারা স্বহস্তে পুস্তক রচনা করে এবং পার্থিব তুচ্ছ স্বার্থের জন্য বলে যেঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে সমাগত—তাদের হস্ত যা লিপিবদ্ধ করেছে তজ্জন্যে তাদের প্রতি আক্ষেপ এবং তারা যা উপার্জন করছে তজ্জন্যে তাদের প্রতি আক্ষেপ!

৮০. এবং তারা বলেঃ নির্ধারিত দিবসসমূহ ব্যতীত (জাহান্নামের)

مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٦﴾

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بِبَعْضِهِمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٧﴾

وَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٨﴾

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيًّا وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٩﴾

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُمُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٨٠﴾

وَقَالُوا لَنْ نَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً ﴿٨١﴾

অগ্নি আমাদেরকে স্পর্শ করবে না, তুমি বলঃ তোমরা কি আল্লাহর নিকট হতে অঙ্গীকার নিয়েছো, ফলে আল্লাহ কখনই স্বীয় অঙ্গীকারের অন্যথা করবেন না? অথবা আল্লাহ সম্বন্ধে যা জানো না তোমরা তাই বলছো?

৮১. হ্যাঁ, যে ব্যক্তি পাপ অর্জন করেছে এবং স্বীয় পাপের দ্বারা পরিবেষ্টিত হয়েছে, বস্তুতঃ তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, তথায় তারা সদা অবস্থান করবে।

৮২. এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকর্ম করেছে তারা জাহান্নামবাসী, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

৮৩. আর যখন আমি বানী ইসরাঈল হতে অঙ্গীকার নিয়েছিলাম যে, তোমরা আল্লাহ ব্যতীত আর কারো ইবাদত করবে না। পিতা-মাতার সঙ্গে সদ্ব্যবহার করবে ও আত্মীয়দের, অনাথদের ও মিসকিনদের^১ সঙ্গেও (সদ্ব্যবহার করবে), আর তোমরা লোকের সাথে উত্তমভাবে কথা বলবে এবং নামায প্রতিষ্ঠিত করবে ও যাকাত প্রদান করবে; তৎপর তোমাদের মধ্য হতে অল্প সংখ্যক ব্যতীত তোমরা সকলেই বিমুখ হয়েছিলে, যেহেতু তোমরা অগ্রাহ্যকারী ছিলে।

قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٣﴾

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٤﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিচয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি লোকের দুয়ারে দুয়ারে ঘুরে বেড়ায় এবং দু'এক লোকমা বা গ্রাস অথবা দু'একটি খেজুর পেয়ে ফিরে যায় সে প্রকৃত মিসকীন নয়; বরং প্রকৃত মিসকীন ঐ ব্যক্তি যার এমন সম্বল নেই যা তাকে অভাবমুক্ত রাখে। অথচ তার অবস্থাও কারো অজ্ঞাত নয় যে, তাকে কেউ কিছু দান করে এবং সেও লোকের নিকট গিয়ে মুখ খুলে কিছু চায় না। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৭৯)

৮৪. এবং আমি যখন তোমাদের অঙ্গীকার গ্রহণ করছিলাম যে পরস্পর রক্তপাত করবে না এবং স্বীয় বাসস্থান হতে আপন ব্যক্তিদেরকে বহিষ্কৃত করবে না; তৎপরে তোমরা স্বীকৃতি দিয়েছিলে এবং তোমরাই ওর সাক্ষী ছিলে।

৮৫. অনন্তর তোমরাই সেই লোক যারা (পরস্পর) তোমাদের নফস্ সমূহকে হত্যা করছো এবং তোমরা তোমাদের মধ্য হতে এক দলকে তাদের গৃহ হতে বহিষ্কৃত করে দিচ্ছ, তাদের প্রতি শত্রুতাবশতঃ অসৎ উদ্দেশ্যে পরস্পরের বিরুদ্ধে সাহায্য করছো এবং তারা বন্দী হয়ে তোমাদের নিকট আসলে তোমরা তাদেরকে বিনিময় প্রদান কর; অথচ তাদেরকে বহিষ্কৃত করা তোমাদের জন্যে অবৈধ; তবে কি তোমরা এত্বের কিয়দংশ বিশ্বাস কর ও কিয়দংশ অবিশ্বাস কর? অতএব তোমাদের মধ্যে যারা এরূপ করে তাদের পার্থিব জীবনে দুর্গতি ব্যতীত কিছুই নেই এবং কিয়ামত দিবসে তারা কঠোর শাস্তির দিকে নিষ্ক্ষিপ্ত হবে এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ্ তদ্বিষয়ে অমনোযোগী নন।

৮৬. এরাই পরকালের বিনিময়ে পার্থিব জীবন ক্রয় করেছে; অতএব তাদের দন্ড লঘু হবে না ও তারা সাহায্য প্রাপ্ত হবে না।

৮৭. এবং অবশ্যই আমি মুসাকে (ﷺ) গ্রন্থ প্রদান করেছি ও

وَأَذِّنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ
وَلَا تَخْرُجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ
أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تُشْهَدُونَ ﴿٨٥﴾

ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتَخْرُجُونَ
فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِمْ
بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَإِنْ يَأْتُوكُمْ أُسْرَى
فَأَقْتُوا مِنْهُمْ وَهُمْ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ
أَفْتَوْمُنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ
فَمَا جَزَاءٌ مَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَى أَشَدِّ
الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٦﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٨٧﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ

তারপরে ক্রমান্বয়ে রাসূলগণকে প্রেরণ করেছি; এবং আমি মরিয়ম পুত্র ঈসাকে নিদর্শনসমূহ প্রদান করেছিলাম এবং পবিত্র আত্মা যোগে তাকে শক্তি সম্পন্ন করেছিলাম; কিন্তু পরে যখন তোমাদের নিকট কোন রাসূল— তোমাদের প্রবৃত্তি যা ইচ্ছে করতো না, তা নিয়ে উপস্থিত হলো তখন তোমরা অহংকার করলে; অবশেষে একদলকে মিথ্যাবাদী বললে এবং একদলকে হত্যা করলে।

৮৮. এবং তারা বলে যে, আমাদের হৃদয় আচ্ছাদিত। বরং তাদের অবিশ্বাসের জন্যে আল্লাহ তাদেরকে অভিসম্পাত করেছেন— যেহেতু তারা অতি অল্পই বিশ্বাস করে।

৮৯. এবং যখন আল্লাহর পক্ষ হতে তাদের নিকট যা আছে তার সত্যতা সমর্থক গ্রন্থ উপস্থিত হলো এবং পূর্ব হতেই তারা কাফিরদের নিকট তা বর্ণনা করতো, অতঃপর যখন তাদের নিকট সেই পরিচিত কিতাব আসলো, তখন তারা তাকে অস্বীকার করে বসলো, সুতরাং এরূপ কাফিরদের উপর আল্লাহর লা'নত বর্ষিত হোক।

৯০. তারা নিজ জীবনের জন্যে যা ক্রয় করেছে তা নিকৃষ্ট, যেহেতু আল্লাহ তাঁর দাসগণের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা স্বীয় অনুগ্রহ অবতারণ করেন— শুধু এ কারণে আল্লাহ্ যা অবতীর্ণ করেছেন, তারা বিদ্রোহবশতঃ তা অবিশ্বাস করছে, অতঃপর তারা কোপের পর কোপে পতিত হয়েছে, এবং কাফিরদের জন্যে রয়েছে অবমাননাকর শাস্তি।

بِالرُّسُلِ وَأَتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ
وَآتَيْنَاهُ بَرُوحَ الْقُدُسِ ط أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ
رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ
فَقَرِيفًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيفًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٨﴾

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ ط بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ
فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٩﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَهُمْ ۗ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى
الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا
بِهِ فَلَعَنَهُ اللَّهُ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٩٠﴾

بِئْسَ مَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ
اللَّهُ بَعِيًّا أَنْ يُنَزَّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ فَبَاءُ وَبِعَضْبٍ عَلَى غَضْبٍ ط
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩٠﴾

৯১. এবং যখন তাদেরকে বলা হয় যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তা বিশ্বাস কর, তখন তারা বলে— যা আমাদের প্রতি অবতীর্ণ করা হয়েছে আমরা তার প্রতি বিশ্বাস করি, এবং তাছাড়া যা রয়েছে তা তারা অবিশ্বাস করে, অথচ এটা সত্য, তাদের সাথে যা আছে এটা তারই সত্যায়িতকারী; তুমি বলঃ যদি তোমরা বিশ্বাসীই ছিলে, তবে ইতিপূর্বে কেন আল্লাহর নবীগণকে হত্যা করেছিলে?

৯২. এবং নিশ্চয়ই মূসা (عليه السلام) উজ্জ্বল নিদর্শনাবলীসহ তোমাদের নিকট উপস্থিত হয়েছিলেন, অনন্তর তোমরা তার পরে গোবৎস গ্রহণ করেছিলে, যেহেতু তোমরা অত্যাচারী ছিলে।

৯৩. এবং যখন আমি তোমাদের অস্বীকার গ্রহণ করেছিলাম এবং তোমাদের উপর তুর পর্বত সমুচ্চ করেছিলাম। আমি যা প্রদান করলাম তা দৃঢ়রূপে ধারণ কর এবং শ্রবণ কর তারা বলেছিলঃ আমরা শুনলাম ও অমান্য করলাম; এবং তাদের অবিশ্বাসের নিমিত্তে তাদের অন্তর-সমূহে গো-বৎস প্রীতি বদ্ধমূল হয়েছিল; তুমি বলঃ যদি তোমরা বিশ্বাসী হও, তবে তোমাদের বিশ্বাস যা কিছু আদেশ করছে তা অত্যন্ত নিন্দনীয়।

৯৪. তুমি বলঃ যদি অপর ব্যক্তিগণ অপেক্ষা তোমাদের জন্যে আল্লাহর

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ امْنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا تَنْزِيلٌ مِنْ بِنَاءٍ أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيََاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهَا وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ ۖ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْبِعُوا مَا قَالُوا اسْبِعُوا وَعَصَيْنَا ۗ وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۗ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيسَاءُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ

নিকট বিশেষ পারলৌকিক বাসস্থান থাকে, তবে তোমরা মৃত্যু কামনা কর, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

৯৫. এবং তাদের হস্তসমূহ পূর্বে যা প্রেরণ করেছে তজ্জনে তারা কখনই তা (মৃত্যু) কামনা করবে না; এবং আল্লাহ অত্যাচারীদের সম্বন্ধে সবিশেষ অবগত আছেন।

৯৬. এবং নিশ্চয়ই তুমি তাদেরকে অন্যান্য লোক এবং অংশীবাদীদের অপেক্ষাও অধিকতর আয়ু আকাজক্ষী পাবে; তাদের মধ্যে প্রত্যেকে কামনা করে সে যেন হাজার বছর আয়ু প্রাপ্ত হয় এবং দীর্ঘায়ুও তাকে শাস্তি হতে মুক্ত করতে পারবে না এবং তারা যা করছে আল্লাহ তার মহা পরিদর্শক।

৯৭. তুমি বল— যে ব্যক্তি জিবরাঈলের সাথে শত্রুতা রাখে তিনিই তো সে আল্লাহর হুকুমে এ কুর'আনকে তোমার অন্তঃকরণ পর্যন্ত পৌঁছিয়েছেন, যে অবস্থায় তা স্বীয় পূর্ববর্তী কিতাবসমূহের সত্যতা প্রমাণ করছে, পথ দেখাচ্ছে মু'মিনদের ও সুসংবাদ দিচ্ছে।

৯৮. যে ব্যক্তি আল্লাহ, তাঁর ফেরেশ-তাগণের, তাঁর রাসূলগণের, জিবরাঈলের এবং মিকায়িলের শত্রু হয়, নিশ্চয়ই আল্লাহ এরূপ কাফিরদের শত্রু।

৯৯. এবং নিশ্চয় আমি তোমার প্রতি উজ্জ্বল নিদর্শনসমূহ অবতীর্ণ করেছি এবং দুষ্কার্যকারী ব্যতীত কেউই তা অবিশ্বাস করবে না।

خَالِصَةً مِّنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَتُّواْ الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٥﴾

وَلَنْ يَّتَمَتُّوْهُ اَبَدًا بِمَا قَدَّمْتْ اَيْدِيْهِمْ ط
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٦﴾

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوَتِهِمْ وَاَمِّنَ
الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ؕ يُوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يَّعْتَزَّ اَلْفَ
سَنَةٍ ؕ وَمَا هُوَ بِمَرْجُوْهِ مِنَ الْعَذَابِ اِنَّ
يُّعْتَزَّلُ وَاللّٰهُ بِصِيْرَتِهِمْ اَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلْجَبْرِیْلِ فَاِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلٰى
قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٨﴾

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلّٰهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ
وَجِبْرِیْلِ وَمِیْكَئِلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِيْنَ ﴿٩٩﴾

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَا اِلَيْكَ اٰیٰتٍ بَيِّنٰتٍ ؕ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا
اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. কি আশ্চর্য যখন তারা কোন অঙ্গীকারে আবদ্ধ হলো তখনই তাদের একদল তা ভঙ্গ করলো! বরং তাদের অধিকাংশই বিশ্বাস করে না।

১০১. এবং যখন আল্লাহর নিকট হতে তাদের নিকট যা আছে তার সত্যায়িতকারী রাসূল তাদের কাছে আগমন করলো, তখন যাদেরকে গ্রন্থ দেয়া হয়েছে তাদের একদল আল্লাহর গ্রন্থকে নিজেদের পশাড্ডাগে নিক্ষেপ করলো, যেন তারা কিছুই জানে না।

১০২. এবং সুলাইমানের রাজত্বকালে শয়তানরা যা আবৃত্তি করতো, তারা তারই অনুসরণ করছে এবং সুলাইমান কুফুরী করেননি কিন্তু শয়তানরাই কুফুরী করেছিল। তারা লোকদেরকে যাদু বিদ্যা এবং যা বাবেল শহরে হারুত-মারুত ফেরেশতাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছিল তা শিক্ষা দিতো, এবং তারা উভয়ে কাউকেও ওটা শিক্ষা দিতো না, যে পর্যন্ত তারা না বলতো যে, আমরা পরীক্ষা স্বরূপ, অতএব তুমি কুফুরী করো না; অনন্তর যাতে স্বামী ও তদীয় স্ত্রীর মধ্যে বিচ্ছেদ সংঘটিত হয়, তারা উভয়ের নিকট তা শিক্ষা করতো এবং তারা আল্লাহর হুকুম ব্যতীত তদ্বারা কারও অনিষ্ট সাধন করতে পারতো না এবং তারা ওটাই শিক্ষা করছে যাতে তাদের ক্ষতি হয় এবং তাদের কোন উপকার সাধিত হয় না এবং নিশ্চয় তারা জ্ঞাত আছে যে, অবশ্য যে কেউ ওটা ক্রয় করেছে, তার জন্যে পরকালে কোনই

أَوْ كَلِمَاتٍ عَهْدُوا عَهْدًا تَبَدَّلَهُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ طَبَلٌ
أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَهُمْ نَبَأٌ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
كُتِبَ اللَّهُ وَرَاءَهُمْ ظُهُورِهِمْ كَانَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مَلِكِ سُلَيْمَانَ
وَمَا كَفَرُ سُلَيْمَانُ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانَ كَفَرًا وَيَعْلَمُونَ
النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ
هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۖ وَمَا يَعْلَمَانِ مِنْ أَحَدٍ
حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَزَوْجِهِ ۖ وَمَا هُمْ بِضَآئِرِينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ ۖ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ
فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ
أَنْفُسَهُمْ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

অংশ নেই এবং তদ্বিনময়ে তারা যে আত্ম-বিক্রয় করেছে তা নিকৃষ্ট, যদি তারা তা জানতো!

১০৩. এবং যদি তারা সত্য-সত্যই বিশ্বাস করতো ও ধর্মভীরু হতো তবে আল্লাহর নিকট হতে কল্যাণ লাভ করতো, যদি তারা এটা বুঝতো।

১০৪. হে মুমিনগণ! তোমরা 'রায়েনা'^১ বলো না বরং 'উনযুরনা'^২ বলো এবং শুনে নাও; আর কাফিরদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাময় শাস্তি।

১০৫. তোমাদের উপর তোমাদের প্রভুর পক্ষ হতে কোন কল্যাণ অবতীর্ণ হোক এটা মুশরিকরা এবং কাফিররা মোটেই পছন্দ করে না, আর আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন তাঁর করুণার জন্যে নির্দিষ্ট করে নেন, এবং আল্লাহ মহা করুণাময়।

১০৬. আমি কোন আয়াত রহিত করলে কিংবা আয়াতটিকে বিস্মৃত করিয়ে দিলে তদাপেক্ষা উত্তম বা তদনুরূপ আনয়ন করি; তুমি কি জান না যে, আল্লাহ সব বিষয়ের উপরই ক্ষমতাবান?

১০৭. তুমি কি জান না যে, আকাশ ও পৃথিবীর আধিপত্য আল্লাহরই, এবং আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের কোন বন্ধুও নেই এবং কোন সাহায্যকারীও নেই?

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنْثَىٰ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ
خَيْرٌ لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ١٠٣

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا
أَنظُرْنَا وَأَسْعُوا ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٠٤

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا
الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِّنْ
رَّبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ١٠٥

مَا نَسْخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ
مِّنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١٠٦

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ١٠٧

১। রাখাল "রায়েনা" ইয়াহুদীদের ভাষায় একটি গালি যা তারা রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর শানে বেয়াদবী মূলক বলতো।

২। আমাদের প্রতি নেক দৃষ্টি দিন।

১০৮. তোমরা কি চাও যে, তোমাদের রাসূলের নিকট আবেদন করবে যেমন ইতিপূর্বে মূসার নিকট (হঠকারিতাবশতঃ এইরূপ বহু নিরর্থক) আবেদন করা হয়েছিল? আর যে ব্যক্তি ঈমানের পরিবর্তে কুফরী অবলম্বন করে নিশ্চয় সে সঠিক পথ হতে দূরে সরে পড়ে।

১০৯. কিতাবীদের অনেকে তাদের প্রতি সত্য প্রকাশিত হওয়ার পর তারা তাদের অন্তর্নিহিত বিদ্বেষবশতঃ তোমাদেরকে বিশ্বাস স্থাপনের পরে অবিশ্বাসী করতে ইচ্ছে করে; কিন্তু যে পর্যন্ত আল্লাহ স্বয়ং আদেশ আনয়ন না করেন সে পর্যন্ত তোমরা ক্ষমা কর ও উপেক্ষা করতে থাকো; নিশ্চয় আল্লাহ সর্ব বিষয়োপরি ক্ষমতাবান।

১১০. আর তোমরা নামায প্রতিষ্ঠিত কর ও যাকাত প্রদান কর; এবং তোমরা স্ব-স্ব জীবনের জন্যে যে সৎকর্ম আশ্রয় করেন; তা আল্লাহর নিকট প্রাপ্ত হবে; তোমরা যা করছো নিশ্চয় আল্লাহ তার পরিদর্শক।

১১১. এবং তারা বলেঃ যারা ইয়াহুদী বা খ্রিস্টান হয়েছে তারা ছাড়া আর কেউই জান্নাতে প্রবিষ্ট হবে না, এটাই তাঁদের বাসনা; তুমি বলঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে তোমাদের প্রমাণ উপস্থিত কর।

১১২. অবশ্য যে ব্যক্তি আল্লাহর জন্যে নিজেকে সম্পূর্ণরূপে সমর্পণ করেছে এবং সৎকর্মশীল হয়েছে,

أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلِ
مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٠٨﴾

وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَدُّونَكُمْ مِن
بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كَغَارِ الْأَعْينِ إِذْ هُمْ
عِنْدَ أَنفُسِهِمْ
مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۗ فَاعْتَرَوهُم بِمَا
كُفَرُوا بِهِ ۗ وَصَفَحُوا
حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا تُقَدِّمُوا
لِأَنفُسِكُمْ مِن خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾

وَقَالُوا لَنْ نَبْدُخَلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا
أَوْ نَصْرًا ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١١﴾

بَلْ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ
أَجْرٌ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

ফলতঃ তার জন্য তার প্রতিপালকের নিকট প্রতিদান রয়েছে এবং তাদের জন্যে কোন আশঙ্কা নেই ও তারা সন্তুষ্ট হবে না।

১১৩. আর ইয়াহূদীগণ বলে যেঃ খ্রিস্টানেরা কোন (ধর্মীয়) বিষয়ের উপর নেই এবং খ্রিস্টানেরা বলে যে, ইয়াহূদীরাও কোন (ধর্মীয়) বিষয়ের উপর নেই; অথচ তারা গ্রন্থ পাঠ করে। এরূপ যারা জানে না, তারাও ওদের কথার অনুরূপ কথা বলে থাকে; অতএব যে বিষয়ে তারা মতবিরোধ করেছিল, কিয়ামত দিবসে আল্লাহ তাদের মধ্যে তদ্বিষয়ে ফায়সালা করে দেবেন।

১১৪. এবং যে কেউ আল্লাহর মসজিদসমূহের মধ্যে তাঁর নাম উচ্চারণ করতে নিষেধ করেছে এবং তা ধ্বংস করতে প্রয়াস চালিয়েছে— তার অপেক্ষা কে অধিক অত্যাচারী? এ ধরনের ব্যক্তিদেরকে শঙ্কিত অবস্থায়ই তন্মধ্যে প্রবেশ করা উচিত; তাদের জন্যে ইহলোকের দুর্গতি এবং পরলোকে কঠোর শাস্তি রয়েছে।

১১৫. আল্লাহরই জন্যে পূর্ব ও পশ্চিম; অতএব তোমরা যে দিকেই মুখ ফিরাও সে দিকেই আল্লাহর মুখ; কেননা আল্লাহ (সর্বদিক) পরিবেষ্টনকারী পূর্ণ জ্ঞানবান।

১১৬. এবং তারা বলেঃ আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করেছেন! তিনি তা থেকে পরম পবিত্র; বরং যা কিছু গগণে ও ভূমণ্ডলে রয়েছে তা তাঁরই জন্যে; সবই তাঁর আজ্ঞাধীন।

يَحْزَنُونَ ﴿١١٣﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ
وَقَالَتِ النَّصْرَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ
وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ وَمثل قَوْلِهِمْ قَالَ اللهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ اللهِ اَنْ يُذَكَّرَ
فِيهَا اسْمُهُ وَسُئِلَ فِي خَرَابِهَا اُولَئِكَ مَا كَانَ
لَهُمْ اَنْ يَدْخُلُوهَا الْاَكْفَابِينَ هَلْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۗ فَاَيُنْبِئُوْنَكُمْ
وَجْهَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ وَاَسِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا ۗ سُبْحٰنَہٗ ۗ بَلْ لَّهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ كُلٌّ لَّهٗ قِنْدُونٌ ﴿١١٦﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। তিনি বলেছেন, আল্লাহ বলেনঃ ইবনে আদম (মানুষ) আম্মাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, অথচ তাদের জন্য এটা

১১৭. তিনি গগণ ও ভূবনকে অনস্তিত্ব থেকে অস্তিত্বে আনয়নকারী এবং যখন তিনি কোন কার্য সম্পাদন করতে ইচ্ছে করেন, তখন তার জন্যে শুধু 'হও' বলেন, আর তাতেই তা হয়ে যায়।

১১৮. এবং মুর্খেরা বলেঃ আল্লাহ আমাদের সাথে কেন কথা বলেন না— অথবা কেন আমাদের জন্যে কোন নিদর্শন উপস্থিত হয় না? এদের পূর্বে যারা ছিল তারাও এদের অনুরূপ কথা বলতো; তাদের সবারই অন্তর পরস্পর সাদৃশ্যপূর্ণ; নিশ্চয় আমি বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্যে উজ্জ্বল নিদর্শনাবলী বর্ণনা করি।

১১৯. নিশ্চয় আমি তোমাকে সত্য-সহ সুসংবাদদাতা ও ভয় প্রদর্শক-রূপে (সতর্ককারীরূপে) প্রেরণ করেছি এবং তুমি দোযখবাসীদের সম্বন্ধে জিজ্ঞাসিত হবে না।

১২০. এবং ইয়াহূদী ও খ্রিস্টানগণ তুমি তাদের ধর্ম অনুসরণ না করা পর্যন্ত তোমার প্রতি সন্তুষ্ট হবে না; তুমি বল— আল্লাহর প্রদর্শিত পথই সুপথ; এবং তোমার নিকট যে জ্ঞান এসেছে তৎপর যদি তুমি তাদের প্রবৃত্তির অনুসরণ কর, তবে আল্লাহ হতে তোমার জন্যে কোনই অভিভাবক ও সাহায্যকারী নেই।

بَدِيعِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا
فَأَنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ
أَوْ تَأْتِينَا آيَةً ط كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ط شَاءَ بَهْتَ قُلُوبُهُمْ ط قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يُؤْتُونَ ﴿١١٨﴾

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْأَلُ
عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾

وَكَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودَ وَلَا النَّصْرَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ
مِلَّتَهُمْ ط قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ط وَلَكِنَّ
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وِليٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٢٠﴾

উচিত নয়। আর আদম সন্তান আমাকে গালি দেয়, অথচ এটা তার জন্য উচিত নয়। তাদের আমাকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করার অর্থ হলো, তারা বলে আমি তাদেরকে (মৃত্যুর পরে) জীবিত করে পূর্বের ন্যায় করতে সক্ষম নই। আর তাদের আমাকে গালি দেয়ার অর্থ হলো, তারা বলে যে, আমার পুত্র আছে। অথচ স্ত্রী বা সন্তান বা গ্রহণ করা থেকে আমি পবিত্র। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৮২)

১২১. আমি তাদেরকে যে ধর্মগ্রন্থ দান করেছি তা যারা সত্যভাবে বুঝবার মত পাঠ করে তারাই এর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে; এবং যে কেউ এটা অবিশ্বাস করে ফলতঃ তারাই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

১২২. হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদেরকে যে নেয়ামত দান করেছি এবং নিশ্চয় আমি পৃথিবীর উপর তোমাদেরকে যে শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি— তোমরা তা স্মরণ কর।

১২৩. আর তোমরা ঐ দিবসের ভয় কর, যেদিন কোন ব্যক্তি কোন ব্যক্তি হতে কিছু মাত্র উপকৃত হবে না এবং কারও নিকট হতে বিনিময় গৃহীত হবে না, কারও শাফা'আত (সুপারিশ) ফলপ্রদ হবে না এবং তারা সাহায্য প্রাপ্ত হবে না।

১২৪. এবং যখন তোমার প্রতিপালক ইবরাহীমকে কতিপয় বাক্য দ্বারা পরীক্ষা করেছিলেন, পরে তিনি তা পূর্ণ করেছিলেন; তিনি (আল্লাহ) বলেছিলেনঃ নিশ্চয় আমি তোমাকে মানবমন্ডলীর নেতা করবো; তিনি (ইবরাহীম আঃ) বলেছিলেনঃ আমার বংশধরগণ হতেও; তিনি বলেছিলেনঃ আমার অঙ্গীকার অত্যাচারীদের প্রতি প্রযোজ্য হবে না।^১

الَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقًّا
تِلَاوَتِهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٢١﴾

يٰٓبَنِي إِسْرٰٓءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي اٰنَعَمْتُ
عَلَيْكُمْ وَاِنِّي فَعَلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا
وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذِ ابْتَلٰٓآ اِبْرٰٓهٖمَ رَبُّهُ بِكَلِمٰتٍ فَاَتٰهُنَّ ۖ قَالَ
رَبِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمٰمًا ۗ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ
قَالَ لَا يَتٰلُ عَهْدِيْ الظٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, মানুষের মধ্যে জনগণতভাবে সুন্নাত পাঁচটিঃ (১) খাতনা করা (২) নাজীর নীচে) ক্ষুর ব্যবহার করা, (৩) গৌফ কাটা, (৪) নখ কাটা, (৫) বগলের লোম উপড়ে ফেলা। (বুখারী, হাদীস নং ৫৮৯১)

● ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা গৌফ ছাঁটো এবং দাড়িকে ছেড়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৫৮৯৩)

১২৫. এবং আমি কা'বাগৃহকে মানব জাতির জন্য মিলন কেন্দ্র ও সুরক্ষিত স্থান করেছি এবং তোমরা মাকামে ইব্রাহীমকে নামাযের স্থান হিসেবে গ্রহণ কর এবং আমি ইব্রাহীম ও ইসমাঈলের নিকট অঙ্গীকার নিয়েছিলাম যে, তোমরা আমার গৃহকে তাওয়াফকারী ও ই'তিকাফকারী এবং রুকু ও সিজদাকারীদের জন্যে পবিত্র রেখো।

১২৬. যখন ইব্রাহীম (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! এ স্থানকে আপনি নিরাপত্তায় শহরে পরিণত করুন এবং এর অধিবাসীদের মধ্যে যারা আল্লাহ ও পরকালে বিশ্বাস স্থাপন করেছে, তাদেরকে উপজীবিকার জন্যে ফল-শস্য প্রদান করুন, তিনি বলেন, যারা অশ্বাস করে তাদেরকে আমি অল্প দিন শাস্তি দান করবো, তৎপরে তাদেরকে জাহান্নামের শাস্তি ভোগ করতে বাধ্য করবো, এটি নিকৃষ্টতম গন্তব্যস্থান!

১২৭. যখন ইব্রাহীম (عليه السلام) ও ইসমাঈল (عليه السلام) কা'বার ভিত্তি উত্তোলন করছিলেন, (তখন বলেনঃ) হে আমাদের প্রতিপালক” আমাদের পক্ষ হতে এটা গ্রহণ করুন, নিশ্চয় আপনি মহা শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

১২৮. হে আমাদের প্রভু! আমাদের উভয়কে আপনার অনুগত করুন এবং আমাদের বংশধরদের মধ্য হতেও আপনার অনুগত একদল লোক সৃষ্টি করুন, আর আমাদেরকে

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا
مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ
وَإِسْحٰقَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّٰفِئِينَ
وَالْعٰقِبِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آمِنًا
وَارزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الشَّرَاةِ مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ
قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ
وَإِسْحٰقَ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً
مُّسْلِمَةً لَّكَ ۖ وَإِنَّا مِنَّا سَكَكْنَا وَتُبَّ عَلَيْنَا ۗ
إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾

ইবাদতের আহকাম বলে দিন এবং আমাদের প্রতি ক্ষমাশীল হোন, নিশ্চয় আপনি ক্ষমাশীল, করুণাময়।

১২৯. হে আমাদের প্রভু! সে দলে তাদেরই মধ্য হতে এমন একজন রাসূল প্রেরণ করুন যিনি তাদেরকে আপনার আয়াতসমূহ পাঠ করে শুনাবেন এবং তাদেরকে কিতাব ও সুন্নাহ শিক্ষা দান করবেন ও তাদেরকে পবিত্র করবেন। নিশ্চয়ই আপনি পরাক্রান্ত প্রজ্ঞাময়।

১৩০. এবং যে নিজেকে নির্বোধ করে তুলেছে সে ব্যতীত কে ইবরাহীমের ধর্ম হতে বিমুখ হবে? এবং নিশ্চয়ই আমি তাকে এই পৃথিবীতে মনোনীত করেছিলাম, নিশ্চয় সে পরকালে সৎ কর্মশীলগণের অন্তর্ভুক্ত।

১৩১. যখন তার প্রভু তাকে বলেনঃ তুমি আনুগত্য স্বীকার কর; সে বলেছিলঃ আমি বিশ্ব জগতের প্রতিপালকের নিকট আত্মসমর্পণ করলাম।

১৩২. আর ইবরাহীম ও ইয়াকুব স্বীয় সন্তানগণকে সদুপদেশ প্রদান করেছিল হে আমার বংশধরঃ নিশ্চয় আল্লাহ তোমাদের জন্যে এই (জীবন ব্যবস্থা) দ্বীন মনোনীত করেছেন, অতএব তোমরা মুসলমান না হয়ে মৃত্যুবরণ করো না।

১৩৩. যখন ইয়াকুবের মৃত্যু উপস্থিত হয় তখন কি তোমরা উপস্থিত ছিলে? তখন তিনি নিজ পুত্রগণকে বলেছিলেন— আমার পরে তোমরা কোন জিনিসের ইবাদত করবে? তারা বলেছিলেন— আমরা তোমার

رَبِّنَا وَأَبْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ
آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ
إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾

وَمَنْ يَرْعَبْ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ
نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي
الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٣٠﴾

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ
لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣١﴾

وَوَضَّيْهَا إِبْرَاهِيمَ بَيْنَهُ وَيَعْقُوبَ يُبْنِي إِنْ
اللَّهُ اصْطَفَى لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ
مُسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾

أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتَ
إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي قَالُوا
نَعْبُدُ إِلَهَكَ وَإِلَهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ

পিতৃপুরুষ ইবরাহীম, ইসমাঈল ও ইসহাকের মা'বুদ— সে অদ্বিতীয় মা'বুদের ইবাদত করবো, এবং আমরা তাঁরই অনুগত থাকবো।

وَأَسْحَقَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ ﴿۳۳﴾

১৩৪. ওটা একটা দল ছিল, যা অতীত হয়ে গেছে; তারা যা অর্জন করেছিল তা তাদের জন্যে এবং তোমরা যা অর্জন করেছে তা তোমাদের জন্যে এবং তারা যা করে গেছে তজ্জন্য তোমরা জিজ্ঞাসিত হবে না।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مَّا
كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تَسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۳৪﴾

১৩৫. এবং তারা বলে যেঃ তোমরা ইয়াহুদী অথবা খ্রিস্টান হও তবেই সুপথ প্রাপ্ত হবে, তুমি বলঃ বরং আমরা ইবরাহীমের (عليه السلام) সুদৃঢ় ধর্মের অনুসরণ করি এবং তিনি অংশীবাদীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন না।^১

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى تَهْتَدُوا ۗ وَ قُلْ بَلْ
مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿۳۫﴾

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি ওহী অবতীর্ণ হবার পূর্বে বালদাহ নামক স্থানের নিম্নভাগে য়ায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সাথে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাক্ষাত হয়। তারপর (কুরাইশদের পক্ষ থেকে) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তুরখানা বিছানো হলো। তিনি তা খেতে অস্বীকার করলেন (এবং য়ায়েদের সামনে ঠেলে দিলেন; কিন্তু তিনিও তা খেতে অস্বীকার করলেন।) অতঃপর য়ায়েদ (কুরাইশদের লক্ষ্য করে) বললেন, তোমাদের মূর্তির নামে তোমরা যা যবেহ কর তা আমি কিছুতেই খেতে পারি না। আমি তো কেবলমাত্র তাই খেয়ে থাকি যাতে যবেহ করার সময় আল্লাহর নাম উচ্চারণ করা হয়। য়ায়েদ ইবনে আমর কুরাইশদের যবেহের নিন্দা করতেন এবং তাদের উক্ত আচরণের প্রতিবাদ ও তার ক্রটি প্রতি ইঙ্গিত করে বলতেন, বকরী সৃষ্টি করলেন আল্লাহ্ এবং তিনিই তার আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, তিনিই তার জন্য মাটি থেকে ঘাস ও লতা-পাতা উৎপন্ন করেন। এতো কিছু পর তোমরা তাকে গাইরুল্লাহর নামে যবেহ কর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৬)

ইবনে উমর থেকে (অপর এক সনদে) বর্ণিত য়ায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইল সত্য দ্বীন সম্পর্কে জানা ও তার অনুসরণ করার জন্য শাম (সিরিয়া) দেশে গিয়ে এক ইয়াহুদী আলেমের সাথে সাক্ষাত করেন এবং তাকে তাদের দ্বীন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে বললেন, আমি হয়তোবা আপনাদের দ্বীন গ্রহণ করতে পারি। সুতরাং আমাকে (আপনাদের দ্বীন সম্পর্কে) কিছু বলুন। ইয়াহুদী আলেম বললেন, আপনি আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না যে পর্যন্ত আল্লাহর আযাব থেকে আপনার অংশ আপনি গ্রহণ না করেন। য়ায়েদ বললেন আমি তো আল্লাহর আযাব থেকে (বাঁচার জন্যই) ভয়ে পালিয়ে এসেছি। আল্লাহ্ পাকের আযাব বিন্দুমাত্রও সহ্য করার ক্ষমতা আমার নেই এবং তা বরদাস্ত করার সাধ্যও রাখিনা। তাহলে অন্য কোন ধর্ম সম্পর্কে (মেহেরবানী) করে আমাকে পথ দেখাতে পারবেন কি? ইয়াহুদী আলেম বললেনঃ দ্বীনে হানীফ ছাড়া অন্য কোন সত্য দ্বীন আমার জানা নেই। য়ায়েদ বললেনঃ দ্বীনে হানীফ কি? তিনি বললেন তা'হল ইবরাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি (ইবরাহীম (আলাইহিসসালাম) ইয়াহুদী

১৩৬. তোমরা বলঃ আমরা আল্লাহর প্রতি এবং যা আমাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে, আর যা হযরত ইবরাহীম (عليه السلام), ইসমাইল (عليه السلام), ইসহাক (عليه السلام) ইয়াকুব (عليه السلام) ও তাদের বংশধরের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছিল এবং মূসা (عليه السلام) ও হীসা (عليه السلام)-কে যা প্রদান করা হয়েছিল এবং অন্যান্য নবীগণ তাদের প্রভু হতে যা প্রদত্ত হয়েছিলেন, তদ সমুদয়ের উপর বিশ্বাস স্থাপন করছি, তাদের মধ্যে কাউকেও আমরা প্রভেদ করি না, এবং আমরা তাঁরই প্রতি আত্মসমর্পণকারী।

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ
إِلَىٰ آبَائِهِمْ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ
النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ لَا نَفَرَّقُ بَيْنَ أَحَدٍ
مِّنْهُمْ ۗ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٣٦﴾

কিংবা খ্রিস্টান (কোন দলেরই) ছিলেন না। তিনি একমাত্র আল্লাহ্ ব্যতীত অন্য কিছুই ইবাদত করতেন না। অতঃপর য়ায়েদ সেখান থেকে বের হয়ে এক খ্রিস্টান আলেমের সঙ্গে সাক্ষাত করলেন এবং তাঁকেও পূর্বের ন্যায় জিজ্ঞেস করলেন। উক্ত আলেম বললেন যে পর্যন্ত আপনি আল্লাহর লানতের অংশ গ্রহণ না করবেন সে পর্যন্ত আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না। য়ায়েদ বললেন আল্লাহর লানত থেকে (যুক্তি পাওয়ার জন্যই) আমি পালিয়ে বেড়াচ্ছি। আল্লাহর লানত কিংবা তাঁর গযবের বিন্দুমাত্রও আমি বরদাশত করতে পারব না, না আমার তা বরদাশত করার কোন সাধ্য আছে। অতঃপর উক্ত আলেমও বললেনঃ তা'হলে আপনি কি আমাকে অন্য কোন ধীন (ধর্ম)-এর কথা বলে দিতে পারবেন? উত্তরে উক্ত আলেম বললেন, অন্য কোন ধর্মের কথা আমি জানি না, তবে (ধীনে) হানীফ ব্যতীত। য়ায়েদ জিজ্ঞাসা করলেন, হানীফ কি? তিনি বললেন, তা'হল ইবরাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর আনীত ধীন। তিনি ইয়াহুদীও ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না। তিনি আল্লাহ্ ছাড়া অন্য কিছুই ইবাদত করতেন না। য়ায়েদ যখন দেখলেন যে ইবরাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর ধীনের সত্যতার ব্যাপারে তারা সকলেই একমত, তাদের মন্তব্য শুনে বেরিয়ে এলেন এবং বাহিরে এসে দু'হাত তুলে বললেন, হে আল্লাহ্! আমি তোমাকে সাক্ষি রেখে বলছি যে, নিশ্চয় আমি ইবরাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর ধীনের প্রতি রয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৭)

❦ লাইছ বলেন, হিশাম তার পিতা ও আসমা বিনতে আবু বকরের বরাত দিয়ে আমাকে লিখেছেন যে, আসমা বলেনঃ একদিন, আমি য়ায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলকে দেখলাম যে, তিনি কা'বা ঘরের সাথে নিজের পিঠ লাগিয়ে দাঁড়িয়ে (কুরাইশদেরকে লক্ষ্য করে) বলছেন, হে কুরাইশ দল! আল্লাহর কসম! আমি ছাড়া তোমাদের কেউ ইবরাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর ধীনের অনুসারী নয়। আর তিনি (য়য়েদ) জীবন্ত শ্রোথিত নবজাত শিশুকন্যাকে জীবিত করতেন। যখন কোন ব্যক্তি তার মেয়েকে হত্যা করতে চাইত তখন তিনি তাকে বলতেন, একে হত্যা করো না। তোমার পরিবর্তে আমি তার ভরণ-পোষণের ভার নেব। এ বলে তিনি তাকে নিয়ে যেতেন। মেয়েটা যখন বড় হতো, তিনি তার পিতাকে বলতেন, তুমি চাইলে আমি মেয়েটাকে তোমাকে দিয়ে দিব। আর তুমি যদি চাও তবে আমিই মেয়েটার ভরণ-পোষণ করে যাব। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪২৮)

(ক) য়িয়াদ ইবনে ইলাকা থেকে বর্ণিত. তিনি বলেনঃ আমি মুগীরা বিন শো'বাকে বলতে শুনেছি। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (এত দীর্ঘ সময় পর্যন্ত দাঁড়িয়ে নফল) নামায পড়তেন যার ফলে তাঁর

১৩৭. অনন্তর তোমরা যেরূপ বিশ্বাস স্থাপন করেছ, তারাও যদি তদ্রূপ বিশ্বাস স্থাপন করে, তবে নিশ্চয় তারা সুপথ প্রাপ্ত হবে; এবং যদি তারা ফিরে যায় তবে তারা বিচ্ছিন্নতাবাদী। অতএব এখন তাদের ব্যাপারে আপনার জন্য আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট এবং তিনিই মহাশ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

১৩৮. আল্লাহর রং গ্রহণ করো, আল্লাহর রং-এর চাইতে উত্তম রং আর কার হতে পারে? এবং আমরা তাঁরই ইবাদতকারী।

১৩৯. তুমি বলঃ তোমরা কি আল্লাহ সম্বন্ধে আমাদের সঙ্গে বিরোধ করছো? অথচ তিনিই আমাদের

فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا ۗ
وَلَنْ تُولَؤُا قُلُوبَهُمْ فِي شِقَاقٍ ۗ فَسَيَكْفِيكَهُمُ
اللَّهُ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

صِبْغَةَ اللَّهِ ۗ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۗ
وَنَحْنُ لَهُ عِبَادُونَ ۝

قُلْ اتَّحَابُونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا
أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۗ وَنَحْنُ لَهُ

দু'পা ফুলে যেত। এ ব্যাপারে তাঁকে জিজ্ঞেস করা হলে তিনি বললেন, আমি কি কৃতজ্ঞ বান্দা হবো না? (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭১)

(খ) আয়িশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ সঠিক কর্তব্য নিষ্ঠ এবং মধ্যম পছা অবলম্বন কর ও সুসংবাদ দাও। কেননা শীঘ্র আমলের দ্বারা কেউ জান্নাতে প্রবেশ করতে পারবেন। সাহাবীগণ বললেনঃ আপনিও না ইয়া রাসূলুল্লাহ! তিনি বললেন, আমিও না, তবে আল্লাহ্ আমাকে তাঁর রহমত এবং মাগফিরাত দ্বারা ঢেকে রেখেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৬৭)

(গ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমার নিকট ওহুদ পাহাড় পরিমাণ স্বর্ণ থাকলেও তা থেকে কিছু আমার নিকট স্বর্ণ পরিশোধের জন্য রাখা ব্যতীত তিন দিন থাকবে তা আমি পছন্দ করি না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৪৫)

(ঘ) আব্দুল্লাহ বিন মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের মধ্যে কে নিজের সম্পদের চেয়ে উত্তরাধিকারীদের সম্পদকে বেশি ভালবাসে? সাহাবায়ে কিরাম বললেন, ইয়া রাসূলুল্লাহ! আমাদের মধ্যে এমন কেই নেই, যে সে নিজের সম্পদের চেয়ে উত্তরাধিকারীদের সম্পদ বেশি ভালবাসে। তিনি (রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, যে ব্যক্তি (আল্লাহ্র পথে) খরচ করবে তা-ই শুধু নিজের সম্পদ, আর যা সে রেখে যাবে তা হলো তার উত্তরাধিকারীদের সম্পদ। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৪২)

(ঙ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন একটি কুকুর পিপাসা কাতর হয়ে একটি কুপের চারদিকে ঘুরছিল মনে হচ্ছিল যে পানির পিপাসায় এখনই সে মারা যাবে। এমনি মুহূর্তে বনী ইসরাঈলের এক ব্যক্তির পানির দৃষ্টিগোচর হল। অতঃপর সে তার মোজা খুলে (তা' দিয়ে কুয়া থেকে পানি উঠিয়ে) কুকুরটিকে পানি পান করাল। এ কারণে আল্লাহ্ তাকে ক্ষমা করে দিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৬৭)

প্রতিপালক ও তোমাদের প্রতিপালক, এবং আমাদের জন্যে আমাদের কার্যসমূহ এবং তোমাদের জন্যে তোমাদের কার্যসমূহ এবং আমরা তাঁরই জন্যে নিবেদিত।

১৪০. তোমরা কি বলছো যে, ইবরাহীম (عليه السلام), ইসমাইল (عليه السلام), ইসহাক (عليه السلام), ইয়াকুব (عليه السلام) ও তাদের বংশধর ইয়াহূদী কিংবা খ্রিস্টান ছিলেন? তুমি বলঃ তোমরাই সঠিক জ্ঞানী না আল্লাহ? আল্লাহর নিকট হতে প্রাপ্ত সাক্ষ্য যে ব্যক্তি গোপন করছে সে অপেক্ষা কে বেশি অত্যাচারী? এবং তোমরা যা করছো তা হতে আল্লাহ অমনোযোগী নন।

১৪১. তারা একটি জামা'আত ছিল যা বিগত হয়েছে; তারা যা অর্জন করেছে তা তাদের জন্যে এবং তোমরা যা অর্জন করেছো তা তোমাদের জন্যে এবং তারা যা করে গেছে তদ্বিষয়ে তোমরা জিজ্ঞাসিত হবে না।

مُخْلِصُونَ ﴿٣٨﴾

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ط
قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللّٰهُ ط وَمَنْ أَظْلَمُ
مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللّٰهِ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۗ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

১৪২. মানবমন্ডলীর ভিতর থেকে কিছু নির্বোধ লোক অচিরেই বলবে যে, কিসে তাদেরকে সেই কেবলা হতে ফিরিয়ে দিলো, যার দিকে তারা ছিল? তুমি বলে দাওঃ পূর্ব ও পশ্চিম আল্লাহরই জন্যে, তিনি যাকে ইচ্ছা সরল পথ-প্রদর্শন করেন।

১৪৩. এভাবে আমি তোমাদেরকে মধ্যপন্থী ন্যায়পরায়ণ উম্মত করেছি যেন তোমরা মানবগণের জন্যে সাক্ষী হও এবং রাসূলও তোমাদের জন্যে সাক্ষী হয়; এবং তুমি যে কেবলার দিকে ছিলে, তা আমি এজন্যে নির্ধারণ করেছিলাম যে, কে রাসূলের অনুসরণ করে আর কে তা হতে স্বীয় পদদ্বয়ের গোড়ালী প্রদর্শন করিয়ে ফিরে যায় আমি তা জেনে নেবো এবং আল্লাহ যাদেরকে সৎপথ প্রদর্শন করেছেন তারা ছাড়া অপরের জন্য এটা অবশ্যই কঠোরতর; এবং আল্লাহ এরূপ নন যে, তোমাদের ঈমান (নামায) বিনষ্ট করেন। নিশ্চয় আল্লাহ মানবগণের প্রতি স্নেহশীল করুণাময়।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ عَن قِبَلِهِمُ الْبَيْتِ كَانُوا عَلَيْهَا ط قُلْ لِلَّهِ الشَّرِيقُ وَ الْمَغْرِبُ يُهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ط وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعِ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ط وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ط وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّعَ إِيمَانِكُمْ ط إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٣﴾

১। আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নূহ (আলাইহিস্ সালাম)-কে কিয়ামতের দিন ডাকা হবে, তিনি বলবেনঃ হে আমার প্রভু! আমি আপনার নিকট উপস্থিত। (আল্লাহ তাকে জিজ্ঞেস করবেন) তুমি কি তোমার দায়িত্ব (হুকুম-আহকাম মানুষের কাছে) পৌছিয়ে ছিলে? তিনি বলবেন, হ্যাঁ পৌছিয়ে ছিলাম। তখন তাঁর উম্মতদেরকে জিজ্ঞেস করা হবে তিনি তোমাদের প্রতি তাঁর যে, দায়িত্ব ছিল তা কি তিনি যথাযথ ভাবে পৌছিয়ে দিয়েছিলেন? তারা বলবে আমাদের নিকট কোন ভয়-প্রদর্শনকারী আসেননি। তখন আল্লাহ বলবেন তোমার সাক্ষী কে? তিনি বলবেন মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এবং তাঁর উম্মত। তখন তারা (উম্মতে মুহাম্মাদীয়াহ) সাক্ষী দিবে যে, তিনি (নূহ আলাইহিস্ সালাম) তাঁর দায়িত্ব যথাযথভাবে তাদের কাছে পৌছিয়েছেন। “আর রাসূল (মুহাম্মাদ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তোমাদের কথা সত্য বলে সাক্ষ্য প্রদান করবেন।” তাই মহান আল্লাহ বলেছেনঃ অর্থঃ “আর এভাবে আমি তোমাদেরকে মধ্যপন্থী সম্প্রদায় করেছি যেন তোমরা মানবগণের জন্য সাক্ষী হও এবং রাসূলও তোমাদের জন্যে সাক্ষী হয়।” (الوسط)

শব্দের অর্থ হল (العدل) বা ন্যায়পরায়ণতা। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৮৭)

১৪৪. নিশ্চয় আমি আকাশের দিকে তোমার মুখমন্ডল উত্তোলন অবলোকন করছি। তাই আমি তোমাকে ঐ কিবলাহ্ মুখীই করবো যা তুমি কামনা করছো; অতএব তুমি মসজিদে হারামের দিকে (কা'বার দিকে) তোমার মুখমন্ডল ফিরিয়ে নাও এবং তোমরা যেখানে আছ তোমাদের মুখ সে দিকেই প্রত্যাবর্তিত কর; এবং নিশ্চয়ই যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তারা অবশ্যই অবগত আছে যে, নিশ্চয়ই এটা তাদের প্রতিপালকের নিকট হতে সত্য এবং তারা যা করছে তদ্বিষয়ে আল্লাহ্ অমনোযোগী নন।

১৪৫. এবং যাদেরকে কিতাব প্রদান করা হয়েছে তাদের নিকট যদি তুমি সমুদয় নিদর্শন আনয়ন কর, তবুও তারা তোমার কিবলাহ্কে গ্রহণ করবে না; এবং তুমিও তাদের কিবলাহ্ গ্রহণ করতে পার না, আর না তারা পরস্পর একজন অন্য জনের কিবলার অনুসারী এবং তোমার নিকট যে জ্ঞান এসেছে এর পরেও যদি তুমি তাদের প্রবৃত্তির অনুসরণ কর, তবে নিশ্চয় তুমি অত্যাচারীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

১৪৬. যাদেরকে আমি কিতাব প্রদান করেছি, তারা রাসূলুল্লাহ্ (ﷺ)-কে এরূপ ভাবে চিনে, যেমন চিনে, তারা আপন পুত্রদেরকে এবং নিশ্চয় তাদের এক দল জ্ঞাতসারে সত্যকে গোপন করছে।

১৪৭. এক বাস্তব সত্য তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে; সুতরাং তুমি সংশয়ীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٤﴾

وَلَيْنِ اتَّيَّتِ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۖ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ آبَاءَهُمْ ۗ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١٤٧﴾

১৪৮. প্রত্যেকের জন্যে এক একটি লক্ষ্যস্থল রয়েছে, ঐদিকেই সে মুখমন্ডল প্রত্যাবর্তিত করে, অতএব তোমরা কল্যাণের দিকে ধাবিত হও; তোমরা যেখানেই থাক না কেন, আল্লাহ তোমাদের সকলকেই একত্রিত করবেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে পূর্ণ ক্ষমতাবান।

১৪৯. এবং তুমি যেখান হতেই বের হবে, তোমার মুখ মসজিদে হারামের দিকে প্রত্যাবর্তিত কর এবং নিশ্চয় এটাই তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে সত্য, এবং তোমরা যা করছো তদ্বিষয়ে আল্লাহ অমনোযোগী নন।

১৫০. আর তুমি যেখান হতেই বের হও না কেন, তোমার মুখ মসজিদে হারামের দিকে ফিরাও এবং তোমরাও যে যেখানে আছ তোমাদের মুখমন্ডল সেদিকেই প্রত্যাবর্তিত কর যেন তাদের অন্তর্গত অত্যাচারীগণ ব্যতীত অন্য কেউ তোমাদের সাথে বিতর্ক করতে না পারে, অতএব তোমরা তাদেরকে ভয় করো না বরং আমাকেই ভয় কর যেন আমি তোমাদের উপর আমার অনুগ্রহ পূর্ণ করি এবং যেন তোমরা সুপথপ্রাপ্ত হও।

১৫১. আমি তোমাদের মধ্য হতে এরূপ রাসূল প্রেরণ করেছি যিনি তোমাদের নিকট আমার নিদর্শনাবলী পাঠ করেন ও তোমাদেরকে পবিত্র করেন এবং তোমাদেরকে গ্রন্থ ও বিজ্ঞান শিক্ষা দেন আর তোমরা যা অবগত ছিলে না তা শিক্ষা দান করেন।

وَلِكُلِّ وُجْهَةٍ هُوَ مَوْلِيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ
إِنَّ مَا تَكُونُوا يَأْتِيكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا
إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ قَوَّلٌ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ قَوَّلٌ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ
شَطْرَةَ الْاِيْمَانِ لِيَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ
اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ
وَاحْشَوْنِي ۗ وَلَا تَمْنَعِيْ عَلَيْكُمْ وَّلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾

كَمَا ارْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْنَكُمْ
اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾

১৫২. অতএব তোমরা আমাকেই স্মরণ কর, আমিও তোমাদেরকে স্মরণ করবো এবং তোমরা আমার প্রতি কৃতজ্ঞ হও ও অবিশ্বাসী হয়ো না।^১

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي
وَلَا تَكْفُرُونِ ۝

১৫৩. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ, তোমরা ধৈর্য ও নামাযের মাধ্যমে সাহায্য প্রার্থনা কর নিশ্চয় আল্লাহ ধৈর্যশীলগণের সাথে আছেন।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ
وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

১৫৪. আর যারা আল্লাহর পথে নিহত হয়েছে তাদেরকে মৃত বলো না বরং তারা জীবিত; কিন্তু তোমরা তা অনুধাবন করোনা।

وَلَا تَقُولُوا لِمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْواتٌ
بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِن لَّا تَشْعُرُونَ ۝

১৫৫. এবং নিশ্চয় আমি তোমাদেরকে ভয়, ক্ষুধা এবং ধন ও প্রাণ এবং ফল শস্যের অভাবের কোন একটি দ্বারা পরীক্ষা করবো এবং ঐসব ধৈর্যশীলদের সুসংবাদ প্রদান করুন।

وَلَنَبِّئَنكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخُوفِ وَالْجُوعِ
وَتَقْصِصَ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالشَّرَاتِ
وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝

১৫৬. যাদের উপর কোন বিপদ আপত্তি হলে তারা বলেঃ নিশ্চয় আমরা আল্লাহরই জন্যে এবং নিশ্চয় আমরা তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তনকারী।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا
إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝

১৫৭. এদের উপর তাদের প্রভুর পক্ষ হতে শাস্তি ও করুণা বর্ষিত হবে এবং এরাই সুপথগামী।

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা বলেন, আমার সম্পর্কে আমার বান্দা যেরূপ ধারণা পোষণ করে আমি অনুরূপ এবং সে যখন আমাকে স্মরণ করে আমি (ইলমের মাধ্যমে) তার সাথে থাকি। যখন সে আমাকে মনে মনে স্মরণ করে আমিও তাকে মনে মনে স্মরণ করি। আর যদি সে জামাতবদ্ধ ভাবে আমাকে স্মরণ করে তাহলে আমি এর চেয়েও উত্তম জামাত (ফেরেশতাদের মাঝে) স্মরণ করে থাকি যা তার জামায়াত থেকে উত্তম। আর সে যদি আমার দিকে এক বিষত এগিয়ে আসে তাহলে আমি তার দিকে এক হাত এগিয়ে যাই। আর যদি সে আমার দিকে এক হাত এগিয়ে আসে তাহলে আমি তার দিকে এক গজ পরিমাণ অগ্রসর হই। আর বান্দা যদি আমার দিকে হেটে হেটে অগ্রসর হয় তাহলে আমি তার দিকে দৌড়ে দৌড়ে অগ্রসর হই। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪০৫)

১৫৮. নিশ্চয় 'সাফা' ও 'মারওয়া' আল্লাহর নিদর্শন সমূহের অন্তর্গত, অতএব যে ব্যক্তি এই গৃহের 'হজ্জ' অথবা 'উমরা' করে তার জন্যে এতদুভয়ের প্রদক্ষিণ করা দোষণীয় নয়, এবং কোন ব্যক্তি স্বেচ্ছায় সৎকর্ম করলে আল্লাহ গুণগ্রাহী, সর্বজ্ঞাত।

১৫৯. আমি যেসব উজ্জ্বল নিদর্শন ও পথ-নির্দেশ অবতীর্ণ করেছি, আমি ঐ গুলোকে সর্ব সাধারণের নিকট প্রকাশ করার পরও যারা ঐসব বিষয়কে গোপন করে, আল্লাহ তাদেরকে অভিসম্পাত করেন এবং অভিসম্পাত করীগণও তাদেরকে অভিসম্পাত করে থাকে।

১৬০. কিন্তু যারা তওবা করে ও সংশোধন করে নেয় এবং সত্য প্রকাশ করে, বস্তুতঃ আমি তাদের প্রতি ক্ষমা দানকারী এবং আমি তওবা কবুলকারী, করুণাময়।

১৬১. যারা অবিশ্বাস করেছে ও অবিশ্বাসী অবস্থায় মৃত্যুবরণ করেছে, নিশ্চয় তাদের উপর আল্লাহর, ফেরেশতাগণের ও মানবকুলের সবারই অভিসম্পাত।

১৬২. সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে, তাদের শাস্তি প্রশমিত হবে না এবং তাদেরকে অবকাশ দেয়া যাবে না।

১৬৩. এবং তোমাদের মা'বুদ একমাত্র আল্লাহ; সেই সর্ব প্রদাতা করুণাময় ব্যতীত অন্য কোন সত্য মা'বুদ নেই।

إِنَّ الصَّفَاَ وَالْمُرْوَةَ مِنَ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ
الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ
بِهِمَا ط وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿٥٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ
وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ
أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعْنُونَ ﴿٥٩﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا فَأُولَٰئِكَ
أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٦٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا أُولَٰئِكَ
عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٦١﴾

خُلْدٍ يَنْ فِيهَا ۗ لَا يَخْفَىٰ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنظَرُونَ ﴿٦٢﴾

وَاللَّهُمَّ إِلَهًا وَاحِدًا ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿٦٣﴾

১৬৪. নিশ্চয় নভোমন্ডল ও ভূমন্ডল সৃষ্টিতে, দিন ও রাতের পরিবর্তনে, জাহাজসমূহের চলাচলে— যা মানুষের লাভজনক এবং সম্ভার নিয়ে সমুদ্রে চলাচল করে, আল্লাহ আকাশ হতে বৃষ্টি বর্ষণ দ্বারা পৃথিবীকে মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত করেন তাতে, প্রত্যেক জীবজন্তুর বিস্তার করেন তাতে, বায়ুরাশির গতি পরিবর্তনে এবং আকাশ ও পৃথিবীর মধ্যস্থ নিয়ন্ত্রিত মেঘমালায় সত্য জ্ঞানবান সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

১৬৫. এবং মানবমন্ডলীর মধ্যে এরূপ কিছু লোক আছে— যারা আল্লাহর মোকাবেলায় অপরকে সমকক্ষ স্থির করে, আল্লাহকে ভালবাসার ন্যায় তারা তাদেরকে ভালবেসে থাকে এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে— আল্লাহর প্রতি তাদের ভালবাসা দৃঢ়তর এবং যারা অত্যাচার করেছে তারা যদি শাস্তি অবলোকন করতো, তবে বুঝতো যে, সমুদয় শক্তি আল্লাহর জন্যে এবং নিশ্চয় আল্লাহ শাস্তি দানে কঠোর।^১

১৬৬. যখন অনুসরণীয় নেতারা অনুসারীদেরকে প্রত্যাক্ষান করবে এবং তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে ও তাদের সমস্ত সম্বন্ধ বিচ্ছিন্ন হয়ে যাবে।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاٰخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا اَنْزَلَ اللهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ - وَتَصْرِيْفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللهِ اٰنْدَادًا يُجُوْنُهُمْ كَحُبِّ اللهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِلّٰهِ ط وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اِذْ يُرَوْنَ الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۗ وَاَنَّ اللهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٣٥﴾

اِذْ تَبَرَّآ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوْا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٣٦﴾

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি কথা বলেছেন এবং আমি (তার বিপরীত) আরেকটি কথা বলছি। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ যে, আল্লাহ্ ব্যতীত অন্য কাউকে ডাকা অবস্থায় এবং তাকে আল্লাহর সমকক্ষ মনে করা অবস্থায় (শিরক করে) মারা গেল সে জাহান্নামে প্রবেশ করবে। এবং আমি বলছি যে, আল্লাহর সাথে কাউকে না ডেকে বা সমকক্ষ মনে না করে মৃত্যুবরণ করল সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৯৭)

১৬৭. অনুসরণকারীরা বলবেঃ যদি আমরা ফিরে যেতে পারতাম তবে তারা যেরূপ আমাদেরকে প্রত্যাখ্যান করেছে আমরাও তদ্রূপ তাদেরকে প্রত্যাখ্যান করতাম; এভাবে আল্লাহ তাদের কৃতকর্মসমূহ তৎপ্রতি দুঃখজনকভাবে প্রদর্শন করাবেন এবং তারা জাহান্নাম হতে উদ্ধার পাবে না।

১৬৮. হে মানবগণ! পৃথিবীর মধ্যে যা বৈধ-পবিত্র, তা হতে ভক্ষণ কর এবং শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না, নিশ্চয় সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

১৬৯. সে তো কেবল তোমাদেরকে মন্দ ও অশ্লীল কার্যের এবং আল্লাহ সম্বন্ধে তোমরা জান না এমন সব বিষয় বলার নির্দেশ দেয়।

১৭০. এবং যখন তাদেরকে বলা হয় যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তার অনুসরণ কর; তখন তারা বলে— বরং আমরা তারই অনুসরণ করবো যার উপর আমাদের পিতৃপুরুষগণকে পেয়েছি; যদিও তাদের পিতৃ-পুরুষদের কোনই জ্ঞান ছিল না এবং তারা সুপথগামী ছিল না তবুও?

১৭১. আর যারা অবিশ্বাস করেছে তাদের দৃষ্টান্ত ওদের ন্যায়। যেমন কেউ আহ্বান করলে শুধু চিৎকার ও ধ্বনি ব্যতীত আর কিছুই শুনে না; তারা বধির, মূক, অন্ধ, কাজেই তারা বুঝতে পারে না।

১৭২. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! আমি তোমাদেরকে যা উপজীবিকা

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا كَذَّبْتَ بِكَ يَوْمَئِذٍ اللَّهُ أَعْبَاهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخارجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِن مَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٦٨﴾

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَإِن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُم اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْ لَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧٠﴾

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِينَ يَنْعِقُونَ بِمَا لَا يَسْمَعُونَ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً صُمُّوا بِكُمْ عَمًى فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ

স্বরূপ দান করেছি সেই পবিত্র বস্ত্রসমূহ ভক্ষণ কর এবং আল্লাহর নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর যদি তোমরা তাঁরই উপাসনা করে থাকো।^১

مَا رَزَقْنَكُمْ وَأَشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ
إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿۷﴾

১৭৩. তিনি শুধু তোমাদের জন্যে মৃত জীব, রক্ত (প্রবাহিত রক্ত), শূকরের মাংস এবং যা আল্লাহ ব্যতীত অপরের উদ্দেশ্যে উৎসর্গিত তা হারাম করেছেন; কিন্তু যে ব্যক্তি নিরুপায়; (হারামের প্রতি) ইচ্ছুক নয় এবং তা ভক্ষণের ক্ষেত্রে) সীমালঙ্ঘনকারী নয়, তার জন্যে পাপ নেই এবং নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ
اضْطَرَّ غَيْرَ بَاطِلٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿۷﴾

১৭৪. নিশ্চয় আল্লাহ যা গ্রহণে অবতীর্ণ করেছেন তা যারা গোপন করে ও তৎপরিবর্তে নগণ্য মূল্য গ্রহণ করে, নিশ্চয় তারা স্ব-স্ব উদরে অগ্নি ছাড়া অন্য কিছু ভক্ষণ করে না এবং কিয়ামত দিবসে আল্লাহ তাদের সাথে কথা বলবেন না, তাদেরকে পবিত্র করবেন না এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

إِنَّ الدِّينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ
فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۸﴾

১। আমার থেকে বর্ণিত, তিনি নুমান ইবনে বাশীর থেকে বর্ণনা করেন। নুমান ইবনে বাশীর বলেনঃ আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, হালাল সুস্পষ্ট এবং হারামও সুস্পষ্ট। আর এ দু'য়ের মাঝখানে রয়েছে অস্পষ্ট বিষয়গুলো যা অনেকে জানেনা। অতএব যে ব্যক্তি নিজেকে সন্দেহজনক বিষয় থেকে রক্ষা করল, সে নিজের স্বীকৃতি এবং সম্মানকে রক্ষা করল। আর যে ব্যক্তি সন্দেহজনক বিষয়ে নিপতিত হল তার উদাহরণ হল ঐ রাখালের ন্যায় যে, নিষিদ্ধ চারণ ভূমির চারণপাশে (পশু) চরায়। আর সম্ভাবনা আছে যে কোন সময় সে তার মধ্যে (নিষিদ্ধ সীমায়) প্রবেশ করতে পারে। সাবধান! প্রত্যেক রাজারই সংরক্ষিত এলাকা থাকে। আর আল্লাহর সংরক্ষিত এলাকা হচ্ছে হারাম বিষয়াদি। জেনে রেখ, শরীরের মধ্যে একটি মাংস পিণ্ড আছে, যখন তা ঠিক থাকে তখন সমস্ত শরীর ঠিক থাকে। আর যখন তা নষ্ট হয়ে যায় তখন সমস্ত দেহটাই নষ্ট হয়ে যায়। আর তা হল ক্বলব (হৃৎপিণ্ড)। (বুখারী, হাদীস নং ৫২)

১৭৫. তারাই সুপথের বিনিময়ে কুপথ এবং ক্ষমার পরিবর্তে শাস্তি ক্রয় করেছে, অতঃপর জাহান্নাম (এর আযাব) কিরূপে সহ্য করবে?

১৭৬. এ জন্যেই আল্লাহ সত্যসহ গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছেন এবং যারা গ্রন্থ সম্বন্ধে বিরোধ করে, বাস্তবিকই তারাই বিরুদ্ধাচরণে সুদূরগামী।

১৭৭. তোমরা তোমাদের মুখমন্ডল পূর্ব বা পশ্চিম দিকে প্রত্যাবর্তিত কর তাতে পুণ্য নেই; বরং পুণ্য তার, যে ব্যক্তি আল্লাহ, পরকাল, ফেরেশতা-গণ, কিতাব ও নবীগণের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং তাঁরই ভালবাসা অর্জনের জন্য আত্মীয়-স্বজন, পিতৃহীনগণ, দরিদ্রগণ, পথিকগণ ও ভিক্ষুকদেরকে এবং দাসত্ব মোচনের জন্যে ধন-সম্পদ দান করে, আর নামায প্রতিষ্ঠিত করে ও যাকাত প্রদান করে এবং অঙ্গীকার করলে যারা সেই অঙ্গীকার পূর্ণকারী হয় এবং যারা অভাবে ও ক্লেশে এবং যুদ্ধকালে ধৈর্যশীল তারাই সত্যপরায়ণ এবং তারাই আল্লাহ ভীরু।

১৭৮. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! নিহতগণের সম্বন্ধে তোমাদের জন্যে প্রতিশোধ গ্রহণ বিধিবদ্ধ হলো; স্বাধীনের পরিবর্তে স্বাধীন, দাসের পরিবর্তে দাস এবং নারীর পরিবর্তে নারী; কিন্তু যদি কেউ তার ভাই কর্তৃক কোন বিষয়ে ক্ষমা প্রাপ্ত হয়, তবে যেন ন্যায় সঙ্গতভাবে তাগাদা করে এবং সদ্ভাবে তা পরিশোধ করে;

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ
بِالْبَعْفِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ
اٰخْتَفَوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾

لَيْسَ الْبِرُّ اَنْ تُوْتُوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الشَّرْقِ وَ
الْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ
السَّلٰمَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيِّنَّ ۗ وَاْتَى الْبٰلَ عَلَىٰ حُبِّهِ
ذَوٰى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۗ
وَالسَّٰبِغِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۗ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ
اٰتَى الزَّكٰوةَ ۗ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۗ
وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبٰسِءِ وَالصَّرَءِ ۗ وَحِيْنَ الْبٰسِ ط
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي
الْقَتْلِ ط الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَاِلٰنْثٰى
بِالْاِنْثٰى ط فَمَنْ عَفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاَتْبَاعُ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاِذَاءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ط ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ط فَمَنْ اَعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

এটা তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে লঘু বিধান ও করুণা; অতঃপর যে কেউ সীমালঙ্ঘন করবে তার জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٩﴾

১৭৯. হে জ্ঞানবান লোকেরা! কিসাস (প্রতিশোধ) গ্রহণে তোমাদের জন্যে জীবন আছে— যেন তোমরা আল্লাহ ভীরু হও।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يَاۗوٰلِيۤ اَلۡاَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوۡنَ ﴿١٨٠﴾

১৮০. যখন তোমাদের কারও মৃত্যু নিকটবর্তী বলে মনে হয়, তখন সে যদি ধন-সম্পত্তি ছেড়ে যায় তবে পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের জন্যে বৈধভাবে অসিয়ত করা তোমাদের জন্যে বিধিবদ্ধ হলো, আল্লাহ ভীরুদের জন্যে এটা অবশ্যকরণীয়।

كُتِبَ عَلَيْكُمۡ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنۡ تَرَكَ خَيْرًا ۗ لِّلۡوَالِدِيۡنِ وَالۡاَقْرَبِيۡنَ بِاَلۡمَعْرُوۡفِ ۗ حَقًّا عَلٰى الْمُتَّقِيۡنَ ﴿١٨١﴾

১৮১. অতঃপর যে ব্যক্তি শুনার পর তা পরিবর্তন করে, তবে এর পাপ তাদেরই হবে, যারা একে পরিবর্তন করবে; নিশ্চয়ই আল্লাহ শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

فَمَنۡ بَدَّلَهُ بَعۡدَ مَا سَمِعَهُ فَاِنۡمَآ اِثۡمُهُ عَلٰى
الَّذِيۡنَ يُبَدِّلُوۡنَهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿١٨٢﴾

১৮২. অনন্তর যদি কেউ অসিয়ত-কারীর পক্ষে পক্ষপাতিত্ব বা পাপের আশঙ্কা করে তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দেয়, তবে তার পাপ নেই; নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল করুণাময়।

فَمَنۡ خَافَ مِنۡ مُّوۡسٍ جَنۡفًا وَّ اِثۡمًا فَاَصۡلَحَ
بَيْنَهُمۡ فَلَا اِثۡمَ عَلَيْهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١٨٣﴾

১৮৩. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমাদের পূর্ববর্তী লোকদের ন্যায় তোমাদের উপরও রোযাকে অপরিহার্য কর্তব্যরূপে নির্ধারিত করা হলো যেন তোমরা আল্লাহভীতি অর্জন করতে পারো।

يَاۡۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ
عَلٰى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوۡنَ ﴿١٨٤﴾

১৮৪. এটা নির্দিষ্ট কয়েক দিনের জন্য সুতরাং তোমাদের মধ্যে যে কেউ অসুস্থ কিংবা মুসাফির হয়, তার জন্যে অপর কোন দিবস হতে গণনা করবে; আর যারা সক্ষম তারা তৎপরিবর্তে একজন দরিদ্রকে খাদ্য দান করবে; তবে যে ব্যক্তি স্বেচ্ছায় সৎকর্ম করে তার জন্যে কল্যাণ এবং তোমরা যদি বুঝে থাকো তবে রোযা রাখাই তোমাদের জন্যে কল্যাণকর।

১৮৫. রমযান মাস, যার মধ্যে বিশ্বমানবের জন্য পথ প্রদর্শক এবং সু-পথের উজ্জ্বল নিদর্শন ও (হক ও বাতিলের) প্রভেদকারী কুর'আন অবতীর্ণ করা হয়েছে, অতএব তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এ মাস পাবে, সে যেন রোযা রাখে এবং যে ব্যক্তি অসুস্থ বা মুসাফির তার জন্যে অপর কোন দিন হতে গণনা করবে; তোমাদের পক্ষে যা সহজ আল্লাহ তাই চান ও তোমাদের পক্ষে যা কষ্টকর তা তিনি চান না এবং যেন তোমরা নির্ধারিত সংখ্যা পূরণ করে নিতে পার এবং তোমাদেরকে যে সুপথ দেখিয়েছেন, তজ্জন্যে তোমরা আল্লাহর বড়ত্ব বর্ণনা কর এবং যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।^১

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ وَعَلَىٰ الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ ۚ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۗ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

شَهْرَ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۗ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۗ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾

১। (ক) ত্বাহহা ইবনে উবাইদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, একদা চুল এলোমেলো এক বেদুঈন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে বলল, ইয়া রাসূলাল্লাহ! আমাকে বলুন আল্লাহ আমার প্রতি কত ওয়াজ্ব নামায় ফরয করেছেন? তিনি বললেন পাঁচ ওয়াজ্ব নামায়; কিন্তু যদি তুমি নফল পড় তবে স্বতন্ত্র কথা। অতঃপর সে বলল: আমাকে বলুন আল্লাহ আমার প্রতি কতটি রোযা ফরয করেছেন? তিনি বললেন পুরা রমযান মাসের রোযা রাখা; কিন্তু যদি তুমি নফল রাখ তা অন্য কথা। অতঃপর সে বলল: আমাকে বলুন: আল্লাহ আমার উপর কি পরিমাণ যাকাত ফরজ করেছেন? রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাকে ইসলামী শরীয়ত (ইসলামী জীবন বিধান) সম্পর্কে অবগত করালেন। সে বলল: এ

১৮৬. এবং যখন আমার বান্দাগণ আমার সম্বন্ধে তোমাকে জিজ্ঞাসা করে, তখন তাদেরকে বলে দাও: নিশ্চয় আমি সন্নিকটবর্তী; কোন আহ্বানকারী যখনই আমাকে আহ্বান করে তখনই আমি তার আহ্বানে

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ
دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۗ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا
بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾

সত্যার কসম! যিনি আপনাকে সম্মানিত করেছেন। আল্লাহ্ আমার উপর যা ফরজ করেছেন তার চাইতে আমি বেশীও করব না এবং কসমও করব না। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ যদি সে সত্যবাদী হয় তাহলে নাজাত প্রাপ্ত অথবা বললেন যদি সে সত্যবাদী হয় তাহলে সে জান্নাত লাভ করল। (বুখারী, হাদীস নং ১৮৯১)

(খ) আবু হুরাইরা রাযিআল্লাহু আনহু থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন নিশ্চয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ রোযা (গোনাহ হতে রক্ষার জন্য) চাল স্বরূপ, সুতরাং রোযাদার অশ্লীল কথা বলবেনা, জাহেলী আচরণ করবে না। আর কোন ব্যক্তি যদি তার সাথে মারামারি করতে চায়, গালমন্দ করে তাহলে সে যেন দু'বার বলে (দেখুন) আমি রোযাদার। ঐ সত্যার কসম যার হাতে আমার প্রাণ অবশ্যই রোযাদারের মুখের গন্ধ আল্লাহর নিকট মেসক্ আশ্রয়ের চেয়েও উৎকৃষ্ট। সে খানা-পিনা এবং কামতাবকে আমার সম্ভ্রুটি অর্জনের জন্য পরিত্যাগ করে থাকে। রোযা আমার জন্য এবং আমি নিজে তার প্রতিদান দিব। আর নেক কাজের পুরস্কার দশগুণ পর্যন্ত (নূন্যপক্ষে) দেয়া হয়ে থাকে। (বুখারী, হাদীস নং ১৮৯৪)

(গ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি মিথ্যা কথা এবং তদানুযায়ী আমল করা পরিত্যাগ করতে পারলনা, তার খানা-পিনা পরিত্যাগ করার মধ্যে (রোযা রাখা) আল্লাহর কোন প্রয়োজন নেই। (বুখারী, হাদীস নং ১৯০৩)

(ঘ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তা'আলা বলেনঃ যে ব্যক্তি আমার ওলীর সাথে শত্রুতা পোষণ করবে, আমি তার বিরুদ্ধে অবশ্যই যুদ্ধ ঘোষণা করব। আমি যা কিছু আমার বান্দার ওপর ফরয করে দিয়েছি তার চেয়ে এমন কোন কিছু নাই যে সে তার মাধ্যমে আমার নৈকট্য লাভ করতে পারবে যা আমার নিকট অধিক প্রিয়। * আমার বান্দাগণ সর্বদা নফল ইবাদতের মাধ্যমে আমার নৈকট্য লাভ করবে। এমন কি অবশেষে আমি তাকে ভালবেসে ফেলি। (আর আমি যখন তাকে ভালবাসি) তখন আমি তার কান হয়ে যাই যা দিয়ে সে শ্রবণ করে এবং আমি তার চোখ হয়ে যাই, যা দিয়ে সে দেখে এবং আমি তার হাত হয়ে যাই, যা দিয়ে সে স্পর্শ করে। এবং আমি তার পা হয়ে যাই, যার সাহায্যে সে চলাফেরা করে। এবং সে যখন আমার নিকট কিছু প্রার্থনা করে তখন অবশ্যই আমি তাকে দেই। এবং সে যদি আমার নিকট আশ্রয় প্রার্থনা করে তাহলে অবশ্যই আমি তাকে আশ্রয় দেই। আমার কোন কাজে আমি এতটা ইতস্ততা বোধ করিনা যতটা ইতস্ততা বোধ করি একজন মুমিনের জীবন সম্পর্কে। কেননা সে মৃত্যুকে অপছন্দ মনে করে অথচ আমি তার বেঁচে থাকাকে অপছন্দ করি। (বুখারীঃ ৬৫০২)

* টীকাঃ আল্লাহ্ পাক বলেন আমার বান্দাহ যে সমস্ত ইবাদতের মাধ্যমে আমার নৈকট্য লাভ করে থাকে সে সমস্ত ইবাদতের মধ্যে আমি তাদের প্রতি যা ফরয করে দিয়েছি তা ছাড়া অন্য কোন ইবাদত নেই যা আমার নিকট অধিক প্রিয়। অর্থাৎ ফরয আল্লাহর নিকট 'সবচেয়ে অধিক প্রিয়'। যেমন নামায, রোজা, হজ্জ ও যাকাত ইত্যাদি এবং আমার বান্দাহ ফরয পালন করার পর নফল ইবাদতের মাধ্যমে আল্লাহর এত নিকটবর্তী হয়ে যায় যে, তিনি তাকে ভালবাসতে থাকেন।

সাড়া দিয়ে থাকি; সুতরাং তারাও যেন আমার ডাকে সাড়া দেয় এবং আমাকে বিশ্বাস করে, তা হলেই তারা সঠিক পথে চলতে পারবে।

১৮৭. রোযার রজনীতে আপন স্ত্রীদের সাথে সহবাস করা তোমাদের জন্যে বৈধ করা হয়েছে; তারা তোমাদের জন্যে আবরণ এবং তোমরা তাদের জন্যে আবরণ, তোমরা যে আত্ম প্রতারণা করছিলে, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন, এ জন্যে তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করলেন এবং তোমাদের (অব্যাহতি দিয়েছেন); অতএব এক্ষণে তোমরা (রোযার রাত্রেও) তাদের সাথে সহবাস কর এবং আল্লাহ তোমাদের জন্যে যা লিপিবদ্ধ করেছেন তা অনুসন্ধান কর এবং সকালে কালো সুতা হতে সাদা সুতা প্রকাশিত হওয়া পর্যন্ত তোমরা খাও ও পান কর; অতঃপর রাত্রি সমাগম পর্যন্ত তোমরা রোযা পূর্ণ কর; তোমরা মসজিদে ই'তেকাফ করবার সময় তাদের (স্ত্রীদের) সাথে মিলন করো না; এটাই আল্লাহর সীমা, অতএব তোমরা তার নিকটেও যাবে না; এভাবে আল্লাহ মানবমন্ডলীর জন্যে তাঁর নিদর্শনসমূহ বর্ণনা করেন, যেন তারা আল্লাহ ভীরু হয়।

১৮৮. এবং তোমরা নিজেদের মধ্যে পরস্পরের ধনসম্পত্তি অন্যায়রূপে গ্রাস করো না এবং তা বিচারকের নিকট এ জন্যে উপস্থাপিত করো না, যাতে তোমরা জ্ঞাতসারে লোকের

أَجَلَ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَى نِسَائِكُمْ ط هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ ط عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ط ثُمَّ أَتُوا الصِّيَامَ إِلَى الْيَلِيلِ ؕ وَلَا تَبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ ۙ فِي الْمَسَاجِدِ ط تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا ط كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

ধনের অংশ অন্যায়াভাবে গ্রাস করতে পারো।

১৮৯. তারা তোমাকে নতুন চাঁদসমূহ সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে, তুমি বলঃ এগুলো হচ্ছে জনসমাজের এবং হজ্জের জন্যে সময় নিরূপক; আর (ঐ হজ্জের চাঁদে) তোমরা যে পশ্চাৎদিক দিয়ে গৃহে সমাগত হও, এটা পুণ্য কর্ম নয়, বরং পুণ্যের কাজ হল যে, কোন ব্যক্তি আল্লাহ ভীরু হয় এবং তোমরা গৃহসমূহের দরজা দিয়ে প্রবেশ কর এবং আল্লাহকে ভয় কর, তোমরা অবশ্যই সুফল প্রাপ্ত হবে।

১৯০. এবং যারা তোমাদের সাথে যুদ্ধ করে, তোমরাও তাদের সাথে আল্লাহর পথে যুদ্ধ কর' এবং সীমা অতিক্রম করো না; নিশ্চয়ই আল্লাহ সীমা লঙ্ঘনকারীদের ভালবাসেন না।

১৯১. তাদেরকে যেখানেই পাও, হত্যা কর এবং তারা তোমাদেরকে যেখান হতে বহিষ্কৃত করেছে, তোমরাও তাদেরকে সেখান হতে বহিষ্কৃত কর এবং হত্যা অপেক্ষা ফেত্না-ফাসাদ (কুফর ও শিরক) গুরুতর অপরাধ এবং তোমরা তাদের সাথে মসজিদুল হারামের নিকট যুদ্ধ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْهَلَّةِ ط قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ط وَكَيْسَ الْبَيْتِ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ
ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبَيْتَ مِنَ اتَّقَى ء وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ
أَبْوَابِهَا ء وَأَتَقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾

وَكَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوا ط وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾

وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ
أَخْرَجُوهُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تَقْتُلُوهُمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُقْتَلُوا فِيهِ ء فَإِنْ
قَاتَلْتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ط كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكٰفِرِينَ ﴿١٩١﴾

১। আবু আমর আস সাইবানী থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলাম যে, ইয়া রাসূল! তোমার সর্বোত্তম আমল কোনটি? তিনি বললেনঃ সময়মত নামায পড়া। আমি বললাম এরপর কোনটি? তিনি বললেনঃ পিতা-মাতার প্রতি সন্তানবহার করা। আমি বললাম এরপর কোনটি? তিনি বললেনঃ আল্লাহর পথে জিহাদ করা। অতঃপর আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে আর কোন কিছু জিজ্ঞেস করা থেকে বিরত থাকলাম। আমি যদি তাকে আরো অধিক কোন কিছু জিজ্ঞেস করতাম তবে তিনিও আমাকে তার উত্তর দিতেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৮২)

করো না; যে পর্যন্ত না তারা তোমাদের সাথে তন্মধ্যে যুদ্ধ করে; কিন্তু যদি তারা তোমাদের সাথে যুদ্ধ করে তবে তোমরাও তাদেরকে হত্যা কর; অবিশ্বাসীদের জন্যে এটাই প্রতিফল।

১৯২. অতঃপর যদি তারা নিবৃত্ত হয় তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

১৯৩. ফেত্না-ফাসাদ দূরীভূত হয়ে আল্লাহর দীন প্রতিষ্ঠিত না হওয়া পর্যন্ত তোমরা তাদের সাথে যুদ্ধ কর; অতঃপর যদি তারা নিবৃত্ত হয়, তবে অত্যাচারীদের উপর ব্যতীত বাড়াবাড়ি নেই। ২

فَإِنْ أَنْتَهُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٢﴾

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنْ أَنْتَهُوا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾

১। আবু বাকর (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (বিদায় হজ্জে) কোরবানীর দিন (মিনায়) খুত্বা অবস্থায় তিনি বললেনঃ তোমরা কি জান এটি কোন দিন? আমরা সবাই বললাম (সাহাবাগণ) আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল সর্বাধিক অবগত। রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কিছুক্ষণ চুপ থাকলেন। আমরা ভাবতেছিলাম হয়ত তিনি এদিনকে অন্য কোন নামে আখ্যায়িত করবেন। তিনি বললেনঃ এটা কি কোরবানীর দিন নয়? আমরা বললাম হ্যাঁ। তিনি বললেন এটি কোন মাস? আমরা বললামঃ আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল সর্বাধিক অবগত। তিনি কিছুক্ষণ চুপ থাকলেন। আমরা ভাবতেছিলাম হয়ত তিনি এদিনটিকে অন্য কোন নামে নামকরণ করবেন। তিনি বললেনঃ এটা কি যিলহজ্জ মাস নয়? আমরা বললাম হ্যাঁ, তিনি বললেনঃ এটা কোন শহর? আমরা বললাম আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল সর্বাধিক অবগত। তিনি কিছুক্ষণ চুপ থাকলেন, আমরা ভাবতেছিলাম যে, তিনি হয়ত তাকে অন্য কোন নামে আখ্যায়িত করবেন। তিনি বললেন, এটা কি হারাম শহর নয়? আমরা বললাম হ্যাঁ। (আদব ও সম্মানের মাস এখানে কাউকে মারা এবং কষ্ট দেয়া হারাম) তিনি বললেন, নিশ্চয়ই তোমাদের রক্ত, তোমাদের সম্পদ, এবং তোমাদের মান-ইজ্জত তেমনি হারাম যেমন তোমাদের আজকের এইদিন তোমাদের এই মাস তোমাদের এই শহর হারাম। আর এটি তোমরা তোমাদের প্রভুর সাথে সাক্ষাত করা পর্যন্ত বলবৎ থাকবে। হুশিয়ার হও! আমি কি আমার দায়িত্ব যথাযথভাবে পালন করেছি? উপস্থিত সবাই বলল (সাহাবাগণ) হ্যাঁ। তিনি বললেনঃ হে আল্লাহ! তুমি সাক্ষি থাক। তোমরা যারা উপস্থিত আছ তারা অনুপস্থিতদেরকে এ সংবাদ পৌছিয়ে দিবে। কখনো এমন হতে পারে যে, প্রচারকারীর চাইতে-অনেক শ্রবণকারী অধিক সংরক্ষণকারী হতে পারে। আমার পরে পরস্পরে মারামারি করে কাফের হয়ে যেও না। (বুখারী, হাদীস নং ১৭৪১)

২। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত নিশ্চয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি আদিষ্ট হয়েছি, যেন আমি লোকদের সাথে ততক্ষণ পর্যন্ত জিহাদ করি যতক্ষণ পর্যন্ত তারা এ সাক্ষী না দেয় যে আল্লাহ্ ব্যতীত সত্য কোন মা'বুদ নেই এবং নিশ্চয়ই মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহর রাসূল এবং নামায প্রতিষ্ঠা করবে, যাকাত প্রদান করবে। যখন তারা তা করবে, তখন

১১৪. নিষিদ্ধ মাসের পরিবর্তে নিষিদ্ধ মাস এবং নিষিদ্ধ মাসেও বদলার ব্যবস্থা বের হবে ঐ অবস্থায় যদি কেউ তোমাদের প্রতি অত্যাচার করে, তবে সে তোমাদের প্রতি যেরূপ অত্যাচার করবে, তোমরাও তার প্রতি সেরূপ অত্যাচার কর এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে, আল্লাহ মুত্তাকীদের সাথে রয়েছেন।

১১৫. এবং তোমরা আল্লাহর পথে ব্যয় কর এবং স্বীয় হাত ধ্বংসের দিকে প্রসারিত করো না এবং হিতসাধন করতে থাকো, নিশ্চয় আল্লাহ হিতসাধনকারীদেরকে ভালবাসেন।

১১৬. তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে হজ্জ ও উমরাহ সম্পূর্ণ কর; কিন্তু তোমরা যদি বাধাপ্রাপ্ত হও তবে যা সহজ প্রাপ্য তাই কুরবানী কর এবং কুরবানীর জন্তুগুলো স্বস্থানে না পৌছা পর্যন্ত তোমাদের মস্তক মুন্ডন করো না; কিন্তু কেউ যদি তোমাদের মধ্যে রোগাক্রান্ত হয় বা তার মস্তক যন্ত্রণাগ্রস্ত হয়, তবে সে রোযা, কিংবা সাদকা অথবা কুরবানী দ্বারা ওর বিনিময় করবে, অতঃপর যখন তোমরা নিরাপদ অবস্থায় থাকো, তখন যে ব্যক্তি হজ্জের সাথে উমরারও ফলভোগ কামনা করে তবে যা সহজ প্রাপ্য তাই কুরবানী করবে;

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ ۗ
فَمَنْ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا
اعْتَدَى عَلَيْكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١١٤﴾

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى
التَّهْلُكَةِ ۗ وَأَحْسِنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

وَاتَّبِعُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى
يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ ۗ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ
بِهِ أَذًى مِّنْ رَّأْسِهِ فَعِدْيَةٌ مِّنْ صِبَاٍ أَوْ صَدَقَةٌ
أَوْ نُسْكَ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَبِعَ بِالْعُمْرَةِ
إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ
يَجِدْ فِصْيَامًا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةً إِذَا
رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذَلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ

তারা আমার পক্ষ থেকে তাদের জান-মাল রক্ষার অধিকার লাভ করবে। অবশ্য ইসলামের বিধান লঙ্ঘন করার কারণে শাস্তি পাবে। (যেমন চুরি, ব্যভিচার, হত্যা ইত্যাদি) এবং তাদেরকে আল্লাহর নিকট হিসাব দিতে হবে। [১] (বুখারীঃ ২৫)

কিন্তু কেউ যদি তা না পায় তবে হজ্জের সময় তিন দিন এবং যখন তোমরা প্রত্যাবর্তিত হও তখন সাত দিন এই পূর্ণ দশ দিন রোযা রাখবে; এটা তারই জন্যে-যার পরিজন মসজিদুল হারামে উপস্থিত না থাকে এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে আল্লাহ কঠিন শাস্তি দাতা ৷

১১৭. হজ্জের মাসগুলো নির্ধারিত; অতএব কেউ যদি ঐ মাসগুলোর মধ্যে হজ্জের সংকল্প করে, তবে সে হজ্জের মধ্যে সহবাস, দুর্কার্য ও কলহ করতে পারবে না এবং তোমরা যে কোন সৎকর্ম কর না কেন, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন; আর তোমরা (নিজেদের) পাথেয় সঞ্চয় করে নাও; বস্তুতঃ নিশ্চিত উৎকৃষ্টতম পাথেয় হচ্ছে আল্লাহভীতি এবং হে জ্ঞানবানগণ! তোমরা আমাকে ভয় কর।

১১৮. তোমরা স্বীয় প্রতিপালকের অনুগ্রহ লাভের চেষ্টা করলে তাতে তোমাদের পক্ষে কোন অপরাধ নেই; অতঃপর যখন তোমরা আরাফাত হতে প্রত্যাবর্তিত হও তখন পবিত্র (মাশয়ারে হারাম) স্মৃতি-স্থানের নিকট আল্লাহকে স্মরণ কর এবং তিনি তোমাদেরকে যেরূপ নির্দেশ দিয়েছেন তদ্রূপ তাঁকে স্মরণ করো এবং নিশ্চয় তোমরা এর পূর্বে বিভ্রান্ত দের অন্তর্গত ছিলে।

أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١٧﴾

الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ ۖ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ
الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ ۖ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ
وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمَهُ اللَّهُ ۗ وَكَرَّوْا
وَإِنْ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُوا يَا أُولِي الْأَبْصَارِ ﴿١١٨﴾

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۗ
وَإِذَا أَقَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْتُمْ ۗ وَإِنْ
كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنِ الضَّالِّينَ ﴿١١٩﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এক উমরা থেকে অপর উমরা মধ্যবর্তী গোনাহসমূহের জন্য কাফ্কারা আর মাকবুল হজ্জের প্রতিদান জান্নাত ব্যতীত আর কিছুই নয়। (বুখারী, হাদীস নং ১৭৭৩)

১৯৯. অতঃপর যেখান হতে লোক প্রত্যাবর্তন করে, তোমরাও সেখান থেকে প্রত্যাবর্তন কর এবং আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর; নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

২০০. অনন্তর যখন তোমরা তোমাদের (হজ্জের) অনুষ্ঠানগুলো সম্পন্ন করে ফেলো তখন যে রূপ তোমাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে স্মরণ করতে, তদ্রূপ আল্লাহকে স্মরণ কর বরং তদপেক্ষা দৃঢ়তর ভাবে স্মরণ কর; কিন্তু মানবমন্ডলীর মধ্যে কেউ কেউ এরূপ আছে যারা বলে থাকেঃ হে আমাদের প্রভু! আমাদেরকে ইহকালেই দান করুন তাদের জন্যে পরকালে কোন অংশ নেই।

২০১. আর তাদের মধ্যে কেউ কেউ বলে থাকেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে ইহকালে কল্যাণ দান করুন ও পরকালে কল্যাণ দান করুন এবং জাহান্নামের শাস্তি হতে আমাদেরকে রক্ষা করুন।

২০২. তারা যা অর্জন করেছে, তাদের জন্যে তারই অংশ রয়েছে এবং নিশ্চয় আল্লাহ দ্রুত হিসাব গ্রহণকারী।

২০৩. এবং নির্ধারিত দিবসসমূহে আল্লাহকে স্মরণ কর; অতঃপর কেউ যদি দু'দিনের মধ্যে (মক্কায় ফিরে যেতে) তাড়াতাড়ি করে তবে তার জন্যে কোন পাপ নেই, পক্ষান্তরে কেউ যদি বিলম্ব করে তবে তার জন্যেও পাপ নেই এবং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো

ثُمَّ أفيضوا مِنْ حَيْثُ أَقاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا
اللَّهُ ط إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٩﴾

وَإِذَا قَضَيْتُمْ مَناسِكُمْ فَادْكُرُوا اللَّهَ كَذيكرِكُمْ
أَباءِكُمْ أَوْ أشدَّ ذِكْراً ط فِمنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الآخِرَةِ مِنْ
خَلاقٍ ﴿٢٠٠﴾

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذابَ
النَّارِ ﴿٢٠١﴾

أُولَئِكَ لَهُمْ نصيبٌ مِمَّا كَسَبُوا ط
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

وَادْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَعْدُودَاتٍ ط فَمَنْ تَعَجَّلَ
فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثمَ عَلَيْهِ ؕ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا
إثمَ عَلَيْهِ ؕ لِيَنبَأَ الثَّقَلَيْنِ ط وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا
أَنكُمُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

যে, অবশ্যই তোমাদের সকলকে তাঁরই নিকট সমবেত করা হবে।

২০৪. এবং মানবমন্ডলীর মধ্যে এমনও আছে— পার্থিব জীবন সংক্রান্ত যার কথা তোমাকে চমৎকৃত করে তুলে, আর সে নিজের অন্তরস্থ (সততা) সম্বন্ধে আল্লাহকে সাক্ষি করে থাকে; কিন্তু বস্ততঃ সে হচ্ছে ভীষণ ঝগড়াটে ব্যক্তি।^১

২০৫. যখন সে প্রত্যাবর্তিত হয় তখন সে পৃথিবীতে অশান্তি বিস্তারের এবং শস্য ক্ষেত্র ও জীবজন্তু বিনাশের চেষ্টা করে। আর আল্লাহ অশান্তি ভালবাসেন না।

২০৬. যখন তাকে বলা হয় তুমি আল্লাহকে ভয় কর, তখন প্রতিপত্তির অহমিকা তাকে অধিকতর অনাচারে লিপ্ত করে দেয়, অতএব জাহান্নামই তার জন্যে যথেষ্ট এবং নিশ্চয় ওটা নিকৃষ্ট আশ্রয় স্থল!

২০৭. পক্ষান্তরে কোন কোন লোক এরূপ আছে, যে আল্লাহর পরিতুষ্টি সাধনের জন্যে স্বীয় আত্মা বিক্রয় করে এবং আল্লাহ হচ্চেন সমস্ত বান্দার প্রতি স্নেহপরায়ণ।

২০৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা পূর্ণরূপে ইসলামে প্রবেশ কর এবং শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না, নিশ্চয় সে তোমাদের জন্যে প্রকাশ্য শত্রু।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۗ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ﴿٢٠٥﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُ لَهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَلَبِئْسَ الْبِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۗ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহর নিকটে সেই লোক সর্বাধিক ঘৃণিত যে অত্যন্ত ঝগড়াটে। (বুখারী, হাদীস নং ২৪৫৭)

২০৯. অনন্তর স্পষ্ট দলীল প্রমাণাদি তোমাদের নিকট সমাগত হওয়ার পরেও যদি তোমরা পদস্থলিত হয়ে যাও, তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহ হচ্ছেন মহা পরাক্রান্ত, প্রজ্ঞাময়।

২১০. তারা শুধু এ অপেক্ষাই করছে যে, আল্লাহ তা'আলা সাদা মেঘমালার ছায়া তলে তাদের নিকট সমাগত হবেন আর ফেরেশতারাও (আসবেন) এবং সমস্ত কার্যের নিষ্পত্তি করা হবে এবং আল্লাহরই নিকট সমস্ত কার্য প্রত্যাবর্তিত হয়ে থাকে।

২১১. ইসরাঈল বংশীয়গণকে জিজ্ঞেস কর যে, আমি কত স্পষ্ট প্রমাণই না তাদেরকে প্রদান করেছি। এবং যে কেউ তার নিকট আল্লাহর অনুগ্রহ সম্পদ আসার পর তা পরিবর্তন করে ফেলে তবে জেনে রেখো নিশ্চয় আল্লাহ কঠোর শাস্তি দাতা।

২১২. যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের পার্থিব জীবন সুশোভিত করা হয়েছে এবং তারা বিশ্বাস স্থাপনকারীদেরকে উপহাস করে থাকে এবং যারা আল্লাহভীরু তাদেরকে উত্থান দিবসে সম্মুখত করা হবে এবং আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন অপরিমিত জীবিকা দান করে থাকেন।

২১৩. মানবজাতি একই সম্প্রদায়-ভুক্ত ছিল; অতঃপর আল্লাহ সুসংবাদ বাহক ও ভয় প্রদর্শকরূপে নবীগণকে প্রেরণ করলেন এবং তিনি তাদের সাথে সত্যসহ গ্রন্থ অবতীর্ণ করলেন যেন (ঐ কিতাব) তাদের মতভেদের

فَأَن زَلَلْتُمْ مِّن بَعْدِ مَا جَاءتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ
فَاعْلَمُوا أَن اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ
الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَإِلَى اللَّهِ
تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٦٠﴾

سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ آيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ
وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءتْهُ
فَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦١﴾

زَيْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْحَرُونَ
مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٦٢﴾

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيَّ
مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ
بِالْحَقِّ لِيُحْكَمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا اخْتَلَفُوا فِيهِ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ

বিষয়গুলো সম্বন্ধে মীমাংসা করে দেয়, অথচ যারা কিতাবপ্রাপ্ত হয়েছিল, স্পষ্ট নিদর্শনসমূহ তাদের নিকট সমাগত হওয়ার পর, পরস্পরের প্রতি হিংসা-বিদ্বেষবশতঃ তারা সে কিতাবকে নিয়ে মতভেদ ঘটিয়ে বসলো, অতঃপর আল্লাহ তদীয় ইচ্ছাক্রমে বিশ্বাস স্থাপনকারীদেরকে তদ্বিষয়ে সত্যের দিকে পথ প্রদর্শন করলেন এবং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সরল পথ প্রদর্শন করে থাকেন।

২১৪. তোমরা কি মনে করে নিয়েছো যে, তোমরা বেহেশতে প্রবেশ করেই ফেলবে? অথচ তোমাদের অবস্থা এখনও তাদের মত হয়নি যারা তোমাদের পূর্বে বিগত হয়েছে; তাদেরকে বিপদ ও দুঃখ স্পর্শ করেছিল এবং তাদেরকে প্রকম্পিত করা হয়েছিল; এমন কি রাসুল ও তৎসহ বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ বলেছিলেন কখন আল্লাহর সাহায্য আসবে? সতর্ক হও, নিশ্চয় আল্লাহর সাহায্য নিকটবর্তী।

২১৫. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করছে যে, তারা কিরূপে ব্যয় করবে? তুমি বলঃ তোমরা ধন-সম্পত্তি হতে যা ব্যয় করবে তা পিতা-মাতার, আত্মীয় স্বজনের, পিতৃহীনদের, দরিদ্রদের ও পথিকবৃন্দের জন্যে করো এবং তোমরা যে সব সৎকর্ম কর নিশ্চয় আল্লাহ তা সম্যকরূপে অবগত।

২১৬. জিহাদকে তোমাদের জন্যে অপরিহার্য কর্তব্যরূপে অবধারিত

مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغِيًّا بَيْنَهُمْ ۖ فَهَدَى اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ ط
وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢١٤﴾

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ
الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ط مَسْتَهْمُ الْبِئْسَاءُ وَ
الضَّرَاءُ وَزُلْزَلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ مَتَى نَصُرَ اللَّهُ ط الْآلِ إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٥﴾

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۗ قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ
خَيْرٍ فَلِلَّهِ الدِّينِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ
وَأَبْنِ السَّبِيلِ ط وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ
بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢١٦﴾

كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالَ وَهُوَ كَلِمَةٌ وَعَسَى أَنْ

করা হয়েছে এবং এটা তোমাদের নিকট অপ্রীতিকর; বস্তুতঃ তোমরা এমন বিষয়কে অপছন্দ করছো যা তোমাদের পক্ষে বাস্তবিকই মঙ্গলজনক, পক্ষান্তরে তোমরা এমন বিষয়কে পছন্দ করছো যা তোমাদের জন্যে বাস্তবিকই অনিষ্টকর এবং আল্লাহই অবগত আছেন আর তোমরা অবগত নও।

২১৭. তারা তোমাকে নিষিদ্ধ মাস, তার মধ্যে যুদ্ধ করা সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে; তুমি বলঃ এর মধ্যে যুদ্ধ করা অতীব অন্যায়, আর আল্লাহর পথ ও পবিত্র মসজিদ হতে প্রতিরোধ করা এবং তাঁকে অবিশ্বাস করা ও তার মধ্যে হতে তার অধিবাসীদেরকে বহিষ্কৃত করা আল্লাহর নিকট গুরুতর অপরাধ এবং হত্যা অপেক্ষা ফেত্না-ফাসাদ (কুফর ও শিরক) গুরুতর এবং যদি তারা সক্ষম হয়, তবে তারা তোমাদেরকে তোমাদের ধর্ম হতে ফিরাতে না পারা পর্যন্ত সর্বদা তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতে থাকবে; আর তোমাদের মধ্যকার কেউ যদি স্বধর্ম হতে ফিরে যায় এবং ঐ কাফের অবস্থাতেই তার মৃত্যু ঘটে, তাহলে তার ইহকাল পরকালের সমস্ত কর্মই নিষ্ফল হয়ে যায়, তারাই জাহান্নামের অধিবাসী এবং তারই মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

২১৮. নিশ্চয় যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে এবং আল্লাহর পথে দেশ ত্যাগ করেছে ও আল্লাহর পথে জেহাদ করেছে, তারাই আল্লাহর

تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا
شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٧﴾

سَأَلُواكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ۗ قُلْ
قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۗ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ
مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ
الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ يَقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ
عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتِطَاعُوا ۗ وَمَنْ يَزِدِدْ
مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرًا وَلِلَّهِ
حِكْمَتٌ أَعْمَاهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَأُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ ۗ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ

অনুগ্রহের প্রত্যাশা করবে এবং আল্লাহ স্ফমাশীল, করুণাময়।

عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٧﴾

২১৯. মাদক দ্রব্য ও জুয়া খেলা সম্বন্ধে তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করছে; তুমি বলঃ এ দু'টোর মধ্যে গুরুতর পাপ রয়েছে এবং কোন কোন লোকের (কিছু) উপকার আছে, কিন্তু ও দু'টোর লাভ অপেক্ষা পাপই গুরুতর; তারা তোমাকে (আরও) জিজ্ঞেস করছে, তারা কি (পরিমাণ) ব্যয় করবে? তুমি বলঃ যা তোমাদের উদ্বৃত্ত; এভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্যে নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করেন যেন তোমরা চিন্তা করে দেখ।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ط قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَمَافِعٌ لِلنَّاسِ ذَوَاتُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ نَفْعِهِمَا ط وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ هُ قُلِ الْعَفْوَ ط كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি লা'ত এবং ওজ্জার নামে কসম করে সে যেন লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ বলে। আর যে ব্যক্তি তার সাথীকে বলেছে যে, এসো আমরা জুয়া খেলি, তবে তার সাদকা করা উচিত। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৬০)

(খ) ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি দুনিয়াতে মদ পান করল, অতঃপর তা থেকে তাওবা করল না, পরকালে সে তা থেকে বঞ্চিত হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৭৫)

(গ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে এমন একটি হাদীস শুনেছি যা আমি ব্যতীত অন্য কেউ তোমাদেরকে বর্ণনা করবে না। তিনি (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের আলামতগুলোর মধ্যে এ-ও আছে যে, অজ্ঞতা ও মূর্খতার বহিঃপ্রকাশ ঘটবে এবং জ্ঞানলোপ পাবে, যিনা-ব্যভিচার প্রকাশ্যে হতে থাকবে ও মদ পান (অবাধে চলবে)। পুরুষের সংখ্যা লোপ পাবে এবং নারীর সংখ্যা বৃদ্ধি পাবে; এমনকি পঞ্চাশ জন মহিলা একজন পুরুষের অধিনস্ত থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৭৭)

(ঘ) ইবনে সিহাব থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, আমি আবু সালমা ইবনে আব্দুর রহমান এবং ইবনে মুসাইল্যেবকে বলতে শুনেছি যে, আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যভিচার করা অবস্থায় ব্যভিচারকারী মোমেন থাকে না। মদপান করার সময় মদপানকারী মোমেন থাকে না, চুরি করার সময় চোর মোমেন থাকে না (সেই মুহূর্তে তার থেকে ঈমান দূরে চলে যায়)। ইবনে শিহাব বলেনঃ আমাকে আব্দুল মালিক বিন আবু বকর বিন আব্দুর রহমান বিন হারেস বিন হিসাম জানিয়েছেন, নিশ্চয় আবু বকর তাকে হাদীস শুনাতেন, আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণনা করেন যে, উল্লেখিত বর্ণনাকারী আবু বকর এ হাদীসের সঙ্গে আরও একটু সংযুক্ত করেছেন যে, অনুরূপভাবে লুণ্ঠনকারী যখন লুণ্ঠন করে যার দিকে মানুষ চোখ তুলে তাকায় সেও লুণ্ঠন করার সময় মোমেন থাকে না। (বুখারীঃ, হাদীস নং ৫৫৭৮)

২২০. পার্থিব ও পারলৌকিক বিষয়ে আর তারা তোমাকে ইয়াতিমদের সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে; তুমি বলঃ তাদের হিতসাধন করাই উত্তম; এবং যদি তোমরা তাদেরকে সম্মিলিত করে নাও তবে তারা তোমাদের ভ্রাতা, আর কে অনিষ্টকারী, কে হিতাকাজক্ষী আল্লাহ তা অবগত আছেন এবং যদি আল্লাহ ইচ্ছে করতেন, তবে তিনি তোমাদেরকে বিপদে ফেলতেন, নিশ্চয় আল্লাহ পরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাময়।

২২১. এবং অংশীবাদিনীগণ বিশ্বাস স্থাপন না করা পর্যন্ত তোমরা তাদেরকে বিয়ে করো না এবং নিশ্চয় বিশ্বাসিনী দাসী অংশীবাদিনী (স্বাধীনা) মহিলা অপেক্ষা উত্তম যদিও সে তোমাদেরকে মোহিত করে ফেলে এবং অংশীবাদীগণ বিশ্বাস স্থাপন না করা পর্যন্ত তাদের সাথে (মুসলমান নারীদের) বিবাহ প্রদান করো না এবং নিশ্চয় অংশীবাদী তোমাদের মনঃপুত হলেও বিশ্বাসী দাস তদপেক্ষা শ্রেষ্ঠতর; এরাই জাহান্নামের দিকে আহ্বান করে এবং আল্লাহ স্বীয় ইচ্ছায় জান্নাত ও ক্ষমার দিকে আহ্বান করেন ও মানবমন্ডলীর জন্যে স্বীয় নিদর্শনাবলী বিবৃত করেন, যেন তারা শিক্ষা গ্রহণ করে।

২২২. এবং তারা তোমাকে (স্ত্রী লোকদের) ঋতুস্রাব সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে; তুমি বলঃ ওটা হচ্ছে কষ্টদায়ক অবস্থা। অতএব ঋতুকালে স্ত্রী লোকদের থেকে (সঙ্গম

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ط وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَى ط قُلْ
إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ ط وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَآخِوَانُكُمْ ط
وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمَصْلِحِ ط وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَاعْتَدْتُمْ ط إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٧﴾

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَةَ حَتَّىٰ يُوْمِنَ ط وَلَا مَهْرٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ ط وَلَوْ أَعْبَبْتُمْ ء ۙ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُوْمِنُوا ط وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ ط وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ط أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ
وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ء
وَيَبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿١٨﴾

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ط قُلْ هُوَ آذَى ۙ فَاَعْتَرِزُوا
النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۙ وَلَا تَقْرُبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ء
فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ط

না করে) বিরত থাক এবং উত্তমরূপে পবিত্র না হওয়া পর্যন্ত তাদের নিকটে যেও না; (সহবাস করোনা) অনন্তর যখন তারা পবিত্র হবে, তখন আল্লাহর নির্দেশ মতে তোমরা তাদের নিকট গমন কর, নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমা প্রার্থীগণকে ভালবাসেন এবং পবিত্রতা অর্জনকারীগণকেও ভালবেসে থাকেন।

২২৩. তোমাদের স্ত্রীগণ তোমাদের জন্যে ক্ষেত্র স্বরূপ; অতএব তোমরা যেভাবেই ইচ্ছা কর গমন কর এবং স্থায়ী জীবনের জন্যে পাথেয় পূর্বেই প্রেরণ কর এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে, তোমাদের সবাইকে তাঁর মুখোমুখী হতে হবে এবং বিশ্বাসীগণকে সুসংবাদ প্রদান কর।

২২৪. তোমরা নিজেদের শপথের জন্য আল্লাহর নামকে লক্ষ্যবস্তু বানিওনা, সৎকাজ, আত্মসংযম এবং মানুষের মাঝে মীমাংসা করে দেয়া থেকে বেঁচে থাকার উদ্দেশ্যে; বস্তুতঃ আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞাত।

২২৫. আল্লাহ তা'আলা তোমাদের নিরর্থক শপথসমূহের (অর্থহীন শপথের) জন্যে তোমাদেরকে ধরবেন না; কিন্তু তিনি তোমাদেরকে ঐসব শপথ সম্বন্ধে ধরবেন যেগুলো তোমাদের মনের সংকল্প অনুসারে সাধিত হয়েছে এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, ধৈর্যশীল।

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٣٣﴾

نِسَاءَكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأَتُوا حَرْثَكُمْ أَيْ شِئْتُمْ
وَقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ ط وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّكُمْ
مُلقَوَةٌ ط وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا
وَتَتَّقُوا وَتُصَلِّحُوا بَيْنَ النَّاسِ ط وَاللَّهُ سَبِيحٌ
عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

لَا يَأْخُذْكُمْ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ
يَأْخُذْكُمْ بِمَا كَسَبْتُمْ قُلُوبَكُمْ ط وَاللَّهُ عَفُورٌ
حَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

২২৬. যারা স্বীয় স্ত্রীগণ^১ হতে পৃথক থাকবার শপথ করে তারা চার মাস প্রতীক্ষা করবে; অতঃপর যদি তারা প্রত্যাবর্তিত হয়, তবে নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

২২৭. পক্ষান্তরে যদি তারা তালাক দিতেই দৃঢ় প্রতিজ্ঞ হয়ে থাকে, তবে নিশ্চয় আল্লাহ শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

২২৮. এবং তালাক প্রাপ্তাগণ তিন স্ত্রী পর্যন্ত আত্মসম্বরণ করে থাকবে; এবং যদি তারা আল্লাহ ও পরকালে বিশ্বাস করে তবে আল্লাহ তাদের গর্ভে যা সৃষ্টি করেছেন তা গোপন করা তাদের পক্ষে বৈধ হবে না; এবং এর মধ্যে যদি তারা সক্ষি কামনা করে তবে তাদের স্বামীই তাদেরকে প্রতিগ্রহণ করতে সমর্থিক স্বত্ববান; আর নারীদের উপর তাদের যেরূপ স্বত্ব আছে, নারীদেরও তদনুরূপ ন্যায়সঙ্গত স্বত্ব আছে এবং তাদের উপর পুরুষদের শ্রেষ্ঠত্ব রয়েছে; আল্লাহ হচ্ছেন মহা পরাক্রান্ত প্রজ্ঞাময়।

২২৯. তালাক দুইবার; অতঃপর (স্ত্রীকে) হয় বিহিতভাবে রাখতে হবে। অথবা সংভাবে পরিত্যাগ

لِّلَّذِينَ يُؤَلُّونَ مِنْ نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةٍ أَشْهُرٍ ؕ فَإِنْ فَاءُ وَقَانَ اللَّهُ عَفْوَ رَحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

وَالْمَطْلُوتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۖ وَلَا يَجِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَبَعُوهُنَّ حَتَّىٰ يَرِدِيَهُنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾

الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ ۖ فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ ۖ بِإِحْسَانٍ ۚ وَلَا يَجِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مَبَةً

১। (ক) না'ফে থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই ইবনে ওমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) "ইলা" (চার মাস স্ত্রী সংস্পর্শ পরিত্যাগের কসম করা) সম্পর্কে বলেন, যার উল্লেখ আল্লাহ্ কুরআনে করেছেন যে, নির্দিষ্ট সময় (চার মাস) অতিবাহিত হওয়ার পর আল্লাহ্র নির্দেশ অনুযায়ী হয় তার স্ত্রীকে বৈধ পদ্ধতিতে রাখবে, আর না হয় তালাক দিয়ে দিবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৯০)

(খ) না'ফে, ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণনা করেন যে, যখন চার মাস অতিবাহিত হয়ে যায়, তখন তালাক দেয়া পর্যন্ত (স্ত্রী) অপেক্ষা করবে। স্বামী তালাক না দেয়া পর্যন্ত তালাক হবে না। উসমান, আলী, আবু দারদা এবং আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহুম) সহ রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের) আরো বার জন সাহাবী থেকে এমত বর্ণিত হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৯১)

করতে হবে এবং যদি উভয়ে আশঙ্কা করে যে, তারা আল্লাহর সীমা স্থির রাখতে পারবে না। তবে তোমরা তাদেরকে যা প্রদান করেছো তা হতে কিছু প্রতিগ্রহণ করা তোমাদের জন্যে বৈধ নয়; অনন্তর তোমরা যদি আশঙ্কা কর যে, তারা আল্লাহর সীমা ঠিক রাখতে পারবে না, সে অবস্থায় স্ত্রী নিজের মুক্তি লাভের জন্য কিছু বিনিময় দিলে তাতে উভয়ের কোন দোষ নেই; এগুলোই হচ্ছে আল্লাহর সীমাসমূহ অতএব তা অতিক্রম করো না এবং যারা আল্লাহর সীমা অতিক্রম করে, বস্তুতঃ তারাই অত্যাচরী।^১

২৩০. অনন্তর যদি সে স্ত্রীকে তালাক প্রদান করে তবে সে স্ত্রী যতক্ষণ পর্যন্ত তাকে ছাড়া অন্য স্বামীকে বিয়ে করে না নিবে সে তার জন্যে বৈধ হবে না, তৎপর সে তাকে তালাক প্রদান করলে যদি উভয়ে মনে করে যে, তারা আল্লাহর সীমাসমূহ স্থির রাখতে পারবে, তখন যদি তারা পরস্পর প্রত্যাবর্তিত হয় তবে উভয়ের পক্ষে কোনই দোষ নেই এবং এগুলোই আল্লাহর সীমাসমূহ, তিনি বিজ্ঞ সম্প্রদায়ের জন্যে এগুলো ব্যক্ত করে থাকেন।

اتَّيَسُّوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ ط فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ
اللَّهِ ۗ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ط
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۗ وَمَنْ يَتَعَدَّ
حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣٠﴾

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَيْثُ تَنْكِحَ
زَوْجًا غَيْرَهُ ط فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ
يَتَرَاجَعَا إِنْ طَلَّقَا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ط وَتِلْكَ
حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত নিচুমই সাবেত ইবনে কাইসের স্ত্রী নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে বলল ইয়া রাসূল্লাহ সাবেত ইবনে কাইসের ধার্মিকতা এবং চরিত্রের ওপর আমার কোন অভিযোগ নেই; কিন্তু আমি মুসলমান হয়ে কুফরী করাটা মোটেই পছন্দ করি না। (তাদের উভয়ের সম্পর্কে অমিল ছিল) রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ তুমি কি তাকে (স্বামীকে) মহর হিসাবে যে বাগান সে দিয়েছিল তা ফিরিয়ে দিবে? সে বলল হ্যাঁ। রাসূল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) সাবেত (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বললেন বাগানটি ফেরত নিয়ে তাকে এক তালাক দিয়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৭৩)

২৩১. এবং তোমরা যখন স্ত্রীদেরকে তালাক দাও আর তারা তাদের নির্ধারিত সময়ে পৌছে যায়, তখন তাদেরকে ভালভাবে রাখতে পার অথবা ভালভাবে পরিত্যাগ করতে পার এবং তাদেরকে যত্ননা দেয়ার জন্যে আবদ্ধ করে রেখ না, তাহলে সীমালঙ্ঘন করবে; আর যে ব্যক্তি এরূপ করে সে নিশ্চয়ই নিজের প্রতি অবিচার করে থাকে এবং আল্লাহর বিধি-বিধানকে বিদ্রোহিত করে গ্রহণ করে না আর তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ এবং তোমাদেরকে উপদেশ দানের জন্যে গ্রহণ ও হিকমত (সুনাত) হতে যা অবতীর্ণ করেছেন তা স্মরণ কর, আর আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখ যে, আল্লাহ সর্ব বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

২৩২. এবং যখন তোমরা স্ত্রী লোকদেরকে তালাক দাও, তৎপর তারা তাদের নির্ধারিত সময়ে পৌছে যায়, তখন তারা উভয়েই যদি পরস্পরের প্রতি বিহিতভাবে সম্মত হয়ে থাকে, সে অবস্থায় স্ত্রীরা নিজ স্বামীদেরকে বিয়ে করতে গেলে তোমরা তাদেরকে বাধা প্রদান করো না; তোমাদের মধ্যে যে আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে এর দ্বারা তাদেরকেই উপদেশ দেয়া হচ্ছে; তোমাদের জন্যে এটা শুদ্ধতম ও পবিত্রতম (ব্যবস্থা) এবং আল্লাহই পরিজ্ঞাত আছেন আর তোমরা কিছুই জানো না।

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ
ضُرَارًا لِّتَعْتَدُوا ۗ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ ۗ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۗ وَادْكُرُوا
نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ
وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٧﴾

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا
تَعْصِبُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضُوا
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَلِكَ يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ
مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَلِكَ
أَنْزَلْنَا لَكُمْ وَأَطْرَهُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

২৩৩. এবং যে কেউ স্তন্যপানের কাল পূর্ণ করতে ইচ্ছে করে, তার জন্যে জননীগণ পূর্ণ দু'বছর স্বীয় সন্তানদেরকে স্তন্য দান করবে, আর সন্তানের জনকগণ বিহিতভাবে প্রসূতিদের খোরাক ও তাদের পোষাক দিতে বাধ্য; কাউকেও তার সাধ্যের অতীত কার্যভার দেয়া হয় না, নিজ সন্তানের কারণে জননীকে এবং নিজ সন্তানের কারণে জনককে ক্ষতিগ্রস্ত করা চলেবে না এবং উত্তরাধিকারীগণের প্রতিও একই ধরনের বিধান; কিন্তু যদি তারা পরস্পর পরামর্শ ও সম্মতি অনুসারে স্তন্য ত্যাগ করতে ইচ্ছে করে, তবে উভয়ের কোন দোষ নেই; আর তোমরা যদি নিজ সন্তানদেরকে স্তন্য পানের জন্যে সমর্পণ করতঃ বিহিতভাবে কিছু প্রদান কর তাহলেও তোমাদের কোন দোষ নেই এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে, তোমরা যা করছো আল্লাহ তা প্রত্যক্ষকারী।

২৩৪. এবং তোমাদের মধ্যে যারা স্ত্রীদেরকে রেখে মৃত্যুমুখে পতিত হয়, তারা (বিধবাগণ) চার মাস দশ দিন প্রতীক্ষা করবে; অতঃপর যখন তারা স্বীয় নির্ধারিত সময়ে উপনীত হয় তখন তারা নিজেদের সম্বন্ধে বিহিতভাবে যা করবে, তাতে তোমাদের কোন দোষ নেই এবং তোমরা যা করছো তদ্বিষয়ে আল্লাহ সম্যক খবর রাখেন।

২৩৫. এবং তোমরা স্ত্রী লোকদের প্রস্তাব সম্বন্ধে পরোক্ষভাবে যা ব্যক্ত কর অথবা নিজেদের মনে গোপনে যা

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ
كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ط وَعَلَى
الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ط
لَا تُكَلِّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ء لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ
بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهَا ة وَعَلَى الْوَالِدِ
مِثْلُ ذَلِكَ ء فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا
وَ تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ط وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ
تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَأَلْتُمْ
مَّا آتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ ط وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ يَتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا
يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ء
فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ط وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣٦﴾

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ
خُطْبَةِ النَّسَاءِ أَوْ أَلْكَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ ط عَلِمَ

পোষণ করে থাক তাতে তোমাদের কোন দোষ নেই; আল্লাহ অবগত আছেন যে, তোমরা তাদের বিষয় আলোচনা করবে; কিন্তু গুণ্ডভাবে তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দান করো না; বরং বিহিতভাবে তাদের সাথে কথা বল এবং নির্ধারিত সময় পূর্ণ না হওয়া পর্যন্ত বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ হবার সংকল্প করো না এবং এটাও জেনে রেখো যে, তোমাদের অন্তরে যা আছে আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত। অতএব তোমরা তাঁকে ভয় কর এবং জেনে রেখো যে, আল্লাহ ক্ষমাশীল, সহিষ্ণু।

২৩৬. যদি তোমরা স্ত্রীদেরকে স্পর্শ না করেই অথবা তাদের প্রাপ্য নির্ধারণ করার আগেই তালাক প্রদান কর তবে তাতে তোমাদের কোন দোষ নেই এবং তোমরা তাদেরকে কিছু সংস্থান করে দেবে, অবস্থানপন্ন লোক নিজের অবস্থানুসারে এবং অভাবগ্রস্ত লোক তার অবস্থানুসারে বিহিত সংস্থান (করে দেবে), সৎকর্মশীল লোকদের উপর এই কর্তব্য।

২৩৭. আর তোমরা যদি তাদেরকে স্পর্শ করার পূর্বেই তালাক প্রদান কর এবং তাদের মোহর নির্ধারণ করে থাক, তবে যা নির্ধারিত করেছিলে তার অর্ধেক; কিন্তু যদি তারা ক্ষমা করে কিংবা যার হাতে বিবাহ বন্ধন সে ক্ষমা করে অথবা তোমরা ক্ষমা কর তবে এটা আল্লাহ

اللَّهُ أَنْتُمْ سَتَذَكُرُونَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْزَمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٦٩﴾

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۗ عَلَىٰ الْمَوْسِعِ قَدَرَةٌ وَعَلَى الْمَقْتِرِ قَدَرَةٌ مِمَّا عَمَّا بِأَلْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾

وَأَنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَرِصْفُ مَا قَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا الَّذِي بَيْنَهُمَا عَقْدُهُ النِّكَاحِ ۗ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۗ وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٦٩﴾

ভীতির অতি নিকটবর্তী এবং পরস্পরের উপকারকে যেন ভুলে যেও না; তোমরা যা কর নিশ্চয়ই আল্লাহ তা প্রত্যক্ষকারী।

২৩৮. তোমরা নামাযসমূহ ও মধ্যবর্তী নামাযের (আসর) ব্যাপারে যত্নবান হও এবং বিনীতভাবে আল্লাহর উদ্দেশ্যে দন্ডায়মান হও।

২৩৯. তবে তোমরা যদি (শত্রুর ভয়ের) আশঙ্কা কর, সে অবস্থায় পদব্রজে বা যানবাহনাদির উপর (নামায আদায় করে নেবে) পরে যখন নিরাপদ হও তখন তোমাদের অবিদিত বিষয়গুলো সম্বন্ধে আল্লাহ তোমাদেরকে যেরূপ শিক্ষা দিয়েছেন সেরূপে আল্লাহকে স্মরণ কর।^১

حَفِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ
وَقَوْمُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ﴿٢٣٨﴾

فَإِنْ خِفْتُمْ فِرْجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنْتُمْ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَيْكُمْ مَآلَمَ تَكُونُوا
تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾

১। (ক) আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যার আসরের নামায ছুটে গেল তার যেন পরিবারবর্গ এবং ধন-সম্পদ সবই ধ্বংস হয়ে গেল। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫২)

(খ) আবুল মালীহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা বুরাইদা (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর সঙ্গে এক মেঘাচ্ছন্ন দিনে এক জিহাদে অংশগ্রহণ করেছিলাম। তিনি বললেনঃ আসরের নামায আওয়াল ওয়াক্তে পড়ে নাও। কেননা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি আসরের নামায পরিত্যাগ করল তার সমস্ত আমল বরবাদ হয়ে গেল। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৩)

২। সালেহ বিন খাওয়াস ঐ ব্যক্তি থেকে বর্ণনা করেন যিনি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে “যাতুর রিক্বা”র যুদ্ধে সালাতুল খাওফ (ভয়-ভীতির নামাযে) অংশগ্রহণ করেছিল তার থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (সাহাবাগণের) একদল নামায পড়ার জন্য তাঁর (রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে কাতারবন্দী হয়ে দাঁড়ালেন এবং আরেকদল শত্রুর মোকাবিলায় প্রস্তুত থাকলেন। তিনি (নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) প্রথমোক্ত দলের সাথে এক রাক'আত নামায পড়ে দাঁড়িয়ে থাকলেন। মোক্তাদীগণ তারা একা একা দ্বিতীয় রাক'আত পড়ে ফিরে গেলেন এবং শত্রুর মুখোমুখী হয়ে দাঁড়ালেন। এবার অপর দলটি এসে দাঁড়ালে তিনি (নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাদেরকে সাথে নিয়ে অবশিষ্ট (এক) রাক'আত পড়ে বসে থাকলেন। (দ্বিতীয় দলের) মুক্তাদীগণ নিজে নিজে দ্বিতীয় রাক'আত শেষ করে বসলে তিনি তাদেরকে সঙ্গে নিয়ে সালাম ফিরালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪১২৯)

২৪০. এবং তোমাদের মধ্যে যারা মৃত্যু মুখে পতিত হয় ও পত্নীগণকে ছেড়ে যায় তারা যেন স্বীয় পত্নীগণকে বহিস্কৃত না করে এক বছর পর্যন্ত তাদেরকে ভরণ-পোষণ প্রদান করার জন্যে অসিয়ত করে যায়; কিন্তু যদি তারা (স্বেচ্ছায়) বের হয়ে যায়, তবে নিজেদের সম্বন্ধে বিহিতভাবে তারা যে ব্যবস্থা করে তজ্জন্যে তোমাদের কোন দোষ নেই; এবং আল্লাহ মহাপরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাময়।

২৪১. আর তালাকপ্রাপ্তাদের জন্যে বিহিতভাবে ভরণ-পোষণের ব্যবস্থা করা আল্লাহ ভীরুগণের কর্তব্য।

২৪২. এভাবে আল্লাহ স্বীয় নিদর্শনাবলী বর্ণনা করেন, যেন তোমরা হৃদয়ঙ্গম কর।

২৪৩. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, মৃত্যু বিভীষিকাকে এড়াবার জন্য যারা নিজেদের গৃহ হতে বহির্গত হয়েছিল? অথচ তারা ছিল বহু সহস্র; তখন আল্লাহ তাদেরকে বললেনঃ তোমরা মর; পুনরায় তিনি তাদেরকে জীবন দান করলেন; নিশ্চয় মানবগণের প্রতি আল্লাহ অনুগ্রহশীল; কিন্তু অধিকাংশ লোক কৃতজ্ঞতা স্বীকার করে না।

২৪৪. তোমরা আল্লাহর পথে সংগ্রাম কর এবং জেনে রেখো যে, নিশ্চয় আল্লাহ হচ্চেন সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞাতা।

২৪৫. কে সে, যে আল্লাহকে উত্তমভাবে ঋণদান করে? অনন্তর তিনি তাকে দ্বিগুণ বহুগুণ বর্ধিত করেন এবং আল্লাহই

وَالَّذِينَ يَتَوَقَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۚ
وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ
إِخْرَاجٍ ؕ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

وَالْمُطَلَّاتِ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۗ حَقًّا عَلَى
الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾

كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَهُمْ أُكُوفٌ حَدَرِ الْمَوْتِ ۗ فَقَالَ لَهُمْ
اللَّهُ مُؤْتَوَاتٍ ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَعِلْمُوا أَنَّ اللَّهَ
سَبِيحٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
فِيُضْعِفُهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۗ وَاللَّهُ يَقْبِضُ

(মানুষের আর্থিক অবস্থাকে) সংকুচিত বা স্বচ্ছল করে থাকেন এবং তাঁরই দিকে তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তন করতে হবে।

২৪৬. তুমি কি মুসার পরে ইসরাঈল বংশীয় প্রধানগণের প্রতি লক্ষ্য করনি? নিজেদের এক নবীকে যখন তারা বলেছিলঃ আমাদের জন্যে একজন বাদশাহ নিযুক্ত করে দাও (যেন) আমরা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করতে পারি! তিনি বলেছিলেনঃ এটা কি সম্ভবপর নয় যে, যখন তোমাদের উপর যুদ্ধ বিধিবদ্ধ হয়ে যাবে তখন তোমরা যুদ্ধ করবে না? তারা বলেছিলঃ আমরা যুদ্ধ করবো না এটা কিরূপে (সম্ভব)? অথচ নিজেদের আবাস হতে ও সম্ভান-সম্মতি হতে আমরা বহিস্কৃত হয়েছি। অনন্তর যখন তাদের উপর যুদ্ধ বিধিবদ্ধ হলো তখন তাদের অল্প সংখ্যক ব্যতীত সবাই পশ্চাৎপদ হয়ে পড়লো এবং অত্যাচারীদের সম্পর্কে আল্লাহ সম্যকরূপে অবগত আছেন।

২৪৭. এবং তাদের নবী তাদেরকে বলেছিলেন নিশ্চয়ই আল্লাহ তালূতকে তোমাদের জন্যে বাদশাহরূপে নির্বাচিত করেছেন; তারা বললোঃ আমাদের উপর তালূতের রাজত্ব কিরূপে (সঙ্গত) হতে পারে? রাজত্বে তার অপেক্ষা আমাদেরই স্বত্ব অধিক, পক্ষান্তরে যথেষ্ট আর্থিক স্বচ্ছলতাও তার নেই; তিনি বললেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাকেই মনোনীত করেছেন এবং জ্ঞান ও দৈহিক শক্তিতে তিনি তাকে প্রচুর পরিমাণে বর্ধিত করে দিয়েছেন, আল্লাহ তাঁর রাজত্ব

وَيَبْضُطُ ۖ وَالْيَهُ تَرْجَعُونَ ﴿٢٤٦﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ
مُوسَى إِذْ قَالُوا لِنَبِيِّنَا لَئِن لَّمْ يَأْتِنَا
بِمَلِكٍ نُنْقَاتُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ
إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا
وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا
مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَاءِنَا ۖ فَلَبَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ ۖ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٧﴾

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ
طَالُوتَ مَلِكًا ۖ قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ
عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ
سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۖ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ
وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي
مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٨﴾

যাকে ইচ্ছা প্রদান করেন এবং আল্লাহ হচ্চেন প্রশস্তকারী, সর্বজ্ঞাতা।

২৪৮. এবং তাদের নবী তাদের বলেছিলেন তার রাজত্বের নিদর্শন এই যে, তোমাদের নিকট সিদ্ধুক^১ সমাগত হবে, যাতে থাকবে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে শান্তি এবং মুসা ও হারুনের অনুচরদের পরিত্যক্ত আসবাবপত্র, ফেরেশতাগণ গুটা বহন করে আনবে; তোমরা যদি বিশ্বাস স্থাপনকারী হও তবে ওর মধ্যে নিশ্চয় তোমাদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

২৪৯. অনন্তর যখন তালুত সৈন্যদলসহ বহির্গত হয়েছিলেন তখন তিনি বলেছিলেন নিশ্চয় আল্লাহ একটি নদী দ্বারা তোমাদেরকে পরীক্ষা করবেন, অতঃপর গুটা হতে যে পান করবে সে কিম্ব আমার দলভুক্ত থাকবে না এবং যে স্বীয় হাত দ্বারা আঁজলাপূর্ণ করে নেবে, তদ্ব্যতীত যে তা আশ্বাদন করবে না সে নিশ্চয়ই আমার; কিম্ব তাদের মধ্যে অল্প লোক ব্যতীত আর সবাই সেই নদীর পানি পান করলো, অতঃপর যখন সে ও তার সঙ্গী বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ নদী অতিক্রম করে গেল তখন তারা বললো: জালুতের ও তার সেনাবাহিনীর মোকাবিলা করার শক্তি আজ আমাদের নেই; পক্ষান্তরে যারা

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ
التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا
تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۗ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُم إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ ۗ قَالَ إِنَّ اللَّهَ
مُتَّبِعِيكُمْ يَنْهَىٰ ۖ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ
مَعِيَ ۗ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ
اعْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۗ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْهُمْ ۗ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۗ
قَالُوا لَاطَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۗ قَالَ
الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلقُوا اللَّهَ ۗ كَمْ مِّن فِئَةٍ
قَلِيلَةٍ غَلَبَت فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ
مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾

১। বারা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, এক ব্যক্তি (রাতে) সূরা কাহাফ পড়ছিল। আর তার পাশেই একটি ঘোড়া দু'টি রশি দিয়ে বাঁধা ছিল। এমতাবস্থায় একখানা মেঘখন্ড এসে তার ওপরে ছায়া দিল এবং মেঘখন্ড ক্রমশ নীচের দিকে আসতে থাকল, এমনকি তার ঘোড়াটি (ভয়ে) লাফালাফি শুরু করে দিল। সকাল বেলা ঐ ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে উক্ত ঘটনা বর্ণনা করল, তখন তিনি বললেন: তা ঐ প্রশান্তি যা কুরআন তেলাওয়াতের কারণে অবতীর্ণ হয়েছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৫০১১)

বিশ্বাস করতো যে তাদেরকে আল্লাহর সাথে সাক্ষাৎ করতে হবে, তারা বললোঃ আল্লাহর হুকুমে কত ক্ষুদ্র দল কত বৃহৎ দলকে পরাজিত করেছে, বস্তুতঃ ধৈর্যশীলদের সঙ্গে রয়েছেন আল্লাহ!

২৫০. এবং যখন তারা জালূত ও তার সেনাবাহিনীর সম্মুখীন হলো, বলতে লাগলোঃ হে আমাদের প্রভু! আমাদেরকে পূর্ণ সহিষ্ণুতা দান করুন, আর আমাদের কদমকে অটল রাখুন এবং কাফির জাতির উপর আমাদেরকে সাহায্য করুন!

২৫১. তখন তারা আল্লাহর হুকুমে জালূতের সৈন্যদেরকে পরাজিত করে দিল এবং দাউদ জালূতকে নিহত করে ফেললেন এবং আল্লাহ দাউদকে রাজ্য ও প্রজ্ঞা দান করলেন এবং তাকে ইচ্ছানুযায়ী শিক্ষা দান করলেন, আর যদি আল্লাহ এক দলকে অপর দলের দ্বারা প্রতিহত না করতেন তবে নিশ্চয় পৃথিবী অশান্তি পূর্ণ হতো; কিন্তু আল্লাহ বিশ্বজগতের প্রতি অনুগ্রহকারী।

২৫২. এগুলো আল্লাহর নিদর্শন—তোমার নিকট এগুলো সত্যরূপে পাঠ করছি এবং নিশ্চয়ই তুমি রাসূলগণের অন্তর্গত।^১

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا
أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أقدامَنَا وَأَنْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

فَهَزَمُوهُمْ بِأِذْنِ اللَّهِ ۖ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ
وَأَتَاهُ اللَّهُ الْهُدَى وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا
يَشَاءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ
ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّكَ
لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

১। (ক) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি এমন পাঁচটি জিনিস প্রাপ্ত হয়েছি যা আমার পূর্বে আর কাউকে দেয়া হয়নি। (১) এক মাসের পথ দূরে থাকা অবস্থায় শত্রুকে ভীত-সন্ত্রস্ত করার মত শক্তি দিয়ে সাহায্য প্রাপ্ত হয়েছি। (২) সমগ্র পৃথিবীকে আমার জন্য মসজিদ ও পবিত্র করে দেয়া হয়েছে। অতএব আমার উম্মতের যে কোন ব্যক্তি যে স্থানেই নামাযের সময় উপস্থিত হবে সেখানেই যেন নামায পড়ে নেয়। (৩) গণিমতের মাল আমার জন্য হালাল করা হয়েছে। আমার পূর্বে আর কারও জন্য তা হালাল ছিল না। (৪) আমি শাফা'য়াতের সুযোগপ্রাপ্ত হয়েছি। (৫) পূর্বের নবীগণ বিশেষ কোন জাতির নিকট প্রেরিত হতেন, আমি বিশ্বমানবের নিকট প্রেরিত হয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৫)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, আমার এবং আমার পূর্ববর্তী নবীগণের উদাহরণ হল ঐ ব্যক্তির ন্যায় যে, অত্যন্ত সুন্দর করে একটি বিস্তিৎ বানাল; কিন্তু বিস্তিৎ-এর এক কর্ণারে একটি ইটের স্থান ফাঁকা রাখল, অতঃপর লোকেরা এই বিস্তিৎ দেখতে এসে আশ্চর্যান্বিত হয়ে বলল কি আশ্চর্য ব্যাপার যদি এই ইটের স্থানটিও পূরণ করে দেয়া হত! (কতই না সুন্দর হতো) তিনি (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ আমি ঐ ইট এবং আমি সর্বশেষ নবী। (বুখারী, হাদীস নং ৩৫৩৫)

(গ) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন যে, আমি যেন (আজও) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে দেখতে পাচ্ছি। তিনি (অতীত যুগের) নবীগণের মধ্য থেকে এক নবীর কথা বর্ণনা করতে গিয়ে বললেন যে, তাঁর স্বজাতি তাঁকে মেরে রক্তাক্ত করে ফেলল। আর তিনি তাঁর চেহারা থেকে রক্তাক্ত অবস্থায় বললেন হে আল্লাহ্! তুমি আমার এ জাতিকে ক্ষমা করে দাও, কেননা তারা জানে না। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৭৭)

(ঘ) উবাইদুল্লাহ বিন আব্দুল্লাহ্ বলেন যে, আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) এবং ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) আমাকে তারা দু'জনেই বলেছেন যে, যখন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর মুত্বার সময় ঘনিয়ে আসল, তখন তিনি তাঁর মুখের ওপর চাদর দিয়ে ঢেকে রাখতেন। আর যখন গরম অনুভব হত তখন তা মুখ থেকে সরিয়ে ফেলতেন। এরূপ অবস্থায় তিনি বললেনঃ ইয়াহূদী এবং নাসারাদের উপর আল্লাহ্‌র লান'ত, তারা তাদের নবীগণের কবরকে মসজিদ বানিয়ে নিয়েছে। তিনি ইয়াহূদী ও নাসারাদের কাজ-কর্মের পরিণাম সম্পর্কে ভয় প্রদর্শন করছিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৫৩-৫৪)

(ঙ) ফুরাত আল-ফাজ্জা থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি আবু হাযেম থেকে শুনেছি, তিনি বলেনঃ আমি পাঁচ বছর আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর মজলিসে বসেছিলাম। আমি তাঁকে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে হাদীস বর্ণনা করতে শুনেছিঃ তিনি (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, বনী ইসরাইলের নবীগণ তাদের ওপর শাসন পরিচালনা করতেন। যখনই একজন নবী ইস্তেকাল করতেন তখন সেখানে তাঁর পরে আরেক জন নবী প্রেরিত হতেন। আর নিশ্চয় আমার পরে আর কোন নবী নেই। আমার পরে খলীফা হবে (প্রতিনিধি) সাহাবাগণ বললেনঃ সে সময় আমাদেরকে কি করার জন্য আপনি নির্দেশ দিচ্ছেন? তিনি বললেনঃ যিনি প্রথম খলিফা হবেন তোমরা তার বাইয়াতকে পূর্ণ করবে এবং তার ন্যায় অধিকার পালন করতে দিবে। তার নির্দেশ মেনে চলবে। কারণ আল্লাহ্ তাদেরকে যাদের ওপর শাসক বানিয়েছেন, সে শাসন সম্পর্কে নিশ্চয়ই তিনি (কিয়ামতের দিন) তাদেরকে জিজ্ঞেস করবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৫৫)

২৫৩. এই সকল রাসূল, আমি যাদের কারো উপর কাউকে শ্রেষ্ঠত্ব প্রদান করেছি, তাদের মধ্যে কারও সাথে আল্লাহ কথা বলেছেন এবং কাউকে পদ মর্যাদায় সম্মুন্নত করেছেন, আর মরিয়ম পুত্র ঈসাকে প্রকাশ্য নিদর্শনাবলী দান করেছি এবং তাকে পবিত্রাত্মাযোগে (জিবরাঈল عليه السلام দ্বারা) সাহায্য করেছি, আর আল্লাহ ইচ্ছে করলে নবীগণের পরবর্তী লোকেরা তাদের নিকট স্পষ্ট প্রমাণপুঞ্জ সমাগত হওয়ার পর পরস্পরের সাথে যুদ্ধ বিগ্রহে লিপ্ত হতো না; কিন্তু তারা পরস্পর মতবিরোধ করেছিল ফলে তাদের কতক হলো মু'মিন আর কতক হলো কাফির। বস্তুতঃ আল্লাহ ইচ্ছে করলে তারা পরস্পর যুদ্ধ বিগ্রহে লিপ্ত হতো না; কিন্তু আল্লাহ যা ইচ্ছে করেন তাই সম্পন্ন করে থাকেন।

২৫৪. হে বিশ্বাসীগণ! আমি তোমাদেরকে যে উপজীবিকা দান করেছি, তা হতে সেদিন সমাগত হওয়ার পূর্বেই ব্যয় কর যাতে ক্রয়-বিক্রয়, বন্ধুত্ব ও সুপারিশ নেই, আর অবিশ্বাসীরাই অত্যাচারী।

২৫৫. আল্লাহ তিনি ব্যতীত অন্য কোন সত্য উপাস্য নেই, তিনি চিরজীবন্ত ও সবার রক্ষণা-বেক্ষণকারী, তন্দ্রা ও নিদ্রা তাঁকে স্পর্শ করে না, নভোমন্ডলে ও ভূমন্ডলে যা কিছু রয়েছে সব তাঁরই; এমন কে আছে যে তাঁর অনুমতি ব্যতীত তাঁর নিকট সুপারিশ করতে

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ
مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ
دَرَجَاتٍ ط وَأَتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيْتَ وَآيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ط
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَقْتَنَلْنَا الَّذِينَ
مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ
الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اخْتَلَفُوا فَيَنْهَمُهُمْ
مَنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ ط
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَقْتَنَلُوا ط
وَلَكِنْ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٧٦﴾

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ
مَنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ
وَلَا خَلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ط وَالْكَافِرُونَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٧٦﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الَّذِي الْقَيُّومُ ه لَا تَأْخُذُهُ
سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ط لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا
بِإِذْنِهِ ط يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ
مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمَوَاتِ

পারে? তাদের সম্মুখের ও পশ্চাতের সবই তিনি অবগত আছেন; তিনি যা ইচ্ছে করেন তা ব্যতীত তাঁর অনন্ত জ্ঞানের কোন বিষয়ই কেউ আয়ত্ত্ব করতে পারে না; তাঁর কুরসী নভোমন্ডল ও ভূমন্ডল পরিব্যপ্ত হয়ে আছে এবং এতদুভয়ের সংরক্ষণে তাঁকে পরিশান্ত করে না এবং তিনি সম্মুন্নত, মহীয়ান!*

وَالْأَرْضُ ۚ وَلَا يَؤُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيمُ ﴿٧٧﴾

২৫৬. ধর্ম (দ্বীন গ্রহণে) সম্বন্ধে বল প্রয়োগ নেই; নিশ্চয় ভ্রান্তি হতে সুপথ প্রকাশিত হয়েছে; অতএব, যে ব্যক্তি আল্লাহ ব্যতীত অন্য মা'বুদকে অবিশ্বাস করে এবং আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে সে দৃঢ়তর রজ্জুকে আঁকড়িয়ে ধরলো যা কখনও ছিন্ন হওয়ার নয় এবং আল্লাহ শ্রবণকারী মহাজ্ঞানী।

لَا يُكْرَهُ فِي الدِّينِ ۚ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ
فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٧٧﴾

২৫৭. আল্লাহই হচ্ছেন মু'মিনদের অভিভাবক। তিনি তাদেরকে অন্ধকার হতে আলোর দিকে নিয়ে যান; আর যারা অবিশ্বাস করেছে শয়তান তাদের পৃষ্ঠপোষক, সে তাদেরকে আলোক হতে অন্ধকারের দিকে নিয়ে

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَهُمُ الطَّاغُوتُ
يُخْرِجُوهُمْ مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧٨﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে রমযানের প্রাপ্ত যাকাত (ফেতরার মাল) সংরক্ষণ ও হেফাজতের দায়িত্ব অর্পণ করেছিলেন। এ সময় এক লোক এসে দু'হাতের তালু ভরে খাদ্য সামগ্রী চুরি করে নিয়ে যেতে উদ্দ্যত হল, আমি তাকে ধরে ফেলে বললাম, অবশ্যই আমি তোমাকে নিয়ে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট যাব। অতঃপর পুরো ঘটনা বর্ণনা করলেন। তখন ঐ আগস্ত্রক বললঃ যখন আপনি বিহুলায় গুতে যাবেন তখন আয়াতুল কুরসী পাঠ করবেন। এর কারণে সার্বক্ষণিকভাবে আপনার জন্য আল্লাহর পক্ষ থেকে একজন (ফেরেশতা) পাহারাদার নিযুক্ত করা হবে, সে আপনাকে সারা রাত পাহারা দেবে এবং ভোর পর্যন্ত শয়তান আপনার কাছে আসতে পারবে না। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (এ ঘটনা শুনলেন এবং) (আমাকে) বললেন (যে রাতে তোমার কাছে এসেছিল) সে তোমাকে সত্য কথা বলেছে, যদিও সে মিথ্যাবাদী, সে ছিল শয়তান। (বুখারী, হাদীস নং ৫০১০)

যায়, তারাই জাহান্নামের অধিবাসী ও এর মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করায়।

২৫৮. তুমি কি তার প্রতি লক্ষ্য করনি, যে ইবরাহীমের সাথে তার প্রতিপালক সম্বন্ধে বিতর্ক করেছিল, যেহেতু আল্লাহ তাকে রাজত্ব প্রদান করেছিলেন। যখন ইবরাহীম বলেছিলেন আমার প্রভু তিনি যিনি জীবিত করেন ও মৃত্যু দান করেন; সে বলেছিলঃ আমিই জীবন দান করি ও মৃত্যু দান করি; ইবরাহীম বলেছিলেন নিশ্চয় আল্লাহ সূর্যকে পূর্ব দিক হতে আনয়ন করেন; কিন্তু তুমি ওকে পশ্চিম দিক হতে আনয়ন কর; এতে সেই অবিশ্বাসকারী হতবুদ্ধি হয়ে পড়েছিল এবং আল্লাহ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে পথ প্রদর্শন করেন না।

২৫৯. অথবা ঐ ব্যক্তির অনুরূপ যে এমন কোন জনপদ অতিক্রম করছিল যা মুখ খুবড়ে নিজ ভিত্তির ওপর পড়েছিল। তিনি বললেন এই নগরের মৃত্যুর পর আল্লাহ আবার তাকে জীবন দান করবেন কিরূপে? অনন্তর আল্লাহ তাঁকে একশো বছরের জন্যে মৃত্যু দান করলেন, তৎপর তাঁকে পুনর্জীবিত করলেন, তিনি বললেনঃ এ অবস্থায় তুমি কতক্ষণ অতিবাহিত করেছো? তিনি বললেনঃ একদিন অথবা একদিনের কিয়দংশ অতিবাহিত করেছি; তিনি বললেনঃ বরং তুমি একশত বর্ষ অতিবাহিত করেছো; অতএব তোমার খাদ্য

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ
أْتَهُ اللَّهُ الْمُلْكَ مَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي
يُعْبُدُ وَيُيْتِي ۖ قَالَ أَنَا أُحْجَى وَأَمِيتُ ط قَالَ
إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالسَّمْسِ مِنَ الشَّرْقِ فَا ت
بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ط وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا
قَالَ أَنِّي يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ
اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ط قَالَ كَمْ لَبِثْتُ ط
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَال بَلْ لَبِثْتُ
مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ
يَتَسَنَّه ۖ وَانظُرْ إِلَى جِهَارِكَ ۗ وَلَنَجْعَلَكَ آيَةً
لِّلنَّاسِ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ
نَكْسُوهَا لَحْمًا ط فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۖ قَالَ أَعْلَمُ
إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾

পানীয়ের প্রতি লক্ষ্য কর, ওটা বিকৃত হয়নি এবং তোমার গাধার প্রতি দৃষ্টিপাত কর এবং যেহেতু আমি তোমাকে মানুষের জন্যে নিদর্শন করতে চাই—আরও দর্শন কর হাড়গুলির পানে, ওকে কিরূপে আমি সংযুক্ত করি; তৎপর ওকে মাংসাবৃত্ত করি। অনন্তর যখন ওটা তাঁর নিকট স্পষ্ট হয়ে গেল তখন তিনি বললেনঃ আমি জানি যে, আল্লাহ সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

২৬০. এবং যখন ইবরাহীম বলে- ছিলেন হে আমার প্রভু! আপনি কিরূপে মৃতকে জীবিত করেন তা আমাকে প্রদর্শন করুন; তিনি বললেনঃ তবে কি তুমি বিশ্বাস কর না? তিনি বললেন হ্যাঁ; কিন্তু তাতে আমার অনন্তর পরিতৃপ্ত হবে; তিনি বললেনঃ তা হলে চারটা পাখী গ্রহণ কর, তারপর সেগুলোকে তোমার পোষ মানিয়ে নাও, অনন্তর প্রত্যেক পাহাড়ের উপর ওদের এক এক খন্ড রেখে দাও; অতঃপর ওদেরকে আহ্বান কর, ওরা তোমার নিকট দৌড়ে আসবে; এবং জেনে রেখো যে, নিশ্চয় আল্লাহ মহা পরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাময়।

২৬১. যারা আল্লাহর পথে স্বীয় ধন-সম্পদ ব্যয় করে তাদের উপমা—যেমন একটি শস্য বীজ, তা হতে উৎপন্ন হলো সাতটি শীষ, প্রত্যেক শীষে (উৎপন্ন হলো) একশত শস্য দানা এবং আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছে

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى ط
قَالَ أَوْ لَمْ تُؤْمِنُ ط قَالَ بَلَىٰ وَلَكِنَّ لِيْطَبِّدَنَّ قَلْبِي ط
قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ
اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ
يَأْتِيَنَّكَ سَعِيًّا ط وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ع

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ
مِائَةٌ حَبَّةٌ ط وَاللَّهُ يُضَعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ ط وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾

করেন আরো বর্ধিত করে দেন,
বস্তুতঃ আল্লাহ হচ্চেন মহা
মহাদাতা, মহাজ্ঞানী।

২৬২. যারা আল্লাহর পথে নিজেদের
ধন-সম্পদ ব্যয় করে, তৎপর যা ব্যয়
করে তজ্জন্য কৃপা প্রকাশও করে না,
কষ্ট দানও করে না, তাদের জন্যে
তাদের প্রভুর নিকট পুরস্কার রয়েছে,
বস্তুতঃ তাদের কোন ভয় নেই এবং
তারা দুর্ভাবনাগ্রস্তও হবে না।

২৬৩. যে দানের পরে কষ্ট দেয়া হয়,
সে দান অপেক্ষা উত্তম ভাল কথা
বলা ও ক্ষমা প্রদর্শন করা এবং
আল্লাহ মহা সম্পদশালী, সম্মানী।

২৬৪. হে মু'মিনগণ! কৃপা প্রকাশ ও
কষ্ট দিয়ে নিজেদের দানগুলো
ব্যর্থ করে ফেলো না, সে ব্যক্তির
ন্যায় যে নিজের ধন ব্যয় করে লোক
দেখানোর জন্যে অথচ আল্লাহ ও
পরকালে সে বিশ্বাস করে না; ফলতঃ
তার উপমা যেমন এক বৃহৎ মসূন
পাথর খন্ড, যার উপর কতকটা মাটি
(জমে) আছে, এ অবস্থায় বর্ধিত
হলো তাতে প্রবল বর্ষা, যা তাকে
পরিষ্কার করে দিল; তারা যা অর্জন
করেছে তন্নাশ্য হতে কোন বিষয়েই
তারা সুফল পাবে না এবং আল্লাহ
অবিশ্বাসী সম্প্রদায়কে পথ-প্রদর্শন
করেন না।

২৬৫. এবং যারা আল্লাহর সন্তুষ্টি
সাধন ও স্বীয় জীবনের প্রতিষ্ঠার
জন্যে ধন-সম্পদ ব্যয় করে, তাদের
উপমা— যেমন উর্বর ভূভাগে অবস্থিত

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
لَا يُبْتَغُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى لَّهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ
يَتَّبِعُهَا أَذًى وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ
وَالْأَذَى ۗ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ
وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ
عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۗ ط
لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٤﴾

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ
اللَّهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ

একটি উদ্যান, তাতে প্রবল বৃষ্টিধারা পতিত হয়, ফলে সেই উদ্যান দ্বিগুণ খাদ্য শস্য দান করে; কিন্তু যদি তাতে প্রবল বৃষ্টিপাত না হয় তবে অল্প বৃষ্টি ধারাই যথেষ্ট এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ তা প্রত্যক্ষকারী।

২৬৬. তোমাদের কেউ কি এমনটা পছন্দ করবে? যে তার একটি খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান থাক, যার তলদেশ দিয়ে নদী-নালা প্রবাহিত, তথায় সর্বপ্রকার ফলের সংস্থান তার রয়েছে, আর সে বার্ষিক্যে উপনীত হলো, এদিকে তার কতকগুলো দুর্বল (অপ্রাপ্ত বয়স্ক) সন্তান-সন্ততি আছে—এ অবস্থায় সেই বাগানে অগ্নিসহ এক ঘূর্ণিবায়ু আসলো আর তা পুড়ে ভস্মীভূত হয়ে গেল। এরূপে আল্লাহ তোমাদের জন্যে নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করেন যেন তোমরা চিন্তা কর।^১

أَصَابَهَا وَأَيْلٌ قَاتَتْ أَكْثَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَإِنْ لَمْ يُصِبْهَا وَأَيْلٌ فَطُلُّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٦﴾

أَيُّودٌ أَحَدَكُمُ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۖ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَةٌ ضُعْفَاءٌ ۚ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾

১। একদিন উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাহাবাগণকে লক্ষ্য করে বললেনঃ তোমরাকি জান এই আয়াতটি কি বিষয়ে অবতীর্ণ হয়েছে- “তোমাদের কেহ কি পছন্দ কর যে, তার একটি বাগান হবে।” (সূরা বাকারাহ্, আয়াতঃ ২৬৬) এ কথা শুনে তাঁরা বললেনঃ আল্লাহই সবচাইতে ভাল জানেন। একথা শুনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) রেগে গিয়ে বললেনঃ বরং (পরিস্কার করে) জানি অথবা জানি না বলুন। তখন ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বললেন, হে আমীরুল মুমিনীন! এ ব্যাপারে আমার মনে একটি কথা জাগছে। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ হে আমার ভাতিজা বল এবং তুমি তোমাকে ছোট মনে কর না। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বললেনঃ এখানে আল্লাহ আমলের একটি উদাহরণ পেশ করেছেন। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ কোন উদাহরণ? ইবনে আব্বাস বললেনঃ শুধুমাত্র আমলের উদাহরণ (হিসেবে বর্ণনা করা হয়েছে) একথা শুনে উমর বললেন একজন ধনাঢ্য ব্যক্তি আল্লাহর এতা'আত (বিধিনিষেধ) মেনে আমল করছে; অতঃপর আল্লাহ তার নিকট শয়তানকে প্রেরণ করলেন, তখন শয়তানের নির্দেশে নাফরমানী করতে লাগল। এমনকি তার সমস্ত নেক আমলকে সে বরবাদ করে ফেলল। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৩৮)

২৬৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা যা উপার্জন করেছো এবং আমি যা তোমাদের জন্যে ভূমি হতে উৎপন্ন করেছি, সেই পবিত্র বিষয় হতে খরচ কর এবং তা হতে এরূপ কলুষিত বস্তু ব্যয় করতে মনস্থ করো না যা তোমরা মুদিত চক্ষু ব্যতীত গ্রহণ কর না; এবং তোমরা জেনে রাখো যে, আল্লাহ মহা সম্পদশালী, প্রশংসিত।

২৬৮. শয়তান তোমাদেরকে অভাবের ভীতি প্রদর্শন করে এবং তোমাদেরকে অশ্লীল বিষয়ের আদেশ করে আর আল্লাহ তোমাদেরকে তাঁর নিকট হতে ক্ষমা ও দয়ার অঙ্গীকার করেন আর আল্লাহ হচ্ছেন অসীম করুণাময়, সর্বজ্ঞ।

২৬৯. তিনি যাকে ইচ্ছা হিকমত ও প্রজ্ঞা দান করেন এবং যাকে প্রজ্ঞা দান করা হয় ফলতঃ নিশ্চয়ই সে প্রচুর কল্যাণ লাভ করে বস্তুতঃ জ্ঞানবান ব্যক্তিগণ ব্যতীত কেউই শিক্ষা গ্রহণ করতে পারে না।

২৭০. এবং যে কোন বস্তু তোমরা ব্যয় কর না কেন, অথবা যে কোন প্রতিজ্ঞা (নয়র) তোমরা গ্রহণ কর না কেন, আল্লাহ নিশ্চয়ই তা অবগত হন; আর অত্যাচারীগণের কোনই সাহায্যকারী নেই।

২৭১. যদি তোমরা প্রকাশ্যভাবে দান কর তবে তা উৎকৃষ্ট এবং যদি তোমরা তা গোপন কর ও দরিদ্রদেরকে প্রদান কর তবে তাও তোমাদের জন্যে উত্তম এবং (এ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَسَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغِشُّوا فِيهِ ظُورًا وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يَعِدُكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهَا وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾

দ্বারা) তিনি তোমাদের কিছু পাপ মোচন করবেন। বস্তুতঃ তোমাদের কার্যকলাপ সম্বন্ধে আল্লাহ সর্বজ্ঞ।

২৭২. তাদেরকে সুপথ প্রদর্শনের দায়িত্ব তোমার উপর নেই; বরং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তোমরা ধন-সম্পদ হতে যা ব্যয় কর বস্তুতঃ তা তোমাদের নিজেদের জন্যে; আর একমাত্র আল্লাহর সন্তোষ লাভের চেষ্টায় ব্যতীত (অন্য কোন উদ্দেশ্যে) অর্থ ব্যয় করো না এবং তোমরা উত্তম সম্পদ হতে যা ব্যয় করবে তার পুরস্কার পুরোপুরি তোমরা পেয়ে যাবে। আর তোমাদের প্রতি অন্যায় করা হবে না।

২৭৩. যারা আল্লাহর পথে অবরুদ্ধ রয়েছে বলে ভূ-পৃষ্ঠে গমনাগমনে অপারগ সেই সব দরিদ্রের জন্যে ব্যয় কর; (ভিক্ষা হতে) নিবৃত্ত থাকার কারণে অজ্ঞ লোকেরা তাদেরকে অবস্থাপন্ন বলে মনে করে, তুমি তাদেরকে তাদের লক্ষণের দ্বারা চিনতে পার, তারা লোকের নিকট ব্যাকুলভাবে যাচঞা (ভিক্ষা করে না) করে না এবং তোমরা শুদ্ধ সম্পদ হতে যা ব্যয় কর বস্তুতঃ সে সমস্ত বিষয় আল্লাহ সম্যকরূপে অবগত।

২৭৪. যারা রাতে ও দিনে, গোপনে ও প্রকাশ্যে নিজেদের ধন-সম্পদগুলো ব্যয় করে, তাদের প্রভুর নিকট তাদের পুরস্কার রয়েছে, তাদের কোন ভয় নেই এবং তারা

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ
يَشَاءُ ط وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَا تُنْفِكُمْ ط وَمَا
تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ط وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ
خَيْرٍ يُؤْتِي إِيَّكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُمْسِكُونَ ﴿٢٧٢﴾

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ
الْجَاهِلُ أَعْدِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۖ تَعْرِفُهُمْ
بِسِينَتِهِمْ ۖ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِحْقَاقًا ط وَمَا
تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢٧٣﴾

الَّذِينَ يَنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾

চিন্তিত হবে না।^১

২৭৫. যারা সুদ ভক্ষণ করে, তারা শয়তানের স্পর্শে মোহাবিষ্ট ব্যক্তির দণ্ডয়মান হওয়ার অনুরূপ ব্যতীত দণ্ডায়মান হবে না; এর কারণ এই যে, তারা বলেঃ ক্রয়-বিক্রয় তো সুদের অনুরূপ। অথচ আল্লাহ তা'আলা ব্যবসা হালাল করেছেন এবং সুদকে হারাম করেছেন; অতঃপর যার নিকট তার প্রভুর পক্ষ হতে উপদেশ সমাগত হয়, ফলে সে নিবৃত্ত হয়, সুতরাং যা অতীত হয়েছে; তার কৃতকার্য আল্লাহর প্রতি নির্ভর; এবং যারা পুনঃ গ্রহণ করবে, তাড়াই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানেই তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

২৭৬. সুদকে আল্লাহ ক্ষয় করেন এবং দানকে বর্ধিত করেন, বস্তুতঃ আল্লাহ অতি অকৃতজ্ঞ পাপাচারী-দেরকে ভালবাসেন না।

২৭৭. নিশ্চয় যারা ঈমান আনয়ন করে এবং সৎকার্যবালী সম্পাদন করে, নামাযকে প্রতিষ্ঠিত রাখে ও যাকাত প্রদান করে, তাদের জন্যে

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ
الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَيْسِ ط ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ
اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّنْ
رَّبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ ط وَأَمْرٌ إِلَى اللَّهِ
وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٢٧٥﴾

يَسَخَّرُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ
كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَتَوْا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٧﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, তিনি বলেছেনঃ যেদিন আরশের ছায়া ব্যতীত আর কোন ছায়া থাকবেনা (কিয়ামত দিবসে) সেদিন সাত শ্রেণীর লোককে আল্লাহ তার আরশের ছায়ার নিচে আশ্রয় দিবেন— (১) ন্যায় পরায়ণ শাসক (২) ঐ যুবক যে আল্লাহর ইবাদতের মধ্যে বড় হয়েছে। (৩) ঐ ব্যক্তি যার অন্তর মসজিদের সঙ্গে লেগে রয়েছে। (৪) ঐ দুই ব্যক্তি যারা শুধু আল্লাহর সন্তুষ্টির জন্যই পরস্পরকে ভালবাসে আবার ঐ একই উদ্দেশ্যে পরস্পরের সাথে সম্পর্ক স্থাপন করে। (৫) ঐ ব্যক্তি যাকে কোন সম্ভ্রান্ত বংশের সুন্দরী মহিলা (ব্যাভিচারের দিকে) আহ্বান করলে (তদুত্তরে) সে বলে আমি আল্লাহকে ভয় করি। (৬) যে, এতটা গোপনীয়তার সাথে দান খয়রাত করে যে তার দান হাত কি দান করছে বাম হাত তা জানতে পারে না। (৭) ঐ ব্যক্তি যে নিজনে আল্লাহর যিকিরে চোখের অক্ষঁ বরায়। (বুখারী, হাদীস নং ১৪২৩)

তাদের প্রতিপালকের নিকট পুরস্কার রয়েছে এবং তাদের জন্যে আশঙ্কা নেই এবং তারা চিন্তিত হবে না।

২৭৮. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং যদি তোমরা মু'মিন হও, তবে সুদের মধ্যে যা বকেয়া রয়েছে তা বর্জ কর।^১

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ
مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾

২৭৯. কিন্তু যদি না কর তাহলে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের পক্ষ হতে তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত হয়ে যাও। যদি তোমরা ক্ষমা প্রার্থনা কর তবে তোমাদের জন্যে তোমাদের মূলধন রয়েছে এবং তোমরা অত্যাচার করবে না ও তোমরাও অত্যাচারীত হবে না।

وَإِن لَّمْ تَقْعَلُوا فَاذْنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَإِن تَبْتَئُوا فَلَكُمْ رُءُوسٌ وَأَمْوَالُكُمْ لَا تَظْلِمُونَ
وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾

১। (ক) আওন বিন আবু হুযাইফা থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমার পিতা একদা শিংগা লাগাতে পারে এমন (রক্তমোক্ষণকারী) এক কৃতদাস কিনে আনলেন এবং আমি তাকে এ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম তিনি বললেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কুকুরের মূল্য এবং রক্তের মূল্য গ্রহণ করতে নিষেধ করেছেন এবং শরীরে খোদাই করে নকশা করা এবং করানো থেকে নিষেধ করেছেন এবং সুদ দিতে এবং নিতে নিষেধ করেছেন এবং যে ছবি উঠায় (চিত্রাংকনকারীকে) তাকে লা'নত করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ২০৮৬)

(খ) আওন বিন আবু হুযাইফা তার পিতা থেকে বর্ণনা করেন যে, তার পিতা শিংগা লাগায় এমন এক কৃতদাস কিনে এনে তার শিংগা লাগানোর যন্ত্রপাতি ভেঙ্গে ফেললেন এবং অতঃপর বললেনঃ নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) রক্তের মূল্য এবং কুকুরের মূল্য এবং পতিতা বৃত্ত থেকে নিষেধ করেছেন এবং সুদ দাতা ও গ্রহীতা এবং শরীরে খোদাই করে নকশা করা এবং যে করায় এবং যে ছবি অংকন করে, এদের সবার ওপর লা'নত করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫৯৬২)

২। (ক) ইয়াহইয়া থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ আমি উকবা ইবনে আব্দুল গাফেরকে বলতে শুনেছি তিনি আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলতে শুনেছেন যে, বেলাল (রাযিআল্লাহু আনহু) একদা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট বুরনী (একপ্রকার উন্নতমানের খেজুর) নিয়ে আসল, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁকে জিজ্ঞেস করলেন, এটা কোথায় পেলে? বেলাল (রাযিআল্লাহু আনহু) বললঃ আমার নিকট নিম্নমানের দু'সা' খেজুর ছিল, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে খাওয়ানোর উদ্দেশ্যে ঐ দু'সার পরিবর্তে আমি এই খেজুর একসা' কিনেছি। একথা শুনে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, হায় হায় এটাতে সরাসরি সুদ, এরূপ করো না; বরং যদি তুমি ভাল খেজুর কিনতে চাও, তাহলে খারাপ খেজুর পৃথকভাবে বিক্রি করে, ঐ মূল্যের বিনিময়ে ভাল খেজুর ক্রয় করবে। (বুখারী, হাদীস নং ২৩১২)

(খ) সামুরা ইবনে জুনদুব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অধিকাংশ সময়ই তাঁর সাথীদের জিজ্ঞেস করতেন, তোমাদের কেউ কোন স্বপ্ন দেখেছ কি?

কেউ কোন স্বপ্ন দেখে থাকলে, সে তাঁর নিকট বলত যা আদ্বাহ্ চাইতেন। একদিন সকালে তিনি বললেন, রাতে (স্বপ্নে) আমার নিকট দু'জন আগন্তুক (ফেরেশতা) আসল। আমাকে তারা উঠাল। তারপর আমাকে বলল চলুন! আমি তাদের দু'জনের সাথে চললাম। আমরা শায়িত এক লোকের নিকট এসে পৌছলাম। অপর একজন তার নিকট পাথর হাতে দাঁড়ান। সে তার মাথা লক্ষ্য করে পাথর নিক্ষেপ করছে। এতে তার মাথা ফেটে যাচ্ছে। আর পাথর অনেক নিচে গিয়ে পতিত হচ্ছে। সে আবার পাথরের পেছনে পেছনে যায়। পাথরটি নিয়ে ফিরে আসতে না আসতেই তার মাথা পূর্বের ন্যায় ভাল হয়ে যায়। ফিরে এসে সে প্রথমে যেরূপ করেছিল আবার অনুরূপ আচরণ করে। আমি ফেরেশতাঘরকে জিজ্ঞেস করলাম, সুবহানাদ্বাহ্! বল এরা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন। আমরা সামনে অগ্রসর হয়ে এক লোককে দেখতে পেলাম। সে চিত হয়ে শুয়ে ছিল। আরেকজন তার নিকট লোহার সাঁড়াশী হাতে দাঁড়ান ছিল। সে ওটা দ্বারা একের পর এক তার মুখমন্ডলের একাংশ চিরে (গলার) পেছন পর্যন্ত নিয়ে যেত। অনুরূপ তার নাকের ছিদ্র থেকে চোখ চিরে পেছন পর্যন্ত নিয়ে যেত। আওফ বলেন, আবু রাজা বেশির ভাগ এরূপ বলতেন, সে একদিকে কেটে অপরদিকে কাটত। অপরদিকে কাটা শেষ হতে না হতেই প্রথম দিকটি পূর্বের ন্যায় ভাল হয়ে যেত, এভাবে বার বার এরূপই করত যেরূপ প্রথম করছিল। আমি বললাম, সুবহানাদ্বাহ্! বল এরা দু'জন কে? তারা উভয়ে বলল, সামনে চলুন। সামনে আমরা একটি চুলারমত এক গর্তের নিকট গিয়ে পৌছলাম। তিনি (রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আমার মনে হয়, তিনি বলেছিলেন, আমি সেখানে শোরগোলের শব্দ শুনতে পেলাম। আমরা তাতে উঁকি মেরে বেশ কিছু উলঙ্গ নারী-পুরুষ তার মাঝে দেখতে পেলাম। যাদের নিচে থেকে আঙনের লেলিহান শিখা তাদের স্পর্শ করছিল। আঙনের আওতায় আসলেই তারা উচ্চস্বরে চিৎকার করে উঠত। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এরা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন। সামনে অগ্রসর হয়ে আমরা একটি স্রোতশ্বিনীর (নদীর) নিকট পৌছলাম। আমার যক্ষ্মর মনে পড়ে, তিনি বলছিলেন, সেটি ছিল লাল রক্তের ন্যায়। নহরে একজনকে সাঁতরাতে দেখলাম। নহরের পাড়ে একজন লোক দাঁড়িয়ে ছিল। যার নিকট ছিল অসংখ্য পাথরের এক স্তূপ। সাঁতারকারী লোকটি সাঁতারানো শেষ করে যার নিকট পাথরের স্তূপ ছিল তার নিকট এসে মুখ খুলে দিত। আর সে তার মুখে একটি করে পাথর নিক্ষেপ করত। তারপর সে সাঁতরাতে চলে যেত। সাঁতরিয়ে ফিরে এসে বারবার অনুরূপ মুখ খুলে দিত। আর ঐ লোকটি তার মুখে একটি করে পাথর নিক্ষেপ করত। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এরা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন। আমরা সামনে অগ্রসর হয়ে একজন বিভৎস চেহারার লোক দেখতে পেলাম। যেরূপ তোমরা কোন বিভৎস চেহারার লোক দেখে থাক। তার নিকট ছিল আঙন। সে আঙন জ্বালাচ্ছিল ও তার চতুর্দিকে দৌড়াচ্ছিল। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এ লোক কে? তারা বলল, সামনে চলুন। সামনে আমরা এক ঘন সন্নিবিষ্ট বাগানে উপনীত হলাম। বাগানটি বসন্তের হরেক রকম ফুলে সুশোভিত ছিল। বাগানের মাঝে ছিল একজন লোক। যার আকৃতি এতখানি দীর্ঘকায় ছিল, আমরা তার মাথা দেখতে পাচ্ছিলাম না। তার চারপাশে এত বিপুলসংখ্যক বালক ছিল, যেরূপ আর কখনো আমি দেখিনি। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এ লোক কে? আর এরাই বা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন, সামনে চলুন। অবশেষে আমরা এক বিরাট বাগানে গিয়ে উপনীত হলাম। এরূপ বড় ও সুন্দর বাগান আমি আর কখনো দেখিনি। তারা আমাকে বলল, এর ওপর আরোহণ করুন। আমি তাতে আরোহণ করলে এক শহর আমাদের নজরে পড়ল। সেটি ছিল সোনা ও রূপার ইট দিয়ে তৈরি। আমরা ঐ শহরের দরজায় পৌছলাম। দরজা খুলতে বললে আমাদের জন্য দরজা খুলে দেয়া হল। ভেতরে প্রবেশ করে আমরা কিছু লোকের সাক্ষাত পেলাম। যাদের শরীরের অর্ধেক খুবই সৌন্দর্যমন্ডিত ছিল। যেরূপ তোমরা খুব সুন্দর কাউকে দেখে থাক। আর অর্ধেক ছিল খুবই কঁদাকার। যেরূপ তোমরা খুব কঁদাকার কাউকে দেখে থাক। তারা উভয়ে ঐ লোকদের উদ্দেশ্যে বলল, যাও, তোমরা এ ঋণায় নেমে পড়। দেখা গেল প্রস্থের দিকে লম্বা প্রবাহমান একটি ঋণা রয়েছে। তার পানি ছিল সম্পূর্ণ সাদা। তারা গেল এবং তাতে নেমে পড়ল। তারপর তারা আমাদের নিকট ফিরে আসল। দেখা গেল তাদের কন্দাকৃতি দূর হয়ে গিয়েছে। এক্ষণে তারা খুব সুন্দর আকৃতি-বিশিষ্ট হয়ে গিয়েছে। ফেরেশতাঘর আমাকে জানাল, এটাই 'আদন' নামক বেহেশত। এটাই আপনার বাসস্থান। আমি উপরের দিকে

২৮০. আর যদি সে অভাববশ্ত হয় তবে স্বচ্ছলতা আসা পর্যন্ত তাকে সময় দেয়া উচিত। আর যদি তোমরা বুঝে থাক তবে তোমাদের জন্যে দান করাই উত্তম।

وَلَنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۗ وَآنَ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾

২৮১. আর তোমরা সেই দিনের ভয় কর, যেদিন তোমরা আল্লাহর পানে প্রত্যাবর্তিত হবে, তখন যে যা অর্জন করেছে তা সম্পূর্ণরূপে প্রদত্ত হবে এবং তারা অত্যাচারিত হবে না।

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۗ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾

২৮২. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ, যখন তোমরা কোন নির্দিষ্টকালের জন্যে ঋণ আদান-প্রদান করবে,

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۚ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ

তাকালাম। দেখলাম, ধবধবে সাদা মেঘের ন্যায় এক অট্টালিকা। তারা আমাকে জানাল, এটাই আপনার প্রাসাদ। আমি বললাম, আল্লাহ্ তোমাদের উভয়ের কল্যাণ করুন! আমাকে ছেড়ে দাও। আমি এতে প্রবেশ করব। তারা বলল, এখন নয়। তবে এতে আপনি অবশ্যই প্রবেশ করবেন। আমি তাদের বললাম, সারারাত ধরে আমি অনেক অনেক আশ্রয় জিনিস প্রত্যক্ষ করলাম। এগুলোর তাৎপর্য কি? তারা উভয়ে বলল, এক্ষণে আমরা তা আপনাকে জানাব। প্রথম যে ব্যক্তির নিকট আপনি গিয়েছেন, যার মাথা পাথর মেয়ে চৌচির করা হচ্ছিল, সে কুর'আন মুখস্থ করে (তার ওপর আমল) ছেড়ে দিত। আর ঘুমিয়ে ফরজ নামায তরক করত। আর যে ব্যক্তির নিকট আপনি গেলেন, যার গলদেশের পেছন পর্যন্ত চেরা হচ্ছিল। আর নাকের ছিদ্র ও তার চোখ পিঠ পর্যন্ত চেরা হচ্ছিল, সে সকাল বেলা আপন ঘর থেকে বেরিয়ে যেত, আর চতুর্দিকে মিথ্যার প্রচার করে বেড়াত। আর ঐ উলঙ্গ নারী-পুরুষ যাদের প্রজ্জ্বলিত চুলায় দেখতে পেয়েছেন, তারা ছিল যেনাকার পুরুষ ও যেনাকার নারী। আর যে লোক বর্ণায় সঁতরাচ্ছিল যার নিকট দিয়ে আপনি গিয়েছিলেন, যে পাথরের লোকমা খাচ্ছিল, সে ছিল সুদখোর। আর ঐ কদাকার ব্যক্তি যাকে আপনি আশুনের নিকট দেখতে পেয়েছিলেন, আর যে, আশুন জ্বালিয়ে তার চারদিকে দৌড়াচ্ছিল সে দোষখের দারোগা মালেক ফেরেশতা। বাগানে যে দীর্ঘাকৃতির লোককে দেখেছিলেন তিনি ছিলেন ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম)। আর তাঁর চারপাশে যে বালকদের আপনি দেখেছেন, তারা ছিল ঐ সব শিশু, যারা স্বভাব ধর্মের (ইসলাম) ওপর মৃত্যুবরণ করেছে। বর্ণনাকারী বলেন, মুসলমানদের কেউ কেউ জিজ্ঞেস করেছিলঃ হে আল্লাহ্‌র রাসূল! মুশরিকদের সন্তানরা কোথায় রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছিলেন, তারাও সেখানে ছিল। আর যাদের অধিকাংশ অত্যন্ত সুন্দর ছিল, আরেক অংশ ছিল অত্যন্ত কদাকার, তারা ছিল ওসব লোক, যারা ভাল-মন্দ উভয় প্রকার কাজ মিশ্রিতভাবে করেছিল। আল্লাহ্ তাদের ক্রটিসমূহ ক্ষমা করে দিয়েছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭০৪৭)

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিচয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন (পূর্বের যামানায়) এক ব্যক্তি লোকদেরকে ঋণ দিত আর তার সন্তানদেরকে বলত যে, যখন কোন বিপদবশ্ত লোক আসে তখন তার কর্তৃ ক্ষমা করে দিও। হয়ত আল্লাহুও আমাদেরকে ক্ষমা করে দিবেন। তিনি বলেনঃ অতঃপর (লোকটি মৃত্যুর পর) আল্লাহ্‌র সাক্ষাত পেলে, তখন আল্লাহ্ তাকে ক্ষমা করে দিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৮০)

তখন তা লিখে নাও; আর কোন একজন লেখক যেন ন্যায্যভাবে তোমাদের মধ্যে (ঐ আদান-প্রদানের দলীল) লিখে দেয়, আর কোন লেখক যেন (দলীল) লিখে দিতে অস্বীকার না করে, আল্লাহ তাকে যেরূপ শিক্ষা দিয়েছেন, তার লিখে দেয়া উচিত এবং যে ব্যক্তির উপর দায়িত্ব সেও লিখিয়ে নেবে এবং তার উচিত যে, স্বীয় প্রতিপালক আল্লাহকে ভয় করা ও এর মধ্যে কিছুমাত্র ব্যতিক্রম না করা; অনন্তর যার উপর দায়িত্ব সে যদি নিবোধ বা অযোগ্য অথবা লিখিয়ে নিতে অসমর্থ হয় তবে তার অভিভাবকেরা ন্যায়সঙ্গত ভাবে লিখিয়ে নেবে এবং তোমাদের মধ্যে দু'জন পুরুষ সাক্ষীকে সাক্ষী করবে; কিন্তু যদি দু'জন পুরুষ না পাওয়া যায় তবে সাক্ষীগণের মধ্যে তোমরা একজন পুরুষ ও দু'জন নারী মনোনীত করবে, যদি নারীদ্বয়ের একজন ভুলে যায় তবে উভয়ের একজন অপরজনকে স্মরণ করিয়ে দেবে এবং যখন আহ্বান করা হয় তখন সাক্ষীগণের অস্বীকার না করা উচিত এবং ক্ষুদ্র অথবা বৃহৎ বিষয়ের নির্দিষ্ট সময় লিখে নিতে তোমরা অবহেলা করো না, এটা আল্লাহর নিকট অতি সঙ্গত এবং সাক্ষ্যের জন্যে এটাই দৃঢ়তা ও সন্দেহে পতিত না হওয়ার নিকটতর; কিন্তু যদি তোমরা কারবারে পরস্পরে হাতে হাতে আদান-প্রদান কর, তবে তা লিপিবদ্ধ না করলে তোমাদের পক্ষে

بِالْعَدْلِ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ
 اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ ۖ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ
 اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخُسْ مِنْهُ شَيْئًا طَوَّانَ الَّذِي
 عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ
 أَنْ يُمْلِكَ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيَّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَأَسْتَشْهِدُ
 شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ ۖ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ
 فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَيْنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ
 تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى ط
 وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ط وَلَا تَسْمَعُوا أَنْ
 تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ط ذَلِكُمْ أَقْسَطُ
 عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۗ إِلَّا
 أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاصِرَةٌ تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
 عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ط وَأَشْهَدُوا إِذَا
 تَبَايَعْتُمْ ۖ وَلَا يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۗ وَإِنْ
 تَفَعَّلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ط وَاتَّقُوا اللَّهَ ط
 وَيَعْلَمُ اللَّهُ ط وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾

দোষ নেই এবং পরস্পর ক্রয়-বিক্রয় করার সময় সাক্ষী রাখবে, এবং লেখককে ও সাক্ষীকে যেন ক্ষতিগ্রস্ত না করা হয়, আর যদি কর তবে তা নিশ্চয় তোমাদের পক্ষে অনাচার এবং আল্লাহকে ভয় কর ও আল্লাহই তোমাদেরকে শিক্ষা প্রদান করেন এবং আল্লাহ সর্ববিষয়ে মহাজ্ঞানী।

২৮৩. এবং যদি তোমরা সফরে থাক ও লেখক না পাও, তবে হস্তান্তরকৃত বন্ধক রাখা বিধেয়।^১ অনন্তর কেউ যদি কাউকে বিশ্বাস করে তবে যাকে বিশ্বাস করা হয়েছে তার পক্ষে গচ্ছিত দ্রব্য প্রত্যর্পণ করা উচিত এবং স্বীয় প্রতিপালক আল্লাহকে ভয় করা ও সাক্ষ্য গোপন না করা উচিত এবং যে কেউ তা গোপন করবে, নিশ্চয় তার মন পাপাচারী; বস্তুতঃ আল্লাহ তোমাদের কার্যকলাপ সম্বন্ধে সম্যক জ্ঞাত।

২৮৪. নভোমন্ডলে ও ভূমন্ডলে যা কিছু রয়েছে সবই আল্লাহর এবং তোমাদের অন্তরে যা রয়েছে, তা প্রকাশ কর বা গোপন রাখ, আল্লাহ তার হিসাব তোমাদের নিকট হতে গ্রহণ করবেন, অতঃপর তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করবেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি দিবেন এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে শক্তিমান।

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنَ مَقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ ۚ وَلْيَذِخَّرِ اللَّهُ رَبَّهُ ۚ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۗ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فإِنَّهُ أَلِيمٌ قَلْبُهُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾

يَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَإِنْ تُبَدُّوْا مَا فِيْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تَخْفَوْهُ يَحْصِبْكُمْ بِهٖ اللّٰهُ ۗ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এক ইয়াহুদীর নিকট থেকে নির্দিষ্ট মেয়াদে (বাকী) কিছু খাদ্য সামগ্রী খরিদ করেন। এবং ঐ সময় পর্যন্ত তিনি তার নিকট তাঁর বর্ম বন্ধক রাখেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৫০৯)

২৮৫. রাসূল তাঁর প্রতিপালক হতে তার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা বিশ্বাস করেন এবং মু'মিনগণও (বিশ্বাস করেন); তাঁরা সবাই ঈমান এনেছে আল্লাহর উপর তাঁর ফেরেশতাগণের উপর, তাঁর গ্রন্থসমূহের উপর এবং তাঁর রাসূলগণের উপর। আমরা তাঁর রাসূলগণের মধ্যে কাউকেও পার্থক্য করি না, তারা বলে, আমরা শ্রবণ করলাম ও স্বীকার করলাম, হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আপনারই নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করছি এবং আপনারই দিকে চূড়ান্ত প্রত্যাবর্তন।

২৮৬. কোন ব্যক্তিকেই আল্লাহ তার সাধ্যের অতিরিক্ত কর্তব্য পালনে বাধ্য করেন না; কারণ সে যা উপার্জন করেছে তা তারই জন্যে এবং সে যা (অন্যায়) করেছে তা তারই উপর বর্তায়। হে আমাদের প্রতিপালক! যদি আমরা ভুলে যাই অথবা না জেনে ভুল করি তজ্জন্যে আমাদেরকে দোষারোপ করবেন না, হে আমাদের প্রতিপালক, আমাদের পূর্ববর্তীগণের উপর যে রূপ ভার অর্পণ করেছিলেন, আমাদের উপর তদ্রূপ ভার অর্পণ করবেন না; হে আমাদের প্রভু, যা আমাদের শক্তির অতীত ঐ রূপ ভার বহনে আমাদেরকে বাধ্য করবেন না এবং আমাদেরকে ক্ষমা করুন ও আমাদেরকে মার্জনা করুন এবং

أَمِنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ط
كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَكَاتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ ت
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ ت وَقَالُوا سَمِعْنَا
وَاطَعْنَا عُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾

لَا يُكْفِ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ط لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَعَلَيْهَا مَا كَسَبَتْ ط رَبَّنَا لَا تَوَاضَعُنَا إِن
نُؤْسِنَا أَوْ ائْخَاطُنَا ء رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إَصْرًا
كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ء رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ء وَاعْفُ عَنَّا ذُنُوبَنَا
وَاعْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَارْحَمْنَا ذُنُوبَنَا ء أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

আমাদের দয়া করুন; আপনিই
আমাদের অভিভাবক। অতএব
কাফির সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে
আমাদেরকে সাহায্য করুন।

সূরাঃ আল-ইমরান, মাদানী

(আয়াতঃ ২০০ রুকূঃ ২০)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٠٠ رُكُوعَاتُهَا ٢٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আলিফ-লাম-মীম।

الْم ①

২. আল্লাহ ছাড়া কোনই সত্য মা'বুদ নেই। তিনি চিরঞ্জীব, স্বয়ং সম্পূর্ণ ও সকল সৃষ্টির রক্ষণাবেক্ষণকারী।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ①

৩. তিনি হক সহ তোমার প্রতি গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছেন যা পূর্ববর্তী বিষয়ের সত্যতা প্রতিপাদনকারী এবং তিনি তাওরাত ও ইনজীল অবতীর্ণ করেছিলেন।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ①

৪. মানুষের পথ প্রদর্শনের জন্য ইতিপূর্বে (তিনি আরো কিতাব নাযিল করেছেন।) আর ফুর'কান অবতীর্ণ করেছেন। নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি অবিশ্বাস করে, তাদের জন্যে কঠোর শাস্তি রয়েছে, আর আল্লাহ পরাক্রান্ত প্রতিশোধ গ্রহণকারী।

مَنْ قَبْلُ هَدَى لِلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ① إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ① وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ①

৫. নিশ্চয়ই আল্লাহ— যাঁর নিকট ভূমণ্ডলের মধ্যে ও নভোমণ্ডলের মধ্যে কোন বিষয়ই লুকায়িত নেই।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ①

১। ইবনে শিহাব থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন, মাহমুদ ইবনে রুবাই আমাকে জানিয়েছেন যে, নিশ্চয়ই ইতবান ইবনে মালেক, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের)—এর আনসারী সাহাবা ছিলেন এবং তিনি তাদের মধ্যে ছিলেন যারা বদরের যুদ্ধে অংশগ্রহণ করেছিলেন। নিশ্চয়ই তিনি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)—এর কাছে গেলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪০০৯)

৬. তিনিই স্বীয় ইচ্ছানুযায়ী জরায়ুর মধ্যে তোমাদের আকৃতি গঠন করেছেন, সেই পরাক্রান্ত মহা প্রজ্ঞাময় ব্যতীত কোনই সত্য মা'বুদ নেই।

৭. তিনিই তোমার প্রতি গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছেন, যাতে সুস্পষ্ট অকাটা আয়াতসমূহ রয়েছে—ওগুলো গ্রন্থের

মূল এ ব্যতীত কতিপয় আয়াতসমূহ অস্পষ্ট; অতএব যাদের অন্তরে বক্রতা রয়েছে, ফলতঃ তারাি অশান্তি সৃষ্টি ও (ইচ্ছা মত) ব্যাখ্যা বিশ্লেষণের উদ্দেশ্যে অস্পষ্টের অনুসরণ করে অথচ আল্লাহ ব্যতীত এগুলোর অর্থ কেউই অবগত নয়; আর যারা জ্ঞানে সুপ্রতিষ্ঠিত, তারা বলেঃ আমরা ওতে বিশ্বাস করি, সমস্তই আমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে সমাগত এবং জ্ঞানবান ব্যতীত কেউই উপদেশ গ্রহণ করে না।

৮. হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের পথ-প্রদর্শনের পর আমাদের অন্তরসমূহ বক্র করবেন না এবং আমাদেরকে আপনার নিকট হতে করুণা প্রদান করুন, নিশ্চয়ই আপনি মহাদাতা।

৯. হে আমাদের প্রতিপালক! নিশ্চয়ই আপনি সকল মানুষকে সমবেতকারী ঐ দিন যাতে একটুও সন্দেহ নেই, নিশ্চয়ই আল্লাহ প্রতিজ্ঞা ভঙ্গকারী নন।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ط
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ط فَاَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ لَا كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ①

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا
مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ①

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ①

১০. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের ধন-সম্পদ ও তাদের সন্তান-সন্ততি আল্লাহর নিকট কোন বিষয়েই ফলপ্রদ হবে না এবং তারাই হবে জাহান্নামের ইক্ষন।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ
وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ
هُمْ وَقُودُ النَّارِ ⑩

১১. ফিরাউন সম্প্রদায় এবং তাদের পূর্ববর্তীদের প্রকৃতির ন্যায় তারা আমার আয়াতসমূহের প্রতি অসত্যারোপ করেছে, এই হেতু আল্লাহ তাদের অপরাধের জন্যে তাদেরকে শাস্তি প্রদান করেছেন এবং আল্লাহ কঠোর শাস্তি দাতা।

كَذَّابٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑪

১২. যারা অবিশ্বাস করেছে, তুমি তাদেরকে বলঃ অচিরেই তোমরা পরাভূত হবে এবং তোমাদেরকে জাহান্নামের দিকে একত্রিত করা হবে এবং ওটা নিকৃষ্টতর স্থান।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَعْتَابُونَ وَتَحْشُرُونَ
إِلَىٰ جَهَنَّمَ طَوَّيْنَسَ الْإِهَادُ ⑫

১৩. নিশ্চয়ই তোমাদের জন্যে দু'টি দলের পরস্পর সম্মুখীন হওয়ার মধ্যে (বদরের যুদ্ধে) নিদর্শন (শিক্ষণীয়) রয়েছে, তাদের একদল আল্লাহর পক্ষে সংগ্রাম করছিল এবং অপর দল অবিশ্বাসী ছিল, যারা প্রত্যক্ষ দৃষ্টিতে তাদেরকে দ্বিগুণ দেখছিল এবং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা তদীয় সাহায্য দানে শক্তিশালী করেন, নিশ্চয়ই এর মধ্যে চক্ষুন্মানদের জন্যে উপদেশ রয়েছে।

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتِ الَّذِينَ اتَّقَوْا فِي
تَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ
مِثْلَهُمْ رَأَىٰ الْعَيْنِ ط وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَن
يَشَاءُ ⑬ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ⑬

১৪. মানবমণ্ডলীর জন্য রমণীগণের, সন্তান-সন্ততির, জমাকৃত স্বর্ণ ও রৌপ্য ভাণ্ডারের, সুশিক্ষিত অশ্বের ও পালিত পশুর এবং শস্য ক্ষেত্রের প্রেমাকর্ষণী দ্বারা সুশোভিত করা হয়েছে, এটা পার্থিব জীবনের সম্পদ

زِينٍ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ
وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ
ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ

এবং আল্লাহর নিকটেই শ্রেষ্ঠতম আশ্রয়।

১৫. তুমি বলঃ আমি কি তোমাদেরকে এটা অপেক্ষাও উত্তম বিষয়ের সংবাদ দেব? যারা আল্লাহ ভীকু তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের নিকট জান্নাত রয়েছে—যার নিম্নে নদীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে এবং সেখানে পুত পবিত্র সহধর্মিণী গণ ও আল্লাহর সন্তুষ্টি রয়েছে এবং আল্লাহ বান্দাদের প্রতি লক্ষ্যকারী।

১৬. যারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! নিশ্চয়ই আমরা বিশ্বাস স্থাপন করেছি, অতএব আমাদের অপরাধ ক্ষমা করুন এবং জাহান্নামের আগুনের শাস্তি হতে আমাদেরকে বাঁচিয়ে নিন।

১৭. যারা ধৈর্যশীল, সত্যপরায়ণ, অনুগত, দানশীল এবং রাতের শেষাংশে ক্ষমা প্রার্থণাকারী।

১৮. আল্লাহ সাক্ষ্য প্রদান করেন যে, নিশ্চয়ই তিনি ব্যতীত সত্য কেউ মা'বুদ নেই এবং ফেরেশতাগণ, ন্যায় নিষ্ঠ বিদ্যানগণ ও (সাক্ষ্য প্রদান করেন) তিনি ব্যতীত অন্য কোন সত্য মা'বুদ নেই, তিনি পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাময়।

১৯. নিশ্চয়ই ইসলামই আল্লাহর একমাত্র মনোনীত ধর্ম এবং যাদেরকে গ্রহণ প্রদান করা হয়েছে তাদের কাছে জ্ঞান আসার পর তারা পরস্পর বিদ্বেষণাশত বিরোধে লিপ্ত

المآب ۱۲

قُلْ أَوْتَيْنَاكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَلِكُمْ ط الَّذِينَ اتَّقَوْا
عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ط
وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۝۱۲ بِالْعِبَادِ ۝

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا أَمْنَا فَأَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا
وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝۱۳

الضَّالِّينَ وَالضَّالِقِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَفْزِزِينَ
بِالْأَسْحَارِ ۝۱۴

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَا مَلِكُ
وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ط لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝۱۵

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ط وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ

হয়েছিল এবং যে আল্লাহর নিদর্শন-সমূহ অস্বীকার করে, নিশ্চয়ই আল্লাহ সত্ত্বর হিসাব গ্রহণকারী।

২০. অনন্তর যদি তারা তোমার সাথে বিতর্ক করে তবে তুমি বলঃ আমি ও আমার অনুসারীগণ আল্লাহর উদ্দেশ্যে আত্মসমর্পণ করেছি এবং যাদেরকে গ্রহণ প্রদান করা হয়েছে এবং যারা নিরক্ষর তাদেরকে বলঃ তোমরা কি আত্মসমর্পণ করেছো? অনন্তর তবে নিশ্চয়ই তারা সুপথ পেয়ে যাবে যদি তারা আত্মসমর্পণ করে, আর যদি ফিরে যায়, তবে তোমার উপর দায়িত্ব তো শুধু প্রচার করা মাত্র; আর আল্লাহ বান্দাদের প্রতি লক্ষ্যকারী।

২১. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর নিদর্শন-সমূহ অবিশ্বাস করে ও অন্যায়ভাবে নবীদেরকে হত্যা করে এবং যারা মানবমণ্ডলীর মধ্যে ন্যায়ের আদেশকারী তাদেরকে হত্যা করে; তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ দিয়ে দাও।

২২. এদেরই কৃতকর্মসমূহ ইহকাল ও পরকালে ব্যর্থ হবে এবং তাদের জন্যে কেউ সাহায্যকারী নেই।

২৩. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি যাদেরকে গ্রহণের একাংশ প্রদান করা হয়েছে? তাদেরকে গ্রহণের দিকে আহ্বান করা হচ্ছে, যেন এটা তাদের মধ্যে মীমাংসা করে; অতঃপর তাদের একদল মুখ ফিরিয়ে নিলো এবং তারা বিমুখতা অবলম্বনকারী।

فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٠﴾

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسَلَّمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ
اتَّبَعَنِ ط وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ
ءَ أَسَلَّمْتُمْ ط فَإِنْ أَسَلَّمُوا فَقَدْ اهْتَدَوْا ۗ وَإِنْ تَوَلَّوْا
فَأَنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ ط وَاللَّهُ بِصَيْرٍ بِالْعِبَادِ ﴿١١﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ
النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۖ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿١١﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿١٢﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ
يُدْعُونَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ
يَتَوَلَّوْا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿١٣﴾

২৪. এটা এ জন্যে যে তারা বলেঃ নির্দিষ্ট সংখ্যক দিবস ব্যতীত অগ্নি আমাদেরকে স্পর্শ করবে না এবং তারা যা তাদের ধর্ম বিষয়ে মনগড়া ধারণা করতো ওটা তাদেরকে প্রতারিত করেছে।

২৫. অনন্তর যেদিন আমি তাদেরকে একত্রিত করবো—যাতে কোন সন্দেহ নেই, তখন তাদের কি দশা হবে? এবং প্রত্যেক ব্যক্তি যা অর্জন করেছে তা সম্যকরূপে প্রদত্ত হবে এবং তারা অভ্যাচারিত হবে না।

২৬. তুমি বলঃ হে রাজ্যাধিপতি আল্লাহ! আপনি যাকে ইচ্ছা রাজত্ব দান করেন এবং যার নিকট হতে ইচ্ছা রাজত্ব ছিনিয়ে নেন, যাকে ইচ্ছা সম্মান দান করেন এবং যাকে ইচ্ছা লাঞ্চিত করেন; আপনারই হাতে যাবতীয় কল্যাণ, নিশ্চয়ই আপনি সব বিষয়ে ক্ষমতাবান।

২৭. আপনি রজনীকে দিবসের ভিতরে প্রবেশ করান এবং দিবসকে রজনীর ভিতরে প্রবেশ করান এবং মৃত হতে জীবিতকে নির্গত করেন এবং জীবিত হতে মৃতকে বহির্গত করেন এবং আপনি যাকে ইচ্ছা অপরিমিত জীবিকা দান করে থাকেন।

২৮. মু'মিনগণ যেন মু'মিনদেরকে ছেড়ে কাফিরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ না করে; এবং তাদের আশঙ্কা হতে আত্মরক্ষা ব্যতীত যে এরূপ করে আল্লাহর সাথে তার কোন সম্পর্ক

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ نَّمَسْكَنَ اِلَّا اَيَّامًا
مَّعْدُوْدِيْنَ ۗ وَغَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۴﴾

فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنَهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۗ وَوَقِيَتْ
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۵﴾

قُلِ الْاٰهُمَّ مٰلِكِ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمَلِكَ مَن تَشَاءُ
وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ مِمَّن تَشَاءُ ۗ وَتُعْزِزُ مَن تَشَاءُ
وَتُذَلِّقُ مَن تَشَاءُ ۗ ط يَبِيْدُكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۶﴾

تُوَلِّجُ الْاَيْلَ فِى النَّهَارِ وَ تُوَلِّجُ النَّهَارَ فِى الْاَيْلِ ۗ
وَتَخْرِجُ النَّوَى مِنَ الْمَيْتِ وَ تَخْرِجُ الْمَيْتَ مِنَ
الْحَيِّ ۗ وَ تَرزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۱۷﴾

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِّنْ دُوْنِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ
فِى شَيْءٍ ۗ اِلَّا اَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقٰةً ط وَ يَحْدٰرِكُمْ

নাই; আর আল্লাহ তোমাদেরকে তাঁর ব্যাপারে সতর্ক করেছেন। আল্লাহরই দিকে ফিরে যেতে হবে।^১

২৯. তুমি বলঃ তোমাদের অন্তরসমূহে যা রয়েছে তা যদি তোমরা গোপন কর অথবা প্রকাশ কর, আল্লাহ তা অবগত আছেন এবং নভোমণ্ডলে ও ভূমণ্ডলে যা কিছু রয়েছে আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন; এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্ব শক্তিমান।

৩০. সেদিন প্রত্যেক ব্যক্তি যা কিছু সৎকর্ম করেছে তা মওজুদ পাবে এবং সে যা মন্দ কাজ করেছে তাও পাবে। তখন সে ইচ্ছা করবে যে, যদি তার মধ্যে ও ঐ দুষ্কর্মের মধ্যে সুদূর ও ব্যবধান হতো এবং আল্লাহ তা'আলা তোমাদেরকে নিজ সম্পর্কে সতর্ক করেছেন এবং আল্লাহ স্বীয় বান্দাদের প্রতি স্নেহশীল।

৩১. তুমি বলঃ যদি তোমরা আল্লাহকে ভালবাস তবে আমার অনুসরণ কর, আল্লাহ তোমাদেরকে ভালবাসবেন ও তোমাদের অপরাধ-সমূহ ক্ষমা করবেন এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

৩২. তুমি বলঃ তোমরা আল্লাহ ও রাসূলের অনুসরণ কর; কিন্তু যদি তারা ফিরে যায়, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ অবিশ্বাসীদেরকে ভালবাসেন না।

اللَّهُ نَفْسَهُ ط وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٩﴾

قُلْ إِنْ تَخُفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تَبَدُّوهُ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ط وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٠﴾

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ط وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ ط تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ط وَيَحْذَرُكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ ط وَاللَّهُ رَعُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣١﴾

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ط وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٢﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ط فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٣﴾

১। আব্দুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহর চেয়ে অধিক আত্মসম্মানবোধ আর কেউ নেই। তাই তিনি অশীলতা হারাম করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪০০৩)

৩৩. নিশ্চয়ই আল্লাহ আদমকে ও নূহকে এবং ইবরাহীমের সন্তানগণকে ও ইমরানের সন্তানগণকে বিশ্ব জগতের উপর মনোনীত করেছেন।

৩৪. তারা একে অপরের সন্তান এবং আল্লাহ মহা শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

৩৫. যখন ইমরান পত্নী নিবেদন করলেন, হে আমার প্রতিপালক! নিশ্চয়ই আমার গর্ভে যা রয়েছে, তা আমি মুক্ত করে আপনার উদ্দেশ্যে মানত করলাম, সুতরাং আপনি আমার থেকে তা গ্রহণ করুন, নিশ্চয়ই আপনি মহা শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

৩৬. অনন্তর যখন তিনি তা প্রসব করলেন তখন বললেন হে আমার প্রতিপালক! আমি তো কন্যা সন্তান প্রসব করেছি এবং তিনি যা প্রসব করেছেন তা আল্লাহ ভালভাবেই অবগত আছেন এবং (ঐ কাজিত) পুত্র এ কন্যার সমকক্ষ নয়; আর আমি কন্যার নাম রাখলাম, 'মারইয়াম' এবং আমি তাকে ও তার সন্তানগণকে বিতাড়িত শয়তান হতে আপনার আশ্রয়ে সমর্পণ করলাম।

৩৭. অনন্তর তাঁর প্রভু তাঁকে উত্তমরূপে গ্রহণ করলেন এবং তাঁকে উত্তমভাবে গড়ে তুললেন এবং যাকারিয়াকে তার অভিভাবক করলেন; যখনই যাকারিয়া তার নিকট উক্ত প্রকোষ্ঠে প্রবেশ করতেন, তখনই তার নিকট খাদ্যসম্ভার প্রত্যক্ষ করতেন; তিনি বলতেনঃ হে

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ
وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

إِذْ قَالَتْ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَدَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۗ
إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا
أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ ۗ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْأُنْثَىٰ ۗ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي
أَعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا
حَسَنًا ۗ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۗ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۗ قَالَ يَرِيمُ إِنِّي
لِكَ هَذَا ۗ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

মারইয়াম! এটা কোথা হতে প্রাপ্ত হলে? তিনি বলতেনঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে; নিশ্চয়ই আল্লাহ যাকে ইচ্ছা অপরিমিত জীবিকা দান করেন।

৩৮. ঐ স্থানে যাকারিয়া তার প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা করেছিলেন; তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে আপনার নিকট হতে সুসন্তান দান করুন; নিশ্চয়ই আপনি প্রার্থনা শ্রবণকারী।

৩৯. অতঃপর যখন তিনি 'মেহরাবের' মধ্যে দাঁড়িয়ে প্রার্থনা করছিলেন, তখন ফেরেশতগণ তাঁকে সম্বোধন করে বলেছিলেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাকে ইয়াহইয়া সম্বন্ধে সুসংবাদ দিচ্ছেন— তাঁর অবস্থা এই হবে যে, তিনি আল্লাহর বাক্যের সত্যতার সাক্ষ্য দিবেন। নেতা হবেন, স্বীয় প্রবৃত্তিকে খুব দমনকারী হবেন এবং তিনি সৎকর্মশালী নবীদের একজন হবেন।

৪০. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক, কিরূপে আমার পুত্র হবে? কেননা আমার বার্ধক্য উপস্থিত হয়েছে ও আমার স্ত্রী বন্ধ্যা; তিনি বললেনঃ এরূপে, আল্লাহ যা ইচ্ছা করেন তাই করে থাকেন।

৪১. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রভু! আমার জন্যে কোন নিদর্শন নির্দিষ্ট করুন; তিনি বললেনঃ তোমার নিদর্শন এই যে, তুমি তিন দিন

هَذَا لَكَ دَعَا زَكْرِيَّا رَبَّهُ ۗ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي
مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۗ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾

فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ
أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيحْيَى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنْ
اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٩﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ لِي عُلْمٌ وَقَدْ بَلَغَنِي
الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً ۗ قَالَ إِنِّيكَ إِلَّا نُكَلِّمَ
النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمَازًا ۗ وَادْكُرْ رَبَّكَ

ইঙ্গিত ব্যতীত লোকের সাথে কথা বলতে পারবে না; আর স্বীয় প্রভুকে বিশেষভাবে স্মরণকর এবং সক্ষমায় ও প্রভাতে তাঁর মহিমা বর্ণনা কর। ১

৪২. এবং যখন ফেরেশতাগণ বলেছিলেন হে মারইয়াম! নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাকে মনোনীত করেছেন ও তোমাকে পবিত্র করেছেন এবং বিশ্বজগতের নারীগণের উপর তোমাকে মনোনীত করেছেন।

৪৩. হে মারইয়াম! তোমার প্রভুর ইবাদত কর এবং সিজদাকর ও রুকু' কারীগণের সাথে রুকু' কর।

كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۖ

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ يَمْرُؤُا۟ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ
وَظَهَرَ كِ وَاصْطَفٰكِ عَلَى نِسَاءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝

يَمْرُؤُا۟ اٰتٰتِنِي۟ لِرَبِّكِ وَاَسْجُدِي۟ وَاَرْكَعِي۟
مَعَ الرُّكَّعِيْنَ ۝

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, (নবজাত শিশু) দোলনায় তিনজনই মাত্র কথা বলেছে। (একজন) হযরত ঈসা (আলাইহিসসালাম)। আর বনী ইসরাইলের এক ব্যক্তি ছিল। তার নাম ছিল জুরাইয। সে নামায পড়ছিল। এমনি সময় তার কাছে তার মা আসল এবং তাকে ডাকল। সে (মনে মনে) বলল, আমি জবাব দেব; নাকি নামায পড়তে থাকব। (সোড়া না পেয়ে) তার মা বদদোয়া দিল যে, হে আল্লাহ! যেনাকারিনীদের চেহারা না দেখা পর্যন্ত যেন তার মরণ না হয়। জুরাইয নিজের ইবাদাতখানায় থাকত। (একদিন) এক মহিলা তার নিকট আসল। তার সাথে কিছু কথাবার্তা বলল; কিন্তু সে (মহিলাটির সাথে মিলতে) অস্বীকার করল। অতঃপর মহিলাটি একজন রাখালের নিকট গেল এবং তাকে দিয়ে আপন মনোবাসনা পূরণ করে নিল। পরে সে একটি পুত্র সন্তান প্রসব করল। সে অপবাদ দিয়ে বললো, এটি জুরাইযের সন্তান। লোকজন জুরাইযের নিকট আসল। তার ইবাদাতখানা ভেঙ্গে ফেলল। তাকে নীচে নামিয়ে আনল। অকথ্য ভাষায় গালিগালাজ করল। তখন জুরাইয গিয়ে ওষু করল এবং নামায পড়ল। তারপর নবজাত শিশুটির নিকট আসল এবং তাকে জিজ্ঞেস করল, হে শিশু! তোমার পিতা কে? সে জবাব দিল, সেই রাখালটি। (জনগণ নিজেদের ভুল বুঝল, জুরাইযকে) বলল, আমরা আপনার ইবাদাতখানাটি সোনা দিয়ে বানিয়ে দিচ্ছি। সে বলল, না, মাটি দিয়েই বানিয়ে দেবে। (ভৃতীয় ঘটনা হচ্ছে) বনী ইসরাইলের এক মহিলা ছিল। সে তার শিশুকে দুধ পান করাত্ছিল। তার কাছ দিয়ে আরোহী এক সুপুরুষ চলে গেল। সে দু'আ করল, হে আল্লাহ! আমার ছেলোটিকে তার মত বানিয়ে দাও। শিশুটি (তখন) মায়ের স্তন ছেড়ে দিল, সেই আরোহীর দিকে ফিরল এবং বলল, হে আল্লাহ! আমাকে এর ন্যায় বানিও না। তারপর আবার মায়ের দুধের দিকে ফিরল এবং তাতে চুষতে লাগল। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আপন আবুল চূবে (শিশুটির দুধ চোষার যে অবস্থা) দেখাছিলেন, আমি যেন তা (এখনও) দেখতে পাচ্ছি। পুনরায় সেই মহিলাটির পাশ দিয়ে একটি দাসীকে নিয়ে যাওয়া হলো। (তার মালিক তাকে মারছিল) মহিলাটি দু'আ করল, হে আল্লাহ! আমার ছেলেকে তার মতো করো না। ছেলোটি (সাথে সাথে) মায়ের স্তন ছেড়ে দিল এবং বলল, হে আল্লাহ! আমাকে তার মতো কর। মা জিজ্ঞেস করল, তা কেন? শিশুটি জবাব দিল, সেই আরোহীটি ছিল যালিমদের অন্যতম। আর এ দাসীটিকে লোকেরা বলছে, তুমি চুরি করেছ, যেনা করেছ। অথচ সে কিছুই করেনি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৩৬)

৪৪. এটা সেই অদৃশ্য বিষয়ক সংবাদ যা আমি তোমার প্রতি প্রত্যাদেশ করছি এবং যখন তারা স্বীয় লেখনীসমূহ (কলমসমূহ) নিক্ষেপ করছিল যে, তাদের মধ্যে কে মারইয়ামের অভিভাবক হবে, তখন তুমি তাদের নিকটে ছিলে না; এবং যখন তারা কলহ করছিল তখনও তুমি তাদের নিকট ছিলে না।

৪৫. স্মরণ কর, যখন ফেরেশতারা বললেন, হে মারইয়াম! নিশ্চয় আল্লাহ তাঁর তরফ থেকে তোমাকে একটি বাণীর সুসংবাদ দিচ্ছেন, তার নাম মসীহ ঈসা ইবনে মারইয়াম, সে সম্মানিত দুনিয়া ও আখেরাতে এবং সে আল্লাহর ঘনিষ্ঠদেরও অন্যতম।

৪৬. তিনি মানুষের সাথে কথা বলবেন দোলনায় থাকা অবস্থায় এবং প্রাপ্ত বয়সেও এবং তিনি হবেন নেককারদেরও অন্যতম।

৪৭. মারইয়াম বললেন, হে আমার প্রতিপালক! কেমন করে আমার সন্তান হবে, অথচ কোন মানব আমাকে স্পর্শ করেনি। আল্লাহ বললেনঃ এভাবেই আল্লাহ সৃষ্টি করেন যা ইচ্ছা করেন। যখন তিনি কোন কাজ করতে মনস্থ করেন তখন তাকে শুধু বলেন “হও”, অমনি তা হয়ে যায়।

৪৮. তিনি তাঁকে লিখনি বিদ্যা, শরীয়তি প্রজ্ঞা এবং তাওরাত ও ইনজীল শিক্ষা দেবেন।

৪৯. আর তাকে ইসরাঈল বংশীয়গণের জন্যে রাসূল করবেন;

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيْهِ اِلَيْكَ وَ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اِيْتُهُمْ يَكْفُلْ مَرْيَمَ وَ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يَبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِنْهُ ۗ اَسْمٰهُ الْمَسِيْحُ عِيسٰى ابْنُ مَرْيَمَ وَ جِهًا فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

وَ يَكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَ كَهْلًا وَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾

قَالَتْ رَبِّ اَنْىٰ يَكُوْنُ لِىْ وَ كِدّٰٓءُكُمْ يَسْتَسْنِفُنِىْ ۗ بَشْرًا قَالْ كَذٰلِكَ اَللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۗ اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾

وَ يَعْطِمُهٗ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ التَّوْرٰتَ وَ الْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾

وَ رَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْ اِسْرَآءِيْلَ ۗ اِنِّىْ قَدْ جَعَلْتُكُمْ

নিশ্চয়ই আমি তোমাদের প্রতি-
পালকের নিকট হতে নিদর্শনসহ
তোমাদের নিকট আগমন করেছি;
নিশ্চয়ই আমি তোমাদের জন্যে মাটি
হতে পাখীর আকার গঠন করবো,
তারপর ওর মধ্যে ফুঁ দেব, অনন্তর
আল্লাহর আদেশে ওটা পাখী হয়ে
যাবে এবং জন্মান্নকে ও কুষ্ঠ রোগীকে
নিরাময় করি এবং আল্লাহর আদেশে
মৃতকে জীবিত করি এবং তোমরা যা
ভক্ষণ কর ও তোমরা যা স্বীয় গৃহের
মধ্যে সঞ্চয় করে রাখ— তদ্বিষয়ে
সংবাদ দিচ্ছি; যদি তোমরা বিশ্বাসী
হও, তবে নিশ্চয়ই এতে তোমাদের
জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

৫০. আর আমার পূর্বে তাওরাত হতে
যা আছে এটা তার সত্যতা
সত্যায়নকারী এবং তোমাদের জন্যে
যা অবৈধ হয়েছে, তার কতিপয়
তোমাদের জন্যে বৈধ করবো ও
আমি তোমাদের প্রভুর নিকট হতে
তোমাদের জন্যে নিদর্শন এনেছি;
অতএব আল্লাহকে ভয় কর ও আমার
অনুগত হও।

৫১. নিশ্চয়ই আল্লাহ আমার প্রভু ও
তোমাদের প্রভু; অতএব তাঁর
ইবাদত কর— এটাই সরল পথ।

৫২. অনন্তর যখন ঈসা তাদের মধ্যে
প্রত্যাখ্যান প্রত্যক্ষ করলেন, তখন
তিনি বললেন আল্লাহর উদ্দেশ্যে কে
আমার সাহায্যকারী হবে?
হাওয়ারিগণ বললেন আমরাই
আল্লাহর সাহায্যকারী; আমরা

بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۗ إِنِّي أَخْلَقْتُ لَكُمْ مِنَ الظِّلِّينَ
كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ
اللَّهِ ۗ وَأُبْرِئِي الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُنحِي الْمَوْتَى
بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ
فِي بُيُوتِكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُمْ إِن كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٠﴾

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَإِلَّا حَلَّ
لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ
مِّن رَّبِّكُمْ ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي
إِلَى اللَّهِ ۗ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ۗ أَمْنَا
بِاللَّهِ ۗ وَاشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছি; এবং সাক্ষী থাকুন যে, আমরা আত্মসমর্পণকারী।

৫৩. হে আমাদের প্রভু! আপনি যা অবতীর্ণ করেছেন, আমরা তা বিশ্বাস করি এবং আমরা রাসূলের অনুসরণ করছি; অতএব সাক্ষীগণের সাথে আমাদেরকে লিপিবদ্ধ করুন।

৫৪. আর তারা ষড়যন্ত্র করেছিল ও আল্লাহ সূক্ষ্ম কৌশল করলেন এবং আল্লাহ সূক্ষ্ম শ্রেষ্ঠতম কৌশলী।

৫৫. যখন আল্লাহ বললেনঃ হে ঈসা! নিশ্চয়ই আমি তোমাকে আমার দিকে তোমার (পার্থিব্য জীবন) পূর্ণতা দান করে উত্তোলন করবো এবং অবিশ্বাসকারীগণ হতে তোমাকে পবিত্র করবো, আর যারা অবিশ্বাস করেছে তাদের উপর তোমার অনুসারীগণকে কিয়ামত দিবস পর্যন্ত সম্মুখত করবো; অনন্তর আমারই দিকে তোমাদের প্রত্যাবর্তন; অতঃপর তোমাদের মধ্যে যে বিষয়ে মতভেদ ছিল তার মীমাংসা করবো।^১

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٣﴾

وَمَكُرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ ط وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِينَ ﴿٥٤﴾

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعْسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ ثُمَّ إِنِّي مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾

১। (ক) ইবনে শিহাব থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই সাঈদ ইবনে মুসায়্যিব আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলতে শুনেছেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঐ সত্ত্বার শপথ যার হাতে আমার প্রাণ অবশ্যই ঐ সময় ঘনিয়ে আসছে যে, তোমাদের মাঝে ইবনে মারইয়াম (ঈসা আলাইহিস সালাম) আগমন করবেন ন্যায়পরায়ণ বিচারক হিসাবে। ক্রুশ ভঙ্গে নিশ্চিহ্ন করবেন (খ্রিস্টান ধর্মের প্রতীক), শূকর নিধন করবেন, জিযিয়া কর তুলে নিবেন। অর্থনীতির চরম উন্নতি হবে, এমনকি যাকাতের মাল নেয়ার মত লোক থাকবেন। একটি সিদ্ধান্ত দেয়া দুনিয়া এবং দুনিয়াতে যা কিছু আছে তার চেয়ে উত্তম হবে। অতঃপর আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ যদি চাও তাহলে কুরআনের ঐ আয়াত পাঠ কর। অর্থঃ-“এমন কোন আহলে কিতাব থাকবেনা যে, মুহুর পূর্বে তাঁর প্রতি (ঈসা আলাইহিস সালাম) ঈমান আনবেনা এবং কিয়ামতের দিন তিনি তাদের ওপর সাক্ষী হবেন।” (সূরা নিসাঃ ১৫৯) (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪৮)

(খ) আবু কাতাদাহ আল-আনসারীর গোলাম না'ফে থেকে বর্ণিত নিশ্চয়ই আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তখন তোমাদের কেমন লাগবে? যখন ঈসা (আলাইহিস সালাম) তোমাদের মাঝে আগমন করবে এবং তোমাদের মধ্য থেকে ইমাম হবেন (ইমাম মাহদী) এবং ঈসা (আলাইহিস সালাম) তার ইকতদা করবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪৯)

৫৬. অনন্তর যারা অবিশ্বাসী হয়েছে, বস্তুতঃ তাদেরকে ইহকাল ও পরকালে কঠোর শাস্তি প্রদান করবো এবং তাদের জন্যে কেউ সাহায্যকারী নেই।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٥٦﴾

৫৭. আর যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকার্যবলী সম্পাদন করেছে ফলতঃ তিনি তাদেরকে পূর্ণ প্রতিদান প্রদান করবেন এবং আল্লাহ অত্যাচারীগণকে ভালবাসেন না।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ
أُجُورَهُمْ طَوَّالَةً لَا يُجِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾

৫৮. আমি তোমার প্রতি অকাটা প্রজ্ঞাময় বর্ণনা ও নিদর্শনাবলী হতে এটা পড়ে শুনাচ্ছি।

ذَلِكَ تَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

৫৯. নিশ্চয়ই আল্লাহর নিকট ইসার দৃষ্টান্ত আদমের অনুরূপ; তিনি তাঁকে মাটি দ্বারা সৃষ্টি করলেন, তৎপর বললেন, হও, ফলতঃ তাতেই হয়ে গেল।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ط خَلَقَهُ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

৬০. এ বাস্তব ঘটনা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে; সুতরাং তুমি সংশয়ীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

৬১. অনন্তর তোমার নিকট যে জ্ঞান এসেছে, তারপরও ঐ বিষয়ে যে তোমার সাথে বিতর্ক করে, তুমি বলঃ এসো আমরা আমাদের সন্তানগণ ও তোমাদের সন্তানগণকে আমাদের নারীগণ ও তোমাদের নারীগণকে এবং স্বয়ং আমাদেরকে ও স্বয়ং তোমাদেরকে আহ্বান করি তৎপর বিনীত প্রার্থনা করি যে, অসত্য-বাদীদের উপর আল্লাহর অভিসম্পাত হোক।

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ آبَاءَنَا وَآبَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ
فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿٦١﴾

৬২. নিশ্চয়ই এটাই সত্য বিবরণ এবং আল্লাহ ব্যতীত কোন সত্য মা'বুদ নেই, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতীব সম্মানী, প্রজ্ঞাময়।

৬৩. অতঃপর যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ কলহ সৃষ্টি কারীদের সম্পর্কে পরিজ্ঞাত আছেন।

৬৪. তুমি বলঃ হে আহলে কিতাব! আমাদের মধ্যে ও তোমাদের মধ্যে যে বাক্য অভিন্ন ও সাদৃশ্য রয়েছে তার দিকে এসো যেন আমরা আল্লাহ ব্যতীত কারও ইবাদত না করি ও তাঁর সাথে কোন অংশী স্থির না করি এবং আল্লাহ ব্যতীত আমরা পরস্পর কাউকে প্রভু রূপে গ্রহণ না করি; অতঃপর যদি তারা ফিরে যায় তবে বলঃ সাক্ষী থাক যে, আমরাই মুসলিম।

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۗ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ الْعِزَّةُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

قُلْ يَا هَلْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ اتِّبَاعُ آلِهَةٍ مِمَّا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

১। আব্দুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ আবু সুফিয়ান আমার সামনে (উপস্থিত থেকে) বর্ণনা করেছেন যে, যে সময় আমার ও রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর মধ্যে হুদাইবিয়ার) চুক্তি ছিলো সেই সময় আমি শামে (সিরিয়া) গেলাম। সেখানে থাকা অবস্থায়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর একখানা পত্র হিরাকলের নামে তার কাছে পৌঁছানো হলো। আবু সুফিয়ান বলেন, দিহইয়া কালবী পত্রখানা বহন করে নিয়ে গিয়েছেন। তিনি পত্রখানা বুসরার শাসনকর্তার কাছে পৌঁছিয়ে দিল বুসরার শাসনকর্তা আবার তা হিরাকলের কাছে পৌঁছিয়ে দিয়েছিলেন। আবু সুফিয়ান বর্ণনা করেছেন, তখন (পত্র পাওয়ার পর) হিরাকল (তাঁর সভাসদদের) বললেনঃ যে লোকটি নিজেই নবী বলে দাবী করছে তাঁর কওমের কেউ এখানে আছে কি? তারা বললো, হ্যাঁ, আছে। আবু সুফিয়ান বলেন, আমাকে ও আমার কুরাইশ গোত্রীয় কয়েকজন সঙ্গীকে হিরাকলের দরবারে ডাকা হলো। আমরা হিরাকলের দরবারে পৌঁছলে আমাদের তাঁর সামনে বসানো হলো। তখন তিনি বললেনঃ যে লোকটি নিজেই নবী বলে দাবী করছে তোমাদের মধ্যে বংশের দিক থেকে তাঁর ঘনিষ্ঠ কেউ আছে কি? আবু সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম, বংশগত দিক থেকে আমি তার ঘনিষ্ঠ লোক তখন দরবারের লোকজন আমাকে তাঁর (হিরাকল) সামনে বসিয়ে দিল এবং আমার সঙ্গীদেরকে আমার পেছনে বসালো। এরপর তাঁর দোভাষীকে ডাকা হলো। তিনি তাঁর দোভাষীকে বললেন, তাদেরকে (পেছনের লোকদেরকে) বসো, আমি একে (আবু সুফিয়ান) নবুয়ত দাবীকারী লোকটি সম্পর্কে প্রশ্ন করবো। যদি সে মিথ্যা বলে তাহলে তোমরা তার মিথ্যা ধরিয়ে দেবে। আবু সুফিয়ান বলেন, আল্লাহর কসম, আমি মিথ্যা বললে আমার সাথীরা প্রতিবাদ করে ধরিয়ে দেবে-এই ভয় না থাকলে আমি অবশ্যই মিথ্যা কথা বলতাম। এরপর তিনি তাঁর দোভাষীকে বললেনঃ তাকে জিজ্ঞেস করো, তোমাদের মধ্যে তাঁর (নবুয়তের দাবীদার লোকটির) বংশমর্যাদা কিরূপ?

৬৫. হে আহলে কিতাব! তোমরা ইবরাহীম সম্বন্ধে কেন বাদানুবাদ করছো? অথচ তাঁর পরেই তাওরাত ও ইনজীল অবতীর্ণ হয়েছে, তবুও কি তোমরা বুঝছো না।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ط
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

আবু সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম, তিনি আমাদের মধ্যে উচ্চ বংশীয়। তিনি (হিরাকল) বললেনঃ তাঁর পূর্ব পুরুষদের মধ্যে কেউ বাদশাহ ছিল কি? আবু সুফিয়ান বর্ণনা করেছেন, আমি বললাম না। তিনি বললেনঃ তিনি এখন যা বলছেন তার পূর্বে কি তোমরা কখনো তাঁকে মিথ্যা অপবাদ দিতে? আমি বললাম না। তিনি বললেন, নেতৃস্থানীয় ও উচ্চ মর্যাদাসম্পন্ন লোকেরাই তাঁর অনুসরণ করছে, না দুর্বল লোকেরা? আবু সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম, দুর্বল লোকেরাই বরং তার অনুসরণ করছে। তিনি (হিরাকল) বললেন, তাঁর অনুসারীদের সংখ্যা বৃদ্ধি পাচ্ছে না হ্রাস পাচ্ছে? আবু সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম বৃদ্ধি পাচ্ছে। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, উক্ত ধ্বনে প্রবেশ করার পর তাদের মধ্যে কেউ কি তার প্রতি অসন্তুষ্ট হয়ে তা ত্যাগ করে? আমি বললাম, না। তিনি বললেন, তোমরা কি কোন সময় তাঁর সাথে যুদ্ধ করেছো? আমি বললাম, হ্যাঁ। তিনি বললেন, তাঁর সাথে তোমাদের যুদ্ধের ফলাফল কি? আমি বললাম, তাঁর ও আমাদের মাঝে যুদ্ধের ফলাফল হলো পালাক্রমে বালতি ভরে পানি উঠানোর মতো। কখনো তিনি আমাদের থেকে পান আবার কখনো আমরা তার নিকট থেকে পাই। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, তিনি কি কখনো ওয়াদা ভঙ্গ করেন? আমি বললাম না। তবে আমরা একটি নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তার সাথে এক চুক্তিতে আবদ্ধ আছি। জানি না এ সময় তিনি কি করেন। আবু সুফিয়ান বলেন, এ একটা কথা ছাড়া তার বিরুদ্ধে আর কোন কথা বলা আমার পক্ষে সম্ভব হয়নি। তিনি বললেন, তাঁর আগে এরূপ আর কেউ কি বলেছে? আমি বললাম না। এরপর তিনি তাঁর দোভাষীকে বললেন, তাকে বলা, আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তোমাদের মধ্যে তাঁর বংশ মর্যাদা কিরূপ? তুমি বললে যে, তিনি আমাদের মধ্যে উচ্চ বংশীয়। এভাবে রাসূলদেরকে তাঁদের কওমের উচ্চ বংশেই পাঠানো হয়। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম যে, তাঁর পূর্বপুরুষদের মধ্যে কেউ কি বাদশাহ ছিলো? তুমি বললে না। (তাঁর পূর্বপুরুষদের মধ্যে কেউ যদি বাদশাহ থাকতো) তাহলে আমি বলতাম, সে এমন এক ব্যক্তি যে, তাঁর পিতৃপুরুষের রাজ্য পুনরুদ্ধার করতে চায়। আমি তোমাকে তাঁর অনুসরণকারীদের সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম যে, তারা সমাজের দুর্বল লোক না সম্ভ্রান্ত উচ্চবংশীয় লোক? তুমি বললে যে, সমাজের দুর্বল লোক। এসব লোকই তো রাসূলদের অনুসারী হয়ে থাকে। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, সে এখন যা কিছু বলছে তা বলার আগে তোমরা কি কখনো তার প্রতি মিথ্যা বলার অপবাদ দিতে পেরেছো? তুমি বললে, না। তাতে আমি বুঝলাম যে, যিনি মানুষের বেলায় মিথ্যা পরিত্যাগ করেন আর আল্লাহর ব্যাপারে মিথ্যা বলবেন- এরূপ কখনো হতে পারে না। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তাদের কেউ কি তাঁর ধ্বনে প্রবেশ করার পর অসন্তুষ্ট হয়ে তা পরিত্যাগ করে? তুমি বললে, না। ঈমানের ব্যাপারটা এরূপই হয়ে থাকে যখন তার সজীবতা ও স্বতঃস্ফূর্ততা হ্রদয়ে গেঁথে যায়। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম যে, তাঁর ধ্বন গ্রহণকারীদের সংখ্যা বাড়ছে না কমছে? তুমি বললে, বাড়ছে। পূর্ণতা প্রাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত ঈমানের অবস্থা এরূপই হয়। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তোমরা কি তাঁর সাথে যুদ্ধ করেছো? তুমি বললে যে, তোমরা তার বিরুদ্ধে যুদ্ধও করেছো। কিন্তু যুদ্ধের ফলাফল হয়েছে বালতিতে করে পালাক্রমে পানি উঠানোর মতো। তিনি কখনো তোমাদের নিকট থেকে পান। আবার তোমরা কখনো তাঁর নিকট থেকে পেয়ে থাকো। অর্থাৎ যুদ্ধের ফলাফল কখনো তোমাদের অনুকূলে আবার কখনো তাঁর অনুকূলে। এভাবেই রাসূলদের পরীক্ষা করা হয়। তবে পরিণামে তারাই বিজয়ী হন। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তিনি কি কখনো ওয়াদা খেলাফ বা চুক্তি ভঙ্গ করেন? তুমি বললে, না, তিনি কখনো চুক্তি ভঙ্গ করেন না। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলামঃ এরূপ কথা এর আগে আর কেউ কি কখনো বলেছে? তুমি বললে না। তাঁর আগে এরূপ কথা আর কেউ বলে থাকলে আমি বলতাম, সে পূর্বের বলা

৬৬. হ্যাঁ, তোমরা এমন যে, যে বিষয়ে তোমাদের জ্ঞান ছিল, তা নিয়েও তোমরা কলহ করছিলে; কিন্তু যে বিষয়ে তোমাদের কোনই জ্ঞান নেই, তা নিয়ে তোমরা কেন কলহ করছো? এবং আল্লাহ পরিজ্ঞাত আছেন আর তোমরা অবগত নও।

هَٰأَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجِبْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ
فَلِمَ تَحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾

৬৭. ইবরাহীম ইয়াহূদী ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না; বরং তিনি

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ

কথারই অনুসরণ করছে। আবু সুফিয়ান বলেন, তারপর তিনি জিজ্ঞেস করলেন, তিনি তোমাদেরকে কি কি আদেশ করেন? আমি বললাম, তিনি আমাদেরকে নামায পড়তে, যাকাত দিতে, আত্মীয়তা ও ভ্রাতৃত্বাব বজায় রাখতে এবং নিষিদ্ধ কাজ বর্জন করে চলতে আদেশ করেন। তিনি বললেন, তুমি যা বলেছো তা যদি সত্য হয় তাহলে নিশ্চয়ই তিনি নবী। আমি জানতাম, তিনি আবির্ভূত হবেন; কিন্তু আমি এ ধারণা করিনি যে, তিনি তোমাদের মধ্য থেকে আবির্ভূত হবেন। যদি আমি বুঝতাম যে, আমি তাঁর কাছে পৌছতে পারবো তাহলে তাঁর সাথে সাক্ষাত করতাম আর যদি আমি তাঁর কাছে থাকতাম তাহলে তাঁর পা দু'খানি ধুয়ে দিতাম। আর তাঁর রাজত্ব আমার পায়ের নিচের জায়গা পর্যন্ত সম্প্রসারিত হবে। আবু সুফিয়ান বলেনঃ এরপর তিনি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর লিখিত পত্রখানা আনালেন এবং পাঠ করলেন। তাতে লেখা ছিলোঃ “বিসমিল্লাহির রাহমানির রাহীম। আল্লাহর রাসূল মুহাম্মাদের পক্ষ থেকে রোমের অধিপতি হিরাকলের নামে। যারা হেদায়াতের পথ অনুসরণ করে চলছে তাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক। অতঃপর আমি আপনাকে ইসলামের প্রতি আহ্বান জানাচ্ছি। ইসলাম গ্রহণ করুন-শান্তিতে থাকবেন। ইসলাম গ্রহণ করুন, আল্লাহ আপনাকে দ্বিগুণ পুরস্কার দান করবেন। আর যদি ইসলাম থেকে মুখ ফিরিয়ে নেন তাহলে কৃষক অর্থাৎ সকল প্রজ্ঞার গোনাহর দায়-দায়িত্ব আপনার ওপরই বর্তাবে। হে আহলে কিভাবগণ! এমন একটি কথার দিকে এগিয়ে আস যা আমাদের, তোমাদের সবার জন্য সমান। তা হলো, আমরা আল্লাহ ছাড়া কারো ‘ইবাদত’ বা দাসত্ব করবো না, তাঁর সাথে কোন কিছুকে শরীক করবো না, আমাদের একজন অন্যজনকে প্রভু বলে গ্রহণ করবে না। এর পরেও তারা যদি ফিরে যায় তাহলে তাদেরকে বলো যে, তোমরা সাক্ষী থেকে, আমরা ইসলামকে গ্রহণ করছি।” পত্র পাঠ শেষ হলে তার দরবারে হৈ চৈ শুরু হলো এবং নানা রকম কথা হতে থাকলো এবং আমাদেরকে বের করে দেয়া হলো। আবু সুফিয়ান বলেন, আমি তখন আমার সঙ্গীদেরকে বললামঃ আবু কাবশার পুত্রের ব্যাপারটা বেশ গুরুত্বপূর্ণ হয়ে উঠেছে। তাকে এখন বনী আসফারদের (রোমবাসী) বাদশাহও ভয় করছে। এরপর থেকে আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর ব্যাপারে এ দৃঢ়মত পোষণ করাভ্যম যে, তিনি খুব শীঘ্রই বিজয় লাভ করবেন। শেষ পর্যন্ত আল্লাহ আমাদেরই ইসলামে প্রবেশ করিয়ে দিলেন। যুহরী বর্ণনা করেছেন, এরপর হিরাকল তার একটি কক্ষে রোমের প্রধান ব্যক্তিবর্গকে ডেকে একত্রিত করে বললেনঃ হে রোমবাসীগণ! তোমরা কি স্থায়ী সফলতা ও হিদায়াত চাও? তোমরা কি তোমাদের রাষ্ট্রের স্থায়ীত্ব কামনা করো? (তাহলে সেদিকে এগিয়ে আস) এ কথা শোনারামাত্র সবাই পলায়নপর বন্য গাধার মতো প্রাণপণে দরজার দিকে ছুটে চললো; কিন্তু দরজার গোড়ায় পৌঁছে দেখলো তা আগেই বন্ধ করে দেয়া হয়েছে। এখন হিরাকল তাঁর দরবারের লোকদের বললেনঃ তাদেরকে ফিরিয়ে আন। তাদেরকে ডেকে নেয়া হলে তিনি বললেনঃ আমি আমার কথা দ্বারা তোমাদের ধর্ম-বিশ্বাস কতখানি মজবুত তা পরীক্ষা করলাম। তোমাদের নিকট আমি যা আশা করেছিলাম তা এই মাত্র দেখলাম। একথা শুনে সবাই তাকে সিঁজদা (কুর্শি) করলো এবং সন্তুষ্ট হলো। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৫৩)

সুদূত একনিষ্ঠ মুসলিম ছিলেন এবং তিনি অংশীবাদীগণের অন্তর্গত ছিলেন না।

৬৮. নিশ্চয়ই ঐ সব লোক ইবরাহীমের বেশি নিকটতম যারা তাঁর অনুগামী হয়েছেন আর এই নবী ও মু'মিনগণ আর আল্লাহ তা'আলা বিশ্বাসীগণের অভিভাবক।

৬৯. এবং কিতাবীগণের মধ্যে এক দলের বাসনা যে, তোমাদেরকে পথভ্রান্ত করে; কিন্তু তারা নিজেকে ব্যতীত বিপথগামী করে না অথচ তারা বুঝছেন।

৭০. হে আহলে কিতাব! তোমরা কেন আল্লাহর আয়াতসমূহের প্রতি অবিশ্বাস করছো? অথচ তোমরাই ওর সাক্ষী।

৭১. হে কিতাব ধারীরা! তোমরা কেন সত্যের সঙ্গে মিথ্যাকে মিলিয়ে নিচ্ছ? এবং সত্যকে গোপন করছ অথচ তোমরা তা অবগত আছ।

كَانَ حَنِيفًا مِّنْ قَبْلِهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٨﴾

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ
وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۗ وَاللَّهُ وَرِيُّ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٩﴾

وَدَّتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ
وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٧٠﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧١﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ
وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ ۖ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧٢﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহ আনহু) থেকে বর্ণিত, একজন লোক প্রথমে খ্রিস্টান ছিল। পরে সে ইসলাম গ্রহণ করে সূরা আল-বাকারা ও সূরা আলে ইমরান পড়ে শেষ করল এবং নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নির্দেশক্রমে ওহী লিখতে শুরু করল (অর্থাৎ ওহী লেখক নিযুক্ত হলো)। তারপর সে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট থেকে পালিয়ে গিয়ে আবার খ্রিস্টান হয়ে গেল এবং বলতে লাগল, আমি মুহাম্মাদকে যা লিখে দিতাম তাছাড়া আর কিছুই সে জানে না।

তারপর আল্লাহ তাকে মৃত্যুমুখে পতিত করলে খ্রিস্টানরা তাকে কবরস্থ করল; কিন্তু পরদিন সকাল বেলা দেখা গেল, ভূগর্ভ তাকে বাইরে ছুড়ে ফেলেছে। তখন খ্রিস্টানরা বলল, এটা মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ও তার অনুসারীদের কাজ। আমাদের এ লোকটি যেহেতু তাদের কাছ থেকে পালিয়ে এসেছিল তাই তারা একে কবর খুঁড়ে একে বাইরে ফেলে গিয়েছে। অতঃপর তারা তার জন্য আবার কবর খুঁড়লো এবং যতটা সম্ভব তা গভীর করল। (এবং তাকে দাফন করল।) পরদিন সকালে আবার দেখা গেল যে, ভূগর্ভ তাকে বাইরে ছুড়ে ফেলেছে। এবারেও খ্রিস্টানরা বলল, এটা মুহাম্মাদ ও তার সহচরদের কাজ। আমাদের এ লোকটি যেহেতু তাদের কাছ থেকে পালিয়ে এসেছিল, তা-ই তারা এর কবর খুঁড়ে একে বাইরে ফেলে গিয়েছে। এরপর তারা তার জন্য আবার কবর খুঁড়ল এবং যতদূর সম্ভব কবরটি গভীর করল। (এবং তাকে তাতে দাফন করল।) কিন্তু পরদিন সকালে দেখা গেল যে, ভূগর্ভ তাকে বাইরে নিক্ষেপ করেছে। তখন তারা বুঝতে পারল যে, এটা কোন মানুষের কাজ নয়। তাই তারা তাকে ওভাবেই ফেলে রাখল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৬১৭)

৭২. আর আহলে কিতাবের মধ্যে একদল এটাই বলে যেঃ বিশ্বাস স্থাপনকারীদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তৎপ্রতি পূর্বাঙ্কে বিশ্বাস স্থাপন কর এবং অপরাঙ্কে তা অস্বীকার কর— তাহলে তারা ফিরে যাবে।

৭৩. আর যারা তোমাদের ধ্বিনের অনুসরণ করে তাদের ব্যতীত বিশ্বাস করো না; তুমি বলঃ আল্লাহর পথই সুপথ— যা তোমাদেরকে প্রদান করা হয়েছে, তদ্রূপ অন্যকেও প্রদত্ত হতে পারে; অথবা যদি তোমার প্রভুর সম্বন্ধে তোমার সাথে বিতর্ক করে তবে তুমি বল অনুগ্রহ আল্লাহরই হাতে; তিনি যাকে ইচ্ছা দান করেন এবং আল্লাহ মহা অনুগ্রহশীল, মহাজ্ঞানী।

৭৪. তিনি যার প্রতি ইচ্ছা করেন স্বীয় করুণা নির্দিষ্ট করেন এবং আল্লাহ হচ্চেন অসীম অনুগ্রহের মালিক।

৭৫. কিতাবীদের মধ্যে এরূপ আছে যে, যদি তুমি তার নিকট পুঞ্জীভূত ধনরাশিও গচ্ছিত রেখে দাও, তবুও সে তা তোমার নিকট ফেরত দেবে এবং তাদের মধ্যে এরূপও আছে যে, যদি তুমি তার নিকট একটি 'দীনার'ও গচ্ছিত রাখ, তবে সে তাও তোমাকে ফেরত দেবে না; যে পর্যন্ত তুমি তার শিরোপরি দণ্ডায়মান থাক, কারণ তারা বলে যেঃ আমাদের উপর ঐ অশিক্ষিতদের কোন দায়-দায়িত্ব নেই এবং তারা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে, অথচ তারাও জানে।

وَقَالَتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمَنُوا بِالَّذِي
أُنزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجَهَ النَّهَارِ وَكَفَرُوا
أُخْرًا لَّعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلُوبُ الَّذِينَ
هُدَى اللَّهُ ۖ إِنَّ يُؤْتِي أَحَدًا مِّثْلَ مَا أُوتِيْتُمْ
أَوْ يُحَاجِّكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلُوبُ الَّذِينَ
الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَن إِنْ تَأْمَنَهُ بِقِطَارٍ يُؤَدِّةَ
إِلَيْكَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّن إِنْ تَأْمَنَهُ بِدِينَارٍ
لَّا يُؤَدِّةَ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمَّتْ عَلَيْهِ قَائِمًا
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمَمِ
سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

৭৬. হ্যাঁ, যারা স্বীয় অঙ্গীকার পূর্ণ করে ও সংযত হয়, আল্লাহ্‌ভীরু হয় তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ্‌ভীরুগণকে ভালবাসেন।

৭৭. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর অঙ্গীকার ও স্বীয় শপথ সামান্য মূল্যে বিক্রি করে, পরকালে তাদের কোনই অংশ নেই এবং আল্লাহ তাদের সাথে কথা বলবেন না ও কিয়ামত দিবসে তাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করবেন না, তাদেরকে পরিশুদ্ধ করবেন না এবং তাদের জন্যে যজ্ঞশাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

৭৮. আর তাদের মধ্যে নিশ্চয়ই একরূপ একদল আছে যারা নিজেদের জিহ্বা বাঁকা করে গ্রন্থ আবৃত্তি করে— যেন তোমরা ওটাকে গ্রন্থের অংশ মনে কর, অথচ ওটা গ্রন্থের অংশ নয় এবং তারা বলে যেঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে সমাগত, অথচ ওটা আল্লাহর নিকট হতে নয় এবং তারা আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা বলে ও তারা তা অবগত আছে, অর্থাৎ জেনে শুনেই মিথ্যা বলে।

৭৯. এটা কোন মানুষের পক্ষে উপযোগী নয় যে, আল্লাহ যাকে গ্রন্থ, প্রজ্ঞা ও নবুওয়াত দান করেন, তৎপরে সে মানবমণ্ডলীর মধ্যে বলেঃ তোমরা আল্লাহকে পরিত্যাগ করে আমার বান্দায় পরিণত হও; বরং সে বলবে তোমরা প্রভুরই ইবাদত কর, কারণ তোমরাই কিতাব শিক্ষা দান কর এবং ওটা পাঠ করে থাক।

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ ۖ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُؤْنَ أَلْسِنَتَهُم بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ ۖ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنَّبُوءَةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّنِي بِنَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾

৮০. আর তিনি আদেশ করেন না যে, তোমরা ফেরেশতাগণ ও নবীগণকে প্রতিপালকরূপে গ্রহণ কর; তোমরা আত্মসমর্পণকারী হবার পর তিনি কি তোমাদেরকে বিশ্বাসদ্রোহীতার আদেশ করবেন? ১

৮১. এবং আল্লাহ যখন নবীগণের অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলেন যে, আমি তোমাদেরকে গ্রহণ ও দৃঢ়প্রজ্ঞা যা দান করলাম তারপর যখন একজন রাসূল আগমন করবেন, যিনি তোমাদের মাঝে বিদ্যমান কিতাবের সত্যতা স্বীকার করবেন। তখন তোমরা অবশ্যই তার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করবে এবং তার সাহায্যকারী হবে; তিনি আরও বলেছিলেনঃ তোমরা কি অঙ্গীকার গ্রহণ করলে এবং এর দায়িত্বের বোঝা গ্রহণ করলে? তারা বলেছিলঃ আমরা স্বীকার করলাম, তিনি বললেনঃ তবে তোমরা সাক্ষী থাক এবং আমিও তোমাদের সাথে সাক্ষীগণের অন্তর্ভুক্ত রইলাম।

৮২. অতঃপর এর পরে যারা ফিরে যাবে, তারাই দুষ্কার্যকারী।

৮৩. তবে কি তারা আল্লাহর (মনোনীত) দ্বীন ব্যতীত অন্য কিছু কামনা করে? অথচ নভোমণ্ডল ও

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا
إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالْكَفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ٨٠

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْنَاكُمْ
مِّنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ
وَآخَذْتُمْ عَلَىٰ ذُلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا أَقْرَرْنَا قَالَ
فَاشْهَدُوا وَإِنَّا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ٨١

فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ٨٢

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ٨٣

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) কে মিশরে বলতে শুনেছেন যে, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে বলতে শুনেছি যে, নাসারারা যেভাবে ইবনে মারইয়াম (ঈসা আলাইহিস্‌সালামের)-এর প্রশংসা করে। (তাকে আল্লাহর সান্তান বলেছে) তোমরা এভাবে আমার অতিরিক্ত প্রশংসা করিও না; বরং নিশ্চয়ই আমি তাঁর বান্দা সূতরাং তোমরা আমাকে আল্লাহর বান্দা এবং তাঁর রাসূল বলবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪৫)

ভূমণ্ডলে যা কিছু আছে ইচ্ছা ও অনিচ্ছাক্রমে সবাই তাঁর উদ্দেশ্যে আত্মসমর্পণ করেছে এবং তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তিত হবে।

৮৪. তুমি বলঃ আমরা আল্লাহর প্রতি এবং যা আমাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে এবং যা ইবরাহীম, ইসমাঈল, ইসহাক, ইয়াকুব ও তাদের বংশধরগণের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে এবং যা মূসা, ঈসা ও নবীগণ তাদের প্রতিপালক কর্তৃক প্রদত্ত হয়েছে তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন করলাম, আমরা তাদের মধ্যে কাউকেও পার্থক্য জ্ঞান করি না এবং আমরা তাঁরই প্রতি আত্মসমর্পণকারী।

৮৫. আর যে কেউ ইসলাম ব্যতীত অন্য জীবন ব্যবস্থা অন্বেষণ করে তা কখনই তার নিকট হতে পরিগৃহীত হবে না অতএব পরকালে সে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।^১

قُلْ أَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ
وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ رَبِّهِمْ
لَا نَفْرَقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٥﴾

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ
مِنْهُ ۗ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾

১। (ক) আবু জামরাহ থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা)-এর সাথে বসতাম। তিনি আমাকে তার আসনে বসাতেন। তিনি একবার আমাকে বললেন, 'তুমি আমার কাছে থাক। আমি তোমাকে আমার সম্পদ থেকে একটা অংশ দেব।' আমি তখন তার কাছে দু'মাস অবস্থান করলাম। তারপর তিনি বললেন, যখন 'আবদুল কায়স গোত্রের দূত নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে এল তখন তিনি জিজ্ঞেস করলেন, 'তোমরা কোন্ গোত্রের লোক? অথবা কোন্ দূত?' তারা বলল, রবী'আ গোত্রের। তিনি বললেন, ঐ গোত্রের অথবা দূতের শুভাগমন হোক যারা বিনা লাঞ্ছনায় ও বিনা অনুতাপে এসেছে। তারা বলল, 'হে আল্লাহর রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমরা সম্মানিত মাস ছাড়া (জুলকা'দা, যিল হিজ্জাহ, মুহাররম ও রজব) অন্য কোন সময় আপনার নিকট আসতে পারি না। কারণ আমাদের ও আপনার মাঝে এলাকায় কাকের মুদার গোত্র বাস করে। কাজেই আমাদেরকে আপনি সত্য ও অসত্যের মধ্যে পার্থক্য সৃষ্টিকারী কোন হুকুম দিন। আমরা তা অন্যদেরকে জানিয়ে দেব। আর তার মাধ্যমে আমরা যেন বেহেশতে যেতে পারি।' তারা রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে পানীয় দ্রাব্যাদি সম্পর্কেও জিজ্ঞেস করল। তিনি তাদেরকে চারটি বিষয়ের হুকুম দিলেন এবং চারটি বিষয়ে নিষেধ করলেন। তিনি তাদেরকে এক আল্লাহর প্রতি ঈমান রাখার আদেশ দিলেন। তিনি তাদেরকে জিজ্ঞেস করলেন, 'তোমরা কি জান এক আল্লাহর প্রতি ঈমানটা কি?' তারা বলল, 'আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভাল জানেন।' তিনি বললেনঃ এই সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহু ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বুদ নেই আর

৮৬. কিরূপে আল্লাহ সেই সম্প্রদায়কে পথ-প্রদর্শন করবেন যারা বিশ্বাস স্থাপনের পর অবিশ্বাসী হয়েছে এবং তারা রাসূলের সত্যতা বিষয়ে সাক্ষ্য প্রদান করেছিল এবং তাদের নিকট প্রকাশ্য নিদর্শনসমূহ এসেছিল, আর আল্লাহ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে পথ-প্রদর্শন করেন না।

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ
وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٦﴾

মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর রাসূল। আর নামায কায়েম করা, যাকাত দেয়া এবং রমযানে রোযা রাখা। আর তোমরা গণীমতের মালের এক-পঞ্চমাংশ দান করবে। আর তিনি সবুজ কলসী, শুকনা লাউয়ের খোল, খেজুর কাণ্ডের কাঠপাত্র এবং আলকাতরা মাখান বাসন-এই চারটি (জিনিসের ব্যবহার) নিষেধ করলেন। তারপর তিনি বললেনঃ এসব কথা তোমরা মনে রেখে অন্য সকলকে জানিয়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৫১)

টীকাঃ এগুলো ছিল মদের পাত্র। মদ সংরক্ষণ ও পানের জন্য এ পাত্রগুলো ব্যবহার করা হতো। এ পাত্রগুলো হারাম করার কারণস্বরূপ বলা যায়, প্রথমতঃ মদ হারাম হবার পর তখন বেশী দিন অতিক্রান্ত হয়নি, তাই এ পাত্রগুলো দেখলে আবার মদের স্মৃতি জেগে ওঠার সম্ভাবনা ছিল। ফলে মদ পানের আকাঙ্ক্ষা জেগে ওঠাও অস্বাভাবিক ছিল না। দ্বিতীয়তঃ তখনো পর্যন্ত এ পাত্রগুলোতে মদের কিছুটা প্রভাব মিশ্রিত থাকার অসম্ভব ছিল না।

(খ) আবু জামরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ আমি ইবনে আব্বাস এবং অন্যান্য লোকদের মধ্যে দোভাষীর কাজ করছিলাম। তখন ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বললেন, আবদুল কাইস গোত্রের লোকেরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) নিকট আসলে তিনি বললেন কোন দূত বা কোন কাওম তারা বলল, 'রবী'আ। তিনি বললেন, "শুভাগমন হোক এই গোত্রের বা এই দূতের যারা (যুদ্ধে পরাস্ত হয়ে নয়; বরং স্বেচ্ছায় ইসলাম গ্রহণ করায়) লাঞ্ছিত নয়, অনুতপ্তও নয়।" তারা বলল, আমরা দূর থেকে সফর করে আপনার কাছে আসি। আর আমাদের ও আপনার মাঝপথে রয়েছে এই কাফের গোত্র 'মুদার'। আর আমরা আপনার কাছে পবিত্র মাস ছাড়া (অন্য সময়) আসতে পারি না। কাজেই আমাদেরকে এমন কাজের হুকুম দিন, যা আমাদের অন্যান্য লোকদেরকে জানাতে পারি। এর মাধ্যমে আমরা বেহেশতে যেতে পারব। তিনি তাদেরকে একমাত্র আল্লাহ্র প্রতি ঈমান রাখার হুকুম দিয়ে বললেন, তোমরা কি জান একমাত্র আল্লাহ্র প্রতি ঈমানটা কি? তারা বলল, 'আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভাল জানেন।' তিনি বললেন, 'এই সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহ্ ছাড়া কোন সত্য ইলাহ বা মা'বুদ নেই এবং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্র রাসূল। আর নামায আদায় করা, যাকাত দেয়া এবং রমযানের রোযা রাখার (হুকুম দিলেন)। এ ছাড়া গণীমতের মালের (যুদ্ধ লব্ধ সামগ্রী) এক-পঞ্চমাংশ দান করবে। আর তিনি লাউয়ের শুকনা খোল, সবুজ কলসী ও আলকাতরা মাখান বাসন (ব্যবহার করতে) নিষেধ করলেন।

বর্ণনাকারী 'ও' বা বলেন, (বর্ণনাকারী) আবু জামরা কখনও কাঠপাত্রের কথা বলেছেন আবার কখনও 'মুযাফকাত' শব্দের স্থলে 'মুকাইয়্যার' শব্দ বলেছেন।

রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন যে, তোমরা এ বাণী সংরক্ষণ কর এবং তোমাদের অন্যান্য লোকদেরকে জানিয়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৮৭)

(গ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ একদিন নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) লোকদের সামনে বসেছিলেন। এমন সময় একজন লোক এসে তাঁকে জিজ্ঞেস করল, 'ঈমান কি?' তিনি বললেন, ঈমান এই যে, তুমি আল্লাহ্, তাঁর ফেরেশতা, (পরকালে) তাঁর সাথে সাক্ষাত ও তাঁর

৮৭. ওরাই— যাদের প্রতিফল এই যে, নিশ্চয়ই তাদের উপর আল্লাহর, তাঁর ফেরেশতাগণের ও মানবকুলের অভিসম্পাত।

أُولَئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾

৮৮. তারা তন্মধ্যে সদা অবস্থান করবে— তাদের উপর হতে শাস্তি প্রশমিত হবে না এবং তাদেরকে বিরাম দেয়া যাবে না।

خَالِدِينَ فِيهَا ۗ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنظَرُونَ ﴿٨٨﴾

৮৯. কিন্তু যারা এরপর তওবা করেছে ও সংশোধিত হয়েছে তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۗ
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٨٩﴾

৯০. নিশ্চয়ই যারা বিশ্বাস স্থাপনের পর অবিশ্বাসী হয়েছে, তৎপরে অবিশ্বাসে তারা আরো বেড়ে গেছে। তাদের ক্ষমা-প্রার্থনা কখনই পরিগৃহীত হবে না এবং তারা ই পথভ্রষ্ট।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا
لَنْ نُقْبَلَ تَوْبَتَهُمْ ۗ وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٠﴾

রাসূলগণের প্রতি বিশ্বাস রাখবে। মরণের পর আবার জীবিত হতে হবে, তাও বিশ্বাস করবে। লোকটি জিজ্ঞেস করল, 'ইসলাম কি?' তিনি বললেন, ইসলাম এই যে, তুমি আল্লাহর ইবাদত করতে থাকবে এবং তাঁর সাথে (কাউকে) শরীক করবে না, নামায কায়ম করবে, নির্ধারিত ফরয যাকাত দেবে এবং রমযানে রোযা রাখবে। সে জিজ্ঞেস করল, ইহসান কি? তিনি বললেন, (ইহসান এই যে) তুমি (এমনভাবে আল্লাহর) ইবাদত করবে যেন তাঁকে দেখছ; যদি তাকে না দেখ, নিশ্চয় তিনি তোমাকে দেখছেন (বলে অনুভব করবে।) সে জিজ্ঞেস করল, 'কিয়ামত কখন হবে?' তিনি বললেন, এ ব্যাপারে যাকে প্রশ্ন করা হয়েছে তিনি প্রশ্নকারীর চেয়ে বেশি জানেন না। তবে আমি তার (কিয়ামতের) শর্তগুলো (লক্ষণ) বলে দিচ্ছি, 'যখন বাঁদী তার মনিবকে প্রসব করবে এবং কাল উটের রাখালরা যখন দালান কোঠা নিয়ে পরস্পর গর্ব করবে। যে পাঁচটি জিনিসের জ্ঞান একমাত্র আল্লাহ রাখেন, কিয়ামতের জ্ঞান তারই অন্তর্ভুক্ত। এরপর নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এই আয়াত পড়লেনঃ "আল্লাহর নিকটই কিয়ামতের জ্ঞান রয়েছে। (আর তিনি বৃষ্টি বর্ষণ করেন) এবং মাতৃগর্ভে কি আছে তা তিনিই জানেন। কোন জীবই আগামীকাল কী উপার্জন করবে তা জানে না এবং কোন জমিনে (স্থানে) সে মরবে তাও জানে না। আল্লাহ সব জানেন ও খবর রাখেন।" (সূরা লোকমানঃ ৩৪)

এরপর লোকটি চলে গেল। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ তোমরা তাকে ফিরিয়ে আন। কিন্তু সাহাবীগণ দেখতে পেলেন না। তখন তিনি বললেনঃ 'ইনি (ছিলেন) জিবরীল (আলাইহিস্ সালাম); লোকদেরকে তাদের দ্বীন শিক্ষা দিতে এসেছিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫০)

৯১. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে ও অবিশ্বাসী অবস্থায় মৃত্যুবরণ করেছে, ফলতঃ তাদের কারও নিকট হতে পৃথিবী পরিপূর্ণ স্বর্ণও নেয়া হবেনা— যদিও সে স্বীয় মুক্তির বিনিময়ে তা প্রদান করে; ওদেরই জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে এবং ওদের জন্যে কোনই সাহায্যকারী নেই।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا فَلَنْ يُّقْبَلَ
 مِنْ أَحَدِهِمْ مِلَّةٌ مِنَ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَى
 بِهِ ط ۙ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ
 نَّاصِرِينَ ٩١

১। কাতাদা থেকে বর্ণিত তিনি বলেন আমাদেরকে হাদীস বর্ণনা করেছেন আনাস বিন মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) নিশ্চয়ই আল্লাহর নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, কিয়ামতের দিন কাফেরকে উপস্থিত করে বলা হবে যে, যদি তোমার নিকট পৃথিবী সমপরিমাণ স্বর্ণ থাকে তাহলে কি তুমি এর বিনিময়ে এই শাস্তি থেকে মুক্তি কামনা করবে? তখন সে বলবে হা। তাকে বলা হবে যে, তোমার নিকট এর চেয়েও সহজ জিনিস চাওয়া হয়েছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫৩৮)

৯২. তোমরা যা ভালবাস, তা হতে ব্যয় না করা পর্যন্ত তোমরা কখনই কল্যাণ লাভ করতে পারবে না এবং তোমরা যা কিছুই ব্যয় কর আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন।

৯৩. তাওরাত অবতরণের পূর্বে ইসরাঈল নিজের জন্যে যা অবৈধ করেছিল তদ্ব্যতীত সর্ববিধ খাদ্য ইসরাঈল বংশীয়গণের জন্যে বৈধ ছিল; তুমি বলঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে তাওরাত আনয়ন কর তৎপরে ওটা পাঠ কর।

৯৪. অনন্তর ও যদি কেউ এরপর আল্লাহর প্রতি অসত্যারোপ করে তবে তারাই অত্যাচারী।

৯৫. তুমি বলঃ আল্লাহ সত্য বলেছেন; অতএব তোমরা ইবরাহীমের আদর্শের নিবিড়ভাবে অনুসরণ কর এবং তিনি অংশী-বাদীগণের অন্তর্গত ছিলেন না।

৯৬. নিশ্চয়ই সর্বপ্রথম গৃহ, যা মানবমণ্ডলীর জন্যে নির্দিষ্ট (প্রতিষ্ঠা) করা হয়েছে, তা ঐ ঘর, যা মক্কায় অবস্থিত; ওটা বরকতময় এবং সমস্ত বিশ্ববাসীর জন্যে পথ-প্রদর্শক।

৯৭. তার মধ্যে প্রকাশ্য নিদর্শনসমূহ বিদ্যমান রয়েছে, মাকাম-ই-ইবরাহীম উক্ত নিদর্শনসমূহের অন্যতম। আর যে ওর মধ্যে প্রবেশ করে সে নিরাপদ হয়ে যায় এবং আল্লাহর উদ্দেশ্যে এ গৃহের হজ্জ করা সেসব মানুষের অবশ্য কর্তব্য যারা শারিরীক

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ ۗ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتُوهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٣﴾

فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩٤﴾

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۗ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٥﴾

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبْرَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ ﴿٩٦﴾

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَّقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۗ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۗ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ عَنِي ۗ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٩٧﴾

ও আর্থিকভাবে ঐ পথ অতিক্রমে সমর্থ এবং যদি কেউ অস্বীকার করে তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ সমগ্র বিশ্ববাসী হতে মুখাপেক্ষিহীন।^১

৯৮. তুমি বলঃ হে কিতাবধারীরা! তোমরা কেন আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি অবিশ্বাস করছো? এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ সে বিষয়ে সাক্ষী আছেন।

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابَ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ
وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾

৯৯. তুমি বলঃ হে ব্রহ্মপ্রাপ্তগণ! যে ব্যক্তি বিশ্বাস স্থাপন করেছে, তার মধ্যে কুটিলতার কামনায় কেন তোমরা তাকে আল্লাহর পথে প্রতিরোধ করছো অথচ তোমরাই সাক্ষী রয়েছে? আর তোমরা যা করছো সে বিষয়ে আল্লাহ অমনোযোগী নন।

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابَ لِمَ تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ
اللَّهِ مَن آمَنَ تَبِعُوا هَٰذَا عَٰجِبًا ۖ وَأَنْتُمْ شَٰهَدَآءٌ
وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾

১০০. হে মু'মিনগণ! যারা ব্রহ্ম প্রদত্ত হয়েছে, যদি তোমরা তাদের এক দলের অনুসরণ কর, তবে তারা তোমাদেরকে তোমাদের ঈমান আনয়নের পর কাফির বানিয়ে দেবে।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا فَرِيقًا مِّن
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ
كُفْرِينَ ﴿١٠٠﴾

১০১. আর কিরূপে তোমরা অবিশ্বাস করতে পার, যখন আল্লাহর নিদর্শনাবলী তোমাদের সামনে পঠিত হয় এবং তোমাদের মধ্যে তাঁর রাসূল বিদ্যমান রয়েছে? আর যে কেউ

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُثَلِّىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتِ اللَّهِ
وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۗ وَمَنْ يَعْتَصِمْ بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٠١﴾

১। আবদুল্লাহ বিন আমর (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বানী ইসরাইলরা বাহাশুর দলে বিভক্ত হয়ে পড়েছিল আর আমার উম্মত তিহাশুর দলে বিভক্ত হবে। তাদের মধ্যে একটি দল ছাড়া আর সব দলই জাহান্নামী হবে। সাহাবাগণ জিজ্ঞাসা করলেনঃ সেই একটি দল কারা- হে আল্লাহর রাসূল! তিনি বললেনঃ “তারা হচ্ছে সেই লোক যারা অনুসরণ করবে আমার ও সাহাবাদের আদর্শ।” (তিরমিযী, হাদীস নং ২৬৪১ পৃঃ ৬০০)

আল্লাহকে দৃঢ়রূপে ধারণ করে, তবে নিশ্চয়ই সে সরল পথে পরিচালিত হবে।

১০২. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা প্রকৃত ভীতি সহকারে আল্লাহকে ভয় কর এবং তোমরা মুসলমান হওয়া ব্যতীত মৃত্যুবরণ করো না।

১০৩. আর তোমরা একযোগে আল্লাহর রজ্জুকে সুদৃঢ়রূপে ধারণ কর ও বিভক্ত হয়ে যেয়ো না এবং তোমাদের প্রতি আল্লাহর যে নেয়ামত রয়েছে তা স্মরণ কর, যখন তোমরা পরস্পর শত্রু ছিলে তখন তিনিই তোমাদের অন্তঃকরণে প্রীতি স্থাপন করেছিলেন, তৎপরে তোমরা তাঁর অনুগ্রহে ভ্রাতৃত্বে আবদ্ধ হলে এবং তোমরা অগ্নিকুণ্ডের নিকটে ছিলে অনন্তর তিনিই তোমাদেরকে ওটা হতে উদ্ধার করেছেন; এরূপে আল্লাহ তোমাদের জন্যে স্বীয় নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করেন যেন তোমরা সুপথ প্রাপ্ত হও।

১০৪. এবং তোমাদের মধ্যে এরূপ এক সম্প্রদায় হওয়া উচিত— যারা কল্যাণের দিকে আহ্বান করবে এবং ভাল কাজের আদেশ করবে ও মন্দ কাজের নিষেধ করবে আর তারা সুফল প্রাপ্ত হবে।

১০৫. এবং তাদের সদৃশ হয়ো না, যাদের নিকট প্রকাশ্য প্রমাণ আসার পর তারা বিচ্ছিন্ন হয়েছে ও বিরোধ করেছে এবং তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর শাস্তি।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ
وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٠٢﴾

وَأَعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا
وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً
فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا
وَكُنْتُمْ عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾

وَلَتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُقْتَدِرُونَ ﴿١٠٤﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾

১০৬. সেদিন কতকগুলো মুখমণ্ডল হবে উজ্জ্বল সাদা বর্ণের এবং কতগুলো মুখমণ্ডল হবে কালো বর্ণের; অতঃপর যাদের মুখমণ্ডল কালো বর্ণের হবে। (তাদেরকে বলা হবে) তবে কি তোমরা বিশ্বাস স্থাপনের পর অবিশ্বাসী হয়েছো? অতএব, তোমরা শাস্তির আশ্বাদ গ্রহণ কর, যেহেতু তোমরা অবিশ্বাস করেছিলে।

১০৭. আর যাদের মুখমণ্ডল শুভ উজ্জ্বল (সাদা) হবে, তারা আল্লাহর করুণার অন্তর্ভুক্ত; তারা তন্মধ্যে সাদা অবস্থান করবে।

১০৮. আল্লাহর এ সকল নিদর্শন— যা আমি তোমার প্রতি সত্যসহ আবৃত্তি করছি এবং আল্লাহ বিশ্বজগতের প্রতি অত্যাচারের ইচ্ছে করেন না।

১০৯. আর যা নভোমণ্ডলের মধ্যে আছে ও যা ভূমণ্ডলের মধ্যে রয়েছে তা আল্লাহর জন্যে এবং আল্লাহর দিকে সবকিছুই প্রত্যাবর্তিত হয়।

১১০. তোমরাই মানবমঞ্জলীর জন্যে শ্রেষ্ঠতম সম্প্রদায়রূপে সমুদ্ভূত হয়েছ, তোমরা ভাল কাজের আদেশ করবে ও মন্দ কাজের নিষেধ করবে এবং আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর; আর যদি গ্রন্থ প্রাপ্তগণ বিশ্বাস স্থাপন করতো, তবে অবশ্যই তাদের জন্যে মঙ্গল হতো; তাদের মধ্যে কেউ কেউ তো মু'মিন এবং তাদের

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ
اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ فَآكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ
اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٧﴾

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالحَقِّ ط وَمَا اللَّهُ
يُرِيدُ ظَلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط وَاِلَى اللَّهِ
تُرْجَعُ الْاُمُورُ ﴿١٠٩﴾

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ط
وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ط مِنْهُمْ
الْمُؤْمِنُونَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿١١٠﴾

অধিকাংশই দুষ্কার্যকারী ৷

১১১. দুঃখ প্রদান ব্যতীত তারা তোমাদের কোন অনিষ্ট করতে পারবে না; আর যদি তারা তোমাদের সাথে সংগ্রাম করে, তবে তারা তোমাদেরকে পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে; অতঃপর তাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

১১২. আল্লাহর প্রতিশ্রুতি ও মানুষের প্রতিশ্রুতি (তাদের নিরাপত্তার ব্যাপারে) ব্যতীত তারা যেখানেই অবস্থান করুক না কেন, লাঞ্ছনায় আক্রান্ত হবে— আল্লাহর কোপে নিপতিত হবে এবং দারিদ্র দ্বারা আক্রান্ত হবে; এটা এ কারণে যে, তারা আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি অবিশ্বাস করেছিল এবং নবীগণকে অন্যায়ভাবে হত্যা করেছিল; এটা এ জন্য যে, তারা বিরুদ্ধাচরণ করেছিল ও সীমা অতিক্রম করেছিল।

১১৩. তারা সকলে সমান নয়; আহলে কিতাবের মধ্যে এক সুপ্রতিষ্ঠিত সম্প্রদায় রয়েছে যারা রাত্রিকালীন আল্লাহর আয়াতসমূহ পাঠ করে এবং সিজদা করে থাকে।

لَنْ يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى ط وَإِنْ يُقَاتِلُوكُمْ
يُؤَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ فَتُحَرِّمُونَ ۝

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا تَفَقَّهُوا إِلَّا بِحَبْلٍ
مِّنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَاءُ وَبِغَضِبِ
مِّنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ط ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَانُوا يُكْفَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ
الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقِّ ط ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ ۝

لَيْسُوا سَوَاءً ط مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ
يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ أَنْاءً الْبَيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ۝

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আল্লাহ্ বলেনঃ “তোমরাই সর্বোত্তম জাতি যাদের মানুষের কল্যাণ কামনায় উদ্ভব ঘটানো হয়েছে।” এই আয়াতের তাফসীরে তিনি বলেনঃ মানুষের মধ্যে সর্বোত্তম মানুষ তারাই যারা মানুষকে কোন জিহাদের ময়দান থেকে বন্দী করে নিয়ে আসে, এমনকি ঐ বন্দী লোকগুলো পরে ইসলাম গ্রহণ করে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৫৭)

(খ) আল্লাহ্ পাক এমন জাতির প্রতি বিস্মিত হন, যারা জিজিরের (শিকলের) সাথে বেহেশতে প্রবেশ করে। [অর্থাৎ বন্দী অবস্থায় ইসলাম গ্রহণ করে।] (বুখারী, হাদীস নং ৩০১০)

১১৪. তারা আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস করে এবং ভাল কাজের আদেশ ও মন্দ কাজের নিষেধ করে এবং সৎকার্যসমূহে তৎপর থাকে, আর তারাই সৎকর্মশীলগণের অন্তর্ভুক্ত।

১১৫. আর তারা যে সৎকার্য করবে, ফলতঃ তা কখনও অস্বীকার করা হবে না এবং আল্লাহ মুত্তাকীদের সম্পর্কে পরিজ্ঞাত আছেন।

১১৬. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে তাদের ধনরাশি, সন্তান-সন্ততি আল্লাহর নিকট কিছুমাত্র ফলপ্রদ হবে না এবং তারাই অগ্নির অধিবাসী, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

১১৭. তারা পার্থিব জীবনে যা ব্যয় করে তার দৃষ্টান্ত হিম শীতল বায়ুর অনুরূপ, যারা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করেছে ওটা সে সকল সম্প্রদায়ের শস্য ক্ষেতে নিপতিত হয় এবং তা বিধ্বস্ত করে। আর আল্লাহ তাদের প্রতি অত্যাচার করেননি বরং তারাই স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করেছে।

১১৮. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা নিজেদের ব্যতীরেকে অন্য কাউকে মিত্ররূপে গ্রহণ করো না— তারা তোমাদেরকে ক্ষতিগ্রস্ত করতে সংকুচিত হবে না এবং তোমরা যাতে বিপন্ন হও, তারা তাই কামনা করে; বস্তুতঃ তাদের মুখ হতেই শক্রতা

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٤﴾

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ط وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكْتَهُ ط وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنِ أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بَطَانَةً مِّنْ دُونِكُمْ لَا يَأْتُونَكُمْ خَبْرًا ط وُدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ؕ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ؕ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ

প্রকাশিত হয় এবং তাদের অন্তর যা গোপন করে তা গুরুতর; নিশ্চয়ই আমি তোমাদের জন্যে নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করছি, যেন তোমরা বুঝতে পার।

১১৯. সাবধান হও— তোমরাই তাদেরকে ভালবাস, অথচ তারা তোমাদেরকে ভালবাসে না এবং তোমরা সমস্ত গ্রন্থই বিশ্বাস কর; আর তারা যখন তোমাদের সাথে মিলিত হয় তখন বলেঃ আমরা বিশ্বাস স্থাপন করেছি এবং যখন তোমাদের হতে পৃথক হয়ে যায়, তখন তোমাদের প্রতি আক্রোশে অঙ্গুলিসমূহ দংশন করে; তুমি বলঃ তোমরা নিজেদের আক্রোশে মরে যাও! নিশ্চয়ই আল্লাহ অন্তরের কথা পরিজ্ঞাত আছেন।

১২০. যদি তোমাদেরকে কল্যাণ স্পর্শ করে তবে তারা অসন্তুষ্ট হয়; আর যদি তোমাদের অমঙ্গল উপস্থিত হয়, তারা আনন্দিত হয়ে থাকে এবং যদি তোমরা ধৈর্যধারণ কর ও সংযমী হও, তবে তাদের চক্রান্ত তোমাদের কোনই ক্ষতি করতে পারবে না; তারা যা করে নিশ্চয়ই আল্লাহ তার পরিবেষ্টনকারী।

১২১. যখন তুমি বিশ্বাসীদেরকে যুদ্ধার্থে যথাস্থানে সংস্থাপিত করবার জন্যে প্রভাতে স্বীয় পরিজন হতে বের হয়েছিল এবং আল্লাহ শ্রবণকারী মহাজ্ঞানী।

১২২. যখন তোমাদের দু'দল ভীরুতা প্রকাশের সংকল্প করেছিল এবং আল্লাহ সে দলদ্বয়ের পৃষ্ঠপোষক

لَنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٩﴾

هَآنَتُمْ أَوْلَآءَ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ
بِالْكِتَابِ كُلِّهِ ؕ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا ؕ وَإِذَا خَلَوْا
عَضُّوْا عَلَيْكُمْ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ط قُلْ مُؤْتُوا
بِعَيْظِكُمْ ط إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٢٠﴾

إِنْ تَمَسَّسَكُمْ حَسَنَةٌ سَوَّاهُمْ ز وَإِنْ نُصِبَكُمْ
سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا ط وَإِنْ تُصِبرُوا وَتَتَّقُوا
لَا يُضِرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ط إِنَّ اللَّهَ بِمَا
يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢١﴾

وَإِذْ عَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ
مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ط وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٢﴾

إِذْ هَبَّتْ ظَلْفَيْتَنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا ؕ وَاللَّهُ
وَلِيُّهُمَا ط وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٣﴾

ছিলেন; এবং মু'মিনগণ যেন আল্লাহর উপরই নির্ভর করে থাকে।

১২৩. আর নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদেরকে বদরে সাহায্য করেছিলেন যখন তোমরা দুর্বল ছিলে; অতএব তোমরা আল্লাহকে ভয় কর যেন তোমরা কৃতজ্ঞ হও।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾

১২৪. যখন মু'মিনদেরকে বলছিলে: এটা কি তোমাদের পক্ষে যথেষ্ট নয় যে, তোমাদের প্রতিপালক তিন হাজার ফেরেশতা প্রেরণ করে তোমাদেরকে সাহায্য করবেন?

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُنَادَكُمُ
رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنَزَّلِينَ ﴿١٢٤﴾

১২৫. বরং যদি তোমরা ধৈর্যধারণ কর ও সংযমী হও এবং তারা যদি স্বেচ্ছায় তোমাদের উপর নিপতিত হয়, তবে তোমাদের প্রতিপালক পাঁচ সহস্র বিশিষ্ট ফেরেশতা দ্বারা তোমাদের সাহায্য করবেন।

بَلَىٰ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فُورِهِمْ
هَذَا يُنَادِكُمْ بِخَمْسَةِ آفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ
مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾

১২৬. আর আল্লাহ এ সাহায্য শুধু এ জন্যেই করেছেন যেন তোমাদের জন্যে সুসংবাদ হয় এবং যেন তোমাদের অন্তরে শান্তি আসে আর সাহায্য শুধু আল্লাহর পক্ষ হতেই হয়ে থাকে, যিনি অতীব সম্মানী, প্রজ্ঞাময়।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ
قُلُوبُكُم بِهِ ط وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾

১২৭. যারা অবিশ্বাসী হয়েছে, তিনি এক্রূপে তাদের একাংশকে কর্তিত করেন অথবা তাদেরকে লাঞ্ছিত করেন, যাতে তারা অকৃতকার্যতা সহকারে ফিরে যায়। (যুদ্ধের ময়দান হতে)।

لَيَقْطَعَنَّ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتُهُمْ
فَيَنْقَبِئُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾

১২৮. এ কার্যে তোমার কোনই কর্তৃত্ব নেই যে, তিনি তাদেরকে ক্ষমা করেন অথবা শাস্তি প্রদান করেন; পরন্তু নিশ্চয়ই তারা অত্যাচারী।

১২৯. আর নভোমণ্ডলে যা রয়েছে ও ভূমণ্ডলে যা আছে তা আল্লাহরই; তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি প্রদান করেন এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

১৩০. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা দ্বিগুণের উপর দ্বিগুণ সুদ^১ (চক্র বৃদ্ধিহারে) ভক্ষণ করো না এবং আল্লাহকে ভয় কর যেন তোমরা সুফল প্রাপ্ত হও।

১৩১. আর তোমরা সেই জাহান্নামের ভয় কর, যা অবিশ্বাসীদের জন্য প্রস্তুত রাখা হয়েছে।

১৩২. আর আল্লাহ ও রাসূলের আনুগত্য স্বীকার কর যেন তোমরা করুণা প্রাপ্ত হও।

১৩৩. তোমরা স্বীয় প্রতিপালকের ক্ষমা ও জান্নাতের দিকে ধাবিত হও, যার প্রসারতা ও বিস্তৃতি নভোমণ্ডল ও ভূমণ্ডল সদৃশ, ওটা আল্লাহ ভীরুদের জন্যে নির্মিত হয়েছে।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط يَغْفِرُ
لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ط وَاللَّهُ
عَفُوٌّ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْا الرِّبٰوَاۤ اَضْعَافًا
مُّضَاعَفَةً ۙ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ أُعِدَّتْ لِلْكَٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾

وَاطِيعُوْا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

وَسَارِعُوْا اِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ لَا تُعَدُّ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾

১। আবু হুরাইরা (রাবিআল্লাহ আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা ঈমান ধ্বংসকারী সাতটি বিষয় হ'তে বেচে থাকবে। সাহাবাগণ বললেনঃ হে আল্লাহর রাসূল! সেই বিষয়গুলি কি? তিনি বললেনঃ (১) আল্লাহর সাথে শিরক করা, (২) যাদু করা, (৩) আল্লাহর যথার্থ কারণ ব্যতীত যাকে হত্যা করা নিষিদ্ধ করেছেন তাকে হত্যা করা, (৪) সুদ খাওয়া, (৫) (অন্যায় ভাবে) ইয়াত্তীমের সম্পদ খাওয়া, (৬) যুদ্ধ চলাকালে জেহাদের ময়দান হতে পলায়ন করা, (৭) সত্য-সাধনী মুসলমান রমনীর ওপর ব্যভিচারের মিথ্যারোপ করা, যে কখনও তা কল্পনাও করেনা। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৬৬)

১৩৪. যারা স্বচ্ছলতা ও অভাবের মধ্যে ব্যস্ত করে এবং ক্রোধসংবরণ করে ও মানবদেরকে ক্ষমা করে; আর আল্লাহ সৎকর্মশীলদেরকে ভালবাসেন।

الَّذِينَ يَنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكُظُمِينَ
الْغَيْظِ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

১৩৫. এবং যখন কেউ অশ্লীল কার্য করে কিংবা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করে, তৎপর আল্লাহকে স্মরণ করে অপরাধসমূহের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে; আর আল্লাহ ব্যতীত কে অপরাধসমূহ ক্ষমা করতে পারে? এবং তারা যা করেছে, তার উপর জেনে-শনে অটল থাকে না।

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۗ وَمَنْ
يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ
مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٣٥﴾

১৩৬. তাদের পুরস্কার হবে তাদের প্রভুর নিকট হতে মার্জনা এবং এমন উদ্যানসমূহ যেগুলোর তলদেশ দিয়ে স্রোতস্থিনীসমূহ প্রবাহিত থাকবে, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে; এবং কর্মীদের (সৎকর্মশীলদের) জন্যে কি সুন্দর প্রতিদান!

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ
وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٣٦﴾

১৩৭. নিশ্চয়ই তোমাদের পূর্বে আদর্শসমূহ অতিক্রান্ত হয়েছে; অতএব পৃথিবীতে বিচরণ কর, তৎপরে লক্ষ্য কর যে, অবিশ্বাসীদের পরিণাম কিরূপ হয়েছে।

قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ
فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿٣٧﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন (মানুষের) শরীরের প্রতি ঋণ অস্তির উপর প্রতিদিন একটি করে সাদকা ওয়াজিব হয়। কোন লোককে স্বীয় সাওয়ারীর উপর আক্কেহ করিয়ে সাহায্য করা বা তার মাল-সরঞ্জাম বহন করে দেয়া, উত্তম কথা বলা, নামাযের উদ্দেশ্যে যাতায়াতের প্রতিটি পদক্ষেপ এবং (পথিককে) রাস্তা দেখিয়ে দেয়া এসবই সাদকা হিসেবে গণ্য হতে থাকে। (বুখারী, হাদীস নং ২৮৯১)

২। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন: বাহাদুর সে নয় যে কুস্তিতে কাউকে পরাজিত করে। বাহাদুর সে যে, কঠিন রাগের সময় নিজেকে সামলাতে পারে। (বুখারী, হাদীস নং ৬১১৪)

১৩৮. এটা মানবমণ্ডলীর জন্যে স্পষ্ট বিবরণ এবং আল্লাহ ভীরুগণের জন্যে পথ-প্রদর্শক ও উপদেশ।

১৩৯. আর তোমরা দুর্বল হয়ে না ও বিষণ্ণ হয়ে না এবং যদি তোমরা বিশ্বাসী হও, তবে তোমরাই জয়ী হবে।

১৪০. যদি তোমাদের আঘাত লেগে থাকে, তবে নিশ্চয়ই সেই সম্প্রদায়েরও তদ্রূপ আঘাত লেগেছে এবং এ দিবসসমূহকে আমি মানবগণের মধ্যে পরিক্রমণ করাই; এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে তাদেরকে যাতে আল্লাহ এরূপে জানতে পারেন এবং তোমাদের মধ্য হতে কতকগুলোকে শহীদরূপে গ্রহণ করবেন আর আল্লাহ অত্যাচারীদেরকে ভালবাসেন না।

১৪১. আর যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে, তাদেরকে আল্লাহ এরূপে নির্মল করেন এবং অবিশ্বাসীদেরকে নিপাত করেন।

১৪২. তোমরা কি ধারণা করেছো যে, তোমরা জান্নাতে প্রবেশ করবে? অথচ যারা জিহাদ করে তোমাদের মধ্য হতে তাদের ব্যাপারে আল্লাহ অবগত হবেন না? ও ধৈর্যশীলদের তিনি জানবেন না?

১৪৩. এবং নিশ্চয়ই তোমরা মৃত্যুর পূর্বেই ওর সাক্ষাৎ কামনা করছিলে, অনন্তর নিশ্চয়ই তোমরা তা প্রত্যক্ষ করেছো এবং তোমরা অবলোকন করছো।

هَذَا بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ
لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

إِنْ يَسْأَلْكُمْ قَوْمٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلَهُ
وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نَدَاؤُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ
لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾

وَلِيُمِصَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكُفْرِينَ ﴿١٤١﴾

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ
الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٢﴾

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَتُّونَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ
تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهَا وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿١٤٣﴾

১৪৪. এবং মুহাম্মাদ রাসূল ব্যতীত কিছুই নয়, নিশ্চয়ই তার পূর্বে রাসূলগণ বিগত হয়েছে, অনন্তর যদি তাঁর মৃত্যু হয় অথবা তিনি নিহত হন, তবে কি তোমরা পশ্চাদপদে ফিরে যাবে? এবং যে কেউ পশ্চাদপদে ফিরে যায়, তাতে সে আল্লাহর কোনই অনিষ্ট করবে না এবং আল্লাহ কৃতজ্ঞগণকে অচিরেই পুরস্কার প্রদান করবেন।

১৪৫. আর আল্লাহর আদেশে ধার্যকৃত লিপিবদ্ধ নির্দিষ্ট সময় ব্যতীত কেউই মৃত্যুমুখে পতিত হয় না; এবং যে কেউ দুনিয়ার প্রতিদান কামনা করে, আমি তাকে তা হতেই প্রদান করি এবং যে কেউ পরকালের প্রতিদান কামনা করে, আমি তাকে তা হতেই প্রদান করে থাকি; এবং আমি কৃতজ্ঞগণকে অচিরেই পুরস্কার প্রদান করবো।

১৪৬. আর এমন অনেক নবী ছিলেন, যাদের সহযোগে প্রভুভক্ত লোকেরা যুদ্ধ করেছিল; পরন্তু আল্লাহর পথে যা সংঘটিত হয়েছিল তাতে তারা নিরুৎসাহ হয়নি, শক্তিহীন হয়নি ও বিচলিত হয়নি এবং আল্লাহ ধৈর্যশীলগণকে ভালবাসেন।

১৪৭. আর এতদ্ব্যতীত তাদের অন্য কথা ছিল না যে, তারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের জন্যে আমাদের অপরাধ ও আমাদের বাড়াবাড়ি ক্ষমা করুন ও আমাদের চরণসমূহ সুদৃঢ় করুন এবং অবিশ্বাসীদের উপর আমাদেরকে সাহায্য করুন।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ
الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى
أَعْقَابِكُمْ ۗ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقْبَيْهِ فَلَنْ
يُضْرَّ اللَّهُ شَيْئًا ۗ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
كِتَابًا مُّوَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ
مِنْهَا ۗ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۗ
وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٥﴾

وَكَأَيِّنْ مِنْ نَبِيِّ قُتِلَ مَعَهُ رِيبِيُونَ كَثِيرٌ
فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا
ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٦﴾

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا
ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَكَيْتَابًا أَقْدَمَنَا
وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿١٤٧﴾

১৪৮. অনন্তর আল্লাহ তাদেরকে পার্শ্বি পুরস্কার প্রদান করলেন এবং পরকালের শ্রেষ্ঠতর পুরস্কার দেবেন; এবং আল্লাহ সৎকর্মশীলগণকে ভাল-বাসেন।

فَأْتَهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحَسَنَ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤٨﴾

১৪৯. হে মু'মিনগণ! যারা অবিশ্বাস করেছে যদি তোমরা তাদের আজ্ঞাবহ হও, তবে তারা তোমাদেরকে পশ্চাদপদে ফিরিয়ে নেবে, তাতে তোমরা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে প্রত্যাবর্তিত হবে।^১

يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يُرَدُّوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خِسْرِينَ ﴿١٤٩﴾

১৫০. বরং আল্লাহ তোমাদের অভিভাবক এবং তিনিই শ্রেষ্ঠতম সাহায্যকারী।

بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ﴿١٥٠﴾

১৫১. যারা অবিশ্বাস করেছে, আমি অতি সত্ত্বর তাদের অন্তরে ভীতি সঞ্চার করবো, যেহেতু তারা আল্লাহর সাথে সে বিষয়ে অংশী স্থাপন করেছে যে বিষয়ে তিনি কোন প্রমাণ অবতারণ করেননি এবং জান্নাম তাদের অবস্থান স্থল এবং ওটা অত্যাচারীদের জন্যে নিকৃষ্ট বাসস্থান।

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۚ وَمَا لَهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ﴿١٥١﴾

১৫২. আর নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের জন্যে স্বীয় অঙ্গীকার সত্য করেছেন— যখন তাঁর আদেশে তোমরা ভগ্নোদ্যম না হওয়া পর্যন্ত

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُم بِأِذْنِهِ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُم مِّن بَعْدِ مَا أَرْسَلْنَا مَا تَجِبُونَ مِنكُمْ مِّن يُّرِيدُ

১। সামুরা ইবনে জুনদুব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি (মুসলমান) মুশরিকের সঙ্গে অবস্থান করল এবং তার সঙ্গে (একই দেশে বা স্থানে) অধিবাসী হয়ে বসবাস করল সে (মুসলমান) অবশ্যই উক্ত মুশরিকের ন্যায়। (আবু দাউদ, হাদীস নং ২৭৮৭)

টীকাঃ মুসলমানকে মুশরিকের সঙ্গে অবস্থান না করে পৃথকভাবে বসবাস করার জন্য কঠোরভাবে সাবধান ও হুশিয়ার উচ্চারণ করা হয়েছে। কারণ একজন মুসলমান মুশরিকের সঙ্গে সহ অবস্থান ও উঠাবসার মাধ্যমে তার মধ্যে তাদের স্বভাবের প্রভাব পড়তে পারে। এই হাদীসটি মুশরিকদের সঙ্গে মুসলমানদের সম্পর্ক বিষয়ে একটি মূলনীতি।

কলহ করছিলে এবং অবাধ্য হয়েছিলে; অতঃপর তোমরা যা ভালবেসেছিলে, তা তিনি তোমাদেরকে প্রদর্শন করলেন; তোমাদের মধ্যে কেউ কেউ পৃথিবী কামনা করছিলে এবং কেউ কেউ পরকাল কামনা করেছিলে তৎপর তিনি তোমাদেরকে পরীক্ষার জন্যে বিরত করলেন এবং নিশ্চয়ই তোমাদেরকে ক্ষমা করলেন এবং আল্লাহ বিশ্বাসীগণের প্রতি অনুগ্রহশীল।

১৫৩. আর যখন তোমরা উপরের দিকে আরোহণ করে যাচ্ছিলে এবং কারও দিকে ফিরেও দেখছিলে না (উহদের যুদ্ধে কাফিরদের ভয়ে পাহাড়ে আরোহণপূর্বক পলায়ন করেছিলে) ও রাসূল তোমাদেরকে পশ্চাদ হতে আহ্বান করছিলেন; অনন্তর ও তিনি তোমাদেরকে দুঃখের উপর দুঃখ প্রদান করলেন; কিন্তু যা অতিক্রান্ত হয়েছে এবং তোমাদের উপর যা উপনীত হয়নি তোমরা তজ্জন্যে দুঃখ করো না এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ সে বিষয়ে অভিজ্ঞ।

১৫৪. অনন্তর তিনি দুঃখের পরে তোমাদের উপর শান্তি অবতীর্ণ করলেন তা ছিল তন্দ্রা যা তোমাদের এক দলকে আচ্ছন্ন করেছিল, আর একদল নিজের জীবনের জন্যে চিন্তা করছিল; তারা আল্লাহ সম্বন্ধে সত্যের বিনিময়ে অজ্ঞতার অনুরূপ ধারণা পোষণ করছিল, তারা বলছিল এ বিষয়ে কি আমাদের কোন অধিকার

الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۗ وَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٣﴾

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلُونُ عَلَىٰ أَحَدٍ ۗ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِيٰ أَحْسَنِ مَقَامٍ مَّا بَلَغْتُمْ ۗ غَمًّا بِغَمِّ لِيَكِيلًا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا آصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٤﴾

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمْنًا نَّعَاسًا يُغْشَىٰ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ ۗ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ط يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ فِيٰ أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ

নেই? তুমি বলঃ সকল বিষয়ে আল্লাহর অধিকার; তারা নিজেদের অন্তরে যা গোপন রাখে, তা তোমার নিকট প্রকাশ করে না; তারা বলেঃ যদি এ বিষয়ে আমাদের কোন অধিকার থাকতো, তবে এখানে আমরা নিহত হতাম না; তুমি বলঃ যদি তোমরা তোমাদের গৃহের মধ্যেও থাকতে, তবুও যাদের প্রতি হত্যা বিধিবদ্ধ হয়েছে, তারা নিশ্চয়ই স্বীয় বধ্যস্থানে (গৃহে হলেও) এসে উপস্থিত হতো এবং এটা এ জন্যে যে, তোমাদের অন্তরের মধ্যে যা আছে, আল্লাহ তা পরীক্ষা করেন এবং এরূপে তিনি তোমাদের হৃদয়ে যা আছে তা নির্মল করে থাকেন; এবং আল্লাহ অন্তর্নিহিত ভাব পরিষ্কার করে আছেন।

১৫৫. নিশ্চয়ই তোমাদের মধ্যে যারা দু'দলের সম্মুখীন হওয়ার দিন পশাদাবর্তিত হয়েছিল, তারা যা অর্জন করেছিল, তার কোন কোন বিষয় হতে শয়তান তাদেরকে প্রতারিত করেছিল এবং অবশ্যই আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করেছেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, সহিষ্ণু।

১৫৬. হে মু'মিনগণ! যারা অবিশ্বাস করেছে, তোমরা তাদের মত হয়ো না এবং যখন তাদের ভ্রাতৃগণ পৃথিবীতে বিচরণ করে অথবা যুদ্ধে নিহত হয় তখন তারা বলেঃ যদি ওরা আমাদের নিকট থাকতো তবে মৃত্যুমুখে পতিত হতো না। অথবা নিহত হতো না; আল্লাহ এরূপে তাদের অন্তরে দুঃখ

لَكَ ط يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هُنَا ط قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَى مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُبَدِّلَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۗ وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ط إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّكِفُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُرَىٰ تَوْكَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا ۗ لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَلِكُمْ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ط وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ ط وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١٥٦﴾

সম্ভার করেন এবং আল্লাহই জীবন দান ও মৃত্যু দান করেন এবং তোমরা যা করছো, তৎপ্রতি আল্লাহ লক্ষ্যকারী।

১৫৭. আর যদি তোমরা আল্লাহর পথে নিহত অথবা মৃত্যুমুখে পতিত হও তবে আল্লাহর নিকট হতেই ক্ষমা রয়েছে এবং তারা যা সম্ভয় করেছে তদপেক্ষা তাঁর করুণা শ্রেষ্ঠতর।

১৫৮. আর যদি তোমরা মৃত্যুবরণ কর বা নিহত হও তবে তোমাদেরকে অবশ্যই আল্লাহর দিকে একত্রিত করা হবে।

১৫৯. অতএব আল্লাহর অনুগ্রহ এই যে, তুমি তাদের প্রতি কোমল চিন্ত; এবং তুমি যদি কৰ্কশ ভাষী, কঠোর হৃদয় হতে, তবে নিশ্চয়ই তারা তোমার সংসর্গ হতে অন্তর্হিত হতো, অতএব তুমি তাদেরকে ক্ষমা কর ও তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর এবং কার্য সম্বন্ধে তাদের সাথে পরামর্শ কর; অনন্তর যখন তুমি সংকল্প করেছ তখন আল্লাহর প্রতি নির্ভর কর এবং নিশ্চয়ই আল্লাহ নির্ভরশীলগণকে ভালবাসেন।

১৬০. যদি আল্লাহ তোমাদেরকে সাহায্য করেন, তবে কেউই তোমাদের উপর জয়যুক্ত হবে না এবং যদি তিনি তোমাদেরকে পরিত্যাগ করেন, তবে তাঁর পরে কে আছে যে, তোমাদেরকে সাহায্য করে? এবং বিশ্বাসীগণ আল্লাহর উপরেই নির্ভর করে থাকেন।

وَلَيْنَ قَاتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّم لَمَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْعَلُونَ ﴿١٥٧﴾

وَلَيْنَ مُتُّم أَوْ قَاتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾

فِيمَا رَحِمَهُ مِّنَ اللَّهِ لَئِن لَّهُمْ ءَلَوْ كُنْتُمْ وَقَّارًا
عَلَيْظَ الْقَلْبِ لَا تُفَضُّوا مِنْ حَوْلِكُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

إِن يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ؕ وَإِنْ يَخُذْ لَكُمْ
فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرْكُم مِّنْ بَعْدِهِ ؕ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾

১৬১. আর কোন নবীর পক্ষে আত্মসাৎ করণ শোভনীয় নয়^১ এবং যে কেউ আত্মসাৎ করেছে তবে যা সে আত্মসাৎ করেছে তা উখান দিবসে আনয়ন করা হবে; অনন্তর প্রত্যেক ব্যক্তি যা অর্জন করেছে তা পূর্ণরূপে প্রদত্ত হবে এবং তারা নির্ধারিত হবে না।

وَمَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يُغْلَبَ ط وَمَنْ يُغْلَبْ يَأْتِ بِمَا
عَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ؕ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٣١﴾

১৬২. যে আল্লাহর সন্তুষ্টির অনুসরণ করেছে, সে কি তার মত হতে পারে, যে আল্লাহর আক্রোশে পতিত হয়েছে? এবং তার বাসস্থান জাহান্নাম, আর ওটা নিকৃষ্ট গন্তব্য-স্থান।

أَفَمَنْ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطٍ مِّنَ
اللَّهِ وَ مَاؤُهُ جَهَنَّمُ ط وَيُسَّ الصَّيِّرُ ﴿٣٢﴾

১৬৩. আল্লাহর নিকট তাদের পদমর্যাদাসমূহ আছে এবং তোমরা যা করছো সে বিষয়ে আল্লাহ লক্ষ্যকারী।

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ ط وَاللَّهُ بَصِيرٌ ﴿٣٣﴾ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, নবী (সাঃল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একদিন আমাদের মাঝে দাঁড়িয়ে গণীমতের অর্থসম্পদ আত্মসাৎের ভয়াবহতা সম্পর্কে বক্তব্য রাখলেন এবং ভয়াবহ পরিণামের বিষয়ও আলোচনা করলেন। তিনি বললেন, আমি কিয়ামতের দিন তোমাদের কাউকে এমন অবস্থায় দেখতে চাই না যে, সে ঘাড়ে একটি চীৎকাররত বকরী, একটি হেযারত অশ্ব বহন করছে এবং আমাকে ডেকে বলছে যে, হে আল্লাহর রাসূল! আমাকে এ বিপদ থেকে (রক্ষা) উদ্ধার করুন। তখন আমি বলব, আমি তোমার জন্য কিছুই করতে পারছি না। আমি তো আল্লাহর বিধি-বিধান তোমাদের নিকট পৌঁছিয়ে দিয়েছিলাম। (অথবা) আমি তোমাদের কাউকে এমন অবস্থায়ও দেখতে চাই না যে, সে একটি চীৎকাররত উট ঘাড়ে বহন করে আমার কাছে এসে বলছে, হে আল্লাহর রাসূল! আমাকে বিপদমুক্ত করুন। আমি বলব, আমি তোমার জন্য কিছুই করতে পারছি না, আল্লাহর বাণী বা আদেশ-নিষেধ তো আমি তোমাদের কাছে পৌঁছে দিয়েছিলাম। (অথবা) তোমাদের কাউকে আমি এমনও দেখতে চাই না যে, সে সম্পদের বোঝা ঘাড়ে করে আমার কাছে আগমন করে বলবে, হে আল্লাহর রাসূল! আমাকে বিপদ থেকে রক্ষা করুন। আমি বলব, আমি তোমাদের জন্য কিছুই করতে সক্ষম নই। কেননা, আমি আল্লাহর বাণী তোমাদের নিকট পৌঁছিয়েছিলাম। (অথবা) তোমাদের কোন ব্যক্তি কাপড়ের গাঁটটি ঘাড়ে বহন করে আগমন করবে আর বাতাসে কাপড় তার ঘাড়ের ওপর উড়তে থাকবে। সে বলবে, হে আল্লাহর রাসূল! আমাকে বিপদমুক্ত করুন। আমি বলব, আমি তোমার জন্য কিছুই করতে পারছি না। আল্লাহর বাণী তো আমি তোমাদের কাছে পৌঁছে দিয়েছিলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩০৭৩)

১৬৪. নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বাসীগণের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, যখন তিনি তাদের নিজেরদেরই মধ্য হতে একজন রাসূল প্রেরণ করেছেন, যিনি তাদের নিকট তাঁর নিদর্শনাবলী (আয়াতসমূহ) পাঠ করেন ও তাদেরকে পবিত্র করেন এবং তাদেরকে গ্রন্থ ও বিজ্ঞান শিক্ষা দান করেন এবং নিশ্চয়ই তারা এর পূর্বে প্রকাশ্য আন্টির মধ্যে ছিল।^১

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿۱۶۴﴾

১। (ক) হোয়ায়ফা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয় আমানত অবতীর্ণ হয়েছে আকাশ থেকে মানুষের অন্তরে এবং কুরআন অবতীর্ণ হয়েছে, অতঃপর তারা কুরআন পড়েছে, এবং হাদীস শিখেছে। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৭৬)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমার উম্মতের সকল লোক জান্নাতে প্রবেশ করবে। কিন্তু যে অস্বীকার করেছে (সে জান্নাতবাসী হতে পারবে না)। জিজ্ঞাসা করা হলঃ কে অস্বীকার করেছে, হে আল্লাহর রাসূল? উত্তরে বললেনঃ যে আমার অনুসরণ করল সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। আর যে ব্যক্তি আমার অনুসরণ করল না, সে অস্বীকার করল। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮০)

(গ) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) নিদ্রিত ছিলেন, এমতাবস্থায় তাঁর নিকট কয়েকজন ফেরেশতা আগমন করলেন। তারা পরস্পরে বলাবলি করতে লাগলেন) কেউ বললো, তিনি নিদ্রিত; আর কেউ বললো, তাঁর চক্ষু নিদ্রিত, কিন্তু তাঁর হৃদয় জাগ্রত। অতঃপর কয়েকজন বললো, তোমাদের এ সাথীর (নবীর) একটি উদাহরণ আছে কেউ বলল, তা হলে সে উদাহরণটি বর্ণনা করুন। তাদের কেউ বললো, তিনি তো নিদ্রিত, আবার কেউ বললো, তাঁর চক্ষু মাত্র নিদ্রিত তার অন্তর জাগ্রত আছে। (উদাহরণ বর্ণনা করা যেতে পারে) অতঃপর তারা বললো, তাঁর উদাহরণ হচ্ছে ঐ ব্যক্তির ন্যায় যে, একটি গৃহ নির্মাণ করলো, অতঃপর সেখানে যিয়াফতের আয়োজন করলো। আর একজন আহ্বানকারী প্রেরণ করলো, অতঃপর যে কেহ সে আহ্বানকারীর দাওয়াত গ্রহণ করে উপস্থিত হলো, সে গৃহে প্রবেশ করে যিয়াফতের খানা খেয়ে নিল, আর যে দাওয়াত গ্রহণ করলো না সে গৃহেও প্রবেশ করতে পারলো না, খেতেও পারলো না। তারা বললো, এ উদাহরণের ব্যাখ্যা খুলে বলুন, যেন তিনি বুঝতে পারেন। কেউ বললো, তিনি তো নিদ্রায় মগ্ন আছেন (কিভাবে বুঝবেন) আবার কেউ বললো, তাঁর শুধুমাত্র চক্ষুই নিদ্রিত তাঁর অন্তর জাগ্রত আছে। তারপর তারা (ব্যাখ্যা করে) বললো, ঘর মানে জান্নাত, আর আহ্বানকারী মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)। তাই যে ব্যক্তি মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর অনুকরণ করবে তার আল্লাহর আনুগত্য করা হবে। আর যে মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে অমান্য করবে, বস্ততঃ সে আল্লাহকেই অমান্য করবে। মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) লোকদের মাঝে ব্যবধান সৃষ্টি করেছেন। (আনুগত্য ও অবাধ্যতার সীমারেখা)। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮১)

(ঘ) আবু মুসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেন, আমার এবং যা (কুরআন) দিয়ে আমাকে আল্লাহ প্রেরণ করেছেন, তার উদাহরণ এরূপ যে, এক ব্যক্তি তার সম্প্রদায়ের নিকট এসে বলতে লাগলো, হে আমার সম্প্রদায়, আমি নিজ চক্ষে শত্রু বাহিনী দেখে এসেছি, অতএব তোমরা মুক্তির (নিরাপত্তার) চেষ্টা কর। অতঃপর সম্প্রদায়ের একদল

১৬৫. হ্যাঁ, যখন তোমাদের উপর বিপদ উপস্থিত হলো বস্ত্রতঃ তোমরাও তাদের প্রতি তদানুরূপ দ্বিগুণ বিপদ উপস্থিত করেছিলে, যখন তোমরা বলছিলেঃ এটা কোথা হতে এলো? তুমি বলঃ ওটা তোমাদের নিজেদেরই নিকট হতে; নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়োপরি শক্তিমান।

১৬৬. এ দু'দলের সম্মুখীন হওয়ার দিবস তোমাদের উপর যা উপনীত হয়েছিল; তা আল্লাহরই ইচ্ছাক্রমে এবং এর দ্বারা আল্লাহ বিশ্বাসীদেরকে বাস্তবে জেনে নেন।

১৬৭. আর এর দ্বারা তিনি কপটদেরকে জেনে নেন এবং তাদেরকে বলা হয়েছিলঃ এসো, আল্লাহর পথে সংগ্রাম কর অথবা তাদেরকে প্রতিরোধ কর; তারা বলেছিলঃ যদি আমরা যুদ্ধ করতে জানতাম, তবে কি আমরা তোমাদের অনুগমন করতাম না? তারা সেদিন বিশ্বাস অপেক্ষা অবিশ্বাসের নিকটবর্তী ছিল; তাদের অন্তরে যা নেই তাই তারা মুখে বলে থাকে এবং তারা যে বিষয় গোপন করে, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন।

১৬৮. যারা গৃহে বসে স্বীয় ভ্রাতৃগণের সম্বন্ধে বলেছিলঃ যদি তারা আমাদের কথা মান্য করতো

أَوَلَيْتَآ أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِّثْلَهَا لَا قُلْتُمْ أَنَّى هَذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنفُسِكُمْ إِنَّا نلله عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّتَى الْجَنْعِينَ فَبِأَذْنِ اللّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۖ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللّهِ أَوْ ادْعُوا قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنَاكُمْ هُمْ لِلْكَفْرِ يَوْمِئذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَا كَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾

الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أِطَاعُونَا مَا قَاتَلُوا قُلْ قَادِرَةٌ عَلَيْنَا أَنفُسُكُمُ الْمَوْتِ

তার কথা অনুসারে শেষ রাতে নিরাপদ স্থানে রওয়ানা হয়ে গেল এবং সমুদয় বিপর্যয় থেকে মুক্তি পেয়ে গেল। আর একদল তাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, এবং নিজেদের গৃহেই ভোর পর্যন্ত অবস্থান করলো। ভোরে যখন শত্রু বাহিনী এসে পড়ল, তখন তাদেরকে সমূলে ধ্বংস করে ফেলল, এ দৃষ্টান্তই আমার এবং যে ব্যক্তি আমার আনিত ধ্বিনের অনুসরণ করলো, আর যে ব্যক্তি আমাকে ও আমার আনিত ধ্বিনে হক অমান্য ও মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮৩)

তবে নিহত হতো না; তুমি বলঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও তবে নিজেদেরকে মৃত্যু হতে রক্ষা কর।

১৬৯. যারা আল্লাহর পথে নিহত হয়েছে, তাদেরকে মৃত ধারণা করো না; বরং তারা জীবিত, তারা তাদের প্রতিপালক হতে জীবিকা প্রাপ্ত হয়।

১৭০. আল্লাহ তাদেরকে স্বীয় অনুগ্রহ হতে যা দান করেছেন, তাতেই তারা পরিতুষ্ট এবং যারা পশ্চাতে থেকে তাদের সাথে সম্মিলিত হয়নি, তাদের এ অবস্থার প্রতিও তারা সন্তুষ্ট হয় যে, তাদের কোন ভয় নেই এবং তারা দুঃখিত হবে না।

১৭১. তারা আল্লাহর নিকট হতে অনুগ্রহ ও নিয়ামত লাভ করার কারণে আনন্দিত হয়, আর এ জন্যে যে, নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বাসীগণের প্রতিদান বিনষ্ট করেন না।

১৭২. যারা আঘাত পাওয়ার পরেও আল্লাহ ও রাসূলের নির্দেশের সাড়া দিয়েছিল, তাদের মধ্যে যারা সৎকার্য করেছে ও সংযত হয়েছে, তাদের জন্যে রয়েছে মহা পুরস্কার।

১৭৩. যাদেরকে লোকেরা বলেছিলঃ নিশ্চয়ই তোমাদের বিরুদ্ধে লোকজন সমবেত হয়েছে, অতএব তোমরা তাদেরকে ভয় কর; কিন্তু এতে তাদের বিশ্বাস আরো পরিবর্ধিত হয়েছিল এবং তারা বলেছিল আল্লাহই আমাদের জন্য যথেষ্ট এবং মঙ্গলময় কর্মবিধায়ক।^১

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٩﴾

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ط
بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٧٠﴾

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَيَسْتَبْشِرُونَ
بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ ۗ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يُحْزَنُونَ ﴿١٧١﴾

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلِهِ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧٢﴾

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا
أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ط لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٣﴾

الَّذِينَ قَالُوا لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا
لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۗ وَقَالُوا حَسْبُنَا
اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٤﴾

১। (ক) আবদুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ আল্লাহই আমাদের জন্য যথেষ্ট। তিনিই আমাদের জন্য উত্তম জিন্মাদার (সূরা আল-ইমরানঃ ১৭৩ আয়াত) ইবরাহীমকে

১৭৪. অনন্তর তারা আল্লাহর অনুগ্রহও সম্পদসহ প্রত্যাভর্তিত হয়েছিল, তাদেরকে কোন অমঙ্গল স্পর্শ করেনি এবং তারা আল্লাহর সন্তুষ্টির অনুসরণ করেছিল; আর আল্লাহ মহা অনুগ্রহশীল।

فَأَنقَلَبُوا بِنِعْمَةِ رَبِّهِمْ إِلَيْهِمْ وَعَزَّوَاللَّهُ وَفَضَّلَ لَمْ يَسْسَسُهُمْ سُوءًا وَلَا وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ﴿۳۷﴾

১৭৫. নিশ্চয়ই এই হচ্ছে তোমাদের সেই শয়তান যে তার অনুসারীগণকে ভয় প্রদর্শন করে; কিন্তু যদি তোমরা বিশ্বাসী হও তবে তাদেরকে ভয় করো না এবং আমাকেই ভয় কর।

إِنَّمَا ذِكْمُ الشَّيْطَانِ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ ۗ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿۳۸﴾

১৭৬. আর যারা দ্রুতগতিতে কুফরির দিকে ধাবমান হচ্ছে তুমি তাদের জন্যে চিন্তিত হয়ো না, বস্তুতঃ তারা আল্লাহর কোনই অনিষ্ট করতে পারবে না; আল্লাহ তাদের জন্যে পরকালের কোন অংশ রাখতে ইচ্ছা করেন না এবং তাদেরই জন্যে কঠোর শাস্তি রয়েছে।

وَلَا يَحْزُنُكَ الَّذِينَ يَسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۗ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِطًّا فِي الْآخِرَةِ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿۳۹﴾

১৭৭. নিশ্চয়ই যারা বিশ্বাসের পরিবর্তে অবিশ্বাস ক্রয় করেছে, তারা আল্লাহর কোনই অনিষ্ট করতে পারে না এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۴০﴾

১৭৮. যারা অবিশ্বাস করেছে তারা যেন এটা ধারণা না করে যে, আমি তাদেরকে যে সুযোগ দিয়েছি, তা

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُؤْتِيهِمْ خَيْرٌ لَّا نَفْسُهُمْ ۗ إِنَّمَا نُؤْتِيهِمْ لِيَزِدُوا دُورًا ۗ إِنَّمَا ۗ

(আলাইহিসসালাম) যখন আগুনে নিক্ষেপ করা হয়েছিল তখন তিনি এ কথাটি বলেছিলেন। আর মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথাই বলেছিলেন, যখন লোকজন তাঁকে এসে খবর দিলো যে, তোমাদের বিরুদ্ধে বিরাট সেনাদল প্রস্তুত করা হয়েছে। তাদেরকে ভয় করো। এ কথা শুনে তাঁদের ঈমান আরো মজবুত হলো। তারা বললো, আল্লাহুই আমাদের জন্য যথেষ্ট। আর আমাদের পক্ষ থেকে কাজের জন্য তিনিই উত্তম জিম্মাদার। (বুখারীঃ হাদীস নং ৪৫৬৩)

(খ) আবদুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ ইবরাহীম (আলাইহিসসালাম)-কে যখন আগুনে নিক্ষেপ করা হয়েছিলো তখন তাঁর শেষ কথাটি ছিলো- “আল্লাহুই আমার জন্য যথেষ্ট। আমার জন্য তিনিই উত্তম জিম্মাদার।” (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৬৪)

তাদের জীবনের জন্যে কল্যাণকর; তারা স্বীয় পাপ বর্ধিত করবে তদ্ব্যতীত আমি তাদেরকে অবসর প্রদান করিনি এবং তাদের জন্যে অপমানকর শাস্তি রয়েছে।

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٧٩﴾

১৭৯. আল্লাহ এরূপ নন যে, তিনি পবিত্রতা হতে অপবিত্রতা পৃথক না করা পর্যন্ত তোমরা যার উপরে আছো, সে অবস্থায় বিশ্বাসীদেরকে পরিত্যাগ করবেন এবং আল্লাহ এরূপ নন যে, তোমাদেরকে অদৃশ্য বিষয় জানাবেন এবং আল্লাহ তদীয় রাসূলগণের মধ্যে যাকে ইচ্ছা মনোনীত করে থাকেন; অতএব আল্লাহ ও তদীয় রাসূলের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর এবং যদি তোমরা বিশ্বাস স্থাপন কর ও সংযমী হও, তবে তোমাদের জন্যে মহান প্রতিদান রয়েছে।

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٨٠﴾

১৮০. আর আল্লাহ যাদেরকে স্বীয় প্রতিদান হতে কিছু দান করেছেন সে বিষয়ে যারা কার্পণ্য করে, তারা যেন এরূপ ধারণা না করে যে, ওটা তাদের জন্যে কল্যাণকর; বরং ওটা তাদের জন্যে ক্ষতিকর; তারা যে বিষয়ে কৃপণতা করেছে, উত্থান দিবসে ওটাই তাদের গলার বেড়ী হবে এবং আল্লাহ নভোমণ্ডলের ও ভূমণ্ডলের স্বত্বাধিকারী এবং যা তোমরা করছো আল্লাহ সে বিষয়ে পূর্ণ খবর রাখেন।^১

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنَّهُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ أَلَّهُمْ طَبْلٌ هُوَ شَرٌّ لَهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخُلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٨١﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যাকে আল্লাহু ধন-সম্পদ দিয়েছেন; কিন্তু সে তার যাকাত আদায় করেনি। তার সেই ধন-সম্পদকে কিয়ামতের দিন একটি সাপের রূপ দেয়া হবে, যার মাথায় চুল থাকবে এবং (দুই) চোখের

১৮১. অবশ্যই আল্লাহ তাদের কথা শ্রবণ করেছেন, যারা বলে থাকে যে, আল্লাহ দরিদ্র আর আমরা ধনবান; তারা যা বলেছে এবং অন্যায়ভাবে তাদের নবীদের হত্যা করেছে, এর সবই আমি লিপিবদ্ধ করবো এবং তাদেরকে বলবোঃ তোমরা প্রদাহকারী শাস্তির আশ্বাদ গ্রহণ কর।

১৮২. এটা তাই, যা তোমাদের হাতসমূহ পূর্বে ধ্রেরণ করেছে এবং নিশ্চয়ই আল্লাহ গোলামদের (বান্দাদের) প্রতি অত্যাচারী নন।

১৮৩. যারা বলে থাকেঃ অবশ্য আল্লাহ আমাদের জন্যে অঙ্গীকার করেছেন যে, অগ্নি যা গ্রাস করে, আমাদের জন্যে এমন কুরবানী আনয়ন না করা পর্যন্ত আমরা যেন কোন নবীর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন না করি; তুমি বলঃ নিশ্চয়ই আমার পূর্বে সমুজ্জ্বল নিদর্শনাবলী এবং তোমরা যা বল তৎসহ রাসূলগণ আগমন করেছিলেন; যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে কেন তোমরা তাঁদেরকে হত্যা করেছিলে?

১৮৪. অতঃপর যদি তারা তোমার প্রতি অসত্যারোপ করে, তবে

لَقَدْ سَمِعَ اللهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ
وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ
الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۗ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلِيمٍ
لِّلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عٰهِدَ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ
لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِينَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالذِّكْرِ
قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٨٣﴾

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ

ওপর কাল দু'টি দাগ থাকবে। আর এটিকে তার গলায় পেঁচিয়ে দেয়া হবে সেটি তার মুখের দু'পাশে দংশন করতে থাকবে এবং বলবে-আমিই তোমার ধন-সম্পদ, আমিই তোমার গচ্ছিত অর্থ-সম্পদ। তারপর আল্লাহর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এ আয়াতটি পাঠ করেন। অর্থঃ “আর আল্লাহ যাদেরকে স্বীয় প্রতিদান হতে কিছু দান করেছেন সে বিষয়ে যারা কার্পণ্য করে, তারা যেন একরূপ ধারণা না করে যে, ওটা তাদের জন্যে কল্যাণকর; বরং ওটা তাদের জন্যে ক্ষতিকর; তারা যে বিষয়ে কুপণতা করেছে, উত্থানদিবসে ওটাই তাদের কষ্টনিগড় (গলার বেড়ী) হবে এবং আল্লাহ নভোমণ্ডলের ও ভূমণ্ডলের স্বত্বাধিকারী, এবং যা তোমরা করছে আল্লাহ সে বিষয়ে পূর্ণ খবর রাখেন।” (সূরাঃ আল-ইমরান, আয়াতঃ ১৮০)

তোমার পূর্বেও রাসূলগণকে অবিশ্বাস করা হয়েছিল, যারা প্রকাশ্য নিদর্শনাবলী ও ক্ষুদ্র পুস্তিকা এবং উজ্জ্বল গ্রন্থসহ আগমন করেছিলেন।

১৮৫. সমস্ত জীবই মৃত্যুর আশ্বাদ গ্রহণকারী এবং নিশ্চয়ই উত্থান দিবসে তোমাদেরকে পূর্ণ প্রতিদান দেয়া হবে; অতএব যে কেউ অগ্নি হতে বিমুক্ত হয়েছে ও জান্নাতে প্রবিষ্ট হয়েছে, ফলতঃ নিশ্চয়ই সে সফল-কাম; আর পার্থিব জীবন প্রতারণার সম্পদ ছাড়া আর কিছুই নয়।

১৮৬. অবশ্যই তোমরা তোমাদের ধন-সম্পদ ও তোমাদের জীবন-সমূহের দ্বারা পরীক্ষিত হবে এবং যাদেরকে তোমাদের পূর্বে গ্রন্থ প্রদত্ত হয়েছে ও যারা অংশী স্থাপন করেছে, তাদের নিকট হতে তোমাদেরকে বহু দুঃখজনক বাক্য শুনতে হবে; এবং যদি তোমরা ধৈর্যধারণ কর ও সংযমী হও, তবে অবশ্যই এটা সুদৃঢ় কার্যাবলীর অন্তর্গত।

১৮৭. আর যখন আল্লাহ, যাদেরকে গ্রন্থ প্রদত্ত হয়েছে তাদের অস্বীকার গ্রহণ করেছিলেন যে, তোমরা নিশ্চয়ই এটা লোকদের মধ্যে ব্যক্ত করবে এবং তা গোপন করবে না; কিন্তু তারা ওটা তাদের পশ্চাতে নিষ্ক্ষেপ করলো এবং ওটা অল্প মূল্যে বিক্রি করলো, অথচ তারা যা ক্রয় করেছিলো তা নিকৃষ্টতর।

১৮৮. যারা স্বীয় কৃতকর্মে সন্তুষ্ট এবং যা করেনি তজ্জন্যে প্রশংসা প্রার্থী,

جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٥﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ط وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ
أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ط فَمَنْ زُحِزِحَ عَنِ النَّارِ
وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ط وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٦﴾

لَتُبْلَوُنَّ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ط وَلَتَسْعُنَّ مِنَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ
أَشْرَكُوا أذَى كَثِيرًا ط وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ
ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٧﴾

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ ۗ فَنَبَذُوهُ
وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ط
فَبُئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٨﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا وَيُجِبُونَ

এরূপ লোকদের সম্বন্ধে ধারণা করো না যে, তারা শাস্তি হতে বিমুক্ত বরং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

১৮৯. আল্লাহরই জন্যে নভোমণ্ডলের ও ভূমণ্ডলের আধিপত্য এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়োপরি শক্তিমান।

১৯০. নিশ্চয়ই নভোমণ্ডল ও ভূমণ্ডল সৃজনে এবং দিবস ও রাত্রির পরিবর্তনে জ্ঞানবানদের জন্যে স্পষ্ট নিদর্শনাবলী রয়েছে।

১৯১. যারা দণ্ডায়মান, উপবেশন ও শায়িত (এলায়িতভাবে) অবস্থায় আল্লাহকে স্মরণ করে এবং নভোমণ্ডল ও ভূমণ্ডলের সৃষ্টি বিষয়ে চিন্তা করে যে, হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি এটা বৃথা সৃষ্টি করেননি আপনিই পবিত্রতম অতএব আমাদেরকে জাহান্নাম হতে রক্ষা করুন!

১৯২. হে আমাদের প্রতিপালক! অবশ্য আপনি যাকে জাহান্নামে প্রবেষ্ট করেন, ফলতঃ নিশ্চয়ই তাকে লাঞ্ছিত করলেন এবং অত্যাচারীদের জন্যে কেউই সাহায্যকারী নেই।

১৯৩. হে আমাদের প্রভু! নিশ্চয়ই আমরা এক আহ্বানকারীকে আহ্বান করতে শুনেছিলাম যে, তোমরা স্বীয় প্রতিপালকের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর, তাতেই আমরা বিশ্বাস স্থাপন করছি; হে আমাদের প্রভু! অতএব আমাদের অপরাধসমূহ ক্ষমা করুন ও

أَنْ يُحْصَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبْهُمْ بِمَفَازَةٍ
مِّنَ الْعَذَابِ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٩﴾

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٩٠﴾

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿١٩١﴾

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَفُجُودًا ۗ وَعَلَى
جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا ۖ سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ﴿١٩٢﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تَدْخِلُ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ ۗ وَمَا
لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٣﴾

رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ
آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا
وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَكَّلْنَا مَعَ الْآبِرَارِ ﴿١٩٤﴾

আমাদের অমঙ্গলসমূহ আবৃত করুন এবং পুণ্যবানদের সাথে আমাদেরকে মৃত্যু দান করুন।

১৯৪. হে আমাদের প্রভু! আপনি স্বীয় রাসূলগণ মাধ্যমে আমাদের সাথে যে অঙ্গীকার করেছিলেন তা দান করুন এবং উত্থান দিবসে আমাদেরকে লাঞ্ছিত করবেন না; নিশ্চয়ই আপনি অঙ্গীকারের ব্যতিক্রম করেন না।

১৯৫. অনন্তর তাদের প্রতিপালক তাদের আহ্বানে সাড়া দিলেন যে, আমি তোমাদের পুরুষ অথবা নারীর মধ্য হতে কোন কর্মীর কৃতকার্য ব্যর্থ করবো না, তোমরা পরস্পর এক, অতএব যারা দেশ ত্যাগ করেছে ও স্বীয় গৃহসমূহ হতে বিতাড়িত হয়েছে ও আমার পথে নির্যাতিত হয়েছে এবং সংগ্রাম করেছে ও নিহত হয়েছে, নিশ্চয়ই তাদের জন্যে আমি তাদের অমঙ্গলসমূহ আবৃত করবো এবং নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে জান্নাতে প্রবেশ করাবো— যার নিম্নে স্রোতস্থিনীসমূহ প্রবাহিত; এটা আল্লাহর নিকট হতে প্রতিদান এবং আল্লাহর নিকটই উত্তম প্রতিদান রয়েছে।

১৯৬. যারা অবিশ্বাসী হয়েছে তাদের নগরসমূহে চাল-চলন যেন তোমাদেরকে প্রভাবিত না করে।

১৯৭. এটা মাত্র কয়েকদিনের সম্ভোগ; অনন্তর তাদের অবস্থান জাহান্নাম এবং ওটা নিকৃষ্ট স্থান।

رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ ﴿١٩٤﴾

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ ۖ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۗ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِّنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۗ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾

لَا يَعْزِبُكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾

مَتَاعٌ قَلِيلٌ تَدْتُمُّهُمُ مَا وَهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبئْسَ الْيَهَادُ ﴿١٩٧﴾

১৯৮. কিন্তু যারা স্বীয় প্রতিপালককে ভয় করে, তাদের জন্যে জান্নাত—যার নিম্নে শ্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে, এটা আল্লাহর সন্নিধান হতে আতিথ্য; এবং যেসব বস্তু আল্লাহর নিকট রয়েছে তা পুণ্যবানদের জন্যে বহুগুণে উত্তম।

১৯৯. এবং নিশ্চয়ই আহলে কিতাবের মধ্যে এরূপ লোকও রয়েছে যারা আল্লাহর প্রতি এবং তোমাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে, সে বিষয়ে আল্লাহর ভয়ে বিশ্বাস স্থাপন করে; যারা অল্প মূল্যে আল্লাহর নিদর্শনাবলী বিক্রি করে না, তাদেরই জন্যে তাদের প্রতিপালকের নিকট প্রতিদান রয়েছে; নিশ্চয়ই আল্লাহ সত্ত্বর হিসাব গ্রহণকারী।

২০০. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা ধৈর্য অবলম্বন কর এবং সহিষ্ণু ও সুপ্রতিষ্ঠিত হও এবং আল্লাহকে ভয় কর—যেন তোমরা সুফলপ্রাপ্ত হও।

সূরাঃ আন-নিসা, মাদানী

(আয়াতঃ ১৭৬ রুকূঃ ২৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. হে মানবমণ্ডলী! তোমরা তোমাদের রবকে ভয় কর যিনি তোমাদেরকে একই ব্যক্তি হতে সৃষ্টি করেছেন ও তা হতে তদীয় সহধর্মিণী সৃষ্টি করেছেন এবং তাদের উভয়

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ط
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلَّذَّابِرِّ ۝ ۱۹۸

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا
أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَشِعِينَ لِلَّهِ ط
لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ ۱۹ۯ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَاطِبُوا ط
وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ ۲۰০

سُورَةُ النَّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ ۝

آيَاتُهَا ۱۷۶ رُكُوعَاتُهَا ۲۴

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ
نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا
رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ

হতে বহু নর ও নারী ছড়িয়ে দিয়েছেন এবং সে আল্লাহকে ভয় কর য়াঁর নামের দোহাই দিয়ে তোমরা একে অপরকে তাগাদা কর এবং আত্মীয়তাকেও ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহই তোমাদের তত্ত্বাবধানকারী।

২. আর ইয়াতীমদেরকে তাদের ধন-সম্পত্তি প্রদান কর এবং পবিত্রতার সাথে অপবিত্রতার বিনিময় করো না ও তোমাদের ধন-সম্পত্তির সাথে তাদের ধন-সম্পত্তি ভোগ করো না; নিশ্চয়ই এটা গুরুতর অপরাধ।

৩. আর যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে ইয়াতীমদের (মেয়েদের) প্রতি সুবিচার করতে পারবে না, তবে নারীগণের মধ্য হতে তোমাদের মনমত দু'টি ও তিনটি ও চারটিকে বিয়ে কর; কিন্তু যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে, ন্যায়বিচার করতে পারবে না তবে মাত্র একটি অথবা তোমাদের দক্ষিণ হাত যার অধিকারী (ক্রীতদাসী) এটা অবিচার না করার নিকটবর্তী।

৪. আর নারীগণকে তাদের দেন-মোহর প্রদান কর কিন্তু যদি তারা সম্ভ্রষ্ট চিন্তে পরে কিয়দাংশ তোমাদেরকে প্রদান করে তবে বিবেচনা মত তৃপ্তির সাথে ভোগ কর।

৫. আল্লাহ তোমাদের জন্যে যে ধন-সম্পত্তি নির্ধারিত করেছেন, তা অবোধদেরকে প্রদান করো না এবং তা হতে তাদেরকে ভক্ষণ করাতে

بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ①

وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا الْخَيْثَ بِأَطْيَبٍ ۖ وَلَا تَكُونُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ②

وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِحُوا مَا كَتَبَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثَلَاثَ وَرُبْعًا ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ ذَٰلِكَ أَذَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ③

وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۗ فَإِنْ طِبَّنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ④

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ

থাক, পরিধান করাতে থাক এবং তাদের সাথে সদ্ভাবে কথা বল ৷

قَوْلًا مَّعْرُوفًا ⑤

৬. আর ইয়াতীমগণ বিবাহযোগ্য না হওয়া পর্যন্ত তাদেরকে পরীক্ষা করে নাও; অতঃপর যদি তাদের মধ্যে বিবেক-বুদ্ধি পরিদৃষ্ট হওয়া লক্ষ্য কর, তবে তাদের ধন-সম্পত্তি তাদেরকে সমর্পণ কর এবং তারা বয়োঃপ্রাপ্ত হবে বলে তা' অপব্যয় ও সত্বরতা (তাড়াহুড়া) সহকারে আত্মসাৎ করো না এবং যে ব্যক্তি অভাব মুক্ত হবে সে নিজেকে সম্পূর্ণ বিরত রাখবে, আর যে ব্যক্তি অভাবগ্রস্ত হবে সে সঙ্গত পরিমাণ ভোগ করবে, অনন্তর যখন তাদের সম্পত্তি তাদেরকে সমর্পণ করতে চাও তখন তাদের জন্যে সাক্ষী রেখো এবং আল্লাহই হিসেব গ্রহণে যথেষ্ট ।

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ أَنْسَمْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۗ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۗ وَكَفَىٰ بِإِلَهِكَ حَسِيبًا ⑥

৭. পুরুষদের জন্যে পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের পরিত্যক্ত বিষয়-সম্পত্তিতে অংশ রয়েছে এবং নারীদের জন্যেও পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের পরিত্যক্ত বিষয়-সম্পত্তিতে অংশ রয়েছে— অল্প বা অধিক এক নির্দিষ্ট পরিমাণ ।

لِلرِّجَالِ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَلِلنِّسَاءِ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ⑦

৮. আর যখন তা বন্টনের সময়ে স্বজনগণ, পিতৃহীনগণ এবং দরিদ্রগণ উপস্থিত হয়, তখন তা হতে

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَأَرْزُقُوهُمْ مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ⑧

১। মুগীরা ইবনে শো'বা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ তা'আলা তোমাদের ওপর (বাপ) মায়ের অবাধ্যতা, কন্যাদেরকে জীবন্ত কবর দেয়া, কারো প্রাণ না দেয়া হারাম করেছেন। আর অর্থহীন কথা বলা, খুব বেশি যাচ্চা (ভিক্ষা) করা এবং সম্পদ অপচয় করা তিনি তোমাদের জন্য অপছন্দ করেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৪০৮)

তাদেরকেও জীবিকা দান কর এবং তাদের সাথে সদ্ভাবে কথা বল।

৯. আর যারা নিজেদের পশ্চাতে নিজেদের অসমর্থ সন্তানদেরকে ছেড়ে যাবে যাদের ব্যাপারে তাদের ভীতি থাকবে তজ্জন্যে তাদের শঙ্কিত হওয়া উচিত; সুতরাং তাদের আল্লাহকে ভয় করা ও সদ্ভাবে কথা বলা আবশ্যিক।

১০. যারা অন্যায়াভাবে ইয়াতীমদের ধন-সম্পত্তি গ্রাস করে, নিশ্চয়ই তারা স্বীয় উদরে অগ্নি ব্যতীত কিছুই ভক্ষণ করে না এবং সত্বরই তারা অগ্নি শিখায় উপনীত হবে।

১১. আল্লাহ তা'আলা তোমাদের সন্তানদের সম্বন্ধে তোমাদেরকে নির্দেশ দিচ্ছেন যে, এক পুত্রের জন্যে দু'কন্যার অংশের তুল্য; আর যদি শুধু কন্যাগণ দু'জনের অধিক হয় তবে তারা মৃত ব্যক্তির পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে দুই তৃতীয়াংশ প্রাপ্ত হবে। আর যদি একটি মাত্র কন্যা হয় তবে সে অর্ধেকাংশ প্রাপ্ত হবে এবং যদি মৃত ব্যক্তির কোন সন্তান থাকে, তবে তার পিতা-মাতার জন্যে অর্থাৎ উভয়ের প্রত্যেকেরই জন্যে তার পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে এক ষষ্ঠাংশ রয়েছে আর যদি তার কোন সন্তান না থাকে এবং শুধু পিতা-মাতাই তার উত্তরাধিকারী হয়, তবে তার মাতার জন্যে হবে এক তৃতীয়াংশ এবং যদি তার ভ্রাতা থাকে, তবে সে যা নির্দেশ করে গেছে, সেই নির্দেশ ও ঋণ অস্ত্রে তার জননীর জন্যে এক ষষ্ঠাংশ, তোমাদের পিতা ও

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً
ضَعْفًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا
قَوْلًا سَدِيدًا ①

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا
يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ①

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَىٰ ① فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلهُنَّ
ثُلُثًا مِمَّا تَرَكَ ② وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلهَا النِّصْفُ ③
وَلِلْأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ
إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ④ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَتْهُ
أَبُوهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ⑤ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ
السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّاتِ يُوْصَىٰ بِهَآ أَوْ دِيْنِ ⑥
أَبَآؤُهُمْ وَأَبْنَاؤُهُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ
نَفْعًا ط فَرِيضَةٌ مِّنَ اللَّهِ ط إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
حَكِيمًا ①

তোমাদের পুত্রের মধ্যে কে তোমাদের অধিকতর উপকারী তা তোমরা অবগত নও, এটাই আল্লাহর নির্দেশ; নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

১২. আর তোমাদের পত্নীগণের যদি সন্তান-সন্ততি না থাকে, তবে তারা যা পরিত্যক্ত করে যায় তোমাদের জন্য তার অর্ধাংশ; কিন্তু যদি তাদের সন্তান-সন্ততি থাকে, তবে তারা যা অসিয়ত করেছে সেই অসিয়ত ও ঋণ অস্ত্রে তাদের পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে তোমাদের জন্য এক চতুর্থাংশ এবং যদি তোমাদের কোন সন্তান-সন্ততি না থাকে তবে তোমরা যা পরিত্যাগ করে যাবে, তাদের জন্য তার এক চতুর্থাংশ; কিন্তু যদি তোমাদের সন্তান-সন্ততি থাকে তবে তোমরা যা অসিয়ত করবে সেই অসিয়ত ও ঋণ অস্ত্রে তোমাদের পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে তাদের জন্যে এক অষ্টমাংশ; যদি কোন মূল ও শাখা বিহীন পুরুষ বা স্ত্রী মারা যায় এবং তার এক ভ্রাতা অথবা এক ভগ্নী থাকে, তবে এতদুভয়ের মধ্য হতে প্রত্যেকেই এক ষষ্ঠাংশ পাবে, আর যদি তারা তদপেক্ষা অধিক হয় তবে কৃত অসিয়ত পূরণ করার পর অথবা ঋণের পর কারও অনিষ্ট না করে তারা তার এক তৃতীয়াংশ প্রাপ্ত হবে; এটাই আল্লাহর নির্দেশ এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, সহিষ্ণু।

১৩. এগুলো আল্লাহর নির্দিষ্ট সীমাসমূহ এবং যে কেউ আল্লাহ ও তদীয় রাসূলের আনুগত্য করবে তিনি

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ ۖ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِ يُوْصِيْنَ بِهَا أَوْ دِيْنٍ ط
وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ ۖ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمْنُ مِمَّا تَرَكَتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِ تُوْصَوْنَ بِهَا أَوْ دِيْنٍ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَلَةً أَوْ امْرَأَةً وَوَلَةً أَخٍ أَوْ أُخْتٍ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۖ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِ يُوْصَى بِهَا أَوْ دِيْنٍ ۖ غَيْرَ مَضَآءٍ ۖ وَصِيَّةٌ مِّنَ اللّٰهِ ط
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝

تِلْكَ حُدُودُ اللّٰهِ ۖ وَمَنْ يُطِيعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ يَدْخُلْهُ جَنَّةٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ خَالِدِيْنَ فِيْهَا ط

তাকে এরূপ জান্নাতে প্রবিষ্ট করাবেন, যার নিম্নে শ্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে এবং এটাই মহা সাফল্য।

১৪. আর যে কেউ আল্লাহ ও তদীয় রাসূলকে অমান্য করে এবং তাঁর নির্দিষ্ট সীমাসমূহ অতিক্রম করে, তিনি তাকে আগুনে নিক্ষেপ করবেন, যেখানে সে সদা অবস্থান করবে এবং তার জন্যে লাঞ্ছনাপ্রদ শাস্তি রয়েছে।

১৫. আর তোমাদের নারীদের মধ্যে যারা নির্লজ্জতার (ব্যভিচার) কাজ করে, তোমরা তাদের বিরুদ্ধে তোমাদের মধ্য হতে চারজন সাক্ষী উপস্থিত কর, অনন্তর যদি তারা সাক্ষ্য প্রদান করে তবে তাদেরকে তোমরা গৃহসমূহের মধ্যে আবদ্ধ করে রাখ, যে পর্যন্ত মৃত্যু তাদেরকে উঠিয়ে না নেয়; কিংবা আল্লাহ তাদের জন্যে কোন পথ নির্দেশ না করেন।

১৬. আর তোমাদের মধ্য হতে যে কোন দু'ব্যক্তি এ নির্লজ্জতার কাজ করবে, তাদের উভয়কেই শাস্তি প্রদান কর; কিন্তু তারা যদি ক্ষমা প্রার্থনা করে এবং সদাচারী হয়, তবে তদদুভয় হতে প্রত্যাবর্তিত হও, নিশ্চয়ই আল্লাহ তা'আলা তাওবা গ্রহণকারী, করুণাময়।

১৭. তাওবা কবুল করার দায়িত্ব যে আল্লাহর উপর রয়েছে তা তো শুধু তাদেরই জন্যে যারা অজ্ঞতাবশতঃ পাপ করে থাকে, তৎপর অবিলম্বে ক্ষমা প্রার্থনা করে। সুতরাং আল্লাহ তাদেরকেই ক্ষমা করবেন; আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٧﴾

وَمَنْ يُعِصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودًا يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا سَاءَ لَكَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٨﴾

وَالَّتِي يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنْكُمْ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَقَّعَنَّ الْمَوْتَ أَوْ يُجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّهَا مِنْكُمْ فَادْوُهُمَا ۖ فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ط ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٢٠﴾

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ط ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٢١﴾

১৮. আর তাদের জন্যে ক্ষমা নেই যারা ঐ পর্যন্ত পাপ করতে থাকে, যখন তাদের কারও নিকট মৃত্যু উপস্থিত হয়, তখন বলেঃ নিশ্চয়ই আমি এখন ক্ষমা প্রার্থনা (তাওবা) করছি এবং তাদের জন্যেও নয় যারা অবিশ্বাসী অবস্থায় মৃত্যুমুখে পতিত হয়; তাদেরই জন্যে আমি বেদনাদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

১৯. হে মু'মিনগণ! এটা তোমাদের জন্যে বৈধ নয় যে, তোমরা বলপূর্বক নারীদের উত্তরাধিকারী হও এবং প্রকাশ্য অশ্লীলতা ব্যতীত তোমরা তাদেরকে যা প্রদান করেছ, তার কিয়দংশ গ্রহণের জন্যে তাদেরকে প্রতিরোধ করো না এবং তাদের সাথে সদ্ভাবে অবস্থান কর; কিন্তু যদি পাপ অনুভব কর তবে তোমরা যে বিষয়ে দোষিত মনে কর আল্লাহ সেটাকে প্রচুর কল্যাণকর করতে পারেন।

২০. আর যদি তোমরা এক স্ত্রীর স্থলে অন্য স্ত্রী পরিবর্তন করতে ইচ্ছা কর এবং তাদের একজনকে রাশি রাশি ধন-সম্পদ প্রদান করে থাক, তবে তোমরা তন্মধ্য হতে কিছুই প্রতিগ্রহণ করো না; তবে কি তোমরা অপবাদ প্রয়োগ এবং প্রকাশ্য পাপ করে সেটা গ্রহণ করবে?

২১. এবং কিরূপে তোমরা তা গ্রহণ করবে? বস্তুতঃ তোমরা পরস্পর একে অন্যের সাথে মিলিত হয়েছো এবং তারা তোমাদের নিকট সুদৃঢ় অঙ্গীকার গ্রহণ করেছে।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ
حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ
الْإِنِّ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كَفَارٌ ۖ أُولَٰئِكَ
أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا
النِّسَاءَ كَرْهًا وَلَا تَعْضَلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ
مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِعَاقِبَةٍ مُّبِينَةٍ ۚ
وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ
أَنْ تَكْرَهُنَّ هُوَ شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا
كَثِيرًا ﴿١٩﴾

وَأِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَ أْتَيْتُمُ
إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ
أَتَأْخُذُونََهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
وَآخَذَانِ مِنْكُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾

২২. আর যা বিগত হয়েছে তদ্ব্যতীত তোমাদের পিতৃগণ নারীকুলের মধ্যে যাদেরকে বিয়ে করেছে তোমরা তাদেরকে বিয়ে করো না; নিশ্চয়ই এটা অশীল ও পাপের কাজ এবং নিকৃষ্টতর পস্থা।

২৩. তোমাদের জন্যে অবৈধ করা হয়েছে তোমাদের মাতৃগণ, তোমাদের কন্যাগণ, তোমাদের ভগ্নিগণ, তোমাদের ফুফুগণ, তোমাদের খালাগণ, তোমাদের ভ্রাতৃ কন্যাগণ, তোমাদের ভগ্নি কন্যাগণ, তোমাদের সেই মাতৃগণ, যারা তোমাদেরকে স্তন্য দান করেছেন, তোমাদের দুধ-ভগ্নিগণ, তোমাদের স্ত্রীদের মাতৃগণ তোমরা যাদের সাথে সহবাস করেছো, সেই স্ত্রীদের (পূর্ব স্বামীর) যে সকল কন্যা তোমাদের ক্রোড়ে অবস্থিতা; কিন্তু যদি তোমরা তাদের সাথে সহবাস না করে থাক তবে তোমাদের জন্যে কোন অপরাধ নেই এবং যারা তোমাদের ঔরসজাত, সে পুত্রদের পত্নীগণ এবং যা অতীত হয়ে গেছে তদ্ব্যতীত দু'ভগ্নিকে একত্রিত করা। নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল! করুণাময়।

وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا ۗ وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُ النِّسَاءِ الَّتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ الَّتِي فِي حُجُورِكُمْ مِمَّنْ نِسَائِكُمُ الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ زَوَاجًا لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَإِنَّ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

২৪. এবং নারীদের মধ্যে সধবাগণ; (অন্যের বিবাহিতা স্ত্রীগণও) কিন্তু তোমাদের দক্ষিণ হাত যাদের অধিকারী— আল্লাহ তোমাদের জন্য তাদেরকে বিধিবদ্ধ করেছেন, এতদ্ব্যতীত তোমাদের জন্যে বৈধ করা হয়েছে যে, তোমরা স্বীয় ধন-সম্পদের দ্বারা ব্যভিচারের উদ্দেশ্যে ব্যতীত বিবাহবন্ধ করার জন্যে তাদের অনুসন্ধান কর, অনন্তর তাদের দ্বারা যে ফলভোগ করেছ, তজ্জন্যে তাদেরকে তাদের নির্ধারিত পাওনা প্রদান কর এবং কোন অপরাধ হবে না— যদি নির্ধারণের পর তোমরা পরস্পর সম্মত হও, নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

২৫. আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি মু'মিনা ও স্বাধীনা রমণীকে বিয়ে করার শক্তি-সামর্থ্য না রাখে, তবে তোমাদের দক্ষিণ হাত যার অধিকারী—সেই ঈমানদার দাসী। আল্লাহ তোমাদের ঈমান বিষয়ে পরিজ্ঞাত আছেন, তোমরা একে অপর হতে সমুদ্রত, অতএব তাদের মনিবদের অনুমতিক্রমে ব্যভিচারিণী ও গুপ্ত প্রেমিকা ব্যতীত সতী-সাপ্তীদেবীদেরকে বিয়ে কর এবং তাদেরকে নিয়ম অনুযায়ী মোহর প্রদান করবে। অতএব যখন তারা বিবাহবন্ধ হয়, তৎপর যদি তারা ব্যভিচার করে, তবে তাদের প্রতি স্বাধীনা নারীদের শাস্তির অর্ধেক, এটা তাদেরই জন্যে তোমাদের মধ্যে যারা দুষ্কার্যকে ভয় করে এবং যদি তোমরা বিরত থাক,

وَالْحُصْنُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ ۚ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ۖ وَأُحِلَّ لَكُمْ مِمَّا
وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ
غَيْرَ مُسْفِحِينَ ۖ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ
فَأْتُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ فَرِيضَةً ۖ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
فِيمَا تَرْضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ ۖ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾

وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ
الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ مِنْ فَتْيَتِكُمْ
الْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ ۖ بَعْضُكُمْ مِنْ
بَعْضٍ ۚ فَانكِحُوهُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِهِنَّ ۚ وَأْتُوهُنَّ
أَجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسْفِحَاتٍ
وَلَا مُتَّخَذَاتِ أَحْدَانٍ ۚ فَإِذَا أُحْصِنَ ۚ فَإِنَّ أَكْثَرَ
بِفَاحِشَةٍ ۚ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ
الْعَدَابِ ۖ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۖ وَأَنْ
تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾

তবে এটা তোমাদের জন্য কল্যাণকর
এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

২৬. আল্লাহ তোমাদের জন্যে বর্ণনা
করতে এবং তোমাদেরকে তোমাদের
পূর্ববর্তীগণের আদর্শসমূহ প্রদর্শন
করতে ও তোমাদেরকে ক্ষমা করতে
ইচ্ছা করেন এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী,
প্রজ্ঞাময়।

২৭. আর আল্লাহ তোমাদের তওবা
গ্রহণ করতে ইচ্ছা করেন এবং যারা
প্রবৃত্তির পূজারী তারা ইচ্ছা করে যে,
তোমরা মারাত্মকভাবে বিচ্যুত হয়ে
পড়।

২৮. আল্লাহ তোমাদের বোঝা
হালকা করতে চান—যেহেতু মানুষ
দুর্বল (রূপে) সৃষ্ট হয়েছে।

২৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা পরস্পর
সম্মতিক্রমে ব্যবসা ব্যতীত অন্যায়-
ভাবে পরস্পরের ধন-সম্পত্তি গ্রাস
করো না এবং তোমরা নিজেদেরকে
হত্যা করো না; নিশ্চয়ই আল্লাহ
তোমাদের প্রতি ক্ষমাশীল।

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذَيِّبَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦﴾

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ
يَتَّبِعُونَ الشَّهْوَاتِ أَنْ تَبِيلُوا مِيلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ
ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ
مِنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾

১। (ক) সাবিত বিন জাহহাক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি ইসলাম ছাড়া ইচ্ছাকৃতভাবে অন্য কোন ধর্মের অনুসারী বলে মিথ্যা শপথ করে তাকে উক্ত ধর্মের লোক বলেই গণ্য করা হবে। এবং যে ব্যক্তি লোহার অস্ত্র দ্বারা আত্মহত্যা করবে তাকে এর মাধ্যমে জাহান্নামে শাস্তি দেয়া হবে। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬৩)

(খ) হাসান থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমাদেরকে জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) এই মসজিদে হাদীস বর্ণনা করেছেন। আর আমরা তা আজও ভুলিনি এবং আমরা এ ভয় করিনা যে, জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর উপর মিথ্যা বলতে পারেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এক ব্যক্তি আহত হয়েছিল (তার যন্ত্রনা সহ্য করতে না পেরে) সে আত্মহত্যা করলে আল্লাহ তা'আলা বললেনঃ আমার বান্দা স্বীয় জান কবজের ব্যাপারে আমার চাইতে অগ্রগামী হয়েছে। অতএব আমি তার উপর জান্নাত হারাম করে দিলাম। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬৪)

(গ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি গলায় ফাঁসি লাগিয়ে আত্মহত্যা করবে, জাহান্নামে সে নিজেই নিজেকে অনুরূপভাবে শাস্তি দিবে। এবং যে ব্যক্তি বর্শা দ্বারা আত্মহত্যা করবে জাহান্নামে সে নিজেই নিজেকে বর্শা বিধিয়ে শাস্তি দিবে। (বুখারীঃ ১৩৬৫)

৩০. আর সীমা অতিক্রম করে ও অত্যাচার করে যে এ কাজ করে, ফলতঃ নিশ্চয়ই আমি তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করবো এবং এটা আল্লাহর পক্ষে সহজসাধ্য।

৩১. তোমরা যদি সেই মহা পাপসমূহ হতে বিরত হও যা হতে তোমাদেরকে নিষেধ করা হয়েছে, তাহলেই আমি তোমাদের অপরাধ ক্ষমা করবো এবং তোমাদেরকে সম্মান-প্রদ গল্পব্যস্থানে প্রবিষ্ট করবো।

৩২. এবং তোমরা ওসবের আকাঙ্ক্ষা করো না যার দ্বারা আল্লাহ তোমাদের কাউকে অন্যের উপর প্রাধান্য দান করেছেন। পুরুষেরা যা উপার্জন করেছে তাতে তাদের অংশ রয়েছে এবং নারীগণ যা উপার্জন করেছে তাতে তাদের অংশ আছে এবং তোমরা আল্লাহরই নিকট তাঁর অনুগ্রহ প্রার্থনা কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

৩৩. আর আমি সবার জন্য উত্তরাধিকারী করেছি যা কিছু তাদের পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজন পরিত্যাগ করে যায় এবং তোমাদের দক্ষিণ হাত যাদের সাথে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ; অতএব তোমরা তাদেরকে তাদের অংশ প্রদান কর; নিশ্চয়ই আল্লাহ সব বিষয়ে সাক্ষী।

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصَلِّيهِ
نَارًا ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾

إِنْ تَجْتَنِبُوا كِبَايَرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلَكُمْ مُدْخَلَ كَرِيمًا ﴿٣١﴾

وَلَا تَتَّبِعُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ
لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ
مِمَّا اكْتَسَبْنَ ۖ وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾

وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ
وَالْأَقْرَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَأَوْهَهُمْ
نَصِيبُهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঈমান ধ্বংসকারী সাতটি বিষয় হ'তে বেচে থাক। সাহাবাগণ বললেনঃ হে আল্লাহর রাসূল! সেই বিষয়গুলি কি? তিনি বললেনঃ (১) আল্লাহর সাথে শিরক করা, (২) যাদু করা, (৩) আল্লাহর যথার্থ কারণ ব্যতীত যাকে হত্যা করা নিষিদ্ধ করেছেন তাকে হত্যা করা, (৪) সুদ খাওয়া, (৫) (অন্যায়ভাবে) ইয়াতীমের সম্পদ খাওয়া, (৬) যুদ্ধ চলাকালে জেহাদের ময়দান হতে পলায়ন করা, (৭) সত্য-সাধবী মুসলিম রমনীর ওপর ব্যভিচারের মিথ্যারোপ করা, যে কখনও তা কল্পনাও করেনা। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৬৬)

৩৪. পুরুষগণ নারীদের উপর কর্তৃত্বশীল, যেহেতু আল্লাহ তাদের মধ্যে একের উপর অপরকে প্রাধান্য দান করেছেন এবং এ হেতু যে, তারা স্বীয় ধন-সম্পদ হতে ব্যয় করে থাকে; সুতরাং যে সমস্ত নারী পুণ্যবতী তারা আনুগত্য করে, আল্লাহর সংরক্ষিত প্রাচলন বিষয় সংরক্ষণ করে এবং যদি নারীগণের অবাধ্যতার আশঙ্কা হয়, তবে তাদেরকে সদুপদেশ প্রদান কর এবং তাদেরকে শয্যা হতে পৃথক কর ও তাদেরকে প্রহার কর, অনন্তর যদি তারা তোমাদের অনুগত হয়, তবে তাদের জন্যে অন্য পস্থা অবলম্বন করো না; নিশ্চয়ই আল্লাহ সমুন্নত, মহীয়ান।

৩৫. আর যদি তোমরা উভয়ের মধ্যে বিচ্ছেদের আশঙ্কা কর, তবে উভয়ের পরিবার হতে একজন করে বিচারক পাঠাও; যদি তারা দু'জনই মীমাংসা আকাঙ্ক্ষা করে তবে আল্লাহ তাদের উভয়ের মধ্যে সম্প্রীতি সঞ্চার করবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাজ্ঞানী, অভিজ্ঞ।

৩৬. এবং তোমরা আল্লাহরই ইবাদত কর এবং তাঁর সাথে কোন বিষয়ে অংশী স্থাপন করো না এবং পিতা-মাতার সাথে সদ্ব্যবহার কর এবং আত্মীয়-স্বজনগণ, ইয়াতীমগণ, দরিদ্রগণ, সম্পর্কীয় প্রতিবেশী ও সম্পর্ক বিহীন প্রতিবেশী, পার্শ্ববর্তী সহচর ও পৃথিক এবং তোমাদের দক্ষিণ হাত যাদের অধিকারী তাদের সাথেও সদ্ব্যবহার কর; নিশ্চয়ই

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ وَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ وَالَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ ۚ فَإِن أَطَعْتُم فَلَآ تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾

وَأِن خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُّوقِئِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّا اللَّهُ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٥﴾

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ﴿٣٦﴾

আল্লাহ অহংকারী আত্মাভিমानीকে
ভালবাসেন না।

৩৭. যারা কৃপণতা করে ও
লোকদেরকে কার্পণ্য করার আদেশ
করে আর আল্লাহ স্বীয় সম্পদ হতে
যা দান করেছেন তা গোপন করে
এবং আমি অবিশ্বাসীদের জন্যে
অপমানজনক শাস্তি প্রস্তুত করে
রেখেছি।^১

৩৮. এবং যারা লোকদেরকে
দেখাবার জন্যে স্বীয় ধন-সম্পদ ব্যয়
করে এবং আল্লাহর প্রতি ও
পরকালের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে
না, আর যাদের সহচর শয়তান, সে
নিকৃষ্ট সঙ্গীই বটে।

৩৯. আর এতে তাদের কী হতো,
যদি তারা আল্লাহ ও পরকালের প্রতি
বিশ্বাস স্থাপন করতো এবং আল্লাহ
তাদেরকে যা প্রদান করেছেন তা
হতে ব্যয় করতো? এবং আল্লাহ
তাদের বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

৪০. নিশ্চয়ই আল্লাহ বিন্দুমাত্র
অত্যাচার করেন না এবং যদি কোন
সৎকার্য থাকে তবে তিনি ওটা
দ্বিগুণিত করেন এবং আল্লাহ তাঁর
নিকট হতে মহান প্রতিদান প্রদান
করেন।^২

الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَ
يَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ط وَاعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ﴿٣٧﴾

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا
يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ط وَمَنْ يَكُنْ
الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ﴿٣٨﴾

وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَ
انْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ ط وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ﴿٣٩﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ط وَإِنْ تَكُ
حَسَنَةً يُضْعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا
عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ প্রতিদিন প্রত্যুষে যখন বান্দারা ঘুম থেকে ওঠে তখন দু'জন ফেরেশতা আসমান থেকে নেমে আসে। তাদের একজন এই দু'আ করতে থাকে হে আল্লাহ! দানশীলকে পুরস্কৃত কর এবং অপরজন এই বলে দু'আ করতে থাকে হে আল্লাহ বখিল ও কৃপণকে ধ্বংস কর। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৪২)

২। আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। (তিনি বলেছেনঃ) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সময়ে কিছু লোক তাঁকে জিজ্ঞেস করলো, হে আল্লাহর রাসূল! কিয়ামতের দিন আমরা কি আমাদের রবকে দেখতে পাবো। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ হ্যাঁ, দেখতে পাবে।

৪১. অনন্তর তখন কী দশা হবে, যখন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে সাক্ষী আনয়ন করবো এবং তোমাকেই তাদের প্রতি সাক্ষী করবো?

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ۗ

৪২. যারা অবিশ্বাসী হয়েছে ও রাসূলের বিরুদ্ধাচরণ করেছে, তারা সেদিন কামনা করবে, যেন ভূমন্ডল তাদের সাথে সমতল হয় এবং আল্লাহর নিকট তারা কোন কথাই গোপন করতে পারবে না।

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُوا الرَّسُولَ
لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ
حَدِيثًا ۗ

মেঘমুক্ত আকাশে দিনের আলোতে সূর্যকে দেখতে কি তোমাদের কোন অসুবিধা হয়? সবাই জবাব দিলো, না। তিনি বললেনঃ পূর্ণিমার রাতে মেঘমুক্ত আকাশে চাঁদ দেখতে কি তোমাদের কোন অসুবিধা হয়? সবাই জবাব দিলো না। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ এভাবে চাঁদ ও সূর্যের কোন একটিকে দেখতে তোমরা যতখানি অসুবিধা মনে করো কিয়ামতের দিন আল্লাহকে দেখতে ততটুকু অসুবিধা মাত্র হবে। কিয়ামতের দিন একজন ঘোষক ঘোষণা করবে, প্রত্যেক ব্যক্তি যে যার ইবাদত করতে, সে তার সাথে দলভুক্ত হয়ে যাও। সুতরাং যারা আল্লাহ ছাড়া মূর্তি বা পাথরের পূজা করতো তারা সবাই দোষে নিষ্কিঞ্চ হবে একজনও অবশিষ্ট থাকবে না। অবশেষে যখন আল্লাহর ইবাদতকারী নেককার, গোনাহ্গার ও দু'চারজন আহলে কিতাব ছাড়া আর কেউ-ই অবশিষ্ট থাকবে না। তখন ইয়াহূদীদের ডেকে বলা হবে, তোমরা কার ইবাদত করতে? তারা বলবে আমরা আল্লাহর বেটা উয়ায়েরের ইবাদত করতাম। তখন তাদের বলা হবে, তোমরা মিথ্যা কথা বললে। আল্লাহ কাউকে স্ত্রী বা সন্তান হিসেবে গ্রহণ করেনি। তোমরা কি চাও? তারা বলবেঃ হে আমাদের রব! আমরা পিপাসার্ত হয়ে পড়েছি। আমাদের পানি পান করতে দিন। তখন তাদেরকে মরীচিকার মতো একটি প্রান্তর দেখিয়ে বলা হবে যে, সেখানে যাও। এভাবে তাদের সবাইকে এমন আশ্বিনের মধ্যে একত্রিত করা হবে, যার এক অংশ আর এক অংশকে আক্রমণ করেছে এভাবে তারা সবাই দোষে পতিত হবে। তারপর নাসারা (খ্রিস্টান)-দেরকে ডাকা হবে। তাদেরকে বলা হবে, তোমরা কার ইবাদত ও দাসত্ব করতে? তারা বলবে, আমরা আল্লাহর বেটা ঈসা মসীহর ইবাদত করতাম। তখন তাদেরকে বলা হবে, তোমরা মিথ্যাবাদী। আল্লাহ তা'আলা কাউকে স্ত্রী বা সন্তানরূপে গ্রহণ করেন নি। তাদেরকে বলা হবে তোমরা কি চাও? জবাবে তারাও পূর্বের লোকদের অনুরূপ বলবে। (অর্থাৎ ইয়াহূদীদের মতো তারাও বলবে, আমরা পিপাসার্ত হয়ে পড়েছি, আমাদেরকে পানি পান করান।) অবশেষে আল্লাহর ইবাদতকারী নেককার ও গোনাহ্গার লোক ছাড়া আর কেউ অবশিষ্ট থাকবে না। তখন গোটা বিশ্বজাহানের রব আল্লাহ তা'আলা তাদের কাছে এমন সাধারণ আকৃতিতে আগমন করবেন, যে আকৃতিতে তারা ইতিপূর্বে তাকে দেখেছে। তাদের জিজ্ঞেস করা হবে, তোমরা কিসের জন্য অধীর আগ্রহে অপেক্ষা করছো? প্রত্যেকেই তখন নিজ নিজ উপাস্যের দলভুক্ত হয়ে যাবে। তখন তারা (আল্লাহর ইবাদতকারী) বলবে, দুনিয়ায় যখন আমাদের সর্বাপেক্ষা বেশি প্রয়োজন ছিলো তখন আমরা লোকদেরকে বর্জন করেছিলাম। এমনকি তাদের সাহচর্যই আমরা পরিত্যাগ করেছিলাম। আমরা যে রবের ইবাদত ও দাসত্ব করতাম, এখন তার জন্য অপেক্ষা করছি। আল্লাহ তা'আলা তখন বলবেনঃ আমিই তোমাদের রব বা প্রভু। তখন তারা বলবে, আমরা আল্লাহর সাথে কোন কিছুকে শরীক করি না। একথা তারা দু' অথবা তিনবার বলবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৮১)

৪৩. হে মু'মিনগণ! নেশাশস্ত্র অবস্থায় যে পর্যন্ত না স্বীয় বাক্য হৃদয়ঙ্গম করতে পার এবং পথচারী অবস্থায় থাকা ব্যতীত গোসল না করা পর্যন্ত অপবিত্রাবস্থায় নামাযের নিকটবর্তী হয়ো না এবং যদি তোমরা পীড়িত হও কিংবা সফরে অবস্থান কর অথবা তোমাদের মধ্যে কেউ পায়খানা হতে প্রত্যাগত হয় কিংবা রমণী স্পর্শ (সম্প্রোগ) করে এবং পানি না পাও, তবে মাটি দ্বারা তায়ামুম কর, তার দ্বারা তোমাদের মুখমণ্ডল ও হাত সমূহ মুছে ফেল; নিশ্চয়ই আল্লাহ মার্জনাকারী, ক্ষমাশীল।

৪৪. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যাদেরকে গ্রহের এক অংশ প্রদত্ত হয়েছে? তারা ভ্রান্তপথ ক্রয় করেছে এবং কামনা করে যে, তুমিও পথভ্রান্ত হও।

৪৫. এবং আল্লাহ তোমাদের শত্রুকুলকে সম্যক পরিজ্ঞাত আছেন; এবং আল্লাহই যথেষ্ট পৃষ্ঠপোষক এবং আল্লাহই যথার্থ সাহায্যকারী।

৪৬. ইয়াহুদীদের মধ্যে কেউ কেউ যথাস্থান হতে বাক্যাবলী বিকৃত করে এবং বলেঃ আমরা শ্রবণ করলাম ও অগ্রাহ্য করলাম; আরো বলে শোন, না শোনার মত এবং তারা স্বীয় জিহ্বা কুঞ্চিত করে ও ধর্মের প্রতি দোষারোপ করে বলে, “রায়েনা” (আমাদের রাখাল) যদি তারা বলতোঃ আমরা শুনলাম ও অনুসরণ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَرَىٰ
حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ
حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ
أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ الْغَايِبِ أَوْ لَسْتُمْ مِنَ
النِّسَاءِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَبَّيْتُمْ صَعِيدًا طَيِّبًا
فَأَمْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا
غَفُورًا ﴿٤٣﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ
يَشْتَرُونَ الضَّلَاةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ط وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا ۖ
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهَا
وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَسْمَعُ غَيْرَ مُسْمِعٍ
وَرَاعِنَا لَيْتَا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنَا فِي الدِّينِ ط وَلَوْ أَنَّهُمْ
قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأَسْمَعُ وَانظُرْنَا لَكَانَ
خَيْرًا لَهُمْ وَأَقْوَمًا وَلَكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾

১। স্পর্শ দ্বারা এখানে সহবাস বা সঙ্গম উদ্দেশ্যে।

করলাম, এবং সুনুন ও আমাদের প্রতি লক্ষ্য রাখুন তাহলে এটা তাদের পক্ষে উত্তম ও সুসঙ্গত হতো; কিন্তু আল্লাহ তাদের অবিশ্বাসহেতু তাদেরকে অভিসম্পাত করেছেন; অতএব অল্প সংখ্যক ব্যতীত তারা বিশ্বাস করে না।

৪৭. হে গ্রহ প্রাণুগণ! তোমাদের সঙ্গে যা আছে তার সত্যতা সত্যায়নকারী যা অবতীর্ণ করেছি তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর; এর পূর্বে যে, আমি বহু মুখমণ্ডল বিকৃত করে দেব, তৎপর তাদেরকে পৃষ্ঠের দিকে উল্টিয়ে দেব অথবা শনিবারীদের প্রতি যেরূপ অভিসম্পাত করেছিলাম তদ্রূপ তাদের প্রতি অভিসম্পাত করবো এবং আল্লাহর আদেশ সুসম্পন্ন হয়েই থাকে।

৪৮. নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর সাথে অংশীস্থাপন করলে তাকে ক্ষমা করবেন না এবং তদ্ব্যতীত যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করবেন এবং যে কেউ আল্লাহর অংশী স্থির করে, সে মহাপাপে জড়িয়ে মিথ্যা রচনা করলো।^১

৪৯. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি যারা স্বীয় পবিত্রতা প্রকাশ করে? বরং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পবিত্র

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آؤْتُوا الْكِتَابَ ائْمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَطِيسَ وُجُوهًا فَتَرُدَّهَا عَلَى أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعْنَا أَصْحَابَ السَّبْتِ ط وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزُكُّونَ أَنفُسَهُمْ ط بَلِ اللَّهُ

১। আনাস (রাখিআল্লাহ আনহ) সরাসরি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। আল্লাহ্ জাহান্নামবাসীদের সবচেয়ে লঘুদন্ড ও সহজ শাস্তি ভোগকারীকে জিজ্ঞেস করবেন, যদি দুনিয়ার সমস্ত ধন-সম্পদ (এখন) তোমার হাশিল হয়ে যায়। তাহলে এ আঘাবের বিনিময়ে তুমি কি তা সব দিয়ে দেবে? সে জবাবে বলবে হ্যাঁ। তিনি বলবেনঃ আমি এর চেয়েও সহজ জিনিস তোমার নিকট চেয়েছিলাম যখন তুমি আদম (আলাইহিসসালামের) পিঠে ছিলে যে, তুমি আমার সাথে শিরক করিওনা, তুমি তা না মেনে শিরক করেছ। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৩৪)

করেন এবং তারা সূত্র (সূতা) পরিমাণও অত্যাচারিত হবে না।

৫০. লক্ষ্য কর, তারা কিরূপে আল্লাহর প্রতি মিথ্যা অপবাদ দিচ্ছে! এবং এটি স্পষ্ট অপরাধী হওয়ার জন্যে যথেষ্ট।

৫১. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি যাদেরকে গ্রন্থের একাংশ প্রদত্ত হয়েছে? তারা প্রতিমা ও শয়তানের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং অশিষ্টদেরকে বলে যে, বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ অপেক্ষা তারাই অধিকতর সুপথগামী।

৫২. এদেরই প্রতি আল্লাহ অভিসম্পাত করেছেন এবং আল্লাহ যাকে অভিসম্পাত করেন, তুমি তার জন্যে কোনই সাহায্যকারী পাবে না।

৫৩. তবে কি রাজত্বে তাদের জন্যে কোন অংশ রয়েছে? বস্তুতঃ তখন তারা লোকদেরকে খেজুর কণাও প্রদান করবে না।

৫৪. তবে কি তারা লোকদের প্রতি এ জন্যে হিংসা করে যে আল্লাহ তাদেরকে স্বীয় সম্পদ হতে কিছু দান করেছেন? ফলতঃ নিশ্চয়ই আমি ইবরাহীম বংশীয়গণকে গ্রন্থ ও বিজ্ঞান দান করেছি এবং তাদেরকে বিশাল সাম্রাজ্য প্রদান করেছি।

৫৫. অনন্তর তাদের মধ্যে অনেকেই ওর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে এবং অনেকেই ওটা হতে বিরত রয়েছে; এবং (তাদের জন্যে) অগ্নি স্ফুলিঙ্গ বিশিষ্ট জাহান্নামই যথেষ্ট।

يُرِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٥٠﴾

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَفَى بِهِ
إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥١﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أَوْتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ
بِالْحَبِيبِ وَالْقَائِمَاتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ
أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ﴿٥٢﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ط وَمَنْ يَلْعَنِ اللَّهُ
فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ﴿٥٣﴾

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذَا لَا يُؤْتُونَ
النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٤﴾

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ
فَضْلِهِ ط فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٥﴾

فِيهِمْ مَن آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَن صَدَّ عَنْهُ ط
وَكَفَىٰ بِهِمْ سَعِيرًا ﴿٥٦﴾

৫৬. নিশ্চয়ই যারা আমার নির্দেশনসমূহের প্রতি অবিশ্বাসী হয়েছে তাদেরকে অবশ্যই আমি অগ্নিকুণ্ডে দাখিল করবো; যখন তাদের চর্ম বিদগ্ধ হবে, আমি তৎপরিবর্তে তাদের চর্ম পরিবর্তিত করে দেবো যেন তারা শাস্তির আন্বাদ গ্রহণ করে, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতীব সম্মানী, প্রজ্ঞাময়।

৫৭. যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎ কার্যাবলী সম্পাদন করেছে, নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে জান্নাতসমূহে দাখিল করবো— যার নিম্নে শ্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে; সেখানে তাদের জন্যে পূত-পবিত্র সহধর্মিণীগণ রয়েছে এবং আমি তাদেরকে ছায়াশীতল স্থানে দাখিল করবো।

৫৮. নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদেরকে আদেশ করেছেন যে, গচ্ছিত (আমানত) বুঝিয়ে দাও ওর অধিকারীকে এবং যখন তোমরা লোকদের মধ্যে বিচার-মীমাংসা কর, তখন ন্যায় বিচার কর; অবশ্যই আল্লাহ তোমাদেরকে উত্তম উপদেশ দান করছেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ শ্রবণকারী, পরিদর্শক।

৫৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর অনুগত হও ও রাসূলের অনুগত হও

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصَلِّيهِمْ نَارًا ط
كَلِمًا نَضِجَتْ جُودُهُمْ بَدَلَهُمْ جُودًا غَيْرَهَا
لِيَدُوقُوا الْعَذَابَ ط إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ⑤

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ط لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرُؤْدَةُ خُلُوفٍ ط
ظِلًّا ظِلِيلًا ⑥

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا ط
وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ط
إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ط إِنَّ اللَّهَ كَانَ
سَمِيعًا بَصِيرًا ⑦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন: জান্নাতে এমন একটি বৃক্ষ আছে এর ছায়ায় যদি কোন যান-বাহনে আরোহণকারী ভ্রমণ করতে চায় তাহলে একশত বছর ভ্রমণ করতে পারবে। তোমরা ইচ্ছা করলে এ আয়াত পড়তে পার। অর্থ: “সম্প্রসারিত ছায়া”। (সূরা: ওয়াকিয়াহ, আয়াত: ৩০) (বুখারী, হাদীস নং ৩২৫২)

এবং তোমাদের অন্তর্গত আদেশ-দাতাগণের; অতঃপর যদি তোমাদের মধ্যে কোন বিষয়ে কোন মতবিরোধ হয় তবে আল্লাহ ও রাসূলের দিকে প্রত্যাবর্তিত হও— যদি তোমরা আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস করে থাক; এটাই কল্যাণকর ও শ্রেষ্ঠতর সমাধান।

৬০. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যারা ধারণা করে যে, তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে এবং তোমার পূর্বে যা অবতীর্ণ হয়েছিল তৎপ্রতি তারা বিশ্বাস করে, অথচ তারা নিজেদের মোকদ্দমা শয়তানের নিকট নিয়ে যেতে চায়, যদিও তাদেরকে আদেশ করা হয়েছিল, যেন তাকে অশিষ্টাচার করে এবং শয়তান ইচ্ছা করে যে, তাদেরকে সত্যের পথ থেকে বহু দূরে নিয়ে গিয়ে বিভ্রান্ত করে ফেলবে।

৬১. আর যখন তাদেরকে বলা হয় যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন সেদিকে এবং রাসূলের দিকে এসো, তখন তুমি মুনাফিকদেরকে দেখবে, তারা তোমার থেকে বিমুখ হয়ে বিচ্ছিন্ন রয়েছে।

৬২. অনন্তর তখন কিরূপ হবে, যখন তাদের হাতসমূহ যা পূর্বে প্রেরণ করেছে, তজ্জন্যে তাদের উপর বিপদ উপনীত হবে? তখন তারা আল্লাহর শপথ করতে করতে তোমার দিকে আসবে যে কল্যাণ ও স্পষ্টীতি ব্যতীত আমরা কিছুই কামনা করিনি।

وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٦٠﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ وَمَا أَنْزَلَ مِنْ قَبْلِكَ يَرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا كُفْرًا إِلَى الظَّالِمِينَ وَقَدْ أُمرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦١﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦٢﴾

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ ﴿٦٣﴾ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٤﴾

৬৩. তাদের অন্তরসমূহে যা আছে, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন; অতএব তুমি তাদের দিক হতে নির্লিপ্ত হও ও তাদেরকে সদুপদেশ প্রদান কর এবং তাদেরকে তাদের সম্বন্ধে হৃদয় স্পর্শী কথা বল।

৬৪. আমি এতদ্ব্যতীত কোনই রাসূল প্রেরণ করিনি যে, আল্লাহর আদেশে তাদের আনুগত্য স্বীকার করা হবে, এবং যদি তারা স্বীয় জীবনের উপর অত্যাচার করার পর তোমার নিকট আগমন করতো, তৎপর আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করতো আর রাসূলও তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট ক্ষমা চাইতেন, তবে নিশ্চয়ই তারা আল্লাহকে তাওবা কবুলকারী, অত্যন্ত করুণাময় হিসেবে পেত।

৬৫. অতএব তোমার প্রতিপালকের শপথ! তারা কখনও বিশ্বাস স্থাপনকারী হতে পারবে না, যে পর্যন্ত তোমাকে তাদের আভ্যন্তরীণ বিরোধের বিচারক হিসেবে মেনে না নিবে, তৎপর তুমি যে বিচার করবে তা দ্বিধাহীন অন্তরে গ্রহণ না করবে এবং ওটা শান্তভাবে পরিগ্রহণ না করবে।

৬৬. আর আমি যদি তাদের উপর বিধিবদ্ধ করতাম যে, তোমরা নিজেদেরকে হত্যা কর অথবা স্বীয় গৃহপ্রাচীর হতে নিষ্কাশ হও, তবে তাদের অল্প সংখ্যক ব্যতীত ওটা করতো না এবং যে বিষয়ে তাদেরকে

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعَظِّمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿١٣﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ط
وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا
اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا
رَّحِيمًا ﴿١٤﴾

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِي مَا شَجَرَ
بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا
قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿١٥﴾

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوْ اخْرَجُوا
مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ ط
وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
وَإَشَدَّ تَنْبِيئًا ﴿١٦﴾

উপদেশ দেয়া হয়েছিল তা যদি তারা করতো তবে নিশ্চয়ই ওটা তাদের জন্যে কল্যাণকর ও অধিকতর সুপ্রতিষ্ঠিত হতো।

৬৭. এবং তখন আমি তাদেরকে অবশ্যই স্বীয় সন্নিধান হতে বৃহত্তর প্রতিদান প্রদান করতাম।

وَأِذَا لَاتَيْنَهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۝

৬৮. এবং নিশ্চয়ই তাদেরকে সরল পথ প্রদর্শন করতাম।

وَلَهَدَيْنَهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

৬৯. আর যে কেউ আল্লাহ ও রাসূলের অনুগত হয়, তবে তারা ঐ ব্যক্তিদের সঙ্গী হবে যাদের প্রতি আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন; অর্থাৎ নবীগণ, সত্য সাধকগণ, শহীদগণ ও সৎকর্মশীলগণ এবং এরাই সর্বোত্তম সঙ্গী।

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصَّادِقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۝

৭০. এটাই আল্লাহর অনুগ্রহ এবং আল্লাহর জ্ঞানই যথেষ্ট।

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عِلِيمًا ۝

৭১. হে মু'মিনগণ! তোমরা স্বীয় সতর্কতা বজায় রেখো, তৎপর পৃথকভাবে বহির্গত হও অথবা সম্মিলিতভাবে অভিযান কর।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا ثُبَاتٍ أَوْ انفِرُوا جَبِيعًا ۝

৭২. আর তোমাদের মধ্যে এরূপ লোকও রয়েছে যে শৈথিল্য করে; অনন্তর যদি তোমাদের উপর বিপদ নিপতিত হয় তবে বলেঃ আমার প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ছিল যে, আমি তখন তাদের সাথে বিদ্যমান ছিলাম না।

وَإِنْ مِنْكُمْ لَكِنَّ يُبْطَلْنَ ۖ فَإِنْ أصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالِ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَاهِدًا ۝

৭৩. এবং যদি আল্লাহর সন্নিধান হতে তোমাদের উপর অনুগ্রহ সম্পদ অবতীর্ণ হয় তবে এরূপভাবে বলে

وَلَكِنْ أصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لِيَقُولُنَّ كَانَ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يُلَيْتُنِي كُنْتُ مَعَهُمْ

যেন তোমাদের মধ্যে ও তার মধ্যে কোনই সম্বন্ধ ছিল না— বস্তুতঃ যদি আমিও তাদের সঙ্গী হতাম তবে মহান ফলপ্রদ সুফল লাভ করতাম।

৭৪. অতএব যারা ইহকালের বিনিময়ে পরকাল ক্রয় করেছে তারা যেন আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে; এবং যে আল্লাহর পথে যুদ্ধ করে তৎপর নিহত অথবা বিজয়ী হয় তবে আমি তাকে মহান প্রতিদান প্রদান করবো।

৭৫. তোমাদের কী হয়েছে যে, তোমরা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করছো না? অথচ অসহায় পুরুষগণ, নারীবৃন্দ এবং শিশুরা বলে যে, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে অত্যাচারী অধিবাসীদের এই নগর হতে বহির্গত করুন এবং স্বীয় সন্নিধান হতে আমাদের পৃষ্ঠপোষক ও নিজের নিকট হতে আমাদের জন্য সাহায্যকারী প্রেরণ করুন।

৭৬. যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে তারা আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে এবং যারা অশিষ্টাঙ্গী হয়েছে তারা শয়তানের পথে যুদ্ধ করে; অতএব তোমরা শয়তানের সুহৃদগণের (বন্ধুগণের) সাথে যুদ্ধ কর; নিশ্চয়ই শয়তানের কৌশল দুর্বল।

৭৭. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যাদেরকে বলা হয়েছিল যেঃ তোমাদের হাতসমূহ সংবরণ রাখ এবং নামায প্রতিষ্ঠিত কর ও যাকাত

فَأَقْوَزَ فَؤُوزًا عَظِيمًا ﴿٧٤﴾

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۗ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فُيَقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٧٥﴾

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالسُّتُضْعَفِينَ
مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا
وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۗ وَاجْعَلْ لَنَا
مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ﴿٧٦﴾

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا
أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا
فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ

প্রদান কর। অনন্তর যখন তাদের প্রতি জিহাদ ফরয করে দেয়া হলো তখন তাদের একদল আল্লাহকে যেরূপ ভয় করে তদ্রূপ মানুষকে ভয় করতে লাগলো বরং তদপেক্ষাও অধিক ভয় এবং তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি কেন আমাদের উপর যুদ্ধ বিধিবদ্ধ করলেন? কেন আমাদেরকে আর কিছুকালের জন্যে অবসর দিলেন না? তুমি বলঃ পার্থিব সম্পদ অকিঞ্চিৎকর এবং আল্লাহ ভীরুগণের জন্যে পরকালই কল্যাণকর এবং তোমরা স্ফীণ সুতা পরিমাণও অত্যাচারিত হবে না।

৭৮. তোমরা যেখানেই থাক মৃত্যু তোমাদেরকে পেয়ে যাবে, যদিও তোমরা সুদূর দুর্গে অবস্থান কর; এবং যদি তাদের উপর কোন কল্যাণ অবতীর্ণ হয় তবে বলেঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে এবং যদি তাদের প্রতি অমঙ্গল নিপতিত হয় তবে বলে যে, এটা তোমার নিকট হতে হয়েছে, তুমি বলঃ সবকিছুই আল্লাহর নিকট হতে হয়; অতএব ঐ সম্প্রদায়ের কী হয়েছে যে, তারা কোন কথা যেন বুঝতেই চায় না।

৭৯. তোমার নিকট যে কল্যাণ উপস্থিত হয় তা আল্লাহর সন্নিধান হতে এবং তোমার উপর যে অমঙ্গল নিপতিত হয় তা তোমার নিজ হতে হয়ে থাকে; এবং আমি তোমাকে মানবমণ্ডলীর জন্যে রাসূলরূপে প্রেরণ করেছি; আর আল্লাহ সাক্ষী হিসেবে যথেষ্ট।

خَشِيَّةٌ ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۗ
كُلًّا أَحْرَقْنَا إِلَىٰ أَجْلِ قَرِيْبٍ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا
قَلِيْلٌ ۗ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَلَا تُظْلَمُونَ
فَتِيْلًا ۝

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَدْرِكَكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ
مُّشِيْدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هٰذِهِ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هٰذِهِ مِنْ
عِنْدِكَ ۗ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۗ فَمَالِ هَؤُلَاءِ
الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيْثًا ۝

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا أَصَابَكَ
مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ ۗ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ
رَسُولًا ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِِيْدًا ۝

৮০. যে কেউ রাসূলের অনুগত হয় নিশ্চয়ই সে আল্লাহরই অনুগত হয়ে থাকে; এবং যে ফিরে যায় আমি তার জন্যে তোমাকে রক্ষকরূপে প্রেরণ করিনি ৷

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّى
فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝

৮১. আর তারা বলেঃ আমরা অনুগত; কিন্তু যখন তারা তোমার নিকট হতে বের হয়ে যায় তখন তাদের একদল— তুমি যা বল তার বিরুদ্ধে শলা-পরামর্শ করে এবং তারা যা শলা-পরামর্শ করে আল্লাহ তা লিপিবদ্ধ করেন; অতএব তাদের প্রতি বিমুখ হও ও আল্লাহর উপর নির্ভর কর; এবং আল্লাহই কার্য সম্পাদনে যথেষ্ট ৷

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبْهِتُونَ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

৮২. তারা কেন কুরআন নিয়ে গবেষণা করে না? আর যদি ওটা আল্লাহ ব্যতীত অন্য কারও নিকট হতে হতো তবে তারা ওতে বহু গরমিল পেতো ৷

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ ط وَكَوْكَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوْ جَادُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۝

৮৩. আর যখন তাদের নিকট কোন শান্তি বা ভীতিজনক বিষয় উপস্থিত হয় তখন তারা ওটা প্রচার করতে থাকে এবং যদি তারা ওটা রাসূলের ও তাদের আদেশদাতাদের প্রতি

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوْ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ط وَكَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ ط وَكَوْ لَا فَضْلُ

১। (ক) আবু মুসা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন যে, তিনি বলেছেন যে, (কোফেরদের হাতে মুসলিম) বন্দীদেরকে মুক্ত করে আন এবং দাওয়াতকারীর দাওয়াত গ্রহণ কর। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৭৩)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমার উম্মতের সকল লোক জান্নাতে প্রবেশ করবে; কিন্তু যে অস্বীকার করেছে (সে জান্নাতবাসী হতে পারবে না)। জিজ্ঞাসা করা হলঃ কে অস্বীকার করেছে, হে রাসূল? উত্তরে বললেনঃ যে আমার অনুসরণ করল সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। আর যে ব্যক্তি আমার অনুসরণ করল না, সে অস্বীকার করল। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮০)

সমর্পণ করতো তবে তাদের মধ্যে তত্বানুসন্ধিৎসুগণ ওটা উপলব্ধি করতো, এবং যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও করুণা না হতো তবে অল্প সংখ্যক ব্যতীত তোমরা শয়তানের অনুসরণ করতে।

اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَا تَبَعْتُمْ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٥﴾

৮৪. অতএব আল্লাহর পথে যুদ্ধ কর; তোমার নিজের ছাড়া তোমার উপর অন্য কোন ভার অর্পণ করা হয়নি এবং বিশ্বাসীদেরকে উদ্বুদ্ধ কর; অচিরেই আল্লাহ অবিশ্বাসীদের সংগ্রাম প্রতিরোধ করবেন এবং আল্লাহ শক্তিতে সুদৃঢ় ও শান্তি দানে কঠোর।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكْفِرْ إِلَّا نَفْسَكَ
وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿٥٦﴾

৮৫. যে কেউ সৎ সুপারিশ করবে সে ওর দরুন অংশ পাবে এবং যে কেউ অসৎ সুপারিশ করবে সে ওর দরুন অংশপ্রাপ্ত হবে এবং আল্লাহ সর্ববিষয়ে শক্তিদাতা।

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِمَّهَا ۗ
وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِمَّهَا ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيبًا ﴿٥٧﴾

৮৬. আর যখন তোমরা শুভাশিষ্যে সালাম ও অভিবাদন প্রাপ্ত হও, তবে তোমরাও তা হতে শ্রেষ্ঠতর শুভ সম্ভাষণ কর অথবা ওটাই প্রত্যর্পণ কর; নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে হিসাব গ্রহণকারী।^১

وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ۗ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٥٨﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আল্লাহ তা'আলা আদম (আলাইহিস সালাম) কে তাঁর নিজের আকার-আকৃতিতেই সৃষ্টি করেছেন। তাঁর উচ্চতা ছিল ষাট হাত। আল্লাহ তা'আলা তাঁকে সৃষ্টি করে বললেন, যাও, ফেরেশতাদের অবস্থানরত দলকে সালাম করো এবং মন দিয়ে শুনবে, তারা তোমার সালামের কি জবাব দেয়। এটাই হবে তোমার এবং তোমার সন্তানদের সালাম। সুতরাং আদম (আলাইহিস সালাম) গিয়ে বললেন- আসসালামু আলাইকুম। (আপনাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক) ফেরেশতাগণ জবাব দিলেন- আসসালামু আলাইকা ওয়ারাহ্মাতুল্লাহি, (আপনার ওপরও শান্তি এবং আল্লাহর রহমত বর্ষিত হোক)! ফেরেশতাগণ ওয়া রাহ্মাতুল্লাহি অংশ বৃদ্ধি করলেন। অতঃপর যারা বেহেশতে যাবে- তারা প্রত্যেকেই আদম (আলাইহিস সালাম)-এর আকৃতি বিশিষ্ট হবে। তখন থেকে এখন পর্যন্ত মানুষের উচ্চতা ক্রমাগত হ্রাস পেয়েই আসছে। (বুখারী, হাদীস নং ৬২২৭)

৮৭. আল্লাহ ব্যতীত সত্যিকার মা'বুদ কেউ নেই; নিশ্চয়ই এতে সন্দেহ নেই যে, তিনি তোমাদেরকে কিয়ামতের দিনে একত্রিত করবেন এবং আল্লাহ অপেক্ষা কে বেশি সত্যবাদী।

৮৮. অনন্তর তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা মুনাফিকদের সম্বন্ধে দু'দল হলে? এবং তারা যা অর্জন করেছে তজ্জনে আল্লাহ তাদেরকে ফিরিয়ে দিয়েছেন। আল্লাহ যাকে পথভ্রান্ত করেন, তুমি কি তাকে পথ প্রদর্শন করতে চাও? এবং আল্লাহ যাকে পথভ্রান্ত করেছেন, বস্ত্ততঃ তুমি তার জন্যে কোনই পথ পাবে না।

৮৯. তারা ইচ্ছা করে যে, তারা যেরূপ অবিশ্বাস করেছে, তোমরাও তদ্রূপ অবিশ্বাস কর যেন তোমরাও তাদের সদৃশ হও; অতএব তাদের মধ্য হতে বন্ধু গ্রহণ করো না, যে পর্যন্ত না তারা আল্লাহর পথে দেশ ত্যাগ করে; অতঃপর যদি তারা প্রতিগমন করে, তবে তাদেরকে ধর এবং যেখানে পাও তাদেরকে সংহার (হত্যা) কর এবং তাদের মধ্য হতে বন্ধু অথবা সাহায্যকারী গ্রহণ করো না।

৯০. কিন্তু তোমাদের মধ্যে ও তাদের মধ্যে সন্ধিবন্ধ সম্প্রদায়ের সাথে যারা সম্মিলিত হয়, অথবা তোমাদের সাথে অথবা তাদের সম্প্রদায়ের সাথে যুদ্ধ করতে সংকুচিত চিত্ত হয়ে যারা তোমাদের নিকট উপস্থিত হয়, এবং যদি আল্লাহ ইচ্ছা করতেন

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُجَمِّعُكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةٍ وَاللَّهُ أَرَكَّهُمْ بِمَا كَسَبُوا أَ تَرِيدُونَ أَنْ تَهْتَدُوا وَمَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝

وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يَهَابُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ ۖ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمِ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَنْ يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنْ اعْتَذَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ

তবে তোমাদের উপর তাদেরকে শক্তিশালী করতেন, তাহলে নিশ্চয়ই তারা তোমাদের সাথে সংগ্রাম করতো; অতঃপর যদি তারা তোমাদের দিক হতে নিবৃত্ত হয় এবং তোমাদের সাথে সংগ্রাম না করে এবং তোমাদের নিকট সন্ধি প্রার্থনা করে, তবে আল্লাহ তাদের প্রতিকূলে তোমাদের জন্যে কোন পছন্দ রাখেন নি।

৯১. অচিরেই তুমি কতক লোককে এমনও পাবে, যারা তোমাদের দিক হতে নিরাপত্তা পেতে চায় ও স্বীয় সম্প্রদায় হতেও নিরাপত্তার নিশ্চয়তা চায়। যখন তাদেরকে ফেতনার (সন্ত্রাসের) দিকে মনোনিবেশ করানো হয় তখন তারা তাতেই জড়িয়ে পড়ে। অনন্তর যদি তারা তোমাদের দিক হতে নিবৃত্ত না হয় ও সন্ধি প্রার্থনা না করে এবং তাদের হাতসমূহ সংযত না রাখে, তবে তাদেরকে ধর এবং যেখানে পাও তাদেরকে সংহার কর; এদেরই বিরুদ্ধে আমি তোমাদেরকে সুস্পষ্ট ক্ষমতা প্রদান করেছি।

৯২. কোন মু'মিনের উচিত নয় যে, ভ্রম ব্যতীত কোন মু'মিনকে হত্যা করে; যে কেউ ভ্রমবশতঃ কোন মু'মিনকে হত্যা করে, তবে সে একজন মু'মিন দাসকে মুক্ত করে দেবে এবং তার আত্মীয়-স্বজনগণকে হত্যা-বিনিময় (রক্তপণ) সমর্পণ করবে; কিন্তু হ্যাঁ, তবে যদি তারা

وَالْقَوَالِيكُمْ السَّلَامَ لِمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ
سَيِّئًا ⑩

سَتَجِدُونَ الْخَوَافِيكُمْ يَوْمَئِذٍ مُّؤْمِنِينَ أَرَأَيْتُمْ كَيْفَ يَمُوتُوكُمْ
وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ ط كَلِمًا رُّدًّا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكَسُوا
فِيهَا ④ فَإِنْ لَمْ يَعْتَرِزْ لَكُمْ وَيُقْوَا إِلَيْكُمْ السَّلَامَ
وَيَكْفُوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ
ثَقَفْتُمُوهُمْ ط وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا
مُّبِينًا ⑪

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَا ④
وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ
وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهَا إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا ط فَإِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ
رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ط وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ

ক্ষমা করে দেয়, অনন্তর যদি সে তোমাদের শত্রু সম্প্রদায়ের অন্তর্গত ও মু'মিন হয় তবে একজন মু'মিন দাসকে মুক্তি দান করবে এবং যদি সে তোমাদের মধ্যে ও তাদের মধ্যে সন্ধিবদ্ধ সম্প্রদায়ের অন্তর্গত হয় তবে তার স্বজনদেরকে হত্যা-বিনিময় অর্পণ করবে এবং একজন মু'মিন দাসকে মুক্ত করবে; কিন্তু যদি সে ওটা প্রাপ্ত না হয় (সামর্থহীন হয়), তবে আল্লাহর নিকট হতে ক্ষমা প্রাপ্তির জন্যে ক্রমাগত দু'মাস রোযা রাখবে এবং আল্লাহ মহাজ্জানী, প্রজ্জাময়।

৯৩. আর যে কেউ স্বেচ্ছায় কোন মু'মিনকে হত্যা করবে তার শাস্তি হবে জাহান্নাম, তন্মধ্যে সে সদা অবস্থান করবে এবং আল্লাহ তার প্রতি ক্রুদ্ধ ও তাকে অভিশপ্ত করেন এবং তার জন্যে ভীষণ শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছেন।^১

৯৪. হে মু'মিনগণ! যখন তোমরা আল্লাহর পথে বহির্গত হও তখন প্রত্যেক কাজ তথ্য নিয়ে করো এবং কেউ তোমাদেরকে 'সালাম' করলে তাকে বলো না যে, তুমি মু'মিন নও; তোমরা কি পার্থিব জীবনের সম্পদের প্রত্যাশা করছো? তবে আল্লাহর নিকট প্রচুর সম্পদ রয়েছে; প্রথমে তোমরা এরূপই ছিলে, অতঃপর

وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ قَدِيمٌ مَّسْلَمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ
وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٤﴾

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَدِّيًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ
خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعْنَةُ
وَاعَدَ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَتَيَبَّسْتُمْ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْفَىٰ إِلَيْكُمْ السَّلَامَ لَسْتَ
مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَوَعَدَ
اللَّهُ مَعَكُمْ كَثِيرَةً مِّنْ كَذَلِكَ ۖ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ
فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَيَبَّسْتُمْ وَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٦﴾

১। আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এরশাদ করেছেনঃ একজন মু'মিন ব্যক্তি তার ধ্বিনের ব্যাপারে পূর্ণভাবে আজাদীর মধ্যে থাকে যদি না সে কোন ব্যক্তিকে অবৈধভাবে হত্যা করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৬২)

আল্লাহ তোমাদের উপর অনুগ্রহ করেছেন; অতএব তোমরা স্থির করে নাও যে, তোমরা যা করছো নিশ্চয়ই আল্লাহ সে বিষয়ে পূর্ণ অবগত।

৯৫. মু'মিনদের মধ্যে যারা কোন দুঃখ-পীড়া ব্যতীতই গৃহে বসে থাকে, আর যারা স্বীয় ধন ও প্রাণ দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করে, তারা সমান নয়; আল্লাহ ধন-প্রাণ দ্বারা জিহাদকারীগণকে উপবিস্তৃগণের উপর পদ-মর্যাদায় গৌরবান্বিত করেছেন এবং সকলকেই আল্লাহ কল্যাণপ্রদ প্রতিশ্রুতি দান করেছেন এবং উপবিস্তৃগণের উপর জিহাদ-কারীগণকে মহান প্রতিদানে গৌরবান্বিত করেছেন।

৯৬. স্বীয় সন্নিধান হতে পদ-মর্যাদা ক্ষমা ও করুণা (দ্বারা গৌরবান্বিত করেছেন) এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

৯৭. নিশ্চয়ই যারা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করেছিল, ফেরেশতা তাদের প্রাণ হরণ করে বলবে: তোমরা কি অবস্থায় ছিলে? তারা বলবে: আমরা দুনিয়ায় অসহায় অবস্থায় ছিলাম; তারা বলবে: আল্লাহর পৃথিবী কি প্রশস্ত ছিল না যে, তন্মধ্যে তোমরা হিজরত করতে পারতে? অতএব ওদেরই বাসস্থান জাহান্নাম এবং ওটা নিকৃষ্ট গন্তব্য স্থান।

৯৮. কিন্তু পুরুষ, নারী এবং শিশুগণের মধ্যে অসহায়তাবশতঃ

لَا يَسْتَوِي الْقَعْدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَعْدِينَ دَرَجَةً ط وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَى ط وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَعْدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾

دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ط وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٩٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْنَاهُمُ الْبَالِغَةَ ظَالِمِينَ أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ ط قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ط قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضَ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ط فَأُولَئِكَ مَا لَهُمْ جَهَنَّمُ ط وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿٩٧﴾

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَ

যারা কোন উপায় করতে পারে না অথবা কোন পথ প্রাপ্ত হয় না।

الْوٰلِدٰنِ لَا يَسْتَطِيعُوْنَ حِيَلًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ
سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾

৯৯. ফলতঃ তাদেরই আশা আছে যে, আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন এবং আল্লাহ মার্জনাকারী, ক্ষমাশীল।

فَاُوْلٰئِكَ عَسَىٰ اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ط وَكَانَ اللّٰهُ
عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾

১০০. আর যে কেউ আল্লাহর পথে দেশত্যাগ করবে, সে পৃথিবীতে বহু প্রশস্ত স্থান ও স্বচ্ছলতা প্রাপ্ত হবে, এবং যে কেউ গৃহ হতে বহির্গত হয়ে আল্লাহ ও রাসূলের উদ্দেশ্যে দেশ ত্যাগ করে, তৎপর সে মৃত্যু মুখে পতিত হয়, তবে নিশ্চয়ই এর প্রতিদান আল্লাহর উপর ন্যস্ত রয়েছে; এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَمَنْ يُّهٰجِرْ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ
مُرٰغِبًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ط وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ
بَيْتِهٖ مُهٰجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُوَدِّرْهُ
الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ط وَكَانَ اللّٰهُ
عَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾

১০১. আর যখন তোমরা ভূ-পৃষ্ঠে পর্যটন কর, তখন নামায সংক্ষেপ (কসর) করলে তোমাদের কোন অপরাধ নেই, যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে, যারা অবিশ্বাসকারী তারা তোমাদেরকে বিব্রত করবে; নিশ্চয়ই অবিশ্বাসীরা তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ
تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمْ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا
مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

১০২. এবং যখন তুমি তাদের মধ্যে থাক, তখন তাদের জন্যে (নামাযে ইমামত করবে) নামায প্রতিষ্ঠিত কর, যেন তাদের একদল তোমার সাথে দণ্ডায়মান হয় এবং স্ব-স্ব অস্ত্র গ্রহণ করে; অতঃপর যখন সিজদাহ সম্পন্ন করে তখন যেন তারা তোমার পশ্চাৎবর্তী হয় এবং অন্য দল যারা নামায পড়েনি তারা যেন অগ্রসর হয়ে তোমার সাথে নামায পড়ে এবং স্ব-স্ব সতর্কতা ও অস্ত্র গ্রহণ করে। অবিশ্বাসীরা ইচ্ছে করে যে, তোমরা

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقْبُتْ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ
طٰٓئِفَةٌ مِنْهُمْ مَّعَكَ وَّلْيٰٓاْخُذْ وَّاسْلِحْهُمْ ط
فَاِذَا سَجَدُوْا فَاَقْلِبْكُمْ وَّوَلُّوْا مِنْ وَّرَآءِكُمْ وَّلَتَّ اِتِ طٰٓئِفَةٌ
اٰخَرٰى لَمْ يَصَلُّوْا فَاَقْلِبْهُمْ مَّعَكَ وَّلْيٰٓاْخُذْ وَّاجْزٰٓءُهُمْ
وَاسْلِحْهُمْ ط وَّالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ
اَسْلِحْتِكُمْ وَاٰمَنْتِكُمْ فَيَسْبِلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً
وَاحِدَةً ط وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذٰى

স্বীয় অস্ত্র-শস্ত্র ও দ্রব্য সম্ভার সম্বন্ধে অসতর্ক হলেই তারা একযোগে তোমাদের উপর নিপতিত হয় এবং তাতে তোমাদের অপরাধ নেই— যদি তোমরা বৃষ্টিপাতে বিব্রত হয়ে অথবা পীড়িত অবস্থায় স্ব-স্ব অস্ত্র পরিত্যাগ কর এবং স্বীয় সতর্কতা অবলম্বন কর; এবং নিশ্চয়ই আল্লাহ অবিশ্বাসীদের জন্যে অবমাননাকর শাস্তি প্রস্তুত করেছেন।

১০৩. অনন্তর যখন তোমরা নামায সম্পন্ন কর তখন দণ্ডায়মান ও উপবিষ্ট এবং এলায়িত অবস্থায় আল্লাহকে স্মরণ কর; অতঃপর যখন তোমরা নিরাপদ হও তখন নামায প্রতিষ্ঠিত কর; নিশ্চয়ই নামায বিশ্বাসীগণের উপর নির্দিষ্ট সময়ের জ্ঞন্য নির্ধারিত।

১০৪. এবং সে সম্প্রদায়ের অনুসরণে শৈথিল্য করো না যদি তোমরা কষ্ট পেয়ে থাক তবে তারাও তোমাদের অনুরূপ কষ্টভোগ করেছে এবং তৎসহ আল্লাহ হতে তোমাদের যে আশা (জান্নাতের) আছে, তাদের সে আশা নেই এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

১০৫. নিশ্চয়ই আমি তোমার প্রতি সত্যসহ গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছি যেন তুমি তদনুযায়ী মানবদের মাঝে বিচার-ফায়সালা করতে পার। যা আল্লাহ তোমাকে শিক্ষা দান করেছেন এবং তুমি বিশ্বাসঘাতকদের পক্ষে বিতর্ককারী হয়ো না।

مَنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْطَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَكُمْ
وَخُدُوا جُنُودَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٣﴾

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا
وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا ﴿١٤﴾

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِعَاءِ الْقَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ تَاءَمُّونَ
فَأَنْتُمْ يَأْتُمُّونَ كَمَا تَأْتُمُّونَ ۗ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ
مَا لَا يَرْجُونَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٥﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ
النَّاسِ بِمَا أَرَدَكَ اللَّهُ ۗ وَلَا تَكُنْ لِلْخَافِينَ
خَصِيمًا ﴿١٦﴾

১০৬. এবং আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

১০৭. এবং যারা স্বীয় জীবনের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করে তুমি তাদের পক্ষে বিতর্ক করো না। নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বাসঘাতক পাপীকে ভালবাসেন না।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَلُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَافًا أَثِيمًا ۝

১০৮. তারা মানব হতে আত্মগোপন করে, কিন্তু আল্লাহ হতে গোপন করতে পারে না; এবং তিনি তাদের সঙ্গে থাকেন, যখন তারা রজনীতে তাঁর (আল্লাহর) অপ্রিয় বাক্যে পরামর্শ করে এবং তারা যা করছে আল্লাহ তার পরিবেষ্টনকারী।

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّنُونَ مَا لَا يَرْضَى مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝

১০৯. সাবধান— তোমরাই ঐ লোক, যারা ওদের পক্ষ হতে পার্থিব জীবন সম্বন্ধে বিতর্ক করছ; কিন্তু কিয়ামতের দিন তাদের পক্ষ হতে কে আল্লাহর সাথে বিতর্ক করবে এবং কে তাদের দায়িত্বশীল হবে?

هَآئِنُكُمْ هُوَ ۗ لَآءِ جَدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلِ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَنْ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكَيْلًا ۝

১১০. এবং যে কেউ দুষ্কর্ম করে অথবা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করে পরে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থী হয়, সে আল্লাহকে ক্ষমাশীল, করুণাময় পাবে।

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

১১১. এবং যে কেউ পাপ অর্জন করে, বস্ত্রতঃ সে স্বীয় আত্মারই ক্ষতি করে এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَمَنْ يَكْسِبْ اِثْمًا فَاِثْمًا يَكْسِبْهُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন যে, আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, আল্লাহর কসম অবশ্যই আমি দিনে সত্তর বারেরও অধিক আল্লাহর নিকট এস্তগফার (ক্ষমা প্রার্থনা করি) এবং তওবা করে থাকি। (বুখারী, হাদীস নং ৬৩০৭)

১১২. আর যে কেউ অপরাধ অথবা পাপ অর্জন করে, তৎপরে ওটা নিরাপরাধের প্রতি আরোপ করে, তবে সে নিজেই সে অপবাদ ও প্রকাশ্য পাপ বহন করবে।

১১৩. আর যদি তোমার প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও করুণা না হতো, তবে তাদের একদল তোমাকে পথভ্রান্ত করতে ইচ্ছুক হয়েছিল, এবং তারা নিজেদেরকে ছাড়া বিপথগামী করেনি আর তারা তোমাকে কোন বিষয়ে ক্লেশ (ক্ষতি) দিতে পারবে না এবং আল্লাহ তোমার প্রতি গ্রহু ও বিজ্ঞান অবতীর্ণ করেছেন এবং তুমি যা জানতে না, তিনি তাই তোমাকে শিক্ষা দিয়েছেন এবং তোমার প্রতি আল্লাহর অসীম করুণা রয়েছে।

১১৪. তাদের অধিকাংশ গুপ্ত পরামর্শে কোন মঙ্গল নিহিত থাকে না, হ্যাঁ, তবে যে ব্যক্তি এরূপ যে দান অথবা কোন সৎ কাজ কিংবা লোকের মধ্যে পরস্পর সন্ধি করে দেবার উৎসাহ প্রদান করে এবং যে আল্লাহর প্রসন্নতা সন্ধানের জন্যে ঐরূপ করে, আমি তাকে মহান বিনিময় প্রদান করবো।

১১৫. আর সুপথ প্রকাশিত হওয়ার পর যে রাসুলের বিরুদ্ধাচরণ করে এবং বিশ্বাসীগণের বিপরীত পথে অনুগামী হয়, তবে সে যাতে অভিনিবিষ্ট— আমি তাকে তাতেই প্রত্যাবর্তিত করবো ও তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করবো এবং ওটা নিকৃষ্টতর প্রত্যাবর্তন স্থল।

وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا
فَقَدْ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿١١٢﴾

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ
طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ ط وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ ط وَأَنْزَلَ اللَّهُ
عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ
تَعْلَمُ ط وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٣﴾

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نُّجُوهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ
بِصَدَاقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ط
وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ
نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾

وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ
مَا تَوَلَّىٰ وَنُصَلِّهِ جَهَنَّمَ ط وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾

১১৬. নিশ্চয়ই আল্লাহ তার সাথে অংশী স্থাপন করাকে ক্ষমা করেন না এবং এতদ্ব্যতীত তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করে থাকেন এবং যে আল্লাহর সাথে অংশীস্থাপন করে তবে সে নিশ্চয়ই চরমভাবে গোমরাহ হয়ে গেল।

১১৭. তারা তাঁকে পরিত্যাগ করে তৎপরিবর্তে নারী প্রতিমাপুঞ্জকেই আহ্বান করে এবং তারা বিদ্রোহী শয়তানকে ব্যতীত আহ্বান করে না।

১১৮. আল্লাহ তাকে অভিসম্পাত করেছেন এবং সে বলেছিল যেঃ আমি অবশ্যই তোমার বান্দাদের হতে এক নির্দিষ্ট অংশ গ্রহণ করবো।

১১৯. এবং নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে পথভ্রান্ত করবো, মিথ্যা আশ্বাস দিবো এবং তাদেরকে আদেশ করবো, যেন তারা পশুর কর্ণ ছেদন করে এবং তাদেরকে আদেশ করবো, যেন তারা আল্লাহর সৃষ্টি পরিবর্তন করে এবং যে আল্লাহকে পরিত্যাগ করে শয়তানকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করে, নিশ্চয়ই সে প্রকাশ্য ক্ষতিতে ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

১২০. তিনি তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দেন ও আশ্বাস দান করেন এবং শয়তান প্রতারণা ব্যতীত তাদেরকে প্রতিশ্রুতি প্রদান করে না।

১২১. তাদেরই বাসস্থান জাহান্নাম এবং সেখান হতে তারা কোন আশ্রয়স্থল পাবে না।

১২২. এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকর্ম করেছে, আমি

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾

إِنَّ يَدَّعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنثَاءً وَإِنْ يَدَّعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ﴿١١٧﴾

لَعَنَهُ اللَّهُ مَوْ قَالَ لَا تَخَذَنَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ﴿١١٨﴾

وَلَا ضَلَّتْهُمْ وَلَا مَتَّيْتَهُمْ وَلَا مَرَّتَهُمْ فَلْيَبْتِكُنَّ أَذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَا مَرَّتَهُمْ فَلْيَغْيِرَنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾

يَعِدُّهُمْ وَيُؤْتِيهِمْ ۗ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾

أُولَٰئِكَ مَا أَوْلَهُمْ جَهَنَّمُ زُولا يُعْجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ

তাদেরকে জান্নাতে দাখিল করবো যার নিম্নে শ্রোতস্থিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য; এবং কে আল্লাহ অপেক্ষা বাক্যে অধিকতর সত্যপরায়ণ?

১২৩. না তোমাদের বৃথা আশায় কাজ হবে আর না আহলে কিতাবের বৃথা আশায়। যে অসৎ কাজ করবে, সে তার প্রতিফল পাবে এবং সে আল্লাহর পরিবর্তে কাউকেও বন্ধু এবং সাহায্যকারী পাবে না।

১২৪. পুরুষ অথবা নারীর মধ্যে যে কেউ সৎকার্য করে আর সে বিশ্বাসীও হয় তবে তারাই জান্নাতে প্রবেশ করবে এবং তারা খেজুর কণা পরিমাণও অত্যাচারিত হবে না।

১২৫. আর যে আল্লাহর উদ্দেশ্যে আত্মসমর্পণ করেছে ও সৎকার্য করে এবং ইবরাহীমের সুদৃঢ় ধর্মের অনুসরণ করে, তার অপেক্ষা কার ধর্ম উৎকৃষ্ট? এবং আল্লাহ ইবরাহীমকে স্বীয় বন্ধুরূপে গ্রহণ করেছিলেন।

১২৬. এবং নভোমণ্ডলে যা কিছু ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই জন্যে এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে পরিবেষ্টনকারী।

১২৭. এবং তারা তোমার নিকট নারীদের সম্বন্ধে বিধান জিজ্ঞেস করেছে; তুমি বলঃ আল্লাহ তোমাদেরকে তাদের সম্বন্ধে ব্যবস্থা দান করেছেন এবং ইয়াতীম নারীদের

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٣﴾

لَيْسَ بِأَمَانِيكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ ط مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ لَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٢٤﴾

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٥﴾

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ط وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٦﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُحِيطًا ﴿١٢٧﴾

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ ط وَمَا يُثَلِّي عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي نِسَاءِ الَّذِينَ لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ

সম্বন্ধে তোমাদের প্রতি গ্রহণ হতে পাঠ করা হয়েছে, যাদের জন্যে যা বিধিবদ্ধ হয়েছে তা তোমরা তাদেরকে প্রদান করনা অথচ তাদেরকে বিয়ে করতে বাসনা কর; (আর বলা হয়েছে) এবং শিশুগণের মধ্যে দুর্বলদের ও ইয়াতীমদের প্রতি যেন সুবিচার প্রতিষ্ঠা কর এবং তোমরা যে সৎকার্য কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সে বিষয়ে খুব জানেন।

১২৮. যদি কোন স্ত্রীলোক স্বীয় স্বামীর অসদাচরণ ও উপেক্ষার আশঙ্কা করে, তবে তারা পরস্পর কোন সুমীমাংসায় উপনীত হলে তাদের উভয়ের কোন অপরাধ নেই এবং মীমাংসাই কল্যাণকর এবং মনের মধ্যে কৃপণতার প্রলোভন বিদ্যমান রয়েছে আর যদি তোমরা উত্তম কাজ কর ও সংযমী হও তবে তোমরা যা করছো সে বিষয়ে আল্লাহ সম্যক অবগত।

১২৯. তোমরা কখনও স্ত্রীগণের মধ্যে সুবিচার করতে পারবে না যদিও তোমরা কামনা কর, সুতরাং তোমরা কোন এক জনের প্রতি সম্পূর্ণরূপে ঝুঁকে পড়ো না ও অপরজনকে ঝুলানো অবস্থায় রেখো না এবং যদি তোমরা নিজেদের সংশোধন কর ও সংযমী হও তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ তা'আলা ক্ষমাশীল, করুণাময়।

১৩০. এবং যদি তারা উভয়ে বিচ্ছিন্ন হয়, তবে আল্লাহ স্বীয় প্রাচুর্য হতে তাদের প্রত্যেককে সম্পদশালী করবেন এবং আল্লাহ মহান দাতা, মহাজ্ঞানী।

أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوُلْدَانِ
وَأَنْ تَقُولُوا لِبَنَاتِنَا بِالْقِسْطِ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ
خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٨﴾

وَإِنْ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ إِعْرَاصًا
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا
وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ وَإِنْ
تَحْسَبُونَهُمْ كَمَا لَمْ تَكُونُوا فإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٩﴾

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ
فَلَا تَبْتَئُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ وَإِنْ
تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٣٠﴾

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِنْ سَعَتِهِ ط وَكَانَ
اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ﴿١٣٠﴾

১৩১. নভোমণ্ডলে যা কিছু রয়েছে ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু রয়েছে তা আল্লাহরই জন্যে এবং নিশ্চয়ই তোমাদের পূর্বে যাদেরকে গ্রন্থ প্রদত্ত হয়েছিল, আমি তাদেরকে ও তোমাদেরকে চরম আদেশ করেছিলাম যে, তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং যদি অবিশ্বাস কর তবে নিশ্চয়ই নভোমণ্ডলে যা কিছু আছে ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই এবং আল্লাহ মহা সম্পদশালী প্রশংসিত।

১৩২. এবং আকাশসমূহে যা কিছু রয়েছে ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই এবং আল্লাহই কার্য সম্পাদনে যথেষ্ট।

১৩৩. যদি তিনি ইচ্ছে করেন, তবে হে লোক সকল! তোমাদেরকে ধ্বংস করে অন্যদেরকে আনয়ন করবেন এবং আল্লাহ এরূপ করতে সম্পূর্ণ সক্ষম।

১৩৪. যে ইহলোকের প্রতিদান আকাঙ্ক্ষা করে তবে আল্লাহর নিকট ইহলোক ও পরলোকের প্রতিদান রয়েছে এবং আল্লাহ শ্রবণকারী পরিদর্শক।

১৩৫. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে সাম্ভ্য দানকারী, সুবিচারে প্রতিষ্ঠিত থাকবে— এবং যদিও এটা তোমাদের নিজের অথবা পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের বিরুদ্ধে হয়, যদি সে সম্পদশালী বা দরিদ্র হয়, তবে আল্লাহই তাদের জন্যে যথেষ্ট; অতএব, সুবিচারে স্বীয়

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ ط وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَبِيدًا ﴿١٣١﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٣٢﴾

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ ط وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ قَدِيرًا ﴿١٣٣﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ط وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿١٣٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوْمِينَ بِأَقْسَطِ شَهَادَةٍ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا ۚ وَإِنْ تَلَوْا أَوْ تَعْرَضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٣٥﴾

প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না, এবং যদি তোমরা (বর্ণনায়) বক্রতা অবলম্বন কর বা পশ্চাৎপদ হও, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ তা'আলা তোমাদের সমস্ত কর্মের পূর্ণ সংবাদ রাখেন।^১

১৩৬. হে মু'মিনগণ! তোমরা বিশ্বাস স্থাপন কর আল্লাহর প্রতি ও তাঁর রাসুলের প্রতি এবং এ কিতাবের প্রতি যা তিনি তাঁর রাসুলের উপর অবতীর্ণ করেছেন এবং ঐ কিতাবের প্রতি যা পূর্বে অবতীর্ণ করেছিলেন এবং যে কেউ আল্লাহ তদীয় ফেরেশতাসমূহ, তাঁর কিতাবসমূহ তাঁর রাসূলগণ এবং পরকাল সম্বন্ধে অশিষ্টাচার করে, তবে নিশ্চয়ই ভীষণভাবে পথভ্রষ্ট হয়েছে।

১৩৭. নিশ্চয়ই যারা বিশ্বাস করে তৎপর অশিষ্টাচারী হয়, পুনরায় বিশ্বাস স্থাপন করে অশিষ্টাচার করে, অনন্তর অশিষ্টাচারে পরিবর্তিত হয়, তবে আল্লাহ কখনও তাদেরকে ক্ষমা করবেন না এবং তাদেরকে পথ প্রদর্শন করবেন না।

১৩৮. সেই সব মুনাফিকদেরকে সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

১৩৯. যারা মু'মিনদেরকে পরিত্যাগ করে কাফিরদের বন্ধুরূপে গ্রহণ করে তারা কি তাদের নিকট সম্মান প্রত্যাশা করে? কিন্তু যাবতীয় সম্মানই আল্লাহর।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ
الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ
قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٣٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا
ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرْ لَهُمْ وَلَا
لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ﴿١٣٧﴾

بَشِيرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣٨﴾

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ يُبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا ﴿١٣٩﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে কবীর গুনাহ সম্পর্কে জিজ্ঞাসা করা হলে (যে কবীর গুনাহ কি?) তিনি বললেনঃ (ক) আল্লাহর সাথে শিরক করা। (খ) পিতা-মাতার নাফরমানী করা, (গ) অন্যায়ভাবে কাউকে হত্যা করা, (ঘ) মিথ্যা সাক্ষী দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ২৬৫৩)

১৪০. এবং নিশ্চয়ই তিনি তোমাদের গ্রন্থের মধ্যে নির্দেশ করেছেন যে, যখন তোমরা আল্লাহর নিদর্শন-সমূহের প্রতি অবিশ্বাস করতে এবং তার প্রতি উপহাস করতে শ্রবণ কর, তখন তাদের সাথে বসবে না, যে পর্যন্ত না তারা অন্য কথার আলোচনা করে, অন্যথা তোমরাও তাদের সদৃশ হয়ে যাবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ সে সমস্ত মুনাফিক ও কাফিরদেরকে জাহান্নামে সমবেতকারী।

১৪১. যারা তোমাদের সম্বন্ধে গুণপেতে থাকে এবং যদি তোমাদের আল্লাহর পক্ষ হতে জয়লাভ হয় তবে তারা বলেঃ আমরা কি তোমাদের সঙ্গে ছিলাম না? এবং যদি ওটা অবিশ্বাসীদের ভাগ্যে ঘটে তবে বলেঃ আমরা কি তোমাদের নেতৃত্ব করিনি এবং বিশ্বাসীগণ হতে তোমাদেরকে রক্ষা করিনি? অনন্তর আল্লাহ উত্থান দিবসে তোমাদের মধ্যে বিচার করবেন; এবং কখনও আল্লাহ মুমিনদের প্রতিপক্ষে কাফিরদেরকে বিজয়ী করবেন না।

১৪২. নিশ্চয়ই মুনাফিকরা আল্লাহর সাথে প্রতারণা করে এবং তিনিও তাদেরকে ঐ প্রতারণা প্রতারণা করেছেন এবং যখন তারা নামাযের জন্যে দণ্ডায়মান হয় তখন লোকদেরকে দেখাবার জন্যে আলস্যভরে দণ্ডায়মান হয়ে থাকে এবং আল্লাহকে খুব কমই স্মরণ করে থাকে।

১৪৩. যারা এর মধ্যে সন্দেহ দোলায় দোদুল্যমান রয়েছে তারা এদিকেও নয় ওদিকেও নয় এবং আল্লাহ যাকে

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتَ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَفْعَلُوا مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۗ إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلَهُمْ ۗ
 إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَبِيحًا ﴿١٤٠﴾

إِلَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۗ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحِذْ عَلَيْكُمْ وَنَنْعَمْ بِكُمْ ۗ وَنُؤْمِنُ بِاللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤١﴾

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۗ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾

مُّدَّ بَدْبَيْنَ بَيْنَ ذَلِكَ ۗ لَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ

পথভ্রান্ত করেছেন বস্তুতঃ তুমি তার জন্যে কোনই পথ পাবে না।

১৪৪. হে মু'মিনগণ! তোমরা মু'মিনদেরকে ছেড়ে কাফিরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, তোমরা কি আল্লাহকে তোমাদের বিরুদ্ধে স্পষ্ট প্রমাণ দিতে চাও?

১৪৫. নিশ্চয়ই মুনাফিকরা জাহান্নামের নিম্নতম স্তরে অবস্থিত হবে এবং তুমি কখনও তাদের জন্যে সাহায্যকারী পাবে না।^১

১৪৬. কিন্তু যারা ক্ষমা প্রার্থনা করে ও সংশোধিত হয় এবং আল্লাহকে সুদৃঢ়ভাবে ধারণ করে ও আল্লাহর জন্যে তাদের দ্বীনকে বিশুদ্ধ করে, ফলতঃ তারাই মু'মিনদের সঙ্গী এবং অচিরেই আল্লাহ মু'মিনদেরকে উত্তম প্রতিদান প্রদান করবেন।

১৪৭. যদি তোমরা কৃতজ্ঞ হও ও বিশ্বাস স্থাপন কর তবে আল্লাহ তোমাদেরকে শাস্তি প্রদান করে কী করবেন? এবং আল্লাহ গুণগ্রাহী মহাজ্ঞানী।

سَبِيلًا ﴿٣٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِينَ
أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ط اَتْرِيدُونَ اَنْ
تَجْعَلُوا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِينًا ﴿٣٩﴾

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرَكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ
وَ لَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿٤٠﴾

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاَعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ
وَ اٰخَصَمُوْا وَاٰتَمَرُوْا بِاللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ط
وَ سَوْفَ يُؤْتِي اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤١﴾

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَدٰلِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ط
وَ كَانَ اللّٰهُ شٰكِرًا عَلِيْمًا ﴿٤٢﴾

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে আমর (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ চারটি (দোষ) যার মধ্যে থাকে সে ঝাঁটি মুনাফিক। আর যার মধ্যে উক্ত দোষগুলোর কোন একটি থাকে, তা ভ্যাগ না করা পর্যন্ত তার মধ্যে মুনাফেকীর একটি স্বভাব থেকে যায়। (১) তার কাছে কোন আমানত রাখা হলে সে তার খেয়ানত করে। (২) সে কথা বললে মিথ্যা বলে। (৩) ওয়াদা করলে তা ভঙ্গ করে। (৪) আর সে ঝগড়া করলে, গালাগালি দেয়। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের দিন আল্লাহর তা'আলার নিকট সবচেয়ে নিকট মানুষ হিসেবে দেখতে পাবে দু'মুখো নীতি ওয়ালাকে। সে এমন লোক, যে একরূপ নিয়ে আসে ওদের নিকট এবং আরেকরূপ ধরে যায় ওদের নিকট। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৫৮)

১৪৮. আল্লাহ কারো অত্যাচারিত হওয়া ব্যতীত অপ্রিয় বাক্য প্রকাশ করা ভালবাসেন না এবং আল্লাহ শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

১৪৯. যদি তোমরা সৎকার্য প্রকাশ কর বা গোপন কর কিংবা অসদ্বিষয় ক্ষমা কর, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাদানকারী, সর্বশক্তিমান।

১৫০. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণের প্রতি অবিশ্বাস করে এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণের মধ্যে পার্থক্য করতে ইচ্ছে করে এবং বলে যে, আমরা কতিপয়কে বিশ্বাস করি, এবং কতিপয়কে প্রত্যাখ্যান করি। এবং তারা এ মধ্যবর্তী পথ অবলম্বন করতে ইচ্ছা করে।

১৫১. ওরাই প্রকৃতপক্ষে অবিশ্বাসী, এবং আমি অবিশ্বাসীদের জন্যে অবমাননাকর শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

১৫২. এবং যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং তাদের কোন একজনের মধ্যে পার্থক্য করে না, আল্লাহ তাদেরকেই তাদের প্রতিদান প্রদান করবেন এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

১৫৩. আহলে কিতাবরা তোমার কাছে আবেদন করছে যে, তুমি তাদের প্রতি আকাশ হতে কোন গ্রন্থ নাযিল কর, পরন্তু তারা মূসাকে এটা অপেক্ষাও মারাত্মক প্রশ্ন করেছিল, বরং তারা বলেছিল যেঃ আল্লাহকে প্রকাশ্যভাবে আমাদেরকে প্রদর্শন

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوِّءِ مِنَ الْقَوْلِ
إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٣٨﴾

إِنْ تُبَدُّواْ خَيْرًا أَوْ تُحَفُّوْهُ أَوْ تَعْفُوْاْ عَنْ سُوءِ
فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ﴿١٣٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ
أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ
بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا
بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ﴿١٤٠﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكٰفِرُونَ حَقًّا ۗ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ
عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٤١﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ
أَحَدٍ مِنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرُهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا رَحِيمًا ﴿١٤٢﴾

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا
مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ الْكَبِيرَ مِنْ ذَلِكَ
فَقَالُوا إِنَّا نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الضُّرُوقَةُ
فَظَلَمْنَاهُمْ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا

কর; অনন্তর তাদের অবাধ্যতার জন্যে বজ্রধ্বনি তাদেরকে আক্রমণ করেছিল, অতঃপর তাদের নিকট নিদর্শনাবলী আসবার পর তারা গো-বৎসকে গ্রহণ করেছিল (উপাস্য হিসেবে); কিন্তু ওটাও আমি ক্ষমা করেছিলাম এবং মূসাকে প্রকাশ্য প্রভাব প্রদান করেছিলাম।

১৫৪. এবং আমি তাদের প্রতিশ্রুতির জন্যে তাদের উপর তুর পর্বত সমুচ্চ করেছিলাম এবং তাদেরকে বলেছিলাম যে 'সিজদা' করতে করতে দরজা দিয়ে প্রবেশ কর এবং তাদেরকে আরও বলেছিলাম যে, শনিবারের সীমা অতিক্রম করো না এবং আমি তাদের নিকট কঠোর প্রতিশ্রুতি গ্রহণ করেছিলাম।^১

১৫৫. কিন্তু তাদের প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ এবং আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি তাদের অবিশ্বাস ও তাদের অন্যায়ভাবে নবীগণ হত্যা এবং তাদের এ উক্তির কারণে যে আমাদের অন্তরসমূহ আচ্ছন্ন; বরং তাদের অবিশ্বাস হেতু আল্লাহ এর উপর মোহর অঙ্কিত করেছেন, এ কারণে তারা অল্প সংখ্যক ব্যতীত বিশ্বাস করে না।

১৫৬. এবং তাদের অবিশ্বাস ও মারইয়ামের প্রতি তাদের ভয়ানক অপবাদেদের জন্য।

جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ ۗ وَآتَيْنَا
مُوسَى سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٥٤﴾

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِبَيِّنَاتٍ لَهُمْ
وَقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي
السَّبْتِ ۖ وَآخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿١٥٥﴾

فِيمَا نَقَضْتَهُمْ مِيثَاقَهُمْ وَكَفَرْتَهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا
غُلْفٌ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥٦﴾

وَوَكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ بُهْتَانًا
عَظِيمًا ﴿١٥٧﴾

১। হাম্মাদ ইবনে মুনাবেহ হতে বর্ণিত নিশ্চয়ই তিনি আবু হুরাইরা রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলতে শুনেছে যে, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বনী ইসরাইলকে বলা হয়েছিল যে, তোমরা (প্রস্তাবিত শহরে) সিজদারত অবস্থায় প্রবেশ ঘর দিয়ে প্রবেশ কর এবং বল, (হে আল্লাহ!) আমাদেরকে ক্ষমা করে দিন। তারা তা পরিবর্তন (সিজদারত অবস্থায় প্রবেশ না করে) নিতম্বের উপর ভর করে এবং আমাদেরকে ক্ষমা করুন এর পরিবর্তে যবের দানা চাই বলতে বলতে প্রবেশ করল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪০৩)

১৫৭. এবং আল্লাহর রাসূল মারইয়াম নন্দন ঈসাকে আমরা হত্যা করেছি একথা বলার জন্যে; আর মূলতঃ তারা তাকে হত্যা করেনি ও তাকে ক্রুশবিদ্ধও করেনি বরং তাদের জন্য (অন্যকে) ঈসা (عليه السلام)-এর সাদৃশ্য বানিয়ে দেয়া হয়েছিল এবং নিশ্চয়ই যারা তাতে মতবিরোধ করেছিল, অবশ্য তারা ই সে বিষয়ে সন্দেহাচ্ছন্ন ছিল, কল্পনার অনুসরণ ব্যতীত এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান ছিল না এবং তারা প্রকৃতপক্ষে তাকে হত্যা করেনি।

১৫৮. বরং আল্লাহ তাকে নিজের দিকে উঠিয়ে নিয়েছেন, এবং আল্লাহ পরাক্রান্ত, মহাজ্ঞানী।

১৫৯. কিতাবীদের মধ্যে প্রত্যেকে তার মৃত্যুর পূর্বে তাঁর উপর (ঈসা আলাইহিসসালাম) বিশ্বাস করবেই এবং কিয়ামত দিবসে তিনি তাদের উপর সাক্ষী হবেন।

১৬০. আমি ইয়াহূদীদের জুলুমের কারণে তাদের জন্যে যে সমস্ত পবিত্র বস্তু বৈধ ছিল তা তাদের প্রতি অবৈধ করেছি এবং যেহেতু তারা অনেককে আল্লাহর পথ হতে প্রতিরোধ করতো।

১৬১. এবং তারা সুদ নিষিদ্ধ হওয়া সত্ত্বেও গ্রহণ করতো এবং তারা অন্যায়ভাবে লোকদের ধন-সম্পদ গ্রাস করতো এবং আমি তাদের মধ্যস্থ অবিশ্বাসীদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظُّلْمِ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ﴿١٥٧﴾

بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٥٨﴾

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنُوا بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿١٥٩﴾

فِي ظُلْمٍ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَمْنَا عَلَيْهِمْ طَيْبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ﴿١٦٠﴾

وَآخَذْنَاهُمُ الرِّبَا وَقَدْ هُمُوا عَنْهُ وَأَكْبَاهُمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦١﴾

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যে যারা জ্ঞানে সুপ্রতিষ্ঠিত এবং বিশ্বাসীগণের মধ্যে যারা তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে এবং তোমার পূর্বে যা অবতীর্ণ হয়েছিল তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং যারা নামায প্রতিষ্ঠাকারী ও যাকাত প্রদানকারী এবং আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস স্থাপনকারী, তাদেরকেই আমি প্রচুর প্রতিদান প্রদান করবো।

১৬৩. নিশ্চয়ই আমি তোমার প্রতি প্রত্যাদেশ করেছি; যে রূপ আমি নূহ عليه السلام ও তৎপরবর্তী নবীগণের প্রতি প্রত্যাদেশ করেছিলাম এবং ইবরাহীম عليه السلام, ইসমাইল عليه السلام, ইসহাক, ইয়াকুব عليه السلام ও তৎপশ্চিমগণের প্রতি এবং ঈসা عليه السلام, আইয়ুব عليه السلام, ইউনুস عليه السلام, হারুন عليه السلام ও সুলাইমান عليه السلام-এর প্রতি প্রত্যাদেশ করেছিলাম এবং আমি দাউদকে عليه السلام যাবূর প্রদান করেছিলাম।

لَكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْبُقِييِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالذِّكْرِينَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَوْحَيْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَى وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ وَأْتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝

১। (ক) আলকামা বিন ওয়াক্কাস লাইসী বলেন, আমি শুনেছি উমর ইবনুল খাতাব (রাযিআল্লাহু আনহু) মসজিদের মিম্বারের ওপর উঠে বলেছিলেন; আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছিঃ সব কাজই নিয়াত (সংকল্প) অনুযায়ী হয়। আর প্রত্যেক ব্যক্তি যা নিয়াত করে তাই পায়। কাজেই যার হিজরাত দুনিয়া লাভের বা কোন মেয়েকে বিয়ে করার নিয়তে হয়েছে তার হিজরাত উক্ত উদ্দেশ্যই হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ১)

(খ) উম্মুল মু'মিনীন হযরত আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত আছে, হারিস ইবনে হিশাম রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলেন, 'হে আল্লাহর রাসূল! আপনার নিকট ওহী কিভাবে আসে? রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ 'ওহী কোন সময় ঘন্টার আওয়াজের মত আমার নিকট আসে। আর ওটাই আমার পক্ষে সবচেয়ে কষ্টদায়ক ওহী, আমার থেকে ঘাম ঝরে পড়ত। (ফেরেশতা) যা বলে, তা শেষ হতেই আমি তার কাছ থেকে আয়ত্ত করে ফেলি। আবার কোন সময় ফেরেশতা মানুষের আকারে এসে আমাকে যে ওহী বলেন, আমি তা সাথে সাথেই আয়ত্ত করে নেই।

আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) বলেন, 'আমি প্রচন্ড শীতের দিনেও রাসূলুল্লাহর উপর (প্রথম প্রকার) ওহী নাযিল হওয়ার পর তাঁর কপাল থেকে ঘাম ঝরে পড়তে দেখেছি।' (বুখারী, হাদীস নং ২)

১৬৪. আর নিশ্চয়ই আমি তোমার নিকট ইতিপূর্বে বহু রাসূলের প্রসঙ্গ বর্ণনা করেছি এবং অনেক রাসূল যাদের কথা তোমাকে বলিনি; আল্লাহ মূসার সাথে প্রত্যক্ষ বাক্যে কথা বলেছেন।

১৬৫. আমি সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রাসূলগণকে প্রেরণ করেছি যাতে রাসূলগণের পরে লোকদের জন্য আল্লাহর উপর কোন অজুহাত দাঁড় করানোর সুযোগ না থাকে এবং আল্লাহ অতীব সম্মানী, মহাজ্ঞানী।

১৬৬. কিন্তু আল্লাহ তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ করেছেন, তৎসম্বন্ধে তিনি সজ্ঞানে অবতারণার সাক্ষ্য দান করছেন এবং ফেরেশতাগণও সাক্ষ্য প্রদান করছেন এবং সাক্ষ্য দানে আল্লাহই যথেষ্ট।

১৬৭. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে এবং আল্লাহর পথ হতে প্রতিরোধ করেছে, অবশ্যই তারা চরমভাবে বিভ্রান্ত হয়েছে।

১৬৮. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাসী হয়েছে ও অত্যাচার করেছে, আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন না এবং তাদেরকে সুপথ প্রদর্শন করবেন না।

১৬৯. জাহান্নামের পথ ব্যতীত, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে এবং এটা আল্লাহর পক্ষে সহজসাধ্য।

১৭০. হে লোক সকল! নিশ্চয়ই তোমাদের প্রতিপালকের সন্নিধান

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا
لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَى تَكْوِيمًا ٣٤

رُسُلًا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِيَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ ٣٥ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ٣٦

لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ
وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ ٣٧ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ٣٨

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
قَدْ ضَلُّوا ضَلًّا بَعِيدًا ٣٩

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ
لِيُغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيُهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ٤٠

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ٤١ وَكَانَ
ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ٤٢

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ

হতে সত্যসহ রাসূল আগমন করেছেন, অতএব বিশ্বাস স্থাপন কর—তোমাদের কল্যাণ হবে, আর যদি অবিশ্বাস কর তবে নভোমণ্ডলে ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু আছে তা আল্লাহর এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

১৭১. হে আহলে কিতাবগণ! তোমরা স্বীয় ধীনে সীমা অতিক্রম করো না এবং আল্লাহর বিরুদ্ধে সত্য ব্যতীত বলো না, নিশ্চয়ই মারইয়াম পুত্র ঈসা মাসীহ আল্লাহর রাসূল ও তাঁর বাণী—যা তিনি মারইয়ামের প্রতি সঞ্চারিত করেছিলেন এবং তাঁর পক্ষ হতে আত্মা (রুহ) অতএব আল্লাহ ও তদীয় রাসূলগণের উপর বিশ্বাস স্থাপন কর এবং (মা'বুদের সংখ্যা) তিনজন বলো না; নিবৃত্ত হও—তোমাদের কল্যাণ হবে; নিশ্চয়ই একমাত্র আল্লাহই মা'বুদ; তিনি কোন সম্ভান হওয়া হতে পুতঃ মুক্ত; নভোমণ্ডলে যা আছে ও ভূ-মণ্ডলে যা আছে তা তাঁরই এবং আল্লাহই কার্য সম্পাদনে যথেষ্ট।^১

رَبِّكُمْ فَأَمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ط وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ
اللَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧١﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى
اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ط إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ ۖ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ
مِّنْهُ نَفَخًا مِّنْهُ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ط وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةً ط
إِنَّهُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ ط إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهُ وَاحِدٌ ط سُبْحَانَ
أَنْ يُكُونَ لَهُ وَلَدٌ مَّ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ط وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾

১। উবাদা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি এ সাক্ষ্য প্রদান করে যে, আল্লাহ ব্যতীত আর সত্য কোন মা'বুদ নেই। তিনি এক এবং তার কোন শরীক নেই (আরো সাক্ষ্য প্রদান করে) যে, মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর বান্দা ও রাসূল। আর নিশ্চয় ঈসা (আলাইহিস্ সালাম) আল্লাহর বান্দা এবং তাঁর রাসূল ও তাঁর সেই কালিমা যা তিনি মারইয়াম (আলাইহাস্ সালাম)–এর মধ্যে পৌঁছিয়েছেন এবং তিনি তারই তরফ হতে রুহ বিশেষ। এবং (এ বিশ্বাস রাখে যে) জান্নাত সত্য ও জাহান্নাম সত্য। তার আমল যা-ই হোক না কেন, আল্লাহ তাকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন। অলীদ বলেছেনঃ আমাকে হাদীস শুনিয়েছেন জাবের উমাইর থেকে সে জুনাদা থেকে এবং এতটুকু বৃদ্ধি করে বলেছে যে, জান্নাতের আটটি দরজার মধ্যে যেটি দিয়ে সে চায় জান্নাতে প্রবেশ করবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৩৫)

১৭২. আল্লাহর বান্দা হবেন মাসীহ এবং সান্নিধ্য প্রাপ্ত ফেরেশতাগণ ও তাতে তাঁদের কোনই সংকোচ নেই এবং যে তাঁর ইবাদতে সংকুচিত হয় ও অহংকার করে, তিনি তাদের সকলকে নিজের দিকে একত্রিত করবেন।

১৭৩. সুতরাং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকার্য করে থাকে, তাদেরকে তিনি তাদের সম্যক প্রতিদান প্রদান করবেন এবং স্বীয় অনুগ্রহে আরও অধিকতর দান করবেন এবং যারা সংকুচিত হয় ও অহংকার করে, তাদেরকে তিনি যন্ত্রণাপ্রদ শাস্তি প্রদান করবেন এবং আল্লাহ ব্যতীত তারা নিজেদের জন্য কোন অভিভাবক বা সাহায্যকারী পাবে না।

১৭৪. হে লোক সকল! তোমাদের প্রতিপালকের সন্নিধান হতে তোমাদের নিকট প্রত্যক্ষ প্রমাণ এসেছে এবং আমি তোমাদের প্রতি সমুজ্জ্বল জ্যোতি অবতীর্ণ করেছি।

১৭৫. অতঃপর যারা আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে এবং তাঁকে সুদৃঢ় রূপে ধারণ করেছে, ফলতঃ তিনি তাদেরকে স্বীয় রহমত ও কল্যাণের দিকে প্রবিশ্ত করবেন এবং স্বীয় সরল পথে পথ-প্রদর্শন করবেন।

১৭৬. তারা তোমার নিকট ফতোয়া প্রার্থনা করছে, তুমি বলঃ আল্লাহ তোমাদের পিতা-পুত্রহীন (ব্যক্তির অর্থ বন্টন) সম্বন্ধে ফতোয়া দান করছেন,

كُنْ يَسْتَنْكِفُ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ
وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ٥ وَمَنْ يَسْتَنْكِفُ عَنْ
عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرْهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ٦

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ
أَجْرَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ٧ وَأَمَّا الَّذِينَ
اسْتَنْكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيَعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ٨ وَلَا
يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ٩

يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ
وَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ١٠

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ
فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ١١ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ١٢

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَّةِ ١٣ وَإِنْ مَرُّوا
هَلَكًا لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ

যদি কোন ব্যক্তি নিঃসন্তান অবস্থায় মরে যায় এবং তার ভগ্নী থাকে তবে সে তার পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে অর্ধাংশ পাবে; এবং যদি কোন নারীর সন্তান না থাকে তবে তার ভ্রাতাই তদীয় উত্তরাধিকারী হবে; কিন্তু যদি দু'ভগ্নি থাকে তবে তাদের উভয়ের জন্যে পরিত্যক্ত বিষয়ের দুই তৃতীয়াংশ এবং যদি তারা ভ্রাতা-ভগ্নি পুরুষ ও নারীগণ থাকে, তবে পুরুষ দু'নারীর তুল্য অংশ পাবে, আল্লাহ তোমাদের জন্যে বর্ণনা করছেন যেন তোমরা বিভ্রান্ত না হও এবং আল্লাহ সর্ববিষয়ে মহাজ্ঞানী।

مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الشُّلْثُ مِمَّا تَرَكَ ۖ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حِظِّ الْأُنثِيَيْنِ ۗ ط
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٤﴾

সূরাঃ মায়িদা, মাদানী

(আয়াতঃ ১২০ রুকূ'ঃ ১৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٢٠ رُكُوعَاتُهَا ١٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. হে মু'মিনগণ! তোমরা তোমাদের ওয়াদাগুলো পূরণ কর। তোমাদের জন্যে চূতম্পদ জন্তু হালাল করা হয়েছে। তবে যেগুলো হারাম হওয়া সম্পর্কে তোমাদের উপর পবিত্র কুরআনের আয়াতগুলো অবতীর্ণ হয়েছে সেগুলো এবং ইহরাম বাঁধা অবস্থায় তোমাদের শিকার করা জন্তুগুলো হালাল নয়। নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর ইচ্ছামত হুকুম করে থাকেন।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۗ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُبْتَلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرِ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ①

২. হে ঈমানদারগণ! তোমরা আল্লাহর নিদর্শনাবলী, নিষিদ্ধ মাসগুলো, হারামে কুরবানীর জন্যে প্রেরিত পশু, কুরবানীর পশুগুলোর গলায় ব্যবহৃত চিরুগুলো এবং যারা তাদের প্রতিপালকের সন্তুষ্টি ও অনুগ্রহ পাবার জন্যে সম্মানিত ঘরে যাবার ইচ্ছে করে তাদের অবমাননা করা বৈধ মনে করো না। আর তোমরা যখন ইহরাম মুক্ত হও তখন শিকার কর। যারা তোমাদেরকে পবিত্র মসজিদে যেতে বাধা দিয়েছে সেই সম্প্রদায়ের দূশমনি যেন তোমাদেরকে সীমা ছাড়িয়ে যেতে উৎসাহিত না করে। নেক কাজ করতে ও সংযমী হতে তোমরা পরস্পরকে সাহায্য কর। তবে পাপ ও শত্রুতার ব্যাপারে তোমরা এক অপরকে সাহায্য করো না। আর তোমরা আল্লাহকে ভয় কর। নিশ্চয়ই আল্লাহ কঠিন শাস্তি দাতা।

৩. তোমাদের জন্যে মৃত, রক্ত, শূকরের মাংস, আল্লাহ ছাড়া অপরের নামে উৎসর্গীকৃত পশু, গলাটিপে মারা পশু, প্রহারে মৃত পশু, উপর হতে পড়ে মৃত পশু, শৃংগাঘাতে মৃত পশু এবং হিংস্র জন্তুতে খাওয়া পশু হারাম করা হয়েছে। তবে যা তোমরা যবেহ দ্বারা পবিত্র করেছ তা হালাল। আর যে সমস্ত পশুকে পূজার বেদীর উপর বলি দেয়া হয়েছে তা এবং জুয়ার তীর দ্বারা ভাগ্য নির্ণয় করাও তোমাদের জন্যে হারাম করা হয়েছে। এসবগুলো পাপ কাজ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِنِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَنْتَعُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمُكُمْ شَتَانُ قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِن تَعْتَدُوا م وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخُزَيْرِ وَمَا أَهَلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْوُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالتَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۖ وَمَا ذُيْحَ عَلَى النُّصْبِ ۖ وَأَن تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَلْوَابِطِ ذِكْرُكُمْ فَسُقُطُ الْيَوْمِ يَبْسُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنَ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْصَصَةٍ غَيْرِ

আজ সত্যের প্রত্যাখ্যানকারীগণ তোমাদের দ্বীনের বিরুদ্ধাচরণের ব্যাপারে হতাশ হয়ে পড়েছে। সুতরাং তোমরা তাদেরকে ভয় করো না, শুধু আমাকেই ভয় করো। আজ তোমাদের জন্যে তোমাদের দ্বীন পূর্ণাঙ্গ করলাম। তোমাদের প্রতি আমার অনুগ্রহ সম্পূর্ণ করলাম এবং ইসলামকে তোমাদের দ্বীন মনোনীত করলাম। তবে কেউ পাপের দিকে না ঝুঁকে ক্ষুধার তাড়নায় ওগুলো (উল্লিখিত হারাম বস্তুগুলো) ভক্ষণ করতে বাধ্য হলে সেগুলো খাওয়া তার জন্যে হারাম হবে না। কারণ নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল ও দয়ালু।

৪. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করে, তাদের জন্যে কি কি হালাল করা হয়েছে? তুমি বল পবিত্র জিনিসগুলো তোমাদের জন্যে হালাল করা হয়েছে। তোমরা যে সমস্ত পশু-পাখীকে শিকার করা শিক্ষা দিয়েছে; যেভাবে আল্লাহ তোমাদেরকে শিক্ষা দিয়েছেন তারা যা শিকার করে আনে তা তোমরা খাও এবং ওগুলোকে শিকারের জন্য পাঠাবার সময় আল্লাহর নাম স্মরণ কর। তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ হিসাব গ্রহণে তৎপর।

৫. আজ তোমাদের জন্যে পবিত্র বস্তুগুলো হালাল করা হয়েছে, আর আহলে কিতাবের যবেহকৃত জীবও, তোমাদের জন্যে হালাল এবং তোমাদের যবেহকৃত জীবও তাদের জন্যে হালাল। আর সতী-সাধ্বী

مُتَجَانِفٍ لِإِيْمَانِهِ ۗ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أَحَلَّ لَهُمْ ط قُلْ أُحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ
وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا
عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۚ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكَنَّ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَأَتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۝

أَيُّومٍ أُحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ حَلَلٌ لَكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حَلَلٌ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

মুসলিম নারীরাও এবং তোমাদের পূর্ববর্তী আহলে কিতাবের মধ্যকার সতী-সাক্ষী নারীরাও (তোমাদের জন্যে হালাল), যখন তোমরা তাদেরকে তাদের বিনিময় (মহর) প্রদান কর, এরূপে যে, (তাদেরকে) তোমাদের পত্নীরূপে গ্রহণ করে নাও, না প্রকাশ্যে ব্যভিচার কর, আর না গোপন প্রণয় কর; আর যে ব্যক্তি ঈমানের সাথে কুফরী করে তার আমল নিষ্ফল হয়ে যাবে এবং সে পরকালে সম্পূর্ণরূপে ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

৬. হে মু'মিনগণ! যখন তোমরা নামাযের উদ্দেশ্যে দণ্ডায়মান হও তখন (নামাযের পূর্বে) তোমাদের মুখমণ্ডল ধৌত কর এবং হাত গুলোকে কনুই পর্যন্ত ধুয়ে নাও। আর মাথা মাসেহ কর এবং পা গুলোকে টাখনু পর্যন্ত ধুয়ে ফেল; কিন্তু যদি তোমরা অপবিত্র থাক তা'হলে বিশেষ ভাবে পবিত্র হবে। আর যদি তোমরা রোগ গ্রস্ত হও কিংবা সফরে থাক অথবা তোমাদের কেউ পায়খানা হতে আসে কিংবা তোমরা স্ত্রীদেরকে স্পর্শ কর (স্ত্রী সহবাস কর), অতঃপর পানি না পাও তবে পবিত্র মাটি দ্বারা তায়াসুম করে নাও, তখন তোমরা তা দ্বারা তোমাদের মুখমণ্ডল ও হাত মাসেহ কর, আল্লাহ তোমাদের উপর কোন

مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ
غَيْرِ مُسْفِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ ۚ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ
الْخَسِرِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا
وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۗ
وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْمِطَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ
مِنَ الْغَايِبِ أَوْ لَمْ تُجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ
مِنْهُ ۗ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ
وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝

১। নুআইস আল মুজ্জমের থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি আবু হুরাইরা (রাবিআল্লাহ আনহু)-এর সাথে মসজিদের ছাদে উঠলাম, তিনি ওয়ু করে বললেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, আমার উম্মতেরা কিয়ামতের দিন তাদেরকে গুররাল- মুহা-জ্জালীন বলে ডাকা হবে। (ওয়ুর অল্প-প্রতঙ্গগুলো উজ্জ্বল অবস্থায় উপস্থিত হবে।) কাজেই তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি তার উজ্জ্বলতাকে বৃদ্ধি করতে সক্ষম সে যেন তা (বৃদ্ধি) করে। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬)

সংকীর্ণতা আনয়ন করতে চান না, বরং তিনি তোমাদেরকে পবিত্র করতে ও তোমাদের উপর স্বীয় নিয়ামত পূর্ণ করতে চান, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

৭. আর তোমরা তোমাদের প্রতি বর্ষিত আল্লাহর অনুগ্রহকে স্মরণ কর এবং তাঁর ঐ অঙ্গীকারকেও স্মরণ কর যে অঙ্গীকার তিনি তোমাদের নিকট থেকে গ্রহণ করেছেন, যখন তোমরা বলেছিলেঃ আমরা গুনলাম ও মেনে নিলাম, আর তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই তিনি অন্তর্নিহিত কথাগুলোরও পূর্ণ খবর রাখেন।

৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে বিধানসমূহ পূর্ণরূপে প্রতিষ্ঠাকারী ও ন্যায়ের সাথে সাক্ষ্য দানকারী হয়ে যাও, কোন বিশেষ সম্প্রদায়ের শত্রুতা যেন তোমাদেরকে এর প্রতি উদ্যত না করে যে, তোমরা ন্যায়বিচার করবে না, তোমরা ন্যায়বিচার কর, এটা তাকওয়ার অধিকতর নিকটবর্তী এবং আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে পূর্ণ ওয়াকিফহাল।

৯. যারা ঈমান এনেছে ও ভাল কাজ করেছে, তাদেরকে আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে, তাদের জন্যে ক্ষমা ও মহান পুরস্কার রয়েছে।

১০. পক্ষান্তরে যারা কুফরি করেছে এবং আমার বিধানসমূহকে মিথ্যা অভিহিত করেছে, তারাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী।

وَأَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّتِي بَرَأْتُمْ بِهَا ۖ وَإِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوْمِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاَنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۗ وَعَدِلُوا ۗ إِنَّ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

সংকীর্ণতা আনয়ন করতে চান না, বরং তিনি তোমাদেরকে পবিত্র করতে ও তোমাদের উপর স্বীয় নিয়ামত পূর্ণ করতে চান, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

৭. আর তোমরা তোমাদের প্রতি বর্ষিত আল্লাহর অনুগ্রহকে স্মরণ কর এবং তাঁর ঐ অঙ্গীকারকেও স্মরণ কর যে অঙ্গীকার তিনি তোমাদের নিকট থেকে গ্রহণ করেছেন, যখন তোমরা বলেছিলেঃ আমরা শুনলাম ও মেনে নিলাম, আর তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই তিনি অন্তর্নিহিত কথাগুলোরও পূর্ণ খবর রাখেন।

৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে বিধানসমূহ পূর্ণরূপে প্রতিষ্ঠাকারী ও ন্যায়ের সাথে সাক্ষ্য দানকারী হয়ে যাও, কোন বিশেষ সম্প্রদায়ের শত্রুতা যেন তোমাদেরকে এর প্রতি উদ্যত না করে যে, তোমরা ন্যায়বিচার করবে না, তোমরা ন্যায়বিচার কর, এটা তাকওয়ার অধিকতর নিকটবর্তী এবং আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে পূর্ণ ওয়াকিফহাল।

৯. যারা ঈমান এনেছে ও ভাল কাজ করেছে, তাদেরকে আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে, তাদের জন্যে ক্ষমা ও মহান পুরস্কার রয়েছে।

১০. পক্ষান্তরে যারা কুফরি করেছে এবং আমার বিধানসমূহকে মিথ্যা অভিহিত করেছে, তারাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী।

وَأَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي
وَأَتَّقُوا اللَّهَ يَا إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
وَأَتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوْمِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ
بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا نُ قَوْمٍ عَلَىٰ آلَا تَعْدِلُونَ
إِعْدِلُوا فَتُؤْتُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ
خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ①

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ①

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ①

১১. হে মু'মিনগণ! তোমাদের প্রতি আল্লাহ যে অনুগ্রহ করেছেন তা স্মরণ কর, যখন এক সম্প্রদায় এ চিন্তায় ছিল যে, তোমাদের দিকে তাদের হস্ত প্রসারিত করবে; কিন্তু আল্লাহ তাদের হাতকে তোমাদের দিক থেকে থামিয়ে দিয়েছেন এবং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং মু'মিনদের আল্লাহর উপরই ভরসা করা উচিত।

১২. আর আল্লাহ বানী ইসরাঈলদের নিকট থেকে অঙ্গীকার নিয়েছিলেন এবং আমি তাদের মধ্য হতে বারোজন দলপতি নিযুক্ত করেছিলাম; এবং আল্লাহ বলেছিলেনঃ আমি তোমাদের সাথে রয়েছি; যদি তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা কর ও যাকাত দিতে থাক এবং আমার রাসূলদের উপর ঈমান আনতে থাক ও তাদেরকে সাহায্য করতে থাক এবং আল্লাহকে উত্তমরূপে কৰ্জ দিতে থাক। তবে আমি অবশ্যই তোমাদের গুনাহগুলো তোমাদের থেকে মাফ করে দেবো এবং অবশ্যই তোমাদেরকে এমন জান্নাতে প্রবেশ করাবো যার তলদেশে নহরসমূহ বইতে থাকবে, অনন্তর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এরপরও কুফরী করবে, নিশ্চয়ই সে সোজা পথ থেকে দূরে সরে পড়লো।

১৩. বস্ত্রতঃ শুধু তাদের প্রতিশ্রুতি ভঙ্গের দরুনই আমি তাদের উপর আমার অভিশাপ অবতীর্ণ করি এবং তাদের হৃদয়কে কঠিন করে দেয়।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ كُرُوا نِعِصْتِ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَآءَ ۖ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۗ وَقَالَ اللّٰهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۗ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الرِّكَوَّةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّا يَفْرَنَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَا دَخَلْتُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۗ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٢﴾

فِيمَا نَقَضْتُمْ مِيثَاقَهُمْ لَعْنَهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهَا ۗ وَتَسَوَّأُوا

তারা কালাম (তাওরাত)-কে ওর স্থানসমূহ হতে পরিবর্তন করে দেয়, (বিকৃত ঘটাতো) এবং তাদেরকে যা কিছু উপদেশ দেয়া হয়েছিল তারা তার মধ্য হতে একটা অংশকে ভুলে গেলো আর প্রতিনিয়ত তুমি তাদের ব্যাপারে অবগত হবে যে, তাদের সামান্য কিছু লোক ছাড়া অধিকাংশই বিশ্বাসঘাতকতা করে চলেছে। অতএব তুমি তাদেরকে ক্ষমা করতে থাক এবং তাদেরকে মার্জনা করতে থাক; নিশ্চয়ই আল্লাহ অনুগ্রহকারীদেরকে ভালবাসেন।

১৪. আর যারা বলেঃ আমরা নাসারা, আমি তাদের নিকট থেকেও ওয়াদা নিয়েছিলাম, কিন্তু তাদেরকেও যা কিছু উপদেশ দেয়া হয়েছিল তার মধ্য হতে তারা একটা অংশ ভুলে গেলো। সুতরাং আমি তাদের পরস্পরের মধ্যে হিংসা ও শত্রুতা সঞ্চার করে দিলাম কিয়ামতের দিন পর্যন্ত এবং অচিরেই আল্লাহ তাদেরকে তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে সংবাদ দেবেন।

১৫. হে আহলে কিতাবগণ! তোমাদের কাছে আমার রাসূল এসেছেন, তোমরা কিতাবের যেসব বিষয় গোপন কর তন্মধ্য হতে বহু বিষয় তিনি তোমাদের সামনে পরিষ্কারভাবে বর্ণনা করেন, আর বহু বিষয় থেকে এড়িয়ে যান। তোমাদের কাছে আল্লাহর নিকট থেকে এক আলোকময় জ্যোতি এবং একটি সুস্পষ্ট কিতাব এসেছে।

حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرَىٰ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۖ فَأَعْرَبْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۗ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٥﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۗ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

১৬. তা দ্বারা আল্লাহ এরূপ লোকদেরকে শাস্তির পন্থাসমূহ বলে দেন যারা তাঁর সন্তুষ্টি লাভ করতে চায় এবং তিনি তাদেরকে নিজ তাওফীকে ও করুণায় (কুফরীর) অন্ধকার থেকে বের করে (ঈমানের) আলোর দিকে আনয়ন করেন এবং তাদেরকে সরল (সঠিক) পথে প্রতিষ্ঠিত রাখেন।

১৭. অবশ্যই তারা কুফুরী করেছে যারা বলেঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ স্বয়ং হচ্ছেন মাসীহ ইবনু মারইয়াম, তুমি (হে মুহাম্মদ ﷺ)! বলঃ তাহলে যদি আল্লাহ মাসীহ ইবনু মারইয়ামকে ও তার মাকে এবং ভূ-পৃষ্ঠে যারা আছে তাদের সবাইকে ধ্বংস করার ইচ্ছা করেন, তবে এরূপ কে আছে যে তাদেরকে আল্লাহ হতে একটুও রক্ষা করতে পারে? আল্লাহর জন্যেই রাজত্ব নির্দিষ্ট রয়েছে আকাশসমূহে ও যমীনে এবং এতদুভয়ের মধ্যস্থিত যাবতীয় বস্তুর উপর; তিনি যা ইচ্ছা করেন তাই সৃষ্টি করেন, আর আল্লাহ সকল বস্তুর উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

১৮. ইয়াহূদী ও নাসারাগণ বলেঃ আমরা আল্লাহর পুত্র ও তাঁর প্রিয়পাত্র, তুমি বলে দাওঃ আচ্ছা তাহলে তিনি তোমাদেরকে তোমাদের পাপের দরুন কেন শাস্তি প্রদান করবেন? বরং তোমরাও অন্যান্য সৃষ্টির ন্যায় সাধারণ মানুষ মাত্র। তিনি যাকে ইচ্ছা মার্জনা করবেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেবেন, আর আল্লাহর রাজত্ব রয়েছে

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ
السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ
بِإِذْنِهِ وَ يَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ①

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ
مَرْيَمَ ط قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ
أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَنْ فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا ط وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا ط يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ط وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ
وَ أَحِبَّاؤُهُ ط قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ ط
بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ط يَغْفِرَ لِمَن
يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ط وَاللَّهُ مُلْكُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ذ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ③

আকাশসমূহে ও যমীনে এবং এতদুভয়ের মধ্যস্থিত সবকিছুতেও; আর (সবাইকে) তাঁর দিকেই প্রত্যাবর্তন করতে হবে।

১৯. হে আহলে কিতাবগণ! তোমাদের নিকট আমার রাসূল (মুহাম্মাদ ﷺ) এসে পৌঁছেছেন, যিনি তোমাদেরকে স্পষ্টভাবে (আল্লাহর হুকুম) বলে দিচ্ছেন, যে সময় রাসূলদের আগমনের সূত্র (দীর্ঘকাল) বন্ধ ছিল, যেন তোমরা (কিয়ামতের দিন) এরূপ বলে না বস যেঃ আমাদের নিকট কোন সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী আগমন করেননি; (এখন তো) তোমাদের নিকট সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী এসে গেছে, আর আল্লাহ সকল বস্তুর উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

২০. আর যখন মূসা (عليه السلام) স্বীয় সম্প্রদায়কে বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমাদের প্রতি আল্লাহর নিয়ামতকে স্মরণ কর, যখন তিনি তোমাদের মধ্যে বহু নবী সৃষ্টি করলেন, আর তোমাদেরকে রাজাধিপতি করেছেন। আর তোমাদেরকে এমন বস্তুসমূহ দান করলেন যা বিশ্ববাসীদের মধ্যে কাউকেও দান করেননি।

২১. হে আমার সম্প্রদায়! এ পুণ্য ভূমিতে প্রবেশ কর যা আল্লাহ তোমাদের জন্যে লিখে দিয়েছেন, আর পিছনের দিকে ফিরে যোগো না, তাহলে তোমরা সম্পূর্ণরূপে ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فَتْرَةٍ مِّنَ الرَّسُلِ أَنَّ تَقْوُوا مَا جَاءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١٩

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلْنَا فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلْنَا مُلُوكًا وَأَنْتُمْ قَالُمْ يَوْمٍ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ٢٠

يَقَوْمِهِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتُدُّوا عَلَىٰ آدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خُسِرِينَ ٢١

২২. তারা বললোঃ হে মুসা (ﷺ)! সেখানে তো পরাক্রমশালী গোত্র রয়েছে; অতএব, তারা যে পর্যন্ত সেখান হতে বের হয়ে না যায় সে পর্যন্ত আমরা সেখানে কখনও প্রবেশ করবো না। হ্যাঁ যদি তারা সেখান হতে বেরিয়ে যায় তবে নিশ্চয়ই আমরা যেতে প্রস্তুত আছি।

২৩. সে দু'ব্যক্তি, যারা (আল্লাহকে) ভয়কারীদের অন্তর্ভুক্ত ছিল এবং যাদের প্রতি আল্লাহ অনুগ্রহ করেছিলেন, বললোঃ তোমরা তাদের উপর (আক্রমণ চালিয়ে নগরের) দ্বারদেশ পর্যন্ত যাও, ফলে যখনই তোমরা দ্বারদেশে প্রবেশ করবে তখনই জয় লাভ করবে এবং তোমরা আল্লাহর উপরই নির্ভর কর, যদি তোমরা মু'মিন হও।

২৪. তারা বললোঃ হে মুসা (ﷺ)! নিশ্চয়ই আমরা কখনও সেখানে প্রবেশ করব না যে পর্যন্ত তারা সেখানে বিদ্যমান থাকে, অতএব, আপনি ও আপনার প্রভু (আল্লাহ) চলে যান এবং উভয়ে যুদ্ধ করুন, আমরা এখানেই বসে থাকবো।

২৫. তিনি (মুসা ﷺ) বললেনঃ হে আমার প্রভু! আমি শুধু নিজের উপর ও নিজের ভাই-এর উপর অধিকার রাখি, সুতরাং আপনি আমাদের উভয়ের এবং এ অবাধ্য সম্প্রদায়ের মধ্যে মীমাংসা করে দিন।

قَالُوا يٰمُوسَى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۗ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا وَإِنَّا دُخُونٌ ﴿٢٢﴾

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أُنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ۖ ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَانكُمُ عَلَيْهِمْ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا ۚ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

قَالُوا يٰمُوسَى إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا ۖ فَادْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَوِّدُونَ ﴿٢٤﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرِقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾

২৬. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ (তা হলে মীমাংসা এই যে) এ দেশ চল্লিশ বছর পর্যন্ত এদের জন্য নিষিদ্ধ করে দেয়া হলো তারা উদভ্রান্ত হয়ে পৃথিবীতে ফিরতে থাকবে; সুতরাং তুমি এ অবাধ্য সম্প্রদায়ের জন্যে (একটুও) চিন্তিত হয়ো না।

২৭. (হে নবী ﷺ)! তুমি তাদেরকে (আহলে কিতাবদেরকে) আদমের পুত্রদ্বয়ের (হাবীল ও কাবীলের) ঘটনা সঠিকভাবে পাঠ করে শুনিয়ো দাও; যখন তারা উভয়েই এক একটি কুরবানী উপস্থিত করলো এবং তন্মুখ্য হতে একজনের (হাবীলের) তো কবুল হলো এবং অপরজনের কবুল হলো না; সেই অপরজন বলতে লাগলোঃ আমি তোমাকে নিশ্চয়ই হত্যা করবো;^১ সেই প্রথম জন বললোঃ আল্লাহ মুত্তাকীদের আমলই কবুল করে থাকেন।

২৮. তুমি যদি আমাকে হত্যা করার জন্যে তোমার হাত বাড়াও, তবুও আমি তোমাকে হত্যা করার জন্যে তোমার দিকে কখনও আমার হাত বাড়াবো না; আমি তো বিশ্বপ্রভু আল্লাহকে ভয় করি।

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ
يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

وَأْتَلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنِي آدَمَ بِالْحَقِّ ۖ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا
فَتَقَبَّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرَ ۗ
قَالَ لَأُقْتُلَنَّكَ ۗ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾

لِيُنَبِّئَنَّكَ إِلَى يَدِكَ لَتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ
يَدَيَّ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَنَّكَ ۗ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾

১। (ক) আব্দুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন, (যেখানে) কোন ব্যক্তিকে অন্যায়ভাবে হত্যা করা হবে, তখন তার পাপের একাংশ আদম (আলাইহিস্ সালাম)-এর প্রথম সন্তান (কাবীলের উপর) বর্তাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৬৭)

(খ) আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে শুনেছেন, তিনি বলেছেনঃ আমার পরে (মৃত্যুর পরে) তোমরা একে অপরের গলা কেটে (যুদ্ধ বিগ্রহের মাধ্যমে) কুফরীর পথে ফিরে যেয়ো না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৬৮)

২৯. আমি চাই যে, (আমার দ্বারা) কোন পাপ না হোক) তুমি আমার পাপ এবং তোমার পাপ সমস্তই নিজের মাথায় উঠিয়ে নাও; ফলে তুমি জাহান্নামীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাও, অত্যাচারীদের শাস্তি এরূপই হয়ে থাকে।

৩০. অতঃপর তার প্রবৃত্তি তাকে স্বীয় ভ্রাতৃ হত্যার প্রতি উদ্বুদ্ধ করে তুললো, সুতরাং সে তাকে হত্যা করেই ফেললো, ফলে সে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে পড়লো।

৩১. অতঃপর আল্লাহ একটি কাক প্রেরণ করলেন; সে মাটি খুঁড়তে লাগলো, যেন সে তাকে (কাবীলকে) শিখিয়ে দেয় যে, স্বীয় ভ্রাতার মৃতদেহ কিভাবে ঢাকবে, সে বলতে লাগলোঃ দিক আমাকে! আমি এই কাকটির মতোও হতে পারলাম না যাতে আমার ভাইয়ের লাশ গোপন করতে পারি। ফলে সে অত্যন্ত লজ্জিত হলো।

৩২. এ কারণেই আমি বানী ইসরাঈলের প্রতি এ নির্দেশ দিয়েছি যে, যে ব্যক্তি কোন ব্যক্তিকে হত্যা করে অন্য প্রাণের বিনিময় ব্যতীত কিংবা তার দ্বারা ভূ-পৃষ্ঠে কোন ফাসাদ বিস্তার ব্যতীত তবে সে যেন সমস্ত মানুষকে হত্যা করে ফেললো; আর যে ব্যক্তি কোন ব্যক্তিকে রক্ষা করলো তবে সে যেন সমস্ত মানুষকে রক্ষা করলো; আর তাদের (বানী

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِأَنْفُسِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الخٰسِرِينَ ﴿٣٠﴾

فَبَعَثَ اللهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِئِي سَوْءَةَ أَخِيهِ ۖ قَالَ يُؤْتِلُنِيَ أَحْجَرُتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِئِي سَوْءَةَ أَخِي ۖ فَأَصْبَحَ مِنَ الخٰسِرِينَ ﴿٣١﴾

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ ۖ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا ۖ وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا ۖ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ بَعَدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾

ইসরাঈলদের) কাছে আমার বহু রাসূল স্পষ্ট প্রমাণসমূহ নিয়ে আগমন করেছিলেন, তবু এরপরেও তন্মধ্য হতে অনেকেই ভূ-পৃষ্ঠে সীমালঙ্ঘন-কারী রয়ে গেছে।^১

৩৩. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করে, আর ভূ-পৃষ্ঠে অশান্তি সৃষ্টি করে বেড়ায় তাদের শাস্তি এটাই যে, তাদেরকে হত্যা করা হবে অথবা শূলে চড়ান হবে, অথবা এক দিকের হাত ও অপর দিকের পা কেটে ফেলা হবে অথবা নির্বাসনে পাঠানো হবে। এটা তো ইহলোকে তাদের জন্যে ভীষণ অপমান, আর পরকালেও তাদের জন্যে ভীষণ শাস্তি রয়েছে।

৩৪. কিন্তু হ্যাঁ, তোমরা তাদেরকে শ্রেফতার করার পূর্বে যারা তাওবা করে নেয়, তবে জেনে রাখো যে, নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়ালু।

৩৫. হে মু'মিনগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং তাঁর সান্নিধ্য অন্বেষণ কর ও আল্লাহর পথে জিহাদ করতে থাক, আশা করা যায় যে, তোমরা সফলকাম হবে।

৩৬. নিশ্চয়ই যারা কুফুরি করেছে, যদি তাদের কাছে বিশ্বের সমস্ত দ্রব্যও থাকে এবং ওর সাথে

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِأَنفُسِهِمْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

১। আনাস বিন মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-থেকে বর্ণনা করেন, নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, কবির গোনানের মধ্যে সবচাইতে বড় হচ্ছে আল্লাহর সঙ্গে শিরক করা এবং কোন মানুষকে অন্যায়ভাবে হত্যা করা। পিতা-মাতার অবাধ্য হওয়া। মিথ্যা কথা বলা, অথবা বলছেন (বর্ণনাকারী সন্দেহ করে বলেছেন) মিথ্যা সাক্ষী দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৭১)

তৎপরিমাণ আরও যোগ হয়, যেন তারা তা প্রদান করে কিয়ামতের শাস্তি থেকে মুক্ত হয়ে যায়, তবুও এ দ্রব্যসমূহ তাদের থেকে কবুল করা হবে না, আর তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

৩৭. তারা এটা কামনা করবে যে, জাহান্নাম থেকে বের হয়ে যায়, অথচ তারা তা থেকে কখনও বের হতে পারবে না, বস্তুতঃ তাদের জন্যে রয়েছে চিরস্থায়ী শাস্তি।

৩৮. আর যে পুরুষ চুরি করে এবং যে নারী চুরি করে, তোমরা তাদের কৃতকর্মের বিনিময়ে তাদের হাত গুলো কেটে ফেল, এটা আল্লাহর পক্ষ থেকে শাস্তি, আর আল্লাহ অতিশয় ক্ষমতাবান, মহা প্রজ্ঞাময়।

৩৯. কিন্তু যে ব্যক্তি সীমালঙ্ঘন করার পর (চুরি করার পর) তাওবা করে নেয় এবং আমলকে সংশোধন করে নেয়, তবে আল্লাহ তার তাওবা কবুল করবেন নিশ্চয়ই আল্লাহ পরম ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

৪০. তুমি কি জান যে, আল্লাহরই জন্যে রয়েছে রাজত্ব আসমান-সমূহের এবং যমীনের; তিনি যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেন এবং যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করে দেন; আর আল্লাহ সব বিষয়ের উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

৪১. হে রাসূল (ﷺ)! যারা কুফুরীর দিকে দ্রুত গতিতে অগ্রসর হচ্ছে, (তাদের এ কর্ম) তোমাকে যেন চিন্তিত না করে। যারা মুখে বলে

مَا تَقْبَلُ مِنْهُمْ ۖ وَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٧﴾

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۚ وَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٨﴾

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جِزَاءً بِمَا كَسَبَا كَلَّا مِنْ اللَّهِ ط وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٩﴾

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ط إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤٠﴾

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ ط وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزَنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنُ

ঈমান এনেছি; কিন্তু তাদের অন্তর ঈমান আনেনি এরা হোক অথবা যারা ইয়াহুদী হয়ে গেছে তারা হোক, যারা মিথ্যা কথা শুনতে বিশেষ পারদর্শী, তারা তোমার কথাগুলো অন্য ঐ সম্প্রদায়ের স্বার্থে কান পেতে শোনে যারা তোমার নিকট কখনো আসেনি, এরা আল্লাহর কিতাবের শব্দগুলোকে স্বীয় স্থান হতে বিকৃত করে। তারা বলে, তোমরা এ রকম নির্দেশপ্রাপ্ত হলে মানবে, আর তা না হলে বর্জন করবে। বস্তুতঃ আল্লাহই যাকে ফিতনায় ফেলতে চান, তার জন্য আল্লাহর কাছে তোমার কিছুই করার নেই। ওরা হল সেই লোক, যাদের অন্তরাত্মকে আল্লাহ পবিত্র করতে চান না। তাদের জন্য দুনিয়াতে রয়েছে লাঞ্ছনা, আর তাদের জন্য আখিরাতে রয়েছে মহা শাস্তি।

৪২. তারা মিথ্যা কথা শুনতে যেমন অভ্যস্ত, তেমনি হারাম বস্তু খেতে অভ্যস্ত, অতএব তারা যদি তোমার কাছে আসে, তবে হয় তুমি তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দাও কিংবা তাদের থেকে বিরত থাক, আর যদি তুমি তাদের থেকে বিরতই থাক তবে তাদের সাধ্য নেই যে, তোমার বিন্দুমাত্রও ক্ষতি করে, আর যদি তুমি মীমাংসা কর তবে তাদের মধ্যে ন্যায়তঃ মীমাংসা করবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ ন্যায় বিচারকদেরকে ভালবাসেন।

৪৩. আর তারা কিরূপে তোমাকে মীমাংসাকারী বানিয়ে নিচ্ছে? অথচ

قُلُوبُهُمْ ۗ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۗ سَمِعُونَ لِلْكَذِبِ
سَمِعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ط يَحْرِقُونَ
الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۗ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ
هَذَا فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ط
وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا ط أُولَئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ
قُلُوبَهُمْ ط لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۗ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٨٢﴾

سَمِعُونَ لِلْكَذِبِ أَكُلُونَ لَلسُّحْتِ ط فَإِنْ جَاءُوكَ
فَأَحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرَضْ عَنْهُمْ ۗ وَإِنْ تُعْرَضْ
عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرَّوكَ شَيْئًا ط وَإِنْ حَكَمْتَ فَأَحْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ط إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٨٣﴾

وَكَيْفَ يُحْكِمُوكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا

তাদের কাছে তাওরাত রয়েছে, তাতে আল্লাহর বিধান বিদ্যমান! অতঃপর তারা এরপর (তোমার মীমাংসা হতে) ফিরে যায় আর তারা কখনও আস্তাবান নয়।

৪৪. নিশ্চয়ই আমি তাওরাত নাযিল করেছি, যাতে হেদায়াত এবং আলো ছিল, আল্লাহর অনুগত নবীরা তদনুযায়ী ইয়াহুদীদেরকে আদেশ করতেন আর আল্লাহওয়ালাগণও এবং আলেমগণও এ কারণে যে, তাদেরকে এ কিতাবুল্লাহ'র সংরক্ষণের আদেশ দেয়া হয়েছিল এবং তারা তা স্বীকার করেছিল; অতএব, (হে ইয়াহুদী আলেমগণ) তোমরাও মানুষকে ভয় করো না, বরং আমাকে ভয় কর; আর আমার বিধানসমূহের বিনিময়ে (পার্থিব) সামান্য বস্তু গ্রহণ করো না; আর যে ব্যক্তি আল্লাহর নাযিলকৃত বিধান অনুযায়ী হুকুম প্রদান না করে, (বিধান না দেয়) তাহলে এমন লোক তো কাফির।

৪৫. আর আমি তাদের প্রতি তাতে (তাওরাতে) এটা ফরয করেছিলাম যে, প্রাণের বিনিময়ে প্রাণ, চক্ষুর বিনিময়ে চক্ষু, নাকের বিনিময়ে নাক, কানের বিনিময়ে কান, দাঁতের বিনিময়ে দাঁত এবং (তদ্রূপ অন্যান্য) বিশেষ যখমেরও বিনিময় রয়েছে; ফলে যে ব্যক্তি ক্ষমা করে দেয় তবে এটা তার জন্যে (পাপের) কাফফারা হয়ে যাবে; আর যে ব্যক্তি আল্লাহর নাযিলকৃত বিধান অনুযায়ী

حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ ط
وَمَا أَوْلِيكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۞

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَ نُورٌ ۖ يَحْكُمُ بِهَا
النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّحِيمُونَ
وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا
عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۖ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاحْشَوْنَ
وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ط وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ۞

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ
بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ
وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ط فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ ط وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۞

হুকুম প্রদান না করে তবে তো এমন ব্যক্তিগণ অত্যাচারী।

৪৬. আর আমি তাদের পর ঈসা ইবনে মারইয়ামকে^১এ অবস্থায় প্রেরণ করেছিলাম যে, সে তার পূর্ববর্তী কিতাবের অর্থাৎ তাওরাতের সত্যায়নকারী ছিলেন এবং আমি তাকে ইনজীল প্রদান করেছি, যাতে হিদায়াত এবং আলো ছিল, আর এটা স্বীয় পূর্ববর্তী কিতাব অর্থাৎ তাওরাতের সত্যায়নকারী এবং সম্পূর্ণরূপে মুক্তকীদের জন্যে হিদায়াত ও নসীহত ছিল।

৪৭. আহলে ইনজীলের উচিত যে, আল্লাহ তাতে যা কিছু অবতীর্ণ করেছেন, তদনুযায়ী হুকুম প্রদান করে, আর যে ব্যক্তি আল্লাহর নাযিলকৃত বিধান অনুযায়ী হুকুম প্রদান করে না, তবে তো এরূপ লোকই ফাসিক।

৪৮. আর আমি এ কিতাব (কুরআন)-কে তোমার প্রতি নাযিল করেছি যা হকের সাথে পূর্ববর্তী কিতাবসমূহেরও সত্যতা প্রমাণকারী

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۖ وَأَتَيْنَهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ ۖ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝

وَلِيَحْكُمَ أَهْلَ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۖ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّبًا عَلَيْهِ فَاحْكُم

১। (ক) আব্দুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে মুসলমান ব্যক্তি এ সাক্ষ্য দেয় যে, আল্লাহ ছাড়া সত্য কোন মা'বুদ নেই এবং আমি (মুহাম্মাদ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহর রাসূল, তার রক্ত তিনটি কারণ ব্যতীত প্রবাহিত করা অবৈধ। (হত্যার বদলে কিসাস) জীবনের বদলে জীবন। একজন বিবাহিত ব্যক্তি যে অবৈধ যৌন ব্যভিচারে লিপ্ত হয় এবং ঐ ব্যক্তি যে ইসলাম ত্যাগ করে এবং মুসলমান জামা'আত থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে যায়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৭৮)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, তিনি বলেছেনঃ যে, আমি মারইয়ামের পুত্র (ঈসা)-এর সবচেয়ে বেশি নিকটতম। নবীগণ একে অন্যের বৈমায়ে ভাই; আমার এবং তাঁর মধ্যে কোন নবী নেই। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪২)

এবং ঐসব কিতাবের সংরক্ষকও; অতএব, তুমি তাদের পারস্পরিক বিষয়ে আল্লাহর অবতারিত এ কিতাব অনুযায়ী মীমাংসা করো, যা তুমি প্রাপ্ত হয়েছে, তা থেকে বিরত হয়ে তাদের প্রবৃত্তি অনুযায়ী কাজ করো না, তোমাদের প্রত্যেক (সম্প্রদায়)-এর জন্যে আমি নির্দিষ্ট শরীয়ত এবং নির্দিষ্ট পন্থা নির্ধারণ করেছি; আর যদি আল্লাহ ইচ্ছা করতেন, তবে অবশ্যই তোমাদের সকলকে একই উম্মত করে দিতেন; কিন্তু তিনি তা করেননি। এই কারণে যে, যে জীবন ব্যবস্থা তিনি তোমাদেরকে প্রদান করেছেন তাতে তোমাদের সকলকে পরীক্ষা করবেন, সুতরাং তোমরা কল্যাণকর বিষয়সমূহের দিকে ধাবিত হও; তোমাদের সকলকে আল্লাহর সমীপে প্রত্যাবর্তন করতে হবে, তখন তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দেবেন যে বিষয়ে তোমরা মতবিরোধ করছিলে।

৪৯. আর আমি নির্দেশ দিচ্ছি যে তুমি তাদের পারস্পরিক ব্যাপারে এ প্রেরিত কিতাব অনুযায়ী মীমাংসা করবে এবং তাদের প্রবৃত্তি অনুযায়ী কাজ করবে না এবং তাদের দিক থেকে সতর্ক থাকবে যেন তারা তোমাকে আল্লাহর প্রেরিত কোন নির্দেশ হতে বিভ্রান্ত করতে না পারে; কিন্তু তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে দৃঢ়বিশ্বাস রাখো, আল্লাহর ইচ্ছা এটাই যে, তাদেরকে কোন কোন পাপের দরুন শাস্তি প্রদান করবেন;

بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ
عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرَعَةً
وَمِنْهَا جَا ط وَ لَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَيْتُمْ فَأَسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ
إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُهُمْ جِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٤٩﴾

وَأَنْ أَحْكُمَ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ
أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَ إِنْ تَوَلَّوْا فَاَعْلَمُ أَكْبَارًا
يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ
وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٥٠﴾

আর বহু লোক তো নাফরমানই হয়ে থাকে।

৫০. তবে কি তারা জাহেলিয়াতের বিচার ব্যবস্থা কামনা করে? আর দৃঢ় বিশ্বাসীদের কাছে মীমাংসা কার্যে আল্লাহর চেয়ে কে উত্তম হবে?

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ط وَمَنْ أَحْسَنُ
مَنْ اللَّهُ حُكْمًا لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ٥٠

৫১. হে মু'মিনগণ! তোমরা ইয়াহুদী ও খ্রিস্টানদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, তারা পরস্পরের বন্ধু, আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি তাদের সাথে বন্ধুত্ব করবে, নিশ্চয়ই সে তাদেরই মধ্যে গণ্য হবে; নিশ্চয়ই আল্লাহ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে সুপথ প্রদর্শন করেন না।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى
أَوْلِيَاءَ مَبْعُثُهُمْ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ط وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ
مِّنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ٥١

৫২. এ কারণেই যাদের অন্তরে পীড়া রয়েছে, তাদেরকে তোমরা দেখবে যে, তারা দৌড়িয়ে দৌড়িয়ে তাদের (কাফিরদের) মধ্যে প্রবেশ করছে, এবং তারা বলে আমাদের ভয় হচ্ছে যে, আমাদের উপর কোন বিপদ এসে পড়ে না কি! অতএব আশা করা যায় যে, অচিরেই আল্লাহ (মুসলমানদের) পূর্ণ বিজয় দান

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ
يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ ط فَعَسَى اللَّهُ
أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهِ فَيُصِيبُوا
عَلَى مَا أَسْرَوْا فِي أَنْفُسِهِمْ نِدْمِينَ ٥٢

১। (ক) ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) হতে বর্ণিত, নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহর কাছে সবচাইতে ঘৃণিত ব্যক্তি হচ্ছে তিনজনঃ যে ব্যক্তি হারাম শরীফের মধ্যে ধীন থেকে বেরিয়ে যায় (অর্থাৎ যে ব্যক্তি মক্কা ও মদীনার হারামের মধ্যে অন্যায় কাজ করে) যে ব্যক্তি মুসলমান হওয়া সত্ত্বেও জাহেলী যুগের রীতিনীতি অনুসন্ধান করে এবং যে ব্যক্তি কোন অধিকার ব্যতীত কারো রক্তপাত দাবী করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৮২)

(খ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত (ইসলামের প্রাথমিক যুগে নামাযের সময় কিভাবে মানুষকে আহ্বান করা যায় এ ব্যাপারে পরামর্শ হল) সাহাবাগণ আঙুন জুলাবার অথবা ঘণ্টা বাজাবার জন্য প্রস্তাব দেন; কিন্তু এ দু'টিকেই ইয়াহুদ ও নাসারাদের রীতি বলে উল্লেখ করা হয়। অতঃপর বেলালকে আযানের বাক্যগুলি দু'বার করে এবং ইকামতের বাক্য একবার করে বলার নির্দেশ দেয়া হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৩)

করবেন অথবা অন্য কোন বিষয় বিশেষভাবে নিজ পক্ষ হতে (দেবেন)। ফলে তারা নিজেদের অন্তরে লুকানো মনোভাবের কারণে লজ্জিত হবে।

৫৩. আর মুসলমানরা বলবেঃ আরে! এরাই না কি তারা! যারা অতি দৃঢ়তার সাথে আল্লাহর নামে শপথ করতো যে তারা তোমাদের সাথেই আছে; এদের সমস্ত কর্মই ব্যর্থ হয়ে গেল, ফলে তারা অকৃতকার্য রইলো।

৫৪. হে মু'মিনগণ! তোমাদের মধ্য হতে যে ব্যক্তি স্বীয় দ্বীন হতে ফিরে যায়, তবে (এতে ইসলামের কোন ক্ষতি নেই।) কেননা আল্লাহ সত্বরই (তাদের স্থলে) এমন এক সম্প্রদায় সৃষ্টি করবেন যাদেরকে আল্লাহ ভাল বাসবেন এবং তারাও আল্লাহকে ভালবাসবে। তারা মুসলমানদের প্রতি মেহেরবান থাকবে, কাফিরদের প্রতি কঠোর হবে, তারা আল্লাহর পথে জিহাদ করবে, আর তারা কোন নিন্দ্রকের নিন্দ্রার পরোয়া করবে না; এটা আল্লাহর অনুগ্রহ, যাকে ইচ্ছা প্রদান করেন বস্তৃতঃ আল্লাহ প্রাচুর্যদানকারী, মহাজ্ঞানী।

৫৫. তোমাদের বন্ধু তো আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) এবং মু'মিনরা—যারা নামায আদায় করে, যাকাত প্রদান করে এবং তারা বিনয়ী।

৫৬. আর যে ব্যক্তি বন্ধুত্ব রাখবে আল্লাহর সাথে, তাঁর রাসূল (ﷺ)—এর

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا
بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فَاصْبِرُوا خَيْرِينَ ﴿٥٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۖ أَذِلَّةٍ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ رَبِّجَاهُ ۖ هَدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۗ ذَلِكَ
فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ
عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا

সাথে এবং মু'মিনদের সাথে, তবে (তারা আল্লাহর দলভুক্ত হলো এবং) নিশ্চয়ই আল্লাহর দলই বিজয়ী।

৫৭. হে মু'মিনগণ! যারা তোমাদের পূর্বে কিতাবপ্রাপ্ত হয়েছে, তাদের মধ্যে যারা তোমাদের দ্বীনকে হাসি ও তামাশার বস্তু বানিয়ে নিয়েছে; তাদেরকে ও কাফেরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না আর আল্লাহকে ভয় কর, যদি তোমরা ঈমানদার হয়ে থাক।

৫৮. আর যখন তোমরা নামাযের জন্যে (আযান দ্বারা) আহ্বান কর, তখন তারা তার সাথে হাসি ও তামাশা করে, এর কারণ এই যে, তারা এরূপ লোক, যারা মোটেই জ্ঞান রাখে না।

৫৯. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ হে আহলে কিতাবগণ! তোমরা আমাদের সাথে শুধু এই কারণে শত্রুতা করছ যে, আমরা ঈমান এনেছি আল্লাহর প্রতি এবং ঐ কিতাবের প্রতি যা আমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছে এবং ঐ কিতাবের প্রতি যা অতীতে প্রেরিত হয়েছে, এবং এই কারণে যে তোমাদের অধিকাংশ লোক ফাসেক।

৬০. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ আমি কি তোমাদেরকে বলে দেব, যা প্রতিদান প্রাপ্তি হিসাবে ওটা হতেও (যাকে তোমরা মন্দ বলে জান) আল্লাহর কাছে অধিক নিকৃষ্ট? ওটা ঐসব লোকের পস্থা, যাদেরকে

فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا وَوَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكَفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٥٨﴾

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوا هُزُؤًا وَوَلَعِبًا ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٩﴾

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنِّي إِلَّا أَنْ أَمَّنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَإِنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُونَ ﴿٦٠﴾

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرِّ مِّنْ ذَٰلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ ۗ مَنْ لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۗ

আল্লাহ অভিসম্পাত করেছেন এবং যাদের প্রতি তিনি রাগান্বিত হয়েছেন ও যাদের কতককে বানর ও শূকর বানিয়ে দিয়েছেন এবং যারা তাগুতের পূজা করেছে; এরূপ লোকেরাই নিকৃষ্ট স্থানের অধিকারী এবং (ইহকালেও) সরল পথ হতে অধিকতর বিপথগামী।

৬১. আর যখন তারা তোমাদের নিকট আসে, তখন বলে আমরা ঈমান এনেছি, অথচ তারা কুফরই নিয়ে এসেছিল এবং তারা কুফরই নিয়ে চলে গেছে এবং আল্লাহ তো খুব ভাল জানেন যা তারা গোপন রাখে।

৬২. আর তুমি তাদের মধ্যে এমন অসংখ্য লোক দেখবে, যারা প্রতিযোগিতামূলক পাপ, যুলুম ও হারাম ভক্ষণে নিপতিত হচ্ছে, বাস্তবিকই তাদের এ কাজ মন্দ।

৬৩. তাদেরকে আল্লাহওয়ালাগণ এবং আলেমগণ পাপের কথা হতে এবং হারাম মাল ভক্ষণ করা হতে নিষেধ করছে না কেন? বাস্তবিকই তাদের এ কাজ নিন্দনীয়।

৬৪. আর ইয়াহূদীরা বলে, আল্লাহর হাত বন্ধ হয়ে গেছে; তাদেরই হাত বন্ধ হয়ে গেছে। তাদের এ উক্তি

أُولَئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ
السَّبِيلِ ①

وَإِذَا جَاءَهُمْ وَكُمُ قَالُوا أَمَنَّا وَ قَدْ دَخَلُوا
بِالْكَفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ط وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ②

وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَآكِلِهِمُ السُّحْتَ ط لَيْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ③

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبُّيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمْ
الْإِثْمَ وَآكِلِهِمُ السُّحْتَ ط لَيْسَ مَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ ④

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ط غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ
وُلِعِنُوا بِمَا قَالُوا مَرْبَلُ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَيْنِ ۙ يُنْفِقُ

১। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তিনি বলেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ তা'আলা কিয়ামতের দিন সমস্ত পৃথিবীকে তাঁর মুঠিতে ধারণ করবেন এবং সমস্ত আকাশকে স্বীয় ডান হাতে নিয়ে নিবেন। অতঃপর বলবেন আমিই একমাত্র মালিক (বাদশাহ) (বুখারী, হাদীস নং ৭৪১২)

(খ) নিশ্চয়ই আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, আল্লাহ পৃথিবীকে তাঁর মুঠিতে ধারণ করবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪১৩)

দরুন তাদের প্রতি অভিশাপ করা হয়েছে; বরং তাঁর (আল্লাহর) তো উভয় হাত উন্মুক্ত, যে রূপ ইচ্ছা বায় করেন; আর যে বিষয় তোমার নিকট তোমার প্রভুর পক্ষ হতে প্রেরিত হয়, তা তাদের মধ্যে অনেকের নাফরমানী ও কুফর বৃদ্ধির কারণ হয় এবং আমি তাদের পরস্পরের মধ্যে শত্রুতা ও হিংসা নিষ্ক্ষেপ করেছি কিয়ামত পর্যন্ত; যখনই তারা (মুসলমানদের বিরুদ্ধে) যুদ্ধাগ্নি প্রজ্জ্বলিত করতে চায়, আল্লাহ তা নির্বাপিত করে দেন এবং তারা ভূ-পৃষ্ঠে অশান্তি ছড়িয়ে বেড়ায়, আর আল্লাহ অশান্তি বিস্তারকারীদেরকে ভালবাসেন না।

৬৫. আর এ আহলে কিতাবগণ (ইয়াহুদী ও নাসারা) যদি ঈমান আনতো এবং তাকওয়া অবলম্বন করতো, তবে আমি অবশ্যই তাদের সমস্ত অন্যায ক্ষমা করে দিতাম এবং অবশ্যই তাদেরকে আরাম ও শান্তিময় জান্নাতে প্রবেশ করাতাম।

৬৬. আর যদি তারা তাওরাত ও ইনজীলের এবং যা কিছু তাদের প্রভুর পক্ষ হতে তাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে, ওর যথারীতি আমলকারী হতো, তবে তারা তাদের উপর (অর্থাৎ আকাশ) হতে এবং পায়ের নিম্ন (অর্থাৎ যমীন) হতে রিযিক পেত ও প্রাচুর্যের সাথে ভক্ষণ করতো, তাদের একদল তো সরল পথের পথিক; আর তাদের অধিকাংশই এরূপ যে তাদের কার্যকলাপ অতি

كَيْفَ يَشَاءُ ط وَكَزَيْدًا كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أَنْزَلْ
إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ط وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمْ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ط كُلَّمَا أَوْقَدُوا
نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ط وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ
فَسَادَاتٍ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٥﴾

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دَخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٦٥﴾

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أَنْزَلْ
إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ
أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُقْتَصِدَةٌ ط وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ
سَاءٌ مَا يَعْمَلُونَ ﴿٦٦﴾

জঘন্য ১১

৬৭. হে রাসূল (ﷺ)! যা কিছু তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে তোমার উপর অবতীর্ণ করা হয়েছে, তুমি (মানুষকে) সব কিছুই পৌঁছিয়ে দাও; আর যদি এরূপ না কর, (তবে) তুমি আল্লাহর পয়গামও পৌঁছাওনি বলে বিবেচিত হবে, আর আল্লাহ তোমাকে মানুষ (অর্থাৎ কাফির) হতে সংরক্ষিত রাখবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ কাফির সম্প্রদায়কে সুপথ প্রদর্শন করেন না।

يَا أَيُّهَا الرُّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ
وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ
مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٧﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর মদীনা আগমনের খবর আবদুল্লাহ্ ইবনে সালামের নিকট পৌঁছলে তিনি এসে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে কয়েকটি বিষয়ে প্রশ্ন করেন। তিনি বললেনঃ আমি আপনাকে এমন তিনটি বিষয়ে জিজ্ঞেস করব যা নবী ছাড়া আর কেউ জানে না। (এক) কিয়ামতের সর্বপ্রথম আলামত কি? (দুই) জান্নাতবাসীগণ সর্বপ্রথম কোন্ খাদ্য খাবে? (তিন) কিসের কারণে সন্তান (আকৃতিতে কখনো) তার পিতার অনুরূপ হয় আবার (কখনো) তার মায়ের মত হয়? নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ এ বিষয়গুলো সম্পর্কে জিবরাইল (আলাইহিস্ সালাম) এইমাত্র আমাকে বলে গেলেন। (আব্দুল্লাহ্) ইবনে সালাম বললেনঃ ফেরেশতাদের মধ্যে তিনিই তো ইয়াহূদীদের শত্রু। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ কিয়ামতের সর্বপ্রথম আলামত হলো আশুন, যা লোকদেরকে পূর্বদিক থেকে পশ্চিমে নিয়ে সমবেত করবে। আর জান্নাতবাসীগণ সর্বপ্রথম যে খাদ্য খাবে তা হলো মাছের কলিজার অতিরিক্ত টুকরো, যা কলিজার সাথে লেগে থাকে। আর সন্তানের ব্যাপারটা হলো এইঃ নারী-পুরুষের মিলনকালে যদি নারীর আগে পুরুষের বীর্যপাত ঘটে তবে সন্তান বাপের অনুরূপ হয়, আর যদি পুরুষের আগে নারীর বীর্যপাত ঘটে তবে সন্তান মায়ের আকৃতি ধারণ করে। তখন আবদুল্লাহ্ ইবনে সালাম বললেনঃ আমি সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আল্লাহ্ ছাড়া কোন সত্য মা'বুদ নেই এবং নিশ্চয়ই আপনি আল্লাহর রাসূল। তিনি বললেন, আল্লাহর রাসূল! ইয়াহূদীরা এমন একটি জাতি যারা অপবাদ রটনায় অভ্যস্তপটু। কাজেই আমার ইসলাম গ্রহণ সম্পর্কে তারা জ্ঞাত হবার আগেই আপনি আমার ব্যাপারে জিজ্ঞেস করুন। তারপর ইয়াহূদীরা এলে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাদেরকে জিজ্ঞেস করলেনঃ তোমাদের মধ্যে আবদুল্লাহ্ ইবনে সালাম কেমন লোক? তারা বললঃ তিনি আমাদের মধ্যে সর্বোত্তম ব্যক্তি এবং সর্বোত্তম ব্যক্তির ছেলে। তিনি আমাদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ ব্যক্তি এবং সর্বশ্রেষ্ঠ ব্যক্তির ছেলে। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ আচ্ছা, আবদুল্লাহ্ ইবনে সালাম যদি ইসলাম গ্রহণ করে তবে কেমন হবে? তারা বললঃ আল্লাহ তাকে এ থেকে রক্ষা করুন। তিনি পুনরায় একথা বললেন। তারাও সেই জবাব দিল। এমন সময় আবদুল্লাহ্ ডেভর থেকে তাদের সামনে বেরিয়ে এলেন এবং বললেনঃ আমি সাক্ষ্য দিচ্ছি আল্লাহ্ ছাড়া আর কোন ইলাহ নেই এবং নিশ্চয়ই মুহাম্মাদ আল্লাহর রাসূল। তখন তারা বলতে লাগলঃ এ লোকটা আমাদের মধ্যে সর্বনিকৃষ্ট ব্যক্তি এবং সর্বনিকৃষ্ট ব্যক্তির ছেলে। তারপর তারা তাকে খুব হয়ে প্রতিপন্ন করল। তিনি বললেনঃ হে আল্লাহর রাসূল! তাদের ব্যাপারে আমি এটাই আশঙ্কা করছিলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩৯৩৮)

৬৮. তুমি (মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ হে আহলে কিতাবগণ! মূলতঃ তোমরা কোন পথেই প্রতিষ্ঠিত নও যে পর্যন্ত না তাওরাত, ইনজীল এবং যা কিছু তোমাদের নিকট তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে অবতীর্ণ হয়েছে তার পূর্ণ পাবন্দী করবে; আর অবশ্যই যা তোমার প্রতি তোমার প্রভুর পক্ষ থেকে প্রেরণ করা হয়েছে, তা তাদের মধ্যে অনেকেই নাফরমানী ও কুফরি আরো বৃদ্ধি করবে, অতএব, তুমি এ কাফিরদের জন্যে মনঃক্ষুণ্ণ হয়ো না।

৬৯. এটা সুনিশ্চিত যে, মুসলিম, ইয়াহুদী, সাবেঈ^১ এবং নাসারাদের মধ্যে যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি ও কিয়ামতের প্রতি বিশ্বাস রাখে এবং সৎকর্ম করে, তবে এরূপ লোকদের জন্যে শেষ দিবসে না কোন প্রকার ভয় থাকবে আর না তারা চিন্তাশ্রিত হবে।

৭০. আমি বানী ইসরাঈল হতে অঙ্গীকার নিয়েছি এবং তাদের কাছে বহু রাসূল প্রেরণ করেছি; যখনই তাদের কাছে কোন নবী আগমন করতেন এমন কোন বিধান নিয়ে যা তাদের মনঃপুত হতো না, তখনই তারা কতিপয়কে মিথ্যাবাদী সাব্যস্ত করতো এবং কতিপয়কে হত্যাই করে ফেলতো।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا
التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ
وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ
طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٦٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالطَّٰغُوتَ
وَالنَّصَارَىٰ مَن آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ
صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَارْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كَلَّمْنَا بَعْضَ رُسُلِنَا بِمَا
لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ ۖ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا
يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾

১। যে নিজের ধীন পরিত্যাগ করে অন্য ধীন গ্রহণ করে। (কুরতুবী)

৭১. আর তারা এ ধারণাই করেছিল যে, তাদের কোন বিপর্যয় হবে না, ফলে তারা আরও অন্ধ ও বধির হয়ে গেল, অতঃপর আল্লাহ তাদের তওবা গ্রহণ করলেন; এরপরেও তাদের অনেকেই অন্ধ ও বধির হয়ে গেল। বস্তুতঃ আল্লাহ তাদের (এই) কার্যকলাপ খুবই প্রত্যক্ষ করেন।

৭২. নিশ্চয়ই তারা কুফুরী করেছে যারা বলেছে যে, মাসীহ ইবনে মারইয়ামই তো আল্লাহ; অথচ মাসীহ নিজেই বলেছিলেনঃ হে বানী ইসরাঈলগণ! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, যিনি আমারও প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক; নিশ্চয়ই যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে (অন্য কাউকে) অংশীদার স্থাপন করবে, আল্লাহ তার জন্যে জান্নাত হারাম করে দেবেন এবং তার বাসস্থান হবে জাহান্নাম, আর এরূপ অত্যাচারীদের জন্যে কোন সাহায্যকারী হবে না।

৭৩. নিঃসন্দেহে তারাও কুফুরী করেছে যারা বলেঃ আল্লাহ তিনের (অর্থাৎ তিন মা'বুদের) এক, অথচ এক মা'বুদ ভিন্ন অন্য কোনই (সত্য) মা'বুদ নেই; আর যদি তারা স্বীয় উজিসমূহ হতে নিবৃত্ত না হয়, তবে তাদের মধ্যে যারা কান্দিত থাকবে তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি গ্রাস করবে।

৭৪. এর পরও কি তারা আল্লাহর সমীপে তাওবা করবে না এবং তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করবে না? অথচ

وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَبُّوا وَصَبُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَبُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ وَاللَّهُ بِصِيْرِهِمْ بَصِيْرٌ ۝٤١

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ط وَقَالَ الْمَسِيْحُ يَبْنَىٰٓ اِسْرَآءِيْلَ اَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ط اِنَّهُ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَا وُجِهَ النَّارُ ط وَمَا لِلظَّالِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝٤٢

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَلَاثَةٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ ط وَإِنْ لَمْ يَتَّهَوْا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝٤٣

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لَهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٤٤

আল্লাহ অত্যন্ত ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।^১

৭৫. মাসীহ ইবনে মারইয়াম একজন রাসূল ছাড়া আর কিছুই নয়; তার পূর্বে আরও বহু রাসূল বিগত হয়েছেন, আর তাঁর মা একজন সত্য নিষ্ঠা মহিলা। তারা উভয়ে খাদ্য ভক্ষণ করতেন, লক্ষ্য কর! আমি কিরূপে তাদের নিকট প্রমাণসমূহ বর্ণনা করছি, আবার লক্ষ্য কর! তারা কিভাবে সত্য বিমুখ হয়ে যাচ্ছে।

৭৬. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাও: তোমরা কি আল্লাহ ছাড়া এমন বস্তুর ইবাদত কর, যে তোমাদের না কোন অপকার করবার ক্ষমতা রাখে, আর না কোন উপকার করবার; অথচ আল্লাহই সব শোনে, সব জানেন।

৭৭. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাও: হে আহলে কিতাবগণ! তোমরা নিজেদের দ্বীনে অন্যায়ভাবে সীমালঙ্ঘন করো না এবং ঐসব লোকের (ভিত্তিহীন) প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না যারা অতীতে নিজেরাও ভ্রান্তিতে পতিত হয়েছে এবং আরও বহু লোককে ভ্রান্তিতে নিষ্ফেপ করেছে, বস্তুতঃ তারা সরল পথ থেকে দূরে সরে পড়েছিল।

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ ؕ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ؕ كَانَا
يَاكُلِن الطَّعَامَ ؕ أَنْظِرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ
تُمْ أَنْظِرْ أَلِيَّ يُوْفِكُونَ ﴿٧٥﴾

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ
لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ؕ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرِ
الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ
قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ
السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, বান্দা তাওবা করলে আল্লাহ ঐ ব্যক্তির চেয়েও বেশি খুশী হন যে, ব্যক্তি তার উটকে কোন গভীর জঙ্গলের অজানা পথে হারিয়ে ফেলে, চিন্তায় মুম্ব্ব হয়ে পড়েছে ঠিক, ঐ মুহূর্তে সে তার উটকে হঠাৎ পেয়ে গেলে যতটা খুশী হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৩০৯)

৭৮. বানী ইসরাঈলের মধ্যে যারা কাফির ছিল; তাদের উপর লানত করা হয়েছিল দাউদ ও ঈসা ইবনে মারইয়ামের মুখে; এ লানত এ কারণে করা হয়েছিল যে তারা অবাধ্য ও আদেশ অমান্য করেছিল এবং সীমার বাইরে চলে গিয়েছিল।

لَعْنَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ
دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا
وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেনঃ বানী ইসরাইলে তিনজন লোক ছিল। একজন ছিল শ্বেতরোগী, দ্বিতীয়জন (মাথায়) টাকওয়াল্লা এবং তৃতীয়জন অন্ধ। মহান আল্লাহ্ তাদের পরীক্ষা করতে ইচ্ছা করলেন। অতঃপর তাদের কাছে একজন ফেরেশতা পাঠালেন। ফেরেশতা (প্রথমে) শ্বেতরোগীটির নিকট আসলেন এবং তাকে জিজ্ঞেস করলেন, কোন্ জিনিস তোমার নিকট অধিক প্রিয়। সে জবাব দিল, সুন্দর রঙ ও সুন্দর চামড়া (যাতে মানুষ আমাকে নিজের কাছে বসতে দেয়)। কেননা মানুষ আমাকে ঘৃণা করে। তখন ফেরেশতা তার গায়ে হাত বুলিয়ে দিলেন। ফলে তার রোগ ভাল হয়ে গেল এবং তাকে সুন্দর রঙ ও আকর্ষণীয় চামড়া দান করা হল। অতঃপর ফেরেশতা জিজ্ঞেস করলেন, কোন্ ধরনের সম্পদ তোমার নিকট অধিক প্রিয়। সে জবাব দিল উট। কিংবা গরু। এ ব্যাপারে বর্ণনাকারীর সন্দেহ রয়েছে যে, শ্বেতরোগী এবং টাকওয়াল্লা দু'জনের একজন বলেছিল উট আর অপরজন বলেছিল গরু। অতএব তাকে একটি গর্ভবতী উষ্ট্রী দেয়া হল। ফেরেশতা দো'আ করলেন (আল্লাহ্ তা'আলা) তোমাকে এর মধ্যে বরকত দান করুন। এরপর তিনি টাকওয়ালার নিকট আসলেন এবং জিজ্ঞেস করলেন, তোমার নিকট কোন্ জিনিস অধিক প্রিয়? সে জবাব দিল-সুন্দর চুল এবং আমার থেকে যেন এ টাক চলে যায়। কেননা মানুষ আমাকে ঘৃণা করে থাকে। অতঃপর সেই ফেরেশতা তার ওপর হাত বুলিয়ে দিলেন। ফলে তার টাক চলে গেল এবং মাথায় চুলে ভরে গেল। তারপর ফেরেশতা জিজ্ঞেস করলেন কোন্ সম্পদ তোমার কাছে বেশি প্রিয়? সে বলল, গরু। অতএব একটি গর্ভবতী গাভী তাকে দিয়ে দিলেন এবং দো'আ করলেন, আল্লাহ্ এতে তোমার জন্য বরকত দান করুন! সবশেষে ফেরেশতা অন্ধের নিকট আসলেন এবং তাকে জিজ্ঞেস করলেন, তোমার নিকট কোন্ জিনিস অধিক প্রিয়? সে বলল, আল্লাহ্ যেন আমার চোখে জ্যোতি ফিরিয়ে দেন, যাতে তা দিয়ে আমি মানুষকে দেখতে পারি। ফেরেশতা তখন তার চোখের ওপর হাত বুলিয়ে দিলেন। ফলে আল্লাহ্ তার দৃষ্টিশক্তি ফিরিয়ে দিলেন। ফেরেশতা জিজ্ঞেস করলেন, কোন্ ধরনের সম্পদ তোমার অধিক প্রিয়? সে বলল, ছাগল। তিনি তাকে একটি গর্ভবতী ছাগী দিলেন।

অতঃপর তিনজনের পশুগুলোই বাচ্চা দিল এবং অল্প দিনেই একজনের উটে ময়দান ভর্তি হয়ে গেল। অপরজনের গরুতে চারণভূমি ভরে উঠল এবং তৃতীয়জনের ছাগলে সারা উপত্যকা ছেয়ে গেল। পুনরায় সেই ফেরেশতা (একদিন আল্লাহ্র হুকুমে) পূর্ব সুরত ও আকৃতিতেই শ্বেতরোগীটির নিকট আসলেন এবং বললেন, আমি একজন নিঃশ্ব গরীব লোক। আমার সফরের সকল সম্বল শেষ হয়ে গেছে। আজ আমার উদ্দেশ্য পূর্ণ করার জন্য আল্লাহ্ ভিন্ন আর কোন উপায় নেই। আমি আল্লাহ্র নামে যিনি তোমাকে সুন্দর রঙ, সুন্দর চামড়া ও সম্পদ দান করেছেন, তোমার কাছে মাত্র একটি উট প্রার্থনা করছি। আমি এর ওপর সওয়ার হয়ে বাড়ি পৌঁছে যাব। তখন লোকটি তাকে বলল, (আরে বেটা আমার এখান থেকে ভাগ) আরও অনেকের হক রয়ে গেছে। ফেরেশতা বললেন, সম্ভবত আমি তোমাকে চিনতে পেরেছি। তুমি কি (এক সময়) শ্বেতরোগী ছিলে না? মানুষ তোমাকে ঘৃণা করত। তুমি কি ফকির ছিলে না? অতঃপর আল্লাহ্ তা'আলা তোমাকে (বিপুল সম্পদ) দান করেছেন। সে বলল, এসব তো আমি (কয়েক পুরুষ পূর্বে) বাপ-দাদা থেকেই ওয়ারিশ সূত্রেই পেয়েছি। তখন ফেরেশতা বললেন, যদি তুমি মিথ্যাবাদী হয়ে থাক, আল্লাহ্

৭৯. তারা যে মন্দ ও গর্হিত কাজ করত তা' থেকে তারা পরস্পরকে নিষেধ করত না; বাস্তবিকই তাদের কাজ ছিল অত্যন্ত গর্হিত।

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ ط لَيْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾

৮০. তুমি তাদের (ইয়াহুদীদের) মধ্যে অনেক লোককে দেখবে যে, তারা বন্ধুত্ব করছে কাফিরদের সাথে; যে কাজ তারা ভবিষ্যতের জন্যে করেছে তা নিঃসন্দেহে মন্দ, যেহেতু আল্লাহ তাদের প্রতি অসন্তুষ্ট হয়েছেন, ফলতঃ তারা আযাবে চিরকাল থাকবে।

تَرَى كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ط لَيْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خُلِدُونَ ﴿٨٠﴾

৮১. আর যদি তারা আল্লাহর প্রতি ঈমান আনতো এবং নবীর (মূসা عَلَيْهِ السَّلَامُ) প্রতি এবং ঐ কিতাবের (তাওরাতের) প্রতি যা তার নিকট প্রেরিত হয়েছিল, তবে তাদেরকে (মুশরিকদেরকে) কখনও বন্ধুরূপে গ্রহণ করতো না; কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোকই অবাধ্য।

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوا لَهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٨١﴾

তোমাকে আবার সেরূপ করে দিন যেমন তুমি (আগে) ছিলে। পরে তিনি টাকওয়ালার নিকট সেই আকার ও আকৃতিতেই আসলেন এবং তার কাছেও ঠিক তদ্রূপই প্রার্থনা করলেন, যেমন করেছিলেন শ্বেতরোগী লোকটির কাছে। এও ঠিক তেমনি জবাবই দিল যেমন দিয়েছিল সে। তখন ফেরেশতা বললেন যদি তুমি মিথ্যাবাদী হও তাহলে আল্লাহ তোমাকে সেরূপই করে দিক যেমন তুমি পূর্বে ছিলে। পরিশেষে তিনি স্বীয় আকৃতিতে অন্ধের নিকট আসলেন এবং বললেন, আমি একজন গরীব মিসকীন মুসাফির। আমার পথের সম্বল সব শেষ হয়ে গেছে। আজ আমি বাড়ি পৌছার আল্লাহ ভিন্ন আর কোন উপায় নেই। আমি তোমার কাছে সেই আল্লাহর নামে একটি ছাগী প্রার্থনা করছি, যিনি তোমার দৃষ্টি শক্তি ফিরিয়ে দিয়েছেন। আমি ছাগীটি দিয়ে আমার সফরের কাজ শেষ করতে পারবো। তখন লোকটি বলল, সত্যিই আমি অন্ধ ছিলাম। অতঃপর আল্লাহ আমার দৃষ্টিশক্তি ফিরিয়ে দিয়েছেন। আমি গরীব ছিলাম। আল্লাহ আমাকে ধনী বানিয়েছেন। এখন তুমি যা চাও নিয়ে যাও। আল্লাহর কসম! আল্লাহর ওয়াস্তে তুমি যা কিছু নেবে তার বিনিময়ে আজ আমি তোমার কাছে কোন প্রশংসাই পাওয়ার দাবী করবো না। তখন ফেরেশতা বললেন, তোমার সম্পদ তুমি রেখে দাও। আমি তো তোমাদেরকে শুধু পরীক্ষা করেছিলাম (তা হয়ে গেছে)। আল্লাহ তোমার ওপর সন্তুষ্ট হয়েছেন আর তোমার সাথী দু'জনের ওপর হয়েছেন নারাজ। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৬৪)

৮২. তুমি মানবমণ্ডলীর মধ্যে মুসলমানদের সাথে অধিক শত্রুতা পোষণকারী পাবে এ ইয়াহুদী ও মুশরিকদেরকে, আর তন্মধ্যে মুসলমানদের সাথে বন্ধুত্ব রাখার অধিকতর নিকটবর্তী ঐসব লোককে পাবে, যারা নিজেদেরকে নাসারা বলে, এটা এ কারণে যে, তাদের মধ্যে বহু জ্ঞানপিপাসু আলেম এবং আবেদ বান্দা রয়েছে, আর এই কারণে যে, তারা অহংকারী নয়।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا
 الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۗ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً
 لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي ۗ ذَلِكَ
 بِأَنَّ مِنْهُمْ قَسِيصِينَ وَرُهْبَانًا ۗ وَأَنَّهُمْ
 لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

৮৩. আর যখন তারা তা শ্রবণ করে, যা রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি নাযিল হয়েছে, তখন তুমি দেখতে পাও যে, তাদের চোখে অশ্রু বইতে শুরু করে, এ কারণে যে, তারা সত্যকে উপলব্ধি করতে পেরেছে, তারা এরূপ বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা মু'মিন হয়ে গেলাম সুতরাং আমাদেরকেও ঐসব লোকের সাথে লিপিবদ্ধ করে নিন, যারা (মুহাম্মাদ ﷺ ও কুর'আনকে সত্য বলে) স্বীকার করে।

৮৪. আর আমাদের কি এমন ওয়র আছে যে, আমরা ঈমান আনবো না আল্লাহর প্রতি এবং সেই সত্যের প্রতি যা আমাদের কাছে পৌঁছেছে? অথচ এ আশা রাখবো যে, আমাদের প্রতিপালক নেককারদের সাথে আমাদেরকে शामिल করবেন।

৮৫. ফলতঃ তাদের এ উক্তির বিনিময়ে আল্লাহ তাদেরকে এমন জান্নাতসমূহ প্রদান করবেন, যার তলদেশে নহর বইতে থাকবে, তারা তাতে অনন্তকাল অবস্থান করবে। এটা সংকর্মাশীলদের প্রতিদান।

৮৬. আর যারা কাফির হয়েছে এবং আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা অভিহিত করেছে, তারা হবে জাহান্নামের অধিবাসী।

৮৭. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ যেসব পবিত্র বস্তুগুলিকে তোমাদের জন্যে হালাল করেছেন সেগুলোকে হারাম করো না এবং সীমালঙ্ঘন করো না নিশ্চয়ই আল্লাহ সীমালঙ্ঘনকারীদের পছন্দ করেন না।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾

فَأَنبَاهَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَدَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْرِمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾

৮৮. আর আল্লাহ তোমাদেরকে যা দান করেছেন তন্মধ্যে হতে হালাল পবিত্র (কুচিকর) বস্ত্রগুলো ভক্ষণ কর এবং আল্লাহকে ভয় কর, যাঁর প্রতি তোমরা ঈমান রাখ।

৮৯. আল্লাহ তোমাদেরকে তোমাদের অনর্থক কসমগুলোর ব্যাপারে পাকড়াও করবেন না; কিন্তু তিনি তোমাদেরকে ঐ কসমসমূহের জন্যে পাকড়াও করবেন, যেগুলোকে তোমরা দৃঢ়ভাবে কর, (অর্থাৎ ইচ্ছেকৃত শপথ) সুতরাং ওর কাফফারা হচ্ছে দশজন মিসকীনকে খাদ্য প্রদান করা মধ্যম ধরণের, যা তোমরা নিজ পরিবারের লোকদেরকে আহার করিয়ে থাক, অথবা তাদেরকে পরিধেয় বস্ত্র দান করা (মধ্যম ধরণের) অথবা একটা ক্রীতদাস বা বাদী আযাদ করা, আর যে ব্যক্তি (এগুলোর কোন একটিও করতে) সমর্থ না হয়, তবে তার জন্য (একাধারে) তিনদিনের রোযা; এটা তোমাদের কসমসমূহের কাফফারা যখন তোমরা কসম কর^১ (অতঃপর ভঙ্গ কর) এবং নিজেদের কসমসমূহের প্রতি লক্ষ্য রাখা; এরূপেই আল্লাহ তোমাদের জন্যে

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۖ وَاتَّقُوا
اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٨٩﴾

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ
يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَلَّمَاتُ
إِطْعَامٍ عَشْرَةَ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ
لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَلِكَ كَفَّارَةُ
أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٩٠﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)- থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেছেনঃ (পৃথিবীতে) আমাদের আগমন সকলের শেষে (কিন্তু) কিয়ামতের দিন আমরা সকলের আগে থাকবো। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬২৪)

(খ) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহর কসম! যদি তোমাদের কেউ পরিবার-পরিজন সম্পর্কে কসম করে এবং সে এর কাফফারা আদায় করার পরিবর্তে যা আল্লাহ ফরয করেছেন- কসমে অটল থাকে, তাহলে সে ব্যক্তি আল্লাহর নিকট গোনাহ্গার হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬২৫)

স্বীয় বিধানসমূহ বর্ণনা করেন, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

৯০. হে মু'মিনগণ! নিশ্চয়ই মদ, জুয়া, মূর্তির বেদী^১ এবং শুভ অশুভ নির্ণয়ের তীর, এসব গর্হিত বিষয়, শয়তানী কাজ। সুতরাং এ থেকে সম্পূর্ণরূপে দূরে থাক, যেন তোমাদের কল্যাণ হয়।^২

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَنَدِ
الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٠﴾

৯১. শয়তান তো এটাই চায় যে, মদ ও জুয়া দ্বারা তোমাদের পরস্পরের মধ্যে শত্রুতা ও হিংসা সৃষ্টি করে এবং আল্লাহর স্মরণ হতে ও নামায হতে তোমাদেরকে বিরত রাখে, সুতরাং এখনও কি তোমরা নিবৃত্ত হবে না?

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبُغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ
اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ ۗ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ﴿٩١﴾

৯২. আর তোমরা আল্লাহর আনুগত্য করতে থাক ও রাসূল (ﷺ)-এর

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا ۗ فَإِن

১। আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে হাদীস বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আসফালে বালদাহ নামক স্থানে যামেদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সঙ্গে দেখা করতে যান। এটা ছিল রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি অহী নাযিল হওয়ার পূর্বের ঘটনা। তখন (কোরাইশদের পক্ষ থেকে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তুরখানা পেশ করা হল তখন) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যামেদের সামনে দস্তুরখানা পেশ করলেন। এতে গোশত ছিল। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তা থেকে খেতে রাজী হলেন না। পরে বললেন, তোমাদের দেব-দেবীদের নামে যা তোমরা জবেহ করো, তা আমি কখনো খাব না। আমি একমাত্র তা-ই খেয়ে থাকি, যা আল্লাহর নামে জবেহ করা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৫৪৯৯)

২। আবদুর রহমান ইবনে গানাম আশ'আরী বলেছেন, আবু আমের (রাযিআল্লাহু আনহু কিংবা আবু মালেক আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) আমার নিকট বর্ণনা করেছেন-আর আল্লাহর কসম! তিনি মিথ্যা বলেননি, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন, আমার উম্মতের মধ্যে এমন অনেক সম্প্রদায় পয়দা হবে, যারা যেনা-ব্যভিচার, রেশমী কাপড় ব্যবহার, মদ্যপান ও গান-বাদ্যকে হালাল মনে করবে। আর অনেক সম্প্রদায় এমনও হবে, যারা পর্বতের পাদদেশে বসবাস করতে। গোখুলি-লগ্নে যখন তারা তাদের পশু-পাল নিয়ে ফিরে চলবে, এমনি সময় তাদের নিকট কোন গরজে ফকীর আসবে। তারা ফকীরকে বলবে, আগামীকাল সকালে আমাদের কাছে এসো। রাতের অন্ধকারেই আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করে দিবেন এবং (তাদের ওপর) পর্বতটিকে ধ্বংসিয়ে দিবেন। অন্যান্যদেরকে কিয়ামত পর্যন্ত বানর ও শূকর বানিয়ে রাখবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৯০)

আনুগত্য করতে থাক এবং সতর্ক থাক, আর যদি বিমুখ থাক তবে জেনে রাখো যে, আমার রাসূল (ﷺ)-এর দায়িত্ব ছিল শুধু স্পষ্টভাবে (আদেশ) পৌঁছিয়ে দেয়া।

৯৩. যারা ঈমান আনে ও ভাল কাজ করে, এরূপ লোকদের উপর তাতে কোন গুনাহ নেই যা তারা পানাহার করেছে, যখন তারা আল্লাহর ভয় করে এবং ঈমান আনে ও ভাল কাজ করে, পুনঃ আল্লাহকে ভয় করতে থাকে এবং ঈমান আনে, পুনঃ আল্লাহকে ভয় করতে থাকে ও ভাল কাজ করতে থাকে; বস্তুতঃ আল্লাহ এরূপ সংকর্মশীলদেরকে ভালবাসেন

৯৪. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ তোমাদেরকে কতক শিকারের দ্বারা পরীক্ষা করবেন, যেগুলো পর্যন্ত তোমাদের হাত ও তোমাদের বল্লম পৌঁছতে পারবে, এই উদ্দেশ্যে যে, আল্লাহ জেনে নেবেন, কে তাঁকে না দেখে ভয় করে? সুতরাং যে ব্যক্তি এরপরও সীমালঙ্ঘন করবে, তার জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

৯৫. হে মু'মিনগণ! তোমরা ইহরামের অবস্থায় শিকারকে হত্যা করো না; আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি ইচ্ছাপূর্বক ওকে হত্যা করবে, তার উপর তখন বিনিময় ওয়াজিব হবে, যা (মূল্যের দিক দিয়ে) সেই জানোয়ারের সমতুল্য হয়, যাকে সে হত্যা করেছে, যার (আনুমানিক মূল্যের) মীমাংসা তোমাদের মধ্য হতে দু'জন নির্ভরযোগ্য ব্যক্তি করে

تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلِمُوا أَلَمَّا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلِيغِ الْمُبِينِ ﴿٩٣﴾

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ
فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا ۗ وَاللَّهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ
الصَّيْدِ تَنَالَهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن
يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ
وَمَن قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُّتَعَدِّيًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ
مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًا بَالِغَ
الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكِ
صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ ۗ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ
وَمَن عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو

দেবে যে, সে যে জন্তু হত্যা করেছে তার সমান পর্যায়ের একটি কুরবানীর জন্তু সে কা'বায় পৌছে দেবে অথবা কয়েকজন মিসকীনের খাওয়ানোর কাফ্ফারা দেবে, অথবা এর সমপরিমাণ রোযা রাখবে, যেন নিজের কৃতকর্মের পরিণামের স্বাদ গ্রহণ করে; অতীত (ফ্রেটি) আল্লাহ ক্ষমা করে দিয়েছেন; আর পুনরায় যে ব্যক্তি এরূপ কর্মই করবে; আল্লাহ সে ব্যক্তি হতে (এর) প্রতিশোধ গ্রহণ করবেন; আল্লাহ পরাক্রান্ত, প্রতিশোধ গ্রহণকারী।

اِنْتِقَامٍ ١٩

৯৬. তোমাদের জন্যে সামুদ্রিক শিকার ধরা ও তা খাওয়া হালাল করা হয়েছে, তোমাদের ও মুসাফিরদের উপভোগের জন্যে, আর স্থলচর শিকার ধরা তোমাদের জন্যে হারাম করা হয়েছে যতক্ষণ তোমরা ইহরাম অবস্থায় থাক; আর সেই আল্লাহকে ভয় কর, যাঁর সমীপে তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে।

اِحْلَ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ
وَاللِّسْيَارَةِ ٥ وَحُرْمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ
حُرْمًا ٥ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ١٩

৯৭. মহাসম্মানিত গৃহ কা'বাকে আল্লাহ মানুষের সুদৃঢ় থাকার উপায় নির্ধারণ করেছেন এবং সম্মানিত মাসকেও, হারামে কুরবানীর জীবকেও এবং সেই জীবকেও যাদের গলায় নিদর্শন রয়েছে; এটা এ জন্যে যেন তোমরা দৃঢ় বিশ্বাস রাখ যে, নিশ্চয়ই আল্লাহ আকাশসমূহ ও যমীনস্থিত সব বস্তুই খবর রাখেন, আর নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে পূর্ণ জ্ঞাত।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِّلنَّاسِ
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ٥ ذَلِكَ
لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ١٩

৯৮. তোমরা জেনে রাখো যে, আল্লাহ কঠোর শাস্তি প্রদানকারী এবং অতি ক্ষমাশীল, দয়াময়।

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

৯৯. রাসূলের দায়িত্ব শুধু পৌছিয়ে দেয়া মাত্র, আর তোমরা যা কিছু প্রকাশ কর এবং যা কিছু গোপন কর তার সবকিছুই আল্লাহ জানেন।

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

১০০. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ পবিত্র ও অপবিত্র সমান নয়, যদিও অপবিত্রের আধিক্য তোমাকে বিস্মিত করে, অতএব হে জ্ঞানীগণ! আল্লাহকে ভয় করতে থাক যেন তোমরা (পূর্ণ) সফলকাম হও।

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾

১০১. হে মু'মিনগণ! তোমরা এমন সব বিষয়ে জিজ্ঞেস করো না যে, যদি তা তোমাদের নিকট প্রকাশ করে দেয়া হয়, তবে তোমাদের কষ্ট দেবে, আর যদি তোমরা কুর'আন অবতীর্ণ হওয়ার সময় উক্ত বিষয়সমূহ সম্বন্ধে জিজ্ঞেস কর, তবে তোমাদের জন্যে প্রকাশ করে দেয়া হবে, অতীতের জিজ্ঞাসাবাদ আল্লাহ ক্ষমা করে দিয়েছেন; বস্তুতঃ আল্লাহ মহা ক্ষমাশীল, অতিশয় সহিষ্ণু।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنَ شَيْءٍ إِن تَبَدَّلَ لَكُم مِّنْهُ نَكْرًا ۚ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنزَلُ الْقُرْآنُ تَبَدَّلَ لَكُم مِّنْهَا نَكْرًا ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾

১০২. একরূপ বিষয় তোমাদের পূর্বে অন্যান্য লোকেরাও জিজ্ঞেস করেছিল, অতঃপর তারা ওর অস্বীকারকারী হয়ে যায়।

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾

১০৩. আল্লাহ না বাহীরার প্রচলন বৈধ করেছেন, না সায়েবার, না ওয়াসীলার এবং না হামীর; কিন্তু যারা কাফির তারা আল্লাহর প্রতি

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيكَةٍ وَلَا حَامِرٍ ۚ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ وَالَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾

মিথ্যারোপ করে, আর অধিকাংশই জ্ঞান রাখে না।^১

১০৪. আর যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ আল্লাহর অবতীর্ণ বিধানসমূহের দিকে আস এবং রাসূলের দিকে আস, তখন তারা বলেঃ আমাদের জন্যে ওটাই যথেষ্ট যার উপর আমাদের বাপ-দাদাদেরকে পেয়েছি; যদিও তাদের বাপ-দাদাগণ না কোন জ্ঞান রাখতো, আর না হেদায়াতপ্রাপ্ত ছিল; তবুও কি (ওটা তাদের জন্যে যথেষ্ট হবে)?

১০৫. হে মু'মিনগণ! তোমরা নিজেদের চিন্তা কর, যখন তোমরা দ্বীনের পথে চলছো, তখন কেউ পথভ্রষ্ট হলে সে তোমাদের কোন ক্ষতি করতে পারবে না; তোমরা সবাই আল্লাহরই সমীপে প্রত্যাবর্তিত হবে, অতঃপর তোমরা যা কিছু করছিলে সে সম্পর্কে তিনি তোমাদেরকে অবহিত করবেন।

১০৬. হে মু'মিনগণ! তোমাদের পরস্পরের (বিষয়াদির) মধ্যে তোমাদের মধ্য হতে দু'জন ন্যায় পরায়ণ ব্যক্তি সাক্ষী থাকা সত্ত্বে, যখন তোমাদের মধ্যে কারও মৃত্যু আসন্ন হয় (অর্থাৎ) অসিয়ত করার সময় হয়, অথবা ভিন্ন সম্প্রদায় হতে দু'জন হবে, যদি তোমরা সফরে থাক

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَىٰ الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ط
أَوْ لَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ط إِلَىٰ اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةٌ بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ آخَرِينَ مَن غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَاصْبِرْ لِمَ مَصِيبَةٍ الْمَوْتِ تَحْسَبُونَهَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمُن بِاللَّهِ إِنْ رَأَيْتُمْ لَا تَشْتَرُونَ

১। বাহীরাঃ যে জন্তর দুখ প্রতিমার উদ্দেশ্যে উৎসর্গ করা হত। সায়েব্বাঃ যে জন্ত প্রতিমার নামে ছেড়ে দেয়া হত। ওয়াসীলাঃ যে উষ্ট্রী উপরুপরি মাদী বাচ্চা প্রসব করত ওটাকে প্রতিমার নামে ছেড়ে দেয়া হত। হামঃ যে নর উষ্ট্র দ্বারা বিশেষ সংখ্যক প্রজননের কাজ নেয়া হয়েছে ওটাকে প্রতিমার নামে ছেড়ে দেয়া হত। এ সমস্ত জন্তগুলিকে কোন কাজে ব্যবহার করা তাদের নিষিদ্ধ ছিল। (আহসানুল বায়ান উর্দু ৩৩১ পৃষ্ঠা)

অতঃপর মৃত্যুর বিপদ তোমাদের পেয়ে বসে, যদি তোমাদের সন্দেহ হয়, তবে সাক্ষীদ্বয়কে নামাযের (জামায়াতের) পর অপেক্ষমান রাখো, অতঃপর তারা আল্লাহর নামে শপথ করে বলবেঃ আমরা এ শপথের বিনিময়ে কোন স্বার্থ ভোগ করতে চাই না। যদিও সে আত্মীয়ও হয়; আর আল্লাহর বিধানকে আমরা গোপন করবো না (যদি এরূপ করি, তবে) এমতাবস্থায় আমরা ভীষণ পাপী হবো।

১০৭. অতঃপর যদি জানা যায় যে, ওসীদ্বয় (সাক্ষীদ্বয়) কোন পাপে জড়িত হয়ে পড়েছে, তবে যাদের বিপক্ষে পাপে জড়িত হয়ে পড়েছিল তাদের মধ্য হতে (মৃতের) সর্বাপেক্ষা নিকটতম অপর দু'ব্যক্তি সে স্থানে স্থলাভিষিক্ত হবে, অতঃপর উভয়ে (এরূপে) আল্লাহর নামে শপথ করে বলবেঃ নিশ্চয়ই আমাদের এ শপথ তাদের শপথ অপেক্ষা অধিক সত্য এবং আমরা বিন্দুমাত্র ব্যতিক্রম করিনি, (যদি করি, তবে) এমতাবস্থায় যালিমদের অন্তর্ভুক্ত হবো।

১০৮. এটাই এ বিষয়ে অতীব সহজ পন্থা যে তারা ঘটনা যথাযথভাবে প্রকাশ করে দেয়, অথবা এ ভয় করে যে, তারা শপথ গ্রহণ করার পর (পুনঃ) শপথগুলোকে ফিরানো হবে; আর আল্লাহকে ভয় কর এবং (বিধানসমূহের) শ্রবণ কর, আর আল্লাহ ফাসিকদেরকে পথ দেখাবেন না।

بِهِ تَمَيَّنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَلَا تَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ
إِنَّا إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ٥

فَإِنْ عَثَرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّ إِثْمًا فَأَخْرَجَ يَقُومِينَ
مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلِيَّةِ
فَيُقْسِمْنَ بِاللَّهِ لَشَهَادَتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا
اعْتَدَيْنَا ۖ إِنَّا إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ٥

ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهَهَا أَوْ يَخَافُوا
أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ آيْمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ٥

১০৯. যেদিন আল্লাহ রাসূলগণকে সমবেত করবেন, অতঃপর বলবেনঃ তোমরা (উম্মতদের নিকট থেকে) কী উত্তর পেয়েছিলে? তাঁরা উত্তরে বলবেনঃ (তাদের অনাচারের কথা) আমাদের কিছুই জানা নেই; নিশ্চয়ই আপনি সমস্ত গোপনীয় বিষয় সম্পূর্ণ জ্ঞাত।

১১০. যখন আল্লাহ বলবেনঃ হে ঈসা ইবনে মারইয়াম! আমার অনুগ্রহ স্মরণ কর যা তোমার উপর ও তোমার মায়ের উপর (প্রদত্ত) হয়েছে। যখন আমি তোমাকে রুহুল কুদুস (জিবরীল عليه السلام) দ্বারা সাহায্য করেছি, (এবং) তুমি মানুষের সাথে কথা বলেছো (মায়ের) কোলে এবং শ্রৌট (পরিণত) বয়সেও আর যখন আমি তোমাকে কিতাব ও হিকমতের কথা এবং তাওরাত ও ইনজীল শিক্ষা দিয়েছি, আর যখন তুমি আমার আদেশে মাটি দ্বারা পাখির আকৃতি সদৃশ এক আকৃতি প্রস্তুত করেছিলে, অতঃপর তুমি ওতে ফুৎকার দিতে, যার ফলে ওটা আমার আদেশে পাখী হয়ে যেতো, আর তুমি আমার আদেশে জন্মান্ন ও কুষ্ঠরোগী নিরাময় করে দিতে; আর যখন তুমি আমার আদেশে মৃতদেরকে বের করে দাঁড় করাতো, আর যখন আমি বানী ইসরাঈলকে (তোমাকে হত্যা করা হতে) নিবৃত্ত রেখেছি, যখন তুমি তাদের কাছে (স্বীয় নবুওয়াতের) প্রমাণাদি নিয়ে হাযির হয়েছিলে, অতঃপর তাদের মধ্যে যারা কাফির

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ
قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا بِإِتِّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ادْكُرْ نِعْمَتِي
عَلَيْكَ وَعَلَى الْوَالِدَاتِكَ إِذْ أَيْدَتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ
تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْهَيْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَإِذْ تَخَافُ
مِنَ الظُّلَمِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنْفُخُ فِيهَا
فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ
بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَى بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ كَفَفْتُ
بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

ছিল তারা বলেছিল এটা (মুজিয়াসমূহ) স্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়।

১১১. আর যখন আমি হাওয়ারী-দেরকে আদেশ করলাম— আমার প্রতি এবং আমার রাসূলের প্রতি ঈমান আন, তারা বললো, আমরা ঈমান আনলাম এবং আপনি সাক্ষী থাকুন যে, আমরা পূর্ণ অনুগত।

১১২. (ঐ সময়টুকু স্মরণীয়) যখন হাওয়ারীরা বললোঃ হে ঈসা ইবনে মারইয়াম! আপনার প্রতিপালক কি এরূপ করতে পারেন যে, আমাদের জন্যে আকাশ হতে কিছু খাদ্য প্রেরণ করবেন? ঈসা বললেনঃ আল্লাহকে ভয় কর, যদি তোমরা ঈমানদার হয়ে থাক।

১১৩. তারা বললোঃ আমাদের উদ্দেশ্য এই যে, আমরা তা থেকে আহার করি এবং আমাদের অন্তর সম্পূর্ণ প্রশান্ত হয়ে যায়, আর আমাদের এই বিশ্বাস আরও সুদৃঢ় হয় যে, আপনি আমাদের নিকট সত্য বলেছেন এবং আমরা এর প্রতি সাক্ষ্যদানকারীদের অন্তর্ভুক্ত হই।

১১৪. ঈসা ইবনে মারইয়াম (عليه السلام) দু'আ করলেনঃ হে আল্লাহ! হে আমাদের প্রভু, আমাদের প্রতি আকাশ হতে খাদ্য অবতীর্ণ করুন যেন ওটা আমাদের জন্যে অর্থাৎ আমাদের মধ্যে যারা প্রথমে (বর্তমান আছে) এবং যারা পরে, সকলের জন্যে একটা আনন্দের বিষয় হয়

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي ٥
قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنكُم مُّسْلِمُونَ ٦

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ لِيَعْسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ٧ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨

قَالُوا لَئِن لَّمْ نُرِيْدْ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَنَطْمِئِنَّ قُلُوبِنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ٩

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوْلَادِنَا وَأَخْرَانَا ١٠ وَآيَةً مِنْكَ ١١ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ١٢

এবং আপনার পক্ষ হতে এক নিদর্শন হয়ে থাকে। আর আমাদেরকে খাদ্য প্রদান করুন, বস্তুতঃ আপনি তো সর্বোত্তম খাদ্য প্রদানকারী।

১১৫. আল্লাহ বললেনঃ আমি এই খাদ্য তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করবো, অতঃপর তোমাদের মধ্যে যে এর অকৃতজ্ঞ হবে, আমি তাকে এমন শাস্তি দেবো যে, বিশ্ববাসীদের মধ্যে ঐশাস্তি আর কাউকেও দেবো না।

১১৬. আর যখন আল্লাহ বলবেনঃ হে ঈসা ইবনে মারইয়াম! তুমি কি লোকদেরকে বলেছিলে তোমরা আল্লাহ ছাড়া আমাকে ও আমার মাতাকে মা'বুদ নির্ধারণ করে নাও? ঈসা নিবেদন করবেন আমি তো আপনাকে পবিত্র মনে করি; আমার পক্ষে কোনক্রমেই শোভনীয় ছিল না যে, আমি এমন কথা বলি যা বলবার আমার কোনই অধিকার নেই; যদি আমি বলে থাকি, তবে অবশ্যই আপনার জানা থাকবে; আপনি তো আমার অন্তরস্থিত কথাও জানেন, পক্ষান্তরে আপনার অন্তরে যা কিছু রয়েছে আমি তা জানি না; সমস্ত গায়েবের বিষয় আপনিই জ্ঞাত।

১১৭. আমি তাদেরকে কিছুই বলিনি এটা ব্যতীত, যা আপনি আমাকে আদেশ করেছেন যে, তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, যিনি আমারও প্রতিপালক, তোমাদেরও প্রতিপালক, আর আমি তাদের সম্বন্ধে সাক্ষী

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدَ
مِنْكُمْ فَإِنِّي أَعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا أَعَذِّبُهُ أَحَدًا
مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ
لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَآلِيَّ الْهَيْبِينَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُونُ لِيٰٓ أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِيٰٓ
بِحَقِّ ط إِنَّ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۖ تَعَلَّمُ مَا فِي
نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ط أَنْتَ عَلٰمُ
الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ
رَبِّيَّ وَرَبَّكُمْ ۖ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ
فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

ছিলাম যতক্ষণ তাদের মধ্যে ছিলাম, অতঃপর যখন আপনি আমাকে উঠিয়ে নিয়েছেন। তখন আপনিই তাদের তত্ত্বাবধায়ক; আর আপনি সর্ব বিষয়ে প্রত্যক্ষদর্শী।

১১৮. আপনি যদি তাদেরকে শান্তি প্রদান করেন, তবে ওরা তো আপনার বান্দা, আর যদি তাদেরকে ক্ষমা করে দেন তবে আপনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।^১

১১৯. আল্লাহ বলবেনঃ এটা সেদিন, যেদিন সত্যবাদীদের সত্যবাদিতা কাজে আসবে, তারা জান্নাত প্রাপ্ত হবে, যার তলদেশে নহরসমূহ বইতে থাকবে, সেখানে তারা চিরস্থায়ী থাকবে। আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন এবং তারা আল্লাহর প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছে; এটাই হচ্ছে মহা সফলতা।

১২০. আল্লাহরই জন্যে রয়েছে নভোমণ্ডলের ও ভূ-মণ্ডলের রাজত্ব এবং ঐসমুদয় বস্তুর যা তাতে বিদ্যমান রয়েছে; আর তিনি সকল বিষয়ে পূর্ণ ক্ষমতাবান।

إِنْ تُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عَبْدُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۗ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

১। ইবনে আক্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন যে, তিনি বলেছেন, নিশ্চয়ই কিয়ামতের দিন তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে এবং কিছু সংখ্যক লোককে পাকড়াও করে জাহান্নামের দিকে নিয়ে যাওয়া হবে। তখন আমি তাই বলব যা আল্লাহর নেক বান্দা ইসা (আলাইহিসসালাম) বলেছিলেনঃ যে, “আমি ততদিন তাদের সম্পর্কে অবগত ছিলাম যতদিন তাদের মাঝে ছিলাম”। (সূরা মায়িদা -১১৭) [বুখারী, হাদীস নং ৪৬২৬]

সূরাঃ আন'আম, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৬৫, রুকূঃ ২০)

পরম দয়ালু দাতা আল্লাহর নামে (আরম্ভ
করছি)

১. যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহর জন্যে
যিনি আকাশসমূহ ও পৃথিবী সৃষ্টি
করেছেন এবং সৃষ্টি করেছেন আলো
ও অন্ধকার; এটা সত্ত্বেও যারা কুফুরি
করেছে তারা তাদের প্রতিপালকের
সমকক্ষ নিরূপণ করলো।

২. অথচ তিনিই তোমাদেরকে মাটি
হতে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর
তোমাদের জীবনের জন্যে একটি
নির্দিষ্ট মেয়াদ নির্ধারণ করেছেন, এ
ছাড়া একটি নির্দিষ্ট মেয়াদও তাঁর
নিকট নির্ধারিত রয়েছে; কিন্তু এর
পরেও তোমরা সন্দেহ করে থাক।

৩. আকাশসমূহে ও পৃথিবীতে
একমাত্র তিনিই সত্য মা'বুদ
রয়েছেন, যিনি তোমাদের গোপনীয়
ও প্রকাশ্য সব অবস্থাই জানেন, আর
তোমরা ভাল-মন্দ যা কিছু কর
সেটাও তিনি পূর্ণরূপে অবগত
আছেন।

৪. আর তাদের অবস্থা হচ্ছে এই যে,
তাদের নিকট তাদের প্রতিপালকের
নিদর্শনসমূহ হতে যে কোন নিদর্শনই
আসুক না কেন, তা হতেই তারা মুখ
ফিরিয়ে নিয়ে থাকে।

৫. সুতরাং তাদের নিকট যখন সত্য
এসেছে, তাকেও তারা মিথ্যা

سُورَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ

اَيَاتُهَا ١٦٥ رُكُوعَاتُهَا ٢٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الْحٰصِدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ
الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهٖمْ یُعٰدِلُوْنَ ①

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰی اَجَلًا ط
وَ اَجَلَ مُّسَمًّی عِنْدَہٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ②

وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ط یَعْلَمُ سِرَّكُمْ
وَ جَہْرَكُمْ وَ یَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ③

وَ مَا تَأْتِیْهِمْ مِنْ اٰیةٍ مِنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا کَانُوْا
عَنْهَا مُّعْرِضِیْنَ ④

فَقَدْ کَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ط فَسَوْفَ یَأْتِیْهِمْ

অভিহিত করেছে। অতএব অতিসত্বরই তাদের নিকট সে বিষয়ের সংবাদ এসে পৌঁছবে, যার সাথে তারা ঠাট্টা-বিদ্রুপ করতো।

৬. তারা কি ভেবে দেখেনি যে, আমি তাদের পূর্বে বহু সম্প্রদায়কে ধ্বংস করে দিয়েছি, যাদেরকে দুনিয়ায় এমন শক্তি, সামর্থ্য ও প্রতিপত্তি দিয়েছিলাম, যা তোমাদেরকে দেইনি, আর আমি তাদের প্রতি আকাশ হতে প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণ করেছি এবং তাদের নিন্মভূমি হতে বর্ণাধারা প্রবাহিত করেছি, কিন্তু তাদের গুনাহের কারণে আমি তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছি এবং তাদের পর অন্য সম্প্রদায়সমূহ নতুন করে সৃষ্টি করেছি।

৭. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! যদি আমি কাগজের উপর লিখিত কোন কিতাব তোমার প্রতি অবতীর্ণ করতাম, অতঃপর তারা তা নিজেদের হাত দ্বারা স্পর্শও করতো; তবুও কাকির ও অবিশ্বাসী লোকেরা বলতো যে, এটা প্রকাশ্য যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়।

৮. আর তারা বলে থাকে যে, তাদের কাছে কোন ফেরেশতা কেন অবতীর্ণ করা হয় না? আমি যদি প্রকৃতই কোন ফেরেশতা অবতীর্ণ করতাম তবে যাবতীয় বিষয়েরই চূড়ান্ত সমাধান হয়ে যেত। অতঃপর আর তাদেরকে কিছু মাত্রই অবকাশ দেয়া হতো না।

৯. আর যদি আমি ফেরেশতাই অবতীর্ণ করতাম তবে তাকে মানুষ

أَتَّبُوا مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٥﴾

أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَوْمٍ مَكَانَهُمْ
فِي الْأَرْضِ مَا لَهُمْ فِيهَا مِنْ سُلْطَانٍ لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ
مِذْرَارًا م وَجَعَلْنَا الْآلِهَةَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ
فَأَهْلَكْنَاهُمْ يَذُوبُهُمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَوْمًا
آخَرِينَ ﴿٥﴾

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَابٍ فَلَسَوْهُ
بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ
مُؤَيَّدٌ ﴿٥﴾

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ط وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا
لَقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ﴿٥﴾

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وََلَلْبَسْنَا عَلَيْهِمْ

রূপেই করতাম। আর আমার এ কাজ দ্বারা তাদেরকে আমি সেই বিভ্রান্তিতেই ফেলে দিতাম, যে আপত্তি তারা এখন করছে।

مَا يَلْبِئُونَ ⑩

১০. বাস্তবিকই তোমার পূর্বে যেসব রাসূল এসেছিলেন, তাঁদের সাথেও ঠাট্টা-বিদ্রূপ করা হয়েছে, ফলতঃ এসব ব্যঙ্গ বিদ্রূপের পরিণামফল বিদ্রূপকারীদেরকে পরিবেষ্টন করে ফেলেছিল।

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلِكُمْ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑩

১১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বল, তোমরা ভূ-পৃষ্ঠে পরিভ্রমণ কর, অতঃপর মিথ্যা প্রতিপন্থকারীদের পরিণাম কি হয়েছে তা গভীর অভিনিবেশ সহকারে লক্ষ্য কর।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظروا كيف كان عاقبة المكدريين ⑩

১২. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! জিজ্ঞেস কর—আকাশমন্ডলে ও পৃথিবীতে অবস্থিত যা কিছু রয়েছে, তা কার মালিকানাধীন? তুমি বলঃ তা সবই আল্লাহর মালিকানা স্বত্ব, আল্লাহ নিজের প্রতি দয়া ও অনুগ্রহকে অপরিহার্য করেছেন। তিনি

قُلْ لَيْسَ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط قُلْ لِلّٰهِ ط كَتَبَ عَلٰى نَفْسِہِ الرَّحْمٰة ط لِيَجْمَعَكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ط لَا رَيْبَ فِيْہِ ط الَّذِيْنَ خَسِرُوْا اَنْفُسَهُمْ فَہُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑩

১। (ক) যুহরী থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমাদেরকে হাদীস বর্ণনা করেছেন সাঈদ ইবনে মুসাইয়্যিব, নিচয়ই আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, আল্লাহ্ তা'আলা রহমতকে একশত ভাগে বিভক্ত করে তাঁর নিকটে নিরানব্বই ভাগ রেখে দিয়েছেন। আর এক ভাগ পৃথিবীতে দিয়েছেন। আর এই এক অংশ থেকেই সৃষ্টিজীব পরস্পরকে দয়া-মায়াদেখায়, তা এ এক ভাগের কারণেই। এমন কি শাবক ব্যাথা পাবে এ ভয়ে ঘোড়াটি তার শাবকের ওপর থেকে পা তুলে নেয়। (তাও এ এক ভাগ থেকে পাওয়া দয়া-মায়ার কারণেই)। (বুখারী, হাদীস নং ৬০০০)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, যখন আল্লাহ্ সমস্ত সৃষ্টিজীবকে সৃষ্টি করেছেন তখন তিনি স্বীয় কিতাবে, (লওহে মাহফুজে) যা তাঁর নিকট আরশের মধ্যে রয়েছে তাতে লিখেছেন যে, নিচয়ই আমার রহমত বা করুণা আমার ক্রোধের উপর বিজয়ী হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৩১৯৪)

তোমাদের সকলকে কিয়ামতের দিন অবশ্যই সমবেত করবেন, যেদিন সম্পর্কে কোনই সন্দেহ নেই, যারা নিজেরা নিজেদের ক্ষতি ও ধ্বংসের মুখে ফেলেছে তারাই ঈমান আনে না।

১৩. রাতের অন্ধকারের মধ্যে এবং দিনের আলোতে যা কিছু রয়েছে, এসব কিছুই আল্লাহর; তিনি সব কিছুই গুনে ও জানেন।

১৪. (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) তুমি জিজ্ঞেস কর, আমি কি আল্লাহকে বাদ দিয়ে অন্য কাউকেও নিজের পৃষ্ঠপোষক ও বন্ধুরূপে গ্রহণ করবো (সেই আল্লাহকে বর্জন করে) যিনি হলেন আকাশ ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা? তিনি রিযিক দান করেন; কিন্তু তাকে কেউ রিযিক দান করেন না, তুমি বলঃ আমাকে এ আদেশই করা হয়েছে যে, আমি সকলের আগেই ইসলাম গ্রহণ করি (আর আমাকে বিশেষভাবে তাকীদ করা হয়েছে যে,) তুমি মুশরিকদের মধ্যে शामिल হবে না।

১৫. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলঃ আমি আমার প্রতিপালকের অবাধ্য হলে, আমি মহা বিচার দিনের মহা শাস্তির ভয় করছি।

১৬. সে দিন যার উপর হতে শাস্তি প্রত্যাহার করা হবে, তার প্রতি আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহ করবেন, আর এটাই হচ্ছে প্রকাশ্য মহা সাফল্য।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الْبَيْتِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾

قُلْ أَعْيَرَ اللَّهُ اتَّخَذُ وَلِيًّا قَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

مَنْ يُصِرْفِ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْبَاطِنُ ﴿١٦﴾

১৭. যদি আল্লাহ কারও ক্ষতি সাধন করেন তবে তিনি ছাড়া সে ক্ষতি দূর করার আর কেউই নেই, আর যদি তিনি কারও কল্যাণ করেন, (তবে তিনি সেটাও করতে পারেন, কেননা) তিনি প্রতিটি বস্তুর উপর ক্ষমতাবান ও কর্তৃত্বশীল।

১৮. তিনিই তাঁর বান্দাদের উপর একচ্ছত্র ক্ষমতার অধিকারী, তিনিই মহাজ্ঞানী ও সর্ব বিষয়ে ওয়াকিফ হাল।

১৯. (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর, কার সাক্ষ্য সবচেয়ে বেশী গণ্য? তুমি বলে দাওঃ আমার ও তোমাদের মধ্যে আল্লাহই হচ্ছেন সাক্ষী, আর এ কুরআন আমার নিকট ওহীর মাধ্যমে পাঠানো হয়েছে, যেন আমি তোমাদেরকে এবং যাদের নিকট এটা পৌছবে তাদের সকলকে এর দ্বারা সতর্ক ও সাবধান করি। বাস্তবিক, তোমরা কি এই সাক্ষ্য দিতে পার যে, আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বুদ রয়েছে? তুমি বলঃ আমি এ সাক্ষ্য দিতে পারি না, তুমি ঘোষণা কর যে তিনিই একমাত্র মা'বুদ আর তোমরা যে শিরকে লিপ্ত রয়েছো, তা থেকে আমি সম্পূর্ণ মুক্ত।

২০. যাদেরকে আমি কিতাব দান করেছি, তারা রাসূল (ﷺ)-কে এমনভাবে চিনে, যে রূপ তারা নিজেদের সন্তান-সন্ততিদেরকে চিনে; কিন্তু যারা নিজেদেরকে ক্ষতিগ্রস্ত করেছে তারা ঈমান আনবে না।

وَإِنْ يَسْأَلْكَ اللَّهُ بَصِيرًا فَلَا تُصَدِّقْ لَهُ إِلَّا هُوَ
وَإِنْ يَسْأَلْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١٨﴾

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۗ قُلِ اللَّهُ شَهِيدٌ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُمْ
بِهِ وَمَنْ بَلَغَ أَطْرَافَهُمْ لَتَشْهَدُنَّ أَنَّ مَعَ اللَّهِ الْهَيْئَةَ
أُخْرَى ۗ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۗ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ
وَإِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾

الَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمْ ۗ مِنَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾

২১. যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি মিথ্যা দোষারোপ করে কিংবা আল্লাহর আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, তার চেয়ে বড় যালিম আর কে হতে পারে? এরূপ যালিম লোক কখনই সাফল্য লাভ করতে পারবে না।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾

২২. সে দিনটিও স্মরণযোগ্য যেদিন আমি সকলকে একত্রিত করবো, অতঃপর যারা আমার সাথে শিরক করেছে, তাদেরকে আমি বলবো, তোমাদের সে শরীকগণ এখন কোথায় যাদেরকে তোমরা মা'বুদ বলে ধারণা করতে?

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا
أَيْنَ شُرَكَاءُكُمْ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾

২৩. অতঃপর তাদের শিরকের ফল এ ছাড়া আর কিছুই হবে না যে তারা বলবে আল্লাহর কসম, হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা মুশরিক ছিলাম না।

ثُمَّ لَمْ يَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبَّنَا مَا كُنَّا
مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

২৪. তুমি লক্ষ্য কর, তারা নিজেদের সম্পর্কে কিরূপ মিথ্যা বলছে! তাদের নিজেদের মিথ্যা রচনাগুলো নিষ্ফল হয়ে যাবে।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ كَذَّبُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

২৫. তাদের মধ্যে এমন লোকও রয়েছে, যারা মনোযোগ সহকারে কান লাগিয়ে তোমার কথা শুনে থাকে, (অথচ গ্রহণ করে না, কিন্তু তাদের কর্ম ফলে) তোমার কথা যাতে তারা ভালরূপে বুঝতে না পারে সে জন্যে আমি তাদের অন্তরের উপর আবরণ রেখে দিয়েছি এবং তাদের কর্ণে বধিরতা অর্পণ করেছি (যাতে শুনতে না পায়), তারা যদি

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۗ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ
أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ط وَان يَرْوَأْ كُلَّ
آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ط حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ
يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

সমস্ত আয়াত ও প্রমাণাদিও অবলোকন করে তবুও তারা ঈমান আনবে না, এমন কি যখন তোমার কাছে আসে তখন তোমার সাথে অর্থহীন বিতর্ক জুড়ে দেয়, আর তাদের কাফির লোকেরা (সব কথা শোনার পর) বলে, এটা প্রাচীনকালের লোকদের কিস্সা-কাহিনী ব্যতীত আর কিছুই নয়।

২৬. তারা তো তা থেকে অন্য লোকদের বিরত রাখে, অধিকন্তু তারা নিজেরাও তা থেকে দূরে দূরে থাকে। বস্তুতঃ তারা শুধুমাত্র নিজেদেরকে ধ্বংস করছে অথচ তারা অনুভব করছে না।

২৭. তুমি যদি তাদের সেই সময়ের অবস্থাটি অবলোকন করতে যখন তাদেরকে জাহান্নামে দাঁড় করানো হবে, তখন তারা বলবেঃ হায়! আমরা যদি আবার দুনিয়ায় ফিরে যেতে পারতাম, আমরা সেখানে আমাদের প্রতিপালকের নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করতাম না এবং আমরা ঈমানদার হয়ে যেতাম!

২৮. (একথা বলার কারণ হলো) যে সত্য তারা পূর্বে গোপন করেছিল, তা তখন তাদের নিকট সুস্পষ্টরূপে প্রতিভাত হয়ে পড়বে, আর একান্তই যদি তাদেরকে সাবেক পার্থিব জীবনে ফিরে যেতে দেয়া হয়, তবু যা করতে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিল তারা তা-ই করবে, নিঃসন্দেহে তারা মিথ্যাবাদী।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ ۗ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

وَلَوْ تَرَىٰ إِذُ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبُ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

بَلْ بَدَأ لَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ وَكُورُوا
لَعَادُوا لِمَا هُمْ عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

২৯. তারা বলেঃ এই পার্থিব জীবনই প্রকৃত জীবন, (এরপর আর কোন জীবন নেই,) আর আমাদেরকে পুনরুত্থিতও করা হবে না।

وَقَالُوا إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾

৩০. হায়! তুমি যদি সেই দৃশ্যটি দেখতে, যখন তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের সম্মুখে দন্ডায়মান করা হবে, তখন আল্লাহ তা'য়ালার জিজ্ঞেস করবেনঃ এটা (কিয়ামত) কি সত্য নয়? তখন তারা উত্তরে বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আমাদের প্রতিপালকের (আল্লাহর) শপথ করে বলছি— হ্যাঁ (এটা বাস্তব ও সত্য বিষয়,) তখন আল্লাহ বলবেনঃ তবে তোমরা এটাকে অস্বীকার করার ফল স্বরূপ শাস্তির স্বাদ গ্রহণ কর।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذُ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ط قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ ط قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ط قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

৩১. ঐসব লোকই ক্ষতিগ্রস্ত হলো যারা আল্লাহর সাথে সাক্ষাৎ হওয়ার সংবাদকে মিথ্যা ভেবেছে; যখন সে নির্দিষ্ট সময়টি হঠাৎ তাদের কাছে এসে পড়বে, তখন তারা বলবেঃ হায়! পিছনে আমরা কতই না অবহেলায় অন্যায় করেছি, তারা নিজেরাই নিজেদের গুনাহের বোঝা নিজেদের পিঠে বহন করবে, শুনে রেখো, তারা যা কিছু বহন করেছে তা কতই না নিকৃষ্ট ধরনের বোঝা!

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ط حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَسْرُرَتُنَا عَلَىٰ مَا فَطَرْنَا فِيهَا ۖ وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَوْدَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ط إِلَّا سَاءَ مَا يَزُرُونَ ﴿٣١﴾

৩২. পার্থিব এ জীবন খেল-তামাশার (ও আমোদ-প্রমোদের) ব্যাপার ছাড়া

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهُمْ ط وَلِلَّذَارِ الْآخِرَةِ

১। আবু মুসা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন তিনি বলেনঃ যে ব্যক্তি আল্লাহর সাক্ষাতকে ভালবাসে, আল্লাহও তার সাক্ষাতকে ভালবাসেন। আর যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে সাক্ষাতকে অপছন্দ করে, আল্লাহও তার সাক্ষাতকে অপছন্দ করেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫০৮)

কিছুই নয়, প্রকৃতপক্ষে পরকালের আরামই হবে তাদের জন্যে মঙ্গলময় যারা তাকওয়া অবলম্বন করে। তবুও কি তোমাদের বোধদয় হবে না?

৩৩. তাদের কথাবার্তায় তোমার যে খুব দুঃখ ও মনঃকষ্ট হয় তা আমি ভালোভাবেই জানি। তারা শুধুমাত্র তোমাকেই মিথ্যা প্রতিপন্ন করছে না, বরং এ পাপিষ্ঠ যালিমরা আল্লাহর আয়াতসমূহকেও অস্বীকার করছে।

৩৪. তোমার পূর্বে বহু নবী-রাসূলকেও মিথ্যা প্রতিপন্ন করা হয়েছে। অতঃপর তারা এ মিথ্যা প্রতিপন্নকে এবং তাদের প্রতি কৃত নির্যাতন ও উৎপীড়নকে অস্মান বদনে সহ্য করেছে, শেষ পর্যন্ত তাদের কাছে আমার সাহায্য এসে পৌঁছেছে, আল্লাহর কালামকে পরিবর্তন করার মত কেউই নেই। আর তোমার কাছে সাবেক নবীদের কিছু কিছু সংবাদ ও কাহিনী তো পৌঁছে গেছে।

৩৫. আর যদি তাদের অনাগ্রহ ও উপেক্ষা তোমার কাছে কঠিন হয়ে পড়ে, তবে ক্ষমতা থাকলে মাটির কোন সুড়ঙ্গ অনুসন্ধান কর বা আকাশে সিঁড়ি লাগিয়ে দাও, অতঃপর তাদের কাছে কোন নিদর্শন নিয়ে এসো, আল্লাহ ইচ্ছা করলে তাদের সকলকে তিনি হেদায়াতের উপর সমবেত করতেন। সুতরাং তুমি অজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যেয়ো না।

৩৬. যারা (মনোযোগ দিয়ে) শুনে থাকে তারাই সত্যের ডাকে সাড়া দেয়, আল্লাহ মৃতদেরকে জীবিত করে

خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٣﴾

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٤﴾

وَلَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبِرْ وَأَعْلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأَوْدُوا حَتَّىٰ أَتَهُمُ نَصْرُنَا وَلَا مُمِيزَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۗ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَّبَائِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٥﴾

وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٦﴾

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْعَوْنَ وَالْمَوْتَىٰ يُعْطِيهِمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

উঠাবেন, অতঃপর তারা তাঁরই কাছে ফিরে যাবে।

৩৭. তারা বলে যে, তাঁর প্রতি-পালকের পক্ষ থেকে তার প্রতি কোন নিদর্শন কেন অবতীর্ণ করা হলো না? তুমি বলে দাওঃ নিদর্শন অবতীর্ণ করতে আল্লাহ পূর্ণ ক্ষমতাবান; কিন্তু অধিকাংশ লোকই তা জ্ঞাত নয়।

৩৮. ভূ-পৃষ্ঠে চলমান প্রতিটি জীব এবং বায়ুমণ্ডলে দু'ডানার সাহায্যে উড়ন্ত প্রতিটি পাখিই তোমাদের ন্যায় এক একটি জাতি, আমি কিভাবে কোন বস্তুর কোন বিষয়ই লিপিবদ্ধ করতে ছাড়িনি, অতঃপর তাদের সকলকে তাদের প্রতিপালকের কাছে সমবেত করা হবে।

৩৯. আর যারা আমার নিদর্শন-সমূহকে মিথ্যা অভিহিত করে, তারা অন্ধকারে নিমজ্জিত বোবা ও বধির, আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পথভ্রষ্ট করেন এবং যাকে ইচ্ছা করেন হিদায়াতের সরল-সহজ পথের সন্ধান দেন।

৪০. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) তাদেরকে বল, তোমরা যদি নিজেদের আদর্শে সত্যবাদী হও তবে চিন্তা করে দেখ যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহর শাস্তি এসে পড়ে অথবা তোমাদের নিকট কিয়ামত এসে উপস্থিত হয়, তখনও কি তোমরা আল্লাহকে ব্যতীত অন্য কাউকেও ডাকবে?

৪১. বরং (বিপদের কারণে) তোমরা তাঁকেই ডেকে থাকো। অতএব যে

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ طُقُلٌ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ آيَةً وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَيْرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَلُكُمْ مَا فَرَطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا صُمُّوا وَبُكِمُوا فِي الظُّلُمَاتِ ط مَنْ يَشَأِ اللَّهُ يُضِلَّهُ ط وَمَنْ يَشَأِ يُجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَيْكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرِ اللَّهِ تَدْعُونَ ۚ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

بَلْ إِلَٰهَةُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ

জন্য তোমরা তাঁকে ডাকো ইচ্ছে করলে তিনি তা তোমাদের থেকে দূর করে দিবেন। আর যাদেরকে তোমরা অংশী করেছিলে তাদের কথা ভুলে যাবে।

৪২. আর আমি তোমাদের পূর্বকার জাতিসমূহের কাছে বহু রাসূল পাঠিয়েছি, (কিন্তু তাদেরকে অমান্য করার কারণে) আমি তাদের প্রতি অভাব, দারিদ্র ও রোগ-ব্যাদি চাপিয়ে দিয়েছি, যেন তারা বিনয়ের সাথে নতি স্বীকার করে।

৪৩. সূতরাং তাদের প্রতি যখন আমার শাস্তি পৌঁছলো তখন তারা কেন নম্রতা ও বিনয় প্রকাশ করলো না? বরং তাদের অন্তর আরও কঠিন হয়ে পড়লো, আর শয়তান তাদের কাজকে (তাদের চোখের সামনে) শোভাময় করে দেখালো।

৪৪. অতঃপর তাদেরকে যা কিছু উপদেশ ও নসীহত করা হয়েছিল তা যখন তারা ভুলে গেল তখন আমি তাদের জন্যে প্রতিটি বস্তুর দরজা উন্মুক্ত করে দিলাম, শেষ পর্যন্ত যখন তারা তাদেরকে দানকৃত বস্তু লাভ করে খুব আনন্দিত ও উল্লাসিত হলো, তখন হঠাৎ একদিন আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম, আর তারা সেই অবস্থায় নিরাশ হয়ে পড়লো।

৪৫. অতঃপর অত্যাচারী সম্প্রদায়ের মূল শিকড় কেটে ফেলা হলো, আর সমস্ত প্রশংসা বিশ্ব প্রভু আল্লাহরই জন্যে।

إِنْ شَاءَ وَتَسْوَنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَآخَذْنَا هُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

فَلَبَّا نَسُوا مَا دُرُّوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ط حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِهَا أُوتُوا أَخَذْنَا لَهُم بَغْتَةً فَاذًا هُمْ مُبْسُوتُونَ ﴿٤٤﴾

فَقَطَّعَ دَائِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ط وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

৪৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বল, দেখো! আল্লাহ যদি তোমাদের শ্রবণশক্তি ও দৃষ্টিশক্তি কেড়ে নেন এবং তোমাদের অন্তরে মোহর মেরে দেন, তবে আল্লাহ ছাড়া কে আছে যে সেগুলো তোমাদেরকে ফিরিয়ে দেবেন? লক্ষ্য কর তো, আমি আমার আয়াতসমূহ ও দলীল প্রমাণাদি কিভাবে পেশ করছি, এর পরেও তারা তা থেকে ফিরে আসছে!

৪৭. তুমি আরও জিজ্ঞেস কর, আল্লাহর শাস্তি যদি হঠাৎ করে বা প্রকাশ্যে তোমাদের উপর এসে পড়ে, তবে কি অত্যাচারীরা ছাড়া আর কেউ ধ্বংস হবে?

৪৮. আমি রাসূলদেরকে তো শুধু এই উদ্দেশ্যে পাঠিয়ে থাকি যে, তারা (সং লোকদেরকে) সুসংবাদ দেবে এবং (অসং লোকদেরকে) সতর্ক করবে, সুতরাং যারা ঈমান এনেছে ও নিজেকে সংশোধন করেছে তাদের জন্যে কোন ভয়ভীতি থাকবে না এবং তারা চিন্তি তও হবে না।

৪৯. আর যারা আমার আয়াত ও নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করবে, তাদের উপর তাদের নিজেদের ফাসেকীর কারণে শাস্তি আপতিত হবে।

৫০. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি (তাদেরকে) বল— আমি তোমাদেরকে একথা বলি না যে, আমার কাছে আল্লাহর ধন ভান্ডার রয়েছে, আর আমি অদৃশ্যের

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ
وَخَتَمَ عَلَى قُلُوبِكُمْ مِّنْ أَلِهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيَكُمْ بِهِ
أُنظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِمَن نَّهْمُ يَصْدِفُونَ ﴿٤٦﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَنْتُمْ عَدَابَ اللَّهِ بَغْتَةً
أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمُونَ ﴿٤٧﴾

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ
فَمَنْ أَمِنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَسْهُمُ الْعَذَابَ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ؕ إِنِّي أَنبِئُكُمْ
مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ

কোন জ্ঞানও রাখি না এবং আমি তোমাদেরকে একথাও বলি না - যে, আমি একজন ফেরেশতা। আমার কাছে যা কিছু ওহীরূপে পাঠানো হয়, আমি শুধুমাত্র তারই অনুসরণ করে থাকি। তুমি (তাদেরকে) জিজ্ঞেস কর- অন্ধ ও চক্ষুস্থান কি সমমানের? সুতরাং তোমরা কেন চিন্তা-ভাবনা কর না?

৫১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি এর (ওহীর) সাহায্যে ঐসব লোককে সতর্ক কর যারা ভয় করে যে, তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের কাছে এমন অবস্থায় সমবেত করা হবে যেখানে তিনি ছাড়া তাদের না কোন সাহায্যকারী হবে, না থাকবে কোন সুপারিশকারী, হয়তো এই কারণে তারা মুত্তাকী হবে।

৫২. আর যেসব লোক সকাল-সন্ধ্যায় তাদের প্রতিপালকের ইবাদত করে এবং এর মাধ্যমে তাঁর সন্তুষ্টিই কামনা করে, তাদেরকে তুমি দূরে সরিয়ে দিবে না, তাদের হিসাব-নিকাশের কোন কিছু দায়িত্ব তোমার উপরও নেই এবং তোমার হিসাব-নিকাশের কোন দায়িত্ব তাদের উপর নেই। এরপরও যদি তুমি তাদেরকে দূরে সরিয়ে দাও, তবে তুমি যালিমদের মধ্যে शामिल হয়ে যাবে।

৫৩. এমনভাবে আমি একজন দ্বারা অপরাধজনকে পরীক্ষায় নিপতিত করে থাকি, যেন তারা বলতে থাকে যে,

أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ
لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ
يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوَةِ
وَالْعُشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ
فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ
مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا لَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ

এরাই কি ঐসব লোক যে, আমাদের মধ্যে এদের প্রতি আল্লাহ্ অনুগ্রহ ও মেহেরবানী করেছেন? ব্যাপারটা কি এটা নয় যে, আল্লাহ্ কৃতজ্ঞতাপরায়ণ লোকদেরকে ভালভাবেই জানেন।

بِالشَّكِرِينَ ﴿٥٤﴾

৫৪. আমার আয়াতসমূহের উপর বিশ্বাস স্থাপনকারীরা যখন তোমার নিকট আসে তখন তাদেরকে বলঃ তোমাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক, তোমাদের প্রতিপালক নিজের উপর দয়া ও অনুগ্রহ স্থির করে নিয়েছেন। তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি অজ্ঞতা ও মুর্খতাবশতঃ কোন খারাপ কাজ করে বসে, অতঃপর সে যদি তাওবা করে ও নিজেকে সংশোধন করে নেয়, তবে জেনে রেখ যে, তিনি হচ্ছেন ক্ষমাশীল, পরমদয়ালু।

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لَا آئَةٌ مَن عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا لِّبِجَهَالَتِهِ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهَا وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾

৫৫. এমনিভাবে আমি আমার আয়াত ও নিদর্শনসমূহ সবিস্তার বর্ণনা করে থাকি, যেন অপরাধী লোকদের পথটি সুস্পষ্ট হয়ে পড়ে।

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْأَيَّاتِ وَلِيَسْتَيْبِنَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾

৫৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি কাফিরদের বলে দাও— তোমরা আল্লাহকে ছেড়ে যার ইবাদত কর, (ও যাকে আহ্বান কর) আমাকে তার ইবাদত করতে নিষেধ করে দেয়া হয়েছে। তুমি আরও বলঃ আমি তোমাদের ইচ্ছা ও মনোবৃত্তির অনুসরণ করবো না, কেননা, তা করলে আমি পথহারা হয়ে পড়বো এবং আমি আর হিদায়াত প্রাপ্তদের মধ্যে থাকবো না।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ لَّا قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

৫৭. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলঃ আমি আমার প্রতিপালকের প্রদত্ত একটি সুস্পষ্ট উজ্জ্বল দলীল-প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত, আর তোমরা সেই দলীলকে মিথ্যা অভিহিত করছো, যে বিষয়টি তোমরা খুব তাড়াতাড়ি পেতে চাও তার ইখতিয়ার আমার হাতে নেই, হুকুমের মালিক আল্লাহ ছাড়া আর কেউই নয়, তিনি সত্য ও বাস্তবানুগ কথা বর্ণনা করেন, আর তিনিই হচ্ছেন সর্বোত্তম ফায়সালাকারী।

৫৮. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলঃ তোমরা যে বস্তুটি তাড়াতাড়ি পেতে চাও, তা যদি আমার ইখতিয়ারভুক্ত থাকতো, তবে তো আমার ও তোমাদের মধ্যে চূড়ান্ত ফায়সালা অনেক আগেই হয়ে যেতো, আর যালিমদেরকে আল্লাহ খুব ভাল করেই জানেন।

৫৯. গায়েব বা অদৃশ্যের চাবিকাঠি তাঁরই নিকট রয়েছে; তিনি ছাড়া আর কেউই তা জ্ঞাত নয়, স্থল ও জলভাগের সব কিছুই তিনি অবগত রয়েছেন, তাঁর অবগতি ব্যতীত বৃক্ষ হতে একটি পাতাও ঝরে না এবং ভূ-পৃষ্ঠের অন্ধকারের মধ্যে একটি দানাও পড়ে না, এমনভাবে কোন সরস ও নিরস বস্তুও পতিত হয় না; সমস্ত বস্তুই সুস্পষ্ট কিতাবে লিপিবদ্ধ রয়েছে।

৬০. আর সেই মহা প্রভূই রাত্রিকালে নিদ্রারূপে তোমাদের নিকট এক প্রকার মৃত্যু ঘটিয়ে থাকেন, আর

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۗ
مَا عِنْدِي مَا سَأَلْتُمُونِ بِهِ ۗ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا
لِلَّهِ ۗ يَقْضُ الْحَقُّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿٥٧﴾

قُلْ لَوْ أَن عِنْدِي مَا سَأَلْتُمُونِ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾

وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۗ وَيَعْلَمُ
مَا فِي الْبُرِّ وَالْبَحْرِ ۗ وَمَا تَسْقُطُ مِنَ وَرَقَةٍ إِلَّا
يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ
وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم
بِاللَّهِ ۗ ثُمَّ يَبْعَثْكُمْ فِيهِ لِيُقَاضَىٰ أَجَلٌ مُّسْتَقَرٌّ

দিনের বেলা তোমরা যে পরিশ্রম করে থাক তিনি সেটাও সম্যক পরিজ্ঞাত; অতঃপর তিনি নির্দিষ্ট সময়কাল পূরণের নিমিত্তে তোমাদেরকে নিদ্রা থেকে জাগিয়ে থাকেন, তাঁর পর পরিশেষে তার কাছেই তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে, তখন তিনি তোমাদেরকে তোমাদের কৃত-কর্ম সম্পর্কে অবহিত করবেন।

ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا لُكُمُ
تَعْمَلُونَ ﴿٦٤﴾

৬১. আর আল্লাহই স্বীয় বান্দাদের উপর পরাক্রমশালী, তিনি তোমাদের উপর পাহারাদার পাঠিয়ে থাকেন; এমন কি যখন তোমাদের কারও মৃত্যুর সময় উপস্থিত হয়, তখন আমার প্রেরিত দূতগণ তার প্রাণ হরণ করে নেয়, এ ব্যাপারে তারা বিন্দুমাত্র ক্রটি করেন না।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ
لَا يُفْقِرُونَ ﴿٦٥﴾

৬২. তারপর সকলকে তাদের আসল প্রভু আল্লাহর কাছে প্রত্যাবর্তিত

ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَهُمُ الْحَقُّ ۗ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ

১। (ক) ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ সম্পর্কে বলেন, আল্লাহ ভাল এবং মন্দ লিখে দিয়েছেন আর তা সুস্পষ্ট করে দিয়েছেন। সুতরাং যে ব্যক্তি কোন সং কাজের ইচ্ছা করল অথচ কাজটা করল না, আল্লাহ তাকে পূর্ণ (কাজের) সওয়াব দিবেন। আর যদি সে সং কাজের ইচ্ছা করল আর বাস্তবে তা করেও ফেলল, আল্লাহ তার জন্য দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত এমনকি এর চেয়েও অধিক সওয়াব লিখে দেন। আর যে ব্যক্তি কোন মন্দ কাজের ইচ্ছা করল, কিন্তু বাস্তবে তা করল না, তবে আল্লাহ তাকে পূর্ণ (সং কাজের) সওয়াব দিবেন। পক্ষান্তরে সে যদি মন্দ কাজের ইচ্ছা করে এবং (তদানুযায়ী) কাজটা করে ফেলে তবে, আল্লাহ তার জন্য একটাই মাত্র গুনাহ লিখেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৯১)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ফেরেশতাগণ একদলের পিছনে আরেক দল যাতায়াত করে থাকে। একদল ফেরেশতা রাতে আসে, আরেক দল দিনে। আর তারা ফজর এবং আসরের নামাযের সময় একত্রিত হয়। অতঃপর যারা তোমাদের মাঝে রাত্রি যাপন করেছিল তারা আল্লাহ কাছে চলে যায়। তিনি (আল্লাহ) তাদেরকে (মানুষের অবস্থা) জিজ্ঞেস করেন অথচ তাদের চেয়ে তিনি (এ সম্পর্কে) অধিক জানেন। জিজ্ঞেস করেন, তোমরা আমার বান্দাদের কি অবস্থায় ছেড়ে এসেছ? তারা জবাব দেয়- তাদের নামাযরত অবস্থায় ছেড়ে এসেছি এবং নামাযরত অবস্থায়ই তাদের কাছে গিয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩২২৩)

করানো হয়, তোমরা জেনে রেখো যে, ঐ দিন একমাত্র আল্লাহই রায় বা হুকুমের একচ্ছত্র মালিক হবেন, আর তিনি খুবই ত্বরিত হিসাব গ্রহণকারী।

وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿١٧﴾

৬৩. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর, স্থলভাগ ও জল ভাগের অন্ধকার (বিপদ) থেকে তোমাদেরকে কে পরিত্রাণ দিয়ে থাকে, যখন কাতর কণ্ঠে ও বিনীতভাবে এবং চুপে চুপে তাঁকে আহ্বান করে থাক, আর বলতে থাক— তিনি যদি আমাদেরকে এই বিপদ থেকে মুক্তি দেন তবে আমরা অবশ্যই কৃতজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত থাকবো।

قُلْ مَنْ يُنَجِّيَكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۗ لَّيْنٍ أَنَجِّنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٧﴾

৬৪. (হে নবী ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ আল্লাহই তোমাদেরকে ঐ বিপদ এবং অন্যান্য প্রতিটি বিপদ-আপদ থেকে রক্ষা করে থাকেন, কিন্তু এর পরও তোমরা শিরক করতে থাক।

قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيَكُم مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ مُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

৬৫. (হে রাসূল ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ আল্লাহ তোমাদের উর্ধ্বলোক হতে এবং তোমাদের পায়ের তলদেশ হতে শাস্তি প্রেরণ করতে পূর্ণ ক্ষমতাবান অথবা তোমাদেরকে দলে দলে বিচ্ছিন্ন করে এক দলের দ্বারা অপর দলের শক্তি স্বাদ গ্রহণ করাবেন; লক্ষ্য কর, আমি বারে বারে কিভাবে আমার আয়াত ও যুক্তিপ্রমাণ বর্ণনা করেছি। উদ্দেশ্য হলো, যেন বিষয়টিকে তারা পূর্ণরূপে জ্ঞানায়ত্ব ও হৃদয়ঙ্গম করে নিতে পারে।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ أَوْ مِّن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبَسَكُمْ شِيعًا وَيُزَيِّقَ بَعْضَكُمْ بِأَسْ بَعْضٍ ۗ أَنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿١٩﴾

৬৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তোমার সম্প্রদায়ের লোকেরা ওকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করছে, অথচ ওটাই প্রমাণিত সত্য, তুমি বলে দাও— আমি তোমাদের প্রতিনিধি নই।

৬৭. প্রত্যেকটি সংবাদ প্রকাশের একটি নির্দিষ্ট সময় রয়েছে, অতি শীঘ্রই তোমরা নিজেদের পরিণতি সম্পর্কে অবহিত হতে পারবে।

৬৮. যখন তুমি দেখবে যে লোকেরা আমার আয়াতসমূহে দোষ-ত্রুটি অনুসন্ধান করছে (বা আপোসে আলোচনা করছে) তখন তুমি তাদের নিকট হতে দূরে সরে যাবে, যতক্ষণ না তারা অন্য কোন প্রসঙ্গে নিমগ্ন হয়; শয়তান যদি তোমাকে এটা ভুলিয়ে দেয় তবে স্মরণ হওয়ার পর আর এই যালিম লোকদের সাথে তুমি বসবে না।

৬৯. যালিম লোকদের হিসাব-নিকাশের দায়-দায়িত্ব মুত্তাকী লোকদের উপর কিছুমাত্র অর্পিত নয়, তবে ওদেরকে উপদেশ প্রদানের দায়িত্ব রয়েছে, হয়তো বা উপদেশের ফলে ওরা পাপাচার হতে বেঁচে থাকতে পারবে (আল্লাহতীতি অর্জন করবে)।

৭০. যারা নিজেদের দীনকে খেল-তামাশার বস্তুতে পরিণত করেছে তুমি তাদেরকে বর্জন করে চলবে, এই পার্থিব জগত তাদেরকে সম্মোহিত করে ধোঁকায় নিপতিত করেছে, কুরআন দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দিতে থাক, যাতে কোন

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمَكَ وَهُوَ الْحَقُّ ط قُلْ كُنْتُ عَلَيْكُمْ بِكُفْرِي ٦٦

لِكُلِّ نَبِيٍّ مُّسْتَقَرَّرٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ٦٧

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ط وَإِنَّمَا يُنْسِيكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَى مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٦٨

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَلكِنْ ذِكْرَى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ٦٩

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لُغُوبًا وَهُوَ آذٌ عَصَاهُمْ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ أَن تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ ۚ وَإِن تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذُ مِنْهَا ط

ব্যক্তি স্বীয় কৃতকর্মের জন্য ধ্বংস না হয়, (কিয়ামতের দিন) আল্লাহ ছাড়া তার কোন বন্ধু ও সুপারিশকারী থাকবে না, আর দুনিয়াভর বিনিময় বস্ত্র দিয়েও (আল্লাহর শাস্তি হতে) মুক্তি পেতে চাইলে সেই বিনিময় গ্রহণ করা হবে না, তারা এমনই লোক যে, নিজেদের কর্মদোষে আটকা পড়ে গেছে, ফলে তাদের কুফরী করার কারণে তাদের জন্যে ফুটন্ত গরম পানীয় এবং যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

৭১. হে মুহাম্মাদ (ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ আমরা কি আল্লাহ ছাড়া এমন বস্ত্রকে আহ্বান করবো ও তার ইবাদত করবো, যারা আমাদের কোন উপকার করতে পারবে না এবং আমাদের কোন ক্ষতিও করতে পারবে না? আর আল্লাহ আমাদেরকে সুপথ প্রদর্শনের পর আমরা কি পশ্চাৎপদে ফিরে যাবো? আমরা কি ঐ ব্যক্তির ন্যায় হবো যাকে শয়তান মরুভূমির মধ্যে বিভ্রান্ত করে ফেলেছে এবং যে দিশাহারাঃ লক্ষ্যহারা হয়ে ঘুরে বেড়াচ্ছে? তার সঙ্গীগণ তাকে হিদায়াতের দিকে ডেকে বলছে-তুমি আমাদের সঙ্গে এসো, তুমি বলঃ আল্লাহর হিদায়াতই হচ্ছে সত্যিকারের সঠিক হিদায়াত, আর আমাদেরকে সারা জাহানের প্রতিপালকের সামনে আত্মসমর্পণের নির্দেশ দেয়া হয়েছে।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۗ لَهُمْ شَرَابٌ
مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧١﴾

قُلْ أَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا
وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي
اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ ۗ لَهُ
أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَىٰ انْتِبَاهٌ قُلْ إِنَّ
هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ وَأْمُرْنَا لِنُسَلِّمَ لِرَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

৭২. (আরো আদিষ্ট হয়েছি) যে, তোমরা নিয়মিতভাবে নামায কয়েম কর এবং সেই প্রভূকে ভয় করে চল যার নিকট তোমাদের সকলকে সমবেত করা হবে।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا زَكَاةً وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٤٤﴾

৭৩. সেই প্রতিপালকই আকাশ-মন্ডলকে ও ভূ-মন্ডলকে যথাযথভাবে সৃষ্টি করেছেন, যেদিন তিনি বলবেন (কিয়ামত) হও; আর তা হয়ে যাবে, তাঁর কথা খুবই যথার্থ বাস্তবানুগ; যেদিন শিঙ্গায় ফুৎকার দেয়া হবে, সেইদিন একমাত্র তাঁরই হবে বাদশাহী ও রাজত্ব, যিনি অদৃশ্য ও প্রকাশ্য সবকিছুর খবর রাখেন এবং তিনি হচ্ছেন প্রজ্ঞাময়, সর্বজ্ঞ।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ط وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ط هُ قَوْلُهُ الْحَقُّ ط وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ ط عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ط وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٤٥﴾

৭৪. (সেই সময়টি স্মরণযোগ্য) যখন ইবরাহীম (عليه السلام) তাঁর পিতা আযরকে বললেনঃ আপনি কি প্রতিমাগুলোকে মা'বুদ মনোনীত করেছেন? নিঃসন্দেহে আমি আপনাকে ও আপনার সম্প্রদায়কে প্রকাশ্য ভ্রান্তির মধ্যে নিপতিত দেখছি।^১

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ إِزْرَ اتَّخَذْتَ صُنَامًا آلِهَةً إِنِّي أَرَأَيْتَ إِنْ أُرْسِلَ وَرَأَيْتَ قَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٦﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ইরশাদ করেছেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) কিয়ামতের দিন তাঁর পিতা আযরের দেখা পাবেন। তখন আযরের চেহারা কালিমাযুক্ত ও ধূলা-বাগি মাখা থাকবে। ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) তাকে বলবেন, আমি কি আপনাকে (দুনিয়ায়) বলিনি যে, আমার নাফরমানী করবেন না? তখন তাঁর পিতা বলবেন আজ আর তোমার কথা অমান্য করব না। অতঃপর ইবরাহীম (আল্লাহুর নিকট) ফরিয়াদ করবেন, হে প্রভু আপনি আমার সাথে ওয়াদা করেছিলেন যে, হাশরের দিন আপনি আমাকে লজ্জিত করবেন না। (আপনার রহমত থেকে বঞ্চিত) আমার পিতার অপমানের চাইতে অধিক অপমান আমার জন্য আজ আর কি হতে পারে? আল্লাহু তখন বলবেন আমি চিরতরে কাফেরদের জন্য জান্নাত হারাম করে দিয়েছি। পুনরায় বলা হবে, হে ইবরাহীম! তোমার পদতলে কি? তখন তিনি নিচের দিকে তাকাবেন হঠাৎ দেখতে পাবেন, সেখানে (তাঁর পিতার স্থানে) সর্বশরীরে ঘৃণ্য রক্তমাখা একটি মূর্দা খোর জানোয়ার পড়ে রয়েছে। তার চার পা বেঁধে (দু'পা ও দু'হাত) জাহান্নামে ছুড়ে মারা হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৫০)

৭৫. এমনিভাবেই আমিই ইবরাহীম (عليه السلام)-কে আসমান ও যমীনের রাজত্ব (পরিচালনা ব্যবস্থা) অবলোকন করিয়েছি, যাতে তিনি বিশ্বাসীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যান।

৭৬. যখন রাত্রির অন্ধকার তাকে আবৃত করলো, তখন তিনি আকাশের একটি নক্ষত্র দেখতে পেলেন, আর বললেনঃ এটাই আমার প্রতিপালক; কিন্তু যখন গুটা অন্তর্মিত হলো তখন তিনি বললেনঃ আমি অন্তর্মিত বস্তুকে ভালবাসি না।

৭৭. অতঃপর যখন তিনি আকাশে চন্দ্রকে উজ্জ্বল আভায় দেখতে পেলেন তখন বললেনঃ এটাই আমার প্রতিপালক; কিন্তু গুটাও যখন অন্তর্মিত হলো, তখন বললেনঃ আমার প্রতিপালক যদি আমাকে পথ প্রদর্শন না করেন তবে আমি অবশ্যই পথদ্রষ্ট সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবো।

৭৮. অতঃপর যখন তিনি সূর্যকে উজ্জ্বল উদ্ভাসিত দেখতে পেলেন তখন বললেনঃ এটি আমার মহান প্রতিপালক। কারণ এটি হচ্ছে সব থেকে বড় যখন সেটিও অন্তর্মিত হল তখন তিনি বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা যাকে আল্লাহর অংশী কর তা থেকে আমি মুক্ত।

৭৯. আমার মুখমন্ডলকে আমি একনিষ্ঠভাবে সেই মহান সত্তার দিকে ফিরাচ্ছি যিনি আকাশমন্ডল ও ভূ-মন্ডল সৃষ্টি করেছেন, আর আমি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত নই।

وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمٰوٰتِ
وَٱلْأَرْضِ وَلَيَكُوْنُ مِنَ ٱلْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ ٱلَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ؕ قَالَ هَٰذَا رَبِّي ؕ
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَأَأْتِيَنَّ ٱلْأَفْلٰقِينَ ﴿٧٦﴾

فَلَمَّا رَأَى ٱلْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَٰذَا رَبِّي ؕ فَلَمَّا أَفَلَ
قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُوْنَنَّ مِنَ ٱلْقَوْمِ
ٱلضَّٰلِّينَ ﴿٧٧﴾

فَلَمَّا رَأَى ٱلسَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا ٱلْأَكْبَرُ
فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يُقَوْمِرُنِي بِرَبِّي ؕ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ ٱلسَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضَ
حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾

৮০. আর তার জাতির লোকেরা তার সাথে ঝগড়া করতে থাকলে সে তাদেরকে বললো: তোমরা কি আল্লাহর ব্যাপারে আমার সাথে ঝগড়া করছো? অথচ তিনি আমাকে সঠিক পথের সন্ধান দিয়েছেন! তোমরা আল্লাহর সাথে যা কিছু শরীক করছো আমি ওটাকে ভয় করি না তবে যদি আমার প্রতিপালক কিছু চান, প্রতিটি বস্তু সম্পর্কে আমার প্রতিপালকের জ্ঞান খুবই ব্যাপক, এর পরও কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

৮১. তোমাদের মনগড়া ও বানানো শরীকদেরকে আমি কী রূপে ভয় করতে পারি? অথচ তোমরা এই ভয় করছো না যে, আল্লাহর সাথে যাদেরকে তোমরা শরীক করছো তাদের ব্যাপারে আল্লাহ তোমাদের কাছে কোন দলীল প্রমাণ অবতীর্ণ করেননি, আমাদের দুই দলের মধ্যে কারা অধিকতর শান্তি ও নিরাপত্তা লাভের অধিকারী যদি তোমাদের জানা থাকে, তবে বল তো?

৮২. প্রকৃতপক্ষে তারাই শান্তি ও নিরাপত্তার অধিকারী। যারা ঈমান এনেছে এবং নিজেদের ঈমানকে যুলুমের সাথে (শিরকের সাথে) সংমিশ্রিত করেনি এবং তারাই হেদায়েতপ্রাপ্ত।

৮৩. আর এটাই ছিল আমার যুক্তি-প্রমাণ, যা আমি ইবরাহীম (عليه السلام)-কে তার স্বজাতির মোকাবিলায় দান

وَحَاجَّةُ قَوْمِهِ ط قَالَ اتَّحَابُونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ط وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يُشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ط وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ط أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ط فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ءَ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ط نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّنْ نَّشَاءُ ط إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

করেছিলাম, আমি যাকে ইচ্ছা করি সম্মান-মরতবা ও মহত্ব বাড়িয়ে দিয়ে থাকি, নিঃসন্দেহে তোমার প্রভু প্রজ্ঞাময় ও বিজ্ঞ।

৮৪. আমি তাকে, (ইব্রাহীম عليه السلام)-কে ইসহাক (عليه السلام) ও ইয়াকুব (عليه السلام)-কে দান করেছি এবং প্রত্যেককেই সঠিক পথের সন্ধান দিয়েছি, আর তার পূর্বে (এমনি ভাবে) নূহ (عليه السلام)-কেও সঠিক পথের হিদায়াত দিয়েছি; আর তার (ইব্রাহীমের) বংশের মধ্যে দাউদ, সুলাইমান, আইয়ুব, ইউসুফ, মুসা ও হারুন (عليه السلام)-কে এমনিভাবেই সঠিক পথের সন্ধান দিয়েছি; এমনিভাবেই আমি সৎ ও পুণ্যশীল লোকদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

৮৫. আর যাকারিয়া عليه السلام, ইয়াহুইয়া عليه السلام, ঈসা عليه السلام ও ইলিয়াস عليه السلام, তারা প্রত্যেককেই সৎ লোকদের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন।

৮৬. আর ইসমাইল عليه السلام, ইয়াসআ' عليه السلام, ইউনুস عليه السلام ও লূত عليه السلام এদের প্রত্যেককেই আমি নবুওয়াত দান করে সমগ্র বিশ্বের উপর মহত্ব ও শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি।

৮৭. আর এদের বাপ-দাদা, সন্তান-সন্ততি, ভাইদের মধ্যে অনেককে আমি নির্বাচিত করে নিয়েছি এবং সঠিক ও সোজা পথে পরিচালিত করেছি।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ط كُلًّا هَدَيْنَا ۗ وَنُوحًا هَدَيْنَا
مِن قَبْلُ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ
وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ط وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٧﴾

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلْيَاسَ ط كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾

وَأِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُوسُفَ وَلُوطَ ط وَكُلًّا فَضَّلْنَا
عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾

وَمِن آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۗ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ
وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾

৮৮. এটাই আল্লাহর হিদায়াত; তিনি তাঁর বান্দার মধ্যে যাকে চান এ পথে পরিচালিত করেন; কিন্তু তারা যদি শিরক করতো তবে তারা যা কিছুই করতো, সবই নষ্ট হয়ে যেতো।

৮৯. এরা ছিল সেই লোক, যাদেরকে আমি কিতাব, প্রজ্ঞা বা বিচক্ষণতা ও নবুওয়াত দান করেছি, সুতরাং যদি এরা অস্বীকারও করে, তবে তাদের স্থলে আমি এমন এক জাতিকে নিয়োগ করবো, যারা ওটা অস্বীকার করে না।

৯০. এরা হচ্ছে ওরাই, যাদেরকে আল্লাহ হিদায়াত দান করেছিলেন, সুতরাং তুমিও তাদের হিদায়াতের পথ অনুসরণ করে চল, তুমি বলে দাওঃ আমি এর বিনিময়ে তোমাদের কাছে কোন কিছুই পারিশ্রমিক প্রার্থনা করি না, আর এই কুরআন সমগ্র জগতবাসীর জন্যে উপদেশ ছাড়া কিছুই নয়।

৯১. এই লোকেরা আল্লাহ তা'আলার যথাযথ মর্যাদা উপলব্ধি করেনি। কেননা, তারা বললোঃ আল্লাহ কোন মানুষের উপর কোন কিছুই অবতীর্ণ করেননি; (হে নবী ﷺ) তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ মানুষের হিদায়াত ও আলোকবর্তিকারূপে যে কিতাব মুসা (عليه السلام) এনেছিলেন, তা কে অবতীর্ণ করেছিল? তোমরা সে কিতাব খন্ড খন্ড করে বিভিন্ন পত্রে রেখেছো, ওর কিয়দাংশ তোমরা প্রকাশ করছো এবং বহুলাংশ গোপন

ذٰلِكَ هَدٰى اللّٰهُ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَن يَّشَآءُ ۗ مِّنْ عِبَادِهٖ ط
وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحِطَّ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَتَيْنَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَ وَالنَّبُوَّةَ ؕ فَاِنْ يَكْفُرْ بِهَا هٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا
بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰى اللّٰهُ فَيَهْدِيْهِمْ اَقْتَدِهٖ ط قُلْ
لَّا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِذْ قَالُوْا مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ
عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ط قُلْ مَن اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ
جَآءَ بِهٖ مُّوسٰى نُورًا وَهَدٰى لِّلنَّاسِ لِيَجْعَلُوْهُ
قُرْاٰنًا مِّنْ بَيْنِ يَدٰىهَا وَتُخْفَوْنَ كَثِيْرًا ؕ وَعَلَيْتُمْ مَا لَمْ
تَعْلَمُوْا اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ ط قُلِ اللّٰهُ لَئِمَّةٌ ذَرٰهُمْ فِيْ
خَوْضِهِمْ لِيَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

রাখছো, (ঐ কিতাব দ্বারা) তোমাদেরকে বহু বিষয়ে অবহিত করা হয়েছে, যা তোমরা ও তোমাদের পূর্বপুরুষরা জানতে না; তুমি বলে দাওঃ তা আল্লাহই অবতীর্ণ করেছেন। সুতরাং তুমি তাদেরকে তাদের বাতিল ধারণার উপর ছেড়ে দাও, তারা (নিরর্থক আলোচনার) খেলা করতে থাকুক।

৯২. আর এ কিতাবও (কুরআন) আমিই অবতীর্ণ করেছি; যা খুব বরকতময় কিতাব এবং পূর্বের সকল কিতাবকে সত্যায়িত করে থাকে, যেন তুমি কেন্দ্রীয় মক্কা নগরী এবং ওর চতুর্পার্শ্বস্থ জনপদের লোকদেরকে এর দ্বারা সতর্ক কর। যারা আশ্বেরাতে বিশ্বাস করবে তারা এর প্রতি ঈমান আনবে, আর তারা নিয়মিতভাবে স্বীয় নামাযের সংরক্ষণ করে থাকে।

৯৩. আর ঐ ব্যক্তি অপেক্ষা অধিক অত্যাচারী কে হতে পারে যে আল্লাহর প্রতি মিথ্যারোপ করেছে? অথবা এরূপ বলেঃ আমার উপর ওহী নাযিল করা হয়েছে, অথচ তার উপর প্রকৃতপক্ষে কোন ওহীই নাযিল করা হয়নি এবং যে ব্যক্তি এরূপ বলেঃ যে রূপ কালাম আল্লাহ নাযিল করেছেন তদ্রূপ আমি আনয়ন করছি; আর তুমি যদি দেখতে পেতে (ঐ সময়ের অবস্থা) যে সময় যালিমরা সম্মুখীন হবে মৃত্যু যন্ত্রণায়; আর ফেরেশতার হাত বাড়িয়ে বলবেঃ নিজেদের প্রাণগুলো বের

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبْرَكًا مُصَدِّقًا لِّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ
وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ
إِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ ط وَكَو تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ خِرَاجًا أَنْفُسَهُمْ
الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٣﴾

কর, আজ তোমাদেরকে সেসব অপরাধের শাস্তি হিসেবে লাঞ্ছনাময় শাস্তি দেয়া হবে যে, তোমরা আল্লাহর উপর মিথ্যা দোষারোপ করে অকারণ প্রলাপ বকছিলে এবং তাঁর আয়াতসমূহ কবুল করা হতে অহংকার করছিলে।^১

৯৪. আর তোমরা আমার কাছে এককভাবে এসোছো, যেভাবে প্রথমবারে আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছিলাম, আর যা কিছু আমি তোমাদেরকে দিয়েছিলাম তা তোমরা নিজেদের পশ্চাতেই ছেড়ে এসেছো, আর আমি তো তোমাদের সাথে তোমাদের সেই সুপারিশকারীদেরকে দেখছি না যাদের সম্বন্ধে তোমরা দাবী করতে যে, তারা তোমাদের কাজকর্মে (আমার) শরীক, বাস্তবিকই তোমাদের পরম্পরের সম্পর্ক

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فَرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۗ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۗ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾

১। (ক) বারা ইবনে আযেব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, ঈমানদার ব্যক্তিকে যখন তার কবরে তুলে বসান হয় এবং তার কাছে ফেরেশতা পাঠান হয়। সে তখন এ বলে সাক্ষ্য প্রদান করে, লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু ওয়া আল্লা মুহাম্মাদার রাসূলুল্লাহ্ (অর্থঃ আল্লাহ্ ব্যতীত সত্য কোন ঐত্ব নেই, আর মুহাম্মাদ [সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম] আল্লাহ্র রাসূল) এ সম্পর্কেই আল্লাহ্ বলেছেন, একটি প্রতিষ্ঠিত কথা ঘারা আল্লাহ্ তা'আলা দুনিয়া ও আখেরাতে ঈমানদারদেরকে অবিচল রাখবেন। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬৯)

(খ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, বান্দাকে যখন কবরে রাখা হয় এবং তার বন্ধু-বান্দব সেখান থেকে ফিরে চলে যায়। সে তখনও তাদের জুতার আওয়াজ শুনতে পায়। এমন সময় তার নিকট দু'জন ফেরেশতা আসেন এবং তাকে বসিয়ে দেন। মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে দেখিয়ে জিজ্ঞেস করেন এ লোকটি সম্পর্কে তুমি কি বলতে? সে তখন বলবে, আমি সাক্ষ্য প্রদান করছি, তিনি আল্লাহ্র বান্দা ও তাঁর রাসূল। তখন তাকে বলা হবে, দোযখে তোমার স্থানটি দেখে নাও। সেটি পরিবর্তন করে আল্লাহ্ তোমাকে বেহেশতে একটি জায়গা প্রদান করেছেন। সে দু'টিই একসাথে দেখতে পাবে। কিন্তু কাকের বা মুনাক্ফের বলবে, আমি কিছু জানিনা অন্যান্য লোকেরা যা বলত আমিও তাই বলতাম। তখন তাকে বলা হবে, তুমি জানতেও না বুঝতেও না। এরপর লোহার একটি মুগুর দিয়ে উভয় কানে এমন জোরে আঘাত করা হবে যে, সে ভয়ানকভাবে চিৎকার করতে থাকবে। জ্বিন ও মানুষ ছাড়া নিকটবর্তী সবাই তার এ চিৎকার শুনতে পাবে। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৩৮)

তো বিচ্ছিন্ন হয়ে গেছে, আর তোমরা যা কিছু ধারণা করতে তা সবই আজ ভ্রান্ত প্রমাণিত হয়েছে।

৯৫. নিশ্চয়ই দানা ও বীজ উৎপাদনকারী হচ্ছেন আল্লাহ, তিনিই জীবন্তকে প্রাণহীন থেকে বের করেন এবং তিনিই প্রাণহীনকে নির্গতকারী জীবন্ত হতে, তিনিই তো আল্লাহ, তাহলে তোমরা উদ্ভ্রান্ত হয়ে (লক্ষ্যভ্রষ্ট হয়ে) কোথায় যাচ্ছো?

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ط ذَلِكُمْ اللَّهُ فَالِقُ نُوذُقُونَ ⑤

৯৬. তিনিই রাত্রির আবরণ বিদীর্ণ করে সুপ্রভাতের উন্মোচকারী তিনিই রজনীকে বিশ্রামকাল এবং সূর্য ও চন্দ্রকে সময়ের নিরূপক করে দিয়েছেন; এটা হচ্ছে সেই পরম পরাক্রান্ত ও মহাজ্ঞানী (আল্লাহর) নির্ধারণ।

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ط ذَلِكْ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ⑥

৯৭. আর তিনিই তোমাদের জন্যে নক্ষত্ররাজিকে সৃষ্টি করেছেন যেন তোমরা এগুলোর সাহায্যে অন্ধকারে পথের সন্ধান পেতে পার, স্থলভাগেও এবং সমুদ্রেও; নিশ্চয়ই আমি প্রমাণসমূহ খুব বিশদভাবে বর্ণনা করে দিয়েছি ঐসব লোকের জন্যে যারা জ্ঞান রাখে।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ط قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑦

৯৮. তিনিই তোমাদেরকে এক ব্যক্তি হতে সৃষ্টি করেছেন, সুতরাং

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ

১। কাতাদা বলেনঃ আল্লাহ্ তা'আলার বাণী “আমি নিকটবর্তী আকাশকে সুশোভিত করেছি প্রদীপমালা দ্বারা।” (সূরাঃ মূলক-৫) আল্লাহ্ তা'আলা এ সমস্ত প্রদীপমালাকে তিন উদ্দেশ্যে সৃষ্টি করেছেন। (১) তিনি (প্রথম) আকাশকে এর মাধ্যমে সুশোভিত করেছেন, (২) শয়তানের প্রতি নিষ্ক্ষেপের উপকরণ হিসেবে ও (৩) পথিকের পথ নির্দেশনার জন্য।

যে ব্যক্তি এ তিন কারণ ছাড়া অন্য কোন অর্থে এর ব্যাখ্যা করবে সে ভুল করবে এবং তার সময় ও অংশ (অর্থাৎ ঈমান) নষ্ট করল এবং যে সম্পর্কে তার কোন জ্ঞান নেই তার প্রতি ব্যর্থ চেষ্টা করল। (বুখারী)

(প্রত্যেকের জন্যে) একটি স্থল অধিক দিন থাকবার জন্যে এবং একটি স্থল অল্প দিন থাকবার জন্যে রয়েছে (অর্থাৎ দীর্ঘ ও স্বল্পকালীন বাসস্থান)। এই নিদর্শনসমূহ আমি তাদের জন্যে সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করলাম যাদের বুদ্ধি-বিবেচনা আছে।

৯৯. আর তিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেছেন, এর সাহায্যে সব রকমের উদ্ভিদ আমি (আল্লাহ) উৎপন্ন করেছি; অতঃপর তা থেকে সবুজ শাখা বের করেছি, ফলতঃ তা থেকে আমি উপর্যুপরি (অর্থাৎ একটি উপর একটি) শস্যদানা উৎপন্ন করে থাকি। আর খেজুর বৃক্ষ থেকে অর্থাৎ ওর পুষ্পকলিকা থেকে ছড়া হয় যা নিম্ন দিকে ঝুঁকে পড়ে, আর আঙ্গুরসমূহের উদ্যান এবং যায়তুন ও আনার যা পরস্পর সাদৃশ্যযুক্ত ও সাদৃশ্যহীন, প্রত্যেক ফলের প্রতি লক্ষ্য কর যখন ওটা ফলে এবং এর পরিপক্ব হওয়ার প্রতি লক্ষ্য কর; এ সমুদয়ের মধ্যে নিদর্শনসমূহ রয়েছে তাদেরই জন্যে যারা ঈমান রাখে।

১০০. আর এ (অজ্ঞ) লোকেরা জ্বিনদেরকে আল্লাহর শরীক বানিয়ে নিয়েছে, অথচ আল্লাহই ওদেরকে সৃষ্টি করেছেন, আর না জেনে না বুঝে তারা তাঁর জন্যে পুত্র-কন্যা রচনা করে; তিনি মহিমান্বিত (পবিত্র), এদের আরোপিত বিশেষণ-গুলো হতে বহু উর্ধ্বে তিনি।

১০১. তিনি আসমান ও যমীনের স্রষ্টা; তাঁর সন্তান হবে কী করে?

وَمُسْتَوْسٍ ۖ قَدْ فَضَّلْنَا الْآلِيَةَ لِقَوْمٍ يَعْقَهُونَ ﴿٩٩﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ نَنْظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْجِهِ ط إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٠٠﴾

بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط اَنۢى يَكُوۡنُ لَهُ وَاَلَدٌ لَّمۡ يَكُنۡ

অথচ তাঁর জীবন সঙ্গিনীই কেউ নেই! তিনিই প্রত্যেকটি জিনিস সৃষ্টি করেছেন এবং প্রত্যেকটি জিনিস সম্পর্কে সর্বজ্ঞাত।

১০২. তিনি আল্লাহ তোমাদের প্রতিপালক, তিনি ছাড়া অন্য কেউই সত্য মা'বুদ নেই, প্রত্যেক বস্তুই স্রষ্টা তিনি, অতএব তোমরা তাঁরই ইবাদত করতে থাকবে, তিনিই সব জিনিসের কার্যনির্বাহী।

১০৩. তাঁকে তো কারও দৃষ্টি পরিবেষ্টন করতে পারে না, আর তিনি সকল দৃষ্টি পরিবেষ্টনকারী এবং তিনি অতীব সূক্ষ্মদর্শী এবং সব বিষয়ে ওয়াকিফহাল।

১০৪. এখন নিশ্চয়ই তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্য দর্শনের উপায়সমূহ পৌছেছে, এখন যে ব্যক্তি নিজের গভীর দৃষ্টিতে অবলোকন করবে, সে নিজেরই কল্যাণ সাধন করবে, আর যে অন্ধ থাকবে সে নিজেই ক্ষতিগ্রস্ত হবে, আর আমি তো তোমাদের প্রহরী নই।

১০৫. এরূপেই আমি বিভিন্নভাবে দলীল প্রমাণাদি সমূহ বর্ণনা করে থাকি যাতে লোকেরা বলেঃ তুমি কারও নিকট থেকে পড়ে নিয়েছো, আর যেন আমি একে বুদ্ধিমান লোকদের জন্যে প্রকাশ করে দেই।

১০৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তোমার প্রতি তোমার প্রভুর পক্ষ থেকে যে ওহী নাযিল হয়েছে, তুমি তারই অনুসরণ করে চল, তিনি ছাড়া অন্য

لَهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٠٢﴾

ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٠٣﴾

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ ۖ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٤﴾

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَن أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَن عَمِيَٰ فَعَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿١٠٥﴾

وَكَذَٰلِكَ نُصِرِفُ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِيُبَيِّنَنَّٰهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١٠٦﴾

إِنَّمَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٧﴾

কেউই সত্য মা'বুদ নেই, আর মুশরিকদের থেকে বিমুখ থাক।

১০৭. আর যদি আল্লাহর অভিপ্রায় হতো তবে এরা শিরক করতো না; আর আমি তোমাকে এদের পর্যবেক্ষক নিযুক্ত করিনি এবং তুমি তাদের উপর ক্ষমতা প্রাপ্তও নও।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا
وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٧﴾

১০৮. (হে মু'মিনগণ)! এরা আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাদেরকে আহ্বান করে (ও ইবাদত করে) তোমরা তাদেরকে গালাগালি করো না, তাহলে তারা অজ্ঞানতাবশতঃ বৈরীভাবে আল্লাহকেই গালাগালি দিতে শুরু করবে, আমি তো এরূপেই প্রতিটি জনগোষ্ঠীর জন্যে তাদের আমলকে চাকচিক্যময় করে দিয়েছি, শেষ পর্যন্ত তাদেরকে তাদের প্রভুর কাছে ফিরে যেতে হবে, তখন তারা যা কিছু করতো তা তিনি তাদেরকে জানিয়ে দিবেন।^১

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ
عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾

১। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহ আনহুমা) থেকে বর্ণিত। রাসুলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের পূর্ববর্তী যুগের লোকদের মধ্যে তিনজন লোক ছিল। তারা পথ চলছিল। হঠাৎ তারা বৃষ্টির মধ্যে পড়ে গেল। তখন তারা এক গুহার আশ্রয় নিল। অমনি তাদের গুহার মুখ (একটি পাথর চাপা পড়ে) বন্ধ হয়ে গেল। তাদের একজন অন্যজনকে বলল, বন্ধুগণ! আল্লাহর কসম! এখন সত্য ছাড়া আর কিছুই তোমাদেরকে মুক্ত করতে পারবে না। কাজেই তোমাদের প্রত্যেকের সেই জিনিসের উসীলায় দোয়া করা উচিত যে, ব্যাপারে জানা আছে যে, এ কাজটিতে সে সত্যতা বহাল রেখেছে। তখন তাদের একজন (এই বলে) দো'আ করলঃ হে আল্লাহ! তুমি ভালো করেই জান যে, আমার একজন মজদুর ছিল। সে এক ফারাক চালের বিনিময়ে আমার কাজ করে দিয়েছিল। পরে সে চলে গিয়েছিল এবং মজুরিও নেয়নি। আমি তার মজুরী দিয়ে কিছু একটা করতে মনস্থ করলাম এবং কৃষি কাজে লাগালাম। এতে যা উৎপাদন হয়েছে, তার বিনিময়ে আমি একটি গাভী কিনলাম। অনেক দিন পর সেই মজদুরটি আমার নিকট এসে তার মজুরী দাবী করল। আমি তাকে বললাম, এ গাভীটির দিকে তাকাও এবং তা হাকিয়ে নিয়ে যাও। সে জ্বাব দিল, ঠাট্টা করবেন না, আমার তো আপনার কাছে মাত্র এক ফারাক চালই পাওনা। আমি তাকে বললাম গাভীটি নিয়ে যাও। কেননা (তোমার) সেই এক ফারাক দ্বারা যা উৎপাদিত হয়েছে, তারই বিনিময়ে এটি খরিদ করা হয়েছে। তখন সে গাভীটি হাকিয়ে নিয়ে গেল। হে আল্লাহ যদি তুমি মনে কর তা আমি একমাত্র তোমার ভয়েই করেছি, তাহলে আমাদের (গুহার মুখ) থেকে (এ পাথরটি) সরিয়ে দাও। অতঃপর পাথরটি কিছুটা

১০৯. আর কঠিন অঙ্গীকার সহকারে আল্লাহর নামে কসম করে তারা বলেঃ কোন একটা নিদর্শন (মু'জিযা) তাদের কাছে আসলে তারা অবশ্যই ঈমান আনবে। (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ নিদর্শনগুলো সমস্তই আল্লাহর অধিকারে। আর (হে মুসলমানরা)! কী করে তোমাদেরকে বুঝানো যাবে যে, নিদর্শন আসলেও তারা ঈমান আনবে না।

১১০. আর আমিও তাদের অন্তরের ও দৃষ্টির পরিবর্তন করে দিবো যেমনিভাবে তারা এর উপর প্রথমবার ঈমান আনেনি এবং আমি তাদেরকে তাদের অবাধ্যতার মধ্যেই বিভ্রান্ত থাকতে দিবো।

وَأَقْسُوا بِاللَّهِ جَهْدَ آيْمَانِهِمْ لِيُنْجَأَ تَهُمَ آيَةً
لِيُؤْمِنُوا بِهَا ط قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا
يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَا أَوَّلَ
مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

সরে গেল। দ্বিতীয় যুবক দো'আ করল; হে আল্লাহ্! তোমার যদি জানা থাকে (অর্থাৎ তোমার জানাই আছে) যে, আমার মা-বাপ খুব বুড়ো ছিলেন। আমি প্রতিরাতে তাঁদের জন্য আমার ছাগলের দুধ নিয়ে তাঁদের কাছে যেতাম। ঘটনাক্রমে একরাতে তাদের কাছে (দুধ নিয়ে) যেতে আমি দেরী করে ফেললাম। তারপর এমন সময় গেলাম, যখন তাঁরা উভয় ঘুমিয়ে পড়েছেন। আর আমার সন্তানগুলো ক্ষুধায় ছটফট করছে। কিন্তু আমি আমার মা-বাপকে দুধ পান না করান পর্যন্ত আমার ক্ষুধায় কাতর ছেলেপেলেকে দুধ পান করাইনি। কেননা, তাঁদেরকে ঘুম থেকে জাগানটা আমি পছন্দ করিনি। অপরদিকে তাঁদেরকে বাদ দিতেও ভাল লাগেনি। কারণ, এ দুধটুকু পান না করলে তাঁরা উভয়েই খুবই দুর্বল হয়ে যাবেন। তাই (দুই হাতে) আমি (সারারাত) ভোর হয়ে যাওয়া পর্যন্ত (তাদের জাগার) অপেক্ষাই করেছিলাম। যদি তুমি জেনে থাক যে এটা করেছি আমি একমাত্র তোমারই ভয়ে, তাহলে আমাদের থেকে (পাথরটি) সরিয়ে দাও। অতঃপর পাথরটি তাদের থেকে আরেকটু সরে গেল। এমনকি তারা আসমান দেখতে গেল। সর্বশেষ যুবকটি দো'আ করল হে আল্লাহ্! তুমি জান যে, আমার একটি চাচাত বোন ছিল। সবার চেয়ে সে আমার নিকট অধিক প্রিয় ছিল। আমি তার সাথে (যৌনমিলনের) বাসনা করেছিলাম। কিন্তু আমি তাকে একশ দিনার না দেয়া পর্যন্ত সে রাজী হলো না। তখন আমি তা সংগ্রহে লেগে গেলাম। শেষ পর্যন্ত তা সংগ্রহে সক্ষম হলাম। তা নিয়ে তার নিকট আসলাম এবং এ একশ দিনার তাকে দিয়ে দিলাম। অতঃপর সে নিজেই নিজেকে আমার নিকট সোপর্দ করল। আমি যখন তার দু'পায়ের মাঝখানে বসলাম, তখন সে বলে উঠল, আল্লাহ্কে ভয় কর এবং (শরীয়াতের বিধান মতে) অধিকার লাভ করা ছাড়া আমার কুমারীত্ব নষ্ট করো না। আমি তখন উঠে গিয়েছিলাম এবং একশ দিনারও ত্যাগ করেছিলাম। তুমি যদি জান যে, আমি একমাত্র তোমার ভয়েই তা করেছি, তাহলে তুমি আমাদের থেকে (পাথরটি) সরিয়ে দাও। তখন আল্লাহ্ তা'আলা তাদের (গুহার মুখ) থেকে (পাথরটি) সরিয়ে দিলেন। অতঃপর তারা (গুহা থেকে) বেরিয়ে আসল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৬৫)

১১১. আর যদি আমি তাদের কাছে ফেরেশতাও অবতীর্ণ করতাম, আর মৃতগণও যদি তাদের সাথে কথাবার্তা বলতো এবং দুনিয়ার সমস্ত বস্তুও যদি আমি তাদের চোখের সামনে সমবেত করতাম, তবুও তারা ঈমান আনতো না আল্লাহর ইচ্ছা ব্যতীত; কিন্তু তাদের অধিকাংশই অজ্ঞ।

১১২. আর এমনিভাবেই আমি প্রত্যেক নবীর জন্যে বহু শয়তানকে শত্রুরূপে সৃষ্টি করেছি, তাদের কতক শয়তান মানুষের মধ্যে এবং কতক শয়তান জ্বিনদের হতে হয়ে থাকে, এরা একে অন্যকে কতগুলো মনোমুগ্ধকর ও চাকচিক্য কথা দ্বারা প্ররোচিত করে থাকে। কারণ যেন তারা ধোঁকায় পতিত হয়। তোমার প্রতিপালকের ইচ্ছা হলে তারা এমন কাজ করতে পারতো না, সুতরাং তুমি তাদেরকে এবং তাদের মিথ্যা রচনাগুলোকে বর্জন করে চলবে।

১১৩. (তাদের এরূপ প্ররোচনামূলক কথার উদ্দেশ্য হলো) যারা পরকালের প্রতি ঈমান রাখে না তাদের অন্তরকে ঐ দিকে অনুরক্ত করা; এবং তারা যেন তাতে সন্তুষ্ট থাকে আর তারা যেসব কাজ করে তা যেন তারাও করতে থাকে।

১১৪. (হে মুহাম্মাদ ﷺ! তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর) তবে কি আমি আল্লাহকে বর্জন করে অন্য কাউকে মীমাংসাকারী ও বিচারকরূপে অনুসন্ধান করবো? অথচ তিনিই

وَلَوْ أَنَّا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَكَةَ وَكَلَّمَهُمُ
السُّوتَى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ
يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَاطِئِينَ الْإِنْسِ
وَالْجِنِّ يُوجِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ
وَمَا يَغْتَرُونِ ﴿١١٢﴾

وَلِتَصْغَى إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ
مُقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾

أَفْخَيْرَ اللَّهِ ابْتِغَى حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ
الْكِتَابَ مَفْصَلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا

তোমাদের কাছে এই কিতাবকে বিস্তারিতভাবে অবতীর্ণ করেছেন! আর আমি যাদেরকে কিতাব দান করেছি তারা জানে যে, এ কিতাব তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতেই যথার্থ ও সঠিকভাবে অবতীর্ণ করা হয়েছে, সুতরাং তুমি সন্দেহ পোষণকারীদের মধ্যে शामिल হয়ো না।

تَكُونَنَّ مِنَ الْمُبْتَلِينَ ﴿١١٥﴾

১১৫. তোমার প্রতিপালকের বাণী সত্যতা ও ইনসাফের দিক দিয়ে পূর্ণতা লাভ করেছে, তাঁর বাণী পরিবর্তনকারী কেউই নেই, তিনি সবকিছু শোনে ও সবকিছু জানেন।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾

১১৬. (হে নবী ﷺ)! তুমি যদি দুনিয়াবাসীদের অধিকাংশ লোকের কথার অনুসরণ কর, তবে তারা তোমাকে আল্লাহর পথ হতে বিভ্রান্ত করে ফেলবে, তারা তো নিছক ধারণা ও অনুমানেরই অনুসরণ করে, আর তারা ধারণা ও অনুমান ছাড়া কিছুই করছে না।

وَأِنْ تَطَّعَ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾

১১৭. কোন্ ব্যক্তি আল্লাহর পথ হতে বিভ্রান্ত হয়েছে তা তোমার প্রতিপালক নিশ্চিতভাবে অবগত আছেন, আর তিনি হেদায়েত প্রাণীদের সম্পর্কেও খুব ভালভাবে জ্ঞাত রয়েছেন।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

১১৮. অতএব, যে জীবকে আল্লাহর নাম নিয়ে যবাই করা হয়েছে তা তোমরা ভক্ষণ কর, যদি তোমরা আল্লাহর বিধানের প্রতি ঈমান রাখ।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

১১৯. যে জন্তু যবাই করার সময় আল্লাহর নাম উচ্চারণ করা হয়েছে,

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ

তা ভক্ষণ না করার তোমাদের কাছে কি কারণ থাকতে পারে? অথচ আল্লাহ পাক তোমাদের উপর যা কিছু হারাম করেছেন, তা তিনি সবিস্তারে বর্ণনা করেছেন, তবে কঠিনভাবে বাধ্য হলে তোমরা উক্ত হারাম বস্তুও আহাৰ কতে পার, নিঃসন্দেহে বহুলোক অজ্ঞানতাবশতঃ নিজেদের ইচ্ছা, বাসনা ও প্রবৃত্তির দ্বারা অবশ্যই অন্যকে পথভ্রষ্ট করে, নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক সীমালঙ্ঘনকারীগণ সম্পর্কে ভালভাবেই ওয়াকিফহাল।

১২০. তোমরা প্রকাশ্য ও গোপনীয় পাপকার্য পরিত্যাগ কর, যারা পাপের কাজ করে, তাদেরকে অতিসত্বুরই নিজেদের কৃতকার্যের প্রতিফল দেয়া হবে।

১২১. আর যে জন্তু যবাই করার সময় আল্লাহর নাম উচ্চারণ করা হয়নি, তা তোমরা ভক্ষণ করো না, কেননা এটা ফাসেকী বা অন্যায়, শয়তানরা নিজেদের সঙ্গী-সাথীদের মনে এমন কিছু কুমন্ত্রণা প্রবেশ করিয়ে দেয়, যেন তারা তোমাদের সাথে ঝগড়া ও বিতর্ক করে; যদি তোমরা তাদের আকীদা-বিশ্বাস ও কাজ-কর্মে আনুগত্য কর, তবে নিঃসন্দেহে তোমরা মুশরিক হয়ে যাবে।

وَقَدْ فَضَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرُّتُمْ
إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لِّيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١٢٠﴾

وَدَرُّوا ظَاهِرًا لَكُمْ وَبِاطْنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ
الْإِثْمَ سَيَجْزُونَ بِمَا كَانُوا يَاقْتَرُونَ ﴿١٢١﴾

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يَذْكَرْ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ
لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُؤْوَى إِلَى أَوْلِيائِهِمْ
لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢٢﴾

১। আদী ইবনে হাতেম থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি কাঁধে করে একটি স্বর্ণের তুঙ্গল নিয়ে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট আসলাম, তখন তিনি বললেনঃ হে আদী তোমার কাঁধ থেকে এই মূর্তিটি সরিয়ে ফেল এবং তাঁকে সূরা তাওবার এই আয়াতটি পাঠ করতে শুনলামঃ অর্থঃ “তারা আল্লাহ ব্যতীত তাদের পণ্ডিত ও সংসার বিরাগীদেরকে তাদের পালন কর্তারূপে গ্রহণ করেছে।” (সূরাঃ তাওবা, আয়াত-৩১) (তিরমিযী, তাফসীরে তাবারী)

১২২. এমন ব্যক্তি যে ছিল প্রাণহীন (মৃত) তৎপর তাকে আমি জীবন প্রদান করি এবং তার জন্যে আমি এমন আলোকের (ব্যবস্থা) করে দেই, যার সাহায্যে সে জনগণের মধ্যে চলাফেরা করতে থাকে, সে কি এমন কোন লোকের মত হতে পারে যে (ডুবে) আছে অন্ধকার পুঞ্জের মধ্যে, তা হতে বের হওয়ার পথ পাচ্ছে না, এরূপেই কাফিরদের জন্যে তাদের কার্যকলাপ মনোহর বানিয়ে দেয়া হয়েছে।

১২৩. আর এরূপভাবেই আমি প্রত্যেক জনপদে এর শীর্ষস্থানীয় লোকদেরকে পাপাচারী করেছি, যাতে তারা সেখানে নিজেদের ধোঁকা, প্রতারণা ও ষড়যন্ত্রের জাল বিস্তার করে, মূলতঃ তারা শুধু নিজেদের-কেই নিজেরা প্রবঞ্চিত করে থাকে, অথচ তারা (এ সত্যটাকে) অনুভব করতে পারে না।

১২৪. তাদের সামনে যখন কোন নিদর্শন আসে তখন তারা বলেঃ আল্লাহর রাসূলদেরকে যা কিছু দেয়া হয়েছিল, আমাদের অনুরূপ জিনিস না দেয়া পর্যন্ত আমরা ঈমান আনবো না, নবুওয়াতের দায়িত্ব কার উপর অর্পণ করবেন তা আল্লাহ ভালভাবেই অবগত, এই অপরাধী লোকেরা অতিসত্বরই তাদের ষড়যন্ত্র ও প্রতারণার ফলে আল্লাহর নিকট লাঞ্ছনা ও কঠিন শাস্তিপ্ৰাপ্ত হবে।

أَوْ مَنْ كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا
يُشْرِقُ بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مُجْرِمِيهَا
لِيَسْكَرُوا فِيهَا وَمَا يَسْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّى نُؤْتَى
مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۗ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ
اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

১২৫. অতএব আল্লাহ যাকে হিদায়াত করতে চান, ইসলামের জন্যে তার অন্তঃকরণ খুলে দেন, আর যাকে পথভ্রষ্ট করার ইচ্ছা করেন, তার অন্তঃকরণ খুব সংকুচিত করে দেন, এমনভাবে সংকুচিত করেন যে, মনে হয় যেন সে আকাশে আরোহণ করছে, এমনিভাবেই যারা ঈমান আনে না তাদের উপর আল্লাহ অপবিত্রতা ও পঙ্কিলতাকে বিজয়ী করে দেন।^১

১২৬. আর এটাই হচ্ছে তোমার প্রতিপালকের সহজ-সরল পথ, আমি উপদেশ গ্রহণকারী লোকদের জন্যে আয়াতসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করে দিয়েছি।

১২৭. তাদের জন্যে তাদের প্রতিপালকের নিকট রয়েছে এক শাস্তি নিকেতন, আর তাদের কৃতকর্মের কারণে, তিনিই হচ্ছেন তাদের অভিভাবক।

১২৮. আর যেদিন আল্লাহ তাদের সকলকে একত্রিত করবেন, সেদিন তিনি বলবেন হে জ্বিন সম্প্রদায়! তোমরা তো মানুষের মধ্যে অনেককে বিভ্রান্ত করে নিজেদের অনুগত করে নিয়েছিলে, আর মানুষের মধ্যে

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ
ضَيِّقًا حَرَجًا ۖ كَاتِمًا يَضَعُدُ فِي السَّمَاءِ ۗ كَذَلِكَ
يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾

وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٢٧﴾

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَمِيعًا ۗ يَعْشَرَ الْإِنِّجْنَ قَدِ
اسْتَكْبَرْتُمْ مِّنَ الْإِنْسِ ۗ وَقَالَ أَوْلِيؤُهُمْ مِّنَ
الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَبْتَحَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَّغْنَا أَجْلَنَا

১। হুমাইদ বিন আব্দুর রহমান বলেনঃ আমি মু'আবিয়া (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে খুতবারত অবস্থায় বলতে শুনেছি যে, তিনি (মু'আবিয়া) বলেনঃ আমি নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, যার প্রতি আল্লাহ কল্যাণ কামনা করেন তাকেই দ্বীন ইসলামের জ্ঞান দান করেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ আর আমি বস্তুকারী, এবং দেন আল্লাহ্। এই উম্মতের একদল লোক কিয়ামত পর্যন্ত দ্বীন ও হকের উপর সুদৃঢ়ভাবে কায়ম থাকবে। যারা তাদের বিরোধিতা করবে তারা কিয়ামত আসা পর্যন্ত কেউ এদের কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭১)

তাদের বন্ধুগণ বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা একে অপরের দ্বারা উপকৃত হয়েছি এবং আমরা সে নির্ধারিত সময়ে উপনীত হয়েছি যা আপনি আমাদের জন্যে নির্দিষ্ট করে রেখেছিলেন, তখন (কিয়ামতের দিন) আল্লাহ (সমস্ত কাফের জ্বিন ও মানুষকে) বলবেনঃ জাহান্নামই হচ্ছে তোমাদের বাসস্থান, তাতে তোমরা চিরস্থায়ীভাবে থাকবে, তবে আল্লাহ যাদেরকে চাইবেন (তারাই তা থেকে মুক্তি পেতে পারে) তোমাদের প্রতিপালক অতিশয় কুশলী এবং অত্যন্ত জ্ঞানবান।

১২৯. এমনিভাবেই আমি যালিমদেরকে (কাফিরদেরকে) তাদের কৃতকর্মের ফলে পরস্পরের উপর পরস্পরকে প্রভাবশালী ও কর্তৃত্বশালী বানিয়ে দিবো।

১৩০. (কিয়ামতের দিন আল্লাহ জিজ্ঞেস করবেন) হে জ্বিন ও মানব জাতি! তোমাদের কাছে কি তোমাদের মধ্য হতেই নবী রাসূল আসেনি, যারা তোমাদের কাছে আমার আয়াতসমূহ বর্ণনা করতো এবং আজকের দিনের সাথে তোমাদের সাক্ষাত হওয়ার ভীতি প্রদর্শন করতো? তারা জবাব দিবে, হ্যাঁ, আমরাই আমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিচ্ছি (অর্থাৎ আমরা অপরাধ করেছি), পার্থিব জীবনই তাদেরকে ধোঁকায় নিপতিত রেখেছিল, আর তারাই নিজেদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে যে, তারা কাফির ছিল।

الَّذِي أَجَلَّتْ لَنَا قَالِ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَلِيدِينَ
فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٩﴾

وَكَذَلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٣٠﴾

يَبْعَثُ الرَّجُلَ وَ الْإِنْسِ الْمَ يَا تَكُمُ رُسُلٌ مِّنكُمْ
يَقْضُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ
هَذَا أَطَقُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَ غَرَّتْهُمْ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَ شَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا
كَافِرِينَ ﴿١٣٠﴾

১৩১. (এ রাসূল প্রেরণ) এ জন্যে যে, তোমার প্রতিপালক কোন জনপদকে এর অধিবাসীবৃন্দ সত্য সম্পর্কে অজ্ঞাত থাকা অবস্থায় অন্যায়ভাবে ধ্বংস করেন না।

১৩২. আর প্রত্যেক লোকই নিজ নিজ আমলের কারণে মর্যাদা লাভ করবে, তারা যা আমল করতো সে বিষয়ে তোমার প্রতিপালক উদাসীন নন।

১৩৩. এবং তোমার প্রতিপালক অমুখাপেক্ষী ও দয়াশীল, তাঁর ইচ্ছা হলে তোমাদেরকে অপসারিত করবেন এবং তোমাদের পর তোমাদের স্থানে যাকে ইচ্ছা স্থলাভিষিক্ত করবেন, যেমন তিনি তোমাদেরকে অন্য এক জাতির বংশধর হতে সৃষ্টি করেছেন।

১৩৪. তোমাদের নিকট যে বিষয় সম্পর্কে প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে তা অবশ্যম্ভাবী, তোমরা আল্লাহকে অক্ষম করতে পারবে না।

১৩৫. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা নিজ নিজ অবস্থায় আমল করতে থাক, আমিও আমল করছি, অতঃপর শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে যে, কার পরিণাম কল্যাণকর, নিঃসন্দেহে অত্যাচারীরা কখনও মুক্তি ও সাফল্য লাভ করতে পারবে না।

১৩৬. আর আল্লাহ যেসব শস্য ও পশু সৃষ্টি করেছেন, তারা (মুশরিকরা)

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ
وَ اٰهْلِهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

وَلِكُلِّ دَرَجٰتٍ مِّمَّا عَمِلُوْا وَّمَا رَبُّكَ بِغٰفِلٍ
عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۗ اِنْ يَشَآءْ يَدْهَبِكُمْ
وَيَسْتَخْلِفُ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ ۗ كَمَا اَنْشَاَكُمْ
مِّنْ ذُرِّيَّةٍ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَآتٍ ۗ وَّمَا اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ؕ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدّٰرِ
اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَّآ مِنْ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا

এর একটি অংশ আল্লাহর জন্যে নির্ধারিত করে থাকে, আর নিজেদের ধারণা মতে তারা বলে যে, এ অংশ আল্লাহর জন্যে এবং এ অংশ আমাদের শরীকদের জন্যে; কিন্তু যা তাদের শরীকদের জন্যে নির্ধারিত হয়ে থাকে, তা তো আল্লাহর দিকে পৌঁছতে পারে না, পক্ষান্তরে যা আল্লাহর জন্যে নির্ধারণ করা হয়েছিল, তা তাদের শরীকদের কাছে পৌঁছে থাকে, এ লোকদের ফায়সালা ও বন্টন নীতি কতইনা খারাপ!

১৩৭. আর এমনিভাবে অনেক মুশরিকের দৃষ্টিতে তাদের শরীকরা (দেব-দেবীগণ) তাদের সম্মান হত্যা করাকে শোভনীয় করে দিয়েছে, যেন তারা তাদের সর্বনাশ করতে পারে এবং তাদের কাছে তাদের দ্বীনকে তারা সন্দেহময় করে দিতে পারে, আল্লাহ চাইলে তারা এসব কাজ করতে পারতো না, সুতরাং তুমি তাদেরকে এবং তাদের ভ্রাতা উজ্জিগলোকে ছেড়ে দাও।

১৩৮. আর তারা (নিজেদের বাতিল ধারণা মতে) এও বলে থাকে যে, এ সব বিশেষিত পশু ও বিশেষিত ক্ষেতের ফসল সুরক্ষিত কেউই তা ভক্ষণ করতে পারবে না, তবে যাদেরকে আমরা অনুমতি দিব (তারা ই ভক্ষণ করতে পারবে), আর (তারা বলে) এ বিশেষ পশুগুলোর উপর আরোহণ করা ও ভার বহন নিষেধ করে দেয়া হয়েছে, আর

فَقَالُوا هَذَا إِلَهُهُمْ وَإِنَّ إِلَهَهُمْ لَرَبُّنَا فَلَوْ لَمْ يَأْتِنَا بِالْبَيِّنَاتِ لَقُلْنَا لَوْلَا إِذْ سَأَلْتَهُمْ لَآتَيْنَاكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَإِن كُنْتُمْ إِلاَّ كَاذِبِينَ ﴿١٣٧﴾

وَكَذَلِكَ زَيْنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْبَشَرِ لَمَّا قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ شُرَكَاءَهُمْ لِيُرُدُّوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرِّثُ حَجْرٌ ۗ لَّا يَطْعَمُهَا إِلاَّ مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ طُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءٌ عَلَيْهِ ۗ سَيَجْزِيهِمْ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

কতগুলো বিশেষ পশু রয়েছে যেগুলোকে যবাই করার সময় তারা আল্লাহর নাম উচ্চারণ করে না, (এসব কথা) শুধু আল্লাহর প্রতি মিথ্যারোপ করার উদ্দেশ্যে (বলে), এসব মিথ্যা আরোপের প্রতিফল অতিসত্বরই তিনি তাদেরকে দান করবেন।

১৩৯. আর তারা এ কথাও বলে থাকে যে, এসব বিশেষ পশুগুলোর গর্ভে যা কিছু রয়েছে, তা বিশেষভাবে আমাদের পুরুষদের জন্যে রক্ষিত; আর আমাদের নারীদের জন্যে এটা হারাম; কিন্তু গর্ভ হতে প্রসূত বাচ্চা যদি মৃত হয়, তবে নারী-পুরুষ সবাই তা বক্ষণে অংশী হতে পারবে, তাদের কৃত এসব বিশেষণের প্রতিদান অতিসত্বরই আল্লাহ তাদেরকে দিবেন, নিঃসন্দেহে তিনি হচ্ছেন প্রজ্ঞাময়, মহাজ্ঞানী।

১৪০. বাস্তবিকই ঐ সমস্ত লোকেরা ক্ষতিগ্রস্ত হল যারা নিজেদের সন্তানদেরকে মূর্খতা ও অজ্ঞানতার কারণে হত্যা করেছে এবং আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যা রচনা করে তাঁর প্রদত্ত রিযিককে হারাম করে নিয়েছে, তারা নিশ্চিতরূপে পথভ্রষ্ট হয়েছে, বস্তুতঃ তারা হিদায়াতপ্রাপ্ত হতে পারেনি।

১৪১. আর সেই আল্লাহই নানা প্রকার বাগান ও গুল্লালতা সৃষ্টি করেছেন যার কতক স্বীয় কান্ডের উপর সন্নিবিষ্ট হয়, আর কতক কান্ডের উপর সন্নিবিষ্ট হয় না, আর

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ
لِّذُنُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً
فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۖ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ
حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۗ
قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرِ
مَّعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ
وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ

খেজুর বৃক্ষ ও শস্যক্ষেত্র যাতে বিভিন্ন প্রকারের খাদ্যবস্তু উৎপন্ন হয়ে থাকে, আর তিনি যয়তুন (জলপাই) ও আনার (ডালিমের) কতক সৃষ্টি করেছেন যা সাদৃশ্যপূর্ণ আর কতক অসাদৃশ্যপূর্ণও হয়। এসব ফল তোমরা আহাির কর যখন এতে ফল ধরে, আর এতে শরীয়তের নির্ধারিত যে অংশ রয়েছে তা ফসল কাটার দিন আদায় করে দাও, অপব্যয় করো না, নিশ্চয়ই তিনি (আল্লাহ) অপব্যয়কারীদের ভালবাসেন না।^১

১৪২. আর চতুঃপদ জন্তুগুলোর মধ্যে কতগুলো (উঁচু আকৃতির) ভারবাহী জন্তু সৃষ্টি করেছেন, আর কতগুলো ছোট আকৃতির জন্তু। আল্লাহ যা কিছু দান করেছেন তোমরা তা ভক্ষণ কর, আর শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না, নিঃসন্দেহে সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

১৪৩. আর তিনি এ পশুগুলোকে আট প্রকারে সৃষ্টি করেছেন, ভেড়ার

مُتَشَابِهٍ ۙ كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۚ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤٢﴾

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَومَلَةٌ وَفَرَشَاطٌ ۚ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٤٣﴾

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, একদা এক রাখাল তার বকরীর পালের নিকট উপস্থিত থাকাকালে হঠাৎ এক নেকড়ে বাঘ এসে খাবা মেয়ে পাল থেকে একটি বকরী নিয়ে যেতে থাকলো। রাখাল নেকড়ে বাঘের কবল থেকে বকরীটাকে উদ্ধার করতে চাইল। নেকড়েটি তখন রাখালের দিকে চেয়ে বলল, আজ তো আমার থেকে ছিনিয়ে নিলে; কিন্তু হিংস্র জন্তুর আক্রমণের দিন এ বকরীর রক্ষাকারী কে থাকবে, যেদিন আমি ছাড়া এ বকরীর কোন রাখাল থাকবে না।

অনুরূপভাবে একদা এক ব্যক্তি একটি গাভীর পিঠে চড়ে তাকে হাকিয়ে নিয়ে যাচ্ছিল। তখন গাভীটি তার দিকে চেয়ে তার সাথে কথা বলল। গাভীটি বলল, আমাকে তো এ কাজের জন্য সৃষ্টি করা হয়নি। আমাকে সৃষ্টি করা হয়েছে কৃষি কাজের জন্য। লোকেরা বলে উঠল, সুবহানাল্লাহ! নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আমি আবু বকর ও উমর ইবনে খাত্তাব (রাযিআল্লাহু আনহুমা) এ ঘটনায় বিশ্বাস স্থাপন করলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩৬৬৩)

দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ) এবং বকরীর দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ), হে নবী (ﷺ)! তুমি জিজ্ঞেস কর তোঃ আল্লাহ কি উভয় পুরুষ পশুগুলোকে হারাম করেছেন, না উভয় স্ত্রী পশুগুলোকে, না স্ত্রী দু'টির গর্ভে যা আছে তা হারাম করেছেন? তোমরা জ্ঞানের সাথে আমাকে উত্তর দাওঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাক।

১৪৪. আর উটের দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ) এবং গরুর দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ) পশু, তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ আল্লাহ কি উভয় পুরুষ পশুগুলোকে বা উভয় স্ত্রী পশুগুলোকে হারাম করেছেন, অথবা স্ত্রী দু'টির (গরু ও উটের) গর্ভে যা রয়েছে তা হারাম করেছেন? না আল্লাহ যখন এসব পশু হালাল-হারাম হওয়ার বিধান জারি করেন তখন কি তোমরা হাযির ছিলে? যে ব্যক্তি বিনা প্রমাণে না জেনে মানুষকে বিভ্রান্ত করার উদ্দেশ্যে আল্লাহর নামে এরূপ মিথ্যা আরোপ করে তার চেয়ে বড় যালিম আর কে হতে পারে? আল্লাহ যালিম-দেরকে সুপথ প্রদর্শন করেন না।

১৪৫. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলঃ ওহীর মাধ্যমে আমার কাছে যে বিধান পাঠানো হয়েছে, তাতে কোন আহারকারীর জন্যে কোন বস্তু হারাম করা হয়েছে— এমন কিছু আমি পাইনি, তবে মৃতজন্তু, প্রবাহিত রক্ত ও শূকরের গোশত কেননা, এটা অবশ্যই নাপাক অথবা যা শরীয়ত

اٰثْنَيْنِ ۙ قُلْ اِنَّ الدَّاكِرَيْنِ حَرَّمَ اَمْرَ الْاُنثَيَيْنِ اَمَّا اٰثْتَلَّتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنثَيَيْنِ فَبِعِلْمِ اِن كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٤﴾

وَمِنَ الْاِيْلِ اٰثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اٰثْنَيْنِ ۙ قُلْ اِنَّ الدَّاكِرَيْنِ حَرَّمَ اَمْرَ الْاُنثَيَيْنِ اَمَّا اٰثْتَلَّتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنثَيَيْنِ فَبِعِلْمِ كُنْتُمْ شٰهَدَآءَ اِذْ وَّضَعَكُمْ اللّٰهُ بِهٰذَا ۗ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كِذْبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

قُلْ لَا اَجِدُ فِيْ مَا اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗ اِلَّا اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خَنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رَجْسٌ اَوْ فِسْقًا اٰهْلًا لِّغَيْرِ اللّٰهِ ۗ ۙ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾

গর্হিত বস্তু (শিরকের মাধ্যমে) যে আল্লাহ ছাড়া অন্যের নামে উৎসর্গ করা হয়েছে, তা হারাম করা হয়েছে; কিন্তু যদি কোন লোক নিরুপায় হয়ে পড়ে, এই শর্তে যে সে খাওয়ার প্রতি লোভী ও কামনাকারী নয় এবং প্রয়োজনের অতিরিক্ত ও খায় না তবে (তার জন্য এটা খাওয়া বৈধ) কেননা, আল্লাহ ক্ষমাশীল ও অনুগ্রহশীল।

১৪৬. ইয়াহুদীদের প্রতি আমি সর্বপ্রকার নখ বিশিষ্ট জীব হারাম করেছিলাম; আর গরু ও ছাগল হতে তাদের জন্যে উভয়ের চর্বি হারাম করেছিলাম; কিন্তু পৃষ্ঠদেশের চর্বি, নাড়ি-ভুঁড়ির চর্বি ও হাড়ের সাথে মিশ্রিত চর্বি এই হারামের অন্তর্ভুক্ত ছিল না। তাদের বিদ্রোহমূলক আচরণের জন্যে আমি তাদেরকে এই শাস্তি দিয়েছিলাম, আর আমি নিঃসন্দেহে সত্যবাদী।

১৪৭. সুতরাং (হে নবী ﷺ)! এ সব বিষয়ে যদি তারা তোমাকে মিথ্যাবাদী মনে করে তবে তুমি বলে দাও: তোমাদের প্রভু বড়ই করুণাময়, আর অপরাধী সম্প্রদায় হতে তাঁর শাস্তি বিধান কখনই প্রত্যাহার করা হবে না।

১৪৮. এই মুশরিকরা (তোমার কথার উত্তরে) অবশ্যই বলবে: আল্লাহ যদি চাইতেন তবে আমরা শিরক করতাম না এবং আমাদের বাপ-দাদারাও করতো না, আর কোন জিনিসও

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَمًا عَلَيْهِمْ شُومَهُمَا إِلَّا مَا حَصَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوْ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۗ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ ۖ وَلَا يَرُدُّ بَأْسَهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۗ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ

আমরা হারাম করতাম না, বস্তুতঃ এভাবেই তাদের পূর্ব যুগের কাফিররা (রাসূলদেরকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল, শেষ পর্যন্ত তারা আমার শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করতে বাধ্য হয়েছিল, তুমি জিজ্ঞেস করঃ তোমাদের কাছে কি কোন দলীল প্রমাণ আছে? থাকলে আমার সামনে পেশ কর, তোমরা ধারণা ও অনুমান ব্যতীত আর কিছুই অনুসরণ কর না, তোমরা সম্পূর্ণ আনুমানিক কথা ছাড়া আর কিছুই বলছো না।

১৪৯. তুমি বলে দাওঃ সত্য ভিত্তিক পূর্ণাঙ্গ দলীল-প্রমাণ তো একমাত্র আল্লাহরই রয়েছে, সুতরাং তিনি চাইলে তোমাদের সকলকেই হিদায়াত দান করতেন।

১৫০. তুমি আরও বলে দাওঃ আল্লাহ এসব পশু হারাম করেছেন, এর সাক্ষ্য যারা দেবে সেই সাক্ষীদেরকে তোমরা নিয়ে এসো, তারা যদি সাক্ষ্যও দেয়, তবে তুমি তাদের সাথে সাক্ষ্য দিবে না, আর তুমি এমন লোকদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করবে না যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে এবং পরকালের প্রতি ঈমান আনে না এবং তারা অন্যান্যদেরকে (দেবতাদেরকে) নিজেদের প্রতিপালকের সমান স্থির করে।

১৫১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! এ লোকদেরকে বলঃ তোমরা এসো! তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের

عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ط إِنَّ تَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٩﴾

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿١٥٠﴾

قُلْ هَلْ مِمَّنْ شُهَدَاءُ الَّذِينَ يُبْهَدُونَ أَنْ لِلَّهِ
حَرَّمَ هَذَا ۖ فَإِنْ شِهُدُوا فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ ۚ وَلَا
تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يُعَدِّلُونَ ﴿١٥١﴾

قُلْ تَعَالَوْا اتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّي عَلَيْكُمْ إِلَّا تَشْرِكُوا
بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوا

প্রতি কি কি হারাম করেছেন, তা আমি তোমাদেরকে পাঠ করে শুনাবো, আর তা এই যে, তোমরা তাঁর সাথে কাউকেও শরীক করবে না, পিতা-মাতার সাথে সন্যবহার করবে, দারিদ্রতার ভয়ে নিজেদের সম্ভানদেরকে হত্যা করবে না, কেননা আমিই তোমাদেরকে ও তাদেরকে জীবিকা দিবো, আর অশ্লীল কাজ ও কথার নিকটেও যেও না, তা প্রকাশ্যই হোক বা গোপনীয়ই হোক, আর আল্লাহ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন; যথার্থ কারণ (অর্থাৎ যে কারণে হত্যা করা শরীয়তে অনুমোদিত তা) ছাড়া তাকে হত্যা করো না, এসব বিষয় আল্লাহ তোমাদেরকে নির্দেশ দিয়েছেন, যেন তোমরা অনুধাবন করতে পার।

১৫২. আর ইয়াতীমদের বয়ঃপ্রাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত সদুদ্দেশ্য ব্যতীত তাদের বিষয় সম্পত্তির কাছেও যেও না, আর আদান-প্রদানে পরিমাণ ও ওজন সঠিকভাবে করবে, আমি কারো ওপর তার সাধ্যাতীত ভার (দায়িত্ব-কর্তব্য) অর্পণ করি না, আর তোমরা যখন কথা বলবে তখন স্বজনের বিরুদ্ধে হলেও ন্যায়ানুগ কথা বলবে, আর আল্লাহর সাথে কৃত অঙ্গীকার পূরণ করবে, আল্লাহ তোমাদেরকে এসব বিষয় নির্দেশ দিয়েছেন, যেন তোমরা তাঁর এ নির্দেশ ও উপদেশ গ্রহণ কর।

১৫৩. আর এ পথই আমার সরল পথ; সুতরাং তোমরা এ পথেরই

أَوْلَادِكُمْ مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ
وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ
ذَلِكُمْ وَصَّيْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥٢﴾

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ
حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۗ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ
بِالْقِسْطِ ۗ لَا تَكُفُّ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۗ وَإِذَا
قُلْتُمْ فَأَعِدُوا لَوَ كَانِ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ
أَوْفُوا ۗ ذَلِكُمْ وَصَّيْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٣﴾

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ ۗ وَلَا تَتَّبِعُوا

অনুসরণ কর। এ পথ ছাড়া অন্যান্য কোন পথের অনুসরণ করো না, অন্যথায় তোমাদেরকে তাঁর পথ থেকে বিছিন্ন করে দূরে সরিয়ে দেবে, আল্লাহ তোমাদেরকে এই নির্দেশ দিলেন, যেন তোমরা বেঁচে থাকতে পার।

১৫৪. অতঃপর (আবার বলছি) মুসা (عليه السلام)-কে আমি একখানা কিতাব প্রদান করেছিলাম, যাতে সৎ ও পুণ্য কর্মপরায়ণদের উপর আমার নেয়ামত পূর্ণাঙ্গ হয় এবং প্রত্যেকটি বস্তুর বিশদ বিবরণ হয়ে যায় এবং পথ নির্দেশ সম্বলিত ও রহমত হয়, (উদ্দেশ্য ছিল) যাতে তারা তাদের প্রতিপালকের সাথে সাক্ষাৎ হওয়া সম্বন্ধে পূর্ণ বিশ্বাস লাভ করতে পারে।

১৫৫. আর (এমনিভাবে) আমি এই কিতাব (কুরআন) অবতীর্ণ করেছি যা বরকতময় ও কল্যাণময়! সুতরাং তোমরা এটার অনুসরণ করে চল এবং ভয় কর, যেন তোমাদের প্রতি দয়া ও অনুগ্রহ করা হয়।

১৫৬. (এটা নাযিল করার কারণ হলো এই যে,) যেন তোমরা না বলতে পার যে, সে কিতাব তো আমাদের পূর্ববর্তী দুই সম্প্রদায়ের প্রতি অবতীর্ণ করা হয়েছিল এবং আমরা তাদের শিক্ষা থেকে সম্পূর্ণ অমনোযোগী ছিলাম।

১৫৭. অথবা তোমরা যেন এ কথাও বলতে না পার, আমাদের প্রতি

السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ ذَلِكُمْ
وَصَّوَّمُ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٤﴾

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ
وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ
يَلْقَاءَ رَبَّهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٥﴾

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٦﴾

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿١٥٧﴾

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَى

কিতাব নাখিল করা হলে আমরা তাদের তুলনায় বেশি হিদায়াত লাভ করতাম; এখন তো তোমাদের কাছে তোমাদের প্রভুর পক্ষ থেকে এক সুস্পষ্ট দলীল এবং পথ পাবার দিক নির্দেশ ও রহমত সমাগত হয়েছে, অতএব (এরপর আল্লাহর) আয়াতকে যে মিথ্যা প্রতিপন্ন করবে এবং তা থেকে এড়িয়ে থাকবে তার চেয়ে বড় অত্যাচারী আর কে হতে পারে? যারা আমার আয়াতসমূহ এড়িয়ে চলবে তাদেরকে আমি এই এড়িয়ে চলার কারণে অতিসত্ত্বুর কঠিন শাস্তি দিব।

১৫৮. তারা কি শুধু এ প্রতীক্ষায় রয়েছে যে, তাদের কাছে ফেরেশতা আসবে? কিংবা স্বয়ং তোমার প্রতিপালক আসবেন? অথবা তোমার প্রতিপালকের কোন কোন নিদর্শন প্রকাশ হয়ে পড়বে? যেদিন তোমার প্রতিপালকের কতক নিদর্শন প্রকাশ হয়ে পড়বে, (পশ্চিম দিক থেকে যেদিন সূর্যোদয় ঘটবে) সেই দিনের পূর্বে যারা ঈমান আনেনি, তাদের ঈমান তখন কোন উপকারে আসবে না, অথবা যারা নিজেদের ঈমান দ্বারা কোন নেক কাজ করেনি (তখন নেক কাজ দ্বারা কোন ফলোদয় হবে না), তুমি এসব পাপিষ্ঠকে জানিয়ে দাও- তোমরা (এরূপ আশা নিয়ে) প্রতীক্ষা করতে থাক, আমিও প্রতীক্ষা করছি।

مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى
وَرَحْمَةً ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ
عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٨﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ
رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ
آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ
مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلْ
انْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেছেনঃ পশ্চিম দিক থেকে সূর্যোদয় না হওয়া পর্যন্ত কিয়ামত হবে না। সূর্য যখন পশ্চিম দিক থেকে উদিত হবে এবং মানুষ তা দেখে তখন সবাই ঈমান আনবে (কিন্তু কেউ পূর্বে ঈমান গ্রহণ না করে

১৫৯. নিশ্চয়ই যারা নিজেদের দ্বীনকে খন্ড-বিখন্ড করেছে এবং বিভিন্ন দলে উপদলে বিভক্ত হয়ে পড়েছে, তাদের সাথে তোমার কোন সম্পর্ক নেই, তাদের বিষয়টি নিশ্চয়ই আল্লাহর হাওলায় রয়েছে, পরিশেষে তিনিই তাদেরকে তাদের কার্যকলাপ সম্পর্কে অবহিত করবেন।

১৬০. কেউ কোন ভাল কাজ করলে সে তার দশগুণ প্রতিদান পাবে, আর কেউ পাপ ও অসৎ কাজ করলে তাকে শুধু ততটুকুই প্রতিফল দেয়া হবে যতটুকু সে করেছে, আর তারা অত্যাচারিত হবে না (অর্থাৎ বেশি প্রতিফল ভোগ করিয়ে তাদের প্রতি অত্যাচার করা হবে না)।

১৬১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলঃ নিঃসন্দেহে আমার প্রতিপালক আমাকে সঠিক ও নির্ভুল পথে পরিচালিত করেছেন, ওটাই সুপ্রতিষ্ঠিত দ্বীন এবং ইবরাহীম (عليه السلام)-এর অবলম্বিত আদর্শ যা সে ঐকান্তিক নিষ্ঠার সাথে গ্রহণ করেছিল। আর সে মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত ছিল না।

إِنَّ الَّذِينَ فَزَعُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ مَثَلِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

قُلْ إِنَّمَا يَهْدِي رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ دِينًا قَبِيلاً مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

থাকলে তখনকার ঈমান গ্রহণ তার কোন কাজে আসবে না।) আয়াতের অর্থঃ “সে দিন কোন ব্যক্তির ঈমান কাজে আসবে না যদি সে পূর্বেই ঈমান গ্রহণ না করে থাকে।” (সূরা আল-আনআমঃ ১৫৮) [বুখারী, হাদীস নং ৪৬৩৫]

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের তিনটি নির্দেশন) প্রকাশ পাওয়ার পর কোন ব্যক্তি ঈমান আনলে তার ঈমান কোনই কাজে আসবেনা। সে যদি ইতিপূর্বে পূর্বে ঈমানা না এনে থাকে। (১) পশ্চিম দিকে সূর্য উদ্ভিত হওয়া। (২) দাজ্জালের আগমন ঘটা। (৩) দাব্বাতুল আরজ। (মুসলিম)

(গ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এমন কোন নবীর আগমন ঘটেনি যে, তার উম্মতকে একচোখ অন্ধ মিথ্যুক থেকে (দাজ্জাল) সাবধান করে নি। নিশ্চয়ই তার এক চোখ অন্ধ আর তোমাদের প্রভু অন্ধ নন এবং নিশ্চয়ই তার চোখের মাঝে, লিখা থাকবে কাফের।

১৬২. তুমি বলে দাওঃ আমার নামায, আমার সকল ইবাদত, (কুরবানী ও হজ্জ) আমার জীবন ও আমার মরণ সব কিছু সারা জাহানের রব আল্লাহর জন্যে ।

১৬৩. তাঁর কোন শরীক নেই, আমি এর জন্যে আদিষ্ট হয়েছি, (অর্থাৎ আমি যেন তাঁর সাথে অন্য কাউকে শরীক স্থির না করি।) আর আত্মসমর্পণকারীদের মধ্যে আমিই হলাম প্রথম ।

১৬৪. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি জিজ্ঞেস করঃ আমি কি আল্লাহকে বাদ দিয়ে অন্য প্রতিপালকের সন্ধান করবো? অথচ তিনিই হচ্ছেন প্রতিটি বস্তুর প্রতিপালক! প্রত্যেক ব্যক্তিই স্বীয় কৃতকর্মের জন্যে দায়ী হবে, কোন বোঝা বহনকারীই অপর কারো বোঝা বহন করবে না, পরিশেষে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তন করতে হবে, তৎপর তিনি তোমরা যে বিষয়ে মতবিরোধ করেছিলে সে বিষয়ে তোমাদেরকে অবহিত করবেন ।

১৬৫. আর তিনি এমন, যিনি তোমাদেরকে দুনিয়ার প্রতিনিধি করেছেন এবং তোমাদের কতককে কতকের উপর মর্যাদায় উন্নত করেছেন, উদ্দেশ্য হলো তোমাদেরকে তিনি যা কিছু দিয়েছেন, তাতে তোমাদের পরীক্ষা করবেন, নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক ত্বরিত শাস্তিদাতা, আর নিঃসন্দেহে তিনি ক্ষমাশীল ও কৃপানিধান ।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

لَا شَرِيكَ لَهُ ۗ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

قُلْ أَعَدَّ اللَّهُ لِأَعْيُنِي رَبًّا ۗ وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۗ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ۗ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٥﴾

সূরাঃ আ'রাফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ২০৬, রুকূঃ ২৪)

দয়াময় মেহেরবান আল্লাহর নামে
শুরু করছি।

১. আলিফ-লাম-মীম-সুয়াদ।

২. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তোমার নিকট এ জন্যে কুরআন অবতীর্ণ করা হয়েছে যাতে তুমি এর দ্বারা মানুষকে সতর্ক করতে পার, আর এটা মুমিনদের জন্যে উপদেশ (ভাভার), অতএব, তোমার মনে যেন এটা সম্পর্কে কোনরূপ দ্বিধা-সন্দেহ না থাকে (বা তা প্রচার করতে যেন তোমার অন্তর সংকীর্ণ না হয়)।

৩. তোমাদের নিকট তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে যা অবতীর্ণ করা হয়েছে, তোমরা তার অনুসরণ কর, আর তোমরা আল্লাহকে ছেড়ে অন্য কোন বন্ধু ও অভিভাবকের অনুসরণ করো না, তোমরা খুব অল্পই উপদেশ গ্রহণ করে থাক।

৪. আর কত জনপদকেই না আমি ধ্বংস করেছি। ফলে আমার শাস্তি তাদের উপর রাত্রিকালে ঘুমন্ত অবস্থায় অথবা দ্বিপ্রহরে যখন তারা বিশ্রামরত ছিল তখনই আপতিত হয়েছে।

৫. আমার শাস্তি যখন তাদের কাছে এসে পড়েছিল, তখন তাদের মুখে 'বাস্তবিকই আমরা অত্যাচারী ছিলাম' এই কথা ছাড়া আর কিছুই ছিল না।

سُورَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ

اِيَّاهَا ٢٠٦ رُكُوعًا ٢٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

التَّصَّ ١

كُتِبَ اَنْزَلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَزَجٌ
وَمِنْهُ لَتُنذِرْ بِهِ وَذِكْرَى لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ①

اَتَّبِعُوا مَا اُنزِلَ اِلَيْكُمْ مِنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِنْ
دُوْنِهِ اَوْلِيَاءَ ط قَلِيْلًا ۙ مَا تَذْكُرُوْنَ ②

وَكَمْ مِنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَاءَهَا بِاَسْنَابِنَا
اَوْهُمْ قَابِلُوْنَ ③

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ اِذْ جَاءَهُمْ بِاَسْنَابِنَا اِلَّا اَنْ قَالُوْا
اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ④

৬. অতঃপর আমি (কিয়ামতের দিন) যাদের কাছে রাসূল প্রেরণ করা হয়েছিল তাদেরকে এবং রাসূল-দেরকেও অবশ্যই জিজ্ঞাসাবাদ করবো।

৭. তখন আমি তাদের সমস্ত বিবরণ পূর্ণজ্ঞান অনুযায়ী প্রকাশ করে দেবো, আর আমি তো বে-খবর ছিলাম না।

৮. আর সেই দিনের ওজন হবে সঠিক।^১ সুতরাং যাদের (পুণ্যের) পাল্লা ভারী হবে তারাই হবে কৃতকার্য ও সফলকাম।

৯. আর যাদের (পুণ্যের) পাল্লা হালকা হবে, তারা হবে সেসব লোক যারা নিজেদের ধ্বংস ও ক্ষতি নিজেরাই করেছে, কেননা, তারা আমার নিদর্শনসমূহকে (বাণীকে) প্রত্যাখ্যান করতো।

১০. আর নিশ্চয়ই আমি তোমাদেরকে ভূ-পৃষ্ঠে থাকবার জায়গা দিয়েছি এবং আমি তোমাদের জন্যে ওতে জীবিকা নির্বাহের উপকরণগুলো সৃষ্টি করেছি, তোমরা খুব কমই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে থাকো।

১১. আমিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, অতঃপর তোমাদেরকে রূপ দান করেছি, তারপর আমি ফেরেশতাদেরকে নির্দেশ দিয়েছি, তোমরা আদম (عَلَيْهِ السَّلَام)-কে সিজদা

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ
الْمُرْسَلِينَ ④

فَلَنَقُصِّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ⑤

وَالْوِزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۖ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑥

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ⑦

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ
فِيهَا مَعَايِشَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ⑧

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ
اسْجُدُوا لِآدَمَ ۖ فَسَجَدُوا ۖ إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُنْ
مِنَ السَّاجِدِينَ ⑨

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ দু'টি বাক্য এমন যা, করুণাময় আল্লাহর নিকট প্রিয়, যবানে উচ্চারণ করতে সহজ, (কিয়ামতের দিন), মিজানের পাল্লায় ভারী, আর তা' হল- অর্থঃ “ আল্লাহু পূত ও পবিত্র এবং তাঁর জন্য সকল প্রশংসা। মহান আল্লাহু পাকের পবিত্রতা বর্ণনা করছি। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৬৩)

কর, তখন ইবলীস ছাড়া সবাই সিজদা করলো, সে সিজদাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হল না।

১২. তিনি (আল্লাহ) তাকে (ইবলীসকে) জিজ্ঞেস করলেনঃ আমি যখন তোমাকে আদমকে সেজদা করতে আদেশ করলাম, তখন কোন বস্তু তোমাকে সেজদা করা হতে নিবৃত্ত করলো? সে উত্তরে বললোঃ আমি তার চেয়ে শ্রেষ্ঠ, আপনি আমাকে আগুন দ্বারা সৃষ্টি করেছেন, আর তাকে সৃষ্টি করেছেন কাদামাটি হতে।

১৩. আল্লাহ বললেনঃ এ স্থান থেকে নেমে যাও, এখানে থেকে তুমি অহংকার করবে তা হতে পারে না; সুতরাং বের হয়ে যাও, নিশ্চয়ই তুমি নীচ ও লাঞ্ছিতদের অন্তর্ভুক্ত।

১৪. সে বললোঃ (হে আল্লাহ!) আমাকে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত (বেঁচে থাকার) অবকাশ দিন।

১৫. আল্লাহ বললেনঃ (ঠিক আছে) তোমাকে অবকাশ দেয়া হলো।

১৬. (ইবলীস) বললোঃ আপনি যে আমাকে পথভ্রষ্ট করলেন এ কারণে আমিও শপথ করে বলছিঃ আমি (বানী আদমকে) তাদের (বিভ্রান্ত করার) জন্যে সরল পথের (মাথায়) অবশ্যই ওঁৎ পেতে বসে থাকবো।

১৭. অতঃপর আমি (পথভ্রষ্ট করার উদ্দেশ্যে) তাদের সম্মুখ দিয়ে, পিছন দিয়ে, ডান দিক দিয়ে এবং বাম দিক

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ﴿١٢﴾

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿١٣﴾

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾

قَالَ فِيمَا آغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾

ثُمَّ لَأَتَّبِعَهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ

দিয়ে তাদের কাছে আসবো, আপনি তাদের অধিকাংশকেই কৃতজ্ঞরূপে পাবেন না।

১৮. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ তুমি এখান থেকে লাঞ্ছিত ও বিতাড়িত অবস্থায় বের হয়ে যাও, তাদের (বানী আদমের) মধ্যে যারা তোমার অনুসরণ করবে, নিশ্চয়ই আমি তোমাদের সকলের দ্বারা জাহান্নাম পূর্ণ করবো।

১৯. আর হে আদম! তুমি এবং তোমার স্ত্রী জান্নাতে বসবাস কর এবং এখানে তোমাদের মনে যা চায় তাই খাও; কিন্তু এই বৃক্ষের নিকটবর্তী হয়ো না, অন্যথায় অত্যাচারীদের মধ্যে গণ্য হয়ে পড়বে।

২০. অতঃপর তাদের লজ্জাস্থান যা পরস্পরের কাছে গোপন রাখা হয়েছিল তা প্রকাশ করার জন্যে শয়তান তাদেরকে কুমন্ত্রণা দিলো, আর বললোঃ তোমাদের প্রতিপালক এই বৃক্ষের কাছে যেতে নিষেধ করেছেন এর কারণ এ ছাড়া কিছুই নয় যে, তোমরা যেন ফেরেশতা হয়ে না যাও অথবা (এই জান্নাতে) চিরন্তন জীবন লাভ করতে না পার।

২১. সে তাদের উভয়ের নিকট শপথ করে বললোঃ আমি তোমাদের হিতাকাঙ্ক্ষীদের অন্যতম।

২২. সুতরাং সে (ইবলীস) তাঁদের উভয়কে প্রতারণা ও ছলনা দ্বারা নীচে নিয়ে আসল (অর্থাৎ বিভ্রান্ত

أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٨﴾

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمَلَنَ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٩﴾

وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٠﴾

فَوَسَّوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَاتِحِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢١﴾

وَقَاسَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَيِّنٌ التَّصْحِينَ ﴿٢٢﴾

فَدَلَاهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوَاتِحُهُمَا وَطُفُقَا يَخْضِفْنَ عَلَيْهَا مِنْ وَّرَقٍ

করলো)। ফলে যখন তারা সেই নিষিদ্ধ গাছের ফলের স্বাদ গ্রহণ করে ফেললো, তখন তাদের লজ্জাস্থান তাদের কাছে প্রকাশ হয়ে পড়লো এবং জান্নাতের গাছের পাতা দ্বারা নিজেদেরকে আবৃত করতে লাগলো, এ সময় তাদের প্রতিপালক তাদেরকে সম্বোধন করে বললেনঃ আমি কি এ বৃক্ষ সম্পর্কে তোমাদেরকে নিষেধ করি নি? আর শয়তান যে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু তা কি আমি তোমাদেরকে বলি নি?

২৩. তখন তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা নিজেদের প্রতি অন্যায় করেছি, আপনি যদি আমাদেরকে ক্ষমা না করেন এবং আমাদের দয়া না করেন তবে অবশ্যই আমরা ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে পড়বো।

২৪. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ তোমরা একে অন্যের শত্রুরূপে এখন থেকে নেমে যাও, তোমাদের জন্যে পৃথিবীতে এক নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত বসবাস করা এবং তথায় জীবন ধারণের উপযোগী সামগ্রীর ব্যবস্থা রয়েছে।

২৫. তিনি আরও বললেনঃ সেই পৃথিবীতেই তোমরা জীবন-যাপন করবে, সেখানেই তোমাদের মৃত্যু সংঘটিত হবে এবং তথা হতেই তোমাদেরকে বের করা হবে।

২৬. হে বানী আদম! আমি তোমাদেরকে লজ্জাস্থান আবৃত করার

الْجَنَّةِ ۖ وَكَادَهُمَا رَبُّهُمَا الَّمَ أَنَّهُمَا عَنِ
تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقْلُ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا
عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٣﴾

قَالَ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا سَاءَ وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا
وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٢٤﴾

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدَاوَةٌ وَلَكُمْ فِي
الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا
تُخْرَجُونَ ﴿٢٦﴾

يٰٓبٰنِي ٓاٰدَمَ ٓقَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ لِبَاسًا يُّوَارِي

ও বেশভূষার জন্যে তোমাদের পোশাক পরিচ্ছদের উপকরণ অবতীর্ণ করেছি (বেশভূষার তুলনায়) আল্লাহ-ভীতি পরিচ্ছদই সর্বোত্তম পরিচ্ছদ এটা আল্লাহর নিদর্শন সমূহের অন্যতম নিদর্শন, সম্ভবতঃ মানুষ এটা হতে উপদেশ গ্রহণ করবে।

২৭. হে আদম সন্তানগণ! শয়তান যেন তোমাদেরকে সেরূপ ফিৎনায় জড়িয়ে ফেলতে না পারে যে রূপ তোমাদের পিতা-মাতাকে (ফিৎনায় জড়িয়ে ফেলে) জান্নাত হতে বহিষ্কৃত করেছিল এবং তাদেরকে তাদের লজ্জাস্থান দেখাবার জন্যে বিবস্ত্র করেছিল, সে নিজে এবং তার দল তোমাদেরকে এমনভাবে দেখতে পায় যে, তোমরা তাদেরকে দেখতে পাও না, নিঃসন্দেহে শয়তানকে আমি বেঈমান লোকদের বন্ধু ও অভিজাবক বানিয়ে দিয়েছে।

২৮. যখন তারা কোন নিকৃষ্ট ও অশ্লীল কর্ম করে, তখন তারা বলেঃ আমরা আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে এসব কাজ করতে পেয়েছি এবং আল্লাহও আমাদেরকে এটা করতে নির্দেশ দিয়েছেন, হে মুহাম্মাদ (ﷺ)! তুমি ঘোষণা করে দাও যে, আল্লাহ অশ্লীল ও নিকৃষ্ট কর্মের নির্দেশ দেন না, তোমরা কি আল্লাহ সম্পর্কে এমন সব কথা বলছো যে বিষয়ে তোমাদের কোন জ্ঞান নেই?

২৯. তুমি ঘোষণা করে দাওঃ আমার প্রতিপালক ন্যায়ের নির্দেশ দিয়েছেন

سَوَاتِكُمْ وَرِيْشَاءُ وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ذٰلِكَ خَيْرٌ
ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾

يٰۤاٰدَمُ لَا يَفْتِنَنَّكَ الشَّيْطٰنُ كَمَا اَخْرَجَ اٰبَوَيْكَ
مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا
سَوَاتِهِمَا طَرِئَةً يَرِيكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهُ مِنْ حَيْثُ
لَا تَرُوْنَهُمْ طَرِئًا جَعَلْنَا الشَّيْطٰنَ اَوْلِيَّاءَ لِلَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۸﴾

وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا
وَاللّٰهُ اَمَرْنَا بِهَا طَرَفًا اِنَّ اللّٰهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ
اتَّقُوْا نُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ وَاَقِيْمُوا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ

এবং (আরও নির্দেশ দিয়েছেন যে,) তোমরা প্রত্যেক নামাযের সময় তোমাদের মুখমন্ডলকে (কিবলার দিকে) স্থির রাখ ও তাঁরই আনুগত্যে বিশুদ্ধ মনে একনিষ্ঠভাবে তাঁকেই ডাক, তোমাদেরকে প্রথমে যেভাবে সৃষ্টি করা হয়েছে, তোমরা তেমনিভাবে ফিরে আসবে।

৩০. এক দলকে আল্লাহ হেদায়েত দান করেছেন এবং অপর দলের জন্যে ভ্রান্তি স্থির হয়েছে, কারণ তারা আল্লাহকে ছেড়ে শয়তানকে অভিভাবক ও বন্ধু বানিয়েছিল এবং নিজদেরকে হেদায়েতপ্রাপ্ত মনে করত।

৩১. হে আদম সন্তানগণ! প্রত্যেক নামাযের সময় সুন্দর পোশাক-পরিচ্ছদ গ্রহণ কর, আর খাও এবং পান কর (তবে পরিচ্ছদ ও পানাহারে) অপব্যয় ও অমিতাচার করবে না, কেননা, আল্লাহ অপব্যয়কারীদের ভালবাসেন না।

৩২. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি জিজ্ঞেস কর যেঃ আল্লাহ তাঁর বান্দাদের জন্যে যেসব শোভনীয় বস্ত্র ও পবিত্র জীবিকা সৃষ্টি করেছেন, তা কে নিষিদ্ধ করেছে? তুমি ঘোষণা করে দাওঃ এ সব বস্ত্র পার্থিব জীবনে, বিশেষ করে কিয়ামতের দিনে ঐসব লোকের জন্যে যারা মুমিন হবে,

كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ
كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٣٠﴾

فَرِيقًا هَادِيَ وَّفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمْ
اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ اللَّهِ
وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

يَبْقَىٰ أَدَمَ خُدًّا وَّازِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوا
وَأَشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣٢﴾

قُلْ مَن حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ
وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ كَذَلِكَ
نُفِصِلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহ আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ফজরের নামায এমন সময়ে পড়তেন যে, তার সাথে সাথে যে সমস্ত মুসলমান রমণীগণ শরীরে চাদর জড়িয়ে নামাযে শরীক হতেন। অতঃপর তারা এত অন্ধকার থাকতে নামায থেকে বাড়িতে ফিরতেন যে কেউ তাদেরকে চিনতে পারত না। (বুখারী, হাদীস নং ৩৭২)

এমনিভাবে আমি জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শনসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করে থাকি।

৩৩. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি ঘোষণা করে দাওঃ আমার প্রতিপালক প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য অশ্লীলতা, পাপকাজ, অসংগত ও অত্যাচার ও বাড়াবাড়ি এবং আল্লাহর সাথে কোন কিছুকে শরীক করা যার পক্ষে আল্লাহ কোন দলীল-প্রমাণ অবতীর্ণ করেন নি, আর আল্লাহ সম্বন্ধে এমন কিছু বলা যে সম্বন্ধে তোমাদের কোন জ্ঞান নেই; (ইত্যাদি কাজ ও বিষয়সমূহ) নিষিদ্ধ করেছেন।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَّنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

৩৪. প্রত্যেক জাতির জন্যে একটি নির্দিষ্ট সময় রয়েছে। সুতরাং যখন সেই নির্দিষ্ট সময় উপস্থিত হবে তখন তা এক মুহূর্তকালও আগে এবং পরে হবে না।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٤﴾

৩৫. হে আদম সন্তান! স্মরণ রাখ, তোমাদের মধ্য হতে যদি এমন কোন রাসূল তোমাদের নিকট আসে এবং আমার বাণী ও নিদর্শন তোমাদের কাছে বর্ণনা করে; তখন যারা (আল্লাহকে) ভয় করবে এবং নিজেদেরকে সংশোধন করে নেবে, তাদের কোন ভয়-ভীতি থাকবে না এবং তারা দুঃখিত ও চিন্তিত হবে না।

يَبْنَئِ آدَمَ إِنَّمَا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي قَمِنَ اتَّقَى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. আর যারা আমার বাণী ও বিধানকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং অহংকার করে তা হতে দূরে সরে

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٦﴾

রয়েছে, তারাই হবে জাহান্নামী, সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

৩৭. যে ব্যক্তি আল্লাহর উপর মিথ্যা আরোপ করে এবং তাঁর বাণী ও নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে; তার চেয়ে বড় অত্যাচারী আর কে হতে পারে? তাদের ভাগ্যলিপিতে লিখিত নির্ধারিত অংশ তাদের নিকট পৌঁছবেই, পরিশেষে যখন আমার প্রেরিত ফেরেশতা তাদের প্রাণ হরণের জন্যে তাদের নিকট আসবে, তখন ফেরেশতারা জিজ্ঞেস করবে: আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাদেরকে তোমরা ডাকতে তারা কোথায়? তখন তারা উত্তরে বলবে: আমাদের হতে তারা অদৃশ্য হয়ে গেছে, আর নিজেরাই স্বীকারোক্তি করবে যে, তারা কাফির বা সত্য প্রত্যাখ্যানকারী ছিল।

৩৮. আল্লাহ বলবেন: তোমাদের পূর্বে মানুষ ও জ্বিন হতে যেসব সম্প্রদায় গত হয়েছে, তাদের সাথে তোমরাও জাহান্নামে প্রবেশ কর, যখনই কোন দল তাতে প্রবেশ করবে তখনই অপর দলকে তারা অভিসম্পাত করবে, পরিশেষে যখন তাতে সকলে জামায়েত হবে, তখন পরবর্তীগণ পূর্ববর্তীদের সম্পর্কে বলবে: হে আমাদের প্রতিপালক! এরাই আমাদেরকে বিভ্রান্ত করেছে, সুতরাং আপনি এদের জাহান্নামের শাস্তি দ্বিগুণ দিন তখন আল্লাহ

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمُ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَهُمْ مَا كَفَرُوا ۗ سَاءَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۗ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا ۗ حَتَّىٰ إِذَا دَارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا ۗ قَالَتْ أُخْرِيَهُمْ لِأُولِهِمْ رَبَّنَا ۗ هَٰؤُلَاءِ ضَلُّونَا ۗ قَاتِيَهُمْ عَذَابًا ۗ ضِعْفًا ۗ مِنَ النَّارِ ۗ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٍ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

বলবেনঃ প্রত্যেকের জন্যেই দ্বিগুণ রয়েছে; কিন্তু তোমরা তা জ্ঞাত নও।

৩৯. আর পূর্ববর্তী লোকেরা পরবর্তী লোকদের উদ্দেশ্যে বলবেঃ আমাদের উপর তোমাদের কোন শ্রেষ্ঠত্ব নেই, সুতরাং তোমরা তোমাদের কৃতকর্মের ফলস্বরূপ শাস্তি ভোগ করতে থাক।

৪০. নিশ্চয়ই যারা আমার আয়াতকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে এবং অহংকার বশতঃ তা থেকে ফিরে থাকে, তাদের জন্যে আকাশের দ্বার উন্মুক্ত করা হবে না এবং তারা জান্নাতেও প্রবেশ করতে পারবে না, যতক্ষণ না সূচের ছিদ্র পথে উষ্ণ প্রবেশ করে, এমনিভাবেই আমি অপরাধীদেরকে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

৪১. তাদের জন্যে হবে জাহান্নামের (আগুনের) বিছানা এবং তাদের উপরে হবে আগুনের চাদর (যা তাদেরকে আচ্ছাদন করে নেবে)। এমনিভাবেই আমি যালিমদেরকে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

৪২. আর যারা ঈমান এনেছে ও ভাল কাজ করেছে এমন কোন ব্যক্তিকে আমি তার সাধ্যাতীত দায়িত্ব অর্পণ করি না; তারাই হবে জান্নাতবাসী, এবং তারাই হবে সেখানে চিরকাল অবস্থানকারী।

৪৩. আর তাদের অন্তরে যা কিছু ঈর্ষা ও বিদ্বেষ রয়েছে তা আমি দূর করে দেবো, তাদের নিম্নদেশ দিয়ে নদীসমূহ প্রবাহিত হবে, তখন তারা

وَقَالَتْ أُولَهُمْ لِأَخْلَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تَتَّبِعْ لَهُمْ آبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۗ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۗ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۗ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا

বলবেঃ সমস্ত প্রশংসা সেই আল্লাহর জন্যে যিনি আমাদেরকে এর পথ-প্রদর্শন করেছেন, আল্লাহ আমাদেরকে হেদায়েত দান না করলে আমরা হেদায়েতপ্রাপ্ত হতাম না, আমাদের প্রতিপালকের প্রেরিত রাসূলগণ সত্যবানী নিয়ে এসেছিলেন, আর তাদেরকে সম্বোধন করে বলা হবে, তোমরা যে (ভাল) আমল করতে তারই জন্যে তোমাদেরকে এই জান্নাতের উত্তরাধিকারী বানানো হয়েছে।

৪৪. আর তখন জান্নাতবাসীরা জাহান্নাম বাসীদেরকে (উপহাস করে) বলবেঃ আমাদের প্রতিপালক যেসব অঙ্গীকার ও প্রতিশ্রুতি আমাদেরকে দিয়েছিলেন, আমরা তা বাস্তবভাবে পেয়েছি; কিন্তু তোমাদের প্রতিপালক যে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন তা কি তোমরা সত্য ও বাস্তবরূপে পেয়েছো? তখন তারা বলবে হ্যাঁ, পেয়েছি, (এ সময়) তাদের মধ্যে জনৈক ঘোষক ঘোষণা করে দেবেন যে, যালিমদের উপর আল্লাহর অভিসম্পাত।

৪৫. যারা আল্লাহর পথে চলতে (মানুষকে) বাধা দিতো এবং ওতে বক্রতা অনুসন্ধান করতো, আর তারা পরকালকেও অস্বীকার করতো।

৪৬. এই উভয় শ্রেণীর লোকদের মাঝে পার্থক্যকারী একটি পর্দা রয়েছে, আর আ'রাফে (জান্নাত ও জাহান্নামের মধ্যবর্তী স্থানে অবস্থিত

لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ
لَقَدْ جَاءَتْ رَسُولَ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُودُوا أَنْ
تُلْكُمُ الْجَنَّةَ أَوْ رُتُّوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٤﴾

وَنَادَى أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مِمَّا
وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ
بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٥﴾

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا
عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ ﴿٤٦﴾

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ
يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيئَتِهِمْ وَنَادُوا أَصْحَابَ

উঁচু দেয়ালের উপরে) অনেক লোক থাকবে, তারা প্রত্যেককে তাদের লক্ষণ ও চিহ্ন দ্বারা চিনতে পারবে, আর জান্নাত বাসীদেরকে ডেকে বলবে: তোমাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক, তখনো এরা (আ'রাফবাসীরা) জান্নাতে প্রবেশ করেনি বটে; কিন্তু ওর আকাঙ্ক্ষা করে।

৪৭. আর যখন জাহান্নাম বাসীদের প্রতি তাদের দৃষ্টি ফিরিয়ে দেয়া হবে, তখন তারা (আ'রাফবাসীরা) বলবে: হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে যালিম সম্প্রদায়ের সঙ্গী করবেন না।

৪৮. আ'রাফবাসীরা যেসব জাহান্নামী লোককে তাদের লক্ষণ দ্বারা চিনতে পারবে তাদেরকে ডাক দিয়ে বলবে: তোমাদের বাহিনী (ও পার্শ্ববর্তী জীবনের ধন-সম্পদ) এবং তোমাদের গর্ব-অহংকার তোমাদের কোনই উপকারে আসল না।

৪৯. আর সেই জান্নাতবাসীরা কি সে সমস্ত লোক যাদের সম্পর্কে তোমরা কসম করে বলতে যে, এদের প্রতি আল্লাহ দয়া করবেন না? (অথচ তাদের জন্যে এই ফরমান জারী হলো যে,) তোমরা জান্নাতে প্রবেশ কর, তোমাদের কোন ভয় নেই এবং তোমরা চিন্তিত ও দুঃখিত হবে না।

৫০. আর জাহান্নামবাসীরা জান্নাত-বাসীদেরকে ডেকে বলবে: আমাদের উপর কিছু পানি ঢেলে দাও অথবা তোমাদের আল্লাহ প্রদত্ত জীবিকা

الْجَنَّةِ أَنْ سَلَّمَ عَلَيْكُمْ فَذَلِكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا
وَهُمْ يَطْعُونَ ﴿٤٧﴾

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٨﴾

وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا لَا يَعْرفُونَهُمْ
بِسِينَتِهِمْ قَالُوا مَا آغْفَى عَنْكُمْ جَعَلَكُمْ وَمَا
كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

أَهْوَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ
أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ
تَحْزَنُونَ ﴿٥٠﴾

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أفيضُوا
عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ

হতে কিছু প্রদান কর, তারা বলবেঃ আল্লাহ এসব জিনিষ কাফেরদের প্রতি হারাম করে দিয়েছেন।

৫১. যারা নিজেদের দ্বীনকে খেল-তামাসার বস্তুতে পরিণত করেছিল এবং পার্থিব জীবন যাদেরকে প্রতারণা ও গোলক ধাঁধায় নিমজ্জিত করে রেখেছিল, সুতরাং আজকের দিনে আমি তাদেরকে তেমনিভাবে ভুলে থাকবো যেমনিভাবে তারা এ দিনের সাক্ষাতের কথা ভুলে গিয়েছিল এবং যেমন তারা আমার নিদর্শন ও আয়াতসমূহকে অস্বীকার করছিল।

৫২. আর আমি তাদের নিকট এমন একখানা কিতাব পৌঁছিয়ে ছিলাম যাকে আমি জ্ঞান তথ্যে সমৃদ্ধ ও সুবিস্তৃত করেছিলাম এবং যা ছিল ঈমানদার সম্প্রদায়ের জন্যে হেদায়েত ও রহমতের প্রতীক।

৫৩. তারা আর কোন কিছুই অপেক্ষা করছে না, শুধুমাত্র ওর সর্বশেষ পরিণতির অপেক্ষায় রয়েছে, যেদিন এর সর্বশেষ পরিণতি এসে সমুপস্থিত হবে এবং সে দিন যারা এর আগমনের কথা ভুলে গিয়েছিল তারা বলবেঃ বাস্তবিকই আমাদের প্রতিপালকের রাসূলগণ সত্য কথা এনেছিলেন, সুতরাং (এখন) এমন কোন সুপারিশকারী আছে কি যারা আমাদের জন্যে সুপারিশ করবে? অথবা আমাদেরকে কি পুনরায় দুনিয়ায় পাঠানো যেতে পারে যাতে

اللَّهُ حَرَمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمْ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنسِفُهُمْ كَمَا نَسَوْا لِقَاءَ
يَوْمِهِمْ هَذَا ۖ وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝

وَلَقَدْ جِئْتَهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ
يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا لَنَا مِنْ شَفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا
أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلْ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ قَدْ خَسِرُوا
أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ ۚ مَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

আমরা পূর্বের কৃতকর্মের তুলনায় ভিন্ন কিছু করতে পারি? নিঃসন্দেহে তারা নিজেরাই নিজেদের ক্ষতি করেছে, আর তারা যেসব মিথ্যা (মাবুদ ও রসম-রেওয়াজ) রচনা করেছিল, তাও তাদের হতে অদৃশ্য হয়েছে।

৫৪. নিশ্চয়ই তোমাদের প্রতিপালক হচ্ছেন সে আল্লাহ যিনি আসমান ও যমীনকে ছয়দিনে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তিনি স্বীয় আর্শের উপর সম্মুখিত হন, তিনি দিবসকে রাত্রি দ্বারা আচ্ছাদিত করেন, এমন ভাবে যে রাত্রি ও দিবস একে অন্যকে অনুসরণ করে চলে তুড়িত গতিতে; সূর্য, চন্দ্র ও নক্ষত্ররাজী সবই তাঁর হুকুমের অনুগত, জেনে রাখো, সৃষ্টির একমাত্র কর্তা তিনিই, আর হুকুমের একমাত্র মালিক তিনিই, সারা জাহানের প্রতিপালক আল্লাহ হলেন বরকতময়।

৫৫. তোমরা বিনীতভাবে ও সংগোপনে তোমাদের প্রতিপালককে ডাকবে, তিনি সীমালঙ্ঘনকারীকে ভালবাসেন না।

৫৬. দুনিয়ার শান্তি-শৃঙ্খলা স্থাপনের পর ওতে বিপর্যয় ও বিশৃঙ্খলা সৃষ্টি করো না, আর আল্লাহকে ভয়-ভীতি ও আশা-আকাঙ্ক্ষার সাথে ডাক, নিঃসন্দেহে আল্লাহর রহমত সৎকর্মশীলদের অতি সন্নিহিত।

৫৭. সেই আল্লাহই স্বীয় রহমতের (বৃষ্টির) আগে আগে বাতাসকে

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ تَدْعِيهِ السَّيِّئَاتُ أَنْ يُطِيعَهُ وَاللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ

সুসংবাদ রূপে প্রেরণ করেন, অবশেষে যখন ঐ বাতাস ভারী মেঘমালাকে বহন করে, তখন আমি এই মেঘমালাকে কোন নির্জীব ভূ-খন্ডের দিকে প্রেরণ করি, অতঃপর গুটা হতে বারিধারা বর্ষণ করি, তারপর সেই পানির সাহায্যে সেখানে সর্বপ্রকার ফল-ফলাদি উৎপাদন করি, এমনভাবেই আমি (কিয়ামতের দিন) মৃতকে জীবিত করবো, সম্ভবত তোমরা এটা থেকে শিক্ষা গ্রহণ করবে।

৫৮. আর ভাল উৎকৃষ্ট ভূমি ওর প্রতিপালকের নির্দেশক্রমে খুব ভাল ফল ফলায়, আর যা নিকৃষ্ট ভূমি, তাতে খুব কমই ফসল ফলে থাকে, এমনিভাবেই আমি কৃতজ্ঞতা পরায়ণদের জন্যে আমার নিদর্শন বিবৃত করে থাকি।

৫৯. আমি নূহ (عليه السلام)-কে তার জাতির নিকট প্রেরণ করেছিলাম, সুতরাং সে তাদেরকে সম্বোধন করে বলেছিলঃ হে আমার জাতি! তোমরা শুধু আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোন সত্য মা'বুদ নেই, আমি তোমাদের প্রতি এক মহা দিবসের শাস্তি আশঙ্কা করছি।

৬০. তখন তার জাতির প্রধান ও নেতাগণ বললোঃ নিশ্চয়ই আমরা তোমাকে স্পষ্ট বিভ্রান্তির মধ্যে দেখছি।

৬১. তিনি বললেনঃ হে আমার জাতি! আমি কোন ভুল-ভ্রান্তি ও

رَحْمَتِهِ ط حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدِكُمْ مَيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ط كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

وَالْبَلَدُ الظَّيْبُ يُخْرَجُ نَبَاتُهُ بِأَذْنِ رَبِّهِ ء وَالَّذِي خَبَتْ لَا يُخْرَجُ إِلَّا نَكْدًا ط كَذَلِكَ نَصْرِفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُشْكُرُونَ ﴿٥٩﴾

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ إِلَهٍ غَيْرُهُ ط إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٦٠﴾

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرُكَ فِي ضَلِيلٍ مُّبِينٍ ﴿٦١﴾

قَالَ لِقَوْمِهِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن

গুমরাহীর মধ্যে লিগু নই; বরং আমি সারা জাহানের প্রতিপালকের (প্রেরিত) একজন রাসূল।

৬২. আমি আমার প্রতিপালকের পয়গাম তোমাদের কাছে পৌঁছিয়ে দিচ্ছি, আর আমি তোমাদেরকে হিতোপদেশ দিচ্ছি, আর তোমরা যা জান না আমি তা আল্লাহর নিকট থেকে জেনে থাকি।

৬৩. তোমাদের মধ্যকার একজন লোকের মারফত তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে উপদেশ বাণী আসায় কি তোমরা বিস্মিত হয়েছো? যাতে তিনি তোমাদেরকে সতর্ক ও হুঁশিয়ার করতে পারেন এবং যাতে (তোমরা সাবধান হও,) তাকওয়া অবলম্বন করতে পার, হয়তো তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ করা হবে।

৬৪. কিন্তু তারা তাঁকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, ফলে তাকে এবং তাঁর সাথে নৌকায় যারা ছিল তাদেরকে (আযাব হতে) রক্ষা করলাম, আর যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল, তাদেরকে (প্রাবনের পানিতে) ডুবিয়ে মারলাম, বস্তুতঃ নিঃসন্দেহে তারা ছিল এক অজ্ঞ ও ভ্রান্ত সম্প্রদায়।

৬৫. আর আমি আ'দ জাতির নিকট তাদের ভাই হুদ (الْحُدَّاءُ)-কে (নবীরূপে) পাঠিয়েছিলাম, সে বললো : হে আমার জাতি! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, আল্লাহ ছাড়া

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١١﴾

أَبْلَغَكُمْ رَسُولَتِ رَبِّي وَأَنْصَحَ لَكُمْ وَأَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٢﴾

أَوْ عَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلَى
رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ﴿١٣﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ
وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا عَمِينَ ﴿١٤﴾

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٥﴾

তোমাদের আর কোন সত্য মা'বুদ নেই, তোমরা কি (এখনো) সাবধান হবে না? (আল্লাহভীতি অর্জন করবে না?)

৬৬. তখন তার জাতির কাফির লোকদের নেতাগণ বললোঃ অবশ্যই আমরা তোমাকে নির্বোধ দেখছি এবং আমরা তো তোমাকে নিশ্চিতরূপে মিথ্যাবাদীদের অন্তর্গত ধারণা করছি।

৬৭. সে (হুদ عليه السلام) বললোঃ হে আমার জাতি! আমি নির্বোধ নই; বরং আমি হলাম সারা জাহানের প্রতিপালকের প্রেরিত রাসূল।

৬৮. আমি আমার প্রতিপালকের পয়গাম তোমাদের নিকট পৌঁছিয়ে দিচ্ছি, আর আমি তোমাদের একজন বিশ্বস্ত হিতাকাঙ্ক্ষী।

৬৯. তোমরা কি এতে বিস্মিত হচ্ছে যে, তোমাদের জাতিরই একটি লোকের মাধ্যমে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে তাঁর বিধান ও উপদেশ তোমাদেরকে সতর্ক করার উদ্দেশ্যে তোমাদের কাছে এসেছে, তোমরা সেই অবস্থার কথা স্মরণ কর, যখন নূহের (عليه السلام) সম্প্রদায়ের পর আল্লাহ তোমাদেরকে তাদের স্থলাভিষিক্ত করেছেন এবং তোমাদের আকার-আকৃতি অন্যদের অপেক্ষা শক্তিতে অধিকতর সমৃদ্ধ করেছেন। সুতরাং তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহ স্মরণ কর, হয়তো তোমরা সফলকাম হবে।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنُظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾

قَالَ يَقَوْمِ كَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٦٨﴾

أَوْ عَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَأذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَضْطَةً ۖ فَادْكُرُوا الْآيَةَ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

৭০. তারা বললোঃ তুমি কি আমাদের নিকট শুধু এই উদ্দেশ্যে এসেছো, যেন আমরা একমাত্র আল্লাহরই ইবাদত করি এবং আমাদের পূর্বপুরুষগণ যাদের ইবাদত করতো তাদেরকে বর্জন করি? তাহলে তুমি তোমার কথা ও দাবীতে সত্যবাদী হলে আমাদেরকে যে শাস্তির ভয় দেখাচ্ছ তা আনয়ন কর।

৭১. সে বললোঃ তোমাদের প্রতিপালকের শাস্তি ও ত্রেনাথ তোমাদের উপর এসেই পড়বে, তোমরা কি আমার সাথে এমন কতগুলো নাম সম্বন্ধে বিতর্ক করছো যার নামকরণ করেছো তোমরা এবং তোমাদের বাপ-দাদারা, যে বিষয়ে আল্লাহ কোন দলীল-প্রমাণ অবতীর্ণ করেন নি? সুতরাং তোমরা (শাস্তির জন্যে) অপেক্ষা করতে থাক, আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করছি।

৭২. অতঃপর আমি তাঁকে (হৃদকে) এবং তার সঙ্গী-সাথীদেরকে (শাস্তি হতে) আমার অনুগ্রহে রক্ষা করলাম, আর যারা আমার নিদর্শনকে (বিধানকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল এবং যারা ঈমানদার ছিল না তাদের মূলোৎপাটন করে ছাড়লাম।

৭৩. আর আমি সামূদ জাতির নিকট তাদের ভ্রাতা সালেহ (السليح) কে প্রেরণ করেছিলাম, সে বললোঃ হে আমার জাতি! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, আল্লাহ ছাড়া তোমাদের আর কোন সত্য মা'বুদ নেই,

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۚ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ رَجْسٌ وَعَضِبْتُ ۖ اتَّجَادِدُونَ لِي فِيْ اَسْمَاءِ سَيِّئَتِيْهَا اَنْتُمْ وَاَبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۖ فَاَنْتَظِرُوْا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

وَالِى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ ضَلِيْحًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهُ ۚ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ هٰذِهِ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةٌ فَذَرُوْهَا

তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক স্পষ্ট নিদর্শন তোমাদের নিকট এসেছে, এই আল্লাহর (নামে উৎসর্গিত) উষ্ট্রী তোমাদের জন্যে একটি নিদর্শন স্বরূপ। সুতরাং তোমরা একে ছেড়ে দাও— আল্লাহর যমীনে চরে খাবে, ওকে খারাপ উদ্দেশ্যে স্পর্শ করো না, (ওকে কোন কষ্ট দিলে) এক যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি তোমাদেরকে গ্রাস করে ফেলবে।

৭৪. তোমরা স্মরণ কর সেই বিষয়টি যখন তিনি আ'দ জাতির পর তোমাদেরকে তাদের স্থলাভিষিক্ত করেছিলেন, আর তিনি তোমাদেরকে পৃথিবীতে এমনভাবে প্রতিষ্ঠিত করেছেন যে, তোমরা সমতল ভূমিতে প্রাসাদ ও পাহাড় কেটে আবাস গৃহ নির্মাণ করেছো। সুতরাং তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর এবং পৃথিবীতে বিপর্যয় ছড়িয়ে দিয়ো না।

৭৫. (অতঃপর) তার সম্প্রদায়ের অহংকারী প্রধানরা তখন তাদের মধ্যকার দুর্বল ও উৎপীড়িত মুমিনদেরকে বললোঃ তোমরা কি বিশ্বাস কর যে, সালেহ (عليه السلام) তার প্রতিপালক কর্তৃক প্রেরিত হয়েছেন? তারা উত্তরে বললোঃ নিশ্চয়ই যে পয়গামসহ তিনি প্রেরিত হয়েছেন, আমরা তা বিশ্বাস করি।

৭৬. তখন অহংকারীরা বললোঃ তোমারা যা বিশ্বাস কর আমরা তা অবিশ্বাস করি।

تَأْكُلُ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٤﴾

وَادْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ
وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ
سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ
بُيُوتًا ۗ فَادْكُرُوا آيَةَ اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٧٥﴾

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لِلَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ
أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا مُرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِمْ طَقَالُوا
إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ
كُفْرُونَ ﴿٧٦﴾

৭৭. অতঃপর তারা সেই উদ্ভীটিকে মেয়ে ফেললো এবং (গর্ভ ও দাঙ্কিতার সাথে) তাদের প্রতিপালকের নির্দেশের বিরুদ্ধাচরণ করে চলতে লাগলো এবং বললোঃ হে সালাহ! তুমি সত্য রাসূল হয়ে থাকলে আমাদেরকে যে শাস্তির ভয় দেখাচ্ছ তা আনয়ন কর।

৭৮. সুতরাং তাদেরকে একটি প্রলয়ংকরী ভূমিকম্প এসে গ্রাস করে নিলো, ফলে তারা নিজেদের গৃহের মধ্যেই (মৃত্যু অবস্থায়) উপুড় (অধোমুখী) হয়ে পড়ে গেল।

৭৯. অতঃপর তিনি (সালাহ عليه السلام) একথা বলে তাদের জনপদ হতে বের হয়ে গেলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! আমি আমার প্রতিপালকের পয়গাম তোমাদের কাছে পৌঁছিয়ে দিয়েছি, আর আমি তোমাদেরকে উপদেশ দিয়েছি; কিন্তু তোমরা তো উপদেশ দাতাদেরকে পছন্দ কর না।

৮০. আর আমি লূত (عليه السلام)-কে নবুওয়াত দান করে পাঠিয়েছিলাম, যখন তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা এমন অশীল ও কুকর্ম করছো; যা তোমাদের পূর্বে বিশ্বে আর কেউই করেনি।

৮১. তোমরা স্ত্রীলোকদের বাদ দিয়ে পুরুষদের সাথে নিজেদের যৌন ইচ্ছা নিবারণ করে নিচ্ছো। প্রকৃতপক্ষে তোমরা হচ্ছো সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُضْلِحُ
أَمْتَنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾

فَاخَذَتْهُمْ الرِّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جُثَيِّمِينَ ﴿٧٨﴾

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولًا
رَبِّي وَاصْحَبْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ الذُّكْرَيْنِ ﴿٧٩﴾

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
مَا سَبَقْتُكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾

৮২. কিন্তু তার জাতির লোকদের এটা ছাড়া আর কোন উত্তরই ছিল না যে, এদেরকে তোমাদের জনপদ থেকে বের করে দাও, এরা নিজেদেরকে বড় পবিত্র লোক বলে প্রকাশ করছে।

৮৩. পরিশেষে, আমি লূত (عليه السلام)-কে এবং তার পরিবারের লোকদেরকে শুধুমাত্র তার স্ত্রী ছাড়া শাস্তি হতে রক্ষা করেছিলাম, তার স্ত্রী ছিল ধ্বংসপ্রাপ্ত লোকদের অন্তর্ভুক্ত।

৮৪. অতঃপর আমি তাদের উপর মুষলধারে (পাথরের) বৃষ্টি বর্ষণ করেছিলাম। সুতরাং অপরাধী লোকদের পরিণাম কি হয়েছিল তা লক্ষ্য কর।

৮৫. আর আমি মাদিয়ানবাসীদের কাছে তাদেরই ভাই শু'আইব (عليه السلام)-কে পাঠিয়েছিলাম, সে তার স্বজাতিকে সম্বোধন করে বলেছিলো : হে আমার জাতি! তোমরা (শিরক বর্জন করে) একমাত্র আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোন সত্য মা'বুদ নেই, তোমাদের প্রভুর পক্ষ হতে তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট দলীল এসে গেছে। সুতরাং তোমরা ওজন ও পরিমাপ পূর্ণ মাত্রায় দেবে, মানুষকে তাদের প্রাপ্য বস্তু কম দিয়ে ক্ষতিগ্রস্ত করবে না, আর দুনিয়ায় শাস্তি-শৃঙ্খলা স্থাপনের পর বগড়া-ফাসাদ ও বিপর্যয় ঘটাবে না, তোমরা বাস্তবিক পক্ষে ঈমানদার হলে এই পথই হলো তোমাদের জন্যে কল্যাণকর।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ
مَنْ قَرَيْتَكُمْ إِنَّهُمْ أَنْاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۗ كَانَتْ مِنَ
الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا
النَّاسَ أَمْشِيَاءَ هُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ
إِصْلَاحِهَا ۗ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

৮৬. আর তোমরা প্রতিটি পথে এই উদ্দেশ্যে বসে থেকে না যে, ঈমানদার লোকদেরকে ভয়-ভীতি প্রদর্শন করবে ও আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখবে এবং সহজ-সরল পথকে ছেড়ে দিয়ে বক্রতা অশেষণে ব্যস্ত থাকবে। আর ঐ অবস্থাটির কথা স্মরণ কর, যখন তোমরা সংখ্যায় স্বল্প ছিলে, অতঃপর তিনি (আল্লাহ) তোমাদের সংখ্যা বেশি করে দিলেন, আর এ জগতে বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণতি কী হয়েছে তা লক্ষ্য কর।

৮৭. আমার নিকট যা (আল্লাহর পক্ষ হতে) প্রেরিত হয়েছে তা যদি তোমাদের কোন দল বিশ্বাস করে এবং কোন দল অশিষ্টাচার করে তবে (সেই পর্যন্ত) ধৈর্যধারণ কর যতক্ষণ না আল্লাহ আমাদের মধ্যে চূড়ান্ত ফায়সালা করে দেন, কারণ তিনিই হলেন উত্তম ফায়সালাকারী।^১

وَلَا تَقْعُدُوا بِرَأْسِ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَكَبُرَتْهَا عِوَجًا
وَإَذْكُرُوا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا فَكَثُرْتُمْ ۖ وَانظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

وَإِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلَتْ
بِهِ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ
اللَّهُ بَيْنَنَا ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾

১। (ক) আব্দুল্লাহ ইবনে উমার (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা সাবধান হও! তোমরা প্রত্যেকেই একজন দায়িত্বশীল। আর (কিয়ামতের দিন) তোমাদের প্রত্যেকের দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। সুতরাং জনগণের শাসকও একজন দায়িত্বশীল ব্যক্তি। আর তার দায়িত্ব সম্পর্কে (কিয়ামতের দিন) জিজ্ঞেস করা হবে। আর পুরুষ ও তার পরিবারের একজন দায়িত্বশীল। (কিয়ামতের দিন) তার এ দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। স্ত্রীও তার স্বামীর পরিবার ও সম্বানের ওপর দায়িত্বশীল। (কিয়ামতের দিন) তার এ দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞেস করা হবে। এমনকি কোন ব্যক্তির গোলাম বা দাসও তার প্রভুর সম্পদের ব্যাপারে একজন দায়িত্বশীল। আর (কিয়ামতের দিন) তার এ দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞেস করা হবে। অতএব সাবধান! তোমরা প্রত্যেকেই একজন দায়িত্বশীল। আর তোমাদের এ দায়িত্ব সম্পর্কে (কিয়ামতের দিন) জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৩৮)

(খ) তারীফ আবু তামীমা থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি (একদা) সাফওয়ান, জুন্দুব ও তাঁর সঙ্গীগণের নিকট উপস্থিত ছিলাম। তখন তিনি (জুন্দুব) তাঁর সঙ্গীগণকে উপদেশ দিচ্ছিলেন। তাঁরা (সঙ্গীগণ) জিজ্ঞেস করলেন, আপনি কি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে কিছু শুনতে পেয়েছেন? তখন জুন্দুব বললেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)- কে বলতে শুনেছি, যে ব্যক্তি সুনামের জন্য সংকাজ করে, আল্লাহ তার উদ্দেশ্য কিয়ামতের দিন প্রকাশ করে দিবেন। আর যে ব্যক্তি মানুষকে বিপদে

ফেলবে, কিয়ামতের দিন আল্লাহ্‌ও তাকে বিপদে পতিত করবেন। তাঁরা বললেন, আমাদেরকে (আরও) উপদেশ প্রদান করুন। অতঃপর তিনি বললেন, (কবরে) সর্বপ্রথম মানুষের পেট গলে ও পচে যাবে। অতএব যে ব্যক্তি পাক-পবিত্র বস্ত্রই আহার করতে সক্ষম সে যেন তাই আহার করে। আর যে ব্যক্তি কামনা করে যে, তার ও বেহেশতের মাঝে তার দ্বারা অন্যায়ভাবে প্রবাহিত অঞ্জলী পরিমাণ রক্তও যেন প্রতিবন্ধকতা সৃষ্টি না করে, সে যেন তাই করে বা তদনুরূপ কাজ করে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৫২)

(গ) আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ একদা আমি ও রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মসজিদ থেকে বের হচ্ছিলাম। তখন এক ব্যক্তি মসজিদের আঙ্গিনার নিকটে আমাদের সাথে সাক্ষাত করলো ও বললো, হে আল্লাহ্র রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কিয়ামত কখন সংঘটিত হবে? তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, তুমি কিয়ামতের জন্য কি পাথের সংগ্রহ করেছ? লোকটি তখন যেন একটু অপ্রস্তুত হয়ে গেল এবং পরে বলল, হে আল্লাহ্র নবী! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমি তজ্জন্য বেশি পরিমাণ রোযা, নামায ও সাদকা করতে পারিনি। তবে আমি আল্লাহ্‌কে ও তাঁর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে অত্যধিক মুহব্বত করি। অতঃপর রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ যাকে তুমি ভালবাস (কিয়ামতের দিন) তুমি তারই সঙ্গী বা সাথী হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৫৩)

(ঘ) আবু যার (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি একদা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট গেলাম। তিনি বললেনঃ ঐ সত্তার কসম যাঁর হাতে আমার প্রাণ, অথবা (বলেছেন) ঐ সত্তার কসম যিনি ছাড়া অন্য কোন মা'বুদ নেই, অথবা অনুরূপ কোন হলফ করে (তিনি বললেন) যারই উট কিংবা গরু অথবা বকরী রয়েছে- যদি সে তার হক (যাকাত) আদায় না করে, তবে কিয়ামতের দিন ঐ জানোয়ারগুলোকে পূর্বের চাইতেও অধিক বড় ও মোটাতাজা অবস্থায় ঐ ব্যক্তির নিকট উপস্থিত করা হবে এবং ঐ জানোয়ার স্বীয় খুর দ্বারা উক্ত ব্যক্তিকে দলন করতে থাকবে এবং শিং দ্বারা তাকে গুঁতোতে থাকবে। যখন শেষ জানোয়ারটি তাকে অতিক্রম করে যাবে তখন প্রথমটি আবার তার কাছে ফিরে আসবে (এবং পালক্রমে তাকে দলন করতে শুরু করবে)। এমনিভাবে চূড়ান্ত ফয়সালার দিন পর্যন্ত চলতে থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৬০)

৮৮. আর তাঁর সম্প্রদায়ের দাস্তিক ও অহংকারী প্রধানরা বলেছিলঃ হে শোআইব (عليه السلام)! আমরা অবশ্যই তোমাকে ও তোমার সঙ্গী-সাথী মুমিনদেরকে আমাদের জনপদ হতে বহিস্কার করবো অথবা তোমরা আমাদের দলে (দ্বীনে) ফিরে আসবে, তখন তিনি বললেনঃ আমরা যদি তাতে রাখী না হই (তবুও কি জোর করে ফিরিয়ে দিবে)?

৮৯. তোমাদের দল বা দ্বীন হতে আত্মাহ আমাদেরকে মুক্তি দেয়ার পর আমরা যদি তাতে আবার ফিরে যাই তবে নিশ্চিতভাবে আত্মাহর প্রতি মিথ্যা আরোপকারী হবো, আমাদের প্রতিপালক আত্মাহ না চাইলে ওতে আবার ফিরে যাওয়া আমাদের পক্ষে কোনক্রমেই সম্ভব নয়, প্রতিটি বস্তুই আমাদের প্রতিপালকের জ্ঞানায়ত্তে, আমরা আত্মাহর উপরই নির্ভর করছি, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের ও আমাদের সম্প্রদায়ের মধ্যে সঠিকভাবে ফায়সালা করে দিন, আপনিই তো সর্বোত্তম ফায়সালাকারী।

৯০. আর তাদের সম্প্রদায়ের কাফির লোকদের প্রধানগণ (সর্বসাধারণকে) বলেছিলঃ তোমরা যদি শোআইব (عليه السلام)-কে অনুসরণ করে চল, তবে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

৯১. অতঃপর ভূ-কম্পন তাদেরকে গ্রাস করে ফেললো, ফলে তারা নিজেদের গৃহেই (মৃত্যু অবস্থায়) উপুড় হয়ে পড়ে রইলো।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لَنُخْرِجَنَّكَ يَشْعِبُكَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ
قَرِينِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ فِي مِلَّتِنَا ط قَالَ أَوْ لَوْ كُنَّا
كُرْهِيْنَ ۝

قَدْ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ إِذْ نَجَّيْنَا اللَّهُ مِنْهَا ط وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُوذَ
فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ط وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ط عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ط رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِيَنَّ اتَّبَعْتُمْ
شَعِيبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَخَسِرُونَ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جُثَمِينَ ۝

৯২. (অবস্থা দেখে মনে হলো,) যারা শো'আইব (عليه السلام)-কে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল, তারা যেন কখনো সেখানে বসবাস করেনি, শো'আইব (عليه السلام)-কে মিথ্যা প্রতিপন্নকারী লোকেরাই শেষ পর্যন্ত ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছিল।

৯৩. তিনি (শো'আইব عليه السلام) তাদের নিকট হতে এ কথা বলে বেরিয়ে আসলেন— হে আমার জাতি! আমি আমার প্রভুর পয়গাম তোমাদের নিকট পৌঁছিয়েছি, আর আমি তোমাদেরকে উপদেশ প্রদান করেছি, সুতরাং আমি কাফির সম্প্রদায়ের জন্যে কি করে আক্ষেপ করতে পারি!

৯৪. আমি কোন জনপদে নবী-রাসুল পাঠালে, ওর অধিবাসীদেরকে দুঃখ-কষ্ট ও বিপদে আক্রান্ত করে থাকি, উদ্দেশ্য হলোঃ তারা যেন নম্র ও বিনয়ী হয়।

৯৫. অতঃপর আমি তাদের দুরবস্থাকে সুখ-স্বাচ্ছন্দ্য দ্বারা পরিবর্তন করে দিয়েছি, অবশেষে তারা খুব প্রাচুর্যের অধিকারী হয়, আর তারা (অকৃতজ্ঞ স্বরে) বলেঃ আমাদের পূর্ব পুরুষরাও এইভাবে সুখ-দুঃখ ভোগ করেছে (এটাই প্রাকৃতিক নিয়ম), অতঃপর অকস্মাৎ আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম কিন্তু তারা কিছুই বুঝতে পারলো না।

৯৬. জনপদের অধিবাসীগণ যদি ঈমান আনতো এবং তাকওয়া

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا لَمْ يَخْتَارُوا فِيهَا
الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخٰسِرِينَ ﴿٩٢﴾

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰ قَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلَتِ
رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۗ فَكَيْفَ اَسَىٰ عَلٰى قَوْمِ
كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا اَخَذْنَا
اَهْلَهَا بِالْبَاسِ ۗ وَالضَّرَّاءِ لَعَالَهُمْ يُضْرَعُوْنَ ﴿٩٤﴾

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوْا
وَقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ
فَاَخَذْنَاهُمْ بِغَتَّةٍ ۗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقَرْيَةِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا

অবলম্বন করতো, তবে আমি তাদের জন্যে আকাশ ও পৃথিবীর বরকতের দ্বার খুলে দিতাম; কিন্তু তারা নবী-রাসূলদেরকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, ফলে তাদের কৃতকর্মের জন্যে আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম।

৯৭. জনপদের লোকেরা কি এটা থেকে নির্ভয় হয়ে মনে করছে যে, রাত্রিকালে ঘুমন্ত থাকা অবস্থায় আমার শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করে ফেলবে না?

৯৮. অথবা জনপদের লোকেরা কি এই ভয় রাখে না যে, আমার শাস্তি তাদের উপর তখন আপতিত হবে যখন তারা পূর্বাহ্নে আমোদ-প্রমোদেরত থাকবে?

৯৯. তারা কি আল্লাহর পাকড়াও ও শাস্তি থেকে নিরাপদ হয়ে গেছে? ক্ষতিগ্রস্ত সম্প্রদায় ছাড়া আল্লাহর শাস্তি থেকে কেউই নিঃশঙ্ক বোধ করতে (নিরাপদ হতে) পারে না।

১০০. কোন এলাকার অধিবাসী ধ্বংস হওয়ার পর সেই এলাকার যারা উত্তরাধিকারী হয়, তাদের কাছে কি এই পথ নির্দেশ দেয়া হয়নি যে, আমি ইচ্ছা করলে তাদের পাপের কারণে তাদেরকে শাস্তি দিতে পারি? আর তাদের অন্তঃকরণের উপর মোহর মেয়ে দিতে পারি অবশেষে তারা কিছুই শুনতে পাবে না?

১০১. ঐ জনপদগুলোর কিছু বৃত্তান্ত আমি তোমার নিকট বর্ণনা করছি, তাদের কাছে রাসূলগণ সুস্পষ্ট দলীল

عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٧﴾

أَوَإِنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٨﴾

أَوْ إِنْ أَهْلَ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضَحَىٰ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٩﴾

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٠٠﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصْبَنَهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَطَبَعْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠١﴾

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانُوا

প্রমাণসহ এসেছিল; কিন্তু পূর্বে তারা যা প্রত্যাখ্যান করেছিল তার প্রতি তারা ঈমান আনবার ছিল না, এমনিভাবেই আল্লাহ অবিশ্বাসীদের অন্তঃকরণের উপর মোহর মেরে দেন।

১০২. আমি তাদের অধিকাংশকে অঙ্গীকার ও প্রতিশ্রুতি রক্ষাকারীরূপে পাইনি, তবে তাদের অধিকাংশকে আমি ফাসেক (সত্যত্যাগী) পেয়েছি।

১০৩. অতঃপর আমি মুসা (عليه السلام)-কে তাদের পর আমার আয়াত ও নিদর্শনসহ ফিরাউন ও তার পরিষদবর্গের নিকট পাঠালাম; কিন্তু তারা যুলুম করলো (অর্থাৎ আমার নিদর্শন অস্বীকার করলো), সুতরাং এই বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণাম কি হয়েছিল তা তুমি লক্ষ্য কর।

১০৪. মুসা (عليه السلام) বললেনঃ হে ফিরাউন! আমি বিশ্ব-প্রতিপালকের পক্ষ হতে একজন রাসূল।

১০৫. আমার জন্য এটাই উপযুক্ত যে, আমি আল্লাহ সম্বন্ধে সত্য কথা ছাড়া আর কিছু বলবো না (অর্থাৎ আল্লাহ সম্পর্কে সত্য কথা বলতে আমি দৃঢ় প্রতিজ্ঞ) আমি তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট দলীল ও প্রমাণ নিয়ে এসেছি, সুতরাং বানী ইসরাঈলকে আমার সাথে পাঠিয়ে দাও।

১০৬. তখন ফিরাউন বললোঃ তুমি যদি বাস্তবিকই (আল্লাহর পক্ষ হতে) স্পষ্ট দলীল ও নিদর্শন এনে থাক

لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ طَكَذِّبَكَ يَطِغُ
اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾

وَمَا وَجَدْنَا إِلَّا كَثْرَهُمْ مِنْ عَهْدٍ وَإِنْ وَجَدْنَا
أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٣﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَدْرِهِمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا إِلَى فِرْعَوْنَ
وَمَلَائِكِهِ فَظَلَمُوا بِهَا فَأَنْظِرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٤﴾

وَقَالَ مُوسَى يُفِرْعَوْنَ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٠٥﴾

حَقِيقٌ عَلَى أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٦﴾

قَالَ إِنْ كُنْتُ جِئْتُ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِنْ كُنْتُ
مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٠٦﴾

তবে তুমি সত্যবাদী হলে তা উপস্থাপিত কর।

১০৭. তখন মূসা (ﷺ) তাঁর লাঠি নিক্ষেপ করলেন এবং সহসাই ওটা এক প্রকাশ্য (জীবিত) সাপে পরিণত হলো।

১০৮. আর তিনি তার হাত বের করলেন, তৎক্ষণাৎই ওটা দর্শকদের দৃষ্টিতে শুভ্র ও উজ্জ্বল আলোকময় প্রতিভাত হলো।

১০৯. এ দেখে ফিরাউন সম্প্রদায়ের প্রধানরা বললোঃ নিঃসন্দেহে এ ব্যক্তি বড় সুদক্ষ যাদুকর।

১১০. তিনি তোমাদেরকে তোমাদের জমি-জায়গা থেকে বের করে দিতে চান, এখন তোমাদের পরামর্শ কি?

১১১. তারা বললোঃ তাকে এবং তার ভাই (হারুন)-কে কিছুদিনের অবকাশ দাও, আর শহরে শহরে সংগ্রাহক পাঠিয়ে দাও।

১১২. যেন তারা তোমার (ফিরাউন) নিকট প্রত্যেক সুদক্ষ যাদুকরকে উপস্থিত করে।

১১৩. যাদুকররা ফিরাউনের কাছে এসে বললোঃ আমরা যদি বিজয় লাভ করতে পারি তবে আমাদের জন্যে পুরস্কার থাকবে তো?

১১৪. সে উত্তরে বললোঃ হ্যাঁ, অবশ্যই তোমরাই হবে আমার দরবারের নিকটতম ব্যক্তি।

১১৫. অতঃপর যাদুকরগণ বললোঃ হে মূসা (ﷺ)! (প্রথমে) তুমিই কি

فَأَلْفَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنُّظُورِ ﴿١٠٨﴾

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ عَلَيْهِمْ ﴿١٠٩﴾

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ فَأَيُّ تَآمُرُونَ ﴿١١٠﴾

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾

يَأْتُونَكَ بِكُلِّ سِحْرٍ عَلَيْهِمْ ﴿١١٢﴾

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

قَالُوا يَا مُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْفَى وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ

তোমার লাঠি নিষ্ক্ষেপ করবে, না
আমরাই (প্রথমে) নিষ্ক্ষেপ করবো?

نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٦﴾

১১৬. তিনি (মূসা عليه السلام) উত্তরে
বললেনঃ প্রথমতঃ তোমরাই নিষ্ক্ষেপ
কর, সুতরাং যখন তারা নিষ্ক্ষেপ
করলো তখন লোকের চোখে যাদু
করলো এবং তাদেরকে ভয় দেখালো
ও আতংকিত করলো, তারা খুব বড়
রকমের যাদু দেখালো।

قَالَ الْقَوَّاءُ فَلَبَّأَ الْقَوَّاءُ سَحْرًا أَعْيَنَ النَّاسِ
وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٧﴾

১১৭. তখন আমি মূসা-এর নিকট
এই প্রত্যাদেশ পাঠালামঃ তুমি
তোমার লাঠিখানা নিষ্ক্ষেপ কর, মূসা
(عليه السلام) তা নিষ্ক্ষেপ করলে ওটা
একটা বিরাট সাপ হয়ে সহসা ওদের
অলীক (মিথ্যা) সৃষ্টিগুলোকে গিলে
ফেলল।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلِقْ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِيَ
تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٨﴾

১১৮. পরিশেষে যা হক ছিল তা সত্য
প্রমাণিত হলো, আর যা কিছু বানানো
হয়েছিল তা বাতিল প্রতিপন্ন হলো।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٩﴾

১১৯. আর ফিরাউন ও তার
দলবলের লোকেরা মুকাবিলার
ময়দানে পরাজিত হলো এবং লাঞ্চিত
ও অপমানিত হয়ে গেল।

فَغَلَبُوا هَذَاكَ وَانْقَلَبُوا صُغِيرِينَ ﴿١٢٠﴾

১২০. যাদুকরগণ তখন সিজদায়
পড়ে গেল।

وَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجُودًا ﴿١٢١﴾

১২১. তারা পরিস্কার ভাষায় বললোঃ
আমরা বিশ্ব প্রতিপালকের প্রতি
অকপটে ঈমান আনলাম।

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٢﴾

১২২. (জিজ্ঞেস করা হলো— কোন
বিশ্ব প্রতিপালকের প্রতি? তারা উত্তরে
বললো) মূসা ও হারুনের
প্রতিপালকের প্রতি।

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. ফিরাউন বললো অনুমতি দেয়ার আগেই তোমরা তার উপর ঈমান আনলে? এটা অবশ্যই একটা চক্রান্ত আর তোমরা এ চক্রান্ত পাকিয়েছ শহরবাসীদের সেখান থেকে তাড়িয়ে দেয়ার জন্যে? সত্বরই তোমরা এর পরিণাম জানতে পারবে।

১২৪. অবশ্যই আমি তোমাদের হাত ও পা উল্টোভাবে কেটে ফেলবে, তারপর তোমাদের সবাইকে আমি শূলে চড়াবো।

১২৫. তারা (যাদুকররা) বললোঃ নিশ্চয়ই আমরা আমাদের প্রতিপালকের নিকটে ফিরে যাবো।

১২৬. তুমি আমাদের সাথে শক্রতা করছো এই কারণে যে, আমাদের কাছে যখন আমাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলী এসেছে তখন আমরা ওগুলোর উপর ঈমান এনেছি, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে ধৈর্য দান করুন এবং মুসলমানরূপে আমাদের মৃত্যু দান করুন!

১২৭. ফিরাউন সম্প্রদায়ের সরদারগণ তাকে বললোঃ তুমি কি মুসা (عليه السلام) ও তার সম্প্রদায়কে রাজ্যে অশান্তি ও বিপর্যয় সৃষ্টির জন্যে মুক্ত ছেড়ে দিবে এবং তোমাকে ও তোমার দেবতাগণকে বর্জন করে চলার সুযোগ দিবে? সে উত্তরে বললোঃ আমি তাদের ছেলে সন্তানদের হত্যা করবো এবং তাদের নারীদেরকে জীবিত রাখবো, নিশ্চয় আমরা পরাক্রমশালী।

قَالَ فِرْعَوْنُ اَمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ اَنْ اَذِنَ لَكُمْ
اِنَّ هَذَا لَكُرْهُمُؤَةٍ فِي الْمَدِيْنَةِ لِيُخْرِجُوْا
مِنْهَا اَهْلَهَاۙ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾

لَا قَطْعَانَ اَيْدِيكُمْ وَاَجْلَكُمْ مِّنْ خِلَافِ ثُمَّ
لَا صَلْبًا لَكُمْ اَجْعِلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

قَالُوْا اِنَّا اِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا اِلَّا اَنْ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لَبَّآ
جَاءَتْنَا رَّبَّنَا اَفْرَغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّاَتَوْفَانَا
مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

وَقَالَ الْبَلَاءُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَدْرُ مُوسَى
وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَيَذْرَكَ وَالْهَتَكَ
قَالَ سَنَقْتِلُ اِبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَجِيْ نِسَاءَهُمْ وَاِنَّا
فَوْقَهُمْ قَاهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

১২৮. মূসা (ﷺ) তার সম্প্রদায়কে বললেনঃ তোমরা আল্লাহর নিকট সাহায্য প্রার্থনা কর এবং ধৈর্য অবলম্বন কর, এই পৃথিবীর সার্বভৌম মালিক আল্লাহ, তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যাকে ইচ্ছা ওর উত্তরাধিকারী করে থাকেন, শুভ পরিণাম ও শেষ সাফল্য তো মুত্তাকী বান্দাদেরই জন্যে।

১২৯. তারা (মূসা ﷺ-এর কওম) তাঁকে বললেনঃ আপনি আমাদের নিকট (নবীরূপে) আগমনের পূর্বেও আমরা (ফিরাউন কর্তৃক) নির্যাতিত হয়েছি এবং আপনার আগমনের পরও নির্যাতিত হচ্ছি, তখন তিনি (মূসা ﷺ) বললেনঃ শীঘ্রই তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের শত্রুকে ধ্বংস করবেন এবং তোমাদেরকে রাজ্যে তাদের স্থলাভিষিক্ত করবেন, অতঃপর তোমরা কিরূপ কাজ কর তা তিনি দেখবেন।

১৩০. আমি ফিরাউনের অনুসারীদেরকে কয়েক বছর পর্যন্ত দুর্ভিক্ষ ও ফসলহানির মধ্যে বিপন্ন রেখেছিলাম, উদ্দেশ্য ছিল, তারা হয়তো উপদেশ গ্রহণ করে ঈমান আনবে।

১৩১. যখন তাদের সুখ-শান্তি ও কল্যাণ হতো তখন তারা বলতোঃ এটা তো আমাদের জন্য, আর যদি তাদের দুঃখ, দৈন্য ও বিপদ-আপদ হতো তখন তারা ওটাকে মূসা (ﷺ) ও তার সঙ্গী-সাথীদের

قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا
إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾

قَالُوا أَوْذَيْنَا مِنْ قَبْلُ أَنْ تَأْتِينَا وَمِنْ بَعْدِ
مَا جِئْنَا قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَهْلِكَ عِذُّكُمْ
وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ
تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقِصٍ
مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾

فَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذِهِ وَإِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَّعَهُ ۗ
أَلَا إِنَّمَا طَّيَّرَهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ

মন্দভাগ্যের কারণরূপে নিরূপণ করতো, তোমরা জেনে রেখো যে, তাদের অকল্যাণ আল্লাহরই নিয়ন্ত্রণাধীন; কিন্তু তাদের অধিকাংশ সে সম্পর্কে কোন জ্ঞান রাখে না।

১৩২. তারা বললোঃ আমাদেরকে যাদু করবার জন্যে যে কোন নিদর্শনই পেশ কর না কেন আমরা তোমার প্রতি ঈমান আনবো না।

১৩৩. শেষ পর্যন্ত আমি তাদের উপর প্লাবন, পঙ্গপাল, উকুন, ব্যাঙ ও রক্তধারার শাস্তি পাঠিয়ে কষ্ট দেই, এগুলো ছিল আমার সুস্পষ্ট নিদর্শন; কিন্তু তারা শেষ পর্যন্ত দাঙ্কিতা ও অহংকারেই মেতে রইলো, তারা ছিল একটি অপরাধী জাতি।

১৩৪. তাদের উপর কোন বালা-মুসিবত ও বিপদ-আপদ আপতিত হলে তারা বলতোঃ হে মুসা (عليه السلام) আমাদের এই বিপদ দূর হওয়ার নিমিত্তে তোমার প্রতিপালকের নিকট দু'আ কর, যার প্রতিশ্রুতি তিনি তোমার সাথে করেছেন, যদি আমাদের বিপদ দূর করে দিতে পার তবে আমরা তোমার প্রতি ঈমান আনবো এবং তোমার সাথে বানী ইসরাঈলগণকে পাঠিয়ে দেবো।

১৩৫. অতঃপর যখনই আমি তাদের হতে সেই আযাবকে এক নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত অপসারিত করতাম যাতে তারা উপনীত হতো, তখনই আবার তারা প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করতো।

لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٢﴾

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِنَسْحَرَنَّ بِهَا
فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

فَارْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ
وَالصَّفَادِعَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يُوسَى ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۗ لَكِن كَشَفَّتْ عَنَّا
الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ ﴿٣٥﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ آجَلٍ هُمْ بِلُغْوِهِ
إِذَا هُمْ يَنْكُتُونَ ﴿٣٦﴾

১৩৬. সুতরাং আমি (এই প্রতিশ্রুতি ভঙ্গের জন্যে) তাদের হতে প্রতিশোধ নিলাম এবং তাদেরকে অতল সমুদ্রে ডুবিয়ে মারলাম, কেননা তারা আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, আর এই ব্যাপারে তারা ছিল সম্পূর্ণ গাফিল বা উদাসীন।

১৩৭. যে জাতিকে দুর্বল ভাবা হতো আমি তাদেরকে আমার কল্যাণপ্রাপ্ত রাজ্যের পূর্ব ও পশ্চিমের উত্তরাধিকারী বানাই, আর বানী ইসরাঈল জাতি সম্পর্কে তোমার প্রতিপালকের শুভ ও কল্যাণময় বাণী (প্রতিশ্রুতি) পূর্ণ হলো, কেননা তারা ধৈর্যধারণ করেছিল, আর ফিরাউন ও তার সম্প্রদায়ের নির্মিত কীর্তিকলাপ ও উচ্চ প্রাসাদসমূহকে আমি ধ্বংস করেছি।

১৩৮. আমি বানী ইসরাঈলকে সমুদ্র পার করিয়ে দিলাম, অতঃপর তারা প্রতিমা পূজায় রত এক জাতির সংস্পর্শে আসলো, তখন তারা বললোঃ হে মুসা (ﷺ)! তাদের যেরূপ মা'বুদ রয়েছে, আমাদের জন্যেও ঐরূপ মা'বুদ বানিয়ে দিন, তখন মুসা বললেনঃ তোমরা একটি গভুমুর্খ জাতি।

১৩৯. এসব লোক যে কাজে লিপ্ত রয়েছে, তা তো ধ্বংস করা হবে, আর তারা যা করছে তা অমূলক ও বাতিল বিষয়।

১৪০. তিনি (মুসা ﷺ) আরো বললেনঃ আমি কি আল্লাহকে ছেড়ে

فَأَنْتَقْنَا مِنْهُمْ فَأَعْرَفَهُمْ فِي الْيَوْمِ بِأَنَّهُمْ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٣٦﴾

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ
مَشَارِقِ الْأَرْضِ وَمَعَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا
وَتَبَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ
بِمَا صَبَرُوا ۗ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ
وَقَوْمَهُ ۗ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾

وَجَوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ
يُعَلِّفُونَ عَلَىٰ أَصْنَامِهِمْ ۗ قَالُوا يُوسَىٰ اجْعَلْ
لَنَا آلِهَةً كَمَا لَهُم آلِهَةٌ ۗ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ
تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾

إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَّبِعُونَ مَا هُمْ فِيهِ وَبِطِلٌ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾

قَالَ أَعْيَرَ اللَّهُ أَيُّعْيَبُكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَىٰ

তোমাদের জন্যে অন্য কোন মা'বুদের সন্ধান করবো? অথচ তিনিই হলেন একমাত্র আল্লাহ যিনি তোমাদেরকে বিশ্বজগতে শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছেন!

الْعَالَمِينَ ﴿١٧٠﴾

১৪১. স্মরণ কর সেই সময়টির কথা, যখন আমি তোমাদেরকে ফিরাউনের অনুসারীদের (দাসত্ব) হতে মুক্তি দিয়েছি, তারা তোমাদেরকে অতিশয় মর্মান্তিক কষ্টদায়ক ও ন্যাঙ্কারজনক শাস্তি দিতো, তোমাদের পুত্রদেরকে হত্যা করতো এবং নারীদেরকে জীবিত রাখতো, এটা ছিল তোমাদের জন্যে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে এক বিরাট পরীক্ষা।

وَإِذْ أُنجَيْنَاكَ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكَ سُوءَ الْعَذَابِ يُقْتُلُونَ أَبْنَاءَكَ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكَ ۗ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكَ عَظِيمٌ ﴿١٧١﴾

১৪২. আর আমি মুসা (ﷺ)-কে ওয়াদা দিয়েছিলাম ত্রিশ রাত্রে (সীনাই পর্বতের উপর অবস্থান করার) জন্যে, পরে আরো দশদিন দ্বারা ওটা পূর্ণ করেছিলাম, ফলে তার প্রতিপালকের নির্ধারিত সময়টি চল্লিশ দিন দ্বারা পূর্ণতা লাভ করে, (রওয়ানা হবার সময়) মুসা (ﷺ) তার ভাই হারুনকে (ﷺ) বলেছিলেনঃ আমার অনুপস্থিতিতে আমার সম্প্রদায়ের মধ্যে তুমি আমার প্রতিনিধিত্ব করবে এবং তাদেরকে সংশোধন করার কাজ করতে থাকবে, (সাবধান!) বিপর্যয় ও ফাসাদ সৃষ্টিকারীদের অনুসরণ করবে না।

وَعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ فِتْمَةٍ مِّيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۗ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٧٢﴾

১৪৩. এবং মুসা (ﷺ) যখন নির্ধারিত সময়ে উপস্থিত হলেন এবং তাঁর প্রতিপালক তাঁর সাথে কথা

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۗ قَالَ رَبِّ أَرِنِي وَلَكِن

বললেন, তখন তিনি নিবেদন করলেন, হে আমার প্রতিপালক! আমাকে অনুমতি দিন, আমি আপনাকে দেখবো, তখন আল্লাহ বললেনঃ তুমি আমাকে আদৌ দেখতে পারবে না, তবে তুমি ঐ পাহাড়ের দিকে তাকাও; যদি ঐ পাহাড় স্বস্থানে স্থির থাকে তবে তুমি আমাকে দেখতে পারবে, অতঃপর তার প্রতিপালক যখন পাহাড়ের উপর আলোক সম্পাৎ করলেন, তখন তা পাহাড়কে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিলো, আর মূসা (ﷺ) সংজ্ঞাহীন হয়ে পড়ে গেলেন, অতঃপর যখন তার চেতনা ফিরে আসলো, তখন তিনি বললেনঃ আপনি মহিমাময়, আপনি পবিত্র সত্তা, আমি তাওবা করছি, আর আমিই মু'মিনদের সর্বপ্রথম।

১৪৪. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ হে মূসা (ﷺ)! আমি তোমাকেই আমার রিসালাত ও আমার সাথে বাক্যালাপের জন্য লোকদের মধ্য হতে মনোনীত করেছি, অতএব, এখন আমি তোমাকে যা কিছু দেই তা তুমি গ্রহণ কর এবং কৃতজ্ঞতা প্রকাশকারীদের অন্তর্ভুক্ত হও।

أَنْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَوْنِي ۚ فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ
مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ
إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٤﴾

قَالَ يَمُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتَكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي
وَبِكَلَامِي ۖ فَاخْذُ مَا آتَيْتَكَ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এ আয়াতটি পাঠ করলেনঃ অর্থঃ “অতঃপর তার প্রতিপালক যখন পাহাড়ের উপর আলোক সম্পাৎ করলেন। তখন তা পাহাড়কে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিলো। আর মূসা (আলাইহিস্ সালাম) সংজ্ঞাহীন হয়ে পড়ে গেলেন।” (সূরা আল-আ'রাফঃ ১৪৩)

হাসমাদ বলেনঃ এভাবে সুলাইমান তার হাতের কনিষ্ঠাঙ্গুলির মাথায় বৃদ্ধাঙ্গুলিটি রেখে বললেনঃ এতটুকু (সামান্য) পরিমাণ, জ্যোতির বিকিরণ যখন আল্লাহ ঘটালেন, তাতেই পাহাড় বিধ্বস্ত হয়ে গেল এবং মূসা (আলাইহিস্ সালাম) অজ্ঞান হয়ে পড়ে গেলেন। (তিরমিযী, হাদীস নং ৩০৭৪)

১৪৫. অতঃএব আমি মূসা (ﷺ)-কে ফলকের উপর প্রত্যেক প্রকারের উপদেশ এবং সর্ববিষয়ের সুস্পষ্ট ব্যাখ্যা লিখে দিয়েছি, (অতঃপর তাকে বললাম) তুমি ওকে দৃঢ় ও শক্তভাবে গ্রহণ কর এবং তোমার সম্প্রদায়কে-এর সুন্দর সুন্দর বিধানগুলো মেনে চলতে আদেশ কর, আমি ফাসেক বা সত্যত্যাগীদের আবাসস্থল শীঘ্রই তোমাদেরকে প্রদর্শন করবো।

১৪৬. এই ধরণীর বুকে যারা অন্যায়ভাবে গর্ব অহংকার করে বেড়ায় আমি তাদেরকে আমার নিদর্শনসমূহ হতে ফিরিয়ে রাখবো, প্রত্যেকটি নিদর্শন দেখলেও তারা তাতে ঈমান আনবে না, তারা যদি হেদায়েতের পথও দেখতে পায় তবুও সেই পথকে তারা নিজেদের পথরূপে গ্রহণ করবে না; কিন্তু তারা ভ্রান্ত ও গোমরাহীর পথ দেখলে তাকেই তারা নিজেদের জীবনপথ রূপে গ্রহণ করবে, এর কারণ হলো, তারা আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং তারা তা থেকে সম্পূর্ণরূপে অমনোযোগী ছিল।

১৪৭. যারা আমার নিদর্শনসমূহ ও পরকালের সাক্ষাতকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে তাদের সমুদয় আমল বিনষ্ট হয়ে যায়, তারা যা করে থাকে তদানুযায়ী তাদেরকে প্রতিফল দেয়া হবে।

وَكُنْتُمْ لَهُ فِي الْأَلْوَابِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً
وَتَقْصِيلاً لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ
يَأْخُذُوا بِأَحْسِنَاهَا سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٤٥﴾

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَاتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كَلِمًا لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا
وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ
يَرَوْا سَبِيلَ الْعِغْيِ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٤٦﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ
أَعْيُنُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾

১৪৮. মূসা (ﷺ)-এর সম্প্রদায় তাঁর চলে যাবার পর নিজেদের অলংকার দ্বারা একটি বাছুরের (মত) দেহ তৈরী করে তাকে মা'বুদরূপে গ্রহণ করলো, ওটা হতে (গরুর মত শব্দ) হাম্বারব বের হতো, তারা কি দেখেনি যে, ওটা তাদের সাথে কথা বলে না এবং তাদেরকে কোন পথও দেখিয়ে দেয় না? তবুও তারা ওটাকে মা'বুদরূপে গ্রহণ করলো; বস্তুতঃ তারা ছিল বড় অত্যাচারী।

১৪৯. আর যখন তারা তাদের কৃতকর্মের উপর লজ্জিত হলো এবং দেখল যে, (প্রকৃতপক্ষে) তারা বিভ্রান্ত হয়েছে, তখন তারা বললোঃ আমাদের প্রভু যদি আমাদের প্রতি অনুগ্রহ না করেন এবং আমাদেরকে ক্ষমা না করেন তবে তো আমরা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে যাবো।

১৫০. আর যখন মূসা (ﷺ) রাগান্বিত ও মনক্ষুণ্ণ অবস্থায় নিজ জাতির নিকট ফিরে এসে বললেনঃ আমার চলে যাওয়ার পর তোমরা খুব খারাপভাবে আমার প্রতিনিধিত্ব করেছো, তোমরা তোমাদের প্রভুর নির্দেশের পূর্বেই কেন তাড়াহুড়া করতে গেলে? অতঃপর তিনি ফলকগুলো ফেলে দিলেন এবং স্বীয় ভাইয়ের মস্তক (চুল) ধরে নিজের দিকে টানতে লাগলেন, উনি (ভাই হারুন) বললেনঃ হে আমার মাতার পুত্র! এই লোকগুলো আমাকে দুর্বল করে ফেলেছিল এবং আমাকে মেরে ফেলতে উদ্যত হয়েছিল, অতএব ভূমি আমাকে শত্রু সমক্ষে হাস্যস্পদ করো না, আর এই যালিম লোকদের মধ্যে আমাকে গণ্য করো না।

وَ اتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا مَاتَّخَذُواهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾

وَلَبَّاسًا سَقَطَ فِي أَيِّدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا ۗ قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرِحْنَا رَبَّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

وَلَبَّاسًا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۗ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۗ أَعَجَلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّيْلِ الْأَلْوَا حَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۗ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي ۗ فَلَا تُشِيتْ بِي الْأَعْدَاءُ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾

১৫১. তখন মূসা (ﷺ) বললেনঃ হে আমার প্রভু! আমাকে ও আমার ভাইকে ক্ষমা করুন! আর আমাদেরকে আপনার রহমতের মধ্যে প্রবেশ করান! আপনি সবচেয়ে বড় দয়ালবান।

১৫২. (উত্তরে বলা হলো) নিশ্চয়ই যারা গো-বৎসকে উপাস্যরূপে গ্রহণ করেছে, অবশ্যই তারা এই পার্থিব জীবনে তাদের প্রতিপালকের গযব ও লাঞ্ছনায় নিপতিত হবে, মিথ্যা রচনাকারীদেরকে আমি এভাবেই প্রতিফল দিয়ে থাকি।

১৫৩. আর যারা খারাপ কাজ করে, অতঃপর তাওবা করে ও ঈমান আনে তবে নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক আল্লাহ এর পরেও ক্ষমাশীল ও দয়ালময়।

১৫৪. মূসা (ﷺ)-এর ক্রোধ যখন প্রশমিত হলো তখন তিনি ফলকগুলো তুলে নিলেন, যারা তাদের প্রতিপালকের ভয় করে তাদের জন্যে তাতে যা লিখিত ছিল তা ছিল হেদায়েত ও রহমত।

১৫৫. মূসা (ﷺ) তার সম্প্রদায় হতে সন্তরজন নেতৃস্থানীয় লোক আমার নির্ধারিত সময়ে সমবেত হওয়ার জন্যে নির্বাচন করে নিলেন, অতঃপর যখন এই লোকগুলো একটি কঠিন ভূকম্পনে আক্রান্ত হলো তখন মূসা (ﷺ) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি ইচ্ছা করলে এর পূর্বেও ওদেরকে ও আমাকে নিপাত

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَ لِأَخِي وَ ادْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ
وَ أَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سِنًا لَهُمْ غَضَبٌ مِّنْ
رَّبِّهِمْ وَ ذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ كَذَلِكَ نَجْزِي
الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

وَ الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا وَ آمَنُوا
إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

وَ لَبَّاسَكَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبِ أَخَذَ الْأَلْوَابَ
وَ فِي سُخْرِيهَا هُدًى وَ رَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يُرْهِبُونَ ﴿١٥٤﴾

وَ اخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّإِيقَاتِنَا
فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
أَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَ آيَاتِي أَهْلَكْنَا بِهَا فَعَلَّ
السُّفَهَاءُ مِنَّا إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا
مَنْ نَشَاءُ وَ تَهْدِي مَنْ نَشَاءُ أَنْتَ وَلِيُّنَا

করতে পারতেন, আমাদের মধ্যকার কতক নির্বোধ লোকের অন্যায়ের কারণে কি আপনি আমাদেরকে নিপাত করবেন? সেই ঘটনা তো ছিল আপনার পরীক্ষা, যা দ্বারা আপনি যাকে ইচ্ছা বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন, আপনিই তো আমাদের অভিভাবক, সুতরাং আপনি আমাদেরকে ক্ষমাকরুন এবং আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করুন, ক্ষমাশীলদের মধ্যে আপনিই তো উত্তম ক্ষমাশীল।

১৫৬. অতএব আমাদের জন্যে এই দুনিয়ায় ও পরকালে কল্যাণ লিখে দিন, আমরা আপনার নিকটই প্রত্যাবর্তন করেছি। তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ যাকে ইচ্ছা আমি আমার শাস্তি দিয়ে থাকি, আর আমার করুণা ও দয়া প্রতিটি জিনিসকেই পরিব্যপ্ত করে রয়েছে, সুতরাং কল্যাণ আমি তাদের জন্যেই লিখবো যারা পাপাচার হতে বিরত থাকে, (তাক্বওয়া অবলম্বন করে) যাকাত দেয় এবং আমার নিদর্শনসমূহের প্রতি ঈমান আনয়ন করে।

১৫৭. (এই কল্যাণ তাদেরই প্রাপ্য) যারা সেই নিরক্ষর রাসূল নবী (ﷺ) -এর অনুসরণ করে চলে, যার কথা তারা তাদের নিকট রক্ষিত তাওরাত ও ইঞ্জীল কিতাবে লিখিত পায় (সেই নিরক্ষর নবী ﷺ) মানুষকে সৎকাজের নির্দেশ দেয় ও অন্যায় কাজ করতে নিষেধ করে, আর তিনি তাদের জন্যে পবিত্র

فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿٥٥﴾

وَكَتُبْنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ
إِنَّا هُدْنَاكَ إِلَيْنَا ط قَالَ عَدَايَ أُصِيبُ بِهِ مَنْ
أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ط فَسَاءَ لَهَا
لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ
بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي
يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ
وَالْإِنْجِيلِ زِيَّامَهُمْ بِالمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ
المُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ

বস্ত্রসমূহ বৈধ করে দেন এবং অপবিত্র ও খারাপ বস্ত্রকে তাদের প্রতি অবৈধ করেন, আর তাদের উপর চাপানো বোঝা ও বন্ধন হতে তাদেরকে মুক্ত করেন, সুতরাং তাঁর প্রতি যারা ঈমান রাখে, তাকে সম্মান করে ও সাহায্য সহানুভূতি করে, আর সেই আলোককে (কুরআনকে) অনুসরণ করে চলে যা তার সাথে অবতীর্ণ করা হয়েছে, তারাই (ইহকাল ও পরকালে) সাফল্য লাভ করবে।

عَلَيْهِمْ طَقَاؤُا لَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ
وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٨﴾

১৫৮. (হে মুহাম্মদ ﷺ)! তুমি ঘোষণা করে দাওঃ হে মানবমণ্ডলী! আমি তোমাদের সকলের জন্যে সেই আল্লাহর রাসূলরূপে প্রেরিত হয়েছি, যিনি আকাশমন্ডল ও ভূমন্ডলের সার্বভৌম একচ্ছত্র মালিক তিনি ছাড়া আর কোন (সত্য) মা'বুদ নেই, তিনি জীবিত করেন ও মৃত্যু ঘটান, সুতরাং আল্লাহর প্রতি এবং তাঁর সেই বার্তাবাহক নিরক্ষর নবী (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আনয়ন কর, যে আল্লাহতে ও তাঁর কালামে বিশ্বাস স্থাপন করে থাকে, তোমরা তারই অনুসরণ কর, আশা করা যায় তোমরা সরল সঠিক পথের সন্ধান পাবে।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ
الَّذِي أُنزِلَ مِنْ رَبِّهِ ۗ وَاتَّبِعُوهُ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾

১৫৯. মূসা (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়ের মধ্যে এমন একদল লোক রয়েছে যারা সঠিক ও নির্ভুল পথ-প্রদর্শন করে এবং ন্যায় বিচার করে।

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٍ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾

১৬০. আর আমি বানী ইসরাঈলকে বারটি বংশে বিভক্ত করে প্রত্যেককে আলাদা আলাদা গোত্রে স্থির করেছি, মূসা (ﷺ)-এর সম্প্রদায়ের লোকেরা যখন তার কাছে পানি দাবী করলো, তখন আমি মূসা (ﷺ)-এর কাছে প্রত্যাদেশ পাঠালামঃ তোমার লাঠি দ্বারা পাথরে আঘাত কর, ফলে সাথে সাথে ওটা হতে বারটি ঝরণা উৎসারিত হলো, আর প্রত্যেক গোত্র নিজ নিজ পান-স্থান জেনে নিলো, আর আমি তাদের উপর মেঘ দ্বারা ছায়া বিস্তার করলাম, আর তাদের জন্যে (আকাশ হতে) 'মান্না' ও 'সালওয়া' খাদ্যরূপী নিয়ামত অবতীর্ণ করলাম, সুতরাং (আমি বললাম) তোমাদেরকে যা কিছু পবিত্র জীবিকা দান করা হয়েছে তা আহাৰ কর, (কিন্তু ওরা আমার শর্ত উপেক্ষা করে জুলুম করলো) তারা আমার উপর কোন জুলুম করেনি; বরং তারা তাদের নিজেদের উপরই জুলুম করেছে।

১৬১. (স্মরণ কর সেই সময়টির কথা) যখন তাদেরকে বলা হয়েছিল এই (ফিলিস্তিন ও তৎসংশ্লিষ্ট) জনপদে বসবাস কর এবং যথা ইচ্ছা আহাৰ কর, আর তোমরা বলঃ (হে প্রভু!) ক্ষমা চাই, আর (শহরের) দ্বারদেশ দিয়ে নতশিরে প্রবেশ কর, (তাহলে) আমি তোমাদের অপরাধ ক্ষমা করবো এবং সংকৰ্মশীল লোকদের জন্যে আমার দান বৃদ্ধি করবো।

وَقَطَعْنَهُمْ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۗ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَمَهُ قَوْمَهُ ۖ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۗ فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۗ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ قَشْرَهُمْ ۗ وَظَلَلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ ۗ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ السَّنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۗ كُفُوا مِنْ طَيْبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۗ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾

وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۗ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যে যারা যালিম ও সীমালঙ্ঘনকারী ছিল, তারা সেই কথা পরিবর্তন করে ফেললো যা তাদেরকে (বলতে) বলা হয়েছিল, সুতরাং তাদের সেই সীমালঙ্ঘনের কারণে আমি আসমান হতে তাদের উপর শাস্তি প্রেরণ করলাম।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾

১৬৩. আর তাদেরকে সেই জনপদের অবস্থাও জিজ্ঞেস কর যা সমুদ্রের তীরে অবস্থিত ছিল, (স্মরণ কর সেই ঘটনার কথা) যখন তারা শনিবারের ব্যাপারে সীমা লঙ্ঘন করেছিল, শনিবারের দিন মাছ পানিতে ভেসে তাদের নিকট আসতো; কিন্তু যেদিন তারা শনিবার উদ্‌যাপন করতো না (অর্থাৎ শনিবার ছাড়া বাকি অন্য দিন) সেদিন ওগুলো তাদের কাছে আসতো না, এইভাবে আমি তাদের নাফরমানীর কারণে তাদেরকে পরীক্ষা করছিলাম।

وَسَأَلْنَاهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَاتُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ نَبُؤُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾

১৬৪. (স্মরণ কর সেই সময়টির কথা) যখন তাদের একদল লোক অপর দলের নিকট বলেছিলঃ ঐ জাতিকে তোমরা কেন উপদেশ দিচ্ছ যাদেরকে আল্লাহ ধ্বংস করবেন অথবা কঠিন শাস্তি দিবেন? তারা উত্তরে বললোঃ তোমাদের প্রতিপালকের নিকট দোষ মুক্তির জন্যে ও অক্ষমতা পেশ করার জন্যে, এবং এই জন্যে যে হয়তো বা এই লোকেরা তাঁর নাফরমানী হতে বেঁচে থাকবে।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَدِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا مَعذِرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

১৬৫. সুতরাং তাদেরকে যে উপদেশ দেয়া হয়েছিল তা যখন তারা ভুলে গেল, তখন যারা অসৎ কাজ থেকে নিষেধ করতো তাদেরকে তো আমি বাঁচিয়ে নিলাম, আর যালিমদেরকে তাদের অসৎ কর্মপরায়ণতার কারণে কঠোর শাস্তি দ্বারা পাকড়াও করলাম।

১৬৬. অতঃপর যখন তারা অবাধ্য হয়ে নিষিদ্ধ কাজগুলো করতে থাকলো যেগুলো থেকে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিল তখন আমি বললামঃ তোমরা ঘৃণিত ও নিকৃষ্ট বানর হয়ে যাও।

১৬৭. (এবং ঐ সময়ের কথা স্মরণ কর) যখন তোমার প্রতিপালক ঘোষণা করলেন যে, তিনি তাদের (ইয়াহুদীদের) উপর কিয়ামত পর্যন্ত এমন সব লোককে (শক্তিশালী করে) প্রেরণ করতে থাকবেন, যারা তাদেরকে কঠিনতর শাস্তি দিতে থাকবে (এবং তারা সর্বত্র নির্যাতিত ও নিপীড়িত হবে), নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক শাস্তি দানে ক্ষীপ্রহস্ত, আর নিশ্চয়ই তিনি ক্ষমাশীল ও অনুগ্রহশীল।

১৬৮. (অতঃপর) আমি তাদেরকে খুঁড় খুঁড় করে বিভিন্ন দলে-উপদলে দুনিয়ায় বিস্তৃত করেছি, তাদের কতক লোক সদাচারী আর কিছু লোক ভিন্তর (অনাচারী), আর আমি ভাল ও মন্দের মধ্যে নিপতিত করে তাদেরকে পরীক্ষা করে থাকি, যাতে তারা আমার পথে ফিরে আসে।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيُبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٧﴾

وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۖ مِنْهُمْ الضَّالُّونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَّوْنَهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾

১৬৯. অতঃপর তাদের পর এমন অযোগ্য লোক তাদের স্থলাভিষিক্ত হয় যে তারা কিতাবেরও উত্তরাধিকারী হয় তারা এই নিকট দুনিয়ার মাল-সম্পদ নিয়ে নেয় আর বলে আমাদেরকে ক্ষমা করা হবে; এমনকি যদি ওর অনুরূপ মাল-সম্পদ তাদের নিকট আসে তবে তারা ওগুলোও নিয়ে নেবে, তাদের নিকট হতে কি কিতাবের প্রতিশ্রুতি নেয়া হয়নি যে, তারা আল্লাহর নামে সত্য ছাড়া কিছুই বলবে না? আর কিতাবে যা রয়েছে তা তো তারা অধ্যয়নও করেছে, আর মুত্তাকী লোকদের জন্যে পরকালের ঘরই উত্তম, তোমরা কি এতটুকু কথাও অনুধাবন করতে পার না।

১৭০. যারা আল্লাহর কিতাবে দৃঢ়ভাবে ধারণ করে (অর্থাৎ আনুগত্য করে) এবং নামায কায়েম করে (তারা অবশ্যই তার প্রতিদান পাবে), আমি তো সৎকর্মশীলদের কর্মফল নষ্ট করি না।

১৭১. (ঐ সময়টিও স্মরণযোগ্য) যখন আমি পাহাড়কে উঠিয়ে নিয়ে ছায়ার ন্যায় তাদের (বানী ইসরাঈলের) মাথার উপর তুলে ধরি তখন তারা মনে করছিল যে, ওটা তাদের উপর পড়ে যাবে, (এমতাবস্থায় আমি বললাম) তোমাদেরকে যা (যে কিতাব) দিয়েছি তা দৃঢ়ভাবে শক্ত হাতে ধারণ কর এবং ওতে যা রয়েছে তা স্মরণ রাখো, আশা করা যায় যে, তোমরা মুত্তাকী হয়ে যাবে।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ
يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ
لَنَا وَإِن يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلَهُ يَأْخُذُوهُ ۗ أَلَمْ
يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ أَن لَا يَقُولُوا عَلَىٰ
اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ وَالذَّارُ الْأَخِرَةُ
خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

وَالَّذِينَ يَمْسُكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۗ
إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا
أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ خُذُوا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ
وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

১৭২. (হে নবী ﷺ)! যখন তোমার প্রতিপালক বানী আদমের পৃষ্ঠদেশ হতে তাদের সম্ভানদেরকে বের করলেন এবং তাদেরকেই তাদের উপর সাক্ষী বানিয়ে জিজ্ঞেস করলেনঃ আমি কি তোমাদের প্রতিপালক নই? তারা সমস্বরে উত্তর দিলো হ্যাঁ! আমরা সাক্ষী থাকলাম; (এই স্বীকৃতি ও সাক্ষী বানানো এই জন্যে যে,) যাতে তোমরা কিয়াতমের দিন বলতে না পার- আমরা এ বিষয়ে সম্পূর্ণ অনবহিত ছিলাম।

১৭৩. অথবা তোমরা যেন কিয়াতমের দিন এ কথা বলতে না পার, আমাদের পূর্ব পুরুষরাই তো আমাদের পূর্বে শিরক করেছিল, আমরা ছিলাম তাদের পরবর্তী বংশধর, সুতরাং আপনি কি আমাদেরকে সেই ভ্রান্ত ও বাতিলদের কৃতকর্মের দরুন ধ্বংস করবেন।

১৭৪. এভাবেই আমি বাণী সমূহকে ও নিদর্শনাবলীকে বিশদভাবে বিবৃত করে থাকি, যাতে তারা (কুফরী হতে তাওহীদের দিকে) ফিরে আসে।

১৭৫. (হে মুহাম্মদ ﷺ)! তুমি এদেরকে সেই ব্যক্তির বৃত্তান্ত পড়ে শুনিতে দাও, যাকে আমি আমার নিদর্শন দান করেছিলাম; কিন্তু সে (এর দায়িত্ব পালন করা হতে) সম্পূর্ণ বেরিয়ে আসে, ফলে শয়তান তার পিছনে লেগে যায়, আর সে পথভ্রষ্টদের মধ্যে शामिल হয়ে যায়।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ ۗ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۗ شَهِدْنَا ۗ أَن نَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غٰفِلِينَ ﴿١٧٢﴾

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْ بَعْدِهِمْ ۗ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾

وَكَذٰلِكَ نَقُصِّلُ الْآيٰتِ وَكَلَمٰهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾

وَآتٰلُ عَلَيْهِمْ نَبَا الَّذِي آتَيْنٰهُ آيٰتِنَا فَآلَسَلَخَ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾

১৭৬. আর আমি ইচ্ছা করলে তাকে এই আয়াতসমূহের সাহায্যে উন্নত করতাম; কিন্তু সে দুনিয়ার প্রতি অধিক ঝুঁকে পড়ে এবং স্বীয় কামনা-বাসনার অনুসরণ করতে থাকে, তার উদাহরণ একটি কুকুরের ন্যায়, ওকে যদি তুমি ধমক বা কিছু দ্বারা আঘাত করে তাড়িয়ে দাও, তবে জিহ্বা বের করে হাঁপায়, আবার যদি ওকে কিছু না করে ছেড়ে দাও তবুও জিহ্বা বের করে হাঁপাতে থাকে, যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, এই উদাহরণ হলো সেই সম্প্রদায়ের, তুমি কাহিনী বর্ণনা করে শুনাতে থাকো, হয়তো তারা এটা নিয়ে চিন্তা-ভাবনা করবে।

১৭৭. এই উদাহরণটি সেই সম্প্রদায়ের জন্যে কতই না মন্দ উদাহরণ যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা মনে করে থাকে এবং তারা নিজেরাই নিজেদের উপর অত্যাচার করতে থাকে।

১৭৮. আল্লাহ যাকে হেদায়েত করেন সে-ই হেদায়েতপ্রাপ্ত হন, আর যাকে তিনি বিভ্রান্ত করেন সে ব্যর্থ ও ক্ষতিগ্রস্ত হয়।

১৭৯. আমি বহু জ্বিন ও মানুষকে জাহান্নামের জন্যে সৃষ্টি করেছি, তাদের হৃদয় রয়েছে; কিন্তু তারা তা দ্বারা উপলব্ধি করে না, তাদের চক্ষু রয়েছে; কিন্তু তারা তা দ্বারা দেখে না, তাদের কর্ণ রয়েছে; কিন্তু তা দ্বারা তারা শোনে না, তারা ই হলো

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ
وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِنْ تَحْمِلْ
عَلَيْهِ يَلْهَثُ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثُ ۗ ذَٰلِكَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ
لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا يَظْلُمُونَ ﴿١٧٧﴾

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىٰ ۖ وَمَنْ يُضِلِّ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٧٨﴾

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ
وَالِإِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا ۖ
وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ وَلَهُمْ أُذُنٌ
لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ أُولَٰئِكَ كَانُوا لِنَعْمِ بَلٍ مُّ

পশুর ন্যায; বরং তা অপেক্ষাও অধিক বিভ্রান্ত, তারাই হলো গাফিল বা অমনোযোগী ।

১৮০. আর আল্লাহর অসংখ্য সুন্দর সুন্দর ও ভাল নাম রয়েছে, সুতরাং তোমরা তাঁকে সেসব নামেই ডাকবে, আর তাদেরকে বর্জন কর যারা তাঁর নাম বিকৃত করে, সত্বরই তাদেরকে তাদের কৃতকর্মের প্রতিফল দেয়া হবে ।

১৮১. আর আমি যাদেরকে সৃষ্টি করেছি তাদের মধ্যে এমন একটি দলও রয়েছে যারা সত্য (অর্থাৎ ধীন ইসলাম)-এর অনুরূপ হিদায়াত করে এবং ওরই অনুরূপ ইনসাফও করে ।

১৮২. যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, আমি তাদের অজ্ঞাতে তাদেরকে ধীরে ধীরে পাকড়াও করবো ।

১৮৩. আমি তাদেরকে অবকাশ দিচ্ছি, নিশ্চয় আমার কৌশল বা ষড়যন্ত্র অতি শক্ত ।

১৮৪. তারা কি এটা চিন্তা করে না যে, তাদের সঙ্গী পাগল নয়? তিনি তো একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী!

১৮৫. তারা কী আকাশসমূহ ও পৃথিবীর রাজত্ব সম্পর্কে কোন গভীর চিন্তা করে না? আর আল্লাহ যা কিছু সৃষ্টি

أَصْلُهُ أُولَئِكَ هُمُ الْغٰفِلُونَ ﴿٨٠﴾

وَاللّٰهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا سَوْذُرُوْا
الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْ اَسْمَائِهِ ط سَيُجْزَوْنَ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨١﴾

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ
يَعْدِلُوْنَ ﴿٨٢﴾

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ
حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٣﴾

وَأَمْلِيْ لَهُمْ ط اِنْ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٨٤﴾

اَوْ لَمْ يَتَفَكَّرُوْا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ ط
اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٨٥﴾

اَوْ لَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ لَّا وَاَنْ عَلٰى اَنْ يَّكُوْنَ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, আল্লাহ্ তা'আলার নিরানব্বই নাম আছে। অর্থাৎ এক কম একশত, যে ব্যক্তি এ নামগুলো মুখস্থ করে নেয়, সে জান্নাতে যাবে। আল্লাহ্ বেজোড় (একক) বেজোড়কেই পছন্দ করেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪১০)

করেছেন এবং তাদের জীবনের নির্দিষ্ট মেয়াদটি পূর্ণ হবার সময়টি হয়তো বা নিকটে এসে পড়েছে তারা কি এটাও চিন্তা করে না? সুতরাং কুরআনের পর তারা কোন্ কথায় ঈমান আনবে?

১৮৬. যাদেরকে আল্লাহ বিপথগামী করেন, তাদের কোন পথ প্রদর্শক নেই, আর আল্লাহ তাদেরকে তাদেরই বিভ্রান্তির মধ্যে দিশেহারার (বিভ্রান্তির) ন্যায় ঘুরে বেড়াতে ছেড়ে দেন।

১৮৭. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করছে যে, কিয়ামত কখন সংঘটিত হবে? তুমি বলে দাওঃ এই বিষয়ে আমার প্রতিপালকই একমাত্র জ্ঞানের অধিকারী, শুধু তিনিই এর নির্ধারিত সময়ে প্রকাশ করবেন, তা হবে আকাশ রাজ্য ও পৃথিবীতে একটি ভয়ংকর ঘটনা, তোমাদের উপর তা আকস্মিকভাবেই আসবে, তুমি যেন এ বিষয়ে পুরোপুরি অবগত, এটা ভেবে তারা তোমাকে এ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করছে, তুমি বলে দাওঃ এর সম্পর্কে জ্ঞান একমাত্র আল্লাহর কাছেই রয়েছে; কিন্তু অধিকাংশ লোকই এ সম্পর্কে কোনই জ্ঞান রাখে না।^১

قَدْ أَفْتَرَبَ أَجْلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ
يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٦﴾

مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۖ وَيَذَرُهُمْ فِي
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٧﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ قُلْ
إِنَّمَا عَلَيْهَا عِنْدَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا
هُوَ ۖ ثَقُلَتْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا تَأْتِيكُمْ
إِلَّا بَغْتَةً ۖ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيفٌ عَنْهَا ۖ
قُلْ إِنَّمَا عَلَيْهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾

১। সালেম ইবনে আব্দুল্লাহ, ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণনা করেছেন। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ অদৃশ্য বা গায়েবী ভাভার পাঁচটি আল্লাহই জানেন কিয়ামত কখন হবে, তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন, মায়ের জরায়ুতে কি সন্তান আছে, কোন্ ব্যক্তি আমাগীকাল কি করবে, কোন ব্যক্তি তা জানে না। কোন্ ব্যক্তির মৃত্যু কোন্ স্থানে বা কোন্ দেশে হবে তা সে জানে না। আল্লাহ সবচেয়ে বেশি জানেন এবং খবর রাখেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬২৭)

১৮৮. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি ঘোষণা দিয়ে দাওঃ আল্লাহ যা ইচ্ছা করেন তা ছাড়া আমার নিজেই ভাল-মন্দ, লাভ-ক্ষতি ইত্যাদি বিষয়ে আমার কোন অধিকার নেই, আমি যদি অদৃশ্য তত্ত্ব ও খবর জানতাম তবে আমি অনেক কল্যাণ লাভ করতে পারতাম আর কোন অমঙ্গল ও অকল্যাণই আমাকে স্পর্শ করতে পারতো না। (অতএব অদৃশ্যের কোন খবরই আমি রাখি না,) আমি শুধু মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে একজন সতর্ককারী ও সুসংবাদবাহী।

১৮৯. তিনিই আল্লাহ যিনি তোমাদেরকে এক ব্যক্তি (আদম عَلَيْهِ السَّلَامُ) হতে সৃষ্টি করেছেন এবং সেই ব্যক্তি হতেই তাঁর সঙ্গিনী (হাওয়া عَلَيْهَا السَّلَامُ)-কে সৃষ্টি করেছেন যেন তিনি তার নিকট থেকে প্রশান্তি লাভ করতে পারেন, অতঃপর যখন সে তার (স্ত্রীর) সাথে মিলনে প্রবৃত্ত হয় তখন সেই মহিলাটি এক গোপন ও লঘু গর্ভধারণ করে, আর (এই অবস্থায় সে দিন কাটাতে থাকে এবং) তা' নিয়ে চলাফেরা করতে থাকে, অতঃপর যখন তার গর্ভ গুরুভার হয় তখন তারা উভয়েই তাদের প্রতিপালকের কাছে দু'আ করেঃ যদি আপনি আমাদেরকে সৎ সন্তান দান করেন তবে আমরা আপনার কৃতজ্ঞ বান্দা হবো।

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ط وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَأَسْتَكْبَرْتُ مِنْ الْخَيْرِ ؕ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْءُ ؕ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ؕ

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ؕ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيًّا فَبَرَّتْ بِهِ ؕ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهُ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنُكَوِّنَنَّ مِنْ الشُّكْرَيْنِ ۝

১৯০. অতঃপর তিনি যখন তাদেরকে সৎ ও সুস্থ সন্তান দান করেন তখন তারা আল্লাহর দেয়া এই দানে অংশী স্থাপন করে; কিন্তু তারা যাকে অংশী করে আল্লাহ তা অপেক্ষা অনেক উন্নত ও মহান।

فَلَمَّا أَنَّهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا
أَنَّهُمَا فَتَعَلَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٩٠﴾

১৯১. তারা কি এমন বস্তুকে (আল্লাহর সাথে) অংশী করে থাকে যারা কোন বস্তুই সৃষ্টি করে না বরং তারা নিজেরাই (আল্লাহর দ্বারা) সৃষ্টিকৃত?

أَيُّشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ﴿١٩١﴾

১৯২. এই শরীককৃত জিনিসসমূহ যেমন তাদের কোন সাহায্য করার ক্ষমতা রাখে না, তেমনি নিজেদেরকেও কোন সাহায্য করতে পারে না।

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ
يُنصُرُونَ ﴿١٩٢﴾

১৯৩. তোমরা যদি ওদেরকে সৎপথে ডাকো তবে তারা তোমাদের অনুসরণ করবে না। তাদেরকে ডাকতে থাকা অথবা তোমাদের চূপ করে থাকা উভয়ই তোমাদের পক্ষে সমান।

وَأِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُكُمْ طَسَوَاءٌ
عَلَيْكُمْ أَدْعَوْتُهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ﴿١٩٣﴾

১৯৪. আল্লাহ ছাড়া তোমরা যাদেরকে ডাকো, তারা তো তোমাদেরই ন্যায় বান্দা, সুতরাং তোমরা তাদেরকে ডাকতে থাকো, যদি তোমরা সত্যবাদী হও তবে তারা তোমাদের ডাকে সাড়া দেবে।

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ
أَمْثَلَكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾

১৯৫. তাদের কি পা আছে যা দ্বারা তারা চলেছে? তাদের কি হাত আছে যা দ্বারা কোন কিছু ধরে থাকে? তাদের কি চক্ষু আছে যা দ্বারা দেখতে পারে? তাদের কি কর্ণ আছে

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ
بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۚ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ
يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُوا

যা দ্বারা শুনে থাকে? (হে নবী ﷺ)!
তুমি বলে দাওঃ আল্লাহর সাথে
তোমরা যাদেরকে অংশী করেছো,
তাদেরকে ডাকো, তারপর (সকলে
একত্রিত হয়ে) আমার বিরুদ্ধে চক্রান্ত
করতে থাকো, আমাকে আদৌ কোন
অবকাশ দিও না।

فَلَا تُنظِرُونَ ﴿٩٥﴾

১৯৬. আমার অভিভাবক হলেন সেই
আল্লাহ যিনি কিতাব অবতীর্ণ
করেছেন, আর তিনিই সৎকর্মশীলদের
অভিভাবকত্ব করে থাকেন।

إِنَّ وَلِيَّ اللَّهِ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۗ وَهُوَ يَتَوَلَّى
الصَّالِحِينَ ﴿٩٦﴾

১৯৭. আল্লাহ ছাড়া তোমরা
যাদেরকে ডাকো, তারা তোমাদের
সাহায্য করার কোন ক্ষমতা রাখে না
এবং তারা নিজেদেরকেও সাহায্য
করতে পারে না।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ
نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿٩٧﴾

১৯৮. যদি তুমি তাদেরকে
হিদায়াতের পথে ডাকো, তবে সে
ডাক তারা শুনবে না, আর তুমি
দেখবে যে, তারা তোমার দিকে
তাকিয়ে রয়েছে, আসলে তারা কিছুই
দেখছে না।

وَأِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْعَوْا وَتَرَاهُمْ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩٨﴾

১৯৯. (হে নবী ﷺ)! তুমি বিনয় ও
ক্ষমা পরায়ণতার নীতি গ্রহণ কর
এবং লোকদেরকে সৎকাজের নির্দেশ
দাও, আর মূর্খদেরকে এড়িয়ে চল।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ
الْجَاهِلِينَ ﴿٩٩﴾

২০০. শয়তানের কুমন্ত্রণা যদি
তোমাকে প্ররোচিত করে তবে তুমি
আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থনা কর, তিনি
সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

وَأَمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ
بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٠﴾

২০১. যারা মুত্তাকী, শয়তান যখন
তাদেরকে কুমন্ত্রণা দিয়ে খারাপ

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنْ

কাজে নিমগ্ন করে, সাথে সাথে তারা আত্মসচেতন হয়ে আল্লাহকে স্মরণ করে ফলে তৎক্ষণাৎ তাদের (জ্ঞান) চক্ষু খুলে যায়।

২০২. শয়তানদের যারা অনুগত ভ্রাতা, তারা তাদেরকে বিভ্রান্তি ও গোমরাহীর মধ্যে টেনে নেয়, এ ব্যাপারে তারা অদৌ কোন ক্রটি করে না।

২০৩. (হে নবী ﷺ)! তুমি যখন কোন নিদর্শন ও মু'জিযা তাদের কাছে পেশ কর না, তখন তারা বলে: আপনি এসব মু'জিযা কেন পেশ করেন না? তুমি তাদেরকে জানিয়ে দাও: আমার প্রতিপালকের নিকট থেকে আমার কাছে যা কিছু প্রত্যাদেশ পাঠানো হয়, আমি শুধুমাত্র তারই অনুসরণ করি, এই কুরআন তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক বিরাট দলীল ও নিদর্শন এবং ঈমানদার সম্প্রদায়ের জন্যে হিদায়াত ও অনুগ্রহের প্রতীক।

২০৪. যখন কুর'আন পাঠ করা হয়, তখন তেমরা মনোযোগের সাথে তা শ্রবণ করবে এবং নীরব নিশ্চুপ হয়ে থাকবে, হয়তো তোমাদের প্রতি দয়া ও অনুগ্রহ করা হবে।

২০৫. তোমার প্রতিপালককে মনে মনে বিনয় নম্র ও ভয়-ভীতি সহকারে অনুচক্ষুরে সকাল ও সন্ধ্যায়

الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

وَإِخْوَانَهُمْ يَبُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٣﴾

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي ۚ هَذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٤﴾

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٥﴾

وَادْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি সাহাবাগণকে হাদীস বর্ণনা করেছেন যে, মক্কার কাফেরেরা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট দাবী করল যে, তিনি যেন তাদেরকে কোন মু'জিযা (অলৌকিক নিদর্শন) দেখান। তখন তিনি তাদেরকে (আল্লাহর নির্দেশে) চন্দ্র দ্বিখণ্ডিত করে দেখালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৬৩৭)

স্মরণ করবে, আর (হে নবী ﷺ!)
তুমি এই ব্যাপারে গাফিল ও উদাসীন
হবে না।

২০৬. যারা তোমাদের প্রভুর সান্নিধ্যে
থাকেন (অর্থাৎ ফেরেশতারা) তাঁরা
অহংকারে তাঁর ইবাদত হতে বিমুখ হয়
না, তাঁরা তাঁরই গুণাগুণ ও মহিমা
প্রকাশ করেন এবং তাঁরা তাকেই
সিজদা করেন।

সূরাঃ আনফাল মাদানী

(আয়াতঃ ৭৫, রুকূঃ ১০)

দয়াময় মেহেরবান আল্লাহর নামে
শুরু করছি।

১. (হে নবী ﷺ!) লোকেরা
তোমাকে যুদ্ধলব্ধ সম্পদ সম্পর্কে
জিজ্ঞেস করে, তুমি ঘোষণা করে
দাওঃ যুদ্ধলব্ধ সম্পদ আল্লাহ ও তাঁর
রাসূল (ﷺ)-এর জন্যে, অতএব
তোমরা এ ব্যাপারে আল্লাহকে ভয়
কর এবং তোমাদের নিজেদের
পারস্পরিক সম্পর্ক সঠিকরূপে গড়ে
নাও, আর যদি তোমরা মুমিন হয়ে
থাক তবে আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল
(ﷺ)-এর আনুগত্য কর।

২. নিশ্চয় মুমিনরা এইরূপ হয় যে,
যখন (তাদের সামনে) আল্লাহকে
স্মরণ করা হয়, তখন তাদের
অন্তরসমূহ ভীত হয়ে পড়ে, আর
যখন তাদের সামনে তাঁর
আয়াতসমূহ পাঠ করা হয় তখন সেই

وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٧٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَيَسْبِحُونَهُ وَلَهُ يُسْجَدُونَ ^{السجدة} ﴿٧٦﴾

سُورَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ

اَيَاتُهَا ٧٥ رُكُوعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ط قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُولِ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَاَطِيعُوا اللّٰهَ
وَرَسُولَهُ اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٧٦﴾

اِنَّهَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَّتْ
قُلُوبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهُ زَادَتْهُمْ
اِيْمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٧٧﴾

আয়াতসমূহ তাদের ঈমানকে আরও বৃদ্ধি করে দেয়, আর তারা নিজেদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

৩. যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে এবং আমি যা কিছু তাদেরকে দিয়েছি তা থেকে তারা খরচ করে।

৪. এরাই সত্যিকারের ঈমানদার, এদের জন্যেই রয়েছে তাদের প্রতিপালকের নিকট উচ্চ মর্যাদা, আরও রয়েছে ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা।

৫. যেক্ষেপে তোমার প্রতিপালক তোমাকে তোমার গৃহ হতে (বদরের দিকে) যথাযথভাবে বের করলেন, আর মুসলমানদের একটি দল একে অপছন্দ (ভারী) মনে করেছিল।

৬. সেই হক্ক বা যথার্থ বিষয় প্রকাশ হওয়ার পরেও তারা তোমার সাথে এরূপ ঝগড়া করছিল যেন কেউ তাদেরকে মৃত্যুর দিকে হাঁকিয়ে নিয়ে যাচ্ছে, আর তারা তা প্রত্যক্ষ করছে।

৭. আর তোমরা সেই সময়টিকে স্মরণ কর, যখন আল্লাহ তোমাদেরকে সেই দু'টি দলের মধ্য হতে একটি সম্বন্ধে প্রতিশ্রুতি দিচ্ছিলেন যে, ওটা তোমাদের করতলগত হবে, আর তোমরা এই অভিপ্রায়ে ছিলে যেন নিরস্ত দলটি তোমাদের আয়ত্তে এসে পড়ে, আর আল্লাহর ইচ্ছা ছিল এই যে, তিনি স্বীয় নির্দেশবলী দ্বারা সত্যকে সত্য রূপে প্রতিপন্ন করে দেন এবং সেই কাফিরদের মূলকে কর্তন করে দেন।

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَرِهُونَ ۝

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشُّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ۝

৮. যেন সত্যকে সত্যরূপে এবং অসত্যকে অসত্যরূপে প্রমাণিত করে দেন, যদিও এটা অপরাধীরা অপছন্দ করে।

৯. স্মরণ কর সেই সংকট মুহূর্তের কথা, যখন তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট কাতর কণ্ঠে সাহায্যের আবেদন করেছিলে, আর তিনি সেই আবেদন কবুল করেছিলেন, (আর তিনি বলেছিলেন) আমি তোমাদেরকে এক হাজার ফেরেশতা দ্বারা সাহায্য করবো, যারা ধারাবাহিকভাবে আসবে।

১০. আল্লাহ এটা শুধু তোমাদের সুসংবাদ দেয়ার জন্যে এবং এর দ্বারা তোমাদের মনে প্রশান্তি আনয়নের জন্যে করেছেন, সাহায্য শুধু আল্লাহর তরফ থেকেই আসে, আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়।

১১. (আর ঐ সময়ের কথা স্মরণ কর) যখন তিনি (আল্লাহ) তাঁর পক্ষ থেকে প্রশান্তির জন্যে তোমাদেরকে তন্দ্রায় আচ্ছন্ন করেন এবং আকাশ থেকে তোমাদের উপর বৃষ্টি বর্ষণ করেন, এর দ্বারা তোমাদেরকে পবিত্র করার জন্যে এবং তোমাদের হতে শয়তানের কুমন্ত্রণা দূরীভূত করবেন আর তোমাদের হৃদয়কে সুদৃঢ় করবেন এবং তোমাদের পা স্থির ও সুদৃঢ় করবেন।

১২. (আর ঐ সময়ের কথাও স্মরণ কর) যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশতাদের নিকট প্রত্যাদেশ

لِيُحَقِّقَ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُونَ ۝

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي
مِهْدُكُمْ بِالْفَوْقِ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْسِلِينَ ۝

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ
بِهِ قُلُوبُكُمْ ۖ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ
اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النَّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنزِلُ
عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ
عَنكُم رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ
وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝

إِذْ يُوحَىٰ رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِينَ آمَنُوا ۖ سَأَلْتُنِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ

করলেনঃ আমি তোমাদের সাথে আছি, সুতরাং তোমরা ঈমানদারদের সঙ্গে থেকে শক্তি বৃদ্ধি করে তাদের সুপ্রতিষ্ঠিত ও অবিচল রাখা, আর যারা কাফির, আমি তাদের হৃদয়ে ভীতি সৃষ্টি করে দেবো, অতএব তোমরা তাদের ঘাড়ে আঘাত হানো, আর আঘাত হানো তাদের অঙ্গুলিসমূহের প্রতিটি জোড়ায় জোড়ায়।

১৩. এটা এই কারণে যে, তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরোধিতা করে, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরোধিতা করে তার জেনে রাখা উচিত যে, আল্লাহ শাস্তি দানে খুবই কঠোর হস্ত।

১৪. এটাই তোমাদের শাস্তি, সুতরাং তোমরা এর স্বাদ গ্রহণ কর, (তোমাদের জানা উচিত যে,) কাফেরদের জন্যে রয়েছে অগ্নির শাস্তি।

১৫. হে ঈমানদারগণ! তোমরা যখন যুদ্ধের ময়দানে কাফের সৈন্য বাহিনীর সম্মুখীন হবে, তখন তোমরা তাদের মুকাবিলা করা হতে কখনোই পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে না।

১৬. আর সেদিন যুদ্ধ কৌশল বা স্বীয় বাহিনীর কেন্দ্রস্থলে স্থান করে নেয়া ব্যতীত কেউ তাদেরকে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করলে অর্থাৎ পালিয়ে গেলে সে আল্লাহর গযবে নিপতিত হবে এবং তার আশ্রয়স্থল হবে জাহান্নাম, আর জাহান্নাম কতই না নিকৃষ্ট স্থান!

كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاصْبِرُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ
وَاصْبِرُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٣﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاقَّوْا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ ۗ وَمَنْ
يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدٌ
الْعَقَابِ ﴿١٤﴾

ذٰلِكُمْ فَاذُوْهُوَ وَاَنَّ لِلْكَافِرِيْنَ عَذَابٌ
النَّارِ ﴿١٥﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا زَحٰفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٦﴾

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ اِلَّا مُتَحَرِّفًا
لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلَىٰ فِعْلَةٍ فَعَدُوًّا يُغَضِّبُ
مِّنَ اللّٰهِ وَمَا وُجِهَتْ جَهَنَّمُ وِبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٧﴾

১৭. তোমরা তাদেরকে হত্যা করনি, বরং আল্লাহই তাদেরকে হত্যা করেছেন, আর (হে নবী ﷺ) যখন তুমি (খুলোবালি) নিষ্ফপ করেছিলে তখন তা মূলতঃ তুমি তা নিষ্ফপ করনি; বরং আল্লাহই তা নিষ্ফপ করেছিলেন, এবং এটা করা হয়েছিল মু'মিনদেরকে তাঁর পক্ষ থেকে তাদের কষ্টের উত্তম পুরস্কার দান করার জন্যে, নিঃসন্দেহে আল্লাহ সব কিছু শোনেন ও সব কিছু জানেন।

১৮. আর এমনিভাবেই আল্লাহ কাফিরদের চক্রান্ত দুর্বল ও নস্যাৎ করে থাকেন।

১৯. (হে কাফিরগণ!) তোমরা যদি সত্যের বিজয় চাও, বিজয় তো তোমাদের সামনেই এসেছে, তোমরা যদি এখনো (মুসলমানদের অনিষ্টকরণ হতে) বিরত থাকো, তবে তা তোমাদের পক্ষেই কল্যাণকর, আর যদি পুনরায় তোমরা এ হেন কাজ কর, তবে আমিও তোমাদেরকে পুনরায় শাস্তি দিবো, আর তোমাদের বিরাট বাহিনী তোমাদের কোনই উপকারে আসবে না, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মু'মিনদের সাথে রয়েছেন।

২০. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর, তোমরা যখন তাঁর কথা শুনছো তখন তোমরা তাঁর আনুগত্য হতে মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না।

২১. তোমরা ঐ সব লোকের মত হয়ো না, যারা বলেঃ আমরা আপনার

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُؤْمِنٌ كَيِّدٌ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾

اِنَّ سَتَقْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمْ الْفَتْحُ ۗ وَاِنَّ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَاِنْ تَعُوْذُوْا نَعُوْذُ ۗ وَلَنْ نُّغْنِيَ عَنْكُمْ فِئْتَكُمْ شَيْئًا ۗ وَاِنَّ كَثْرَتَ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ وَلَا تَوَلّٰوْا عَندهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ

কথা শুনলাম, কার্যতঃ তারা কিছুই শোনে না।

لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٦﴾

২২. আল্লাহর কাছে নিকৃষ্টতম জীব হচ্ছে ঐ সব বোবা ও বধির লোক, যারা কিছুই বুঝে না (অর্থাৎ বিবেক-বুদ্ধিকে কাজে লাগায় না)।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضَّمُّهُمُ الْبُكْمُ
الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾

২৩. আল্লাহ যদি জানতেন যে, তাদের মধ্যে কল্যাণকর কিছু নিহিত আছে তবে অবশ্যই তিনি তাদেরকে শুনবার তাওফীক দিতেন, তিনি যদি তাদেরকে শুনাতেনও তবুও তারা উপেক্ষা করতঃ মুখ ফিরিয়ে অন্য দিকে চলে যেতো।

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ
وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿١٨﴾

২৪. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহ ও রাসূল (ﷺ)-এর (আহ্বানে সাড়া দাও) যখন রাসূল তোমাদেরকে তোমাদের জীবন সঞ্চরক বস্তুর দিকে আহ্বান করেন, আর জেনে রেখে যে, আল্লাহ মানুষ ও তার অন্তরের মধ্যস্থলে অন্তরায় হয়ে থাকেন, পরিশেষে তাঁর কাছেই তোমাদেরকে সমবেত করা হবে।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ
إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ، وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ، وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٩﴾

২৫. তোমরা সেই ফিৎনাকে ভয় কর যা তোমাদের মধ্যকার যালিম ও পাপিষ্ঠদেরকেই বিশেষভাবে আক্রান্ত করবে না (বরং সবারই মধ্যে এটা সংক্রমিত হয়ে পড়বে এবং সবকেই বিপদগ্রস্ত করবে), তোমরা জেনে রেখে যে, আল্লাহ শাস্তি দানে খুব কঠোর।

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ
خَاصَّةً، وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٠﴾

২৬. (সেই মর্মান্তিক মুহূর্তটির কথা) তোমরা স্মরণ কর, যখন তোমরা ভূ-পৃষ্ঠে অল্প ছিলে ফলে দুর্বলরূপে

وَأَذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي
الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ

পরিগণিত হতে, আর তোমরা এই শঙ্কায় নিপতিত থাকতে যে, লোকেরা অকস্মাৎ তোমাদেরকে ধরে (ছিনিয়ে) নিয়ে যাবে, সুতরাং (এই অবস্থায়) আল্লাহুই তোমাদেরকে (মদীনায়) আশ্রয় দেন এবং স্বীয় সাহায্য দ্বারা তোমাদেরকে শক্তিশালী করেন, আর পবিত্র বস্তু দ্বারা তোমাদের জীবিকা দান করেন, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

২৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা জেনে শুনে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সাথে খিয়ানত করবে না, আর তোমাদের পরস্পরের আমানত সমূহেরও (গচ্ছিত দ্রব্যের সম্পর্কেও) খিয়ানত করবে না।

২৮. আর তোমরা জেনে রেখো যে, তোমাদের ধন-সম্পত্তি ও সম্ভান-সম্ভতি প্রকৃতপক্ষে পরীক্ষার সামগ্রী মাত্র, আর আল্লাহর নিকট (প্রতিফলের জন্যে) মহা পুরস্কার রয়েছে।

২৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা যদি আল্লাহকে ভয় কর তবে তিনি তোমাদেরকে ন্যায়-অন্যায় পার্থক্য করার একটি মানদণ্ড ও শক্তি দান করবেন, আর তোমাদের গোনাহখাতা মিটিয়ে দেবেন এবং তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন, আল্লাহ বড় অনুগ্রহশীল ও মঙ্গলময়।

৩০. আর (সেই সময়টিও স্মরণীয়) যখন কাফিররা তোমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করে যে, তোমাকে বন্দী

فَاُولَٰئِكَمۡ وَاٰیٰدِكُمۡ يَنْصُرُهُۥ وَرَزَقَكُمۡ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوۡنَ ﴿۲۷﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَخُوۡنُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوۡلَ
وَ تَخُوۡنُوۡا اٰمَنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوۡنَ ﴿۲۸﴾

وَاعْلَمُوۡا اَنَّهَا اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ فَتَنَةٌ
وَ اَنَّ اللّٰهَ عِنۡدَہٗ اَجْرٌ عَظِيۡمٌ ﴿۲ۯ﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا اِنۡ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلۡ لَّكُمْ
فُرْقٰنًا وَّ يَغْفِرۡ عَنْكُمۡ سَيِّۡاَتِكُمْ وَيَغْفِرۡ لَكُمْ ط
وَ اللّٰهُ ذُوۡ الْفَضْلِ الْعَظِيۡمِ ﴿۳۰﴾

وَ اِذۡ يَمَكُرُ بِكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِيُثَبِّتُوۡكَ اَوْ يَقْتُلُوۡكَ
اَوْ يُخْرِجُوۡكَ ط وَيَمَكُرُوۡنَ وَيَمَكُرُ اللّٰهُ ط وَ اللّٰهُ

করবে অথবা হত্যা করবে কিংবা নির্বাসিত করবে, তারাও ষড়যন্ত্র করতে থাকে এবং আল্লাহও ষড়যন্ত্র করতে থাকেন, আর আল্লাহ হচ্ছেন সর্বোত্তম ষড়যন্ত্রকারী।

৩১. তাদেরকে যখন আমার আয়াতসমূহ পাঠ করে শুনানো হয় তখন তারা বলেঃ আমরা শুনেছি, ইচ্ছা করলে আমরাও এর অনুরূপ বলতে পারি, নিঃসন্দেহে এটা পূর্ববর্তীদের মিথ্যা রচনা (উপকথা) ছাড়া আর কিছু নয়।

৩২. আর (সেই সময়টিও সম্মরণকর) যখন তারা বলেছিলঃ হে আল্লাহ! এটা (কুর'আন ও নবুয়াত) যদি আপনার পক্ষ হতে সত্য হয় তবে আমাদের উপর আকাশ থেকে প্রস্তর বর্ষণ করুন অথবা আমাদের কঠিন পীড়াদায়ক শাস্তি দিন।

৩৩. (হে নবী ﷺ) তুমি তাদের মধ্যে থাকা অবস্থায় তাদেরকে শাস্তি দেয়া হবে এটা আল্লাহর অভিপ্রায় নয়, আর আল্লাহ এটাও চান না যে, তারা ক্ষমা প্রার্থনা করতে থাকবে অথচ তিনি তাদেরকে শাস্তি প্রদান করবেন।

৩৪. কিন্তু এখন তাদের কি বলবার আছে যে, আল্লাহ তাদের শাস্তি দিবেন না, যখন তারা মসজিদুল হারামের পথ রোধ করছে, অথচ তারা মসজিদুল হারামের তত্ত্বাবধায়ক নয়, মুত্তাকী লোকেরাই হলো এর

خَيْرُ الْمَكْرِيْنَ ﴿٣١﴾

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا
لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٢﴾

وَإِذَا قَالُوا اللَّهُمَّ إِنَّ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ
عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حَجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ
أَوْ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٣﴾

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ط
وَ مَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٤﴾

وَمَا لَهُمْ آلَا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ
عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ط
إِنْ أَوْلِيَاءُؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٥﴾

তত্ত্বাবধায়ক; কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোকই এটা অবগত নয়।

৩৫. কা'বা ঘরের কাছে তাদের নামায (উপাসনা) শিষ দেয়া এবং তালি বাজানো ছাড়া অন্য কিছু ছিল না, সুতরাং তোমরা কুফরী করার কারণে এখন শাস্তির স্বাদ গ্রহণ কর।

৩৬. নিশ্চয়ই কাফির লোকেরা মানুষকে আল্লাহর পথ থেকে বিরত রাখার উদ্দেশ্যে তাদের ধন-সম্পদ ব্যয় করে, তারা তাদের ধন-সম্পদ ব্যয় করতেই থাকবে, অতঃপর ওটাই শেষ পর্যন্ত তাদের জন্যে দুঃখ ও আফসোসের কারণ হবে এবং তারা পরাভূতও হবে, আর যারা কুফরী করে তাদেরকে জাহান্নামে একত্রিত করা হবে।

৩৭. এটা এই কারণে যে, আল্লাহ ভাল হতে মন্দকে পৃথক করবেন আর মন্দদের এককে অপরের উপর রাখবেন, অতঃপর সকলকে একত্রিত করে জড়ো করবেন এবং জাহান্নামে নিক্ষেপ করবেন, এইসব লোকই চরম ক্ষতিগ্রস্ত লোক।

৩৮. (হে নবী ﷺ)! তুমি কাফিরদেরকে বলঃ তারা যদি কুফুরি থেকে বিরত থাকে (এবং আল্লাহর দ্বীনে ফিরে আসে) তবে পূর্বে যা হয়েছে তা আল্লাহ ক্ষমা করবেন, কিন্তু তারা যদি অন্যান্যের পুনরাবৃত্তি করে, তবে পূর্ববর্তী (কাফের) জাতিসমূহের সাথে যে আচরণ করা হয়েছিল তা তো অতীত ঘটনা। (অর্থাৎ শাস্তি অনিবার্য)

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً
وَتَصْدِيَةً ۖ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

لِيُذِئِرَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ
الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمُهُ جَمِيعًا
فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٣٧﴾

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ
سَلَفَ ۚ وَإِنْ يُعٰوِدُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

৩৯. তোমরা সদা তাদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে থাকবে যতক্ষণ না ফিৎনার অবসান হয় এবং দ্বীন সম্পূর্ণরূপে আল্লাহর জন্যেই হয়ে যায় (অর্থাৎ আল্লাহর তাওহীদ সামগ্রিকভাবে প্রতিষ্ঠিত হয়), আর তারা যদি ফিৎনা ও বিপর্যয় সৃষ্টি হতে বিরত থাকে তবে তারা যা করছে তা আল্লাহই দেখছেন।^১

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ
كُلَّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

৪০. আর যদি তোমাকে না-ই মানে ও দ্বীন থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহই তোমাদের (মুসলমানদের) অভিভাবক ও বন্ধু, তিনি কতইনা উত্তম অভিভাবক ও কতইনা উত্তম সাহায্যকারী!

وَإِنْ تَوَلَّوْا فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ
نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ সেই মহান সত্তার শপথ যাঁর হাতে আমার প্রাণ! অচিরেই ইবনে মারইয়াম [ঈসা আলাইহিস্ সালাম] ন্যায়বান শাসক হয়ে তোমাদের মাঝে অবতরণ করবেন (আসবেন)। তিনি ক্রুশ ভেঙে ফেলবেন, শূকর হত্যা করে ফেলবেন এবং জিয্যা উঠিয়ে দিবেন। আর সম্পদের প্রাচুর্য এত বেশি হবে যে, যে কেউই তা (দান) গ্রহণ করতে চাইবে না। (বুখারী, হাদীস নং ২২২২)

৪১. আর তোমরা জেনে রেখো যে, যুদ্ধে তোমরা যা কিছু গণীমতের মাল লাভ করেছো ওর এক পঞ্চমাংশ আল্লাহ, তাঁর রাসূল, নিকটাত্মীয়, ইয়াতীম, মিসকীন এবং মুসাফিরের জন্যে, (এই নিয়ম তোমরা মেনে চলবে।) যদি তোমরা ঈমান এনে থাকো আল্লাহর প্রতি এবং তার প্রতি যা আমি অবতীর্ণ করেছি আমার বান্দার উপর সেই চূড়ান্ত ফায়সালার দিন, (বদরের যুদ্ধের দিন) যে দিন দু'দল পরস্পরের সম্মুখীন হয়েছিল, আর নিশ্চয়ই আল্লাহ সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

৪২. (আর স্মরণ কর সেই সময়টির কথা) যখন তোমরা (মদীনা) প্রান্তরের নিকট প্রান্তে ছিলে, আর তারা (কাফির বাহিনী) মদীনা প্রান্তরের দূরবর্তী স্থানে শিবির রচনা করেছিল, আর উষ্টারোহী কাফেলা (আবু সুফিয়ানের নেতৃত্বে কুরাইশের মালসহ কাফেলা) তোমাদের অপেক্ষা নিম্নভূমিতে ছিল, যদি পূর্ব হতেই তোমাদের ও তাদের মধ্যে যুদ্ধ সম্পর্কে কোন সিদ্ধান্ত গ্রহণ করতে চাইতে তবে প্রতিশ্রুত সময়ের ব্যাপারে তোমাদের মধ্যে মতানৈক্য সৃষ্টি হতো; কিন্তু যা ঘটাবার ছিল তা আল্লাহ সম্পন্ন করবার জন্যে উভয় দলকে যুদ্ধক্ষেত্রে সমবেত করলেন, তাতে যে ধ্বংস হবে সে যেন সত্য সুস্পষ্টরূপে প্রকাশ হওয়ার পর ধ্বংস হয়, আর যে জীবিত থাকবে সে যেন সত্য সুস্পষ্টরূপে প্রকাশ হওয়ার পর জীবিত থাকে, আল্লাহ সর্বশ্রোতা ও মহাজ্ঞানী।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ
خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنْتُمْ أَمِنْتُمْ
بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ
يَوْمَ التَّتَقَى الْجَمْعُ ط وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿٤١﴾

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ
وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ ط وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لَأَخْتَلَفْتُمْ
فِي الْمِيْعِدِ ۗ وَلَكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ
مَفْعُولًا لَّيَهْدِيكَ مَنْ هَلَكَ عَن بَيْتِنَا وَيُخَيِّلِي
مَنْ حَىٰ عَن بَيْتِنَا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

৪৩. (আর স্মরণ কর সেই সময়ের কথা) যখন আল্লাহ তোমাকে স্বপ্নযোগে ওদের সংখ্যা অল্প দেখিয়েছিলেন, যদি তোমাকে তাদের সংখ্যা অধিক দেখাতেন তবে তোমরা সাহস হারিয়ে ফেলতে এবং যুদ্ধ সম্পর্কে তোমাদের মধ্যে মতানৈক্য সৃষ্টি হতো; কিন্তু আল্লাহ তোমাদেরকে রক্ষা করেছেন, অন্তরে যা কিছু আছে সে সম্পর্কে তিনি সবিশেষ অবহিত।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَايِكَ قَلِيلًا طَوَّلُوا أَرْكَهْمُ
كَثِيرًا أَفْشَلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ
سَلَّمَ ط إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

৪৪. (আর স্মরণ কর) যখন তোমরা শত্রুর সম্মুখীন হয়েছিলে তখন তিনি (আল্লাহ) তোমাদের চোখে তাদের সংখ্যা কম দেখালেন আর তাদের চোখেও তোমাদের সংখ্যা কম দেখালেন যাতে যা ঘটায় তা যেন তিনি ঘটিয়ে দেন। সকল প্রকার কার্য আল্লাহর পানেই প্রত্যাবর্তিত হয়।

وَإِذْ يُرِيكُهُمْ إِذِ التَّقِيَمُ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا
وَإَيُّكُمُ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضَى اللَّهُ أَمْرًا كَانَ
مَفْعُولًا ط وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

৪৫. হে মু'মিনগণ! যখন তোমরা কোন বাহিনীর সাথে প্রত্যক্ষ মুকাবিলায় অবতীর্ণ হবে তখন দৃঢ় ও স্থির থাকবে এবং আল্লাহকে অধিক পরিমাণে স্মরণ করবে, আশা করা যায় যে, তোমরাই সাফল্য লাভ করবে।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقَيْتُمْ فِئَةً فَاتَّبِعُوا
وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

৪৬. আর আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের তোমরা আনুগত্য করবে এবং নিজেদের মধ্যে ঝগড়া-বিবাদ করবে না, অন্যথায় তোমরা সাহস হারিয়ে দুর্বল হয়ে পড়বে এবং তোমাদের মনের দৃঢ়তা ও শক্তি বিলুপ্ত হবে, আর তোমরা ধৈর্যসহকারে সব কাজ

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا
وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَأَصْبِرُوا ط إِنَّ اللَّهَ مَعَ
الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾

করবে, আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সাথে রয়েছে।

৪৭. তোমরা তাদের ন্যায় হয়ো না যারা নিজেদের গৃহ হতে সদর্পে এবং লোকদেরকে (নিজেদের শক্তি) প্রদর্শন করতঃ বের হয়েছিল আর মানুষকে আল্লাহর পথ হতে বাধা সৃষ্টি করছিলো, তারা যা করে আল্লাহ তা পরিবেষ্টন করে রয়েছে।

৪৮. (ঐ সময়ের কথা স্মরণ কর) যখন শয়তান তাদের কার্যাবলীকে তাদের দৃষ্টিতে খুব চাকচিক্যময় ও শোভনীয় করে দেখাচ্ছিল, তখন সে গর্ব করে বলেছিলঃ কোন মানুষই আজ তোমাদের উপর বিজয় লাভ করতে পারবে না, আমি সাহায্যার্থে তোমাদের নিকটই থাকবো; কিন্তু উভয় বাহিনীর মধ্যে যখন প্রত্যক্ষ যুদ্ধ শুরু হলো তখন সে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করে সরে পড়লো এবং বললোঃ আমি তোমাদের থেকে সম্পূর্ণ মুক্ত (তোমাদের সাথে আমার কোন সম্পর্ক নেই,) আমি যা দেখছি তোমরা তা দেখ না, আমি আল্লাহকে ভয় করি, আল্লাহ শাস্তি দানে খুবই কঠোর।

৪৯. (ঐ মুহূর্তটির কথা স্মরণ কর) যখন মুনাফিকরা এবং যাদের অন্তরে ব্যাধি রয়েছে তারা বলতে লাগলো এদের দ্বীন এদেরকে প্রতারিত করেছে (অর্থাৎ এরা ধর্মান্বিত হয়ে পড়েছে), যারা আল্লাহর প্রতি পূর্ণমাত্রায় নির্ভরশীল হয় (তাদের

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطْرًا وَرِغَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَمْبَأَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ
لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ ۗ فَلَمَّا
تَرَآتِ الْفِئَتَيْنِ كَصَّ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۗ وَقَالَ إِنِّي
بِرَبِّي ۗ مُنْكَرٌ ۗ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

إِذْ يَقُولُ الْمُبْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ
عَرَاهُ هَوًىٰ ۗ دِينُهُمْ ۗ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ
اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

বেলায়) আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়।

৫০. (হে নবী ﷺ)! তুমি যদি ঐ অবস্থা দেখতে যখন ফেরেশতাগণ কাফেরদের রুহ কবজ করার সময় তাদের মুখমন্ডল ও পৃষ্ঠদেশে আঘাত হানেন (আর বলেন) তোমরা প্রজ্জ্বলিত জাহান্নামের শাস্তির স্বাদ গ্রহণ কর।

৫১. এই শাস্তি হলো তোমাদের সেই কাজেরই পরিণাম ফল যা তোমাদের দু'হাত পূর্বাঙ্কেই প্রেরণ করেছিল, (নতুবা) আল্লাহ তাঁর বান্দাদের উপর (কখনো) অত্যাচারী নন।

৫২. এটা ফিরাউনের বংশ ও তাদের পূর্ববর্তী লোকদের অবস্থার ন্যায়, তারা আল্লাহর নিদর্শনকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে অস্বীকার করলো, ফলে আল্লাহ তাদের পাপের কারণে তাদেরকে পাকড়াও করলেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মহা শক্তিমান ও কঠিন শাস্তি দাতা।

৫৩. এই শাস্তির কারণ এই যে, আল্লাহ কোন জাতির উপর নিয়ামত দান করে সেই নিয়ামত ততক্ষণ পর্যন্ত পরিবর্তন করেন না (উঠিয়ে নেন না), যতক্ষণ পর্যন্ত সেই জাতি নিজেরাই নিজেদের অবস্থা পরিবর্তন না করে, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মহাশ্রোতা ও মহাজ্ঞানী।

৫৪. তারা ফিরাউনের বংশধর ও তৎপূর্বের জাতিসমূহের ন্যায় তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনসমূহ মিথ্যা

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمْت اَيْدِيَكُمْ وَاِنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلّٰمٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾

كذّٰبِ اِلٰ فِرْعَوْنَ وَاَلَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط
كَفَرُوْا بِآيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ط
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكْ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا
عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ط
وَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾

كذّٰبِ اِلٰ فِرْعَوْنَ وَاَلَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط
كذّٰبُوْا بِآيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكَهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ط

প্রতিপন্ন করেছে। ফলে আমি তাদের পাপের কারণে তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছি এবং ফিরাউনের বংশধরদেরকে (সমুদ্রে) ডুবিয়ে দিয়েছি, তারা প্রত্যেকেই ছিল সীমালঙ্ঘনকারী।

৫৫. নিশ্চয়ই আল্লাহর নিকট নিকৃষ্ট জীব তারাই যারা কুফরী করে, সুতরাং তারা ঈমান আনে না।

৫৬. ওদের মধ্যে যাদের সাথে তুমি চুক্তিবদ্ধ হয়েছো, অতঃপর তারা প্রতিবারই কৃত চুক্তি ভঙ্গ করছে তারা (আল্লাহকে কিছুমাত্র) ভয় করে না।

৫৭. অতএব, তুমি যদি তাদেরকে যুদ্ধের ময়দানে আয়ত্তে আনতে পার তবে তাদের দ্বারা তুমি তাদেরকেও তাড়িয়ে দাও, যারা তাদের পিছনে রয়েছে, যাতে তারা শিক্ষা পায়।

৫৮. (হে নবী ﷺ)! তুমি যদি কোন সম্প্রদায়ের বিশ্বাস ভঙ্গের (খেয়ানতের) আশঙ্কা কর, তবে তোমার চুক্তিকেও প্রকাশ্যভাবে তাদের সামনে নিক্ষেপ করবে, (বাতিল করবে), নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বাস ভঙ্গকারীদেরকে পছন্দ করেন না।

৫৯. যারা কাফির তারা (বদর প্রান্তরে প্রাণ বাঁচাতে পেরে) যেন মনে না করে যে, তারা (ধরা ছোঁয়ার বাইরে) চলে গেছে, নিঃসন্দেহে

وَأَعْرَفْنَا آلَ فِرْعَوْنَ ۖ وَكُلَّ كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٥٥﴾

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٦﴾

الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ
فِي كُلِّ مِرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

فَأَمَّا تَشَقَّقَهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَنْ خَلْفَهُمْ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

وَأَمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَأَنْذِرْ إِلَيْهِمْ عَلَى
سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٩﴾

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۗ إِنَّهُمْ
لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

তারা (আল্লাহকে) অপারগ করতে পারবে না।

৬০. তোমরা কাফিরদের মুকাবিলা করার জন্যে যথাসাধ্য শক্তি ও সদা সজ্জিত অশ্ববাহিনী প্রস্তুত রাখবে, যা দ্বারা আল্লাহর শত্রু ও তোমাদের শত্রুদেরকে ভীত সন্ত্রস্ত করবে, এ ছাড়া অন্যান্যদেরকেও, যাদেরকে তোমরা জান না; কিন্তু আল্লাহ জানেন; আর তোমরা আল্লাহর পথে যা কিছু ব্যয় কর তার প্রতিদান তোমাদেরকে পুরোপুরি দেয়া হবে, তোমাদের প্রতি (কম দিয়ে) অত্যাচার করা হবে না।

৬১. যদি তারা (কাফিররা) সন্ধির দিকে ঝুঁকে পড়ে তবে তুমিও সন্ধি করতে আগ্রহী হও, আর আল্লাহর উপর ভরসা করো, নিঃসন্দেহে তিনি সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞাতা।

৬২. আর তারা যদি তোমাকে প্রতারিত করার ইচ্ছা করে তবে তোমার জন্যে আল্লাহই যথেষ্ট, তিনিই তোমাকে স্বীয় সাহায্য দ্বারা এবং মু'মিনগণ দ্বারা শক্তিশালী করেছেন।

৬৩. আর তিনি মু'মিনদের অন্তরে প্রীতি ও ঐক্য স্থাপন করেছেন, তুমি যদি পৃথিবীর সমুদয় সম্পদও ব্যয় করতে তবুও তাদের অন্তরে প্রীতি, সন্তাব ও ঐক্য স্থাপন করতে পারতে না; কিন্তু আল্লাহই ওদের পরস্পরের মধ্যে প্রীতি ও সন্তাব স্থাপন করে দিয়েছেন, নিঃসন্দেহে তিনি মহা শক্তিমান ও মহাকৌশলী।

وَاعِدُوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَ مِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهَبُونَ بِهِ عَدَاؤَ اللَّهِ وَعَدَاؤَكُمْ وَآخِرِينَ مِنْ دُونِهِمْ ۗ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ السَّبِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۗ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۗ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۗ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾

৬৪. হে নবী ﷺ! তোমার জন্যে ও তোমার অনুসারী মু'মিনদের জন্যে (সর্বক্ষেত্রে) আল্লাহই যথেষ্ট।

৬৫. হে নবী ﷺ! মু'মিনদেরকে জিহাদের জন্যে উদ্বুদ্ধ কর, তোমাদের মধ্যে যদি বিশজন ধৈর্যশীল মুজাহিদ থাকে তবে তারা দু'শ জন কাফিরের উপর জয়যুক্ত হবে, আর তোমাদের মধ্যে একশ' জন থাকলে তারা এক হাজার কাফিরের উপর বিজয়ী হবে, কারণ তারা এমন এক সম্প্রদায় যাদের বোধশক্তি নেই, কিছুই বোঝে না।

৬৬. আল্লাহ এখন তোমাদের দায়িত্বভার লাঘব করে দিলেন, তোমাদের মধ্যে যে (দৈহিক) দুর্বলতা রয়েছে সে সম্পর্কে তিনি অবগত আছেন, সুতরাং তোমাদের মধ্যে একশ'জন ধৈর্যশীল লোক থাকলে তারা দু'শজন কাফিরের উপর জয়যুক্ত হবে, আর এক হাজার জন থাকলে তারা আল্লাহর হুকুমে দু'হাজার জন কাফিরের উপর বিজয় লাভ করবে, আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সাথে রয়েছেন।

৬৭. কোন নবীর পক্ষে ততক্ষণ পর্যন্ত বন্দী লোক রাখা শোভা পায় না, যতক্ষণ পর্যন্ত ভূ-পৃষ্ঠ (দেশ) হতে শত্রু বাহিনী নির্মূল না হয়, তোমরা দুনিয়ার সম্পদ কামনা করছো, আর আল্লাহ চান পরকালের কল্যাণ, আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۖ
إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا
مِائَتِينَ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا
أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

الَّذِينَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ
فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ
وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفِينَ بِإِذْنِ
اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾

مَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يُكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّىٰ يُثْخِنَ
فِي الْأَرْضِ ۖ تُرِيدُونَ عَرَصَ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ
يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۖ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

৬৮. আল্লাহর লিপি পূর্বেই লিখিত না হলে তোমরা যা কিছু গ্রহণ করেছো তজ্জনে তোমাদের উপর মহাশাস্তি আপতিত হতো।

৬৯. সুতরাং যুদ্ধে তোমরা যা কিছু গণীমতরূপে লাভ করেছো তা হালাল ও পবিত্ররূপে ভোগ কর, আর আল্লাহকে ভয় কর, নিঃসন্দেহে আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়ালু।

৭০. হে নবী ﷺ! তোমাদের হাতে যেসব বন্দী রয়েছে তাদেরকে বল, আল্লাহ যদি তোমাদের অন্তরে কল্যাণকর কিছু রয়েছে তা অবগত হন তবে তোমাদের হাতে (মুক্তিপণরূপে) যা কিছু নেয়া হয়েছে তা অপেক্ষা উত্তম কিছু দান করবেন এবং তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিবেন, আল্লাহ ক্ষমাশীল ও দয়ালু।

৭১. আর তারা যদি তোমার সাথে বিশ্বাসঘাতকতা করার ইচ্ছা রাখে, তবে এর পূর্বে আল্লাহর সাথেও তারা বিশ্বাসঘাতকতা করেছিল, সুতরাং (এর শাস্তি স্বরূপ) তিনি তাদের উপর তোমাকে শক্তিশালী করেছেন, আল্লাহ্ সর্বজ্ঞ ও প্রজ্ঞাময়।

৭২. নিশ্চয়ই যারা ঈমান এনেছে, ঘীনের জন্যে হিজরত করেছে, নিজেদের জানমাল দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে, এবং যারা (মুহাজির মু'মিনদের) আশ্রয় দিয়েছে ও সাহায্য করেছে, তারা পরস্পরের বন্ধু, আর যারা ঈমান এনেছে; কিন্তু হিজরত করেনি, তারা হিজরত না

لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا
أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾

فَكُلُوا مِمَّا غَنَبْتُمْ حَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ط
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَن فِي أَيْدِيكُمْ مِّنَ الْأُسْرَىٰ
إِن يَْعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا فَيُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا
أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ط وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾

وَإِن يُرِيدُوا إِخِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن
قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ أَوْوَا
وَأَصْرُوا أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٌ ط
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِّن
وَلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ؕ

করা পর্যন্ত তাদের অভিভাবকত্বের কোন দায়িত্ব তোমাদের নেই, আর তারা যদি স্বীনের ব্যাপারে তোমাদের নিকট সাহায্যপ্রার্থী হয় তবে তাদের সাহায্য করা তোমাদের কর্তব্য; কিন্তু তোমাদের ও যে জাতির মধ্যে চুক্তি রয়েছে তাদের বিরুদ্ধে নয়, তোমরা যা করছো আল্লাহ তা খুব ভালরূপেই দর্শন করছেন।

৭৩. আর যারা কুফরী করছে তারা পরস্পর পরস্পরের বন্ধু, তোমরা যদি (উপরোক্ত) বিধান কার্যকর না কর তবে ভূ-পৃষ্ঠে ফিৎনা ও মহাবিপর্ষয় হবে।

৭৪. যারা ঈমান এনেছে, (স্বীনের জন্যে) হিজরত করেছে এবং আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে, আর যারা (মু'মিনদেরকে) আশ্রয় দিয়েছে এবং যাবতীয় সাহায্য-সহানুভূতি করেছে, তারাই হলো প্রকৃত মুমিন, তাদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা।

৭৫. আর যারা পরে ঈমান এনেছে ও হিজরত করেছে এবং তোমাদের সাথে একত্র হয়ে জিহাদ করেছে, তারা তোমাদেরই অন্তর্ভুক্ত, আল্লাহর বিধানে আত্মীয়গণ পরস্পরে একে অন্যের অপেক্ষা বেশি হকদার, নিঃসন্দেহে আল্লাহ প্রতিটি বস্তু সম্পর্কে ভালরূপে অবহিত।

وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ
النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ط
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٣﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ط
إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ
وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٤﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَدُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٥﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدِ وَهَاجَرُوا وَجْهَدُوا مَعَكُمْ ط
فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ط وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ
بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ط إِنَّ اللَّهَ بِحُلُ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾

সূরাঃ তাওবা মাদানী

(আয়াতঃ ১২৯, রুকূ'ঃ ১৬)

سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٢٩ رُكُوعَاتُهَا ١٦

১. আল্লাহর পক্ষ হতে ও তাঁর রাসূলের পক্ষ হতে অব্যাহতি (ঘোষণা করা) হচ্ছে ঐ মুশরিকদের (অঙ্গীকার) হতে যাদের সাথে তোমরা সন্ধি করে রেখেছিলে।

২. সুতরাং (হে মুশরিকরা) তোমরা এই ভূ-মন্ডলে চার মাস বিচরণ করে নাও এবং জেনে রাখো যে, তোমরা আল্লাহকে অক্ষম করতে পারবে না, আর নিশ্চয়ই আল্লাহ কাফিরদেরকে অপদস্থ করবেন।

৩. আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের পক্ষ থেকে হচ্ছে আকবারের দিন (১০ যুলহিজ্জা) জনগণের সামনে ঘোষণা করা হচ্ছে যে, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল উভয়ই এই মুশরিকদের (নিরাপত্তা প্রদান করা) হতে নিঃসম্পর্ক হচ্ছেন; তবে যদি তোমরা তাওবা করে নাও তাহলে তা তোমাদের জন্যে উত্তম, আর যদি তোমরা বিরত হও তবে জেনে রাখো যে, তোমরা আল্লাহকে অক্ষম করতে পারবে না, আর (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) এই কাফিরদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সু-সংবাদ দিয়ে দাও।

৪. কিম্ব হ্যাঁ! ঐসব মুশরিক হচ্ছে স্বতন্ত্র যাদের নিকট থেকে তোমরা অঙ্গীকার নিয়েছো, অতঃপর তারা

بَرَاءَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ①

فَيَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَلِمُوا أَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ②

وَإِذْ أَنْ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ
الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ
وَرَسُولُهُ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلِمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ
وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ③

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ
يَنْقُصُوا شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا

তোমাদের সাথে (অস্বীকার পালনে) একটুও ক্রটি করেনি এবং তারা তোমাদের বিরুদ্ধে কাউকেও সাহায্য করেনি, সুতরাং তাদের সন্ধি-চুক্তিকে তাদের নির্ধারিত সময় পর্যন্ত পূর্ণ কর; নিশ্চয়ই আল্লাহ সংযমশীল-দেরকে পছন্দ করেন।

৫. অতঃপর, যখন নিষিদ্ধ মাসগুলো অতিবাহিত হয়ে যায় তখন ঐ মুশরিকদেরকে যেখানে পাও (বধ) হত্যা কর, তাদেরকে শ্রেফতার কর, তাদেরকে অবরোধ করে রাখো এবং প্রত্যেক ঘাঁটিস্থলে তাদের সন্ধানে অবস্থান কর, অতঃপর যদি তারা তওবা করে নেয়, নামায আদায় করে এবং যাকাত দেয়, তবে তাহাদের পথ ছেড়ে দাও, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতিশয় ক্ষমাপরায়ণ, পরম করুণাময়।^১

فَاتِمُوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مَدَّتِهِمْ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٥﴾

فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرْمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ
حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَأَحْصُرُوهُمْ وَاتَّقُوا
لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ إِنَّا أَنَا مَوْلَا الصَّلَاةِ وَاتَّقُوا
الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেনঃ যখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ওফাত লাভ করলেন এবং আবু বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) খলিফা হলেন, তখন কতিপয় আরব মুরতাদ হয়ে কুফরী দিকে ফিরে গেল। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, হে আবু বকর! আপনি কি করে এদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে পারেন অথচ আল্লাহর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমি ততক্ষণ পর্যন্ত লোকদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে নির্দেশ পেয়েছি যতক্ষণ না তারা বলবে, ‘লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ’ (আল্লাহ্ ব্যতীত আর সত্য কোন ইলাহ নেই) এবং যে কেউ (কালেমা) ‘লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ’ বলবে, সে তার জান-মাল আমার হাত থেকে রক্ষা করল, যদি না সে (শরীয়তে শাস্তিযোগ্য কোন অপরাধে দোষী সাব্যস্ত হয়) কোন বৈধ কারণে (হত্যাযোগ্য হয়)। এবং তার হিসেব হবে আল্লাহর দরবারে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯২৪)

(খ) আবু বকর বললেন, আল্লাহর কসম! যে নামায ও যাকাতের মধ্যে পার্থক্য করবে আমি তার বিরুদ্ধে লড়াই করব, কেননা যাকাত হচ্ছে ঐ হক যা (আল্লাহ্ প্রদত্ত নির্দেশের বলে) সম্পদ থেকে আদায় করতে হবে। আল্লাহর নামে কসম! যদি তারা রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে যে যাকাত দিত তা থেকে একটি বকরীর বাচ্চাও দিতে অস্বীকার করে তাহলে আমি তাদের বিরুদ্ধে লড়াই করব যতক্ষণ না তা পুনর্বহাল করতে পারি। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, আল্লাহর কসম! এটা আর কিছুই নয়, বরং আমি লক্ষ্য করলাম যে, আল্লাহ্ তা’আলা আবু বকর (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর লড়াইর সিদ্ধান্ত গ্রহণের জন্য অন্তর খুলে দিয়েছেন, সুতরাং আমি উপলব্ধি করলাম যে, তার সিদ্ধান্ত সঠিক। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯২৫)

৬. আর যদি মুশরিকদের মধ্য হতে কেউ তোমার কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করে, তবে তাকে আশ্রয় দান কর, যাতে সে আল্লাহর কালাম শুনতে পায়, অতঃপর তাকে তার নিরাপদ স্থানে পৌঁছিয়ে দাও, এ আদেশ এ জন্যে যে, এরা এমন লোক, যারা পূর্ণ জ্ঞান রাখে না।

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ
حَتَّى يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ط ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ⑥

৭. এই (কুরায়েশ), মুশরিকদের অঙ্গীকার আল্লাহ ও তাঁর রাসুলের নিকট কিরূপে (বলবৎ) থাকবে? কিন্তু যাদের থেকে তোমরা মসজিদুল হারামের সন্নিহিতে অঙ্গীকার নিয়েছো, অতএব যে পর্যন্ত তারা তোমাদের সাথে (চুক্তিতে) সরলভাবে থাকে, তোমরাও তাদের সাথে (চুক্তিতে) সরলভাবে থাকবে, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মুত্তাকীদের পছন্দ করেন।

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ
رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ط
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ⑦

৮. তাদের অঙ্গীকারের কি মূল্য? অথচ অবস্থা এই যে, যদি তারা তোমাদের উপর বিজয় লাভ করে, তবে তোমাদের আত্মীয়তার সম্পর্কের দিকেও খেয়াল করবে না এবং অঙ্গীকারেরও না, তারা তোমাদেরকে নিজেদের মুখের কথায় সন্তুষ্ট করছে কিন্তু তাদের অন্তরসমূহ অস্বীকার করে, আর তাদের অধিকাংশ লোকই ফাসেক।

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ
إِلَّا وَالْذِمَّةَ ط يَرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَى
قُلُوبُهُمْ ⑧ وَكَثَرُهُمْ فِسْقُونَ ⑨

৯. তারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে স্বল্প মূল্যে বিক্রয় করেছে, তারা তাঁর পথে বাধা সৃষ্টি করেছে, নিশ্চয় তাদের কাজ অতি মন্দ।

اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن
سَبِيلِهِ ط إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑩

১০. তারা কোন মু'মিনের ব্যাপারে আত্মীয়তার মর্যদাও রক্ষা করে না এবং অঙ্গীকারেরও না; আর তারাই (বিশেষতঃ এ ব্যাপারে) হলো সীমালঙ্ঘনকারী।

১১. অতএব যদি তারা তাওবা করে নেয় এবং নামায পড়তে থাকে ও যাকাত দিতে থাকে, তবে তারা তোমাদের ধ্বনি ভাই হয়ে যাবে; আর আমি জ্ঞানী লোকদের জন্যে আয়াতসমূহ (বিধানাবলী) বিস্তারিত-ভাবে বর্ণনা করে থাকি।

১২. আর যদি তারা অঙ্গীকার করার পর নিজেদের শপথগুলোকে ভঙ্গ করে ফেলে এবং তোমাদের ধ্বিনের প্রতি অপবাদ দেয়, তবে তোমরা কুফুরের অগ্রনায়কদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, (এই অবস্থায়) তাদের শপথ রইলো না, হয়তো তারা বিরত থাকবে।

১৩. তোমরা এমন লোকদের বিরুদ্ধে কেন যুদ্ধ করবে না যারা নিজেদের শপথগুলো ভঙ্গ করে ফেলেছে, আর রাসূলকে দেশান্তর করার সিদ্ধান্ত গ্রহণ করেছে এবং তারা তোমাদের বিরুদ্ধে নিজেরাই প্রথমে বিবাদ সৃষ্টি করেছে? তোমরা কি তাদেরকে ভয় করছো? বস্তুতঃ আল্লাহই হচ্ছেন এ বিষয়ে বেশি হকদার যে, তোমরা তাঁকে ভয় কর, যদি তোমরা মু'মিন হয়ে থাকো।

১৪. তোমরা তাদের সাথে যুদ্ধ কর, আল্লাহ তোমাদের হাতে তাদের শাস্তি

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَا لَا ذِمَّةً ط
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ⑩

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ط وَنَفَصِلُ إِلَيْتُمْ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ⑪

وَإِنْ تَكْفُرُوا أَيَّانَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ
وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَيْمَةَ الْكُفْرِ
إِنَّهُمْ لَا أَيَّانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ⑫

أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا نُّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا
بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ط
أَتَخْشَوْنَهُمْ فَأَلَّهْ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ⑬

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِيهِمْ

প্রদান করবেন এবং তাদেরকে লাঞ্চিত করবেন, আর তোমাদেরকে তাদের উপর সাহায্য করবেন এবং মু'মিনদের অন্তরসমূহকে প্রশান্ত ও ঠাণ্ডা করবেন।

১৫. আর তাদের অন্তরসমূহের ক্ষোভ (ও ক্রোধ) দূর করে দিবেন এবং (ঐ কাফিরদের মধ্যকার) যার প্রতি ইচ্ছা হয় তাওবা কবূল করবেন, আল্লাহ মহাজ্ঞানী প্রজ্ঞাময়।

১৬. তোমরা কি ধারণা করেছো যে, তোমাদেরকে এভাবেই ছেড়ে দেয়া হবে? অথচ আল্লাহ তো এখনও সেই সব লোককে (প্রকাশ্যভাবে) প্রকাশ করেননি, যারা তোমাদের মধ্য হতে জিহাদ করেছে এবং আল্লাহ, তাঁর রাসূল ও মু'মিনগণ ছাড়া অন্য কাউকেও অন্তরঙ্গ বন্ধুরূপে গ্রহণ করেনি; আর আল্লাহ তোমাদের সমস্ত কর্মের পূর্ণ খবর রাখেন।

১৭. মুশরিকরা যখন নিজেরাই নিজেদের কুফুরী স্বীকার করে সাক্ষ্য দেয় তখন তারা আল্লাহর মসজিদের রক্ষণাবেক্ষণ করবে এটা সঙ্গত নয়। তারা এমন যাদের সমস্ত কর্ম ব্যর্থ এবং তারা জাহান্নামে স্থায়ীভাবে অবস্থান করবে।

১৮. হ্যাঁ, আল্লাহর মসজিদগুলো আবাদ তারাই করবে, যারা আল্লাহর প্রতি ও কিয়ামত দিবসের প্রতি ঈমান আনয়ন করে এবং নামায আদায় করে ও যাকাত প্রদান করে, আর আল্লাহ ছাড়া কাউকেও ভয় করে

وَيُنْصِرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيُشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾

وَيُدْهَبُ غَيْظُ قُلُوبِهِمْ ط وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٦﴾

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِجَنَّةٍ ط وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْبُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكَفْرِ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ط وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٨﴾

إِنَّمَا يَعْبُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ تَفَعَّلَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٩﴾

না, বস্তুতঃ এ সকল লোক সম্বন্ধে আশা যে, তারা হেদায়েত প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

১৯. তোমরা কি হাজীদের পানি পান করানোকে এবং মসজিদুল হারামের আবাদ (রক্ষণাবেক্ষণ করে) রাখাকে সেই ব্যক্তির (কাজের) সমান সাব্যস্ত করে রেখেছো, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও কিয়ামত দিবসের প্রতি ঈমান এনেছে ও আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে? তারা আল্লাহর নিকটে সমান নয়; আর আল্লাহ যালিম সম্প্রদায়কে হেদায়েত দান করেন না।

২০. যারা ঈমান এনেছে ও হিজরত করেছে, আর নিজেদের ধন ও প্রাণ দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে, তারা আল্লাহর নিকটে অতি বড় মর্যাদাবান আর তারাই হচ্ছে পূর্ণ সফলকাম।^১

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوْنَ عِنْدَ اللَّهِ ط وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَعْظَمَ دَرَجَةً عِنْدَ
اللَّهِ ط وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের প্রতি ঈমান আনে, নামায কায়েম করে এবং রোযা রাখে, সে আল্লাহর পথে জিহাদ করুক কিংবা তাঁর জন্মভূমিতে চূপচাপ বসে থাকুক, তাকে জান্নাত দান করা আল্লাহর জন্য কর্তব্য হয়ে দাঁড়ায়। লোকেরা বলল, হে আল্লাহর রাসূল! আমরা কি এ সুসংবাদ অন্য লোকদেরকে জানাব না? তিনি বললেন, আল্লাহ তাঁর পথে জিহাদকারীদের জন্য জান্নাতে একশ'টি মর্যাদার স্তর তৈরি করে রেখেছেন। যে কোন দু'টি স্তরের মাঝখানে আসমান ও যমীনের ব্যবধান। কাজেই তোমরা আল্লাহর কাছে প্রার্থনা করলে ফেরদাউসের জন্য প্রার্থনা করো। কেননা সেটিই জান্নাতের সর্বোচ্চ ও সর্বোত্তম অংশ। এরই উপরিভাগে মহান করুণাময় আর-রাহমানের আরশ, যেখান থেকে জান্নাতের নদীসমূহ প্রবাহিত হচ্ছে। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৯০)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছিঃ সেই পবিত্র সত্তার শপথ যাঁর মুঠোর মধ্যে আমার প্রাণ! যদি কিছু সংখ্যক মুসলমান এমন না হতো যারা আমার সাথে জিহাদে অংশগ্রহণ করার পরিবর্তে পেছনে থেকে যাওয়া আদৌ পছন্দ করবে না এবং যাদের সবাইকে আমি সাওয়ারীর জন্তু সরবরাহ করতে পারবো না বলে আশঙ্কা না হতো, তাহলে আল্লাহর পথে যুদ্ধরত কোন ক্ষুদ্র সেনাদল থেকেও আমি পেছনে থাকতাম না। যাঁর হাতে আমার প্রাণ সেই মহান সত্তার শপথ করে বলছি, আমার নিকট অত্যন্ত পছন্দনীয় বিষয় হচ্ছে আমি আল্লাহর পথে নিহত (শহীদ) হয়ে যাই অতঃপর জীবন লাভ করি, আবার নিহত (শহীদ) হই, অতঃপর আবার জীবন লাভ করি, আবার নিহত (শহীদ) হই, পুনরায় জীবন লাভ করি এবং পুনরায় নিহত (শহীদ) হই। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৯৭)

২১. তাদের প্রতিপালক তাদেরকে নিজের পক্ষ থেকে সুসংবাদ দিচ্ছেন বড় রহমতের ও অতি সন্তুষ্টির, আর এমন জান্নাতের, যার মধ্যে তাদের জন্যে চিরস্থায়ী নিয়ামত থাকবে।

২২. এর মধ্যে তারা অনন্তকাল থাকবে, নিঃসন্দেহে আল্লাহর নিকট রয়েছে মহা পুরস্কার।

২৩. হে মু'মিনগণ! তোমরা নিজেদের পিতৃদেরকে ও ভ্রাতাদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না যদি তারা ঈমানের মুকাবিলায় কুফরকে প্রিয় মনে করে; আর তোমাদের মধ্য হতে যারা তাদের সাথে বন্ধুত্ব রাখবে, বস্তুতঃ ঐ সব লোকই হচ্ছে বড় অত্যাচারী।

২৪. (হে নবী ﷺ)! তুমি তাদেরকে বলে দাও; যদি তোমাদের পিতৃবর্গ, তোমাদের পুত্রগণ, তোমাদের ভ্রাতাগণ, তোমাদের স্ত্রীগণ, তোমাদের স্বগোত্র, আর ঐ সব ধন-সম্পদ যা তোমরা অর্জন করছো, আর ঐ ব্যবসায় যাতে তোমরা মন্দা পড়বার আশঙ্কা করছো এবং ঐ গৃহসমূহ যা তোমরা পছন্দ করছো, (যদি এসব) তোমাদের নিকট অধিক প্রিয় হয় আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের চেয়ে এবং তাঁর পথে জিহাদ করার চেয়ে, তবে তোমরা প্রতীক্ষা করতে থাকো এই পর্যন্ত যে, আল্লাহ নিজের নির্দেশ পাঠিয়ে দেন, (অর্থাৎ আযাব) আর আল্লাহ ফাসেক সম্প্রদায়কে হেদায়েত দান করেন না।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّتِ
لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿٢١﴾

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَكَ أَجْرٌ
عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ
أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ
يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ
وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا
وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا
أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ
فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾

২৫. অবশ্যই আল্লাহ তোমাদেরকে (যুদ্ধে) বহু জায়গায় (কাফিরদের উপর) বিজয়ী করেছেন এবং ছনায়েনের দিনেও, যখন তোমাদেরকে তোমাদের সংখ্যাধিক্য গর্বে আনন্দিত করেছিল, অতঃপর সেই সংখ্যাধিক্য তোমাদের কোনই কাজে আসেনি, আর ভূ-পৃষ্ঠ (নিজের প্রশস্ততা সত্ত্বেও তো) তোমাদের উপর সংকীর্ণ হতে লাগলো, অতঃপর তোমরা পৃষ্ঠ প্রদর্শন পূর্বক পলায়ন করলে।

২৬. অতঃপর আল্লাহ নিজ রাসূলের প্রতি এবং অন্যান্য মু'মিনদের প্রতি নিজের (পক্ষ হতে) প্রশান্তি নাযিল করলেন এবং এমন সৈন্যদল (অর্থাৎ ফেরেশতা) নাযিল করলেন যাদেরকে তোমরা দেখনি, আর কাফিরদেরকে শাস্তি প্রদান করলেন; আর এটা হচ্ছে কাফিরদের কর্মফল।

২৭. অতঃপর এরপরেও (ঐ কাফিরদের মধ্য হতে) যার প্রতি ইচ্ছা তাওবা কবুল করবেন। আর আল্লাহ হচ্চেন অতি ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

২৮. হে মু'মিনগণ! মুশরিকরা হচ্ছে একেবারেই অপবিত্র, অতএব তারা যেন এ বছরের পর মসজিদুল হারামের নিকটেও আসতে না পারে, আর যদি তোমরা দরিদ্রের ভয় কর তবে আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তোমাদেরকে অভাবমুক্ত করে দিবেন, যদি তিনি চান, নিশ্চয়ই

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۗ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۖ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحَبَتْ ۖ ثُمَّ وَابَيْتُمْ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾

ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَدَّابَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكٰفِرِينَ ﴿٢٦﴾

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عِلْمِهِمْ هَذَا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنِ شَاءَ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾

আল্লাহ অতিশয় জ্ঞানী বড়ই হিকমতওয়ালা।

২৯. যেসব আহলে কিতাব আল্লাহর প্রতি ঈমান রাখে না এবং কিয়ামত দিবসের প্রতিও না, আর ঐ বস্তুগুলোকে হারাম মনে করে না যেগুলোকে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল হারাম বলেছেন, আর সত্য দ্বীন (অর্থাৎ ইসলামকে) গ্রহণ করে না, তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতে থাকো যে পর্যন্ত না তারা (অধীনতা স্বীকার করে (প্রজারূপে) নিজ হাতে জিযিয়া^১ দিতে স্বীকৃত হয়।

৩০. ইয়াহূদীরা বলেঃ উযায়ের আল্লাহর পুত্র এবং নাসারারা বলেঃ মাসীহ আল্লাহর পুত্র, এটা তাদের মুখের কথা মাত্র (বাস্তবে তা কিছই নয়), তারা তো তাদের ন্যায়ই কথা বলছে যারা তাদের পূর্বে কাফির হয়েছে, আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করুন! তারা উল্টো কোন দিকে যাচ্ছে!

৩১. তারা আল্লাহকে ছেড়ে নিজেদের আলেম ও ধর্ম-যাজকদেরকে প্রভু বানিয়ে নিয়েছে এবং মারইয়ামের পুত্র মাসীহকেও অথচ তাদের প্রতি শুধু এই আদেশ করা হয়েছিল যে, তারা শুধুমাত্র এক মা'বুদের ইবাদত করবে যিনি ব্যতীত কোন সত্য

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا يَأْتِيهِمُ
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ
صَغِيرُونَ ﴿٢٩﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عِزَّىٰ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصْرَى
الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ط ذَلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ
يُضَاهَوْنَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ط قَاتِلْهُمْ
اللَّهُ ۗ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾

اتَّخَذُوا أَحْبَابَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا
لِيُعْبَدُوا إِلَهًا وَاحِدًا ۗ لَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحٰنَهُ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা ইয়াহূদীদের বিরুদ্ধে লড়াইয়ে লিপ্ত না হওয়া পর্যন্ত এবং পাথরের আড়ালে লুকানো ইয়াহূদী সম্পর্কে উক্ত পাথর একথা না বলা পর্যন্ত কিয়ামত হবে না। হে মুসলিম! এই (দেখ) আমার আড়ালে ইয়াহূদী লুকিয়ে আছে, একে হত্যা কর। (বুখারী, হাদীস নং ২৯২৬)

উপাস্য নেই। তিনি তাদের অংশী স্থির করা হতে পবিত্র।

৩২. তারা এরূপ চাচ্ছে যে, আল্লাহর নূরকে নিজেদের মুখের ফুৎকার দ্বারা নিভিয়ে দেবে, অথচ আল্লাহ স্বীয় নূর (দ্বীন ইসলাম)-কে পূর্ণত্বে পৌঁছানো ব্যতীত ক্ষান্ত হবেন না, যদিও কাফিররা অপছন্দ করে।

৩৩. তিনি সেই সত্তা যিনি নিজ রাসূলকে হিদায়াত (কুরআন) এবং সত্য দ্বীন সহকারে প্রেরণ করেছেন, যেন তাকে সকল দ্বীনের উপর বিজয়ী করে দেন, যদিও মুশরিকরা অপছন্দ করে।

৩৪. হে মু'মিনগণ! অধিকাংশ (ইয়াহুদী ও খ্রিস্টানদের) আলেম ও ধর্মযাজকগণ মানুষের ধন-সম্পদ অন্যায়রূপে ভক্ষণ করে এবং আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখে, আর যারা (অতি লোভের বশবর্তী হয়ে) স্বর্ণ ও রৌপ্য জমা করে রাখে এবং তা আল্লাহর পথে ব্যয় করে না, (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) তুমি তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক এক শাস্তির সুসংবাদ শুনিতে দাও।

৩৫. যে দিন জাহান্নামের আগুনে ঐশুলোকে উত্তপ্ত করা হবে। অতঃপর তা দ্বারা তাদের ললাটসমূহে, পার্শ্বদেশসমূহে এবং পৃষ্ঠদেশসমূহে দাগ দেয়া হবে, (আর বলা হবে) এটা হচ্ছে ওটাই যা তোমরা নিজেদের জন্যে সঞ্চয় করে

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۗ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَجْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لِيَآكُفُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٤﴾

يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَيُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وظُهُورُهُمْ هَذَا مَا كَنْزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كَنْتُمْ تَكْنِزُونَ ﴿٣٥﴾

রেখেছিলে, সুতরাং এখন নিজেদের
সম্পদের স্বাদ গ্রহণ কর।

৩৬. নিশ্চয়ই মাসসমূহের সংখ্যা
হচ্ছে আল্লাহর নিকট বারো মাস
আল্লাহর কিতাবে, আল্লাহর যমীন ও
আসমানসমূহ সৃষ্টি করার দিন হতেই,
এর মধ্যে বিশেষরূপে চারটি মাস
হচ্ছে সম্মানিত; এটাই হচ্ছে
সুপ্রতিষ্ঠিত দ্বীন। অতএব তোমরা এ
মাসগুলোতে (দ্বীনের বিরুদ্ধাচরণ ও এই
মাসগুলোর সম্মানহানী করে)
নিজেদের ক্ষতিসাধন করো না, আর
সকল মুশরিকদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর,
যেমন তারা তোমাদের সকলের
বিরুদ্ধে যুদ্ধ করে, আর জেনে রেখো
যে, আল্লাহ মুত্তাকীদের সাথে
রয়েছেন।

৩৭. নিশ্চয় মাসগুলো পিছিয়ে দেয়া
কুফরের মাত্রাকে আরোও বাড়িয়ে
দেয়, যা দ্বারা কাফিরদেরকে পথভ্রষ্ট
করা হয় (এইরূপে) যে, তারা সেই
হারাম মাসকে কোন বছর হালাল
করে নেয় এবং কোন বছর হারাম
মনে করে, আল্লাহ যেই মাসগুলোকে
হারাম করেছেন, যেন তারা
সেগুলোর সংখ্যা পূর্ণ করে নিতে
পারে, অতঃপর তারা আল্লাহর নিষিদ্ধ
মাসগুলোকে হালাল করে নেয়,
তাদের দুর্কর্মগুলো তাদের কাছে ভাল
মনে হয়, আর আল্লাহ এইরূপ
কাফিরদেরকে হিদায়াত (এর
তাওফীক দান) করেন না।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا
فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرْمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَدِيمُ ۗ
فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ
كَأَنَّهُمْ كَمَا قَاتَلْتُمُوكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضِلُّ بِهِ الَّذِينَ
كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِيُوَاطِّئُوا
عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ طَرِيقًا
لَهُمْ سَوَاءٌ أَعْمَلُوا أَمْ لَمْ يَفْعَلُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

১। চারটি সম্মানিত মাসগুলো হচ্ছেঃ যুলকাদাহ, জুলহিজ্জাহ, মুহাররাম ও রজব।

৩৮. হে মু'মিনগণ! তোমাদের কি হলো যে, যখন তোমাদেরকে বলা হয়— আল্লাহর পথে (জিহাদের জন্যে) বেরিয়ে পড়, তখন তোমরা মাটিতে লেগে থাকো (অলসভাবে বসে থাকো); তবে কি তোমরা পরকালের বিনিময়ে পার্থিব জীবনের উপর পরিতুষ্ট হয়ে গেলে? বস্তুতঃ পার্থিব জীবনের ভোগবিলাস তো আখিরাতের তুলনায় কিছু নয়, অতি সামান্য!²

৩৯. যদি তোমরা বের না হও, তবে আল্লাহ তোমাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রদান করবেন এবং তোমাদের পরিবর্তে অন্য এক জাতি সৃষ্টি করে দেবেন, আর তোমরা আল্লাহর কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। আল্লাহ্ সর্ব বিষয়ে সর্ব শক্তিমান।

৪০. যদি তোমরা তাকে (রাসূলুল্লাহকে) সাহায্য না কর তবে আল্লাহই (তার সাহায্য করবেন যেমন তিনি) তার সাহায্য করেছিলেন সেই সময়ে যখন কাফিররা তাঁকে দেশান্তর করে দিয়েছিল, তিনি দু'জনের মধ্যে দ্বিতীয় ব্যক্তি (রাসূল ﷺ) যেই সময় উভয়ে গুহায় ছিলেন যখন তিনি স্বীয় সাথীকে (আবু বকরকে ﷺ)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَتَأْتَلُم إِلَى الْأَرْضِ ط أَرْضِيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۗ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾

إِلَّا تَتَفَرُّوْا يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ۗ وَيَسْتَبْدِلُ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ط وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِيْنَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى ط وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ط وَاللَّهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, এমন কোন ব্যক্তি নেই যে, মুত্ফ্যর পরে দুনিয়ায় ফিরে আসতে আনন্দ পাবে, যে আল্লাহর কাছে কল্যাণ প্রাপ্ত হয়েছে, এমনকি তাকে দুনিয়া ও তাঁর সমস্ত সম্পদ দান করা হলেও; কিন্তু শহীদগণ তাঁর ব্যতিক্রম, কেননা সে (বাস্তব ক্ষেত্রে) শাহাদাতের মর্যাদা দেখতে পারবে। সুতরাং সে দুনিয়ায় ফিরে এসে আর একবার (আল্লাহর পথে) প্রাণ দিতে আনন্দ অনুভব করবে। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৯৫)

বলেছিলেন তুমি চিন্তিত হয়ে না, নিশ্চয়ই আল্লাহ (তঁার সাহায্য) আমাদের সাথে রয়েছেন, অতঃপর আল্লাহ তার প্রতি স্বীয় প্রশান্তি নাযিল করলেন এবং তাঁকে সাহায্য করলেন এমন বাহিনী দ্বারা যাদেরকে তোমরা দেখতে পাওনি এবং আল্লাহ কাফিরদের বাক্য নীচু (অর্থাৎ প্রচেষ্টা ব্যর্থ) করে দিলেন, আর আল্লাহর বাণীই সমুচ্চ রইলো, আর আল্লাহ হচ্ছেন প্রভাবশালী, মহাবিজ্ঞ।

৪১. তোমরা বের হয়ে পড় স্বল্প সরঞ্জামের সাথে আর প্রচুর সরঞ্জামের সাথে^১ এবং আল্লাহর পথে নিজেদের ধন-সম্পদ ও প্রাণ দ্বারা যুদ্ধ কর, এটা তোমাদের জন্যে অতি উত্তম, যদি তোমরা জানতে।

৪২. যদি তাড়াতাড়ি অর্থ সম্পদ বা আসবাবপত্র লাভের ব্যবস্থা থাকতো আর সফরও সহজ হতো, তবে তারা অবশ্যই তোমার সহগামী হতো; কিন্তু তাদের তো পথের দূরত্বই দীর্ঘতর বোধ হতে লাগলো; আর তারা এখনই আল্লাহর নামে শপথ করে বলবেঃ যদি আমাদের সাধ্য থাকতো তবে আমরা নিশ্চয়ই তোমাদের সাথে বের হতাম, তারা (মিথ্যা বলে) নিজেরাই নিজেদেরকে ধ্বংস করছে, আর আল্লাহ জানেন যে, তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَاتَّبَعُوكَ وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ السُّبُحَةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوْ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٢﴾

১। خفافا وثقالا -এর অর্থ বিভিন্ন হতে পারে- যেমনঃ হালকা পাতলা হও আর মোটাভারী হও, একাকী হও বা জামাআত বদ্ধ হও, খুশি হও বা নাখোশ, গরীব হও বা আমীর হও, যুবক হও বা বৃদ্ধ হও ইত্যাদি। ইমাম শাওকানী (রহঃ) বলেনঃ আয়াতের প্রয়োগ সবগুলো অর্থের উপরই হতে পারে।

৪৩. আল্লাহ তোমাকে ক্ষমা করলেন, (কিন্তু) তুমি তাদেরকে (এত শীঘ্র) কেন অনুমতি দিয়েছিলে (যুদ্ধে অনুপস্থিত থাকার) যে পর্যন্ত না সত্যবাদী লোকেরা তোমার কাছে প্রকাশ হয়ে পড়তো এবং তুমি মিথ্যাবাদীদেরকে জেনে নিতে।

৪৪. যারা আল্লাহর প্রতি ও পরকালের প্রতি ঈমান রাখে, তারা নিজেদের ধন-সম্পদ ও প্রাণ দ্বারা জিহাদ করার ব্যাপারে তোমার কাছে অব্যাহতি প্রার্থনা করবে না, আর আল্লাহ এই পরহেযগার লোকদের সম্বন্ধে খুব অবগত আছেন।

৪৫. অবশ্য ঐসব লোক তোমার কাছে অব্যাহতি চেয়ে থাকে, যারা আল্লাহর প্রতি ও আখিরাতের প্রতি ঈমান রাখে না, আর তাদের অন্তরসমূহ সন্দেহে নিপতিত রয়েছে, অতএব তারা তাদের সংশয়ের আবর্তে ঘূর্ণিপাক খাচ্ছে।

৪৬. আর যদি তারা (যুদ্ধে) যাত্রা করার ইচ্ছা করতো, তবে এর কিছু আসবাবপত্র তো প্রস্তুত করতো; কিন্তু আল্লাহ তাদের (যুদ্ধে যাওয়ার জাগরণকে) যাত্রাকে অপছন্দ করেছেন, এ জন্যে তাদেরকে বিরত রাখলেন এবং বলে দেয়া হলো, তোমরাও এখানেই অক্ষম লোকদের সাথে বসে থাকো।

৪৭. যদি তারা তোমাদের সাথে বের হতো, তবে তোমাদের মাঝে ফেৎনা ফাসাদই বৃদ্ধি করতো। আর তারা

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذْنَتْ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَّبِعَنَّ لَكَ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِينَ ﴿٤٣﴾

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿٤٤﴾

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ
كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاطَهُمْ فِئْبَطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا
مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٤٦﴾

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَا أُضْعَفُوا
خَلْقَكُمْ يُبَغُّونَكُمْ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَعُونٌ

তোমাদের মধ্যে ফাসাদ সৃষ্টি করার উদ্দেশ্যে দৌড়াদৌড়ি করে ফিরতো, আর তোমাদের মধ্যে তাদের কতিপয় গুণ্ডচর বিদ্যমান রয়েছে; আল্লাহ এই যালিমদের সম্বন্ধে খুব অবগত রয়েছেন।

لَهُمْ طَوَّاتٌ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾

৪৮. তারা তো পূর্বেও ফাসাদ সৃষ্টির চেষ্টা করেছিল, আর তোমার (ক্ষতি সাধনের) জন্যে কর্মসমূহ উলট-পালট করেছিল, অবশেষে সত্য অঙ্গীকার এসে পড়লো এবং আল্লাহর ফায়সালাই বিজয় (বদরের বিজয়) লাভ করলো, আর তারা অপছন্দকারীই থেকে গেল।

لَقَدْ ابْتِغَوْا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَبِلُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿٣٨﴾

৪৯. আর তাদের মধ্যে কেউ কেউ এমন আছে, যে বলেঃ আমাকে (যুদ্ধে গমন না করার) অনুমতি দিন এবং আমাকে বিপদে ফেলবেন না, (ভালরূপে বুঝে নাও যে), তারা তো বিপদে পড়েই গেছে, আর নিশ্চয়ই জাহান্নাম এই কাফিরদেরকে বেষ্টনকারী।

وَمِنْهُمْ مَن يَقُولُ ائْتِنَّا لِي وَلَا تَقْتُلُنَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَكَبِيْرَةٌ بِالْكَافِرِيْنَ ﴿٣٩﴾

৫০. যদি তোমার প্রতি কোন মঙ্গল উপস্থিত হয় তবে তাদেরকে খুব খারাপ লাগে, আর যদি তোমার উপর কোন বিপদ এসে পড়ে, তখন তারা বলেঃ আমরা তো প্রথম থেকেই নিজেদের সাবধানতার পথ অবলম্বন করেছিলাম, এবং তারা খুশী হয়ে চলে যায়।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ سَوْهُمْ ۗ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَا اٰمْرًا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫১. তুমি বলে দাওঃ আল্লাহ আমাদের জন্যে যা নির্ধারণ করে

قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۗ هُوَ

দিয়েছেন তা ছাড়া অন্য কোন বিপদ আমাদের উপর আসতে পারে না, তিনিই আমাদের কর্মবিধায়ক এবং অভিভাবক আর সকল মু'মিনেরই কর্তব্য হলো যে, তারা যেন নিজেদের যাবতীয় কাজে আল্লাহর উপরই নির্ভর করে।

৫২. (হে নবী ﷺ!) তুমি বলে দাও: তোমরা তো আমাদের জন্যে দু'টি মঙ্গলের মধ্যে একটি মঙ্গলের প্রতীক্ষায় রয়েছে; আর আমরা তোমাদের জন্যে এই প্রতীক্ষা করছি যে, আল্লাহ তোমাদের উপর কোন শাস্তি প্রদান করবেন নিজের পক্ষ হতে অথবা আমাদের হাত দ্বারা, অতএব তোমরা অপেক্ষা করতে থাকো, আমরাও তোমাদের সাথে অপেক্ষমান রইলাম।

৫৩. তুমি (আরও) বলে দাও: তোমরা সন্তুষ্টির সাথে ব্যয় কর কিংবা অসন্তুষ্টির সাথে, তোমাদের পক্ষ থেকে তা কখনই গৃহীত হবে না; নিঃসন্দেহে তোমরা হচ্ছে ফাসেক সম্প্রদায়।

৫৪. আর তাদের দান-খয়রাত গ্রহণ করতে নিষেধ করা হয়েছে এ জন্যে যে, তারা আল্লাহর সাথে ও তাঁর রাসূলের সাথে কুফরী করেছে, আর তারা নামায অলসতার সাথে ছাড়া পড়ে না, আর তারা দান করে না,

مَوْلَانَا ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَايْتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا أَحَدًا يَحْسَبِينَ ط
وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ
مِّنْ عِنْدِهِ أَوْ يَأْتِيَنَا ط فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ
مُتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾

قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّنْ يَتَقَبَّلَ مِنكُمُ ط
إِنَّكُم كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ
كَفَرُوا بِإِلَهِهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا
وَهُمْ كَسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿٥٤﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মুনাফিকের জন্যে ফজর ও এশার নামাযের চাইতে অন্য কোন নামায কঠিন নয়। তারা যদি এ দু'ওয়াক্তের নামাযের সওয়াব জানতো, তাহলে হামাণ্ডি দিয়ে হলেও তারা এই (দু'ওয়াক্তের) নামাযে আসত। আমি

কিছু করলেও তা অনিচ্ছার সাথে (করে)।

৫৫. অতএব তাদের ধন-সম্পদ এবং সন্তানাদি যেন তোমাকে বিস্মিত না করে; আল্লাহর ইচ্ছা শুধু এটাই যে, এসব বস্তু দ্বারা তাদেরকে পার্থিব জীবনে শান্তি দেবেন এবং তাদের প্রাণ কুফরীরই অবস্থায় বের হয়।

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٥٥﴾

৫৬. আর তারা আল্লাহর কসম করে বলে যেঃ তারা (মুনাফিকরা) তোমাদেরই অন্তর্ভুক্ত; অথচ তারা তোমাদের অন্তর্ভুক্ত নয়; বরং তারা হচ্ছে ভীতু সম্প্রদায়।

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿٥٦﴾

৫৭. যদি তারা কোন আশ্রয়স্থল পেতো, অথবা গুহা কিংবা লুকিয়ে থাকার একটু স্থান পেতো, তবে তারা অবশ্যই ক্ষিপ্ৰগতিতে সেই দিকে ধাবিত হতো।

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغْرَبًا أَوْ مَدَّخَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْحَدُونَ ﴿٥٧﴾

৫৮. আর তাদের মধ্যে এমন কতক লোক রয়েছে যারা সাদকার (বন্টন) ব্যাপারে তোমার প্রতি দোষারোপ করে, অতঃপর যদি তারা ঐ সমস্ত সাদকা হতে কিছু (অংশ) তাদেরকে দেয়া হয় তবে তারা সন্তুষ্ট হয়, আর যদি তারা তা থেকে (অংশ) না পায় তবে তারা অসন্তুষ্ট হয়ে যায়।

وَمِنْهُمْ مَن يَلْبِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ ؕ فَإِن أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾

৫৯. তাদের জন্যে উত্তম হতো যদি তারা ওর প্রতি সন্তুষ্ট থাকতো যা কিছু তাদেরকে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ

সংকল্প করেছিলাম মুয়ায্জীনকে একামত দেবার আদেশ করব এরপর কাউকে ইমামতি করতে বলব এবং যারা এখনও নামাযে শরীক হয়নি আমি আগুন দিয়ে তাদের ঘরগুলো জ্বালিয়ে দেব। (কিন্তু তাদের পরিবার-পরিজনের কথা ভেবে আমার এ ইচ্ছা ত্যাগ করি।) (বুখারী, হাদীস নং ৬৫৭)

দান করেছিলেন, আর বলতো আমাদের পক্ষে আল্লাহই যথেষ্ট, ভবিষ্যতে আল্লাহ স্বীয় অনুগ্রহে আমাদেরকে আরো দান করবেন এবং তাঁর রাসূলও, আমরা আল্লাহরই প্রতি আগ্রহী রইলাম।

৬০. (ফরয) সাদকাগুলো তো হচ্ছে শুধুমাত্র ফকীর মিসকীনদের জন্য, আর এই সাদকা (আদায়ের) জন্যে নিযুক্ত কর্মচারীদের এবং যাদের মন রক্ষা করতে (অভিপ্রায়) হয় (তাদের), আর দাস মুক্ত করার কাজে এবং ঋণগ্রস্তদের (হাওলাত পরিশোধে), আল্লাহর রাস্তায় আর মুসাফিরদের সাহায্যার্থে, এটা আল্লাহর পক্ষ হতে ফরয (নির্ধারিত), আর আল্লাহ মহাজ্ঞানী অতি প্রজ্ঞাময়।

৬১. আর তাদের মধ্যে এমন কতিপয় লোক আছে, যারা নবীকে কষ্ট দেয় এবং বলে যে, তিনি প্রত্যেক কথায় কর্ণপাত করে থাকেন; তুমি বলে দাওঃ এই নবী তো কর্ণপাত করে থাকেন সেই কথাতেই যা তোমাদের জন্যে কল্যাণকর, তিনি আল্লাহর (কথাগুলো ওহী মারফত জ্ঞাত হয়ে তার) প্রতি ঈমান আনয়ন করেন, আর মু'মিনদের (কথাকে) বিশ্বাস করেন, আর তিনি ঐসব লোকের প্রতি অনুগ্রহ করেন যারা তোমাদের মধ্যে ঈমান আনয়ন করে; আর যারা আল্লাহর রাসূলকে কষ্ট দেয়, তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

وَرَسُولَهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رُغْبُونَ ﴿٥٩﴾

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ
عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغَرَمِيِّنَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ ط
فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ
أَذْنٌ ط قُلْ أَذْنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ
لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ ط
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٦١﴾

৬২. তারা তোমাদের কাছে আল্লাহর শপথ করে থাকে, যেন তারা তোমাদেরকে সন্তুষ্ট করতে পারে, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল হচ্চেন বেশি হকদার (এই বিষয়ে) যে, তারা যদি সত্যিকারের মু'মিন হয়ে থাকে, তবে তারা যেন তাঁকে সন্তুষ্ট করে।

৬৩. তারা কি জানে না যে, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরুদ্ধাচরণ করে, তবে এটা সুনিশ্চিত যে, এমন লোকের ভাগ্যে রয়েছে জাহান্নামের আগুন এরূপভাবে যে, সে তাতে অনন্তকাল থাকবে, এটা হচ্ছে চরম লাঞ্ছনা।

৬৪. মুনাফিকরা আশঙ্কা করে যে, তাদের (মুসলমানদের) প্রতি না জানি এমন কোন সূরা নাযিল হয়ে পড়ে যা তাদেরকে সেই মুনাফিকদের অন্তরের কথা অবহিত করে দেয়, (হে নবী ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ হ্যাঁ, তোমরা বিদ্রূপ করতে থাকো, নিশ্চয়ই আল্লাহ সেই বিষয়কে প্রকাশ করেই দিবেন, যার তোমরা আশঙ্কা করছো।

৬৫. আর যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর, তবে তারা বলে দেবেঃ আমরা তো শুধু আলাপ-আলোচনা ও হাসি-তামাসা করছিলাম; তুমি বলে দাওঃ তবে কি তোমরা আল্লাহ; তাঁর আয়াতসমূহ এবং তাঁর রাসূলের প্রতি হাসি-তামাসা করছিলে?

৬৬. তোমরা ওয়র আপত্তি প্রদর্শন করো না, তোমরা তো ঈমান কবুলের

يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ ۗ
وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ
إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
قَاتَنَ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ
الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾

يَحْذَرُ الْبُغْيُونَ أَنْ تُنزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ
تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ اسْتَهِزَّؤْا
إِنَّ اللَّهَ مُحْجِبٌ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ
قُلْ أَيْلَهُ وَاللَّهِ وَالْيَتَىٰ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنَّ

পর কুফরী করেছে; যদিও আমি তোমাদের মধ্য হতে কতককে ক্ষমা করে দেই, তবুও কতককে শাস্তি দিবই, কারণ তারা অপরাধী ছিল।

৬৭. মুনাফিক পুরুষেরা এবং মুনাফিক নারীরা পরস্পর সবাই এক রকম, তারা অসৎকর্মের (অর্থাৎ কুফর ও ইসলাম বিরোধিতা) নির্দেশ দেয় এবং সৎকর্ম হতে বিরত রাখে, আর নিজেদের হাতসমূহকে (আল্লাহর পথে ব্যয় করা হতে) বন্ধ করে রাখে, তারা আল্লাহকে ভুলে গিয়েছে, সুতরাং তিনিও তাদেরকে ভুলে গিয়েছেন, নিঃসন্দেহে এই মুনাফিকরাই হচ্ছে ফাসেক।

৬৮. আল্লাহ মুনাফিক পুরুষদের ও মুনাফিক নারীদের এবং কাফিরদের সাথে জাহান্নামের আগুনের অঙ্গীকার করেছেন, যাতে তারা চিরকাল থাকবে, এটা তাদের জন্যে যথেষ্ট, আর আল্লাহ তাদেরকে অভিশাপ করেছেন এবং তাদের জন্যে রয়েছে চিরস্থায়ী শাস্তি।

৬৯. তোমাদের অবস্থা ওদের ন্যায় যারা তোমাদের পূর্বে গত হয়েছে, যারা ছিল তোমাদের চেয়ে অধিকতর শক্তিশালী এবং ধন-সম্পদ ও সম্ভানাদির প্রাচুর্যও ছিল তোমাদের চেয়ে অনেক বেশি; ফলতঃ তারা নিজেদের (পার্শ্ব) অংশ দ্বারা যথেষ্ট উপকার লাভ করেছে, অতঃপর তোমরাও তোমাদের (পার্শ্ব) অংশ

تَعَفُّ عَنْ طَائِفَةٍ مِّنْكُمْ نَعَذِّبُ طَائِفَةً
بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٧﴾

الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ
يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ
وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ طَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ط
إِنَّ الْمُنْفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٦٨﴾

وَعَدَّ اللَّهُ الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكٰفِرَ
نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ط هٰى حَسْبُهُمْ
وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ء وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٩﴾

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً
وَأكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَبْتَعُوا بِخِلَافِهِمْ
فَاسْتَبْتَعْتُمْ بِخِلَافِكُمْ كَمَا اسْتَبْتَعَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِخِلَافِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِينَ
خَاصُّوْا وَلِيَّكَ حِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا

দ্বারা খুব উপকার লাভ করলে, যেমন তোমাদের পূর্ববর্তীগণ নিজেদের অংশ দ্বারা ফলভোগ করেছিল, আর তোমরাও ব্যাঙ্গাত্মক হাসি-তামাসায় এরূপভাবে নিমগ্ন হয়েছো, যেমন তারা ও নিমগ্ন হয়েছিল; আর তাদের (নেক) আমলসমূহ বিনষ্ট হয়ে গিয়েছে দুনিয়াতে ও আখিরাতে, এই সমস্ত লোকেরাই ক্ষতিগ্রস্ত।

৭০. তাদের কাছে কি ঐসব লোকের সংবাদ পৌঁছেনি যারা তাদের পূর্বে গত হয়েছে? (যেমন) নূহ সম্প্রদায় এবং আদ ও সামূদ সম্প্রদায়, ইব্রাহীমের সম্প্রদায় এবং মাদইয়ানের অধিবাসীগণ এবং মু'তাফিকাতের অধিবাসীগণ (বিধ্বস্ত জনপদগুলোর)। তাদের কাছে তাদের রাসূলগণ স্পষ্ট নিদর্শনসমূহ নিয়ে এসেছিলেন, বস্তুতঃ আল্লাহ তো তাদের প্রতি অত্যাচার করেননি; বরং তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি অত্যাচার করেছিল।

৭১. আর মু'মিন পুরুষরা ও মু'মিনা নারীরা হচ্ছে পরস্পর একে অন্যের বন্ধু, তারা সৎ কাজের আদেশ দেয় এবং অসৎ হতে নিষেধ করে, আর নামায কায়েম করে ও যাকাত প্রদান করে, আর আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের আদেশ মেনে চলে, এসব লোকের প্রতি আল্লাহ অবশ্যই করুণা বর্ষণ করবেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ অতিশয় সম্মানিত ও মহাজ্ঞানী।

وَالْأَخْرَجَ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٩٠﴾

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ
وَءَادٍ وَثَمُودَ ۖ وَقَوْمِ إِبْرٰهِيْمَ وَأَصْحٰبِ مَدْيَنَ
وَالْبُؤْتِغَلٰتِ ۖ أَتَتْهُم رُسُلُهُم بِالْبَيِّنٰتِ ۖ فَمَا
كَانَ اللّٰهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلٰكِن كَانُوْا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿٩٠﴾

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ
يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيعُونَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ ۗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ
ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٩١﴾

৭২. আল্লাহ মু'মিন পুরুষ ও মু'মিনা নারীদেরকে এমন জান্নাতসমূহের ওয়াদা দিয়ে রেখেছেন যেগুলোর নিম্নদেশে বইতে থাকবে নহরসমূহ, সেখানে তারা অনন্তকাল থাকবে, আরও (ওয়াদা দিয়েছেন) ঐ উত্তম বাসস্থানসমূহের যা আদ্ন নামক জান্নাতের মাঝে অবস্থিত। আর আল্লাহর সন্তুষ্টি হচ্ছে সর্বাপেক্ষা বড় (নিয়ামত), এটা হচ্ছে অতি বড় সফলতা।

৭৩. হে নবী! কাফির ও মুনাফিকদের বিরুদ্ধে জিহাদ কর এবং তাদের প্রতি কঠোর ব্যবহার নীতি অবলম্বন কর, আর তাদের বাসস্থান হবে জাহান্নাম এবং ওটা হচ্ছে নিকৃষ্ট স্থান।

৭৪. তারা আল্লাহর নামে শপথ করে বলছে যে, তারা (অমুক কথা) বলেনি, অথচ নিশ্চয়ই তারা কুফরীর কথা বলেছিল এবং নিজেদের ইসলাম গ্রহণের পর কাফির হয়ে গেল, আর তারা এমন বিষয়ের সংকল্প করেছিল যা তারা কার্যকরী করতে পারে নি; আর তারা হিংসা পোষণ ও ঘৃণা করেছিল এজন্য যে, তাদেরকে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল নিজ অনুগ্রহে (মদীনায়ে) সম্পদশালী করে দিয়েছিলেন, অনন্তর যদি তারা তাওবা করে নেয় তবে তাদের জন্যে উত্তম হবে; আর যদি তারা বিমুখ হয় তবে আল্লাহ তাদেরকে ইহকালে ও পরকালে যন্ত্রণাময় শাস্তি প্রদান

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ط وَرِضْوَانٍ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرَ ط ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ٧٢

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ط وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ ط وَبئْسَ الْمَصِيرُ ٧٣

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ وَايِسَاءٌ لَّمْ يَنْتَلُوا ٧٤ وَمَا تَقْبُولُوا إِلَّا أَنْ أَعْنَبَهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ٧٥ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ٧٦ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ٧٧ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَّالِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ٧٨

করবেন, আর ভূ-পৃষ্ঠে তাদের না কোন অলী (অভিভাবক) হবে, আর না কোন সাহায্যকারী।

৭৫. আর তাদের মধ্যে এমন কতিপয় লোক রয়েছে যারা আল্লাহর সাথে অঙ্গীকার করে, আল্লাহ যদি আমাদেরকে নিজ অনুগ্রহে (প্রচুর সম্পদ) দান করেন, তবে আমরা অবশ্যই খুব দান-খয়রাত করবো এবং সৎলোকদের অন্তর্ভুক্ত হবো।

৭৬. কার্যতঃ যখন আল্লাহ তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে (প্রচুর সম্পদ) দান করলেন, তখন তারা তাতে কার্পণ্য করতে লাগলো এবং (আনুগত্য করা হতে) তারা গোঁড়ামীর সাথেই বিমুখতা অবলম্বন করলো।

৭৭. সুতরাং আল্লাহ তাদের শাস্তি স্বরূপ তাদের অন্তরসমূহে নিফাক ঢেলে দিলেন, যা আল্লাহর সামনে হাযির হওয়ার দিন পর্যন্ত থাকবে, এই কারণে যে, তারা আল্লাহর সাথে নিজেদের ওয়াদার খিলাফ করেছে, আর এই কারণে যে, তারা (পূর্ব হতেই) মিথ্যা বলছিল।

৭৮. তাদের কি জানা নেই যে, আল্লাহ তাদের মনের গুপ্ত কথা এবং গোপন পরামর্শ সবই অবগত আছেন? আর তাদের কি এই খবর নেই যে, আল্লাহ সমস্ত গায়েবের কথা খুবই জ্ঞাত আছেন?

৭৯. যারা নফল সাদকা প্রদানকারী মুসলমানদের প্রতি সাদকা সম্বন্ধে

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِن اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّآ اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا
وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمٍ يَلْقَوْنَ
بِهَا اٰخِلْفُوْا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِهَا كَانُوْا
يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ
وَ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰمُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوْعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

দোষারোপ করে এবং (বিশেষ করে) সেই লোকদের প্রতি যাদের পরিশ্রম ও মজুরী করা ছাড়া আর কোনই সম্বল নেই, তারা তাদেরকে উপহাস করে, আল্লাহও তাদেরকে উপহাস করেন এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

৮০. (হে মুহাম্মদ ﷺ!) তুমি তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর অথবা তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা না কর (উভয়ই সমান) যদি তুমি তাদের জন্যে সত্তর বারও ক্ষমা প্রার্থনা কর তবুও আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন না; এর কারণ এই যে, তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের সাথে কুফরী করেছে। আর আল্লাহ এরূপ ফাসেক লোকদেরকে হেদায়েত দান করেন না।

৮১. পশ্চাদবর্তী লোকেরা (তাবুকের যুদ্ধে) উৎফুল্ল হয়ে গেল রাসূলুল্লাহর বিরুদ্ধাচারণ করে নিজেদের গৃহে বসে থেকে এবং তারা আল্লাহর পথে নিজেদের ধন ও প্রাণ দিয়ে জিহাদ করাকে অপছন্দ করলো, অধিকন্তু বলতে লাগলোঃ তোমরা (এই ভীষণ) গরমের মধ্যে বের হয়ো না; (হে নবী!) তুমি বলে দাওঃ জাহান্নামের আগুন (এর চেয়ে) অধিকতর গরম, যদি তারা বুঝতে পারতো!

৮২. অতএব, তারা (দুনিয়ায়) সামান্য হেসে নিক কেননা তারা তাদের কৃতকর্মের কারণে (আখিরাতে) অধিক মাত্রায় কাঁদবে।

فِي الصَّدَاقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جَهْدَهُمْ
فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٨٠﴾

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ
لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٨١﴾

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ
وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ
نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿٨٢﴾

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٣﴾

৮৩. অতঃপর যদি আল্লাহ তোমাকে (মদীনায়) তাদের কোন সম্প্রদায়ের কাছে ফিরিয়ে আনেন, অতঃপর তারা (কোন জিহাদে) বের হতে অনুমতি চায়, তবে তুমি বলে দাওঃ তোমরা কখনো আমার সাথে (কোন জিহাদে) বের হবে না এবং আমার সাথী হয়ে কোন শত্রুর বিরুদ্ধে যুদ্ধও করবে না; কারণ তোমরা প্রথমবারই বসে থাকাকে পছন্দ করেছিলে, অতএব তোমরা ঐসব লোকের সাথে বসে থাকো যারা পশ্চাদবর্তী থাকার যোগ্য।

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذِنُواكَ
لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ
تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ
أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَافِينَ ﴿٨٣﴾

৮৪. (হে রাসূল!) আর তাদের মধ্য হতে কেউ মরে গেলে তার উপর কখনো (জানাযার) নামায পড়বেন না এবং তার কবরের কাছেও দাঁড়াবেন না; তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের সাথে কুফরী করেছে এবং তারা ফাসেকী অবস্থাতেই মৃত্যুবরণ করেছে।

وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى
قَبْرِهِ ط إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ
فُسِقُونَ ﴿٨٤﴾

৮৫. আর তাদের ধন-সম্পদ ও সম্ভান-সম্ভতি তোমাকে যেন বিস্মিত না করে; আল্লাহ শুধু এটাই চাচ্ছেন যে, এ সমস্ত বস্তুর কারণে দুনিয়ায় তাদেরকে শাস্তিতে আবদ্ধ রাখেন এবং তাদের প্রাণবায়ু কুফরীর অবস্থাতেই বের হয়।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ط إِنَّهَا يُرِيدُ
اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ
أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

৮৬. আর যখনই কুরআনের কোন সূরা (অংশ) বিষয়ে অবতীর্ণ করা হয় যে, তোমরা আল্লাহর উপর ঈমান আন এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সাথী হয়ে জিহাদ কর, তখন তাদের মধ্যকার ক্ষমতাবান ব্যক্তির তোমার

وَإِذَا أَنْزَلْتَ سُورَةً أَنْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَجَاهَدُوا مَعَ
رَسُولِهِ اسْتَأْذِنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا
دَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٨٦﴾

কাছে অব্যাহতি চায় ও বলে আমাদেরকে ছেড়ে দিন আমরাও এখানে অবস্থানকারীদের সাথে থেকে যাই।

৮৭. তারা অন্তঃপুরবাসিনী নারীদের সাথে থাকতেই সম্মত হলো এবং তাদের অন্তরসমূহের উপর মোহর লাগিয়ে দেয়া হলো, কাজেই তারা বুঝে না।

৮৮. কিন্তু রাসূল ও তাঁর সাথীদের মধ্যে যারা মু'মিন ছিলো তারা (অবশ্যই এই আদেশ মানলো এবং) নিজেদের ধন-সম্পদ ও প্রাণ দ্বারা জিহাদ করলো; আর তাদেরই জন্যে রয়েছে যাবতীয় কল্যাণ এবং তারাই হচ্ছে সফলকাম।

৮৯. আল্লাহ তাদের জন্যে এমন জান্নাত প্রস্তুত করে রেখেছেন যেগুলোর নিম্নদেশ দিয়ে নহরসমূহ বয়ে চলবে, আর তারা ওর মধ্যে অনন্তকাল অবস্থান করবে; এটা হচ্ছে (তাদের) বিরাট সফলতা।

৯০. আর আরব গ্রামবাসীদের মধ্য হতে কতিপয় বাহানাকারী লোক আসলো, যেন তাদের অনুমতি দেয়া হয়, আর যারা আল্লাহর সাথে ও তাঁর রাসূলের সাথে সম্পূর্ণরূপেই মিথ্যা বলেছিল, তারা একেবারেই বসে রইল; তাদের মধ্যে যেসব লোক কাফির থাকবে, তাদের যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হবে।

৯১. দুর্বল লোকদের উপর কোন গুনাহ নেই, আর না রুগ্নদের উপর,

رُضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾

لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى

আর না এসব লোকের উপর যাদের খরচ করার সামর্থ্য নেই, যদি এসব লোক আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের প্রতি নিষ্ঠা রাখে^১ (এবং আন্তরিকতার সাথে আনুগত্য স্বীকার করে); এসব সং লোকের প্রতি কোন প্রকার অভিযোগ নেই; আর আল্লাহ অতিশয় ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

৯২. আর ঐ লোকদের উপরও কোন গোনাহ নেই, যখন তারা তোমার নিকট এই উদ্দেশ্যে আসে যে, তুমি তাদেরকে বাহন দান করবে, আর তুমি বলে দিয়েছো আমার নিকট তো কোন কিছু নেই যার উপর আমি তোমাদেরকে আরোহণ করাই, তখন তারা এমন অবস্থায় ফিরে যায় যে, তাদের চক্ষুসমূহ হতে অশ্রু বইতে থাকে এ অনুতাপে যে, তাদের ব্যয় করার মত কোন সম্বল নেই।

৯৩. অভিযোগ তো শুধুমাত্র ঐ লোকদের উপরই যারা সম্পদশালী হওয়া সত্ত্বেও (যুদ্ধে গমন না করার)^২ অনুমতি চাচ্ছে, তারা অন্তঃপুরবাসিনী মহিলাদের সাথে থাকতে সম্মত হয়ে গেল এবং আল্লাহ তাদের অন্তঃরসমূহের উপর মোহর মেরে দিলেন, কাজেই তারা (পাপ-পুণ্যকে) জানেই না।

الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرْجًا إِذْ انصَحُوا
لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۗ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا اتَّوَكَّلُوا لِيَذِرَهُمْ قُلْتَ
لَا آجِدُ مَا أَحْبَبْتُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا ۖ وَأَعْيُنُهُمْ
تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا
مَا يَنْفِقُونَ ﴿٩٢﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ
وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

১। জারীর ইবনে আব্দুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট বাইয়াত গ্রহণ করেছি, নামায প্রতিষ্ঠা, যাকাত প্রদান, প্রত্যেক মুসলমানকে উপদেশ দেয়ার ব্যাপারে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭)

২। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, (পূর্বের জামানার) কোন একজন নবী জিহাদ করতে মনস্থ করে নিজের কণ্ঠের লোকদের বললেন, যে

ব্যক্তি বিবাহ করেছে; কিন্তু বাসর রাত্রি যাপন করেনি অথচ সে বাসররাত্রি যাপনের প্রত্যাশী, সে যেন আমার (এ যুদ্ধে) গমন না করে। যে ব্যক্তি গৃহ নির্মাণ করেছে কিন্তু এখনো ছাদ উত্তোলন করেনি অথবা যে ব্যক্তি গর্ভিণী বকরী কিংবা উট ক্রয় করে বাচ্চা পাবার জন্য অপেক্ষায় আছে; কিন্তু এখনো বাচ্চা লাভ করেনি এসব ব্যক্তিও যেন আমার সাথে না যায়। অতঃপর তিনি জিহাদের জন্য বের হলেন এবং এক জনপদের নিকটবর্তী হলে আসরের নামাযের সময় হলে অথবা প্রায় আসরের সময় হয়ে গেলে তিনি সূর্যকে উদ্দেশ্য করে বললেন, তুমি আল্লাহ্র নির্দেশমত কাজ করছো আমিও আল্লাহ্র নির্দেশমত কাজ করছি। (অতঃপর তিনি আল্লাহ্র কাছে ফরিয়াদ করলেন,) হে আল্লাহ্! তুমি তাকে আমাদের জন্য থামিয়ে দাও। তাই বিজয় লাভ করা পর্যন্ত তা থামিয়ে দেয়া হল। তিনি গণীমত কুড়িয়ে স্তূপ করলেন, ঐগুলো জ্বালিয়ে দেয়ার জন্য আগুন আগমন করলো; কিন্তু জ্বালিয়ে দিল না। তিনি বললেন, তোমাদের মধ্যে গণীমত আত্মসাতকারী আছে। কাজেই প্রত্যেক গোত্রের একজন করে লোককে আমার হাতে হাত দিয়ে বাইয়াত করতে হবে। বাইয়াত করার সময় একজন লোকের হাত তাঁর হাতের সাথে আটকে গেল তিনি বললেন, তোমাদের গোত্রের মধ্যে আত্মসাতকারী আছে। সুতরাং গোটা গোত্রের লোককেই আমার হাতে বাইয়াত করতে হবে। এভাবে (বাইয়াত করার সময়) দু' অথবা তিন ব্যক্তির হাত তাঁর হাতের সাথে আটকে গেল। তিনি বললেন, আরসাতকৃত মাল তোমাদের কাছেই আছে। এরপর তারা গরুর মাথার ন্যায় একখন্ড স্বর্ণ এনে স্তূপের মধ্যে রাখলে আগুন এসে তা জ্বালিয়ে দিল। একথা বলার পর নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, পরে আল্লাহ্ আমাদের জন্য গণীমতের অর্থকে হালাল করে দিয়েছেন। তিনি আমাদের দুর্বলতা ও অক্ষমতা দেখেই আমাদের জন্য গণীমতের মাল হালাল করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩১২৪)

৯৪. তারা তোমাদের কাছে ওয়র পেশ করবে যখন তোমরা তাদের কাছে ফিরে যাবে; (হে নবী ﷺ) তুমি বলে দাওঃ তোমরা ওয়র পেশ করো না, আমরা কখনো তোমাদেরকে সত্যবাদী বলে মনে করবো না, আল্লাহ আমাদেরকে তোমাদের (জিহাদে না যাওয়ার) বৃত্তান্ত জানিয়ে দিয়েছেন, আর ভবিষ্যতেও আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল তোমাদের কার্যকলাপ পর্যবেক্ষণ করবেন, অতঃপর তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে এমন সত্তার কাছে যিনি অদৃশ্য এবং প্রকাশ্য সকল বিষয়ই অবগত আছেন, অনন্তর তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দিবেন যা কিছু তোমরা করছিলে।

৯৫. (হ্যাঁ,) তারা তখন তোমাদের সামনে শপথ করে বলবে, যখন তোমরা তাদের কাছে ফিরে যাবে, যেন তোমরা তাদেরকে তাদের অবস্থার উপর ছেড়ে দাও; অতএব তোমরা তাদেরকে তাদের অবস্থার উপর ছেড়েই দাও; তারা হচ্ছে অতিশয় অপবিত্র, আর তাদের ঠিকানা হচ্ছে জাহান্নাম, ঐসব কর্মের বিনিময়ে যা তারা করতো।

৯৬. তারা এ জন্যে শপথ করবে যেন তোমরা তাদের প্রতি রাজী হয়ে যাও, অনন্তর যদি তোমরা তাদের প্রতি রাজী হয়ে যাও তবে আল্লাহ তো এমন দুষ্কর্মকারী লোকদের প্রতি রাজী হন না।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ
قُلْ لَّا تَعْتَذِرُونَ لِي مِن قَوْلِنَا أَنَّ اللَّهَ
مِنَ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ
ثُمَّ تَرُدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِيُتَعْرَضُوا
عَنكُمْ طَٰعِرِضُوا عَنْهُمْ طَٰعِرِضُوا عَنْهُمْ رِجْسٌ وَمَا لَهُمْ
جَهَنَّمَ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِن تَرْضَوْا عَنْهُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾

৯৭. বেদুঈন লোকেরা কুফরী ও কপটতায় অতি কঠোর, আর এটাই স্বাভাবিক কেননা তাদের ঐসব আহকামের জ্ঞান নাই যা আল্লাহ তাঁর রাসূলের প্রতি অবতীর্ণ করেছেন; আর আল্লাহ হচ্চেন মহাজ্ঞানী, অতি প্রজ্ঞাময়।

৯৮. আর এই বেদুঈনদের মধ্যে এমন লোক রয়েছে যে, তারা যা কিছু ব্যয় করে তা জরিমানা মনে করে এবং তোমাদের প্রতি (কালের) আবর্তনসমূহের প্রতীক্ষায় থাকে; (বস্ত্রতঃ) অশুভ আবর্তন তাদের উপরই হয়, আর আল্লাহ খুব শুভেন, খুব জানেন।

৯৯. আর বেদুঈনদের মধ্যে কতিপয় লোক এমনও আছে, যারা আল্লাহর প্রতি এবং কিয়ামত দিবসের প্রতি (পূর্ণ) ঈমান রাখে, আর যা কিছু ব্যয় করে ওকে আল্লাহর সান্নিধ্য লাভের উপকরণ ও রাসূলের দু'আ' লাভের উপকরণরূপে গ্রহণ করে; স্মরণ রাখো! তাদের এই ব্যয়কার্য নিঃসন্দেহে তাদের জন্যে (আল্লাহর) নৈকট্য লাভের কারণ; নিশ্চয়ই আল্লাহ তাদেরকে নিজের রহমতে দাখিল করে নিবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ হচ্চেন অতি ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

১০০. আর যেসব মুহাজির ও আনসার (ঈমান আনয়নে) অথবর্তী এবং প্রথম, আর যেসব লোক একান্ত নিষ্ঠার সাথে তাদের অনুগামী, আল্লাহ

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا
حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا
وَيَتْرِكُ بَصِيرَةً لَكُمْ الدَّوَابِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ
السَّوْءِ وَاللَّهُ سَبِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَاتٍ
الرَّسُولِ وَاللَّهُ قَرِيبٌ لَّهُمْ ط سَيُدْخِلُهُم
اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ط إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٩﴾

وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ

তাদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন এবং তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন, আর আল্লাহ তাদের জন্যে এমন উদ্যানসমূহ প্রস্তুত করে রেখেছেন যার তলদেশে নহরসমূহ বইতে থাকবে, যার মধ্যে তারা চিরস্থায়ীভাবে অবস্থান করবে, তা হচ্ছে বিরাট কৃতকাৰ্যতা।

১০১. আর তোমাদের চতুর্দিকস্থ লোকদের মধ্য হতে কতিপয় বেদুঈন এবং মদীনাবাসীদের মধ্য হতেও কতিপয় লোক এমন মুনাফিক রয়েছে যারা নিফাকের চরমে পৌঁছে গেছে, তুমি তাদেরকে জান না, আমিই তাদেরকে জানি, আমি তাদেরকে দ্বিগুণ শাস্তি প্রদান করবো, তৎপর তারা মহা শাস্তির দিকে প্রত্যাবর্তিত হবে।

১০২. এবং আরো কতকগুলো লোক আছে যারা নিজেদের অপরাধসমূহ স্বীকার করেছে, যারা মিশ্রিত আমল করেছিল, কিছু ভালো আর কিছু মন্দ, আশা রয়েছে যে, আল্লাহ তাদের প্রতি করুণা-দৃষ্টি করবেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ অতিশয় ক্ষমাশীল পরম করুণাময়।

وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠١﴾

وَمِنَ حَوْلِكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ
وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ
لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ
مَثَرَاتٍ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٢﴾

وَأَخْرَجُوا عَتَرَتَهُمْ خَاطِئًا
صَالِحًا وَأَخْرَسَيْنَاهُ عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ
عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٠٣﴾

১। সামুরা ইবনে জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, রাহে দু'জন ফেরেশ্তা এসে আমাকে ঘুম থেকে তুলে এমন এক শহরে (প্রাসাদে) নিয়ে গেল, যা সোনা ও রূপার ইট দ্বারা নির্মিত। সেখানে আমরা এমন কিছু লোকের দেখা পেয়েছি, যাদের দেহের একাংশ খুবই সুশ্রী এবং অপরাংশ অত্যন্ত বিশ্রী। এমনটি তুমি আর কখনো দেখনি। ফেরেশ্তা দু'জন তাদেরকে বলল, এই বর্ণায় গিয়ে তোমরা ডুব দাও। তারা গুতে গিয়ে লাফিয়ে পড়ল এবং তারপর ফিরে আসল। তখন তাদের কুৎসিত আকৃতি সম্পূর্ণ দূর হয়ে গেল। এখন তারা সুন্দর আকৃতি লাভ করল। ফেরেশ্তারা আমাকে বলল, এটি 'আদন' বেহেশ্ত। এটাই হলো আপনার স্থায়ী ঠিকানা। তারপর ফেরেশ্তারা বুকিয়ে বললো, আপনি যেসব লোকের শরীরের অর্ধেক সুশ্রী এবং অর্ধেক কুশ্রী দেখেছেন, তারা হলো এমন সব লোক, যারা দুনিয়াতে ভালো-মন্দ দু'ধরনের কাজই করেছে এবং নেক ও বদআমলকে মিশিয়ে ফেলেছে, আল্লাহ তা'আলা তাদেরকে মাফ করে দিয়েছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৭৪)

১০৩. (হে নবী ﷺ)! তুমি তাদের ধন-সম্পদ হতে যাকাত গ্রহণ কর, যা দ্বারা তুমি তাদেরকে পাক-সাফ করে দেবে, আর তাদের জন্যে দু'আ কর, নিঃসন্দেহে তোমার দু'আ' হচ্ছে তাদের জন্যে শান্তির কারণ, আর আল্লাহ খুব শুনেন, খুব জানেন।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾

১০৪. তারা কি এটা অবগত নয় যে, আল্লাহই নিজ বান্দাদের তাওবা কবুল করেন, আর তিনিই দান-খয়রাত কবুল করে থাকেন আর এটাও যে, আল্লাহ হচ্ছেন তাওবা কবুল করতে এবং অনুগ্রহ করতে পূর্ণ সমর্থবান?

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

১০৫. হে নবী ﷺ! তুমি বলে দাওঃ তোমরা কাজ করতে থাকো, অনন্তর তোমাদের কার্যকে অচিরেই দেখে নিবেন আল্লাহ, তাঁর রাসূল ও ঈমানদারগণ, আর নিশ্চয়ই তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তিত হতে হবে এমন এক সত্তার নিকট যিনি হচ্ছেন সকল অদৃশ্য ও প্রকাশ্য বিষয়ের জ্ঞাতা, অতঃপর তিনি তোমাদেরকে তোমাদের সকল কৃতকর্ম জানিয়ে দিবেন।

وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

১০৬. এবং আরও কতক লোক আছে যাদের (সিদ্ধান্তের) ব্যাপার মূলতবী রয়েছে আল্লাহর আদেশ আসা পর্যন্ত, হয় তিনি তাদেরকে শান্তি প্রদান করবেন, অথবা তাদের তাওবা কবুল করবেন, আর আল্লাহ মহাজ্ঞানী প্রজ্ঞাময়।

وَآخَرُونَ مُرْجُونَ لِمِ اللَّهِ إِمَّا يَعدُّ بِهِمْ وَإِمَّا يَنْوِبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾

১০৭. আর কেউ কেউ এমন আছে যারা এ উদ্দেশ্যে মসজিদ নির্মাণ করেছে যেন তারা (ইসলামের) ক্ষতি-সাধন করে এবং কুফুরীর কথাবার্তা বলে আর মু'মিনদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টি করে, আর ঐ ব্যক্তির অবস্থানের ব্যবস্থা করে যে এর পূর্ব হতেই আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরোধী, আর তারা শপথ করে বলবেঃ মঙ্গল ভিন্ন আমাদের আর কোন উদ্দেশ্য নেই; আর আল্লাহ সাক্ষী আছেন যে, তারা সম্পূর্ণ মিথ্যাবাদী।

১০৮. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি কখনো ওতে (নামাযের জন্যে) দাঁড়াবে না; অবশ্য যে মসজিদের ভিত্তি প্রথম দিন হতেই তাকওয়ার উপর স্থাপিত হয়েছে তা এর উপযোগী যে, তুমি তাতে (নামাযের জন্যে) দাঁড়াবে; ওতে এমন সব লোক রয়েছে যারা উত্তমরূপে পাক হওয়াকে পছন্দ করে, আর আল্লাহ উত্তমরূপে পবিত্রতা সম্পাদন-কারীদেরকে পছন্দ করেন।

১০৯. তবে কি এমন ব্যক্তি উত্তম, যে স্বীয় ইমারতের ভিত্তি আল্লাহর ভীতির উপর এবং তাঁর সন্তুষ্টির উপর স্থাপন করেছে অথবা সেই ব্যক্তি, যে স্বীয় ইমারতের ভিত্তি স্থাপন করেছে কোন গহ্বরের কিনারায়, যা ধ্বংসে পড়ার উপক্রম, অতঃপর তা তাকে নিয়ে জাহান্নামের আগুনে পতিত হয়। আর আল্লাহ এমন যালিমদেরকে সৎপথ প্রদর্শন করেন না।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا وَّضَرَاءً وَّتَفْرُقًا
بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَّارْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَيَحْلِفْنَ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا
الْحُسْنَى ۖ وَاللَّهُ يُشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٧﴾

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَلَسَّجِدِ أُنْسٌ عَلَى التَّقْوَى
مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ ۖ فِيهِ رِجَالٌ
يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿١٠٨﴾

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَى مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَى
شَفَا جُرْفٍ هَارٍ فَأَنْهَارُ بِهِ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۖ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾

১১০. তাদের এই ইমারত যা তারা নির্মাণ করেছে, তা সদা তাদের মনে খটকা সৃষ্টি করতে থাকবে, হ্যাঁ, যদি তাদের (সেই) অন্তরই ধ্বংস হয়ে যায়, তবে তো কথাই নাই, আর আল্লাহ হচ্ছেন মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

১১১. নিঃসন্দেহে আল্লাহ মু'মিনদের নিকট থেকে তাদের প্রাণ ও তাদের ধন-সম্পদ সমূহকে এর বিনিময়ে ক্রয় করে নিয়েছেন যে, তাদের জন্যে জান্নাত রয়েছে, তারা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করে, অতএব তারা হয় হত্যা করে অথবা তাদেরকে হত্যা করা হয়, এর (এই যুদ্ধের) দরুন (জান্নাত প্রদানের) সত্য অঙ্গীকার করা হয়েছে তাওরাতে, ইনজীলে এবং কুরআনে; আর কে আছে নিজের অঙ্গীকার পালনকারী আল্লাহ অপেক্ষা অধিক? অতএব তোমরা আনন্দ করতে থাকো তোমাদের এই ক্রয়-বিক্রয়ের উপর, যা তোমরা সম্পাদন করেছো, আর এটা হচ্ছে বিরাট সফলতা।^১

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ
إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ ط يُقَاتِلُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقَاتِلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدًّا عَلَيْهِ
حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ط وَمَنْ أَوْفَى
بِعَهْدِهِ مِنْ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي
بَايَعْتُمْ بِهِ ط وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি আল্লাহর পথে জিহাদ করে এবং একমাত্র আল্লাহর পথে জিহাদ ও তার বিধানের সত্যতার প্রতি স্বীয় বিশ্বাস প্রতিপন্ন করে দেখানো ছাড়া আর কিছুই যাকে বাড়ি থেকে বের করতে পারে না, আল্লাহ স্বয়ং তাঁর ব্যাপারে এ জিম্মাদারী গ্রহণ করেছেন যে, তাঁকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন (যদি সে জিহাদে শাহাদাত লাভ করে থাকে) অথবা সে যা কিছু পুরস্কার এবং গণীমাত লাভ করেছে সে সবসহ, যেখান থেকে সে (জিহাদে) বের হয়েছে সেখানে তাঁকে (সহিসালামতে) ফিরিয়ে আনবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩১২৩)

(খ) আমার ইবনে দীনার থেকে বর্ণিত। তিনি জাবের ইবনে আবদুল্লাহকে বলতে শুনেছেন যে, ওহুদ যুদ্ধের দিন এক ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বললঃ বলুন ভো, আমি যদি শহীদ হই তাহলে আমার অবস্থা কি হবে অর্থাৎ কোথায় অবস্থান করবো? নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ জান্নাতে থাকবে। তখন সে তার হাতের খেজুরগুলো- যা সে খেতেছিলো-ছুঁড়ে ফেলে দিয়ে জিহাদের ময়দানে ঝাঁপিয়ে পড়ে লড়াই করলো এবং শহীদ হলো। (বুখারী, হাদীস নং ৪০৪৬)

(গ) ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, (ঈনা) ভাল সম্পদ বাকীতে বেশি দামে বিক্রি করা নিয়ে ব্যস্ত থাকবে

১১২. তারা হচ্ছে তাওবাকারী, ইবাদতকারী প্রশংসাকারী সিয়াম পালনকারী, রুকু ও সিজদাকারী, সৎ বিষয় শিক্ষা প্রদানকারী এবং মন্দ বিষয়ে বাধা প্রদানকারী, আল্লাহর সীমাসমূহের সংরক্ষণকারী; আর তুমি মু'মিনদেরকে সুসংবাদ শুনিতে দাও।^১

১১৩. নবী ও অন্যান্য মু'মিনদের জন্যে জায়েয নয় যে, তারা মুশরিকদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে, যদিও তারা আত্মীয়ই হোক না কেন, একথা প্রকাশ হওয়ার পর যে তারা জাহান্নামের অধিবাসী।

১১৪. আর ইব্রাহীমের নিজ পিতার জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করা, তা তো শুধু সেই ওয়াদার কারণে ছিল, যে ওয়াদা তিনি তার সাথে করেছিলেন। অতঃপর যখন তাঁর নিকট প্রকাশ পেলো যে, সে (পিতা) আল্লাহর দুশমন, তখন তিনি সম্পর্ক ছিন্ন করেন। বাস্তবিকই ইব্রাহীম ছিলেন অতিশয় ইবাদত গুজার, সহনশীল।

১১৫. আর আল্লাহ এরূপ নন যে, কোন জাতিকে হিদায়াত করার পর পথভ্রষ্ট করে দেন, যে পর্যন্ত না তাদেরকে সেসব বিষয় পরিষ্কারভাবে বলে দেন, যা হতে তারা বেঁচে

التَّائِبُونَ الْعِبَادُونَ الْحَمِيدُونَ السَّائِحُونَ
الرَّكِعُونَ السُّجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَفِظُونَ لِحُدُودِ
اللَّهِ ط وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَاللَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ
وَعَدَاهَا آيَاتِهِ ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ
تَبَرَّأَ مِنْهُ ط إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ
حَتَّىٰ يَبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ط إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

এবং গরুর লেজ ধরে থাকবে ও চাষাবাদ নিয়ে ব্যস্ত থাকবে, আর জিহাদ ছেড়ে দিবে। তখন আল্লাহ তোমাদের উপর লাঞ্ছনা চাপিয়ে দিবেন। আর যতক্ষণ পর্যন্ত তোমরা তোমাদের ধীনের দিকে ফিরে না আসবে, ততক্ষণ পর্যন্ত আল্লাহ তোমাদেরকে এ থেকে মুক্তি দিবেন না। (আবু দাউদ, হাদীস নং ৩৪৬২)

১। সাহাল বিন সায়াদ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি তার দুই চোয়ালের হাড়ির (যবানের) এবং দু'পায়ের মাখানের (লজ্জাস্থানের) যামানত আমাকে দিবে, আমি তার জান্নাতের যামীন হব। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭৪)

থাকবে; নিশ্চয়ই আল্লাহ হচ্চেন
সর্বজ্ঞ ১২

১১৬. নিশ্চয়ই আল্লাহরই রাজত্ব
রয়েছে আসমানসমূহে ও যমীনে;
তিনিই জীবন দান করেন এবং মৃত্যু
ঘটিয়ে থাকেন; আর তোমাদের
জন্যে আল্লাহ ছাড়া না কোন বন্ধু
আছে আর না কোন সাহায্যকারী।

১১৭. আল্লাহ অনুগ্রহ করলেন নবীর
প্রতি এবং মুহাজির ও
আনসারদের প্রতি যারা নবীর
আনুগত্য করেছিলেন সংকট মুহূর্তে
(তাবুকের যুদ্ধে), এমন কি যখন
তাদের মধ্যকার এক দলের অন্তর
বিচলিত হওয়ার উপক্রম হয়েছিল,
তৎপর আল্লাহ তাদের প্রতি
অনুগ্রহপরায়ণ হলেন। নিঃসন্দেহে
আল্লাহ তাদের সকলের উপর
স্নেহশীল, করুণাময়।

১১৮. আর ঐ তিনব্যক্তির প্রতিও
(অনুগ্রহ করলেন) যাদেরকে পিছে
ছেড়ে দেয়া হয়েছিল (মুসলমানদের
সাথে বের হওয়া থেকে) এই পর্যন্ত যে,
যখন ভূ-পৃষ্ঠ নিজ প্রশস্ততা সত্ত্বেও
তাদের প্রতি সংকীর্ণ হতে লাগলো
এবং তারা নিজেরা নিজেদের
জীবনের প্রতি বিতৃষ্ণ হয়ে পড়লো

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَيُيْتِي ط
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝۱۱۶

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ
يَزِيغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ط
إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝۱۱۷

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا ط حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ
عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ
وَوَظَنُوا أَنَّ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ط ثُمَّ تَابَ
عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ط إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝۱۱۸

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) হারুরিয়াদের (খারেজীদের) সম্পর্কে বর্ণনা করেছেন।
নবী করীম (সাদ্বাআল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তারা ইসলাম থেকে এমনভাবে বেরিয়ে যাবে যেমন
তীর ধনুকের ছিলার মধ্য থেকে বের হয়ে যায়। (অর্থাৎ তারা ইসলাম থেকে সম্পূর্ণ বের হয়ে যাবে)
(বুখারী, হাদীস নং ৬৯৩২)

২। তাবুক যুদ্ধে অংশগ্রহণ থেকে বিরত থাকা কা'ব বিন মালেকসহ তিন সাহাবী।

আর তারা বুঝতে পারলো যে, আল্লাহর পাকড়াও হতে কোথাও আশ্রয় পাওয়া যেতে পারে না তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন করা ব্যতীত; তৎপর তাদের প্রতি অনুগ্রহ-দৃষ্টি করলেন, যাতে তারা তাওবা করে নিশ্চয়ই আল্লাহ অতিশয় অনুগ্রহকারী, করুণাময়।

১১৯. হে মু'মিনগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং (কথায়-কাজে) সত্যবাদীদের সঙ্গে থাকো।^১

১২০. মদীনার অধিবাসীদের এবং তাদের আশে-পাশে যেসব বেদুঈন রয়েছে, তাদের পক্ষে এটা উচিত ছিল না যে, তারা আল্লাহর রাসূলের সঙ্গী না হয়, আর এটাও (উচিত ছিল) না যে, নিজেদের প্রাণ তাঁর প্রাণ অপেক্ষা প্রিয় মনে করে, এর কারণ এই যে, আল্লাহর পথে তাদের যে পিপাসা দেখা দেয়, যে ক্লাস্তি স্পর্শ করে, আর যে ক্ষুধা পায় আর তাদের এমন পদক্ষেপ কাফিরদের

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخَصَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَّوْنُ مَوْطِنًا يَعْغِطُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نِيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহুমা) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, নিশ্চয় সত্যবাদিতা (মানুষকে) নেকীর দিকে পথ দেখায় এবং নেকী জান্নাতের দিকে চালিত করে। আর মানুষ সত্য বলতে বলতে শেষ পর্যন্ত সিদ্ধিক (সত্যবাদী) হয়ে যায়। আর মিথ্যা (মানুষকে) বদ-আমলের দিকে এবং জাহান্নামের দিকে নিয়ে যায়। মানুষ মিথ্যা বলতে থাকে। শেষ পর্যন্ত আল্লাহর নিকট জঘন্য মিথ্যাবাদী হিসেবে তার নাম লিখা হয়ে যায়। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৪)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, মুনাফিকের আলামত তিনটি- (১) যখন সে কথা বলে, মিথ্যা বলে, (২) যখন ওয়াদা করে, ভঙ্গ করে, (৩) যখন তার নিকট কিছু আমানত রাখা হয়, তাতে খেয়ানত করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৪)

(গ) সামুরা ইবনে জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি (স্বপ্নে) দেখলাম, দু'জন লোক আমার নিকট এসে বলতে লাগলো, আপনি (মি'রাজের রাতে) যে লোকটি দেখতে পেয়েছিলেন, তার মুখ চিরে ফেলা হচ্ছিল, সে জঘন্য মিথ্যাবাদী ছিল। আর সে এমনভাবে মিথ্যা রটাতো যে, দুনিয়ার প্রতি কোণে কোণে তা ছড়িয়ে যেত। কিয়ামত পর্যন্ত এ মিথ্যাবাদীর অনুরূপ শাস্তি হতে থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৬)

ক্রোধের কারণ হয়ে থাকে, আর দুশমনদের হতে তারা যা কিছু প্রাপ্ত হয়, এর প্রত্যেকটির বিনিময়ে তাদের জন্যে এক একটি নেক আমল লিপিবদ্ধ হয়ে যায়, নিশ্চয়ই আল্লাহ সৎ কর্মশীলদের পুণ্যফল বিনষ্ট করবেন না।

১২১. আর ছোট-বড় যা কিছু তারা ব্যয় করেছে, আর যত প্রাপ্তর তাদের অতিক্রম করতে হয়েছে, তৎসমুদয়ও তাদের জন্যে লিখিত হয়েছে, যেন আল্লাহ তাদের কৃতকর্মসমূহের অতি উত্তম বিনিময় প্রদান করেন।^১

১২২. আর মু'মিনদের এটা (ও) সমীচীন নয় যে, (জিহাদের জন্যে) সবাই একত্রে বের হয়ে পড়ে; সুতরাং এমন কেন করা হয় না যে, তাদের প্রত্যেকটি বড় দল হতে এক একটি ছোট দল বহির্গত হয়, যাতে তারা ধর্মজ্ঞান অর্জন করতে পারে, আর যাতে তারা নিজ কণ্ঠমকে (নাফরমানী হতে) ভয় প্রদর্শন করে যখন তারা ওদের নিকট প্রত্যাবর্তন করে, যেন তারা সতর্ক হয়।

لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْحَسَنِينَ ﴿١٢﴾

وَلَا يَنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًّا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً ۖ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢﴾

১। (ক) আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন, বান্দাহ যখন ইসলাম গ্রহণ করে এবং তার ইসলামটা সুন্দর হয়, আল্লাহ্ তার পূর্বেকার প্রত্যেকটি গুনাহ ঢেকে (মাফ করে) দেন। তারপর (ভাল-মন্দ কাজের এরূপ) প্রতিদান দেয়া হয়- ভালর বদলে দশগুণ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত; আর মন্দের বদলে ঠিক ততটুকু মন্দ, তবে আল্লাহ্ তাও মাফ করে দিতে পারেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪১)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ যখন তোমাদের কেউ তাঁর ইসলামকে সুন্দর করে তোলে, তখন সে যে ভাল কাজ করে তার বিনিময় দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত তার জন্য সওয়াব লেখা হয়; কিন্তু সে যে মন্দ কাজ করে তার বিনিময় তার জন্য (কেবলমাত্র) ততটুকুই লেখা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৪২)

১২৩. হে মু'মিনগণ! ঐ কাফিরদের সাথে যুদ্ধ কর যারা তোমাদের আশে-পাশে অবস্থান করে, আর যেন তারা তোমাদের মধ্যে কঠোরতা পায়; আর জেনে রেখো যে, আল্লাহ পরহেযগারদের সাথে রয়েছেন।

১২৪. আর যখন কোন সূরা অবতীর্ণ করা হয় তখন তাদের মধ্যে কিছু লোক বলেঃ তোমাদের মধ্যে এই সূরা কার ঈমান বৃদ্ধি করলো? অনন্তর যেসব লোক ঈমান এনেছে, এই সূরা তাদের ঈমানকে বর্ধিত করেছে এবং তারাই আনন্দ লাভ করেছে।

১২৫. আর যাদের অন্তরসমূহে রোগ রয়েছে, এই সূরা তাদের কলুষের সাথে আরো কলুষতা বর্ধিত করেছে, আর তাদের কুফরী অবস্থাতেই মৃত্যু হয়েছে।

১২৬. আর তারা কি দেখে না যে, তারা প্রতি বছর একবার বা দু'বার কোন না কোন বিপদে পতিত হয়ে থাকে? তবুও প্রত্যাবর্তন করে না, আর না তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

১২৭. আর যখন কোন সূরা নাখিল করা হয় তখন তারা একে অপরের দিকে তাকাতে থাকে (এবং ইঙ্গিতে বলে); তোমাদেরকে কেউ দেখছে না তো? অতঃপর তারা চলে যায়; আল্লাহ তাদের অন্তরগুলোকে ফিরিয়ে দিয়েছেন, কারণ তারা হচ্ছে নির্বোধ সমাজ মাত্র।

১২৮. তোমাদের নিকট আগমন করেছে তোমাদেরই মধ্যকার এমন

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ
مِنَ الْكُفَّارِ وَلِيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً وَأَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ
إِنَّ هَذِهِ آيَاتُنَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا
فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ
رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

أَوْ لَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً
أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
هَلْ يَرَاكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا وَصَرَفَ
اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ

একজন রাসূল যার কাছে তোমাদের ক্ষতিগ্রস্ত হওয়া অতি কষ্টদায়ক মনে হয়, যিনি হচ্ছেন তোমাদের খুবই হিতাকাঙ্ক্ষী, মু'মিনদের প্রতি বড়ই স্নেহশীল, করুণাপরায়ণ।

১২৯. অতঃপর যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তুমি বলে দাও: আমার জন্যে তো আল্লাহই যথেষ্ট, তিনি ছাড়া অন্য কোন সত্য মা'বুদ নেই আমি তাঁরই উপর নির্ভর করছি, আর তিনি হচ্ছেন মহা আরশের মালিক।

সূরাঃ ইউনুস, মাক্কী

(আয়াতঃ ১০৯, রুকূ'ঃ ১১)

দয়াময় মেহেরবান আল্লাহর নামে শুরু করছি।

১. আলিফ-লাম-রা, এটা অতি সূক্ষ্ম তত্ত্বপূর্ণ কিতাবের আয়াত।

২. লোকদের জন্যে এটা কি বিস্ময়কর হয়েছে যে, আমি তাদের মধ্য হতে একজনের নিকট ওহী প্রেরণ করেছি এই মর্মে, তুমি সকলকে ভয় প্রদর্শন কর এবং যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে এই সুসংবাদ দাও যে, তারা তাদের প্রতিপালকের নিকট (পূর্ণ মর্যাদা) লাভ করবে; কাফিররা বলতে লাগলো যে, এ ব্যক্তি তো নিঃসন্দেহে প্রকাশ্য যাদুকর।

مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٣٠﴾

سُورَةُ يُونُسَ مَكِّيَّةٌ

أَيَّاتُهَا ١٠٩ رُكُوعَاتُهَا ١١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الر تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكٰفِرُونَ إِنَّ هَذَا السَّجْرُ مُبِينٌ ﴿١﴾

৩. নিশ্চয় আল্লাহই হচ্ছেন তোমাদের প্রতিপালক, যিনি আসমানসমূহকে এবং যমীনকে সৃষ্টি করেছেন ছয়দিনে, অতঃপর তিনি আরশে সমুদ্রীত হলেন, তিনি প্রত্যেক কাজ পরিচালনা করে থাকেন; তাঁর অনুমতি ব্যতীত কোন সুপারিশকারী নেই, আল্লাহই তোমাদের প্রতিপালক, অতএব তোমরা তাঁরই ইবাদত কর; তবুও কি তোমরা বুঝছো না।

৪. তোমাদের সকলকে তাঁরই দিকে ফিরে যেতে হবে, আল্লাহর ওয়াদা সত্য; নিশ্চয়ই তিনিই প্রথমবার সৃষ্টি করেন, অতঃপর তিনিই পুনর্বারও সৃষ্টি করবেন, যাতে এরূপ লোকদের, যারা ঈমান আনয়ন করেছে এবং ভাল কাজ করেছে তাদেরকে ইনসারফ মত প্রতিফল প্রদান করেন; আর যারা কুফরী করেছে তারা পাবে উত্তম পানি এবং যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি তাদের কুফরীর কারণে।

৫. তিনি (আল্লাহ), যিনি সূর্যকে দীপ্তিমান এবং চন্দ্রকে আলোকময় বানিয়েছেন এবং ওর (গতির) জন্য মঞ্জিলসমূহ নির্ধারিত করেছেন যাতে তোমরা বছরসমূহের সংখ্যা ও হিসাব জানতে পার; আল্লাহ এসব বস্তু অযথা সৃষ্টি করেননি, তিনি এই প্রমাণাদি বিশদভাবে বর্ণনা করেন এসব লোকের জন্যে যারা জ্ঞানবান।

৬. নিঃসন্দেহে রাত্রি ও দিবসের পরিবর্তন এবং আল্লাহ যা কিছু

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مَا مِنْ شَيْعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذُكِّرْكُمُ اللَّهُ رَبَّكُمْ فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿۱۰﴾

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدُوَ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿۱۰﴾

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿۱۰﴾

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ

আসমানসমূহে ও যমীনে সৃষ্টি করেছেন তৎসমূহদের মধ্যে প্রমাণসমূহ রয়েছে ঐ লোকদের জন্যে যারা আল্লাহর ভয় পোষণ করে।

৭. যারা আমার সাথে সাক্ষাতের আশা পোষণ করে না এবং পার্থিব জীবনেই পরিতৃপ্ত থাকে এবং এতেই যারা নিশ্চিন্ত থাকে এবং যারা আমার নিদর্শনাবলী সম্বন্ধে গাফিল।

৮. এইরূপ লোকদের ঠিকানা হচ্ছে জাহান্নাম, তাদের কার্যকলাপের কারণে।

৯. নিশ্চয়ই যারা ঈমান এনেছে এবং ভাল কাজ করেছে তাদের প্রতিপালক তাদেরকে লক্ষ্যস্থলে (জান্নাতে) পৌছিয়ে দিবেন, তাদের ঈমানের কারণে, শান্তির উদ্যানসমূহে তাদের (বাসস্থানের) তলদেশ দিয়ে নহরসমূহ বইতে থাকবে।

১০. সেখানে তাদের আহ্বান হবেঃ হে আল্লাহ! তুমি মহান, পবিত্র! এবং পরস্পরের শুভেচ্ছা হবেঃ সালাম, আর তাদের শেষ কথা হবেঃ আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন।

১১. আর যদি আল্লাহ মানবের উপর ত্বরিত ক্ষতি ঘটাতেন, যেমন তারা ত্বরিত উপকার লাভ করতে আগ্রহ রাখে, তবে তাদের নির্ধারিত সময় কবেই পূর্ণ হয়ে যেতো; অনন্তর আমি সেই লোকদেরকে যারা আমার নিকট উপস্থিত হওয়ার চিন্তা করে না, ছেড়ে

فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَاطْمَأَنَّنُوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غُفْلُونَ ﴿١١﴾

أُولَئِكَ مَا لَهُمْ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ
رَبُّهُمْ إِلَىٰ آيَاتِهِمْ ۗ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٣﴾

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّاتُهُمْ فِيهَا
سَلَامٌ ۗ وَأُخْرَىٰ دَعْوَاهُمْ أَنْ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٤﴾

وَلَوْ يَجِئِلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتَجَعَلَهُمْ بِالْخَيْرِ
لَقَضَىٰ إِلَيْهِمْ أَجْلَهُمْ ط فَتَذَرُ الَّذِينَ لَا يُرْجُونَ
لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾

দেই তাদের অবস্থার উপর, যেন তারা তাদের অবাধ্যতার মধ্যে ঘুরপাক খেতে থাকে।

১২. আর যখন মানুষকে কোন ক্লেশ-কষ্ট স্পর্শ করে তখন আমাকে ডাকতে থাকে শুয়ে, বসে এবং দাঁড়িয়েও, অতঃপর যখন আমি সেই কষ্ট ওর হতে দূর করে দেই তখন সে নিজের পূর্ব অবস্থায় ফিরে আসে, যে কষ্ট তাকে স্পর্শ করেছিল তা মোচন করার জন্যে সে যেন আমাকে কখনো ডাকেইনি। এই সীমালংঘন-কারীদের কার্যকলাপ তাদের কাছে এইরূপই চাকচিক্যময় মনে হয়।

১৩. আমি তোমাদের পূর্বে বহু সম্প্রদায়কে ধ্বংস করে দিয়েছি, যখন তারা যুলুম করেছিল, অথচ তাদের নিকট তাদের রাসূলগণও স্পষ্ট প্রমাণাদিসহ আগমন করেছিল, আর তারা কখনই ঈমান আনয়নকারী ছিল না। আর আমি অপরাধীদেরকে এইরূপেই শাস্তি দিয়ে থাকি।

১৪. অতঃপর, আমি তাদের স্থলে তোমাদেরকে তাদের পর ভূ-মন্ডলে প্রতিনিধি বানালাম যেন আমি প্রত্যক্ষ করি যে তোমরা কিরূপ কাজ কর।

১৫. আর যখন তাদের সামনে আমার আয়াতসমূহ পাঠ করা হয় যা অতি স্পষ্ট, তখন ঐ সব লোক যারা আমার সাক্ষাতের আশা করে না, এইরূপ বলেঃ এটা ছাড়া অন্য কোন কুরআন আনয়ন করুন অথবা এতেই কিছু পরিবর্তন করে দিন; তুমি বলে

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنَّةٍ أَوْ قَاعٍ
أَوْ قَابِئَةٍ فَلَبَّا كَشَفْنَا عَنْهُ صُورَهُ مَرَّكَانَ لَمْ
يَدْعُنَا إِلَىٰ صُورٍ مِّمَّسَّةٍ كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

وَلَقَدْ أَهَلَكْنَا الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ لَبَّا ظَلَمُوا
وَجَاءَهُمْ رَسُولُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا
كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ
لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ لَّا يَخَذِلُوكَ
الَّذِينَ لَّا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنَّتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ
قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِن تِلْقَائِي نَفْسِي
إِنْ أَرَادَ إِلَّا مَا يُؤْتَىٰ لِي ۚ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ

দাওঃ আমার দ্বারা এটা সম্ভব নয় যে, আমি নিজের পক্ষ হতে এতে পরিবর্তন করে দেই, আমি তো শুধু তারই অনুসরণ করবো যা ওহী যোগে আমার কাছে পৌঁছেছে, যদি আমি আমার প্রতিপালকের নাফরমানী করি তবে আমি এক অতি ভীষণ দিনের শাস্তির ভয় করি।

১৬. তুমি বলে দাওঃ যদি আল্লাহর ইচ্ছা হতো তবে না আমি তোমাদেরকে এটা পাঠ করে শুনাতাম, আর না আল্লাহ তোমাদেরকে ওটা জানাতেন, কেননা আমি এর পূর্বেওতো জীবনের এক দীর্ঘ সময় তোমাদের মধ্যে অতিবাহিত করেছি; তবে কি তোমরা এতটুকু জ্ঞান রাখো না?

১৭. অতএব সে ব্যক্তির চেয়ে অধিক অত্যাচারী কে হবে, যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে অথবা তাঁর আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে? নিঃসন্দেহে এমন পাপাচারীদের কিছুতেই মঙ্গল (মুক্তি) হবে না।

১৮. আর তারা আল্লাহ ছাড়া এমন বস্তুসমূহেরও ইবাদত করে যারা তাদের কোন অপকারও করতে পারে না এবং তাদের কোন উপকারও করতে পারে না, আর তারা বলেঃ এরা হচ্ছে আল্লাহর নিকট আমাদের সুপারিশকারী; তুমি বলে দাওঃ তোমরা কি আল্লাহকে এমন বিষয়ের সংবাদ দিচ্ছ যা তিনি অবগত নন, না আকাশসমূহে, আর না যমীনে? তিনি

رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَكَوَّنَتْ عَلَيْكُمْ وَلَا أَذْرَكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۗ قُلْ أَتَنْتَبَهُونَ ۗ اللَّهُ بِمَا لَا يَعْلَمُونَ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعَلَّىٰ عَنَّا يَسِرُّونَ ﴿١٨﴾

পবিত্র ও তাদের মুশরিকী কার্যকলাপ হতে অনেক উর্ধ্বে।

১৯. আর সমস্ত মানুষ (প্রথম) এক উম্মতই ছিল, অতঃপর তারা মতভেদ সৃষ্টি করলো; আর যদি তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক নির্দেশবাণী প্রথমে সাব্যস্ত হয়ে না থাকতো তবে যে বিষয়ে তারা মতভেদ করছে তার চূড়ান্ত মীমাংসা হয়ে যেতো।^১

২০. আর তারা বলে: তাঁর প্রতি তাঁর প্রতিপালকের পক্ষ হতে কোন মু'জিয়া কেন নাযিল হলো না? সুতরাং তুমি বলে দাও: গায়েবের খবর শুধুমাত্র আল্লাহই জানেন, অতএব তোমরাও প্রতীক্ষায় থাকো, আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষায় থাকলাম।

২১. আর যখন আমি মানুষকে কোন নিয়ামতের স্বাদ উপভোগ করাই তাদের উপর কোন বিপদ পতিত হওয়ার পর, তখনই তারা আমার আয়াতসমূহ সম্বন্ধে দূরভিসন্ধি (কুমতলব) করতে থাকে; তুমি বলে দাও: আল্লাহ সবচেয়ে দ্রুত কৌশল গ্রহণ করতে পারেন। নিশ্চয়ই আমার ফেরেশতারা তোমাদের সকল দূরভিসন্ধি লিপিবদ্ধ করছেন।

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ
فِيهَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ
فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانظُرُوا إِلَيَّ مِنْ
مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُمْ
إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا
إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বর্ণনা করেন যে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, প্রত্যেকটি নবজাত শিশু ইসলামী স্বভাব নিয়ে জন্মগ্রহণ করে; কিন্তু পরে পিতা-মাতা তাকে ইয়াহুদ করে গড়ে তুলে অথবা নাসারা করে গড়ে তুলে অথবা অগ্নিপূজক করে গড়ে তুলে। ঠিক যেমন চতুঃপদ পশু চতুঃপদ পশু জন্ম দেয়। তোমরা তার নাক বা অন্যান্য অংশ কাটা দেখতে পাও কি? (বুখারী, হাদীস নং ১৩৮৫)

২২. তিনি এমন, যিনি তোমাদেরকে স্থলভাগে ও জলভাগে পরিভ্রমণ করান; এমন কি যখন তোমরা নৌকায় অবস্থান কর, আর সেই নৌকাগুলো লোকদের নিয়ে অনুকূলে বায়ুর সাহায্যে চলতে থাকে, আর তারা তাতে আনন্দিত হয়, (হঠাৎ) তাদের উপর এক প্রচণ্ড (প্রতিকূল) বায়ু এসে পড়ে এবং প্রত্যেক দিক হতে তাদের উপর তরঙ্গমালা ধেয়ে আসে, আর তারা মনে করে যে তারা (বিপদে) বেষ্টিত হয়ে পড়েছে, (তখন) সকলে খাঁটি বিশ্বাসের সাথে আল্লাহকেই ডাকতে থাকে, (হে আল্লাহ!) যদি আপনি আমাদেরকে এটা হতে রক্ষা করেন, তবে আমরা অবশ্যই কৃতজ্ঞ হয়ে যাবো।

২৩. অনন্তর যখনই আল্লাহ তাদেরকে উদ্ধার করে নেন, তখনই তারা ভূ-পৃষ্ঠে অন্যায়াভাবে বিদ্রোহচারণ করতে থাকে, হে লোক সকল! (শুনে রেখো), তোমাদের বিদ্রোহচারণ তোমাদেরই প্রাণের জন্যে বিপদ হবে, পার্থিব জীবনে (এটা দ্বারা কিছু) ফলভোগ করছো, তৎপর আমারই পানে তোমাদেরকে ফিরে আসতে হবে, অতঃপর আমি তোমাদের যাবতীয় কৃতকর্ম তোমাদেরকে জানিয়ে দেবো।

২৪. বস্তুতঃ পার্থিব জীবনের অবস্থা তো এরূপ, যেমন আমি আসমান হতে পানি বর্ষণ করলাম তৎপর তা দ্বারা উৎপন্ন হয় যমীনের উদ্ভিদগুলো

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا
كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ ۖ وَجَرَبَينَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ
وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ
الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُم أُحِيضَ بِهِمْ ۖ
دَعَاؤُ اللَّهِ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ لَئِنِ أَنْجَيْتَنَا
مِنْ هَذِهِ لَنُكْفِرَنَّ مِنَ الشُّكْرِينَ ﴿۲۲﴾

فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ط
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغَيْتُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ ۖ مَتَاعَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۲۳﴾

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنْ
السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ
النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ط حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ

অতিশয় ঘন হয়ে, যা মানুষ ও পশুরা ভক্ষণ করে; এমন কি, যখন সেই যমীন নিজের সুদৃশ্যতার পূর্ণ রূপ ধারণ করলো এবং তা শোভনীয় হয়ে উঠলো, আর ওর মালিকরা মনে করলো যে, তারা এখন ওর পূর্ণ অধিকারী হয়েছে, তখন দিবাকালে অথবা রাত্রিকালে ওর উপর আমার পক্ষ হতে কোন আপদ এসে পড়লো, সুতরাং আমি ওকে এমন নিশ্চিহ্ন করে দিলাম যেন গতকল্য ওর অস্তিত্বই ছিল না, এরূপেই নিদর্শনাবলীকে আমি বিশদরূপে বর্ণনা করি এমন লোকদের জন্যে, যারা ভেবে দেখে।

২৫. আর আল্লাহ তোমাদেরকে শান্তির আবাসের (জান্নাতের) দিকে আহ্বান করেন এবং যাকে ইচ্ছা সরল পথে চলার ক্ষমতা দান করেন।

২৬. যারা নেক কাজ করেছে তাদের জন্যে উত্তম বস্ত্র (জান্নাত) রয়েছে; এবং আরো অতিরিক্ত জিনিস (আল্লাহর দীদার)। আর না তাদের মুখমন্ডলকে মলিনতা আচ্ছন্ন করবে, আর না অপমান; তারাই হচ্ছে জান্নাতের অধিবাসী, তারা ওর মধ্যে অনন্তকাল থাকবে।

২৭. পক্ষান্তরে যারা মন্দ কাজ করে, তারা তাদের মন্দ কাজের শাস্তি পাবে ওর অনুরূপ এবং অপমান তাদেরকে আচ্ছাদিত করে নেবে; আল্লাহ (এর শাস্তি) হতে কেউই তাদেরকে রক্ষা করতে পারবে না, যেন তাদের

رُحْرُقَهَا وَأَزْيِنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ
عَلَيْهَا ۗ إِنَّهَا أَمْرًا كَلِيلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا
كَانَ لَكُمْ تَعْنٌ بِالْأَمْسِ ۖ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ ۖ وَيَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۖ وَلَا يَرْهَقُ
وُجُوهُهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذُلٌّ ۖ أَولَئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِسِئْلِهَا ۗ
وَتَرْهَقُهُمْ ذُلٌّ ۖ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ
كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۖ

মুখমন্ডলকে আচ্ছাদিত করে দেয়া হয়েছে অন্ধকার রাত্রির পরতসমূহ দ্বারা; এরা হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী, তারা ওর মধ্যে অনন্তকাল থাকবে।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٤﴾

২৮. আর সেদিনটিও (উল্লেখযোগ্য,) যেদিন আমি তাদের সকলকে একত্রিত করবো, অতঃপর মুশরিকদেরকে বলবোঃ তোমরা ও তোমাদের শরীকরা স্ব-স্ব স্থানে অবস্থান কর, অনন্তর আমি তাদের মধ্যে পরস্পর বিভেদ সৃষ্টি করে দেবো এবং তাদের সেই শরীকরা বলবেঃ তোমরা তো আমাদের ইবাদত করতে না।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبَعًا ۖ ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ۖ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ آيَانَا عَبَدُودُونَ ﴿٢٨﴾

২৯. বস্তুতঃ আমাদের ও তোমাদের মধ্যে আল্লাহই হচ্ছেন যথোপযুক্ত সাক্ষী যে, আমরা তোমাদের ইবাদত সমন্ধে অবগত ছিলাম না।

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴿٢٩﴾

৩০. তথায় প্রত্যেক ব্যক্তিই স্বীয় পূর্ব কৃতকর্মগুলো পরীক্ষা করে নেবে এবং তাদেরকে আল্লাহর দিকে প্রত্যাভর্তিত করা হবে, যিনি তাদের প্রকৃত মালিক, আর যেসব মিথ্যা মা'বুদ তারা বানিয়ে নিয়েছিল তা সব কিছু নিমিষেই হারিয়ে যাবে।

هُنَالِكَ تَبۜوۜنَا كُلُّ نَفۜسٍ مَّاۤ أَسۜلَفَتۜ وَرُدُّوۜا إِلَىٰ اللّٰهِ مَوۜلَهُمُ الحَقُّ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوۜا يَفۜكُرُوۜنَ ﴿٣٠﴾

৩১. তুমি বলঃ কে, তোমাদেরকে আসমান ও যমীন হতে রিষিক পৌছিয়ে থাকেন? অথবা কে কর্ণ ও চক্ষুসমূহের উপর পূর্ণ অধিকার রাখেন? আর কে জীবন্তকে প্রাণহীন হতে বের করেন, আর প্রাণহীনকে জীবন্ত হতে বের করেন? আর কে

قُلْ مَنْ يَّرۜدُّكُمْ مِّنَ السَّۜمَآءِ وَٱلْأَرۜضِ أَمۜنٌ يَّۜمۜلِكُ السَّمۜعِ وَٱلْأَبۜصَارِ وَمَنۜ يُخۜرِجُ الحَيَّ مِنَ المَيِّتِ وَيُخۜرِجُ المَيِّتَ مِنَ الحَيِّ وَمَنۜ يُّدۜبِرُ الأَمۜرَ فَسَيَقۜوۜلُونَ اللّٰهُ ۖ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

সমস্ত কাজ পরিচালনা করেন? তখন অবশ্যই তারা বলবে যে, আল্লাহ; অতএব, তুমি বলঃ তবে কেন তোমরা ভয় কর না?

৩২. সুতরাং তিনিই হচ্ছেন আল্লাহ, যিনি তোমাদের সত্য প্রতিপালক, অতএব সত্যের পর দ্রষ্টতা ছাড়া আর কি রইলো? তবে তোমরা (সত্যকে ছেড়ে) কোথায় ফিরে যাচ্ছ?

৩৩. এইভাবে সমস্ত অবাধ্য লোকের সম্পর্কে তোমার প্রতিপালকের এই কথা সাব্যস্ত হয়ে গেল যে, তারা ঈমান আনবে না।

৩৪. (হে নবী ﷺ) তুমি বলঃ তোমাদের (নিরূপিত) শরীকদের মধ্যে এমন কেউ আছে কি যে প্রথমবারও সৃষ্টি করে, আবার পুনর্বারও সৃষ্টি করে, তুমি বলঃ আল্লাহই প্রথমবারও সৃষ্টি করেন। অতঃপর তিনিই পুনর্বারও সৃষ্টি করবেন। অতএব, তোমরা (সত্য হতে) কোথায় ফিরে যাচ্ছ?

৩৫. তুমি বলঃ তোমাদের শরীকদের মধ্যে এমন কেউ আছে কি যে সত্য বিষয়ের সন্ধান দেয়? তুমি বলে দাও যেঃ আল্লাহই সত্য বিষয়ের পথ প্রদর্শন করেন; তবে কি যিনি সত্য বিষয়ের পথ প্রদর্শন করেন, তিনিই অনুসরণ করার সমধিক যোগ্য, না ঐ ব্যক্তি যে অন্যের পথ প্রদর্শন করা ছাড়া নিজেই পথ প্রাপ্ত হয় না? তবে তোমাদের কি হলো? তোমরা কিরূপ সিদ্ধান্ত গ্রহণ করছো?

فَذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا
الضَّلَالُ ۚ فَأَلْيَ تَصْرُفُونَ ﴿٣٢﴾

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا
أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُ ۖ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۖ فَأَلْيَ
تُؤْفِكُونَ ﴿٣٤﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۖ
قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۖ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ
أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ مَنْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدَىٰ ۚ فَمَا
لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. আৱ তাৱেদে অধিকাংশ লোক শুধু অলীক কল্পনাৱ পিছনে চলছে; নিশ্চয়ই অলীক কল্পনা বাস্তব ব্যাপাৱে মোটেই ফলপ্রসূ নয়; নিশ্চয়ই আল্লাহ সবই জানেন, যা কিছু তাৱা কৱেছে।

৩৭. আৱ এই কুৱআন কল্পনাপ্রসূত নয় যে, আল্লাহ ছাড়া অন্য কাৱো দ্বাৱা প্রকাশিত হযেছে; এটা তো সেই কিতাবেৱ সত্যতা প্রমাণকাৱী যা এৱ পূৰ্বে (নাযিল) হযেছে, এবং অবশ্যকীয় বিধানসমূহেৱ তফসীল বর্ণনাকাৱী, (এবং) এতে কোন সন্দেহ নেই, (এটা) বিশ্বপ্রতিপালকেৱ পক্ষ হতে (নাযিল) হযেছে।

৩৮. তাৱা কি এৱূপ বলে যে, এটা তাৱ (নবীৱ) স্বৱচিত? তুমি বলে দাও: তবে তোমৱা এৱ অনূৱূপ একটি সূৱাই আনয়ন কৱ এবং আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাকে যাকে নিতে পাৱ ডেকে নাও, যদি তোমৱা সত্যবাদী হও।

৩৯. বৱং তাৱা এমন বিষয়কে মিথ্যা সাব্যস্ত কৱেছে, যা তাৱেদে বোধগম্য নয়। আৱ এখনো তাৱেদে প্রতি এৱ বিশ্লেষণ আসেনি; এৱূপভাবে তাৱাও মিথ্যা সাব্যস্ত কৱেছিল, যাৱা তাৱেদে

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي
مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ
الْكِتَابِ لَأَرْيَبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ
وَادْعُوا مَنِ اسْتَعْتَبْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ
تَأْوِيلُهُ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

১। আবু হুৱাইৱা (রাযিআল্লাহ আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা কৱেছেন। তিনি বলেছেন, প্রত্যেক নবীকেই তাৱ (যুগ) উপযোগী মু'জেযা (বিশেষ নিদর্শন) প্রদান কৱা হযেছে। সে অনুসাৱে ঈমান আনা হযেছে। অথবা বলেছেন, তাঁৱ ওপৱই লোকেৱা ঈমান এনেছে। আৱ নিশ্চয়ই আমাকে ওহী দেয়া হযেছে, যা আল্লাহ তা'আলা আমাৱ ওপৱ নাযিল কৱেছেন। অতএব আমি আশা কৱছি যে, কিয়ামতের দিন আমাৱ অনুগামী তাৱেদে থেকে অধিক সংখ্যায় হবে। (বুখাৱী, হাদীস নং ৭২৭৪)

পূর্বে গত হয়েছে; অতএব, দেখো সেই অত্যাচারীদের পরিণাম কি হলো।

৪০. আর তাদের মধ্যে কতক লোক এর প্রতি ঈমান আনবে এবং কতক লোক তারা এর প্রতি ঈমান আনবে না, আর তোমার প্রতিপালক বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদেরকে ভালরূপে জানেন।

৪১. আর (এতদসত্ত্বেও) যদি তারা তোমাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করতে থাকে, তবে তুমি বলে দাওঃ আমার কর্মফল আমি পাবো আর তোমাদের কর্মফল তোমরা পাবে, তোমরা তো আমার কৃতকর্মের জন্যে দায়ী নও, আর আমিও তোমাদের কর্মের জন্যে দায়ী নই।

৪২. আর তাদের অনেকে তোমার কথা কান পেতে শোনে; তবে কি তুমি বখিরদেরকে শুনাচ্ছ, যদিও তাদের বোধশক্তি না থাকে।

৪৩. আর তাদের কতক লোক তোমাকে দেখছে; তবে কি তুমি অন্ধকে পথ দেখাতে চাচ্ছ, যদিও তাদের অন্তদৃষ্টি না থাকে?

৪৪. নিশ্চয়ই আল্লাহ মানুষের প্রতি কোন যুলুম করেন না, পরন্তু মানুষ নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুলুম করে।

৪৫. আর (ঐ দিনটি তাদেরকে স্মরণ করিয়ে দাও) যে দিন তিনি (আল্লাহ) তাদেরকে এইরূপ অবস্থায় একত্রিত করবেন, যেন তারা পূর্ণ

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۗ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٤٠﴾

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي عَبْدٌ لِّكَ وَعَلَيْكُمْ عَمَلُكُمْ ۗ أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۗ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۗ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُيَّىٰ وَلَوْ كَانُوا لَا يَبْصُرُونَ ﴿٤٣﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۗ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا

দিবসের মুহূর্তকাল মাত্র অবস্থান করেছিল, এবং তারা একে অপরকে চিনবে; বাস্তবিকই ক্ষতিগ্রস্থ হলো ঐসব লোক যারা আল্লাহর সাক্ষাৎকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং তারা হিদায়াত প্রাপ্ত ছিল না।

৪৬. আর আমি তাদের সাথে যে শাস্তির অঙ্গীকার করছি, যদি ওর সামান্য অংশও তোমাকে দেখিয়ে দেই, অথবা তোমাকে মৃত্যু দান করি, সর্বাবস্থায় তাদেরকে আমারই পানে আসতে হবে, আর আল্লাহ তাদের সকল কৃতকর্মেরই সাক্ষী।

৪৭. প্রত্যেক উম্মতের জন্যে এক একজন রাসূল রয়েছে, সুতরাং তাদের সেই রাসূল যখন এসে পড়েন (তখন) তাদের মীমাংসা করা হয় ন্যায়ভাবে, আর তাদের প্রতি কোন অবিচার করা হয় না।

৪৮. আর তারা বলেঃ (আমাদের এই অঙ্গীকার কখন (সংঘটিত) হবে? যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

৪৯. তুমি বলে দাওঃ আমি তো আমার নিজের জন্যে কোন উপকার বা ক্ষতির অধিকারী নই; কিন্তু যতটুকু আল্লাহ চান, প্রত্যেক উম্মতের জন্যে একটি নির্দিষ্ট সময় আছে; যখন তাদের সেই নির্দিষ্ট সময় এসে পৌঁছে, তখন তারা মুহূর্তকাল না পশ্চাদপদ হতে পারবে, আর না অগ্রসর হতে পারবে।

৫০. তুমি বলে দাওঃ বলতো, যদি তোমাদের উপর আল্লাহর আযাব

يُلَقَّاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٦﴾

وَأَمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا رَجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٧﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَأْجِرُونَ ﴿٥٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن آتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا

রাত্রিকালে অথবা দিবাভাগে এসে পড়ে, তবে তাতে অপরাধীদের তাড়াতাড়ি চাওয়ার কি আছে?

مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥١﴾

৫১. তবে ওটা যখন এসে পড়বে, তখন কে ওটা বিশ্বাস করবে? (বলা হবে) হ্যাঁ এখন মানলে, অথচ তোমরা ওর জন্যে তাড়াহুড়া করছিলে।

أَلَمْ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْنْتُمْ بِهِ ط آ لَنْ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

৫২. অতঃপর যালিমদেরকে বলা হবে: চিরস্থায়ী শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করতে থাকো, তোমরা তো তোমাদেরই কৃতকর্মের ফল পাচ্ছ।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

৫৩. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করে: ওটা (শাস্তি) কি যথার্থ বিষয়? তুমি বলে দাও: হ্যাঁ আমার প্রতিপালকের কসম। ওটা নিশ্চিত সত্য; আর তোমরা কিছুতেই আল্লাহকে অপারগ করতে পারবে না।

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قُلُوبِ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

৫৪. আর যদি প্রত্যেক (মুশরিকের) জুলুমকারীর কাছে দুনিয়া ভরা সম্পদও থাকে, তবে সে তা দান করেও নিজের প্রাণ রক্ষা করতে উদ্যত হবে এবং যখন তারা আযাব দেখতে পাবে, তখন অনুতাপকে গোপন রাখবে, আর তাদের ফায়সালা করা হবে ন্যায়াভাবে এবং তাদের প্রতি অবিচার করা হবে না।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَا فُتِدَتْ بِهِ ط وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَبَا رَأُوا الْعَذَابَ ۚ وَفُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

৫৫. স্মরণ রাখো যে, সবই আল্লাহর স্বত্ব যা কিছু আকাশসমূহে এবং যমীনে রয়েছে; স্মরণ রাখো যে, আল্লাহর অস্বীকার সত্য; কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط الْأَإِنَّ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

৫৬. তিনিই জীবন দান করেন এবং তিনিই মৃত্যু ঘটান, আর তোমরা সবাই তাঁরই পানে প্রত্যাবর্তিত হবে।

৫৭. হে মানব জাতি! তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের তরফ হতে সমাগত হয়েছে এক নসীহত এবং অন্তরসমূহের সকল রোগের আরোগ্যকারী, আর মু'মিনদের জন্যে পথ প্রদর্শক ও রহমত।

৫৮. তুমি বলে দাওঃ আল্লাহর এই দান ও রহমতের (কুরআনের) প্রতি সকলেরই আনন্দিত হওয়া উচিত; এটা (পার্থিব সম্পদ) হতে বহুগুণ উত্তম যা তারা সঞ্চয় করেছে।

৫৯. তুমি বলঃ আচ্ছা বলতো, আল্লাহ তোমাদের জন্যে যা কিছু রিযিক পাঠিয়েছেন, অতঃপর তোমারা ওর কতক অংশ হারাম এবং কতক অংশ হালাল সাব্যস্ত করে নিলে; তুমি জিজ্ঞেস করঃ আল্লাহ কি তোমাদেরকে অনুমতি দিয়েছেন, নাকি তোমরা আল্লাহর উপর মিথ্যা আরোপ করছো?

৬০. আর যারা আল্লাহর উপর মিথ্যা আরোপ করে, তাদের কিয়ামত দিবস সম্বন্ধে কি ধারণা? বাস্তবিক, মানুষের উপর আল্লাহর খুবই অনুগ্রহ রয়েছে; কিন্তু অধিকাংশ লোকই অকৃতজ্ঞ।

৬১. আর তুমি যে অবস্থাতেই থাক না কেন? আর তুমি (নবী ﷺ) যে কোন স্থান হতে কুরআন পাঠ কর এবং তোমরা (অন্যান্য লোক) যে

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَالْيَهُ تُرْجَعُونَ ﴿٥٨﴾

يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ
وَشَفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ ۗ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٩﴾

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا
هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٦٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَّا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّن رِّزْقٍ
فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ أَدْنَى
لَّكُمْ أَمَّ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ﴿٦١﴾

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٢﴾

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ
قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ

কাজই কর, আমার সব কিছুবই খবর থাকে, যখন তোমরা সেই কাজ করতে শুরু কর; কণা পরিমাণও কোন বস্তু তোমার প্রতিপালকের (জ্ঞানের) অগোচরে নয়; না যমীনে, না আসমানে, আর না কোন বস্তু তা হতে ক্ষুদ্রতর, না তা হতে বৃহত্তর; কিন্তু এই সমস্তই স্পষ্ট কিতাবে (লাওহে মাহফুজে) লিপিবদ্ধ রয়েছে।

৬২. মনে রেখো যে, আল্লাহর বন্ধুদের না কোন আশঙ্কা আছে, আর না তারা বিষণ্ণ হবে।^১

৬৩. তারা হচ্ছে সেই লোক যারা ঈমান এনেছে এবং (গুনাহ হতে) পরহেয় করে থাকে।

৬৪. তাদের জন্যে সুসংবাদ রয়েছে পার্থিব জীবনে^২ এবং পরকালেও; আল্লাহর থাকায় কোন পরিবর্তন হয় না; এটা হচ্ছে বিরাট সফলতা।

৬৫. আর তোমাকে যেন তাদের উক্তিগুলো বিষণ্ণ না করে, সকল ইয়্যত-সম্মান আল্লাহরই জন্যে রয়েছে; তিনি শুনে, জানেন।

شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ط وَمَا يَعْرُبُ عَنْ
رَبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي
كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

إِلَّا إِنْ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ط

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْآخِرَةِ ط لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ط ذَلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

وَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ
جَبِينًا ط هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

১। আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যখন মৃতকে খাটে রেখে লোকেরা তাদের কাঁধে উঠিয়ে নেয়, যদি সে পুণ্যবান হয়, তখন সে বলে, আমাকে নিয়ে এগিয়ে চল। আর যদি সে পুণ্যবান না হয়, তাহলে বলে হায়! এরা এটা কোথায় নিয়ে যাচ্ছে? তার এ চীৎকার মানুষ ছাড়া সকলেই শুনতে পায়। যদি (মানুষ) শুনত (এ চীৎকার) তাহলে সে সজা হারিয়ে ফেলত। (বুখারী, হাদীস নং ১৩১৪)

২। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, সুসংবাদ প্রদানকারী জিনিসসমূহ ছাড়া নবুওয়াতের আর কিছুই অবশিষ্ট নেই। লোকেরা জিজ্ঞেস করল, সুসংবাদ প্রদানকারী জিনিসসমূহ কি? তিনি বললেন, ভাল স্বপ্ন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯৯০)
(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, মু'মিনের ভাল স্বপ্ন নবুওয়াতের ছিচক্লিশ ভাগের একভাগ। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯৮৮)

৬৬. মনে রাখো, যত কিছু আসমান-সমূহে আছে এবং যত কিছু যমীনে আছে, এই সমস্তই আল্লাহরই; আর যারা আল্লাহকে ছেড়ে অন্য শরীকদের অনুসরণ করে, তারা কোন বস্তুর অনুসরণ করছে? তারা শুধু অবাস্তব খেয়ালের তাবেদারী করে চলছে এবং শুধু অনুমানপ্রসূত (মিথ্যা) কথা বলছে।

৬৭. তিনি এমন, যিনি তোমাদের জন্যে রাত্রি বানিয়েছেন, যেন তোমরা তাতে স্বস্তি লাভ কর, আর দিবসকেও সৃষ্টি করেছেন যে, তা হচ্ছে দেখাশুনোর উপকরণ; ওতে নিদর্শনাবলী রয়েছে তাদের জন্যে যারা শোনে।

৬৮. তারা বলেঃ আল্লাহর সন্তান আছে, তিনি পবিত্র! তিনি তো কারো মুখাপেক্ষী নন; তাঁরই স্বত্বে রয়েছে যা কিছু আসমানসমূহে আছে এবং যা কিছু যমীনে আছে; তোমাদের কাছে এর (উক্তি দাবীর) কোন প্রমাণও নেই; আল্লাহ সম্বন্ধে কি তোমরা এমন কথা আরোপ করছো যা তোমাদের জানা নেই?

৬৯. তুমি বলে দাওঃ যারা আল্লাহর উপর মিথ্যা রচনা করে তারা সফলকাম হবে না।

৭০. এটা দুনিয়ার সামান্য আরাম-আয়েশ মাত্র, তৎপর আমারই দিকে তাদের ফিরে আসতে হবে, তখন আমি তাদেরকে তাদের কুফরীর বিনিময়ে কঠিন শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করাবো।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ط
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
شُرَكَاءَ ط إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ آيَاتٍ لَتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالتَّهَارَ مُبْصِرًا ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ط هُوَ الْغَنِيُّ ط
لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط إِنَّ
عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ط اتَّقُوا اللَّهَ عَلَىٰ
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكِبٰبَ
لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُنذِرُهُمْ
الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

৭১. আর তুমি তাদেরকে নূহের ইতিবৃত্ত পড়ে শোনাও, যখন তিনি নিজের কণ্ঠমকে বললেনঃ হে আমার কণ্ঠম! যদি তোমাদের কাছে কঠিন মনে হয় আমার অবস্থান এবং আল্লাহর আদেশাবলী নসীহত করা, তবে আমার তো আল্লাহরই উপর ভরসা, সুতরাং তোমরা তোমাদের (কল্পিত) শরীকদেরকে সঙ্গে নিয়ে নিজেদের তদবীর মজবুত করে নাও, অতঃপর তোমাদের সেই তদবীর (গোপন ষড়যন্ত্র) যেন তোমাদের দুশ্চিন্তার কারণ না হয়, তারপর আমার সাথে (যা করতে চাও) করে ফেলো, আর আমাকে মোটেই অবকাশ দিও না।

৭২. এরপরও যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তবে আমি তো তোমাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক চাই (না, আমার পারিশ্রমিক তো শুধু আল্লাহরই যিম্মায় রয়েছে, আর আমাকে হুকুম করা হয়েছে যে, আমি যেন অনুগতদের অন্তর্ভুক্ত থাকি।

৭৩. অনন্তর তারা তাঁকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, অতএব আমি তাঁকে এবং যারা তাঁর সাথে নৌকায় ছিল তাদেরকে নাজাত দিলাম ও তাদেরকে আবাদ করলাম, আর যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিল, তাদেরকে নিমজ্জিত করে দিলাম, সুতরাং দেখো কি পরিণাম হয়েছিল তাদের, যাদেরকে ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিল।

وَآتِلْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ
 إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذٰكِرِي بِآيَاتِ اللّٰهِ
 فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجِيعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ
 ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرَكُمْ عَلَيْكُمْ عِشَّةً تُمْ اٰثْمُوا اِلَيَّ
 وَلَا تَنْظُرُونِ ④

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ اٰجْرٍ اِنْ اٰجُرِي
 اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۗ وَاَمْرٌ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ④

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلِكِ وَجَعَلْنَاهُمْ
 خٰلِفًا وَاَعْرَفْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا ۗ فَانظُرْ
 كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الْمُنذَرِيْنَ ④

৭৪. আবার আমি তার (নূহ عليه السلام)-এর পরে) অপর নবীদেরকে তাদের কওমের নিকট প্রেরণ করলাম, সুতরাং তারা তাদের নিকট মু'জিয়াসমূহ নিয়ে আসলো, এতদসত্ত্বেও তারা যে বস্তুকে পূর্বে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিল, পরেও তা মেনে নেয়নি। এভাবেই আমি সীমালঙ্ঘনকারীদের অন্তরসমূহের উপর মোহর লাগিয়ে দেই।

৭৫. অতঃপর আমি তাদের পর মূসা ও হারুনকে আমার মু'জিয়াসমূহ সহকারে ফিরাউন ও তার পরিষদ-বর্গের নিকট পাঠালাম, অনন্তর তারা অহংকার করলো, আর সেই লোকগুলো ছিল পাপাচারী সম্প্রদায়।

৭৬. অতঃপর যখন তাদের প্রতি আমার পক্ষ হতে প্রমাণ পৌঁছলো, তখন তারা বলতে লাগলো, নিশ্চয়ই এটা সুস্পষ্ট যাদু।

৭৭. মূসা বললেনঃ তোমরা কি এ হক সম্পর্কে এমন কথা বলছো, যখন ওটা তোমাদের নিকট পৌঁছলো? এটা কি যাদু? অথচ যাদুকররা তো সফলকাম হয় না!

৭৮. তারা বলতে লাগলোঃ তুমি কি আমাদের নিকট এই জন্যে এসেছো যে, আমাদেরকে সরিয়ে দিবে সেই তরীকা হতে, যাতে আমরা আমাদের পূর্বপুরুষদের পেয়েছি, আর পৃথিবীতে তোমাদের দু'জনের আধিপত্য স্থাপিত হয়ে যায়? আর

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ
قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبِئُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَارُونَ
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَسِحْرٌ
هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُونَ ﴿٧٧﴾

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِتِنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا
وَتَكُونُ لَكُمُ الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ
لَكُمُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾

আমরা তোমাদের দু'জনের প্রতি কখনও ঈমান আনব না।

৭৯. এবং ফিরাউন বললোঃ আমার কাছে সমস্ত সুদক্ষ যাদুকরকে উপস্থিত কর।

৮০. অনন্তর যখন যাদুকররা আসলো, তখন মুসা (ﷺ) তাদেরকে বললেনঃ নিষ্কেপ কর যা কিছু তোমরা নিষ্কেপ করতে চাও।

৮১. অতঃপর যখন তারা নিষ্কেপ করলো, তখন মুসা (ﷺ) বললেনঃ যাদু এটাই; নিশ্চয়ই আল্লাহ এখনই এটাকে বানচাল করে দিবেন; (কেননা) আল্লাহ এমন বিপর্যয় সৃষ্টিকারী কাজ সম্পন্ন হতে দেন না।

৮২. আর আল্লাহ স্বীয় অঙ্গীকার অনুযায়ী হক প্রতিষ্ঠিত করে দেন, যদিও পাপাচারীরা তা অপ্রীতিকর মনে করে।

৮৩. বস্তুতঃ মুসা (ﷺ)-এর প্রতি তার স্বগোষ্ঠীয় লোকদের মধ্যে (প্রথমে) শুধু অল্প সংখ্যক লোকই ঈমান আনলো, ভীত-সন্ত্রস্ত অবস্থায় ফিরাউন ও তার প্রধানবর্গের ভয়ে যে, তারা তাদেরকে নির্যাতন করবে; আর বাস্তবিক পক্ষে ফিরাউন সেই দেশে ক্ষমতাবান ছিল, আর সে ছিল সীমাতিক্রম কারীদের অন্তর্ভুক্ত।

৮৪. আর মুসা (ﷺ) বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! যদি তোমরা আল্লাহর উপর ঈমান রাখো, তবে তাঁরই উপর ভরসা কর, যদি তোমরা মুসলিম হও।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ اَلْقُوا

مَا اَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٨٠﴾

فَلَمَّا اَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهٖ

السِّحْرُ اِنَّ اِلٰهَ سَيِّبِطُلَهٗ اِنَّ اِلٰهَ

لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾

وَيُحِقُّ اِلٰهُ الْحَقِّ بِكَلِمٰتِهٖ وَاُوْكِرُهٗ

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

فَمَا اٰمَنَ لِمُوسَىٰ اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلَىٰ خَوْفٍ

مِّنْ فِرْعَوْنَ وَاَمْلًا بِهَمَّ اَنْ يُفْتِنَهُمْ وَاِنَّ

فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّهٗ لِهِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

وَقَالَ مُوسَىٰ يَقُوْمُ اِنْ كُنْتُمْ اٰمِنْتُمْ بِاِلٰهِ فَعَلِيْهِ

تَوَكَّلُوْا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

৮৫. তারা বললোঃ আমরা আল্লাহরই উপর ভরসা করলাম, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এই যালিমদের লক্ষ্যস্থল বানাবেন না।

৮৬. আর আমাদেরকে তোমার নিজ রহমতে এই কাফিরদের (কবল) হতে মুক্তি দিন।

৮৭. আর আমি মূসা ও তার ভ্রাতার প্রতি ওহী পাঠালাম— তোমরা উভয়ে তোমাদের এই লোকদের জন্যে মিসরে(ই) বাসস্থান বহাল রাখো, আর তোমরা সবাই নিজেদের সেই গৃহগুলোকে নামায পড়ার স্থানরূপে গণ্য কর এবং নামায কয়েম কর, আর মু'মিনদেরকে শুভ সংবাদ জানিয়ে দাও।

৮৮. আর মূসা (عليه السلام) বললেনঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি ফিরাউন ও তার পরিষদবর্গকে দান করেছেন জাঁকজমকের সামগ্রী এবং বিভিন্ন রকমের সম্পদ পার্থিব জীবনে, হে আমাদের রব! যার কারণে তারা আপনার পথ হতে (মানবমন্ডলীকে) বিভ্রান্ত করে, হে আমাদের প্রতিপালক! তাদের সম্পদগুলোকে নিশ্চিহ্ন করে দিন এবং তাদের অন্তরসমূহকে কঠিন করুন, যাতে তারা ঈমান না আনতে পারে যতক্ষণ, তারা যন্ত্রণাময় আযাবকে দেখে নেয়।

৮৯. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ তোমাদের উভয়ের দু'আ' কবুল করা হলো, অতএব তোমরা দৃঢ় থাকো, আর তাদের পথ অনুসরণ করো না যাদের জ্ঞান নেই।

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

وَ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بَيْوتًا ۚ وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً ۚ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾

وَ قَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَآئِهِ زِينَةً ۖ وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ رَبَّنَا لِيُضِلُّوهُ عَن سَبِيلِكَ ۗ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا ۚ وَلَا تَتَّبِعِنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

৯০. আর আমি বানী ইসরাঈলকে সমুদ্র পার করে দিলাম, অতঃপর ফিরাউন তার সৈন্যদলসহ তাদের পশ্চাদানুসরণ করলো যুলুম ও নির্যাতনের উদ্দেশ্যে, এমন কি যখন সে নিমজ্জিত হতে লাগলো, তখন বলতে লাগলোঃ আমি ঈমান আনছি বানী ইসরাঈল য়ার উপর ঈমান এনেছে, তিনি ছাড়া অন্য কোন সত্য মা'বুদ নেই এবং আমি মুসলিমদের অন্তর্ভুক্ত হচ্ছি।

৯১. এখন ঈমান আনছো? অথচ পূর্ব (মুহূর্ত) পর্যন্ত তুমি নাফরমানী করছিলে এবং ফাসাদীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলে।

৯২. অতএব, আমি আজ বাঁচিয়ে দিচ্ছি তোমার দেহকে যেন তুমি তোমার পরবর্তী লোকদের জন্যে উপদেশ গ্রহণের উপকরণ হয়ে থাকো; আর প্রকৃতপক্ষে অনেক লোক আমার উপদেশাবলী হতে উদাসীন রয়েছে।

৯৩. আর আমি বানী ইসরাঈলকে থাকবার জন্য অতি উত্তম বাসস্থান প্রদান করলাম, আর আমি তাদেরকে আহাির করবার জন্যে উৎকৃষ্ট বস্ত্রসমূহ দান করলাম, সুতরাং তারা মতভেদ করেনি এই পর্যন্ত যে, তাদের নিকট (আহকামের) জ্ঞান পৌছলো; নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক কিয়ামত দিবসে তাদের মধ্যে সেই সব বিষয়ের মীমাংসা করবেন, যাতে তারা মতভেদ করছিল।

وَجُوزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ
وَجُودُهُ بُغْيًا وَعَدْوًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ
الْعُرْقُقُ قَالَ أَمُنْتُ إِنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي
أَمُنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾

آلَتْنِ وَقَدْ عصيتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدْرِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ
آيَةً ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا
لَغَفْلُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مَبْوَأَ صَدِيقٍ
وَرَزَقْنَهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّىٰ
جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۖ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

৯৪. অতঃপর (হে নবী ﷺ)! যদি তুমি এই (কিতাব) সম্পর্কে সন্দিহান হও, যা আমি তোমার নিকট পাঠিয়েছি, তবে তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করে দেখো, যারা তোমার পূর্বকার কিতাবসমূহ পাঠ করে, নিঃসন্দেহে তোমার নিকট এসেছে তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্য কিতাব, সুতরাং তুমি কখনই সংশয়ীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

৯৫. আর ঐ সব লোকেরও অন্তর্ভুক্ত হয়ো না, যারা আল্লাহর আয়াতগুলোকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, যেন তুমি ধ্বংস হয়ে না যাও।

৯৬. নিঃসন্দেহে যাদের সম্বন্ধে তোমার প্রতিপালকের কথা সাব্যস্ত হয়ে গিয়েছে, তারা কখনো ঈমান আনবে না।

৯৭. যদিও তাদের নিকট সমস্ত প্রমাণ পৌছে যায়, যে পর্যন্ত না তারা যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি দেখে নেয় (কিন্তু তখন ঈমান আনা বৃথা)।

৯৮. সুতরাং এমন কোন জনপদই ঈমান আনেনি যে, তাদের ঈমান আনয়ন উপকারী হয়েছে, ইউনুসের কণ্ডম ছাড়া, যখন তারা ঈমান আনলো, তখন আমি তাদের থেকে পার্থিব জীবনে অপমানজনক শাস্তি বিদূরিত করে দিলাম এবং তাদেরকে সুখ-স্বাচ্ছন্দ্যে থাকতে দিলাম এক নির্ধারিত কাল পর্যন্ত।

فَإِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ
الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُسْتَرِيئِينَ ﴿٩٤﴾

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ فَتَكُونَنَّ مِنَ الْخُسْرَىٰ ﴿٩٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ
الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

فَلَوْ لَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيْمَانُهَا
إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَبَّا أَمْنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ
الْخُرِّي فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ
حِينٍ ﴿٩٨﴾

৯৯. আর যদি তোমার প্রতিপালক ইচ্ছা করতেন তাহলে বিশ্বের সকল লোকই ঈমান আনতো; তবে তুমি কি মানুষের উপর জবরদস্তি করতে পার, যাতে তারা ঈমান আনয়ন করে?

১০০. অথচ আল্লাহর হুকুম ছাড়া কারো ঈমান আনা সম্ভব নয়; আর আল্লাহ নির্বোধ লোকদের উপর (কুফরীর) অপবিত্রতা স্থাপন করে দেন।

১০১. তুমি বলে দাওঃ তোমরা চোখ খুলে দেখো, কি কি বস্তু রস্মেছে, আসমানসমূহে ও যমীনে; আর যারা ঈমান আনয়ন করে না, প্রমাণাদি ও ভয় প্রদর্শন তাদের কোন উপকার সাধন করতে পারে না।

১০২. অতএব, তারা শুধু ঐ লোকদের অনুরূপ ঘটনাবলীর প্রতীক্ষা করছে, যারা তাদের পূর্বে গত হয়ে গেছে, তুমি বলে দাওঃ আচ্ছা তবে তোমরা (ওর) প্রতীক্ষায় থাকো, আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষারতদের মধ্যে রইলাম।

১০৩. পরন্তু আমি স্বীয় রাসূলদেরকে এবং মু'মিনদেরকে বাঁচিয়ে রাখতাম, এরূপেই, আমার উচিত যে আমি মু'মিনদেরকে নাজাত দেই।

১০৪. তুমি বলে দাওঃ হে লোক সকল! যদি তোমরা আমার দ্বীন সম্বন্ধে সন্দিহান হও, তবে আমি সেই মা'বুদদের ইবাদত করি না,

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ
جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّى يَكُونُوا
مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُوَمِّنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ط
وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾

قُلِ انظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَمَا
تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ط قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي
مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾

ثُمَّ سُبْحٰنِي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ أٰمَنُوا كَذٰلِكَ ۚ
حَقًّا عَلَيْنَا نُنجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي
فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ

আল্লাহকে ছেড়ে তোমরা যাদের ইবাদত কর; কিন্তু আমি সেই মা'বুদের ইবাদত করি, যিনি তোমাদের জান কব্জ করেন, আর আমাকে এই আদেশ করা হয়েছে যে, আমি যেন ঈমান আনয়ন-কারীদের দলভুক্ত থাকি।

১০৫. তুমি নিজেকে এই ধ্বিনের উপর সুদৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত রাখবে। আর কখনও মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

১০৬. আর আল্লাহকে ছেড়ে এমন কিছুকে আহ্বান করো না, যা না তোমার কোন উপকার করতে পারে, না কোন ক্ষতি করতে পারে বস্তুতঃ যদি এরূপ কর তবে তুমি এমতাবস্থায় যালিমদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

১০৭. যদি আল্লাহ তোমাকে কোন কষ্টে নিপতিত করেন, তবে তিনি ছাড়া কেউ তা মোচনকারী নেই, আর যদি তিনি তোমার প্রতি কোন কল্যাণ চান, তবে তাঁর অনুগ্রহের কোন অপসারণকারী নেই; তিনি স্বীয় অনুগ্রহ নিজের বান্দাদের মধ্য হতে যাকে চান দান করেন; এবং তিনি অত্যন্ত ক্ষমাশীল, অতিশয় দয়ালু।

১০৮. তুমি বলে দাওঃ হে লোক সকল! তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্য (ধর্ম) এসেছে, অতএব, যে ব্যক্তি সঠিক পথে আসবে, বস্তুত সে নিজের জন্যেই পথে আসবে, আর যে ব্যক্তি

وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَقَّعُكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٥﴾

وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٦﴾

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ
وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا
مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾

وَأِنْ يَسْأَلْكُمُ اللَّهُ بِيُضْرَ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ يُرِدْكُم بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۗ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٨﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ
مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي
لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ

পথভ্রষ্ট থাকবে, তার পথভ্রষ্টতা তারই উপর বর্তাবে, আর আমাকে তোমাদের উপর দায়বদ্ধ করা হয়নি।

১০৯. আর তুমি তোমার প্রতি প্রেরিত ওহীর অনুসরণ কর, আর ধৈর্যধারণ কর এই পর্যন্ত যে, আল্লাহ মীমাংসা করে দেন এবং তিনিই উত্তম মীমাংসাকারী।

وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِمُكَيِّلٍ ۝

وَأَتَّبِعْ مَا يَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَأَصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ
اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

সূরাঃ হূদ, মাক্কী

(আয়াতঃ ১২৩ রুকূঃ ১০)

শুরু করছি আল্লাহর নামে যিনি পরম
করুণাময়, অতি দয়ালু।

১. আলিফ-লাম-রা। এটা (কুরআন) এমন কিতাব যার আয়াতগুলি (প্রমাণাদি দ্বারা) মজবুত অকাটা করা হয়েছে, অতঃপর বিশদভাবে বর্ণনা করা হয়েছে, প্রজ্ঞাময়, মহাজ্ঞাতার পক্ষ হতে।

২. এই (উদ্দেশ্যে) যে, আল্লাহ ছাড়া কারো ইবাদত করো না; আমি (নবী ﷺ) তাঁর পক্ষ থেকে তোমাদেরকে ভয় প্রদর্শনকারী ও সুসংবাদদাতা।

৩. আর এই (উদ্দেশ্যে) যে, তোমরা নিজেদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করো, তৎপর তাঁর প্রতি নিবিষ্ট থাকো, তিনি তোমাদেরকে সুখ-সম্ভোগ দান করবেন, নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত এবং প্রত্যেক অধিক আমলকারীকে অধিক সওয়াব

سُورَةُ هُودٍ مَّكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٢٣ رُكُوعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّسُولَ كَتَبَ أَهْلَكْتَ آيَاتَهُ ثُمَّ فَضَّلْتَ مِنْ لَدُنْ
حَكِيمٍ خَبِيرٍ ۝

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ طِإْنِي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ
وَبَشِيرٌ ۝

وَأَن اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يَتَّبِعْكُمْ
مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي
فَضْلٍ فَضْلَهُ ط وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝

দিবেন, আর যদি তোমরা মুখ ফিরাতেই থাকো, তবে আমি তোমাদের জন্য কঠিন দিনের শাস্তির আশঙ্কা করি।

৪. আল্লাহরই নিকট তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে এবং তিনি প্রত্যেক বস্তুর উপর পূর্ণ ক্ষমতা রাখেন।

৫. জেনে রাখো, তারা কুক্ষিত করে নিজেদের বক্ষকে যাতে নিজেদের কথাগুলি আল্লাহ হতে লুকাতে পারে; জেনে রেখো, তারা যখন নিজেদের কাপড় (নিজেদের দেহে) জড়ায়, তিনি তখনও সব জানেন যা কিছু তারা চুপে চুপে আলাপ করে এবং যা কিছু প্রকাশ্যে আলাপ করে, নিশ্চয় তিনি তো মনের ভিতরের কথাগুলিও জানেন।

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٥﴾

أَلَا إِنَّهُمْ يَكْتُمُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَكْفُوا
مِنْهُ ۖ أَلَا حِينٍ يَسْتَعْشُونَ رَبِّيَا بِهِمْ
يَعْلَمُ مَا يُسْرُونَ ۖ وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥﴾

৬. আর ভূ-পৃষ্ঠে বিচরণকারী এমন কোন প্রাণী নেই যে, তার রিয়ক আল্লাহর যিম্মায় না রয়েছে, আর তিনি তার আবাস (এ জীবদ্দশায়) সম্পর্কে আর তাকে যেখানে সোপর্দ করা হবে (মৃত্যুর পরে) তিনি অবহিত। সবই এক সুস্পষ্ট কিতাবে (লাওহে মাহফুযে) লিপিবদ্ধ রয়েছে।

৭. আর তিনিই আসমান ও যমীনকে সৃষ্টি করেছেন ছ'দিনে এবং সেই সময় তাঁর আরাশ পানির উপরে ছিল যেন তোমাদেরকে পরীক্ষা করে নেন যে, তোমাদের মধ্যে উত্তম আমলকারী কে? আর যদি তুমি বলঃ নিশ্চয়ই তোমাদেরকে মৃত্যুর পর জীবিত করা হবে, তখন যে সব লোক কাফির তারা বলেঃ এটা তো নিছক স্পষ্ট যাদু।

৮. আর যদি আমি কিছু সময়ের জন্যে তাদের থেকে শাস্তিকে মূলতবী করে রাখি তবে তারা বলতে থাকে, সেই শাস্তিকে কিসে আটকিয়ে রাখছে? স্বরণ রেখো, যেদিন ওটা তাদের উপর এসে পড়বে, তখন তা কিছুতেই নিবারিত হবে না, আর যা নিয়ে তারা উপহাস করছিল তা এসে তাদেরকে ঘিরে নেবে।

৯. আর যদি আমি মানুষকে স্বীয় অনুগ্রহ আশ্বাদন করিয়ে তার হতে

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا
كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ①

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَعْبُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا أَسْحَرُ مُبِينٌ ②

وَلَئِنْ أَخْرَجْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ إِلَّا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُونَ ③

وَلَئِنْ أَدْنَا إِلَىٰ السَّانِ مِثْرًا لَأُولَٰئِكَ نَرْجِعُهُمْ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ ডান হাত ভরা। রাত ও দিন ভর খরচ করলেও তা কমে না। তোমরা কি দেখ না আসমান ও যমীনের সৃষ্টির সময় থেকে (আজ পর্যন্ত) তিনি কত (বিপুল পরিমাণে) খরচ করেছেন। তবুও তার ডান হাতের কিছুই কমেনি। আর তাঁর আরাশ পানির ওপর অবস্থিত ছিল। তার অন্য হাতে রয়েছে ফয়েয বা কবয। তিনি কখনো তা উত্তোলিত করেন আবার কখনো তা নিম্নমুখী করেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪১৯)

তা ছিনিয়ে নেই, তবে সে নিরাশ ও অকৃতজ্ঞ হয়ে পড়ে।

مِنْهُ إِنَّهُ كَيْعُوسٌ كَفُورٌ ④

১০. আর যদি তাকে কোন নিয়ামত আশ্বাদন করাই কোন কষ্টের পর যা তার উপর আপতিত হয়েছিল, তখন বলতে শুরু করে, আমার সব দুঃখ-কষ্ট দূর হয়ে গেল; সে গর্ব করতে থাকে, আত্ম প্রশংসা করতে থাকে।

وَلَيْنِ اذْقَنَهُ نَعْمَاءً بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي ۗ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ⑤

১১. কিন্তু যারা ধৈর্য ধরে ও ভাল কাজ করে, তারা ব্যতীত। এমন লোকদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা এবং বিরাট পুরস্কার।

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑥

১২. ফলে হয়তো তুমি অংশ বিশেষ বর্জন করতে চাও ঐ নির্দেশাবলী হতে যা তোমার প্রতি ওহী যোগে প্রেরিত হয়, আর তোমার মন সঙ্কুচিত হয় এই কথায় যে, তারা বলেঃ তার প্রতি কোন ধনভান্ডার কেন নাযিল হলো না? অথবা তার সাথে কোন ফেরেশতা কেন আসলো না? (হে নবী ﷺ)! তুমি তো শুধু ভয় প্রদর্শক আর আল্লাহই হচ্ছেন প্রত্যেক বস্তু উপর পূর্ণ দায়িত্বভার গ্রহণকারী।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ كِتَابٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۗ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ⑦

১৩. তবে কি তারা বলে যে, ওটা সে নিজেই রচনা করেছে? তুমি বলে দাওঃ তাহলে তোমরাও ওর অনুরূপ রচিত দশটি সূরা আনয়ন কর এবং আল্লাহ ছাড়া যাকে যাকে পার ডাক, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۗ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَاتٍ ۗ وَادْعُوا مَنِ اسْتَعْظَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑧

১৪. অতঃপর যদি তারা তোমাদের ফরমাইশ পূর্ণ করতে না পারে তবে

فَأَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ

তোমরা দৃঢ় বিশ্বাস রাখো যে, এই কুরআন অবতীর্ণ হয়েছে আল্লাহরই জ্ঞান (ক্ষমতা) দ্বারা, আর এটাও যে, তিনি ছাড়া আর কোন সত্য মা'বুদ নেই, তবে এখন তোমরা আত্মসম্পর্ক করবে কি?

اللَّهُ وَأَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٧﴾

১৫. যারা শুধু পার্থিব জীবন ও ওর জাঁকজমক কামনা করে, আমি তাদেরকে তাদের কৃতকর্মগুলি (-র ফল) দুনিয়াতেই পরিপূর্ণরূপে প্রদান করে দেই এবং দুনিয়াতে তাদের জন্যে কিছুই কম করা হয় না।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوفِيَ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾

১৬. এরা এমন লোক যে, তাদের জন্যে আখেরাতে জাহান্নাম ছাড়া আর কিছুই নেই, আর তারা যা কিছু করেছিল তা সবই আখেরাতে অকেজো হয়ে যাবে এবং যা কিছু করছে তাও বিফল হবে।

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحِطَّ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلِّ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

১৭. অতঃপর যে তার রবের পক্ষ থেকে আসা সুস্পষ্ট প্রমাণের উপর রয়েছে এবং তাকে তেলাওয়াত করেন তাঁর পক্ষ থেকে একজন সাক্ষী (মুহাম্মাদ ﷺ) এবং তাঁর পূর্ববর্তী মূসার কিতাব যা পথ প্রদর্শক ও রহমত স্বরূপ। এমন লোকেবাই এর (কুরআনের) প্রতি ঈমান রাখে; আর অন্যান্য সম্প্রদায়ের যে ব্যক্তি এই কুরআন অমান্য করবে, তবে দোষখ হবে তার প্রতিশ্রুত স্থান, অতএব তুমি এই (কুরআন) সম্পর্কে সন্দেহে পতিত হয়ো না, নিঃসন্দেহে এটা সত্য কিতাব তোমার প্রতিপালকের সন্নিধান হতে; কিন্তু

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُّوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً لِّأُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ط وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ؕ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾

অধিকাংশ লোক ঈমান আনয়ন করে না।

১৮. আর ঐ ব্যক্তি অপেক্ষা অধিক অত্যাচারী কে হবে, যে আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে? এরূপ লোকদেরকে তাদের প্রতিপালকের সামনে পেশ করা হবে এবং সাক্ষীগণ (ফেরেশতাগণ) বলবেনঃ এরা ঐ লোক যারা নিজেদের প্রতিপালকের সম্বন্ধে মিথ্যা কথা আরোপ করেছিল, জেনে রেখো, এমন অত্যাচারীদের উপর আল্লাহর অভিশাপ।^১

১৯. যারা অপরকে আল্লাহর পথ হতে নিবৃত্ত রাখতো এবং ওতে বক্রতা বের করার চেষ্টায় লিপ্ত থাকতো; আর তারা পরকালেরও অমান্যকারী ছিল।

২০. তারা (সমগ্র) ভূ-পৃষ্ঠে আল্লাহকে অক্ষম করতে পারে নাই, আর না তাদের জন্যে আল্লাহ ছাড়া কেউ সহায়কও হলো, এরূপ লোকদের

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَأُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۚ لَهُمْ يُضَعَّفُ لَهُمْ

১। সাফওয়ান ইবনে মুহরিয বর্ণনা করেছেন। একদিন আমি ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা)-এর সঙ্গে (কাবা শরীফ) তাওয়্যাক করছিলাম। এমন সময় এক ব্যক্তি এসে হাযির হলো এবং ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) কে সম্বোধন করে বললো, হে আবু আবদুর রহমান, কিংবা বলছে, হে ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহু), আপনি কি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে কিয়ামতের দিন আল্লাহ তা'আলা এবং ঈমানদারদের মধ্যকার গোপন আলোচনা সম্পর্কে কিছু শুনেছেন? তিনি জবাব দিলেন, হ্যাঁ, আমি শুনেছি, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, (কিয়ামতের দিন) ঈমানদারকে রাক্বুল আলামীনের এত নিকটে আনা হবে যে, আল্লাহ তা'আলা ঈমানদারের কাঁধে হাত রেখে তার গুনাহ সমূহের স্বীকারোক্তি আদায় করিয়ে নেবেন। তাকে জিজ্ঞেস করবেন, অমুক গুনাহ জানা আছে কি? মনে আছে কি? ঈমানদার বলবে, হে আমার পরওয়াদদিগার, আমি আমার গুনাহর কথা স্বীকার করছি, এমন এমন গুনাহ অবশ্যই আমার থেকে সংঘটিত হয়েছে। সুতরাং এভাবে দু'বার ঈমানদার স্বীকার করবে। অতঃপর আল্লাহ তা'আলা বলবেন, আমি দুনিয়ায় তোমার গুনাহ ও অপরাধ গোপন রেখেছি; কিন্তু আজ তোমাকে মাফ করে দিচ্ছি। তারপর তার নেক কাজসমূহের আমলনামা ভাঁজ করে (তার হাতে) দেয়া হবে।

পক্ষান্তরে অপর দল তথা কাফেরদেরকে সাক্ষী-সমক্ষে ডেকে বলা হবে, এরাই ছিল সেসব লোক, যারা তাদের রবের ওপর মিথ্যারোপ করেছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৮৫)

জন্যে দ্বিগুণ শাস্তি হবে, এরা না শুনতে সক্ষম হচ্ছিল, আর না তারা (সত্যপথ) দেখতে ছিল।

الْعَذَابُ ط مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا
يُبْصِرُونَ ۝

২১. এরা সেই লোক যারা নিজেরা নিজেদের সর্বনাশ করে ফেলেছে, আর তারা যা কিছু রচনা করেছিল তা সবই তাদের নিকট হতে হারিয়ে গেছে।

أُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

২২. এটা সুনিশ্চিত যে, আখেরাতে এরাই হবে সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত।

لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخِسُونَ ۝

২৩. নিশ্চয় যারা ঈমান এনেছে এবং সৎ কার্যাবলী সম্পন্ন করেছে, আর নিজেদের প্রতিপালকের প্রতি ঝুঁকে পড়েছে, এরূপ লোকেরাই হচ্ছে জান্নাতবাসী, তাতে তারা অনন্তকাল থাকবে।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبْتُوا
إِلَىٰ رَبِّهِمْ ۗ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۝

২৪. দু'টি সম্প্রদায়ের দৃষ্টান্ত এরূপ— যেমন এক ব্যক্তি যে অন্ধ ও বধির এবং আর এক ব্যক্তি যে দেখতেও পায় ও শুনতে পায় এই দু'ব্যক্তি কি তুলনায় সমান হবে? (কখনও নয়) তবুও কি তোমরা বুঝ না?

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرِ وَالسَّبْعِ ط
هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا ط أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

২৫. আর আমি নূহকে (عليه السلام) তাঁর কণ্ঠের নিকট রাসূলরূপে প্রেরণ করেছি, (নূহ বললেন) আমি তোমাদের জন্যে স্পষ্ট ভয় প্রদর্শনকারী।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ نَارِي لَكُمْ
نَذِيرًا مُّبِينًا ۝

২৬. যে, তোমরা আল্লাহ ছাড়া আর কারো ইবাদত করো না, আমি তোমাদের উপর এক ভীষণ যন্ত্রণাদায়ক দিনের শাস্তির আশঙ্কা করছি।

أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ط إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ۝

২৭. অনন্তর তার সম্প্রদায়ের মধ্যে যেসব নেতৃস্থানীয় লোক কাফির ছিল তারা বলতে লাগলোঃ আমরা তো তোমাকে আমাদেরই মতো মানুষ দেখতে পাচ্ছি, আর আমরা দেখছি যে, শুধু ঐ লোকেরাই তোমার অনুসরণ করছে যারা আমাদের মধ্যে নিতান্তই হীন ও গরীব, তাও আবার শুধু স্থূল বুদ্ধি অনুসারে; আর আমাদের উপর তোমাদের কোন শ্রেষ্ঠত্বও আমরা দেখছি না; বরং আমরা তোমাদেরকে মিথ্যাবাদীই মনে করছি।

২৮. তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! আচ্ছা বলতো আমি যদি স্বীয় প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রমাণের উপর থাকি এবং তিনি আমাকে নিজ সন্নিধান হতে রহমত (নবুওয়াত) দান করে থাকেন, অতঃপর ওটা তোমাদের বোধগম্য না হয়, তবে কি আমি ওটা তোমাদের উপর জোরপূর্বক চাপিয়ে দেবো, অথচ তোমরা ওটা অবজ্ঞা করতে থাকো?

২৯. আর হে আমার কওম! আমি এতে তোমাদের কাছে কোন ধন-সম্পদ চাচ্ছি না; আমার বিনিময় তো শুধু আল্লাহর যিম্মায় রয়েছে, আর আমি তো এই মু'মিনদেরকে ধাক্কা দিয়ে বের করে দিতে পারি না; নিশ্চয় তারা নিজেদের প্রতিপালকের সমীপে গমনকারী, পরন্তু আমি তোমাদেরকে নির্বোধ কওমরূপে দেখছি।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا تَرَاكَ أَتَّبِعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا أَنْ كَفُرُوا ۗ وَالرَّأْيُ ۗ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ۚ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَيْتُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِي فَعُوبِتْتُمْ عَلَيَّ ط أَنْزِلُكُمْ بِهَا وَانْتُمْ لَهَا كَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

وَيَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَأُتْرَاقَ إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُلْقُوا رَبَّهُمْ وَلِئِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾

৩০. আর হে আমার কওম! আমি যদি তাদেরকে বের করেই দেই তবে আল্লাহর পাকড়াও হতে কে আমাকে রক্ষা করবে? তোমরা কি এতটুকু বুঝ না?

৩১. আর আমি তোমাদেরকে এই কথা বলছি না যে, আমার নিকট আল্লাহর সকল ধন-ভান্ডার রয়েছে এবং আমি (একথা বলছি না যে আমি) অদৃশ্যের কথা জানি। আর আমি এটাও বলি না যে, আমি ফেরেশতা। আর যারা তোমাদের চোখে হীন আমি তাদের সম্বন্ধে এটা বলতে পারি না যে, আল্লাহ কখনো তাদেরকে কোন নিয়ামত দান করবেন না। তাদের অন্তরে যা কিছু আছে তা আল্লাহ উত্তমরূপে জানেন, আমি তো এরূপ বললে অন্যায়ই করে ফেলব।

৩২. তারা বললোঃ হে নূহ (عليه السلام)! তুমি আমাদের সাথে বিতর্ক করেছো, অনন্তর সেই বিতর্ক অনেক বেশি করেছো, সুতরাং যে সম্বন্ধে তুমি আমাদেরকে ভয় দেখাচ্ছ তা আমাদের সামনে আনয়ন কর, যদি তুমি সত্যবাদী হও।

৩৩. তিনি বললেনঃ ওটা তো আল্লাহ তোমাদের সামনে আনয়ন করবেন যদি তিনি ইচ্ছা করেন এবং তোমরা তাঁকে অক্ষম করতে পারবে না।

৩৪. আর আমার দিক নির্দেশনা (নসীহত) তোমাদের উপকারে আসতে পারে না, আমি তোমাদের যতই মঙ্গল কামনা করতে চাই না

وَيَقَوْمٍ مِّنْ يَّئُصِرُنِي مِنَ اللَّهِ إِن كَرُدُّهُمْ
أَفْلا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ
تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي إِذًا لَّسِنَ
الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾

قَالُوا يَنْبُحُ قَدْ جَدَلْتَنَا فَاكْثُرْتَ جِدَالَنَا
فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ
بِعُجْزِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ
لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ

কেন, যদি আল্লাহরই তোমাদেরকে পথভ্রষ্ট করার ইচ্ছা হয়; তিনিই তোমাদের প্রতিপালক, আর তাঁরই কাছে তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে।

رَبُّكُمْ تَوَّابٌ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٠﴾

৩৫. তবে কি তারা বলেঃ সে (মুহাম্মদ ﷺ) এটা (কুরআন) নিজেই রচনা করেছে। তুমি বলে দাওঃ যদি আমি তা নিজে রচনা করে থাকি তবে আমার এই অপরাধ আমার উপর বর্তবে, আর আমি তোমাদের এই অপরাধ হতে সম্পূর্ণ মুক্ত।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ طُغْيَانٌ إِنَّ افْتَرَيْنَاهُ فَعَلَىٰ
إِجْرَائِنَا وَإِنَّا بِرَبِّنَا عَاكِفُونَ ﴿١١﴾

৩৬. আর নূহের (عليه السلام) প্রতি ওহী শ্রেরিত হলো, যারা ঈমান এনেছে তারা ছাড়া তোমার কওম হতে আর কেউ ঈমান আনবে না, কাজেই যা তারা করছে তাতে তুমি মোটেই দুঃখ করো না।

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ
إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا
يَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾

৩৭. আর তুমি আমার চোখের সামনে^১ও আমার নির্দেশক্রমে নৌকা নির্মাণ কর, আর আমার কাছে যালিমদের সম্পর্কে কোন কথা বলো না, তাদের সকলকে নিমজ্জিত করা হবে।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبُنِي
فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ﴿١٣﴾

৩৮. তিনি নৌকা নির্মাণ করতে লাগলেন, আর যখনই তাঁর কওমের সরদারদের মধ্যে যে তাঁর নিকট দিয়ে গমন করতো, তখনই তাঁর সাথে উপহাস করতো, তিনি বলতেনঃ যদি তোমরা আমাদেরকে

وَيَصْنَعِ الْفُلْكَ تَوَّابٌ مَّرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ
سَخِرُوا مِنْهُ طَقَالٌ إِنْ سَخِرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ
مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿١٤﴾

১। টীকাঃ এই আয়াতে আল্লাহ পাকের “চোখ”-এর প্রমাণ করে। এর প্রতি বিশ্বাস রাখা অপরিহার্য কর্তব্য। চোখকে অন্য অর্থে প্রকাশ করা আহলে সুন্নাত ওয়াল জামা’আতের আকীদা পরিপন্থী।

উপহাস কর তবে আমরাই (একদিন) তোমাদের উপহাস করবো, যেমন তোমরা আমাদেরকে উপহাস করছে।

৩৯. সূতরাং সত্বরই তোমরা জানতে পারবে যে, সে কোন্ ব্যক্তি যার উপর এমন আযাব আসার উপক্রম হয়েছে যা তাকে লাক্ষিত করে দেবে এবং তার উপর চিরস্থায়ী আযাব নাযিল হবে।

৪০. অবশেষে যখন আমার ফরমান এসে পৌঁছলো এবং চূলা (হতে পানি) উথলিয়ে উঠতে লাগলো, আমি বললাম, প্রত্যেক জীবের এক-এক জোড়া, দু'দুটি করে তাতে (নৌকাতে) উঠিয়ে নাও এবং নিজ পরিবার বর্গকেও, তাকে ছাড়া যার সম্বন্ধে পূর্বে নির্দেশ হয়ে গেছে এবং অন্যান্য মু'মিনদেরকে; আর অল্প কয়েকজন ছাড়া কেউই তাঁর সাথে ঈমান আনে নাই।

৪১. আর তিনি (নূহ عليه السلام) বললেনঃ তোমরা এতে (নৌকায়) আরোহণ করো, এর গতি ও এর অবস্থান আল্লাহরই নামে; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক ক্ষমাশীল, দয়াবান।

৪২. আর সেই নৌকাটিই তাদেরকে নিয়ে পর্বত তুল্য তরঙ্গের মধ্যে চলতে লাগলো, আর নূহ (عليه السلام) স্বীয় পুত্রকে ডাকতে লাগলেন এবং সে ছিল ভিন্ন স্থানে, হে আমার পুত্র! আমাদের সাথে সওয়ার হও এবং কাফিরদের সাথে থেকো না।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ
وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التُّورُ قُلْنَا احْمِلْ
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ
سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ
إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا وَمُرسَهَا
إِنَّ رِبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤١﴾

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَى نُوْحٌ
ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبْنَىٰ اِرْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ
مَعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾

৪৩. সে বললো: আমি এখনই কোন পাহাড়ে আশ্রয় গ্রহণ করবো যা আমাকে পানি হতে রক্ষা করবে। তিনি (নূহ عليه السلام) বললেন: আজ আল্লাহর শাস্তি হতে কেউই রক্ষাকারী নেই; কিন্তু যার উপর তিনি দয়া করেন, ইতিমধ্যে তাদের উভয়ের মাঝে একটি তরঙ্গ অন্তরাল হয়ে পড়লো, ফলে সে নিমজ্জিত লোকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

৪৪. আর আদেশ হলো: হে যমীন স্বীয় পানি গিলে নাও এবং হে আসমান! খেমে যাও, তখন পানি কমে গেল ও ঘটনার পরিসমাপ্তি ঘটলো, আর নৌকা জুদী (পাহাড়)-এর উপর এসে থামলো, আর বলা হলো: অন্যায়কারীরা আল্লাহর রহমত হতে দূরে।

৪৫. আর নূহ (عليه السلام) নিজ প্রতিপালককে ডাকলেন এবং বললেন: হে আমার প্রতিপালক! আমার এই পুত্রটি আমার পরিবারবর্গেরই অন্তর্ভুক্ত আর আপনার ওয়াদাও সম্পূর্ণ সত্য এবং আপনি সমস্ত বিচারকের শ্রেষ্ঠ বিচারক।

৪৬. তিনি (আল্লাহ) বললেন: হে নূহ! এই ব্যক্তি তোমার পরিবারের

قَالَ سَأُوۡبَىٰٓ اِلَىٰ جَبَلٍ يَّغۡصِنِي مِنَ الْمَآءِ ط قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوۡمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ
وَ حَالٌ بَيۡنَهُمَا الْمَوۡجُ فَكَانَ مِنَ الْمَغۡرَقِيۡنَ ﴿٤٣﴾

وَقِيۡلَ يَا رۡضُ اَبۡلِغِي مَآءِكِ وَاۡسۡمَآءُ اَقۡلِبِي
وَ غِيۡضَ الْمَآءِ وَ قَضِيَ الْاَمۡرُ وَ اسۡتَوۡتَ عَلٰى
الۡجُوۡدِيّٰ وَ قِيۡلَ بَعۡدًا لِلۡقَوۡمِ الظَّالِمِيۡنَ ﴿٤٤﴾

وَ نَادٰى نُوۡحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابۡنِيۡ مِنْ اَهۡلِيۡ
وَ اِنَّ وَعۡدَكَ الْحَقُّ وَ اَنْتَ اَحۡكَمُ الْحَاكِمِيۡنَ ﴿٤٥﴾

قَالَ يٰۤنُوۡحُ اِنَّهٗ لَيۡسَ مِنْ اَهۡلِكَ ؕ اِنَّهٗ عَمَلٌ

১। আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এরশাদ করেছেনঃ যখন কোন ব্যক্তিকে খলিফা বা প্রতিনিধি নিযুক্ত করা হয় তার জন্য দু'দল পরামর্শদাতা থাকে একদল পরামর্শ দাতা তাকে ভাল ও সংকাজ করার পরামর্শ প্রদান করে এবং ভাল ও সংকাজ করার জন্য উৎসাহিত করে থাকে। আর একদল পরামর্শদাতা তাকে খারাপ ও অন্যায় কাজ করার পরামর্শ প্রদান করে এবং অন্যায় ও খারাপ কাজের প্রতি উৎসাহিত করে থাকে। আর মাসূম হবে সেই ব্যক্তি আল্লাহ্ যাকে রক্ষা করবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬১১)

অন্তর্ভুক্ত নয়, সে অসৎ কর্মপরায়ণ, অতএব, তুমি আমার কাছে এমন বিষয়ের আবেদন করো না, যে সম্বন্ধে তোমার জ্ঞান নেই; আমি তোমাকে উপদেশ দিচ্ছি যে, তুমি অজ্ঞ লোকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

৪৭. সে (নূহ عليه السلام) বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি আপনার নিকট এমন বিষয়ের আবেদন করা থেকে আশ্রয় চাচ্ছি, যে সম্বন্ধে আমার জ্ঞান নেই, আর যদি আপনি আমাকে ক্ষমা না করেন এবং আমার প্রতি দয়া না করেন, তবে আমি সম্পূর্ণরূপে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

৪৮. বলা হলোঃ হে নূহ (عليه السلام)! অবতরণ কর আমার পক্ষ হতে সালাম ও বরকতসমূহ তোমার উপর এবং সেই দলসমূহের উপর যারা তোমার সাথে রয়েছে; আর অনেক দল এরূপও হবে যাদেরকে আমি (কিছুকাল দুনিয়ার) সুখ-স্বাচ্ছন্দ্য দান করবো, তৎপর তাদেরকে স্পর্শ করবে আমার পক্ষ হতে কঠিন শাস্তি।

৪৯. এটা হচ্ছে গায়েবী সংবাদ সমূহের অন্তর্ভুক্ত, যা আমি তোমার (হে মুহাম্মাদ ﷺ) কাছে ওহী মারফত পৌঁছিয়ে দিচ্ছি, ইতিপূর্বে এটা না তুমি জানতে, আর না তোমার কওম; অতএব, তুমি ধৈর্য ধারণ কর; নিশ্চয় শুভ পরিণাম মুত্তাকীদের জন্যেই।

عَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْأَلِنَ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۗ
إِنِّي أَعْظُمُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٤٧﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي
بِهِ عِلْمٌ ۗ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنَّ مِنَ
الْخَاسِرِينَ ﴿٤٨﴾

قِيلَ يٰ نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ
أُمَمٍ مِّمَّنْ مَعَكَ ۗ وَأُمَّرُ سَنُنَبِّئُهِمْ ثَمَّ يَسُّهُمْ
مِمَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٩﴾

تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۗ مَا كُنْتَ
تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا ۗ
فَاصْبِرْ ۗ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٥٠﴾

৫০. আর আ'দ (সম্প্রদায়)-এর প্রতি তাদের ভাই হূদ (عليه السلام)-কে (রাসূলরূপে প্রেরণ করলাম;) তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের কোন সত্য মা'বুদ নেই, তোমরা শুধু মিথ্যা উদ্ভাবনকারী।

৫১. হে আমার কওম! আমি এর জন্যে তোমাদের কাছে কোন বিনিময় চাই না, আমার বিনিময় শুধু তারই যিম্মায় রয়েছে যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন; তবুও কি তোমরা বুঝ না?

৫২. আর হে আমার কওম! তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতঃপর তাঁরই পানে নিবিষ্ট হও, তিনি তোমাদের উপর প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণ করবেন এবং তোমাদেরকে আরো শক্তি প্রদান করে তোমাদের শক্তিকে বর্ধিত করে দেবেন, আর তোমরা অপরাধী হয়ে মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না।

৫৩. তারা বললোঃ হে হূদ (عليه السلام) তুমি তো আমাদের সামনে কোন প্রমাণ উপস্থাপন কর নাই এবং তোমার কথায় তো আমাদের উপাস্য দেবতাদেরকে বর্জন করতে পারি না, আর আমরা কিছুতেই তোমার প্রতি বিশ্বাস স্থাপনকারী নই।

৫৪. আমাদের কথা তো এই যে, আমাদের উপাস্য দেবতাদের মধ্য হতে কেউ তোমাকে দুর্দশায় ফেলে দিয়েছে; তিনি বললেনঃ আমি আল্লাহকে সাক্ষী করছি এবং

وَالِي عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدْ وَأَنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

তোমরাও সাক্ষী থেকে, আমি ঐ সব কিছু থেকে মুক্ত যাদেরকে তোমরা শরীক সাব্যস্ত করছো।

৫৫. তাঁকে (আল্লাহকে) ছেড়ে, অনন্তর তোমরা সবাই মিলে আমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র চালাও, অতঃপর আমাকে সামান্য অবকাশও দিয়ো না।

৫৬. আমি আল্লাহর উপর ভরসা করেছি, যিনি আমারও প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক, ভূ-পৃষ্ঠে যত বিচরণকারী রয়েছে সবারই ঝুঁটি তাঁর মুষ্টিতে আবদ্ধ; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক সরল পথে অবস্থিত।

৫৭. অতঃপর যদি তোমরা ফিরে যাও, তবে আমাকে যে পয়গাম দিয়ে তোমাদের প্রতি পাঠানো হয়েছে, আমি তো ওটা তোমাদের কাছে পৌঁছিয়ে দিয়েছি; আর আমার প্রতিপালক (ভূ-পৃষ্ঠে) তোমাদের স্থলে অন্য লোকদের আবাদ করে দিবেন, এবং তোমরা তাঁর কিছুই ক্ষতি করতে পারবে না; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক প্রত্যেক বস্তুর রক্ষণাবেক্ষণ করে থাকেন।

৫৮. আর যখন আমার (শাস্তির) হুকুম এসে পৌঁছলো তখন আমি হূদকে (عليه السلام) এবং যারা তাঁর সাথে ঈমানদার ছিল তাদেরকে স্বীয় অনুগ্রহে রক্ষা করলাম, আর তাদেরকে বাঁচিয়ে নিলাম অতি কঠিন শাস্তি হতে।

مَنْ دُونِهِ فَيُكِيدُونِي جَبِيحًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ﴿٥٥﴾

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّبْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

৫৯. আর এরা ছিল আ'দ সম্প্রদায়, যারা নিজেদের প্রতিপালকের নিদর্শনগুলিকে অস্বীকার করলো এবং তাঁর রাসূলদেরকে অমান্য করলো এবং তারা সম্পূর্ণরূপে এমন লোকদের কথামত চলতে লাগলো যারা ছিল যালিম হঠকারী।

৬০. আর এই দুনিয়াতেও অভিসম্পাত তাদের সঙ্গে সঙ্গে রইলো এবং কিয়ামতের দিনেও; ভালরূপে জেনে রেখো! আ'দ (সম্প্রদায়) নিজ প্রতিপালকের সাথে কুফরী করলো; আরো জেনে রেখো, দূরে পড়ে গেল আ'দ (রহমত হতে) যারা হূদের (عليه السلام) কওম ছিল।

৬১. আর আমি সা'মূদ (সম্প্রদায়) এর নিকট তাদের ভাই সালেহ (عليه السلام)-কে প্রেরণ করলাম (নবীরূপে), তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া কেউ তোমাদের সত্য মা'বুদ নেই। তিনি তোমাদেরকে যমীন হতে সৃষ্টি করেছেন এবং তোমাদেরকে তাতে আবাদ করেছেন, অতএব তোমরা তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতপর মনোনিবেশ কর তাঁরই দিকে; নিশ্চয়ই আমার প্রতিপালক একান্ত নিকটবর্তী, ডাকে সাড়া দানকারী।

৬২. তারা বললোঃ হে সালেহ তুমি তো ইতোপূর্বে আমাদের মধ্যে আশা-ভরসাস্থল ছিলে, তুমি কি আমাদেরকে ঐ বস্তুর উপাসনা

وَتِلْكَ آدَاءُ الَّذِينَ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ
وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عِنْدِي ﴿٥٩﴾

وَأْتَّبِعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ط
أَلَا إِنَّ آدَاءَ كَفَرُوا رَبَّهُمْ ط أَلَا بَعْدَ الْإِعَادِ قَوْمٌ
هُودٍ ﴿٦٠﴾

وَالِى سَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَوْمَ أَعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ط هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِّنَ
الْأَرْضِ وَاسْتَعْبَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ تَتُوبُوا
إِلَيْهِ ط إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾

قَالُوا يَصْلِحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا
أَتَنْهِنَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي

করতে নিষেধ করছো; যাদের উপাসনা আমাদের পিতৃপুরুষেরা করে এসেছে? আর যে ধর্মের দিকে তুমি আমাদেরকে ডাকছো বস্তুতঃ আমরা তো তৎসম্বন্ধে গভীর সন্দেহের মধ্যে রয়েছি, যা আমাদেরকে দ্বিধাদ্বন্দ্বে ফেলে রেখেছে।

৬৩. সে (সালেহ عليه السلام) বললোঃ হে আমার কওম! আচ্ছা তোমরা ভেবে দেখেছ কি, যদি আমি নিজ প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রমাণের উপর থাকি এবং তিনি আমার প্রতি নিজের রহমত (নুবওয়াত) দান করে থাকেন; আর আমি যদি আল্লাহর কথা না মানি, তবে আমাকে আল্লাহ (-র শাস্তি) হতে কে রক্ষা করবে? তবে তোমরা আমার ক্ষতির মধ্যে নিষ্ক্ষেপ ছাড়া আর কিছুই বৃদ্ধি করতে পারবে না।

৬৪. আর হে আমার কওম! এটা হচ্ছে আল্লাহর উদ্দীয়া যা তোমাদের জন্যে নিদর্শন। অতএব ওকে ছেড়ে দাও, যেন আল্লাহর যমীনে চরে খায়, আর ওকে খারাপ উদ্দেশ্যে স্পর্শ করো না, অন্যথায় তোমাদেরকে আকস্মিক শাস্তি এসে পাকড়াও করবে।

৬৫. অনন্তর তারা ওকে মেরে ফেললো, তখন সে বললো; তোমরা নিজেদের ঘরে আরো তিনটি দিন সুখভোগ করে নাও এটা এমন ওয়াদা যাতে বিন্দুমাত্র মিথ্যা নেই।

شَاكٍ وَمِمَّا تَدْعُونَآ إِلَيْهِ مَرْيَبٌ ﴿٦٣﴾

قَالَ يَقَوْمِ اَرَايْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَاسْتَبْنِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَضُرُّنِي مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُوْنِي غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٤﴾

وَيَقَوْمِ هٰذِهِ نَاقَةٌ لَّكُمْ اٰيَةٌ فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَسُوْهَا بِسُوْءٍ فَيَاْخُذْكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٥﴾

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعَدُّ غَيْرٌ مَّكْدُوْبٌ ﴿٦٥﴾

৬৬. অতঃপর যখন আমার হুকুম এসে পৌঁছলো, আমি সালেহকে (عليه السلام) এবং যারা তার সাথে ঈমানদার ছিল তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে রক্ষা করলাম, আর বাঁচালাম সেই দিনের বড় লাঞ্ছনা হতে; নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

৬৭. আর সেই যালিমদেরকে এক প্রচণ্ড ধ্বনি এসে আক্রমণ করলো, যাতে তারা নিজ নিজ গৃহে (মৃত অবস্থায়) উপুড় হয়ে পড়ে রাইলো।

৬৮. যেন তারা সেই গৃহগুলিতে কখনো বসবাস করে নাই; ভালরূপে জেনে রাখো! সামূদ সম্প্রদায় নিজ প্রতিপালকের সাথে কুফরী করলো; জেনে রাখো, সামূদ সম্প্রদায়কে দূরে নিক্ষেপ করা হয়েছে। (ধ্বংস হয়ে গেছে)।

৬৯. আর আমার প্রেরিত রাসূলগণ (ফেরেশতার) ইবরাহীমের (عليه السلام) নিকট সুসংবাদ নিয়ে আগমন করলেন, (এবং) তাঁরা বললেন সালাম, ইবরাহীমও (عليه السلام) সালাম করলেন, অতঃপর অনতিবিলম্বে একটা কাবাব করা গো বৎস আনয়ন করলেন।

৭০. কিন্তু যখন তিনি দেখলেন যে, তাঁদের হাত সেই খাদ্যের দিকে অগ্রসর হচ্ছে না, তখন তাঁদেরকে অদ্ভুত ভাবে লাগলেন এবং মনে মনে তাদের থেকে শঙ্কিত হলেন; (এ দেখে) তারা বললেনঃ ভয় করবেন

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا طَبْحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٦٦﴾

وَآخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا
فِي دِيَارِهِمْ جِثِيمِينَ ﴿٦٧﴾

كَأَن لَّمْ يَعْنُوا فِيهَا ط آلا إِنَّ ثَمُودَ كَفَرُوا
رَبَّهُمْ ط آلا بُعْدًا لِثَمُودَ ﴿٦٨﴾

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلَنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى
قَالُوا سَلَامًا ط قَالَ سَلِّمْ فَمَا لَيْتَ أَنْ
جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِينٍ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا رَأَى أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَرَهُمْ وَأَوَّجَسَ
مِنْهُمْ خِيفَةً ط قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ
لَّوِطٍ ﴿٧٠﴾

না, আমরা লূত সম্প্রদায়ের প্রতি
খেরিত হয়েছি।

৭১. আর তাঁর স্ত্রী দন্ডায়মান ছিলেন,
তিনি হেঁসে উঠলেন, তখন আমি
তাকে (ইব্রাহীমের (عليه السلام)) স্ত্রীকে)
সুসংবাদ দিলাম ইসহাকের (عليه السلام)
এবং ইসহাকের (عليه السلام) পর
ইয়াকুবের (عليه السلام)।

৭২. তিনি বললেনঃ হায় আমার
কপাল! এখন আমি সন্তান প্রসব
করবো বৃদ্ধা হয়ে; আর আমার এই
স্বামী অতি বৃদ্ধ! বাস্তবিকই এটা তো
একটা বিস্ময়কর ব্যাপার!

৭৩. তারা (ফেরেশতারা) বললেনঃ
আপনি (ইব্রাহীমের স্ত্রীকে) কি
আল্লাহর কাজে বিস্ময় বোধ করছেন?
(হে) এই পরিবারের লোকেরা!
আপনাদের প্রতি তো আল্লাহর
রহমত ও তাঁর বরকতসমূহ (নাযিল
হয়ে আসছে); নিশ্চয় তিনি প্রশংসার
যোগ্য, মহামহিমাম্বিত।

৭৪. অতঃপর যখন ইব্রাহীমের
(عليه السلام) সেই ভয় দূর হয়ে গেল
এবং তিনি সুসংবাদ প্রাপ্ত হলেন,
তখন আমার সাথে লূত-কওম সম্বন্ধে
তর্ক-বিতর্ক করতে শুরু করলো।

৭৫. বাস্তবিক ইব্রাহীম (عليه السلام)
ছিলেন বড় সহিষ্ণু প্রকৃতির, ইবাদত
গুজার ও প্রত্যাবর্তনকারী।

৭৬. হে ইব্রাহীম (عليه السلام)! একথা
ছেড়ে দাও, তোমার প্রতিপালকের
ফরমান এসে গেছে এবং তাদের
উপর এমন এক শাস্তি আসছে যা
কিছুতেই টলবার নয়।

وَأَمْرَاتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا
بِإِسْحَاقَ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ۝

قَالَتْ يَوَيْلَ لِيَءَالِدُ وَ أَنَا عَجُوزٌ وَ هَذَا
بَعْلِي شَيْخًا طَرِيفًا هَذَا لَشَيْءٍ عَجِيبٍ ۝

قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمْتُ اللَّهُ وَ بَرَكَّتْ لَهُ
عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَيِّدٌ مَجِيدٌ ۝

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَ جَاءَتْهُ
الْبُشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ۝

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۝

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ
رَبِّكَ وَ إِنَّهُمْ أَتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ۝

৭৭. আর যখন আমার ঐ ফেরেশতারা লূতের (عليه السلام) নিকট উপস্থিত হলেন, তখন তিনি তাঁদের কারণে (তাঁদের নিরাপত্তার জন্যে) বিষণ্ণ হয়ে পড়লেন এবং সেই কারণে অন্তর সঙ্কুচিত হলো, আর বললেনঃ আজকের দিনটি অতি কঠিন।

৭৮. আর তাঁর কওম তার কাছে ছুটে আসলো এবং তারা পূর্ব হতে কুকার্যসমূহ করেই আসছিল; লূত (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার কওম! আমার (সমাজের) এই কন্যারা রয়েছে, এরা তোমাদের জন্যে অতি পবিত্র। অতএব তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমাকে আমার মেহমানদের সামনে অপমানিত করো না। তোমাদের মধ্যে কি ভালো লোক কেউই নেই?

৭৯. তারা বললোঃ তুমি তো অবগত আছ যে, তোমার (সমাজের) এই কন্যাগুলিতে আমাদের কোন আবশ্যিক নেই, আর আমাদের অভিপ্রায় কি তাও তোমার জানা আছে।

৮০. তিনি (লূত (عليه السلام)) বললেনঃ কি উত্তম হতো যদি তোমাদের উপর আমার কিছু ক্ষমতা চলতো, অথবা আমি কোন দৃঢ় স্তম্ভের আশ্রয় নিতাম।

৮১. তাঁরা (ফেরেশতারা) বললেনঃ হে লূত (عليه السلام)! আমরা তো আপনার রবের প্রেরিত, তারা কখনো আপনার নিকট পৌছতে

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئِئًا بِهِمْ
وَصَاقِبَ بِهِمْ ذُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ
عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ط وَمِنْ قَبْلِ كَانُوا
يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ط قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي
هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي ط
أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ﴿٧٨﴾

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَمَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَرْقٍ
وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا تُرِيدُ ﴿٧٩﴾

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ آوِي إِلَى
رُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾

قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ
فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ الْبَيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ

পারবে না, অতএব, আপনি রাত্রির কোন এক ভাগে নিজের পরিবার বর্গকে নিয়ে চলে যান, আপনাদের কেউ যেন পিছনের দিকে ফিরেও না দেখে; কিন্তু হ্যাঁ, আপনার স্ত্রী যাবে না, তার উপরও ঐ আপদ আসবে যা অন্যান্যদের প্রতি আসবে, তাদের (শাস্তির) অঙ্গীকারকৃত সময় হচ্ছে প্রাতঃকাল; প্রভাত কি নিকটবর্তী নয়?

৮২. অতঃপর যখন আমার হুকুম এসে পৌছলো, আমি ঐ ভূ-খন্ডের উপরিভাগকে নীচে করে দিলাম এবং ওর উপর পাকা মাটির পাথর বর্ষণ করতে লাগলাম, যা একাধারে ছিল।

৮৩. যা বিশেষ চিহ্নিত করা ছিল তোমার প্রতি পালকের নিকট; আর তা (জনপদগুলি) এই যালিমদের হতে বেশি দূরে নয়।

৮৪. আর আমি মাদইয়ানের (অধিবাসীদের) প্রতি তাদের ভ্রাতা শুআইবকে (الشعيب) প্রেরণ করলাম; তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া আর কেউ তোমাদের সত্য মা'বুদ নেই; আর তোমরা মাপে ও ওজনে কম করো না, আমি তোমাদেরকে স্বচ্ছল অবস্থায় দেখতে পাচ্ছি। আর আমি তোমাদের প্রতি এক বেষ্টনকারী দিবসের শাস্তির ভয় করছি।

৮৫. আর হে আমার কওম! তোমরা মাপ ও ওজনকে পুরোপুরিভাবে

مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أُمَّرَاتِكُمْ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا
أَصَابَهُمْ ط إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ط أَلَيْسَ الصُّبْحُ
بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا
عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ط مَنصُودٍ ﴿٨٢﴾

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ط وَمَا هِيَ مِنَ
الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ط قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ط وَلَا
تَتَّقُوا الْمَكِّيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ
وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾

وَلِیْقَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ

সম্পন্ন কর এবং লোকদের তাদের দ্রব্যাদিতে ক্ষতি করো না, আর ভূ-পৃষ্ঠে ফাসাদ সৃষ্টি করে সীমা অতিক্রম করো না।

৮৬. আল্লাহ প্রদত্ত যা অবশিষ্ট থাকে, তাই তোমাদের জন্যে অতি উত্তম-যদি তোমাদের বিশ্বাস হয়, আর আমি তো তোমাদের পাহারাদার নই।

৮৭. তারা বললোঃ হে শুআইব (عليه السلام)! তোমার নামায কি তোমাকে এই শিক্ষা দিচ্ছে যে, আমরা ঐসব উপাস্য বর্জন করি যাদের উপাসনা আমাদের পিতৃ-পুরুষরা করে আসছে? অথবা এটা বর্জন করতে যে, আমরা নিজেদের মালে নিজেদের ইচ্ছানুসারে ব্যবস্থা অবলম্বন করি? বাস্তবিকই তুমি হচ্ছে ধৈর্যশীল ও নেককার।

৮৮. তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! আচ্ছা তোমাদের কি মত, যদি আমি আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত থাকি এবং তিনি আমাকে নিজ সন্নিধান হতে একটি উত্তম সম্পদ (নুবওয়াত) দান করে থাকেন, (তবে আমি কিরূপে প্রচার না করে পারি?) আর আমি এটা চাই না যে, আমি তোমাদের বিপরীত সেই সব কাজ করি যা হতে তোমাদেরকে নিষেধ করেছি; আমি তো শুধুমাত্র সাধ্য মুতাবেক সংশোধন করে দিতে চাচ্ছি, আর আমার যা কিছু তাওফীক

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۗ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٧﴾

قَالُوا يُشْعِبُ صَلَواتِكَ تَأْمُرُكَ أَنْ تَتْرَكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ تَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنهَضَكُمْ عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

হয় তা শুধু আল্লাহরই সাহায্যে হয়ে থাকে; আমি তাঁরই উপর ভরসা রাখি এবং তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন করি।

৮৯. আর হে আমার কওম! তোমাদের আমার প্রতি হঠকারিতা যেন এর কারণ না হয়ে পড়ে যে, তোমাদের উপর সেইরূপ বিপদ এসে পড়ে, যেমন নূহের (عليه السلام) কওম অথবা হূদের (عليه السلام) কওম অথবা সালেহের (عليه السلام) কওমের উপর পতিত হয়েছিল; আর লূতের (عليه السلام) কওম তো তোমাদের হতে দূর (যুগে) নয়।

৯০. আর তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতঃপর তাঁরই দিকে মনোনিবেশ কর; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক পরম দয়ালু, অতি প্রেমময়।

৯১. তারা বললোঃ হে শুআ'ইব (عليه السلام)! তোমার বর্ণিত অনেক কথা আমাদের বুঝে আসে না, এবং আমরা নিজেদের মধ্যে তোমাকে দুর্বল দেখছি, আর যদি তোমার স্বজনবর্গ না থাকতো, তবে আমরা তোমাকে প্রস্তরাঘাতে হত্যা করে ফেলতাম। আর আমাদের নিকট তুমি মোটেও শক্তিশালী নও।

৯২. তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! আমার পরিজনবর্গ কি তোমাদের কাছে আল্লাহ অপেক্ষাও অধিক শক্তিশালী? আর তোমরা তাঁকে বিস্মৃত হয়ে পশ্চাতে ফেলে

وَيَقَوْمٍ لَا يُجْرِمُونَكَ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا
أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ ط وَمَا
قَوْمٌ لَوْ ط مِّنْكُمْ بِمُعِيدٍ ۝۸۹

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ط إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ
وَدُودٌ ۝۹০

قَالُوا يُشْعِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا
لَكَرِهًا فِيْنَا ضَعِيفَاءُ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَّجْنَاكَ
وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ۝۹১

قَالَ يَقَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ ط
وَإِنِّي أَخَذْتُ نُوْحًا وَرَأَى كَمْ ظَهْرِيَا ط إِنَّ رَبِّي
بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝۹২

রেখেছো; নিশ্চয়ই আমার প্রতিপালক তোমাদের সমস্ত কার্যকলাপকে বেষ্টন করে আছেন।

৯৩. আর হে আমার কওম! তোমরা নিজেদের অবস্থায় কাজ করতে থাকো, আমিও (আমার) কাজ করছি, এখন সত্ত্বরই তোমরা জানতে পারবে যে, কে সেই ব্যক্তি যার উপর এমন শাস্তি আসন্ন যা তাকে অপমানিত করবে এবং কে সেই ব্যক্তি যে, মিথ্যাবাদী ছিল; আর তোমরা প্রতীক্ষায় থাকো, আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষায় রইলাম।

৯৪. (আল্লাহ বললেনঃ) আর যখন আমার হুকুম এসে পৌঁছলো, তখন আমি মুক্তি দিলাম শুআইবকে (عليه السلام), আর যারা তার সাথে ঈমানদার ছিল তাদেরকে নিজ রহমতে এবং ঐ যালিমদেরকে আক্রমণ করলো এক বিকট গর্জন, অতপর তারা নিজ গৃহের মধ্যে (মৃত অবস্থায়) উপুড় হয়ে পড়ে রইলো।

৯৫. যেন তারা এই গৃহগুলিতে বাস করেই নাই; ভালরূপে জেনে নাও, (রহমত হতে) দূরে সরে পড়লো মাদইয়ান, যেমন দূর হয়েছিল সামুদ (সম্প্রদায়) রহমত হতে।

৯৬. এবং আমি মূসাকে (عليه السلام) প্রেরণ করলাম আমার মুজিবাসমূহ ও সুস্পষ্ট প্রমাণ সহকারে।

৯৭. ফিরাউন ও তার প্রধান বর্গের নিকট, অনন্তর তারা (ও) ফিরাউনের

وَيَقُولُ اَعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ط سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ مَنْ يَّاتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ط وَاَرْتَقِبُوْا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

وَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ؕ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا الصَّيْحَةَ فَاصْبَحُوْا فِيْ وِىَارِهِمْ جِيْثِيْنَ ﴿٩٤﴾

كَانَ لَمْ يَخْنَوْا فِيْهَا ط اِلَّا بَعْدَ الْاَلْدِيْنَ كَمَا بَعَدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِآيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَوَلٰٓئِهٖ فَاتَّبَعُوْا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ؕ

মতানুসারে চলতে থাকলো এবং ফিরাউনের কার্যকলাপ মোটেই সৎ ছিল না।

وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٤٤﴾

৯৮. কিয়ামতের দিন সে নিজ সম্প্রদায়ের আগে আগে থাকবে, অতঃপর তাদেরকে উপনীত করে দেবে দোযখে, আর তা অতি নিকৃষ্ট স্থান যাতে তারা উপনীত হবে।

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ
وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾

৯৯. আর লানত তাদের সাথে সাথে রইলো (এই দুনিয়াতে) এবং কিয়ামত দিবসেও, তা হলো নিকৃষ্ট পুরস্কার যা তাদেরকে দেয়া হয়েছে।

وَأْتَبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ط
بِئْسَ الرِّقْدُ الْمَرْقُودُ ﴿٩٩﴾

১০০. এটা ছিল সেই জনপদসমূহের কতিপয় অবস্থা যা আমি তোমার নিকট বর্ণনা করছি, ওগুলির মধ্যে কোন কোন জনপদ তো বহাল রয়েছে এবং কোন কোনটির সম্পূর্ণ বিলুপ্তি ঘটেছে।

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقِصُهُ عَلَيْكَ
مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾

১০১. আমি তাদের প্রতি অত্যাচার করি নাই; কিন্তু তারা নিজেরাই নিজেদের উপর অত্যাচার করেছে, বস্তুত তাদের কোনই উপকার করে নাই তাদের সেই উপাস্যগুলি, যাদের তারা উপাসনা করতো আল্লাহকে ছেড়ে, যখন এসে পৌছলো তোমার প্রতিপালকের হুকুম; বরং উল্টো তাদের ক্ষতি বর্ধিত করলো।

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ
عَنْهُمْ إِلَهَتُهُمْ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
شَيْءٍ لَمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ط وَمَا زَادُوهُمْ
غَيْرَ تَتَابُيُ ﴿١٠١﴾

১০২. আর এরূপেই তখন তিনি কোন জনপদের অধিবাসীদেরকে পাকড়াও করেন যখন তারা অত্যাচার করে; নিঃসন্দেহে তাঁর পাকড়াও

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ
ظَالِمَةٌ ط إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

হচ্ছে অত্যন্ত যাতনাদায়ক, কঠিন ১

১০৩. এ সব ঘটনায় সে ব্যক্তির জন্যে বড় উপদেশ রয়েছে যে ব্যক্তি পরকালের শাস্তিকে ভয় করে; ওটা এমন একটা দিন হবে যেদিন সমস্ত মানুষকে সমবেত করা হবে এবং ওটা হলো সকলের উপস্থিতির দিন ২

১০৪. আর আমি ওটা শুধু সামান্য কালের জন্যে স্থগিত রেখেছি।

১০৫. যখন সেদিন আসবে তখন কোন ব্যক্তি আল্লাহর অনুমতি ছাড়া কথাও বলতে পারবে না, অনন্তর তাদের মধ্যে কতক তো দুর্ভাগা হবে এবং কতক হবে ভাগ্যবান।

১০৬. অতএব, যারা দুর্ভাগা হবে তারা তো দোযখে এইরূপ অবস্থায় থাকবে যে, তাতে তাদের চীৎকার--- আর্তনাদ হতে থাকবে।

১০৭. তারা অনন্তকাল সেখানে থাকবে, যে পর্যন্ত আসমানসমূহ ও যমীন স্থায়ী থাকবে। তবে যদি প্রতিপালকের ইচ্ছা হয়, (তাহলে ভিন্ন কথা;) নিশ্চয় তোমার

إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَةً لِّمَن خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۝
ذَلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ
مَّشْهُودٌ ۝

وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدُّودٍ ۝

يَوْمَ يَأْتُ لَا تَكَلِّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۖ فَمِنْهُمْ
شَقِيقٌ وَسَعِيدٌ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُّوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا
زُفِيرٌ وَسَهيقٌ ۝

خُلْدٍ لِّمَن فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ ۖ
إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّبَأْسٍ
يُؤْتِي ۝

১। আবু মুসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ অত্যাচারীকে পৃথিবীতে সুযোগ ও অবকাশ দিয়ে থাকেন। আবার যখন তাকে ধরেন তখন আর ছাড়েন না। আবু মুসা বলেনঃ অতঃপর তিনি এই আয়াত পাঠ করলেনঃ অর্থঃ “এবং এরূপেই তোমার রবের পাকড়াও, যখন তিনি যালিমদের কোন বসতিকে পাকড়াও করেন। নিশ্চয় তাঁর পাকড়াও অতি কঠোর যন্ত্রণাদায়ক।” (সূরাঃ হূদ, আয়াত ১০২) (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৮৬)

২। আ'সেম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু)- কে জিজ্ঞেস করলাম, মদীনাতে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) হারাম করেছেন কি না? তিনি বললেনঃ হ্যাঁ, অমুক স্থান থেকে অমুক স্থান পর্যন্ত, এ এলাকার গাছ কাটা নিষেধ। যে মদীনার (দ্বীনের ব্যাপারে) নতুন প্রথা বা পদ্ধতি (বিদ'আত) প্রবর্তন করবে, তার ওপর আল্লাহর এবং ফেরেশতাকুলের ও গোটা মানব জাতির অভিশাপ (লা'নত)। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩০৬)

প্রতিপালক যা কিছু চান, তা তিনি পূর্ণরূপে সমাধান করতে পারেন।

১০৮. পক্ষান্তরে যারা ভাগ্যবান, বস্তুতঃ তারা থাকবে জান্নাতে, (এবং) তাতে তারা অনন্তকাল থাকবে, যে পর্যন্ত আসমানসমূহ ও যমীন স্থায়ী থাকে; কিন্তু যদি প্রতিপালকের ইচ্ছা হয়, (তবে ভিন্ন কথা:) ওটা অফুরন্ত দান হবে।

১০৯. সুতরাং এরা যার উপাসনা করে ওর সম্বন্ধে তুমি এতটুকুও সংশয় করো না; তারাও ঠিক সে রূপেই ইবাদত করছে যে রূপে তাদের পূর্বে তাদের পূর্ব পুরুষরা করতো এবং নিশ্চয় আমি তাদেরকে তাদের অংশ পূর্ণভাবে দিয়ে দিবো একটুকুও কম না করে।

১১০. আর আমি মুসাকে (ﷺ) কিতাব দিয়েছিলাম, অনন্তর ওতে মতভেদ করা হলো; আর যদি একটি উক্তি তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে পূর্বেই স্থিরীকৃত হয়ে না থাকতো তবে ওদের চূড়ান্ত মীমাংসা হয়ে যেতো এবং এই লোকেরা এর সম্বন্ধে এমন সন্দেহে (পতিত) আছে, যা তাদেরকে দ্বিধাদ্বন্দ্বে ফেলে রেখেছে।

১১১. আর নিশ্চিতরূপে সবাইকে তোমার প্রতিপালক তাদেরকে তাদের কর্মের পূর্ণ অংশ প্রদান করবেন; নিশ্চয়ই তিনি তাদের কার্যকলাপের পূর্ণ খবর রাখেন।

وَأَمَّا الَّذِينَ سُعِدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْذُودٍ ﴿١٠٨﴾

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِنَّا لَمَوْفُوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ﴿١٠٩﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ط
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ ط
وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مِرْيَبٍ ﴿١١٠﴾

وَإِنَّ كُلًّا لَبِئْسَ لِيُوقِفِيهِمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ط
إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

১১২. অতএব, তুমি যেভাবে আদিষ্ট হয়েছো, দৃঢ় থাকো এবং সেই লোকেরাও যারা (কুফরী হতে) তাওবা করে তোমার সাথে রয়েছে, সীমালঙ্ঘন কর না; নিশ্চয় তিনি তোমাদের কার্যকলাপ সম্যকভাবে প্রত্যক্ষ করেন।

১১৩. আর তোমরা যালিমদের প্রতি ঝুঁকে পড়ো না, অন্যথায় তোমাদেরকে জাহান্নামের আগুন স্পর্শ করবে, আর আল্লাহ ছাড়া তোমাদের কেউ সহায় হবে না, অতঃপর তোমাদেরকে কোন সাহায্যও করা হবে না।^১

১১৪. এবং নামাযের পাবন্দী কর দিবসের দু'প্রান্তে ও রাত্রির কিছু অংশে; নিঃসন্দেহে সৎকার্যবলী মুছে ফেলে মন্দ কার্যসমূহকে; এটা হচ্ছে একটি (ব্যাপক) নসীহত, নসীহত মান্যকারীদের জন্যে।^২

فَأَسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

وَلَا تَرْكَبُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَمَا تَمْسِكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءٍ ثُمَّ
لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُفْعًا مِّنَ اللَّيْلِ ط
إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُدْهَبْنَ السَّيِّئَاتِ ط ذَلِكَ ذِكْرِي
لِلَّذِكْرِينَ ﴿١١٤﴾

১। আ'সেম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে জিজ্ঞেস করলাম, মদীনাতে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) হারাম করেছেন কি না? তিনি বললেনঃ হ্যাঁ, অমুক স্থান থেকে অমুক স্থান পর্যন্ত, এ এলাকার গাছ কাটা নিষেধ। যে মদীনার (দ্বীনের ব্যাপারে) নতুন প্রথা বা পদ্ধতি (বিদ'আত) প্রবর্তন করবে, তার ওপর আল্লাহর এবং ফেরেশতাকুলের ও গোটা মানব জাতির অভিশাপ (লা'নত)। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩০৬)

২। (ক) ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, কোন এক ব্যক্তি জনৈক মহিলাকে চুমু দিয়ে ফেলল। অতঃপর রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে এই (অসংযত আচরণের) কথা উল্লেখ করলো (এবং আল্লাহর কাছে ক্ষমা প্রার্থনার আবেদন জানালো)। তখন তার এ ঘটনা উপলক্ষে উক্ত আয়াত নাযিল করা হলো। অর্থঃ “এবং তোমরা দিনের দু'ভাগে ও রাত্রের প্রথমার্শে নামায কয়েম কর। নিশ্চয় নেক কাজসমূহ বদ আমলসমূহকে দূর করে। স্মরণকারীদের জন্য এটা উপদেশ বাণী।” তখন লোকটি জিজ্ঞেস করলো (হে আল্লাহর রাসূল!) এ হুকুম কি কেবল আমার জন্য, না সকলের জন্য? তিনি বললেন, আমার উম্মতের যে কেউ নেক আমল করবে, এ হুকুম তারই জন্য। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৮৭)

(খ) আবু যর (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে বলেছেনঃ যে, তুমি যেখানেই থাকনা কেন আল্লাহকে ভয় কর। আর কোন পাপ কাজ হয়ে গেলে সাথে সাথেই কোন পুণ্য কাজ কর, যা তাকে মিটিয়ে দিবে। আর উত্তম চরিত্র ও ব্যবহার নিয়ে মানুষের সাথে মিলে-মিশা কর। (তিরমিযী, হাদীস নং ১৯৮৭)

১১৫. আর ধৈর্যধারণ কর, কেননা আল্লাহ সৎকর্মশীলদের পুণ্যফলকে বিনষ্ট করেন না।

১১৬. বস্তুতঃ যেসব জাতি তোমাদের পূর্বে গত হয়েছে, তাদের মধ্যে এমন বুদ্ধিমান লোক হয় নাই, যারা দেশে ফাসাদ বিস্তার করতে বাধা প্রদান করতো সামান্য কয়েকজন ছাড়া, যাদেরকে আমি তাদের মধ্য হতে রক্ষা করেছিলাম। আর যারা জালিম ছিল, তারা যে আরাম-আয়েশে ছিল ওর পিছনেই পড়ে রইলো এবং তারা অপরাধপরায়ণ হয়ে পড়লো।

১১৭. আর তোমার প্রতিপালক এমন নন যে, জনপদসমূহকে অন্যায়ভাবে ধ্বংস করে দিবেন, অথচ ওর অধিবাসী সৎকাজে লিপ্ত রয়েছে।

১১৮. এবং যদি তোমার প্রতিপালক ইচ্ছা করতেন, তবে তিনি সকল মানুষকে একই মতাবলম্বী করে দিতেন (কিন্তু এরূপ করেন নাই), আর তারা সদা মতভেদ করতে থাকবে।

১১৯. কিন্তু যার প্রতি তোমার প্রতিপালক অনুগ্রহ করবেন, আর এজন্যই তিনি তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন এবং তোমার প্রতিপালকের এই বাণীও পূর্ণ হবে, আমি জাহান্নামকে পূর্ণ করবো জ্বিনদের ও মানবদের দ্বারা।

১২০. রাসূলদের ঐ সব বৃত্তান্ত আমি তোমার কাছে বর্ণনা করছি, এর দ্বারা আমি তোমার চিন্তকে দৃঢ় করি, এর মাধ্যমে তোমার কাছে এসেছে সত্য

وَأَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلِهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۗ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۗ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ طَوَاتَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

وَكَلَّا تَقْصُصَ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نَنْثِقُ بِهِ فُؤَادَكَ ۗ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ

এবং মু'মিনদের জন্যে এসেছে উপদেশ ও শিক্ষণীয় বাণী।

১২১. (হে নবী ﷺ)! যারা বিশ্বাস করে না তাদেরকে বলঃ তোমরা যেমন করছো করতে থাকো এবং আমরাও আমাদের কাজ করছি।

১২২. এবং তোমরা প্রতীক্ষা কর, আমরাও প্রতীক্ষা করছি।

১২৩. আকাশসমূহ ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান আল্লাহরই এবং তাঁরই কাছে সব কিছু প্রত্যাবর্তিত হবে, সুতরাং তাঁর ইবাদত কর এবং তাঁর উপর নির্ভর কর, আর তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে তোমার প্রতিপালক অনবহিত নন।

সূরাঃ ইউসুফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১১, রুকূ'ঃ ১২)

করণাময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

১. আলিফ-লাম-রা; এগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের আয়াত।

২. আমি অবতীর্ণ করেছি তাকে কুরআন (রূপে) আরবী ভাষায়, যাতে তোমরা বুঝতে পারো।

৩. আমি তোমার কাছে উত্তম কাহিনী বর্ণনা করছি, অহির মাধ্যমে তোমার কাছে এই কুরআন প্রেরণ করে, যদিও এর পূর্বে তুমি ছিলে অনবহিতদের অন্তর্ভুক্ত।

وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَمِلُونَ ﴿١١٢﴾

وَأَنْتُمْظِرُونَ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١١٣﴾

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۗ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١١٤﴾

سُورَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا ۱۱۱ رُكُوعًا ۱۲

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّحْمٰنِ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿١﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢﴾

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنَ ۗ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٣﴾

৪. যখন ইউসুফ (عليه السلام) তার পিতাকে বললেনঃ হে আমার পিতাঃ! আমি এগারোটি নক্ষত্র, সূর্য এবং চন্দ্রকে দেখেছি— দেখেছি ওদেরকে আমার প্রতি সিজ্দাবনত অবস্থায়।

৫. তিনি বললেনঃ হে আমার পুত্র! তোমার স্বপ্নের বৃত্তান্ত তোমার ভাইদের নিকট বর্ণনা করো না, করলে তারা তোমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করবে, শয়তান তো মানুষের প্রকাশ্য শত্রু।

৬. এইভাবে তোমার প্রতিপালক তোমাকে মনোনীত করবেন এবং তোমাকে কথার (স্বপ্নের) ব্যাখ্যা শিক্ষা দিবেন, আর তোমার প্রতি ও ইয়াকুবের (عليه السلام) পরিবার-পরিজনের প্রতি অনুগ্রহ পূর্ণ করবেন যেভাবে তিনি এটা পূর্বে পূর্ণ করেছিলেন তোমার পিতৃপুরুষ ইবরাহীম (عليه السلام) ও ইসহাকের (عليه السلام) প্রতি, তোমার প্রতিপালক সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

৭. ইউসুফ ও তাঁর ভ্রাতাদের ঘটনায় জিজ্ঞাসুদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

৮. যখন তারা (ভ্রাতারা) বলেছিলোঃ আমাদের পিতার নিকট ইউসুফ এবং তার ভাই (বিনইয়ামীন) অধিক প্রিয়, অথচ আমরা একটি সংহত দল, আমাদের পিতা তো স্পষ্ট বিভ্রান্তি-তেই রয়েছেন।

৯. ইউসুফকে (عليه السلام) হত্যা কর অথবা তাকে কোন স্থানে ফেলে

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ﴿٧﴾

قَالَ يَبْنَؤُكَ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٨﴾

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَتْهَا عَلَىٰ أَبِيكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩﴾

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾

إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ آبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١١﴾

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ

এসো, ফলে তোমাদের পিতার দৃষ্টি শুধু তোমাদের প্রতিই নিবিষ্ট হবে এবং তারপর তোমরা ভাল লোক হয়ে যাবে।

১০. তাদের মধ্যে একজন বললোঃ ইউসুফকে (عليه السلام) হত্যা করো না, বরং (যদি তোমরা কিছু করতেই চাও তবে) তাকে কোন গভীর কূপে নিক্ষেপ করো, যাত্রীদের কেউ তাকে তুলে নিয়ে যাবে।

১১. তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! ইউসুফের (عليه السلام) ব্যাপারে আপনি আমাদেরকে অবিশ্বাস করছেন কেন, আমরা তো তার হিতাকাজী।

১২. আপনি আগামীকাল তাকে আমাদের সাথে শ্রেরণ করুন, সে (ফল-মূল) খাবে ও খেলাধূলা করবে, আমরা অবশ্যই তার রক্ষণাবেক্ষণ করবো।

১৩. তিনি বললেনঃ এটা আমাকে কষ্ট দিবে যে, তোমরা তাকে নিয়ে যাবে এবং আমি ভয় করি তোমরা তার প্রতি অমনোযোগী হলে তাকে নেকড়ে বাঘ খেয়ে ফেলবে।

১৪. তারা বললোঃ আমরা একটি সংহত দল হওয়া সত্ত্বেও যদি নেকড়ে বাঘ তাকে খেয়ে ফেলে, তবে তো আমরা ক্ষতিগ্রস্তই হবো।

১৫. অতঃপর যখন তারা তাঁকে নিয়ে গেল এবং তাঁকে গভীর কূপে নিক্ষেপ করতে একমত হলো, এমতাবস্থায়

أَيُّكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ﴿٩﴾

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غِيَابِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ﴿١٠﴾

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَصِحُونَ ﴿١١﴾

أَرْسَلَهُ مَعَنَا عَدَايَا يَرْتَعُونَ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿١٢﴾

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنَّ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ﴿١٣﴾

قَالُوا لَكِنِ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخَيْرُونَ ﴿١٤﴾

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غِيَابِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ

আমি তাকে (ইউসুফকে) জানিয়ে দিলামঃ তুমি তাদেরকে তাদের এই কর্মের কথা অবশ্যই বলে দেবে যখন তারা তোমাকে চিনবে না।

১৬. তারা রাত্রিতে কাঁদতে কাঁদতে তাদের পিতার নিকট আসলো।

১৭. তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমরা দৌড়ে প্রতিযোগিতা করছিলাম এবং ইউসুফকে (عليه السلام) আমাদের মালপত্রের নিকট রেখে গিয়েছিলাম, অতঃপর তাকে নেকড়ে বাঘে খেয়ে ফেলেছে; কিন্তু আপনি তো আমাদেরকে বিশ্বাস করবেন না। যদিও আমরা সত্যবাদী।

১৮. আর তারা তার জামায় মিথ্যা রক্ত লেপন করে এনেছিল, তিনি বললেনঃ না, তোমাদের মন তোমাদের জন্যে একটি কাহিনী সাজিয়ে দিয়েছে, সুতরাং পূর্ণ ধৈর্যই শ্রেয়, তোমরা যা বলছো সে বিষয়ে একমাত্র আল্লাহই আমার সাহায্যস্থল।

১৯. এক যাত্রীদল আসলো, তারা তাদের পানি সংগ্রাহককে প্রেরণ করলো; সে তার পানির বালতি নামিয়ে দিলো, সে বলে উঠলোঃ কি সুখবর! এ যে এক কিশোর! অতঃপর তারা তাকে পণ্যরূপে লুকিয়ে রাখলো, তারা যা কিছু করছিলো সে বিষয়ে আল্লাহ সবিশেষ অবগত ছিলেন।

২০. আর তারা তাকে বিক্রি করলো স্বল্প মূল্যে, মাত্র কয়েক দিরহামের

لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾

وَجَاءَ وَآبَاهُمُ عَشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ
عِنْدَ مَتَاعِنَا فَالَكُلُّهُ الذُّئْبُ وَمَا أَنْتَ بِسُؤْمِنٍ
لَّنَا وَلَا لَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

وَجَاءَ وَعَلَى قَيْصِهِ يَدُهُ كَذِبٌ ط قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ
لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَبِيلٌ ط وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ
عَلَى مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَةً
قَالَ يَبْشُرِي هَذَا غُلَامٌ ط وَأَسْرُوهُ بِضَاعَةً ط
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

وَشَرَّوهُ بِشَرِّ بَحْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ ط وَكَانُوا

বিনিময়ে, এ ব্যাপারে তারা ছিল অল্পে ভুট্ট।

فِيهِ مِنَ الرَّاهِدِينَ ﴿٢٥﴾

২১. মিসরের যে ব্যক্তি তাকে ক্রয় করেছিল, সে তার স্ত্রীকে বললোঃ সম্মানজনকভাবে এর থাকবার ব্যবস্থা কর, সম্ভবতঃ সে আমাদের উপকারে আসবে অথবা আমরা একে পুত্র রূপেও গ্রহণ করতে পারি এবং এভাবে আমি ইউসুফকে (عليه السلام) সেই দেশে প্রতিষ্ঠিত করলাম তাকে বাক্যাদির (স্বপ্নের) ব্যাখ্যা শিক্ষা দেয়ার জন্যে, আল্লাহ তাঁর কার্য সম্পাদনে অপ্রতিহত; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِمَرْأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۖ وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

২২. তিনি যখন পূর্ণ যৌবনে উপনীত হলেন তখন আমি তাঁকে হিকমত ও জ্ঞান দান করলাম এবং এভাবেই আমি সংকর্ম পরায়ণদেরকে পুরস্কৃত করে থাকি।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٦﴾

২৩. তিনি যে স্ত্রীলোকের গৃহে ছিলেন তাঁকে তার প্রতি আকৃষ্ট করতে চাইলো এবং দরজাগুলি বন্ধ করে দিলো ও বললোঃ চলে এসো তিনি বললেনঃ আমি আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থনা করছি, তিনি আমার প্রভু! তিনি আমাকে সম্মানজনকভাবে থাকতে দিয়েছেন জালিমরা কখনও সফলকাম হয় না।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۖ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٧﴾

২৪. সেই রমনী তো তাঁর প্রতি আসক্ত হয়েছিল এবং তিনিও আসক্ত হয়ে পড়তেন যদি না তিনি তাঁর প্রতিপালকের নিদর্শন প্রত্যক্ষ করতেন, তাকে মন্দ কর্ম ও অশ্লীলতা

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأْيَهَا رَرَّبِهِ ۖ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۗ إِنَّهُ مِن عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٨﴾

হতে বিরত রাখাবার জন্যে, সে তো ছিল আমার মনোনীত বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত।

২৫. তারা উভয়ে দৌড়িয়ে দরজার দিকে গেল এবং রমণীটি পিছন হতে তার জামা ছিড়ে ফেললো, তাঁরা উভয়ে রমণীটির স্বামীকে দরজার কাছে পেলেন, রমণীটি বললোঃ যে তোমার গৃহিনীর সাথে কুকর্ম কামনা করে তার জন্যে কারাগারে প্রেরণ অথবা অন্য কোন বেদনাদায়ক শাস্তি ব্যতীত কি দন্ড আর হতে পারে?

২৬. তিনি (ইউসুফ عليه السلام) বললেনঃ সেই আমার হতে অসৎকর্ম কামনা করেছিল, রমণীটির পরিবারের একজন সাক্ষী সাক্ষ্য দিলোঃ যদি তার জামার সম্মুখ দিক ছেঁড়া হয়ে থাকে তবে রমণী সত্য কথা বলেছে এবং পুরুষটি মিথ্যাবাদী।

২৭. আর যদি তার জামা পিছন দিক হতে ছেঁড়া হয়ে থাকে তবে রমণীটি মিথ্যা কথা বলেছে এবং পুরুষটি সত্যবাদী।

২৮. সুতরাং গৃহস্বামী যখন দেখলো যে, তার জামা পিছন দিক থেকে ছিন্ন করা হয়েছে তখন সে বললোঃ এটা তোমাদের নারীদের ছলনা, ভীষণ তোমাদের ছলনা।

২৯. হে ইউসুফ (عليه السلام) তুমি এটা উপেক্ষা কর এবং হে নারী! তুমি তোমার অপরাধের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর, নিশ্চয় তুমিই অপরাধিনী।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفِيَا
سَيِّدَهَا كَلَّا الْبَابُ طَأَلَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ
بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

قَالَ هِيَ رَأَوْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ
فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٦﴾

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ
وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾

فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ
مِنْ كَيْدِكِنَّ ط إِنَّ كَيْدَكِنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ
إِنَّكَ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٢٩﴾

৩০. নগরে কতিপয় নারী বললোঃ আশীষের স্ত্রী তার যুবক দাস হতে অসৎকর্ম কামনা করছে; প্রেম তাকে উন্মত্ত করেছে, আমরা তো তাকে দেখছি স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

৩১. রমণীটি যখন তাদের ষড়যন্ত্রের কথা শুনলো, তখন সে তাদেরকে ডেকে পাঠালো এবং একটি ভোজ সভার আয়োজন করলো। তাদের প্রত্যেককে একটি করে ছুরি দিলো এবং যুবককে বললোঃ তাদের সামনে বের হও, অতপর তারা যখন তাঁকে দেখলো তখন তারা তার রূপ-মাধুর্যে অভিভূত হলো নিজেদের হাত কেটে ফেললো, তারা বললোঃ অদ্ভুত আল্লাহর মাহাত্ম্য, এতো মানুষ নয় এতো এক মহিমাশিত ফিরিশ্তা!

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكًا وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

৩২. সে বললোঃ এ-ই সে যার সম্বন্ধে তোমরা আমার নিন্দা করেছো, আমি তো তা হতে অসৎকর্ম কামনা করেছি; কিন্তু সে নিজেকে পবিত্র রেখেছে; আমি তাকে যা আদেশ করেছি সে যদি তা না করে তবে সে কারারুদ্ধ হবেই এবং হীনদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِينَ لُتْنَتْنِي فِيهِ ط وَلَقَدْ رَاوَدتُّهُ عَنِ نَفْسِهِ فَأَسْتَعْصِمُ ط وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمَرُهُ لَيُصْجَتَنَّ وَيَكُونَنَّ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٣٢﴾

৩৩. ইউসুফ (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! এই নারীরা আমাকে যার প্রতি আহ্বান করেছে তা অপেক্ষা কারাগার আমার কাছে অধিক প্রিয়, আপনি যদি তাদের ছলনা হতে আমাকে রক্ষা না করেন তবে আমি তাদের প্রতি আকৃষ্ট হয়ে পড়বো এবং অজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত হবো।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۚ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾

৩৪. অতঃপর তাঁর প্রতিপালক তার আহ্বানে সাড়া দিলেন এবং তাঁকে তাদের ছলনা হতে রক্ষা করলেন, তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

৩৫. নিদর্শনাবলী দেখার পর তাদের মনে হলো যে, তাকে কিছুকালের জন্যে কারারুদ্ধ করতেই হবে।

৩৬. তাঁর সাথে দু'জন যুবক কারাগারে প্রবেশ করলো, তাদের একজন বললোঃ আমি স্বপ্নে দেখলাম, আমি মদ তৈরি করছি এবং অপরজন বললোঃ আমি স্বপ্নে দেখলাম আমি আমার মাথায় রুটি বহন করছি এবং পাখি তা হতে খাচ্ছে, আমাদেরকে আপনি এর তাৎপর্য জানিয়ে দিন, আমরা আপনাকে সৎ কর্মপরায়ণ দেখছি।

৩৭. ইউসুফ (عليه السلام) বললেনঃ তোমাদেরকে যে খাদ্য দেয়া হয় তা আসবার পূর্বে আমি তোমাদেরকে স্বপ্নের ব্যাখ্যা জানিয়ে দিবো, আমি যা তোমাদেরকে বলবো তা আমার প্রতিপালক আমাকে যা শিক্ষা দিয়েছেন তা হতে বলবো, যে সম্প্রদায় আল্লাহকে বিশ্বাস করে না ও পরলোকে অবিশ্বাসী হয় আমি তাদের মতবাদ বর্জন করেছি।

৩৮. আমি আমার পিতৃপুরুষ ইবরাহীম (عليه السلام) ইসহাক (عليه السلام) এবং ইয়াকুবের (عليه السلام) মতবাদ অনুসরণ করি, আল্লাহর সাথে কোন বস্তুকে শরীক করা আমাদের কাজ নয়, এটা আমাদের ও সমস্ত মানুষের

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُمْ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٧﴾

ثُمَّ بَدَأَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوْا الْآيَاتِ لَيْسَجُنَّهُ ۖ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٨﴾

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرِنِي أَخَصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرِنِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِينًا ۖ بِنَاؤُهُ إِذَا تَرَكَهُ مِنَ الْهُسَيْنِ ﴿٣٩﴾

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِيهِ إِلَّا نَبَأَكُمَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۖ إِنِّي طَرَفْتُ لَكُمْ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٤٠﴾

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ذَلِكُمْ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٤١﴾

প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ; কিন্তু অধিকাংশ মানুষই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে না।

৩৯. হে আমার কারা-সঙ্গীদয়! ভিন্ন ভিন্ন বহু প্রতিপালক শ্রেয়, না পরাক্রমশালী এক আল্লাহ?

يُصَاحِبِي السِّجْنِ أَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَوْ اللَّهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

৪০. তাঁকে ছেড়ে তোমরা শুধু কতকগুলি নামের ইবাদত করছো, যে নামগুলো তোমাদের পিতৃপুরুষ ও তোমরা রেখেছো। এইগুলির কোন প্রমাণ আল্লাহ পাঠান নাই, বিধান দেয়ার অধিকার শুধু আল্লাহরই, তিনি নির্দেশ দিয়েছেন যে, তোমরা শুধুমাত্র তাঁরই ইবাদত করবে, আর কারো ইবাদত করবে না, এটাই সরল-সঠিক ধীন; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَبَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ
وَأَبَاؤُكُمْ مِمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ط
الْحُكْمِ إِلَّا لِلَّهِ ط أَمْرًا ط أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ط ذَلِكَ
الْيَوْمَ الْقِيَامِ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

৪১. হে আমার কারা-সঙ্গীদয়! তোমাদের একজন সম্বন্ধে কথা এই যে, সে তার প্রভুকে মদ্যপান করাবে এবং অপর জন সম্বন্ধে কথা এই যে, সে শূলবিদ্ধ হবে, অতঃপর তার মস্তক হতে পাখি আহাির করবে, যে বিষয়ে তোমরা জানতে চেয়েছো তার সিদ্ধান্ত হয়ে গেছে।

يُصَاحِبِي السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمْ فَيسْقَى رَبَّهُ خمرًا ط
وَأَمَّا الْآخَرَ فَيُصَلَّبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ ط
قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ﴿٤١﴾

৪২. ইউসুফ (عليه السلام) তাদের মধ্যে যে মুক্তি পাবে বলে মনে করলেন, তাকে বললেনঃ তোমার প্রভুর কাছে আমার কথা বলবে; কিন্তু শয়তান তাকে তার প্রভুর কাছে তার বিষয় বলবার কথা ভুলিয়ে দিলো; সুতরাং ইউসুফ (عليه السلام) কয়েক বছর কারাগারেই রয়ে গেলেন।

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ
رَبِّكَ فَأَنَسَهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ
بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾

৪৩. (একদিন) রাজা বললেনঃ আমি স্বপ্নে দেখলাম, সাতটি মোটাতাজা গাভী, ওগুলিকে সাতটি ক্ষীণকায় গাভী ভক্ষণ করছে এবং সাতটি সবুজ শীষ ও অপর সাতটি শুষ্ক, হে পরিষদবর্গ! তোমরা আমাকে স্বপ্নের ব্যাখ্যা বল যদি তোমরা স্বপ্নের ব্যাখ্যায় পারদর্শী হয়ে থাক।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سَيَّانٍ يَأْكُلْنَ سَبْعَ عِجَافٍ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرَىٰ يُسَبِّتُ بِهَا يَأْكُلْنَ الْبَلَائِلُ أَتُؤْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ﴿١٣﴾

৪৪. তারা বললোঃ এটা কল্পনাপ্রসূত স্বপ্ন এবং আমরা এরূপ স্বপ্ন ব্যাখ্যায় অভিজ্ঞ নই।

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعِلْمِينَ ﴿١٤﴾

৪৫. দু'জন কারারুদ্ধের মধ্যে যে মুক্তি পেয়েছিল এবং দীর্ঘকাল পরে তার স্মরণ হলো সে বললোঃ আমি এর তাৎপর্য তোমাদেরকে জানিয়ে দেবো, সুতরাং তোমরা আমাকে পাঠিয়ে দাও।

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِي ﴿١٥﴾

৪৬. (সে বললোঃ) হে ইউসুফ (عليه السلام) হে সত্যবাদী! সাতটি মোটা গাভী, ওগুলিকে সাতটি পাতলা গাভী ভক্ষণ করছে এবং সাতটি সবুজ শীষ ও অপর সাতটি শুষ্ক শীষ সম্বন্ধে আপনি আমাদেরকে ব্যাখ্যা দিন, যাতে আমি লোকদের কাছে ফিরে যেতে পারি এবং যাতে তারা অবগত হতে পারে।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سَيَّانٍ يَأْكُلْنَ سَبْعَ عِجَافٍ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرَىٰ يُسَبِّتُ لَعَلَّيْ نَرْجِعَ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾

৪৭. ইউসুফ (عليه السلام) বললেনঃ তোমরা সাত বছর একাধিক্রমে চাষ করবে, অতঃপর তোমরা যে শস্য সংগ্রহ করবে তার মধ্যে যে সামান্য পরিমাণ তোমরা ভক্ষণ করবে, তা ব্যতীত সমস্ত শীষ সহকারে রেখে দেবে।

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابَّاءَ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُّوهُ فِي سُنبُلَةٍ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ﴿١٧﴾

৪৮. এরপর আসবে সাতটি কঠিন বছর, যা তোমরা এবছরগুলির জন্য

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ

রেখেছিলে তা খেয়ে যাবে; কিন্তু সামান্য কিছু যা তোমরা সংরক্ষণ করবে (বীজের জন্য) তা ব্যতীত।

৪৯. এবং এরপর আসবে এক বছর, সেই বছর মানুষের জন্যে প্রচুর বৃষ্টিপাত হবে এবং সেই বছর মানুষ প্রচুর ফলের রস নিংড়াবে।

৫০. রাজা বললেনঃ তোমরা (ইউসুফ عليه السلام)-কে আমার কাছে নিয়ে এসো; যখন দূত তাঁর কাছে উপস্থিত হলো তখন তিনি বললেনঃ তুমি তোমার প্রভুর কাছে ফিরে যাও এবং তাঁকে জিজ্ঞেস কর, যে নারীরা তাদের হাত কেটে ফেলেছিল তাদের অবস্থা কি? আমার প্রতিপালক তাদের ছলনা সম্পর্কে সম্যক অবগত।

৫১. (রাজা) নারীদেরকে বললেনঃ যখন তোমরা ইউসুফ عليه السلام হতে অসৎকর্ম কামনা করেছিলে, তখন তোমাদের কি হয়েছিল? তারা বললোঃ অদ্ভুত আল্লাহর মাহাত্ম্য! আমরা তার মধ্যে কোন দোষ দেখি নাই; আযীযের স্ত্রী বললোঃ এক্ষণে সত্য প্রকাশ পেয়ে গেল। আমিই তা হতে অসৎকর্ম কামনা করেছিলাম, সে তো সত্যবাদী।

৫২. (ইউসুফ عليه السلام বললেন) এটা এজন্য যে, যাতে তিনি জানতে পারেন যে, তার অনুপস্থিতিতে আমি তার প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করি নাই এবং আল্লাহ বিশ্বাসঘাতকদের ষড়যন্ত্র সফল করেন না।

مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَحْصُونَ ﴿٥٠﴾

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصُرُونَ ﴿٥١﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي نَهَى فُلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَأَلَهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٢﴾

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَأَوْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ ط قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ ط قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ إِنَّنِي خَصَّصْتُ الْخُبْرَ أَنَا وَرَأَوْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الضَّالِّينَ ﴿٥٣﴾

ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِبِينَ ﴿٥٤﴾

৫৩. আমি নিজেকে নির্দোষ মনে করি না, মানুষের মন অবশ্যই মন্দকর্ম প্রবণ; কিন্তু সে নয় যার প্রতি আমার প্রতিপালক দয়া করেন; আমার প্রতিপালক অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৫৪. রাজা বললেনঃ ইউসুফকে (عليه السلام) আমার কাছে নিয়ে এসো, আমি তাকে আমার একান্ত সহচর নিযুক্ত করবো, অতঃপর (রাজা) যখন তার সাথে কথা বললেন, তখন (রাজা) বললেনঃ আজ তুমি আমাদের কাছে মর্যাদাবান ও বিশ্বাসভাজন হলে।

৫৫. তিনি (ইউসুফ) বললেনঃ আমাকে কোষাগারের দায়িত্বে নিয়োজিত করুন। নিশ্চয়ই আমি ভালো সংরক্ষণকারী, অতিশয় জ্ঞানবান।

৫৬. এইভাবে আমি ইউসুফকে (عليه السلام) সেই দেশে প্রতিষ্ঠিত করলাম; তিনি ঐ দেশে যথা ইচ্ছা অবস্থান করতে পারতেন, আমি যাকে ইচ্ছা তার প্রতি দয়া করি, আর আমি সৎকর্মপরায়ণদের শ্রমফল নষ্ট করি না।

৫৭. আর যারা মু'মিন ও মুত্তাকী তাদের পরকালের পুরস্কারই উত্তম।

৫৮. ইউসুফের ভ্রাতাগণ আসলো এবং তার নিকট উপস্থিত হলো, তিনি তাদেরকে চিনলেন; কিন্তু তারা তাঁকে চিনতে পারলো না।

وَمَا أُبْرِئِي نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ
بِالسُّوءِ ۗ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ۗ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٣﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ اسْتَخْلَصَهُ لِنَفْسِي ۚ
فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ
أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۚ إِنِّي حَفِيظٌ
عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۖ يَتَّبِعُوا
مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ۖ نُنِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ
وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَا نُجْزِ الْأُخْرَةَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا
يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ
وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٨﴾

৫৯. আর তিনি যখন তাদের পণ্য সামগ্রীর ব্যবস্থা করে দিলেন তখন তিনি বললেনঃ তোমরা আমার নিকট তোমাদের বৈমাত্রেয় ভাইকে নিয়ে আসবে, তোমরা কি দেখছো না যে, আমি মাপে পূর্ণ মাত্রায় দিই? এবং আমিই উত্তম অতিথি পরায়ণ।

৬০. কিন্তু তোমরা যদি তাকে আমার নিকট নিয়ে না আসো তবে আমার নিকট তোমাদের জন্যে কোন বরাদ্দ থাকবে না এবং তোমরা আমার নিকটবর্তী হবে না।

৬১. তারা বললোঃ ওর বিষয়ে আমরা ওর পিতাকে সম্মত করার চেষ্টা করবো এবং আমরা নিশ্চয়ই এটা করবো।

৬২. ইউসুফ (عليه السلام) তার ভৃত্যদেরকে (কর্মচারীদেরকে) বললোঃ তারা যে পণ্য মূল্য দিয়েছে তা তাদের মালপত্রের মধ্যে রেখে দাও, যাতে স্বজনগণের মধ্যে প্রত্যাবর্তনের পর তারা বুঝতে পারে যে, গুটা প্রত্যর্পণ করা হয়েছে, তা হলে তারা পুনরায় আসতে পারে।

৬৩. অতঃপর যখন তারা তাদের পিতার (ইয়াকুব عليه السلام)-এর নিকট ফিরে আসলো তখন তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমাদের জন্যে বরাদ্দ নিষিদ্ধ করা হয়েছে, সুতরাং আমাদের ভ্রাতাকে আমাদের সাথে পাঠিয়ে দিন যাতে আমরা রসদ (আহার্য সামগ্রী) পেতে পারি, আমরা অবশ্যই তার রক্ষণাবেক্ষণ করবো।

وَلَبَّآ جَهْرَهُمْ بِجَهْرِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِآخِ
لَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِكُمْ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْ اَوْفِي الْكَيْلِ
وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾

فَاِنْ لَّمْ تَأْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ
وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾

قَالُوْا سَنُرٰوِدُ عَنْهُ اٰبَاہٖ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾

وَقَالَ لِغُلٰمِيْہٖ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِیْ رِحَالِهِمْ
لَعَلَّهُمْ یَعْرِفُوْنَهَا اِذَا اُنْقَلِبُوْا اِلٰی اٰہْلِہُمْ
لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾

فَلَبَّآ رَجَعُوْا اِلٰی اٰیِبِهِمْ قَالُوْا یٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا
الْکَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَا اَخَانًا نَّکْتَلُ وَاِنَّا لَهٗ
لِحٰوِطُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৪. তিনি বললেনঃ আমি কি তোমাদেরকে ওর সম্বন্ধে সেরূপ ভরসা করবো, যে রূপ ভরসা পূর্বে তোমাদেরকে করেছিলাম ওর ভ্রাতা সম্বন্ধে? আল্লাহই রক্ষণাবেক্ষণে শ্রেষ্ঠ এবং তিনি দয়ালুদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ দয়ালু।

৬৫. যখন তারা তাদের মালপত্র খুললো তখন তারা দেখতে পেলো তাদের পণ্য মূল্য তাদেরকে প্রত্যর্পণ করা হয়েছে, তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমরা আর কি প্রত্যাশা করতে পারি? এটা আমাদের প্রদত্ত পণ্য মূল্য আমাদেরকে প্রত্যর্পণ করা হয়েছে, পুনরায় আমরা আমাদের পরিবারবর্গকে খাদ্য সামগ্রী এনে দেবো এবং আমরা আমাদের ভ্রাতার রক্ষণাবেক্ষণ করবো এবং আমরা অতিরিক্ত আর এক উষ্ট্রী বোঝাই পণ্য আনবো যা এনেছি তা পরিমাণে অল্প।

৬৬. তিনি (পিতা) বললেনঃ আমি ওকে কখনো তোমাদের সাথে পাঠাবো না যতক্ষণ না তোমরা আল্লাহর নামে অঙ্গীকার কর যে, তোমরা তাকে আমার নিকট নিয়ে আসবেই, অবশ্য যদি তোমরা একান্ত অসহায় হয়ে না পড়, অতঃপর যখন তারা তাঁর নিকট প্রতিজ্ঞা করলো তখন তিনি বললেনঃ আমরা যে বিষয়ে কথা বলছি, আল্লাহ তার বিধায়ক।

৬৭. তিনি (ইয়াকুব عليه السلام) বললেনঃ হে আমার পুত্রগণ! তোমরা এক

قَالَ هَلْ أُمْنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أُمْنُتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ
مَنْ قَبْلُ ۖ قَالَ اللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا وَهُوَ أَرْحَمُ
الرُّحَمَاءِ ﴿٦٤﴾

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ
إِلَيْهِمْ ۖ قَالُوا يَا بَانَ مَا نَبِغِي ۖ هَذِهِ بِضَاعَتُنَا
رُدَّتْ إِلَيْنَا ۖ وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزِدَادُ
كَيْلَ بَعِيرٍ ۖ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ مَوْثِقًا
مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ ۗ
فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ
وَكَيْلٌ ﴿٦٦﴾

وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا

দরজা দিয়ে প্রবেশ করো না, ভিন্ন ভিন্ন দরজা দিয়ে প্রবেশ করবে, আল্লাহর বিধানের বিরুদ্ধে আমি তোমাদের জন্যে কিছু করতে পারি না, বিধান আল্লাহরই, আমি তাঁরই উপর নির্ভর করি এবং যারা নির্ভর করতে চায় তারা আল্লাহরই উপর নির্ভর করুক।^১

مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ط إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ط عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ؕ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٥﴾

১। ইবনে আক্বাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, আমার উম্মতের মধ্যে সত্তর হাজার লোক বিনা হিসাবে জান্নাতে যাবে। আর তারা হলেন ঐ সমস্ত লোক যারা (তাদের অসুস্থতার সময়) ঝাড়ফুক না করে ও ফাল বা কুলক্ষণ করে না (রাস্তায় বের হয়ে খারাপ কিছু দেখে যাত্রা বিরতি দেয় এই মনে করে যে, আজ ভাগ্য খারাপ) এবং সর্বদা তাদের প্রভুর উপর ভরসা করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭২)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বনী ইসরাঈলের এক লোক বনী ইসরাঈলের অপর এক লোকের নিকট এক হাজার দীনার কর্জ চাইল। তখন সে (কর্জদাতা) বলল, কয়েকজন সাক্ষী আনুন, আমি তাদেরকে সাক্ষী রাখব। সে (কর্জগ্রহীতা) বলল, সাক্ষীর জন্য আল্লাহ্ই যথেষ্ট। তখন কর্জদাতা বলল, তবে একজন যামিন উপস্থিত করুন। সে বলল, আল্লাহ্ই যথেষ্ট যামিন হিসাবে। কর্জদাতা বলল, আপনি ঠিকই বলেছেন। তারপর সে নির্ধারিত সময়ে পরিশোধের শর্তে তাকে এক হাজার দীনার কর্জ দিয়ে দিল। অতঃপর সে (কর্জগ্রহীতা) সমুদ্রযাত্রা করল এবং তার (ব্যবসায়িক) প্রয়োজন সমাধা করল। তারপর সে যানবাহন খুঁজতে লাগল, যাতে নির্ধারিত সময়ে সে কর্জদাতার নিকট এসে পৌঁছতে পারে। কিন্তু কোনরূপ যানবাহন সে পেল না। তখন (অগত্যা) সে এক টুকরো কাঠ নিয়ে তা ছিদ্র করল এবং কর্জদাতার নামে একখানা চিঠি ও এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা তার মধ্যে পুরে ছিদ্রটি বন্ধ করে দিল। তারপর ঐ কাঠখন্ডটা নিয়ে সমুদ্র তীরে গিয়ে বলল, হে আল্লাহ্! তুমি তো জান, আমি অমুকের নিকট এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা কর্জ চাইলে সে আমার কাছ থেকে যামিন চেয়েছিল। আমি বলেছিলাম, আল্লাহ্ই যথেষ্ট যামিন, এতে সে রাযী হয়ে যায়। তারপর সে আমার কাছে সাক্ষী চেয়েছিল। আমি বলেছিলাম, সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট। এতে সে রাজী হয়ে যায় (এবং আমাকে ধার দেয়)। আমি তার প্রাপ্য তার নিকট পৌঁছে দেয়ার উদ্দেশ্যে যানবাহনের জন্য যথাসাধ্য চেষ্টা করলাম, কিন্তু পেলাম না। আমি ঐ এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা তোমার নিকট আমানত রাখছি। এই বলে সে কাঠখন্ডটা সমুদ্র বক্ষে নিক্ষেপ করল। তৎক্ষণাৎ তা সমুদ্রের মধ্যে নিমজ্জিত হয়ে গেল। অতঃপর লোকটি ফিরে গেল এবং নিজের শহরে যাবার জন্য যানবাহন খুঁজতে লাগল।

ওদিকে কর্জদাতা (নির্ধারিত দিনে) এ আশায় সমুদ্রতীরে গেল যে, হয়ত বা দেনাদার তার পাওনা টাকা নিয়ে এসে পড়েছে। ঘটনাক্রমে ঐ কাঠখন্ডটা তার নজরে পড়ল, যার ভিতরে স্বর্ণমুদ্রা ছিল। সে তা পরিবারের জ্বালানির জন্য বাড়ি নিয়ে গেল। যখন কাঠের টুকরাটা চিরলো তখন ঐ স্বর্ণমুদ্রা ও চিঠিটা সে পেয়ে গেল। কিছুকাল পর দেনাদার লোকটি এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা নিয়ে (পাওনাদারের নিকট) এসে হাজির হল (কারণ কাঠের টুকরোটা পৌঁছা তো সম্ভবপর ছিল না) এবং (সময় মত ঋণ পরিশোধ করতে না পারায় দুঃখ করে) বলল, আল্লাহর কসম! আমি আপনার মাল (প্রাপ্য) যথা সময়ে পৌঁছে দেয়ার উদ্দেশ্যে যানবাহনের খোঁজে সর্বদা চেষ্টা ছিলাম; কিন্তু যে জাহাজটিতে করে আমি এখন এসেছি। এটির আগে আর কোন জাহাজই পেলাম না। (তাই সময় মত আসতে পারলাম না)। কর্জদাতা বলল, আপনি কি আমার

৬৮. যখন তারা, তাদের পিতা তাদেরকে যেভাবে আদেশ করেছিলেন সেভাবেই প্রবেশ করলো, তখন আল্লাহর বিধানের বিরুদ্ধে ওটা তাদের কোন কাজে আসলো না; ইয়াকুব (عليه السلام) শুধু তাঁর মনের একটি অভিপ্রায় পূর্ণ করেছিলেন এবং তিনি অবশ্যই জ্ঞানী ছিলেন, কারণ আমি তাকে শিক্ষা দিয়েছিলাম; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

৬৯. তারা যখন ইউসুফের (عليه السلام) সামনে হাজির হলো, তখন ইউসুফ (عليه السلام) তাঁর (সহোদর) ভ্রাতাকে নিজের কাছে রাখলেন এবং বললেনঃ আমিই তোমার (সহোদর) ভাই, সুতরাং তারা যা করতো তার জন্যে দুঃখ করো না।

৭০. অতঃপর তিনি (ইউসুফ) যখন তাদের সামগ্রীর ব্যবস্থা করে দিলেন, তখন তিনি তার (সহোদর) ভাই-এর মালপত্রের মধ্যে পানপাত্র রেখে দিলেন, অতঃপর এক আহ্বায়ক চীৎকার করে বললোঃ হে যাত্রীদল তোমরা নিশ্চয়ই চোর।

৭১. তারা তাদের দিকে একটু অগ্রসর হয়ে বললোঃ তোমরা কি হারিয়েছো?

৭২. তারা বললোঃ আমরা রাজার পানপাত্র হারিয়েছি; যে ওটা এনে

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهُ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتْهَا الْعِزَّةُ إِنَّكُمْ لَسْرِقُونَ ﴿٧٠﴾

قَالُوا وَقَبِلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقَهُونَ ﴿٧١﴾

قَالُوا نَفَقْدُ صَوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ حِمْلُ

নিকট কিছু পাঠিয়েছিলেন? দেনাদার বলল, আমি তো আপনাকে বললামই যে, এর আগে আর কোন জাহাজই আমি পাইনি। সে (কর্জদাতা) বলল, আপনি কাঠের টুকরোর ভিতরে করে যা পাঠিয়েছিলেন তা আল্লাহ্ আপনার হয়ে আমাকে আদায় করে দিয়েছেন। তখন সে এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা নিয়ে প্রশান্ত চিত্তে ফিরে চলে আসল। (বুখারী, হাদীস নং ২২৯১)

দেবে, সে এক উষ্ট্র বোঝাই মাল পাবে এবং এর দায়িত্বশীল আমি।

بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٤٦﴾

৭৩. তারা বললো; আল্লাহর শপথ! তোমরা তো জান যে, আমরা এই দেশে অশান্তি সৃষ্টি করতে আসি নাই এবং আমরা চোরও নই।

قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سِرْقِينَ ﴿٤٧﴾

৭৪. তারা বললোঃ যদি তোমরা মিথ্যাবাদী হও তবে তার শাস্তি কি?

قَالُوا فَمَا جَزَاءُكَ إِن كُنْتُمْ كٰذِبِينَ ﴿٤٨﴾

৭৫. তারা বললোঃ এর শাস্তি এই যে, যার মালপত্রের মধ্যে পাত্রটি পাওয়া যাবে, সেই তার বিনিময়, এভাবে আমরা অত্যাচারীদের শাস্তি দিয়ে থাকি।

قَالُوا جَزَاءُكَ مَنْ وَّجَدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاءُكَ ۖ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِينَ ﴿٤٩﴾

৭৬. অতঃপর তিনি তার (সহোদর) ভাই-এর মালপত্র তল্লাশির পূর্বে তাদের মালপত্র তল্লাশি করতে লাগলেন, পরে তাঁর (সহোদর) ভাই-এর মালপত্রের মধ্য হতে পাত্রটি বের করলেন, এভাবে আমি ইউসুফের (عليه السلام) জন্যে কৌশল করেছিলাম, রাজার আইনে তিনি তাঁর সহোদরকে আটক করতে পারতেন না, আল্লাহ ইচ্ছা না করলে, আমি যাকে ইচ্ছা মর্যাদায় উন্নীত করি। প্রত্যেক জ্ঞানবান ব্যক্তির উপর আছেন অধিকতর জ্ঞানী সত্তা।

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ ۖ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۚ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّنْ نَّشَاءُ ۚ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

৭৭. তারা বললোঃ সে যদি চুরি করে থাকে তা হলে তার (সহোদর) ভাইও তো ইতিপূর্বে চুরি করেছিল, এতে ইউসুফ (عليه السلام) প্রকৃত ব্যাপার নিজের মনে গোপন রাখলেন এবং তাদের কাছে প্রকাশ করলেন না,

قَالُوا إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَأَسْرَهَا يُّوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَكَمْ يُبْدِيهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۖ

তিনি (মনে মনে) বললেনঃ তোমাদের অবস্থা তো আরো নিকট এবং তোমরা যা বলছো সে সম্বন্ধে আল্লাহ সবিশেষ অবগত।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٤٤﴾

৭৮. তারা বললোঃ হে আযীয! এর পিতা একজন, অতিশয় বৃদ্ধ, সুতরাং এর স্থলে আপনি আমাদের কোন একজনকে রাখুন! আমরা তো আপনাকে দেখছি মহানুভব ব্যক্তিদের একজন।

قَالُوْا يَا اَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَكَ اَبًا شَيْخًا
كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدًا مَّكَانَهُ ؕ اِنَّا نَرٰكَ
مِّنَ الْبَحْسِيْنَ ﴿٤٥﴾

৭৯. তিনি বললেনঃ যার নিকট আমরা আমাদের মাল পেয়েছি, তাকে ছাড়া অন্যকে রাখার অপরাধ হতে আমরা আল্লাহর কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করছি! এরূপ করলে আমরা অবশ্যই যালিম হয়ে যাব।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّأْخُذَ اِلَّا مَن وَّجَدْنَا
مَتَاعًا عِنْدًا ؕ اَلَا اِنَّا اِذَا ظَلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

৮০. যখন তারা তার নিকট হতে সম্পূর্ণ নিরাশ হলো, তখন তারা নির্জনে গিয়ে পরামর্শ করতে লাগলো, ওদের মধ্যে যে বয়োজ্যেষ্ঠ ছিল, সে বললোঃ তোমরা কি জানো না যে, তোমাদের পিতা তোমাদের নিকট হতে আল্লাহর নামে অঙ্গীকার নিয়েছেন এবং পূর্বেও তোমরা ইউসুফের (عليه السلام) ব্যাপারে ক্রটি করেছিলে, সুতরাং আমি কিছুতেই এই দেশ ত্যাগ করবো না। যতক্ষণ না আমার পিতা আমাকে অনুমতি দেন অথবা আল্লাহ আমার জন্যে কোন ব্যবস্থা করেন এবং তিনিই বিচারকদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ।

فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ط قَالَ
كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ
عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا
فَرَطْتُمْ فِيْ يُوْسُفَ ؕ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ
حَتّٰى يَأْذَنَ لِيْ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ؕ
وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

৮১. তোমরা তোমাদের পিতার নিকট ফিরে যাও এবং বলোঃ

اِرْجِعُوْا اِلَىٰ اٰبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يَا اَبَانَا اِنَّ اِبْنَكَ

আমাদের পিতা! আপনার পুত্র চুরি করেছে এবং আমরা যা জানি তারই প্রত্যক্ষ বিবরণ দিলাম, অদৃশ্যের ব্যাপারে আমরা অবহিত ছিলাম না।

৮২. যে জনপদে আমরা ছিলাম ওর অধিবাসীদেরকে জিজ্ঞেস করুন এবং যে যাত্রীদের সাথে আমরা এসেছিলাম তাদেরকেও, আমরা অবশ্যই সত্যবাদী।

৮৩. ইয়াকুব (عليه السلام) বললেনঃ না, তোমাদের মন তোমাদের জন্যে একটি কাহিনী সাজিয়ে দিয়েছে; সুতরাং পূর্ণ ধৈর্যই শ্রেয়; হয়তো আল্লাহ ওদেরকে এক সাথে আমার কাছে এনে দিবেন, তিনি সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

৮৪. তিনি ওদের দিক থেকে মুখ ফিরিয়ে নিলেন এবং বললেনঃ আফসোস ইউসুফের (عليه السلام) জন্যে, শোকে তার চক্ষুদ্বয় সাদা হয়ে গিয়েছিল এবং তিনি ছিলেন অসহনীয় মনস্তাপে ক্লিষ্ট।

৮৫. তারা বললোঃ আল্লাহর শপথ! আপনি তো ইউসুফের (عليه السلام) কথা ভুলবেন না যতক্ষণ না আপনি মুমূর্ষু হবেন অথবা মৃত্যুবরণ করবেন।

৮৬. তিনি বললেনঃ আমি আমার অসহনীয় বেদনা ও আমার দুঃখ শুধু আল্লাহর নিকট নিবেদন করছি এবং আমি আল্লাহর নিকট হতে জানি যা তোমরা জান না।

৮৭. হে আমার পুত্রগণ! তোমরা যাও, ইউসুফ (عليه السلام) ও তাঁর

سَرَقَ، وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمْنَا وَمَا كُنَّا
لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ﴿٨٢﴾

وَسَأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي
أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِنَّا لَصَدُوقُونَ ﴿٨٣﴾

قَالَ بَلْ سَأَلْتُ لَكُمْ أَنْفُسَكُمْ أَمْ رَاطُ فَصَبْرٌ
جَبِيلٌ طَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَبِيعًا ط
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٤﴾

وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسْفَى عَلَى يُوسُفَ
وَأَبْصَتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَوَّيْمٌ ﴿٨٥﴾

قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَوْا تَذَكَّرُ يُوسُفَ حَتَّى تَكُونَ
حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٦﴾

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٧﴾

يَبْنِي إِذْ هَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ

সহোদরের অনুসন্ধান কর এবং আল্লাহর করুণা হতে তোমরা নিরাশ হয়ো না, কারণ কাফিরগণ ব্যতীত কেউই আল্লাহর করুণা হতে নিরাশ হয় না।

৮৮. যখন তারা তাঁর নিকট উপস্থিত হলো তখন বললোঃ হে আযীয! আমরা ও আমাদের পরিবার-পরিজন বিপন্ন হয়ে পড়েছি এবং আমরা তুচ্ছ পণ্য নিয়ে এসেছি; আপনি আমাদের রসদ পূর্ণ মাত্রায় দিন এবং আমাদেরকে দান করুন; আল্লাহ দাতাদেরকে পুরস্কৃত করে থাকেন।

৮৯. তিনি বললেনঃ তোমরা কি জান, তোমরা ইউসুফ (عليه السلام) ও তার (সহোদর) ভাইয়ের সাথে কিরূপ আচরণ করেছিলে, যখন তোমরা ছিলে অজ্ঞ?

৯০. তারা বললোঃ তবে কি তুমিই ইউসুফ (عليه السلام)? তিনি বললেনঃ আমিই ইউসুফ (عليه السلام) এবং এই আমার (সহোদর) আল্লাহ আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, যে ব্যক্তি মুত্তাকী ও ধৈর্যশীল, আল্লাহ সেইরূপ সৎকর্মপরায়ণদের শ্রমফল নষ্ট করেন না।

৯১. তারা বললোঃ আল্লাহর শপথ! আল্লাহ নিশ্চয় তোমাকে আমাদের উপর প্রাধান্য দিয়েছেন এবং আমরা নিশ্চয় অপরাধী ছিলাম।

৯২. তিনি বললেনঃ আজ তোমাদের বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ নেই, আল্লাহ

وَلَا تَأْتِسُوا مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْتِسُ
مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٨﴾

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا
وَأَهْلَنَا الضَّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُزْجَبَةٍ فَأَوْفِ
لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي
الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٩﴾

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ
إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٩٠﴾

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّا نَحْنُ الْكَافِرُونَ
وَهَذَا أَخِي نُزِّلَ مِنْ اللَّهِ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ
يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٩١﴾

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَشْرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا
لَخَطِيئِينَ ﴿٩٢﴾

قَالَ لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ز

তোমাদেরকে ক্ষমা করুন এবং তিনি
দয়ালুদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ দয়ালু।^{১৩}

وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ١٣

৯৩. তোমরা আমার এ জামাটি নিয়ে
যাও এবং এটা আমার পিতার
মুখমন্ডলের উপর রেখো, তিনি দৃষ্টি
শক্তি ফিরে পাবেন, আর তোমরা
তোমাদের পরিবারের সকলকেই
আমার নিকট নিয়ে এসো।

إِذْ هَبُوا بَقِيصِي هَذَا فَالْقُوَّةَ عَلَى وَجْهِ أَبِي يَأْتِ
بَصِيرًا ١٤ وَأَتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ١٥

৯৪. অতঃপর যাত্রীদল যখন (মিশর
হতে) বের হয়ে পড়লো তখন তাদের
পিতা (কেনান থেকে নিকটস্থদেরকে)
বললেনঃ তোমরা যদি আমাকে
দিশেহারা মনে না কর তবে বলিঃ
আমি ইউসুফের (عليه السلام) ঘ্রাণ
পাচ্ছি।

وَلَبَّأْ فَصَلَّتِ الْعَيْرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنَِّّي لَأَجِدُ
رِيحَ يَوْسُفَ لَوْلَا أَن تَفْقَدُون ١٤

৯৫. তারা (ঘরের লোকেরা) বললোঃ
আল্লাহর শপথ! আপনি তো
আপনার পূর্ব বিভ্রান্তিতেই
রয়েছেন।

قَالُوا تالله إنك لفي ضلالتك القديم ١٥

৯৬. অতঃপর যখন সুসংবাদ দাতা
উপস্থিত হলো এবং তাঁর মুখমন্ডলের
উপর জামাটি রাখলো তখন তিনি
দৃষ্টিশক্তি ফিরে পেলেন, তিনি
বললেনঃ আমি কি তোমাদেরকে বলি
নাই যে, আমি আল্লাহর নিকট হতে
জানি, যা তোমরা জান না।

فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ الْقَمَةَ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّتْ
بَصِيرًا ١٦ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ ١٧ إِنَّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ
مَا لَا تَعْلَمُونَ ١٨

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, যেদিন আল্লাহ্ রহমতকে সৃষ্টি করেছেন, সেদিন তাকে একশত ভাগে বিভক্ত করেছেন। তার মধ্যে নিরানব্বই ভাগই তাঁর নিকট রেখে দিয়েছেন। আর বাকী এক ভাগ তাঁর সমস্ত সৃষ্টিজীবকে দিয়েছেন। যদি কোন কাফের আল্লাহর নিকট যে রহমত আছে, তার পরিমাণ সম্পর্কে জানতো তা'হলে সে জান্নাতের ব্যাপারে নিরাশ হতো না। (অপরপক্ষে) কোন মু'মিন যদি আল্লাহর কাছে যে শান্তি রয়েছে তার পরিমাণ সম্পর্কে জানতো, তবে (দোষখের) আশুন থেকে নিজেকে নিরাপদ মনে করতো না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৬৯)

৯৭. তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমাদের পাপের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করুন; আমরা তো অপরাধী।

خُطِبِينَ ﴿٩٧﴾

৯৮. তিনি বললেনঃ আমি আমার প্রতিপালকের নিকট তোমাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবো, তিনি তো অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ
الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

৯৯. অতঃপর তারা যখন ইউসুফের (عليه السلام) নিকট উপস্থিত হলো, তখন তিনি তাঁর পিতা-মাতাকে (সসম্মানে) তাঁর পাশে বসালেন এবং বললেনঃ আপনারা আল্লাহর ইচ্ছায় নিরাপদে মিসরে প্রবেশ করুন!

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ آبَاؤُهُ
وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾

১০০. আর ইউসুফ (عليه السلام) তাঁর পিতা-মাতাকে উচ্চাসনে বসালেন এবং তারা সবাই তার সামনে সিজদায় লুটিয়ে পড়লো, তিনি বললেনঃ হে আমার পিতা! এটাই আমার পূর্বকার স্বপ্নের ব্যাখ্যা আমার প্রতিপালক ওটা সত্যে পরিণত করেছেন এবং তিনি আমাকে কারাগার হতে মুক্ত করে এবং শয়তান আমার ও আমার ভ্রাতাদের সম্পর্ক নষ্ট করার পরও আপনাদেরকে মরু অঞ্চল হতে এখানে এনে দিয়ে আমার প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, আমার প্রতিপালক যা ইচ্ছা তা নিপুণতার সাথে করে থাকেন, তিনি তো সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

وَرَفَعَ آبَاؤُهُ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا
وَقَالَ يَا بَتِ هَذَا تَأْوِيلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ
رَقَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ
أَخْرَجَنِي مِنَ السَّبْحِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ
مَنْ بَعْدَ أَنْ نَزَعَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ
إِخْوَتِي إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ
الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٠٠﴾

১০১. হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে রাজ্য দান করেছেন এবং স্বপ্নের ব্যাখ্যা শিক্ষা দিয়েছেন; হে

رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي
مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ

আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা!
আপনিই ইহলোক ও পরলোকে
আমার অভিভাবক, আপনি আমাকে
মুসলিম হিসেবে মৃত্যু দান করুন,
এবং আমাকে সৎকর্ম পরায়ণদের
অন্তর্ভুক্ত করুন।

১০২. এটা অদৃশ্য ঘটনাবলীর
অন্যতম তোমাকে আমি ওহী দ্বারা
অবহিত করছি, মড়যন্ত্রকালে যখন
তারা মতৈক্যে পৌছেছিল তখন তুমি
তাদের ওখানে উপস্থিত ছিলে না।

১০৩. তুমি যতই চাও না কেন,
অধিকাংশ লোকই বিশ্বাস করবার
নয়।

১০৪. আর তুমি তো তাদের কাছে
কোন পারিশ্রমিক দাবী করছো না,
এটা তো বিশ্বজগতের জন্যে উপদেশ
ছাড়া কিছু নয়।

১০৫. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে
অনেক নিদর্শন রয়েছে, তারা এ
সমস্ত প্রত্যক্ষ করে; কিন্তু তারা
এগুলো থেকে বিমুখতা অবলম্বন
করে।

১০৬. তাদের অধিকাংশই আল্লাহকে
বিশ্বাস করে; কিন্তু সাথে সাথে
শিরকও করে।

১০৭. তবে কি তারা আল্লাহর
সর্বগ্রাসী শাস্তি হতে অথবা তাদের
অজ্ঞাতসারে কিয়ামতের আকস্মিক
উপস্থিতি হতে নিরাপদ?

১০৮. তুমি বলঃ এটাই আমার পথ,
আল্লাহর প্রতি মানুষকে আমি আহ্বান

وَالْأَرْضِ تَأْتَتْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ
تَوْفَنِي مُسْلِمًا وَالْحَقِيقِي بِاطْلِحِينِ ﴿١٠٢﴾

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ﴿١٠٣﴾

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٤﴾

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا
ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٥﴾

وَكَآيُنُ مِنْ آيَةِ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يَسُرُّونَ
عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٦﴾

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٧﴾

أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَدَابِ اللَّهِ
أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٨﴾

قُلْ هٰذِهِ سَبِيلِي ۖ أَدْعُو إِلَى اللَّهِ ۖ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ

করি সজ্ঞানে, আমি এবং আমার অনুসারীগণও, আল্লাহ মহান পবিত্র। আর আমি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত নই।

১০৯. তোমার পূর্বেও জনপদ-বাসীদের মধ্য হতে পুরুষদেরকেই পাঠিয়েছিলাম, যাদের নিকট ওহী পাঠাতাম; তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে নাই এবং তাদের পূর্ববর্তীদের কি পরিণাম হয়েছিল তা কি দেখে নাই? তারা মুত্তাকী তাদের জন্যে পরলোকই শ্রেয়; তোমরা কি বুঝ না?

১১০. অবশেষে যখন রাসূলগণ নিরাশ হলেন এবং লোকে ভাবলো যে, রাসূলদেরকে মিথ্যা সাব্যস্ত করা হয়েছে। তখন তাদের কাছে আমার সাহায্য আসলো, এভাবে আমি যাকে ইচ্ছা উদ্ধার করি, আর অপরাধী সম্প্রদায় হতে আমার শাস্তি রদ করা হয় না।

১১১. তাদের বৃত্তান্তে বোধশক্তি সম্পন্ন ব্যক্তিদের জন্যে আছে শিক্ষা, এটা এমন বাণী যা মিথ্যা রচনা নয়; কিন্তু মু'মিনদের জন্যে এটা পূর্ব গ্রন্থে যা আছে তার সমর্থন এবং সমস্ত কিছুর বিশদ বিবরণ, হিদায়াত ও রহমত।

أَنَا وَمَنْ اتَّبَعَنِي ط وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٩﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى ط أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط وَلَكِنَّ الْأَخْرَجَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آتَقَوْا ط أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١١٠﴾

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مِنْ نَأْسِ ط وَلَا يَرُدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١١﴾

لَقَدْ كَانَ فِي قَصصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ط مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَى وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١٢﴾

সূরাঃ রাদ, মাদানী

(আয়াতঃ ৪৩, রুকু'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. আলিফ-লাম-মীম-রা; এগুলি কুরআনের আয়াত; যা তোমার প্রতিপালক হতে তোমার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তা-ই সত্য; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এতে বিশ্বাস করে না।

২. আল্লাহই উর্ধ্বদেশে আকাশমন্ডলী স্থাপন করেছেন স্তম্ভ ব্যতীত, তোমরা এটা দেখছো; অতঃপর তিনি আরশে সমুন্নীত হলেন এবং সূর্য ও চন্দ্রকে নিয়মানুবর্তী করলেন; প্রত্যেকে নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত আবর্তন করে, তিনি সকল বিষয় নিয়ন্ত্রণ করেন এবং নিদর্শনসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করেন, যাতে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের সাথে সাক্ষাৎ সম্বন্ধে নিশ্চিত বিশ্বাস করতে পার।

৩. তিনিই ভূতলকে বিস্তৃত করেছেন এবং ওতে পর্বত ও নদী সৃষ্টি করেছেন এবং প্রত্যেক প্রকারের ফল সৃষ্টি করেছেন জোড়ায় জোড়ায়; তিনি দিবসকে রাত্রি দ্বারা আচ্ছাদিত করেন; এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে।

৪. পৃথিবীতে রয়েছে পরস্পর সংলগ্ন ভূ-খন্ড; ওতে আছে আগুর-কানন, শস্যক্ষেত্র, একাধিক শীষ বিশিষ্ট

سُورَةُ الرَّعْدِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۴۳ رُكُوعَاتُهَا ۶

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْمَرَاتِ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَالَّذِي أُنزِلَ
إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يُؤْمِنُونَ ①

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ
اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ط
كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ط يُدَبِّرُ الْأُمْرَ يُفَصِّلُ
الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ①

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ
وَأَنْهَارًا ط وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجِينَ
إِثْنَيْنِ يُغِشِي الْبَيْلَ النَّهَارَ ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ②

وَفِي الْأَرْضِ قَطْعٌ مُّتَبَجِّرَاتٍ وَجَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ
وَوَرْعٍ وَنَخِيلٍ صِنَوَانٍ وَغَيْرِ صِنَوَانٍ يُسْقَى بِسَاءٍ

অথবা এক শীষ বিশিষ্ট খেজুর বৃক্ষ, সিঞ্চিত একই পানিতে এবং স্বাদে ওগুলির কতককে কতকের উপর আমি শ্রেষ্ঠত্ব দিয়ে থাকি, অবশ্যই বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে এতে রয়েছে নিদর্শন।

৫. যদি তুমি বিস্মিত হও, তবে বিস্ময়ের বিষয় তাদের কথাঃ (মৃত্যুর পর) মাটিতে পরিণত হওয়ার পরও কি আমরা নতুন জীবন লাভ করবো? ওরাই ওদের প্রতিপালককে অস্বীকার করে এবং ওদেরই গলদেশে থাকবে লৌহ শৃঙ্খল, ওরাই জাহান্নামী এবং সেখানে ওরা চিরস্থায়ীভাবে অবস্থানকারী।

৬. কোন কল্যাণের পূর্বে তারা তোমাকে শাস্তি ত্বরান্বিত করতে বলে, যদিও তাদের পূর্বে এর বহু দৃষ্টান্ত গত হয়েছে; মানুষের যুলুম-অত্যাচার সত্ত্বেও তোমার প্রতিপালক তো মানুষের প্রতি ক্ষমাশীল এবং তোমার প্রতিপালক তো শাস্তি দানেও কঠোর।

৭. যারা কুফরী করেছে তারা বলেঃ তার প্রতিপালকের নিকট হতে তার নিকট কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয়না কেন? (হে নবী ﷺ) (কথা এই যে,) তুমি তো শুধুমাত্র ভয় প্রদর্শনকারী এবং প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্যেই পথ প্রদর্শক রয়েছে।

৮. প্রত্যেক নারী যা গর্ভে ধারণ করে এবং জরায়ুতে যা কিছু কমে ও বাড়ে আল্লাহ তা জানেন এবং তাঁর বিধানে

وَاحِدٍ تَدْنُ وَنُقِضَلُ بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ط
إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ①

وَإِنْ تَعْجَبَ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَإِذَا كُنَّا تُرَابًا
ءَأَنَّا لِنُفِى خَلْقٍ جَدِيدٍ ؕ أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ ؕ وَأُولَئِكَ الْأَعْلَىٰ ۗ فِي أَعْنَاقِهِمْ
وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑤

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَّتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمُثَلَّتُ ط وَإِنَّ رَبَّكَ
لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ ؕ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ①

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن
رَّبِّهِ ط إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ⑤

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحِيلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا يَغِيصُ
الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ط وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ

প্রত্যেক বস্তুরই এক নির্দিষ্ট পরিমাণ আছে।

بِقَدَرٍ ⑤

৯. যা অদৃশ্য ও যা দৃশ্যমান তিনি তা অবগত; তিনি মহান, সর্বোচ্চ মর্যাদাবান।

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ ⑥

১০. তোমাদের মধ্যে যে কথা গোপন রাখে এবং যে তা প্রকাশ করে, রাত্রে যে আত্মগোপন করে এবং দিবসে যে প্রকাশ্যে বিচরণ করে, তারা সমভাবেই আল্লাহর জ্ঞান গোচর (রয়েছে)।

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنُ اسَرَ الْقَوْلُ وَمَن جَهَرَ بِهِ
وَمَن هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ⑦

১১. মানুষের জন্যে তার সামনে ও পেছনে একের পর এক প্রহরী থাকে; ওরা আল্লাহর আদেশে তার রক্ষণাবেক্ষণ করে, নিশ্চয় আল্লাহ কোন সম্প্রদায়ের অবস্থা পরিবর্তন করেন না যতক্ষণ না তারা নিজেদের অবস্থা নিজেরা পরিবর্তন করে, কোন সম্প্রদায়ের সম্পর্কে যদি আল্লাহ অশুভ কিছু ইচ্ছা করেন তবে তা রদ করবার কেউ নেই এবং তিনি ছাড়া তাদের কোন অভিভাবক নেই।

لَهُ مَعْقِبَاتٌ مِّن بَيْن يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ
يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ
مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ وَإِذَا أَرَادَ
اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۗ وَمَا لَهُمْ مِّن
دُونِهِ مِّنْ وَّالٍ ⑧

১২. তিনিই তোমাদেরকে দেখান বিজলী যা ভয় ও ভরসা সঞ্চয় করে এবং তিনিই সৃষ্টি করেন ঘন মেঘ।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْقًا وَطَمَعًا وَيُنْزِلُ
السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑨

১৩. বজ্র নির্ঘোষ ও ফেরেশতাগণ স্বভয়ে তাঁর সপ্রশংসা মহিমা ও পবিত্রতা ঘোষণা করে এবং তিনি বজ্রপাত করেন এবং যাকে ইচ্ছা ওটা দ্বারা আঘাত করেন; তথাপি ওরা আল্লাহ সম্বন্ধে বিতন্ডা করে; যদিও তিনি মহাশক্তিশালী।

وَيُرْسِلُ الرِّعْدَ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةَ مِنْ خِيفَتِهِ ۗ
وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَاءُ وَهُمْ
يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ۗ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِمَالِ ⑩

১৪. সত্যের আহ্বান তাঁরই; যারা তাঁকে ছাড়া আহ্বান করে অপরকে, তাদেরকে তারা কোনই সাড়া দেয় না; তাদের দৃষ্টান্ত সেই ব্যক্তির মত, যে তার মুখে পানি পৌঁছবে এই আশায় তার হস্তদ্বয় প্রসারিত করে এমন পানির দিকে যা তার মুখে পৌঁছবার নয়, কাফিরদের আহ্বান নিষ্ফল।

১৫. আল্লাহ প্রতি সিজদাবনত হয় আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে, ইচ্ছায় অথবা অনিচ্ছায় এবং তাদের ছায়াগুলিও সকাল ও সন্ধ্যায়।

১৬. বলঃ কে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর প্রতিপালক? বলঃ (তিনি) আল্লাহ; বলঃ তবে কি তোমরা অভিভাবকরূপে গ্রহণ করছো আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে, যারা নিজেদের লাভ বা ক্ষতি সাধনে সক্ষম নয়? বলঃ অক্ষ ও চক্ষুস্থান কি সমান অথবা অন্ধকার ও আলো কি এক? তবে কি তারা আল্লাহর এমন শরীক স্থাপন করেছে যারা তাঁর সৃষ্টির মত সৃষ্টি করেছে যে কারণে সৃষ্টি তাদের মধ্যে বিভ্রান্তি ঘটিয়েছে? বলঃ আল্লাহ সকল বস্তুর স্রষ্টা; তিনি এক, পরাক্রমশালী।

১৭. তিনি আকাশ হতে বৃষ্টি বর্ষণ করেন, ফলে উপত্যকাসমূহ ওদের পরিমাণ অনুযায়ী প্লাবিত হয় এবং প্লাবন তার উপরিস্থিত ফেনা বহন করে, এভাবে ফেনা উপরিভাগে আসে যখন অলংকার অথবা

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفِيٍّ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَهُ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿۱۷﴾

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلْمُهُمُ بِالْغُدُوِّ وَالْأَصَالِ ﴿۱۵﴾

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ يَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَالِقُ عَلَيْهِمْ قُلْ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أوديةً بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حَلِيَّةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلَهُ

তৈজসপত্র নির্মাণ উদ্দেশ্যে কিছু অগ্নিতে উত্তপ্ত করা হয়; এভাবে আল্লাহ সত্য ও অসত্যের দৃষ্টান্ত দিয়ে থাকেন; যা আবর্জনা তা ফেলে দেয়া হয় এবং যা মানুষের উপকারে আসে তা জমিতে থেকে যায়, এভাবেই আল্লাহ উপমা দিয়ে থাকেন।

১৮. মঙ্গল তাদের যারা তাদের প্রতিপালকের আহ্বানে সাড়া দেয় এবং যারা তাঁর ডাকে সাড়া দেয় না, তাদের যদি পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা সমস্তই থাকতো এবং তার সাথে সমপরিমাণ আরো থাকতো তবে অবশ্যই তারা মুক্তিপণ স্বরূপ তা প্রদান করতো; তাদের হিসাব হবে কঠোর এবং জাহান্নাম হবে তাদের আবাস, ওটা কত নিকৃষ্ট আশ্রয়স্থল।

১৯. তোমার প্রতিপালক হতে তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা যে ব্যক্তি সত্য বলে জানে সে আর অন্ধ কি সমান? উপদেশ গ্রহণ করে শুধু বিবেক শক্তিসম্পন্ন ব্যক্তিরাই।

২০. যারা আল্লাহকে প্রদত্ত অঙ্গীকার রক্ষা করে এবং প্রতিজ্ঞা ভঙ্গ করে না।

২১. আর আল্লাহ যে সম্পর্ক অক্ষুন্ন রাখতে আদেশ করেছেন যারা তা অক্ষুন্ন রাখে, ভয় করে তাদের প্রতিপালককে এবং ভয় করে কঠোর হিসাবকে।

২২. আর যারা তাদের প্রতিপালকের সন্তুষ্টি লাভের জন্যে ধৈর্যধারণ করে, নামায সুপ্রতিষ্ঠিত করে এবং আমি

كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۗ فَأَمَّا الزُّبَدُ
فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۗ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ
فِي الْأَرْضِ ۗ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝١٨

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْحُسْنَىٰ ۗ وَالَّذِينَ
لَمْ يُسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فُتَدُوا بِهِ ۗ وَلَوْلِكَ لَهُمْ
سُوءُ الْحِسَابِ ۗ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَبِئْسَ
الْإِهَادُ ۝١٨

أَمَّنْ يَعْلَمُ آيَاتِنَا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ مِنَ رَبِّكَ الْحَقَّ
كَمَنْ هُوَ أَعْلَىٰ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝١٩
الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ ۗ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝٢٠

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ
وَيَخْشُونَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝٢١

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءً وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ سِرًّا وَعَلَانِيَةً

তাদেরকে যে রুযী দিয়েছি তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে আর যারা ভাল দ্বারা মন্দ দূরীভূত করে, তাদের জন্যে শুভ পরিণাম।

২৩. স্থায়ী জান্নাত, তাতে তারা প্রবেশ করবে এবং তাদের পিতা-মাতা, পতি-পত্নী ও সন্তান-সন্ততিদের মধ্যে যারা সৎকর্ম করেছে তারাও এবং ফেরেশতাগণ তাদের কাছে হাজির হবে প্রত্যেক দরজা দিয়ে।

২৪. (এবং বলবেন) তোমরা ধৈর্যধারণ করেছো বলে তোমাদের প্রতি শান্তি! কতই না ভাল এই পরিণাম।

২৫. যারা আল্লাহর সাথে দৃঢ় অঙ্গীকারে আবদ্ধ হওয়ার পর তা ভঙ্গ করে, যে সম্পর্ক অক্ষুণ্ণ রাখতে আল্লাহ আদেশ করেছেন, তা ছিন্ন করে এবং পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করে বেড়ায়, তাদের জন্যে আছে অভিসম্পাত এবং তাদের জন্যে আছে মন্দ আবাস।

২৬. আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছা তার রুযী বর্ধিত করেন এবং সংকুচিত করেন; কিন্তু তারা পার্থিব জীবন নিয়েই উল্লসিত, অথচ ইহজীবন তো পরজীবনের তুলনায় ক্ষণস্থায়ী ভোগ মাত্র।

২৭. যারা কুফরী করেছে, তারা বলেঃ তার প্রতিপালকের নিকট হতে তার নিকট কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয় না

وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أَوْلِيَاءَ لَهُمْ
عُقُبَى الدَّارِ ﴿٢٣﴾

جَنَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ
وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ
مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٤﴾

سَلِّمْ عَلَيْهِمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٥﴾

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ
وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ
وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٦﴾

اللَّهُ يَسْطُرُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٧﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي

কেন? তুমি বলঃ আল্লাহ যাকে ইচ্ছা বিজান্ত করেন এবং তিনি তাদেরকেই তাঁর পথ দেখান যারা তাঁর অভিমুখী।

২৮. ওরা যারা ঈমান আনে এবং আল্লাহর যিকিরে তাদের অন্তর প্রশান্ত হয়; জেনে রাখো, আল্লাহর জিকিরেই অন্তর প্রশান্ত হয়।

২৯. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, কল্যাণ ও শুভ পরিণাম তাদেরই।

৩০. এইভাবে আমি তোমাকে পাঠিয়েছি এমন এক জাতির নিকট যার পূর্বে বহুজাতি গত হয়েছে, তাদের নিকট আবৃত্তি করার জন্যে, যা আমি তোমার প্রতি প্রত্যাদেশ করেছি; তথাপি তারা দয়াময়কে অস্বীকার করে; তুমি বল তিনিই আমার প্রতিপালক; তিনি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বুদ নেই, তাঁরই উপর আমি নির্ভর করি এবং আমার প্রত্যাবর্তন তাঁরই কাছে।

إِلَيْهِ مِنْ آتَابٍ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ ۙ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحَسَنُ مَا يَرْجُونَ ۝

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ ۙ أَوْحِينَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ ۙ بِالرَّحْمٰنِ طُغْيٰنٌ هُوَ رَبِّي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۙ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ۝

১। (ক) আবু মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, যে ব্যক্তি তার প্রভুর (স্মরণ) যিকির করে আর যে করে না তাদের উদাহরণ হল জীবিত এবং মৃত ব্যক্তির ন্যায়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৭)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নিচয়ই রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন: যে ব্যক্তি প্রতিদিন একশতবার (সুবহানাল্লাহি বিহামদিহি) এই দু'আটি পাঠ করবে, তার গুনাহ যদি সমুদ্রের ফেনাতুল্যও হয় তবুও আল্লাহ দয়া করে তা ক্ষমা করে দিবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৫)

(গ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন: যে, ব্যক্তি দিনে একশবার এটা পড়ে: “লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু ওয়াহ্দাহু লা-শারীকালাহু, লাহ্লামুলকু ওয়ালাহু হামদু ওয়াছুয়া ‘আলা কুল্লি শাইয়িয়ান ক্বাদির।” অর্থ: “একমাত্র আল্লাহ ছাড়া আর কোন সত্য ইলাহ নেই; তাঁর কোন শরীক বা অংশীদারও নেই, সার্বভৌমত্ব ও সকল প্রকার প্রশংসা একমাত্র তাঁরই আর তিনি সমস্ত বস্তুর ওপরে সর্বশক্তিমান।” তবে “সে দশটা গোলাম আযাদ করার সমান সওয়াব পায়। একশটা নেকী তার জন্য লেখা হয় এবং তার একশটা গুনাহ মিটিয়ে দেয়া হয়। ওই দিন সন্ধ্যা হওয়া পর্যন্ত শয়তান থেকে তার রক্ষা পাওয়ার ব্যবস্থা হয় এবং তার চেয়ে উত্তম আর কেউ হবে না। তবে যে ব্যক্তি এটা তার চেয়ে বেশি পড়ে (সে হতে পারবে)। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৩)

৩১. যদি কোন কুরআন এমন হতো যার দ্বারা পর্বতকে গতিশীল করা যেতো অথবা পৃথিবীকে বিদীর্ণ করা যেতো অথবা মৃতের সাথে কথা বলা যেতো, (তবুও তারা তাতে বিশ্বাস করতো না;) কিন্তু সমস্ত বিষয়ই আল্লাহর ইখতিয়ারভুক্ত; তবে কি যারা ঈমান এনেছে তারা নিরাশ হয়ে পড়েনি যে, আল্লাহ ইচ্ছা করলে নিশ্চয় সকলকে সৎপথে পরিচালিত করতে পারতেন; যারা কুফরী করেছে তাদের কর্মফলের জন্যে তাদের বিপর্যয় ঘটতেই থাকবে, অথবা বিপর্যয় তাদের আশে পাশে আপতিত হতেই থাকবে, যতক্ষণ পর্যন্ত না আল্লাহর প্রতিশ্রুতি ঘটবে, নিশ্চয় আল্লাহ প্রতিশ্রুতির ব্যতিক্রম করেন না।

৩২. তোমার পূর্বেও অনেক রাসূলের সাথে ঠাট্টা বিদ্রূপ করা হয়েছে, যারা কুফরী করেছে তাদেরকে কিছু অবকাশ দিয়েছিলাম, তারপর তাদেরকে পাকড়াও করেছিলাম; কেমন ছিল আমার পাকড়াও!

৩৩. তবে কি প্রত্যেক মানুষ যা করে তার যিনি পর্যবেক্ষক তিনি এদের অক্ষম উপাস্যগুলির মত? (আল্লাহর পর্যবেক্ষণ সত্ত্বেও) অথচ তারা আল্লাহর বহু শরীক করেছে, তুমি বলঃ তোমরা তাদের পরিচয় দাও; তোমরা কি পৃথিবীর মধ্যে অথবা প্রকাশ্য বর্ণনা হতে এমন কিছুর সংবাদ তাঁকে দিতে চাও যা তিনি

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَةٌ بِهِ الْمَوْتَىٰ ط بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ط أَلَمْ يَأْتِئِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ط وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدَ اللَّهِ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ﴿٣١﴾

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَامَلَيْتُمْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ ط قُلْ سُبُوهُمْ ط أَمْ تُتَّبِعُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ يَبْظَاهِرُونَ الْقَوْلَ ط بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَصَدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ط وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

জানেন না? না, বরং কাফিরদের প্রতারণা তাদের নিকট শোভন প্রতীয়মান হয় এবং তারা সৎপথ হতে নিবৃত্ত হয়; আল্লাহ যাকে বিভ্রান্ত করেন তার কোন পথ প্রদর্শক নেই।

৩৪. তাদের জন্যে পার্থিব জীবনে আছে শাস্তি এবং পরকালের শাস্তি তো আরো কঠোর এবং আল্লাহর শাস্তি হতে রক্ষা করার তাদের কেউ নেই।

৩৫. মুত্তাকীদেরকে যে জান্নাতের প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে, তার উপমা এইরূপঃ ওর পাদদেশে নদী প্রবাহিত, ওর ফলসমূহ ও ছায়া চিরস্থায়ী; যারা মুত্তাকী এটা তাদের কর্মফল এবং কাফিরদের কর্মফল জাহান্নাম।

৩৬. আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছি তারা যা তোমার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তাতে আনন্দ পায়, তবে কোন কোন দল ওর কতক অংশ অস্বীকার করে; তুমি বলঃ আমি তো আল্লাহরই ইবাদত করতে ও তাঁর কোন শরীক না করতে আদিষ্ট হয়েছে; আমি তাঁরই প্রতি আহ্বান করি এবং তাঁরই নিকট আমার প্রত্যাবর্তন।

৩৭. আর এভাবে আমি ওটা (কুরআন) অবতীর্ণ করেছি এক নির্দেশ, আরবী ভাষায়; জ্ঞান প্রাপ্তির পর তুমি যদি তাদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ কর তবে আল্লাহর বিরুদ্ধে তোমার কোন অভিভাবক ও রক্ষক থাকবে না।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَعَذَابٌ الْآخِرَةِ
أَشَقُّ ۗ وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ ط تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ط كُلُّهَا دَائِمٌ وَّظِلُّهَا ط تِلْكَ عِوَابُ
الَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ وَّعِوَابُ الْكَافِرِينَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ ط قُلْ
إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ط
إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابٍ ﴿٣٦﴾

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ط وَلَئِنْ أَتَيْتَ
أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ
مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّالِيٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

৩৮. তোমার পূর্বেও আমি অনেক রাসূল প্রেরণ করেছিলাম এবং তাদেরকে স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততি দিয়েছিলাম; আল্লাহর অনুমতি ছাড়া কোন নিদর্শন উপস্থিত করা কোন রাসূলের কাজ নয়; প্রত্যেক বিষয়ের নির্ধারিত কাল লিপিবদ্ধ।

৩৯. আল্লাহ যা ইচ্ছা তা নিশ্চিহ্ন করেন এবং প্রতিষ্ঠিত রাখেন এবং তাঁরই নিকট আছে মূল গ্রন্থ।

৪০. আমি তাদেরকে যে শাস্তির কথা বলি, তার কিছু যদি তোমাকে দেখিয়ে দিই অথবা যদি এর পূর্বে তোমার মৃত্যু ঘটিয়েই দিই (সর্বাবস্থায়) তোমার কর্তব্য তো শুধু প্রচার করা, আর হিসাব-নিকাশ তো আমার কাজ।

৪১. তারা কি দেখে না যে, আমি তাদের যমীনকে (দেশকে) চারদিক হতে সংকুচিত করে আনছি? আল্লাহ আদেশ করেন, তাঁর আদেশ রদ করার কেউ নেই এবং তিনি হিসাব গ্রহণে তৎপর।

৪২. তাদের পূর্বে যারা ছিল তারাও চক্রান্ত করেছিল, কিন্তু সমস্ত চক্রান্ত আল্লাহর ইখতিয়ারে; প্রত্যেক ব্যক্তি যা করে তা তিনি জানেন এবং কাফিররা শীঘ্রই জানবে শুভ পরিণাম কাদের জন্যে।

৪৩. যারা কুফরী করেছে তারা বলেঃ তুমি আল্লাহর প্রেরিত নও; তুমি বলঃ আল্লাহ এবং যাদের নিকট কিতাবের জ্ঞান আছে, (যেমন আব্দুল্লাহ ইবনে সালাম) তারা আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে যথেষ্ট।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ط وَمَا كَانَ لِرُسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ
بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ط لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾

يَسْخُورُوا اللَّهَ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ط وَعِنْدَهُ
أُمُّ الْكِتَابِ ﴿٣٩﴾

وَإِنْ مَا تُرِيدُكَ بَعْضَ الَّذِي نَعُدُّهُ
أَوْ تَوَقَّيْتِكَ فَأِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا
الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ
أَطْرَافِهَا ط وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ط
وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ
جَيْعًا ط يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ط وَسَيَعْلَمُ
الْكُفْرَ لِمَن عَقَّبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ط قُلْ كَفَى
بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ
عِلْمُ الْكِتَابِ ﴿٤٣﴾

সূরাঃ ইবরাহীম, মাঈী

(আয়াতঃ ৫২, রুকু'ঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. আলিফ-লাম-রা; এই কিতাব, এটা আমি তোমার প্রতি অবতীর্ণ করেছি যাতে তুমি মানব জাতিকে তাদের প্রতিপালকের নির্দেশক্রমে বের করে আনতে পার অন্ধকার হতে আলোকের দিকে, তাঁর পথে, যিনি পরাক্রমশালী, সর্বপ্রশংসিত।

২. আল্লাহ, আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তা তাঁরই; কঠিন শাস্তির দুর্ভোগ কাফিরদের জন্যে।

৩. যারা ইহজীবনকে পরজীবনের উপর প্রাধান্য দেয়, মানুষকে নিবৃত্ত করে আল্লাহর পথ হতে এবং আল্লাহর পথ বক্র করতে চায়; তারা ই তো ঘোর বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

৪. আমি প্রত্যেক রাসূলকেই তার স্বজাতির ভাষাভাষী করে পাঠিয়েছি। তাদের নিকট পরিস্কারভাবে ব্যাখ্যা করবার জন্যে, আল্লাহ যাকে ইচ্ছা বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

৫. মুসাকে (ﷺ) আমি আমার নিদর্শনসহ প্রেরণ করেছিলাম এবং বলেছিলামঃ তোমার সম্প্রদায়কে অন্ধকার হতে আলোতে আনয়ন কর এবং তাদেরকে আল্লাহর দিবসগুলির

سُورَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ

اٰيٰتُهَا ٥٢ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الرَّحْمٰنِ كَتَبْتُ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلَى صِرٰطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝١

اللّٰهُ الَّذِي لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكَافِرِيْنَ مِنْ عَذٰبٍ شَدِيْدٍ ۝٢

الَّذِيْنَ يَسْتَجِبُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنِ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عَوَجًا ۗ اُوْلٰئِكَ فِى ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝٣

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ رُّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسٰنٍ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَاءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٤

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوسٰى بِاٰيٰتِنَا اَنْ اُخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَذَكَرْهُمْ بِاٰيٰتِنَا اللّٰهُ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبّٰرٍ شٰكُوْرٍ ۝٥

দ্বারা উপদেশ দাও, এতে তো নিদর্শন রয়েছে প্রত্যেক অধিক ধৈর্যশীল ও কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে।

৬. যখন মুসা (ﷺ) তার সম্প্রদায়কে বলেছিলেন: তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহর নিয়ামতকে স্মরণ কর যখন তিনি তোমাদেরকে রক্ষা করেছিলেন ফিরাউনীয় সম্প্রদায়ের কবল হতে, যারা তোমাদেরকে নিকৃষ্ট শাস্তি দিতো, তোমাদের পুত্রদেরকে যবাহ করতো ও তোমাদের নারীদেরকে জীবিত রাখতো; এবং এতে ছিল তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক মহাপরীক্ষা।

৭. যখন তোমাদের প্রতিপালক ঘোষণা করেন: তোমরা কৃতজ্ঞ হলে তোমাদেরকে অবশ্যই অধিক দিবো, আর অকৃতজ্ঞ হলে অবশ্যই আমার শাস্তি হবে কঠোর।

৮. মুসা (ﷺ) বলেছিলেন: তোমরা এবং পৃথিবীর সকলেই যদি অকৃতজ্ঞ হও তথাপি আল্লাহ অভাবমুক্ত এবং সর্বপ্রশংসিত।

৯. তোমাদের কাছে কি সংবাদ আসে নাই তোমাদের পূর্ববর্তী নূহের (ﷺ) সম্প্রদায়ের, আ'দের ও সামুদের এবং তাদের পরবর্তীদের? তাদের বিষয় আল্লাহ ছাড়া অন্য কেউ জানে না; তাদের কাছে স্পষ্ট নিদর্শনসহ তাদের রাসূল এসেছিলেন; তারা তাদের হাত তাদের মুখে স্থাপন করতো এবং

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيَدَّبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ⑥

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ⑦

وَ قَالَ مُوسَىٰ اِنَّ تَكْفُرُوْا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَفِيْرٌ حَمِيْدٌ ⑧

اَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُوْدَ ۗ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۗ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ۗ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوا اَيْدِيَهُمْ فِىْ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهِۦ وَاِنَّا لَفِىۡ شَكٍۭ

বলতোঃ যা সহ তোমরা প্রেরিত হয়েছে তা আমরা প্রত্য্যখ্যান করি এবং আমরা অবশ্যই বিশ্রান্তিকর সন্দেহ পোষণ করি সে বিষয়ে, যার প্রতি তোমরা আমাদেরকে আহ্বান করছে।

১০. তাদের রাসূলগণ বলেছিলেনঃ আল্লাহ সম্বন্ধে কি কোন সন্দেহ আছে যিনি আকাশসমূহ ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা? তিনি তোমাদেরকে আহ্বান করেন তোমাদের পাপ মার্জনা করবার জন্যে এবং নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তোমাদেরকে অবকাশ দিবার জন্যে; তারা বলতোঃ তোমরা তো আমাদের মতই মানুষ; আমাদের পিতৃ পুরুষগণ যাদের ইবাদত করতো তোমরা তাদের ইবাদত হতে আমাদেরকে বিরত রাখতে চাও; অতএব তোমরা আমাদের কাছে কোন অকাটা প্রমাণ উপস্থিত কর।

১১. তাদের রাসূলগণ তাদেরকে বলেছিলেনঃ আমরা তোমাদের মত মানুষ; কিন্তু আল্লাহ তাঁর বান্দাদের মধ্যে যাকে ইচ্ছা অনুগ্রহ করে থাকেন; আল্লাহর অনুমতি ছাড়া তোমাদের নিকট প্রমাণ উপস্থিত করা আমাদের কাজ নয়; মু'মিনদের আল্লাহর উপরই নির্ভর করা উচিত।

১২. আমরা আল্লাহর উপর নির্ভর করবো না কেন? তিনিই তো আমাদেরকে পথ প্রদর্শন করেছেন; তোমরা আমাদেরকে যে ক্লেশ দিচ্ছ, আমরা অবশ্যই তা ধৈর্যের সাথে সহ্য

مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيْبٍ ①

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أِنِّي اللّٰهُ شَكَّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ط يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ فَمِنْ ذُنُوْبِكُمْ
وَيُوْجِرْكُمْ اِلَىٰ اَجَلٍ مُّسَمًّى ط قَالُوْا اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ط تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصْذُوْنَا
عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا فَاتُّوْنَا بِسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ①

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ط
وَمَا كَانَ لَنَا اَنْ نَّاتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ط
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ①

وَمَا لَنَا اِلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰنَا سَبِيْلَنَا ط
وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا اذِيْتُنَا ط وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ②

করবো এবং নির্ভরকারীদের আল্লাহরই উপর নির্ভর করা উচিত।

১৩. কাফিরগণ তাদের রাসূলদেরকে বলেছিলঃ আমরা তোমাদেরকে অবশ্যই আমাদের দেশ হতে বহিষ্কৃত করবো, অথবা তোমাদেরকে আমাদের ধর্মানর্শে ফিরে আসতেই হবে; অতঃপর তাঁদের নিকট তাঁদের প্রতিপালক ওহী প্রেরণ করলেনঃ যালিমদেরকে আমি অবশ্যই বিনাশ করবো।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ
مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوذَنَّ فِي مَلِئْنَا طَافَاوُجِي إِلَيْهِمْ
رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿۱۳﴾

১৪. তাদের পরে আমি তোমাদেরকে দেশে প্রতিষ্ঠিত করবই; এটা তাদের জন্যে, যারা ভয় রাখে আমার সম্মুখে উপস্থিত হওয়ার এবং ভয় রাখে আমার শাস্তির।

وَلَنُكَسِبَنَّكُمُ الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ ط ذَلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿۱۴﴾

১৫. তারা বিজয় কামনা করলো এবং প্রত্যেক উদ্ধত স্বৈরাচারী ব্যর্থকাম হলো।

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿۱۵﴾

১৬. তাদের প্রত্যেকের জন্যে পরিণামে জাহান্নাম রয়েছে এবং প্রত্যেককে পান করানো হবে গলিত পূঁজ।

مِّنْ وَّرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ ﴿۱۶﴾

১৭. যা সে অতি কষ্টে গলধঃকরণ করবে এবং তা গলধঃকরণ করা প্রায় অসম্ভব হয়ে পড়বে; সর্বাঙ্গিক হতে তার নিকট আসবে মৃত্যু যন্ত্রণা; কিন্তু তার মৃত্যু ঘটবে না এবং সে কঠোর শাস্তি ভোগ করতেই থাকবে।

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ
مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِسَيِّئٍ ط وَمِنْ وَّرَائِهِ
عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿۱۷﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এরশাদ করেছেনঃ (জাহান্নামে) কাফেরের এক কাঁধ থেকে অপর কাঁধ পর্যন্ত দূরত্বের পরিমাণ হবে দ্রুতগামী আরোহীর তিন দিনের পথের সমান। (বুখারী হাদীস নং ৬৫৫১)

১৮. যারা তাদের প্রতিপালককে অস্বীকার করে তাদের উপমা তাদের কর্মসমূহ ভঙ্গ্য সদৃশ্য যা ঝড়ের দিনে বাতাস প্রচণ্ড বেগে উড়িয়ে নিয়ে যায়; যা তারা উপার্জন করে তার কিছুই তারা তাদের কাজে লাগাতে পারে না; এটা তো ঘোর বিভ্রান্তি।

১৯. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী যথাবিধি সৃষ্টি করেছেন? তিনি ইচ্ছা করলে তোমাদের অস্তিত্ব বিলোপ করতে পারেন এবং এক নতুন সৃষ্টি অস্তিত্বে আনতে পারেন।

২০. আর এটা আল্লাহর জন্যে আদৌ কঠিন নয়।

২১. সবাই আল্লাহর নিকট উপস্থিত হবেই; যারা অহংকার করতো তখন দুর্বলেরা তাদেরকে বলবে: আমরা তো তোমাদের অনুসারী ছিলাম; এখন তোমরা আল্লাহর শাস্তি হতে আমাদেরকে কিছুমাত্র রক্ষা করতে পারবে? তারা বলবে: আল্লাহ আমাদেরকে সৎ পথে পরিচালিত করলে আমরাও তোমাদেরকে সৎ পথে পরিচালিত করতাম; এখন আমাদের ধৈর্যচ্যুত হওয়া অথবা ধৈর্যশীল হওয়া একই কথা; আমাদের কোন নিষ্কৃতি নেই।

২২. যখন সব কিছুর মীমাংসা হয়ে যাবে তখন শয়তান বলবে: আল্লাহ তোমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন সত্য প্রতিশ্রুতি, আমিও তোমা-

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا يَرَبُّهُمْ أَعْمَالَهُمْ كَرَمَادٍ
اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ
مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۗ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ البَعِيدُ ﴿١٨﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ
إِنْ يَشَاءُ يُدْبِرْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٩﴾

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٢٠﴾

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّعْتَدُونَ عَنَّا
مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ ط قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ
لَهَدَيْنَاكُمْ ۗ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرَعْنَا أَمْ صَبَرْنَا
مَا لَنَا مِنْ مَّحِيصٍ ﴿٢١﴾

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ
وَعَدَ الْحَقُّ ۗ وَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۗ وَمَا كَانَ

দেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলাম; কিন্তু আমি তোমাদেরকে প্রদত্ত প্রতিশ্রুতি রক্ষা করি নাই; আমার তো তোমাদের উপর কোন আধিপত্য ছিল না, আমি শুধু তোমাদেরকে আহ্বান করেছিলাম আর তোমরা আমার আহ্বানে সাড়া দিয়েছিলে; সুতরাং তোমরা আমার প্রতি দোষারোপ করো না, তোমরা তোমাদের প্রতিই দোষারোপ কর; আমি তোমাদের উদ্ধারে সাহায্য করতে সক্ষম নই এবং তোমরাও আমার উদ্ধারে সাহায্য করতে সক্ষম নও; তোমরা যে পূর্বে আমাকে আল্লাহর শরীক করেছিলে তার সাথে আমার কোনই সম্পর্ক নেই; যালিমদের জন্যে তো বেদনাদায়ক শাস্তি আছেই।

২৩. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদেরকে প্রবেশ করানো হবে জান্নাতে যার পাদদেশে নদী প্রবাহিত; সেখানে তারা চিরস্থায়ীভাবে অবস্থানকারী হবে তাদের প্রতিপালকের অনুমতিক্রমে; সেখানে তাদের অভিবাদন হবে 'সালাম'।

২৪. তুমি কি লক্ষ্য কর না আল্লাহ কিভাবে উপমা দিয়ে থাকেন? সৎবাক্যের তুলনা উৎকৃষ্ট বৃক্ষ যার মূল সুদৃঢ় ও যার শাখা-প্রশাখা উর্ধ্বে বিস্তৃত।

২৫. যা প্রতি মুহূর্তে ফল দান করে তার প্রতিপালকের অনুমতিক্রমে এবং আল্লাহ মানুষের জন্যে উপমা

لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْ دَعَوْكُمْ
فَاَسْتَجِبْتُمْ لِي ؕ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَوَمَوْاْ اَنْفُسَكُمْ ط
مَا اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيْ ط اِنِّيْ كَفَرْتُ
بِمَا اَشْرَكْتُمْ مِنْ قَبْلُ ط اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱۱

وَادْخُلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنَّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ
رَبِّهِمْ ط تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۝۱۱

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً
كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي
السَّمٰوٰتِ ۝۱۲

تُوْتٰى اَكْلُهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ط وَيَضْرِبُ
اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝۱۳

দিয়ে থাকেন যাতে তারা শিক্ষা গ্রহণ করে।

২৬. কুবাক্যের তুলনা এক মন্দ বৃক্ষ, যার মূল ভূ-পৃষ্ঠ হতে বিচ্ছিন্ন, যার কোন স্থায়িত্ব নেই।

২৭. যারা বিশ্বাসী তাদেরকে ইহজীবনে ও পরজীবনে আল্লাহ সুপ্রতিষ্ঠিত রাখবেন শাস্ত বাণী দ্বারা এবং যারা যালিম আল্লাহ তাদেরকে বিভ্রান্তিতে রাখবেন; আল্লাহ যা ইচ্ছা তাই করেন।

২৮. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য কর না যারা আল্লাহর নিয়ামতের বদলে অকৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে এবং তাদের সম্প্রদায়কে নামিয়ে আনে ধ্বংসের ক্ষেত্রে।

২৯. জাহান্নামে, যার মধ্যে তারা প্রবেশ করবে কত নিকৃষ্ট এই আবাস স্থল।

৩০. আর তারা আল্লাহর সমকক্ষ উদ্ভাবন করে তাঁর পথ হতে বিভ্রান্ত করার জন্যে; তুমি বলঃ ভোগ করে নাও, পরিণামে জাহান্নামই তোমাদের প্রত্যাবর্তন স্থল।

৩১. আমার বান্দাদের মধ্যে যারা মু'মিন তাদেরকে বলঃ নামায কয়েম করতে এবং আমি তাদেরকে যা দিয়েছি তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করতে সেদিন আসার পূর্বে যেদিন ক্রয়-বিক্রয় ও বন্ধুত্ব থাকবে না।

৩২. তিনিই আলাহ যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ
مِن فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ اللَّهُ
الظَّالِمِينَ ۖ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا
قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

جَهَنَّمَ ۖ يَصَلُّونَهَا ط وَيُسَّ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ط
قُلْ تَسْعَوْا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ
يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ ﴿٣١﴾

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ

করেছেন, যিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করে তার দ্বারা তোমাদের জীবিকার জন্যে ফল-মূল উৎপাদন করেন, যিনি নৌযানকে তোমাদের অধীনে করে দিয়েছেন যাতে তাঁর হুকুমে ওটা সমুদ্রে বিচরণ করে এবং যিনি তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন নদীসমূহকে।

৩৩. তিনি তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন সূর্য ও চন্দ্রকে যারা অবিরাম একই নিয়মের অনুবর্তী এবং তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন রাত্রি ও দিবসকে।

৩৪. আর তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন তোমরা তাঁর নিকট যা কিছু চেয়েছো তা হতে; তোমরা আল্লাহর নেয়ামত গণনা করলে ওর সংখ্যা নির্ণয় করতে পারবে না; মানুষ অবশ্যই অতি মাত্রায় যালিম, অকৃতজ্ঞ।

৩৫. আর যখন (স্মরণ কর) ইবরাহীম (عليه السلام) বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! এই শহরকে (মস্কাকে) নিরাপদ করুন এবং আমাকে ও আমার পুত্রগণকে প্রতিমা পূজা হতে দূরে রাখুন।

৩৬. হে আমার প্রতিপালক! এসব প্রতিমা বহু মানুষকে বিভ্রান্ত করেছে; সুতরাং যে আমার অনুসরণ করবে সে আমার দলভুক্ত; কিন্তু কেউ আমার অবাধ্য হলে আপনি তো ক্ষমাশীল পরম দয়ালু।

السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۗ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۗ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۗ ﴿٣٣﴾

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۗ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ ﴿٣٤﴾

وَأَتَاكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۗ وَإِنْ تَعْدُوا
يُعْتَدِ اللَّهُ لَا تَحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ
لَكَفُورٌ كَفَّارٌ ۗ ﴿٣٥﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا
وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ۗ ﴿٣٦﴾

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضَلُّنَّ كَثِيرًا ۗ مِنْ الثَّاغِي ۗ
فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۗ وَمَنْ عَصَانِي
فَإِنَّكَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٧﴾

৩৭. হে আমাদের প্রতিপালক! আমি আমার বংশধরদের কতককে বসবাস করলাম অনুর্বর উপত্যকায় আপনার পবিত্র গৃহের নিকট। হে আমাদের প্রতিপালক! এই জন্যে যে, তারা যেন নামায কায়ম করে; সুতরাং আপনি কিছু লোকের অন্তর ওদের প্রতি অনুরাগী করে দিন এবং ফল-ফলাদি দ্বারা তাদের রুযীর ব্যবস্থা করুন; যাতে তারা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে।^১

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ
عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ
أَفْئِدَتَهُم مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ
الشَّمْرِاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বলেছেন, নারীজাতি সর্বপ্রথম ইসমাইল (আলাইহিস্ সালাম)-এর মাতা (হাজেরা) থেকেই কোমরবন্ধ বানানো শিখেছে। হাজেরা সারা থেকে আপন নির্দেশনাবলী গোপন করার উদ্দেশ্যেই কোমরবন্ধ লাগাতেন। অতপর (উভয়ের মনোমালিন্য চরমে পৌছলে আল্লাহর আদেশে) ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) হাজেরা ও তাঁর শিশুপুত্র ইসমাইলকে সাথে নিয়ে (নির্বাসন দানের জন্য) বের হলেন। পথে হাজেরা শিশুকে দুধ পান করাতেন। শেষ পর্যন্ত ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) তাদের উভয়কে নিয়ে যেখানে খানা-এ-কাবা অবস্থিত সেখানে এসে উপস্থিত হলেন এবং মসজিদের উঁচু অংশে যমযমের উপরিস্থ এক বিরাট বৃক্ষতলে তাদেরকে রাখলেন। তখন মক্কায় না ছিল কোন জনমানব, না ছিল পানির কোনরূপ ব্যবস্থা। অতপর সেখানেই তাদেরকে রেখে গেলেন এবং একটি খেলের মধ্যে কিছু খেজুর আর একটি মশকে স্বল্প পরিমাণ পানি দিয়ে গেলেন। তারপর ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) (নিজ গৃহ অভিমুখে) ফিরে চললেন। ইসমাইলের মাতা (হাজেরা) তাঁর পিছু পিছু ছুটে আসলেন এবং চীৎকার করে বলতে লাগলেন, হে ইবরাহীম! কোথায় চলে যাচ্ছ? আর আমাদেরকে রেখে যাচ্ছ এমন এক ময়দানে, যেখানে না আছে কোন সাহায্যকারী, না আছে (পানাহারের) কোন বস্তু। তিনি বার বার একথা বলতে লাগলেন; কিন্তু ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) সেদিকে ফিরেও তাকালেন না। তখন হাজেরা তাঁকে জিজ্ঞেস করলেন, (এই নির্বাসন)-এর আদেশ কি আপনাকে আল্লাহ দিয়েছেন? তিনি জবাব দিলেন, হ্যাঁ। (জবাব শুনে) হাজেরা বললেন, তাহলে আল্লাহ আমাদের ধ্বংস ও বরবাদ করবেন না। তারপর তিনি ফিরে আসলেন। ইবরাহীমও (পেছনে না চেয়ে) সামনে চললেন। শেষ পর্যন্ত যখন তিনি গিরিপথের বাঁকে এসে পৌছলেন, যেখানে স্ত্রী-পুত্র আর তাঁকে দেখতে পাচ্ছিল না, তখন তিনি কাবা ঘরের দিকে মুখ করে দাঁড়ালেন এবং দু'হাত তুলে এই দু'আ করলেন: “হে আমাদের প্রতিপালক, তোমার পবিত্র ঘরের নিকটে এমন এক ময়দানে আমার সন্তান ও পরিজনের বসতি স্থাপন করে যাচ্ছি, যা কৃষির অনুপযোগী (এবং জনশূন্য মরুভূমি)। হে প্রভু! উদ্দেশ্য এই, তারা সালাত কায়ম করবে। অতএব তুমি লোকদের মনকে এদিকে আকৃষ্ট করে দাও এবং (হে আল্লাহ) প্রচুর ফলফলাদি দিয়ে এদের রিযিক-এর ব্যবস্থা করে দাও। যাতে করে তারা (তোমার নিয়ামতের) শুকরিয়া আদায় করতে পারে।” (সূরাঃ ইবরাহীম-৩৭ আয়াত)

[অতপর ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) চলে গেলেন। তখন ইসমাইলের মাতা ইসমাইলকে (নিজের বুকের) দুধ খাওয়াতেন আর নিজে ঐ মশক থেকে পানি পান করতেন। পরিশেষে মশকে যা পানি ছিল তা ফুরিয়ে গেল। তখন তিনি নিজেও তৃষ্ণার্ত হলেন এবং (এ কারণে বুকের দুধ শুকিয়ে যাওয়ায়) তাঁর শিশু পুত্রটিও পিপাসায় কাতর হয়ে পড়ল। তিনি শিশুর প্রতি দেখতে লাগলেন, (পিপাসায়) শিশুর বুক ধড়ফড় করছে কিংবা বলেছেন, সে জমিনে ছটফট করছে। শিশু পুত্রের (এই করুণ অবস্থার) দিকে তাকানো তাঁর পক্ষে

৩৮. হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি তো জানেন যা আমরা গোপন করি ও প্রকাশ করি, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কোন কিছুই আল্লাহর নিকট গোপন থাকে না।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا عَلَيْنُ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿۳۸﴾

অসহনীয় হয়ে উঠল। তিনি সরে পড়লেন এবং তাঁর অবস্থানের সংলগ্ন পর্বত 'সাফা'-কেই একমাত্র নিকটতম পর্বত হিসেবে পেলেন অতঃপর তিনি এর উপর উঠে দাঁড়ালেন, তারপর ময়দানের দিকে মুখ করলেন, এদিক সেদিক তাকিয়ে দেখলেন কাউকে দেখা যায় কি না। কিন্তু না কাউকে তিনি দেখলেন না। তখন দ্রুত সাফা পর্বত থেকে নেমে পড়লেন। যখন তিনি নিচু ময়দানে পৌঁছলেন তখন আপন কামিজের এক দিক তুলে একজন শ্রান্ত ক্লান্ত ব্যক্তির ন্যায় দৌড়ে চললেন। শেষে ময়দান অতিক্রম করলেন, মারওয়া পাহাড়ের নিকট এসে গেলেন এবং তার উপর উঠে দাঁড়ালেন। অতঃপর চারদিকে নজর করলেন, কাউকে দেখতে পান কি না। কিন্তু কাউকে দেখলেন না। (মানুষের খোঁজে) তিনি (পাহাড়ঘরের মধ্যে) অনুরূপভাবে সাতবার (দৌড়াদৌড়ি) করলেন।

ইবনে আব্বাস বর্ণনা করেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, এজন্যই (হজ্জের সময়) মানুষ এই পাহাড়ঘরের মধ্যে (সাতবার) সায়ী বা দৌড়াদৌড়ি করে। (এবং এটা হজ্জের একটি অঙ্গ।)

অতপর যখন তিনি (শেষবার) মারওয়া পাহাড়ের উপর উঠলেন, একটি আওয়াজ শুনলেন। তখন নিজেকেই নিজে বললেন, একটু অপেক্ষা কর (মনোযোগ দিয়ে শোন)। তিনি (একাত্তার সাথে ঐ আওয়াজের দিকে) কান দিলেন। আবারও শব্দ শুনলেন। তখন বললেন, তোমার আওয়াজ তো শুনছি। যদি তোমার কাছে সাহায্যকারী কেউ থাকে তবে আমায় সাহায্য কর। অকস্মাৎ তিনি, যমযম যেখানে অবস্থিত সেখানে একজন ফেরেশতাকে দেখতে পেলেন। সেই ফেরেশতা আপন পায়ের গোড়ালি দ্বারা আঘাত করলেন। কিংবা তিনি বলেছেন-আপন ডানা ছারা আঘাত হানলেন। ফলে (আঘাতের স্থান থেকে) পানি উপচে উঠতে লাগল। হাজেরা এর চার পাশে বাঁধ দিয়ে তাকে হাউয়ের আকার দান করলেন এবং অঞ্জলি ভরে তাঁর মশকটিতে পানি ভরতে লাগলেন। হাজেরার অঞ্জলি ভরার পরে পানি উছলে উঠতে লাগল।

ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বর্ণনা করেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আল্লাহ ইসমাঈলের মাতাকে রহম করুন-যদি তিনি যমযমকে (বাঁধ না দিয়ে ঐভাবে) ছেড়ে দিতেন, কিংবা তিনি বলেছেন, যদি তিনি অঞ্জলি ভরে ভরে পানি (মশকে) না ভরতেন, তাহলে যমযম (কুপ না হয়ে) হতো একটি প্রবাহমান ঝরণা।

বর্ণনাকারী বলেন, অতঃপর হাজেরা পানি পান করলেন এবং শিশুপুত্রকেও দুধ পান করালেন। তখন ফেরেশতা তাঁকে বললেন, ধ্বংসের কোন আশঙ্কা আপনি করবেন না। কেননা, এখানেই আল্লাহর ঘর রয়েছে। এই শিশু তার পিতার সাথে মিলে এটি পুনর্নির্মাণ করবে এবং আল্লাহ তাঁর পরিজনকে কখনও ধ্বংস করেন না। ঐ সময় বায়তুল্লাহ (আল্লাহর ঘরের পরিত্যক্ত স্থানটি) জমিন থেকে টিলার ন্যায় উঁচু ছিল। বন্যার পানি আসতো এবং ডান বাম থেকে ভেঙ্গে নিয়ে যেতো।

হাজেরা এভাবেই দিন যাপন করছিলেন। শেষ পর্যন্ত (ইয়ামন দেশীয়) 'জুরহম' গোত্রের একদল লোক তাদের পাশ দিয়ে অতিক্রম করে গেল। কিংবা তিনি বলেছেন, 'জুরহম' গোত্রের কিছু লোক 'কাদা'-এর পথে (এদিকে) আসছিল। তারা মক্কার নিচুভূমিতে অবতরণ করল এবং দেখতে পেল কতগুলো পাখি চক্রাকারে উড়ছে। তখন তারা বলল, নিশ্চয় এ পাখিগুলো পানির ওপরই ঘুরছে। অথচ আমরা এ ময়দানে বহুকাল কাটিয়েছি। কিন্তু কোন পানি এখানে ছিল না। অতঃপর তারা একজন বা দু'জন লোক (সেখানে) পাঠাল। তারা গিয়েই পানি দেখতে পেল। ফিরে এসে সবাইকে পানির খবর দিল। (খবর শুনে) সবাই

৩৯. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই প্রাপ্য, যিনি আমাকে আমার বার্বকে ইসমাঈল (عليه السلام) ও ইসহাককে (عليه السلام) দান করেছেন; আমার প্রতিপালক অবশ্যই দু'আ শুনে থাকেন।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّيَ لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

সেদিকে অগ্রসর হল। বর্ণনাকারী বলেছেন, ইসমাঈলের মাতা পানির কাছে বসা ছিলেন। তারা তাঁকে জিজ্ঞেস করল, আমরা আপনার নিকটবর্তী স্থানে বসবাস করতে চাই; আপনি আমাদেরকে অনুমতি দিবেন কি? তিনি জবাব দিলেন হ্যাঁ, তবে এ পানির ওপর তোমাদের কোন অধিকার থাকবে না। তারা হ্যাঁ বলে সম্মতি জানাল। ইবনে আব্বাস বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ইরশাদ করেছেনঃ এ ঘটনা ইসমাঈলের মাতার জন্য এক সুবর্ণ সুযোগ এনে দিল এবং তিনিও মানুষের সাহচর্য কামনা করেছেন। অতঃপর আগন্তুক দলটি সেখানে বসতি স্থাপন করল এবং পরিবার-পরিজনের কাছেও খবর পাঠাল। তারাও এসে এদের সাথে বসবাস করতে লাগল। শেষ পর্যন্ত সেখানে তাদের কয়েকটি খান্দান জন্ম নিল। ইসমাঈলও (আস্তে আস্তে) বড় হলেন। তাদের থেকে (তাদের ভাষা) আরবী শিখলেন। জওয়ান হলে তিনি তাদের অধিক আগ্রহের বস্ত্র ও প্রিয়পাত্র হয়ে উঠলেন। যখন তিনি যৌবনপ্রাপ্ত হলেন, তখন তারা তাদেরই এক মেয়েকে তার সঙ্গে বিয়ে দিল। বিয়ের পর ইসমাঈলের মাতা (হাজেরা) ইন্তিকাল করলেন।

ইসমাঈলের বিয়ের পর ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) তাঁর পরিত্যক্ত পরিজনকে দেখার জন্য এখানে আসলেন; কিন্তু (এসে) ইসমাঈলকে পেলেন না। পরে তাঁর স্ত্রীর নিকট তাঁর সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করলেন। স্ত্রী বলল, তিনি আমাদের রিযিকের সন্ধানে বেরিয়ে গেছেন। পুনরায় তিনি পুত্রবধুকে তাদের জীবনযাত্রা ও অবস্থা সম্বন্ধে প্রশ্ন করলেন। বধু বলল, আমরা অতিশয় দূরাবস্থা, টানাটানি এবং ভীষণ কষ্টে আছি। সে ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর নিকট (তাদের দুর্দশার) অভিযোগ করল। তিনি (বধুকে) বললেন, তোমার স্বামী (বাড়ি) আসলে তাকে আমার সালাম জানিয়ে বলবে, সে যেন তার ঘরের চৌকাঠ বদলিয়ে নেয়। (এ বলে তিনি চলে গেলেন।)

ইসমাঈল যখন (বাড়ি) আসলেন, তখন তিনি [ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর আগমন সম্পর্কে] একটা কিছু আভাস পেলেন। (স্ত্রীকে) জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের কাছে কেউ কি এসেছিলেন? স্ত্রী বলল, হ্যাঁ, এমন এমন আকৃতির একজন বৃদ্ধ এসেছিলেন। আপনার সম্পর্কে আমাকে জিজ্ঞেস করেছিলেন? আমি তাকে (আপনার) খবর জানালাম। তিনি পুনরায় আমাকে আমাদের জীবনযাত্রা সম্বন্ধে প্রশ্ন করলেন। আমি তাঁকে জানালাম যে, আমরা অত্যন্ত কষ্ট ও অভাবে আছি। ইসমাঈল জিজ্ঞেস করলেন, তিনি কি তোমাকে আর কোন অসিয়ত করে গেছেন? স্ত্রী জবাব দিল, হ্যাঁ, তিনি আমাকে নির্দেশ দিয়ে গেছেন, যেন আপনাকে সালাম পৌছাই এবং তিনি বলে গেছেন, আপনি যেন আপনার ঘরের দরজার চৌকাঠ বদলিয়ে ফেলেন। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, তিনি ছিলেন আমার পিতা এবং আমাকে নির্দেশ দিয়ে গেছেন, যেন তোমাকে আমি পৃথক করে দেই। সুতরাং তুমি তোমার (পিত্রালয়ে) আপন লোকদের কাছে চলে যাও। (এ বলে) ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) তাকে তালুক দিয়ে দিলেন এবং জুহরম গোত্রের অন্য একটি মেয়েকে বিয়ে করলেন। অতঃপর আল্লাহ্ যদিচ চাইলেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) তদ্দিন এদের থেকে দূরে রইলেন। পরে আবার দেখতে আসলেন। কিন্তু ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম)-কে পেলেন না। তিনি পুত্রবধুর ঘরে ঢুকলেন এবং তাকে ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করলেন। স্ত্রী জানালেন, তিনি আমাদের খাদ্যের সন্ধানে বেরিয়ে গেছেন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) জিজ্ঞেস করলেন, তোমারা কেমন আছ? তিনি তার কাছে তাদের জীবনযাত্রা ও সাংসারিক অবস্থা সম্পর্কেও জিজ্ঞেস করলেন। পুত্রবধু জবাব দিলেন, আমরা ভাল অবস্থা ও সম্ভলতার মধ্যেই আছি। (এ বলে) তিনি আল্লাহর প্রশংসাও

করলেন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) তাকে জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের প্রধান খাদ্য কি? বধু জবাবে বললেন, গোশত। তিনি আবার জানতে চাইলেন, তোমাদের পানীয় কি? তিনি জবাব দিলেন, পানি। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) দু'আ করলেনঃ “আয় আল্লাহ্! তাদের গোশত ও পানিতে বরকত দান কর।”

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, ওই সময় তাদের (সেখানে) খাদ্যশস্য উৎপন্ন হতো না। যদি হতো, ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) সে ব্যাপারেও তাঁদের জন্য দু'আ করতেন।

বর্ণনাকারী বলেছেন, কোন লোকই মক্কা ছেড়ে অন্য কোথাও শুধু গোশত এবং পানি দ্বারা জীবন অতিবাহিত করতে পারে না। কারণ, শুধু গোশত ও পানি (সব সময়) তার প্রকৃতির অনুকূল হতে পারে না।

ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) (আলাপ শেষে) পুত্রবধুকে বললেন, তোমার স্বামী যখন আসবে, তখন তাকে আমার সালাম বলবে এবং তাকে (আমার পক্ষ থেকে) হুকুম করবে, সে যেন তার দরজার চৌকাঠ বহাল রাখে।

অতঃপর ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) যখন (বাড়ি) আসলেন, (স্ত্রীকে) জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের নিকট কেউ এসেছিলেন কি? স্ত্রী বললেন, হ্যাঁ, একজন সুন্দর আকৃতির বৃদ্ধ এসেছিলেন। স্ত্রী তাঁর প্রশংসা করলেন। তারপর বললেন, তিনি আমাকে আপনার সম্পর্কে জিজ্ঞেস করেছেন, আমি তাঁকে (আপনার) খবর দিয়েছি। তিনি আমাকে আমাদের জীবন-যাপন সম্পর্কেও জিজ্ঞেস করেছেন, আমি তাঁকে জানিয়ে দিয়েছি যে আমরা ভাল অবস্থায় আছি। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) জানতে চাইলেন, তিনি কি তোমাকে আর কোন ব্যাপারে আদেশ দিয়ে গেছেন? স্ত্রী বললেন, হ্যাঁ, আপনাকে সালাম বলেছেন আর নির্দেশ দিয়ে গেছেন, যেন আপনি আপনার দরজার চৌকাঠ বহাল রাখেন। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, ইনিই আমার আব্বাজান। আর তুমি হলে চৌকাঠ। তোমাকে (স্ত্রী হিসেবে) বহাল রাখার নির্দেশ তিনি আমাকে দিয়েছেন।

পুনরায় ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) আল্লাহর ইচ্ছায় কিছুদিন এদের থেকে দূরে রইলেন। এরপর আবার তাদের কাছে আসলেন। (এসে দেখলেন) ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) যমযমের নিকটস্থ একটি বৃক্ষতলে বসে নিজের তীর মেরামত করছেন। পিতাকে যখন (আসতে) দেখলেন, দাঁড়িয়ে তার দিকে এগিয়ে গেলেন। অতঃপর একজন পিতা-পুত্রের সঙ্গে এবং পুত্র-পিতার সঙ্গে (সাক্ষাত হলে) যা করে তারা তা-ই করলেন। তারপর ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, হে ইসমাঈল! আল্লাহ আমাকে একটি কাজের হুকুম করেছেন। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) জবাব দিলেন, আপনার পরওয়ারদিগার আপনাকে যা আদেশ করেছেন, তা করে ফেলুন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, তুমি আমাকে সাহায্য করবে কি? ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, হ্যাঁ, আমি আপনার সাহায্য নিশ্চয়ই করব। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, আল্লাহ আমাকে এখানে এর চারপাশ ঘেরাও করে একটি ঘর বানাবার নির্দেশ দিয়েছেন। (এ বলে) তিনি উঁচু টিলাটির দিকে ইশারা করলেন। (এবং স্থানটি দেখালেন)। তখন তাঁরা উভয়ে কাবা ঘরের দেয়াল উঠাতে লেগে গেলেন। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) পাথর যোগান দিতেন এবং ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) গাঁথুনী করতেন। যখন দেয়াল উঁচু হয়ে গেল, তখন ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) মাকামে ইবরাহীম নামক মশহুর পাথরটি আনলেন এবং ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর জন্য তা (যেখানে) রাখলেন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর ওপর দাঁড়িয়ে ইমারত নির্মাণ করতে লাগলেন এবং ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) তাঁকে পাথর যোগান দিতে লাগলেন। আর উভয়ে এ দু'আ করতে থাকলেনঃ “হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের থেকে (এ কাজটুকু) কবুল করুন! নিশ্চয়ই আপনি (সবকিছু) শুনে ও জানেন।”

আবার তাঁরা উভয়ে ইমারত নির্মাণ করতে লাগলেন। তাঁরা কাবা ঘরের চারদিকে ঘুরছিলেন এবং উভয়ে এ দু'আ করছিলেনঃ “হে আমাদের প্রভু! আমাদের এ শ্রমটুকু কবুল করে নিন। নিশ্চয়ই আপনি সব শুনে ও জানেন। (সূরাঃ বাকারা, ১২৭ আয়াত) (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৬৪)

৪০. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে নামায কায়মকারী করুন এবং আমার বংশধরদের মধ্য হতেও; হে আমাদের প্রতিপালক! আমার দু'আ কবুল কর।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۖ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝

৪১. হে আমার প্রতিপালক! যেদিন হিসাব হবে সেদিন আমাকে, আমার পিতা-মাতাকে এবং মু'মিনদেরকে ক্ষমা করুন।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ
يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

৪২. তুমি কখনো মনে করো না যে, যালিমরা যা করে সে বিষয়ে আল্লাহ গাফিল, তবে তিনি সেদিন পর্যন্ত তাদেরকে অবকাশ দেন যেদিন তাদের চক্ষু হবে স্থির (বিস্ফোরিত)।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهُ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۗ
إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۝

৪৩. ভীত বিহ্বল চিন্তে আকাশের দিকে চেয়ে তারা ছুটাছুটি করবে নিজেদের প্রতি তাদের দৃষ্টি ফিরবে না এবং তাদের অন্তর হবে (আশা) শূণ্য।

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ ۗ وَانفِثْهُمْ هَوَاءً ۝

৪৪. যেদিন তাদের শাস্তি আসবে সেদিন সম্পর্কে তুমি মানুষকে সতর্ক কর, তখন যালিমরা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে কিছু কালের জন্যে অবকাশ দিন, আমরা আপনার আস্থানে সাড়া দিবো এবং রাসূলদের অনুসরণ করবো; তোমরা কি পূর্বে শপথ করে বলতে না, তোমাদের পতন নেই?

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَا تِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ
الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ لَّا نُحِبُّ
دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ ۗ أَوْ لَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ
مِنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ۝

৪৫. অথচ তোমরা বাস করতে তাদের বাসভূমিতে যারা নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল এবং তাদের প্রতি আমি কি করেছিলাম তাও

وَسَكَنتُمْ فِي مَسْكَانٍ الَّتِي ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَهُمْ
وَبَيَّنَّا لَكُمْ لِكَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا

তোমাদের নিকট সুবিদিত ছিল এবং তোমাদের নিকট আমি তাদের দৃষ্টান্ত ও উপস্থিত করেছিলাম।

৪৬. তারা ভীষণ চক্রান্ত করেছিল, কিন্তু আল্লাহর নিকট তাদের চক্রান্ত রক্ষিত হয়েছে। তাদের চক্রান্ত এমন ছিল না যাতে পর্বত টলে যায়।

৪৭. তুমি কখনো মনে করো না যে, আল্লাহ তাঁর রাসূলদের প্রতি প্রদত্ত প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করেন; আল্লাহ পরাক্রমশালী, প্রতিশোধ গ্রহণকারী।

৪৮. যেদিন এই পৃথিবী পরিবর্তিত হয়ে অন্য পৃথিবী হবে এবং আকাশমন্ডলী এবং মানুষ উপস্থিত হবে আল্লাহর সামনে, যিনি এক পরাক্রমশালী।

৪৯. সেদিন তুমি অপরাধীদেরকে দেখবে শৃঙ্খলিত অবস্থায়।

৫০. তাদের জামা হবে আলকাতরার এবং অগ্নি আচ্ছন্ন করবে তাদের মুখমন্ডল।

৫১. এটা এই জন্যে যে, আল্লাহ প্রত্যেকের কৃতকর্মের প্রতিফল দিবেন, আল্লাহ হিসাব গ্রহণে তৎপর।

৫২. এটা মানুষের জন্যে এক বার্তা যাতে এটা দ্বারা তারা সতর্ক হয় এবং জানতে পারে যে, তিনি একমাত্র উপাস্য এবং যাতে বোধশক্তি সম্পন্নরা উপদেশ গ্রহণ করে।

لَكُمْ الْأَمْثَالُ ﴿٤٦﴾

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرَهُمْ ط
وَإِنْ كَانَ مَكْرَهُمْ لِيَتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٧﴾

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ط
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٨﴾

يَوْمَ تَبَدَّلَ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ
وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٩﴾

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي
الْأَصْفَادِ ﴿٥٠﴾

سَرَابِئِهِمْ مِنْ قَطْرَانٍ وَتَغْشَى وُجُوهُهُمْ
النَّارُ ﴿٥١﴾

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مِمَّا كَسَبَتْ ط
إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥٢﴾

هَذَا بَلْعٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا
أَنَّهَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو
الْأَلْبَابِ ﴿٥٣﴾

সূরাঃ হিজর, মাকী

(আয়াতঃ ৯৯, রুকু'ঃ ৬)

দয়াময় পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْحَجْرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٩٩ رُكُوعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আলিফ-লাম-রা এগুলি আয়াত
মহাঘন্ডের, সুস্পষ্ট কুরআনের।

الرّت تَلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُّبِينٍ ①

২. কখনো কখনো কাফিররা আকাঙ্ক্ষা করবে যে, তারা যদি মুসলিম হতো!

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا
مُسْلِمِينَ ﴿٧﴾

৩. তাদেরকে ছেড়ে দাও, তারা খেতে থাকুক, ভোগ করতে থাকুক এবং আশা আকাঙ্ক্ষা ওদেরকে মোহাচ্ছন্ন রাখুক, (পরিণামে) তারা অতি শীঘ্রই জানবে।

ذَرَّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِمُهُمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

৪. আমি কোন জনপদকে তার নির্দিষ্ট কাল পূর্ণ না হলে ধ্বংস করি নাই।

وَمَا اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ﴿٩﴾

৫. কোন জাতি তার নির্দিষ্ট কালকে অগ্রগামী করতে পারে না এবং বিলম্বিতও করতে পারে না।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاخِرُونَ ﴿١٠﴾

৬. তারা বলেঃ ওহে, যার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ হয়েছে! তুমি তো নিশ্চয় উন্মাদ।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ
لَمَجْنُونٌ ﴿١١﴾

৭. তুমি সত্যবাদী হলে আমাদের নিকট ফেরেশতাদেরকে হাযির করছো না কেন?

لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٢﴾

৮. আমি ফেরেশতাদেরকে হকের সাথেই প্রেরণ করি; ফেরেশতারা হাযির হলে তারা অবকাশ পাবে না।

مَا نُنزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْا
اِذًا مُّنظَرِيْنَ ﴿١٣﴾

৯. আমিই কুরআন অবতীর্ণ করেছি এবং আমিই এর সংরক্ষণকারী।

اِنَّا نَحْنُ نُنزِّلُ الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٤﴾

১০. তোমার পূর্বে আমি পূর্বের অনেক সম্প্রদায়ের নিকট রাসূল পাঠিয়েছিলাম।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيْعِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٥﴾

১১. তাদের নিকট আসে নাই এমন কোন রাসূল যাকে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো না।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهِ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٦﴾

১২. এভাবে আমি অপরাধীদের অন্তরে তা সঞ্চার করি।

كَذَلِكَ نَسُكُّهُ فِي قُلُوبِ الْبُجُرْمِينَ ﴿١٢﴾

১৩. তারা কুরআনে বিশ্বাস করবে না এবং অতীতে পূর্ববর্তীগণেরও এই আচরণ ছিল।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةَ الْأُولِينَ ﴿١٣﴾

১৪. যদি তাদের জন্যে আমি আকাশের দুয়ার খুলে দিই এবং তারা সারাদিন তাতে আরোহণ করতে থাকে।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

১৫. তবুও তারা বলবেঃ আমাদের দৃষ্টিভ্রম ঘটানো হয়েছে; না, বরং আমরা এক যাদুগ্রন্থ সম্প্রদায়।

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾

১৬. আকাশে আমি গ্রহ-নক্ষত্র সৃষ্টি করেছি এবং ওকে করেছি সুশোভিত দর্শকদের জন্যে।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَرَازِيهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾

১৭. প্রত্যেক অভিশপ্ত শয়তান হতে আমি ওকে রক্ষা করে থাকি।

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾

১৮. আর কেউ চুরি করে সংবাদ গুনতে চাইলে ওর পশ্চাদ্ধাবন করে প্রদীপ্ত শিখা।

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

১৯. পৃথিবীকে আমি বিস্তৃত করেছি এবং ওতে পর্বতমালা স্থাপন করেছি; আমি ওতে প্রত্যেক বস্তু উদগত করেছি সুপরিমিতভাবে।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿١٩﴾

২০. আর আমি ওতে জীবিকার ব্যবস্থা করেছি তোমাদের জন্যে আর তোমরা যাদের জীবিকাদাতা নও তাদের জন্যেও।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرِزْقَيْنَ ﴿٢٠﴾

২১. আমারই কাছে আছে প্রত্যেক বস্তুর ভান্ডার এবং আমি তা পরিজ্ঞাত পরিমাণেই সরবরাহ করে থাকি।

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنزِّلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾

২২. আমি বৃষ্টি গৰ্ভ বায়ু শ্ৰেণণ কৰি, অতঃপৰ আকাশ হতে বারি বৰ্ষণ কৰি এবং তা তোমাদেৱকে পান কৰতে দিই; ওৱ ভাঙাৰ তোমাদেৱ কাছে নেই।

২৩. আমিই জীবনদান কৰি ও মৃত্যু ঘটাই এবং আমিই চূড়ান্ত মালিকানাৰ অধিকাৰী।

২৪. তোমাদেৱ পূৰ্বে যাৱা গত হয়েছে আমি তাদেৱকে জানি এবং পৰে যাৱা আসবে তাদেৱকেও জানি।

২৫. তোমাৰ প্ৰতিপালকই তাদেৱকে সমবেত কৰবেন; নিশ্চয় তিনি প্ৰজ্ঞাময়, সৰ্বজ্ঞ।

২৬. আমি তো মানুষকে সৃষ্টি কৰেছি ছাঁচে ঢালা শুষ্ক ঠনঠনে মৃত্তিকা হতে।

২৭. এৱ পূৰ্বে সৃষ্টি কৰেছি জ্বিনকে প্ৰখৰ শিখায়ুক্ত অগ্নি হতে।

২৮. (স্মৱণ কৰ;) যখন তোমাৰ প্ৰতিপালক ফেৱেশতাৎদেৱকে বললেনঃ 'আমি ছাঁচে ঢালা শুষ্ক ঠনঠনে মৃত্তিকা হতে মানুষ সৃষ্টি কৰছি।'

২৯. যখন আমি তাকে সৃষ্টি কৰবো এবং তাতে আমাৰ ৰূহ সঞ্চৰণ কৰবো তখন তোমাৰা তাৰ প্ৰতি সিজদাবনত হয়ো।

৩০. তখন ফেৱেশতাৎগণ সবাই একত্ৰে সিজদা কৰলেন।

৩১. কিন্তু ইবলিস ব্যতীত। সে সিজদাকাৰীদেৱ অন্তৰ্ভুক্ত হতে অস্বীকাৰ কৰলো।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

وَأَنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ طَائِفَةٌ حَكِيمَةٌ عَلَيْهِمْ ۞ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَيَا مَسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

وَالجَّانَ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السُّمُومِ ﴿٢٧﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَيَا مَسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سٰجِدِينَ ﴿٢٩﴾

فَسَجَدَ الْمَلٰئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

إِلَّا إِبْلِيسَ ط أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ السٰجِدِينَ ﴿٣١﴾

৩২. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ হে ইবলিস! তোমার কি হলো যে, তুমি সিজ্দাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হলে না?

قَالَ يَا بَلِيسُ مَا لَكَ الْآتُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾

৩৩. সে (উত্তরে) বললোঃ ছাঁচে ঢালা গুচ্ছ ঠনঠনে মৃত্তিকা হতে যে মানুষ আপনি সৃষ্টি করেছেন, আমি তাকে সিজ্দা করবার নই।

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِسَجْدٍ لِّشَيْءٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَالِحٍ مِنْ حَيٍّ مَسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

৩৪. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ 'তবে তুমি এখান হতে বের হয়ে যাও, কারণ তুমি অভিশপ্ত।

قَالَ فَأَخْرَجُ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

৩৫. কর্মফল দিবস পর্যন্ত তোমার প্রতি রইলো লা'নত।'

وَأَنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾

৩৬. সে (ইবলীস) বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত আমাকে অবকাশ দিন।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾

৩৭. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ যাদেরকে অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমি তাদের অন্তর্ভুক্ত হলে।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾

৩৮. অবধারিত সময় উপস্থিত হওয়ার দিন পর্যন্ত।

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

৩৯. সে বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি যে আমাকে বিপদগামী করলেন তজ্জন্যে আমি পৃথিবীতে মানুষের নিকট পাপ কর্মকে অবশ্যই শোভনীয় করে তুলবো এবং আমি তাদের সকলকেই বিপথগামী করেই ছাড়ব।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَرِيَنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَالْأَعْيُنُ لَهُمْ جَابِعِينَ ﴿٣٩﴾

৪০. তবে তাদের মধ্যে আপনার নির্বাচিত (নিবেদিত) বান্দাগণ নয়।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخَاصِينَ ﴿٤٠﴾

৪১. তিনি বললেনঃ এটাই আমার নিকট পৌঁছার সরলপথ।

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

৪২. বিভ্রান্তদের মধ্যে যারা তোমার অনুসরণ করবে তারা ছাড়া আমার বান্দাদের উপর তোমার কোন ক্ষমতা থাকবে না।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا
مَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَايِبِينَ ﴿١٧﴾

৪৩. অবশ্যই (তোমার অনুসারীদের) তাদের সবারই নির্ধারিত স্থান হবে জাহান্নাম।

وَأَنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾

৪৪. ওর সাতটি দরজা আছে, প্রত্যেক দরজার জন্যে তাদের মধ্য থেকে একটি অংশকে নির্দিষ্ট করা হবে।

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ
جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿١٩﴾

৪৫. নিশ্চয় মুত্তাকীরা থাকবে প্রস্রবন (বার্ণা) বহল জান্নাতে।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٠﴾

৪৬. (তাদেরকে বলা হবেঃ) তোমরা শান্তি ও নিরাপত্তার সাথে তাতে প্রবেশ কর।

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٢١﴾

৪৭. আমি তাদের অন্তর হতে হিংসা দূর করবো; তারা ভ্রাতৃত্বাবে পরস্পর মুখোমুখি আসনে অবস্থান করবে।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَى
سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٢٢﴾

৪৮. সেথায় তাদেরকে বিষণ্ণতা স্পর্শ করবে না এবং তারা সেথা হতে বহিস্কৃতও হবে না।

لَا يَسْأَلُهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٢٣﴾

৪৯. আমার বান্দাদেরকে সংবাদ দাওঃ নিশ্চয় আমি মহা ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يَبْنَئِي عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٢٤﴾

৫০. আর আমার শান্তি সে অতি পীড়াদায়ক শান্তি।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٢٥﴾

৫১. আর তাদেরকে সংবাদ দাও, ইবরাহীমের (عليه السلام) অতিথিদের কথা।

وَنَبِّئُهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٢٦﴾

৫২. যখন তারা তাঁর নিকট উপস্থিত হয়ে বললেনঃ 'সালাম', তখন তিনি

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ

বলেছিলেনঃ আমরা তোমাদের
আগমনে আতংকিত।

وَجُلُودٌ ۝۳۷

৫৩. তারা (ফেরেশ্তারা) বললোঃ
ভয় করো না, আমরা তোমাকে এক
জ্ঞানী পুত্রের সুসংবাদ দিচ্ছি।

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ۝۳۷

৫৪. সে বললো! তোমরা কি
আমাকে সুসংবাদ দিচ্ছ আমি
বার্ধক্যগ্রস্ত হওয়া সত্ত্বেও? তোমরা কি
বিষয়ে সুসংবাদ দিচ্ছ?

قَالَ ابَشِّرْهُمُوْنِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمَا
تُبَشِّرُونَ ۝۳۸

৫৫. তারা বললোঃ আমরা তোমাকে
সত্য সুসংবাদ দিচ্ছি; সুতরাং তুমি
হতাশ হয়ো না।

قَالُوا بَشِّرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْفٰتِنِينَ ۝۳۹

৫৬. তিনি বললেনঃ যারা পথভ্রষ্ট
তারা ব্যতীত আর কে তার
প্রতিপালকের অনুগ্রহ হতে হতাশ
হয়?

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۝۴০

৫৭. তিনি বললেনঃ (ইবরাহীম عَلَيْهِ السَّلَامُ)
হে প্রেরিতগণ! (ফেরেশ্তাগণ)
তোমাদের আর বিশেষ কি কাজ
(অভিযান) আছে?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝۴১

৫৮. তাঁরা বললেনঃ আমাদেরকে
এক অপরাধী সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে
প্রেরণ করা হয়েছে।

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۝۴২

৫৯. তবে লূতের (عَلَيْهِ السَّلَامُ)
পরিবারবর্গের বিরুদ্ধে নয়, আমরা
অবশ্যই তাদের সকলকে রক্ষা
করবো।

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمَنْجُوهُمْ أَجْمَعِينَ ۝۴৩

৬০. কিন্তু তার স্ত্রীকে নয়; আমরা
স্থির করেছি যে, সে অবশ্যই পশ্চাতে
অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا لِإِنِّهَا كِيسَ الْغٰوِرِينَ ۝۴৪

৬১. ফেরেশ্তাগণ যখন লূত
পরিবারের নিকট আসলেন,

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝۴৫

৬২. তখন লূত (عليه السلام) বললেনঃ
তোমরা তো অপরিচিত লোক।

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّكَرُّونَ ﴿١٧﴾

৬৩. তাঁরা বললেনঃ বরং তারা যে
বিষয়ে সন্দিহান ছিল আমরা তোমার
নিকট তাই নিয়ে এসেছি।

قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَسْتَرْوْنَ ﴿١٨﴾

৬৪. আমরা তোমার নিকট সত্য
সংবাদ নিয়ে এসেছি এবং অবশ্যই
আমরা সত্যবাদী।

وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٩﴾

৬৫. সুতরাং তুমি রাজির কোন এক
সময়ে তোমার পরিবারবর্গসহ বের
হয়ে পড়ো এবং তুমি তাদের
পশ্চাতনুসরণ করো এবং তোমাদের
মধ্যে কেউ যেন পিছনের দিকে ফিরে
না তাকায়; তোমাদেরকে যেথায় যেতে
বলা হচ্ছে তোমরা সেথায় চলে যাও।

فَاسْرِبْهَا لِيكَ بِقَطْعٍ مِّنَ الْآيِلِ وَأَتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ
تُؤْمَرُونَ ﴿٢٠﴾

৬৬. আমি তাকে (লূত (عليه السلام) এই
বিষয়ে প্রত্যাদেশ দিলাম যে, প্রত্যুষে
তাদেরকে সমূলে বিনাশ করা হবে।

وَكَضَيْنَا لِيَّيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَؤُلَاءِ
مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٢١﴾

৬৭. (এদিকে) নগরবাসীরা উল্লাসিত
হয়ে উপস্থিত হলো।

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٢٢﴾

৬৮. তিনি বললেনঃ নিশ্চয় এরা
আমার অতিথি; সুতরাং তোমরা
আমাকে অপমাণিত করো না।

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٢٣﴾

৬৯. তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও
আমাকে হেয় করো না।

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ﴿٢٤﴾

৭০. তারা বললোঃ আমরা কি দুনিয়া
জোড়া লোককে আশ্রয় দিতে নিষেধ
করি নাই?

قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٢٥﴾

৭১. লূত (عليه السلام) বললেনঃ একান্তই
যদি তোমরা কিছু (বিবাহ) করতে চাও
তবে আমার এই কন্যাগণ রয়েছে।

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ﴿٢٦﴾

৭২. হে নবী! তোমার জীবনের শপথ!
ওরা তো মন্ততায় বিমূঢ় হয়েছে।

لَعَبْرَكَ إِنَّهُمْ لَمِنَ لَمَنٍ سَوَّاهُمْ يَعْهَوْنَ ﴿٤٥﴾

৭৩. অতঃপর সূর্যোদয়ের সময়ে এক
বিকট আওয়াজ তাদেরকে পাকড়াও
করলো।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٤٦﴾

৭৪. সুতরাং আমি জনপদকে উল্টিয়ে
উপর-নীচ করে দিলাম এবং তাদের
উপর প্রস্তর-কঙ্কর নিক্ষেপ করলাম।

فَجَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ﴿٤٧﴾

৭৫. অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে
পর্যবেক্ষণ শক্তি সম্পন্ন ব্যক্তিদের
জন্যে।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمَن تَوَسَّيْنَا ﴿٤٨﴾

৭৬. ওটা (ঐ জনপদের ধ্বংস
সত্বূপ) লোক চলাচলের পথের পাশে
এখনও বিদ্যমান।

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٩﴾

৭৭. অবশ্যই এতে মু'মিনদের জন্যে
রয়েছে নিদর্শন।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٠﴾

৭৮. আর 'আয়কাবাসীরাও' (শুয়াইব
عليه السلام এর অনুসারী) তো ছিল
সীমালঙ্ঘনকারী।

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

৭৯. সুতরাং আমি তাদেরকে শাস্তি
দিয়েছি। ওদের উভয়ই তো প্রকাশ্য
পথপার্শ্বে অবস্থিত।

فَأَتَقَمْنَا مِنْهُمْ مَوَائِهِمَا لِيَأْمُرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٢﴾

৮০. হিজরবাসীগণও রাসূলদের প্রতি
মিথ্যা আরোপ করেছিল।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٥٣﴾

৮১. আমি তাদেরকে আমার নিদর্শন
দিয়েছিলাম; কিন্তু তারা তা উপেক্ষা
করেছিল।

وَآتَيْنَهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٥٤﴾

৮২. তারা পাহাড় কেটে গৃহ নির্মাণ
করতো নিরাপদ বাসের জন্যে।

وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

৮৩. অতঃপর প্রভাতকালে এক
বিকট আওয়াজ তাদেরকে পাকড়াও
করলো।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٥٦﴾

৮৪. সূতরাং তারা যা অর্জন করেছিল তা তাদের কোন কাজে আসে নাই।

৮৫. আকাশসমূহ ও পৃথিবী এবং এই দু'য়ের অন্তর্ভুক্তি কোন কিছুই আমি অযথা সৃষ্টি করি নাই এবং কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী; সূতরাং তুমি পরম সৌজন্যের সাথে তাদেরকে ক্ষমা কর।

৮৬. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালকই মহা স্রষ্টা, মহাজ্ঞানী।

৮৭. আমি তো তোমাকে দিয়েছি সাত আয়াত (সূরা ফাতিহা) যা পুনঃপুনঃ আবৃত্ত হয় এবং দিয়েছি মহা কুরআন।

৮৮. আমি তাদের বিভিন্ন শ্রেণীকে ভোগ বিলাসের যে উপকরণ দিয়েছি তার প্রতি তুমি কখনো তোমার চক্ষুদ্বয় প্রসারিত করো না; তাদের অবস্থার জন্যে তুমি চিন্তা করো না; তুমি মু'মিনদের জন্যে তোমার বাহকে অবনমিত করো।

৮৯. আর তুমি বলঃ আমি তো এক প্রকাশ্য ভয় প্রদর্শক।

৯০. যেভাবে আমি অবতীর্ণ করে ছিলাম শপথকারীদের (ইয়াহুদী ও খ্রিস্টানদের) উপর।

৯১. যারা কুরআনকে বিভিন্নভাবে বিভক্ত করেছে। (অর্থাৎ এর কিছু অংশ গ্রহণ ও কিছু বর্জন করে।)

৯২. সূতরাং তোমার প্রতিপালকের শপথ! আমি তাদের সকলকে প্রশ্ন করবই,

৯৩. সেই বিষয়ে যা তারা করত।

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ط وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَبِيلِ ﴿٨٥﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾

لَا تُمَدِّدَنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِبِينَ ﴿٩٠﴾

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

৯৪. অতএব তুমি যে বিষয়ে আদিষ্ট হয়েছো, তা প্রকাশ্যে প্রচার কর এবং মুশরিকদের উপেক্ষা কর।

فَأَصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

৯৫. আমিই যথেষ্ট তোমার জন্যে বিদ্রূপকারীদের বিরুদ্ধে।

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾

৯৬. যারা আল্লাহর সাথে অপর মা'বুদ প্রতিষ্ঠা করেছে! শীঘ্রই তারা জানতে পারবে।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

৯৭. আমি তো জানি যে, তারা যা বলে তাতে তোমার অন্তর সংকুচিত হয়।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

৯৮. সুতরাং তুমি তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা দ্বারা তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর এবং সিজদাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হও।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّن السَّجِدِينَ ﴿٩٨﴾

৯৯. আর তোমার মৃত্যু উপস্থিত হওয়া পর্যন্ত তুমি তোমার প্রতিপালকের ইবাদত কর।

وَأَعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

১। (ক) ইবনে আক্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সময় ফরয নামায শেষে উচ্চস্বরে আল্লাহুর নাম উচ্চারণ করতে করতে লোকেরা ঘরে ফিরত। ইবনে আক্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বর্ণনা করেছেন, যখন আমি যিকির করতে বা উচ্চস্বরে আল্লাহুর নাম উচ্চারণ করতে গুনতাম, তখন বুঝতাম নামায শেষ করে লোকেরা ঘরে ফিরছে। (বুখারী, হাদীস নং ৮৪১)

(খ) ইবনে আক্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, তাকবীরের আওয়াযে আমি বুঝতে পারতাম যে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নামায শেষ হয়ে গিয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৮৪২)

২। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, তোমাদের কেউ কষ্ট ও যাতনায় পড়ে কখনো মৃত্যু কামনা করবে না। আর যদি তাকে মৃত্যু কামনা একান্ত করতাই হয়, তবে সে যেন বলেঃ “আয় আল্লাহ্, যতদিন বেঁচে থাকো আমার জন্য মঙ্গলজনক হয় ততদিন আমাকে জীবিত রাখ, এবং যখন মৃত্যু আমার জন্য উত্তম হয়, তখন আমার মৃত্যু দাও।” (বুখারী, হাদীস নং ৬৩৫১)

সূরাঃ নাহল, মাক্কী

(আয়াতঃ ১২৮, রুকু'ঃ ১৬)

দয়াময় পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. আল্লাহর আদেশ আসবেই; সুতরাং ওটার জন্য তাড়াহুড়া করো না; তিনি মহিমাম্বিত এবং তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধ্বে।

২. তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা নির্দেশ সম্বলিত ওহী সহ ফেরেশতা প্রেরণ করেন, এই মর্মে সতর্ক করবার জন্যে যে, আমি ছাড়া কোন সত্য মা'বুদ নেই; সুতরাং আমাকে ভয় কর।

৩. তিনি যথাযথভাবে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন; তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধ্বে।

৪. তিনি শুক্র হতে মানুষ সৃষ্টি করেছেন; অথচ দেখো, সে প্রকাশ্য বিতভাকারী!

৫. তিনি চতুষ্পদ জন্তু সৃষ্টি করেছেন; তোমাদের জন্যে ওতে শীত নিবারক উপকরণ ও বহু উপকরণ রয়েছে এবং ওটা হতে তোমরা আহাৰ্য পেয়ে থাকো।

৬. আর যখন তোমরা সন্ধ্যাকালে ওদেরকে চারণভূমি হতে গৃহে নিয়ে আসো এবং প্রভাতে যখন ওদেরকে চারণ ভূমিতে নিয়ে যাও, তখন তোমরা ওর সৌন্দর্য উপভোগ কর।

سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٢٨ رُكُوعَاتُهَا ١٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَيْ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَانَهُ
وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ①

يُنزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْزِلُوهَا أَتَى
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ②

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعَالَى
عَمَّا يُشْرِكُونَ ③

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ
خَصِيمٌ مُبِينٌ ④

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ
وَمَنْفَعٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ⑤

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ⑥

৭. আর ওরা তোমাদের ভারবহন করে নিয়ে যায় দূর দেশে যেথায় প্রাণান্ত ক্লেশ ব্যতীত তোমরা পৌছতে পারতে না; তোমাদের প্রতিপালক অবশ্যই স্নেহশীল, পরম দয়ালু।

৮. তোমাদের আরোহণের জন্যে ও শোভার জন্যে তিনি সৃষ্টি করেছেন ঘোড়া, খচ্চর, গাধা এবং তিনি সৃষ্টি করেন এমন অনেক কিছু যা তোমরা অবগত নও।

৯. সরল পথ আল্লাহর কাছে পৌছায়; কিন্তু পথগুলির মধ্যে বক্রপথও আছে; তিনি ইচ্ছা করলে তোমাদের সকলকেই সৎপথে পরিচালিত করতেন।

১০. তিনিই আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন, ওতে তোমাদের জন্যে রয়েছে, পানীয় এবং তা হতে জন্মায় উদ্ভিদ যাতে তোমরা পশুচারণ করে থাকো।

১১. তিনি তোমাদের জন্যে ওর দ্বারা জন্মায় শস্য, যায়তুন, খেজুর বৃক্ষ, আঙ্গুর এবং সর্বপ্রকার ফল; অবশ্যই এতে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে রয়েছে নিদর্শন।

১২. তিনিই তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন রজনী, দিবস, সূর্য এবং চন্দ্রকে; আর নক্ষত্ররাজিও অধীন হয়েছে তাঁরই হুকুমে; অবশ্যই এতে বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে রয়েছে নিদর্শন।

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَدَلٍ لَّمْ تَكُونُوا بِلِغِيهِ
إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرؤُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾

وَالْخَيْلِ وَالْبِغَالِ وَالْحِمْيِرَ لَتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ
وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِزٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ
لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ
شَرَابٌ ۚ وَمِنْهُ شَجْرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ
وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾

وَسَخَّرَ لَكُمْ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ
وَالنُّجُومَ مَسْحَرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٢﴾

১৩. আর তোমাদের জন্যে পৃথিবীতে রং বেরং এর যা কিছু সৃষ্টি করেছেন; এতে রয়েছে নিদর্শন সেই সম্প্রদায়ের জন্যে যারা উপদেশ গ্রহণ করে।

১৪. তিনিই সমুদ্রকে অধীন করেছেন যাতে তোমরা তাহতে তাজা মৎস্যাহার করতে পার এবং যাতে তা হতে আহরণ করতে পার রত্নাবলী যা তোমরা ভূষণরূপে পরিধান কর; এবং তোমরা দেখতে পাও, ওর বুক চিরে নৌযান চলাচল করে এবং তা এজন্য যে, তোমরা যেন তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার এবং তোমরা যেন কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

১৫. আর তিনি পৃথিবীতে সুদৃঢ় পর্বত স্থাপন করেছেন, যাতে পৃথিবী তোমাদেরকে নিয়ে আন্দোলিত না হয় এবং স্থাপন করেছেন নদ-নদী ও পথ, যাতে তোমরা তোমাদের গন্তব্য স্থলে পৌঁছতে পার।

১৬. আর পথ নির্ণায়ক চিহ্নসমূহও; এবং ওরা নক্ষত্রের সাহায্যেও পথের নির্দেশ পায়।

১৭. সুতরাং যিনি সৃষ্টি করেন, তিনি কি তারই মত, যে সৃষ্টি করে না? তবুও কি তোমরা শিক্ষা গ্রহণ করবে না?

১৮. তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহ গণনা করলে ওর সংখ্যা নির্ণয় করতে পারবে না; আল্লাহ অবশ্যই ক্ষমাপরায়ণ, পরম দয়ালু।

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ط
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَذَكَّرُونَ ﴿۱۳﴾

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِيَتَأْكَلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا
وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا
وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَآخِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿۱۴﴾

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ
وَأَنْهَارًا وَسَبِيلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿۱۵﴾

وَعَلَّمَتْ ط وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿۱۶﴾

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ط
أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿۱۷﴾

وَأِنَّ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوها ط إِنَّ اللَّهَ
لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿۱۸﴾

১৯. তোমরা যা গোপন রাখো এবং যা প্রকাশ কর আল্লাহ তা জানেন।

২০. তারা আল্লাহ ছাড়া অপর যাদেরকে আহ্বান করে তারা কিছুই সৃষ্টি করে না, তাদেরকেই সৃষ্টি করা হয়।

২১. তারা নিশ্চয়, নির্জীব এবং পুনরুত্থান কবে হবে, সে বিষয়ে তাদের কোন চেতনা (বোধ) নেই।

২২. তোমাদের মা'বুদ এক মা'বুদ; সুতরাং যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না তাদের অন্তর সত্য বিমুখ এবং তারা অহংকারী।

২৩. এটা নিঃসন্দেহ যে, আল্লাহ জানেন যা তারা গোপন করে এবং যা তারা প্রকাশ করে; তিনি অহংকারীকে পছন্দ করেন না।

২৪. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমাদের প্রতিপালক কি অবতীর্ণ করেছেন? উত্তরে তারা বলেঃ পূর্ববর্তীদের উপকথা।

২৫. ফলে কিয়ামত দিবসে তারা বহন করবে তাদের পাপভার পূর্ণমাত্রায় এবং পাপভার তাদেরও যাদেরকে তারা অজ্ঞতা হেতু বিভ্রান্ত করেছে; দেখো, তারা যা বহন করবে তা কতই না নিকট!

২৬. তাদের পূর্ববর্তীগণও চক্রান্ত করেছিল; আল্লাহ তাদের ইমারতের ভিত্তিমূলে আঘাত করেছিলেন; ফলে, ইমারতের ছাদ তাদের উপর ধসে পড়লো এবং তাদের প্রতি শাস্তি

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿٢٠﴾

أَمْ أَاتَتْ غَيْرَ أَحْيَاءٍ ۗ وَمَا يَشْعُرُونَ ۗ لَا يَأْتِيَانِ يَبْعَثُونَ ﴿٢١﴾

إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكِرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا ۗ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَ مِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضَلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَزُرُونَ ﴿٢٥﴾

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاتَى اللَّهُ بُدْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

আসলো এমন দিক হতে যা ছিল তাদের ধারণাতীত।

২৭. পরে, কিয়ামতের দিনে তিনি তাদেরকে লাঞ্ছিত করবেন এবং বলবেনঃ কোথায় আমার সে সব শরীক যাদের সম্বন্ধে তোমরা বিতর্ক করতে? যাদেরকে জ্ঞান দান করা হয়েছিল তারা বলবেঃ আজ লাঞ্ছনা ও অমঙ্গল কাফিরদের।

২৮. যাদের মৃত্যু ঘটায় ফেরেশতাগণ তারা নিজেদের প্রতি যুলুম করতে থাকা অবস্থায়; অতপর তারা আত্মসমর্পণ করে বলবেঃ আমরা কোন মন্দকর্ম করতাম না; হাঁ, তোমরা যা করতে সে বিষয়ে আল্লাহ সবিশেষ অবহিত।

২৯. সুতরাং তোমরা দ্বারগুলি দিয়ে জাহান্নামে প্রবেশ কর, সেথায় স্থায়ী হবার জন্যে; দেখো, অহংকারীদের আবাসস্থল কত নিকৃষ্ট।

৩০. আর যারা মুত্তাকী ছিল তাদেরকে বলা হবেঃ তোমাদের প্রতিপালক কি অবতীর্ণ করেছিলেন? তারা বলবেঃ মহাকল্যাণ যারা সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে এই দুনিয়ায় মঙ্গল এবং আখেরাতের আবাস আরো উৎকৃষ্ট; আর মুত্তাকীদের আবাসস্থল কত উত্তম!

৩১. ওটা স্থায়ী জান্নাত যাতে তারা প্রবেশ করবে; ওর পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; তারা যা কিছু কামনা করবে তাতে তাদের জন্যে

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِبُهُمْ وَيَقُولُ آيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَشَاقِقُونَ فِيهِمْ ط قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمْ الْهَلِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ ط فَالْقَوْمَ السَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْبُدُ مِنْ سُوءٍ ط بَلَى إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ط فَلَيْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلْ رَبُّكُمْ ط قَالُوا خَيْرًا ط لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ط وَكَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ط وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

جَنَّتْ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْإِنهْرُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ط كَذَلِكَ

তাই থাকবে; এভাবেই আল্লাহ পুরস্কৃত করেন মুত্তাকীদেরকে।

يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿١٦﴾

৩২. ফেরেশতাগণ যাদের মৃত্যু ঘটায় পবিত্র থাকা অবস্থায়; ফেরেশতাগণ বলবেন, তোমাদের প্রতি শান্তি! তোমরা যা করতে তার ফলে জান্নাতে প্রবেশ কর।

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمْ الْمَلَكُةُ طَيِّبِينَ لَا يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

৩৩. তারা শুধু প্রতীক্ষা করে তাদের কাছে ফেরেশতা আগমনের অথবা তোমার প্রতিপালকের হুকুম আগমনের; ওদের পূর্ববর্তীগণ এরূপই করত, আল্লাহ তাদের প্রতি কোন যুলুম করেন নি; কিন্তু তারা নিজেদের প্রতি যুলুম করতো।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَكُةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرٌ رَبِّكَ ۖ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٧﴾

৩৪. সুতরাং তাদের প্রতি আপত্তি হয়েছিল তাদেরই মন্দ কর্মের শাস্তি এবং তাদেরকে পরিবেষ্টন করেছিল ওটাই যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مِمَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٧﴾

৩৫. মুশরিকরা বলবেঃ আল্লাহ ইচ্ছা করলে আমাদের পিতৃ পুরুষরা ও আমরা তাঁর ব্যতীত অপর কোন কিছুর ইবাদত করতাম না এবং তাঁর নির্দেশ ব্যতীত আমরা কোন কিছু নিষিদ্ধ করতাম না; তাদের পূর্ববর্তীরা এরূপই করতো; রাসূলদের কর্তব্য তো শুধু সুস্পষ্ট বাণী প্রচার করা।

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ فَهَلْ عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

৩৬. আল্লাহর ইবাদত করবার ও তাগুতকে বর্জন করবার নির্দেশ

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন। রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমি এবং মানুষের দৃষ্টান্ত সেই ব্যক্তির ন্যায় যে, আগুন জ্বালানো। আর আগুন যখন তার চারপাশ আলোকিত করল, পতঙ্গ এবং যে সমস্ত প্রাণী আগুনে ঝাঁপ দেয় সেগুলো ঝাঁপ দিতে লাগল। তখন সে ব্যক্তি সেগুলোকে (আগুন থেকে) ফিরাবার

দিবার জন্যে আমি তো প্রত্যেক জাতির মধ্যেই রাসূল পাঠিয়েছি; অতঃপর তাদের কতককে আল্লাহ সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তাদের কতকের উপর পথ ভ্রান্তি সাব্যস্ত হয়েছিল; সুতরাং পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং দেখো, যারা সত্যকে মিথ্যা বলেছে তাদের পরিণাম কি হয়েছে।

৩৭. তুমি তাদের পথ প্রদর্শন করতে আগ্রহী হলেও আল্লাহ যাকে বিভ্রান্ত করেছেন, তাকে তিনি সৎপথে পরিচালিত করবেন না এবং তাদের কোন সাহায্যকারীও নেই।

৩৮. তারা দৃঢ়তার সাথে আল্লাহর শপথ করে বলেঃ যার মৃত্যু হয় আল্লাহ তাকে পুনর্জীবিত করবেন না; কেন নয়, তিনি তাঁর প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করবেনই; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

৩৯. (তিনি পুনরুত্থিত করবেন) যে বিষয়ে তাদের মতানৈক্য ছিল তা তাদেরকে স্পষ্টভাবে দেখাবার জন্যে এবং যাতে কাফিররা জানতে পারে যে, তারাই ছিল মিথ্যাবাদী।

৪০. আমি কোন কিছু ইচ্ছা করলে সে বিষয়ে আমার কথা শুধু এই যে, আমি বলিঃ ‘হও’ ফলে তা হয়ে যায়।

৪১. যারা অত্যাচারিত হবার পর আল্লাহর পথে হিজরত করেছে, আমি

وَاجْتَبُوا الطَّاغُوتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللَّهُ
وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۖ فَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

إِنْ تَحْرُصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
مَنْ يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٣٨﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ
مَنْ يُمُوتُ ۖ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلِفُونَ فِيهِ وَيَعْلَمَ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ﴿٤٠﴾

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤١﴾

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا

চেষ্টা করল, তা সত্ত্বেও সেগুলো আন্তনে পুড়ে মরে। (তদ্রূপ) আমিও তোমাদের কোমর ধরে আন্তন থেকে বাঁচাবার চেষ্টা করি; কিন্তু তোমরা তাতে পতিত হও। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮৩)

অবশ্যই তাদেরকে দুনিয়ায় উত্তম
আবাস প্রদান করবো এবং
আখেরাতের পুরস্কারই তো শ্রেষ্ঠ;
হায়! তারা যদি ওটা জানতো!

৪২. তারা ধৈর্যধারণ করে ও তাদের
প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

৪৩. (হে নবী ﷺ)! তোমার পূর্বে
আমি ওহীসহ মানুষই প্রেরণ
করেছিলাম, তোমরা যদি না জান
তবে জ্ঞানীদেরকে জিজ্ঞাস কর।

৪৪. প্রেরণ করেছিলাম স্পষ্ট নিদর্শন
ও গ্রন্থসহ এবং তোমার প্রতি কুরআন
অবতীর্ণ করেছি, মানুষকে স্পষ্টভাবে
বুঝিয়ে দেয়ার জন্যে যা তাদের প্রতি
অবতীর্ণ করা হয়েছিল, যাতে তারা
চিন্তা করে।

৪৫. যারা কুকর্মের ষড়যন্ত্র করে তারা
কি এ বিষয়ে নিশ্চিত আছে যে,
আল্লাহ তাদেরকে ভূগর্ভে বিলীন
করবেন না অথবা এমন দিক হতে
শাস্তি আসবে না যা তাদের
ধারণাতীত?

৪৬. অথবা চলাফেরা করতে
থাকাকালে তিনি তাদেরকে ধৃত
করবেন না? তারা তো এটা ব্যর্থ
করতে পারবে না।

৪৭. অথবা তাদেরকে তিনি ভীত-
সন্ত্রস্ত অবস্থায় ধৃত করবেন না?
তোমাদের প্রতিপালক তো অবশ্যই
দয়ালু, পরম দয়ালু।

৪৮. তারা কি লক্ষ্য করে না আল্লাহর
সৃষ্ট বস্তুর প্রতি যার ছায়া দক্ষিণে ও

لَنُبَوِّئَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَا جَزَاءَ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٣﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجُلًا نُوحِيَ إِلَيْهِمْ
فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۖ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٥﴾

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ
بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَاتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٦﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلِبِهِمْ فَبِمَا هُمْ سُعْجِرِينَ ﴿٤٧﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ ۖ فَإِنَّ رَبَّهُمْ
لَرؤُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٨﴾

أَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَفَتَّحُونَ ظِلَّهُ

বামে চলে পড়ে বিনীতভাবে আল্লাহর প্রতি সিজ্দাবনত হয়?

عَنِ الْيَسِينِ وَالشَّجَائِلِ سَجْدًا لِلَّهِ وَهُمْ دَخِرُونَ ﴿٥٨﴾

৪৯. আল্লাহকেই সিজ্দা করে যা কিছু আছে আকাশমন্ডলীতে, পৃথিবীতে যত জীব-জন্তু আছে সে সমস্ত এবং ফেরেশতাগণও। তারা অহংকার করে না।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٥٩﴾

৫০. তারা ভয় করে, তাদের উপর পরাক্রমশালী তাদের প্রতিপালককে এবং তাদেরকে যা আদেশ করা হয় তারা তা করে।

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ قُوَّتِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦٠﴾

৫১. আল্লাহ বললেনঃ তোমরা দু'ইলাহ গ্রহণ করো না; তিনিই তো একমাত্র ইলাহ। সুতরাং তোমরা আমাকেই ভয় কর।^১

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذْ دَا إِلَهَيْنِ إِلَّا مَا هُوَ إِلَهٌُ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْجِعُونَ ﴿٦١﴾

৫২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা তারই এবং নিরবচ্ছিন্ন আনুগত্য তাঁরই প্রাপ্য; তোমরা কি আল্লাহ ব্যতীত অন্যকে ভয় করবে?

وَلَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَأَصْبَاطُ أَعْيُنِ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٦٢﴾

৫৩. তোমরা যেসব নিয়ামত ভোগ কর তা তো আল্লাহরই নিকট হতে; আবার যখন দুঃখ দৈন্য তোমাদেরকে স্পর্শ করে তখন তোমরা তাঁকেই ব্যাকুলভাবে আহ্বান কর।

وَمَا يَكُمُ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْعَرُونَ ﴿٦٣﴾

৫৪. আবার যখন আল্লাহ তোমাদের দুঃখ-দৈন্য দূরীভূত করেন তখন

ثُمَّ إِذَا كَسَفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِحْتُمْ مِنْكُمْ

১। উবাদা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে সাক্ষ্য দিল, আল্লাহ্ ভিন্ন আর কোন সত্য ইলাহ নেই, তিনি একক, তাঁর কোন শরীক নেই, আর মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর বান্দা ও রাসূল। আর নিশ্চয় ঈসা (আলাইহিস্‌সালাম) আল্লাহর বান্দা, তাঁর রাসূল ও তাঁর সেই কালেমা-যা তিনি মারইয়ামকে পৌছিয়েছেন এবং তাঁর পক্ষ থেকে একটি 'রুহ' মাত্র, জান্নাত সত্য, জাহান্নাম সত্য, তার আমল যা-ই হোক, আল্লাহ্ তাকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন। আর (অন্য সনদে) জুনাদা এ কথাগুলো বাড়িয়ে বলেছেন, জান্নাতের আট দরজার যে কোন দরজা দিয়েই সে চাইবে (আল্লাহ্ তাকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন।) (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৩৫)

তোমাদের একদল তাদের
প্রতিপালকের সাথে শরীক করে।

بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٧﴾

৫৫. আমি তাদেরকে যা দান করেছি
তা অস্বীকার করবার জন্যে; সুতরাং
তোমরা ভোগ করে নাও, অচিরেই
জানতে পারবে।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ ط فَتَسْتَعْوَدُوا

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٨﴾

৫৬. আমি তাদেরকে যে রিয্ক দান
করি তারা তার এক অংশ নির্ধারিত
করে তাদের (বাতিল মা'বুদের)
জন্যে, যাদের সম্বন্ধে তারা কিছুই
জানে না; শপথ আল্লাহর! তোমরা
যে মিথ্যা উদ্ভাবন কর সে সম্বন্ধে
তোমাদেরকে অবশ্যই প্রশ্ন করা হবে।

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا

رَزَقْنَاهُمْ ط تَاللَّهِ لَتَسْتَلْنَ عَمَّا كُنْتُمْ

تَقْتَرُونَ ﴿٥٩﴾

৫৭. তারা নির্ধারণ করে আল্লাহর
জন্যে কন্যা সন্তান। তিনি পবিত্র,
মহিমান্বিত এবং তাদের জন্যে ওটাই
যা তারা কামনা করে।

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ لَا لَهُمْ

مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٦٠﴾

৫৮. তাদের কাউকেও যখন কন্যা
সন্তানের সুসংবাদ দেয়া হয় তখন
তার মুখমন্ডল কালো হয়ে যায় এবং
সে অসহনীয় মনস্তাপে ক্লিষ্ট হয়।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ

مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٦١﴾

৫৯. তাকে যে সংবাদ দেয়া হয়,
তার গ্লানী হেতু সে নিজ সম্প্রদায়
হতে আত্মগোপন করে; সে চিন্তা
করে যে, হীনতা সত্ত্বেও সে তাকে
রেখে দিবে, না মাটিতে পুঁতে দিবে।
সাবধান! তারা যা সিদ্ধান্ত করে তা
কতই না নিকৃষ্ট।

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ط

أَيْسِسْكَ عَلَىٰ هُوْنٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ط

أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٦٢﴾

১। মুগীরা ইবনে শু'বার লেখক (কেরানী) ওয়াররাদ থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, মুয়াবিয়া (রাযিআল্লাহু আনহু) মুগীরাকে লিখলেন, তুমি রাসুলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে যা কিছু শুনেছ তা আমার কাছে লিখে পাঠাও। এরপর তিনি তাঁর কাছে লিখে পাঠলেন যে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) প্রত্যেক নামাযের শেষে বলতেন, 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু ওয়াহদাহু লা-শারীকা লাহ, লাহল মুলকু

৬০. যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না, তারা নিকট প্রকৃতির অধিকারী আর আল্লাহর জন্য রয়েছে মহতম গুণ ও উদাহরণ; এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

৬১. আল্লাহ যদি মানুষকে তাদের সীমালঙ্ঘনের জন্যে শাস্তি দিতেন, তবে ভূ-পৃষ্ঠে কোন জীব-জন্তুকেই রেহাই দিতেন না; কিন্তু তিনি এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত তাদেরকে অবকাশ দিয়ে থাকেন; অতপর যখন তাদের সময় আসে তখন তারা মুহূর্তকাল বিলম্ব অথবা অগ্রগামী করতে পারে না।

৬২. যা তারা অপছন্দ করে তাই তারা আল্লাহর প্রতি আরোপ করে; তাদের জিহ্বা মিথ্যা বর্ণনা করে যে মঙ্গল তাদেরই জন্যে; স্বতঃসিদ্ধ কথা যে, নিশ্চয়ই তাদের জন্যে আছে অগ্নি এবং তাদেরকেই সর্বাগ্রে তাতে নিক্ষেপ করা হবে।

৬৩. শপথ আল্লাহর! আমি তোমার পূর্বেও বহু জাতির নিকট (রাসূল) প্রেরণ করেছি; কিন্তু শয়তান ঐ সব জাতির কার্যকলাপ তাদের দৃষ্টিতে

لَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۗ
وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ
عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ
مُّسَمًّى ۚ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَخِرُونَ سَاعَةً
وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ
الْكُذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ
النَّارَ وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ۝

تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ
فَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمٰلَهُمْ فَهُوَ

ওলাহুল হামদু ওহুয়া 'আলা কুল্লি শাইয়িন্ ক্বাদির।' আল্লাহুমা লা-মানেরা লিমা আতাইতা অলা মু'তিয়া লিমা মানা'তা অলা ইয়ানফায়ু যালজাদ্বে মিনকাল জাদ্দু। অর্থঃ "আল্লাহ ছাড়া সত্য কোন মা'বুদ (ইলাহ) নেই, তিনি একক, তাঁর কোন শরীক নেই, বাদশাহী তাঁর, প্রশংসা ও তাঁর এবং তিনি সবকিছু করতে সক্ষম। আয় আল্লাহ্ আপনি যা দান করেন তার নিষেধকারী কেউ নেই, আর যা আপনি নিষেধ করেন তার দাতাও কেউ নেই, (আর ধনী ব্যক্তির ধন আপনার নিকট (তার) কোন কাজে আসবে না।)

মুগীরা আরো লিখেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) খামাখা মানুষের গায়ে পড়ে কথা বলা ও মতভেদ করা, বিনা প্রয়োজনে অধিক প্রশ্ন করা, অনর্থক ধন-সম্পদ নষ্ট করতে নিষেধ করেছেন। মায়েদের অবাধ্য হতে, কন্যা-সন্তানকে জ্যান্ত কবর দিতে, অধিকারীর অধিকার প্রদানে অস্বীকার করতে এবং অনধিকারভাবে অধিকার চাইতেও নিষেধ করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৯২)

শোভন করেছিল; সুতরাং সে আজ তাদের অভিভাবক এবং তাদেরই জন্যে পীড়াদায়ক শাস্তি।

৬৪. আমি তো তোমার প্রতি কিতাব অবতীর্ণ করেছি যারা এ বিষয়ে মতভেদ করে তাদেরকে সুস্পষ্টভাবে বুঝিয়ে দিবার জন্যে এবং মু'মিনদের জন্যে পথ নির্দেশ ও দয়া স্বরূপ।

৬৫. আল্লাহ আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন এবং তার দ্বারা তিনি ভূমিকে ওর মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত করেন; অবশ্যই এতে নিদর্শন আছে, যে সম্প্রদায় কথা শুনে তাদের জন্যে।

৬৬. অবশ্যই (গৃহপালিত) চতুষ্পদ জন্তুর মধ্যে তোমাদের জন্যে শিক্ষা রয়েছে; ওগুলির উদরস্থিত গোবর ও রক্তের মধ্য হতে তোমাদেরকে আমি পান করাই বিশুদ্ধ দুগ্ধ, যা পানকারীদের জন্যে সুস্বাদু।

৬৭. আর খেজুর গাছের ফল ও আঙ্গুর হতে তোমরা মাদক (যা হারাম হওয়ার পূর্বে) ও উত্তম খাদ্য গ্রহণ করে থাকো, এতে অবশ্যই বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে রয়েছে নিদর্শন।

৬৮. তোমার প্রতিপালক মৌমাছির অন্তরে এ নির্দেশ জাগিয়ে দিলো যে, তুমি গৃহ নির্মাণ কর পাহাড়ে, বৃক্ষে এবং মানুষ যে গৃহ নির্মাণ করে তাতে।

৬৯. এরপর প্রত্যেক ফল হতে কিছু কিছু আহার কর, অতঃপর তোমার প্রতিপালকের সহজ পথ অনুসরণ

وَلِيَهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا تَبَيِّنَ لَهُمُ
الَّذِي اختلفوا فيه وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٦٥﴾

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ
يَسْمَعُونَ ﴿٦٦﴾

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً لِّسُقْيِكُمْ مِمَّا
فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا
سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ﴿٦٧﴾

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ
مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنْ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ
بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٦٩﴾

ثُمَّ كَلَّمْنِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَأَسْلُمْنِي سُبُلَ
رَبِّكَ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ

কর; ওর উদর হতে নির্গত হয় বিবিধ বর্ণের পানীয়; যাতে মানুষের জন্যে রয়েছে রোগমুক্তি; অবশ্যই এতে রয়েছে নিদর্শন চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে।

৭০. আল্লাহই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন; অতঃপর তিনি তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন এবং তোমাদের মধ্যে কাউকে কাউকে উপনীত করা হয় অকর্মণ্য পূর্ণ বার্ষিক্য বয়সে; ফলে তারা অনেক কিছু জানার পরও সজ্ঞান থাকবে না; আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

৭১. আল্লাহ জীবনোপকরণে তোমাদের একজনকে অন্য জনের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছেন; যাদেরকে শ্রেষ্ঠত্ব দেয়া হয়েছে তারা তাদের অধীনস্থ দাস-দাসীদেরকে নিজেদের জীবনোপকরণ হতে এমন কিছু দেয় না, যাতে তারা এ বিষয়ে তাদের সমান হয়ে যায়; তবে কি তারা আল্লাহর অনুগ্রহ অস্বীকার করে?

مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ط
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٧٠﴾

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَقَّكُمْ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُجْرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ط إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧١﴾

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ط
فَمَا الَّذِينَ فَضَّلُوا بَرَّادِي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ط أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٧١﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) সারাকে নিয়ে হিজরত করেছিলেন। তাঁকে সঙ্গে নিয়ে যখন তিনি এমন একটি জনপদে উপস্থিত হলেন, যেখানে এক বাদশাহ অথবা (বর্ণনাকারীর সন্দেহ) কোন এক অভ্যাচারী থাকত। তাকে (বাদশাহকে বা অভ্যাচারীকে) অবহিত করা হল যে, ইবরাহীম একজন নারীসহ আগমন করেছে, যে নারীদের মধ্যে সবচাইতে সুন্দরী ও সুশ্রী। তাই সে (বাদশাহ বা অভ্যাচারী) তাঁর (ইবরাহীমের) কাছে এই মর্মে জানতে চেয়ে লোক পাঠালো যে, হে ইবরাহীম! তোমার সঙ্গিনী মহিলাটি কে? তিনি বললেন, আমার বোন। অতপর সারার কাছে গিয়ে তাঁকে বললেন, আমার কথাকে মিথ্যা প্রমাণ করো না। আমি তাদেরকে জানিয়েছি যে, তুমি আমার বোন। আল্লাহর শপথ! গোটা এই এলাকায় (দেশে) আমি আর তুমি ব্যতীত কোন ঈমানদার নেই। এরপর তিনি তাঁকে (সারাকে) বাদশাহর কাছে পাঠালেন। বাদশাহ তাঁর কাছে গেলে তিনি (সারা) উঠলেন, ওয়ূ করলেন, নামায পড়লেন এবং এই বলে দু'আ করলেন, হে আল্লাহ! আমি সত্যিকারভাবেই যদি তোমার ও তোমার রাসূলের প্রতি ঈমান এনে থাকি আর আমার স্বামী ব্যতীত অন্য সবার থেকে আমার সতীত্ব হেফাজত ও রক্ষা করে থাকি, তাহলে কাকেরকে আমার ওপর আধিপত্য প্রদান করো না। তৎক্ষণাৎ সে (বাদশাহ মাটিতে পড়ে) সংজ্ঞাহীন হয়ে

৭২. আর আল্লাহ তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্য হতেই জোড়া সৃষ্টি করেছেন এবং তোমাদের জোড়া হতে তোমাদের জন্যে পুত্র, পৌত্রাদি সৃষ্টি করেছেন এবং উত্তম জীবনোপকরণ দান করেছেন; তবুও কি তারা মিথ্যাতে বিশ্বাস করবে এবং তারা কি আল্লাহর অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

৭৩. এবং তারা কি ইবাদত করবে আল্লাহ ছাড়া অপরের যাদের আকাশমন্ডলী অথবা পৃথিবী হতে কোন জীবনোপকরণ সরবরাহ করার শক্তি নেই এবং তারা কিছুই করতে সক্ষম নয়।

৭৪. সুতরাং তোমরা আল্লাহর কোন সদৃশ স্থির করো না; আল্লাহ জানেন এবং তোমরা জান না।

৭৫. আল্লাহ উপমা দিচ্ছেন অপরের অধিকারভুক্ত এক দাসের যে কোন কিছুর উপর শক্তি রাখে না এবং এমন এক ব্যক্তির যাকে তিনি নিজ হতে উত্তম রিয়ক দান করেছেন এবং

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٧٢﴾

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾

فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّْا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا ط هَلْ يَسْتَوُونَ ط

গেল এবং পা রগড়াতে শুরু করল। তখন সারা বললেন, হে আল্লাহ! যদি সে এখন মৃত্যুবরণ করে তাহলে বলা হবে যে, সেই মহিলাটিই তাকে হত্যা করেছে। সুতরাং তার (বাদশাহর) উক্ত অবস্থা বিদূরিত হয়ে গেলে সে আবার তাঁর (সারার) কাছে এগিয়ে গেল। তখন তিনি (সারা) উঠে উয় করেন, নামায আদায়ের পর দু'আ করলেন, হে আল্লাহ! আমি যদি সত্যিই তোমার ও তোমার রাসুলের প্রতি ঈমান এনে থাকি এবং আমার স্বামী ব্যতীত অন্য সবার থেকে আমার সতীত্বকে রক্ষা করে থাকি তাহলে এ কাফেরকে আমার ওপর আধিপত্য প্রদান করো না। (একথা বলার সাথে সাথে) সে (বাদশা) মাটিতে পড়ে সংজ্ঞা হারিয়ে ফেলল এবং পা রগড়াতে শুরু করল। তখন সারা বললেন, হে আল্লাহ! (এখন) যদি সে মৃত্যুবরণ করে তাহলে বলা হবে এ মহিলাটি তাকে (বাদশাহকে) হত্যা করেছে। সুতরাং দ্বিতীয় অথবা তৃতীয় বারের পর সে বলল, আল্লাহর শপথ! তোমরা আমার নিকট এক শয়তান বৈ প্রেরণ কর নাই। তাকে ইবরাহীমের নিকট নিয়ে যাও এবং আজারকে (হাজেরাকে) তাকে প্রদান কর। তখন তিনি (সারা) ইবরাহীমের কাছে ফিরে আসলেন এবং তাঁকে লক্ষ্য করে বললেন, আপনি কি উপলব্ধি করেছেন যে, আল্লাহ কাফেরকে নিরাশ, লাঞ্চিত ও মনোক্ষুণ্ন করেছেন এবং একজন সেবিকা প্রদান করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ২২১৭)

সে তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে; তারা কি একে অপরের সমান? সকল প্রশংসা আল্লাহরই প্রাপ্য; অথচ তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

الْحَمْدُ لِلَّهِ طَبْلٌ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٥﴾

৭৬. আল্লাহ আরো উপমা দিচ্ছেন দু'ব্যক্তির: ওদের একজন বধির, কোন কিছুরই শক্তি রাখে না এবং সে তার প্রভুর উপর ভার স্বরূপ; তাকে যেখানেই পাঠানো হোক না কেন, সে ভাল কিছুই করে আসতে পারে না; সে কি সমান হবে ঐ ব্যক্তির যে, ন্যায়ের নির্দেশ দেয় এবং যে আছে সরল পথে?

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكُمُ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ لَا يُؤْنَمَا يُؤْجِهَةٌ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ط هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾

৭৭. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান আল্লাহরই এবং কিয়ামতের ব্যাপার তো চক্ষুর পলকের ন্যায়; বরং ওর চেয়েও সত্বর; আল্লাহ সব বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

وَاللَّهُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ط إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٧﴾

৭৮. আর আল্লাহ তোমাদেরকে নির্গত করেছেন তোমাদের মাতৃগর্ভ হতে এমন অবস্থায় যে, তোমরা কিছুই জানতে না এবং তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন শ্রবণশক্তি, দৃষ্টিশক্তি এবং হৃদয় যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٨﴾

৭৯. তারা কি লক্ষ্য করে না আকাশের শূণ্য গর্ভে নিয়ন্ত্রণাধীন পাখিদের প্রতি? আল্লাহই ওদেরকে স্থির রাখেন; অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الظَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ ط مَا يُنْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٤٩﴾

৮০. এবং আল্লাহ তোমাদের গৃহকে করেন তোমাদের আবাস স্থল, আর

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ

তিনি তোমাদের জন্যে পশু-চর্মের তাঁবুর ব্যবস্থা করেন; তোমরা ভ্রমণকালে তা সহজে বহন করতে পার এবং অবস্থানকালে সহজে খাটাতে পার, আর তিনি তোমাদের জন্যে ব্যবস্থা করেন ওদের পশম, লোম ও কেশ হতে কিছু কালের গৃহ সামগ্রীও ব্যবহার উপকরণ।

৮১. আর আল্লাহ যা কিছু সৃষ্টি করেছেন তা হতে তিনি তোমাদের জন্যে ছায়ার ব্যবস্থা করেন এবং তোমাদের জন্যে পাহাড়ে আশ্রয়ের ব্যবস্থা করেন এবং তোমাদের জন্যে ব্যবস্থা করেন পরিধেয় বস্ত্রের; ওটা তোমাদেরকে তাপ হতে রক্ষা করে এবং তিনি ব্যবস্থা করেন তোমাদের জন্যে বর্মের, ওটা তোমাদেরকে যুদ্ধে রক্ষা করে; এইভাবে তিনি তোমাদের প্রতি তাঁর অনুগ্রহ পূর্ণ করেন যাতে তোমরা আত্মসমর্পণ কর।

৮২. অতপর তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তোমার কর্তব্য তো শুধু স্পষ্টভাবে বাণী পৌঁছিয়ে দেয়া।

৮৩. তারা আল্লাহর অনুগ্রহ জ্ঞাত আছে; কিন্তু সেগুলি তারা অস্বীকার করে এবং তাদের অধিকাংশই কাফির।

৮৪. যেদিন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে এক একজন সাক্ষ্য উথিত করবো, সেদিন কাফিরদেরকে অনুমতি দেয়া হবে না এবং তাদের নিকট হতে কৈফিয়ত তলব করা হবে না।

لَكُمْ مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بِيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا
يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۖ وَمِنْ أَصْوَابِهَا
وَأُوبَارِهَا وَاشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٨١﴾

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ
مِنَ الْجِبَالِ الْكُنَاثَ وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ
الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمُ بَأْسَكُمْ ۖ كَذَلِكَ يُتِمُّ
نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨٢﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْعُ الْبَئِينُ ﴿٨٣﴾

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ
الْكَافِرُونَ ﴿٨٤﴾

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۖ ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا لَهُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٥﴾

৮৫. যখন যালিমরা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে, তারপর তাদের শাস্তি লঘু করা হবে না এবং তাদেরকে কোন বিরাম দেয়া হবে না।

৮৬. মুশরিকরা যাদেরকে (আল্লাহর) শরীক করেছিল, তাদেরকে যখন দেখবে তখন বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! এরাই তারা, যাদেরকে আমরা আপনার শরীক করেছিলাম, যাদেরকে আমরা আহ্বান করতাম আপনার পরিবর্তে; অতঃপর তদুত্তরে তারা বলবেঃ তোমরা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

৮৭. সে দিন তারা আল্লাহর কাছে আত্মসমর্পণ করবে এবং তারা যে মিথ্যা উদ্ভাবন করতো তা তাদের জন্যে নিষ্ফল হবে।

৮৮. আমি শাস্তির উপর শাস্তি বৃদ্ধি করবো কাফিরদের ও আল্লাহর পথে বাধাদানকারীদের; কারণ, তারা অশাস্তি সৃষ্টি করতো।

৮৯. সে দিন উখিত করবো প্রত্যেক সম্প্রদায়ে তাদেরই মধ্য হতে তাদের বিষয়ে এক একজন সাক্ষী এবং তোমাকে আমি আনবো সাক্ষীরূপে এদের বিষয়ে; আমি আত্মসমর্পণকারীদের জন্যে প্রত্যেক বিষয়ে স্পষ্ট ব্যাখ্যা স্বরূপ, পথ নির্দেশ, দয়া ও সুসংবাদ স্বরূপ তোমার প্রতি কিতাব অবতীর্ণ করেছি।

৯০. নিশ্চয় আল্লাহ ন্যায়পরায়ণতা, সদাচরণ ও আত্মীয়-স্বজনকে দানের নির্দেশ দেন এবং তিনি নিষেধ করেন

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفِّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ ۖ فَالْقَوْلُ إِلَيْهِمْ الْقَوْلُ إِن كُمْ لَكِن بُونَ ﴿٨٦﴾

وَالْقَوْلُ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامُ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَى هَؤُلَاءِ ط وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۗ

অশ্লীলতা, অসৎকার্য ও সীমালঙ্ঘন; তিনি তোমাদেরকে উপদেশ দেন যাতে তোমরা শিক্ষা গ্রহণ কর।

৯১. তোমরা আল্লাহর অঙ্গীকার পূর্ণ করো যখন পরস্পর অঙ্গীকার কর এবং তোমরা আল্লাহকে তোমাদের যামিন করে শপথ দৃঢ় করবার পর তা ভঙ্গ করো না; তোমরা যা কর আল্লাহ তা জানেন।

৯২. সে নারীর মত হয়ো না, যে তার সুতা মজবুত করে পাকাবার পর ওর পাক খুলে নষ্ট করে দেয়; তোমাদের শপথ তোমরা পরস্পরকে প্রবঞ্চনা করবার জন্যে ব্যবহার করে থাকো, যাতে একদল অন্যদল অপেক্ষা অধিক লাভবান হও; আল্লাহ তো এটা দ্বারা শুধু তোমাদের পরীক্ষা করেন; তোমরা যে বিষয়ে মতভেদ করছিলে আল্লাহ কিয়ামতের দিন তা নিশ্চয়ই স্পষ্টভাবে প্রকাশ করে দিবেন।

৯৩. যদি আল্লাহ ইচ্ছা করতেন তবে তোমাদেরকে এক জাতি করতে পারতেনঃ কিন্তু তিনি যাকে ইচ্ছা, বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা, সৎপথে পরিচালিত করেন; তোমরা যা কর সে বিষয়ে অবশ্যই তোমাদেরকে প্রশ্ন করা হবে।

৯৪. পরস্পর প্রবঞ্চনা করবার জন্যে তোমরা তোমাদের শপথকে ব্যবহার করো না; করলে, পা স্থির হওয়ার পর পিছলিয়ে যাবে এবং আল্লাহর পথে বাধা দেয়ার কারণে তোমরা

يَعْظَمُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩١﴾

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ
أَنْكَارًا ۖ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ
تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۗ إِنَّمَا يَبُوءُكُمْ
اللَّهُ بِهِ ۗ وَلِيُبَيِّنَ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ
يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ
وَلَسْتُمْ عَبَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمًا
بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوْءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٥﴾

শান্তির আশ্বাদ গ্রহণ করবে;
তোমাদের জন্যে রয়েছে মহাশান্তি।

৯৫. তোমরা আল্লাহর সঙ্গে কৃত
অঙ্গীকার তুচ্ছ মূল্যে বিক্রি করো না;
আল্লাহর কাছে যা আছে শুধু তাই
তোমাদের জন্যে উত্তম যদি তোমরা
জানতে।

৯৬. তোমাদের কাছে যা কিছু আছে
তা নিঃশেষ হয়ে যাবে এবং আল্লাহর
কাছে যা আছে তা-স্থায়ী; যারা ধৈর্য
ধারণ করে আমি নিশ্চয়ই তাদেরকে
তারা যা করে তা অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ
পুরস্কার দান করবো।

৯৭. মু'মিন হয়ে পুরুষ ও নারীর
মধ্যে যে কেউ সৎ কর্ম করবে, তাকে
আমি নিশ্চয়ই আনন্দময় জীবন দান
করবো এবং তাদেরকে তাদের
কর্মের শ্রেষ্ঠ পুরস্কার দান করবো।

৯৮. যখন তুমি কুরআন পাঠ করবে,
তখন অভিশপ্ত শয়তান হতে আল্লাহর
আশ্রয় প্রার্থনা করবে।

৯৯. তার (শয়তানের) কোন
আধিপত্য নেই তাদের উপর, যারা
ঈমান আনে ও তাদের প্রতিপালকের
উপরই নির্ভর করে।

১০০. তার আধিপত্য শুধু তাদেরই
উপর, যারা তাকে অভিভাবকরূপে
গ্রহণ করে এবং যারা আল্লাহর শরীক
করে।

১০১. আমি যখন কোন এক আয়াত
পরিবর্তন করে তার স্থলে অন্য এক
আয়াত উপস্থিত করি আর আল্লাহ যা

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَنًا قَلِيلًا ط إِنَّمَا
عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ط
وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ
بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنَجْزِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً ؕ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ
بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ
الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ
هُم بِهٖ مُّشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
يُنزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ

অবতীর্ণ করেন তা তিনিই ভাল জানেন, তখন তারা বলেঃ তুমি তো শুধু মিথ্যা উদ্ভাবনকারী; কিন্তু তাদের অধিকাংশই জানে না।

لَا يَعْلَمُونَ ﴿۱۵﴾

১০২. তুমি বলঃ তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে রুহুল-কুদুস (জিবরাঈল عليه السلام) সত্যসহ কুরআন অবতীর্ণ করেছে, যারা মু'মিন তাদেরকে দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত করার জন্যে এবং হিদায়াত ও সুসংবাদ স্বরূপ আত্মসমর্পণকারীদের জন্যে।

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿۱۵﴾

১০৩. আমি তো জানিই, তারা বলেঃ তাকে শিক্ষা দেয় এক মানুষ; তারা যার প্রতি এটা সম্বন্ধ করে তার ভাষা তো আরবী নয়; কিন্তু কুরআনের ভাষা স্পষ্ট আরবী ভাষা।

وَلَقَدْ نَعَلْنَا أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ ط لِسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَبِي وَهَذَا لِسَانُ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ﴿۱۶﴾

১০৪. যারা আল্লাহর নিদর্শনে বিশ্বাস করে না, তাদেরকে আল্লাহ হিদায়াত করেন না এবং তাদের জন্যে আছে বেদনাদায়ক শাস্তি।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱۶﴾

১০৫. যারা আল্লাহর নিদর্শনে বিশ্বাস করে না তারা তো শুধু মিথ্যা উদ্ভাবক এবং তারাই মিথ্যাবাদী।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكُذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكٰذِبُونَ ﴿۱۷﴾

১০৬. কেউ ঈমান আনার পরে আল্লাহকে অস্বীকার করলে; কিন্তু যে, কুফরীর জন্যে তার হৃদয়কে উন্মুক্ত করে দিল তাদের উপর আল্লাহর গজব আর তাদের জন্যে রয়েছে ভয়াবহ শাস্তি। তবে তার জন্যে নয়, যাকে কুফরীর জন্যে বাধ্য করা হয়েছে; কিন্তু তার চিত্ত ঈমানে অবিচল।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ ۗ وَقَلْبُهُ مَطْمَئِنٌّ ۖ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا ۖ فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿۱۷﴾

১০৭. এটা এজন্যে যে, তারা দুনিয়ার জীবনকে আখেরাতের উপর প্রাধান্য দেয় আর নিশ্চয়ই আল্লাহ কাফির সম্প্রদায়কে হিদায়াত করেন না।

১০৮. ওরাই তারা আল্লাহ যাদের অন্তর, কর্ণ ও চক্ষুসমূহে মোহর করে দিয়েছেন এবং তারাই গাফিল।

১০৯. নিশ্চয় তারা আখেরাতে হবে ক্ষতিগ্রস্ত।

১১০. যারা নির্যাতিত হবার পর হিজরত করে, পরে জিহাদ করে এবং ধৈর্যধারণ করে; তোমার প্রতিপালক এই সবের পর, তাদের প্রতি অবশ্যই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

১১১. (স্মরণ কর সে দিনকে) যে দিন আত্মপক্ষ সমর্থনে যুক্তি উপস্থিত করতে আসবে প্রত্যেক ব্যক্তি এবং প্রত্যেককে তার কৃতকর্মের পূর্ণ ফল দেয়া হবে এবং তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

১১২. আল্লাহ দৃষ্টান্ত দিচ্ছেন এক জনপদের যা ছিল নিরাপদ ও নিশ্চিত যেথায় আসতো সর্বদিক হতে প্রচুর জীবনোপকরণ; অতঃপর তারা আল্লাহর নিয়ামতসমূহকে অস্বীকার করলো; ফলে তারা যা করতো তজ্জন্মে আল্লাহ তাদেরকে স্বাদ গ্রহণ করালেন ক্ষুধা ও ভীতির আচ্ছাদন দ্বারা।^১

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اسْتَحْبَبُوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلٰى الْاٰخِرَةِ
وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمِعِهِمْ
وَ اَبْصَارِهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

لَا جَرَمَ اَتَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا
قُتِلُوْا ثُمَّ جَهِدُوْا وَصَبَرُوْا ۗ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ
بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾

يَوْمَ تَأْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُّجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا
وَتُوَفِّيْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً
مُّطَبِّئَةً يَّاتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ
مَكَاْنٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاذَاقَهَا اللّٰهُ
لِبَاسَ الْجُوعِ وَ الْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ আমাকে দোষ দেখান হল। আমি দেখলাম তার অধিবাসীদের অধিকাংশই স্বীলোক। তারা কুফরী করে। জিজ্ঞেস করা হল, 'তারা কি আল্লাহর প্রতি কুফরী করে?' তিনি বললেনঃ 'তারা স্বামী এবং উপকারের প্রতি

১১৩. তাদের নিকট তো এসেছিলেন এক রাসূল তাদের মধ্য হতে; কিন্তু তারা তাকে অস্বীকার করেছিল; ফলে যুলুম করা অবস্থায় শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করলো।

১১৪. আল্লাহ তোমাদেরকে যা দিয়েছেন তন্মধ্যে যা বৈধ ও পবিত্র তা তোমরা আহার কর এবং তোমরা যদি শুধু আল্লাহরই ইবাদত কর তবে তাঁর অনুগ্রহের জন্যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

১১৫. আল্লাহ তো শুধু মৃত, রক্ত, শূকরের গোশত এবং যা যবাহ্ কালে আল্লাহর পরিবর্তে অন্যের নাম নেয়া হয়েছে তা-ই তোমাদের জন্যে অবৈধ করেছেন; কিন্তু কেউ আকাঙ্ক্ষিত কিংবা সীমালঙ্ঘনকারী না হয়ে অনন্যেপায় হলে আল্লাহ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

১১৬. তোমাদের জিহ্বার দ্বারা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে তোমরা বলো না, এটা হালাল এবং এটা হারাম, যারা আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করবে তারা সফলকাম হবে না।

১১৭. (তাদের) সুখ-সম্ভোগ সামান্য এবং তাদের জন্যে রয়েছে বেদনাদায়ক শাস্তি।

১১৮. ইয়াহূদীদের জন্যে আমি তো শুধু তাই নিষিদ্ধ করেছিলাম যা

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَلًا طَيِّبًا
وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنَّ كُفْرَكُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالْدَّمَ وَحُمَ
الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهْلِلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٥﴾

وَلَا تَقُولُوا لِمَا نَصَفُ الْأَسْتِثْمُ الْكُذِبَ هَذَا
حَلَلٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ ط
إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ
لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾
مَتَاعٌ قَلِيلٌ ؕ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا مَّا قَصَصْنَا

কুফরী বা অকৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে। যদি তুমি এক যুগ ধরে তাদের কারও উপকার কর, তারপরও সে তোমার কোন ক্রটি দেখলে বলে, 'আমি তোমার কাছ থেকে কখনও ভাল কিছু পাইনি।' (বুখারী, হাদীস নং ২৯)

তোমার নিকট আমি পূর্বে উল্লেখ করেছি এবং আমি তাদের উপর কোন যুলুম করি নাই; কিন্তু তারাই যুলুম করতো তাদের নিজেদের প্রতি।

১১৯. যারা অজ্ঞতাবশতঃ মন্দ কর্ম করে অতঃপর তাওবা করে ও নিজেদেরকে সংশোধন করে নেয় তাদের জন্যে তোমার প্রতিপালক অবশ্যই অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

১২০. নিশ্চয় ইবরাহীম (عليه السلام) ছিলেন (একাই) এক উম্মত, (একটি জাতির জীবন্ত প্রতীক) আল্লাহর অনুগত, একনিষ্ঠ এবং তিনি ছিলেন না মুশ্রিকদের অন্তর্ভুক্ত।

১২১. তিনি ছিলেন আল্লাহর অনুগ্রহের প্রতি কৃতজ্ঞ; আল্লাহ তাকে মনোনীত করেছিলেন এবং তাকে পরিচালিত করেছিলেন সরল পথে।^১

عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٩﴾

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ
ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ
مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٠﴾

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا
وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢١﴾

شَاكِرًا لِأَنْعُمِهِ إِجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ﴿١٢٢﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) কখনও মিথ্যা বলেননি; তবে তিনবার। (অন্য বর্ণনায় আছে) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) তিনবার মাত্র মিথ্যা বলেছেন। এর মধ্যে দু'বার ছিল আল্লাহর অস্তিত্বের ব্যাপারে। যেমন তিনি বলেছিলেন, আমি পীড়িত এবং তাঁর অপর কথাটি ছিল "বরং তাদের এই বড় মূর্তিটিই তো করেছে।" বর্ণনাকারী বলেন, একদা ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) ও (তাঁর পত্নী) সারা এক জালিম শাসনকর্তার এলাকায় (মিসরে)এসে পৌঁছলেন। শাসনকর্তাকে খবর দেয়া হল যে, এই এলাকায় একজন বিদেশী লোক এসেছে। তার সাথে আছে সুন্দরী শ্রেষ্ঠা এক রমণী। রাজা তখন ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম)-এর কাছে লোক পাঠিয়ে তাঁকে ডেকে আনলেন। সে তাঁকে রমণীটি সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলঃ এই রমণীটি কে? ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) জবাব দিলেন, আমার বোন। অতঃপর তিনি সারার কাছে আসলেন এবং বললেন, হে সারা আমি এবং তুমি ছাড়া যমীনের ওপর আর কোন মু'মিন নেই। এই লোকটি আমাকে (তোমার সম্বন্ধে) জিজ্ঞেস করেছিল। আমি তাকে বলেছি যে, তুমি আমার বোন। সুতরাং আমাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন কর না। তারপর রাজা সারার নিকট (তাঁকে আনার জন্য) লোক পাঠাল। সারা যখন রাজ প্রাসাদে প্রবেশ করলেন এবং রাজা তাঁর দিকে হাত বাড়ালো তখনই সে (আল্লাহর গম্ভবে) পাকড়াও হল। যালিম (অবস্থা বেগতিক দেখে সারাকে) বলল, আমার জন্য আল্লাহর কাছে দু'আ কর; আমি তোমাকে কোন কষ্ট দিব না। তখন

১২২. আমি তাঁকে দুনিয়ায় দিয়েছিলাম মজল এবং আখেরাতেও নিশ্চয়ই তিনি হবেন সংকর্ম-পরায়ণদের অন্যতম।

১২৩. অতঃপর আমি তোমার প্রতি প্রত্যাশা করলাম, তুমি একনিষ্ঠ-ভাবে ইবরাহীমের (عليه السلام) ধর্মান্দর্শ অনুসরণ কর; এবং তিনি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন না।

১২৪. শনিবার পালন তো শুধু তাদের জন্যে বাধ্যতামূলক করা হয়েছিল, যারা এ সম্বন্ধে মতভেদ করতো; যে বিষয়ে তারা মতভেদ করতো তোমার প্রতিপালক তো অবশ্যই কিয়ামতের দিন সে বিষয়ে তাদের বিচার মীমাংসা করে দিবেন যে বিষয়ে তারা মতভেদ করতো।

১২৫. তুমি মানুষকে তোমার প্রতিপালকের পথে আহ্বান কর হিকমত ও সদুপদেশ দ্বারা এবং তাদের সাথে যুক্তিতর্ক কর সদ্ভাবে; তোমার প্রতিপালক, তাঁর পথ ছেড়ে কে বিপদগামী হয় সে সম্বন্ধে

وَآتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٢٢﴾

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

إِنَّمَا جَعَلْنَا السَّبْتَ عَلَى الَّذِينَ ائْتَمَرُوا فِيهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

أُدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۚ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

সারা আল্লাহর কাছে (তার জন্য) দু'আ করলেন। ফলে সে মুক্তি পেয়ে গেল। যালিম আবার তাঁর দিকে হাত বাড়াল। তখনই পূর্বের অনুরূপ কিংবা আরো ভয়ঙ্কর গ্যবে পতিত হল। এবারও বলল, আমার জন্য আল্লাহর কাছে দু'আ কর। আমি তোমার কোন ক্ষতি করব না। আবারও তিনি দু'আ করলেন এবং সে মুক্তি পেয়ে গেল। অতঃপর রাজা তার কোন একজন দারওয়ানকে ডাকল এবং বলল, তোমরা আমার কাছে কোন মানুষকে আননি। এনেছ একজন শয়তানকে। পরে রাজা সারার খেদমতের জন্য হাজেরা (নামে এক রমণী)-কে দান করল। অতঃপর সারা ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম)-এর কাছে এসে গেল। তখন তিনি দাঁড়িয়ে নামায পড়ছিলেন। (নামাযের অবস্থায়) হাতের ইশারায় সারাকে জিজ্ঞেস করলেন কি ঘটল? সারা বলল, আল্লাহ্ যালিম কাফেরের চক্রান্ত তারই বক্ষে উল্টো নিক্ষেপ করেছেন অর্থাৎ নস্যাত করে দিয়েছেন। আর রাজা হাজেরাকে আমার খেদমতের জন্য দান করেছে।

আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) (হাদীস বর্ণনাশ্চে) বললেন, হে আকাশের পানির সন্তান-অর্থাৎ হে আরববাসীগণ! এ 'হাজেরা'ই তোমাদের আদি মাতা। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৫৪)

সবিশেষ অবহিত এবং কে সৎপথে আছে তাও সবিশেষ অবহিত।

১২৬. যদি তোমরা প্রতিশোধ গ্রহণ কর, তবে ঠিক ততখানি প্রতিশোধ গ্রহণ করবে যতখানি অন্যায়ে তোমাদের প্রতি করা হয়েছে; তবে তোমরা ধৈর্যধারণ করলে ধৈর্যশীলদের জন্যে ওটাও তো উত্তম।^১

১২৭. তুমি ধৈর্যধারণ করো, তোমার ধৈর্য তো হবে আল্লাহরই সাহায্যে; তাদের দরুণ দুঃখ করো না এবং তাদের ষড়যন্ত্রে তুমি মনক্ষুণ্ণ হয়ে না।

১২৮. নিশ্চয় আল্লাহ তাদেরই সঙ্গে আছেন, যারা তাকওয়া অবলম্বন করে এবং যারা সৎকর্মপরায়ণ।^২

وَأِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوِقْتُمْ بِهِ
وَلَيْنَ صَبْرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾

وَأَصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ
عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَلُوبٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ
هُمُ أَحْسَنُونَ ﴿١٢٨﴾

১। (ক) আবু মুসা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কষ্ট ও পীড়াদায়ক কথা শোনার পরও আল্লাহর তা'আলার ন্যায় এত বেশি সবার ধারণ আর কেউ করতে পারে না। এক শেখীর মানুষ তাঁর জন্য সন্তান সাব্যস্ত করে। এরপরও আল্লাহ তা'আলা তাদেরকে মাফ করে দেন এবং রিযিক দিয়ে থাকেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৯)

(খ) আব্দুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, একবার নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (গণীমতের মাল) যথারীতি বন্টন করলেন। এ সময় একজন আনসারী মস্তব্য করলোঃ আল্লাহর কসম! এ ভাগ-বাটোয়ারায় আল্লাহর সন্তুষ্টি উদ্দেশ্য নয়। [আবদুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন], আমি বললামঃ আমি অবশ্যই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট একথা বলে দেব। সুতরাং আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট আসলাম। এ সময় তিনি তাঁর সাহাবীদের মাঝে বসা ছিলেন। আমি গোপনে তাঁর নিকট কথাটি বর্ণনা করলাম। কথাটি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর ওপর অত্যন্ত কঠিন বোধ হলো। তাঁর চেহারার রং বদলে গেল। তিনি অত্যন্ত রাগান্বিত হলেন। এমন কি, আমি মনে মনে এটাই পোষণ করতে লাগলাম যে, আহ! আমি যদি তাঁর নিকট কথাটি বিলকূল না বলতাম! অতপর তিনি বললেনঃ মুসা (আলাইহিস সালাম)-কে এর চেয়েও বেশি কষ্ট দেয়া হয়েছে; কিন্তু তিনি সবর করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬১০০)

২। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের মধ্যে কেউ তার কাজের দ্বারা নাজাত পাবে না। লোকেরা বলল, আপনিও (আপনার কাজের দ্বারা নাজাত) পাবেন না? তিনি বললেনঃ না, আমিও না। তবে আল্লাহ তাঁর রহমত দিয়ে আমাকে ঢেকে রেখেছেন। সুতরাং সঠিক এবং কর্তব্যনিষ্ঠভাবে কাজ করে আল্লাহর নৈকট্য অর্জন করা, সকাল-বিকাল এবং রাতের শেষাংশে আল্লাহর ইবাদত করা। (এসব কাজে) মধ্যম পন্থা অবলম্বন করা, মধ্যম পন্থাই তোমাদেরকে লক্ষ্যে পৌঁছাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৬৩)

সূরাঃ বানী ইসরাইল, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১১, রুকু'ঃ ১২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ بَنِي إِسْرَائِيلَ مَكِّيَّةٌ

يَا أَيُّهَا ۱۱۱ رُكُوعًا ۱۲

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তিনি পবিত্র যিনি তাঁর বান্দাকে (রাসূলুল্লাহ ﷺ কে) এক রজনীতে ভ্রমণ করিয়েছিলেন মসজিদুল হারাম হতে মসজিদুল আকসায়, (বায়তুল মাক্দিস) যার চতুষ্পার্শ্বকে আমি করেছিলাম বরকতময়, তাকে আমার নিদর্শন দেখাবার জন্যে; তিনিই সর্বশ্রোতা সর্বদৃষ্টা ৷

২. আমি মূসাকে (عَلَيْهِ السَّلَام) কিতাব দিয়েছিলাম এবং তাকে করেছিলাম বানী ইসরাঈলের জন্যে পথ নির্দেশক; (আমি আদেশ করেছিলাম;) তোমরা আমাকে ব্যতীত অপর কাউকেও কর্মবিধায়ক রূপে গ্রহণ করো না ।

৩. (তোমরা তো) তাদের বংশধর যাদেরকে আমি নূহের (عَلَيْهِ السَّلَام) সাথে (নৌকায়) আরোহণ করিয়েছিলাম, অবশ্যই তিনি ছিলেন আমার এক কৃতজ্ঞ বান্দা ।

৪. এবং আমি কিতাবে (তাওরাতে) বানী ইসরাঈলকে জানিয়েছিলাম, নিশ্চয়ই তোমরা পৃথিবীতে দু'বার

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْآيَاتِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ①

وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا تَنَجَّدُوا مِنْ دُونِي وَكَيْلًا ②

ذُرِّيَّةً مِّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ③

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوقًا كَبِيرًا ④

১। জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে বলতে শুনেছেন, মি'রাজের ব্যাপারে কুরাইশরা যখন আমাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করতে চেষ্টা করল তখন আমি (কা'বার) হিজর অংশে দাঁড়িলাম। আর আল্লাহ বাইতুল মাক্দিস (মসজিদটি)-কে আমার সামনে উদ্ভাসিত করলেন। ফলে আমি তার দিকে তাকিয়ে তার চিহ্ন ও নিদর্শনগুলো তাদেরকে বলে দিতে থাকলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮৮৬)

বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং তোমরা অতিশয় বাড়াবাড়ি করবে।

৫. অতঃপর এই দু'এর প্রথমটির নির্ধারিত কাল যখন উপস্থিত হলো তখন আমি তোমাদের বিরুদ্ধে প্রেরণ করেছিলাম আমার এমন কিছু বান্দাকে যারা ছিল, অতিশয় শক্তিশালী; অতঃপর তারা ঘরে ঘরে প্রবেশ করে সমস্ত কিছু ধ্বংস করেছিল; আর আল্লাহর এ ওয়াদা কার্যকরী হওয়ারই ছিল।

৬. অতঃপর আমি তোমাদেরকে পুনরায় তাদের উপর প্রতিষ্ঠিত করলাম, তোমাদেরকে ধন ও সম্ভান-সম্ভতি দ্বারা সাহায্য করলাম এবং তোমাদেরকে সংখ্যা গরিষ্ঠ ও শক্তিশালী করলাম।

৭. তোমরা সৎকর্ম করলে সৎকর্ম নিজেদেরই জন্যে করবে মন্দকর্ম করলে তাও নিজেদের জন্যে; অতঃপর পরবর্তী দ্বিতীয় প্রতিশ্রুতি উপস্থিত হলে (আমি আমার বান্দাদেরকে প্রেরণ করলাম) তোমাদের মুখমন্ডল কালিমাচ্ছন্ন করবার জন্যে, প্রথমবার তারা যেভাবে মসজিদে প্রবেশ করেছিল পুনরায় সেই ভাবেই তাতে প্রবেশ করবার জন্যে এবং তারা যা অধিকার করেছিল তা সম্পূর্ণভাবে ধ্বংস করবার জন্যে।

৮. সম্ভবতঃ তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের প্রতি দয়া করবেন; কিন্তু তোমরা যদি তোমাদের পূর্ব আচরণের পুনরাবৃত্তি কর; তবে

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَٰئِهِمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا
لَّنَّا أُولَٰئِ بِأَيِّ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ
وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ①

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُم بِأَمْوَالٍ
وَّبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ①

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا
تَتَّبِيرًا ①

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُم ۗ وَإِنْ عُدتُمْ عُدتُمْ
وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ①

আমিও পুনরাবৃত্তি করবো;
জাহান্নামকে আমি করেছি সত্য
প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্যে কারাগার।

৯. এ কুরআন সর্বশ্রেষ্ঠ পথ নির্দেশ
করে এবং সৎকর্মপরায়ণ বিশ্বাসী-
দেরকে সুসংবাদ দেয় যে, তাদের
জন্যে রয়েছে মহাপুরস্কার।

১০. আর যারা পরলোকে বিশ্বাস
করে না তাদের জন্যে আমি প্রস্তুত
করে রেখেছি মর্মান্তিক শাস্তি।

১১. মানুষ যেভাবে কল্যাণ কামনা
করে সেভাবেই অকল্যাণ কামনা
করে; মানুষ বড়ই তাড়াহুড়াকারী।

১২. আমি রাত্রি ও দিবসকে করেছি
দু'টি নিদর্শন ও রাত্রিকে করেছি
নিরালোক এবং দিবসকে করেছি
আলোকময়, যাতে তোমরা
তোমাদের প্রতিপালকের অনুগ্রহ
সন্ধান করতে পার এবং যাতে
তোমরা বর্ষ সংখ্যা ও হিসাব স্থির
করতে পার এবং আমি সব কিছু
বিশদভাবে বর্ণনা করেছি।

১৩. প্রত্যেক মানুষের কৃতকর্ম আমি
তার গলায় লাগিয়ে দিয়েছি^১ এবং
কিয়ামতের দিন আমি তার জন্যে
বের করবো এক কিতাব, যা সে
পাবে উন্মুক্ত।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ

أَجْرًا كَبِيرًا ۙ

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ آتَيْنَا لَهُمْ

عَذَابًا أَلِيمًا ۙ

وَيَذُرُّ الْإِنْسَانَ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ

وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۙ

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتٍ فَمَحْوِنًا آيَةَ اللَّيْلِ

وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا

مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۗ

وَكُلُّ شَيْءٍ فَلَئِنَّهُ تَفْصِيلًا ۙ

وَكُلِّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۗ وَنُخْرِجُ

لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۙ

১। আব্দুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, এক ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলঃ কোন কাজটি সর্বোত্তম তিনি বললেনঃ সময়মত নামায পড়া, মাতা-পিতার সাথে সৎ ব্যবহার করা, অতঃপর আল্লাহ্র পথে জিহাদ করা। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৩৪)

১৪. (আমি বলবোঃ) তুমি তোমার আমলনামা পাঠ কর; আজ তুমি নিজেই তোমার হিসাব-নিকাশের জন্যে যথেষ্ট।

১৫. যারা সৎপথ অবলম্বন করবে তারা তো নিজেদেরই মঙ্গলের জন্যে সৎপথ অবলম্বন করবে এবং যারা পথভ্রষ্ট হবে তারা তো পথভ্রষ্ট হবে নিজেদেরই ধ্বংসের জন্যে এবং কেউ অন্য কারো ভার বহন করবে না; আমি রাসূল না পাঠান পর্যন্ত কাউকেও শাস্তি দেই না।

১৬. যখন আমি কোন জনপদকে ধ্বংস করার ইচ্ছা করি তখন ওর সমৃদ্ধশালী ব্যক্তিদেরকে (সৎকর্ম করতে) আদেশ করি; কিন্তু তারা সেথায় অসৎকর্ম করে; অতঃপর ওর প্রতি দভাজ্জা ন্যায়সঙ্গত হয়ে যায় এবং ওটাকে সম্পূর্ণরূপে বিধ্বস্ত করি।

১৭. নূহের (عليه السلام) পর আমি কত মানব গোষ্ঠী ধ্বংস করেছি। তোমার প্রতিপালকই তাঁর বান্দাহদের পাপাচারের সংবাদ রাখা ও পর্যবেক্ষণের জন্যে যথেষ্ট।

১৮. কেউ পার্থিব সুখ-সম্ভোগ কামনা করলে আমি যাকে যা ইচ্ছা সত্ত্বর দিয়ে থাকি; পরে তার জন্যে জাহান্নাম নির্ধারিত করি, সেখানে সে প্রবেশ করবে নিন্দিত ও অনুগ্রহ হতে দূরীকৃত অবস্থায়।

১৯. যারা বিশ্বাসী হয়ে পারলোক কামনা করে এবং ওর জন্যে যথাযথ

إِقْرَأْ كِتَابَكَ ط كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ط

مِنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ؕ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ط وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ط وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۝

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۝

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ ط وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبٍ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَدْ مَوْمًا مَدْحُورًا ۝

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ

চেষ্টা করে তাদের চেষ্টা স্বীকৃত হয়ে থাকে।

مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعِيَهُمْ مَّشْكُورًا ﴿۱۶﴾

২০. তোমার প্রতিপালক তাঁর দান দ্বারা এদেরকে ও ওদেরকে সাহায্য করেন এবং তোমার প্রতিপালকের দান (কারো জন্যই) নিষিদ্ধ নয়।

كُلًّا نُّبِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ط

وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿۱۷﴾

২১. লক্ষ্য কর, আমি কিভাবে তাদের এক দলকে অপরের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম, পরকাল তো নিশ্চয়ই মর্যাদায় শ্রেষ্ঠ ও শ্রেয়ত্বে শ্রেষ্ঠতর।

أَنْظُرُ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ط وَلَٰلِآخِرَةِ

الْكَبِيرِ دَرَجَاتٍ وَالْكَبِيرُ تَفْضِيلًا ﴿۱۸﴾

২২. আল্লাহর সাথে অপর কোন মা'বুদ স্থির করো না; করলে নিন্দিত ও নিঃসহায় হয়ে পড়বে।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا

مَّخْذُومًا ﴿۱۹﴾

২৩. তোমার প্রতিপালক নির্দেশ দিয়েছেন যে, তোমরা তিনি ছাড়া অন্য কারো ইবাদত করবে না এবং পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার করবে; তাদের একজন অথবা উভয়েই তোমার জীবদ্দশায় বার্ষিক্যে উপনীত হলেও তাদেরকে বিরক্তি সূচক কিছু বলো না এবং তাদেরকে ধমক দিওনা; তাদের সাথে বলো সম্মান সূচক নম্র কথা।

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ط

إِمَّا يَبُلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَا تَقُلْ

لَهُمَا أَوْفٍ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿۲০﴾

২৪. অনুকম্পায় তাদের প্রতি বিনয়ানত থেকে এবং বলোঃ হে আমার প্রতিপালক! তাঁদের উভয়ের প্রতি দয়া করুন যেভাবে শৈশবে তাঁরা আমাকে প্রতিপালন করেছিলেন।

وَاحْفَظْ لَهُمَا جَنَاحَ الذَّلِيلِ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ

أَرْحَمُهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ﴿۲১﴾

২৫. তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের অন্তরে যা আছে তা ভাল জানেন; তোমরা সৎকর্মপরায়ণ হলে

رَبِّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ط إِنْ تَكُونُوا

যারা সর্বদা আল্লাহ অভিমুখী আল্লাহ তাদের প্রতিক্ষমাশীল।

طَلِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غُفُورًا ﴿۱۷﴾

২৬. আত্মীয়-স্বজনকে দিবে তার প্রাপ্য এবং অভাবগ্রস্থ ও মুসাফিরকেও এবং কিছুতেই অপব্যয় করে না।

وَأْتِذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّيِّئَاتِ وَلَا تُبْذِرْنَ مَالَهُنَّ ذَرْبًا مِّنْهُ لَوْ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ طَوَّافِينَ ﴿۱۷﴾

২৭. নিশ্চয় যারা অপব্যয় করে তারা শয়তানের ভাই এবং শয়তান তার প্রতিপালকের প্রতি অতিশয় অকৃতজ্ঞ।

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ طَوَّافِينَ ﴿۱۷﴾

২৮. আর তুমি নিজেই যখন তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে করুণা লাভের প্রত্যাশায় ওর সন্ধান খোঁজা তখন তাদেরকে যদি বিমুখই কর, তাদের সাথে নম্রভাবে কথা বলা।

وَأَمَّا تُعِزُّنَ الَّذِينَ فِي يَدَيْكَ فَكُنُفٌ مِّنْكَ يَكْفُرُونَ بِالْحَقِّ فَرِحُوا بِالْحِقَابِ ﴿۱۷﴾

২৯. তোমার হাত মুষ্টিবদ্ধ করে গলায় বেঁধনা (কার্পণ্য কর না) আবার তাকে একেবারে খোলাও ছেড়ে দিওনা (অপচয় কর না) এমন করলে তুমি তিরস্কৃত ও নিঃশ্ব হবে।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿۱۷﴾

৩০. তোমার প্রতিপালক যার জন্যে ইচ্ছা তার জীবনোপকরণ বর্ধিত করেন এবং যার জন্যে ইচ্ছা তা হ্রাস করেন; তিনি তাঁর বান্দাদেরকে ভালভাবে জানেন ও দেখেন।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿۱۷﴾

৩১. তোমাদের সম্ভানদেরকে তোমরা দারিদ্র-ভয়ে হত্যা করো না, তাদেরকে ও তোমাদেরকে আমিই রুখী দিয়ে থাকি; তাদেরকে হত্যা করা মহাপাপ।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطَاً كَبِيرًا ﴿۱۷﴾

৩২. তোমরা জিনার নিকটবর্তী হয়ে না, এটা অশ্লীল ও নিকৃষ্ট আচরণ।

وَلَا تَقْرُبُوا الزُّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿۱۷﴾

৩৩. আল্লাহ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন যথার্থ কারণ ছাড়া তাকে হত্যা করো না; কেউ অন্যায়ভাবে নিহত হলে তার উত্তরাধিকারীকে তো আমি প্রতিশোধ গ্রহণের অধিকার দিয়েছি; কিন্তু হত্যার ব্যাপারে সে যেন বাড়াবাড়ি না করে; সে তো সাহায্য প্রাপ্ত হয়েছেই।

৩৪. ইয়াতীমরা বয়োপাণ্ড না হওয়া পর্যন্ত সদুদ্দেশ্য ছাড়া তাদের সম্পত্তির নিকটবর্তী হয়ো না এবং প্রতিশ্রুতি পালন করো; নিশ্চয়ই প্রতিশ্রুতি সম্পর্কে কৈফিয়ত তলব করা হবে।

৩৫. মেপে দেয়ার সময় পূর্ণমাপে দিবে এবং ওজন করবে সঠিক দাঁড়ি-পাল্লায়, এটাই উত্তম ও পরিণামে উৎকৃষ্ট।

৩৬. যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই সে বিষয়ের পিছে পড়ো না। (অনুমান দ্বারা) নিশ্চিত কর্ণ, চক্ষু, হৃদয় ওদের প্রত্যেকের নিকট কৈফিয়ত তলব করা হবে।

৩৭. ভূ-পৃষ্ঠে দস্তভরে বিচরণ করো না, তুমি তো কখনোই পদভারে ভূ-পৃষ্ঠ বিদীর্ণ করতে পারবে না এবং উচ্চতায় তুমি কখনোই পর্বত প্রমাণ হতে পারবে না।

৩৮. এসবের মধ্যে যেগুলি মন্দ সেগুলি তোমার প্রতিপালকের নিকট ঘৃণ্য।

৩৯. তোমার প্রতিপালক ওহীর দ্বারা তোমাকে যে হিকমত দান করেছেন

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ط
وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطٰنًا
فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ط إِنَّهُ كَانَ مُنْصَوِّرًا ﴿٣٣﴾

وَلَا تَقْرُبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّى
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ط وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ط إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُولًا ﴿٣٤﴾

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كُنْتُمْ وَزِنًا بِالْقِسْطِ ط
الْمُسْتَقِيمِ ط ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٥﴾

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ط إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ
وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ط إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ
الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾

ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ط وَلَا تَجْعَلْ

এগুলি তার অন্তর্ভুক্ত; তুমি আল্লাহর সাথে কোন মা'বুদ স্থির করো না, করলে তুমি তিরস্কৃত ও আল্লাহর অনুগ্রহ হতে দূরীভূত অবস্থায় জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত হবে।

৪০. তোমাদের প্রতিপালক কি তোমাদের জন্যে পুত্র সন্তান নির্ধারিত করেছেন এবং তিনি নিজে ফেরেশতাদেরকে কন্যারূপে গ্রহণ করেছেন? তোমরা তো নিশ্চয়ই ভয়ানক কথা বলে থাকো।

৪১. এই কুরআনে (বহু নীতিবাক্য) আমি বিভিন্নভাবে বিবৃত করেছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে; কিন্তু তাতে তাদের বিমুখতাই বৃদ্ধি পায়।

৪২. বলঃ তাদের কথামত যদি তাঁর সাথে আরো মা'বুদ থাকতো তবে তারা আরশ্ অধিপতি পর্যন্ত পৌছে যাওয়ার উপায় অন্বেষণ করতো।

৪৩. তিনি পবিত্র, মহিমান্বিত এবং তারা যা বলে তা হতে তিনি বহু উর্ধ্ব।

৪৪. সপ্ত আকাশ, পৃথিবী এবং ওদের অন্তর্বর্তী সব কিছু তাঁরই পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং এমন কিছু নেই যা তাঁর সপ্রশংস পবিত্রতা ঘোষণা করে না; কিন্তু ওদের পবিত্রতা ঘোষণা তোমরা অনুধাবন করতে পার না; নিশ্চয়ই তিনি সহনশীল, ক্ষমাপরায়ণ।

৪৫. তুমি যখন কুরআন পাঠ কর তখন তোমার ও যারা পরলোকে

مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَلْقَى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ﴿١٧﴾

أَفَأَصْفَكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَيْنِ وَالْأَخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَّا نَاطِقٌ لَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿١٨﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿١٩﴾

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَّابْتَغَوْا إِلَى ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٢٠﴾

سُبْحٰنَهُ وَتَعَلَّى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

تَسْبِيحٌ لَهُ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ ط وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلٰكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ط اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٢٢﴾

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ

বিশ্বাস করে না তাদের মধ্যে এক প্রচ্ছন্ন পর্দা রেখে দেই।

لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٥٦﴾

৪৬. আমি তাদের অন্তরের উপর আবরণ দিয়েছি যেন তারা উপলব্ধি করতে না পারে এবং তাদেরকে বধির করেছি এবং যখন তুমি কুরআনে তোমার একমাত্র রবকে স্মরণ কর তখন তারা মুখ ফিরিয়ে সরে পড়ে।

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ كِتَابًا أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا ذُكِرْتِ رَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَعْلَىٰ
أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٥٧﴾

৪৭. যখন তারা কান পেতে তোমার কথা শুনে তখন তারা কেন কান পেতে তা শুনে তা আমি ভাল করে জানি এবং (এটাও জানি) গোপনে আলোচনাকালে যালিমরা বলেঃ তোমরা তো এক যাদুগ্রন্থ ব্যক্তির অনুসরণ করছো।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنَّا تَسْتَمِعُونَ
إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٥٨﴾

৪৮. দেখো, তারা তোমার কি উপমা দেয়! তারা পথভ্রষ্ট হয়েছে এবং তারা পথ পাবে না।

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٥٩﴾

৪৯. তারা বলেঃ আমরা অস্থিতে পরিণত ও চূর্ণ-বিচূর্ণ হলেও কি নতুন সৃষ্টিরূপে পুনরুত্থিত হবো?

وَقَالُوا ءِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا ءِإِنَّا لَكَبَعُوثُونَ
خُلُقًا جَدِيدًا ﴿٦٠﴾

৫০. বলঃ তোমরা হয়ে যাও পাথর অথবা লৌহ।

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٦١﴾

১। সাঈদ বিন জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ সূরা লাহাব অবতীর্ণ হল, তখন আবু লাহাবের স্ত্রী নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট আসল, আর তখন তাঁর নিকট আবু বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) ও ছিলেন। যখন আবু বকর (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে তাকে দেখতে পেলেন, তখন বললেনঃ ইয়া রাসূলাল্লাহ্! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আপনি এখান থেকে চলে গেলে ভাল হয়, তিনি বললেনঃ সে আমাকে দেখতে পাবেনা। অতঃপর সে এসে আবু বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) লক্ষ্য করে বলতে লাগল, হে আবু বকর তোমার সাথী আমাকে তো কবিতার মাধ্যমে নিন্দা করেছে। তখন আবু বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ এটা আল্লাহ্র তরফ থেকে, সে তো কবিতা জানে না এবং সে (আবু লাহাবের স্ত্রী) এই বলে বিদায় হলো, সে তোমার নিকট সত্যবাদী বলে পরিচিত। অতঃপর আবু বকর সিদ্দিক (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, হে আল্লাহ্র রাসূল সে তো আপনাকে দেখে নাই। তিনি বললেনঃ একজন ফেরেশতা তার এবং আমার মাঝখানে পর্দা করে রেখেছিল। (মুসনাদে আবু ইয়া'লা)

৫১. অথবা এমন সৃষ্টি যা তোমাদের ধারণায় খুবই কঠিন; তারা বলবে: কে আমাদেরকে পুনরুত্থিত করবে? বল: তিনিই যিনি তোমাদেরকে প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন; অতপর তারা তোমার সামনে মাথা নাড়বে ও বলবে ওটা কবে? বল: হবে সম্ভবত শীঘ্রই।

৫২. যেদিন তিনি তোমাদেরকে আহ্বান করবেন এবং তোমরা প্রশংসার সাথে তাঁর আহ্বানে সাড়া দিবে এবং তোমরা মনে করবে: তোমরা অল্পকালই অবস্থান করেছিলে?

৫৩. আমার বান্দাদেরকে যা উত্তম তা বলতে বল: শয়তান তাদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টির উস্কানি দেয়; নিশ্চয়ই শয়তান মানুষের প্রকাশ্য শত্রু।

৫৪. তোমাদের প্রতিপালক তোমাদেরকে ভালভাবে জানেন; ইচ্ছা করলে তিনি তোমাদের প্রতি দয়া করেন এবং ইচ্ছা করলে তোমাদেরকে শাস্তি দেন; আমি তোমাকে তাদের উপর অভিভাবক করে পাঠায় নি।

৫৫. যারা আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে আছে তাদেরকে তোমার প্রতিপালক ভালভাবে জানেন; আমি তো নবীদের কতককে কতকের উপর মর্যদা দিয়েছি; দাউদকে (ﷺ) আমি যাবুর দিয়েছি।

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۖ فَسَيَقُولُونَ
مَنْ يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۗ
فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى
هُوَ قَوْلُ عَلِيِّ ۖ أَنْ يُكُونَ قَوْلِيًّا ۝

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَصِدٍ ۖ وَتَذُنُونَ
إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝

وَقُلِ لِعِبَادِيَ يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ
يَنْزِعُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا
مُهِينًا ۝

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۚ إِنَّ يَشَاءُ يَرْحَمَكُمُ أَوْ إِنْ يَشَاءُ
يُعَذِّبِكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَلَقَدْ
فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَىٰ بَعْضٍ ۖ وَآتَيْنَا دَاوُدَ
زُجُورًا ۝

৫৬. বলঃ তোমরা তিনি (আল্লাহ) ব্যতীত যাদেরকে মা'বুদ মনে কর তাদেরকে আহ্বান কর; করলে দেখবে তোমাদের দুঃখ-দৈন্য দূর করবার অথবা পরিবর্তন করবার শক্তি তাদের নেই।

৫৭. তারা যাদেরকে আহ্বান করে তারাই তো তাদের প্রতিপালকের নৈকট্য লাভের উপায় সন্ধান করে যে তাদের মধ্যে কে কত নিকট হতে পারে, তাঁর দয়া প্রত্যাশা করে ও তাঁর শাস্তিকে ভয় করে; তোমার প্রতিপালকের শাস্তি ভয়াবহ।

৫৮. এমন কোন জনপদ নেই যা আমি কিয়ামতের দিনের পূর্বে ধ্বংস করবো না অথবা যাকে কঠোর শাস্তি দিবো না; এটা তো কিতাবে লিপিবদ্ধ আছে।

৫৯. পূর্ববর্তীগণ কৃতক নিদর্শন অস্বীকার করাই আমাকে নিদর্শন প্রেরণ করা হতে বিরত রাখে; আমি স্পষ্ট নিদর্শনস্বরূপ সামুদের নিকট উদ্বী পাঠিয়েছিলাম, অতঃপর ওর প্রতি তারা যুলুম করেছিল; আমি ভয় প্রদর্শনের জন্যেই নিদর্শন প্রেরণ করি।

৬০. (স্মরণ কর,) আর যখন আমি তোমাকে বলেছিলাম যে, তোমার প্রতিপালক মানুষকে পরিবেষ্টন করে আছেন; আমি যে দৃশ্য (মি'রাজের রাতে) তোমাকে দেখিয়েছি তা, ও কুরআনে উল্লিখিত অভিশপ্ত বৃক্ষ শুধু মানুষের পরীক্ষার জন্যে; আমি

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ
كُشْفَ الضَّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ
الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ
عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾

وَأَنْ مِنْ قَوْمٍ قَوْلِي إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ
مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا
الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَتَيْنَا سُودًا مُبِينًا فَنظَّمُوا بِهَا
وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا
الرُّءْيَا الَّتِي آرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ
الْمُعَوَّذَةَ فِي الْقُرْآنِ وَمُتَخَفِهِمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ
إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾

তাদেরকে ভীতি প্রদর্শন করি; কিন্তু এটা তাদের তীব্র অবাধ্যতাই বৃদ্ধি করে।

৬১. স্মরণ কর, যখন আমি ফেরেশতাদেরকে বললামঃ আদমের (عَلَيْهِ السَّلَامُ) প্রতি সিজদাবনত হও; তখন ইবলীস ছাড়া সবাই সিজদাবনত হলো; সে বললোঃ আমি কি তাকে সিজদা করবো যাকে আপনি কাঁদা মাটি হতে সৃষ্টি করেছেন?

৬২. সে (আরো) বললোঃ দেখুন! তাকে যে আপনি আমার উপর মর্খাদা দান করলেন? কিয়ামতের দিন পর্যন্ত যদি আমাকে অবকাশ দেন তাহলে আমি অল্প কয়েকজন ছাড়া তার বংশধরদের সমূলে নষ্ট করে ফেলবো।

৬৩. আল্লাহ বললেনঃ যাও, জাহান্নামই সম্যক শাস্তি তোমার এবং তাদের যারা তোমার অনুসরণ করবে।

৬৪. তোমার আস্থানে তাদের মধ্যে যাকে পার সত্যচ্যুত কর, তোমার অস্থারোহী ও পদাতিক বাহিনী দ্বারা তাদেরকে আক্রমণ কর এবং তাদের ধনে ও সন্তান-সন্ততিতে শরীক হয়ে যাও, ও তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দেও; শয়তান তাদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দেয় তা ছলনা মাত্র।

৬৫. আমার বান্দাহদের উপর তোমার কোন ক্ষমতা নেই; কর্ম বিধায়ক হিসেবে তোমার প্রতিপালকই যথেষ্ট।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ۙ قَالَ ؕ اَسْجُدْ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۙ ﴿۶۱﴾

قَالَ اَرَاۤءَيْتَ كِهٰذَا الَّذِیْ كَرَّمْتَ عَلٰی رَلِیْنٍ اٰخَرٰتِنِ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَاحْتَنٰنِكَۙ ذُرِّیَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۶۲﴾

قَالَ اِذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاۤءُكُمْ جَزَآءًا مُّوَفُوْرًا ﴿۶۳﴾

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلٰیهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِی الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعَدْهُمْ ۙ وَمَا یٰۤجِدُهُمُ الشَّیْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾

اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَكَ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنٌ ۙ وَكَفٰی بِرَبِّكَ وَكِیْلًا ﴿۶۵﴾

৬৬. তোমাদের প্রতিপালক তিনিই যিনি তোমাদের জন্যে সমুদ্রে জলযান পরিচালিত করেন, যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার; তিনি তোমাদের প্রতি পরম দয়ালু।

৬৭. সমুদ্রে যখন তোমাদেরকে বিপদ স্পর্শ করে তখন শুধু তিনি ছাড়া অপর যাদেরকে তোমরা আহ্বান করে থাকো তারা তোমাদের মন হতে সরে যায়; অতঃপর তিনি যখন স্থলে ভিড়িয়ে তোমাদেরকে উদ্ধার করেন তখন তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও; মানুষ বড়ই অকৃতজ্ঞ।

৬৮. তোমরা কি নিশ্চিত আছ যে, তিনি তোমাদেরকে স্থলে কোথাও ভূ-গর্ভস্থ করবেন না অথবা তোমাদের উপর কংকর বর্ষণ করবেন না? তখন তোমরা তোমাদের কোন কর্ম বিধায়ক পাবে না।

৬৯. অথবা তোমরা কি নিশ্চিত আছ যে, তোমাদেরকে আর একবার সমুদ্রে নিয়ে যাবেন না এবং তোমাদের বিরুদ্ধে প্রচণ্ড ঝটিকা পাঠাবেন না এবং প্রত্যাখ্যান করার জন্যে তোমাদেরকে নিমজ্জিত করবেন না? তখন তোমরা এ বিষয়ে আমার বিরুদ্ধে কোন সাহায্যকারী পাবে না।

৭০. আমি তো আদম সন্তানকে মর্যাদা দান করেছি, স্থলে ও সমুদ্রে তাদের চলাচলের বাহন দিয়েছি; তাদের উত্তম রুখী দান করেছি এবং যাদের আমি সৃষ্টি করেছি তাদের অনেকের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছি।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُرِيكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٦٦﴾

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهًا ۗ فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۗ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

أَفَأَمْنْتُمْ أَنْ يَخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۗ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكَيْلًا ﴿٦٨﴾

أَمْ أَمْنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَى ۗ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ۗ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴿٧٠﴾

৭১. সে দিন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায়কে তাদের নেতাসহ আহ্বান করবো; অনন্তর ষাদেরকে ডান হাতে তাদের আমলনামা দেয়া হবে তারা তাদের আমলনামা পাঠ করবে এবং তাদের উপর সামান্য পরিমাণও ফুলুম করা হবে না।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمْئَاتِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾

৭২. যে ইহলোকে অন্ধ পরলোকেও সে অন্ধ এবং অধিকতর পথভ্রষ্ট।

وَمَنْ كَانَ فِي هُدًى أَغَىٰ فَهُوَ فِي الْخِزْيَةِ أَغَىٰ ۖ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٧٢﴾

৭৩. আমি তোমার প্রতি যা প্রত্যাদেশ করেছি তা হতে তোমার পদঞ্চলন ঘটাবার জন্যে তারা চূড়ান্ত চেষ্টা করেছে, যাতে তুমি আমার সম্বন্ধে গুর বিপরীত কিছু মিথ্যা উদ্ভাবন কর; সফলকাম হলে তারা অবশ্যই তোমাকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করতো।

وَأِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَةً ۖ وَإِذَا لَا تَأْخُذُوكَ خَلِيلًا ﴿٧٣﴾

৭৪. আমি তোমাকে অবিচলিত না রাখলে তুমি তাদের দিকে প্রায় কিছুটা ঝুঁকেই পড়তে।

وَلَوْلَا أَنْ تَبَتُّنَا لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنَ إِلَيْهِمْ ۖ شَيْئًا قَلِيلًا ﴿٧٤﴾

৭৫. (তুমি ঝুঁকে পড়লে) অবশ্যই তোমাকে ইহজীবনে ও পরজীবনে দ্বিগুণ (শাস্তি) আন্বাদন কারাতাম, তখন আমার বিরুদ্ধে তোমার জন্যে কোন সাহায্যকারী পেতে না।

إِذَا لَا تَدْرُوكُ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ۖ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

৭৬. তারা তোমাকে দেশ হতে উৎখাত করার চূড়ান্ত চেষ্টা করেছিল তোমাকে সেথা হতে বহিষ্কার করার জন্যে; তাহলে তোমার পর তারাও সেখান অল্পকালই টিকে থাকতো।

وَأِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لَيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْقَكَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٧٦﴾

৭৭. আমার রাসূলদের মধ্যে তোমার পূর্বে যাদেরকে আমি পাঠিয়েছিলাম তাদের ক্ষেত্রেও ছিল এরূপ নিয়ম এবং তুমি আমার নিয়মের কোন পরিবর্তন পাবে না।

سُنَّةٌ مِّنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ
لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝

৭৮. সূর্য হেলে পড়বার পর হতে রাত্রির ঘন অন্ধকার পর্যন্ত নামায কয়েম করবে এবং কয়েম করবে ফজরের নামায; ফজরের নামায পরিলক্ষিত হয় বিশেষভাবে।^১

اقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِكَ الشَّمْسِ إِلَى عَسَقِ الْاَيْلِ
وَقُرْآنِ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝

৭৯. আর রাত্রির কিছু অংশে তাহাজ্জুদ কয়েম করবে; এটা তোমার এক অতিরিক্ত কর্তব্য; আশা করা যায়, তোমার প্রতিপালক তোমাকে প্রতিষ্ঠিত করবেন প্রশংসিত স্থানে (মহা শাক্ষাত্তের মর্যাদায়)।^২

وَمِنَ الْاَيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ
أَنْ يَّعْبَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে বলতে শুনেছি যে, একা নামায পড়ার চাইতে জামাআতের সাথে পড়লে পঁচিশগুণ সওয়াব বেশি। দিনের এবং রাতের ফেরেশতাগণ ফজরের নামাযে একত্রিত হন। অতঃপর আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ **رَبُّنَا لَيُعْبَثُ بِكُنُوزِ سُلَيْمَانَ** - "ফজরের নামাযে, কুরআন পড়ার সময় (ফেরেশতাদের) উপস্থিতির সময়।" [সূরা বানী ইসরাইল, আয়াত-৭৮] (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮)

২। (ক) আদম ইবনে আলী থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ আমি ইবনে উমরকে বলতে শুনেছি, কিয়ামতের দিন লোকেরা দলে দলে বিভক্ত হয়ে যাবে। প্রত্যেক উম্মত তার নিজের নবীর কাছে যাবে। তারা বলবেঃ হে অমুক (নবী)! আল্লাহর কাছে আমাদের জন্য শাক্ষাত্ত করুন। হে অমুক (নবী)! আল্লাহর কাছে আমাদের জন্য শাক্ষাত্ত করুন। (কিন্তু তারা কেউ শাক্ষাত্ত করতে রাযী হবেন না।)। শেষ পর্যন্ত শাক্ষাত্তের দায়িত্ব এসে পড়বে নবী (মুহাম্মাদ) (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর ওপর। আর এই দিনেই আল্লাহ তাঁকে মাকামে মাহমুদে দাঁড় করাবেন (প্রশংসিত স্থানে)। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭১৮)

(খ) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি আযান শুনার পর বলবে- 'আল্লাহুমা রব্বা হাযিহি দা' ওয়াযিত্ত তাশ্বাতি ওয়াস সলাতিল কা-ইমা, আতি মুহাম্মাদানিল ওয়াসিলাতা ওয়াল ফাখীলাতা ওয়াব'আসহ মাকামাম্ মাহমুদানিল্লাযী ওয়া'আত্ তাহ্'। অর্থঃ "হে আল্লাহ এই পরিশূর্ণ আহ্বানের মালিক এবং প্রতিষ্ঠিত নামাযের রব। মুহাম্মাদকে অছিলার (মোখ্যম) ও শ্রেষ্ঠত্ব দান করো এবং তাঁকে মাকামে মাহমুদে দাঁড় করো যার ওয়াদা তুমি তাঁর কাছে করেছো।" তার জন্য আমার শাক্ষাত্ত হালাল হয়ে যাবে। এ হাদীসটি হামযা ইবনে আবদুল্লাহ তার বাপের কাছ থেকে এবং তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭১৯)

৮০. আর দু'আ করঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে সেখানে নিয়ে যান সত্যতা সহকারে এবং সেখান হতে আমাকে সত্য সহকারে বের করে নিন এবং আপনার নিকট হতে আমাকে দান করুন বিজয় ও সাহায্য (অকাট্য দলীল)।

৮১. আর বলঃ সত্য এসেছে এবং মিথ্যা বিলুপ্ত হয়েছে; মিথ্যা তো বিলুপ্ত হয়েই থাকে।

৮২. আমি অবতীর্ণ করি কুরআন, যা বিশ্বাসীদের জন্যে আরোগ্য ও দয়া, কিন্তু তা সীমালঙ্ঘনকারীদের ক্ষতিই বৃদ্ধি করে।

৮৩. যখন আমি মানুষের উপর অনুগ্রহ করি তখন সে মুখ ফিরিয়ে নেয় ও অহংকারে দূরে সরে যায় এবং তাকে অনিষ্ট স্পর্শ করলে সে একেবারে হতাশ হয়ে পড়ে।

৮৪. বল, প্রত্যেকেই নিজ প্রকৃতি অনুযায়ী কাজ করে থাকে এবং চলার পথে কে সর্বাপেক্ষা নির্ভুল তোমার প্রতিপালক তা ভালোভাবে অবগত আছেন।

৮৫. তোমাকে তারা রূহ সম্পর্কে প্রশ্ন করে, তুমি বলঃ রূহ হলো আমার প্রতিপালকের আদেশ (সম্পর্কিত একটি বিষয়।) এ বিষয়ে তোমাদেরকে সামান্য জ্ঞানই দেয়া হয়েছে।

৮৬. ইচ্ছা করলে আমি তোমার প্রতি যা প্রত্যাদেশ করেছি তা অবশ্যই

وَقُلْ رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ
مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا
تَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبٰطِلُ اِنَّ الْبٰطِلَ
كَانَ زُهُوْقًا ﴿٨١﴾

وَنَزَّلْنَا مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاۗءٌ وَرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسٰرًا ﴿٨٢﴾

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأٰ بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يُوْسًا ﴿٨٣﴾

قُلْ كُلٌّ يَعْبُدُ عَلٰى شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ
بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾

وَيَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ
وَمَا اُوْتِيْتُمْ مِنْ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

وَلَكِنْ سَأَلْنَا لَنَدَاهِبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ

প্রত্যাহার করতে পারতাম; তাহলে তুমি এ বিষয়ে আমার বিরুদ্ধে কোন কর্ম বিধায়ক পেতে না।

৮৭. এটা প্রত্যাহার না করা তোমার প্রতিপালকের দয়া; তোমার প্রতি আছে তাঁর মহা অনুগ্রহ।

৮৮. বলঃ যদি মানুষ ও জ্বিন সমবেত হয় এই কুরআনের অনুরূপ কুরআন আনয়নের জন্যে যদিও তারা পরস্পরকে সাহায্য করে, (তবুও) তারা এর অনুরূপ কুরআন আনয়ন করতে পারবে না।

৮৯. আমি মানুষের জন্যে এই কুরআনে বিভিন্ন উপমার দ্বারা আমার বাণী বিশদভাবে বর্ণনা করেছি; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ সত্য প্রত্যাখ্যান ব্যতীত ক্ষান্ত হলো না।

৯০. আর তারা বলেঃ কখনই আমরা তোমার উপর বিশ্বাস স্থাপন করবো না, যতক্ষণ না তুমি আমাদের জন্যে ভূমি হতে এক প্রস্রবণ উৎসারিত করবে।

৯১. অথবা তোমার খেজুরের কিংবা আঙ্গুরের এক বাগান হবে যার ফাঁকে ফাঁকে তুমি অজস্র ধারায় প্রবাহিত করে দেবে নদী-নালা।

৯২. অথবা তুমি যেমন বলে থাকো, তদানুযায়ী আকাশকে খন্ড-বিখন্ড করে আমাদের উপর ফেলবে অথবা আল্লাহ ও ফেরেশতাদেরকে আমাদের সামনে উপস্থিত করবে।

৯৩. অথবা তোমার একটি স্বর্ণনির্মিত গৃহ হবে, অথবা তুমি আকাশে

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ﴿٨٧﴾

إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ط إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٨﴾

قُلْ لَئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٩﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ نَبَأَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٠﴾

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا ﴿٩١﴾

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِنْ نَخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجَّرَ الْأَنْهَارُ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ﴿٩٢﴾

أَوْ تُسْقَطَ السَّمَاءُ كَمَا زَعَمْتِ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ تَأْتِي بِلِلِّهِ وَالْمَلَكَةِ قَبِيلًا ﴿٩٣﴾

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِنْ ذُرْبٍ أَوْ تَرْفَىٰ فِي

আরোহণ করবে; অবশ্য তোমার আকাশ আরোহণেও আমরা কখনো বিশ্বাস করবো না যতক্ষণ তুমি আমাদের প্রতি এক কিতাব অবতীর্ণ না করবে যা আমরা পাঠ করবো; বলঃ পবিত্র মহান আমার প্রতিপালক! আমি তো শুধু একজন মানুষ, একজন রাসূল।

৯৪. ‘আল্লাহ কি মানুষকে রাসূল করে পাঠিয়েছেন?’ মানুষকে এই উক্তিই বিশ্বাস স্থাপন হতে বিরত রাখে, যখন তাদের নিকট আসে পথ-নির্দেশ।

৯৫. বলঃ ফেরেশতার যদি নিশ্চিত হয়ে পৃথিবীতে বিচরণ করতো তবে আমি আকাশ হতে ফেরেশতাকেই তাদের নিকট রাসূল করে পাঠাতাম।

৯৬. বলঃ আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে আল্লাহই যথেষ্ট, তিনি তাঁর বান্দাদেরকে সবিশেষ জানেন ও দেখেন।

৯৭. আল্লাহ যাদেরকে পথ নির্দেশ করেন তারা তো পথপ্রাপ্ত এবং যাদেরকে তিনি পথভ্রষ্ট করেন, তুমি কখনই তাঁকে ব্যতীত অন্য কাউকেও তাদের অভিভাবক পাবে না, কিয়ামতের দিন আমি তাদেরকে সমবেত করবো তাদের মুখে^১ ভর দিয়ে চলা অবস্থায়; অন্ধ, বোবা ও

السَّمَاءِ ط وَ لَنْ نُؤْمِنَ لِرُؤُوسِكَ حَتَّىٰ تُنزِلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرُؤُهُ ط قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٧﴾

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٨﴾

قُلْ لَوْ كَانِ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَنْشُرُونَ مَطْيَبِينَ لَنَزَلْنَا عَلَيْهِمُ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ﴿٩٩﴾

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ط إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٠٠﴾

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ط وَمَنْ يَضِلْ فَكُنْ تَجِدْ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ط وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عُلَّ وَجُوهَهُمْ عَمِيًّا وَبُكْمًا وَصَمَاتًا ط مَا لَهُمْ جَهَنَّمُ ط كَمَا خَبَتْ زُنُوبُهُمْ سَعِيرًا ﴿١٠١﴾

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক ব্যক্তি বললঃ “হে আল্লাহর রাসূল! কাকেরদেরকে কি হাশরের দিন নিম্নমুখী করে একত্রিত করা হবে?” তিনি বললেনঃ “যিনি এ দুনিয়ায় তাকে দু’পায়ের ওপর হাঁটাতে পারলেন তিনি কি হাশরের দিন তাকে নিম্নমুখী করে চালাতে সক্ষম নন?” কাতাদা বলেছেনঃ হ্যাঁ, আমাদের রবের ইজ্জতের শপথ! (তিনি এটা করতে সক্ষম)। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৬০)

বধির করে। তাদের আবাসস্থল জাহান্নাম; যখনই তা স্তিমিত হবে আমি তাদের জন্যে অগ্নি বৃদ্ধি করে দেবো।

৯৮. এটাই তাদের প্রতিফল। কারণ, তারা আমার নিদর্শন অস্বীকার করেছিল ও বলেছিলঃ আমরা অস্থিতে পরিণত ও চূর্ণ-বিচূর্ণ হলেও কি নতুন সৃষ্টি রূপে পুনরুত্থিত হবো?।

৯৯. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আল্লাহ, যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন তিনি তাদের অনুরূপ সৃষ্টি করতে সক্ষম? তিনি তাদের জন্যে স্থির করেছেন এক নির্দিষ্ট কাল, যাতে কোন সন্দেহ নেই; তথাপি অত্যাচারীরা সত্য প্রত্যাখ্যান করা ব্যতীত ক্ষান্ত হলো না।

১০০. বলঃ যদি তোমরা আমার প্রতিপালকের দয়ার ভাভারের অধিকারী হতে তবুও তোমরা 'ব্যয় হয়ে যাবে' এই আশঙ্কায় ওটা ধরে রাখতে, মানুষ তো অতিশয় কৃপণ।

১০১. তুমি বানী ইসরাঈলকে জিজ্ঞেস করে দেখো, আমি মূসাকে (ﷺ) ন'টি স্পষ্ট নিদর্শন দিয়ে ছিলাম; যখন তিনি তাদের নিকট এসেছিলেন তখন ফিরাউন তাকে বলেছিলঃ হে মূসা (ﷺ)! আমি তো মনে করি তুমি যাদুগ্রন্থ।

১০২. মূসা (ﷺ) বলেছিলেনঃ তুমি অবশ্যই অবগত আছ যে, এই সমস্ত স্পষ্ট নিদর্শন আকাশমন্ডলী ও

ذَلِكَ جَزَاءُ هُم بِآيَاتِنَا وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنْآ لَنُبْعُونَنَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ فَاَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا لُفُورًا ﴿٩٩﴾

قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَنُورًا ﴿١٠٠﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ سِنْعَ آيَةٍ بَيِّنَةٍ فَنَسَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ ۚ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يُفْرَعُونَ

পৃথিবীর প্রতিপালকই অবতীর্ণ করেছেন প্রত্যক্ষ প্রমাণ স্বরূপ; হে ফিরাউন! আমি তো দেখছি যে, তুমি ধ্বংস হয়ে গেছো।

﴿۱۷﴾ مَثُورًا

১০৩. অতঃপর ফিরাউন তাদেরকে দেশ হতে উচ্ছেদ করবার সংকল্প করলো; তখন আমি ফিরাউন ও তার সঙ্গীগণ সকলকে নিমজ্জিত করলাম।

فَارَادَ أَنْ يَسْتَفِيزَهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَعْرَفْنَاهُ
وَمَنْ مَعَهُ جَبِيحًا ﴿۱۷﴾

১০৪. এরপর আমি বানী ইসরাঈলকে বললামঃ তোমরা এই দেশে বসবাস কর এবং যখন কিয়ামতের প্রতিশ্রুতি বাস্তবায়িত হবে তখন তোমাদের সকলকে আমি একত্রিত করে উপস্থিত করবো।

وَقَلْنَا مَنْ بَعْدَهُ لِنَبِيِّ إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ﴿۱۸﴾

১০৫. আমি সত্যসত্যই কুরআন অবতীর্ণ করেছি এবং তা সত্যসহই অবতীর্ণ হয়েছে; আমি তো তোমাকে শুধু সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রূপে প্রেরণ করেছি।

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَّلْنَا وَمَا أَرْسَلْنَاكَ
إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿۱۹﴾

১০৬. আমি কুরআন অবতীর্ণ করেছি খন্ড খন্ডভাবে যাতে তুমি তা মানুষের কাছে পাঠ করতে পার ক্রমে ক্রমে; এবং আমি তা যথাযথভাবে অবতীর্ণ করেছি।

وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ
وَأَنْزَلْنَاهُ تَنْزِيلًا ﴿۲০﴾

১০৭. তুমি বলঃ তোমরা কুরআনে বিশ্বাস কর অথবা বিশ্বাস না কর, যাদেরকে এর পূর্বে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তাদের নিকট যখন এটা পাঠ করা হয়, তখনই তারা সিজদায় লুটিয়ে পড়ে।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
اَلْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖ اِذَا يُنۡلٰى عَلَيْهِمْ
يَخۡرُوۡنَ لِلْاَذۡقَانِ سۡجَدًا ﴿۲۱﴾

১০৮. এবং বলেঃ ‘আমাদের প্রতিপালক পবিত্র, মহান! আমাদের

وَيَقُوۡلُوۡنَ سُبۡحٰنَ رَبِّنَا اِنْ كَانَ وَعۡدُ رَبِّنَا

প্রতিপালকের প্রতিশ্রুতি কার্যকরী হয়েই থাকে।

১০৯. আর তারা কাঁদতে কাঁদতে ভূমিতে লুটিয়ে পড়ে এবং তাদের বিনয় বৃদ্ধি করে।

১১০. বল, তোমরা 'আল্লাহ' নামে আস্থান কর বা 'রহমান' নামে আস্থান কর, তোমরা যে নামেই আস্থান কর তাঁর সব নামই তো সুন্দর! তোমরা নামাযে তোমাদের স্বর উচ্চ করো না এবং অতিশয় ক্ষীণও করো না; এই দুই এর মধ্যপথ অবলম্বন করো।

১১১. বলঃ প্রশংসা আল্লাহরই, যিনি সন্তান গ্রহণ করেন নি, তাঁর সার্বভৌমত্বে কোন অংশীদার নেই এবং যিনি দুর্দশাপ্রস্তু হন না, যে কারণে তাঁর অভিভাবকের প্রয়োজন হতে পারে। সুতরাং সম্বন্ধে তাঁর মাহত্ব ঘোষণা কর।

সূরাঃ কাহুফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১০, রুকু'ঃ ১২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই যিনি তাঁর বান্দার (মুহাম্মাদ ﷺ)-এর প্রতি এই কিতাব অবতীর্ণ করেছেন এবং এতে তিনি অসংগতি রাখেন নি।

لَمَفْعُولًا ﴿١٠٩﴾

وَيَخْرُونَ لِلَّذِينَ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ﴿١١٠﴾

قُلْ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ ۗ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۗ وَلَا تَجْهَرُوا بِصَلَاتِكُمْ وَلَا تَخَافُتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ﴿١١١﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وِليٌّ مِنَ الدُّنْيَا ۗ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١٢﴾

سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا ١١٠ رُكُوعَاتُهَا ١٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ﴿١﴾

২. একে করেছেন সুপ্রতিষ্ঠিত তাঁর কঠিন শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করবার জন্যে এবং বিশ্বাসীগণ, যারা সৎকর্ম করে তাদেরকে এই সুসংবাদ দেয়ার জন্যে যে, তাদের জন্যে আছে উত্তম পুরস্কার।

৩. যাতে তারা হবে চিরস্থায়ী।

৪. এবং সতর্ক করার জন্যে, তাদেরকে যারা বলে যে, আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করেছেন।

৫. এই বিষয়ে তাদের কোনই জ্ঞান নেই এবং তাদের পিতৃপুরুষদেরও ছিল না; তাদের মুখনিঃসৃত বাক্য কি উদ্ভট! তারা তো শুধু মিথ্যাই বলে।

৬. তারা এই বাণী বিশ্বাস না করলে তাদের পিছনে পিছনে যুরে সম্ভবতঃ তুমি দুঃখে আত্মবিনাশী হয়ে পড়বে।

৭. পৃথিবীর উপর যা কিছু আছে আমি সেগুলিকে ওর শোভা করেছি তাদেরকে (মানুষকে) এই পরীক্ষা করবার জন্যে যে, তাদের মধ্যে কর্মে কে শ্রেষ্ঠ।

৮. ওর উপর যা কিছু আছে তা অবশ্যই আমি উদ্ভিদ শূন্য মৃত্তিকায় পরিণত করবো।

৯. তুমি কি মনে কর যে, গুহা ও রাকীমের অধিবাসীরা ছিল আমার নিদর্শনাবলীর মধ্যে বিস্ময়কর?

১০. যখন যুবকরা গুহায় আশ্রয় নিলো, তখন তারা বলেছিলঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি নিজের

قِيَامًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ
أَجْرًا حَسَنًا ﴿١٥﴾

مَا كَثِيرٌ فِيهِ أَعْبَادًا ﴿١٦﴾

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ﴿١٧﴾

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً
تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِن يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ﴿١٨﴾

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِن لَّمْ
يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ﴿١٩﴾

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا
لِنُبْهَهُمْ أَنَّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٢٠﴾

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ﴿٢١﴾

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ
كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ﴿٢٢﴾

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا
مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا

থেকে আমাদেরকে অনুগ্রহ দান করুন এবং আমাদের জন্যে আমাদের কাজ-কর্ম সঠিকভাবে পরিচালনার ব্যবস্থা করুন।

رَشَدًا ⑩

১১. অতঃপর আমি তাদেরকে গুহায় কয়েক বছর যুমন্ত অবস্থায় রাখলাম।

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ أَذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ

عَدَدًا ⑪

১২. পরে আমি তাদেরকে জাগরিত করলাম জানবার জন্যে যে, দুই দলের মধ্যে কোনটি তাদের অবস্থানকাল সঠিকভাবে নির্ণয় করতে পারে।

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْجَرْيِينَ أَحْسَىٰ لِمَا

كَبِتُوا أَمَدًا ⑫

১৩. আমি তোমার কাছে তাদের সঠিক বৃত্তান্ত বর্ণনা করছিঃ তারা ছিল কয়েকজন যুবক, তারা তাদের প্রতিপালকের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছিল এবং আমি তাদের সৎ পথে চলার শক্তি বৃদ্ধি করেছিলাম।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۗ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ

أَمْنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ⑬

১৪. আর আমি তাদের চিত্ত দৃঢ় করেছিলাম; তারা যখন উঠে দাঁড়ালো তখন বললোঃ “আমাদের প্রতিপালক আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর প্রতিপালক; আমরা কখনই তাঁর পরিবর্তে অন্য কোন মা'বুদকে আহ্বান করবো না; যদি করে বসি তা অতিশয় গর্হিত হবে।”

وَرَبَّطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُوَ مِنْ دُونِهِ

إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ⑭

১৫. আমাদেরই এই স্বজাতিরই তাঁর পরিবর্তে অনেক মা'বুদ গ্রহণ করেছে, তারা এসব মা'বুদ সম্বন্ধে স্পষ্ট প্রমাণ উপস্থিত করে না কেন? যে আল্লাহর সম্বন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করে তার চেয়ে অধিক সীমালঙ্ঘনকারী আর কে?

هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَوْلَا

يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطٰنٍ بَيِّنٍ ۗ فَمَنْ أَظْلَمُ

مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ⑮

১৬. তোমরা যখন বিচ্ছিন্ন হলে তাদের হতে ও তারা আল্লাহর পরিবর্তে যাদের ইবাদত করে তাদের হতে, তখন তোমরা গুহায় আশ্রয় গ্রহণ কর; তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের জন্যে তাঁর দয়া বিস্তার করবেন এবং তিনি তোমাদের জন্যে তোমাদের কাজকর্মকে ফলপ্রসূ করবার ব্যবস্থা করবেন।

১৭. তুমি যদি তাদেরকে গুহার ভিতরে দেখতে, তবে দেখতে পেতে যে; সূর্য উদয়কালে তাদের গুহার দক্ষিণ পার্শ্বে হলে আছে এবং অস্তকালে তাদেরকে অতিক্রম করছে বাম পার্শ্ব দিয়ে, আর তারা তার ভিতরে বিশাল জায়গায় (পড়ে রয়েছে)। এসব আল্লাহর নিদর্শন; আল্লাহ যাকে সৎপথে পরিচালিত করেন সে সৎপথ প্রাপ্ত এবং তিনি যাকে পথভ্রষ্ট করেন তুমি কখনই তার কোন পথ প্রদর্শনকারী অভিভাবক পাবে না।

১৮. তুমি মনে করতে, তারা জাগ্রত কিন্তু তারা ছিল নিদ্রিত; আমি তাদেরকে ডানে ও বামে পাশ বদলিয়ে দিতাম এবং তাদের কুকুর ছিল সম্মুখের পা দু'টি গুহার দ্বারে প্রসারিত করে; তাকিয়ে তাদেরকে দেখলে তুমি পিছনে ফিরে পালিয়ে যেতে ও তাদের ভয়ে আতংকগ্রস্ত হয়ে পড়তে।

১৯. এবং এভাবেই আমি তাদেরকে জাগ্রত করলাম, যাতে তারা

وَإِذْ اَعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ اِلَّا اللّٰهُ
فَاَوَّاىٓ اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ
رَّحْمَتِهٖ وَيَهْدِيْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مَّرْفَقًا ﴿۱۶﴾

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَزُوْرُ عَنْ كَهْفِهِمْ
ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ
الشَّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ط ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ
اللّٰهِ ط مَنْ يُّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىَّ وَمَنْ يُضِلِّ
فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وِلٰیًا مُّرْسِدًا ﴿۱۷﴾

وَتَحْسَبُهُمْ اِيْقَاطًا وَهُمْ رُقُوْدٌ ۗ وَنَقَلْبُهُمْ
ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشَّمَالِ ۗ وَكَلْبُهُمْ
بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ط لَوْ اَطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ
لَوَلِيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَلَّيْتُ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوْا بَيْنَهُمْ ط قَالَ قَائِلٌ

পরস্পরের মধ্যে জিজ্ঞাসাবাদ করে; তাদের একজন বললো: তোমরা কতকাল অবস্থান করেছ? কেউ কেউ বললো: একদিন অথবা একদিনের কিছু অংশ; কেউ কেউ বললো: তোমরা কতকাল অবস্থান করছো, তা তোমাদের প্রতিপালকই ভাল জানেন; এখন তোমাদের একজনকে তোমাদের এই মুদ্রাসহ নগরে প্রেরণ কর; সে যেন দেখে কোন খাদ্য উত্তম ও তা হতে যেন কিছু খাদ্য নিয়ে আসে তোমাদের জন্যে; সে যেন বিচক্ষণতার সাথে কাজ করে ও কিছুতেই যেন তোমাদের সম্বন্ধে কাউকেও কিছু জানতে না দেয়।

২০. তারা যদি তোমাদের বিষয় জানতে পারে, তবে তোমাদেরকে প্রস্তরাঘাতে হত্যা করবে অথবা তোমাদেরকে তাদের ধর্মে ফিরিয়ে নিবে এবং সেক্ষেত্রে তোমরা কখনই সাফল্য লাভ করবে না।

২১. এবং এভাবে আমি মানুষকে তাদের বিষয় জানিয়ে দিলাম, যাতে তারা জ্ঞাত হয় যে, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য এবং কিয়ামতে কোন সন্দেহ নেই; যখন তারা তাদের কর্তব্য বিষয়ে নিজেদের মধ্যে বিতর্ক করছিল তখন অনেকে বললো: তাদের উপর সৌধ নির্মাণ কর; তাদের প্রতিপালক তাদের বিষয়ে ভাল জানেন; তাদের কর্তব্য বিষয়ে যাদের মত প্রবল হলো তারা বললো: আমরা তো নিশ্চয়ই তাদের উপর মসজিদ নির্মাণ করবো।

مِّنْهُمْ كَم لَيْثُمْ ط قَالُوا لَيْثُنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ط
قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَيْثُمْ ط فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ
بِوَرَقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى
طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ
وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ⑩

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ
فِي مَلَبَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ⑪

وَكَذَلِكَ أَعْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ
حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا ⑫ إِذِ يَتَنَازَعُونَ
بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُيُوتًا ط
رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ط قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ
لَنَنْجِيَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ⑬

২২. অজানা বিষয়ে অনুমানের উপর নির্ভর করে কেউ কেউ বলবে: তারা ছিল তিন জন, তাদের চতুর্থটি ছিল তাদের কুকুর; এবং কেউ কেউ বলে: তারা ছিল পাঁচজন, তাদের ষষ্ঠটি ছিল তাদের কুকুর; আর কেউ কেউ বলেন, তারা ছিল সাতজন, তাদের অষ্টমটি ছিল তাদের কুকুর; বল: আমার প্রতিপালকই তাদের সংখ্যা ভাল জানেন; তাদের সংখ্যা অল্প কয়েকজনই জানে; সাধারণ আলোচনা ব্যতীত তুমি তাদের বিষয়ে বিতর্ক করো না এবং তাদের কাউকেও তাদের বিষয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করো না।

২৩. কখনই তুমি কোন বিষয়ে বলো না: আমি ওটা আগামীকাল করবো;

২৪. ‘আল্লাহ ইচ্ছা করলে’ এই কথা না বলে; যদি ভুলে যাও তবে তোমার প্রতিপালককে স্মরণ করো ও বলো: সম্ভবতঃ আমার প্রতিপালক আমাকে গুহাবাসীর বিবরণ অপেক্ষা সত্যের নিকটতম পথ নির্দেশ করবেন।

২৫. তারা তাদের গুহায় ছিল তিনশ’ বছর, আরো নয় বছর।

২৬. তুমি বল: তারা কত কাল ছিল, তা আল্লাহই ভাল জানেন, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অজ্ঞাত বিষয়ের জ্ঞান তাঁরই; তিনি কত সুন্দর ভাবে দেখেন ও শুনে। তিনি ছাড়া তাদের অন্য কোন অভিভাবক নেই; তিনি কাউকেও নিজ কর্তৃত্বের শরীক করেন না।

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجَبًا بِالْغَيْبِ ۗ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكَ غَدًا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ زَوَادُكَ رَبِّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنَّ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَذَا رَشَدًا ۝

وَكَيْتُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ۝ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا لَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط أَبْصُرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ط مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۝

২৭. তুমি তোমার প্রতি প্রত্যাঙ্গিষ্ট তোমার প্রতিপালকের কিতাব আবৃত্তি কর; তাঁর বাক্য পরিবর্তন করার কেউই নেই; তুমি কখনই তাঁকে ব্যতীত অন্য কোন আশ্রয় পাবে না।

২৮. নিজেকে তুমি রাখবে তাদেরই সংসর্গে যারা সকাল ও সন্ধ্যায় আহ্বান করে তাদের প্রতিপালককে তাঁর সন্তুষ্টি লাভের উদ্দেশ্যে এবং তুমি পার্থিব জীবনের শোভা কামনা করে তাদের দিক হতে তোমার দৃষ্টি ফিরিয়ে নিয়ো না; যার চিন্তকে আমি আমার স্মরণে অমনোযোগী করে দিয়েছি, সে তার খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে ও যার কার্যকলাপ সীমা অতিক্রম করে তুমি তার আনুগত্য করো না।

২৯. বলঃ সত্য তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে প্রেরিত; সুতরাং যার ইচ্ছা, বিশ্বাস করুক ও যার ইচ্ছা প্রত্যাখ্যান করুক; আমি সীমালঙ্ঘনকারীদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছি অগ্নি, যার বেষ্টনী তাদেরকে পরিবেষ্টন করে থাকবে; তারা পানীয় চাইলে তাদেরকে দেয়া হবে গলিত ধাতুর ন্যায় পানীয়, যা তাদের মুখমন্ডল বিদগ্ধ করবে, এটা নিকৃষ্ট পানীয় ও জাহান্নাম কত নিকৃষ্ট আশ্রয়।

৩০. যারা বিশ্বাস রাখে ও সৎকর্ম করে (আমি তাদেরকে পুরস্কৃত করি,) যে সৎ কর্ম করে আমি তার কর্মফল নষ্ট করি না।

وَأَنلُ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مَبْدَلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَلَٰكِن تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾

وَأَصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ ۖ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِغْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبِعْ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ﴿۲۸﴾

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُم مَّا فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِرْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا ۖ أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۖ وَإِنْ يَسْتَعِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالنَّهْلِ يُشْوَى الْوُجُوهُ ۖ بِئْسَ الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مَرْتَفَعًا ﴿۲۹﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾

৩১. তাদেরই জন্যে আছে স্থায়ী জান্নাত যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত। সেখায় তাদেরকে স্বর্ণ কংকনে অলংকৃত করা হবে, তারা পরিধান করবে সূক্ষ্ম ও স্থূল রেশমের সবুজ বস্ত্র ও হেলান দিয়ে বসবে সুসজ্জিত আসনে; কত সুন্দর পুরস্কার ও উত্তম আশ্রয়স্থল!

৩২. তুমি তাদের কাছে পেশ কর, দুই ব্যক্তির উপমাঃ তাদের একজনকে আমি দিয়েছিলাম দু'টি আঙ্গুর উদ্যান এবং এই দুইটিকে আমি খেজুর বৃক্ষ দ্বারা পরিবেষ্টিত করেছিলাম ও এই দুইয়ের মধ্যবর্তী স্থানকে করেছিলাম শস্যক্ষেত্র।

৩৩. উভয় উদ্যানই ফল দান করতো এবং এতে কোন ক্রটি করতো না এবং উভয়ের ফাঁকে ফাঁকে প্রবাহিত করেছিলাম নহর।

৩৪. এবং তার প্রচুর ধন-সম্পদ ছিল; অতপর কথা প্রসঙ্গে সে তার বন্ধুকে বললোঃ ধন-সম্পদে আমি তোমাদের অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ এবং জনবলে তোমাদের অপেক্ষা শক্তিশালী।

৩৫. এভাবে নিজের প্রতি যুলুম করে সে তার উদ্যানে প্রবেশ করলো। সে বললোঃ আমি মনে করি না যে, এটা কখনও ধ্বংস হয়ে যাবে।

৩৬. আমি মনে করি না যে, কিয়ামত হবে, আর আমি যদি আমার প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবৃত্ত হই-ই তবে আমি তো নিশ্চয়ই এটা অপেক্ষা উৎকৃষ্ট স্থান পাবো।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتٌ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُندُسٍ وَاسْتَبْرَقٍ
مُّتَّكِنِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ
مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا
جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

كُنَّا الْجَنَّتَيْنِ اَّتَتْ أُلْكُهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ
شَيْئًا ۖ وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ﴿٣٣﴾

وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ
أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۗ قَالَ
مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِنْ رُدِدْتُ
إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

৩৭. তদুত্তরে তাকে তার বন্ধু বললোঃ তুমি কি তাঁকে অস্বীকার করছো যিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন মৃত্তিকা ও পরে স্তম্ভ হতে এবং তারপর পূর্ণাঙ্গ করেছেন মনুষ্য আকৃতিতে?

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاهُ رَجُلًا ۗ

৩৮. কিন্তু আমি (বলিঃ) ‘আল্লাহই আমার প্রতিপালক এবং আমি কাউকেও আমার প্রতিপালকের শরীক করি না।’

لَكِنِّي هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

৩৯. তুমি যখন ধনে ও সম্ভানে আমাকে তোমার অপেক্ষা কম দেখলে, তখন তোমার উদ্যানে প্রবেশ করে তুমি কেন বললে নাঃ “মাশা আল্লাহ” (আল্লাহ যা চেয়েছেন তা-ই হয়েছে;) আল্লাহর সাহায্য ব্যতীত কোন শক্তি নেই।

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتِكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِن تَرَىٰ أَنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ۗ

৪০. সম্ভবতঃ আমার প্রতিপালক আমাকে তোমার উদ্যান অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর কিছু দিবেন এবং তোমার উদ্যানে আকাশ হতে অগ্নি বর্ষণ করবেন যার ফলে তা উদ্ভিদ শূন্য মৃত্তিকায় পরিণত হবে।

فَعَلَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۗ

৪১. অথবা ওর পানি ভূ-গর্ভে অন্তর্হিত হবে এবং তুমি কখনো ওকে ফিরিয়ে আনতে পারবে না।

أَوْ يُصْبِحَ مَاءً غُورًا فَلَنْ نَسْتَبِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝

১। আবু মুসা আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি টিলার ওপর উঠছিলেন। এ সময় তিনি একটি খচ্চরের পিঠে সওয়ার ছিলেন। একজন লোক ওই টিলায় উঠে উচ্চস্বর 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু ওয়াল্লাহু আকবর' বললো। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, তোমরা তো কোন বধির এবং অনুপস্থিত সন্তাকে ডাকছো না। অতপর তিনি বললেনঃ হে আবু মুসা! কিংবা বলেছেন, ওহে আল্লাহর বান্দাহ! আমি কি তোমায় এমন একটি কথা বলে দেব, যেটা হলো বেহেশতের একটি রত্ন-ভান্ডার। আমি বললাম, হ্যাঁ (বলে দিন)! তিনি বললেন, সেটি হলো- 'লা-হাওলা ওয়ালা-কুওয়াতা ইল্লা বিল্লাহ'। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৯)

৪২. তার ধন-সম্পদ ধ্বংস হয়ে গেল এবং সে তাতে যা ব্যয় করেছিল তার জন্যে হাতে হাত রেখে আক্ষেপ করতে লাগলো। যখন তা ধ্বংস হয়ে গেল সে বলতে লাগলোঃ হায়! আমি যদি কাউকেও আমার প্রতিপালকের শরীক না করতাম!

৪৩. এবং আল্লাহ ব্যতীত তাকে সাহায্য করার কোন লোকজন ছিল না এবং সে নিজেও প্রতিকারে সমর্থ হলো না।

৪৪. এই ক্ষেত্রে সাহায্য করবার অধিকার আল্লাহরই, যিনি সত্য; পুরস্কারদানে ও পরিণাম নির্ধারণে তিনিই শ্রেষ্ঠ।

৪৫. তাদের কাছে পেশ কর উপমা পার্থিব জীবনেরঃ এটা পানির ন্যায় যা আমি বর্ষণ করি আকাশ হতে, যদ্বরণ ভূমির উদ্ভিদ ঘন সন্নিবিষ্ট হয়ে উদ্গত হয়। অতঃপর তা বিশুদ্ধ হয়ে এমন চূর্ণ-বিচূর্ণ হয় যে, বাতাস ওকে উড়িয়ে নিয়ে যায়; আল্লাহ সর্ব বিষয়ে শক্তিমান।

৪৬. ধনৈশ্বর্য ও সম্ভান-সম্ভতি পার্থিব জীবনের শোভা এবং অবশিষ্ট থাকে এমন সৎকার্য ওটা তোমার প্রতিপালকের নিকট পুরস্কার প্রাপ্তির জন্যে শ্রেষ্ঠ এবং আশা প্রাপ্তির ব্যাপারেও উৎকৃষ্ট।

৪৭. (স্মরণ কর, সেদিনের কথা) যেদিন আমি পর্বতকে করবো সম্বগালিত এবং তুমি পৃথিবীকে দেখবে একটি শূন্য প্রান্তর; সেদিন

وَأَحِيطَ بِشَمْرِهِ فَاصْبَحَ يَقْدُبُ كَفَيْهِ عَلَى
مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا
وَيَقُولُ لِيَلَيْسَتِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ
اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝

هَذَا لِكَ الْوَلَايَةِ لِلَّهِ الْحَقِّ ط هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ عُقَابًا ۝

وَاصْرَبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ
مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ
هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ط وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
مُقْتَدِرًا ۝

الْمَالِ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَاتُ
الطَّيِّبَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ۝

وَيَوْمَ نُسِطِرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۝
وَاحْشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نَعَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝

তাদেরকে (মানুষকে) আমি একত্রিত করবো এবং তাদের কাউকেও অব্যাহতি দিবো না।

৪৮. আর তাদেরকে তোমার প্রতিপালকের নিকট উপস্থিত করা হবে সারিবদ্ধভাবে এবং বলা হবে: 'তোমাদেরকে প্রথমবার যেভাবে সৃষ্টি করেছিলাম সেভাবেই তোমরা আমার নিকট উপস্থিত হয়েছো; অথচ তোমরা মনে করতে যে, তোমাদের জন্য প্রতিশ্রুত সময় আমি উপস্থিত করবো না?'

৪৯. এবং সেদিন উপস্থিত করা হবে আমলনামা এবং তাতে যা লিপিবদ্ধ আছে তার কারণে তুমি অপরাধীদের দেখবে আতংকগ্রস্ত এবং তারা বলবে: 'হায়, দুর্ভোগ আমাদের! এটা কেমন গ্রন্থ! ওটা তো ছোট বড় কিছুই বাদ দেয় না বরং ওটা সমস্ত হিসাব রেখেছে; তারা তাদের কৃতকর্ম সম্মুখে উপস্থিত পাবে; তোমার প্রতিপালক কারো প্রতি যুলুম করেন না।

৫০. এবং (স্মরণ কর) আমি যখন ফেরেশতাদেরকে বলেছিলাম: তোমরা আদমকে সেজদা কর তখন ইবলীস ছাড়া সকলে সেজদা করলো। সে জ্বিনদের একজন, সে তার প্রতিপালকের আদেশ অমান্য করলো; তবে কি তোমরা আমার পরিবর্তে তাকে ও তার বংশধরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করছো? তারা তো তোমাদের শত্রু; যালিমদের জন্য খুবই নিকৃষ্ট বিনিময়।

وَعَرَّضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًا ط لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا
خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ز بَلْ زَعَمْتُمْ أَنَّن
نَجْعَلْ لَكُمْ مَوْعِدًا ﴿٤٨﴾

وَوَضِعَ الْكِتَابَ فَتَرَىٰ الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ
مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يُوَيْلِتَنَا مَا لِ هَذَا الْكِتَابِ
لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا
وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ط وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
أَحَدًا ﴿٤٩﴾

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا
إِلَّا إِبْلِيسَ ط كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ
رَبِّهِ ط أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي
وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ط بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

৫১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকালে আমি তাদেরকে ডাকি নাই এবং তাদের সৃজনকালেও নয়, এবং আমি বিভ্রান্তকারীদের সাহায্য গ্রহণ করবার নই।

مَا أَشْهَدُهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ
أَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْبُضِلِّينَ
عَضُدًا ﴿٥١﴾

৫২. এবং (সেদিনের কথা স্মরণ কর) যেদিন তিনি বলবেনঃ ‘তোমরা যাদেরকে আমার শরীক মনে করতে তাদেরকে আহ্বান কর! তারা তখন তাদেরকে আহ্বান করবে; কিন্তু তারা তাদের আহ্বানে সাড়া দিবে না এবং আমি তাদের উভয়ের মধ্যস্থলে রেখে দিবো এক ধ্বংস গহ্বর।

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مُوبِقًا ﴿٥٢﴾

৫৩. অপরাধীরা আগুন দেখে বুঝবে যে তারা সেখানে পতিত হচ্ছে এবং তারা ওটা হতে কোন পরিত্রাণ স্থল পাবে না।

وَرَأَى الْمَجْرُمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا
وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

৫৪. আমি মানুষের জন্যে এই কুরআনে বিভিন্ন উপমার দ্বারা আমার বাণী বিশদভাবে বর্ণনা করেছি; মানুষ অধিকাংশ ব্যাপারেই বিতর্ক প্রিয়।

وَلَقَدْ صَدَقْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

৫৫. যখন তাদের কাছে পথ-নির্দেশ আসে তখন তাদের পূর্ববর্তীদের অবস্থা তাদের কখন হবে অথবা কখন উপস্থিত হবে বিবিধ শাস্তি এই প্রতীক্ষাই তাদেরকে বিশ্বাস স্থাপন হতে ও তাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা হতে বিরত রাখে।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ
وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ
الْأُولَىٰ ۖ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

৫৬. আমি শুধু সুসংবাদ দাতা ও সতর্ককারীরূপেই রাসূলদেরকে পাঠিয়ে থাকি; কিন্তু সত্য প্রত্যাখ্যানকারীরা মিথ্যা অবলম্বনে বিভ্রান্ত করে তা দ্বারা সত্যকে ব্যর্থ

وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ
وَيَجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا
بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

করে দেয়ার জন্যে এবং আমার নিদর্শনাবলী ও যার দ্বারা তাদেরকে সতর্ক করা হয়েছে সেসবকে তারা বিদ্রোহের বিষয়রূপে পরিণত করে থাকে।

৫৭. কোন ব্যক্তিকে তার প্রতিপালকের নিদর্শনাবলী স্মরণ করিয়ে দেয়ার পর সে তা হতে মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং তার কৃতকর্মসমূহ ভুলে যায়, তবে তার অপেক্ষা অধিক অত্যাচারী আর কে? আমি তাদের অন্তরের উপর আবরণ দিয়েছি যেন তারা কুরআন বুঝতে না পারে এবং তাদেরকে বধির করেছি; তুমি তাদেরকে সৎপথে আহ্বান করলেও তারা কখনো সৎপথে আসবে না।

৫৮. এবং তোমার প্রতিপালক ক্ষমাশীল দয়াবান, তাদের কৃতকর্মের জন্যে তিনি তাদেরকে শাস্তি দিতে চাইলে তিনি তাদের শাস্তি খুব তাড়াতাড়ি পাঠাতেন; কিন্তু তাদের জন্যে রয়েছে এক প্রতিশ্রুত মুহূর্ত, যা হতে তাদের পরিত্রাণ নেই।

৫৯. ঐসব জনপদ তাদের অধিবাসী-বৃন্দকে আমি ধ্বংস করেছিলাম যখন তারা সীমালঙ্ঘন করেছিল এবং তাদের ধ্বংসের জন্যে আমি স্থির করেছিলাম এক নির্দিষ্ট ক্ষণ।

৬০. (স্মরণ কর! সে সময়ের কথা), যখন মুসা (عليه السلام) তার সঙ্গীকে বলেছিলেনঃ দুই সমুদ্রের মিলনস্থলে (মোহনায়) না পৌছা পর্যন্ত আমি

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدْ مَتَّ يَدَاهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ط لَوْ يُؤْخَذُ هُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَلْ لَهُمُ الْعَذَابُ ط بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْعِدًا ﴿٥٨﴾

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهَكُنَّ هُمْ لَبَّاءُ ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِيَهْلِكُهُمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتْنِهِ لَآ أَبْرُحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

থামবো না, আমি যুগ যুগ ধরে চলতে থাকবো।

৬১. তারা যখন উভয়ের মিলন স্থলে পৌঁছলেন, তারা নিজেদের মাছের কথা ভুলে গেলেন; ওটা সুড়ৎঙ্গের মত পথ করে সমুদ্রে নেমে গেল।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا
فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

১। সাঈদ ইবনে যুবাইর (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি ইবনে ইব্বাসকে বললাম, নওফুল বিকালী বলে থাকে খিযিরের সাথে সাক্ষাতকারী মূসা বনী ইসরাইলের মূসা ছিলেন না। এ কথায় ইবনে আক্বাস (রাযিআল্লাহু আহহু) বললেনঃ আল্লাহর শত্রু মিথ্যে কথা বলছে। উবাই ইবনে কা'ব আমাকে (ইবনে আক্বাস) বলেছেন, তিনি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেনঃ মূসা বনী ইসরাইলের মধ্যে বস্তুতা করছিলেন। তাঁকে প্রশ্ন করা হলো, মানব জাতির মধ্যে সবচেয়ে বেশি জানে কে? জবাবে তিনি বললেন, আমি সবচেয়ে বেশি জানি। আল্লাহ তাঁর ওপর রুট হলে। যেহেতু তাঁকে এ জ্ঞান দেয়া হয়নি। আল্লাহ তাঁকে ওহীর মাধ্যমে বললেনঃ দুই সমুদ্রের সঙ্গম স্থলে আমার এক বান্দা অবস্থান করছে, সে তোমার চেয়ে বেশি জানে। মূসা বললেনঃ হে আমার রব! আমি তাঁর কাছে কেমন করে পৌঁছতে পারি? আল্লাহ বললেনঃ একটা মাছ সঙ্গ নাও এবং সেটা খলির মধ্যে রাখো (তারপর রওয়ানা হয়ে যাও)। যেখানে সেটাকে হারিয়ে ফেলবে সেখানেই তাকে পাবে। কাজেই তিনি একটা মাছ নিলেন। সেটা খলিতে রাখলেন তারপর চলতে লাগলেন। তাঁর সঙ্গে ইউশা ইবনে নূন নামক এক যুবকও ছিলেন। তারা সমুদ্র কিনারে একটি পাথরের কাছে পৌঁছে গেলেন এবং তার ওপর মাথা রেখে দু'জনে ঘুমিয়ে পড়লেন। এ সময় মাছটি খলির মধ্যে লাফিয়ে উঠলো। খলি থেকে বের হয়ে সেটা সমুদ্রের পানিতে পড়ে গেলো। “মাছটি সমুদ্রের মধ্যে নিজের পথে চলে গেল।” (সূরাঃ কাহাফ-৬১) আর যেখান দিয়ে মাছটি চলে গিয়েছিল, আল্লাহ সেখানে সমুদ্রের পানির প্রবাহ বন্ধ করে দিয়েছিলেন এবং সেখানে একটি নালা বানিয়ে দিয়েছিলেন। ঘুম থেকে জেগে ওঠার পর তাঁর সাথী তাঁকে মাছটির কথা জানাতে ভুলে গেলেন। সেই দিনের অবশিষ্ট সময় ও সেই রাত তাঁরা চললেন। পরের দিন মূসা বললেনঃ অর্থঃ “এ সফরে বেশ ক্লান্তি অনুভূত হচ্ছে, এখন আমাদের খাবার আনো।” (সূরাঃ কাহাফ-৬২)

রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আসলে আল্লাহ যে স্থানে সাক্ষাতের কথা বলেছিলেন (অর্থাৎ যেখানে মাছটি পালিয়ে গিয়েছিলো) সে স্থান ছেড়ে যাবার সময় থেকেই মূসা ক্লান্তি অনুভব করছিলেন। তখন তাঁর খাদেম তাঁকে বললেনঃ অর্থঃ “আপনার মনে আছে যে পাথরটার পাশে আমরা বিশ্রাম করেছিলাম, সেখানেই মাছটি অদ্ভুতভাবে সমুদ্রের মধ্যে চলে গিয়েছিলো। কিন্তু আমি মাছটির কথা বলতে ভুলে গিয়েছিলাম। আসলে শয়তান আমাকে এ কথা ভুলিয়ে দিয়েছে। তাই আমি আপনাকে তা জানাতে পারিনি।” (সূরাঃ কাহাফ-৬৩) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মাছটি সমুদ্রে চলে গিয়েছিলো তার পথ বানিয়ে। মূসা ও তাঁর খাদেমকে (ইউশা ইবনে নূন) তা অবাক করে দিয়েছিল। মূসা বললেনঃ অর্থঃ “এটিই তো আমরা খুঁজছিলাম।” (সূরাঃ কাহাফ-৬৪) কাজেই তাঁরা নিজেদের পদচিহ্ন অনুসরণ করতে করতে সেই জায়গায় এসে পড়লেন। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তাঁরা দু'জন নিজেদের পদ রেখা অনুসরণ করতে করতে আগের পাথরটার কাছে ফিরে আসলেন। সেখানে এক ব্যক্তিকে কাপড় জড়িয়ে বসে থাকতে দেখলেন। মূসা তাঁকে সালাম দিলেন। জবাবে খিযির তাঁকে বললেন, তোমাদের এ দেশে সালামের প্রচলন হলো কেমন করে? মূসা বললেন, আমি মূসা (খিযির জিজ্ঞেস করলেনঃ) বনী ইসরাইলের (নবী) মূসা? বললেনঃ হ্যাঁ, আমি বনী ইসরাইলের নবী মূসা। আমি এসেছি, “এজন্য যে আপনি আমাকে সেই জ্ঞানের শিক্ষা দিবেন যা আপনাকে শিখান হয়েছে। তিনি (খিযির) জবাব দিলেন, তুমি আমার সাথে সবার করতে পারবে না। (সূরাঃ কাহাফ-৬৭) হে

৬২. যখন তাঁরা আরো অগ্রসর হলেন
মূসা (ﷺ) তার সঙ্গীকে বললেনঃ
আমাদের নাস্তা আন, আমরা তো
আমাদের এই সফরে ক্লান্ত হয়ে
পড়েছি।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتْنِهِ اٰتِنَا غَدَاةَنَا
لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿۶۲﴾

মূসা! আল্লাহ্ আমাকে জ্ঞান দান করেছেনঃ এমন জ্ঞান, যার (সবটুকুর) সন্ধান তুমি পাওনি। আল্লাহ্ আমাকেও জ্ঞান দান করেছেন, এমন জ্ঞান যার (সবটুকু) সন্ধান আমিও পাইনি। মূসা বললেনঃ অর্থঃ “ইনশা আল্লাহ্ আপনি আমাকে সবরকারী পাবেন এবং আমি আপনার কোনো হুকুমের বরখেলাফ করবো না।” (সূরাঃ কাহাফ-৬৯) খিযির তাঁকে বললেনঃ অর্থঃ “যদি তুমি আমার সাথে চলতে চাও তাহলে আমাকে কোনো কথা জিজ্ঞেস করো না যতক্ষণ না আমি নিজেই তা তোমাকে জানাই। (সূরাঃ কাহাফ-৭০) কাজেই তারা দু’জন রওয়ানা হয়ে গেলেন। তারা সমুদ্র কিনার ধরে চলতে লাগলেন। তাঁরা একটি নৌকা দেখতে পেলেন। তাদেরকে নৌকায় করে নিয়ে যাবার ব্যাপারে নৌকার মাঝিদের সাথে আলাপ করলেন। তারা খিযিরকে চিনতে পারল। তাই তাদেরকে বসিয়ে গম্ভব্য স্থলে নিয়ে গেলো কিন্তু এর বিনিময়ে কোনো পারিশ্রমিক নিল না। যখন তারা দু’জন নৌকায় চড়লেন, খিযির কুড়াল দিয়ে নৌকার একটা তক্তা উপড়িয়ে ফেললেন। মূসা তাঁকে বললেনঃ এরা তো বিনা ভাড়ায় আমাদেরকে বহন করলেন। অথচ আপনি এদের নৌকাটির ক্ষতি করলেন। (সূরাঃ কাহাফ-৭১) “আপনি নৌকাটা ফাটিয়ে দিলেন। আরোহীদের ডুবিয়ে দেবার জন্য। আপনি তো একটা খারাপ কাজ করলেন।” খিযির বললেনঃ “আমি কি আগেই তোমাকে বলিনি যে আমার সাথে চলার ব্যাপারে তুমি কোনো ক্ষেত্রে সবর করতে পারবে না?” মূসা বললেনঃ আমি যেটা ভুলে গিয়েছিলাম সেটার জন্য আমার কাছ থেকে কৈফিয়ত ভলব করবেন না। আর আমার ব্যাপারে খুব বেশী কড়াকড়ি করবেন না। (সূরাঃ কাহাফ-৭৩) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মূসা প্রথমবার ভুলে গিয়ে এটাই করেছিলেন। এরপর আসলো একটা চড়ুই পাখি। পাখিটা বসলো নৌকার এক কিনারে। ঠোঁট দিয়ে সমুদ্র থেকে এক বিন্দু পানি পান করলো। এ দৃশ্য দেখে খিযির মূসাকে বললেনঃ এই চড়ুইটা সমুদ্র থেকে যতটুকু পানি খসালো, আমার ও তোমার জ্ঞান আল্লাহ্র জ্ঞানের তুলনায় এতটুকুই। তারপর তাঁরা নৌকা ত্যাগ করে হাঁটতে লাগলেন। সমুদ্রের তীর ধরে তাঁরা হাঁটতে লাগলেন। পথে খিযির দেখলেন একটি ছোট ছেলে অন্য ছেলেদের সাথে খেলা করছে। তিনি হাত দিয়ে ছেলেটিকে ধরলেন। দেহ থেকে তার মাথাটা আলাদা করে দিলেন। তাকে হত্যা করলেন। মূসা তাঁকে বললেনঃ “আপনি একটা নিশপাপ শিশুকে হত্যা করলেন, অথচঃ সে কাউকে হত্যা করেনি? আপনি তো একটা অন্যায় কাজ করে ফেলেছেন।” (সূরাঃ কাহাফ-৭৪) তিনি বললেনঃ আমি কি তোমাকে আগেই বলিনি যে, আমার সাথে তুমি ধৈর্য ধরে চলতে পারবে না। (সূরাঃ কাহাফ-৭৫) (বর্ণনাকারী) বলেনঃ এ কাজটি প্রথমটির চেয়ে মারাত্মক ছিলো। “মূসা (আলাইহিস্ সালাম) বললেনঃ এরপর যদি আমি আপনাকে আর কোন প্রশ্ন করি তাহলে আমাকে আর সঙ্গে রাখবেন না। এখন তো আমার দিক থেকে আপনি ওজর পেলেন। পরে তারা সামনে দিকে চলতে লাগলেন। চলতে চলতে তাঁরা একটি জনবসতিতে গিয়ে পৌঁছলেন। সেখানকার লোকদের কাছে খাবার চাইলেন। তারা দু’জনের মেহমানদারী করতে অস্বীকার করলো। সেখানে তারা একটা দেয়াল দেখতে পেলেন। দেয়ালটি পড়ে যাওয়ার উপক্রম হয়েছিল। (বর্ণনাকারী) বলেনঃ দেয়ালটি বৃকে পড়ে ছিল। খিযির দাঁড়ালেন। নিজের হাতে দেয়ালটি গেঁথে সোজা করে দিলেন। মূসা বললেনঃ এই বসতির লোকদের কাছে আমরা খাবার চাইলাম, তারা আমাদের মেহমানদারী করতে অস্বীকার করলো।। অর্থঃ “আপনি চাইলে এ কাজের মজুরী নিতে পারতেন।” (সূরাঃ কাহাফ-৭৬-৭৭) (অথচ আপনি তা করলেন না, বিনা পারিশ্রমিকে কাজটি করে দিলেন।) খিযির বললেনঃ বাস, এখান থেকে তোমার ও আমার মধ্যে ছাড়াছাড়ি হয়ে গেলো। এখন আমি তোমাকে সেই বিষয়গুলোর তাৎপর্য বুঝিয়ে দেবো যেগুলোর ব্যাপারে

৬৩. তিনি বললেনঃ আপনি কি লক্ষ্য করেছেন, আমরা যখন শিলাখণ্ডে বিশ্রাম করছিলাম তখন আমি মাছের কথা ভুলে গিয়েছিলাম? শয়তানই ওর কথা বলতে আমাকে ভুলিয়ে দিয়েছিল; মাছটি আশ্চর্যজনকভাবে নিজের পথ করে নেমে গেল সমুদ্রে।

৬৪. মুসা (عليه السلام) বললোঃ আমরা তো এই স্থানটির অনুসন্ধান করছিলাম; অতঃপর তারা নিজেদের পদচিহ্ন ধরে ফিরে চললেন।

৬৫. অতঃপর তাঁরা সাক্ষাৎ পেলেন আমার বান্দাহদের মধ্যে একজনের, (খিযির)-এর যাকে আমি আমার নিকট হতে অনুগ্রহ দান করেছিলাম ও যাকে আমি আমার নিকট হতে শিক্ষা দিয়েছিলাম এক বিশেষ জ্ঞান।

৬৬. মুসা (عليه السلام) তাকে বললেনঃ আমি কি আপনার অনুসরণ করতে পারি; যেন সত্য পথের যে জ্ঞান

قَالَ ارْءَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ
الْحُوتَ ذُو مَاءَ أَسْتَيْبُهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ
وَآتَخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغُ ﴿٦٤﴾ فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا
قَصَصًا ﴿٦٥﴾

فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٦﴾

قَالَ لَهُ مُوسَى هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّمَ
مِنَّا عِلْمَ رَبِّكَ ﴿٦٧﴾

তুমি সবার করতে পারোনি। সেই নৌকাটির ব্যাপার এই ছিল যে, সেটির মালিক ছিল কয়েকটা গরীব লোক। সাগরে গভর খেটে তারা জীবন ধারণ করতো। আমি নৌকাটিকে দাগী করে দিতে চাইলাম। কারণ হচ্ছে, সামনে এমন এক বাদশাহর এলাকা রয়েছে যে প্রত্যেকটা নৌকা জোর পূর্বক কেড়ে নেয়। তারপর সেই ছেলের কথা। তার বাপ-মা ছিল মুমিন। আমরা আশঙ্কা করলাম ছেলেটি (পরবর্তীকালে) তার নাফরমানী ও বিদ্রোহের আচরণের সাহায্যে তাদেরকে কষ্ট দেবে। তাই আমরা চাইলাম, আল্লাহ তার পরিবর্তে তাদেরকে যেন এমন একটি সম্ভান দেন যে, চরিত্রের দিক দিয়ে তার চেয়ে ভালো হবে এবং মানবিক স্নেহ ও দয়ার ক্ষেত্রেও তার চেয়ে উন্নত হবে। আর এ দেয়ালটার ব্যাপার এই যে, এটা হচ্ছে দুটো এতিম ছেলের তারা এই শহরে বাস করে। এই দেয়ালের নিচে তাদের জন্য সম্পদ লুকানো রয়েছে। তাদের পিতা ছিলেন নেককার ব্যক্তি। তাই তোমার রব চাইলেন, ছেলে দু'টি বড় হয়ে তাদের জন্য রাখা সম্পদ লাভ করবে। তোমার রব মেহেরবানীর কারণে এটা করা হয়েছে। আমি নিজের ইচ্ছায় এসব করিনি। এই হচ্ছে সেই সব বিষয়ের তাৎপর্য, যে জন্য তুমি ধৈর্যধারণ করতে পারোনি।” (সূরা : কাহফ- ৭৮-৮২)

রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ভালো হতো যদি মুসা (আলাইহিসসালাম) আরো একটু সবার করতেন। তাহলে আল্লাহ তাঁদের আরো কিছু কথা আমাদের জানাতেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭২৫)

আপনাকে দান করা হয়েছে তা হতে আমাকে শিক্ষা দেন।

৬৭. তিনি বললেনঃ তুমি কিছুতেই আমার সঙ্গে ধৈর্যধারণ করে থাকতে পারবে না।

৬৮. যে বিষয় তোমার জ্ঞানায়ত্ত নয়, সে বিষয়ে তুমি ধৈর্যধারণ করবে কেমন করে?

৬৯. মুসা (ﷺ) বললেনঃ আল্লাহ চাইলে আপনি আমাকে ধৈর্যশীল পাবেন এবং আপনার কোন আদেশ আমি অমান্য করবো না।

৭০. তিনি বললেনঃ আচ্ছা, তুমি যদি আমার অনুসরণ কর-ই তবে কোন বিষয়ে আমাকে প্রশ্ন করো না, যতক্ষণ না আমি সে সম্বন্ধে তোমাকে কিছু বলি।

৭১. অতঃপর তারা উভয়ে যাত্রা শুরু করলেন, পশ্চিমধ্যে যখন তারা নৌকায় আরোহণ করলেন তখন তিনি তাতে ছিদ্র করে দিলেন, মুসা (ﷺ) বললেনঃ আপনি কি আরোহীদেরকে নিমজ্জিত করে দেবার জন্যে তাতে ছিদ্র করলেন? আপনিতো এক গুরুতর অন্যায় কাজ করলেন।

৭২. তিনি বললেনঃ আমি কি বলি নাই যে, তুমি আমার সঙ্গে কিছুতেই ধৈর্যধারণ করতে পারবে না?

৭৩. মুসা (ﷺ) বললেনঃ আমার ভুলের জন্যে আমাকে পাকড়াও

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾

وَكَيفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ﴿٦٩﴾

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحَدِّثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾

فَأَنْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ط
قَالَ أَخْرَقْتُهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا مُّرًا ﴿٧١﴾

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي

করবেন না^১ ও আমার ব্যাপারে
অত্যধিক কঠোরতা অবলম্বন
করবেন না।

مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ﴿١٥﴾

৭৪. অতঃপর তাঁরা চলতে থাকলেন,
চলতে চলতে তাদের সাথে এক
বলকের সাক্ষাৎ হলে তিনি তাকে
হত্যা করে ফেললেন; তখন মুসা
(عليه السلام) বললেনঃ আপনি কি এক
নিষ্পাপ জীবন নাশ করলেন হত্যার
অপরাধ ছাড়াই? আপনি তো এক
গুরুতর অন্যায় কাজ করলেন।

فَأَنْطَلَقْنَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ ۖ
قَالَ أَقْتَلْتَ نَفْسًا ذَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ ط
لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ﴿١٥﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি এ হাদীসটি রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) পর্যন্ত পৌঁছিয়ে, বর্ণনা করেন। তিনি বলেছেন, আল্লাহু তা'আলা আমার উম্মতের কল্পনা কিংবা ধারণার (ওপর দৃষ্ট দেবেন না) ক্ষমা করে দিয়েছেন, যে পর্যন্ত না সে তা কাজে পরিণত করে অথবা বাক্যে ব্যবহার না করে। (বুখারী হাদীস নং ৬৬৬৪)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে রোযাদার ভুলবশতঃ (কোন বস্তু) খায়, সে যেন অবশ্যই তার রোযা পূর্ণ করে। কেননা আল্লাহ তাকে খাইয়েছেন ও পান পান করিয়েছেন। ৬৬৬৯)

৭৫. তিনি বললেনঃ আমি কি বলি নাই যে, তুমি আমার সাথে কিছুতেই ধৈর্যধারণ করে থাকতে পারবে না?

৭৬. মূসা (ﷺ) বললেনঃ এরপর যদি আমি আপনাকে কোন বিষয়ে জিজ্ঞেস করি, তবে আপনি আমাকে সঙ্গে রাখবেন না; আপনার কাছে আমার ওয়র-আপত্তি চূড়ান্ত সীমায় পৌঁছে গেছে।

৭৭. অতঃপর উভয়ে চলতে লাগলেন; চলতে চলতে তাঁরা এক জনপদের অধিবাসীদের নিকট পৌঁছে খাদ্য চাইলেন; কিন্তু তারা তাদের মেহমানদারী করতে অস্বীকার করলো; অতঃপর সেখানে তাঁরা এক পতনোন্মুখ প্রাচীর দেখতে পেলেন এবং তিনি (খিযির) ওটাকে সুদৃঢ় (সোজা) করে দিলেন; মূসা (ﷺ) বললেনঃ আপনি তো ইচ্ছা করলে এর জন্যে পারিশ্রমিক গ্রহণ করতে পারতেন।

৭৮. তিনি বললেনঃ এ মুহূর্তেই তোমার ও আমার মধ্যে বিচ্ছেদ কার্যকর হবে। (তবে) যে বিষয়ে তুমি ধৈর্যধারণ করতে পারনি আমি তার তাৎপর্য ও ব্যাখ্যা বলে দিচ্ছি।

৭৯. নৌকাটির ব্যাপারে (কথা এই যে,) ওটা ছিল কতিপয় দরিদ্র ব্যক্তির। যারা সমুদ্রে জীবিকা অন্বেষণ করতো; আমি ইচ্ছা করলাম নৌকাটিকে ঢ়েটিযুক্ত করতে, কারণ ওদের পিছনে ছিল এক রাজা যে বল প্রয়োগে নৌকা সকল ছিনিয়ে নিত।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ
مَعِيَ صَبْرًا ۝٧٥

قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ مِّنْ بَعْدِهَا فَلَا تُصَحِّبْنِي
قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ۝٧٦

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا آتَىٰ أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَبَا
أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا
جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ ط قَالَ
لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝٧٧

قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ
بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝٧٨

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي
الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ
مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝٧٩

৮০. আর কিশোরটির পিতা-মাতা ছিল মু'মিন। আমি আশঙ্কা করলাম যে, সে (বড় হয়ে) বিদ্রোহাচরণ ও কুফরীর দিকে তাদেরকে নিয়ে যাবে।

৮১. অতঃপর আমি চাইলাম যে, তাদের প্রতিপালক যেন তাদেরকে তার পরিবর্তে (এমন) এক সন্তান দান করেন, যে হবে পবিত্রতায় মহত্তর ও ভক্তি ভালবাসায় ঘনিষ্ঠতর।

৮২. আর ঐ প্রাচীরটি-ওটা ছিল নগরীর দুই ইয়াতীম (পিভূহীন) কিশোরের, এর নিম্নদেশে আছে তাদের গুপ্তধন এবং তাদের পিতা ছিল সৎকর্মপরায়ণ। তাই তোমার প্রতিপালক দয়াপরবশ হয়ে ইচ্ছা করলেন যে, তারা বয়ঃপ্রাপ্ত হোক এবং তারা তাদের গুপ্তধন উদ্ধার করুক; আমি নিজের থেকে কিছু করিনি; তুমি যে বিষয়ে ধৈর্যধারণে অপারগ হয়েছিলেন, এটাই তার ব্যাখ্যা।

৮৩. তারা তোমাকে যুলকারনাইন সম্বন্ধে জিজ্ঞাসা করে; তুমি বলে দাও: আমি তোমাদের নিকট অচিরেই সে বিষয়ে বর্ণনা করব।

৮৪. আমি তাকে পৃথিবীতে কর্তৃত্ব দিয়েছিলাম এবং প্রত্যেক বিষয়ের উপায় ও পন্থা নির্দেশ করেছিলাম।

৮৫. তিনি এক কার্যোপকরণ পথ অবলম্বন করলেন।

৮৬. চলতে চলতে যখন তিনি সূর্য ডোবার স্থানে পৌঁছলেন তখন তিনি

وَأَمَّا الْعُلَمُ فَكَانَ أَبُوهُ مُؤْمِنِينَ
فَخَشِينَا أَنْ يُرْهَقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝

فَارَدْنَا أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبَّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً
وَأَقْرَبَ رَحْمًا ۝

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ
وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ
رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً
مِّن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا
لَمْ نَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ ذِي الْقُرْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُوا
عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَاتَيْنَاهُ مِنْ
كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝

فَاتَّبَعَ سَبَبًا ۝

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ

সূর্যকে এক পংকিল (কর্দমাঙ্ক)
জলাশয়ে অস্ত যেতে দেখলেন এবং
তিনি তথায় এক সম্প্রদায়কে
দেখতে পেলেন; আমি বললামঃ হে
যুলকারনাইন! তুমি তাদেরকে শাস্তি
দিতে পার অথবা তাদেরকে
সদয়ভাবে গ্রহণ করতে পার।

৮৭. তিনি বললেনঃ যে কেউ
সীমালঙ্ঘন করবে আমি তাকে শাস্তি
দেব, অতঃপর সে তার প্রতিপালকের
নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে এবং তিনি
তাকে কঠিন শাস্তি দিবেন।

৮৮. তবে যে বিশ্বাস করে এবং
সৎকর্ম করে তার জন্যে প্রতিদান
স্বরূপ আছে কল্যাণ এবং তার প্রতি
ব্যবহারে আমি নম্র কথা বলবো।

৮৯. আবার তিনি এক পথ ধরলেন।

৯০. চলতে চলতে যখন তিনি
সূর্যোদয় স্থলে পৌঁছলেন তখন তিনি
দেখলেন ওটা এমন এক সম্প্রদায়ের
উপর উদ্ভিত হচ্ছে যাদের জন্যে সূর্য-
তাপ হতে আত্মরক্ষার কোন অন্তরাল
আমি সৃষ্টি করি নাই।

৯১. প্রকৃত ঘটনা এটাই, তার
(আসল) বৃত্তান্ত আমি সম্যক অবগত
আছি।

৯২. আবার তিনি এক পথ ধরলেন।

৯৩. চলতে চলতে তিনি যখন পর্বত
প্রাচীরের মধ্যবর্তী স্থলে পৌঁছলেন
তখন তথায় তিনি এক সম্প্রদায়কে
পেলেন যারা তার কথা একেবারেই
বুঝতে পারছিল না।

فِي عَيْنٍ حَِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا
يٰۤاَلْقُرْآنِ اِنَّمَا اَنْ تَعْبَدَ وَاِنَّمَا اَنْ تَتَّخِذَ
فِيهِمْ حُسْنًا ﴿۸۷﴾

قَالَ اِنَّمَا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ
اِلٰى رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ۙ كَرًّا ﴿۸ۮ﴾

وَاِنَّمَا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَاءٌ
اَلْحُسْنٰى وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اٰمِرِنَا يَسْرًا ﴿۸۹﴾

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ﴿۹۰﴾

حَتّٰى اِذَا بَلَغَ مَطْعَ السَّنِسِ وَجَدَهَا تَطْعُ
عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُوْنِهَا سَبْرًا ﴿۹۱﴾

كَذٰلِكَ ۙ وَقَدْ اَحْطٰنَا بِمَا لَدَيْهِ خَبْرًا ﴿۹۲﴾

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ﴿۹৩﴾

حَتّٰى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّنَدَيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا
قَوْمًا لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿۹৪﴾

৯৪. তারা বললোঃ হে যুলকারনাইন! ইয়াজ্জুজ ও মাজ্জুজ পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করছে; আমরা কি তোমাকে কর দিবো এই শর্তে যে, তুমি আমাদের ও তাদের মধ্যে এক প্রাচীর গড়ে দিবেন?

قَالُوا يَا ذَا الْقُرْنَيْنِ إِنَّ يَا جُوجَ وَمَاجُوجَ مُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۙ ﴿٩٤﴾

৯৫. তিনি বললেনঃ আমার প্রতিপালক আমাকে যে ক্ষমতা দিয়েছেন তাই উৎকৃষ্ট; সুতরাং তোমরা আমাকে শ্রম দ্বারা সাহায্য কর, আমি তোমাদের ও তাদের মধ্যস্থলে এক মযবূত প্রাচীর গড়ে দেব।

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ
أَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۙ ﴿٩٥﴾

৯৬. তোমরা আমার নিকট লৌহপিণ্ড সমূহ আনয়ন কর; অতঃপর মধ্যবর্তী ফাঁকাস্থান পূর্ণ হয়ে যখন লৌহস্তম্ভ দুই পর্বতের সমান হলো তখন তিনি বললেনঃ তোমরা হাঁপরে দম দিতে থাকো; যখন তা আগুনে পরিণত হলো তখন তিনি বললেনঃ তোমরা গলিত তাম্র আনয়ন কর, আমি তা ঢেলে দেই ওর উপর।

أَتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ
الصَّدَقَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ
نَارًا ۖ قَالَ أْتُونِي أُفْرِغَ عَلَيْهِ قَطْرًا ۙ ﴿٩٦﴾

৯৭. ফলে ইয়াজ্জুজ ও মাজ্জুজ তা অতিক্রম করতে পারলো না এবং ভেদ করতেও সক্ষম হল না।

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۙ ﴿٩٧﴾

১। যয়নব বিনতে জাহাস (রাযিআল্লাহ আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর (যায়নাবের) নিকটে ভীত ও সন্ত্রস্ত অবস্থায় গমন করে বলতে লাগলেন, (অর্থঃ) “আল্লাহ ছাড়া কোন (সত্য) মা’বুদ নেই।” যে বিরাট স্ক্রতি, অমঙ্গল ও অনিশ্চয় (তাদের নিকট) আগমন করেছে- সে কারণে আরবদের জন্য খুবই দুঃখ ও আফসোস, দুর্ভাগ্য! ইয়াজ্জুয ও মাজ্জুযের প্রাচীর গায়ে এ পরিমাণ আজ খুলে দেয়া হয়েছে। এ বলে তিনি তাঁর বৃদ্ধা ও তর্জনী আঙ্গুল দ্বারা একটি বৃন্ত তৈরি করলেন। যয়নব বিনতে জাহাস বর্ণনা করেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলাম, হে আল্লাহর রাসূল! আমাদের মাঝে সৎ ও ধার্মিক লোক থাকা সত্ত্বেও কি আমরা ধ্বংস হয়ে যাবো? নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তখন বললেনঃ হ্যাঁ, যখন অসৎ কাজ পাপাচার বৃদ্ধি পাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৩৫)

৯৮. ফুলকারনাইন বললেনঃ এটা আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ; যখন আমার প্রতিপালকের প্রতিশ্রুতি পূর্ণ হবে তখন তিনি ওটাকে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিবেন এবং আমার প্রতিপালকের প্রতিশ্রুতি সত্য।

৯৯. সেই দিন আমি তাদেরকে ছেড়ে দেবো দলে দলে তরঙ্গের আকারে এবং শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে। অতঃপর আমি তাদের সকলকে একত্রিত করবো।

১০০. আর সেই দিন আমি জাহান্নামকে প্রত্যক্ষভাবে উপস্থিত করবো কাফিরদের নিকট।

১০১. যাদের চোখের মধ্যে আমার জিকির থেকে আবরণ পড়ে গিয়েছিল আর যারা গুনতেও অপারগ ছিল।

১০২. যারা সত্য প্রত্যাখ্যান করেছে (কাফির) তারা কি মনে করে যে, তারা আমার পরিবর্তে আমার বান্দাদেরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করবে? আমি সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের অভ্যর্থনার জন্যে প্রস্তুত রেখেছি জাহান্নাম।

১০৩. তুমি বলঃ আমি কি তোমাদেরকে সংবাদ দেবো তাদের যারা কর্মে অধিক ক্ষতিগস্ত?

১০৪. তারাই সেই লোক যাদের প্রচেষ্টা দুনিয়াবী জীবনে বিভ্রান্ত হয়। যদিও তারা মনে করে যে, তারা সৎকর্ম করছে।^১

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿٩٨﴾

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجٌ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَعَلْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَبْعًا ﴿١٠١﴾

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِّن دُونِي أَوْلِيَاءَ ط ۖ إِنَّا أَعْتَدْنَا لَهُمْ جَهَنَّمَ لِّلْكَافِرِينَ نَزْلًا ﴿١٠٢﴾

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি আমাদের এই দুনিবের মধ্যে নতুন কিছু প্রবর্তন করবে তা মারদুদ বা প্রত্যাখ্যাত। (তা গ্রহণযোগ্য হবে না) (বুখারী, হাদীস নং ২৬৯৭)

১০৫. ওরাই তারা, যারা অস্বীকার করে তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলী ও তাঁর সাথে তাদের সাক্ষাতের বিষয়; ফলে, তাদের কর্ম নিষ্ফল হয়ে যায়। সুতরাং কিয়ামতের দিন আমি তাদের জন্য কোন পরিমাপ প্রতিষ্ঠিত ও স্থির করবো না। (অর্থাৎ তাদের কোন প্রকার গুরুত্ব ও মূল্য থাকবে না)

১০৬. জাহান্নামই তাদের প্রতিফল, যেহেতু তারা সত্য প্রত্যাক্ষান করেছে এবং আমার নিদর্শনাবলী ও রাসূলদেরকে গ্রহণ করেছে বিদ্রোহের বিষয়রূপে।

১০৭. যারা বিশ্বাস করে ও সৎকর্ম করে তাদের অভ্যর্থনার জন্য আছে “জান্নাতুল ফিরদাউস।

১০৮. সেথায় তারা স্থায়ী হবে; এর পরিবর্তে তারা অন্য স্থানে স্থানান্তরিত হওয়া কামনা করবে না।

১০৯. তুমি বলঃ আমার প্রতিপালকের কথা লিপিবদ্ধ করবার জন্য সমুদ্র যদি কালি হয়, তবে আমার প্রতিপালকের কথা শেষ হবার পূর্বেই সমুদ্র নিঃশেষ হয়ে যাবে সাহায্যার্থে যদি ও এর মত আরেকটি কালির জন্য (সমুদ্র) আনয়ন করি।

১১০. তুমি বলঃ আমি তো তোমাদের মতই একজন মানুষ, আমার প্রতি প্রত্যাদেশ হয় যে, তোমাদের ইলাহ একজন। সুতরাং যে তার প্রতিপালকের সাক্ষাৎ কামনা করে সে যেন সৎকর্ম করে ও তার প্রতিপালকের ইবাদতে কাউকেও শরীক না করে।

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ
فَحَطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا تُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وِزْنًا ﴿١٠٥﴾

ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي
وَرُسُلِي هُزُؤًا ﴿١٠٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ
جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حَوْلًا ﴿١٠٨﴾

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفَذَ الْبَحْرُ
قَبْلَ أَنْ تَنْفَذَ كَلِمَتِ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِبِئْتِهِ
مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُمُ
إِلَهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا
صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾

সূরাঃ মারইয়াম, মাঝী

(আয়াতঃ ৯৮, রুকু'ঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(গুরু করছি)

১. কা-ফ-হা-ইয়া-আঈন-সা-দ;

২. এটা তোমার প্রতিপালকের
অনুগ্রহের বিবরণ তাঁর বান্দাহ
যাকারিয়ার (ﷺ) প্রতি।৩. যখন তিনি তাঁর প্রতিপালককে
আহ্বান করেছিলেন নিভূতে।৪. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার
প্রতিপালক! আমার অস্থি দুর্বল,
(বয়স ভারাবনত) হয়েছে, বার্ধক্যে
আমার মস্তক শুভ্রোজ্জ্বল হয়েছে; হে
আমার প্রতিপালক! আপনাকে
আহ্বান করে আমি কখনো ব্যর্থ হই
নি।৫. আমি ভয় করি আমার পর
উত্তরাধিকারীত্বের, আমার স্ত্রী বন্ধ্যা,
সুতরাং আপনি আপনার নিকট হতে
আমাকে দান করুন উত্তরাধিকারী।৬. যে আমার উত্তরাধিকারিত্ব করবে
এবং উত্তরাধিকারিত্ব পাবে ইয়াকুবের
(ﷺ) বংশের এবং হে আমার
প্রতিপালক! তাকে করুন সন্তোষভাজন।৭. হে যাকারিয়া (ﷺ)! আমি
তোমাকে এক পুত্রের সুসংবাদ
দিচ্ছি। তার নাম হবে ইয়াহইয়া
(ﷺ); এই নামে আমি পূর্বে কারো
নামকরণ করি নাই।

سُورَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۹۸ رُكُوعَاتُهَا ۶

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

كَلِمَاتٍ ①

ذَكَرْ رَحِمَتِ رَبِّكَ عَبْدَا ذَكَرِيَّا ①

إِذْ نَادَى رَبَّهُ يَدَاؤِ خَفِيًّا ②

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ

الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ

رَبِّ شَقِيًّا ③

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ

أَمْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ④

يَرِيثُنِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ

رَبِّ رَضِيًّا ⑤

يُذَكِّرِيآ إِنَّا نَبِّشْرُكَ بِعِلْمِ اسْمِهِ يَحْيَىٰ ⑥

لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ⑦

৮. তিনি বললেন: হে আমার প্রতিপালক! কেমন করে আমার পুত্র হবে যখন আমার স্ত্রী বন্ধ্যা ও আমি বার্ধক্যের শেষ সীমায় পৌঁছে গেছি!

قَالَ رَبِّ اُنۡىٰ يَكُوۡنُ لِىۡ غُلَمٌ وَّكَانَتۡ اُمۡرَاتِىۡ عَاۡقِرًا وَّوَقَدۡ بَلَغَتۡ مِنۡ اَلْكِبَرِ عِتۡيًا ۝۸

৯. তিনি বললেন: এই ভাবেই হবে; তোমার প্রতিপালক বলেন: এটা আমার জন্যে সহজ; আমি তো পূর্বে তোমাকে সৃষ্টি করেছি যখন তুমি কিছুই ছিলে না।

قَالَ كَذٰلِكَ ؕ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰى هٰٓئِنۡ وَّوَقَدۡ خَلَقْتَكِ مِنۡ قَبۡلِ وَاَمۡرُكَ سَيِّئًا ۝۹

১০. যাকারিয়া (عَلِيٌّ) বললেন: হে আমার প্রতিপালক! আমাকে একটি নিদর্শন দিন! তিনি বললেন: তোমার নিদর্শন এই যে, তুমি কাত্রো সাথে ক্রমাগত তিন দিন বাক্যলাপ করবে না।

قَالَ رَبِّ اجْعَلۡ لِّىۡ اٰيَةً ۗ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَا تَكَلِّمُ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝۱ۦ

১১. অতঃপর তিনি হুজরা হতে বের হয়ে তার সম্প্রদায়ের নিকট আসলেন ও ইঙ্গিতে তাদেরকে সকাল-সন্ধ্যায় আত্মাহর পবিত্রতা ও মহিমায় ঘোষণা করতে বললো।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْحَرَابِ فَاٰتٰىهِمۡ اَنۡ سَبَّحُوۡا بِكُرۡبَةِ وَعَشِيًّا ۝۱ۧ

১২. আমি বললাম: হে ইয়াহইয়া (عَلِيٌّ): এই কিতাব দৃঢ়তার সাথে গ্রহণ করো; আমি তাঁকে শেষবেই বিচারবুদ্ধি দান করেছিলাম।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰتٰىنَا هٰذَا الْكِتٰبَ بِقُوۡتٍ وَّاَتٰىنَاهُ الْحَكَمَ صَبِيًّا ۝۱ۨ

১৩. এবং আমার নিকট হতে হৃদয়ের কোমলতা ও পবিত্রতা; আর তিনি ছিলেন অত্যন্ত আত্মাহতীক।

وَحَنَانًا مِّنۡ لَّدُنَّا وَاَزۡكُوۡةً وَّكَانَ تَوَّابًا ۝۱۩

১৪. পিতা-মাতার অনুগত কল্যাণী এক উদ্ধত (সেচ্ছাচারী) ও অবাধ্য ছিলেন না।

وَبَرًّا اِبۡوَالِدَيۡهِ وَاَلۡمُ يَكُنۡ جَبَّارًا عَوِيًّا ۝۱۪

১৫. তাঁর প্রতি ছিল শান্তি যেদিন তিনি জন্ম লাভ করেন ও শান্তি

وَسَلٰمٌ عَلَيۡهِ يَوْمَ وُلِدَ وَاٰوۡمۡ يَمُوۡتُ وَاٰوۡمۡ

থাকবে যেদিন তাঁর মৃত্যু হবে ও যেদিন তিনি জীবিত অবস্থায় পুনরুজ্জীবিত হবেন।

يُبْعَثُ حَيًّا ١٥

১৬. (হে রাসূল ﷺ) বর্ণনা করুন এই কিতাবে উল্লেখিত মারইয়ামের কথা, যখন তিনি তার পরিবারবর্গ হতে পৃথক হয়ে নিরালায় পূর্ব দিকে এক স্থানে আশ্রয় নিলেন।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ اتَّخَذَتْ
مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْوِيًّا ١٦

১৭. অতঃপর তাদের হতে নিজেকে আড়াল করবার জন্যে তিনি পর্দা করলেন; অতঃপর আমি তার নিকট আমার রূহকে (জিবরাঈলকে ﷺ) পাঠালাম, তিনি তাঁর নিকট পূর্ণ মানবাকৃতিতে আত্মপ্রকাশ করলেন।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا
رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ١٧

১৮. মারইয়াম বললেনঃ ভূমি যদি আল্লাহকে ভয় কর- তবে আমি তোমা হতে দয়াময়ের আশ্রয় নিচ্ছি।

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ١٨

১৯. তিনি বললেনঃ আমি তো শুধু তোমার প্রতিশালক প্রেরিত, তোমাকে এক পবিত্র পুত্র দান করবার জন্যে (এসেছি)।

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا
زَكِيًّا ١٩

২০. মারইয়াম বললেনঃ কেমন করে আমার পুত্র হবে! অথচ আমাকে কোন পুরুষ স্পর্শ করে নাই ও আমি ব্যভিচারিনীও নই।

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ
وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ٢٠

২১. তিনি বললেনঃ এইরূপই হবে; তোমার প্রতিশালক বলেছেনঃ এটা আমার জন্যে সহজ এবং তাঁকে আমি এই জন্যে সৃষ্টি করবো, যেন তিনি মানুষের জন্যে এক নিদর্শন ও আমার নিকট হতে এক অনুস্রাহের প্রতীক হন। এটা তো এক সিদ্ধান্তকৃত ব্যাপার।

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلِيمٌ هَدِيدٌ
آيَةٌ لِلنَّاسِ وَرَحْمَةٌ مِّنَّا وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ٢١

২২. অতঃপর তিনি গর্ভে সন্তান ধারণ করলেন ও তৎসহ এক দূরবর্তী স্থানে চলে গেলেন।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَدَّتْ بِهِ مَكَانًا قَوِيًّا ﴿٢٢﴾

২৩. প্রসব বেদনা তাঁকে এক খেজুর বৃক্ষ তলে আসন নিতে বাধ্য করলো; তিনি বললেনঃ হায়! এর পূর্বে আমি যদি মরে যেতাম ও লোকের স্মৃতি হতে সম্পূর্ণ বিলুপ্ত হতাম।

فَاجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَى جُذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَلَيْتُنِي مِثُّ قَبْلِ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مَنْسِيًّا ﴿٢٣﴾

২৪. ফেরেশতা তার নিম্ন পার্শ্ব হতে আহ্বান করে তাকে বললেনঃ তুমি চিন্তা করো না, তোমার পাদদেশে তোমার প্রতিপালক এক পানির ঝর্ণা করেছেন।

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَا تَحْرَبِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

২৫. তুমি তোমার দিকে খেজুর বৃক্ষের কাণ্ড নাড়া দাও, তা থেকে তোমার উপর সুপক্ক তাজা খেজুর পতিত হবে।

وَهَزِي إِلَيْكَ بِجُذْعِ النَّخْلَةِ سَلْقُطٌ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

২৬. সুতরাং আহার করো, পান করো ও চক্ষু জুড়িয়ে নাও; মানুষের মধ্যে কাউকেও যদি তুমি দেখো তখন বলোঃ আমি দয়াময়ের উদ্দেশ্যে মৌনতাবলম্বনের মানত করেছি; সুতরাং আজ আমি কিছুতেই কোন মানুষের সাথে বাক্যালাপ করবো না।

فَكُلِي وَاشْرَبِي وَكُفِّي عَيْنًا وَمَا تَرَيْنَ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ الْنِسَاءَ ﴿٢٦﴾

২৭. অতঃপর তিনি সন্তানকে নিয়ে তার সম্প্রদায়ের নিকট উপস্থিত হলেন তারা বললোঃ হে মারইয়াম! তুমি তো এক অদ্ভুত কাণ্ড করে বসেছো!

فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحِيَّةً قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

২৮. হে হারুন ভগ্নী, তোমার পিতা অসৎব্যক্তি ছিলেন না এবং তোমার মাতাও ছিলেন না ব্যভিচারিণী।

يَاخُذَتَّ هُرُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ أَمْرًا سَوْءًا وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

২৯. অতঃপর মারইয়াম (عليها السلام) সন্তানের দিকে ইঙ্গিত করলেন, তারা বললোঃ যে কোলের শিশু তার সাথে আমরা কেমন করে কথা বলবো?

৩০. শিশুটি বললোঃ আমি তো আল্লাহর বান্দাহ; তিনি আমাকে কিতাব দিয়েছেন, আমাকে নবী করেছেন।

৩১. যেখানেই আমি পশ্চিকি না কেন, তিনি আমাকে বরকতময় করেছেন, তিনি আমাকে নির্দেশ দিয়েছেন যত দিন জীবিত থাকি, তত দিন নামায ও যাকাত আদায় করতে।

৩২. আর আমার মাতার প্রতি অনুগত থাকতে এবং তিনি আমাকে করেন নাই অহংকারী ও হতভাগ্য।

৩৩. আমার প্রতি শান্তি, যেদিন আমি জন্ম লাভ করেছি ও যেদিন আমার মৃত্যু হবে ও যেদিন আমি জীবিত অবস্থায় পুনরুত্থিত হবো।

৩৪. ইনিই হলেন মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليها السلام); সত্য কথা, যে বিষয়ে তারা বিতর্ক করে।

৩৫. সন্তান গ্রহণ করা আল্লাহর কাজ নয়, তিনি পবিত্র, তিনি যখন কিছু স্থির করেন তখন বলেনঃ 'হও' এবং তা হয়ে যায়।

৩৬. আল্লাহই আমার প্রতিপালক ও তোমাদের প্রতিপালক, সুতরাং তাঁর ইবাদত করো, এটাই সরল পথ।

৩৭. অতঃপর দলগুলি নিজেদের মধ্যে মতানৈক্য সৃষ্টি করলো।

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْأَرْحَامِ صَوِيًّا ۝

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝

وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا لِّمَنْ مَا كُنْتُ ۖ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝

وَبِرًّا بِوَالِدَيْهِ ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۝

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَسْتُرُونَ ۝

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهُ ۚ إِذْ أَقْضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۖ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا

সুতরাং এই কাফিরদের একমহান দিবসের (কিয়ামতের) আগমনে ভীষণ দুর্দশা রয়েছে।

مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

৩৮. তারা যেদিন আমার নিকট আসবে সেই দিন তারা কত স্পষ্ট শুনবে ও দেখবে! কিন্তু সীমালঙ্ঘনকারীগণ আজ স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে আছে।

أَسْمِعُ بِهِمْ وَأَبْصُرُ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَكِنِ الظَّالِمُونَ
الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٥﴾

৩৯. (হে রাসূল ﷺ) তাদেরকে সতর্ক করে দাও পরিতাপের দিবস সম্বন্ধে, যখন সকল সিদ্ধান্ত হয়ে যাবে; তারা অসাবধানতায় আছে তাই তারা ঈমান আনছে না।^১

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ
فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥﴾

৪০. চূড়ান্ত মালিকানার অধিকারী আমি, পৃথিবীর ও এর উপর যারা আছে তাদের, এবং তারা আমারই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا
يُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾

৪১. বর্ণনা কর এই কিতাবে (উল্লিখিত) ইবরাহীমের (عليه السلام) কথা; তিনি ছিলেন মহা সত্যবাদী ও নবী।

وَأَذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ صِدِّيقًا
نَبِيًّا ﴿١٥﴾

১। আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের দিন মুতু্যকে আনা হবে একটি কালের মাঝে সাদা লোম বিশিষ্ট মেঘ বা ভেড়ার আকারে। একজন ঘোষক ঘোষণা করবেঃ হে জান্নাতবাসীগণ! (এ আওয়াজ শুন) তারা মাথা তুলে দেখবে। ঘোষক বলবেঃ তোমরা কি একে চেনো? তারা বলবেঃ হ্যাঁ, এতো মুতু্য। আসলে তাদের প্রত্যেকে (মুতু্যর সময়) তাকে দেখেছিল। তারপর সে ডাক দেবেঃ হে জাহান্নামীরা! (এ ডাক শুন) তারা মাথা তুলে দেখবে। ঘোষক বলবেঃ তোমরা কি একে চেনো? তারা জবাব দেবে, হ্যাঁ, এতো মুতু্য। আসলে তাদের প্রত্যেকে মুতু্যর সময় তাকে দেখেছিল। তখন তাকে জবাই করা হবে। তারপর সেই ঘোষক বলবেঃ হে জান্নাতবাসীগণ! তোমরা নিশ্চিন্তে জান্নাতে বসবাস করো। আর কখনো তোমাদের মুতু্য হবে না। হে জাহান্নামবাসীরা! তোমরা জাহান্নামে বসবাস করতে থাকো। তোমাদের আর কখনো মুতু্য হবে না। এ ঘটনা বর্ণনা করার পর রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) পড়েনঃ অর্থঃ “(হে রাসূল!) তাদেরকে ভয় দেখাও সেই আক্ষেপের দিনের, যে দিনে ফয়সালা হয়ে যাবে। অথচ এরা তবুও গাফলতির মধ্যে ডুবে আছে।” দুনিয়াবাসীরা এখনো গাফলতির সাগরে হাবুডুবু খাচ্ছে। তারা এখনো ঈমান আনছে না।” (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৩০)

৪২. যখন তিনি তাঁর পিতাকে বললেনঃ হে আমার পিতা! যে শুনে না দেখে না এবং তোমার কোন কাজে আসে না তুমি তার ইবাদত কর কেন?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ
وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾

৪৩. হে আমার পিতা! আমার নিকট তো এসেছে জ্ঞান, যা তোমার নিকট আসে নাই। সুতরাং আমার অনুসরণ করো, আমি তোমাকে সঠিক পথ দেখাবো।

يَأْتِيَنِي إِني قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ
فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾

৪৪. হে আমার পিতা! শয়তানের ইবাদত করো না; শয়তান দয়াময়ের অবাদ্য।

يَأْتِيَنِي لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ
لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾

৪৫. হে আমার পিতা! আমি আশঙ্কা করি, তোমাকে দয়াময়ের শাস্তি স্পর্শ করবে এবং তুমি শয়তানের সাথী হয়ে পড়বে।

يَأْتِيَنِي إِني أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِنَ الرَّحْمَنِ
فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾

৪৬. পিতা বললোঃ হে ইবরাহীম (عليه السلام)! তুমি কি আমার দেব-দেবী হতে বিমুখ হচ্ছো? যদি তুমি নিবৃত্ত না হও তবে আমি প্রস্তরাঘাতে তোমার প্রাণ নাশ করবোই; তুমি চিরদিনের জন্যে আমার নিকট হতে দূর হয়ে যাও।

قَالَ أَرَأَيْتَ أَنْتَ عَنِ الْهَيْئِ يَا بَرُّهُمُ
لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَأَهْجُرُنِي مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

৪৭. ইবরাহীম (عليه السلام) বললেনঃ সালাম তোমার প্রতি; আমি আমার প্রতিপালকের নিকট তোমার জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবো, নিশ্চয়ই তিনি আমার প্রতি অতিশয় অনুগ্রহশীল।

قَالَ سَلِّمْ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ
بِني حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

৪৮. আমি তোমার দিক হতে ও তোমরা আল্লাহ ব্যতীত যাদের ইবাদত কর তাদের নিকট হতে

وَأَعْتَدِ لَكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا
رَبِّي ۖ عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿٤٨﴾

পৃথক হচ্ছি; আমি আমার প্রতিপালককে আহ্বান করি; আশা করি, আমার প্রতিপালককে আহ্বান করে আমি ব্যর্থকাম হবো না।

৪৯. অতঃপর তিনি যখন তাদের থেকে ও তারা আল্লাহ ব্যতীত যাদের ইবাদত করতো সেই সব হতে পৃথক হলেন, তখন আমি তাঁকে দান করলাম ইসহাক (عليه السلام) ও ইয়াকুব (عليه السلام) এবং প্রত্যেককে নবী করলাম।

৫০. এবং তাদেরকে আমি দান করলাম আমার অনুগ্রহ ও তাদেরকে দিলাম সম্মুন্নত সত্য বাকশক্তি।

৫১. এই কিতাবে (উল্লিখিত) মূসার (عليه السلام) কথা বর্ণনা করো, তিনি ছিলেন বিশুদ্ধচিত্ত এবং তিনি ছিলেন রাসূল, নবী।

৫২. আমি তাঁকে আহ্বান করেছিলাম তুর পর্বতের ডান দিক হতে এবং আমি গূঢ়তত্ত্ব আলোচনারত অবস্থায় তাঁকে নিকটবর্তী করেছিলাম।

৫৩. আমি নিজ অনুগ্রহে তাঁকে দিলাম তার ভ্রাতা হারুনকে (عليه السلام) নবীরূপে।

৫৪. এবং এই কিতাবে (উল্লিখিত) ইসমাইলের (عليه السلام) কথা বর্ণনা কর, নিশ্চয়ই তিনি ছিলেন প্রতিশ্রুতি পালনে সত্যশ্রয়ী এবং তিনি ছিলেন রাসূল, নবী।

৫৫. তিনি তাঁর পরিবার-পরিজনকে নামায ও যাকাত আদায়ের নির্দেশ

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يُعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ
صِدْقٍ عَلِيمًا ﴿٥٠﴾

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكِتَابِ مُوسَى إِنَّهُ كَانَ مُخَاصًا
وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ﴿٥١﴾

وَإِذْ دَعَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ
وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكِتَابِ إسماعيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ﴿٥٤﴾

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ

দিতেন এবং তিনি ছিলেন তাঁর প্রতিপালকের সন্তোষভাজন।

وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ﴿۵৬﴾

৫৬. আরও এই কিতাবে (উল্লিখিত) ইদরীসের (عليه السلام) কথা বর্ণনা কর, তিনি ছিলেন মহা সত্যবাদী নবী।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيْسَ إِذْ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ﴿۵৭﴾

৫৭. এবং আমি তাঁকে দান করেছিলাম উচ্চ মর্যাদা।

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿۵৮﴾

৫৮. নবীদের মধ্যে যাদেরকে আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন যারা আদমের (عليه السلام) বংশধর ও যাদেরকে আমি নূহের (عليه السلام) সাথে নৌকায় আরোহণ করিয়েছিলাম তাদের বংশোদ্ভূত, ইবরাহীম (عليه السلام) ও ইসরাঈলের বংশোদ্ভূত ও যাদেরকে আমি হেদায়াত দান করেছিলাম ও মনোনীত করেছিলাম, তাদের অন্তর্ভুক্ত। তাদের নিকট দয়াময়ের আয়াত আবৃত্তি করা হলে তারা সিদ্ধদায় লুটিয়ে পড়তো ক্রন্দনরত অবস্থায়।

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذْ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ﴿۵৯﴾

৫৯. তাদের পর আসলো অপদার্থ পরবর্তীরা, তারা নামায নষ্ট করলো; আর কুপ্রবৃত্তির অনুসরণ করলো; সুতরাং তারা অচিরেই তারা ধ্বংসে (জাহান্নামের গভীর গর্তে) পতিত হবে।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ غِيًّا ﴿۶০﴾

৬০. কিন্তু তারা নয় যারা তাওবা করেছে, ঈমান এনেছে ও সৎকর্ম করেছে; তারা তো জান্নাতে প্রবেশ করবে; তাদের প্রতি কোন যুলুম করা হবে না।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ﴿۶১﴾

৬১. এটা স্থায়ী জান্নাত, যে অদৃশ্য বিষয়ের প্রতিশ্রুতি দয়াময় তাঁর

جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ

বান্দাদেরকে দিয়েছেন; তাঁর প্রতিশ্রুতি অবশ্যম্ভাবী।

بِالْغَيْبِ ط إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا ﴿١١﴾

৬২. সেখানে তারা 'শান্তি' ছাড়া কোন অসার বাক্য শুনবে না এবং সেথায় সকাল-সন্ধ্যায় তাদের জন্য থাকবে জীবনোপকরণ।

لَا يَسْعَوْنَ فِيهَا لُغْوًا إِلَّا سَلَامًا ط وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿١٢﴾

৬৩. এটা সেই জান্নাত, যার অধিকারী করবো আমি আমার বান্দাদের মধ্যে মুস্বাকীদদেরকে।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾

৬৪. (জিব্রাঈল عليه السلام বলেন) আমরা আপনার প্রতিপালকের আদেশ ব্যতীত অবতরণ করবো না; যা আমাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে আছে ও যা এই দু-এর অন্তর্বর্তী তা তাঁরই এবং আপনার প্রতিপালক ভুলে যান না।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ؕ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ؕ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ؕ ﴿١٤﴾

৬৫. তিনি আকাশমণ্ডলী, পৃথিবী এবং এতোদূরভয়ের অন্তর্বর্তী যা কিছু আছে, সবারই প্রতিপালক; সুতরাং তুমি তাঁরই ইবাদত করো এবং তাঁরই ইবাদতে প্রতিষ্ঠিত থাকো; তুমি কি তাঁর সমনাম সম্পন্ন কাউকেও জান?

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ط هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿١٥﴾

৬৬. মানুষ বলেঃ আমার মৃত্যু হলে আমি কি জীবিত অবস্থায় পুনরুত্থিত হবো?

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿١٦﴾

৬৭. মানুষ কি স্মরণ করে না যে, আমি তাকে পূর্বে সৃষ্টি করেছি যখন সে কিছুই ছিল না?

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَا خَلَقْتُهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿١٧﴾

৬৮. সুতরাং শপথ তোমার প্রতিপালকের! আমি তো তাদেরকেও শয়তানদেরকে সমবেত করবই পরে আমি তাদেরকে নতজানু অবস্থায়

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿١٨﴾

জাহান্নামের চতুর্দিকে উপস্থিত করবই।

৬৯. অতঃপর প্রত্যেক দলের মধ্যে যে দয়াময়ের প্রতি সর্বাধিক অবাধ্য আমি তাকে টেনে বের করবই।

৭০. তারপর আমি তো তাদের মধ্যে যারা জাহান্নামের প্রবেশের অধিকতর যোগ্য তাদের বিষয় ভাল জানি।

৭১. এবং তোমাদের প্রত্যেকেই ওটা (পুলসিরাত) অতিক্রম করবে; এটা তোমার প্রতিপালকের অমোঘ সিদ্ধান্ত।

৭২. পরে আমি মুত্তাকীদেরকে উদ্ধার করবো এবং যালিমদেরকে সেখায় নতজানু অবস্থায় রেখে দিবো।

৭৩. তাদের নিকট আমার স্পষ্ট আয়াত আবৃত্তি হলে কাফিররা মু'মিনদেরকে বলেঃ দু'দলের মধ্যে কোনটি মর্যাদায় শ্রেষ্ঠতর এবং মজলিস হিসেবে কোনটি উত্তম?

৭৪. তাদের পূর্বে কত মানব গোষ্ঠীকে আমি বিনাশ করেছি যারা তাদের অপেক্ষা সম্পদ ও বাহ্য দৃষ্টিতে শ্রেষ্ঠ ছিল।

৭৫. বলঃ যারা বিভ্রান্তিতে আছে, দয়াময় তাদেরকে প্রচুর অবকাশ দিবেন যতক্ষণ না তারা যে বিষয়ে তাদেরকে সতর্ক করা হচ্ছে তা প্রত্যক্ষ করবে, তা শাস্তি হোক অথবা কিয়ামতই হোক; অতঃপর তারা জানতে পারবে কে মর্যাদায় নিকৃষ্ট ও কে দল-বলে দুর্বল।

ثُمَّ لَنُنزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ

عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ۝

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أُولَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝

وَلَنْ نُعْطِيَنَّكَمُ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ

حَتَّىٰ مَقْضِيًّا ۝

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ

فِيهَا جَذِيًّا ۝

وَإِذَا تَسَاءَلْتُمْ عَلَيْهِمُ الْيَتِيمَ الَّذِينَ كَفَرُوا

لِلَّذِينَ آمَنُوا أَئْسَىٰ الْقَرِيْقِينَ خَيْرٌ مِّمَّا وَأَحْسَنُ

تَدْيِيًّا ۝

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ

أَثَانًا وَرِيًّا ۝

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ

مَدَدًا حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ

وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَبُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا

وَأَضْعَفُ جُندًا ۝

৭৬. এবং যারা সৎপথে চলে আল্লাহ তাদেরকে অধিক হিদায়াত দান করেন এবং স্থায়ী সৎকর্ম তোমার প্রতিপালকের পুরস্কার প্রাপ্তির জন্যে শ্রেষ্ঠ এবং প্রতিদান হিসেবেও শ্রেষ্ঠ।

৭৭. তুমি কি লক্ষ্য করেছ তাকে, যে আমার আয়াতসমূহ প্রত্যাখ্যান করে এবং বলেঃ আমাকে ধন-সম্পদ ও সম্ভান-সম্ভতি দেয়া হবেই।

৭৮. সে কি অদৃশ্য সম্বন্ধে অবহিত হয়েছে অথবা দয়াময়ের নিকট হতে প্রতিশ্রুতি লাভ করেছে?

৭৯. কখনই নয়! তারা যা বলে, আমি তা লিখে রাখবো এবং তাদের শাস্তি বৃদ্ধি করতে থাকবো।

৮০. সে যে বিষয়ের কথা বলে, তা থাকবে আমার অধিকারে এবং সে আমার নিকট আসবে একা।

৮১. তারা আল্লাহ ছাড়া অন্য মা'বুদদেরকে গ্রহণ করে এই জন্যে যে, যাতে তারা তাদের সহায় হয়।

৮২. কখনই নয় তারা তাদের ইবাদত অস্বীকার করবে এবং তাদের বিরোধী হয়ে যাবে।

৮৩. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আমি কাফিরদের জন্যে শয়তানদেরকে পাঠিয়েছি তাদেরকে মন্দ কর্মে বিশেষভাবে প্রলুব্ধ করবার জন্যে।

৮৪. সুতরাং তাদের বিষয়ে তড়িঘড়ি করো না; আমি তো গণনা করছি তাদের নির্ধারিত কাল।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَاقِيَتُ
الضَّالِّحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ
مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾

كَلَّا ط سَسْأَلُكَ مَا يَقُولُ وَنَبِّئْ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ
مَذًّا ﴿٧٩﴾

وَنَرِّثْهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾

كَلَّا ط سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ
ضِدًّا ﴿٨٢﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ
تُؤَذُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

৮৫. সে দিন আমি দয়াময়ের নিকট মুত্তাকীদেরকে সম্মানিত মেহমান রূপে সমবেত করবো,

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

৮৬. এবং অপরাধীদেরকে পিপাসার্ত অবস্থায় জাহান্নামের দিকে তাড়িয়ে নিয়ে যাবো।

وَنَسُوقُ الْجَائِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَرِدًّا ﴿٨٦﴾

৮৭. যিনি দয়াময়ের নিকট প্রতিশ্রুতি গ্রহণ করেছেন, তিনি ব্যতীত অন্য কারো সুপারিশ করবার ক্ষমতা থাকবে না।

لَا يُلَاقُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

৮৮. তারা বলেঃ দয়াময় সন্তান গ্রহণ করেছেন।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾

৮৯. তোমরা তো এক বীভৎস কথার অবতারণা করেছ।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِذَا ﴿٨٩﴾

৯০. এতে যেন আকাশসমূহ বিদীর্ণ হয়ে যাবে, পৃথিবী খন্ড-বিখণ্ড হবে ও পর্বতসমূহ চূর্ণ-বিচূর্ণ হয়ে আপতিত হবে।

تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتُرْشَقُ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

৯১. যেহেতু তারা দয়াময়ের উপর সন্তান আরোপ করে।

أَنْ دَعَا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

৯২. অথচ সন্তান গ্রহণ করা দয়াময়ের জন্যে শোভনীয় নয়।

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

৯৩. আকাশসমূহে ও পৃথিবীতে এমন কেউ নেই, যে দয়াময়ের নিকট উপস্থিত হবে না বান্দারূপে।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

৯৪. তিনি তাদেরকে পরিবেষ্টন করে রেখেছেন এবং তিনি তাদেরকে বিশেষভাবে গণনা করেছেন।

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾

৯৫. এবং কিয়ামতের দিবস তাদের সকলেই তাঁর নিকট আসবে একাকী অবস্থায়।

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

৯৬. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে দয়াময় তাদের জন্যে সৃষ্টি করবেন ভালবাসা।^১

৯৭. আমি তো তোমার ভাষায় কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি যাতে তুমি তা দ্বারা মুত্তাকীদেরকে সুসংবাদ দিতে পার এবং বিতণ্ডাপ্রবণ কলহপরায়ণ সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার।

৯৮. আর তাদের পূর্বে আমি কত মানব গোষ্ঠীকে বিনাশ করেছি! তুমি কি তাদের কাউকেও দেখতে পাও অথবা তাদের ক্ষীণতম শব্দও শুনেতে পাও?

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ

لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

فَأَنبَأَ يَسْرَنُهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ

وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا ﴿٩٧﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَوْمٍ هَلْ تَحْسَبُ مِنْهُمْ

مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْوًا ﴿٩٨﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন: আল্লাহ তা'আলা যখন কোন বান্দাকে ভালোবাসেন, তখন জিবরাঈল (আলাইহিস্ সালাম) কে ডেকে বলেন, আল্লাহ তা'আলা অমুক বান্দাকে ভালোবাসেন। এজন্য তুমিও তাকে ভালোবাস। তখন জিবরাঈল (আলাইহিস্ সালাম) ও তাকে ভালোবাসেন। অতপর জিবরাঈল (আলাইহিস্ সালাম) আসমানবাসীদের মধ্যে ঘোষণা করে দেন যে, আল্লাহ তা'আলা অমুক বান্দাকে ভালোবাসেন। এজন্য তোমরাও তাকে ভালোবাস। তখন আসমানবাসীরাও তাকে ভালোবাসতে থাকে। তারপর পৃথিবীবাসীর অন্তরেও তাকে গ্রহণীয় ও বরণীয় করে রাখা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৪০)

সূরাঃ তা-হা, মাকী

(আয়াতঃ ১৩৫, রুকূ'ঃ ৮)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ طه مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٣٥ رُكُوعَاتُهَا ٨

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তা-হা-।

طه ①

২. তোমাকে কষ্ট দেয়ার জন্যে আমি
তোমার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ করি
নি।

مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ①

৩. বরং যে (আল্লাহকে) ভয় করে
তাদের উপদেশার্থে।

إِلَّا تَذَكَّرَ لِمَنْ يَخْشَى ②

৪. যিনি সমুদ্র আকাশমণ্ডলী ও
পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন এটা তাঁর নিকট
হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيلًا مِّنْ خَلْقِ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ③

৫. দয়াময় (আল্লাহ) আরশের
সমুন্নীত।

الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ④

৬. যা আছে আকাশমণ্ডলীতে,
পৃথিবীতে, এই দু'য়ের অন্তর্বর্তী স্থানে
ও ভূ-গর্ভে তা তাঁরই।

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

وَمَا تَحْتِ الْعَرْشِ ⑤

৭. তুমি উচ্চ কণ্ঠে যা-ই বল, তিনি
তো যা শুণ্ড ও অতি গোপন সবই
জানেন।

وَأَنْ تَجْهَرُ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ⑥

৮. আল্লাহ, তিনি ছাড়া অন্য কোন
(সত্য) মা'বুদ নেই, উত্তম (হবার)
উত্তম নাম তাঁরই।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ⑦

৯. আর মুসার (عليه السلام) বৃত্তান্ত
তোমার কাছে পৌছেছে কি?

وَهَلْ آتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ⑧

১। আল্লাহ তা'আলা আরশের উপর কিভাবে সমুন্নীত তার কোন সীমাবদ্ধতা ও ধরণ বর্ণনা করা ছাড়া
বিশ্বাস রাখতে হবে। এ সম্পর্কে আমাদের কোন জ্ঞান নেই। অর্থাৎ তাঁর জ্ঞান যেভাবে উপযুক্ত সেভাবে
সমুন্নীত, তবে তাঁর জ্ঞান সব জায়গায় পরিব্যপ্ত।

১০. তিনি যখন আগুন দেখলেন তখন তাঁর পরিবারবর্গকে বললেনঃ তোমরা এখানে থাকো আমি আগুন দেখেছি; সম্ভবতঃ আমি তোমাদের জন্যে তা হতে কিছু জ্বলন্ত অঙ্গার আনতে পারবো অথবা ওর নিকট কোন পথ-প্রদর্শক পাবো।

১১. অতঃপর যখন তিনি আগুনের নিকট আসলেন তখন আহ্বান করে বলা হলোঃ হে মূসা (ﷺ)!

১২. আমিই তোমার প্রতিপালক, অতএব তোমার জুতা খুলে ফেলো, কারণ তুমি পবিত্র তুওয়া উপত্যকায় রয়েছ।

১৩. এবং আমি তোমাকে মনোনীত করেছি; অতএব যা ওহী প্রেরণ করা হচ্ছে তুমি তা মনোযোগের সাথে শ্রবণ কর।

১৪. আমিই আল্লাহ, আমি ছাড়া সত্য কোন মা'বুদ নেই; অতএব আমার ইবাদত কর এবং আমার স্মরণার্থে নামায কায়েম কর।

১৫. কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী, আমি এটা গোপন রাখতে চাই যাতে প্রত্যেকেই নিজ কর্মানুযায়ী ফল লাভ করতে পারে।

১৬. সুতরাং যে ব্যক্তি কিয়ামতে বিশ্বাস করে না ও নিজ প্রবৃত্তির অনুসরণ করে, সে যেন তোমাকে কিয়ামতে বিশ্বাস স্থাপন হতে বিরত না রাখে, এতে তুমি ধ্বংস হয়ে যাবে।

১৭. (আল্লাহ্ বলেন) হে মূসা (ﷺ)! তোমার ডান হাতে ওটা কি?

إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا
تَعْلَىٰ أَيْتِكُمْ مِنْهَا يَكْتَبِينَ ۖ أَوْ آجِدُ عَلَىٰ النَّارِ هُدًى ۝١٠

فَلَمَّا أَنبَأَهَا نُودًىٰ يُؤْوِسُ ۝١١

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِالْوَادِ
الْبُقْعَةِ طَوًى ۝١٢

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ۝١٣

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي ۖ
وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۝١٤

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِيَتَّخِذَ كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۝١٥

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ
هُوَ فَتَرَدَّىٰ ۝١٦

وَمَا تَلَكَ يَبِينِكَ يُؤْوِسُ ۝١٧

১৮. তিনি বললেনঃ এটা আমার লাঠি; আমি এতে ভর দিই এবং এটা দ্বারা আঘাত করে আমি আমার মেঘ পালের জন্যে বৃক্ষ পত্র ফেলে থাকি এবং এটা আমার অন্যান্য কাজেও লাগে।

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ أَتَوَكَّلُ عَلَيْهَا ۖ وَأَهْبَسَ بِهَا عَلَى
عَنَبِيٍّ وَلِيَّ فِيهَا مَارِبٌ أُخْرَى ۝۱۸

১৯. (আল্লাহ) বললেনঃ হে মুসা (ﷺ)! তুমি এটা নিষ্ক্ষেপ কর।

قَالَ الْقَهَا يَمْوَسَى ۝۱۹

২০. অতঃপর সে তা নিষ্ক্ষেপ করলো, সাথে সাথে তা সাপ হয়ে ছুটতে লাগল।

فَالْقَهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَى ۝۲ۦ

২১. তিনি বললেনঃ তুমি একে ধর, ভয় করো না, আমি একে এর পূর্ব রূপে ফিরিয়ে দিব।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَتُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَى ۝۲ۧ

২২. এবং তুমি তোমার হাত বগলে রাখো, এটা বের হয়ে আসবে উজ্জ্বল হয়ে কোন দোষ ছাড়াই অপর এক নিদর্শন হয়ে।

وَأَضْمُ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجُ بَيَّضًا ۖ مِنْ
غَيْرِ سَوَاءٍ آيَةً أُخْرَى ۝۲۲

২৩. এটা এজন্যে যে, আমি তোমাকে দেখাবো আমার মহা নিদর্শনগুলির কিছু।

لِيُذْرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۝۲۳

২৪. ফির'আউনের নিকট যাও, সে সীমালঙ্ঘন করেছে।

إِذْ هَبُّ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝۲۴

২৫. (মুসা ﷺ) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার বক্ষ প্রশস্ত করে দিন।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝۲۵

২৬. এবং আমার কর্ম সহজ করে দিন।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝۲۶

২৭. আমার জিহ্বার জড়তা দূর করে দিন।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي ۝۲۷

২৮. যাতে তারা আমার কথা বুঝতে পারে।

يَفْقَهُوا قَوْلِي ۝۲۸

২৯. আমার জন্যে করে দিন একজন সাহায্যকারী, আমার স্বজনবর্গের মধ্য হতে।

وَجَعَلْ لِي وَرِيًّا مِّنْ أَهْلِی ۝۲۹

৩০. আমার ভাই হারুনকে (عَلِیُّ)।

هُرُونَ اِخْوٰی ۝۳ۦ

৩১. তার দ্বারা আমার শক্তি সুদৃঢ় করুন।

اَشْدُدْ بِهٖ اَزْرٰی ۝۳۱

৩২. এবং তাকে আমার কর্মে অংশী করুন।

وَاَشْرِكْهُ فِیْ اَمْرِی ۝۳۲

৩৩. যাতে আমরা আপনার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি প্রচুর।

كٰی نُسَبِّحَكَ كَثِیْرًا ۝۳۳

৩৪. এবং আপনাকে স্মরণ করতে পারি অধিক।

وَنَذْكُرَكَ كَثِیْرًا ۝۳۴

৩৫. আপনি তো আমাদের সম্যক দৃষ্ট।

اِنَّكَ كُنْتَ بِنَاۤءٍ بِصِیْرًا ۝۳۵

৩৬. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ হে মুসা (عَلِیُّ)! তুমি যা চেয়েছো তা তোমাকে দেয়া হলো।

قَالَ قَدْ اُوْتِیْتَ سُوْاٰلَكَ یٰمُوسٰی ۝۳۶

৩৭. এবং আমি তো তোমার প্রতি আরো একবার অনুগ্রহ করেছিলাম।

وَلَقَدْ مَنَّاۤ عَلَیْكَ مَرَّةً اٰخَرٰی ۝۳۷

৩৮. যখন আমি তোমার মাতার কাছে ইলহাম (অন্তরে কোন কিছু সৃষ্টি করে দেয়া) করলাম, যা ইলহাম করার ছিল।

اِذْ اَوْحٰیۤنَاۤ اِلٰی اُمِّكَ مَا یُوحٰی ۝۳۸

৩৯. এই মর্মে যে, তুমি তাকে সিন্ধুকের মধ্যে রাখো, অতঃপর তা দরিয়ায় ভাসিয়ে দাও যাতে দরিয়া ওকে তীরে ঠেলে দেয়, ওকে আমার শত্রু ও তার শত্রু নিয়ে যাবে; আমি আমার নিকট হতে তোমার উপর ভালবাসা ঢেলে দিয়েছিলাম, যাতে তুমি আমার চোখের সামনে প্রতিপালিত হও।

اِنَّ اَقْرَبَیْهِ فِی النَّبُوْتِۙ فَاَقْرَبُۙ فِی الْیَمِّۙ فَلِیُلْقِیْهِ
الْیَمُّۙ بِالسَّاحِلِۙ یَاْخُذُهٗۙ عَدُوُّۙیْ وَعَدُوُّۙ لَهٗۙ
وَالْقَیْتُۙ عَلَیْكَ مَحَبَّةًۙ مِّنِّیْۙ وَلِنُصْنَعِۙ عَلٰی عَیْنِیْ ۝۳۹

৪০. যখন তোমার ভগ্নি এসে বললোঃ আমি কি তোমাদেরকে বলব কে এই শিশুর ভার নেবে? তখন আমি তোমাকে তোমার মায়ের নিকট ফিরিয়ে দিলাম যাতে তার চক্ষু জুড়ায় এবং সে চিন্তিত না হয় এবং তুমি এক ব্যক্তিকে হত্যা করেছিলে; অতঃপর আমি তোমাকে মনঃপীড়া হতে মুক্তি দিই, আমি তোমাকে বহু পরীক্ষা করেছি। অতঃপর তুমি কয়েক বছর মাদইয়ানবাসীদের মধ্যে ছিলে, হে মুসা (عليه السلام)! এর পরে তুমি নির্ধারিত সময়ে উপস্থিত হলে।

إِذْ تَسْتَشِيءُ أَخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ ط
فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۗ ه
وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۗ ه
فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ۗ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ
قَدَرٍ يُّمُوسَىٰ ۝

৪১. এবং আমি তোমাকে আমার নিজের (কর্মের) জন্যে প্রস্তুত করে নিয়েছি।

وَأَصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝

৪২. তুমি ও তোমার ভাই আমার নিদর্শনসমূহসহ যাত্রা শুরু কর এবং আমার স্মরণে শৈথিল্য করো না।

إِذْ هَبُّ آتَتْ وَأَخُوكَ بِآيَتِي وَلَا تَنبِيَا فِي ذِكْرِي ۝

৪৩. তোমরা দু'জন ফিরাউনের নিকট যাও, সে তো সীমালঙ্ঘন করেছে।

إِذْ هَبَّآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝

৪৪. তোমরা তার সাথে নম্র কথা বলবে, হয়তো সে উপদেশ গ্রহণ করবে, অথবা ভয় করবে।

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لِّئِنَّا لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۝

৪৫. তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আশঙ্কা করছি যে, সে আমাদেরকে শাস্তি দিবে অথবা সীমালঙ্ঘন করবে।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يُفْرِطَ عَلَيْنَا

أَوْ أَنْ يُطْغَىٰ ۝

৪৬. তিনি বললেনঃ তোমরা ভয় করো না, আমি তো তোমাদের সঙ্গে আছি, আমি শুনি ও আমি দেখি।

قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۝

৪৭. সুতরাং তোমরা তার নিকট যাও এবং বলঃ অবশ্যই আমরা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে প্রেরিত রাসূল, সুতরাং আমাদের সাথে বানী ইসরাঈলকে যেতে দাও এবং তাদেরকে কষ্ট দিয়ো না, আমরা তো তোমার নিকট এনেছি তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে নিদর্শন এবং শাস্তি তাদের প্রতি যারা সৎ পথের অনুসরণ করে।

৪৮. আমাদের প্রতি ওহী প্রেরণ করা হয়েছে যে, শাস্তি তার জন্যে, যে মিথ্যা আরোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়।

৪৯. ফিরআ'উন বললোঃ হে মুসা (ﷺ)! কে তোমাদের প্রতিপালক?

৫০. মুসা (ﷺ) বললেনঃ আমাদের প্রতিপালক তিনি যিনি প্রত্যেক বস্তুকে তার যোগ্য আকৃতি দান করেছেন, অতঃপর পথ নির্দেশ করেছেন।

৫১. ফিরআ'উন বললোঃ তা হলে অতীত যুগের লোকদের অবস্থা কি?

৫২. মুসা (ﷺ) বললেনঃ এর জ্ঞান আমার প্রতিপালকের নিকট লিপিবদ্ধ আছে; আমার প্রতিপালক পথ ভ্রষ্ট হন না এবং ভুলেও যান না।

৫৩. যিনি তোমাদের জন্যে পৃথিবীকে করেছেন বিছানা এবং তাতে করে দিয়েছেন তোমাদের চলবার পথ, তিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন এবং আমি তা দ্বারা বিভিন্ন প্রকারের উদ্ভিদ উৎপন্ন করি।

فَاتِيهِ قَوْلًا إِنَّا رَسُولُ رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تَعَذِّبْهُمْ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ط وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يُوسُفُ ﴿٤٩﴾

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾

قَالَ عَلَيْهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَىٰ ﴿٥٢﴾

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَانزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ط فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

৫৪. তোমরা আহাৰ কৰ ও তোমাদের গবাদি পশু চৰাও; অবশ্যই এতে নিদৰ্শন আছে বিবেক সম্পন্নদের জন্যে।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّأُولِي النَّهْيِ ﴿٥٤﴾

৫৫. আমি মৃত্তিকা হতে তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, তাতেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে দিবো এবং তা হতে পুনর্বার বের করবো।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا
نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى ﴿٥٥﴾

৫৬. আমি তাকে আমার সমস্ত নিদৰ্শন দেখিয়েছিলাম; কিন্তু সে মিথ্যা আৰোপ করেছে ও অমান্য করেছে।

وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَى ﴿٥٦﴾

৫৭. সে বললোঃ হে মুসা (ﷺ) তুমি কি আমাদের নিকট এসেছো তোমার যাদু দ্বারা আমাদেরকে আমাদের দেশ হতে বহিষ্কার করে দেয়ার জন্যে?

قَالَ اجْعَلْنَا لِنُخْرِجَكَ مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ
يُيُوسَى ﴿٥٧﴾

৫৮. আমরাও অবশ্যই তোমার নিকট উপস্থিত করবো এর অনুরূপ যাদু, সুতরাং আমাদের ও তোমার মাঝে নির্ধারণ কর এক নির্দিষ্ট সময় ও এক মধ্যবর্তী স্থান, যার ব্যতিক্রম আমরাও করবো না এবং তুমিও করবে না।

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَأَجْعَلُ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ
مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

৫৯. মুসা (ﷺ) বললেনঃ তোমাদের নির্ধারিত সময় উৎসবের দিন এবং যেই দিন পূর্বাঙ্কে জনগণকে সমবেত করা হবে।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ
النَّاسُ صُبْحَى ﴿٥٩﴾

৬০. অতঃপর ফিরআ'উন উঠে গেল, এবং পরে তার কৌশলসমূহ একত্রিত করলো ও তৎপর আসলো।

فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى ﴿٦٠﴾

৬১. মূসা (ﷺ) তাদেরকে বললেনঃ দুর্ভোগ তোমাদের! তোমরা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করো না, করলে তিনি তোমাদেরকে শাস্তি দ্বারা সমূলে ধ্বংস করবেন; যে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে সেই ব্যর্থ হয়েছে।

৬২. তারা নিজেদের মধ্যে নিজেদের কর্ম সম্বন্ধে বিতর্ক করলো এবং তারা গোপনে পরামর্শ করলো।

৬৩. তারা বললোঃ এই দু'জন অবশ্যই যাদুকার, তারা চায় তাদের যাদু দ্বারা তোমাদেরকে তোমাদের দেশ হতে বহিষ্কৃত করতে এবং তোমাদের উৎকৃষ্ট পদ্ধতির অস্তিত্ব নষ্ট করতে।

৬৪. অতএব, তোমরা তোমাদের যাদু ক্রিয়া সংহত কর, অতপর সারিবদ্ধ হয়ে উপস্থিত হও এবং যে আজ জয়ী হবে সেই সফল।

৬৫. তারা বললোঃ হে মূসা (ﷺ) হয় তুমি নিষ্কেপ কর অথবা প্রথমে আমরাই নিষ্কেপ করি।

৬৬. মূসা (ﷺ) বললেনঃ বরং তোমরাই নিষ্কেপ কর; তাদের যাদুর প্রভাবে অকস্মাৎ মূসার (ﷺ) মনে হলো যে, তাদের দড়ি ও লাঠিগুলি ছুটাছুটি করেছে।

৬৭. মূসার (ﷺ) অন্তরে কিছুটা ভীতি অনুভূত হল।

৬৮. আমি বললামঃ ভয় করো না, তুমিই বিজয়ী।

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيَكْفُرُوا عَلَىٰ اللَّهِ
كذِبًا فَيَسْحَتِكُمْ بَعْدَآيِ ۚ وَقَدْ خَابَ
مَنْ أَفْتَرَىٰ ۝۱۱

فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسْرُوا النَّجْوَىٰ ۝۱۲

قَالُوا إِنَّ هَٰذَيْنِ لَسِحْرَانِ يُرِيدَانِ أَنْ يُخْرِجَكُم
مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطُرُيقَتِكُمُ
الْمُثَلَّىٰ ۝۱۳

فَاجْبِعُوا لِيَدِكُمْ ثُمَّ اتُّوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ
الْيَوْمَ مَنْ اسْتَعْلَىٰ ۝۱۴

قَالُوا يَمُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوْلَىٰ
مَنْ أَلْقَىٰ ۝۱۵

قَالَ بَلْ أَلْقَوْنَا ۚ وَإِذَا جَبَّالَهُمْ وَعَصِيَّهُمْ
يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۝۱۶

فَوَجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ۝۱۷

قَلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ۝۱۸

৬৯. তোমার ডান হাতে যা আছে তা নিষ্ক্ষেপ করো, এটা তারা যা করেছে তা গ্রাস করে ফেলবে, তারা যা করেছে তা তো শুধু যাদুকরের কৌশল; যাদুকর যেখানেই আসুক সফল হবে না।

৭০. অতঃপর যাদুকররা সিজদাবনত হলো ও বললোঃ আমরা হারুন (عليه السلام) ও মুসার (عليه السلام) প্রতিপালকের প্রতি ঈমান আনলাম।

৭১. ফিরআ'উন বললোঃ কী, আমি তোমাদের অনুমতি দেয়ার পূর্বেই তোমরা মুসাতে (عليه السلام) বিশ্বাস স্থাপন করলে! দেখছি সে তো তোমাদের প্রধান, তিনি তোমাদেরকে যাদু শিক্ষা দিয়েছেন; সুতরাং আমি তো তোমাদের হাত-পা বিপরীত দিক হতে কর্তন করবোই এবং আমি তোমাদেরকে খেজুর বৃক্ষের কাণ্ডে শূলবিদ্ধ করবোই, আর তোমরা অবশ্যই জানতে পারবে আমাদের মধ্যে কার শাস্তি কঠোরতর ও অধিক স্থায়ী।

৭২. তারা বললোঃ আমাদের নিকট যে স্পষ্ট নিদর্শন এসেছে তার উপর এবং যিনি আমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন তাঁর উপর তোমাকে কিছুতেই আমরা প্রাধান্য দিবো না, সুতরাং যা তুমি করতে চাও কর, তুমি তো শুধু এই পার্থিব জীবনের উপর কর্তৃত্ব করতে পার।

৭৩. আমরা আমাদের প্রতিপালকের প্রতি ঈমান এনেছি যাতে তিনি ক্ষমা

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا وَإِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ﴿٦٩﴾

فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَى ﴿٧٠﴾

قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْعَاكُمْ إِنَّهُ لَكَيْبٌ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلْ بَيْنَكُمْ فِي جُدُوعِ النَّخْلِ وَلَعَلَّكُمْ تَتَعَلَّمُونَ ﴿٧١﴾

قَالُوا لَنْ نُؤَدِّعَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطِيئَاتِنَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا

করেন আমাদের অপরাধসমূহ এবং তুমি আমাদেরকে যে যাদু করতে বাধ্য করেছো তা; আর আল্লাহ শ্রেষ্ঠ ও স্থায়ী।

৭৪. যে তার প্রতিপালকের নিকট অপরাধী হয়ে উপস্থিত হবে তার জন্যে তো আছে জাহান্নাম, সেথায় সে মরবেও না, বাঁচবেও না।

৭৫. আর যারা তাঁর নিকট উপস্থিত হবে মু'মিন অবস্থায় সৎকর্ম করে, তাদের জন্যে আছে উচ্চ মর্যাদা।

৭৬. স্থায়ী জান্নাত যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা স্থায়ী হবে এবং এই পুরস্কার তাদেরই যারা পবিত্রতা অর্জন করেছে।

৭৭. আমি অবশ্যই মূসার (عليه السلام) প্রতি প্রত্যাদেশ করেছিলাম এ মর্মে যে, আমার বান্দাদেরকে নিয়ে রজনীতে বাহির হও এবং তাদের জন্যে সমুদ্রের মধ্য দিয়ে এক শুষ্ক পথ নির্মাণ কর; পশ্চাৎ হতে এসে তোমাকে ধরে ফেলা হবে এই আশঙ্কা করো না এবং ভয়ও করো না।

৭৮. অতঃপর ফিরআ'উন সৈন্য বাহিনীসহ তাদের পশ্চাদ্ধাবন করলো, অতঃপর সমুদ্র তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে নিমজ্জিত করলো।

৭৯. আর ফিরআউন তার সম্প্রদায়কে পথভ্রষ্ট করেছিল এবং সৎ পথ দেখায় নাই।

عَلَيْهِ مِنَ السَّحَرِطِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ﴿٧٤﴾

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ﴿٧٥﴾

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ﴿٧٦﴾

جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ط وَذَلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّى ﴿٧٧﴾

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنِ اسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرَبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَخَفْ دَرَكًا وَلَا تَخْشَى ﴿٧٨﴾

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٩﴾

وَأَصَلَ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَى ﴿٨٠﴾

৮০. হে বনী ইসরাঈল! আমি তো তোমাদেরকে তোমাদের শত্রু হতে উদ্ধার করেছিলাম, আমি তোমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলাম তুর পর্বতের ডান পার্শ্ব এবং তোমাদের নিকট মান্না ও সালাওয়া প্রেরণ করেছিলাম।

يٰۤاَيُّهَاۤ اِسْرٰٓءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ
وَوَعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْاَيْمَنِ وَكُرْنَا
عَلَيْكُمْ الْمَنَّٰۤىۤ وَ السَّلٰوٰى ۝۱۰

৮১. তোমাদেরকে আমি যা দান করেছি তা হতে ভাল ভাল বস্তু আহার কর এবং এই বিষয়ে সীমালঙ্ঘন করো না, করলে তোমাদের উপর আমার ক্রোধ অবধারিত এবং যার উপর আমার ক্রোধ অবধারিত সে তো ধ্বংস হয়ে যায়।

كُلُوْا مِّنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْعَمُوْا
فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْٓ ۙ وَمَنْ يَّحِلَّ عَلَيْهِ
غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝۱۱

৮২. এবং আমি অবশ্যই ক্ষমাশীল তার প্রতি, যে তাওবা করে, ঈমান আনে, সৎকর্ম করে ও সৎপথে অবিচল থাকে।

وَ اِنِّيْ لَغَفُوْرٌ لِّمَنْ تَابَ وَاَمِنَ وَعَمِلَ
صٰلِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝۱۲

৮৩. হে মুসা (عليه السلام)! তোমার সম্প্রদায়কে পশ্চাতে ফেলে তোমাকে তাড়াতাড়ি করতে বাধ্য করলো কিসে?

وَمَا اَعْمٰجَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝۱۳

৮৪. তিনি বললেনঃ এই তো তারা আমার পশ্চাতে এবং হে আমার প্রতিপালক! আমি তাড়াতাড়ি আপনার নিকট আসলাম, যাতে আপনি সন্তুষ্ট হন।

قَالَ هُمْ اَوْلٰٓءِىَّ عَلٰى اَثْرِيْ وَعَجَلْتُ اِلَيْكَ
رَبِّ لِتَرْضٰى ۝۱۴

৮৫. তিনি বললেনঃ আমি তোমার সম্প্রদায়কে পরীক্ষায় ফেলেছি তোমার চলে আসার পর এবং সামেরী তাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছে।

قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ
وَاصَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝۱۵

৮৬. অতঃপর মূসা (ﷺ) তাঁর সম্প্রদায়ের নিকট ফিরে গেল ক্ষুব্ধ অনুভূত হয়ে; তিনি বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমাদের প্রতিপালক কি তোমাদেরকে এক উত্তম প্রতিশ্রুতি দেন নাই? তবে কি প্রতিশ্রুতি কাল তোমাদের নিকট সুদীর্ঘ হয়েছে, না তোমরা চেয়েছো তোমাদের প্রতি আপতিত হোক তোমাদের প্রতিপালকের ক্রোধ, যে কারণে তোমরা আমার প্রতি প্রদত্ত অঙ্গীকার ভঙ্গ করলে?

৮৭. তারা বললোঃ আমরা তোমার প্রতি প্রদত্ত অঙ্গীকার স্বেচ্ছায় ভঙ্গ করি নাই; তবে আমাদের উপর চাপিয়ে দেয়া হয়েছিল লোকের অলংকারের বোঝা এবং আমরা তা (অগ্নি কুণ্ডে) নিক্ষেপ করি, অনুরূপভাবে সামেরীও নিক্ষেপ করে।

৮৮. অতঃপর সে তাদের জন্যে গড়লো এক গো-বৎস দেহ, যা গরুর মত হাম্বা শব্দ করতো; তারা বললোঃ এটা তোমাদের মা'বুদ এবং মূসার (ﷺ) মা'বুদ; কিন্তু মূসা (ﷺ) ভুলে গেছেন।

৮৯. তবে কি তারা ভেবে দেখে না যে, ওটা তাদের কথায় সাড়া দেয় না এবং তাদের কোন ক্ষতি অথবা উপকার করবার ক্ষমতাও রাখে না?

৯০. হারুন (ﷺ) তাদেরকে পূর্বে বলেছিলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! এটা দ্বারা তো শুধু তোমাদেরকে

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ
 قَالَ يَقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا
 حَسِنًا ۗ أَطَّالَ عَلَيْكُمْ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ
 أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ
 مَوْعِدِي ۝

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمِلْكِنَا وَلَكِنَّا
 حُمِلْنَا أَوْزَارًا مِّنْ زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَدَتْهَا
 فكَذَلِكَ اتَّقَى السَّامِرِيُّ ۝

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عَجَلًا جَسَدًا لَهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هَذَا
 إِلَهُكُمُ وَاللَّهُ مُوسَىٰ ۙ فَانْسَى ۝

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۚ وَلَا يَمْلِكُ
 لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۝

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ قَبْلِ يَقَوْمِ إِنَّمَا
 فُتِنْتُمْ بِهِ ۗ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي

পরীক্ষায় ফেলা হয়েছে; তোমাদের প্রতিপালক দয়াময়, সুতরাং তোমরা আমার অনুসরণ কর এবং আমার আদেশ মেনে চল।

৯১. তারা বলেছিলঃ আমাদের নিকট মূসা (ﷺ) ফিরে না আসা পর্যন্ত আমরা এর পূজা হতে কিছুতেই বিরত হবো না।

৯২. (মূসা ﷺ) বললেনঃ হে হারুন (ﷺ)! তুমি যখন দেখলে যে, তারা পথভ্রষ্ট হয়েছে তখন কিসে তোমাকে নিবৃত্ত করলো।

৯৩. আমার অনুসরণ হতে? তবে কি তুমি আমার আদেশ অমান্য করলে?

৯৪. (হারুন ﷺ) বললেনঃ হে আমার সহোদর! আমার দাড়ি ও কেশ ধর না; আমি আশঙ্কা করেছিলাম যে, আপনি বলবেনঃ তুমি বনী ইসরাঈলের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টি করেছ ও আমার বাক্য পালনে যত্নবান হও নি।

৯৫. (মূসা ﷺ) বললেনঃ হে সামেরী! তোমার ব্যাপার কি?

৯৬. সে বললোঃ আমি দেখেছিলাম যা তারা দেখে নি; অতঃপর আমি সেই দূতের (জিবরাঈলের) পদচিহ্ন হতে একমুষ্টি (খুলা) নিয়েছিলাম এবং আমি তা নিক্ষেপ করেছিলাম, আর আমার মন আমার জন্যে শোভন করেছিল এইরূপ করা।

৯৭. (মূসা ﷺ) বললেনঃ দূর হও, তোমার জীবদ্দশায় তোমার জন্যে

وَاطِيعُوا أَمْرِي ⑩

قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عَافِيْنَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا
مُوسَىٰ ⑪

قَالَ يَهُرُونَ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوْا ⑫

إِلَّا تَتَّبِعَنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ⑬

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي إِنْ نِي
حَشَيْتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ
وَلَمْ تَفْرُقْ بَيْنَ قَوْمِي ⑭

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ⑮

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً
مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي
نَفْسِي ⑯

قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ

এটাই রইলো যে, তুমি বলবেঃ আমাকে স্পর্শ করবে না এবং তোমার জন্যে রইলো এক নির্দিষ্ট কাল, তোমার বেলায় যার ব্যতিক্রম হবে না এবং তুমি তোমার সেই মা'বুদের প্রতি লক্ষ্য কর যার পূজায় তুমি রত ছিলে; আমরা ওকে জ্বালিয়ে দিবই, অতঃপর ওকে বিক্ষিপ্ত করে সাগরে নিক্ষেপ করবই।

৯৮. আমাদের মা'বুদ তো শুধুমাত্র আল্লাহই যিনি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বুদ নেই, তাঁর জ্ঞান সর্ববিষয়ে ব্যাপ্ত।

৯৯. পূর্বে যা ঘটেছে তার সংবাদ আমি এভাবে তোমার নিকট বিবৃত করি এবং আমি আমার নিকট হতে তোমাকে দান করেছি উপদেশ।

১০০. এটা হতে যে বিমুখ হবে সে কিয়ামতের দিনে মহা ভার বহন করবে।

১০১. তাতে তারা স্থায়ী হবে এবং কিয়ামতের দিন এই বোঝা তাদের জন্যে কত মন্দ!

১০২. যে দিন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে সেই দিন আমি অপরাধীদেরকে নীল চক্ষু (দৃষ্টিহীন) অবস্থায় সমবেত করবো।

১০৩. তারা নিজেদের মধ্যে চুপি চুপি বলাবলি করবেঃ তোমরা মাত্র দশ দিন (পৃথিবীতে) অবস্থান করেছিলে।

১০৪. তারা কি বলবে তা আমি ভাল করে জানি, তাদের মধ্যে যে

لَا مَسَاسَ سِوَاكَ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخَلَّفَهُ ۗ وَانظُرْ
إِلَى إِلَهِكَ الَّذِي ظَلَّتْ عَلَيْهِ عَارِفَاتُ لَنَحْرَقَنَّهُ
ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَوْمِ نَسْفًا ﴿٩٨﴾

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٩﴾

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۗ
وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ﴿١٠٠﴾

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ﴿١٠١﴾

خُلِدِينَ فِيهِ ۗ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ﴿١٠٢﴾

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْجُرْمِينَ يَوْمَئِذٍ
رُزُقًا ﴿١٠٣﴾

يَخْتَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٤﴾

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً

অপেক্ষাকৃত সৎপথে ছিল, সে বলবেঃ তোমরা মাত্র একদিন অবস্থান করেছিলে।

إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا يَوْمًا ۝

১০৫. তারা তোমাকে পর্বতসমূহ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে, তুমি বলঃ আমার প্রতিপালক ওগুলিকে সমূলে উৎপাটন করে বিক্ষিপ্ত করে দিবেন।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝

১০৬. অতঃপর তিনি ওকে (ভূমিকে) পরিণত করবেন মসৃণ সমতল ময়দানে।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝

১০৭. যাতে তুমি বক্রতা ও উচ্চতা দেখবে না।

لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝

১০৮. সেই দিন তারা আহ্বানকারীর অনুসরণ করবে, এই ব্যাপারে এদিক-ওদিক করতে পারবে না; দয়াময়ের সামনে সব শব্দ স্তব্ধ হয়ে যাবে; সুতরাং মৃদু পদধ্বনি ছাড়া তুমি কিছুই শুনবে না।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝

১০৯. দয়াময় যাকে অনুমতি দিবেন ও যার কথা তিনি পছন্দ করবেন সে ব্যতীত কারো সুপারিশ সেই দিন কোন কাজে আসবে না।

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أِذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرِضِيَ لَهُ قَوْلًا ۝

১১০. তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে যা কিছু আছে তা তিনি অবগত; কিন্তু তারা জ্ঞান দ্বারা তাঁকে আয়ত্ত করতে পারে না।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۝

১১১. চিরঞ্জীব, চির প্রতিষ্ঠিত আল্লাহর সামনে সকলেই হবে নতমুখ এবং সে-ই ব্যর্থ হবে যে যুলুমের ভার বহন করবে।

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝

১১২. এবং যে সৎকর্ম করে মু'মিন হয়ে তার আশঙ্কা নেই অবিচারের এবং ক্ষতিরও।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخْفُفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْبًا ۝

১১৩. এরূপেই আমি কুরআনকে অবতীর্ণ করেছি আরবী ভাষায় এবং তাতে বিশদভাবে বিবৃত করেছি সতর্কবাণী, যাতে তারা ভয় করে অথবা এটা হয় তাদের জন্যে উপদেশ।

১১৪. আল্লাহ অতি মহান, প্রকৃত অধিপতি; তোমার প্রতি আল্লাহর অহী সম্পূর্ণ হবার পূর্বে তুমি তাড়াতাড়ি করো না এবং বলঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার জ্ঞান বৃদ্ধি করুন!

১১৫. আমি তো ইতিপূর্বে আদমের (عَادَمُ) নিকট হতে অঙ্গীকার নিয়েছিলাম; কিন্তু সে ভুলে গিয়েছিল আমি তাঁকে সংকল্পে দৃঢ় পাইনি।

১১৬. স্মরণ কর, যখন আমি ফেরেশতাদেরকে বললামঃ আদমের (عَادَمُ) প্রতি সিজদা কর, তখন ইবলীস ছাড়া সবাই সিজদা করলো; সে অমান্য করলো।

১১৭. অতঃপর আমি বললামঃ হে আদম (عَادَمُ)! এ অবশ্যই তোমার ও তোমার স্ত্রীর শত্রু; সুতরাং সে যেন কিছুতেই তোমাদেরকে জান্নাত হতে বের করে না দেয়, যার ফলে তুমি বিপদে পতিত হবে।

১১৮. তোমার জন্যে এটাই রইলো যে, তুমি জান্নাতে ক্ষুধার্ত হবে না ও নগ্নও হবে না।

১১৯. এবং তুমি সেথায় পিপাসার্ত হবে না এবং রৌদ্র ক্লিষ্টও হবে না।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحَدِّثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَى إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ﴿١١٤﴾

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَى آدَمَ مِنْ قَبْلِ فَنَسَى وَكَمْ نَجِدَ لَهُ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ط آبَى ﴿١١٦﴾

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَى ﴿١١٧﴾

إِنَّ لَكَ أَلًا تَجُوعُ فِيهَا وَلَا تَعْرَى ﴿١١٨﴾

وَآتَاكَ لَا تَطْمَؤُنَّ فِيهَا وَلَا تَضْحَى ﴿١١٩﴾

১২০. অতঃপর শয়তান তাকে কুমন্ত্রণা দিলো; সে বললোঃ হে আদম (ﷺ)! আমি কি তোমাকে বলে দিবো অনন্ত জীবনপ্রদ বৃক্ষের কথা ও অক্ষয় রাজ্যের কথা?

১২১. অতঃপর তারা তা হতে ভক্ষণ করে ফেলল; তখন তাদের লজ্জাস্থান তাদের নিকট প্রকাশ হয়ে পড়লো এবং তাঁরা জান্নাতের বৃক্ষত্র দ্বারা নিজেদেরকে আবৃত করতে লাগল, আদম (ﷺ) তাঁর প্রতিপালকের হুকুম অমান্য করল, ফলে সে ভ্রমে পতিত হল।

১২২. এরপর তাঁর প্রতিপালক তাঁকে মনোনীত করলেন, তাঁর প্রতি ক্ষমাপরায়ণ হলেন এবং তাঁকে পথ প্রদর্শন করলেন।

১২৩. তিনি বললেন তোমরা উভয়ে একই সঙ্গে জান্নাত হতে নেমে যাও; তোমরা পরস্পর পরস্পরের শত্রু; পরে আমার পক্ষ হতে তোমাদের নিকট সংপথের নির্দেশ আসলে যে আমার পথ অনুসরণ করবে সে বিপথগামী হবে না ও দুঃখ কষ্ট পাবে না।

১২৪. যে আমার স্মরণে বিমুখ তার জীবন-যাপন হবে সংকুচিত এবং আমি তাকে কিয়ামতের দিন উখিত করবো অন্ধ অবস্থায়।

১২৫. সে বলবেঃ হে আমার প্রতিপালক! কেন আমাকে অন্ধ অবস্থায় উখিত করলেন? আমি তো ছিলাম চক্ষুস্মান!

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبُلُ ۗ ﴿٢٠﴾

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتَ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ زَوْعَطَىٰ
آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ﴿٢١﴾

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿٢٢﴾

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَبِينًا لِّبَعْضِكُم لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
فَأَمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًىٰ هَٰ فَمَنِ اتَّبَعَ هَدَايَ
فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ﴿٢٣﴾

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ﴿٢٤﴾

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ﴿٢٥﴾

১২৬. তিনি বলবেনঃ এই রূপই আমার নিদর্শনাবলী তোমার নিকট এসেছিল; কিন্তু তুমি তা ভুলে গিয়েছিলে এবং সেভাবে আজ তুমিও বিস্মৃত হলে।

১২৭. এবং এভাবেই আমি প্রতিফল দেই তাকে যে বাড়াবাড়ি করে ও তার প্রতিপালকের আয়াতসমূহের উপর বিশ্বাস স্থাপন করে না; পরকালের শাস্তি তো অবশ্যই কঠিনতর ও অধিক স্থায়ী।

১২৮. এটাও কি তাদেরকে সৎপথ দেখালো না যে, আমি তাদের পূর্বে ধ্বংস করেছি কত মানবগোষ্ঠী যাদের বাসভূমিতে তারা বিচরণ করে থাকে? অবশ্যই এতে বিবেক সম্পন্নদের জন্যে আছে নিদর্শন।

১২৯. তোমার প্রতিপালকের পূর্ব সিদ্ধান্ত ও একটা নির্ধারিত সময় না থাকলে এদের উপর শাস্তি অবশ্যম্ভাবী হয়ে পড়তো।

১৩০. সুতরাং তারা যা বলে সে বিষয়ে তুমি ধৈর্যধারণ কর এবং সূর্যোদয় পূর্বে এবং সূর্যাস্তের পূর্বে তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর এবং রাত্রিকালে পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর, আর দিবসের প্রান্তসমূহেও যাতে তুমি সন্তুষ্ট হতে পার।

১৩১. তুমি তোমার চক্ষুদ্বয় কখনো প্রসারিত করো না ওর প্রতি, যা আমি তাদের বিভিন্ন শ্রেণীকে পার্থিব জীবনের সৌন্দর্য স্বরূপ উপভোগের

قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيَتْهَا
وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَى ﴿١٢٦﴾

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ
رَبِّهِ ط وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَى ﴿١٢٧﴾

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ
يَہْسُونُ فِي مَسْكِنِهِمْ ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي
النُّهَى ﴿١٢٨﴾

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ
لِرِزَامًا وَ أَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ
أَنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
تَرْضَى ﴿١٣٠﴾

وَلَا تَبْذُرْ عَيْنِيكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا
مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْثَنَّهُمْ فِيهِ ط

উপকরণ হিসেবে দিয়েছি, তদ্বারা তাদেরকে পরীক্ষা করবার জন্যে; তোমার প্রতিপালক প্রদত্ত জীবনোপকরণ উৎকৃষ্ট ও অধিক স্থায়ী।

১৩২. আর তোমার পরিবারবর্গকে নামাযের আদেশ দাও ও তাতে নিজে অবিচলত থাকো, আমি তোমার নিকট কোন জীবনোপকরণ চাই না, আমিই তোমাকে জীবনোপকরণ দেই এবং শুভ পরিণাম তো মুত্তাকীদের জন্যে।

১৩৩. তারা বলেঃ তিনি তাঁর প্রতিপালকের নিকট হতে আমাদের নিকট কোন নিদর্শন আনয়ন করেন নাই কেন? তাদের নিকট কি আসে নি সুস্পষ্ট প্রমাণ যা পূর্ববর্তী গ্রন্থসমূহে মজুদ রয়েছে।

১৩৪. যদি আমি তাদেরকে ইতিপূর্বে শাস্তি দ্বারা ধ্বংস করতাম তবে তারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদের নিকট একজন রাসূল প্রেরণ করলেন না কেন? তাহলে, আমরা লাঞ্চিত ও অপমানিত হবার পূর্বে আপনার আয়াতসমূহ মেনে চলতাম।^১

وَرَزَقْنَاكَ مِنْ حَيْثُ وَابْتَغَىٰ ﴿١٣٠﴾

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ
لَا تَسْأَلْكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣١﴾

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَنَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ ۗ أَوَلَمْ
تَأْتِهِمْ بَيِّنَةٌ مَّا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٢﴾

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهِ لَلْقَاوَارِثَتَا
لَوْلَا أَرْسَلْنَا إِلَيْنَا رَسُولًا فَنُتَبِّحَ إِلَيْكَ مِنْ
قَبْلِ أَنْ نُنزِّلَ وَنُخْزِي ﴿١٣٣﴾

১। আবু আবদুর রহমান ইবনে আবু নু'আম থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আবু সাঈদ খুদরী (রাখিআল্লাহ আনহু)-কে বলতে শুনেছি, আলী ইবনে আবু তালেব ইয়ামন থেকে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর জন্য রক্তীন চামড়ার থলের মধ্যে সামান্য সোনা পাঠিয়েছিলেন। তার মাটি (তখনো) তার থেকে আলাদা করা হয়নি। তিনি চারজনের মধ্যে সোনাটি বন্টন করে দিলেন। এ চারজন হচ্ছেনঃ (১) উয়াইনা ইবনে বদর, (২) আকরা ইবনে হাবেস, (৩) যায়েদুল খাইল ও (৪) আল কামাহ বা আমের ইবনে তোফায়েল। তাঁর সাহাবাদের মধ্য থেকে এক ব্যক্তি বললেনঃ এ লোকগুলোর চাইতে আমরা এর বেশি হকদার। কথাটি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কানে পৌঁছলো। তিনি বললেনঃ তোমাদের কি আমার ওপর আস্থা নেই? (অথচ আমি আসমানের বাসিন্দার আমানতদার।) আমার কাছে দিন-রাত আকাশের খবর আসছে। এ সময় এক ব্যক্তি যার চোখ দু'টি ছিল কোঠরাগত, চোয়ালের হাড়

১৩৫. বলঃ প্রত্যেকেই প্রতীক্ষা করছে, সুতরাং তোমরাও প্রতীক্ষা কর, অতঃপর তোমরা নীচুই জানতে পারবে কারা সঠিক পথের অনুসারী আর কারাই বা হেদায়াতপ্রাপ্ত।

قُلْ كُلُّ مُتَرَبِّصٍ فَتَرَبُّوا ۚ فَسَتَعْلَمُونَ مَنِ
أَصْحَبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى ۞

ঠেলে বের হয়ে পড়েছিল, কপাল ছিল উঁচু, দাড়ি ছিল ঘন, মাথা ছিল ন্যাড়া এবং তহবন্দ ছিল অনেক ওপরে গুঠানো- দাঁড়িয়ে বললো হে আল্লাহর রাসূল! আল্লাহকে ভয় করুন। তিনি বললেনঃ (তুমি ধ্বংস হয়ে যাও,) সারা দুনিয়ার মধ্যে আমি কি আল্লাহকে সবচেয়ে বেশি ভয় করার হকদার নই? আরপন্ন লোকটি চলে গেলো। খালেদ ইবনে ওলীদ আরজ করলেনঃ হে আল্লাহর রাসূল! আমি কি তাকে হত্যা করবো না? তিনি জবাবে বললেনঃ না, হয়তো সে নামায পড়ে। খালেদ বললেনঃ এমন অনেক নামাযী আছে যারা মুখে এমন কথা বলে যা তাদের মনের মধ্যে নেই। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ আমাকে লোকদের দিল চিরে ফেলার (দেখার) ও তাদের পেট ফেড়ে ফেলার হুকুম দেয়া হয় নি। আবু সাঈদ খুদরী বলেনঃ আরপন্ন তিনি সেই লোকটির দিকে চোখ তুলে দেখলেন। সে তখনো পিঠ ফিরিয়ে চলে যাচ্ছিল। তিনি (জার দিকে দৃষ্টি রেখে) বললেনঃ ঐ ব্যক্তির বহুশে এমন এক জাতির উদ্ভব হবে, যারা সুমিষ্ট স্বরে আল্লাহর কিছাৰ পড়বে; কিন্তু তা তাদের গলায় নিচে নামবে না। যীন তাদের কাছ থেকে এমনভাবে ছিটকে বের হয়ে যাবে, যেমন তীর লক্ষ্যবস্ত ছাড়িয়ে দূরে চলে যায়। আবু সাঈদ বলেন, আমার মনে পড়ছে তিনি একথাও বলেনঃ আমি যদি সেই জাতিকে পাই তাহলে সামুদ জাতির মতো তাদেরকে হত্যা করবো। (বুখারী, হাদীস নং ৪৩৫১)

সূরা: আশিয়া, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১২, রুক্বঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুক্ল করছি)।

১. মানুষের হিসাব-নিকাশের সময় আসন্ন; কিন্তু তারা উদাসীনতায় মুখ ফিরিয়ে রয়েছে।

২. যখনই তাদের নিকট তাদের প্রতিপালকের কোন নতুন উপদেশ আসে তখন তারা তা শ্রবণ করে খেলার ছলে।

৩. তাদের অন্তর থাকে অমনোযোগী, সীমালঙ্ঘনকারীরা গোপনে পরামর্শ করেঃ এতো তোমাদের মত একজন মানুষ; তবুও কি তোমরা দেখে শুনে যাদুর কবলে পড়বে?

৪. তিনি বললেনঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সমস্ত কথাই আমার প্রতিপালক অবগত আছেন এবং তিনিই সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

৫. তারা এটাও বলেঃ এসব অলীক কল্পনা, হয় সে মিথ্যা উদ্ভাবন করেছে, না হয় সে একজন কবি; অতএব সে আনয়ন করুক আমাদের নিকট এক নিদর্শন যেরূপ নিদর্শনসহ প্রেরিত হয়েছিল পূর্ববর্তীগণ।

৬. তাদের পূর্বে যে সব জনপদ আমি ধ্বংস করেছি ওর অধিবাসীরা ঈমান আনে নাই; তবে এরা কি ঈমান আনবে?

سُورَةُ الْاَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ

اِيَّانَهَا ۱۱۲ رُكُوْعَاتُهَا ۷

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ
فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ﴿١﴾

مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِمْ مُّحَدَّثِۙ اِلَّا
اَسْتَمْعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٢﴾

لَا هِيۙةَ قُلُوْبُهُمْۙ وَاَسْرُوۙا النَّجْوٰى الَّذِيۙنَ ظَلَمُوۙا
هَلْ هٰذَا اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْۙ اِقْتَاتُوۙنَ السِّحْرَ
وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوۙنَ ﴿٣﴾

قُلْ رَبِّيۙ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِۙ وَهُوَ
السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿٤﴾

بَلْ قَالُوۙا اَضْعَافُ اَحْلَامٍۭ بَلِ اِفْتَرَاهُۭ بَلْ هُوَ
شَاعِرٌۭ ۙ فَلْيَاْتِنَاۙ بِآيَةٍۭ كَمَاۙ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوۙنَ ﴿٥﴾

مَاۙ اَمَنَّاۙ قَبْلَهُمْۙ مِّنْ قَرِيۙبٍۙ اَهْلَكْنَاهَاۙ
اَفْهَمْۙ يُؤْمِنُوۙنَ ﴿٦﴾

৭. তোমার পূর্বে আমি ওহীসহ বহু পুরুষই পাঠিয়েছিলাম; তোমরা যদি না জান তবে জ্ঞানীদেরকে জিজ্ঞেস কর।

৮. আর আমি তাদেরকে এমন দেহ বিশিষ্ট করি নাই যে, তারা আহাৰ্য গ্রহণ করতেন না; আর তারা চিরস্থায়ীও ছিলেন না।

৯. অতঃপর আমি তাদের প্রতি আমার প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করলাম এবং এবং যাদেরকে ইচ্ছা রক্ষা করেছিলাম এবং যালিমদেরকে বিনাশ করেছিলাম।

১০. আমি তো তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করেছি কিভাবে যাতে আছে তোমাদের জন্যে উপদেশ, তবুও কি তোমরা বুঝবে না?

১১. আমি ধ্বংস করেছি কত জনপদ, যার অধিবাসীরা ছিল যালিম এবং তাদের পরে সৃষ্টি করেছি অপর জাতি।

১২. অতঃপর যখন তারা আমার শাস্তি প্রত্যক্ষ করলো তখনই তারা জনপদ হতে পালাতে লাগলো।

১৩. তাদেরকে বলা হলোঃ পলায়ন করো না এবং ফিরে এসো তোমাদের ভোগ সম্ভারের নিকট ও তোমাদের আবাসগৃহে, হয়তো এ বিষয়ে তোমাদেরকে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

১৪. তারা বললোঃ হায় দুর্ভোগ আমাদের! আমরা তো ছিলাম যালিম।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ
فَسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ﴿٨﴾

ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ نَشَاءُ
وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ﴿٩﴾

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

وَكَمْ قَصَبْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً
وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿١١﴾

فَلَمَّا أَحْسَبُوا بِأَسْنَانَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَرْكُضُونَ ﴿١٢﴾

لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ
وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَسْأَلُونَ ﴿١٣﴾

قَالُوا يَوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿١٤﴾

১৫. তাদের এই আর্তনাদ চলতে থাকে যতক্ষণ না আমি তাদেরকে কর্তিত শস্য ও নির্বাপিত অগ্নি সদৃশ না করি।

فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ
حَصِيدًا خِدْيَيْنَ ﴿١٥﴾

১৬. আকাশ ও পৃথিবী এবং যা এতোদূতয়ের মধ্যে রয়েছে তা আমি ক্রীড়াচ্ছলে সৃষ্টি করি নাই।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
لُعِينٍ ﴿١٦﴾

১৭. আমি যদি ক্রীড়ার উপকরণ চাইতাম তবে আমি আমার নিকট যা আছে তা নিয়েই ওটা করতাম, আমি তা করি নাই।

لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُوَ لَا تَخَذْنَاهُ
مَنْ لَدُنَّا ۗ إِنَّ كُنَّا لَفَاعِلِينَ ﴿١٧﴾

১৮. কিন্তু আমি সত্য দ্বারা আঘাত হানি মিথ্যার উপর; ফলে ওটা মিথ্যাকে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দেয় এবং তৎক্ষণাৎ মিথ্যা নিশ্চিহ্ন হয়ে যায়, দুর্ভোগ তোমাদের! তোমরা যা বলছো তার জন্যে।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ
فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۖ وَلَكُمْ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

১৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যারা আছে তারা তাঁরই; তাঁর সান্নিধ্যে যারা আছে (ফেরেশতাগণ) তারা অহংকার বশে তাঁর ইবাদত করা হতে বিমুখ হয় না এবং ক্লাস্তি বোধ করে না।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَمَنْ
عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿١٩﴾

২০. তারা দিবা রাত্র তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে, তারা শৈথিল্য (ক্লাস্তিবোধ) করে না।

يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢٠﴾

২১. তারা মাটি হতে তৈরি যে সব দেবতা গ্রহণ করেছে সে গুলি কি মৃতকে জীবিত করতে সক্ষম?

أَمْ اتَّخَذُوا مِنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢١﴾

২২. যদি আল্লাহ ছাড়া আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে বহু মা'বুদ থাকত, তবে উভয়ই ধ্বংস হয়ে যেতো; অতএব তারা যা বলে তা হতে আরশের অধিপতি আল্লাহ পবিত্র, মহান।

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۗ فَسُبْحَانَ
اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾

২৩. তিনি যা করেন সে বিষয়ে তাঁকে প্রশ্ন করা যাবে না; বরং তাদেরকেই প্রশ্ন করা হবে।

২৪. তারা কি তাঁকে ছাড়া বহু মা'বুদ গ্রহণ করেছে? বলঃ তোমরা তোমাদের প্রমাণ উপস্থিত কর; এটা আমার সাথে যারা আছে তাদের জন্যে উপদেশ এবং উপদেশ (ছিল) আমার পূর্ববর্তীদের জন্যে; কিছ্র তাদের অধিকাংশই প্রকৃত সত্য জানে না, ফলে তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়।

২৫. আমি তোমার পূর্বে কোন রাসূল প্রেরণ করি নাই এই ওহী ব্যতীত যে, আমি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বুদ নেই; সুতরাং তোমরা আমারই ইবাদত কর।

২৬. তারা বলেঃ দয়াময় সন্তান গ্রহণ করেছেন, তিনি পবিত্র, মহান! তাঁরা তো তাঁর সম্মানিত বান্দা।

২৭. তারা আল্লাহর আগে বেড়ে কথা বলে না; তারা তো তাঁর আদেশ অনুসারেই কাজ করে থাকে।

২৮. তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে যা কিছু আছে তা তিনি অবগত; তারা (ফেরেশতাগণ) সুপারিশ করে শুধু তাদের জন্যে যাদের প্রতি তিনি (আল্লাহ) সন্তুষ্ট এবং তারা তাঁর ভয়ে ভীত সন্ত্রস্ত।

২৯. তাদের মধ্যে যে বলবেঃ আমিই মা'বুদ তিনি (আল্লাহ) ব্যতীত, তাকে আমি প্রতিফল দিবো জাহান্নাম। এভাবেই আমি যালিমদেরকে বিনিময় দিয়ে থাকি।

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلُوبًا مِثْلَ قُلُوبِ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۚ هَذَا ذِكْرٌ مَنْ مَعِيَ وَذِكْرٌ مَنْ قَبْلِي ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُورِيهِ إِلَيْهِ أَنْتَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

لَا يَسْئَلُونَكَ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِنْ حَشِيَّتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

وَمَنْ يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِنْ دُونِهِ فَذٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

৩০. যারা কুফরী করে তারা কি ভেবে দেখে না যে, আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী মিশে ছিল ওতপ্রোতভাবে; অতঃপর আমি উভয়কে পৃথক করে দিলাম, এবং প্রাণবান সমস্ত কিছু সৃষ্টি করলাম পানি হতে; তবুও কি তারা বিশ্বাস করবে না?

৩১. এবং আমি পৃথিবীতে সৃষ্টি করেছি সুদৃঢ় পর্বত যাতে পৃথিবী তাদেরকে নিয়ে এদিক ওদিক ঢলে না যায় এবং আমি তাতে করে দিয়েছি প্রশস্ত পথ যাতে তারা গন্তব্যস্থলে পৌঁছতে পারে।

৩২. এবং আকাশকে করেছি সুরক্ষিত ছাদ; কিন্তু তারা আকাশস্থিত নিদর্শনাবলী হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

৩৩. আল্লাহই সৃষ্টি করেছেন রাত্রি ও দিবস এবং সূর্য ও চন্দ্র; প্রত্যেকেই নিজ নিজ কক্ষপথে বিচরণ করে।

৩৪. আমি তোমার পূর্বেও কোন মানুষকে অনন্ত জীবন দান করি নি; সুতরাং তোমার মৃত্যু হলে তারা কি চিরজীবী হয়ে থাকবে?

৩৫. জীব মাত্রই মৃত্যুর স্বাদ গ্রহণ করবে; আমি তোমাদেরকে মন্দ ও ভাল দ্বারা বিশেষভাবে পরীক্ষা করে থাকি এবং আমারই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

৩৬. কাফিররা যখন তোমাকে দেখে তখন তারা তোমাকে শুধু বিদ্রূপের পাত্ররূপেই গ্রহণ করে; তারা বলেঃ এই কি সেই, যে তোমাদের দেবতাগুলির সমালোচনা করে? অথচ

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أَنَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ
كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿۳۰﴾

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ ۖ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ ۖ
وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ﴿۳۱﴾

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ
أَيَّتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿۳۲﴾

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ الْيَلْمَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿۳۳﴾
وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۗ
أَفَأَيْنَ مَتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿۳৪﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبِّئُكُمْ بِالشَّرِّ
وَالْخَيْرِ ۖ فَمَتْنَةٌ ۗ وَاللَّيْنَا تَرْجَعُونَ ﴿۳৫﴾

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا
هُزُوءًا ۖ أَهَذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ ۗ وَهُمْ
يَذْكُرُ الرَّحْمٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿۳৬﴾

তরাই তো 'আর-রহমান' এর জিকিরের বিরোধিতা করে।

৩৭. মানুষ সৃষ্টিগতভাবে শীঘ্রপরায়ণ, শীঘ্রই আমি তোমাদেরকে আমার নিদর্শনাবলী দেখাবো; সুতরাং তোমরা আমাকে তাড়াতাড়ি করতে বলো না।

৩৮. আর তারা বলে: তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে বল: এই প্রতিশ্রুতি কখন পূর্ণ হবে?

৩৯. হায়, যদি কাফিররা সেই সময়ের কথা জানতো যখন তারা তাদের সম্মুখ ও পশ্চাৎ হতে অগ্নি প্রতিরোধ করতে পারবে না এবং তাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

৪০. বস্তুত: গুটা তাদের উপর আসবে অতর্কিতভাবে এবং তাদেরকে হতভম্ব করে দিবে; ফলে তারা গুটা রোধ করতে পারবে না এবং তাদেরকে অবকাশও দেয়া হবে না।

৪১. তোমার পূর্বেও অনেক রাসূলকেই ঠাট্টা-বিদ্রূপ করা হয়েছিল; পরিণামে তারা যা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তা বিদ্রূপকারীদেরকে পরিবেষ্টন করেছিল।

৪২. বল: 'রহমান' এর পরিবর্তে কে তোমাদেরকে রক্ষা করছে রাতে ও দিবসে? তবুও তারা তাদের প্রতিপালকের স্মরণ হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

৪৩. তবে কি আমি ব্যতীত তাদের এমন দেব-দেবীও আছে যারা

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ط سَأُورِيكُمْ آيَاتِي
فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونُ
عَنْ وُجُوهِهمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلِنَا مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ
سَخَرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤١﴾

قُلْ مَنْ يَكْفِيكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ ط
بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَتَّبِعُهُمْ مِنْ دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ

তাদেরকে রক্ষা করতে পারে? তারা তো নিজেদেরকেই সাহায্য করতে পারে না এবং আমার বিরুদ্ধে তাদের সাহায্যকারীও থাকবে না।

৪৪. বস্তুতঃ আমিই তাদেরকে এবং তাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে ভোগ সম্ভার দিয়েছিলাম; অধিকন্তু তাদের আয়ুষ্কালও হয়েছিল দীর্ঘ; তারা কি দেখছে না যে, আমি তাদের দেশকে চতুর্দিক হতে সংকুচিত করে আনছি; তবুও কি তারা বিজয়ী হবে?

৪৫. বলঃ আমি তো শুধু ওহী দ্বারাই তোমাদেরকে সতর্ক করি; কিন্তু যারা বধির তাদেরকে যখন সতর্ক করা হয় তখন তারা সতর্ক বাণী শুনে না।

৪৬. তোমার প্রতিপালকের শাস্তি কিঞ্চিৎ মাত্রাও যদি তাদেরকে স্পর্শ করে তারা নিশ্চয় বলে উঠবেঃ হায়, দুর্ভোগ আমাদের, আমরা তো ছিলাম যালিম!

৪৭. এবং কিয়ামত দিবসে আমি স্থাপন করবো ন্যায় বিচারের মানদণ্ড; সুতরাং কারো প্রতি কোন অবিচার করা হবে না। এবং কর্ম যদি তিল পরিমাণ ওজনের হয় তবুও তা আমি উপস্থিত করবো; হিসাব গ্রহণ-কারীরূপে আমিই যথেষ্ট।

৪৮. আমি তো মুসা (ﷺ) ও হারানকে (ﷺ) দিয়েছিলাম ফুরকান, জ্যোতি ও উপদেশ মুত্তাকীদের জন্যে।

৪৯. যারা না দেখেও তাদের প্রতিপালককে ভয় করে এবং কিয়ামত সম্পর্কে থাকে ভীত সন্ত্রস্ত।

نَصَرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٣٧﴾

بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَابُونَ ﴿٣٨﴾

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصَّمَّةُ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٣٩﴾

وَلَكِنَّ مَسَّتَهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لِيَقُولُنَّ يُوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٠﴾

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ ﴿٤١﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٢﴾

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٣﴾

৫০. এটা কল্যাণময় উপদেশ; আমি এটা অবতীর্ণ করেছি; তবুও কি তোমরা এটাকে অস্বীকার করবে?

৫১. আমি তো এর পূর্বে ইবরাহীমকে (عليه السلام) সৎপথের জ্ঞান দিয়েছিলাম এবং আমি তাঁর সম্বন্ধে ছিলাম সম্যক অবগত।

৫২. যখন তিনি তাঁর পিতা ও তাঁর সম্প্রদায়কে বললেনঃ এই মূর্তিগুলি কী? যেগুলোর পূজায় তোমরা রত আছ? (যেগুলোর পূজা তোমরা করছ?)

৫৩. তারা বললোঃ আমরা আমাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে এদের পূজাকারী হিসেবে পেয়েছি।

৫৪. তিনি বললেনঃ তোমরা নিজেরা এবং তোমাদের পিতৃ-পুরুষরাও রয়েছে স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে।

৫৫. তারা বললোঃ তুমি কি আমাদের নিকট সত্য এনেছো, না তুমি খেল-তামাশা করছো?

৫৬. তিনি বললেনঃ না, তোমাদের প্রতিপালক তো আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর প্রতিপালক, যিনি গুলি সৃষ্টি করেছেন এবং এই বিষয়ে আমি অন্যতম সাক্ষী।

৫৭. শপথ আল্লাহর, তোমরা চলে গেলে আমি তোমাদের মূর্তিগুলি সম্বন্ধে অবশ্যই ব্যবস্থা অবলম্বন করবো।

৫৮. অতঃপর তিনি সেগুলোকে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিলেন তাদের বড় (প্রধান) মূর্তিটি ব্যতীত, যাতে তারা তার দিকে ফিরে আসে।

وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبْرَكٌ أَنْزَلْنَاهُ وَأَنْتُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٠﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَلِيمِينَ ﴿٥١﴾

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاقِبُونَ ﴿٥٢﴾

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عِبَادِينَ ﴿٥٣﴾

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلِيلٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۚ وَأَنَا عَلَىٰ ذِكْمٍ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾

فَجَعَلَهُمْ جُودًا إِلَّا كَبِيرًا لَهُمْ لَعَّاهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٨﴾

৫৯. তারা বললোঃ আমাদের উপাস্যগুলির প্রতি এরূপ করলো কে? সে নিশ্চয়ই অত্যাচারী।

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِآلِهَتِنَا
إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٩﴾

৬০. কেউ কেউ বললোঃ আমরা এক যুবককে ওদের সমালোচনা করতে শুনেছি, তার নাম ইবরাহীম।

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذُرُّهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبرَاهِيمُ ﴿٦٠﴾

৬১. তারা বললোঃ তাকে উপস্থিত কর লোক সম্মুখে, যাতে তারা সাক্ষ্য দিতে পারে।

قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَى آعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦١﴾

৬২. তারা বললোঃ হে ইবরাহীম! তুমিই কি আমাদের উপাস্যগুলির উপর এরূপ করেছো?

قَالُوا أَمْ أَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِآلِهَتِنَا يَا إِبرَاهِيمُ ﴿٦٢﴾

৬৩. তিনি বললেনঃ বরং তাদের এই প্রধানই তো একাজ করেছে, অতএব এদেরকেই জিজ্ঞেস কর যদি ওরা কথা বলতে পারে।

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَسْأَلُوهُمْ إِنْ
كَانُوا يَنْطِقُونَ ﴿٦٣﴾

৬৪. তখন তারা মনে মনে চিন্তা করে দেখলো এবং একে অপরকে বলতে লাগলোঃ তোমরাই তো অত্যাচারী।

فَرَجَعُوا إِلَى أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ
الظَّالِمُونَ ﴿٦٤﴾

৬৫. অতঃপর তাদের মস্তক অবনত হয়ে গেলে এবং তারা বললোঃ তুমি তো জানই যে, এরা কথা বলে না।

ثُمَّ نَكَّسُوا عَلَى رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا هَؤُلَاءِ
يَنْطِقُونَ ﴿٦٥﴾

৬৬. তিনি বললেনঃ তবে কি তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুই ইবাদত কর যারা তোমাদের কোন উপকার করতে পারে না, ক্ষতিও করতে পারে না?

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ
شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

৬৭. ষিক্ তোমাদেরকে এবং আল্লাহর পরিবর্তে তোমরা যাদের ইবাদত কর তাদেরকে! তবে কি তোমরা বুঝবে না।

أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

৬৮. তারা বললোঃ তাকে পুড়িয়ে দাও এবং সাহায্য কর তোমাদের দেবতাগুলিকে যদি তোমরা কিছু করতে চাও।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فاعِلِينَ ﴿١٨﴾

৬৯. আমি বললামঃ হে অগ্নি! তুমি ইবরাহীমের (عليه السلام) জন্যে শীতল ও নিরাপদ হয়ে যাও।

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٩﴾

৭০. তারা তাঁর ক্ষতি সাধনের ইচ্ছা করেছিল; কিন্তু আমি তাদেরকে করে দিলাম সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত।

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ﴿٢٠﴾

৭১. আর আমি তাঁকে ও লূতকে (عليه السلام) উদ্ধার করে নিয়ে গেলাম সেই দেশে (সিরিয়ায়) যেথায় আমি কল্যাণ রেখেছি বিশ্বাসীর জন্যে।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ﴿٢١﴾

৭২. এবং আমি ইবরাহীমকে (عليه السلام) দান করেছিলাম ইসহাক এবং অতিরিক্ত (পৌত্ররূপে) ইয়াকুবকে (عليه السلام); আর প্রত্যেককেই করেছিলাম সৎকর্মপরায়ণ।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۗ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ﴿٢٢﴾

৭৩. আর আমি তাদেরকে করেছিলাম নেতা; তারা আমার নির্দেশ অনুসারে মানুষকে পথপ্রদর্শন করতো; তাদের কাছে আমি ওহী প্রেরণ করেছিলাম সৎকর্ম করতে, নামায কায়েম করতে এবং যাকাত প্রদান করতে তারা আমারই ইবাদত করতো।

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُهَدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ ۗ وَكَانُوا لَنَا عَابِدِينَ ﴿٢٣﴾

৭৪. এবং লূতকে (عليه السلام) দিয়েছিলাম প্রজ্ঞা ও জ্ঞান, আর তাঁকে উদ্ধার করেছিলাম এমন এক জনপদ হতে যার অধিবাসীরা লিগু ছিল অশ্লীল কর্মে; তারা ছিল এক মন্দ সম্প্রদায়, সত্যত্যাগী (ফাসিক)।

وَلُوطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرِيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَاتِ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَيُسْقَوْنَ ﴿٢٤﴾

৭৫. এবং তাঁকে আমি আমার অনুগ্রহ ভাজন করেছিলাম; নিশ্চয় তিনি ছিলেন সৎকর্মপরায়ণদের অন্তর্ভুক্ত।

وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾

৭৬. স্মরণ কর নূহকে (عليه السلام); পূর্বে তিনি যখন আহ্বান করেছিলেন তখন আমি সাড়া দিয়েছিলাম তাঁর আহ্বানে এবং তাকে ও তার পরিজন বর্গকে মহাসংকট হতে উদ্ধার করেছিলাম।

وَنُوحًا إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

৭৭. এবং আমি তাকে সাহায্য করেছিলাম সে সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে যারা আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করেছিল, তারা ছিল এক মন্দ সম্প্রদায়; এ জন্যে তাদের সকলকে আমি নিমজ্জিত করেছিলাম।

وَنَصْرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا سَوْءًا فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾

৭৮. এবং (স্মরণ কর) দাউদ (عليه السلام) ও সুলাইমানের (عليه السلام) কথা, যখন তারা বিচার করছিলেন শস্য ক্ষেত্র সম্পর্কে; তাতে রাত্ৰিকালে প্রবেশ করেছিল কোন সম্প্রদায়ের মেঘ; আমি প্রত্যক্ষ করছিলাম তাদের বিচার।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمُونَ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَسَتْ فِيهِ غَمَمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحَكْمِهِمْ شَاهِدِينَ ﴿٧٨﴾

৭৯. এবং আমি সুলাইমানকে (عليه السلام) এ বিষয়ের মীমাংসা বুঝিয়ে দিয়েছিলাম এবং তাঁদের প্রত্যেককে আমি দিয়েছিলাম প্রজ্ঞা ও জ্ঞান;

فَفَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَانَ ۗ وَكُلًّا آتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا ۗ وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۗ

১। ওটা ছিল আঙ্গুরের ক্ষেত্র বা বাগান। ঐ বাগানটিকে বকরীগুলি নষ্ট করে দেয়। দাউদ (আলাইহিস্ সালাম) ফায়সালা দেন যে, বাগানের ক্ষতিপূরণ স্বরূপ বকরীগুলি বাগানের মালিক পেয়ে যাবে। সুলায়মান (আলাইহিস্ সালাম) এই ফায়সালা শুনে আরম্ভ করলেন। হে আঙ্গুর নবী (আলাইহিস্ সালাম)! এটা ছাড়া অন্য একটা ফায়সালা করা যেতে পারে। তো দাউদ (আলাইহিস্ সালাম) উত্তরে বললেন, “ওটা কি?” তিনি জবাব দিলেনঃ “প্রথমত বকরীগুলি বাগানের মালিকের হাতে সমর্পণ করা হোক। সে গুলি দ্বারা ফায়দা উঠাতে থাকবে। আর বাগান বকরীর মালিককে দেয়া হোক। সে আঙ্গুরের চারার খিদমত করতে থাকবে। অতঃপর যখন আঙ্গুরের গাছ গুলি ঠিক ঠাক হয়ে যাবে এবং পূর্বের অবস্থায় ফিরে আসবে তখন বাগানের মালিককে বাগান ফিরিয়ে দেয়া হবে এবং বাগানের মালিকও বকরীগুলি, বকরীর মালিককে ফিরিয়ে দিবে।” এই আয়াতের ভাবার্থ এটাই। (ভাকসীর ইবনে কাসীর)

আমি পর্বত ও পাখিদের জন্যে নিয়ম করে দিয়েছিলাম যেন ওরা দাঁড়দের (الطير) সাথে আমার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে; আমিই ছিলাম এই সবের কর্তা।

৮০. আমি তাকে তোমাদের জন্যে বর্ম নির্মাণ শিক্ষা দিয়েছিলাম, যাতে ওটা তোমাদের যুদ্ধে তোমাদেরকে রক্ষা করে; সুতরাং তোমরা কি কৃতজ্ঞ হবে না?

৮১. এবং সুলাইমানের (عليه السلام) বশীভূত করে দিয়েছিলাম প্রবল বায়ুকে; তা তাঁর আদেশক্রমে প্রবাহিত হতো সেই দেশের দিকে যেখানে আমি কল্যাণ রেখেছি; প্রত্যেক বিষয় সম্পর্কে আমি সম্যক অবগত।

৮২. এবং শয়তানদের মধ্যে কতক তার জন্যে ডুবুরীর কাজ করতো, এটা ছাড়া অন্য কাজও করতো; আমি তাদের দিকে সতর্ক দৃষ্টি রাখতাম।

৮৩. আর (স্মরণ কর) আইয়ুবের (عليه السلام) কথা, যখন সে তার প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলেনঃ আমি দুঃখ-কষ্টে পড়েছি, আপনি তো দয়ালুদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ দয়ালু।

৮৪. তখন আমি তাঁর ডাকে সাড়া দিলাম, তাঁর দুঃখ-কষ্ট দূরীভূত করে

وَكُنَّا فَعِلِينَ ﴿٤٠﴾

وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِيَتَّخِذَكُم مِّنْ بَاسِكُمْ ؕ فَهَلْ أَنْتُمْ شَاكِرُونَ ﴿٤١﴾

وَلَسَلَيْنَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمِينَ ﴿٤٢﴾

وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَن يَغْوُصُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ ؕ وَكُنَّا لَهُمْ حَافِظِينَ ﴿٤٣﴾

وَإِيُوبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٤٤﴾

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرٍّ وَآتَيْنَاهُ

১। অবশ্য শয়তানদেরকেও আত্মাহুতাঁর অন্তর্ভুক্ত করে দিয়েছিলেন। তাঁর জন্যে ডুবুরীর কাজ করত। তারা সমুদ্রে ডুব দিয়ে ওর তলদেশ হতে মণি-মুক্তা বের করে আনতো। এছাড়াও আরো বহু কাজ করতো। যেমন প্রাসাদ নির্মাণ ইত্যাদি। তাদেরকে শিকলে আবদ্ধ রাখা হতো। (তাকসীর ইবনে কাসীর)

দিলাম, আর তার পরিবার পরিজনকে তাঁর নিকট ফিরিয়ে দিয়েছিলাম। তাদের সাথে তাদের মত আরো দিয়েছিলাম আমার বিশেষ রহমত এবং ইবাদতকারীদের জন্যে উপদেশ।

৮৫. আর (স্মরণ কর) ইসমাইল (عليه السلام) ইদরীস (عليه السلام) এবং যুলকিফল-এর কথা তাদের প্রত্যেকেই ছিলেন ধৈর্যশীল।

৮৬. এবং তাদেরকে আমি আমার অনুগ্রহভাজন করেছিলাম, তাঁরা ছিলেন সং কর্মপরায়ণ।

৮৭. আর (স্মরণ কর) যুন-নুন (ইউনুস)-এর কথা, যখন তিনি ক্রোধভরে বের হয়ে গিয়েছিলেন এবং মনে করেছিলেন আমি তার উপর কোন ক্ষমতা রাখি না; অতঃপর তিনি অন্ধকার হতে সত্য আহ্বান করেছিলেনঃ আপনি ছাড়া কোন (সত্য) মা'বুদ নেই; আপনি পবিত্র, মহান; আমিতো অত্যাচারীদের একজন।

৮৮. তখন আমি তাঁর ডাকে সাড়া দিয়েছিলাম এবং তাঁকে উদ্ধার করেছিলাম দৃষ্টিভ্রান্ত হতে এবং এভাবেই আমি মু'মিনদেরকে উদ্ধার করে থাকি।

৮৯. এবং (স্মরণ কর) যাকারিয়ার (عليه السلام) কথা, যখন তিনি তাঁর প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে একা (সন্তানহীন) ছেড়ে দিওনা এবং আপনিই সর্বোত্তম উত্তরাধিকারী।

أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا
وَذِكْرَىٰ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٨٥﴾

وَإِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ
كُلٌّ مِّنَ الصَّابِرِينَ ﴿٨٦﴾

وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٧﴾

وَذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَن لَّنْ
نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَن لَّا إِلَهَ
إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ ؕ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٨﴾

فَأَسْتَجِبْنَا لَهُ لَوْ نَجَّيْنَاهُ مِنَ الْعَمَّةِ
وَكَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْوَالِدِينَ ﴿٨٩﴾

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي
فَرْدًا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ﴿٩٠﴾

৯০. অতঃপর আমি তাঁর আহ্বানে সাঁড়া দিয়েছিলাম এবং তাঁকে দান করেছিলাম ইয়াহইয়াকে (عليه السلام), আর তাঁর জন্যে স্ত্রীকে যোগ্যতা সম্পন্ন করেছিলাম; তাঁরা সৎকর্মে প্রতিযোগিতা করতেন, তাঁরা আমাকে ডাকতেন আশা ও ভীতির সাথে এবং তারা ছিলেন আমার নিকট বিনীত।

৯১. আর (স্মরণ কর) সেই নারীকে (মারয়ামকে) যিনি নিজ সতীত্বকে রক্ষা করেছিলেন, অতঃপর তার মধ্যে আমি আমার রূহ হতে ফু'কে দিয়েছিলাম এবং তাঁকে ও তাঁর পুত্রকে করেছিলাম বিশ্বাসীর জন্য এক নিদর্শন।

৯২. এ হচ্ছে তোমাদেরই জাতি এটা তো একই জাতি এবং আমিই তোমাদের প্রতিপালক, অতএব আমারই ইবাদত কর।

৯৩. কিন্তু মানুষ নিজেদের কার্যকলাপে পরস্পরের মধ্যে মতভেদ সৃষ্টি করেছে; প্রত্যেকেই আমার নিকট প্রত্যাবর্তনকারী।

৯৪. সুতরাং যদি কেউ মু'মিন হয়ে সৎকর্ম করে তবে তার কর্ম প্রচেষ্টা অগ্রাহ্য হবে না এবং আমি তো তা লিখে রাখি।

৯৫. যে জনপদকে আমি ধ্বংস করেছি তার সম্পর্কে নিষেধাজ্ঞা রয়েছে যে, তার অধিবাসীবৃন্দ ফিরে আসবে না।

৯৬. এমন কি যখন ইয়াজুজ ও মাজুজকে মুক্তি দেয়া হবে এবং

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ زَوْجَهُ ط لَاتَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ
وَيَدْعُونَ رَغْبًا وَرَهْبًا ط وَكَانُوا لَنَا خُشْعِينَ ⑩

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا
وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ⑪

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ط وَأَنَا رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُونِ ⑫

وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ط كُلٌّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ⑬

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَكْفُرْ
لِسَعِيهِ ⑭ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ⑮

وَحَرَمٌ عَلَى قُرَيْبٍ أَهْلُهَا أَهْلُهَا ⑯ لَأَيَّرَجِعُونَ ⑰

حَتَّى إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ

তারা প্রত্যেক উঁচু ভূমি হতে ছুটে আসবে।

حَدَّيْطٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٧﴾

৯৭. সত্য প্রতিশ্রুতির সময় আসন্ন হলে অকস্মাৎ কাফিরদের চক্ষু স্থির হয়ে যাবে, তারা বলবেঃ হায় দুর্ভোগ আমাদের! আমরা তো ছিলাম এ বিষয়ে উদাসীন; বরং আমরা তো যালিম ছিলাম।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقِّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا يَوْيَلُونَ قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٩٨﴾

৯৮. তোমরা এবং আল্লাহর পরিবর্তে তোমরা যাদের ইবাদত কর সেগুলি তো জাহান্নামের ইক্ষন; তোমরা সবাই তাতে প্রবেশ করবে।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصْبُ جَهَنَّمَ أَنتُمْ لَهَا وَرِدُونَ ﴿٩٩﴾

৯৯. যদি তারা উপাস্য হতো তবে তারা জাহান্নামে প্রবেশ করতো না; তাদের সবাই তাতে স্থায়ী হবে।

لَوْ كَانَ هُوَ آلَاءَ إِلَهَةٍ مَا رَدَدْنَاهَا وَاكُلُّ فِيهَا خَلِدُونَ ﴿١٠٠﴾

১০০. সেথায় থাকবে তাদের আর্তনাদ এবং সেথায় তারা কিছুই শুনতে পাবে না।

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠١﴾

১০১. যাদের জন্যে আমার নিকট থেকে পূর্ব হতে কল্যাণ নির্ধারিত রয়েছে, তাদেরকে উহা হতে (জাহান্নাম) দূরে রাখা হবে।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠٢﴾

১০২. তারা তার (জাহান্নামের) ক্ষীণতম শব্দও শুনতে পাবে না এবং সেথায় তারা তাদের মন যা চায় চিরকাল তা ভোগ করবে।

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. মহাভীতি তাদেরকে চিন্তায়ুক্ত করবে না এবং ফেরেশতারা তাদেরকে অভ্যর্থনা দিবেন, এটা সেই দিন যার প্রতিশ্রুতি তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল।

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّوهُمْ الْمَلَائِكَةُ ۖ هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٤﴾

১০৪. সেদিন আমি আকাশকে গুটিয়ে ফেলবো, যেভাবে গুটানো হয়

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۗ

লিখিত দফতর; যেভাবে আমি সৃষ্টির সূচনা করেছিলাম, সেভাবে পুনরায় সৃষ্টি করবো; প্রতিশ্রুতি পালন আমার কর্তব্য, আমি এটা পালন করবই।

১০৫. আর আমি নাযিলকৃত কিতাবে লিখে দিয়েছি এই উপদেশের পর যে, আমার সৎকর্মশীল বান্দারা পৃথিবীর অধিকারী হবে।

১০৬. এতে রয়েছে বাণী সেই সম্প্রদায়ের জন্যে যারা ইবাদত করে।

১০৭. আমি তো তোমাকে বিশ্বজগতের প্রতি শুধু রহমত রূপেই প্রেরণ করেছি।

১০৮. বলঃ আমার প্রতি ওহী হয় যে, তোমাদের মা'বুদ একই মা'বুদ, সুতরাং তোমরা কি আত্মসমর্পণকারী হবে?

১০৯. যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে তুমি বলোঃ আমি তোমাদেরকে যথাযথভাবে জানিয়ে দিয়েছি এবং তোমাদেরকে যে বিষয়ের প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে, আমি জানি না, তা নিকটবর্তী না দূরবর্তী।

১১০. তিনি জানেন যা উচ্চস্বরে ব্যক্ত এবং যা তোমরা গোপন কর।

১১১. আমি জানি না হয়তো এটা তোমাদের জন্যে এক পরীক্ষা এবং জীবনোপভোগ কিছু কালের জন্যে।

১১২. রাসূল বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি ন্যায়ের সাথে ফায়সালা করে দিন, আমাদের প্রতিপালক তো দয়াময়, তোমরা যা বলছো সে বিষয়ে একমাত্র সহায়স্থল তিনিই।

كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعَدَّا عَلَيْنا ط
إِنَّا كُنَّا فاعِلِينَ ﴿١٠٧﴾

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٨﴾

إِنَّ فِي هَذَا لَبَلْغًا لِقَوْمٍ غابِرينَ ﴿١٠٩﴾

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١١٠﴾

قُلْ إِنَّمَا يُؤَمِّرُنِي إِلَىٰ أَمْرِ الْهَيْكُمِ إِلَهٍ وَاحِدٌ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ط وَإِنْ
أَدْرَيْتِي أَقْرَبُ أَمْرٍ بَعِيدٍ مَّا تُوْعَدُونَ ﴿١١٢﴾

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٣﴾

وَإِنْ أَدْرَيْتِي لَعَلَّه فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ
حِينٍ ﴿١١٤﴾

قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ط وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٥﴾

সূরাঃ হায্ব, মাদানী

(আয়াতঃ ৭৮, রুকূঃ ১০)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. হে মানবমণ্ডলী! তোমরা ভয়
করো তোমাদের প্রতিপালককে;
নিঃসন্দেহে কিয়ামতের প্রকম্পন এক
ভয়ানক ব্যাপার।

২. যেদিন তোমরা তা প্রত্যক্ষ করবে
সেই দিন প্রত্যেক স্তন্যদাত্রী উদাসীন
হয়ে যাবে তার দুগ্ধপোষ্য শিশু হতে
এবং প্রত্যেক গর্ভবতী তার গর্ভপাত
করে ফেলবে; মানুষকে দেখবে
মাতাল সদৃশ, যদিও তারা নেশা গ্রস্ত
নয়; বস্তুতঃ আল্লাহর শাস্তি কঠিন।

৩. মানুষের কতক অজ্ঞানতাবশতঃ
আল্লাহ সম্বন্ধে বিতন্ডা করে এবং
অনুসরণ করে প্রত্যেক বিদ্রোহী
শয়তানের।

৪. তার সম্বন্ধে এই নিয়ম করে দেয়া
হয়েছে যে, যে কেউ তার সাথে
বন্ধুত্ব করবে সে তাকে পথভ্রষ্ট করবে
এবং তাকে পরিচালিত করবে
জাহান্নামের শাস্তির দিকে।

৫. হে মানুষ! পুনরুত্থান সম্বন্ধে যদি
তোমরা সন্দেহান হও তবে
(অনুধাবন কর) আমি তোমাদেরকে
সৃষ্টি করেছি মুস্তিকা হতে, তারপর
শুক্রে হতে, তারপর রক্তপিণ্ড হতে,
তারপর পূর্ণাকৃতি বা অপূর্ণাকৃতি
মাংসপিণ্ড হতে; তোমাদের নিকট

سُورَةُ الْحَجِّ مَدْرِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٤٨ رُكُوعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ
السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ①

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ
وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَلْيٍ حَلْيَهَا وَتَرَى النَّاسَ
سُكَرَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَرَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ
شَدِيدٌ ①

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَيتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيدٍ ②

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مِنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ
وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ③

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِنَ الْبَعْثِ
فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ
مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ مُخْلَقَةٍ وَغَيْرِ
مُخْلَقَةٍ لِنَبِّئَنَّ لَكُمْ ۖ وَنَقَرْنَا فِي الْأَرْحَامِ

ব্যক্ত করবার জন্যে; আমি যা ইচ্ছা করি তা এক নির্দিষ্ট কালের জন্যে মাতৃগর্ভে স্থিত রাখি, তারপর আমি তোমাদেরকে শিশুরূপে বের করি, পরে যাতে তোমরা পরিণত বয়সে উপনীত হও; তোমাদের মধ্যে কারো কারো মৃত্যু ঘটানো হয় এবং তোমাদের মধ্যে কাউকেও প্রত্যাবৃত্ত করা হয় অকর্মণ্য বয়সে যার ফলে, তারা যা কিছু জানতো সে সম্বন্ধে তারা সজ্ঞান থাকে না। তুমি ভূমিকে দেখো শুষ্ক, অতঃপর তাতে আমি পানি বর্ষণ করলে তা শস্য-শ্যামল হয়ে আন্দোলিত ও স্ফীত হয় এবং উদগত করে সর্বপ্রকার নয়নাভিরাম উদ্ভিদ।

৬. এটা এ জন্যে যে, আল্লাহ সত্য এবং তিনিই মৃতকে জীবন দান করেন এবং তিনি সর্ববিষয়ে শক্তিমান।

৭. আর কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী, এতে কোন সন্দেহ নেই এবং কবরে যারা আছে তাদেরকে আল্লাহ নিশ্চয় পুনরুত্থিত করবেন।

مَا نَشَاءُ إِلَىٰ آجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ
طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ۗ وَمِنْكُمْ
مَّن يُّتَوَفَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّن يُّرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمُرِ
لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۗ
وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَّتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ
بَهِيجٍ ۝

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِي الْمَوْتٰى
وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

وَاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ
يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, সত্যবাদী মূর্ত প্রতীক রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের প্রত্যেকের সৃষ্টির উপাদান (শুক্ৰ) মাতৃগর্ভে চল্লিশ দিন পর্যন্ত জমাট বাঁধতে থাকে। তারপর তা অনুরূপভাবে (চল্লিশ দিনে) জমাটবদ্ধ রক্তপিণ্ডে রূপ নেয়। পুনরায় তদ্রূপ (চল্লিশ দিন) গোশতের টুকরায় পরিণত হয়। অতপর আল্লাহ্ চারটি কথার নির্দেশসহ তার কাছে ফেরেশতা পাঠান। সে তার আমল, মৃত্যু, রিযিক এবং পাপিষ্ঠ হবে না- কি নেকার, এসব লিখে দেয়। এরপর তার মধ্যে 'রুহ' ফুঁকে দেয়া হয়। (জন্মের পর) এক ব্যক্তি একজন জাহান্নামীর ন্যায় ত্রিম্বাকান্ত করতে থাকে। এমন কি তার ও জাহান্নামের মধ্যে মাত্র এক হাতের ব্যবধান রয়ে যায়। এমনি মুহূর্তে তার (নিয়তির) লিখন এগিয়ে আসে। তখন সে জান্নাতবাসীদের অনুরূপ আমল (কাজকর্ম) করে যায় এবং (পরিণতিতে) জান্নাতে প্রবেশ করে। আর এক ব্যক্তি (শুক্ৰতে) জান্নাতবাসীরই অনুরূপ আমল করে। এমনিভাবে তার ও জান্নাতের মাঝখানে মাত্র এক হাতের দূরত্ব থেকে যায়। এমনি সময় তার ওপর তার (ভাগ্যের) লিখন এগিয়ে আসে। তখন সে জাহান্নামীদের অনুরূপ কাজকর্ম শুরু করে দেয়। (ফলে) সে জাহান্নামী হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৩২)

৮. মানুষের মধ্যে কেউ কেউ আল্লাহ সম্বন্ধে বিতণ্ড করে, তাদের না আছে জ্ঞান, না আছে পথ নির্দেশ, না আছে কোন দ্বীপ্তিমান কিতাব।

৯. সে বিতণ্ডা করে ঘাড় বাঁকিয়ে, লোকদেরকে আল্লাহর পথ হতে ভ্রষ্ট করার জন্যে; তার জন্যে লাঞ্ছনা আছে ইহলোকে এবং কিয়ামতের দিবসে আমি তাকে আশ্বাদন করাবো জ্বলন্ত আগুনের শাস্তি।

১০. এটা তোমার কৃতকর্মেরই ফল, নিশ্চয়ই আল্লাহ বান্দাদের প্রতি অত্যাচার করেন না।

১১. মানুষের মধ্যে কেউ কেউ আল্লাহর ইবাদত করে দ্বিধার সাথে; তার মঙ্গল হলে তাতে প্রশান্তি লাভ করে এবং কোন বিপর্যয় ঘটলে সে তার পূর্বাঙ্ঘায় ফিরে যায়; সে ক্ষতিগ্রস্ত হয় দুনিয়াতে ও আখেরাতে; এটাই তো সুস্পষ্ট ক্ষতি।

১২. সে আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুকে ডাকে যা তার কোন অপকার করতে পারে না, উপকারও করতে পারে না, এটাই চরম বিভ্রান্তি।

১৩. সে ডাকে এমন কিছুকে যার ক্ষতিই তার উপকার অপেক্ষা নিকটতর; কত নিকৃষ্ট এই অভিভাবক এবং নিকৃষ্ট এই সহচর!

১৪. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আল্লাহ তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; আল্লাহ যা ইচ্ছা তা-ই করেন।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۝

فَأَنزِلْنَا عِطْفَهُ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ
لَهُ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنُذِيقُهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدَكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ
لِّلْعَبِيدِ ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْبُدُ اللَّهَ عَلَى حَرْفٍ ۖ فَإِنْ
أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ ۖ وَإِنْ أَصَابَتْهُ فَتْنَةٌ
إِنْقَلَبَ عَلَى وَجْهِهِ ۖ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۖ
ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝

يَدْعُوا مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا
لَا يَنْفَعُهُ ۖ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝

يَدْعُوا لِمَن ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۖ لَيْسَ
الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ۝

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ إِنَّ اللَّهَ
يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۝

১৫. যে মনে করে, আল্লাহ তাঁকে (রাসূলকে) কখনই দুনিয়া ও আখেরাতে সাহায্য করবেন না, সে আকাশ পর্যন্ত একটি রশি টেনে দিক, পরে তা বিচ্ছিন্ন করুক; অতঃপর দেখুক তার প্রচেষ্টা তার আক্রোশের হেতু দূর করে কিনা।

১৬. এভাবেই আমি সুস্পষ্ট নিদর্শনরূপে ওটা অবতীর্ণ করেছি, আর আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সৎপথ প্রদর্শন করেন।

১৭. যারা ঈমান এনেছে এবং যারা ইয়াহুদী হয়েছে, যারা সাবিয়ী, খ্রিস্টান, অগ্নিপূজক এবং যারা মুশরিক হয়েছে কিয়ামতের দিন আল্লাহ তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দিবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ প্রত্যেক জিনিসের উপর সাক্ষী।

১৮. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহকে সিজদা করে, যা কিছু আছে আকাশমণ্ডলীতে ও পৃথিবীতে, সূর্য, চন্দ্র, নক্ষত্রমণ্ডলী, পর্বতরাজী, বৃক্ষলতা, জীবজন্তু এবং সিজদা করে মানুষের মধ্যে অনেকে? আর অনেকের প্রতি অবধারিত হয়েছে শাস্তি; আল্লাহ যাকে হয় করেন তার সম্মানদাতা কেউই নেই; আল্লাহ যা ইচ্ছা তা করেন।

১৯. এরা দু'টি বিবাদমান পক্ষ। তারা তাদের প্রতিপালক সম্বন্ধে বিতর্ক করে; যারা কুফরী করে তাদের জন্য প্রস্তুত করা হয়েছে আশুনের পোশাক; তাদের মাথার উপর ঢেলে দেয়া হবে ফুটন্ত পানি।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ فليمددْ بِسَبَبِ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لِيَقْطَعْ
فليَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدَهُ مَا يَغِيظُ ⑤

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَنْ يُرِيدُ ⑥

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ
وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ
يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑭

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ وَالشَّجَرُ وَالْحِجَابُ وَالْقُرُورُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ
وَالشَّجَرُ وَالذَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۗ وَكَثِيرٌ
حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ مُكْرِمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ⑮

هَذَانِ خَصِمِينَ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۚ فَالَّذِينَ
كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ تَارٍ طَيَّبَتْ
مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَبِيمَ ⑯

২০. যা দ্বারা, তাদের উদরে যা আছে তা এবং তাদের চর্ম বিগলিত করা হবে।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ۝

২১. আর তাদের জন্যে থাকবে লৌহ হাতুড়িসমূহ।

وَلَهُمْ مَقَامِعٌ مِنْ حَدِيدٍ ۝

২২. যখনই তারা যন্ত্রণা কাতর হয়ে জাহান্নাম হতে বের হতে চাইবে তখনই তাদেরকে ফিরিয়ে দেয়া হবে; তাদের বলা হবেঃ আশ্বাদন কর দহন-যন্ত্রণা।

كَلِمًا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

২৩. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, আল্লাহ তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেথায় তাদেরকে অলংকৃত করা হবে স্বর্ণ-কংকন ও মুজা দ্বারা এবং সেথায় তাদের পোশাক-পরিচ্ছেদ হবে রেশমের।

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝

২৪. তাদেরকে পবিত্র (তাওহীদের) বাক্যের দিকে পথ প্রদর্শিত করা হয়েছিল এবং তাদেরকে পরিচালিত করা হয়েছিল পরম প্রশংসাতাজন (আল্লাহর) পথে।

وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهُدُوا إِلَى صِرَاطِ الْحَمِيدِ ۝

২৫. যারা কুফরী করে এবং মানুষকে নিবৃত্ত করে আল্লাহর পথ হতে ও মসজিদুল হারাম হতে, যা আমি করেছি স্থানীয় ও বহিরাগত সবারই জন্যে সমান, আর যে ইচ্ছা করে সীমালঙ্ঘন করে ওতে পাপকার্যের, তাকে আমি আশ্বাদন করাবো যন্ত্রণা দায়ক শাস্তি।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۖ وَمَنْ يُدْ فِيهِ بِالْحَاكِمْ يُظْلَمِ نُدُوقَهُ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ۝

২৬. আর (স্মরণ কর,) যখন আমি ইবরাহীমের (عليه السلام) জন্যে নির্ধারণ করে দিয়েছিলাম কাবা গৃহের স্থান,

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ

(তখন বলেছিলামঃ) যে, আমার সাথে কোন শরীক স্থির করো না এবং আমার গৃহকে পবিত্র রেখো তাদের জন্যে যারা তাওয়াফ করে এবং যারা কিয়াম করে, রুকু করে ও সিজদা করে।

২৭. এবং মানুষের কাছে হজ্জের ঘোষণা করে দাও, তারা তোমার কাছে আসবে পদব্রজে ও সর্বপ্রকার ক্ষীণকায় উষ্ট্রসমূহের পিঠে, তারা আসবে দূর-দূরান্তর পথ অতিক্রম করে।

২৮. যাতে তারা তাদের কল্যাণের জন্য উপস্থিত হতে পারে এবং তিনি তাদেরকে চতুঃপদ জম্ব হতে যারিযিক হিসেবে দান করেছেন ওর উপর নির্দিষ্ট দিনগুলিতে আল্লাহর নাম উচ্চারণ করতে পারে; অতপর তোমরা ওটা হতে আহার কর এবং দুঃস্থ, অভাব গ্রস্তকে আহার করাও।

২৯. অতঃপর তারা যেন তাদের অপরিচ্ছন্নতা করে তাদের মানত পূর্ণ করে ও তাওয়াফ করে প্রাচীন গৃহের (কাবার)।

৩০. এটাই বিধান এবং কেউ আল্লাহ কর্তৃক নির্ধারিত পবিত্র অনুষ্ঠানগুলির সম্মান করলে তার প্রতিপালকের নিকট তার জন্যে এটাই উত্তম। তোমাদের জন্যে হালাল করা হয়েছে চতুঃপদ জম্ব, এগুলি ব্যতীত যা

أَنْ لَا تُشْرِكَ بِي شَيْئًا وَطَهَّرْ بَيْتِي لِلطَّائِفِينَ
وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٧﴾

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى
كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٨﴾

لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
آيَاتِهِ مَعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ
الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٩﴾

ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلِيُوفُوا نَدْوَهُمْ وَلِيَلْطَافُوا
بِالْبَيْتِ الْعَمِيقِ ﴿٣٠﴾

ذَلِكَ وَمَنْ يُعِظْمِ حُرْمَتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ
عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأَجَلْتُ لَكُمْ الْأَنْعَامَ إِلَّا
مَا يُثَلَّىٰ عَلَيْكُمْ فَأَجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি এ ঘরের (বাইতুল্লাহর) হজ্জ করল, কোন অশ্লীল কথা বলল না এবং কোন অন্যায় করল না, সে যেন নবজাতক শিশুর ন্যায় নিষ্পাপ হয়ে ফিরে আসল। (বুখারী, হাদীস নং ১৮১৯)

তোমাদেরকে পাঠ করে শুনানো হয়েছে; সুতরাং তোমরা বর্জন কর মূর্তি পূজার অপবিত্রতা এবং দূরে থাকো মিথ্যা কথা হতে।

وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۝

৩১. আল্লাহর প্রতি একনিষ্ঠ হয়ে, তাঁর কোন শরীক না করে; আর যে কেউ আল্লাহর শরীক করে সে যেন আকাশ হতে পড়লো, অতঃপর পাখি তাকে ছেঁ মেরে নিয়ে গেল, কিংবা বায়ু তাকে উড়িয়ে নিয়ে গিয়ে এক দূরবর্তী স্থানে নিষ্ক্ষেপ করলো।

حُنْفَاءً لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ط وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخَطَفَهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوَى بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيحٍ ۝

৩২. এটাই আল্লাহর বিধান এবং কেউ আল্লাহর নিদর্শনাবলীকে সম্মান করলে এটাতো তার হৃদয়ের তাকওয়ারই বহিঃপ্রকাশ।

ذَلِكَ ۖ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۝

৩৩. এসবগুলোতে তোমাদের জন্যে নানাবিধ উপকার রয়েছে। এক নির্দিষ্ট কালের জন্যে; অতঃপর গুলির কুরবানীর স্থান প্রাচীন গৃহের (কাবার) নিকট।

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعٌ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝

৩৪. আমি প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্যে কুরবানীর নিয়ম করে দিয়েছি যাতে আমি তাদেরকে রুখী স্বরূপে যে সব চতুষ্পদ জন্তু দিয়েছি সেগুলির উপর আল্লাহর নাম উচ্চারণ করে; তোমাদের মা'বুদ এক মা'বুদ। সুতরাং তাঁরই নিকট আত্মসমর্পণ কর এবং সুসংবাদ দাও বিনীতজনকে।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقْنَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ قَالَهُمْ إِلَهُهُ وَإِحْدٌ فَلَآ أَسْلِمُوا ط وَبَشِيرِ الْمُخْبِتِينَ ۝

৩৫. যাদের হৃদয়ে ভয়-কম্পিত হয় আল্লাহর নাম স্মরণ করা হলে, যারা তাদের বিপদ-আপদে ধৈর্যধারণ করে এবং নামায কায়েম করে ও আমি তাদেরকে যে রিযিক দিয়েছি তা হতে ব্যয় করে।

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّادِقِينَ عَلَىٰ مَا آصَابَهُمْ وَالنَّقِيْبِيْنَ الصَّلٰوةَ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنَهُمْ يُنْفِقُونَ ۝

৩৬. এবং (কুরবানীর) উটকে করেছি আল্লাহর নিদর্শনগুলির অন্যতম; তোমাদের জন্যে তাতে মজল রয়েছে; সুতরাং সারিবদ্ধভাবে দণ্ডায়মান অবস্থায় গুলির উপর (জবাই করার সময়) তোমরা আল্লাহর নাম নাও; যখন ওরা কাত হয়ে পড়ে যায় তখন তোমরা তা হতে আহাির কর এবং আহাির করাও ধৈর্যশীল (সহকারী) অভাবহস্তকে ও ভিক্ষাকারী অভাবহস্তকে; এইভাবে আমি ওদেরকে তোমাদের অধীন করে দিয়েছি যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

৩৭. আল্লাহর কাছে পৌছে না গুলির গোশত এবং রক্ত বরং তাঁর কাছে পৌছে তোমাদের তাকওয়া; এভাবে তিনি এগুলিকে তোমাদের অধীন করে দিয়েছেন যাতে তোমরা আল্লাহর শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা কর এই জন্যে যে, তিনি তোমাদেরকে পথ প্রদর্শন করেছেন; সুতরাং তুমি সুসংবাদ দাও সৎকর্মশীলদেরকে।

৩৮. নিশ্চয়ই আল্লাহ মু'মিনদের পক্ষ হতে প্রতিহত করেন (তাদের দুশমন হতে)। তিনি কোন বিশ্বাসঘাতক, অকৃতজ্ঞকে পছন্দ করেন না।

৩৯. (যুদ্ধের) অনুমতি দেয়া হলো তাদেরকে যারা আক্রান্ত হয়েছে; কারণ, তাদের প্রতি অত্যাচার করা হয়েছে; আল্লাহ নিশ্চয় তাদেরকে সাহায্য করতে সম্যক সক্ষম।

৪০. তাদেরকে তাদের ঘরবাড়ী হতে অন্যায়ভাবে বহিস্কৃত করা হয়েছে শুধু

وَالْبُدَانَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۗ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۗ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِعُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرِطَ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾

كُنْ يَنَالُ اللَّهُ لِحُومِهَا وَلَادِمَآؤِهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ ۗ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٧﴾

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾

إِذْ لِلَّذِينَ يُقَاتِلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا

এ কারণে যে, তারা বলেঃ আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ; আল্লাহ যদি মানব জাতির এক দলকে অন্য দল দ্বারা প্রতিহত না করতেন, তা হলে বিধবস্ত হয়ে যেতো খ্রিস্টান-সংসার বিরাগীদের উপাসনা স্থান, গীর্জা, ইয়াহুদীদের উপাসনালয় এবং মসজিদসমূহ যাতে অধিক স্মরণ করা হয় আল্লাহর নাম; আল্লাহ নিশ্চয়ই তাকে সাহায্য করেন যে তাঁকে সাহায্য করে; আল্লাহ নিশ্চয়ই শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

أَنْ يَقُولُوا رَبَّنَا اللَّهُ ط وَكَوَلَدَفَعِ اللَّهُ النَّاسَ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدَمَتِ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ
وَصَلَوَاتٌ وَمَسْجِدٌ يُذَكِّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ
كَثِيرًا ط وَكَيْنُصْرَانَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ط
إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿۳۱﴾

৪১. আমি তাদেরকে পৃথিবীতে প্রতিষ্ঠা দান করলে তারা নামায কয়েম করবে, যাকাত দিবে এবং সংকাজের আদেশ করবে ও অসৎকার্য হতে নিষেধ করবে; সকল কর্মের পরিণাম আল্লাহর ইখতিয়ারে।

الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوُا
عَنِ الْمُنْكَرِ ط وَاللَّهُ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿۳۱﴾

৪২. এবং লোক যদি তোমাকে অস্বীকার করে (এতে আশ্চর্যের

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ

১। মালেক ইবনে হুয়াইরিশ থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে আসলাম। আমরা সবাই সমবয়স্ক, যুবক ছিলাম। আমরা বিশ দিন যাবত তাঁর কাছে ছিলাম। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অত্যন্ত সদয় ব্যক্তি ছিলেন। যখন তিনি অনুমান করতে পারলেন, আমরা স্ত্রী-পরিজনের আকাজকা করছি এবং তাদের থেকে বিচ্ছিন্ন থাকতে আমরা মানসিকভাবে কষ্টবোধ করছি; তিনি জিজ্ঞেস করলেন, আমরা বাড়িতে কাদের রেখে এসেছি। আমরা তাকে অবহিত করলাম। তিনি বললেন, তোমরা স্ত্রী-পরিজনের কাছে ফিরে যাও, তাদের সাথে বসবাস করো, তাদেরকে ঘিনের জ্ঞান দান করো এবং ভাল কাজের নির্দেশ দাও। বর্ণনাকারী বলেন, তিনি আরো কিছু বিষয়ে বলছিলেন; কিন্তু আমি তার কিছু মনে রেখেছি আর কিছু ভুলে গেছি। মহানবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, আমাকে যেভাবে নামায পড়তে দেখছো ঠিক সেভাবেই নামায আদায় করো। যখন নামাযের সময় হয় তখন তোমাদের কেউ যেন আযান দেয় এবং অপেক্ষাকৃত বয়স্ক ব্যক্তি যেন তোমাদের ইমামতি করে। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৪৬)

❦ সালেম বিন আব্দুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) তার পিতা থেকে বর্ণনা করেছেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) নামায শুরু করার সময় কাঁধ বরাবর দু'হাত উঠাতেন। রুকু জন্ম তাকবীর বলার সময় এবং রুকু থেকে মাথা উঠানোর সময় অনুরূপভাবেই দু'হাত উঠাতেন এবং সামিয়াল্লাহু লিমান হামিদিহ ও রাব্বানা লাকাল্ হাম্দ বলতেন; কিন্তু সিজদার সময় তিনি অনুরূপ (হাত উঠানোর কাজ) করতেন না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৫)

কিছুই নেই) তাদের পূর্বে তো নূহের (ﷺ) কওম, আ'দ এবং সামূদও অস্বীকার করেছিল।

৪৩. এবং ইবরাহীম (ﷺ) ও লূতের (ﷺ) কওম।

৪৪. এবং মাদইয়ানবাসীরাও (তাদের নবীদেরকে অস্বীকার করেছিল;) এবং অস্বীকার করা হয়েছিল মূসাকেও (ﷺ); আমি কাফিরদেরকে অবকাশ দিয়েছিলাম ও পরে তাদেরকে শাস্তি দিয়েছিলাম, অতঃপর কেমন ছিল আমার শাস্তি!

৪৫. আমি ধ্বংস করেছি কত জনপদ যেগুলির বাসিন্দা ছিল যালিম, এসব জনপদ তাদের ঘরের ছাদসহ ধ্বংসস্বপ্নে পরিণত হয়েছিল এবং কত কুপ পরিত্যক্ত হয়েছিল ও কত সুদৃঢ় প্রাসাদও।

৪৬. তারা কি দেশ ভ্রমণ করে নাই? তা হলে তারা জ্ঞান বুদ্ধি সম্পন্ন হৃদয় ও শ্রুতি শক্তি সম্পন্ন কর্ণের অধিকারী হতে পারতো। বস্তুতঃ চক্ষু তো অন্ধ নয়; বরং অন্ধ হচ্ছে বক্ষস্থিত হৃদয়।

৪৭. শাস্তির ব্যাপারে তাড়াতাড়ি করতে বলে, অথচ আল্লাহ তাঁর প্রতিশ্রুতি কখনো ভঙ্গ করেন না, তোমার প্রতিপালকের একদিন তোমাদের গণনার সহস্র বছরের সমান।

৪৮. এবং আমি অবকাশ দিয়েছি কত জনপদকে যখন তারা ছিল অত্যাচারী; অতঃপর তাদেরকে শাস্তি

قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودٍ ﴿٤٣﴾

وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمِ لُوطٍ ﴿٤٤﴾

وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ ۚ وَكَذَّبَ مُوسَىٰ فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

فَكَأَيُّنَ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فِيهَا خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا ۚ وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ﴿٤٦﴾

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا لَا تَعْيَى الْأَبْصَارُ وَلَكِن تَعْيَى الْقُلُوبَ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٤٧﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۗ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٨﴾

وَكَأَيُّنَ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ

দিয়েছি এবং প্রত্যাবর্তন আমারই নিকট।

৪৯. বলঃ হে মানুষ! আমি তো তোমাদের জন্য এক স্পষ্ট সতর্ককারী।

৫০. সুতরাং যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে আছে ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা।

৫১. আর যারা আমার আয়াতকে ব্যর্থ করার চেষ্টা করে তারাই হবে জাহান্নামের অধিবাসী।

৫২. আমি তোমার পূর্বে যে সব রাসূল কিংবা নবী প্রেরণ করেছি তাদের কেউ যখনই আকাঙ্খা করেছেন, তখনই শয়তান তার আকাঙ্খায় কিছু প্রক্ষিপ্ত করে আল্লাহ তা বিদূরিত করেন; অতঃপর আল্লাহ তার আয়াতসমূহকে আরো মজবূত করেন এবং আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

৫৩. এটা এ জন্যে যে, শয়তান যা প্রক্ষিপ্ত করে তিনি ওকে পরীক্ষা স্বরূপ করেন তাদের জন্যে যাদের অন্তরে ব্যাধি রয়েছে, যাদের পাষণ হৃদয়; অত্যাচারীরা দুস্তর মতভেদে রয়েছে।

৫৪. এবং এ জন্যেও যে, যাদের জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা যেন জানতে পারে যে, এটা তোমার প্রতি-পালকের নিকট হতে প্রেরিত সত্য; অতঃপর তারা যেন বিশ্বাস স্থাপন করে এবং তাদের অন্তর যেন ওর প্রতি অনুগত হয়; যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে আল্লাহ সরল পথে পরিচালিত করেন।

ثُمَّ اخَذْنَاهَا وَالِىَّ الْبَصِيرُ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ ۖ فَيَلْسَنُ اللَّهُ مَا يُلْقَى الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

لِيَجْعَلَ مَا يُلْقَى الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

৫৫. যারা কুফরী করেছে তারা ওতে সন্দেহ পোষণ করা হতে বিরত হবে না, শেষ পর্যন্ত তাদের নিকট কিয়ামত এসে পড়বে আকস্মিকভাবে, অথবা এসে পড়বে এক বক্ষ্যা দিনের শাস্তি।

৫৬. সে দিন আল্লাহরই আধিপত্য; তিনিই তাদের বিচার করবেন; যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তারা অবস্থান করবে সুখময় জান্নাতে।

৫৭. আর যারা কুফরী করে ও আমার আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে তাদেরই জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাজনক শাস্তি।

৫৮. আর যারা হিজরত করেছে আল্লাহর পথে অতঃপর নিহত হয়েছে অথবা মৃত্যুবরণ করেছে তাদেরকে আল্লাহ অবশ্যই উৎকৃষ্ট জীবিকা দান করবেন এবং আল্লাহ তিনিই তো সর্বোৎকৃষ্ট রিযিকদাতা।

৫৯. তিনি তাদেরকে অবশ্যই এমন স্থানে দাখিল করবেন যা তারা পছন্দ করবে এবং আল্লাহ তো সম্যক প্রজ্ঞাময়, পরম সহনশীল।

৬০. এটাই হয়ে থাকে, কোন ব্যক্তি নিপীড়িত হয়ে নিপীড়ন পরিমাণ প্রতিশোধ গ্রহণ করলে ও পুনরায় সে অত্যাচারিত হলে আল্লাহ অবশ্যই তাকে সাহায্য করবেন; আল্লাহ নিশ্চয় পাপমোচনকারী, ক্ষমাশীল।

৬১. ওটা এজন্যে যে, আল্লাহ রাত্রিকে প্রবিষ্ট করেন দিবসের মধ্যে এবং দিবসকে প্রবিষ্ট করেন রাত্রির

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمَ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾

أَلَيْسَ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قَاتَلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ﴿٥٨﴾

لِيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ عَفُورٌ ﴿٦٠﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ

মধ্যে এবং আল্লাহ সর্বশ্রোতা সম্যক দ্রষ্টা।

৬২. এজন্যেও যে, আল্লাহ, তিনিই সত্য এবং তার তাঁর পরিবর্তে যাকে ডাকে ওটা তো অসত্য এবং আল্লাহ, তিনিই তো সমুচ্চ, মহান।

৬৩. তুমি কি লক্ষ্য করনি যে, আল্লাহ বারি বর্ষণ করেন আকাশ হতে, যাতে পৃথিবী সবুজ-শ্যামল হয়ে ওঠে? আল্লাহ সম্যক সূক্ষ্মদর্শী, পরিজ্ঞাত।

৬৪. আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা তাঁরই এবং আল্লাহ তিনিই তো অভাবমুক্ত, সর্ব-প্রশংসনীয়।

৬৫. তুমি কি লক্ষ্য করনি যে, আল্লাহ তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন পৃথিবীতে যা কিছু আছে তৎসমুদয়কে এবং তাঁর নির্দেশে সমুদ্রে বিচরণশীল নৌযানসমূহকে এবং তিনিই আকাশকে স্থির রাখেন যাতে ওটা পতিত না হয় পৃথিবীর উপর তাঁর অনুমতি ছাড়া? আল্লাহ নিশ্চয়ই মানুষের প্রতি স্নেহশীল, পরম দয়ালু।

৬৬. এবং তিনি তো তোমাদেরকে জীবন দান করেছেন; অতঃপর তিনিই তো তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন, পুনরায় তোমাদেরকে জীবন দান করবেন; মানুষ তো অতিমাত্রায় অকৃতজ্ঞ।

৬৭. আমি প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্যে নির্ধারিত করে দিয়েছি ইবাদত পদ্ধতি যা তারা অনুসরণ করে; সুতরাং তারা যেন তোমার সাথে

التَّهَارِ فِي الْيَلِّ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿١٢﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَالْغَنِيِّ الْهِمِيدُ ﴿١٤﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَ يُسَبِّحُ السَّمَاءِ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٥﴾

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ذُتْمَ يُؤَيِّنُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ﴿١٦﴾

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ

বিতর্ক না করে এই ব্যাপারে। তুমি তাদেরকে তোমার প্রতিপালকের দিকে আহ্বান কর, তুমি তো সরল পথেই প্রতিষ্ঠিত।

৬৮. তারা যদি তোমার সাথে বাক-বিতণ্ডা করে তবে বলোঃ তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে আল্লাহ সম্যক অবহিত।

৬৯. তোমরা যে বিষয়ে মতভেদ করছো আল্লাহ কিয়ামতের দিন সে বিষয়ে তোমাদের মধ্যে বিচার মীমাংসা করে দিবেন।

৭০. তুমি কি জানোনা যে, আকাশ ও পৃথিবীতে যা কিছু রয়েছে আল্লাহ তা অবগত আছেন? এ সবই লিপিবদ্ধ আছে এক কিতাবে, অবশ্যই এটা আল্লাহর নিকট সহজ।

৭১. এবং তারা ইবাদত করে আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুর যার সম্পর্কে তিনি কোন দলীল প্রেরণ করেন নাই এবং যার সম্বন্ধে তাদের কোন জ্ঞান নেই; বস্তুতঃ যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

৭২. এবং তাদের নিকট আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হলে তুমি কাফিরদের মুখমণ্ডলে অসন্তোষের লক্ষণ দেখবে; যারা তাদের নিকট আমার আয়াত আবৃত্তি করে তাদেরকে তারা আক্রমণ করতে উদ্যত হয়; তুমি বলঃ তবে কি আমি তোমাদেরকে এটা অপেক্ষা মন্দ কিছুর সংবাদ দিবো? এটা আশুনা; এ বিষয়ে আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন

إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٨﴾

وَإِنْ جَدَلْتُمْ مَعَ اللَّهِ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٧٠﴾

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ ۗ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧١﴾

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانًا ۚ وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَّاصِرٍ ﴿٧٢﴾

وَإِذَا تَشَلَّىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۚ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتَلَوْنَ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا ۚ قُلْ أَفَأَنْتُمْ كُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذِكْمِ طَائِفَاتٍ وَعَدَّهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَبِئْسَ الْبَصِيرُ ﴿٧٣﴾

কাফিরদেরকে এবং এটা কত নিকট
প্রত্যাবর্তন স্থল!

৭৩. হে লোক সকল! একটি উপমা
দেয়া হচ্ছে, মনোযোগ সহকারে তা
শ্রবণ কর; তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে
যাদেরকে ডাকো তারা তো কখনো
একটি মাছিও সৃষ্টি করতে পারবে না,
এই উদ্দেশ্যে তারা সবাই একত্রিত
হলেও; এবং মাছি যদি সব কিছু
ছিনিয়ে নিয়ে যায় তাদের নিকট
হতে, এটাও তারা ওর নিকট হতে
উদ্ধার করতে পারবে না; পূজারী ও
দেবতা কতই না দুর্বল!

৭৪. তারা আল্লাহর যথোচিত মর্যাদা
উপলব্ধি করে না; আল্লাহ নিশ্চয়ই
ক্ষমতাবান, পরাক্রমশালী।

৭৫. আল্লাহ ফেরেশতাদের মধ্য হতে
মনোনীত করেন বাণীবাহক এবং
মানুষের মধ্য হতেও; আল্লাহ
সর্বশ্রোতা, সম্যক দ্রষ্টা।

৭৬. তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে যা
কিছু আছে তিনি তা জানেন এবং
সমস্ত বিষয় আল্লাহর নিকট
প্রত্যাবর্তিত হবে।

৭৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা রুকু'
কর, সিজদা কর এবং তোমাদের
প্রতিপালকের ইবাদত কর ও সংকর্ম
কর যাতে সফলকাম হতে পার।

৭৮. এবং জিহাদ কর আল্লাহর পথে
যেভাবে জিহাদ করা উচিত; তিনি
তোমাদেরকে মনোনীত করেছেন।
তিনি দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاستَمِعُوا لَهُ ط إِنَّ
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا
ذُبَابًا وَلَا يَتَّعَمُّوهُ ط وَإِنْ يَسْلُبْهُمْ
الدُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ط
ضَعْفَ الطَّالِبِ وَالْبَطُولُ ۝

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ط إِنَّ اللَّهَ
لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ط
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ط
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا
رَبَّكُمْ وَأَفْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ط هُوَ اجْتَبَاكُمْ
وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ط

উপর কোন কঠোরতা^১ আরোপ করেন নাই; এটা তোমাদের পিতা ইবরাহীমের (عليه السلام) মিল্লাত; তিনি পূর্বে তোমাদের নামকরণ করেছেন মুসলিম এবং এই কিতাবেও; যাতে রাসূল (ﷺ) তোমাদের জন্যে সাক্ষী স্বরূপ হন এবং তোমরা সাক্ষী স্বরূপ হও মানব জাতির জন্যে; সুতরাং তোমরা নামায কায়েম কর, যাকাত দাও এবং আল্লাহকে অবলম্বন কর; তিনিই তোমাদের অভিভাবক, কত উত্তম অভিভাবক এবং কত উত্তম সাহায্যকারী তিনি!

مَلَّةَ آبَائِكُمْ إِبْرَاهِيمَ طَهُوسًا كَمَا هُوَ سَمُّكُمُ الْمُسْلِمِينَ ۗ
 مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا
 عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا
 الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ طَهُو
 مَوْلِكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাদ্দাআল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহু (সাদ্দাআল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিঃসন্দেহে ইসলামী জীবন বিধান সহজ, কে কেউ মীনের কাজে বেশি কড়াকড়ি করে, তাকে মীন পরাজিত করে দেয়। কাজেই তোমরা মধ্যম পথ অবলম্বন কর এবং উত্তম কাজের কাছাকাছি হও, রহমতের আশা রাখো। আর সকাল, বিকালে ও রাতের কিছু অংশে (ইবাদতের মাধ্যমে) সাহায্য চাও। (বুখারী, হাদীস নং ৩৯)

সূরাঃ মু'মিনুন, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১৮, রুক্বঃ ৬)

দয়াময় পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. অবশ্যই সফলকাম হয়েছে
মু'মিনগণ।

২. যারা বিনয়-নম্র নিজেদের
নামাযে।

৩. যারা অসার ক্রিয়া-কলাপ হতে
বিরত থাকে।

৪. যারা যাকাত দানে সক্রিয়।

৫. যারা নিজেদের যৌন অঙ্গকে
সংযত রাখে।

৬. নিজেদের পত্নী অথবা
অধিকারভুক্ত দাসীগণ ব্যতীত, এতে
তারা নিন্দনীয় হবে না।

৭. সুতরাং কেউ এদেরকে ছাড়া
অন্যকে কামনা করলে তারা হবে
সীমালঙ্ঘনকারী।

৮. এবং যারা আমানত ও প্রতিশ্রুতি
রক্ষা করে।

৯. আর যারা নিজেদের নামাযে
যত্নবান থাকে।

১০. তারাই হবে উত্তরাধিকারী।

১১. উত্তরাধিকারী হবে ফিরদাউসের,
যাতে তারা স্থায়ী হবে।

১২. আমি তো মানুষকে সৃষ্টি করেছি
মৃত্তিকার মূল উপাদান হতে।

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١١٨ رُكُوعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ①

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خُشِعُونَ ②

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ③

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ④

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ⑤

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ⑥

فَمَنْ ابْتغىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ⑦

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ⑧

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ⑨

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ⑩

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑪

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ طِينٍ ⑫

১৩. অতঃপর আমি ওকে শুক্রবিন্দু রূপে স্থাপন করি এক নিরাপদ আঁধারে।

১৪. পরে আমি শুক্রবিন্দুকে পরিণত করি রক্তপিণ্ডে, অতঃপর রক্তপিণ্ডকে পরিণত করি গোশতপিণ্ডে এবং গোশতপিণ্ডকে পরিণত করি হাড়সমূহে; অতঃপর হাড়সমূহকে ঢেকে দিই গোশত দ্বারা; অবশেষে ওকে গড়ে তুলি অন্য এক সৃষ্টিরূপে; অতএব সর্বোত্তম স্রষ্টা আল্লাহ কত মহান!

১৫. এরপর তোমরা অবশ্যই মৃত্যুবরণ করবে।

১৬. অতঃপর কিয়ামতের দিন তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে।

১৭. আমি তো তোমাদের উর্ধ্বে সৃষ্টি করেছি সগু স্তর আকাশ এবং আমি সৃষ্টি বিষয়ে অসতর্ক নই।

১৮. এবং আমি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করি পরিমিতভাবে, অতঃপর আমি তা মাটিতে সংরক্ষিত করি; আমি ওকে অপসারিত করতেও সক্ষম।

১৯. অতঃপর আমি ওটা দ্বারা তোমাদের জন্যে খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান সৃষ্টি করি; এতে তোমাদের জন্যে আছে প্রচুর ফল; আর তা হতে তোমরা আহার করে থাক।

২০. এবং সৃষ্টি করি এক বৃক্ষ যা জন্যে সিনাই পর্বতে, এতে উৎপন্ন হয় ভোজনকারীদের জন্যে যাইতুন তৈল ও রুচিকর তরকারী।

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَا الْإِظْمَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ﴿١٤﴾
فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿١٥﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَنَيِّتُونَ ﴿١٦﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَتُبْعُونَ ﴿١٧﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ ﴿١٨﴾ وَمَا كُنَّا عَنِ الْغَالِبِينَ غُفْلِينَ ﴿١٩﴾

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَبَتْ فِي الْأَرْضِ ﴿٢٠﴾ وَإِنَّا عَلَى ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿٢١﴾

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ ﴿٢٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٣﴾

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدَّهْنِ وَصَيْغٍ لِلْكَالِبِينَ ﴿٢٤﴾

২১. আর তোমাদের জন্যে অবশ্যই শিক্ষণীয় বিষয় আছে চতুর্পদ জন্তর মধ্যে; তোমাদেরকে আমি পান করাই ওগুলোর উদরে যা আছে তা হতে এবং তাতে তোমাদের জন্যে রয়েছে প্রচুর উপকারিতা; তোমরা তা হতে ভক্ষণ করে থাক।

وَلَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةٌ لِّسُقْيِكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا
وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾

২২. এবং তোমরা তাতে ও নৌযানে আরোহণও করে থাক।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

২৩. আমি নূহ (عليه السلام)-কে পাঠিয়েছিলাম তার সম্প্রদায়ের নিকট, তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের অন্য কোন সত্য মা'বুদ নেই, তবুও কি তোমরা সাবধান হবে না?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. তার সম্প্রদায়ের প্রধানগণ, যারা কুফরী করেছিল, তারা বললোঃ এতো তোমাদের মত একজন মানুষ, তোমাদের উপর শ্রেষ্ঠত্ব লাভ করতে চাচ্ছে, আল্লাহ ইচ্ছা করলে ফেরেশতাই পাঠাতেন; আমাদের পূর্বপুরুষদের কালে এরূপ ঘটেছে, এ কথা আমরা তো শুনিনি।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا
إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مَّا سَعْنَا بِهَذَا
فِي آبَائِنَا الْأُولَىٰ ﴿٢٤﴾

২৫. সে তো এমন লোক যাকে উন্মত্ততা পেয়ে বসেছে; সুতরাং এর সম্পর্কে তোমরা কিছুকাল অপেক্ষা কর।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَاذْبَعُوا بِه
حَتَّىٰ جِئِينَ ﴿٢٥﴾

২৬. (নূহ (عليه السلام)) বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে সাহায্য করুন, কারণ তারা আমাকে মিথ্যাবাদী বলছে।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾

২৭. অতঃপর আমি তার কাছে ওহী নাযিল করলামঃ তুমি আমার চোখের

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا

সামনে ও আমার ওহী অনুযায়ী নৌযান নির্মাণ কর, অতঃপর যখন আমার আদেশ আসবে ও উনন উখলিয়ে উঠবে তখন উঠিয়ে নিয়ো প্রত্যেক জীবের এক এক জোড়া এবং তোমার পরিবার-পরিজনকে, তাদের মধ্যে যাদের বিরুদ্ধ পূর্বে সিদ্ধান্ত হয়েছে তাদের সম্পর্কে তুমি আমাকে কিছু বলো না, আর যারা যুলুম করেছে তাদের ব্যাপারে। তারা তো নিমজ্জিত হবে।

২৮. যখন তুমি ও তোমার সঙ্গীরা নৌযানে আরোহণ করবে তখন বলোঃ “আলহামদু লিল্লাহ” সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই যিনি আমাদেরকে উদ্ধার করেছেন যালিম সম্প্রদায় হতে।

২৯. আরো বলোঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে এমনভাবে অবতরণ করিয়ে নিন যা হবে কল্যাণকর; আর আপনিই শ্রেষ্ঠ অবতরণকারী।

৩০. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; আমি তো তাদেরকে পরীক্ষা করেছিলাম।

৩১. অতঃপর তাদের পর আমি অন্য এক সম্প্রদায় সৃষ্টি করেছিলাম।

৩২. এরপর তাদেরই একজনকে তাদের নিকট রাসূল করে পাঠিয়েছিলাম; তিনি বলেছিলেনঃ তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের অন্য কোন সত্য মা'বুদ নেই, তবুও কি তোমরা সাবধান হবে না?

وَوَحِينَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ ۖ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۗ وَلَا تَخَافِ فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ إِنَّهُمْ مُعْرَقُونَ ﴿۲۸﴾

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿۲۹﴾

وَقُلْ رَبِّ انزِلْنِي مُنزلاً مبوراً وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿۳۰﴾

إِنِّي فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿۳১﴾

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَوْمًا آخَرِينَ ﴿۳২﴾

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿۳৩﴾

৩৩. তার সম্প্রদায়ের প্রধানগণ, যারা কুফরী করেছিল ও আখিরাতের সাক্ষাৎকে অস্বীকার করেছিল এবং যাদেরকে আমি দিয়েছিলাম পার্শ্ববর্তী জীবনে প্রচুর ভোগ-সম্ভার, তারা বলেছিলঃ এতো তোমাদের মত একজন মানুষ; তোমরা যা আহার কর সে তো তা-ই আহার করে এবং তোমরা যা পান কর সেও তাই পান করে।

৩৪. যদি তোমরা তোমাদেরই মত একজন মানুষের আনুগত্য কর তবে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

৩৫. সে কি তোমাদেরকে এই প্রতিশ্রুতিই দেয় যে, তোমাদের মৃত্যু হলে এবং তোমরা মৃত্তিকা ও হাড়িতে পরিণত হলেও তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে?

৩৬. অসম্ভব, তোমাদেরকে যে বিষয়ে প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে তা অসম্ভব।

৩৭. একমাত্র পার্শ্ববর্তী জীবনই আমাদের জীবন, আমরা মরি ও বাঁচি এখানেই এবং আমরা পুনরুত্থিত হবো না?

৩৮. সে তো এমন ব্যক্তি যে আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করেছে এবং আমরা তাকে বিশ্বাস করবার নই।

৩৯. সে বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে সাহায্য করুন; কারণ, তারা আমাকে মিথ্যাবাদী বলে।

৪০. (আল্লাহ) বললেনঃ অচিরেই তারা অনুতপ্ত হবে।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا
بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
مَا هَذَا إِلَّا بَشْرٌ مِثْلُكُمْ لَا كُلُّ مَنَّا تَأْكُلُونَ
مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾

وَلَيْنِ اطَّعْتُمْ بَشْرًا مِثْلَكُمْ لَأَنتُمْ إِذَا الْخُسْرَاءُ ﴿٣٤﴾

أَيَعِدْكُمْ أَنكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا
أَنتُمْ مُخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾

هِيَ هَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمُبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ
لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٣٩﴾

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ﴿٤٠﴾

৪১. অতঃপর সত্যসত্যই এক বিকট শব্দ তাদেরকে আঘাত করলো এবং আমি তাদেরকে তরঙ্গ তাড়িত আবর্জনা সদৃশ করে দিলাম; সুতরাং ধ্বংস হয়ে গেল যালিম সম্প্রদায়।

فَأَخَذَتْهُمُ الضَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَهُمْ غُثَاءً ۝
فَبَعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

৪২. অতঃপর তাদের পরে আমি বহু জাতি সৃষ্টি করেছি।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾

৪৩. কোন জাতিই তার নির্ধারিত কালের আগে যেতে পারে না, বিলম্বিতও করতে পারে না।

مَا تَسْبِقُ مِن أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾

৪৪. অতঃপর আমি ধারাবাহিকভাবে আমার রাসূলগণকে প্রেরণ করেছি; যখনই কোন জাতির নিকট তাঁর রাসূল এসেছেন, তারা তাঁকে মিথ্যাবাদী বলেছে; অতঃপর আমি তাদের একের পর এক ধ্বংস করলাম, আমি তাদেরকে কাহিনীর বিষয় করেছি; সুতরাং ধ্বংস হোক অবিশ্বাসীরা!

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَاءٍ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولَهَا
كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا لِبَعْضِهِم بَعْضًا وَجَعَلْنَهُمْ
أَحَادِيثَ ۝ فَبَعْدًا لِّلْقَوْمِ لَآ يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

৪৫. অতঃপর আমি আমার নিদর্শন ও সুস্পষ্ট প্রমাণসহ মুসা (عليه السلام) ও তার ভ্রাতা হারুন (عليه السلام) - কে পাঠালাম;

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ ۝
بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾

৪৬. ফিরআ'উন ও তার পারিষদ-বর্গের নিকট; কিন্তু তারা অহংকার করলো; তারা ছিল উদ্ধত সম্প্রদায়।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾

৪৭. তারা বললোঃ আমরা কি এমন দু'ব্যক্তিতে বিশ্বাস স্থাপন করবো? যারা আমাদেরই মত এবং তাদের সম্প্রদায় আমাদের দাসত্ব করে।

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا
لَنَا عِبْدُونَ ﴿٤٧﴾

৪৮. অতঃপর তারা তাদেরকে মিথ্যাবাদী বললো, ফলে তারা ধ্বংসপ্রাপ্ত হলো।

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْهٰلِكِينَ ﴿٤٨﴾

৪৯. আমি মুসা (ﷺ)-কে কিতাব দিয়েছিলাম যাতে তারা সৎপথ পায়।

৫০. এবং আমি মারইয়াম পুত্র ও তার মাতাকে করেছিলাম এক নিদর্শন, তাদেরকে আশ্রয় দিয়ে-ছিলাম এক নিরাপদ ও প্রস্রবণ (ঝর্ণা) বিশিষ্ট উচ্চ ভূমিতে।

৫১. হে রাসূলগণ! তোমরা পবিত্র বস্ত্র হতে আহার কর ও সৎকর্ম কর; তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে আমি অবগত।

৫২. এবং তোমাদের এই জাতি একই জাতি এবং আমিই তোমাদের প্রতিপালক; অতএব তোমরা আমাকে ভয় কর।

৫৩. কিন্তু তারা নিজেদের মধ্যে তাদের দ্বীনকে বহুভাগে বিভক্ত করেছে; প্রত্যেক দলই তাদের নিকট যা আছে তা নিয়েই আনন্দিত।

৫৪. সুতরাং কিছুকাল তাদেরকে স্বীয় বিভ্রান্তিতে থাকতে দাও।

৫৫. তারা কি মনে করে যে, আমি তাদেরকে সাহায্য করি ধন-সম্পদ ও সম্ভান-সম্ভতি দ্বারা।

৫৬. আমি তাদের জন্যে সর্বপ্রকার মঙ্গল ত্বরান্বিত করছি? বরং তারা বোঝে না।

৫৭. নিঃসন্দেহে যারা তাদের প্রতিপালকের ভয়ে সন্ত্রস্ত।

৫৮. আর যারা তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলীতে ঈমান আনে,

৫৯. আর যারা তাদের প্রতিপালকের সাথে শরীক করে না।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا طَرِيقِي بِنَاتِعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾

وَلَا هِدْيَآ أُمَّتِكُمْ أُمَّةً وَآحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾

فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ط كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾

فَذَرَهُمْ فِي عَمْرِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥٤﴾

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُسِّدُهُمْ بِهِ مِنْ مَّآلٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ط بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشِيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

৬০. আর যারা তাদের যা দান করবার তা দান করে এমতাবস্থায় তাদের অন্তর ভীত-কম্পিত। এজন্য যে তারা তাঁদের প্রতিপালকের নিকট ফিরে যাবে।

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾

৬১. তারাই দ্রুত সম্পাদন করে কল্যাণকর কাজ এবং তারা তার প্রতি অগ্রগামী হয়।

أُولَٰئِكَ يَسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾

৬২. আমি কাউকেও তার সাধ্যতীত দায়িত্ব অর্পণ করি না এবং আমার নিকট আছে এক কিতাব যা সত্য ব্যক্ত করে এবং তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

৬৩. বরং এই বিষয়ে তাদের অন্তর অজ্ঞানতায় আচ্ছন্ন, এতদ্ব্যতীত আরো (মন্দ) কাজ আছে যা তারা করে থাকে।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَمِلُونَ ﴿٦٣﴾

৬৪. আর আমি যখন তাদের ঐশ্বর্যশালী ব্যক্তিদেরকে শাস্তি দ্বারা ধৃত করি তখনই তারা আর্তনাদ করে উঠে।

حَتَّىٰ إِذَا آخَذْنَا مَتَرَفِهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْعَرُونَ ﴿٦٤﴾

৬৫. আজ আর্তনাদ করো না, তোমরা আমার সাহায্য পাবে না।

لَا تَجْعَرُوا الْيَوْمَ عِدَانِكُمْ وَمِنَّا لَا تَضُرُّوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৬. আমার আয়াত তোমাদের কাছে আবৃত্তি করা হতো; কিন্তু তোমরা পিছন ফিরে সরে পড়তে।

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُسَلِّ عَلَيْكُمْ فَذَنْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَتَكَبَّرُونَ ﴿٦٦﴾

৬৭. এর প্রতি (ঈমান না আনয়ন করে) দম্ভভরে অর্থহীন গল্প-গুজব করতে।

مُسْتَكْبِرِينَ ﴿٦٧﴾ سِرًّا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾

৬৮. তবে কি তারা এই বাণী অনুধাবণ করে না? অথবা তাদের নিকট কি এমন কিছু এসেছে যা তাদের পূর্বপুরুষদের নিকট আসেনি?

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

৬৯. অথবা তারা কি তাদের রাসূলকে চিনে না, ফলে তারা অস্বীকার করে?

৭০. অথবা তারা কি বলে যে, সে উম্মাদ? বস্তুতঃ তিনি তাদের নিকট সত্য এনেছেন এবং তাদের অধিকাংশ সত্যকে অপছন্দ করে।

৭১. সত্য যদি তাদের কামনা-বাসনার অনুগামী হতো তবে বিশৃঙ্খল হয়ে পড়তো আকাশমন্ডলী, পৃথিবী এবং ওদের মধ্যবর্তী সবকিছুই; পক্ষান্তরে আমি তাদেরকে দিয়েছি উপদেশ; কিন্তু তারা উপদেশ হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

৭২. অথবা তুমি কি তাদের কাছে কোন প্রতিদান চাও? তোমার প্রতিপালকের প্রতিদানই শ্রেষ্ঠ এবং তিনিই শ্রেষ্ঠ রিযিকদাতা।

৭৩. অবশ্যই তুমি তো তাদেরকে সরল পথে আহ্বান করছো।

৭৪. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারা তো সরল পথ হতে বিচ্যুত।

৭৫. আমি তাদের উপর দয়া করলেও এবং তাদের দুঃখ-দৈন্য দূর করলেও তারা অবাধ্যতায় বিভ্রান্তের ন্যায় ঘুরতে থাকবে।

৭৬. আমি তাদেরকে শাস্তি দ্বারা ধৃত করলাম; কিন্তু তারা তাদের প্রতিপালকের প্রতি বিনয়ী হলো না এবং কাতর প্রার্থনাও করে না।

৭৭. অবশেষে যখন আমি তাদের জন্যে কঠিন শাস্তির দ্বার খুলে দেই তখন তারা হতাশ হয়ে পড়ে।

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٩﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَآكَرَّهُم لِلْحَقِّ كِرْهُونَ ﴿٧٠﴾

وَكَلِمَاتِ الْحَقِّ أَهْوَاءَهُمْ لَقَسَدَاتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ بَلْ أَتَيْنَهُم بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧١﴾

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَجَ رَيْكَ خَيْرٌ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزْقِينَ ﴿٧٣﴾

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٤﴾

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكَيِّبُونَ ﴿٧٥﴾

وَلَوْ رَجَّبْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلَجُوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْبَهُونَ ﴿٧٦﴾

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَدَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْسُوُونَ ﴿٧٨﴾

৭৮. তিনিই তোমাদের জন্যে কর্ণ, চক্ষু ও অস্ত্রকরণ সৃষ্টি করেছেন; তোমরা অল্পই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে থাকো।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ط
قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿۷۸﴾

৭৯. তিনিই তোমাদেরকে পৃথিবীতে বিস্তৃত করেছেন এবং তোমাদেরকে তাঁরই নিকট একত্রিত করা হবে।

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿۷۹﴾

৮০. তিনিই জীবন দান করেন এবং মৃত্যু ঘটান, আর তাঁরই অধিকারে রাত্রি ও দিবসের পরিবর্তন, তবুও কি তোমরা বুঝবে না?

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ط أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿۸۰﴾

৮১. এতদসত্ত্বেও তারা বলে, যেমন বলেছিল পূর্ববর্তীগণ।

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿۸۱﴾

৮২. তারা বলেঃ আমাদের মৃত্যু ঘটলে এবং আমরা মাটি ও হাড়িতে পরিণত হলেও কি আমরা পুনরুত্থিত হবো?

قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ءَأِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿۸۲﴾

৮৩. আমাদেরকে এ বিষয়েই প্রতিশ্রুতি প্রদান করা হয়েছে এবং অতীতে আমাদের পূর্বপুরুষদেরকেও এটা কালের উপকথা ব্যতীত আর কিছুই নয়।

لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿۸۳﴾

৮৪. জিজ্ঞেস করঃ এই পৃথিবী এবং এতে যা আছে তা কার, যদি তোমরা জানো?

قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۸۴﴾

৮৫. তারা ত্বরিত বলবেঃ আল্লাহর; বলঃ তবুও কি তোমরা শিক্ষা গ্রহণ করবে না?

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ط قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿۸۵﴾

৮৬. জিজ্ঞেস করঃ কে সত্ত্বাকার ও মহা আরশের অধিপতি?

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿۸۬﴾

৮৭. তারা বলবেঃ আল্লাহ; বলঃ তবুও কি তোমরা সাবধান হবে না।

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ط قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿۸۷﴾

৮৮. জিজ্ঞেস করঃ সব কিছুর কর্তৃত্ব কার হাতে, যিনি আশ্রয় দান করেন এবং যাঁর উপর আশ্রয়দাতা নেই, যদি তোমরা জানো?

قُلْ مَنْ يَبْدَأُ مَلَكُوتَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾

৮৯. তারা বলবেঃ আল্লাহর; বলঃ তবুও তোমরা কেমন করে বিভ্রান্ত হচ্ছ?

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

৯০. বরং আমি তাদের নিকট সত্য পৌঁছিয়েছি; কিন্তু নিশ্চয়ই তারা মিথ্যাবাদী।

بَلْ آتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩٠﴾

৯১. আল্লাহ কোন সন্তান গ্রহণ করেননি এবং তাঁর সাথে অপর কোন মা'বুদ নেই; যদি থাকতো তবে প্রত্যেক মা'বুদ স্বীয় সৃষ্টি নিয়ে পৃথক হয়ে যেতো এবং একে অপরের উপর প্রাধান্য বিস্তার করতো; তারা যা বলে তা হতে আল্লাহ সম্পূর্ণ পবিত্র!

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنَ الْإِلَهِ إِذَا لَدَّهَبَ كُلُّ إِلَهٍِ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٩١﴾

৯২. তিনি দৃশ্য ও অদৃশ্যের পরিজ্ঞাতা, তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধে।

عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَعَلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾

৯৩. বলঃ হে আমার প্রতিপালক! যে বিষয়ে তাদেরকে প্রতিশ্রুতি প্রদান করা হচ্ছে, তা যদি আপনি আমাকে দেখাতেন।

قُلْ رَبِّ إِمَّا تُرِيئِي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾

৯৪. তবে, হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে যালিম সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত করবেন না।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾

৯৫. আমি তাদেরকে যে বিষয়ে প্রতিশ্রুতি প্রদান করছি আমি তা তোমাকে দেখাতে অবশ্যই সক্ষম।

وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ نُرِيكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَدِيرُونَ ﴿٩٥﴾

৯৬. মন্দের মোকাবেলা কর, যা উত্তম তা দ্বারা; তারা যা বলে আমি সে সম্বন্ধে সবিশেষ অবহিত।

إِذْ يَفْعَلُ الْبَأْسَىٰ هِيَ أَحْسَنُ السَّبِيحَةِ ط نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

৯৭. আর বলঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি আপনার আশ্রয় প্রার্থনা করি শয়তানের প্ররোচনা হতে।

৯৮. হে আমার প্রতিপালক! আমি আপনার আশ্রয় প্রার্থনা করি আমার নিকট ওদের (শয়তানদের) উপস্থিতি হতে।

৯৯. যখন তাদের কারো মৃত্যু উপস্থিত হয় তখন সে বলেঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে পুনরায় ফেরত পাঠান।

১০০. যাতে আমি সৎকর্ম করতে পারি যা আমি পূর্বে করিনি; না এটা হবার নয়; এটা তার একটা উক্তি মাত্র; তাদের সামনে বারযাখ থাকবে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত।

১০১. এবং যেদিন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে সেদিন পরস্পরের মধ্যে আত্মীয়তার বন্ধন থাকবে না, এবং একে অপরের ষোঁজ-খবর নিবে না।

১০২. সুতরাং যাদের পাল্লা ভারী হবে তারাই হবে সফলকাম।

১০৩. আর যাদের পাল্লা হালকা হবে তারাই নিজেদের ক্ষতি করেছে; তারা জাহান্নামে স্থায়ী হবে।

১০৪. অগ্নি তাদের মুখমন্ডল দক্ষ করবে এবং তারা তথ্যই থাকবে বীভৎস চেহারায়।

১০৫. তোমাদের নিকট কি আমার আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হতো না? অশ্চ তোমরা ওগুলো অস্বীকার করতে!

وَقُلْ رَبِّ اَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ﴿٩٧﴾

وَاَعُوذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُونِ ﴿٩٨﴾

حَتَّىٰ اِذَا جَاءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ﴿٩٩﴾

لَعَلِّيْ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ط وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمْ بَرَآءٌ اِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ

يَوْمَئِذٍ وَلَا يَكْسَاءُ لُوْنٌ ﴿١٠١﴾

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

تَلْفَحُ وُجُوْهُهُمْ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُونَ ﴿١٠٤﴾

اَلَمْ تَكُنْ اِلٰىٰنِيْ تُسَلِّيْ عَلٰىكُمْ فَكُنْتُمْ

بِهَا تَكْذٰبُوْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৬. তারা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! দুর্ভাগ্য আমাদেরকে পেয়ে বসেছিল এবং আমরা ছিলাম এক বিভ্রান্ত সম্প্রদায়।

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾

১০৭. হে আমাদের প্রতিপালক! এই অগ্নি হতে আমাদেরকে উদ্ধার করুন; অতঃপর আমরা যদি পুনরায় কুফরী করি তবে তো আমরা অবশ্যই সীমালঙ্ঘনকারী হবো।

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾

১০৮. (আল্লাহ) বলবেনঃ তোমরা হীন অবস্থায় এখানেই থাক এবং আমার সাথে কোন কথা বলো না।

قَالَ احْسَبُوا فِيهَا وَلَا تُكْفِرُونَ ﴿١٠٨﴾

১০৯. আমার বান্দাদের মধ্যে একদল ছিল যারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা ঈমান এনেছি, সুতরাং আপনি আমাদেরকে ক্ষমা করে দিন ও আমাদের উপর দয়া করুন, আপনি দয়ালুদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ দয়ালু।

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾

১১০. কিন্তু তাদেরকে নিয়ে তোমরা এতো ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতে যে, তা তোমাদেরকে আমার কথা ভুলিয়ে দিয়েছিল; তোমরা তো তাদেরকে নিয়ে হাসি-ঠাট্টাই করতে।

فَاتَّخَذَتْهُمْ سَخِرًا حَتَّىٰ أَنْسَوُكُمْ ذِكْرِي وَلَنْتُمْ مِنْهُمْ مُضِلُونَ ﴿١١٠﴾

১১১. আমি আজ তাদেরকে তাদের ধৈর্যের কারণে এমনভাবে পুরস্কৃত করলাম যে, তারাই হলো সফলকাম।

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا إِنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾

১১২. তিনি বলবেনঃ তোমরা পৃথিবীতে কত বছর অবস্থান করেছিলে?

قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾

১১৩. তারা বলবেঃ আমরা অবস্থান করেছিলাম একদিন অথবা একদিনের কিছু অংশ, আপনি না হয় গণনাকারীদেরকে জিজ্ঞেস করুন!

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَلِ الْعَالَمِينَ ﴿١١٣﴾

১১৪. তিনি বলবেনঃ তোমরা অল্পকালই অবস্থান করেছিলে, যদি তোমরা জানতে।

قُلْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

১১৫. তোমরা কি মনে করেছিলে যে, আমি তোমাদেরকে অনর্থক সৃষ্টি করেছি এবং তোমরা আমার নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে না?

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

১১৬. মহিমাম্বিত আল্লাহ যিনি প্রকৃত মালিক, তিনি ব্যতীত কোন সত্য মা'বুদ নেই; সম্মানিত আরশের তিনি অধিপতি।

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

১১৭. যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে ডাকে অন্য ইলাহকে, ঐ বিষয়ে তার নিকট কোন প্রমাণ নেই; তার হিসাব তার প্রতিপালকের নিকট আছে, নিশ্চয়ই কাফিররা সফলকাম হবে না।

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۗ فَأَنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

১১৮. বলঃ হে আমার প্রতিপালক! ক্ষমা করুন ও দয়া করুন, দয়ালুদের মধ্যে আপনিই দয়ালু।

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ﴿١١٨﴾

সূরাঃ নূর, মাদানী

(আয়াতঃ ৬৪, রুকু'ঃ ৯)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُورَةُ النُّورِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٦٤ رُكُوعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. (এটি) একটি সূরা, যা আমি অবতীর্ণ করেছি এবং (এর বিধানকে) অবশ্য পালনীয় করেছি, এতে আমি অবতীর্ণ করেছি সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ যাতে তোমরা উপদেশ গ্রহণ কর।

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾

২. (অবিবাহিত) ব্যভিচারিণী ও ব্যভিচারী তাদের প্রত্যেককে একশ বেত্রাঘাত করবে, আল্লাহর বিধান কার্যকরীকরণে তাদের প্রতি দয়া যেন তোমাদেরকে প্রভাবিত না করে, যদি তোমরা আল্লাহ এবং পরকালে বিশ্বাসী হও; আর মু'মিনদের একটি দল যেন তাদের শাস্তি প্রত্যক্ষ করে ৮

৩. ব্যভিচারী ব্যভিচারিণী অথবা মুশরিক নারীকে ব্যতীত বিয়ে করে না এবং ব্যভিচারিণী তাকে ব্যভিচারী অথবা মুশরিক ব্যতীত কেউ বিয়ে করে না, মু'মিনদের জন্যে এটা হারাম করা হয়েছে।

৪. যারা সতী-সাধ্বী রমনীর প্রতি অপবাদ আরোপ করে এবং চারজন সাক্ষী হাজির করে না. তাদেরকে আশিটি বেত্রাঘাত করবে এবং কখনো তাদের সাক্ষ্য গ্রহণ করবে না; তারাই তো সত্য-ত্যাগী।

৫. তবে যদি এরপর তারা তাওবা করে ও নিজেদেরকে সংশোধন করে- আল্লাহ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৬. এবং যারা নিজেদের স্ত্রীর প্রতি অপবাদ আরোপ করে অথচ নিজেরা ব্যতীত তাদের কোন সাক্ষী নেই,

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ①

الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۗ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ②

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۗ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ③

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۗ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ④

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ ⑤

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অবিবাহিত যুবক ও যুবতীর যেনা করার জন্য তাদের ওপর শাস্তি স্বরূপ এক বছরের জন্য দেশান্তর করার জন্য নির্দেশ করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৩৩)

(খ) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ আল-আনসারী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আসলাম গোত্রীয় জনৈক ব্যক্তি রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে বললো, সে যেনা করেছে, (এবং এর প্রমাণ স্বরূপ) নিজ দেহের ওপর চারবার সাক্ষ্যও প্রদান করলো। তার কথা শুনে রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) শাস্তির নির্দেশ করলেন। অতপর তাকে (রজম) পাথর মেয়ে হত্যা করা হলো। বস্তুতঃ সে ছিলো একজন বিবাহিত লোক। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮১৪)

তাদের প্রত্যেকের সাক্ষ্য এই হবে যে, সে আল্লাহর নামে চারবার শপথ করে বলবে যে, সে অবশ্যই সত্যবাদী।

إِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ①

৭. আর পঞ্চমবারে বলবে যে, সে যদি মিথ্যাবাদী হয় তবে তার উপর নেমে আসবে আল্লাহর লা'নত।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ

مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ④

৮. তবে স্ত্রীর শাস্তি রহিত হবে যদি সে চারবার আল্লাহর নামে শপথ করে সাক্ষ্য দেয় যে তার স্বামীই মিথ্যাবাদী।

وَيَدْرُوْنَ اَنَّهَا الْعَذَابُ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهَدٰتٍ

بِاللّٰهِ لَا اِنَّهُ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑤

৯. আর পঞ্চমবারে বলে যে, তার স্বামী সত্যবাদী হলে তার নিজের উপর নেমে আসবে আল্লাহর গযব।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَا اِنْ كَانَ

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥

১০. তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে তোমাদের কেউই অব্যাহতি পেতো না এবং আল্লাহ তাওবা গ্রহণকারী ও প্রজ্ঞাময়।

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَاَنَّ اللّٰهَ

تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ⑩

১১. যারা এই অপবাদ রচনা করেছে তারা তোমাদেরই একটি দল; এটাকে তোমরা (হে মু'মিনগণ) তোমাদের জন্যে অনিষ্টকর মনে করো না; বরং এটা তোমাদের জন্যে কল্যাণকর; তাদের প্রত্যেকের জন্যে আছে তাদের কৃত পাপকর্মের ফল এবং তাদের মধ্যে যে এই ব্যাপারে প্রধান ভূমিকা গ্রহণ করেছে, তার জন্যে আছে কঠিন শাস্তি।

اِنَّ الَّذِيْنَ جَاءُوْا بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ وَلَا تَحْسَبُوْهُ

شَرًّا لَّكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِيَكُلَّ اَمْرِيْ مِّنْهُمْ

مَا اَكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ وَالَّذِيْ تَوَلَّى كِبْرًا مِنْهُمْ لَهُ

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑪

১২. যখন তোমরা একথা শুনলে, তখন মু'মিন পুরুষ এবং নারীগণ কেন নিজেদের বিষয়ে সং ধারণা

لَوْ لَا اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ

بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَّ قَالُوْا هٰذَا اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ⑫

করেনি এবং বলেনিঃ এটা সুস্পষ্ট
অপবাদ ।

১৩. তারা কেন এই ব্যাপারে চারজন
সাক্ষী হাজির করেনি? যেহেতু তারা
সাক্ষী হাজির করেনি, সে কারণে
তারা আল্লাহর বিধানের মিথ্যাবাদী ।

১৪. দুনিয়াও আখিরাতে তোমাদের
প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও দয়া না
থাকলে, তোমরা যাতে লিপ্ত ছিলে
তার জন্য কঠিন শাস্তি তোমাদেরকে
স্পর্শ করতো ।

১৫. যখন তোমরা মুখে মুখে এটা
ছড়াচ্ছিলে এবং এমন বিষয় মুখে
উচ্চারণ করছিলে যার কোন জ্ঞান
তোমাদের ছিল না এবং তোমরা
একে তুচ্ছ গণ্য করেছিলে, যদিও
আল্লাহর নিকট ছিল এটা গুরুতর
বিষয় ।

১৬. এবং তোমরা যখন এটা শ্রবণ
করলে তখন কেন বললে না, এ
বিষয়ে বলাবলি করা আমাদের উচিত
নয়; আল্লাহ পবিত্র, মহান! এটা তো
এক গুরুতর অপবাদ!

১৭. আল্লাহ তোমাদেরকে উপদেশ
দিচ্ছেন, তোমরা যদি মু'মিন হও,
তবে কখনো অনুরূপ আচরণের
পুনরাবৃত্তি করবে না ।

১৮. আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাঁর
আয়াতসমূহ সুস্পষ্টভাবে বিবৃত
করেন এবং আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময় ।

لَوْلَا جَاءَ وَعَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا
بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكٰذِبُونَ ﴿١٣﴾

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
لَسَكَّمْتُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾

إِذْ تَلْقَوْنَهُ بِأَسْنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ
لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ
عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ
بِهَذَا ۗ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

يَعْظُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِلْإِثْلَابِ أَبَدًا ۚ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾

وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيٰتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾

১। আয়েশা সিদ্দীকা (রাযিআল্লাহু আনহা)-এর প্রতি ইফ্ক বা মিথ্যা দোষারোপের ঘটনা দেখুন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৫০)

১৯. যারা মু'মিনদের মধ্যে অশ্লীলতার প্রসার কামনা করে তাদের জন্যে আছে দুনিয়া ও আখিরাতে পীড়াদায়ক শাস্তি এবং আল্লাহ জানেন, তোমরা জান না।

২০. তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে তোমাদের কেউই অব্যাহতি পেতো না এবং আল্লাহ দয়ালু ও পরম দয়ালু।

২১. হে মু'মিনগণ! তোমরা শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না; কেউ শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করলে সে অশ্লীলতা ও মন্দ কাজের নির্দেশ দেবে, আল্লাহর দয়া ও অনুগ্রহ না থাকলে তোমাদের কেউই কখনো পবিত্র হতে পারতো না, তবে আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পবিত্র করে থাকেন এবং আল্লাহ সর্বশোতা, সর্বজ্ঞ।

২২. তোমাদের মধ্যে যারা ঐশ্বর্য ও প্রাচুর্যের অধিকারী তারা যেন শপথ গ্রহণ না করে যে, তারা আত্মীয়-স্বজন ও অভাবগ্রস্তদেরকে এবং আল্লাহর পথে যারা গৃহ ত্যাগ করেছে তাদেরকে কিছুই দিবে না; তারা যেন তাদেরকে ক্ষমা করে তাদের দোষ-ত্রুটি উপেক্ষা করে; তোমরা কি চাও না যে, আল্লাহ তোমাদেরকে ক্ষমা করেন? এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

২৩. যারা সাধবী, সরলমনা ও বিশ্বাসী নারীর প্রতি (যিনার) অপবাদ আরোপ করে তারা দুনিয়া ও

إِنَّ الَّذِينَ يُجِبُونَ أَنْ تَشِيحَ الْفَاحِشَةُ فِي الدِّينِ
أَمْنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ
رءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ
وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ
مَا زَكَّيْكُمْ مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ سَبِيحٌ عَزِيمٌ ﴿٢١﴾

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا
أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَلِيَعْفُوا وَلِيَصْفَحُوا إِلَّا نَجَبُونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ
لُعْنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

আখিরাতে অভিশপ্ত এবং তাদের জন্যে আছে মহাশাস্তি ।

২৪. যেদিন তাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে তাদের জবান, তাদের হাত ও তাদের পা তাদের কৃতকর্ম সন্মুখে ।

يَوْمَ نَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

২৫. সেদিন আল্লাহ তাদের প্রাপ্য প্রতিফল পুরোপুরি দিবেন এবং তারা জানবে যে, আল্লাহই সত্য, স্পষ্টকারী ।

يَوْمَ يَكْفُرُ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَانَتْ تَكْفُرُ بِآيَاتِ اللَّهِ وَلَمْ يَكُن لَهَا رَاجِعٌ إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

২৬. দুচরিত্র নারী দুচরিত্র পুরুষের জন্যে; দুচরিত্র পুরুষ দুচরিত্র নারীর জন্যে; সুচরিত্র নারী সুচরিত্র পুরুষের জন্যে এবং সুচরিত্র পুরুষ সুচরিত্র নারীর জন্যে; লোকে যা বলে এরা তা থেকে পবিত্র; এদের জন্যে আছে ক্ষমা এবং সম্মানজনক রুখী ।

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ أُولَئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾

২৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা নিজেদের গৃহ ব্যতীত অন্য কারো গৃহে গৃহবাসীদের অনুমতি না নিয়ে এবং তাদেরকে সালাম না করে প্রবেশ করো না; এটাই তোমাদের জন্যে শ্রেয়, সম্ভবত তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

২৮. যদি তোমরা গৃহে কাউকেও না পাও তাহলে তাতে প্রবেশ করবে না যতক্ষণ না তোমাদেরকে অনুমতি দেয়া হয়; যদি তোমাদেরকে বলা হয়ঃ ফিরে যাও, তবে তোমরা ফিরে যাবে, এটাই তোমাদের জন্যে উত্তম এবং তোমরা যা কর সে সন্মুখে আল্লাহ অবহিত ।

فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يَأْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكى لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾

২৯. যে গৃহে কেউ বাস করে না তাতে তোমাদের জন্যে দ্রব্যসামগ্রী

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

থাকলে সেখানে তোমাদের প্রবেশে কোনও পাপ নেই এবং আল্লাহ জানেন যা তোমরা প্রকাশ কর এবং যা তোমরা গোপন কর।

৩০. মু'মিনদেরকে বলঃ তারা যেন তাদের দৃষ্টিকে সংযত করে এবং তাদের লজ্জাস্থানের হিফায়ত করে; এটা তাদের জন্যে পবিত্রতম; তারা যা করে সে বিষয়ে আল্লাহ অবহিত।

৩১. ঈমান আনয়নকারী নারীদেরকে বলঃ তারা যেন তাদের দৃষ্টিকে সংযত করে ও তাদের লজ্জাস্থানের হিফায়ত করে; তারা যেন তার মধ্যে যা সাধারণতঃ প্রকাশ থাকে তা ব্যতীত তাদের অলংকার বা সৌন্দর্য প্রদর্শন না করে, তাদের ঘাড় ও বক্ষদেশ যেন মাথার কাপড় (ওড়না বা চাদর) দ্বারা আবৃত করে, তারা যেন তাদের স্বামী, পিতা, (পিতামহ-মাতামহ) স্বশ্বশুর, পুত্র, স্বামীর পুত্র, ভ্রাতা, ভাতুপুত্র, ভগ্নীপুত্র, আপন নারীগণ, তাদের মালিকানাধীন দাসী, পুরুষদের মধ্যে যৌন কামনা রহিত পুরুষ এবং নারীদের গোপন অঙ্গ সম্বন্ধে অঙ্গ বালক ব্যতীত কারো নিকট তাদের সৌন্দর্য প্রকাশ না করে, তারা যেন তাদের সৌন্দর্য প্রকাশের উদ্দেশ্যে সজোরে না হাটে, হে মু'মিনগণ! তোমরা সবাই আল্লাহর দিকে প্রত্যাভর্তন কর, যাতে তোমরা সফলকাম হতে পারো।

مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ط وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا تَبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٣٠﴾

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِينَ يَعْزُبُوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا
فُرُوجَهُمْ ط ذَلِكَ أَزْكى لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ
بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣١﴾

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ
وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا
مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَا يَضْرِبْنَ بِخِبْرَتِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ
وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ
أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ
أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ
أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّائِبِينَ غَيْرِ
أُولِي الْأَرْبَابَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا
عَلَى عَوْرَتِ النِّسَاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ
مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ط وَتَوْبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا
إِنَّهُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾

১। (ক) আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ প্রাথমিক যুগের মুহাজির মহিলাদের প্রতি আল্লাহ তা'আলা রহম করুন। আল্লাহ তা'আলা এ আয়াতটি নাখিল করলে এবং তারা যেন নিজেদের বক্ষদেশের উপর ওড়নার আবরণ ফেলে রাখে।" তারা (মহিলারা) তাদের বক্ষখন্ড ছিড়ে তা দিয়ে মুখমন্ডল

৩২. তোমাদের মধ্যে যারা স্বামীহীন তাদের বিবাহ সম্পাদন কর এবং তোমাদের দাস ও দাসীদের মধ্যে যারা সৎ তাদেরও; তারা অভাবগ্ৰস্ত হলে আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে অভাবমুক্ত করে দিবেন; আল্লাহ প্রাচুর্যময়, সর্বজ্ঞ।

৩৩. যাদের বিয়ের সামর্থ্য নেই, আল্লাহ তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে অভাবমুক্ত না করা পর্যন্ত তারা যেন সংযম অবলম্বন করে এবং তোমাদের মালিকানাধীন দাস-দাসীদের মধ্যে কেউ তার মুক্তির জন্যে লিখিত চুক্তি করতে চাইলে তাদের সাথে চুক্তিতে আবদ্ধ হও, যদি তোমরা তাদের মধ্যে মঙ্গলের সন্ধান পাও; আল্লাহ তোমাদেরকে যে সম্পদ দিয়েছেন তা হতে তোমরা তাদেরকে দান করবে; তোমাদের দাসীরা সততা রক্ষা করতে চাইলে পার্থিব জীবনের ধন-লালসায় তাদেরকে ব্যভিচারিনী হতে বাধ্য করো না, আর যে তাদেরকে বাধ্য করে, তবে তাদের উপর জবরদস্তির পর আল্লাহ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৩৪. আমি তোমাদের নিকট অবতীর্ণ করেছি সুস্পষ্ট আয়াত, তোমাদের পূর্ববর্তীদের দৃষ্টান্ত এবং মুত্তাকীদের জন্যে উপদেশ।

وَأَنْكُحُوا الْوَالِدَاتِ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ
وَإِمَائِكُمْ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ
مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾

وَلَيْسَ عَفِيفٌ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ
مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ
خَيْرًا وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي أَنْزَلْنَا
وَلَا تَكْرَهُوا فَتَيْبَتِكُمْ عَلَى الْبِعَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا
لِيَبْتِغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْنَهُنَّ فَإِنَّ
اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِرْهَائِهِنَّ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٣﴾

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ
خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

ঢেকে ফেলল। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৫৮)

(খ) সাফিয়া বিনতে শাইবা (রাযিআল্লাহ আনহা) থেকে বর্ণিত। আয়েশা (রাযিআল্লাহ আনহা) বলতেনঃ “এ আয়াত নাযিল হলে, “এবং তারা” যেন নিজেদের বন্ধদেশের ওপর ওড়নার আবরণ ফেলে রাখে।” মহিলারা তাদের কোমর বন্ধের কাপড়ের প্রান্তদেশ কেটে সেই টুকরা দিয়ে (ওড়না বানিয়ে) মুখমন্ডল ঢেকে রাখে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৫৯)

৩৫. আল্লাহ আকাশমন্ডলীও পৃথিবীর (আলোকিতকারী) জ্যোতি, তাঁর জ্যোতির উপমা (মু'মিনদের অন্তরে) যেন একটি দীপাধার (তাক), যার মধ্যে আছে এক প্রদীপ, প্রদীপটি একটি কাঁচের আভরণের মধ্যে স্থাপিত, কাঁচের আভরণটি উজ্জ্বল নক্ষত্র সদৃশ; এটা প্রজ্বলিত করা হয় বরকতময় যয়তুন বৃক্ষের তৈল দ্বারা যা পূর্বেরও নয়, পশ্চিমও নয়, (বরং উভয়ের মধ্যবর্তী) অগ্নি ওকে স্পর্শ না করলেও যেন ওর তৈল উজ্জ্বল আলো জ্যোতির উপর জ্যোতি! আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পথ-নির্দেশ করেন তাঁর জ্যোতির দিকে; আল্লাহ মানুষের জন্যে উপমা দিয়ে থাকেন এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্বজ্ঞ।

৩৬. সেসব গৃহে যাকে সম্মুখত করতে এবং যাতে তাঁর নাম যিকির করতে আল্লাহ নির্দেশ দিয়েছেন, তাতে সকাল ও সন্ধ্যায় তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে;

৩৭. সে সব লোক, যাদেরকে ব্যবসা-বাণিজ্য এবং ক্রয়-বিক্রয়

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط مَثَلُ نُورِهِ كَمِثْلَوْۃٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ط الْأَمِّصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ط الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبْرَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يَضِيءُ ۗ وَكُلُّ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ط نُورٌ عَلَى نُورٍ ط يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ط وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ط وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٥﴾

فِي بُيُوتٍ اذْنُ اللَّهِ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ ۗ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ﴿١٦﴾

رِجَالٌ ۗ لَا تُهَيِّمُهُمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ

১। (ক) আবু কাতাদা আস-সুলামী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের কেউ মসজিদে প্রবেশ করলে, বসার পূর্বে সে যেন দু'রাকআত নামায পড়ে নেয়। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৪)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঘরে এবং বাজারে নামায পড়ার চাইতে জামা'আতের নামাযে পঁচিশ গুণ সওয়াব বেশি। কোন এক ব্যক্তি যখন ভালরূপে ওয়ু করে মসজিদের দিকে বের হয় এবং একমাত্র নামাযের উদ্দেশ্যেই সে মসজিদে যায়, তখন তার প্রত্যেকটি পদক্ষেপের জন্য তার একটি পদমর্ষাদা বৃদ্ধি পায় এবং মাফ করে দেয়া হয় তার একটি গুনাহ। নামায পড়ে সে যতক্ষণ মুসাল্লায় অবস্থান করে ক্ষেত্রশতামন্ডলী তার জন্য ততক্ষণ এ বলে দোয়া করে- হে আল্লাহ! তাকে তোমার রহমত দান কর, তার প্রতি অনুগ্রহ কর। আর তোমাদের মধ্যে কোন ব্যক্তি যতক্ষণ নামাযের অপেক্ষায় থাকে সে ততক্ষণ নামাযের মধ্যে আছে বলে গণ্য হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭)

আল্লাহর যিকির হতে এবং নামায কায়েম ও যাকাত প্রদান হতে বিরত রাখতে পারে না, তারা ভয় করে সে দিনকে যে দিন তাদের অন্তর ও দৃষ্টি বিপর্যস্ত হয়ে পড়বে।

৩৮. যাতে তারা যে কর্ম করে তজ্জন্যে আল্লাহ তাদেরকে উত্তম পুরস্কার দেন এবং নিজ অনুগ্রহে তাদের প্রাপ্যের অধিক দেন; আল্লাহ যাকে ইচ্ছা অপরিমিত রুখী দান করেন।

৩৯. যারা কুফরী করে তাদের কর্ম মরুভূমির মরীচিকা সদৃশ, পিপাসার্ত যাকে পানি মনে করে থাকে; কিন্তু সে ওর নিকট উপস্থিত হলে দেখবে ওটা কিছু নয় এবং সে তার নিকট পাবে আল্লাহকে, অতঃপর তিনি তার কর্মফল পূর্ণ মাত্রায় দিবেন; আল্লাহ হিসাব গ্রহণে তৎপর।

৪০. অথবা গভীর সমুদ্রতলের অন্ধকার সদৃশ যাকে আচ্ছন্ন করে তরঙ্গের উপর তরঙ্গ, যার উর্ধ্বে মেঘপুঞ্জ, অন্ধকারপুঞ্জ স্তরের উপর স্তর, এমনকি সে হাত বের করলে তা আদৌ দেখতে পাবে না; আল্লাহ যাকে জ্যোতি দান করেন না তার জন্যে কোন জ্যোতি নেই।

৪১. তুমি কি দেখো না যে, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যারা আছে তারা এবং উজ্জীয়মান পাখীসমূহ আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে? প্রত্যেকেই

وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ يَخَافُونَ يَوْمًا
تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٨﴾

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّنْ
فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يُرِزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيَعَةٍ يَحْسَبُهُ
الظَّمَانُ مَاءً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا
وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فُوقَهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤٠﴾

أَوْ كظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ
مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ ۗ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ
بَعْضٍ ۖ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكِدْ يَرِيهَا ۗ وَمَنْ
لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّورٍ ۙ ﴿٤١﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالطَّيْرُ طَمَّاتٌ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٢﴾

জানে তার প্রার্থনা ও মহিমা ঘোষণার পদ্ধতি এবং তারা যা করে সে বিষয়ে আল্লাহ অবগত।

৪২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সার্বভৌমত্ব আল্লাহরই এবং তাঁরই দিকে প্রত্যাভর্তন।

৪৩. তুমি কি দেখো না, আল্লাহ সঞ্চালিত করেন মেঘমালাকে, তৎপর তাদেরকে একত্রিত করেন এবং পরে পুঞ্জীভূত করেন, অতঃপর তুমি দেখতে পাও, ওর মধ্য হতে নির্গত হয় পানিধারা; আকাশস্থিত শিলাস্তুপ হতে তিনি বর্ষণ করেন শিলা এবং এটা দ্বারা তিনি যাকে ইচ্ছা প্রদান করেন এবং যাকে ইচ্ছা তার উপর হতে এটা অন্যদিকে ফিরিয়ে দেন; মেঘের বিদ্যুৎ ঝলক দৃষ্টিশক্তি প্রায় কেড়ে নেয়।

৪৪. আল্লাহ দিবস ও রাত্রির পরিবর্তন ঘটান, এতে শিক্ষা রয়েছে অন্তদৃষ্টি সম্পন্নদের জন্যে।

৪৫. আল্লাহ সমস্ত জীব সৃষ্টি করেছেন পানি হতে, ওদের কতক পেটে ভর দিয়ে চলে, কতক দু'পা দ্বারা চলে, কতক চলে চার পায়ে, আল্লাহ যা ইচ্ছা সৃষ্টি করেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

৪৬. আমি তো সুস্পষ্ট নিদর্শন অবতীর্ণ করেছি, আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সরল সঠিক পথ-প্রদর্শন করেন।

৪৭. তারা বলেঃ আমরা আল্লাহ ও রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَإِلَى اللَّهِ
الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ
ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ
خِلْفِهِ ۗ وَيُنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ
بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ
يَشَاءُ طَيِّبًا سَنًا بَرَقًا يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ ۗ فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي
عَلَى بَطْنِهِ ۗ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى رِجْلَيْنِ ۗ وَمِنْهُمْ
مَنْ يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ طَيِّبًا ۗ مَا يَشَاءُ ط
اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ ط وَاللَّهُ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ

আনলাম এবং আমরা আনুগত্য স্বীকার করলাম; কিন্তু এরপর তাদের একদল মুখ ফিরিয়ে নেয়; বস্তুতঃ তারা মু'মিন নয়।

৪৮. আর যখন তাদেরকে আহ্বান করা হয় আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর দিকে তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দেবার জন্যে তখন তাদের একদল মুখ ফিরিয়ে নেয়।

৪৯. আর যদি তাদের প্রাপ্য থাকে, তবে তাহলে তারা বিনীতভাবে রাসূল (ﷺ)-এর নিকট ছুটে আসে।

৫০. তাদের অন্তরে কি ব্যাধি আছে, না তারা সংশয় পোষণ করে? না তারা ভয় করে যে, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) তাদের প্রতি যুলুম করবেন? বরং তারা ই তো যালিম।

৫১. মু'মিনদের উক্তি তো এই, যখন তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দেবার জন্যে আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর দিকে আহ্বান করা হয় তখন তারা বলবেঃ আমরা শ্রবণ করলাম ও মান্য করলাম। আর তারা ই সফলকাম।

৫২. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য করে, আল্লাহকে ভয় করে ও তাঁর অবাধ্যতা হতে সাবধান থাকে তারা ই সফলকাম।

৫৩. তারা দৃঢ়ভাবে আল্লাহর শপথ করে বলে যে, তুমি তাদেরকে আদেশ করলে তারা বের হবেই; তুমি বলঃ শপথ করো না, যথার্থ

يَوَلِّي فَرِيقٌ مِنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٨﴾

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٤٩﴾

وَأَنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٥٠﴾

أَفِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَمْ آذُنًا بَوَّأُ أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحْصِفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ أَدْبَلُ أُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥١﴾

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥٢﴾

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشِ اللَّهَ وَيَتَّقْهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٥٣﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ آيَاتِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجْنَ قُلْ لَا تُقْسِمُوا طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ط

আনুগত্যই কাম্য; তোমরা যা কর আল্লাহ সে বিষয়ে খবর রাখেন।

৫৪. বলঃ তোমরা আল্লাহর আনুগত্য কর এবং রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর; অতঃপর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তবে তাঁর উপর অর্পিত (রাসূলের) দায়িত্বের জন্যে সে দায়ী এবং তোমাদের উপর অর্পিত দায়িত্বের জন্যে তোমরা দায়ী এবং তোমরা তাঁর আনুগত্য করলে সৎপথ পাবে, রাসূলের কর্তব্য হচ্ছে শুধু স্পষ্টভাবে (আল্লাহর বাণী) পৌঁছিয়ে দেয়া।

৫৫. তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আল্লাহ তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে, তিনি তাদেরকে পৃথিবীতে খেলাফত (প্রতিনিধিত্ব) অবশ্যই দান করবেন, যেমন তিনি (প্রতিনিধিত্ব) দান করেছিলেন তাদের পূর্ববর্তীদেরকে এবং তিনি অবশ্যই তাদের জন্যে সুদৃঢ় করবেন তাদের দ্বীনকে যা তিনি তাদের জন্যে মনোনীত করেছেন এবং তাদের ভয়-ভীতির পরিবর্তে তাদেরকে অবশ্যই নিরাপত্তা দান করবেন; তারা শুধু আমার ইবাদত করবে, আমার সাথে কাউকে শরীক করবে না, অতঃপর যারা অকৃতজ্ঞ হবে তারা তো সত্যত্যাগী (ফাসিক)।

৫৬. তোমরা নামায কয়েম কর, যাকাত দাও এবং রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর, যাতে তোমরা অনুগ্রহভাজন হতে পার।

إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ لِّهَا لَعَلَّوْنَ ﴿٥٧﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ ۗ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۗ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلِّغُ الْمُبِينِ ﴿٥٨﴾

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لِيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَيَسَيِّرَنَ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَلِيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۗ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٩﴾

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

৫৭. তুমি কাফিরদেরকে পৃথিবীতে প্রবল মনে করো না; তাদের আশ্রয়স্থল জাহান্নাম; কত নিকট এই পরিণাম!

৫৮. হে মু'মিনগণ! তোমাদের মালিকানাধীন দাস-দাসীরা এবং তোমাদের মধ্যে যারা বয়ঃপ্রাপ্ত হয়নি তারা যেন তোমাদের কক্ষে প্রবেশ করতে তিন সময়ে অনুমিত গ্রহণ করেঃ ফজরের নামাযের পূর্বে, দ্বিপ্রহরে যখন তোমরা তোমাদের পোশাক খুলে রাখ তখন এবং এশার নামাযের পর, এই তিন সময় তোমাদের গোপনীয়তা অবলম্বনের সময়; এই তিন সময় ছাড়া অন্য সময়ে বিনা অনুমতিতে প্রবেশ করলে তোমাদের জন্যে ও তাদের জন্যে কোন দোষ নেই; তোমাদের এককে অপরের নিকট তো যাতায়াত করতেই হয়। এইভাবে আল্লাহ তোমাদের নিকট তাঁর নির্দেশ সুস্পষ্টরূপে বিবৃত করেন; আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

৫৯. এবং তোমাদের সন্তান-সন্ততি বয়ঃপ্রাপ্ত হলে তারাও যেন অনুমতি প্রার্থনা করে যেমন অনুমতি প্রার্থনা করে থাকে তাদের বয়ঃজ্যেষ্ঠরা; এভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাঁর নির্দেশ সুস্পষ্টভাবে বিবৃত করেন, আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

৬০. আর বৃদ্ধ নারী, যারা বিবাহের আশা রাখে না, তাদের জন্যে অপরাধ নেই, যদি তারা তাদের সৌন্দর্য প্রদর্শন না করে তাদের

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۗ
وَمَا لَهُمُ النَّازِطُ وَكَيْتَسَ الْمَصِيرُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيْسَتْ أُنثَىٰ مَلَكَتْ
أَيْمَانَكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثٌ
مَرَّتٌ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ
ثِيَابَكُمْ مِنَ الظُّهْرِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۗ
ثَلَاثٌ غَوْرَاتٍ لَكُمْ ط لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ
بَعْدَ هُنَّ ط طُوفُونَ عَلَيْكُمْ بِعِضِّ ط
كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ ط وَاللَّهُ عَلَيْهِ حَكِيمٌ ۝

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمْ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا
اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ
لَكُمْ آيَاتِهِ ط وَاللَّهُ عَلَيْهِ حَكِيمٌ ۝

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا
فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يُضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ

বহির্বাস খুলে রাখে; তবে এটা হতে বিরত থাকাই তাদের জন্যে উত্তম। আল্লাহ সর্বশোতা, সর্বজ্ঞ।

৬১. অন্ধের জন্যে দোষ নেই, খোঁড়া ব্যক্তির জন্যে দোষ নেই, রুগ্নের জন্যে দোষ নেই এবং তোমাদের নিজেদের জন্যেও দোষ নেই আহার করা তোমাদের গৃহে, অথবা তোমাদের পিতৃগৃহে, মাতৃগৃহে, ভ্রাতাদের গৃহে, ভগ্নীদের গৃহে, পিতৃব্যদের গৃহে, ফুফুদের গৃহে, মামাদের গৃহে, খালাদের গৃহে অথবা ঐসব গৃহে যার চাবির মালিক তোমরা অথবা তোমাদের বন্ধুদের গৃহে; তোমরা একত্রে আহার কর অথবা পৃথক পৃথকভাবে আহার কর তাতে তোমাদের জন্যে কোন অপরাধ নেই; তবে যখন তোমরা গৃহে প্রবেশ করবে তখন তোমরা তোমাদের স্বজনদের প্রতি সালাম করবে অভিবাদন স্বরূপ যা আল্লাহর নিকট হতে কল্যাণময় ও পবিত্র; এইভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাঁর নির্দেশ বিশদভাবে বর্ণনা করেন যাতে তোমরা বুঝতে পার।

৬২. তারাই মু'মিন যারা আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর উপর ঈমান আনে এবং রাসূল (ﷺ)-এর সঙ্গে সমষ্টিগত ব্যাপারে একত্র হলে তারা অনুমতি ব্যতীত সরে পড়ে না; যারা তোমার অনুমতি প্রার্থনা করে তারাই আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এ বিশ্বাসী; অতএব, তারা তাদের কোন কাজে বাইরে যাবার জন্যে তোমার

غَيْرَ مُتَبَرِّجِينَ، يَزِينَهُ ط وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ ط وَاللَّهُ سَبِيحٌ عَلِيمٌ ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ط لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ط فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةٌ ط طَيِّبَةٌ ط كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوهُ ط إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ط فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ

অনুমতি চাইলে তাদের মধ্যে যাদের ইচ্ছা তুমি অনুমতি দেবে এবং তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করবে; আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৬৩. রাসূল (ﷺ)-এর আহ্বানকে তোমরা একে অপরের প্রতি আহ্বানের মত গণ্য করো না; তোমাদের মধ্যে যারা চুপি চুপি সরে পড়ে আল্লাহ তাদেরকে জানেন। সুতরাং যারা তাঁর আদেশের বিরুদ্ধাচরণ করে তারা সতর্ক হোক যে, বিপর্যয় তাদের উপর আপতিত হবে অথবা আপতিত হবে তাদের উপর কঠিন শাস্তি।

৬৪. জেনে রেখো, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই, তোমরা যাতে ব্যাপৃত তিনি তা জানেন; যেদিন তারা তাঁর নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে সেদিন তিনি তাদেরকে জানিয়ে দিবেন তারা যা করতো; আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

شَدَّتْ مِنْهُمْ وَاسْتَعْفَرُ لَهُمُ اللَّهُ ط إِنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٧﴾

لَا تَجْعَلُوا دَعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ
بَعْضًا ط قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ
لِوَإِذٍ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ
تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾

الْآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط قَدْ يَعْلَمُ
مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ط وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا عَمِلُوا ط وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٩﴾

সূরাঃ ফুরকান, মাক্কী

(আয়াতঃ ৭৭, রুকু'ঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
শুরু করছি।

১. কত মহান তিনি যিনি তাঁর বান্দার
প্রতি 'ফুরকান' (ফুরআন) অবতীর্ণ
করেছেন যাতে তিনি বিশ্বজগতের
জন্যে সতর্ককারী হতে পারেন।

২. যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর
সার্বভৌমত্বের অধিকারী; তিনি কোন
সম্মান গ্রহণ করেননি; সার্বভৌমত্বে
তাঁর কোন শরীক নেই। তিনি সমস্ত
কিছু সৃষ্টি করেছেন এবং প্রত্যেককে
পরিমিত করেছেন যথাযথ অনুপাতে।

৩. আর তারা তাঁর পরিবর্তে মা'বুদ
রূপে গ্রহণ করেছে অপরকে, যারা
কিছুই সৃষ্টি করে না; বরং তারা
নিজেরাই সৃষ্টি এবং তারা নিজেদের
অপকার অথবা উপকার করবার
ক্ষমতা রাখে না এবং জীবন, মৃত্যু ও
পুনরুত্থানের উপরও কোন ক্ষমতা
রাখে না।

৪. কাফিররা বলেঃ এটা মিথ্যা
ব্যতীত কিছুই নয়, সে এটা উদ্ভাবন
করেছে এবং ভিন্ন সম্প্রদায়ের
লোকেরা তাকে এই ব্যাপারে সাহায্য
করেছে; এইরূপে তারা অবশ্যই
যুলুম ও মিথ্যায় উপনীত হয়েছে।

৫. তারা বলেঃ এগুলো তো
সেকালের উপকথা, যা সে লিখিয়ে

سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا ٤٤ رُكُوعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبْرَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ
لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ①

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ
وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ
كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ تَقْدِيرًا ②

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِهَا آلِهَةً لَا يُخْلِقُونَ شَيْئًا
وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا
وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا
نُشُورًا ③

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا أِفْكٌ
إِفْتَرَاهُ وَاعَانَاهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ ④
فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ⑤

وَقَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ⑥ اَلْكَتَبَهَا فِيهَا

নিয়েছে; এগুলো সকাল-সন্ধ্যায় তার নিকট পাঠ করা হয়।

৬. বলঃ এটা তিনিই অবতীর্ণ করেছেন যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সমুদয় রহস্য অবগত আছেন; তিনি ক্ষমশীল, পরম দয়ালু।

৭. তারা বলেঃ এ কেমন রাসূল যে আহার করে এবং হাটে বাজারে চলাফেরা করে? তার কাছে কোন ফেরেশতা কেন অবতীর্ণ করা হলো না, যে তার সাথে থাকতো সতর্ককারীরূপে?

৮. তাকে ধন-ভান্ডার দেয়া হয়নি কেন, অথবা তার একটি বাগান নেই কেন, যা হতে সে আহার সংগ্রহ করতে পারে? সীমালঙ্ঘনকারীরা আরো বলেঃ তোমরা তো এক যাদুগ্রন্থ ব্যক্তিরই অনুসরণ করছো।

৯. দেখো, তারা তোমাকে কি উপমা দেয়, তারা পথভ্রষ্ট হয়েছে এবং তারা পথ পাবে না।

১০. কত মহান তিনি যিনি ইচ্ছা করলে তোমাকে দিতে পারেন এটা অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর বস্তু, উদ্যানসমূহ যার নিম্নদেশে নদী-নালা প্রবাহিত এবং দিতে পারেন প্রাসাদসমূহ।

১১. কিন্তু তারা কিয়ামতকে অস্বীকার করেছে এবং যারা কিয়ামতকে অস্বীকার করে তাদের জন্যে আমি প্রস্তুত রেখেছি জ্বলন্ত অগ্নি।

১২. দূর হতে অগ্নি যখন তাদেরকে দেখবে তখন তারা শুনতে পাবে এর ক্রুদ্ধ গর্জন ও চীৎকার।

سُمِّلَ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَاصِيلاً ۝

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ
وَ الْأَرْضِ ط إِنَّهُ كَانَ عَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَقَالُوا مَا لِهَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ
وَيَنْشِئُ فِي الْأَسْوَاقِ ط لَوْلَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ
مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۝

أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ
مِنْهَا ط وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا
مَسْحُورًا ۝

أُنظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا
يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

تَبَرَّكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ
ذَلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَيَجْعَلُ لَكَ قُصُورًا ۝

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ
كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝

إِذَا رَأَوْهُمْ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا
تَغَيُّظًا وَ زَفِيرًا ۝

১৩. এবং যখন তাদেরকে শৃঙ্খলিত অবস্থায় ওর কোন সংকীর্ণ স্থানে নিষ্ক্ষেপ করা হবে তখন তারা সেখানে ধ্বংস কামনা করবে।

১৪. আজ তোমরা একবারের জন্যে ধ্বংস কামনা করো না; বরং বহুবার ধ্বংস হবার কামনা করতে থাকো।

১৫. তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ এটাই শ্রেয়, না স্থায়ী জান্নাত, যার প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে মুত্তাকী-দেরকে? এটাই তাদের পুরস্কার ও প্রত্যাবর্তন স্থল।

১৬. সেখানে তারা যা কামনা করবে তাই পাবে এবং তারা স্থায়ী হবে, এই প্রতিশ্রুতি পূরণ তোমার প্রতিপালকেরই দায়িত্ব।

১৭. এবং যেদিন তিনি একত্রে করবেন তাদেরকে এবং তারা আল্লাহর পরিবর্তে যাদের ইবাদত করতো তাদেরকে তিনি সেদিন জিজ্ঞেস করবেনঃ তোমরাই কি আমার এই বান্দাদেরকে বিভ্রান্ত করেছিলে, না তারা নিজেরাই পথভ্রষ্ট হয়েছিল?

১৮. তারা বলবেঃ আপনি পবিত্র ও মহান! আপনার পরিবর্তে আমরা

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنَيْنِ
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا
ثُبُورًا كَثِيرًا ۝

قُلْ أَدْلِكْ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ
الْمُتَّقُونَ ۖ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمُصِيبًا ۝

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۖ كَانَ
عَلَى رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُورًا ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ فَيَقُولُ أَنْتُمْ أَضَلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ
أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۝

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَكْفِيُنَا أَنْ نَتَّخِذَ

১। মু'আয বিন জাবাল (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (তাকে) বললেনঃ হে মু'আয, তুমি কি জানো বান্দার ওপর আল্লাহর কি হুক আছে? মু'আয বললেন, আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, (বান্দার ওপর আল্লাহর হুক হলো) সে তাঁর ইবাদত বা দাসত্ব করবে এবং তাঁর সাথে অন্য কিছুকে অংশীদার বানাবে না। তিনি (নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আবার বললেন, তুমি কি জানো আল্লাহর কাছে বান্দার হুক কি? মু'আয ইবনে জাবাল বললেন, বিষয়টি আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহর কাছে বান্দার হুক হলো আল্লাহ্ কর্তৃক বান্দাকে আযাব না দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৭৩)

অন্যকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করতে পারি না; আপনিই তো এদেরকে ও এদের পিতৃপুরুষদেরকে ভোগ-সম্ভার দিয়েছিলেন; পরিণামে তারা উপদেশ বিস্মৃত হয়েছিল এবং পরিণত হয়েছিল এক ধ্বংসপ্রাপ্ত জাতিতে।

مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ
وَأَبَاءَهُمْ حَتَّى نَسُوا الذِّكْرَ ۖ وَكَانُوا قَوْمًا
بُورًا ﴿١٨﴾

১৯. তোমরা যা বলতে তারা (উপাস্যগুণি) তা মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে। সুতরাং তোমরা শাস্তি প্রতিরোধ করতে পারবে না, সাহায্যও পাবে না। তোমাদের মধ্যে যে সীমালঙ্ঘন করবে আমি তাকে মহাশাস্তি আন্বাদন করাবো।

فَقَدْ كَذَّبْتُمْ بِمَا تَقُولُونَ لِمَا كُنْتُمْ تُحِبُّونَ
صِرَافًا وَلَا نُصْرًا ۖ وَمَنْ يُظْلَمِ مِنْكُمْ فُتِنَتْهُ
عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

২০. তোমার পূর্বে আমি যে সব রাসূল প্রেরণ করেছি তাঁরা আহার করতেন ও হাটে-বাজারে চলাফেরা করতেন। আমি তোমাদের মধ্যে পরস্পরকে পরীক্ষা স্বরূপ করেছি। তোমরা ধৈর্যধারণ করবে কি? তোমার প্রতিপালক সবকিছু দেখেন।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا
إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۖ أَتَصْبِرُونَ
وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

২১. যারা আমার সাক্ষাৎ কামনা করে না তারা বলেঃ আমাদের নিকট ফেরেশতা অবতীর্ণ করা হয় না কেন? অথবা আমরা আমাদের প্রতিপালককে প্রত্যক্ষ করি না কেন? তারা তাদের অন্তরে অহংকার পোষণ করে এবং তারা গুরুতর রূপে সীমালঙ্ঘন করেছে।

২২. যেদিন তারা ফেরেশতাদেরকে প্রত্যক্ষ করবে সেদিন অপরাধীদের জন্যে সুসংবাদ থাকবে না এবং তারা বলবেঃ রক্ষা কর, রক্ষা কর।

২৩. আমি তাদের কৃতকর্মগুলোর দিকে অগ্রসর হবো, অতঃপর সেগুলোকে বিক্ষিপ্ত ধূলি-কণায় পরিণত করবো।

২৪. সেদিন জান্নাতবাসীদের জন্যে বাসস্থান হবে উৎকৃষ্ট এবং বিশ্রামস্থল হবে মনোরম।

২৫. যেদিন আকাশ মেঘপুঞ্জসহ বিদীর্ণ হবে এবং ফেরেশতাদেরকে নামিয়ে দেয়া হবে।

২৬. সেদিন প্রকৃত কর্তৃত্ব হবে দয়াময়ের এবং কাফিরদের জন্যে সে দিন হবে কঠিন।

২৭. যালিম ব্যক্তি সেদিন নিজ হস্তদ্বয় দংশন করতে করতে বলবেঃ হায়, আমি যদি রাসূল (ﷺ)-এর সাথে সৎপথ অবলম্বন করতাম।

২৮. হায়, দুর্ভোগ আমার, আমি যদি অমুককে বন্ধুরূপে গ্রহণ না করতাম।

২৯. আমাকে তো সে বিভ্রান্ত করেছিল আমার নিকট উপদেশ

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا كَوْلًا أَنْزَلَ
عَلَيْنَا الْمَلِكَةَ أَوْ تَرَى رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي
أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلِكَةَ لَا بُشْرَى يَوْمَئِذٍ
لِلْمُجْرِمِينَ يَقُولُونَ جِئْنَا بِمُحْجُورًا ﴿٢٢﴾

وَقَدْ مَنَّآ إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ
هَبَاءً مَّنْثُورًا ﴿٢٣﴾

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ﴿٢٤﴾

وَيَوْمَ تَشْقُقُ السَّهَابُ بِالْغَمَامِ وَتُزَلُّ الْمَلِكَةُ تَنْزِيلًا ﴿٢٥﴾

الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَنِ وَكَانَ يَوْمًا
عَلَى الْكٰفِرِينَ عَسِيرًا ﴿٢٦﴾

وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيِّنَنِي
أَتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾

يَوَيْلَنِي يَلَيِّنَنِي لِمَ اتَّخَذْتُ لَهَا خَلِيلًا ﴿٢٨﴾

لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي وَكَانَ

পৌছবার পর; শয়তান মানুষের
জন্যে মহাপ্রতারক।

الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسٰنِ خَدُوْلًا ﴿٣٠﴾

৩০. রাসূল (ﷺ) বললেনঃ হে
আমার প্রতিপালক! আমার সম্প্রদায়
এই কুরআনকে পরিত্যাগ্য মনে
করে।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا

هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾

৩১. (আল্লাহ বলেনঃ) এভাবেই
প্রত্যেক নবীর শত্রু করেছিলাম আমি
অপরাধীদেরকে। তোমার জন্যে
তোমার প্রতিপালকই পথ-প্রদর্শক ও
সাহায্যকারীরূপে যথেষ্ট।

وَكٰذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمَجْرُوْمِيْنَ ط

وَكَفٰى بِرَبِّكَ هٰدِيًّا وَنٰصِيْرًا ﴿٣١﴾

৩২. কাফিররা বলেঃ সমগ্র কুরআন
তাঁর নিকট একবারে অবতীর্ণ হলো
না কেন? এভাবেই তোমার হৃদয়কে
ওটা দ্বারা মজবুত করবার জন্যে এবং
ক্রমে ক্রমে স্পষ্টভাবে আবৃত্তি করেছি।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نَزَّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً

وَاحِدَةً ؕ كَذٰلِكَ ؕ لِنُنَبِّئَكَ بِهٖ فَاَدٰك وَرَتَّلْنٰهٗ

تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

৩৩. তারা তোমার নিকট এমন কোন
সমস্যা উপস্থিত করেনি যার সঠিক
সমাধান ও সুন্দর ব্যাখ্যা আমি
তোমাকে দান করিনি।

وَلَا يٰتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جٰئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ

تَفْسِيْرًا ط ﴿٣٣﴾

৩৪. যাদেরকে মুখে ভর দিয়ে চলা
অবস্থায় জাহান্নামের দিকে একত্রিত
করা হবে, তাদেরই স্থান হবে অতি
নিকট এবং তারাি সর্বাধিক পথভ্রষ্ট।

الَّذِيْنَ يٰحْشُرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهٖمُ اِلٰى جَهَنَّمَ

اُوْلٰٓئِكَ سُرُّ مَكٰنًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ؕ ﴿٣٤﴾

৩৫. আমি মূসা (ﷺ)-কে অবশ্যই
অবশ্যই কিতাব দিয়েছিলাম এবং
তাঁর ভ্রাতা হারুনকে তাঁর
সাহায্যকারী করেছিলাম।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسٰى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَہٗ

اٰخَاهٖ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾

৩৬. এবং বলেছিলামঃ তোমরা সেই
সম্প্রদায়ের নিকট যাও যারা আমার
নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করেছে;
অতপর আমি তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে
বিধ্বস্ত করেছিলাম।

فَقُلْنَا اذْهَبْ اِلٰى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا ط

فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾

৩৭. আর নূহের (عليه السلام) সম্প্রদায় যখন রাসূলদের প্রতি মিথ্যা আরোপ করলো তখন আমি তাদেরকে নিমজ্জিত করলাম এবং তাদেরকে মানব জাতির জন্যে নিদর্শন স্বরূপ করে রাখলাম; যালিমদের জন্যে আমি পীড়াদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

৩৮. আমি ধ্বংস করেছিলাম 'আদ, সামূদ, রাস-বাসী এবং তাদের অন্তর্বর্তীকালের বহু সম্প্রদায়কেও।

৩৯. আমি তাদের প্রত্যেকের জন্যে দৃষ্টান্ত বর্ণনা করেছিলাম, আর তাদের সকলকেই আমি সম্পূর্ণরূপে ধ্বংস করেছিলাম।

৪০. তারা তো সেই জনপদ দিয়েই যাতায়াত করে যার উপর বর্ষিত হয়েছিল অকল্যাণের বৃষ্টি, তবে কি তারা এটা প্রত্যক্ষ করে না? বস্তুতঃ তারা পুনরুত্থানের আশঙ্কা করে না।

৪১. তারা যখন তোমাকে দেখে তখন শুধু তোমাকে ঠাট্টা-বিদ্রপের পাত্র রূপে গণ্য করে এবং বলেঃ এই কি সে, যাকে আল্লাহ রাসূল করে পাঠিয়েছেন?

৪২. সে আমাদেরকে আমাদের দেবতাগণ হতে দূরে সরিয়ে দিতে যদি না আমরা তাদের আনুগত্যে ধৈর্যের সাথে (প্রতিষ্ঠিত) থাকতাম; যখন তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে তখন তারা জানবে কে সর্বাধিক পথভ্রষ্ট।

৪৩. তুমি কি দেখো না তাকে, যে তার প্রবৃত্তিকে মা'বুদ রূপে গ্রহণ

وَقَوْمٍ نُوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرَّسُولَ أَعْرَفْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ
لِلنَّاسِ آيَةً ط وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾

وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ
ذَلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ﴿٣٩﴾

وَلَقَدْ آتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْنَا مَطَرًا سَوْءًا ط
أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرُونَهَا بَلْدًا كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿٤٠﴾

وَإِذَا رَأَوْكَ إِذْ يَنْتَعِزُونَكَ إِلَّا هُزُؤًا ط أَهَذَا الَّذِي
بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾

إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْئَةِ لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا
عَلَيْهَا ط وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٧﴾

أَرَأَيْتَ مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ط أَفَأَنْتَ تَكُونُ

করে? তবুও কি তুমি তার জিম্মাদার হবে?

عَلَيْهِ وَكَيْلًا ﴿۳۸﴾

৪৪. তুমি কি মনে কর যে, তাদের অধিকাংশ শুনে ও বুঝে? তারা পশুর মত বরণ তারা আরোও পথ ভ্রষ্ট।

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْعُونَ أَوْ يَعْلَمُونَ طَرِيقَ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿۳۸﴾

৪৫. তুমি কি তোমার প্রতিপালকের প্রতি লক্ষ্য কর না কিভাবে তিনি ছায়া সম্প্রসারিত করেন? তিনি চাইলে এটাকে স্থির রাখতে পারতেন; ফলে আমি সূর্যকে করেছি এর নির্দেশক।

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۖ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ۖ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿۳۹﴾

৪৬. অতঃপর আমি একে আমার দিকে ধীরে ধীরে গুটিয়ে আনি।

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿۳۹﴾

৪৭. এবং তিনিই তোমাদের জন্যে রাত্রিকে করেছেন আবরণ স্বরূপ, বিশ্রামের জন্যে তোমাদের দিয়েছেন নিদ্রা এবং জাহ্নত হওয়ার জন্যে দিয়েছেন দিবস।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿۴০﴾

৪৮. তিনিই স্বীয় রহমতে সুসংবাদ বহনকারী রূপে বায়ু প্রেরণ করেন এবং আমি আকাশ হতে পবিত্র পানি বর্ষণ করি।

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿۴০﴾

৪৯. যার দ্বারা আমি মৃত ভূ-খন্ডকে জীবিত করি এবং আমার সৃষ্টির মধ্যে বহু জীব-জন্তু ও মানুষকে তা পান করাই।

لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِي كَثِيرًا ﴿۴১﴾

৫০. আর আমি এটা তাদের মধ্যে বিতরণ করি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে; তা সত্ত্বেও অধিকাংশ লোক অস্বীকার করল; কিন্তু কুফুরী করা হতে (অস্বীকার করল না)।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا ۚ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿۴১﴾

৫১. আমি ইচ্ছা করলে প্রতিটি জনপদে একজন সতর্ককারী প্রেরণ করতে পারতাম।

وَلَوْ شِئْنَا لَبعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ تَذِيرًا ﴿۴২﴾

৫২. সুতরাং তুমি কাফিরদের আনুগত্য করো না এবং তুমি তার (কুরআনের) সাহায্যে তাদের বিরুদ্ধে প্রবল সংগ্রাম চালিয়ে যাও।

৫৩. তিনিই দুই সমুদ্রকে মিলিত ভাবে প্রবাহিত করেছেন, একটি মিষ্টি, মজাদার এবং অপরটি লবণাক্ত, বিশ্বাদ; উভয়ের মধ্যে রেখেছেন এক অন্তরায়, এক শক্ত ব্যবধান।

৫৪. এবং তিনিই মানুষকে সৃষ্টি করেছেন পানি হতে; অতঃপর তিনি তার বংশগত ও বৈবাহিক সম্বন্ধ স্থাপন করেছেন। তোমার প্রতিপালক সর্বশক্তিমান।

৫৫. তারা আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুর ইবাদত করে যারা তাদের উপকার করতে পারে না, অপকারও করতে পারে না, কাফির তো স্বীয় প্রতিপালকের বিরোধী।

৫৬. আমি তোমাকে শুধু সুসংবাদ-দাতা ও সতর্ককারী রূপেই প্রেরণ করেছি।

৫৭. বলঃ আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না, তবে যে ইচ্ছা করে সে তার প্রতিপালকের পথ অবলম্বন করুক।

৫৮. তুমি নির্ভর কর সেই চিরঞ্জীবের উপর, যাঁর মৃত্যু নেই এবং তাঁর সপ্রশংসা মহিমা ঘোষণা কর, তিনি তাঁর বান্দাদের পাপ সম্পর্কে অবহিত।

فَلَا تُطِيعُ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهٰذَا مِلْحٌ اَجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَجِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهٖ ظٰهِيْرًا ﴿٥٥﴾

وَمَا اَرْسَلْنَاكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾

قُلْ مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَاءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلَىٰ رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾

وَكُلُّ عَلٰى الْعِزِّ الَّذِي لَا يَمُوْتُ وَسَبِيْحٌ بِحَمْدِهٖ ۗ وَكَفٰى بِهٖ يَدُوْبٍ عِبَادًا ۗ خٰوِيْرًا ﴿٥٨﴾

৫৯. তিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী এবং ওগুলোর মধ্যবর্তী সমস্ত কিছু ছয় দিনে সৃষ্টি করেন; অতঃপর তিনি আরশের উপর সমুন্নীত হন; তিনিই রহমান, তাঁর সম্বন্ধে যে অবগত আছে তাকে জিজ্ঞেস করে দেখো।

৬০. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ সিজদাবনত হও 'রহমান'-এর প্রতি, তখন তারা বলেঃ রহমান আবার কে? তুমি কাউকেও সিজদা করতে বললেই কি আমরা তাকে সিজদা করবো? এতে তাদের বিমুখতাই বৃদ্ধি পায়।

৬১. কত মহান তিনি যিনি আকাশে সৃষ্টি করেছেন বড় বড় তারকাপুঞ্জ এবং তাতে স্থাপন করেছেন প্রদীপ (সূর্য) ও জ্যোতির্ময় চন্দ্র!

৬২. এবং যারা উপদেশ গ্রহণ করতে ও কৃতজ্ঞ হতে চায় তাদের জন্যে তিনিই সৃষ্টি করেছেন রাত্রি এবং দিবসকে পরস্পরের অনুগামীরূপে।

৬৩. 'রহমান' এর বান্দা তারাই যারা নম্রভাবে চলাফেরা করে পৃথিবীতে এবং তাদেরকে যখন অজ্ঞ লোকেরা সম্বোধন করে তখন তারা বলেঃ 'সালাম'।

৬৪. এবং তারা রাত্রি অতিবাহিত করে তাদের প্রতিপালকের উদ্দেশ্যে সিজদারত হয়ে ও দন্ডায়মান থেকে।

৬৫. এবং তারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের হতে জাহান্নামের শাস্তি দূরীভূত করুন; নিশ্চয়ই ওর শাস্তি তো আঁকড়ে থাকার জিনিস।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ
الرَّحْمَنُ فَمَنْ تَلَّ بِهِ خَيْرًا ﴿٥٩﴾

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ ۗ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَنُ اسْجُدْ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ﴿٦٠﴾

تَبَرَّكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ
فِيهَا سِرْجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ﴿٦١﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خُلْفَةً ۗ لِمَنْ أَرَادَ
أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾

وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَسْجُدُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا
وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿٦٣﴾

وَالَّذِينَ يَبِينُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ
إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

৬৬. অবস্থান ও বসবাসের স্থান হিসেবে ওটা কত নিকৃষ্ট!

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٦﴾

৬৭. আর যখন তারা ব্যয় করে তখন তারা অপব্যয় করে না, কার্পণ্যও করে না; বরং তারা আছে এতদূভয়ের মাঝে মধ্যমপন্থায়।

وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا
وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

৬৮. এবং তারা আল্লাহর সাথে কোন উপাস্যকে ডাকে না; আল্লাহ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন, যথার্থ কারণ ছাড়া তাকে তারা হত্যা করে না এবং ব্যাভিচার করে না; যে এগুলো করে সে শাস্তি ভোগ করবে।

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ
النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ط وَمَنْ
يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

৬৯. কিয়ামতের দিন তার শাস্তি দ্বিগুণ করা হবে এবং সেখানে সে স্থায়ী হবে হীন অবস্থায়।

يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ
مُهَانًا ﴿٦٩﴾

৭০. তারা নয়, যারা তাওবা করে, ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে; আল্লাহ তাদের পাপ পরিবর্তন করে দিবেন পুণ্যের দ্বারা; আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ
يَبْدِلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ط وَكَانَ اللَّهُ
غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٠﴾

৭১. যে ব্যক্তি তাওবা করে ও সৎকর্ম করে সে সম্পূর্ণরূপে আল্লাহ অভিমুখী হয়।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

৭২. আর যারা মিথ্যা সাক্ষ্য দেয় না এবং যখন তারা অসার ক্রিয়া-কলাপের সম্মুখীন হয় তখন স্বীয়

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ
مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ মুশরিকদের কিছু লোক ব্যাপক হত্যা চালায়, ব্যাপক ব্যাভিচারে লিপ্ত হয়। অতপর তারা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকটে হাযির হয়ে আরম্ভ করলোঃ আপনি যা কিছু বলেন এবং যেদিকে আহ্বান করেন, তা তো খুবই উত্তম। আপনি যদি বলেন যে, আমরা যা করেছি তা মাফ করে দেয়া হবে, তখন এ আয়াতটি নাযিল হয়-“আর যারা আল্লাহর সাথে অন্য ইলাহকে ডাকে না, আল্লাহ যাকে হত্যা করা নিষিদ্ধ করেছেন যথার্থ কারণ ব্যতীত তারা তাকে হত্যা করে না এবং ব্যাভিচার করেনা।” (সূরা ফুরকানঃ ৬৮) আরোও নাযিল হয়-“বলো হে আমার বান্দারা যারা নিজেদের ওপর অত্যাচার করেছো, তোমরা আল্লাহর রহমত থেকে নিরাশ হয়ো না।” (সূরা যুমারঃ ৫৩) (সুখারী, হাদীস নং ৪৮১০)

সম্মানের সাথে তা পরিহার করে
চলে।

৭৩. এবং যারা তাদের প্রতিপালকের
আয়াত দ্বারা উপদেশ প্রদান করলে
অন্ধ এবং বধির সদৃশ আচরণ করে
না।

৭৪. আর যারা প্রার্থনা করে— হে
আমাদের প্রতিপালক! আমাদের
জন্যে এমন স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততি দান
করুন যারা আমাদের জন্যে চক্ষু-
শীতলকারী এবং আমাদেরকে
মুক্তাকীদের জন্যে ইমাম করুন।

৭৫. তাদেরকে প্রতিদান স্বরূপ দেয়া
হবে (জান্নাতে) বালাখানা, যেহেতু
তারা ছিল ধৈর্যশীল, তাদেরকে
সেখানে অভ্যর্থনা দেয়া হবে
অভিবাদন ও সালাম সহকারে।

৭৬. সেখানে তারা অন্ততকাল
থাকবে। আশ্রয়স্থল ও বসতি হিসেবে
তা কত উৎকৃষ্ট!

৭৭. বলঃ তোমরা আমার
প্রতিপালককে না ডাকলে তিনি
তোমাদেরকে পরওয়া করেন না;
তোমরা মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছো, ফলে
অচিরে নেমে আসবে অপরিহার্য
শাস্তি।

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخْرُجُوا
عَلَيْهَا صَبَأًا وَعُمِّيَانًا ﴿٧٣﴾

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا
قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾

أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ
فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾

خَالِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ
فَسَوْفَ يَكُونُ لِإِمَامٍ ﴿٧٧﴾

সূরাঃ শুআ'রা, মাফী

(আয়াতঃ ২২৭, রুকূঃ ১১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٢٤ رُكُوعَاتُهَا ١١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তোয়া-সীন-মীম।

طسّم ①

২. এগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের
আয়াত।

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

৩. তারা মু'মিন হচ্ছে না বলে তুমি
হয়তো (মনোকষ্টে) আত্মবিনাশী হয়ে
পড়বে।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ②

৪. আমি ইচ্ছা করলে আকাশ হতে
তাদের নিকট এক নিদর্শন প্রেরণ
করতাম, ফলে তাদের গর্দান বিনত
হয়ে পড়তো ওর প্রতি।

إِنْ نَشَاءُ نُنزِلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ

أَعْنَاقَهُمْ لَهَا خُضِعِينَ ③

৫. যখনই তাদের কাছে দয়াময়ের
নিকট হতে কোন নতুন উপদেশ
আসে তখনই তারা তা হতে মুখ
ফিরিয়ে নেয়।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ

إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ④

৬. তারা তো মিথ্যা জেনেছে, সুতরাং
তারা যা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো
তার প্রকৃত বার্তা তাদের নিকট শীঘ্রই
এসে পড়বে।

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَتْلُبًا مَا كَانُوا

بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑤

৭. তারা কি পৃথিবীর দিকে দৃষ্টিপাত
করে না? আমি তাতে প্রত্যেক
প্রকারের কত উৎকৃষ্ট উদ্ভিদ উদ্গত
করেছি।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمَا أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ

زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑥

৮. নিশ্চয়ই তাতে আছে নিদর্শন;
কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ⑦

৯. এবং নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক,
পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٩﴾

১০. (স্মরণ কর) যখন তোমার
প্রতিপালক মুসা (ﷺ)-কে ডেকে
বললেনঃ তুমি যালিম সম্প্রদায়ের
নিকট যাও।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنْ إِنَّا إِنَّا الْقَوْمُ
الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾

১১. ফিরআ'উনের সম্প্রদায়ের
নিকট; তারা কি ভয় করে না?

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ط أَلَا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾

১২. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার
প্রতিপালক! আমি আশঙ্কা করি যে,
তারা আমাকে অস্বীকার করবে।

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾

১৩. এবং আমার হৃদয় সংকুচিত
হয়ে পড়ছে, আর আমার জিহ্বা তো
সাবলীল নয়, সুতরাং হারুন (ﷺ)
-এর প্রতিও ওহী পাঠান।

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ
إِلَىٰ هَارُونَ ﴿١٣﴾

১৪. আমার বিরুদ্ধে তাদের এক
অভিযোগ আছে; আমি আশঙ্কা করি
যে, তারা আমাকে হত্যা করবে।

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾

১৫. বললেনঃ কখনই নয়, অতএব
তোমরা উভয়ে আমার নিদর্শনসহ
যাও, আমি তোমাদের সঙ্গে আছি
শ্রবণকারী।

قَالَ كَلَّا ؕ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾

১৬. অতএব তোমরা উভয়ে
ফিরআ'উনের নিকট যাও এবং বলঃ
আমরা জগতসমূহের প্রতিপালকের
রাসূল।

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

১৭. (হে ফিরআ'উন) আর আমাদের
সাথে যেতে দাও বানী ইসরাঈলকে।

أَنْ أَرْسِلَ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾

১৮. ফিরআ'উন বললোঃ আমরা কি
তোমাকে শৈশবে আমাদের মধ্যে
লালন-পালন করিনি? এবং তুমি
তোমার জীবনের বহু বছর আমাদের
মধ্যে কাটিয়েছো।

قَالَ أَلَمْ نُطْرِكْ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِئْسَ
فِينَا مَنْ عَمِرَكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾

১৯. তুমি তোমার কর্ম যা করবার তা করেছো; তুমি অকৃতজ্ঞ।

وَفَعَلْتَ فَعَلْتَكِ الْبُغْيَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ⑩

২০. (মুসা عليه السلام) বললেনঃ আমি তো এটা করেছিলাম তখন যখন আমি অজ্ঞ ছিলাম।

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذْ وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ⑪

২১. আমি যখন তোমাদের ভয়ে ভীত হলাম তখন আমি তোমাদের নিকট হতে পালিয়ে গিয়েছিলাম; তৎপর আমার প্রতিপালক আমাকে জ্ঞান দান করেছেন এবং আমাকে রাসূল করেছেন।

فَقَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خَفَّيْتُمْ فَوَهَّبَ لِي رَبِّي

حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑫

২২. আর আমার প্রতি তোমার যে অনুগ্রহের কথা উল্লেখ করেছো, তা এই যে, তুমি বানী ইসরাঈলকে দাসে পরিণত করেছো।

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ

بَنِي إِسْرَائِيلَ ⑬

২৩. ফিরআ'উন বললোঃ জগত-সমূহের প্রতিপালক আবার কি?

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ⑭

২৪. (মুসা عليه السلام) বললেনঃ তিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের মধ্যবর্তী সব কিছুর প্রতিপালক, যদি তোমরা নিশ্চিত বিশ্বাসী হও।

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ⑮

২৫. ফিরআ'উন তার পারিষদবর্গকে লক্ষ্য করে বললোঃ তোমরা গুনছো তো?

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَبْعُونَ ⑯

২৬. (মুসা عليه السلام) বললেনঃ তিনি তোমাদের প্রতিপালক এবং তোমাদের পূর্বপুরুষদেরও প্রতিপালক।

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ⑰

২৭. (ফিরআ'উন) বললোঃ তোমাদের প্রতি প্রেরিত তোমাদের রাসূল নিশ্চয়ই পাগল।

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ⑱

২৮. (মূসা عليه السلام) বললেনঃ তিনি পূর্ব ও পশ্চিমের এবং এতোদুভয়ের মধ্যবর্তী সবকিছুর প্রতিপালক, যদি তোমরা বুঝতে।

২৯. (ফিরআ'উন) বললোঃ তুমি যদি আমার পরিবর্তে অন্যকে মা'বুদ রূপে গ্রহণ কর তবে আমি তোমাকে অবশ্যই কারারুদ্ধ করবো।

৩০. (মূসা عليه السلام) বললেনঃ আমি তোমার নিকট স্পষ্ট কিছু (নিদর্শন) আনয়ন করলেও?

৩১. (ফিরআ'উন) বললোঃ তুমি যদি সত্যবাদী হও, তবে তা উপস্থিত কর।

৩২. অতঃপর তিনি (মূসা عليه السلام) তাঁর লাঠি নিক্ষেপ করলেন তৎক্ষণাৎ তা এক সুস্পষ্ট অজগর হলো।

৩৩. আর (মূসা عليه السلام) হাত বের করলেন আর তৎক্ষণাৎ তা দর্শকদের দৃষ্টিতে গুত্র উজ্জ্বল প্রতিভাত হলো।

৩৪. সে (ফিরআ'উন) তার পরিষদ-বর্গকে বললোঃ এতো এক সুদক্ষ যাদুকর।

৩৫. এ তোমাদেরকে তোমাদের দেশ হতে তার যাদুবলে বহিষ্কৃত করতে চায়! এখন তোমরা কি করতে বল?

৩৬. তারা বললোঃ তাকে ও তার ভ্রাতাকে কিঞ্চিৎ অবকাশ দিন এবং নগরে নগরে সংগ্রাহকারীদেরকে পাঠান।

৩৭. যেন তারা তোমার নিকট সকল সুদক্ষ যাদুকর উপস্থিত করে।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَهًا غَيْرِي لَجَعَلَنكَ مِنَ
الْمَسْجُورِينَ ﴿٢٩﴾

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

قَالَ قَاتِ بِهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣١﴾

فَأُلْفِيَ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ﴿٣٣﴾

قَالَ لِلْمَلَآئِكَةِ حَوْلَهُ إِنَّ هَذَا سِحْرٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ
فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٥﴾

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٣٦﴾

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَابٍ عَلَيْهِمْ ﴿٣٧﴾

৩৮. অতঃপর এক নির্ধারিত দিনে নির্দিষ্ট সময়ে যাদুকরদের একত্রিত করা হলো।

৩৯. আর লোকদেরকে বলা হলোঃ তোমরাও সমবেত হচ্ছে কি?

৪০. যেন আমরা যাদুকরদের অনুসরণ করতে পারি, যদি তারা বিজয়ী হয়।

৪১. অতঃপর যাদুকররা এসে ফিরআ'উনকে বললোঃ আমরা যদি বিজয়ী হই তবে আমাদের জন্যে পুরস্কার থাকবে তো?

৪২. (ফিরআ'উন) বললোঃ হ্যাঁ, তখন তোমরা অবশ্যই আমার ঘনিষ্ঠদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

৪৩. মুসা (ﷺ) তাদেরকে বললেনঃ তোমাদের যা নিষ্ক্ষেপ করবার তা নিষ্ক্ষেপ কর।

৪৪. অতঃপর তারা তাদের রশি ও লাঠি নিষ্ক্ষেপ করলো এবং তারা বললোঃ ফিরআ'উনের শপথ! আমরাই বিজয়ী হবো।

৪৫. অতঃপর মুসা (ﷺ) তাঁর লাঠি নিষ্ক্ষেপ করলেন; সহসা তা' তাদের অলীক সৃষ্টিগুলোকে গ্রাস করতে লাগলো।

৪৬. তখন যাদুকররা সিজদাবনত হয়ে পড়লো।

৪৭. তারা বললোঃ আমরা ঈমান আনয়ন করলাম জগতসমূহের প্রতিপালকের প্রতি-

৪৮. যিনি মুসা (ﷺ) ও হারুন (ﷺ)-এরও প্রতিপালক।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِيلِيقَاتٍ يَوْمَ مَعْلُومٍ ﴿٣٨﴾

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾

لَعَلَّنَا نَتَّبِعَ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَإِنَّا لَنَا أَجْرًا

إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَإِن مِّن مَّقْرَبِينَ ﴿٤٢﴾

قَالَ لَهُم مُّوسَى الْقُوا مَا أَنْتُمْ مُتَّقُونَ ﴿٤٣﴾

فَالْقُوا جِبَالَهُمْ وَعَصْبَهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ

إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

فَألقى مُوسَى عَصَاهُ فَإذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

فَألقى السَّحَرَةُ سُجُودًا قَبْلِ رَبِّهِمْ ﴿٤٦﴾

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾

৪৯. (ফিরআ'উন) বললোঃ আমি তোমাদেরকে অনুমতি দেয়ার পূর্বেই তোমরা তাতে বিশ্বাস করলে? এই তো তোমাদের প্রধান যে তোমাদেরকে যাদু শিক্ষা দিয়েছে; শীঘ্রই তোমরা এর পরিণাম জানবে; আমি অবশ্যই তোমাদের হাত এবং তোমাদের পা বিপরীত দিক হতে কর্তন করবো এবং তোমাদের সবাইকে শূলবিদ্ধ করবই।

৫০. তারা বললোঃ কোন ক্ষতি নেই, আমরা আমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তন করবো।

৫১. আমরা আশা করি যে, আমাদের প্রতিপালক আমাদের অপরাধ মার্জনা করবেন, কারণ আমরা মু'মিনদের মধ্যে অগ্রণী।

৫২. আমি মূসা (ﷺ)-এর প্রতি ওহী করেছিলাম এই মর্মেঃ আমার বান্দাদেরকে নিয়ে রাতে বের হয়ে যাও; তোমাদের তো পশাঙ্কাবন করা হবে।

৫৩. অতঃপর ফিরআ'উন শহরে শহরে লোক সংগ্রহকারী পাঠালো,

৫৪. (এই বলেঃ) এরা (বনী ইসরাঈল) ক্ষুদ্র একটি দল।

৫৫. তারা আমাদের ক্রোধ উদ্বেক করেছে।

৫৬. এবং আমরা সকলে সদা সতর্ক।

৫৭. পরিণামে আমি ফিরআ'উন গোষ্ঠীকে বহিস্কৃত করলাম তাদের উদ্যানরাজিও প্রস্রবণ হতে।

قَالَ امْنُكُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَ لَكُمْ
إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمْ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۗ لَا قَطْعَانَ أَيْدِيكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلِيَّتُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا ۚ
أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي
إِنَّكُمْ مُتَّبِعُونَ ۝

فَأرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشُرُذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۝

وَأَنَّهُمْ لَنَا لَعَّائِطُونَ ۝

وَأِنَّا لَجَمِيعٌ حَذِرُونَ ۝

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

৫৮. এবং ধন-ভান্ডার ও সুরম্য
অট্টালিকা হতে ।

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾

৫৯. এইরূপই (ঘটেছিল) এবং বনী
ইসরাঈলকে আমি করেছিলাম তার
অধিকারী ।

كَذَلِكَ طَوَّأَوْنَاهَا بِنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

৬০. তারা সূর্যোদয়কালে তাদের
পশ্চাতে এসে পড়লো ।

فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾

৬১. অতঃপর যখন দু'দল
পরস্পরকে দেখলো তখন মুসা
(ﷺ)-এর সঙ্গীরা বললোঃ আমরা
তো ধরা পড়ে গেলাম ।

فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعَيْنِ قَالَ اصْحَبُ مُوسَى

إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ﴿٦١﴾

৬২. (মুসা ﷺ) বললেনঃ কিছুতেই
নয়! আমার সঙ্গে আছেন আমার
প্রতিপালক, সত্ত্বর তিনি আমাকে
পথ-নির্দেশ করবেন ।

قَالَ كَلَّا ۚ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

৬৩. অতঃপর আমি মুসা (ﷺ)-
এর প্রতি ওহী করলামঃ তোমার লাঠি
দ্বারা সমুদ্রে আঘাত কর, ফলে তা
বিভক্ত হয়ে প্রত্যেক ভাগ বিশাল
পর্বত সদৃশ হয়ে গেল ।

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ط

فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

৬৪. আমি সেখানে উপনীত করলাম
অপর দলটিকে ।

وَأَزَلَيْنَاهُمُ الْآخِرِينَ ﴿٦٤﴾

৬৫. এবং আমি উদ্ধার করলাম মুসা
(ﷺ) ও তার সঙ্গী সকলকে ।

وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾

৬৬. তৎপর নিমজ্জিত করলাম অপর
দলটিকে ।

ثُمَّ أَعْرَفْنَا الْآخِرِينَ ﴿٦٦﴾

৬৭. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছেঃ
কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয় ।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

৬৮. তোমার প্রতিপালক, তিনি
অবশ্যই পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু ।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

৬৯. তাদের নিকট ইবরাহীম
(ﷺ)-এর বৃত্তান্ত বর্ণনা কর ।

وَآتِلْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾

৭০. তিনি যখন তাঁর পিতা ও তার সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা কিসের ইবাদত কর?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٥٠﴾

৭১. তারা বললোঃ আমরা প্রতিমার পূজা করি এবং আমরা নিষ্ঠার সাথে তাদের সম্মানেরত থাকবো।

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا مَّا قَنَظَلْنَا لَهَا عَافِيَةً ﴿٥١﴾

৭২. তিনি বললেনঃ তোমরা প্রার্থনা করলে তারা কি শোনে?

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمُ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٥٢﴾

৭৩. অথবা তারা কি তোমাদের উপকার কিংবা অপকার করতে পারে?

أَوْ يَنْفَعُونَكُمُ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٥٣﴾

৭৪. তারা বললোঃ বরং আমরা আমাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে পেয়েছি এরূপই করতে।

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٥٤﴾

৭৫. তিনি বললেনঃ তোমরা কি সেগুলো সম্বন্ধে ভেবে দেখেছো, যেগুলোর পূজা করছো?

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٥٥﴾

৭৬. তোমরা এবং তোমাদের পূর্ব-পুরুষরা?

أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ﴿٥٦﴾

৭৭. তারা সবাই আমার শত্রু, জগতসমূহের প্রতিপালক ব্যতীত।

فَأَنَّهُمْ عَدُوِّيَ إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٧﴾

৭৮. তিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন তিনিই আমাকে পথ প্রদর্শন করেন।

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٥٨﴾

৭৯. তিনিই আমাকে দান করেন আহাৰ্য ও পানীয়।

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٥٩﴾

৮০. এবং রোগাক্রান্ত হলে তিনিই আমাকে রোগমুক্ত করেন।

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٦٠﴾

৮১. আর তিনিই আমার মৃত্যু ঘটাবেন, অতঃপর আমাকে পুনর্জীবিত করবেন।

وَالَّذِي يُبَيِّتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٦١﴾

৮২. আশা করি তিনি কিয়ামত দিবসে আমার অপরাধসমূহ মার্জনা করে দিবেন।

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٦٢﴾

৮৩. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে প্রজ্ঞা দান করুন এবং সংকর্ম পরায়ণদের সাথে আমাকে মিলিয়ে দিন।

৮৪. আমাকে পরবর্তীদের মধ্যে সত্যভাষী করুন।

৮৫. এবং আমাকে সুখময় জান্নাতের অধিকারীদের অন্তর্ভুক্ত করুন!

৮৬. আর আমার পিতাকে ক্ষমা করুন, সে তো পথভ্রষ্টদের অন্তর্ভুক্ত ছিল।

৮৭. এবং আমাকে লালিত্বিত করবেন না পুনরুত্থান দিবসে।

৮৮. যেদিন ধন-সম্পদ ও সম্ভান-সম্ভতি কোন কাজে আসবে না।

৮৯. সেদিন উপকৃত হবে শুধু সে, যে আল্লাহর নিকট আসবে বিশুদ্ধ অন্তঃকরণ নিয়ে।

৯০. মুত্তাকীদের নিকটবর্তী করা হবে জান্নাত।

৯১. এবং পথভ্রষ্টদের জন্য উন্মোচিত করা হবে জাহান্নাম।

৯২. তাদেরকে বলা হবেঃ তারা কোথায়— তোমরা যাদের ইবাদত করতেন?

৯৩. আল্লাহর পরিবর্তে? তারা কি তোমাদের সাহায্য করতে পারে অথবা তারা কি আত্মরক্ষা করতে সক্ষম?

৯৪. অতঃপর তাদেরকে ও পথভ্রষ্টদেরকে অধোমুখী করে জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে।

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحَقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾

وَجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾

وَجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾

وَاعْفِرْ لِي إِنِّي كَانُ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾

إِلَّا مَنْ آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾

وَأُزْفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾

وَبُورَّتِ الْجَحِيمُ لِلْغُورِينَ ﴿٩١﴾

وَقِيلَ لَهُمْ آيِنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾

فَلْيَكُفُّوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾

৯৫. এবং ইবলীসের বাহিনীর সকলকে।

وَجُنُودَ إِبْلِيسَ اجْعُونَ ٩٥

৯৬. তারা সেখানে বিতর্কে লিপ্ত হয়ে বলবে—

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ٩٦

৯৭. আল্লাহর শপথ! আমরা তো স্পষ্ট বিভ্রান্তিতেই ছিলাম।

تَاللَّهِ إِنَّ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ٩٧

৯৮. যখন আমরা তোমাদেরকে জগতসমূহের প্রতিপালকের সমকক্ষ মনে করতাম।

إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ٩٨

৯৯. আমাদেরকে দুষ্কৃতিকারীরাই বিভ্রান্ত করেছিল।

وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ٩٩

১০০. পরিণামে আমাদের কোন সুপারিশকারী নেই।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ١٠٠

১০১. কোন সহদয় বন্ধু ও নেই।

وَلَا صَدِيقٍ حَبِيبٍ ١٠١

১০২. হায়, যদি আমাদের একবার প্রত্যাবর্তনের সুযোগ ঘটতো তাহলে আমরা মু'মিনদের অন্তর্ভুক্ত হতাম।

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ١٠٢

১০৩. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশ মু'মিন নয়।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ١٠٣

১০৪. তোমার প্রতিপালক, তিনি তো পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَلَنَّ رَبَّكَ لَهْوَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ١٠٤

১০৫. নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায় রাসূলদের প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ١٠٥

১০৬. যখন তাদের ভ্রাতা নূহ (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি সাবধান হবে না?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ١٠٦

১০৭. আমি নিশ্চয়ই তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ١٠٧

১০৮. অতএব আল্লাহকে ভয় কর ও আমার আনুগত্য কর।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ١٠٨

১০৯. আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না; আমার পুরস্কার তো জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকটই আছে।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

১১০. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١١٠﴾

১১১. তারা বললোঃ আমরা কি তোমার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করবো অথচ নিচু শ্রেণীর লোকেরা তোমার অনুসরণ করছে?

قَالُوا أَنْتُمْ مِنْ لَكَ وَاسْتَبَعَكَ الْأَرْدَلُونَ ﴿١١١﴾

১১২. (নূহ عليه السلام) বললেনঃ তারা কি করতো তা আমার জানা নেই।

قَالَ وَمَا عَلَيَّ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

১১৩. তাদের হিসাব গ্রহণ আমার প্রতিপালকেরই কাজ; যদি তোমরা বুঝতে।

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

১১৪. মু'মিনদেরকে তাড়িয়ে দেয়া আমার কাজ নয়।

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

১১৫. আমি শুধু একজন সম্পষ্ট সতর্ককারী।

إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾

১১৬. তারা বললোঃ হে নূহ عليه السلام! তুমি যদি বিরত না হও তবে তুমি অবশ্যই প্রস্তরাঘাত প্রাণ্ডদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنْتَهَ يَنْوُحْ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

১১৭. (নূহ عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার সম্প্রদায় আমাকে অস্বীকার করছে।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

১১৮. সুতরাং আমার ও তাদের মধ্যে সম্পষ্ট মীমাংসা করে দিন এবং আমাকে ও আমার সাথে যেসব মু'মিন আছে তাদেরকে রক্ষা করুন।

فَأَفْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

১১৯. অতঃপর আমি তাকে ও তার সঙ্গে যারা বোঝাই নৌ-যানে ছিল তাদেরকে রক্ষা করলাম।

فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِّ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾

১২০. তৎপর অবশিষ্ট সবাইকে নিমজ্জিত করলাম।

ثُمَّ أَعْرَقْنَا بَعْدَ الْبَاقِينَ ۝۱۲ۦ

১২১. এতে অবশ্যই রয়েছে নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাসী নয়।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝۱۲ۧ

১২২. এবং তোমার প্রতিপালক, তিনিই যিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝۱۲ۨ

১২৩. আ'দ সম্প্রদায় রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ ۝۱۲۩

১২৪. যখন তাদের ভ্রাতা হূদ (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি সাবধান হবে না?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝۱۲۪

১২৫. আমি তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝۱۲۫

১২৬. অতএব, তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝۱۲۬

১২৭. আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না, আমার পুরস্কার জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকট রয়েছে।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝۱۲ۭ

১২৮. তোমরা কি প্রতিটি উচ্চ স্থানে স্মৃতি স্তম্ভ নির্মাণ করছো নিরর্থক?

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ۝۱۲ۮ

১২৯. আর তোমরা প্রাসাদ নির্মাণ করছো এই মনে করে যে, তোমরা চিরস্থায়ী হবে।

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ۝۱۲ۯ

১৩০. এবং যখন তোমরা (অন্য কারো উপর) আঘাত হান তখন আঘাত হেনে থাকো কঠোরভাবে।

وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ جَبَّارِينَ ۝۱۳০

১৩১. তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, আমার আনুগত্য কর।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝۱৩১

১৩২. ভয় কর তাকে যিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন সেই সমুদয় বস্তুসমূহ যা তোমরা জান।

১৩৩. তোমাদেরকে দিয়েছেন চতুঃপদ জন্তু ও সন্তান-সন্ততি।

১৩৪. এবং উদ্যান ও ঝর্ণাধারা।

১৩৫. আমি তোমাদের জন্যে আশঙ্কা করি মহা দিবসের শাস্তির।

১৩৬. তারা বললোঃ তুমি উপদেশ দাও অথবা না-ই দাও, উভয়ই আমাদের জন্যে সমান।

১৩৭. এটাতো পূর্ববর্তীদেরই স্বভাব।

১৩৮. আমরা শাস্তি প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত নই।

১৩৯. অতঃপর তারা তাকে প্রত্যাখ্যান করলো এবং আমি তাদেরকে ধ্বংস করলাম, এতে অবশ্যই আছে নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

১৪০. এবং তোমার প্রতিপালক, তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

১৪১. সামূদ সম্প্রদায় রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

১৪২. যখন তাদের ভ্রাতা সালেহ (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

১৪৩. আমি তো তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

১৪৪. অতএব তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

১৪৫. আমি তোমাদের নিকট এজন্য কোন প্রতিদান চাই না, আমার

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْمُونَ ﴿٣٢﴾

أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامِهِ وَبَنِينَ ﴿٣٣﴾

وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٣٤﴾

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ

مِنَ الْوَاعِظِينَ ﴿٣٦﴾

إِنَّ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٧﴾

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٨﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ﴿٣٩﴾

وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٤٠﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤١﴾

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٤٢﴾

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ ضَلِحُ الْأَا تَتَّقُونَ ﴿٤٣﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿٤٤﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ﴿٤٥﴾

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى

পুরস্কার জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকটই আছে।

رَبِّ الْعَالَمِينَ ۞

১৪৬. তোমাদেরকে কি নিরাপদে ছেড়ে দেয়া হবে, যা এখানে (দুনিয়ায়) আছে তাতে—

أَتَرْكُونَ فِي مَا هُمْ مَأْمُونِينَ ۞

১৪৭. উদ্যান, বার্ণাধারায় সমূহে

فِي جَنَّاتٍ وَعَيْوُنٍ ۞

১৪৮. ও শস্যক্ষেত্রে এবং সুকোমল গুচ্ছ বিশিষ্ট খেজুর বাগানসমূহে?

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلَعَتْ هُضَيْمٌ ۞

১৪৯. তোমরা নৈপুণ্যের সাথে পাহাড় কেটে গৃহ নির্মাণ করছো।

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَرَاهِينَ ۞

১৫০. তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমার আনুগত্য কর।

فَأَتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۞

১৫১. এবং সীমালঙ্ঘনকারীদের আদেশ মান্য করো না।

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ السُّرُوفِينَ ۞

১৫২. যারা পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করে এবং শান্তি স্থাপন করে না।

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۞

১৫৩. তারা বললোঃ তুমি যাদুগ্রন্থদের অন্যতম।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۞

১৫৪. তুমি তো আমাদের মত একজন মানুষ, কাজেই তুমি যদি সত্যবাদী হও তবে একটি নিদর্শন উপস্থিত কর।

مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ

مِنَ الصَّادِقِينَ ۞

১৫৫. সালেহ (عليه السلام) বললেনঃ এই যে উষ্ট্রী, এর জন্যে আছে পানি পানের পালা এবং তোমাদের জন্যে আছে পানি পানের পালা, নির্ধারিত একদিনে।

قَالَ هَذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شَرْبٌ وَلَكُمْ شَرْبٌ يَوْمَ

مَعْلُومٍ ۞

১৫৬. এবং তোমরা ওর কোন অনিষ্ট সাধন করো না; করলে মহাদিবসের শাস্তি তোমাদের উপর আপতিত হবে।

وَلَا تَسْؤُهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۞

১৫৭. কিন্তু তারা ওকে হত্যা করলো,
পরিণামে তারা অনুতপ্ত হলো।

فَعَقَرُوهَا فَاصْبَحُوا نَادِمِينَ ﴿٥٧﴾

১৫৮. অতঃপর শাস্তি তাদেরকে গ্রাস
করলো, এতে অবশ্যই নিদর্শন
রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই
মু'মিন ছিল না।

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ط
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٥٨﴾

১৫৯. তোমার প্রতিপালক, তিনি তো
পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٥٩﴾

১৬০. লূত (عليه السلام)-এর কওম
রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٠﴾

১৬১. যখন তাদের ভ্রাতা লূত
তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি
(আল্লাহকে) ভয় করবে না?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦١﴾

১৬২. আমি তো তোমাদের জন্যে
এক বিশ্বস্ত রাসূল।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿٦٢﴾

১৬৩. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয়
কর এবং আমার আনুগত্য কর।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿٦٣﴾

১৬৪. আমি এর জন্যে তোমাদের
নিকট কোন প্রতিদান চাই না, আমার
পুরস্কার তো জগতসমূহের প্রতি-
পালকের নিকটই রয়েছে।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٤﴾

১৬৫. (জৈবিক চাহিদার জন্য)
তোমরা কি দুনিয়ার পুরুষগুলোর
কাছেই যাও,

أَتَاتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٦٥﴾

১৬৬. আর তোমাদের প্রতিপালক
তোমাদের জন্যে যে স্ত্রীলোক সৃষ্টি
করেছেন তাদেরকে তোমরা বর্জন
করছ? বরং তোমরা সীমা-
লঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

وَتَدْرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ط
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿٦٦﴾

১৬৭. তার বললোঃ হে লূত
(عليه السلام)! তুমি যদি বিরত না হও
তবে অবশ্যই তুমি নির্বাসিত হবে।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهَ يَلُوطُ لَنَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿٦٧﴾

১৬৮. লূত (عليه السلام) বললেনঃ আমি তোমাদের এ কর্মকে ঘৃণা করি।

قَالَ إِنِّي لِعِبَابِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ١٦

১৬৯. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে ও আমার পরিবারবর্গকে, তারা যা করে তা হতে রক্ষা কর।

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ١٧

১৭০. অতঃপর আমি তাকে এবং তার পরিবার-পরিজন সবাইকে রক্ষা করলাম।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ١٨

১৭১. এক বৃদ্ধা ব্যতীত, সে ছিল পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ١٩

১৭২. অতঃপর অপর সবাইকে ধ্বংস করলাম।

ثُمَّ دَمَرْنَا الْأَخْرِينَ ٢٠

১৭৩. এবং তাদের উপর (শাস্তি মূলক) বৃষ্টি বর্ষণ করেছিলাম, তাদের জন্যে এই বৃষ্টি ছিল কত নিকৃষ্ট! যাদেরকে ভীতিপ্রদর্শন করা হয়েছিল।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ٢١

১৭৪. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ٢٢

১৭৫. নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক, তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ٢٣

১৭৬. আয়কাবাসীরা (মাদইয়ানের অধিবাসী) রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

كَذَّبَ أَصْحَابُ آلِ يُثْرَةَ الْمُرْسَلِينَ ٢٤

১৭৭. যখন শু'আইব (عليه السلام) তাদেরকে বলেছিলেনঃ তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ٢٥

১৭৮. আমি তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ٢٦

১৭৯. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমার আনুগত্য কর।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ٢٧

১৮০. আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না; আমার পুরস্কার জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকটই আছে।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

১৮১. তোমরা মাপে পূর্ণ মাত্রায় দেবে; যারা মাপে ঘাটতি করে তাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝

১৮২. এবং তোমরা ওজন করবে সঠিক দাঁড়ি-পাল্লায়।

وَزِنُوا بِالْقِسْطِ أَسْبَغِ الْمُسْتَقِيمِ ۝

১৮৩. লোকদেরকে তাদের প্রাপ্ত বস্তু কম দিবে না এবং পৃথিবীতে বিপর্যয় ঘটাবে না।

وَلَا تَبْخُسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ۝

১৮৪. এবং তোমরা ভয় কর তাঁকে যিনি তোমাদেরকে এবং তোমাদের পূর্বে যারা গত হয়েছে তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন।

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِيلَ الْأَوَّلِينَ ۝

১৮৫. তারা বললোঃ তুমি তো যাদুগ্রন্থদের অন্তর্ভুক্ত।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝

১৮৬. তুমি আমাদেরই মত একজন মানুষ, আমরা মনে করি, তুমি মিথ্যাবাদীদের অন্তর্ভুক্ত।

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَطَّلُكَ لَإِنْ
الْكَاذِبِينَ ۝

১৮৭. তুমি যদি সত্যবাদী হও তবে আকাশের একখন্ড আমাদের উপর ফেলে দাও।

فَأَسْقُطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

১৮৮. তিনি বললেনঃ আমার প্রতিপালক ভাল জানেন যা তোমরা কর।

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

১৮৯. অতঃপর তারা তাকে প্রত্যাখ্যান করলো, পরে তাদেরকে মেঘাচ্ছন্ন দিবসের শাস্তি প্রাস করলো; এটা তো ছিল এক ভীষণ দিবসের শাস্তি!

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابٌ يَوْمَ الظُّلَّةِ ۝
إِنَّهُ كَانَ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

১৯০. এতে অবশ্যই রয়েছে নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾

১৯১. এবং নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক, তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

১৯২. নিশ্চয়ই ওটা (আল-কুরআন) জগতসমূহের প্রতিপালক হতে অবতারিত।

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾

১৯৩. জিবরাঈল (الجنّات) এটা নিয়ে অবতরণ করেছেন।

نَزَّلَ بِهِ الرُّوحَ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾

১৯৪. তোমার হৃদয়ে, যাতে তুমি সতর্ককারী হতে পার।

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾

১৯৫. অবতীর্ণ করা হয়েছে সুস্পষ্ট আরবী ভাষায়।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾

১৯৬. পরবর্তীদের কিতাবসমূহে অবশ্যই এর উল্লেখ আছে।

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾

১৯৭. বানী ইসরাঈলের পণ্ডিতরা এটা অবগত আছে— এটা কি তাদের জন্যে নিদর্শন নয়?

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾

১৯৮. আমি যদি এটা কোন অনারবের প্রতি অবতীর্ণ করতাম,

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

১৯৯. এবং ওটা সে তাদের নিকট পাঠ করতো, তবে তারা তাতে ঈমান আনতো না।

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾

২০০. এভাবে আমি অপরাধীদের অন্তরে তা (অবিশ্বাস) সঞ্চার করেছি।

كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾

২০১. তারা এতে ঈমান আনবে না যতক্ষণ না তারা পীড়াদায়ক শাস্তি প্রত্যক্ষ করে।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾

২০২. ফলে এটা তাদের নিকট এসে পড়বে আকস্মিকভাবে, তারা কিছুই বুঝতে পারবে না।

فِيَأْتِيهِمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾

২০৩. তখন তারা বলবেঃ
আমাদেরকে কি অবকাশ দেয়া হবে?

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

২০৪. তারা কি তবে আমার শাস্তির
ব্যাপারে তাড়াছড়া করছে।

أَفِعْدَا إِنَّا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾

২০৫. তুমি কিছু ভেবে দেখেছ? যদি
আমি তাদেরকে দীর্ঘকাল ভোগ-
বিলাস করতে দিই,

أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾

২০৬. এবং পরে তাদেরকে যে
বিষয়ে সতর্ক করা হয়েছিল তা
তাদের নিকট এসে পড়ে,

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾

২০৭. তখন তাদের ভোগ-বিলাসের
উপকরণ তাদের কোন কাজে আসবে
না?

مَا آغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَسْتَعْوُونَ ﴿٢٠٧﴾

২০৮. আমি এমন কোন জনপদ
ধ্বংস করিনি যার জন্যে সতর্ককারী
ছিল না।

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾

২০৯. এটা উপদেশ স্বরূপ, আর
আমি কখনও অত্যাচারী নই।

ذِكْرِي ۗ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٠٩﴾

২১০. শয়তানরা এ নিয়ে
(কুরআনসহ) অবতীর্ণ হয়নি।

وَمَا تَزَلَّتْ بِهِ الشَّيْطَانُ ﴿٢١٠﴾

২১১. তারা এ কাজের যোগ্য নয়
এবং তারা এর সামর্থ্যও রাখে না।

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾

২১২. তাদেরকে তো শ্রবণের সুযোগ
হতে দূরে রাখা হয়েছে।

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعَزُونَ ﴿٢١٢﴾

২১৩. অতএব তুমি অন্য কোন
মাবুদকে আল্লাহর সাথে ডেকো না,
ডাকলে তুমি শাস্তি প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত
হবে।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونَ
مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾

২১৪. তোমার নিকটাত্মীয়বর্গকে
সতর্ক করে দাও।

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾

১। (আব্দুল্লাহ) ইবনে আকাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, “তোমরা নিকটাত্মীয় এবং তাদের মধ্যেও বিশেষ করে নিজের গোত্রকে সাবধান করে দাও।” (সূরা শুআ'রাঃ ২১৪) আয়াতটি নাযিল হলে রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বের হয়ে সাফা পাহাড়ে গিয়ে উঠলেন এবং “ইয়া

২১৫. একই যারা তোমার অনুসরণ করে সেই সব মু'মিনের প্রতি নম্র ব্যবহার কর।

وَإِخْفُضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾

২১৬. তারা যদি তোমার অবাধ্যতা করে তবে তুমি বলোঃ তোমরা যা কর তার জন্যে আমি দায়ী নই।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿١٦﴾

২১৭. তুমি নির্ভর কর পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু আল্লাহর উপর।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿١٧﴾

২১৮. যিনি তোমাকে দেখেন যখন তুমি দস্তায়মান হও (নামাযের জন্য)।

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿١٨﴾

২১৯. এবং দেখেন সিজদাকারীদের সাথে তোমার উঠা-বসা।

وَتَقَلِّبُكَ فِي السُّجُودِ ﴿١٩﴾

২২০. তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٠﴾

২২১. তোমাদেরকে কি জানাবো কার নিকট শয়তানরা অবতীর্ণ হয়?

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١﴾

২২২. তারা তো অবতীর্ণ হয় প্রত্যেকটি ঘোর মিথ্যাবাদী ও পাপীর নিকট।

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢﴾

২২৩. তারা কান পেতে থাকে এবং তাদের অধিকাংশই মিথ্যাবাদী।

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٣﴾

২২৪. এবং কবিদের অনুসরণ করে তারা যারা বিভ্রান্ত।

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٤﴾

সাবাহাহ' (সকাল বেলায় বিপদ, সাবধান) বলে চিৎকার করে ডাকলেন। সবাই সচকিত হয়ে বলে উঠলো, এভাবে কে ডাকছে? তারপর সবাই তাঁর পাশে গিয়ে সমবেত হলো তিনি বললেনঃ আচ্ছা, আমি যদি এখন তোমাদেরকে বলি যে, এ পাহাড়ের অপর দিক থেকে একটি অশ্বারোহী সৈন্যবাহিনী আক্রমণের জন্য প্রস্তুত হয়ে আছে, তাহলে কি তোমরা আমাকে বিশ্বাস করবে? সমবেত সবাই বললো, আপনার ব্যাপারে আমাদের মিথ্যার অভিজ্ঞতা নাই। তখন তিনি বললেনঃ আমি তোমাদেরকে একটি কঠিন আযাব সম্পর্কে সাবধান করে দিচ্ছি। এ কথা শুনে আবু লাহাব বললো, তোমার অকল্যাণ হোক। তুমি কি এ জন্যই আমাদেরকে সমবেত করেছে? এরপর সে সেখান থেকে চলে গেল। তখন নাযিল হলো- "আবু লাহাবের হাত ভেঙে গিয়েছে।" (সূরা লাহাবঃ ১) ঐ সময় আ'মাশ আয়াতটিতে 'তাক্বা' শব্দের পূর্বে 'কাদ' শব্দ যোগ করে 'ওয়াকাদ তাক্বা' পড়েছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৯৭১)

২২৫. তুমি কি দেখো না তারা বিভ্রান্ত হয়ে (কল্পনার জগতে) প্রত্যেক উপত্যকায় ঘুরে বেড়ায়?

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٥﴾

২২৬. এবং তারা বলে যা তারা করে না।

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٦﴾

২২৭. কিন্তু তারা ব্যতীত যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে এবং আল্লাহকে বারবার স্মরণ করে ও অত্যাচারিত হবার পর প্রতিশোধ গ্রহণ করে।^১ অত্যাচারিরা শীঘ্রই জানবে তাদের গন্তব্যস্থল কোথায়!

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا أُولَٰئِكَ سَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٧﴾

সূরাঃ নামূল, মাক্কী

(আয়াতঃ ৯৩, রুকূ'ঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُورَةُ النَّملِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٩٣ رُكُوعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. ত্বোয়া-সীন, এগুলো আল-কুরআনের এবং সুস্পষ্ট কিতাবের আয়াত।

طَسَّاتِ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿١﴾

২. পথ নির্দেশ ও সুসংবাদ মু'মিনদের জন্যে।

هُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾

৩. যারা নামায কায়েম করে ও যাকাত দেয় আর তারাই আখিরাতে নিশ্চিত বিশ্বাসী।

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٣﴾

৪. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তাদের দৃষ্টিতে তাদের কর্মকে আমি শোভনীয় করেছি, ফলে তারা বিভ্রান্তিতে ঘুরে বেড়ায়।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٤﴾

১। মু'মিন কবি, বিপক্ষের সমালোচনার জবাব কবিতার মাধ্যমে প্রদান করেছিলেন। যেমন কবি হাস্‌সান ইবনে সাবিত (রাযিআল্লাহু আনহু) করেছিলেন।

৫. এদেরই জন্যে আছে কঠিন শাস্তি এবং এরাই আখিরাতে সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত।

৬. নিশ্চয়ই তোমাকে আল-কুরআন দেয়া হচ্ছে প্রজ্ঞাময়, সর্বজ্ঞের নিকট হতে।

৭. স্মরণ কর সেই সময়ের কথা, যখন মুসা (عليه السلام) তার পরিবারবর্গকে বলেছিলেনঃ আমি আশুন দেখেছি, সত্ত্বর আমি সেখান হতে তোমাদের জন্যে কোন খবর আনবো অথবা তোমাদের জন্যে আনবো জ্বলন্ত অঙ্গুর যাতে তোমরা আশুন পোহাতে পার।

৮. অতঃপর তিনি যখন ওর নিকট আসলেন, তখন ঘোষিত হলোঃ বরকতময় সে যে আছে এই অগ্নির মধ্যে এবং যারা আছে ওর চতুর্পার্শ্বে, জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহ পবিত্র ও মহিমান্বিত।

৯. হে মুসা (عليه السلام)! আমিই আল্লাহ, পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

১০. তুমি তোমার লাঠি নিক্ষেপ কর, অতঃপর যখন তিনি লাঠিকে সর্পের ন্যায় ছুটাছুটি করতে দেখলেন তখন তিনি পিছনের দিকে ছুটতে লাগলেন এবং ফিরেও তাকালেন না; হে মুসা (عليه السلام)! ভীত হয়ো না, নিশ্চয়ই আমি এমন, আমার সান্নিধ্যে রাসূলগণ ভয় পান না।

১১. তবে যারা যুলুম করার পর মন্দ-কর্মের পরিবর্তে সৎকর্ম করে তাদের প্রতি আমি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْأُخْرَةِ
هُمْ الْأَخْسَرُونَ ﴿٥﴾

وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٦﴾

إِذْ قَالَ مُوسَى لِأَهْلِيهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَاءَتِ بَيْنَكُمْ
مِنْهَا يَخَبِرُ أَوْ آتِيكُمْ بِشَهَابٍ فَبَيْسَ لَعَلَّكُمْ
تَصْطَلُونَ ﴿٧﴾

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ
وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحٰنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨﴾

يُوسَى إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

وَأَلْقَ عَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ
وَلَّى مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يٰيُوسَى لَا تَخَفْ
إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَائِيَ الْيُرْسُولُونَ ﴿١٠﴾

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ
فَإِنِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١﴾

১২. এবং তোমার হাত তোমার বক্ষপার্শ্বে মধ্যে প্রবেশ করাও; এটা বের হয়ে কোনরূপ অনিষ্টতা ছাড়া আসবে শুভ্রোজ্জল হয়ে; এটা ফিরাউন ও তার সম্প্রদায়ের নিকট আনীত নয়টি নিদর্শনের অন্তর্গত; তারা তো দুর্কর্ম পরায়ণ লোক।

১৩. অতঃপর যখন তাদের নিকট আমার স্পষ্ট নিদর্শন আসলো তখন তারা বললোঃ এটা সুস্পষ্ট যাদু।

১৪. তারা অন্যায় ও উদ্ধতভাবে নিদর্শনগুলো প্রত্যাখ্যান করলো; যদিও তাদের অন্তর এগুলোকে সত্য বলে গ্রহণ করেছিল। দেখো, বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণাম কি হয়েছিল।

১৫. আমি অবশ্যই দাউদ (عليه السلام)-কে ও সুলাইমান (عليه السلام)-কে জ্ঞান দান করেছিলাম এবং তাঁরা বলেছিলেনঃ সমস্ত প্রশংসা আল্লাহর যিনি আমাদেরকে তাঁর বহু মু'মিন বান্দাদের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছেন।

১৬. সুলাইমান (عليه السلام) হয়েছিলেন দাউদ (عليه السلام)-এর উত্তরাধিকারী এবং তিনি বলেছিলেনঃ হে মানুষ! আমাদেরকে পাখীসমূহের ভাষা শিক্ষা দেয়া হয়েছে এবং আমাদেরকে সবকিছু হতে দেয়া হয়েছে; এটা অবশ্যই সুস্পষ্ট অনুগ্রহ।

১৭. সুলাইমান (عليه السلام)-এর সামনে সমবেত করা হলো তাঁর বাহিনীকে-জিন, মানুষ ও পাখীসমূহকে এবং তাদেরকে বিন্যস্ত করা হলো বিভিন্ন দলে।

وَادْخُلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجَ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ
سَوَاءٍ قَفِي فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ط إِنَّهُمْ
كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ١٢

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا
سِحْرٌ مُؤْتَمِنٌ ١٣

وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا
وَعُلُوًّا ط فَأَنْظِرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ١٤

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ۖ وَقَالَ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ
عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ١٥

وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ
عَلَّمْنَا مَنَاطِقَ الطَّيْرِ وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ط
إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْبُيِّنُ ١٦

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ
وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ١٧

১৮. যখন তারা পিপীলিকা অধ্যুষিত উপত্যকায় পৌছলো তখন এক পিপীলিকা বললোঃ হে পিপীলিকা বাহিনী! তোমরা তোমাদের গৃহে প্রবেশ কর, যেন সুলাইমান এবং তার বাহিনী তাদের অজ্ঞাতসারে তোমাদেরকে পদতলে পিষে না ফেলে।

১৯. সুলাইমান (عليه السلام) ওর উজ্জ্বিত মৃদু হাসলেন এবং বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে সামর্থ্য দিন যাতে আমি আপনার প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করতে পারি, আমার প্রতি ও আমার পিতা-মাতার প্রতি আপনি যে অনুগ্রহ করেছেন তার জন্যে এবং যাতে আমি সৎকর্ম করতে পারি, যা আপনি পছন্দ করেন এবং আপনার অনুগ্রহে আমাকে আপনার সৎকর্মপায়ণ বান্দাদের শ্রেণীভুক্ত করুন!

২০. সুলাইমান (عليه السلام) পাখীসমূহের সন্ধান নিলেন এবং বললেনঃ ব্যাপার কি? হৃদহৃদকে দেখছি না যে! সে অনুপস্থিত না কি?

২১. সে উপযুক্ত কারণ না দর্শালে আমি অবশ্যই তাকে কঠিন শাস্তি দিবো অথবা যবাহ করে ফেলবো।

২২. (তখন) সে সন্নিহতেই ছিল এবং বললোঃ আপনি যা অবগত নন আমি তা অবগত হয়েছি এবং সাবা হতে সুনিশ্চিত সংবাদ নিয়ে এসেছি।

২৩. আমি এক নারীকে দেখলাম যে সে তাদের উপর রাজত্ব করছে;

حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ ۖ قَالَتْ نَمْلَةٌ
يَأَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطَبُكُمْ
سُلَيْمٰنُ وَجُنُودُهُ ۗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ
وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي
بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهَدْيَ ۚ
أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٠﴾

لَأَعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَا أَدْرِي
أَوْ لِيَأْتِنِي رَسُولٌ مِّن رَّبِّي ﴿٢١﴾

فَكَتَّ غَيْرَ بِعِيدٍ فَقَالَ أَحَطَّتْ بِمَا لَمْ تَحِطُ بِهِ
وَإِنَّكَ مِنْ سَبِيلِ رَبِّكَ يَقِينٌ ﴿٢٢﴾

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ

তাকে সবকিছু দেয়া হয়েছে এবং তার আছে এক বিরাট সিংহাসন।

كُلِّ شَيْءٍ وَوَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿١٧﴾

২৪. আমি তাকে ও তার সম্প্রদায়কে দেখলাম তারা আল্লাহর পরিবর্তে সূর্যকে সিজদা করছে; শয়তান তাদের কার্যাবলী তাদের নিকট শোভন করেছে এবং তাদেরকে সৎপথ হতে বিরত করেছে; ফলে তারা সৎপথ পায় না।

وَجَدْتُهُمْ وَاقِفَةً يُسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَرَبِّينَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْبَاءُ لَهُمْ فَصَدَّاهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿١٨﴾

২৫. বিরত করেছে এই জন্যে যে, তারা যেন সিজদা না করে আল্লাহকে যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর লুকায়িত বস্তুকে প্রকাশ করেন, যিনি জানেন, যা তোমরা গোপন কর এবং যা তোমরা ব্যক্ত কর।

أَلَا يَسْجُدُونَ لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْغَبَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾

২৬. আল্লাহ, তিনি ছাড়া কোন সত্য মাবুদ নেই, তিনি মহা আরশের অধিপতি।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٠﴾

২৭. (সুলাইমান عليه السلام) বললেনঃ আমি দেখবো তুমি কি সত্য বলেছো, না তুমি মিথ্যাবাদী?

قَالَ سَنْظُرُ أَصْدَقَتْ أَمْ كُنْتِ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢١﴾

২৮. তুমি যাও আমার এই পত্র নিয়ে এবং এটা তাদের নিকট অর্পণ কর; অতঃপর তাদের নিকট হতে সরে থেকেও এবং লক্ষ্য করো তাদের প্রতিক্রিয়া কি?

إِذْ هَبَّ بِكَيْتِي هَذَا فَالَقَهُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى عَنْهُمْ فَانظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٢﴾

২৯. সেই নারী বললোঃ হে পরিষদবর্গ! আমাকে এক সম্মানিত পত্র দেয়া হয়েছে।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ﴿٢٣﴾

৩০. এটা সুলাইমান عليه السلام-এর নিকট হতে এবং এটা এই দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে,

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٢٤﴾

৩১. অহমিকা বশে আমাকে অমান্য
করো না এবং আনুগত্য স্বীকার করে
আমার নিকট উপস্থিত হও।

أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣١﴾

৩২. তিনি (বিলকিস) বললেনঃ হে
পরিষদবর্গ! আমার এ সমস্যায়
তোমরা পরামর্শ দাও; আমি যা
সিদ্ধান্ত করি তা তো তোমাদের
উপস্থিতিতেই করি।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ
قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿٣٢﴾

৩৩. তারা বললোঃ আমরা তো
শক্তিশালী ও কঠোর যোদ্ধা; তবে
সিদ্ধান্ত গ্রহণের ক্ষমতা আপনারই,
কি আদেশ করবেন তা আপনি ভেবে
দেখুন।

قَالُوا نَحْنُ أَوْلَىٰ بِقُوَّةٍ وَأُولُوا بَأْسٍ شَدِيدٍ
وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٣﴾

৩৪. তিনি বললেনঃ রাজা-বাদশাহরা
যখন কোন জনপদে প্রবেশ করেন
তখন ওকে বিপর্যস্ত করে দেন এবং
তথাকার মর্যাদাবান ব্যক্তিদেরকে
অপদস্থ করেন; এরাও এইরূপই
করবে।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَ
جَعَلُوا أَعْدَاءَ أَهْلِهَا أَذَلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾

৩৫. আমি তাদের নিকট উপটোকন
পাঠাচ্ছি; দেখি, দূতেরা কি উত্তর
নিয়ে ফিরে আসে!

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرُهُمْ بِمَا يَرْجِعُ
الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. অতঃপর যখন দূত সুলাইমান
(ﷺ)-এর নিকট আসলো তখন
সুলাইমান (ﷺ) বললেনঃ তোমরা
কি আমাকে ধন-সম্পদ দিয়ে সাহায্য
করছো? আল্লাহ আমাকে যা
দিয়েছেন তা তোমাদেরকে যা
দিয়েছেন তা হতে উৎকৃষ্ট; বরং
তোমরা তোমাদের উপটোকন নিয়ে
সন্তুষ্ট থাকো।

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمٰن قَالَ أَتَيْدُ وَنِن بِسَالٍ فَمَا
أَنْزَلَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا أَنْتُمْ بِلِ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ
تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾

৩৭. তাদের নিকট ফিরে যাও, আমি
অবশ্যই তাদের বিরুদ্ধে নিয়ে

أَرْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ

আসবো এক সৈন্যবাহিনী যার মুকাবিলা করবার শক্তি তাদের নেই। আমি অবশ্যই তাদেরকে তথা হতে বহিষ্কার করবো লাঞ্ছিতভাবে এবং তারা হবে অবনমিত।

৩৮. সুলাইমান (عليه السلام) আরো বললেনঃ হে আমার পরিষদবর্গ! তারা আত্মসমর্পণ করে আমার নিকট আসার পূর্বে তোমাদের মধ্যে কে তার সিংহাসন আমার নিকট নিয়ে আসবে?

৩৯. এক শক্তিশালী জ্বিন বললোঃ আপনি আপনার স্থান হতে উঠবার পূর্বে আমি ওটা আপনার নিকট এনে দিবো এবং এই ব্যাপারে আমি অবশ্যই ক্ষমতাবান, বিশ্বস্ত।

৪০. কিতাবের জ্ঞান যার ছিল, সে বললোঃ আপনি চক্ষুর পলক ফেলবার পূর্বেই আমি ওটা আপনাকে এনে দিবো। সুলাইমান (عليه السلام) যখন ওটা সামনে রক্ষিত অবস্থায় দেখলেন তখন তিনি বললেনঃ এটা আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ, যাতে তিনি আমাকে পরীক্ষা করতে পারেন, আমি কৃতজ্ঞ না অকৃতজ্ঞ; যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে, সে তা করে নিজের কল্যাণের জন্যে এবং যে অকৃতজ্ঞ হয়, সে জেনে রাখুক যে, আমার প্রতিপালক অভাবমুক্ত মহানুভব।

৪১. সুলাইমান বললেনঃ তার সিংহাসনের আকৃতি বদলিয়ে দাও; দেখি সে সঠিক দিশা পাচ্ছে, না সে বিভ্রান্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়?

لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ طَبَعُونَ ﴿٣٨﴾

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٩﴾

قَالَ عَفْرَيْتُ مِنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٤٠﴾

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَأَهُ مُسْتَقَرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ؕ أَشْكُرٌ أَمْ أَكْفُرٌ وَمَنْ شَكَرَ فَآتَيْنَا يُشْكِرُ لِنَفْسِهِ ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيَ عَنِّي كَرِيمٌ ﴿٤١﴾

قَالَ نَكُونُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾

৪২. ঐ নারী যখন আসলেনঃ তখন তাকে জিজ্ঞেস করা হলো তোমার সিংহাসনটি কি এই রূপই? তিনি বললেনঃ এটা তো যেন ওটাই, আমাদেরকে ইতিপূর্বে প্রকৃত জ্ঞান দান করা হয়েছে এবং আমরা আত্মসমর্পণও করেছি।

৪৩. আল্লাহর পরিবর্তে তিনি যার পূজা করতেন তাই তাঁকে সত্য হতে নিবৃত্ত করেছিল, নিঃসন্দেহে তিনি কাফির সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন।

৪৪. তাঁকে বলা হলোঃ এই প্রাসাদে প্রবেশ কর। যখন তিনি ওটা দেখলেন তখন উনি ওটাকে এক গভীর জলাশয় মনে করলেন এবং সে তার উভয় পায়ের গোছা অনাবৃত করলেন, সুলাইমান (عليه السلام) বললেনঃ এটি তো স্বচ্ছ স্ফটিক মন্ডিত প্রাসাদ। সেই নারী বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো নিজের প্রতি যুলুম করেছিলাম, আমি সুলাইমান (عليه السلام)-এর সাথে জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহর নিকট আত্মসমর্পণ করছি।

৪৫. আমি অবশ্যই সামুদ্র সম্প্রদায়ের নিকট তাদের ভ্রাতা সালেহ (عليه السلام)-কে পাঠিয়েছিলাম, এই আদেশসহ, তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর; কিন্তু তারা দ্বিধা বিভক্ত হয়ে বিতর্কে লিপ্ত হলো।

৪৬. তিনি বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা কেন কল্যাণের পূর্বে অকল্যাণ ত্বরান্বিত করতে

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عُرْشُكَ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا قَالَتْ إِنَّهُ صَرْحٌ مُبَرَّدٌ مِنْ قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ ۖ فَإِذَا هُمْ قَرِيفٌ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۗ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ

চাচ্ছে? কেন তোমরা আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করছো না, যাতে তোমরা অনুগ্রহভাজন হতে পার।

تُرْحَمُونَ ﴿٣٧﴾

৪৭. তারা বললোঃ তোমাকে ও তোমার সঙ্গে যারা আছে তাদেরকে আমরা অমঙ্গলের কারণ মনে করি; সালেহ (عليه السلام) বললেনঃ তোমাদের শুভাশুভ আল্লাহর ইখতিয়ারে, বস্তুতঃ তোমরা এমন এক সম্প্রদায় যাদেরকে পরীক্ষা করা হচ্ছে।

قَالُوا أَظَلَمْنَا بِكَ وَبِسُنِّ مَعَكَ ط قَالَ ظَلِمْنَا عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٣٨﴾

৪৮. আর সেই শহরে ছিল এমন নয়জন ব্যক্তি যারা দেশে বিপর্যয় সৃষ্টি করতো এবং সৎকর্ম করতো না।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٣٩﴾

৪৯. তারা বললোঃ তোমরা আল্লাহর নামে শপথ গ্রহণ করঃ আমরা রাত্রিকালে তাকে ও তার পরিবার-পরিজনকে অবশ্যই আক্রমণ করবো, অতঃপর তার অভিভাবককে নিশ্চিত বলবোঃ তার পরিবার-পরিজনের হত্যা আমরা প্রত্যক্ষ করিনি; আমরা অবশ্যই সত্যবাদী।

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ﴿٤٠﴾

৫০. তারা এক চক্রান্ত করেছিল এবং আমিও এক কৌশল অবলম্বন করলাম; কিন্তু তারা বুঝতে পারেনি।

وَمَكْرُؤًا مَكْرًا وَمَكْرُؤًا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤١﴾

৫১. অতএব দেখো, তাদের চক্রান্তে পরিণাম কি হয়েছে— আমি অবশ্যই তাদেরকে ও তাদের সম্প্রদায়ের সকলকে ধ্বংস করেছি।

فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ لَا أَنْتَ دَمَرْتَهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٢﴾

৫২. এই তো তাদের ঘর-বাড়ি, সীমালঙ্ঘন হেতু যা জনশূন্য অবস্থায় পড়ে আছে; এতে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا ط إِنَّا فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

১। যারা সালেহ (আলাইহিস সালাম) কে হত্যার ষড়যন্ত্র করেছিল এবং তারা সকলেই পরে ধ্বংস হয়েছিল।

৫৩. এবং যারা মু'মিন ও মুত্তাকী ছিল তাদেরকে আমি উদ্ধার করেছি।

وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾

৫৪. (স্মরণ কর) লূত (عليه السلام)-এর কথা, তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা জেনে শুনে কেন অশীল কাজ করছো?

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾

৫৫. তোমরা কি কাম-ভৃষ্টির জন্যে নারীকে ছেড়ে পুরুষে আসক্ত হবে? তোমরা তো এক অজ্ঞ সম্প্রদায়।

إِنِّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

৫৬. উত্তরে তার সম্প্রদায় শুধু বললোঃ লূত পরিবারকে তোমাদের জনপদ হতে বহিষ্কৃত কর, এরা তো এমন লোক যারা পবিত্র সাজতে চায়।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَبْغِضُونَ ﴿٥٦﴾

৫৭. অতঃপর তাঁকে ও তাঁর পরিজনবর্গকে আমি উদ্ধার করলাম, তার স্ত্রী ব্যতীত, তাকে করেছিলাম ধ্বংসপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত।

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ قَدَرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٧﴾

৫৮. তাদের উপর ভয়ঙ্কর বৃষ্টি বর্ষণ করেছিলাম; যাদেরকে ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিল তাদের জন্যে এই বর্ষণ ছিল কত মারাত্মক!

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٥٨﴾

৫৯. বল, প্রশংসা আল্লাহরই এবং শান্তি তাঁর মনোনীত বান্দাদের প্রতি; শ্রেষ্ঠ কি আল্লাহ, না তারা যাদেরকে শরীক করে তারা?১

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ مِمَّا يَشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যার মধ্যে তিনটি গুণ আছে সে ঈমানের স্বাদ পায়। (১) তার নিকট অপর সকলের চেয়ে আল্লাহ ও রাসূল প্রিয়তর হয়। (২) কাউকে ভালবাসলে আল্লাহর জন্যই ভালবাসে। (৩) আশুনে নিষ্কিপ্ত হওয়াকে যেমন অপ্রিয় জানে, কুফরীতে ফিরে যাওয়াকেও তেমনি অপ্রিয় মনে করে। (বুখারী, হাদীস নং ১৬)

৬০. কে তিনি, যিনি সৃষ্টি করেছেন আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং আকাশ হতে তোমাদের জন্যে বর্ষণ করেন বৃষ্টি? অতঃপর আমি ওটা দ্বারা মনোরম উদ্যান সৃষ্টি করি, ওর বৃক্ষাদি উৎপন্ন করবার ক্ষমতা তোমাদের নেই। আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বুদ আছে কি? বরং তারা এমন এক সম্প্রদায় যারা সত্যবিচ্যুত হয়।

৬১. কে তিনি, যিনি পৃথিবীকে করেছেন বাসোপযোগী এবং ওর মাঝে প্রবাহিত করেছেন নদীনালা এবং এতে স্থাপন করেছেন সুদৃঢ় পর্বত ও দুই সমুদ্রের মধ্যে সৃষ্টি করেছেন অন্তরায়? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বুদ আছে কি? বরং তাদের অনেকেই জানে না।

৬২. কে তিনি যিনি (নিরুপায়ের) আর্তের আহ্বানে সাড়া দেন, যখন সে তাঁকে ডাকে এবং বিপদ-আপদ দূরীভূত করেন এবং কে তোমাদেরকে পৃথিবীতে প্রতিনিধি করেন? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বুদ আছে কি? তোমরা উপদেশ অতি সামান্যই গ্রহণ করে থাকো।

৬৩. তিনিই বা কে, যিনি তোমাদেরকে স্থলের ও পানির অন্ধকারে পথ-প্রদর্শন করেন এবং যিনি স্বীয় অনুগ্রহের প্রাক্কালে সুসংবাদবাহী বায়ু প্রেরণ করেন? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বুদ আছে কি? তারা যাকে শরীক করে আল্লাহ তা হতে বহু উর্ধে।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ
مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ؕ وَاللَّهُ مَعِ اللَّهُ
بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعِدُونَ ۝

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خَلْفَهَا أَنْهْرًا
وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ
حَاجِزًا ؕ وَاللَّهُ مَعِ اللَّهُ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ
وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ؕ وَاللَّهُ مَعِ اللَّهُ
قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ
الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ؕ وَاللَّهُ مَعِ اللَّهُ
تَعَلَّى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

৬৪. কে তিনি, যিনি সৃষ্টির সূচনা করেন, অতঃপর ওর পুনরাবৃত্তি করেন এবং যিনি তোমাদেরকে আকাশ ও পৃথিবী হতে রুখী দান করেন? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বুদ আছে কি? বলঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও, তবে তোমাদের প্রমাণ পেশ কর।

৬৫. বলঃ আল্লাহ ব্যতীত আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে কেউই অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান রাখে না এবং তারা জানে না তারা কখন পুনরুত্থিত হবে।

৬৬. বরং আখিরাতে সম্পর্কে তাদের জ্ঞান তো নিঃশেষ হয়েছে; তারা তো এ বিষয়ে সন্দেহের মধ্যে রয়েছে, বরং এ বিষয়ে তারা অন্ধ।

৬৭. কাফিররা বলেঃ আমরা ও আমাদের পিতৃপুরুষরা মৃত্তিকায় পরিণত হয়ে গেলেও কি আমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে?

৬৮. নিশ্চয়ই এই বিষয়ে আমাদেরকে এবং পূর্বে আমাদের পূর্ব-পুরুষদেরকেও ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিল। এটা তো পূর্ববর্তী উপকথা ব্যতীত আর কিছুই নয়।

৬৯. বলঃ পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং দেখো, অপরাধীদের পরিণাম কিরূপ হয়েছে।

৭০. তাদের সম্পর্কে তুমি দুঃখ করো না এবং তাদের ষড়যন্ত্রে মনঃক্ষুণ্ণ হয়ো না।

أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يُزْزِقُهُمْ مِنَ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ طَعَاءَ إِلَهٍ مَّعَ اللَّهِ ط قُلْ هَاتُوا
بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٤﴾

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ
إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

بَلْ أَذْرَكَ عَنْهُمْ فِي الْآخِرَةِ تَدْبَلُ هُمْ فِي شَاكٍ
وَمِنْهَا تَدْبَلُ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُنَا
أَبْنَاءًا لِمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾

لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا لَأَن نُّعْزِبَ عَنْكَ مِنَ الْأَرْضِ
إِنْ هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَلِيلٍ مِّمَّنْ يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

৭১. তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে বল, কখন এই প্রতিশ্রুতি পূর্ণ হবে?

৭২. বলঃ তোমরা যে বিষয়ে তাড়াহুড়া করতে চাচ্ছে সম্ভবতঃ তার কিছু তোমাদের নিকটবর্তী হয়েছে।

৭৩. নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক মানুষের প্রতি অনুগ্রহশীল; কিন্তু তাদের অধিকাংশই অকৃতজ্ঞ।

৭৪. তাদের অন্তর যা গোপন করে এবং তারা যা প্রকাশ করে তা তোমার প্রতিপালক অবশ্যই জানেন।

৭৫. আকাশে ও পৃথিবীতে এমন কোন গোপন রহস্য নেই, যা সুস্পষ্ট কিতাবে (লওহে মাহফুজে) নেই।

৭৬. বানী ইসরাঈল যে সমস্ত বিষয়ে মতভেদ করে, এই কুরআন তার অধিকাংশ তাদের নিকট বর্ণনা করে।

৭৭. আর নিশ্চয়ই এটা মু'মিনদের জন্যে হিদায়াত ও রহমত।

৭৮. নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক নিজ সিদ্ধান্ত অনুযায়ী তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দিবেন। তিনি পরাক্রমশালী, সর্বজ্ঞ।

৭৯. অতএব, আল্লাহর উপর নির্ভর কর; তুমি তো স্পষ্ট সত্যের উপর প্রতিষ্ঠিত।

৮০. মৃতকে তো তুমি কথা শুনাতে পারবে না, বধিরকেও পারবে না আহ্বান শুনাতে, যখন তারা পিঠ ফিরিয়ে চলে যায়।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدَانِ لَنْ نُّنْتَمَّ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾

قُلْ عَلَيَّ أَنْ يَكُونَ رَدْفٌ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾

وَلَٰن رَّبِّكَ لَدُوٌّ فَضِّلْ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

وَلَٰن رَبِّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يُقْرَأُ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكَثِيرِ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾

وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَكَلُوا مَدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾

৮১. তুমি অন্ধদেরকে তাদের পথভ্রষ্টতা হতে পথে আনতে পারবে না। তুমি শুনাতে পারবে শুধু তাদেরকে যারা আমার নিদর্শনসমূহে বিশ্বাস করে। আর তারা ই আত্মসমর্পণকারী।

وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلَاتِهِمْ ۗ إِنَّ تَسْبِيحَ
إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

৮২. যখন ঘোষিত শাস্তি তাদের উপর আসবে তখন আমি মৃত্তিকা গর্ভ হতে বের করবো এক জীব, যা তাদের সাথে কথা বলবে, এই জন্যে যে, মানুষ আমার নিদর্শনগুলোকে বিশ্বাস করত না।

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ
الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾

৮৩. যেদিন আমি সমবেত করবো প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে এক একটি দলকে, যারা আমার নিদর্শনাবলী প্রত্যাখ্যান করতো এবং তাদেরকে সারিবদ্ধ করা হবে।

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُكَذِّبُ
بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

৮৪. যখন তারা সমাগত হবে তখন (আল্লাহ) বলবেনঃ তোমরা আমার নিদর্শন প্রত্যাখ্যান করেছিলে, আর ওটা তোমরা জ্ঞানায়ত্ত করতে পারোনি? না, তোমরা অন্য কিছু করছিলে?

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ قَالَ أَكَذَّبْتُمْ بِآيَاتِي ۖ وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا
عَلَيْهَا ۖ أَمَا ذَا كُنْتُمْ تَعْبَهُونَ ﴿٨٤﴾

৮৫. সীমালঙ্ঘন হেতু তাদের উপর ঘোষিত শাস্তি এসে পড়বে; ফলে তারা কিছুই বলতে পারবে না।

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَتُوقُونَ ﴿٨٥﴾

৮৬. তারা কি অনুধাবন করে না যে, আমি রাত্রি সৃষ্টি করেছি তাদের বিশ্রামের জন্যে এবং দিবসকে করেছি আলোকপ্রদ? এতে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَتَنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ
مُبْصِرًا ۗ وَإِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

৮৭. আর যেদিন শিকায় ফুৎকার দেয়া হবে, সেদিন আল্লাহ যাদেরকে চাইবেন, তারা ব্যতীত আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সবাই ভীত-বিহ্বল হয়ে পড়বে এবং সবাই তাঁর নিকট আসবে বিনীত অবস্থায়।

৮৮. তুমি পর্বতমালা দেখে অচল মনে করছো; কিন্তু (সেদিন) এগুলো হবে মেঘপুঞ্জের ন্যায় চলমান; এটা আল্লাহরই সৃষ্টি-নৈপুণ্য, যিনি সব-কিছুকে করেছেন সুসম। তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে তিনি সম্যক অবগত।

৮৯. যে সৎকর্ম নিয়ে আসবে, সে এর চেয়ে উৎকৃষ্টতর প্রতিফল পাবে এবং সেদিন তারা শঙ্কা হতে নিরাপদ থাকবে।

৯০. আর যে অসৎকর্ম নিয়ে আসবে, তাকে অধোমুখে নিষ্ক্ষেপ করা হবে জাহান্নামে, তোমরা যা করতে তারই প্রতিফল তোমাদেরকে দেয়া হচ্ছে।

৯১. আমি তো আদিষ্ট হয়েছি এই নগরীর (মক্কা শরীফের) প্রভুর ইবাদত করতে, যিনি একে করেছেন সম্মানিত। সব কিছু তাঁরই। আমি আরো আদিষ্ট হয়েছি, যেন আমি আত্মসমর্পণকারীদের অন্তর্ভুক্ত হই।^১

৯২. আমি আরো আদিষ্ট হয়েছি, কুরআন তিলাওয়াত করতে; অন্তঃপর

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَفَرِّعَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ طَوَّكَلَّ اتُّوهَ ذَخِرِينَ ۝

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدًا وَهِيَ تَمُرٌّ مَرَّ السَّحَابِ طُصِّعَ اللَّهُ الَّذِي اتَّقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ط إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَهُمْ مِنْ فَرَجِ يَوْمٍ أُمُونُونَ ۝

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَلَبَتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ط هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ ۖ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মক্কা বিজয়ের দিন বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ এই শহরকে (মক্কাকে) হারাম (মহিমাশিত ও মর্যাদাসম্পন্ন) করেছেন। এই শহরের বৃক্ষের কাঁটা জালা যাবে না। শিকার তাড়ানো যাবে না। রাজ্য পরে থাকা জিনিস প্রচারের উদ্দেশ্য ব্যতীত কেউ কুড়িয়ে নিতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ১৫৮৭)

যে ব্যক্তি সৎপথ অনুসরণ করে, সে সৎপথ অনুসরণ করে নিজেই কল্যাণের জন্যে এবং কেউ ভ্রান্তপথ অবলম্বন করলে তুমি বলোঃ আমি তো শুধু সতর্ককারীদের মধ্যে একজন।

৯৩. আর বলঃ প্রশংসা আল্লাহরই, তিনি তোমাদেরকে সত্বর দেখাবেন তাঁর নিদর্শন; তখন তোমরা তা বুঝতে পারবে। তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে তোমার প্রতিপালক গাফিল (অনবহিত) নন।

সূরাঃ কাসাস্, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮৮, রুকু'ঃ ৯)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. হুয়া-সীন-মীম।

২. এই আয়াতগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের।

৩. আমি তোমার নিকট মুসা (عليه السلام) ও ফিরআ'উনের কিছু বৃত্তান্ত যথাযথভাবে বর্ণনা করছি, মু'মিন সম্প্রদায়ের উদ্দেশ্যে।

৪. নিশ্চয়ই ফিরআ'উন দেশে পরাক্রমশালী হয়েছিল এবং তথাকার অধিবাসীবৃন্দকে বিভিন্ন শ্রেণীতে বিভক্ত করে তাদের একটি শ্রেণীকে

لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنِّي أَنَا مِنَ

الْمُنذِرِينَ ﴿٩٣﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سِيرُكُمْ إِلَيْهِ فَتَعَرَّفُونَهَا ط

وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

سُورَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٨٨ رُكُوعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طسّم ﴿١﴾

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾

تَتْلُوَا عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ

لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣﴾

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا

يَسْتَضَعِفُ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يُدْبِحُونَ بِآبَاءِهِمْ وَيَسْتَعِجُّ

সে হীনবল করেছিল, তাদের পুত্রদেরকে সে হত্যা করতো এবং নারীদেরকে সে জীবিত রাখতো। নিশ্চয় সে ছিল বিপর্যয় সৃষ্টিকারী।

৫. আমি ইচ্ছা করলাম, সে দেশে যাদেরকে হীনবল করা হয়েছিল, তাদের প্রতি অনুগ্রহ করতে; তাদেরকে নেতৃত্ব দান করতে ও দেশের অধিকারী করতে।

৬. আর তাদেরকে দেশের ক্ষমতায় প্রতিষ্ঠিত করতে, আর ফিরআ'উন, হামান ও তাদের বাহিনীকে তা দেখিয়ে দিতে, যা তাদের নিকট হতে তারা আশঙ্কা করতো।

৭. মুসা-জননীর অন্তরে আমি ইলহাম করলামঃ শিশুটিকে তুমি স্তন্যদান করতে থাকো; যখন তুমি তার সম্পর্কে কোন আশঙ্কা করবে তখন তাকে দরিয়ায় নিষ্ক্ষেপ করো এবং ভয় করো না, চিন্তাও করো না; আমি তাকে তোমার নিকট ফিরিয়ে দিবো এবং তাকে রাসূলদের একজন করবো।

৮. অতঃপর ফিরআ'উনের লোকজন তাকে উঠিয়ে নিলো। এর পরিণাম তো এই ছিল যে, সে তাদের শত্রু ও দুঃখের কারণ হবে। নিশ্চয় ফিরআ'উন, হামান ও তাদের বাহিনী ছিল ভুলকারী।

৯. ফিরআ'উনের স্ত্রী বললোঃ এই শিশু আমার ও তোমার চক্ষু শীতলকারী। তাকে হত্যা করো না, সে আমাদের উপকারে আসতে

نِسَاءَهُمْ ط إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ⑤

وَرُئِدَ أَنْ نَسُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتَضَعُوا فِي الْأَرْضِ
وَنَجْعَلَهُمْ آيَةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ⑥

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِي فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ
وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ ⑦

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خَفْتِ عَلَيْهِ
فَالْقِيَّةَ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۗ إِنَّا رَادُّوهُ
إِلَيْكَ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑧

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ط
إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِبِينَ ⑨

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قَرَّتْ عَيْنِي لِىَ وَلَكَ ط
لَا تَقْتُلُوهُ ۗ عَلَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا

পারে, আমরা তাকে সন্তান হিসেবেও গ্রহণ করতে পারি। প্রকৃতপক্ষে তারা (এর পরিণাম) বুঝতে পারেনি।

وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

১০. মুসা-জননীর হৃদয় অস্থির হয়ে পড়েছিল; যাতে সে আস্থামূলক হয় তজ্জন্যে আমি তার হৃদয়কে দৃঢ় করে না দিলে সে তার পরিচয়তো প্রকাশ করেই দিতো।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَاوْنَ كَأَدَّىٰ لِكُبْرَىٰ
بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَّنَا عَلَيَّ قَلْبَهَا لَتَكُونَنَّ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾

১১. সে মুসার ভগ্নিকে বললোঃ তার পিছনে পিছনে যাও; সে তাদের অজ্ঞাতসারে দূর হতে তাকে দেখছিল।

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِيهِ ذَبَصَّرْتُ بِهَا عَنْ جُنُبٍ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١١﴾

১২. পূর্ব হতেই আমি ধাত্রী স্তন্য পানে তাকে বিরত রেখেছিলাম। (মুসার ভগ্নি) বললোঃ তোমাদেরকে কি আমি এমন এক পরিবারের সন্তান দিবো যারা তোমাদের হয়ে একে লালন-পালন করবে এবং এর মঙ্গলকামী হবে?

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ
أَدْلُكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتِي يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ
لُصُحُونَ ﴿١٢﴾

১৩. অতঃপর আমি তাকে ফিরিয়ে দিলাম তার জননীর নিকট যাতে তার চক্ষু জুড়ায়, সে চিন্তা না করে এবং বুঝতে পারে যে, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য; কিন্তু অধিকাংশ মানুষই এটা জানে না।

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ
أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

১৪. যখন (মুসা عليه السلام) পূর্ণ যৌবনে উপনীত ও পরিণত বয়স্ক হলেন তখন আমি তাঁকে হিকমত ও জ্ঞান দান করলাম; এভাবে আমি সৎকর্ম-পরায়ণদেরকে পুরস্কার প্রদান করে থাকি।

وَلَبَّأْ بَلَّغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آيَاتُهُ حُكْمًا وَعِلْمًا
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾

১৫. তিনি নগরীতে প্রবেশ করলেন, যখন এর অধিবাসীরা ছিল অসতর্ক

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ

সেখায় তিনি দু'টি লোককে সংঘর্ষে লিপ্ত দেখলেন, একজন তাঁর নিজ দলের এবং অপরজন তাঁর শত্রু দলের। মূসা (ﷺ)-এর দলের লোকটি তার শত্রুর বিরুদ্ধে তাঁর সাহায্য প্রার্থনা করলো, তখন মূসা (ﷺ) তাকে ঘুষি মারলেন; এভাবে তিনি তাকে হত্যা করে বসলেন। মূসা (ﷺ) বললেনঃ এটা শয়তানের কাণ্ড; সে তো প্রকাশ্য শত্রু ও পথভ্রষ্টকারী।

১৬. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো আমার নিজের প্রতি যুলুম করেছি; সুতরাং আমাকে ক্ষমা করুন! অতঃপর তিনি তাকে ক্ষমা করলেন। তিনি তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

১৭. তিনি আরো বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! তুমি যেহেতু আমার উপর অনুগ্রহ করেছো, সুতরাং আমি কখনো অপরাধীদের সাহায্যকারী হবো না।

১৮. অতঃপর ভীত সতর্ক অবস্থায় সেই নগরীতে তাঁর প্রভাত হলো। হঠাৎ তিনি শুনতে পেলেন, পূর্বদিন যে ব্যক্তি তাঁর সাহায্য চেয়েছিল, সে তাঁর সাহায্যের জন্যে চীৎকার করছে। মূসা (ﷺ) তাকে বললেনঃ তুমি তো স্পষ্টই একজন বিভ্রান্ত ব্যক্তি।

১৯. অতঃপর মূসা (ﷺ) যখন উভয়ের (মূসা ও ইসরাঈলী ব্যক্তিটির) শত্রু ধরতে উদ্যত হলেন,

فِيهَا رَجُلَيْنِ يَتَخَلَّفُونَ هَذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَاسْتَفَاهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَوَكَرَهُ مُوسَى فَقَضَى عَلَيْهِ ۚ قَالَ هَذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُضِلٌّ مُبِينٌ ﴿١٥﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾

قَالَ رَبِّ إِنَّمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَاهِرًا لِمُنْجِرٍ مِينٌ ﴿١٧﴾

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ ۖ قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُبِينٌ ﴿١٨﴾

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا ۖ قَالَ يَبُوءُ لِي أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

তখন সে (ইসরাঈলী) বলে উঠলোঃ হে মুসা (ﷺ)! গতকাল তুমি যেমন এক ব্যক্তিকে হত্যা করেছো, সেভাবে আমাকেও কি হত্যা করতে চাচ্ছ? তুমি তো পৃথিবীতে স্বেচ্ছাচারী হতে চাচ্ছ, শান্তি স্থাপনকারী হতে চাও না!

২০. নগরীর দূরপ্রান্ত হতে এক ব্যক্তি ছুটে আসলো ও বললোঃ হে মুসা (ﷺ)! ফিরআ'উনের পরিষদবর্গ তোমাকে হত্যা করার ষড়যন্ত্র করছে। সুতরাং তুমি বাইরে চলে যাও, আমি তো তোমার মঙ্গলকামী।

২১. ভীত সতর্ক অবস্থায় তিনি তথা (মিসর) হতে বের হয়ে পড়লেন এবং বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি যালিম সম্প্রদায় হতে আমাকে রক্ষা করুন।

২২. যখন মুসা (ﷺ) মাদইয়ান অভিমুখে যাত্রা করলেন তখন বললেনঃ আশা করি আমার প্রতিপালক আমাকে সরল পথ-প্রদর্শন করবেন।

২৩. যখন তিনি মাদইয়ানের পানির (কূপের) নিকট পৌঁছলেন তখন দেখলেন যে, একদল লোক তাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করাচ্ছে এবং তাদের পশুচাত্তে দু'জন নারী তাদের পশুগুলোকে খামিয়ে রাখছে। মুসা (ﷺ) বললেনঃ তোমাদের কি ব্যাপার? তারা বললোঃ আমরা আমাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করাতে পারি না, যতক্ষণ

بِالْأَمْسِ ۚ إِنَّ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٠﴾

وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ ۖ قَالَ يُؤْتَسَىٰ إِنَّ الْمَلَائِكَةَ لِتَهْرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَأَخْرَجَ إِيَّيْكَ مِنَ النَّصْحِينَ ﴿٢١﴾

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٢﴾

وَلَمَّا تَوَجَّهَ بِلِقَاءِ رَبِّهِ قَالَ أَلَسْ بِرَبِّيَ أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿٢٣﴾

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۗ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِي إِلَّا نُسْقَىٰ حَتَّىٰ يُصَدِّرَ الرِّعَاءَ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٤﴾

রাখালরা তাদের জানোয়ারগুলোকে নিয়ে সরে না যায়। আমাদের পিতা অতি বৃদ্ধ।

২৪. (মূসা عليه السلام) তখন তাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করালেন। অতঃপর তিনি ছায়ার নীচে আশ্রয় গ্রহণ করলেন ও বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমার প্রতি যে অনুগ্রহ করবেন আমি তার মুখাপেক্ষী।

২৫. তখন নারীদ্বয়ের একজন লজ্জা ও শালীনতা সহকারে তার নিকট আসলো এবং বললোঃ আমার পিতা আপনাকে আমন্ত্রণ করছেন, আমাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করাবার পারিশ্রমিক আপনাকে দেয়ার জন্যে। অতঃপর মূসা (عليه السلام) তাঁর নিকট এসে সমস্ত বৃত্তান্ত বর্ণনা করলে তিনি বললেনঃ ভয় করো না, তুমি যালিম সম্প্রদায়ের কবল হতে বেঁচে গেছ।

২৬. তাদের একজন বললোঃ হে পিতা! তুমি একে মজুর হিসেবে নিযুক্ত কর, কারণ তোমার মজুর হিসেবে উত্তম হবে সে ব্যক্তি, যে শক্তিশালী, বিশ্বস্ত।

২৭. তিনি মূসা (عليه السلام)-কে বললেনঃ আমি আমার এই কন্যাদ্বয়ের একজনকে তোমার সাথে বিয়ে দিতে চাই, এই শর্তে যে, তুমি আট বছর আমার কাজ করবে, যদি তুমি দশ বছর পূর্ণ কর, সেটা তোমার ইচ্ছা। আমি তোমাকে কষ্ট

فَسَقَى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّى إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَبْشِيرًا عَلَىٰ أُسْحُبَاءٍ ۖ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِيجْزِيكَ أَجْرًا مَا سَقَيْتَ لَنَا طَافِلَنَا ۖ جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۖ قَالَ لَا تَخَفْ ۗ نَجَوْتَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥﴾

قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا بَتِ اسْتَأْجِرْهُ زَانٍ خَيْرٌ مِّنْ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيَّ الْأَمِينُ ﴿٢٦﴾

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَىٰ أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمْنِي خَبْجٍ ۖ وَإِنِ اتَّمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۖ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَسْأَلَكَ عَلَيْكَ ط سَتَجِدُنِي إِنِ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٧﴾

দিতে চাই না। ইনশাআল্লাহ (আল্লাহ ইচ্ছা করলে) তুমি আমাকে সদাচারী পাবে।

২৮. (মূসা عليه السلام) বললেনঃ আপনার ও আমার মধ্যে এই চুক্তিই রইলো। এ দু'টি মেয়াদের কোন একটি আমি পূর্ণ করলে আমার বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ থাকবে না। আমরা যে বিষয়ে কথা বলছি আল্লাহ তার সাক্ষী।

২৯. মূসা (عليه السلام) যখন মেয়াদ পূর্ণ করবার পর সপরিবারে যাত্রা শুরু করলেন তখন তিনি তুর পর্বতের দিকে আগুন দেখতে পেলেন। তিনি তাঁর পরিজনবর্গকে বললেনঃ তোমরা অপেক্ষা কর, আমি আগুন দেখেছি, সম্ভবতঃ আমি সেখান হতে তোমাদের জন্যে খবর আনতে পারি অথবা একখন্ড জ্বলন্ত কাঠ আনতে পারি যাতে তোমরা আগুন পোহাতে পার।

৩০. যখন তিনি আগুনের নিকট পৌঁছিলেন তখন উপত্যকার ডান পার্শ্বে পবিত্র ভূমিস্থিত এক বৃক্ষ হতে তাকে আহ্বান করে বলা হলোঃ হে মূসা (عليه السلام)! আমিই আল্লাহ, জগতসমূহের প্রতিপালক।

৩১. আরো বলা হলোঃ তুমি তোমার লাঠি নিক্ষেপ কর। অতঃপর যখন তিনি লাঠিকে সর্পের ন্যায ছুটাছুটি করতে দেখলেন তখন পিছনের দিকে ছুটতে লাগলেন এবং ফিরে তাকালেন

قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ
جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۖ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي
آنَسْتُ نَارًا تَعْلَىٰ أَيُّكُمْ مِنْهَا بِخَبْرٍ أَوْ جَذْوَةٍ
مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾

فَلَمَّا آتَتْهَا نُورًا مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ
فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يُّوسَىٰ
إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾

وَأَنْ أُلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا
جَانٌّ وَّلِيَ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۖ يُّوسَىٰ
أَقْبَلَ وَلَا تَخَفْ ۖ تِلْكَ مِنَ الْأَمْنِينَ ﴿٣١﴾

না। তাকে বলা হলোঃ হে মুসা (ﷺ)! সামনে এসো, ভয় করো না, তুমি তো নিরাপদ।

৩২. তোমার হাত তোমার বগলে রাখো, এটা বের হয়ে আসবে শুভ সমুজ্জ্বল দোষমুক্ত হয়ে। ভয় দূর করবার জন্যে তোমার হস্তদ্বয় নিজের দিকে চেপে ধর। এই দু'টি তোমার প্রতিপালক প্রদত্ত প্রমাণ, ফির'আউন ও তার পরিষদবর্গের জন্যে। তারা তো দুষ্কর্মপরায়ণ সম্প্রদায়।

৩৩. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো তাদের একজনকে হত্যা করেছি। ফলে আমি আশঙ্কা করছি যে, তারা আমাকে হত্যা করবে।

৩৪. আমার ভ্রাতা হারুন আমার চেয়ে বাগ্মী (কথায় পটু)। অতএব তাকে আমার সাহায্য কারীরূপে প্রেরণ করুন, তিনি আমাকে সমর্থন করবেন। আমি আশঙ্কা করি যে, তারা আমাকে মিথ্যাবাদী বলবে।

৩৫. (আল্লাহ) বললেনঃ আমি তোমার ভ্রাতার দ্বারা তোমার বাহু শক্তিশালী করবো এবং তোমাদের উভয়কে বিজয় দান করবো। তারা তোমাদের কাছে পৌছতে পারবে না। তোমরা আমার নিদর্শনসহ যাও, তোমরা এবং তোমাদের অনুসারীরা তাদের উপর বিজয়ী হবে।

৩৬. মুসা (ﷺ) যখন তাদের নিকট আমার সুস্পষ্ট নিদর্শনগুলো

أَسْلَكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْجِبُ بِيضَاءَ مَنْ عَيْرِ
سُوِّءَ وَأَظْهَرُ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذُنُوكَ
بُرْهَانٍ مِنْ رَبِّكَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَ مَلَائِهِ ط
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ
أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾

وَ أَخِي هَارُونَ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسَلَهُ مَعِيَ
رَدًّا يُصَدِّقُنِي زَائِيَّ أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَ نَجْعَلُ لَكُمَا
سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا بِأَيَّتِنَا أَنْتُمْ وَ مَنِ
اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿٣٥﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالَُوا

নিয়মে আসলেন, তারা বললোঃ এটা তো অলীক যাদু মাত্র! আমাদের পূর্বপুরুষদের কালে আমরা কখনো এরূপ কথা শুনিনি।

৩৭. মুসা (عليه السلام) বললেনঃ আমার প্রতিপালক সম্যক অবগত, কে তাঁর নিকট হতে পথ নির্দেশ এনেছে এবং আখিরাতে কার পরিণাম শুভ হবে। যালিমরা অবশ্যই সফলকাম হবে না।

৩৮. ফিরআ'উন বললোঃ হে পরিষদবর্গ! আমি ছাড়া তোমাদের অন্য কোন উপাস্য আছে বলে আমি জানি না! হে হামান! তুমি আমার জন্যে ইট পোড়াও এবং একটি সুউচ্চ প্রাসাদ তৈরি কর; হয়তো আমি তাতে উঠে মূসার মা'বুদকে দেখতে পাবো। তবে আমি অবশ্য মনে করি যে, সে মিথ্যাবাদী।

৩৯. ফিরআ'উন ও তার বাহিনী অন্যায়ভাবে পৃথিবীতে অহংকার করেছিল এবং তারা মনে করেছিল যে, তারা আমার নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে না।

৪০. অতএব, আমি তাকে ও তার বাহিনীকে ধরলাম এবং তাদেরকে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম। দেখো, যালিমদের পরিণাম কি হয়ে থাকে।

৪১. তাদেরকে আমি নেতা করেছিলাম; তারা লোকদেরকে জাহান্নামের দিকে আহ্বান করতো; কিয়ামতের দিন তাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرَىٰ وَمَا سَعَيْنَا بِهِدًا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٣٧﴾

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِ رَبِّهِ وَمَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِط إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٨﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنَ إِلَهِ غَيْرِي ۖ فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا نَّعْبِي ۖ أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ ۖ وَإِنِّي لَأَكْفُرُكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

وَأَسْتَكْبِرُ هُوَ وَجُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى الثَّارِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُبْصَرُونَ ﴿٤٢﴾

৪২. এই পৃথিবীতে আমি তাদের পশ্চাতে লাগিয়ে দিয়েছি অভিসম্পাত এবং কিয়ামতের দিন তারা হবে ঘৃণিত।

وَاتَّبَعَهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٢٢﴾

৪৩. আমি তো পূর্ববর্তী বহু মানবগোষ্ঠীকে বিনাশ করবার পর মুসা (ﷺ)-কে দিয়েছিলাম কিতাব, মানব জাতির জন্যে জ্ঞান-বর্তিকা, পথনির্দেশ ও দয়া স্বরূপ, যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا
الْقُرُونَ الْأُولَى بِصَآئِرٍ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

৪৪. মুসা (ﷺ)-কে যখন আমি ওহী করেছিলাম রিসালাতের তখন তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) পশ্চিম প্রান্তে উপস্থিত ছিলে না এবং তুমি প্রত্যক্ষদর্শীও ছিলে না।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغُرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى
مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٢٤﴾

৪৫. বস্তুতঃ আমি অনেক মানবগোষ্ঠীর আবির্ভাব ঘটিয়েছিলাম; অতঃপর তাদের বহু যুগ অতিবাহিত হয়ে গিয়েছে। তুমি তো মাদইয়ান-বাসীদের মধ্যে বিদ্যমান ছিলে না তাদের নিকট আমার আয়াত আবৃত্তি করবার জন্যে। আমিই তো ছিলাম রাসূল প্রেরণকারী।

وَلِكَيْلًا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ
وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًّا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا عَلَيْهِمْ
آيَاتِنَا وَلَكَيْلًا كَيْلًا مُرْسِلِينَ ﴿٢٥﴾

৪৬. মুসা (ﷺ)-কে যখন আমি আস্থান করেছিলাম তখন তুমি তুর পর্বত পার্শ্বে উপস্থিত ছিলে না। বস্তুতঃ এটা (ওহী) তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে দয়া স্বরূপ, যাতে তুমি এমন এক সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার, যাদের নিকট তোমার পূর্বে কোন সতর্ককারী আসেনি, যেন তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِنْ رَحْمَةً
مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَهُمْ مِنْ نَّذِيرٍ مِّن
قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٦﴾

৪৭. রাসূল না পাঠালে আর তাদের কৃতকর্মের জন্যে তাদের কোন বিপদ হলে তারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদের নিকট কোন রাসূল প্রেরণ করলেন না কেন? করলে আমরা আপনার নির্দেশ মেনে চলতাম এবং আমরা হতাম মু'মিন।

৪৮. অতঃপর যখন আমার নিকট হতে তাদের নিকট সত্য আসলো, তারা বলতে লাগলোঃ মুসা (عليه السلام)-কে যে রূপ দেয়া হয়েছিল, তাকে (মুহাম্মাদ ﷺ কে) সেরূপ দেয়া হলো না কেন? কিন্তু পূর্বে মুসা (عليه السلام)-কে যা দেয়া হয়েছিল তা কি তারা অস্বীকার করেনি? তারা বলেছিলঃ উভয়ই যাদু, একে অপরকে সমর্থন করে এবং তারা বলেছিলঃ আমরা প্রত্যেককে প্রত্যাখ্যান করি।

৪৯. বলঃ তোমরা সত্যবাদী হলে আল্লাহর নিকট হতে এক কিতাব আনয়ন কর, যা পথ-নির্দেশে এতদুভয় (তাওরাত ও কুরআন) হতে উৎকৃষ্টতর হবে, আমি সে কিতাব অনুসরণ করবো।

৫০. অতঃপর যদি তারা তোমার আস্থানে সাড়া না দেয়, তাহলে জানবে যে, তারা তো শুধু নিজেদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে। আল্লাহর পথ-নির্দেশ অগ্রাহ্য করে যে ব্যক্তি নিজ খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে সে ব্যক্তি অপেক্ষা অধিক

وَلَوْلَا أَنْ تُصِيبَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمْتُمْ آيَاتِهِمْ
فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ
آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ
مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ أَوْ لَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ
مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا
بِكُلِّ كَفْرٍ لَّوْنٌ ﴿٤٨﴾

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا
أَتَّبِعُهُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾

فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا يُؤْمِنُونَ
أَهْوَاءَهُمْ طَوْفًا مِّنْ أَضَلِّ مِمَّنْ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ
هُدًى مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾

বিভ্রান্ত আর কে? আল্লাহ যালিম সম্প্রদায়কে পথ-নির্দেশ করেন না।

৫১. আমি তো তাদের নিকট পরপর বাণী পৌঁছিয়ে দিয়েছি, যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

৫২. এর পূর্বে আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছিলাম, তারা এতে বিশ্বাস করে।

৫৩. যখন তাদের নিকট এটা আবৃত্তি করা হয়, তখন তারা বলেঃ আমরা এতে ঈমান আনি, এটা আমাদের প্রতিপালক হতে আগত সত্য। আমরা তো পূর্বেও আত্মসমর্পণকারী ছিলাম।^১

৫৪. তাদেরকে দু'বার পারিশ্রমিক প্রদান করা হবে, কারণ তারা ধৈর্যশীল এবং তারা ভাল দ্বারা মন্দের মুকাবিলা করে এবং আমি তাদেরকে যে রিযিক দিয়েছি তা হতে তারা ব্যয় করে।

৫৫. তারা যখন অসার বাক্য শ্রবণ করে তখন তারা তা উপেক্ষা করে চলে এবং বলেঃ আমাদের কাজের ফল আমাদের জন্যে এবং তোমাদের কাজের ফল তোমাদের জন্যে; তোমাদের প্রতি সালাম। আমরা অজ্ঞদের সঙ্গ চাই না।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

الَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾

أُولَٰئِكَ يُؤْتُونَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا
وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذَا سَأَعُوا اللَّغْوَ عَرَضُوا عَلَيْهِ وَقَالُوا لَنَا
أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ سَلَّمْ عَلَيْكُمْ لَّا نَبْتَغِي
الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾

১। আবু বুরদার পিতা আবু মুসা আসআরী (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যার কাছে ক্রীতদাসী আছে এবং সে তাকে (শরীয়তের প্রয়োজনীয় মাসআলা) শিক্ষা দেয় এবং ভাল আচার-ব্যবহার ও শিষ্টাচার শিক্ষা দেয়। অতঃপর তাকে আযাদ করে নিজেই বিবাহ করে নেয়, তার জন্য দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আহলে কিতাবদের মধ্য থেকে যে নিজেদের নবী এবং আমার ওপর ঈমান আনে তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আর যে গোলাম স্বীয় মালিক এবং তার রবের হক যথাযথভাবে আদায় করবে, তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৫০৮৩)

৫৬. তুমি যাকে ভালবাস ইচ্ছা করলেই তাকে সৎপথে আনতে পারবে না। তবে আল্লাহই যাকে ইচ্ছা সৎপথে আনয়ন করেন এবং তিনিই ভাল জানেন সৎপথ অনুসরণকারীদেরকে।^১

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

৫৭. তারা বলেঃ আমরা যদি তোমার সাথে সৎপথ অনুসরণ করি তবে আমাদেরকে দেশ হতে উৎখাত করা হবে। আমি কি তাদেরকে এক নিরাপদ হারামে প্রতিষ্ঠিত করিনি! যেখানে সর্বপ্রকার ফলমূল আমদানী হয় আমার দেয়া রিয়ক স্বরূপ? কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

وَقَالُوا إِنْ تَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نَتَّخِظُ مِنْ أَرْضِنَاطٍ أَوْ لَمْ نُكُنْ لَهُمْ حَرَمًا أَمِنَّا يُجِبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

৫৮. কত জনপদকে আমি ধ্বংস করেছি যার বাসিন্দারা নিজেদের ধন-সম্পদের দস্ত্ব করতে! এগুলোই তো তাদের ঘরবাড়ী; তাদের পর এগুলোতে লোকজন সামান্যই বসবাস করেছে; আর আমি তো চূড়ান্ত মালিকানার অধিকারী।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِشَتَهَا ۖ فَبَلَكَ مَسْكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۗ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾

১। সাঈদ ইবনে মুসাইয়্যিব (রাযিআল্লাহু আনহু) তার পিতা মুসাইয়াব থেকে বর্ণনা করেছেন। আবু তালিবের যখন মৃত্যুর সময় উপস্থিত হলো নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তার নিকট উপস্থিত হলেন। তখন আবু জাহল তার কাছে বসা ছিল। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, হে চাচাজান! শুধু “লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু” কালেমাটি একবার বলুন। যাতে আমি আপনার ক্ষমার জন্য আল্লাহর কাছে প্রার্থনা জানাতে পারি। তখন আবু জাহল ও আবদুল্লাহ ইবনে উমাইয়া বলল, তুমি কি আবদুল মুত্তালিবের ধর্ম থেকে বিচ্যুত হয়ে যাবে? তারা দু'জনে বরাবর তাকে এ কথাটি বলতে থাকে। অবশেষে তাদের সাথে আবু তালিব সর্বশেষে যে কথাটি বলল, তা হলোঃ আমি আবদুল মুত্তালিবের ধর্মের অনুসারী হিসেবে মৃত্যুবরণ করছি। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আমি আপনার জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করতে থাকব যে পর্যন্ত আমাকে আপনার ব্যাপারে নিষেধ করা না হয়। তখন এই আয়াত অবতীর্ণ হলোঃ “নবী ও মু'মিনদের মুশরিকদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করা উচিত নয়, যদি তারা সম্পর্কের দিক থেকে তাদের নিকটাত্মীয়ও হয়, যখন তাদের কাছে এটা প্রকাশ হয়ে গেছে যে, তারা দোষখের অধিবাসী।” (সূরা তাওবাঃ ১১৩) আরো অবতীর্ণ হলোঃ হে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)! আপনি যাকে চাইবেন তাকেই হেদায়াত করতে পারবেন না।” (সূরা কাসাসঃ ৫৬) (বুখারী, হাদীস নং ৩৮৮৪)

৫৯. তোমার প্রতিপালক জনপদ-সমূহকে ধ্বংস করেন না ওর কেন্দ্রে তাঁর আয়াত আবৃত্তি করবার জন্যে রাসূল শ্রেয়ণ না করে এবং আমি জনপদসমূহকে তখনই ধ্বংস করি যখন ওর বাসিন্দারা যুলুম করে।

৬০. তোমাদেরকে যা কিছু দেয়া হয়েছে তা তো পার্থিব জীবনের ভোগ ও শোভা এবং যা আল্লাহর নিকট আছে তা উত্তম এবং স্থায়ী। তোমরা কি অনুধাবন করবে না?

৬১. যাকে আমি উত্তম পুরস্কারের প্রতিশ্রুতি দিয়েছি, যা সে পাবে সে কি ঐ ব্যক্তির সমান যাকে আমি পার্থিব জীবনের ভোগ-সম্ভার দিয়েছি, যাকে পরে কিয়ামতের দিন হাজির করা হবে? (শাস্তি প্রদানের জন্য অপরাধীরূপে)

৬২. আর সেই দিন তিনি তাদেরকে আহ্বান করে বলবেনঃ তোমরা যাদেরকে আমার শরীক গণ্য করতে তারা কোথায়?

৬৩. যাদের জন্যে শাস্তি অবধারিত হয়েছে তারা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! এদেরকেও আমরা বিভ্রান্ত করেছিলাম, যেমন আমরা বিভ্রান্ত হয়েছিলাম; আপনার সমীপে আমরা তাদের হতে সম্পর্কহীনতা ঘোষণা করছি। এরা শুধু আমাদেরই ইবাদত করতো না।

৬৪. তাদেরকে বলা হবেঃ তোমাদের দেবতাগুলোকে আহ্বান কর। তখন

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ
فِي أَمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا
مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٩﴾

وَمَا أَوْتَيْنَا مِنْ شَيْءٍ فَتَنَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
وَرَبِّنَاهَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ﴿٦٠﴾

أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعَدًّا حَسَنًا فَهُوَ لَا يَأْتِيهِ كَسَنٌ
مَّمَّنَعْنَاهُ مَنَاعًا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٦١﴾

وَيَوْمَ يناديهم فيقول أين شركاءي الذين كنتم
ترعون ﴿٦٢﴾

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ
الَّذِينَ آغْوَيْنَا آغْوَيْنَاهُمْ كَمَا آغْوَيْنَا تَبَرَّأْنَا
إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِلَّا نَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُم فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا

তারা তাদেরকে ডাকবে; কিন্তু তারা তাদের ডাকে সাড়া দেবে না। তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে; হায়! তারা যদি সৎপথ অনুসরণ করতো!

لَهُمْ وَرَأُوا الْعَذَابَ ۗ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

৬৫. আর সেদিন আল্লাহ তাদেরকে ডেকে বলবেনঃ তোমরা রাসূলদেরকে কি জবাব দিয়েছিলে?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَا ذَا آجِبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٨﴾

৬৬. সেদিন সকল তথ্য তাদের নিকট হতে বিলুপ্ত হবে এবং তারা একে অপরকে জিজ্ঞাসাবাদও করতে পারবে না।

فَعَيَّبَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءَ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٣٩﴾

৬৭. তবে যে ব্যক্তি তাওবা করেছিল এবং ঈমান এনেছিল ও সৎকর্ম করেছিল সে তো সাফল্য অর্জনকারীদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ

أَن يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٤٠﴾

৬৮. তোমার প্রতিপালক যা ইচ্ছা সৃষ্টি করেন এবং যাকে ইচ্ছা মনোনীত করেন, এতে তাদের কোন হাত নেই, আল্লাহ পবিত্র, মহান এবং তারা যাকে শরীক করে তা হতে তিনি উর্ধ্বে।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ

الْخَيْرَةُ ۗ سُبْحٰنَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

৬৯. আর তোমার প্রতিপালক জানেন তাদের অন্তরে যা গোপন আছে এবং তারা যা ব্যক্ত করে।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٤٢﴾

৭০. তিনিই আল্লাহ, তিনি ব্যতীত কোন সত্য মা'বুদ নেই, দুনিয়া ও আখিরাতে প্রশংসা তাঁরই; (শাসন কর্তৃত্ব) হুকুম ও ফয়সালা তাঁরই তোমরা তাঁরই দিকে প্রত্যাভর্তিত হবে।

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْاٰوَّلِي

وَالْاٰخِرَةُ ۗ زُوْلَهُ الْحُكْمُ ۗ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٣﴾

৭১. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি, আল্লাহ যদি রাত্রিকে কিয়ামতের

قُلْ اَدْعَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا

দিন পর্যন্ত স্থায়ী করেন তবে আল্লাহ ব্যতীত এমন কোন মা'বুদ আছে কি, যে তোমাদেরকে আলোক এনে দিতে পারে? তবুও কি তোমরা কর্ণপাত করবে না?

৭২. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি, আল্লাহ যদি দিবসকে কিয়ামতের দিন পর্যন্ত স্থায়ী করেন তবে আল্লাহ ব্যতীত এমন কোন মা'বুদ আছে কি, যে তোমাদের জন্যে রাত্রির আবির্ভাব ঘটাতে পারে যাতে তোমরা বিশ্রাম করতে পার? তবুও কি তোমরা ভেবে দেখবে না?

৭৩. তিনিই তাঁর দয়ায় তোমাদের জন্যে করেছেন রজনী ও দিবস, যেন তাতে তোমরা বিশ্রাম করতে পার এবং তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার এবং কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

৭৪. সেদিন তিনি তাদেরকে আহ্বান করে বলবেনঃ তোমরা যাদেরকে শরীক গণ্য করতে, তারা কোথায়?

৭৫. প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে আমি একজন সাক্ষী বের করে আনবো এবং বলবোঃ তোমাদের প্রমাণ উপস্থিত কর। তখন তারা জানতে পারবে, মা'বুদ হবার অধিকার আল্লাহরই এবং তারা যা মনগড়া মিথ্যা উদ্ভাবন করতো তা তাদের নিকট হতে হারিয়ে যাবে।

৭৬. কারুন ছিল মুসা (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়ভুক্ত; কিন্তু সে তাদের প্রতি ঔদ্ধতা প্রকাশ করেছিল। আমি তাকে

إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهَ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ
بِضِيَاءٍ ط أَفَلَا تَسْمَعُونَ ④

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا
إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهَ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ
بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ط أَفَلَا تُبْصِرُونَ ④

وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ④

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ④

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا
بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَصَلَّ
عَنَّهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ⑤

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى
عَلَيْهِمْ ۖ وَاتَّبَعَتْهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ

দান করেছিলাম এমন ধন-ভান্ডার যার চাবিগুলো বহন করা একদল বলবান লোকের পক্ষেও কষ্টসাধ্য ছিল। (স্মরণ কর,) তার সম্প্রদায় তাকে বলেছিলঃ দস্ত্ব করো না, নিশ্চয়ই আল্লাহ দাস্তিকদেরকে পছন্দ করেন না।

৭৭. আল্লাহ যা তোমাকে দিয়েছেন তার দ্বারা আখিরাতের আবাস অনুসন্ধান কর। আর দুনিয়া হতে তোমার অংশ ভুলো না এবং পরোপকার কর যেমন আল্লাহ তোমার প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, আর পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করতে চেয়ো না। নিশ্চয়ই আল্লাহ বিপর্যয় সৃষ্টিকারীকে ভালবাসেন না।

৭৮. সে বললোঃ এই সম্পদ আমি আমার জ্ঞান বলে প্রাপ্ত হয়েছি। সে কি জানতো না যে, আল্লাহ তার পূর্বে ধ্বংস করেছেন বহু মানব গোষ্ঠীকে যারা তার চেয়ে শক্তিতে ছিল প্রবল, সম্পদে ছিল প্রাচুর্যশালী? আর অপরাধীদেরকে তাদের অপরাধ সম্পর্কে প্রশ্ন করা হবে না। (তারা বিনা হিসাবেই জাহান্নামে দিক্ষীত হবে।)

৭৯. (কারুন) তার সম্প্রদায়ের সামনে উপস্থিত হয়েছিল জাঁকজমক সহকারে। যারা পার্থিব জীবন কামনা করতো তারা বললোঃ আহা! কারুনকে যেরূপ দেয়া হয়েছে আমাদেরকে যদি তা দেয়া হতো! প্রকৃতই সে মহাভাগ্যবান।

لَتَنُوًّا بِأَلْعَصْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٥١﴾

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفُسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِئِينَ ﴿٥٢﴾

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي وَأُولَٰئِكَ يَٰعْلَمُونَ إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَآثَرُ جَمْعًا ط وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٣﴾

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ط قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَلْبِتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوْتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٥٤﴾

৮০. আর যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছিল তারা বললোঃ ধিক তোমাদেরকে! যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে আল্লাহর পুরস্কারই শ্রেষ্ঠ এবং ধৈর্যশীল ব্যতীত এটা কেউ পাবে না।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُلْقِيهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٥٠﴾

৮১. অতঃপর আমি কারুনকে ও তার প্রাসাদকে ভূ-গর্ভে প্রোথিত করলাম। তার স্বপক্ষে এমন কোন দল ছিল না যে আল্লাহর শাস্তি হতে তাকে সাহায্য করতে পারতো এবং সে নিজেও আত্মরক্ষায় সক্ষম ছিল না।

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنتَصِرِينَ ﴿٥١﴾

৮২. পূর্বদিন যারা তার মত হবার কামনা করেছিল তারা বলতে লাগলো! দেখলে তো, আল্লাহ তার বান্দাদের মধ্যে যার জন্যে ইচ্ছা তার রিয়ক বর্ধিত করেন এবং যার জন্যে ইচ্ছা হ্রাস করেন। যদি আল্লাহ আমাদের প্রতি সদয় না হতেন তবে আমাদেরকেও তিনি ভূ-গর্ভে প্রোথিত করতেন। দেখলে তো! কাফিররা সফলকাম হয় না।

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَسَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيَكَانَ اللَّهُ يَسْطُرُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيَكَانَ لَا يَفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٥٢﴾

৮৩. এটা আখেরাতের সে আবাস যা আমি নির্ধারিত করি তাদের জন্যে যারা এই পৃথিবীতে উদ্ধত হতে ও বিপর্যয় সৃষ্টি করতে চায় না। শুভ পরিণাম মুত্তাকীদের জন্যে।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٥٣﴾

৮৪. যে সৎকর্ম করে সে তার কর্ম অপেক্ষা উত্তম ফল পাবে, আর যে

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۗ وَمَنْ

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ তা'আলা কিয়ামতের দিন এমন লোকের দিকে (রহমতের) দৃষ্টিতে দেখবেন না, যে লোক অহংকারবশে তার ইয়ার (লুঙ্গি) (পিরার নীচে) ঝুলিয়ে চলে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭৮৮)

মন্দ কর্ম করে সে তো শাস্তি পাবে
শুধু তার কর্ম অনুপাতে।

৮৫. যিনি তোমার উপর কুরআনকে
ফরয (অবতীর্ণ) করেছেন তিনি
তোমাকে অবশ্যই ফিরিয়ে আনবেন
প্রত্যাবর্তন স্থানে। বলঃ আমার
প্রতিপালক ভাল জানেন কে সৎ
পথের নির্দেশ এনেছে এবং কে স্পষ্ট
বিভ্রান্তিতে আছে।

৮৬. তুমি আশা করনি যে, তোমার
প্রতি কিতাব অবতীর্ণ হবে। এটা তো
শুধু তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ।
সুতরাং তুমি কখনো কাফিরদের
সহায় হয়ো না।

৮৭. তোমার প্রতি আল্লাহর
আয়াত অবতীর্ণ হওয়ার পর তারা
যেন তোমাকে কিছুতেই সেগুলো
হতে বিমুখ না করে। তুমি
তোমার প্রতিপালকের দিকে
আস্থান কর এবং কিছুতেই
মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

৮৮. তুমি আল্লাহর সাথে অন্য
মা'বুদকে ডেকো না, তিনি ছাড়া অন্য
কোন (সত্য) মা'বুদ নেই। আল্লাহর
মুখমন্ডল (সত্তা) ব্যতীত সবকিছু
ধ্বংসশীল। হুকুম-ফয়সালা (ইহকাল
ও পরকালে) তাঁরই এবং তাঁরই
নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

جَاءَ بِالسِّيئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا
السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى
مَعَادٍ ط قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى
وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٦﴾

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُنْفَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا
رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٧﴾

وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أَنْزَلَتْ إِلَيْكَ
وَأَدْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٨﴾

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ مَلَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ ت كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ط لَهُ الْحُكْمُ
وَالِيهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٩﴾

সূরাঃ আনকাবুত, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬৯, রুকুঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ

أَيَاتُهَا ٦٩ رُكُوعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আলিফ-লাম-মীম।

الْم

২. মানুষ কি মনে করে যে, আমরা ঈমান এনেছি, একথা বললেই তাদেরকে পরীক্ষা না করে অব্যাহতি দেয়া হবে?

أَحْسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ①

৩. আমি তো তাদের পূর্ব-বর্তীদেরকেও পরীক্ষা করেছিলাম; আর আল্লাহ অবশ্যই জেনে নিবেন কারা সত্যবাদী ও কারা মিথ্যাবাদী।

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ②

৪. যারা মন্দ কর্ম করে তারা কি মনে করে যে, তারা আমার আয়ত্তের বাইরে চলে যাবে? তাদের সিদ্ধান্ত কত মন্দ!

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا ③ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ④

৫. যে আল্লাহর সাথে সাক্ষাত কামনা করে (সে জেনে রাখুক যে,) আল্লাহর নির্ধারিত সময় আসবেই, তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ⑤ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑥

৬. আর যে সাধনা করে, সে তো নিজের জন্যেই সাধনা করে; নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বজগত হতে অমুখাপেক্ষী।

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ⑦ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑧

৭. আর যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আমি নিশ্চয়ই তাদের মন্দ কর্মগুলো মিটিয়ে দিবো এবং তাদের কাজের উত্তম ফল দান করবো।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑨

৮. আমি মানুষকে নির্দেশ দিয়েছি তার পিতা-মাতার প্রতি সদ্যবহার করতে; তবে তারা যদি তোমার উপর বল প্রয়োগ করে, আমার সাথে এমন কিছু শরীক করতে যার সম্পর্কে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তবে তুমি তাদেরকে মান্য করো না। আমারই নিকট তোমাদের প্রত্যাবর্তন। অতঃপর আমি তোমাদেরকে জানিয়ে দিবো যা তোমরা করতে।

৯. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, আমি অবশ্যই তাদেরকে সৎকর্ম পরায়ণদের অন্তর্ভুক্ত করবো।

১০. মানুষের মধ্যে কতক লোক বলেঃ আমরা আল্লাহতে বিশ্বাস করি, কিন্তু আল্লাহর পথে যখন তারা কষ্টে পতিত হয়, তখন তারা মানুষের পীড়নকে আল্লাহর শাস্তির মত গণ্য করে এবং তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে কোন সাহায্য আসলে তারা বলতে থাকে, আমরা তো তোমাদের সাথেই ছিলাম। বিশ্ববাসীর অন্তরে যা আছে, আল্লাহ কি তা সম্যক অবগত নন?

১১. আল্লাহ অবশ্যই জেনে নেবেন কারা ঈমান এনেছে আরও জেনে নিবেন কারা মুনাফিক।

১২. কাফিররা মু'মিনদেরকে বলেঃ আমাদের পথ অনুসরণ কর, আমরা তোমাদের পাপভার বহন করবো; কিন্তু তারা তো তাদের পাপভারের কিছুই বহন করবে না। তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ط وَإِنْ
جَاهَدَكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ
فَلَا تُطِعْهُمَا ط إِنْ مَرَّعَلْمُ فَأْتِبْهُمْ مِمَّا كُنْتُمْ
تَعْبُونَ ﴿٨﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ
فِي الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ
فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلنَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ط وَكَيِّنَ
جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ط
أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنَافِقِينَ ﴿١١﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا
سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ ط وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ
مِّنْ خَطِيئَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ط إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾

১৩. তারা নিজেদের ভার বহন করবে এবং নিজেদের বোঝার সাথে আরো কিছু বোঝা এবং তারা যে মিথ্যা উদ্ভাবন করে সে সম্পর্কে কিয়ামত দিবসে অবশ্যই তাদেরকে প্রশ্ন করা হবে।

১৪. আমি তো নূহ (ﷺ)-কে তাঁর সম্প্রদায়ের নিকট প্রেরণ করেছিলাম। তিনি তাদের মধ্যে অবস্থান করেছিলেন পঞ্চাশ বছর কম হাজার বছর। অতঃপর প্লাবন তাদেরকে গ্রাস করে, কারণ তারা ছিল অত্যাচারী।

১৫. অতঃপর আমি তাকে এবং যারা নৌকায় আরোহণ করেছিল তাদেরকে রক্ষা করলাম এবং বিশ্বজগতের জন্যে একে করলাম একটি নিদর্শন।

১৬. (স্মরণ কর) ইবরাহীম (ﷺ)-এর কথা, তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর এবং তাঁকে ভয় কর, তোমাদের জন্যে এটাই শ্রেয় যদি তোমরা জানতে।

১৭. তোমরা তো আল্লাহ ব্যতীত শুধু মূর্তিপূজা করছো এবং মিথ্যা উদ্ভাবন করছো, তোমরা আল্লাহ ব্যতীত যাদের পূজা কর তারা তোমাদের রুখীর মালিক নয়। সুতরাং তোমরা রুখী কামনা কর আল্লাহর নিকট এবং তাঁরই ইবাদত কর ও তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। তোমরা তাঁরই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَلِيَحْمِلْنَ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ
وَلَيَسْئَلَنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾

وَأَقْدَرْنَا لِنُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ
سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ
ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ
إفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
لَا يَسْمَعُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ
وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾

১৮. তোমরা যদি আমাকে মিথ্যাবাদী বল, তবে জেনে রেখো যে, তোমাদের পূর্ববর্তীরাও নবীদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছিল। সুস্থপন্থভাবে প্রচার করে দেয়া ছাড়া রাসুলের আর কোন দায়িত্ব নেই।

১৯. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, কিভাবে আল্লাহ সৃষ্টিকে অস্তিত্ব দান করেন, অতঃপর ওটা পুনরায় সৃষ্টি করেন? এটা তো আল্লাহর জন্যে সহজ।

২০. বলঃ পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং অনুধাবন কর, কিভাবে তিনি সৃষ্টি শুরু করেছেন? অতঃপর আল্লাহ সৃষ্টি করবেন পরবর্তী সৃষ্টি। আল্লাহ তো সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

২১. তিনি যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেন এবং যার প্রতি ইচ্ছা অনুগ্রহ করেন। তোমরা তাঁরই নিকট প্রত্যাভর্তিত হবে।

২২. তোমরা আল্লাহকে ব্যর্থ করতে পারবে না পৃথিবীতে অথবা আকাশে এবং আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের কোন অভিভাবক নেই, সাহায্যকারীও নেই।

২৩. যারা আল্লাহর নিদর্শন ও তাঁর সাক্ষাৎকার অস্বীকার করে তারা ই আমার অনুগ্রহ হতে নিরাশ হয়। তাদের জন্যে আছে যন্ত্রনাদায়ক শাস্তি।

২৪. ইবরাহীম (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়ের শুধু এই কথা বলা ছাড়া আর কোন উত্তর ছিল না যে, তাঁকে

وَإِنْ تَكْفُرُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ
وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

أَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۗ
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ
ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۗ
وَالِيهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۗ
وَمَا لَكُمْ مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَسُوءُ
مِن رَّحْمَتِي ۗ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ
أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۗ إِنَّ فِي

হত্যা কর অথবা অগ্নিদগ্ধ কর; কিন্তু আল্লাহ তাকে অগ্নি হতে রক্ষা করলেন। এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

ذٰلِكَ لَايَتْلُوهُ اِلَّا قَوْمٌ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৫. এবং তিনি (ইবরাহীম عليه السلام) বললেনঃ তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে মূর্তিগুলোকে উপাস্যরূপে গ্রহণ করেছো, পার্থিব জীবনে তোমাদের পারস্পরিক বন্ধুত্বের খাতিরে; পরে কিয়ামতের দিন তোমরা একে অপরকে অস্বীকার করবে এবং পরস্পরকে অভিসম্পাত দিবে তোমাদের আবাস হবে জাহান্নাম এবং তোমাদের কোন সাহায্যকারী থাকবে না।

وَقَالَ رَبِّنَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۗ
مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۗ
وَمَا لَكُمْ اِلَّا لِكُم مِّنْ لِّصْرِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৬. লূত عليه السلام তাঁর (ইবরাহীম عليه السلام)-এর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করলেন। (ইবরাহীম عليه السلام) বললেনঃ আমি আমার প্রতিপালকের উদ্দেশ্যে দেশ ত্যাগ করছি। তিনি তো পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

فَاٰمَنَ لَهُ لُوْطٌ مَّ وَقَالَ اِنِّىْ مَهْجَرٌ اِلَىٰ رَبِّىْ ۗ
اِنَّهُ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾

২৭. আমি (ইবরাহীম عليه السلام)-কে দান করলাম ইসহাক عليه السلام ও ইয়াকুব عليه السلام এবং তার বংশধরদের জন্যে স্থির করলাম নবুওয়াত ও কিতাব এবং আমি তাকে পুরস্কৃত করেছিলাম দুনিয়ায় এবং আখিরাতেও সে নিশ্চয়ই সৎকর্মপরায়ণদের অন্যতম হবে।

وَوَهَبْنَا لَهُ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ
النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاتَّيْنٰهُ اَجْرًا فِى الدُّنْيَا
وَإِنَّهُ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৮. স্মরণ কর লূত عليه السلام-এর কথা) তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা তো এমন

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اِنَّكُمْ لَتَاۡتُوْنَ الْفٰحِشَةَ
مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾

অশ্লীল কর্ম করছো, যা তোমাদের পূর্বে বিশ্বে কেউ করেনি।

২৯. তোমরাই তো পুরুষে আসক্ত হচ্ছে, তোমরাই তো রাহাজানি (ডাকাতি) করে থাকো এবং তোমরাই তো নিজেদের মজলিসে প্রকাশ্যে ঘৃণ্য কর্ম করে থাকো। উত্তরে তার সম্প্রদায় শুধু এই বললোঃ আমাদের উপর আল্লাহর শাস্তি আনয়ন কর, যদি তুমি সত্যবাদী হও।

৩০. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! বিপর্যয় সৃষ্টিকারী সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আমাকে সাহায্য করুন!

৩১. যখন আমার প্রেরিত ফেরেশতার সূসংবাদসহ ইবরাহীমের নিকট আসলেন, তাঁরা বলেছিলেনঃ আমরা এই জনপদবাসীকে ধ্বংস করবো, এর অধিবাসীরা তো অত্যাচারী।

৩২. (ইবরাহীম (عليه السلام)) বললেনঃ এই জনপদে তো লুত রয়েছেন। তারা বললেনঃ সেথায় কারা আছে, তা আমরা ভাল জানি; আমরা তো লুত (عليه السلام)-কে ও তাঁর পরিজনবর্গকে রক্ষা করবোই, তাঁর স্ত্রীকে ব্যতীত; সে তো পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

৩৩. এবং যখন আমার প্রেরিত ফেরেশতার লুত (عليه السلام)-এর নিকট আসলেন, তখন তাঁদের জন্যে তিনি চিন্তিত হয়ে পড়লেন এবং নিজে

أَيُّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۗ
وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمْ الْمُنْكَرَ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٩﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بالبشرى
قَالُوا إِنَّا مَهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ
أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ
فِيهَا لَنَنْجِيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ زَكَتْ
مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٢﴾

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَاءَ بِهِمْ
وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ

তাদের রক্ষায় অসমর্থ মনে করলেন। তাঁরা বললেনঃ ভয় করো না, চিন্তাও করো না; আমরা তোমাকে ও তোমার পরিবারবর্গকে রক্ষা করবো, তোমার স্ত্রী ব্যতীত; সে তো পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

৩৪. আমরা এই জনপদবাসীর উপর আকাশ হতে শাস্তি নাযিল করবো, কারণ তারা পাপাচার করছিল।

৩৫. আমি বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে এতে একটি স্পষ্ট নিদর্শন রেখেছি।

৩৬. আমি মাদইয়ানবাসীদের প্রতি তাদের ভ্রাতা শুআইব (عيسى)-কে পাঠিয়েছিলাম। তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, শেষ দিবসকে ভয় কর এবং পৃথিবীতে বিপর্যয় ঘটায়ো না।

৩৭. কিন্তু তারা তাঁর প্রতি মিথ্যা আরোপ করলো, অতঃপর তারা ভূমিকম্প দ্বারা আক্রান্ত হলো; ফলে তারা নিজ গৃহে নতজানু অবস্থায় শেষ হয়ে গেল।

৩৮. এবং আমি আ'দ ও সামূদকে ধ্বংস করেছিলাম, তাদের বাড়ী ঘরই তোমাদের জন্যে এর সুস্পষ্ট প্রমাণ। শয়তান তাদের কাজকে তাদের দৃষ্টিতে শোভন করেছিল এবং তাদেরকে সৎপথ অবলম্বনে বাধা দিয়েছিল, যদিও তারা ছিল বিচক্ষণ।

৩৯. এবং (আমি ধ্বংস করেছিলাম) কারূন, ফিরাউন ও হামানকে; মূসা

إِنَّا مُنَجِّوْكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا أَمْرَاتِكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٤﴾

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٥﴾

وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٦﴾

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَتَّبِعُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٧﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيًّا ﴿٣٨﴾

وَعَادًا وَثَمُودًا ۚ وَقَدْ بَيَّنَّا لَكُم مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ رِجْزًا ۖ وَرَبِّانَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمٰلَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ ۖ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٩﴾

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ

(الطَّيِّبِينَ) তাদের নিকট সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিলেন, তখন তারা দেশে দস্ত করতো; কিন্তু তারা আমার শাস্তি এড়াতে পারেনি।

৪০. তাদের প্রত্যেককেই তার অপরাধের জন্যে শাস্তি দিয়েছিলাম, তাদের কারো প্রতি প্রেরণ করেছি প্রস্তরসহ প্রচন্ড ঝাটিকা, তাদের কাউকেও আঘাত করেছিল বিকট শব্দ, কাউকেও আমি প্রোথিত করেছিলাম ভূ-গর্ভে এবং কাউকেও করেছিলাম নিমজ্জিত। আল্লাহ তাদের প্রতি কোন যুলুম করেননি, তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল।

৪১. যারা আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে তাদের দৃষ্টান্ত মাকড়সা, যে নিজের জন্যে ঘর বানায় এবং ঘরের মধ্যে মাকড়সার ঘরই তো দুর্বলতম, যদি তারা জানতো!

৪২. তারা আল্লাহর পরিবর্তে যা কিছুকেই আহ্বান করে আল্লাহ তা জানেন এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

৪৩. মানুষের জন্যে এসব দৃষ্টান্ত বর্ণনা করে থাকি; কিন্তু শুধু জ্ঞানী ব্যক্তিরাই এসব বুঝে থাকে।

৪৪. আল্লাহ যথাযথভাবে আকাশ-মন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন, এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ﴿٤٠﴾

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِ ۗ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۗ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۗ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۗ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَعْرَفْنَا ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤١﴾

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۗ اتَّخَذَتْ بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٣﴾

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لَضَرِبُهَا لِلنَّاسِ ۗ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٤﴾

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٥﴾

৪৫. তুমি তোমার প্রতি প্রত্যাদিষ্ট (ওহীকৃত) কিতাব আবৃত্তি কর এবং নামায প্রতিষ্ঠিত কর। নিশ্চয়ই নামায বিরত রাখে অশ্লীল ও মন্দ কার্য হতে। আল্লাহর স্মরণই সর্বশ্রেষ্ঠ। তোমরা যা কর আল্লাহ তা জানেন।

৪৬. তোমরা উত্তম পন্থা ব্যতীত কিতাবীদের সাথে বিতর্ক করবে না, তবে তাদের সাথে করতে পার, যারা তাদের মধ্যে সীমালঙ্ঘনকারী এবং বলঃ আমাদের প্রতি ও তোমাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে, তাতে আমরা বিশ্বাস করি এবং আমাদের মা'বুদ ও তোমাদের মা'বুদ তো একই এবং আমরা তাঁরই প্রতি আত্মসমর্পণকারী।

৪৭. এভাবেই আমি তোমার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ করেছি এবং যাদেরকে আমি কিতাব দিয়েছিলাম তারা এতে বিশ্বাস করে এবং এদেরও কেউ কেউ এতে বিশ্বাস করে। কাফিররা ব্যতীত আর কেউ আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করে না।

৪৮. তুমি তো এর পূর্বে কোন কিতাব পাঠ করনি এবং স্বহস্তে কোন দিন কিতাব লিখনি যে, মিথ্যাবাদীরা সন্দেহ পোষণ করবে।

৪৯. বস্তুতঃ যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে, তাদের অন্তরে এটা স্পষ্ট নিদর্শন। যালিমরা ব্যতীত কেউ আমার নিদর্শন অস্বীকার করে না।

৫০. তারা বলেঃ তার প্রতিপালকের নিকট হতে তাঁর নিকট নিদর্শনাবলী

أَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ
الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ
وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٥﴾

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ
إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي
أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَالْهَنَا وَالْهَكْمُ وَاحِدٌ
وَإِن كُن لَكُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ
الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾

وَمَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ
بِيَمِينِكَ إِذًا لِآرْتَابِ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا

শ্রেণিত হয় না কেন? বলঃ নিদর্শনাবলী আল্লাহর ইচ্ছাধীন। আমি তো একজন প্রকাশ্য সতর্ককারী মাত্র।

৫১. এটা কি তাদের জন্যে যথেষ্ট নয় যে, আমি তোমার নিকট কুরআন অবতীর্ণ করেছি, যা তাদের নিকট পাঠ করা হয়? এতে অবশ্যই মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে অনুগ্রহ ও উপদেশ রয়েছে।^১

৫২. বলঃ আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে আল্লাহই যথেষ্ট। আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা আছে তা তিনি অবগত এবং যারা অসত্যে বিশ্বাস করে ও আল্লাহকে অস্বীকার করে তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

৫৩. তারা তোমার নিকট অবিলম্বে শাস্তি কামনা করছে, যদি নির্ধারিত কাল না থাকতো তবে শাস্তি তাদের উপর আসতো। নিশ্চয়ই তাদের উপর শাস্তি আসবে আকস্মিকভাবে, তাদের অজ্ঞাতসারে।

৫৪. তারা তোমার নিকট অবিলম্বে শাস্তি কামনা করছে, জাহান্নাম তো কাফিরদেরকে পরিবেষ্টন করবেই।

৫৫. সেদিন শাস্তি তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে তাদের উপরের দিক ও তাদের পায়ের তলা হতে এবং তিনি বলবেনঃ তোমরা যা করতে তার স্বাদ গ্রহণ কর।

الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَى عَلَيْهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَى لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۗ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٥٣﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۗ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٤﴾

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٥﴾

يَوْمَ يَعْشُرُهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُو قُوَّةٍ مَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٦﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ তা'আলা অন্য কোন নবী তিলাওয়াত শুনে না, যেহেতু তিনি নবীর উচ্চস্বরে সুমধুর কণ্ঠের তিলাওয়াত শুনে থাকেন। সুফিয়ান বলেছেন, একবার অর্ধ হচ্ছেঃ একজন নবী যিনি কুরআনকে এ ধরনের কিছু মনে করেন যা তাকে অনেক পার্শ্ববর্তী আনন্দ বিতরণ করে। (বুখারী, হাদীস নং ৫০২৪)

৫৬. হে আমার মু'মিন বান্দারা!
আমার পৃথিবী প্রশস্ত; সুতরাং তোমরা
আমারই ইবাদত কর।^১

৫৭. জীবমাত্রই মৃত্যুর স্বাদ
গ্রহণকারী; অতঃপর তোমরা আমারই
নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

৫৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম
করে আমি অবশ্যই তাদের বসবাসের
জন্যে সুউচ্চ প্রাসাদ দান করবো
জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ
প্রবাহিত, সেখানে তারা স্থায়ী হবে,
কত উত্তম প্রতিদান সৎকর্মশীলদের।

৫৯. যারা ধৈর্য অবলম্বন করে ও
তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর
করে।

৬০. এমন কত জীবজন্তু আছে যারা
নিজেদের খাদ্য মণ্ডলুদ রাখে না;
আল্লাহই রিযিক দান করেন
তাদেরকে ও তোমাদেরকে এবং
তিনি সর্বশ্রোতা সর্বজ্ঞ।

৬১. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস
করঃ কে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি
করেছেন এবং চন্দ্র-সূর্যকে নিয়ন্ত্রণ
করছেন? তারা অবশ্যই বলবেঃ
আল্লাহ! তাহলে তারা কোথায় ফিরে
যাচ্ছে?

يُعْبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ
فَيَأْتِي فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ
مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ط نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٨﴾

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۗ اللَّهُ
يُرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَّن خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۗ فَأَلِي
يُوقَفُونَ ﴿٦١﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। মু'য়ায (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর পেছনে সওয়ারীর পিঠে বসা ছিলাম। তখন তিনি আমাকে ডাকলেন, হে মু'য়ায, আমি জবাব দিলাম, লাক্বাইবা ওয়া সা'দাইকা। অতঃপর তিনি একপ তিনবার ডাকলেন। (তারপর জিজ্ঞেস করলেন) তুমি কি জান যে, বান্দাহদের ওপর আল্লাহর হক কি? (আল্লাহর হক এই যে,) বান্দাহ আল্লাহর ইবাদত করবে এবং তাঁর সাথে কোন কিছুকে শরীক বানাতে পারবে না। পুনরায় তিনি আরও কিছুক্ষণ চললেন। অতঃপর ডাকলেন, হে মু'য়ায! আমি জবাব দিলাম, লাক্বাইকা ওয়া সা'দাইকা। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, তোমার কি জানা আছে, বান্দাহ যখন ওটা করে, তখন আল্লাহর ওপর বান্দাহদের হক কি দাঁড়ায়? (তা হলো এই যে,) আল্লাহ তা'আলা তাদেরকে আযাব দেবেন না। (বুখারী, হাদীস নং ৬২৬৭)

৬২. আল্লাহ তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার জন্যে ইচ্ছা তার রিযিক বর্ধিত করেন এবং যার জন্যে ইচ্ছা তা সীমিত করেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সম্যক অবহিত।

৬৩. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ মৃত হবার পর আকাশ হতে পানি বর্ষণ করে কে ওকে জীবিত করে? তারা অবশ্যই বলবেঃ আল্লাহ! বলঃ প্রশংসা আল্লাহরই; কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা অনুভব করে না।

৬৪. এই পার্থিব জীবনতো ক্রীড়া-কৌতুক ব্যতীত কিছুই নয়। পারলৌকিক জীবনই তো প্রকৃত জীবন, যদি তারা জানতো।

৬৫. তারা যখন নৌযানে আরোহণ করে তখন তারা বিশুদ্ধচিত্ত হয়ে একনিষ্ঠভাবে আল্লাহকে ডাকে; অতঃপর তিনি যখন স্থলে ভিড়িয়ে তাদেরকে উদ্ধার করেন, তখন তারা শিরকে লিপ্ত হয়।

৬৬. ফলে তাদের প্রতি আমার দান তারা অস্বীকার করে এবং ভোগ-বিলাসে মত্ত থাকে; অচিরেই তারা জানতে পারবে।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ط قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ وَّلَعِبٌ ط وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَمْ كُنُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِكِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ هَ فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ؎ وَلِيَتَّبِعُوا ؎ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ জান্নাতে প্রবেশকারী প্রথম দলের (লোকদের) চেহারা চৌদ্দ তারিখের চাঁদের ন্যায় (উজ্জ্বল ও সুন্দর) হবে। জান্নাতে তাদের না আসবে ধু ধু, না ঝরবে নাকের পানি, না হবে পায়খানা। তাদের বাসন হবে সোনার তৈরী, চিক্ননী হবে সোনা ও রূপার। তাদের আংটি বাতির ন্যায় জ্বলতে থাকবে। তাদের ঘাম মেশকের ন্যায় (খোশবুদার) হবে। প্রত্যেকে দু'জন করে এমন বিবি পাবে-অত্যধিক সৌন্দর্যের কারণে যাদের গোশত ভেদ করে হাড়ির ভেতরের মজ্জাও দেখা যাবে। জান্নাত বাসীদের মধ্যে (কখনো) না হবে মতভেদ, না দেখা দেবে পারস্পরিক হিংসা বিদ্বেষ। সবাই এক মন, এক প্রাণ হয়ে থাকবে। সকাল-সন্ধ্যায় তারা আল্লাহর পবিত্রতা বর্ণনায় রত থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩২৪৫)

৬৭. তারা কি দেখে না যে, আমি (মক্কা) হারামকে নিরাপদ স্থান করেছি অথচ এর চতুর্পার্শ্বে যেসব মানুষ আছে তাদের উপর হামলা করা হয়, তবে কি তারা অসত্যেই বিশ্বাস করবে এবং আল্লাহর অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

৬৮. যে ব্যক্তি আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা রচনা করে অথবা তাঁর নিকট হতে আগত সত্যকে অস্বীকার করে তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? জাহান্নামই কি কাফিরদের আবাস নয়?

৬৯. যারা আমার উদ্দেশ্যে সংগ্রাম করছে আমি তাদেরকে অবশ্যই আমার পথে পরিচালিত করবো; আল্লাহ অবশ্যই সৎকর্মপরায়ণদের সাথে থাকেন।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مِّنَّا وَيُحْتَفَبُ
النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ
اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۗ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۗ
وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾

১। অর্থাৎ এর ভাবার্থ হচ্ছেঃ যারা নিজেদের ইলম অনুযায়ী আমল করে, আল্লাহ তাদেরকে ঐসব বিষয়েও সুপথ প্রদর্শন করবেন, যা তাদের ইলমের মধ্যে নেই। (ইবনে কাসীর)

সূরাঃ রুম, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬০, রুকূঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الرَّؤْمِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٦٠ رُكُوعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আলিফ-লাম-মীম

الْم ①

২. রোমকগণ পরাজিত হয়েছে,

غَلِبَتِ الرَّؤْمُ ②

৩. নিকটবর্তী অঞ্চলে; কিন্তু তারা তাদের এই পরাজয়ের পর শীঘ্রই বিজয়ী হবে,

فِي آدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلِبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ ③

৪. কয়েক বছরের মধ্যেই। পূর্বের ও পরের সিদ্ধান্ত আল্লাহরই। আর সেই দিন মু'মিনরা আনন্দিত হবে,

فِي بَضْعِ سِنِينَ ④ إِنَّ اللَّهَ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ⑤ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ⑥

৫. আল্লাহর সাহায্যে। তিনি যাকে ইচ্ছা সাহায্য করেন এবং তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

يَنْصُرُ اللَّهُ ⑦ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ⑧ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑨

৬. এটা আল্লাহরই প্রতিশ্রুতি; আল্লাহ তাঁর প্রতিশ্রুতির ব্যতিক্রম করেন না; কিন্তু অধিকাংশ লোক জানে না।

وَعَدَ اللَّهُ ⑩ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ⑪

৭. তারা পার্থিব জীবনের বাহ্যিক দিক সম্বন্ধে অবগত, আর আখিরাত সম্বন্ধে তারা গাফিল।

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ⑫

وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غٰفِلُونَ ⑬

৮. তারা কি নিজেদের অন্তরে ভেবে দেখে না যে, আল্লাহ আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও এতোদূভয়ের অন্তর্বর্তী সবকিছু সৃষ্টি করেছেন যথাযথভাবেই ও এক নির্দিষ্ট কালের জন্যে? কিন্তু মানুষের মধ্যে অনেকেই তাদের প্রতিপালকের সাক্ষাতে অবিশ্বাসী।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ⑭ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ⑮

وَأَنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُونَ ⑯

৯. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না? তাহলে দেখতো যে, তাদের

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ

পূর্ববর্তীদের পরিণাম কিরূপ হয়েছে। শক্তিতে তারা ছিল তাদের আপেক্ষা প্রবল, তারা জমি চাষ করতো, তারা ওটা আবাদ করতো তাদের আপেক্ষা অধিক। তাদের নিকট এসেছিল তাদের রাসূলগণ সুস্পষ্ট নিদর্শনসহ; বশ্চতঃ তাদের প্রতি যুলুম করা আল্লাহর কাজ ছিল না বরং তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল।

১০. অতঃপর যারা মন্দকর্ম করেছিল তাদের পরিণাম হয়েছে মন্দ; কারণ তারা আল্লাহর আয়াতসমূহ প্রত্যাক্ষ্যান করতো এবং তা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো।

১১. আল্লাহ সৃষ্টির সূচনা করেন, অতঃপর তিনি এর পুনরাবৃত্তি করবেন, তখন তোমরা তাঁরই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

১২. যেদিন কিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন অপরাধিগণ হতাশ হয়ে পড়বে।

১৩. তাদের শরীকদের কেউ তাদের সুপারিশ করবে না এবং তারাও তাদের শরীকদেরকে অস্বীকার করবে।

১৪. যেদিন কিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন মানুষ বিভক্ত হয়ে পড়বে।

১৫. অতএব যারা ঈমান এনেছে ও সৎকর্ম করেছে তারা জান্নাতে আনন্দে থাকবে।

عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ط فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٠﴾

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ اسَاءُوا السُّوْآى اَنْ كَذَّبُوْا بِآيَاتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١١﴾

اللّٰهُ يَبْدُؤُ الْخَلْقَ ثُمَّ يَعِيْدُهُ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٢﴾

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٣﴾

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعَاؤُ وَكَانُوا بِشُرَكَآئِهِمْ كُفْرِيْنَ ﴿١٤﴾

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُؤْمِدُ يُتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٥﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٦﴾

১। মু'মিন ও কাফিরদের পৃথক পৃথক দল হবে। (আহসানুল বয়ান)

১৬. আর যারা কুফরী করেছে এবং আমার নিদর্শনাবলী ও পরকালের সাক্ষাৎকার অস্বীকার করেছে, তারাই শাস্তি ভোগ করতে থাকবে।

১৭. সুতরাং তোমরা আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর সন্ধ্যায় ও প্রভাতে।

১৮. এবং আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে সকল প্রশংসা তো তারই। আর অপরাহ্নেও যোহরের সময়;

১৯. তিনিই মৃত হতে জীবন্তের আবির্ভাব ঘটান এবং তিনিই জীবন্ত হতে মৃতের ও আবির্ভাব ঘটান এবং ভূমির মৃত্যুর পর ওকে পুনর্জীবিত করেন। এভাবেই তোমরা উস্থিত হবে।

২০. তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদেরকে মুস্তিকা হতে সৃষ্টি করেছেন। এখন তোমরা মানুষ, সর্বত্র ছড়িয়ে পড়ছো।

২১. এবং তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদের জন্যে তোমাদের মধ্য হতে সৃষ্টি করেছেন তোমাদের সঙ্গিনীদেরকে যাতে তোমরা তাদের নিকট শাস্তি পাও এবং তিনি তোমাদের মধ্যে পারস্পরিক ভালবাসা ও দয়া সৃষ্টি করেছেন। চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে এতে অবশ্যই বহু নিদর্শন রয়েছে।

২২. এবং তার নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টি এবং তোমাদের ভাষা ও বর্ণের

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَإِقْلَآئِ
الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿١٦﴾

فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا
وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٨﴾

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
وَيُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾

وَمِنْ آيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَا
اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿٢٠﴾

وَمِنْ آيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا
لِتَسْكُنُوْا اِيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لآيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

وَمِنْ آيٰتِهٖٓ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ
السِّنِّتِمْ وَالْوَالِدِكُمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لآيٰتٍ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٢﴾

বৈচিত্র। এতে জ্ঞানীদের জন্যে
অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

২৩. এবং তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে
রয়েছে রাত্রিতে ও দিবাভাগে
তোমাদের নিদ্রা এবং তোমাদের তাঁর
অনুগ্রহ অন্বেষণ। এতে অবশ্যই
নিদর্শন রয়েছে শ্রবণকারী
সম্প্রদায়ের জন্যে।

২৪. এবং তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে
রয়েছে যে, তিনি তোমাদেরকে
প্রদর্শন করেন বিদ্যুৎ ভয় ও ভরসা
সঞ্চারকরূপে এবং তিনি আকাশ হতে
পানি বর্ষণ করেন ও তার দ্বারা
ভূমিকে তার মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত
করেন; এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে
বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের
জন্যে।

২৫. তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে
যে, তাঁরই আদেশে আকাশ ও
পৃথিবীর স্থিতি; অতঃপর আল্লাহ যখন
তোমাদেরকে মৃত্তিকা হতে উঠবার
জন্যে একবার আহ্বান করবেন তখন
তোমরা উঠে আসবে।

২৬. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা
কিছু আছে তা তাঁরই। সবাই তাঁর
আজ্ঞাবহ।

২৭. তিনি সৃষ্টিকে (প্রথমবার)
অস্তিত্বে আনয়ন করেন অতঃপর
তিনি এটাকে সৃষ্টি করবেন পুনর্বার;
এটা তাঁর জন্যে অতি সহজ।
আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে সর্বোচ্চ
মর্যাদা তাঁরই এবং তিনিই
পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ
مِّنْ فَضْلِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُسْمِعُونَ ﴿٢٣﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنزِلُ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٤﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ
ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ
تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَهٗ قٰنِطٰنٍ ﴿٢٦﴾

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ
عَلَيْهِ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

২৮. আল্লাহ তোমাদের জন্যে তোমাদের নিজেদের মধ্যে একটি দৃষ্টান্ত পেশ করেছেনঃ তোমাদেরকে আমি যে রিযিক দিয়েছি তোমাদের অধিকারভুক্ত দাস-দাসীদের কেউ কি তাতে অংশীদার? বরং তোমরা তাতে সমপর্যায়ের অথচ তোমরা কি তাদেরকে সেরূপ ভয় কর যেরূপ তোমরা পরস্পরকে ভয় কর। এভাবেই আমি বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শনাবলী বিবৃত করি।

২৯. বস্তুতঃ সীমালঙ্ঘনকারীরা অজ্ঞানতাবশতঃ তাদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে থাকে; সুতরাং আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন, কে তাকে সৎপথে পরিচালিত করবে? তাদের কোন সাহায্যকারী নেই।

৩০. তুমি একনিষ্ঠ হয়ে নিজেকে দ্বীনে প্রতিষ্ঠিত কর। আল্লাহর প্রকৃতির অনুসরণ কর, যে প্রকৃতি অনুযায়ী তিনি মানুষ সৃষ্টি করেছেন; আল্লাহর সৃষ্টির কোন পরিবর্তন নেই, এটা সরল দ্বীন; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ জানে না।

৩১. বিশুদ্ধ চিত্তে তাঁর অভিমুখী হয়ে তাঁকে ভয় কর, তোমরা নামায কায়ম কর এবং মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

৩২. যারা নিজেদের দ্বীনে মতভেদ সৃষ্টি করেছে এবং বিভিন্ন দলে বিভক্ত হয়েছে। প্রত্যেক দলই নিজ নিজ মতবাদ নিয়ে উৎফুল্ল।

ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ۖ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ شُرَكَاءَ فِي مَآرَرَقُنُوكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۗ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

بَلِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِخَيْرٍ عَلِمُوا ۖ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَا لَهُمْ مِّنْ لَّصِيرِينَ ﴿٢٩﴾

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۖ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۖ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۗ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾

مِنَ الَّذِينَ فَزَعُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ۗ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾

৩৩. মানুষকে যখন দুঃখ-দৈন্য স্পর্শ করে তখন তারা বিশুদ্ধ চিন্তে তাদের প্রতিপালককে ডাকে; অতঃপর তিনি যখন তাদেরকে স্বীয় অনুগ্রহ আশ্বাদন করান তখন তাদের এক দল তাদের প্রতিপালকের শরীক সাব্যস্ত করে থাকে।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ
إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَاهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِحُوا
مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

৩৪. তাদেরকে আমি যা দিয়েছি তা অস্বীকার করাবার জন্যে। সুতরাং ভোগ করে নাও, শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ فَتَتَعَوَّذُوا مِنْهُ فَسُوفَ
تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

৩৫. আমি কি তাদের নিকট এমন কোন দলীল অবতীর্ণ করেছি যা তাদেরকে আমার শরীক করতে বলে?

أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ
بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. আমি যখন মানুষকে অনুগ্রহের আশ্বাদ দিই তখন তারা উৎফুল্ল হয় এবং তাদের কৃতকর্মের ফলে দুর্দশাগ্রস্ত হলেই তারা হতাশ হয়ে পড়ে।

وَإِذَا آذَنَّا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِيبُهُمْ
سَيِّئَةٌ مِنْ بِنَاءِ قَدَّامَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾

৩৭. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছা তার রিযিক প্রশস্ত করেন অথবা তা সীমিত করেন? এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

৩৮. অতএব আত্মীয়কে দিয়ে দাও তার প্রাপ্য এবং অভাবগ্রস্ত ও মুসাফিরকেও। যারা আল্লাহর চেহারা (দর্শন) কামনা করে তাদের জন্যে এটা শ্রেয় এবং তারাই সফলকাম।

فَاتِذَا الْقُرْبَى حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ
ذَلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

১। যারা জান্নাতে আল্লাহকে দেখে নিজেকে ধন্য করতে চায়। (তাফসীর আহসানুল বায়ান, উর্দু)

৩৯. মানুষের ধন বৃদ্ধি পাবে বলে তোমরা সূদের উপর যা দিয়ে থাকো, আল্লাহর দৃষ্টিতে তা ধন-সম্পদ বৃদ্ধি করে না; কিন্তু আল্লাহর চেহারা (সম্ভ্রুষ্টি) লাভের জন্যে যে যাকাত তোমরা দিয়ে থাকো তাই বৃদ্ধি পায়; তারাই সমৃদ্ধশালী।

৪০. আল্লাহই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাদেরকে রিযিক দিয়েছেন, তিনি তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন ও পরে তোমাদেরকে জীবিত করবেন। তোমাদের শরীকদের এমন কেউ আছে কি যে এসবের কোন একটিও করতে পারে? তারা যাদেরকে শরীক করে, আল্লাহ তা হতে পবিত্র, মহান।

৪১. মানুষের কৃতকর্মের কারণে স্থলে ও সমুদ্রে বিপর্যয় ছড়িয়ে পড়েছে, যার ফলে তাদেরকে কোন কোন কর্মের শাস্তি তিনি আশ্বাদন করান যাতে তারা ফিরে আসে।

৪২. বলঃ তোমরা পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং দেখো, তোমাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছে! তাদের অধিকাংশই ছিল মুশরিক।

৪৩. তুমি সরল-সঠিক দ্বীনে নিজেকে প্রতিষ্ঠিত কর, আল্লাহর নির্দেশে অনিবার্য যে দিবস তা আসার পূর্বে, সেদিন মানুষ বিভক্ত হয়ে পড়বে।

৪৪. যে কুফরী করে, কুফরীর শাস্তি তারই প্রাপ্য; যারা সৎকর্ম করে তারা নিজেদেরই জন্যে রচনা করে সুখ-শয্যা।

وَمَا آتَيْتُم مِّن رَّبِّ لَيْزُبُوا فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْزُبُوا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُبْيِتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَن يَفْعَلُ مِنْ ذَلِكُمْ مَن شَيْءٍ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۗ كَانُوا أَكْثَرَهُمْ مُّشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾

فَاتِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَدِيمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمَ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصَدِّعُونَ ﴿٤٣﴾

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نَفْسَهُمْ يَهْدُونَ ﴿٤٤﴾

৪৫. কারণ যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, আল্লাহ তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে পুরস্কৃত করেন। তিনি কাফিরদেরকে পছন্দ করেন না।

৪৬. তাঁর নিদর্শনাবলীর একটি এই যে, তিনি সুসংবাদবাহী বায়ু প্রেরণ করেন তোমাদেরকে তাঁর অনুগ্রহ আশ্বাদন করাবার জন্যে; এবং যেন তাঁর নির্দেশে নৌযানগুলো বিচরণ করে, যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার ও তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞ হও।

৪৭. আমি তোমার পূর্বে রাসুল-দেরকে প্রেরণ করেছিলাম তাদের নিজ নিজ সম্প্রদায়ের নিকট। তারা তাঁদের নিকট সুস্পষ্ট নিদর্শনসমূহ নিয়ে এসেছিলেন; অতঃপর আমি অপরাধীদেরকে শাস্তি দিয়েছিলাম। মু'মিনদেরকে সাহায্য করা আমার দায়িত্ব।

৪৮. আল্লাহ, যিনি বায়ু প্রেরণ করেন, ফলে এটা মেঘমালাকে সঞ্চালিত করে; অতঃপর তিনি একে যেমন ইচ্ছা আকাশে ছড়িয়ে দেন, পরে একে খন্ড-বিখন্ড করে এবং তুমি দেখতে পাও ওটা হতে নির্গত হয় পানিধারা; অতঃপর যখন তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যাদের নিকট ইচ্ছা এটা পৌঁছিয়ে দেন, তখন তারা হয় আনন্দিত।

৪৯. যদিও তারা তাদের প্রতি বৃষ্টি বর্ষণের পূর্বে নিরাশ ছিল।

৫০. আল্লাহর অনুগ্রহের ফল সম্বন্ধে চিন্তা কর, কিভাবে তিনি ভূমির মৃত্যুর পর একে পুনর্জীবিত করেন;

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ
وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلُكُ بِأَمْرِهِ
وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ
فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاتَّقَبْنَا مِنَ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا ۗ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ
فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَتَرَى
الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلْفِهِ ۗ فَأِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ
لَمُبْسِسِينَ ﴿٤٩﴾

فَانظُرْ إِلَى اثْرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُعْجِي الْأَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ إِنَّ ذَلِكَ لَمُعْجِي الْمَوْتَى ۗ وَهُوَ عَلَى

এভাবেই আল্লাহ মৃতকে জীবিত করেন, কারণ তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾

৫১. এবং আমি যদি এমন বায়ু প্রেরণ করি যার ফলে তারা দেখে যে, শস্য পীত বর্ণ ধারণ করেছে, তখন তো তারা অকৃতজ্ঞ হয়ে পড়ে।

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا

مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾

৫২. নিশ্চয় তুমি মৃতকে শুনাতে পারবে না, বধিরকেও পারবে না আহ্বান শুনাতে, যখন তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়।

فَأَنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمُوتَى وَلَا تُسْمِعُ الصَّمَّةَ الدُّعَاءَ

إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾

৫৩. আর তুমি অন্ধকেও পথে আনতে পারবে না তাদের পথভ্রষ্টতা হতে। যারা আমার নিদর্শনাবলীতে বিশ্বাস করে শুধু তাদেরকেই তুমি শুনাতে পারবে, কারণ তারা আত্মসমর্পণকারী।

وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُمَىٰ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۖ إِنَّ تُسْمِعُ

إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

৫৪. আল্লাহ, যিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেন দুর্বলরূপে। অতঃপর দুর্বলতার পর তিনি দেন শক্তি, শক্তির পর আবার দেন দুর্বলতা ও বার্বক্য। তিনি যা ইচ্ছা সৃষ্টি করেন এবং তিনিই সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعِيفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ

ضَعِيفٍ قُوَّةً ۖ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا

وَشَيْبَةً ۖ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾

৫৫. যেদিন কিয়ামত হবে সেদিন অপরাধীরা শপথ করে বলবে যে, তারা (দুনিয়ায়) এক মুহূর্তের বেশি সময় অবস্থান করেনি। এভাবেই তারা সত্যভ্রষ্ট হতো।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ ۗ

مَا لِينَا غَيْرَ سَاعَةٍ ۖ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

৫৬. কিন্তু যাদেরকে জ্ঞান ও ঈমান দেয়া হয়েছে তারা বলবেঃ তোমরা তো আল্লাহর বিধানে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত অবস্থান করেছে। এটাই তো পুনরুত্থান দিবস; কিন্তু তোমরা জানতে না।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِئْتُمْ

فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ ۖ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ

وَلَكِنَّمَا كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

৫৭. সেদিন অত্যাচারীদের ওয়র আপত্তি তাদের কাজে আসবে না এবং তাদেরকে তওবাও করতে বলা হবে না।

৫৮. আমি তো মানুষের জন্যে এই কুরআনে সর্বপ্রকার দৃষ্টান্তের বর্ণনা করেছি। তুমি যদি তাদের নিকট কোন নিদর্শন হাজির কর, তবে কাফিররা অবশ্যই বলবেঃ তোমরা তো বাতিলপন্থী।

৫৯. যাদের জ্ঞান নেই আল্লাহ তাদের হৃদয়ে এভাবে মোহরাঙ্কিত করে দেন।

৬০. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর, নিশ্চয়ই আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য। যারা দৃঢ় বিশ্বাসী নয় তারা যেন তোমাকে বিচলিত করতে না পারে।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَكِنْ جَاءَهُمْ بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الْإِذِينَ لَا يُؤْتُونَ ﴿٦٠﴾

সূরাঃ লোকমান, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩৪, রুকু'ঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ لُقْمَانَ مَكِّيَّةٌ

رُكُوعَاتُهَا ٢ آيَاتُهَا ٣٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আলিফ-লাম-মীম।

২. এগুলো প্রজ্ঞাপূর্ণ কিতাবের আয়াত।

৩. পথ-নির্দেশক ও রহমত সংকর্ম-পরায়ণদের জন্যে।

৪. যারা নামায কায়েম করে, যাকাত দেয় এবং তারা আখিরাতে নিশ্চিত-ভাবে বিশ্বাসী।

الْم ﴿١﴾

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ﴿٣﴾

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾

৫. তারাই তাদের প্রতিপালকের নির্দেশিত পথে আছে এবং তারাই সফলকাম।

৬. মানুষের মধ্যে কেউ কেউ অজ্ঞতাভাষতঃ আল্লাহর পথ হতে (মানুষকে) বিচ্যুত করবার জন্যে অবাস্তুর কথাবার্তা ক্রয় (সংগ্রহ) করে এবং এই পথটিকেই ঠাট্টা-বিদ্রূপ করে; তাদের জন্যে রয়েছে অবমাননাকর শাস্তি ১

৭. যখন তার নিকট আমার আয়াত আবৃত্তি করা হয় তখন সে দম্ভভরে মুখ ফিরিয়ে নেয় যেন সে এটা শুনতেই পায়নি, যেন তার কর্ণ দু'টি বধির; অতএব তাকে যন্ত্রনাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ দিয়ে দাও।

৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে নিয়ামতপূর্ণ জান্নাত।

৯. সেখানে তারা চিরকাল থাকবে। আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

১০. তিনি আকাশমন্ডলী নির্মাণ করেছেন স্তম্ভ ব্যতীত, তোমরা এটা দেখছো; তিনিই পৃথিবীতে স্থাপন

أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلِي مُّسْتَكْبِرًا ۚ كَانَ لَمَّ يَسْمَعَهَا ۚ كَانَ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشَّرَهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ التَّعِيمِ ﴿٨﴾

خَالِدِينَ فِيهَا وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۚ وَالْأُفُقِ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي ۚ أَنْ تَيَبَّدَ بَكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن

১। আব্দুর রহমান ইবনে গানাম আশ'আরী বলেছেন, আবু আমের (রাযিআল্লাহু আনহু) কিংবা আবু মালেক আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) আমার নিকট বর্ণনা করেছেন, আর আল্লাহর কসম! তিনি মিথ্যা বলেননি, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন, আমার উম্মতের মধ্যে এমন অনেক সম্প্রদায় সৃষ্টি হবে, যারা যেনা-ব্যভিচার, রেশমী কাপড় ব্যবহার, মদ্যপান ও গান-বাদ্যকে হালাল মনে করবে। আর অনেক সম্প্রদায় এমনও হবে, যারা পর্বতের পাদদেশে বসবাস করবে। গোধূলি লগ্নে যখন তারা তাদের পশু পাল নিয়ে ফিরে চলবে, এমনি সময় তাদের নিকট কোন উদ্দেশ্যে ফকীর আসবে। তারা ফকীরকে বলবে, আগামীকাল সকালে আমাদের কাছে এসো। রাতের অন্ধকারেই আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করে দিবেন এবং (তাদের ওপর) পর্বতটিকে ধ্বংসিয়ে দিবেন। অন্যান্যদের কিয়ামত পর্যন্ত বানর ও শূকর বানিয়ে রাখবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৯০)

করেছেন পর্বতমালা যাতে এটা তোমাদেরকে নিয়ে চলে না পড়ে এবং এতে ছড়িয়ে দিয়েছেন সর্বপ্রকার জীব-জন্তু এবং আমিই আকাশ হতে পানি বর্ষণ করে এতে উদগত করি সর্বপ্রকার কল্যাণকর উদ্ভিদরাজি।

১১. এটা আল্লাহর সৃষ্টি! তিনি ছাড়া অন্যেরা কি সৃষ্টি করেছে তা আমাকে দেখাও; বরং সীমালঙ্ঘনকারীরা তো স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

১২. আমি অবশ্যই লোকমানকে মহাপ্রজ্ঞা দান করেছিলাম। (এবং বলেছিলাম) আল্লাহর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে সে তো তা করে নিজেরই জন্যে এবং কেউ অকৃতজ্ঞ হলে আল্লাহ তো অভাবমুক্ত, সর্ব প্রশংসিত।

১৩. যখন লোকমান উপদেশগুলো তার পুত্রকে বলেছিলেনঃ হে বৎস! আল্লাহর সাথে কাউকে শরীক করো না। নিশ্চয়ই শিরক মহা অন্যায়।

১৪. আমি মানুষকে তার পিতা-মাতার প্রতি সদাচারণের নির্দেশ দিয়েছি। তার জননী তাকে কষ্টের পর কষ্ট বরণ করে গর্ভে ধারণ করেছে এবং তার দুধ ছাড়ানো হয় দুই বছরে। সুতরাং আমার প্রতি ও তোমার পিতা-মাতার প্রতি কৃতজ্ঞ

كُلِّ دَابَّةٍ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿١١﴾

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۗ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۖ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَبِيدٌ ﴿١٣﴾

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَسَنَةً ۖ إِنَّهُ هُنَّ عَلَىٰ وَهْنٍ وَفَضْلُهُ فِي عَمَلَيْنِ ۚ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ ۖ إِنَِّّي الْبَصِيرُ ﴿١٥﴾

১। হযরত লোকমান নবী ছিলেন কি না এ ব্যাপারে মতভেদ রয়েছে। অধিকাংশ জ্ঞানীদের মতে তিনি নবী ছিলেন না বরং পরহেয়গার, অলী এবং আল্লাহর প্রিয় বান্দা ছিলেন। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

হও। প্রত্যাবর্তন তো আমারই নিকট।^{১৫}

১৫. তারা উভয়ে যদি তোমাকে বাধ্য করে যে তুমি আমার সাথে শিরক করবে যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তবে তুমি তাদের কথা মানবে না, তবে পৃথিবীতে তাদের সাথে বসবাস করবে সম্ভাবে এবং যে বিশুদ্ধ চিন্তে আমার অভিমুখী হয়েছে তার পথ অবলম্বন কর, অতঃপর তোমাদের প্রত্যাবর্তন আমারই নিকট এবং তোমরা যা করতে সে বিষয়ে আমি তোমাদেরকে অবহিত করবো।

১৬. হে বৎস! তা (পূণ্য ও পাপ) যদি সরিষার দানা পরিমাণও হয় এবং তা যদি থাকে শিলাগর্ভে অথবা আকাশে কিংবা ভূগর্ভে, আল্লাহ ওটাও হাজির করবেন। আল্লাহ সূক্ষ্মদর্শী, খবর রাখেন সব বিষয়ের।

১৭. হে বৎস! নামায কয়েম করবে, ভাল কাজের আদেশ করবে ও মন্দ কাজ হতে নিষেধ করবে এবং আপদে-বিপদে ধৈর্যধারণ করবে, নিশ্চয়ই এটা দৃঢ় সংকল্পের কাজ।

১৮. (অহংকারবশে) তুমি মানুষ হতে মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না এবং পৃথিবীতে উদ্ধতভাবে বিচরণ করো না; কারণ আল্লাহ কোন উদ্ধত, অহংকারীকে পছন্দ করেন না।

وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا زَوَّاجِئِ سَبِيلٍ مَنْ أَنَابَ إِلَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

يُنَبِّئُ أَيُّهَا إِنْ تَكَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٦﴾

يُنَبِّئُ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَآمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ط إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٧﴾

وَلَا تُصَوِّرْكَ لَكُمُ اللَّعَائِسُ وَلَا تَنْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ط إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহ আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি জিজ্ঞাসা করলেন হে আল্লাহর ও রাসূল? আমরা জিহাদকে সর্বোত্তম আমল মনে করি, অতএব আমরা (মেয়েরা) কি জিহাদে অংশগ্রহণ করব না? তিনি বললেন না তবে তোমাদের জন্য সর্বোত্তম জিহাদ হল মাকবুল হজ্জ। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৮৪)

১৯. তুমি পদচারণায় মধ্যবর্তিতা অবলম্বন করবে এবং তোমার কণ্ঠস্বর করবে নীচু; স্বরের মধ্যে গাধার স্বরই সর্বাপেক্ষা অপ্রীতিকর।

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ط
إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝۱۹

২০. তোমরা কি দেখো না যে, আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন এবং তোমাদের প্রতি তাঁর প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য অনুগ্রহ সম্পূর্ণ করেছেন? মানুষের মধ্যে কেউ কেউ অজ্ঞতাবশতঃ আল্লাহ সম্বন্ধে বিতস্তা করে, তাদের না আছে পথ-নির্দেশক আর না আছে কোন দীপ্তিমান কিতাব।

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعْمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ط وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ ۝۲ۦ

২১. তাদেরকে যখন বলা হয়ঃ আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তা অনুসরণ কর। তখন তারা বলেঃ বরং আমরা আমাদের পিতৃপুরুষদেরকে যাতে পেয়েছি তারই অনুসরণ করবো। শয়তান যদি তাদেরকে জ্বলন্ত অগ্নির শাস্তির দিকে আহ্বান করে, তবুও কি?

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ط أَوْ كُفُوا كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ ۝۲ۧ

২২. যদি কেউ সৎকর্মপরায়ণ হয়ে আল্লাহর নিকট আত্মসমর্পণ করে তবে সে তো দৃঢ়ভাবে ধারণ করে এক মযবূত হাতল, যাবতীয় কার্যের পরিণাম আল্লাহর ইচ্ছতিয়ারে।

وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى ط وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝۲ۨ

২৩. কেউ কুফরী করলে তার কুফরী যেন তোমাকে চিন্তিত না করে, আমারই নিকট তাদের প্রত্যাবর্তন, অতঃপর আমি তাদেরকে অবহিত করবো তারা যা করতো। নিশ্চয়ই অন্তরে যা রয়েছে সে সম্বন্ধে আল্লাহ সবিশেষ অবহিত।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ط إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ط إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝۲۩

২৪. আমি তাদেরকে জীবনো-
পরকরণ ভোগ করতে দেবো
স্বল্পকালের জন্যে। অতঃপর
তাদেরকে কঠিন শাস্তি ভোগ করতে
বাধ্য করবো।

২৫. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস
করঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী কে সৃষ্টি
করেছেন? তারা নিশ্চয়ই বলবেঃ
আল্লাহ। বলঃ সকল প্রশংসা
আল্লাহরই; কিন্তু তাদের অধিকাংশই
এ বিষয়ে অজ্ঞ।

২৬. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা
কিছু আছে তা সবই আল্লাহরই;
আল্লাহ, তিনি অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

২৭. পৃথিবীর সমস্ত বৃক্ষরাজি যদি
কলম হয় এবং এই সমুদ্রের সাথে
যদি আরো সাত সমুদ্র যুক্ত হয়ে
কালি হয়, তবুও আল্লাহর বাণী
(গুণাবলী) (লিখে) শেষ করা যাবে
না। আল্লাহ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

২৮. তোমাদের সবারই সৃষ্টি ও
পুনরুত্থান একটি মাত্র প্রাণীর সৃষ্টি ও
পুনরুত্থানেরই অনুরূপ। আল্লাহ
সর্বশ্রোতা, সম্যক দ্রষ্টা।

২৯. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহ
রাত্রিকে দিবসে এবং দিবসকে রাত্রির
ভিতরে প্রবেশ করান? তিনি চন্দ্র-
সূর্যকে করেছেন নিয়মাধীন,
প্রত্যেকটি পরিভ্রমণ করে নির্দিষ্টকাল
পর্যন্ত; তোমরা যা কর আল্লাহ সে
সম্পর্কে অবহিত।

৩০. এগুলো প্রমাণ যে, আল্লাহই
সত্য এবং তারা তাঁর পরিবর্তে যাকে

نُتِّعَهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٣٧﴾

وَلَيْنُ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ط قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ط بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ
الْحَمِيْدُ ﴿٣٩﴾

وَكَوَاْنِ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَوْ لَوَاْءٍ وَّالْبَحْرِ
يَمِيْنُهُ مِنْ بَعْدِ سَبْعَةِ اَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ
اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾

مَا خَلَقَكُمْ وَّلَا بَعَثَكُمْ اِلَّا لَنْفُسِكُمْ وَّاجِدٰةٌ ط
اِنَّ اللّٰهَ سَبِيْعٌ بَصِيْرٌ ﴿٤١﴾

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُرِيْجُ الْاَيْلَ فِي النَّهَارِ وَّيُرِيْجُ النَّهَارَ
فِي الْاَيْلِ وَّسَخَّرَ الشَّمْسَ وَّالْقَمَرَ كُلَّ يَوْمٍ اِلَىٰ
اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٤٢﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَّاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ

ডাকে, তা মিথ্যা। আল্লাহ, তিনি তো সর্বোচ্চ, মহান।

৩১. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আল্লাহর অনুগ্রহে নৌযানগুলো সমুদ্রে চলাচল করে, যার দ্বারা তিনি তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনাবলীর কিছু প্রদর্শন করেন? এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে প্রত্যেক ধৈর্যশীল কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে।

৩২. যখন তরঙ্গ তাদেরকে আচ্ছন্ন করে মেঘাচ্ছায়ার মত তখন তারা আল্লাহকে ডাকে বিশুদ্ধচিত্ত হয়ে। কিন্তু যখন তিনি তাদেরকে উদ্ধার করে স্থলে পৌঁছান তখন তাদের কেউ কেউ মাঝামাঝি স্থানে অবস্থান করে আর বিশ্বাসঘাতক, অকৃতজ্ঞ ব্যক্তিই তাঁর নিদর্শনাবলী অস্বীকার করে।

৩৩. হে মানবজাতি! তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর এবং সেদিনকে ভয় কর যেদিন পিতা সন্তানের কোন উপকারে আসবে না এবং সন্তানও কোন উপকারে আসবে না তার পিতার। নিঃসন্দেহে আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য; সুতরাং পার্থিব জীবন যেন তোমাদেরকে কিছুতেই প্রতারিত না করে প্রতারক (শয়তান) যেন তোমাদেরকে কিছুতেই আল্লাহ সম্পর্কে প্রতারিত না করে।

৩৪. নিশ্চয় কিয়ামতের জ্ঞান শুধু আল্লাহর নিকট রয়েছে, তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন এবং তিনি জানেন যা

دُونِهِ الْبَاطِلُ ۗ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوَجٌ كَالظُّلْمِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۖ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ قَفُورٍ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَأَحْشُوا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ ۚ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَارٍ عَن وَالِدِهِ شَيْئًا ۗ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۗ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۗ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۗ وَمَا تَدْرِي

জরায়ুতে আছে। কেউ জানে না আগমীকাল সে কি উপার্জন করবে এবং কেউ জানে না কোন স্থানে তার মৃত্যু ঘটবে। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সর্ব বিষয়ে অবহিত।

نَفْسٌ مَّا ذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ
بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٣٢﴾

সূরাঃ সাজ্জাদাহ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩০, রুকূ'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣٠ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আলিফ-লাম-মীম।

الْم ﴿١﴾

২. এ কিতাব জগতসমূহের প্রতি-পালকের নিকট হতে অবতীর্ণ, এতে কোন সন্দেহ নেই।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١﴾

৩. তবে কি তারা বলেঃ এটা তো সে নিজে মিথ্যা রচনা করেছে? না, বরং এটা তোমার প্রতিপালক হতে (আগত) সত্য, যাতে তুমি এমন এক সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার, যাদের নিকট তোমার পূর্বে কোন সতর্ককারী আসেনি, যেন তারা হেদায়াতপ্রাপ্ত হয়।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۗ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ
لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَهُمْ مِنْ نَذِيرٍ ۚ مِنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٢﴾

৪. আল্লাহ তিনি, যিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও এতোদুভয়ের অন্তবর্তী সবকিছু সৃষ্টি করেছেন ছয় দিনে, অতঃপর তিনি আরশে সমুন্নীত হন। তিনি ছাড়া তোমাদের কোন অভিভাবক নেই এবং সুপারিশকারী নেই; তবুও কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۗ
مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۗ
أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

৫. তিনি আকাশ থেকে পৃথিবী পর্যন্ত সমুদয় বিষয় পরিচালনা করেন, অতঃপর একদিন সব কিছই তাঁর সমীপে সমুখিত হবে যে দিনের পরিমাপ হবে তোমাদের হিসেবে হাজার বছরের সমান।

৬. তিনিই দৃশ্য ও অদৃশ্যের পরিষ্কৃত, পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

৭. যিনি তাঁর সকল কিছু সৃজন করেছেন উত্তমরূপে এবং কাঁদা মাটি হতে মানব সৃষ্টির সূচনা করেছেন।

৮. অতঃপর তার বংশ উৎপন্ন করেছেন তুচ্ছ তরল পদার্থের নির্যাস থেকে।

৯. পরে তিনি তাকে করেছেন সুঠাম এবং ওতে ফুঁকে দিয়েছেন রূহ তাঁর নিকট হতে এবং তোমাদেরকে দিয়েছেন কর্ণ, চক্ষু ও অন্তঃকরণ, তোমরা অতি সামান্যই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

১০. তারা বলেঃ আমরা মৃত্তিকায় পর্যবসিত হলেও কি আমাদেরকে আবার নতুন করে সৃষ্টি করা হবে? বস্তুতঃ তারা তাদের প্রতিপালকের সাক্ষাৎকার অস্বীকার করে।

১১. বলঃ তোমাদের জন্যে নিযুক্ত মৃত্যুর ফেরেশতা তোমাদের প্রাণ হরণ করবেন। অবশেষে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

১২. এবং (হে নবী)! তুমি যদি দেখতে! যখন অপরাধীরা তাদের

يُدْبِرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يُعْرَجُ
إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا
تَعُدُّونَ ⑤

ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ
الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ⑦

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ⑧

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ طَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ⑨

وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ
جَدِيدٍ هُ بَلْ هُمْ بِلِقَائِي رَبِّهِمْ كُفْرُونَ ⑩

قُلْ يَتَوَفَّاكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ⑪

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ

প্রতিপালকের সামনে নতশীরে বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা প্রত্যক্ষ করলাম ও শ্রবণ করলাম, এখন আপনি আমাদেরকে পুনরায় প্রেরণ করুন আমরা সৎকর্ম করবো, আমরা দৃঢ় বিশ্বাসী হয়ে যাবো।

১৩. আমি ইচ্ছা করলে প্রত্যেক ব্যক্তিকে সৎপথে পরিচালিত করতে পারতাম; কিন্তু আমার একথা অবশ্যই সত্যঃ আমি নিশ্চয়ই (ভ্রষ্টতার কারণে) জ্বিন ও মানুষ উভয় দ্বারা জাহান্নাম পূর্ণ করবো।

১৪. অতএব শাস্তি আন্বাদন কর, কারণ আজকের এই সাক্ষাৎকারের কথা তোমরা বিস্মৃত হয়েছিলে, আমিও তোমাদেরকে বিস্মৃত হয়েছি, তোমরা যা করতে তজ্জন্যে তোমরা স্থায়ী শাস্তি ভোগ করতে থাকো।

১৫. শুধু তারাই আমার নিদর্শনাবলী বিশ্বাস করে যারা ওর দ্বারা উপদিষ্ট হলে সিজদায় লুটিয়ে পড়ে এবং তাদের প্রতিপালকের সপ্রশংসা পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং অহংকার করে না।

১৬. তারা শয্যা ত্যাগ করে তাদের প্রতিপালককে ডাকে আশঙ্কায় ও আশায় এবং তাদেরকে যে রিযিক দান করেছি তা হতে তারা ব্যয় করে।

১৭. কেউই জানে না তাদের জন্যে নয়নপ্রীতিকর কি লুকায়িত রাখা হয়েছে তাদের কৃতকর্মের পুরস্কার স্বরূপ।

عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿١٣﴾

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًىٰ وَلَكِنْ حَقَّ
الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ
أَجْمَعِينَ ﴿١٤﴾

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ
وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا
خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٦﴾

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
خَوْفًا وَطَمَعًا ذُوقُوا رَزَقَهُمْ يَنْفِقُونَ ﴿١٧﴾

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

১৮. ঈমানদার ব্যক্তি কি অবাধ্যের অনুরূপ? তারা সমান নয়।

۱۸ قَمَنَ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنَ كَانَ فَاسِقًا ۙ لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾

১৯. যারা ঈমান আনে, সৎকর্ম করে তাদের কৃতকর্মের ফলস্বরূপ তাদের আপ্যায়নের জন্যে জান্নাত হবে তাদের বাসস্থান।

۱۹ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَالَهُمْ جَنَّاتُ الْبَآئِطِ ۙ نُزُلًا مِّنْهَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿١٩﴾

২০. পক্ষান্তরে যারা পাপাচার করেছে তাদের বাসস্থান হবে জাহান্নাম; যখনই তারা জাহান্নাম হতে বের হতে চাইবে তখনই তাদেরকে ফিরিয়ে দেয়া হবে তাতে এবং তাদেরকে বলা হবেঃ যে অগ্নির শাস্তিকে তোমরা মিথ্যা বলতে তা আশ্বাদন কর।

۲۰ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۗ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهِ تَكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

২১. গুরু শাস্তির পূর্বে তাদেরকে আমি (পৃথিবীতে) অবশ্যই লঘু শাস্তি আশ্বাদন করাবো, যাতে তারা ফিরে আসে।

۲۱ وَلَنذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَلْوَنِ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

২২. যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের নির্দেশনাবলী দ্বারা উপদিষ্ট হয়ে তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? আমি অবশ্যই অপরাধীদেরকে শাস্তি দিয়ে থাকি।

۲۲ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۗ إِنَّا مِنَ الْجَآئِرِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

২৩. আমি অবশ্যই মুসা (عليه السلام)-কে কিতাব দিয়েছিলাম; অতএব তুমি তার সাক্ষাৎ সম্বন্ধে সন্দেহ করো না, আমি তাকে বানী ইসরাঈলের জন্যে পথ-নির্দেশক করেছিলাম।

۲۳ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ ۗ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

২৪. আর আমি তাদের মধ্য হতে কিছু লোককে নেতা মনোনীত করেছিলাম যারা আমার নির্দেশ অনুসারে পথ প্রদর্শন করতো। যখন

۲۴ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ آيَةً يُّهَدُونَ ۚ بِأَمْرِنَا لَبَّآ صَبَرُوا ۗ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

তারা ধৈর্যধারণ করতো আর তারা ছিল আমার নিদর্শনাবলীতে দৃঢ় বিশ্বাসী।

২৫. তারা নিজেদের মধ্যে যেসব বিষয়ে মতবিরোধ করতো, তোমার প্রতিপালক অবশ্যই কিয়ামতের দিন সেগুলোর ফায়সালা করে দিবেন।

২৬. এটাও কি তাদেরকে পথ-প্রদর্শন করলো না যে, আমি তাদের পূর্বে ধ্বংস করেছি কত মানবগোষ্ঠী, যাদের বাসভূমিতে এরা বিচরণ করে থাকে? এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; তবুও কি তারা শুনবে না?

২৭. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আমি শস্যহীন শুষ্ক ভূমির উপর পানি প্রবাহিত করে ওর সাহায্যে উদ্গত করি শস্য, যা থেকে ভক্ষণ করে তাদের গৃহপালিত চতুষ্পদ জন্তুগুলো এবং তারা নিজেরাও? তারা কি তবুও লক্ষ্য করবে না?

২৮. তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে বল, কখন হবে এই ফায়সালা?

২৯. বল, ফায়সালার দিনে কাফিরদের ঈমান আনয়ন তাদের কোন কাজে আসবে না এবং তাদেরকে অবকাশও দেয়া হবেনা।

৩০. অতএব, তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর এবং অপেক্ষা কর, তারাও অপেক্ষা করছে।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَيسُورُونَ فِي مَسْكِينِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۗ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرِ إِنَّهُمْ مُنْتَضَرُونَ ﴿٣٠﴾

সূরাঃ আহযাব, মাদানী

(আয়াতঃ ৭৩, রুকু'ঃ ৯)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. হে নবী (ﷺ)! আল্লাহকে ভয়
কর এবং কাফিরদের ও মুনাফিকদের
আনুগত্য করো না। আল্লাহ তো
সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

২. তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে
তোমার প্রতি যা ওহী করা হয় তার
অনুসরণ কর; তোমরা যা কর,
আল্লাহ সে বিষয়ে সম্যক অবহিত।

৩. আর তুমি নির্ভর কর আল্লাহর
উপর এবং উকিল হিসেবে আল্লাহই
যথেষ্ট।

৪. আল্লাহ কোন মানুষের জন্যে তার
বুকে দু'টি হৃদয় সৃষ্টি করেননি;
তোমাদের স্ত্রীরা, যাদের সাথে
তোমরা যিহার (স্ত্রীকে মার সাথে
তুলনা করা) করে থাকো, তাদেরকে
তোমাদের জননী করেননি এবং
যাদেরকে তোমরা (পোষ্যপুত্র)
ডাকো, আল্লাহ তাদেরকে তোমাদের
পুত্র করেননি, এগুলো তোমাদের
মুখের কথা মাত্র। আল্লাহ সত্যই
বলেন এবং তিনিই সরল পথ নির্দেশ
করেন।

৫. তোমরা তাদেরকে ডাকো তাদের
পিতৃ-পরিচয়ে; আল্লাহর দৃষ্টিতে এটা
অধিক ন্যাযসঙ্গত যদি তোমরা
তাদের পিতৃ-পরিচয় না জানো তবে

سُورَةُ الْأَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٧٣ رُكُوعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ
وَالْمُنَافِقِينَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ①

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ط إِنَّ اللَّهَ كَانَ
بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ②

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ط وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ③

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ٤ وَمَا
جَعَلَ أَزْوَاجَكُمْ الَّتِي تَظْهَرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ٥
وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ط ذِكْرُكُمْ قَوْلُكُمْ
بِأَقْوَامِكُمْ ط وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ⑥

أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ٤ فَإِنْ لَّمْ
تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَاخْوَانَكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ط

তারা তোমাদের ধর্মীয় ভ্রাতা এবং তোমাদের বন্ধু; এই ব্যাপারে তোমরা কোন ভুল করলে তোমাদের কোন অপরাধ নেই; কিন্তু তোমাদের অন্তরে দৃঢ় সংকল্প থাকলে অপরাধ হবে, আর আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ⑤

৬. নবী (ﷺ) মু'মিনদের নিকট তাদের নিজেদের অপেক্ষা ঘনিষ্ঠতর এবং তার পত্নীরা তাদের মাতা ৫ আল্লাহর বিধান অনুসারে মু'মিন ও মুহাজিররা অপেক্ষা যারা আত্মীয়, তারা পরস্পরের নিকটতর, তবে তোমরা যদি তোমাদের বন্ধু-বান্ধবদের প্রতি দয়া-দাক্ষিণ্য প্রদর্শন করতে চাও তাহলে তা করতে পার। এটা কিতাবে লিপিবদ্ধ আছে।

الَّتِي أُولَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ نَفْسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا ط كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ⑥

৭. (স্মরণ কর,) যখন আমি নবীদের নিকট হতে অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলাম এবং তোমার নিকট হতেও এবং নূহ (عليه السلام), ইবরাহীম (عليه السلام), মূসা (عليه السلام), মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليه السلام)-এর নিকট হতে, তাদের নিকট হতে গ্রহণ করেছিলাম দৃঢ় অঙ্গীকার।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا عَلِيمًا ⑦

১। আবদুল্লাহ ইবনে হিশাম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা আমরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সঙ্গে ছিলাম। এ সময় তিনি উমর ইবনুল খাত্তাবের হাত ধরাবস্থায় ছিলেন। তখন উমর তাঁকে বললেনঃ হে আল্লাহর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)! আপনি আমার কাছে আমার প্রাণ ব্যতীত সবচেয়ে অধিক প্রিয়। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ না, সে সত্তার কসম! যাঁর হাতে আমার প্রাণ। (তুমি সে পর্বত ঈমানদার হতে পারবে না) যে পর্বত আমি তোমার কাছে তোমার প্রাণের চেয়েও অধিক প্রিয় না হই। এরপর উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ আল্লাহর কসম! এখনই আপনি আমার কাছে আমার প্রাণের চেয়ে অধিক প্রিয়। এ সময় রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, হে উমর! এখন (শ্রুত মুমিন হলে)। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬৩২)

৮. সত্যবাদীদেরকে তাদের সত্য-বাদীতা সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করবার জন্যে। তিনি কাফিরদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছেন পীড়াদায়ক শাস্তি।

৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর, যখন শত্রু বাহিনী তোমাদের বিরুদ্ধে সমাগত হয়েছিল তখন আমি তাদের বিরুদ্ধ প্রেরণ করেছিলাম ঝঞ্ঝাবায়ু এবং এমন এক বাহিনী যা তোমরা দেখনি। তোমরা যা কর আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

১০. যখন তারা (তোমাদের বিরুদ্ধে) সমাগত হয়েছিল উচ্চ অঞ্চল ও নিম্ন অঞ্চল হতে, চক্ষুসমূহ দৃষ্টিভ্রম হয়েছিল, প্রাণসমূহ হয়ে পড়েছিল কণ্ঠাগত এবং তোমরা আল্লাহ সম্বন্ধে নানাবিধ বিরূপ ধারণা পোষণ করছিলে।

১১. তখন মু'মিনরা পরীক্ষিত হয়েছিল এবং তারা ভীষণভাবে প্রকম্পিত হয়েছিল।

১২. এবং এ সময়ে মুনাফিকরা ও যাদের অন্তরে ছিল ব্যাধি, তারা বলছিলঃ আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ) আমাদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন তা প্রতারণা ছাড়া কিছুই না।

১৩. এবং যখন তাদের একদল বলেছিলঃ হে ইয়াসরিববাসী (মদীনা-বাসী) এখানে তোমাদের কোন স্থান নেই, তোমরা ফিরে যাও এবং তাদের মধ্যে একদল নবী (ﷺ)-এর

لِيَسْأَلَ الطَّيِّقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُودًا
لَمْ تَرَوْهَا ط وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

إِذْ جَاءَ وَكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ
وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ
وَكَتَفَتُونَ بِاللَّهِ لَلظُّنُونِ ۝

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝

وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ
لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ
النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۝

নিকট অব্যাহতি প্রার্থনা করে বলেছিলঃ আমাদের বাড়ীঘর অরক্ষিত, অথচ ওগুলো অরক্ষিত ছিল না, আসলে পলায়ন করাই ছিল তাদের আসল উদ্দেশ্য।

১৪. যদি শত্রুরা নগরীর বিভিন্ন দিক হতে প্রবেশ করে তাদেরকে বিদ্রোহের জন্যে প্ররোচিত করতো, তবে অবশ্য তারা তাই করে বসতো, তারা এতে কালবিলম্ব করতো না।

১৫. অথচ তারা পূর্বেই আল্লাহর সাথে অঙ্গীকার করেছিল যে, তারা পৃষ্ঠ-প্রদর্শন করবে না। আল্লাহর সাথে কৃত অঙ্গীকার সম্বন্ধে অবশ্যই জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

১৬. বলঃ তোমাদের কোন লাভ হবে না যদি তোমরা মৃত্যু অথবা হত্যার ভয়ে পলায়ন কর এবং সেই ক্ষেত্রে তোমাদেরকে সামান্যই ভোগ করতে দেয়া হবে।

১৭. বলঃ কে তোমাদেরকে আল্লাহ থেকে রক্ষা করবে যদি তিনি তোমাদের অমঙ্গল ইচ্ছা করেন অথবা তিনি যদি তোমাদের প্রতি অনুগ্রহের ইচ্ছা করেন (তবে কে তোমাদের ক্ষতি করবে?) তারা আল্লাহ ছাড়া নিজেদের কোন অভিভাবক ও সাহায্যকারী পাবে না।

১৮. আল্লাহ অবশ্যই জানেন তোমাদের মধ্যে কারা তোমাদেরকে যুদ্ধে অংশগ্রহণে বাধা দেয় এবং তাদের ভ্রাতৃবর্গকে বলেঃ আমাদের সঙ্গে এসো। তারা কমই যুদ্ধে অংশ নেয়।

إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ﴿١٧﴾

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أقطارِهَا ثُمَّ سَبَّوْا
الْفِتْنَةَ لَأَتَوْهَا وَمَا تَلَبَّتُّوْا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ﴿١٨﴾

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا لَ اللَّهِ مِنْ قَبْلِ لَا يُؤْتُونَ
الْأَدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ﴿١٩﴾

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ قَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ
أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا لَا تَسْعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ
سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٢١﴾

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمَعْرُوقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ
إِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ
إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٢﴾

১৯. তোমাদের ব্যাপারে কুষ্ঠাবোধ করে যখন বিপদ আসে তখন তুমি দেখবে যে, মৃত্যু-ভয়ে অচেতন ব্যক্তির মত চক্ষু উল্টিয়ে তারা তোমার দিকে তাকিয়ে আছে; কিন্তু যখন বিপদ চলে যায় তখন তারা ধনের লালসায় তোমাদেরকে তীক্ষ্ণ ভাষায় বিদ্ধ করে। তারা ঈমান আনেনি, এজন্যে আল্লাহ তাদের কার্যাবলী নিষ্ফল করে দিয়েছেন এবং আল্লাহর পক্ষে এটা সহজ।

২০. তারা মনে করে যে, শত্রু বাহিনী চলে যায়নি। যদি শত্রু বাহিনী আবার এসে পড়ে, তখন তারা কামনা করবে যে, ভাল হতো যদি তারা যাযাবর মরুবাসীদের সাথে থেকে তোমাদের সংবাদ নিতো! তারা তোমাদের সাথে অবস্থান করলেও তারা যুদ্ধ অল্পই করতো।

২১. তোমাদের মধ্যে যারা আল্লাহ ও আখিরাতের প্রতি বিশ্বাস রাখে এবং আল্লাহকে অধিক স্মরণ করে, তাদের জন্যে রাসূলুল্লাহ্ (ﷺ)-এর মধ্যে রয়েছে উত্তম আদর্শ।

২২. মু'মিনরা যখন শত্রু বাহিনীকে দেখলো তখন তারা বলে উঠলোঃ এটা তো তাই, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) যার প্রতিশ্রুতি আমাদেরকে দিয়েছেন এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) সত্যই বলেছিলেন। আর এতে তাদের ঈমান ও আনুগত্যই বৃদ্ধি পেলো।

২৩. মু'মিনদের মধ্যে কতক আল্লাহর সাথে তাদের কৃত অঙ্গীকার পূর্ণ

أَشْحَةً عَلَيْهِمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفَ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ
إِلَيْكَ تَدَوَّرَ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالسِّنَةِ حِدَادٍ
أَشْحَةً عَلَى الْخَيْرِ ۗ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ
أَعْمَالَهُمْ ۗ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٩﴾

يَصْـَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَدْهَبُوا ۗ وَإِنْ يَأْتِ
الْأَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ
يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ
مَا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن
كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿٢١﴾

وَلَبَّارًا الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ ۗ قَالُوا هَذَا مَا
وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۗ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۗ
وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ

করেছে, তাদের কেউ কেউ শাহাদাত বরণ করেছে এবং কেউ কেউ প্রতীক্ষায় রয়েছে। তারা তাদের অঙ্গীকারে কোন পরিবর্তন করেনি।^১

২৪. কারণ আল্লাহ সত্যবাদীদেরকে পুরস্কৃত করেন সত্যবাদিতার জন্যে এবং তাঁর ইচ্ছা হলে মুনাফিকদেরকে শাস্তি দেন অথবা তাদেরকে ক্ষমা করেন। নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

২৫. আল্লাহ কাফিরদেরকে তাদের পূর্ণ ক্রোধ সহকারে ফিরিয়ে দিলেন। তারা কোন কল্যাণই অর্জন করতে পারেনি। যুদ্ধে মু'মিনদের জন্যে আল্লাহই যথেষ্ট। আল্লাহ সর্বশক্তিমান, পরাক্রমশালী।

২৬. কিতাবীদের মধ্যে যারা (বনু কুরায়জা) তাদেরকে সাহায্য করেছিল, তাদেরকে তিনি তাদের দুর্গ হতে অবতরণে বাধ্য করলেন এবং তাদের অন্তরে ভীতি সঞ্চার করলেন; এখন তোমরা তাদের কতককে হত্যা করছো এবং কতককে করছো বন্দী।

২৭. এবং তোমাদেরকে অধিকারী করলেন তাদের ভূমি, ঘরবাড়ি ও

عَلَيْهِمْ فَبِنَهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ ۗ وَمَا بَدَلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٤﴾

لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٥﴾

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۗ وَكَفَىٰ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيمًا ﴿٢٦﴾

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ ۗ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ﴿٢٧﴾

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, আমাদের ধারণা কুরআনের এই বাণীটি তাঁর ও তাঁর অনুরূপ লোকদের সম্পর্কে নাযিল হয়েছে: “মু'মিনদের মধ্য থেকে কিছু সংখ্যক আল্লাহ্র সাথে তাদের কৃত ওয়াদা পূর্ণ করেছে।” আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) আরো বলেন যে, রুবাই নামক তাঁর এক বোন কোন এক মহিলার সামনের দাঁত ভেঙ্গে দিয়েছিলেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এ ব্যাপারে কিসাসের নির্দেশ প্রদান করলে আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) আরয করলেন, হে আল্লাহ্র রাসূল! যে মহান সত্তা আপনাকে সত্য বিধান দিয়ে প্রেরণ করেছেন তাঁর শপথ! ওর দাঁত ভাঙতে দেয়া যাবে না। পরে বাদীপক্ষ কিসাসের দাবি ত্যাগ করে ক্ষতিপূরণ নিতে স্বীকৃত হলে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহ্র কিছু বান্দাহ এমন আছে যে, তাঁরা কোন ব্যাপারে আল্লাহ্র নামে শপথ করলে তিনি তা পূরণ করে দেয়ার ব্যবস্থা করেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৮০৬)

ধন-সম্পদের এবং এমন ভূমির যা তোমরা এখনো পদানত করনি। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

২৮. হে নবী (ﷺ)! তুমি তোমার স্ত্রীদেরকে বলঃ তোমরা যদি পার্থিব জীবন ও তার বিলাসিতা কামনা কর, তবে এসো, আমি তোমাদের ভোগ-সামগ্রীর ব্যবস্থা করে দেই এবং সৌজন্যের সাথে তোমাদেরকে বিদায় দেই।^১

২৯. পক্ষান্তরে যদি তোমরা আল্লাহ, তাঁর রাসূল (ﷺ) ও আখিরাত কামনা কর তবে তোমাদের মধ্যে যারা সৎকর্মশীল, আল্লাহ তাদের জন্যে মহা প্রতিদান প্রস্তুত রেখেছেন।

৩০. হে নবী-পত্নীরা! যে কাজ সম্পৃক্ত অশ্লীল, তোমাদের মধ্যে কেউ তা করলে, তাকে দ্বিগুণ শাস্তি দেয়া হবে এবং এটা আল্লাহর জন্যে অতি সহজ।

تَطَّوْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأَسْرِحُكُنَّ
سَرَاحًا جَمِيلًا ۝

وَإِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالذَّارَ الْآخِرَةَ
فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ مَن يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ
يُضَعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۝ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرًا ۝

১। (ক) আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহ যখন (রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে স্ত্রীদের ব্যাপারে ইখতিয়ার দেন, তিনি সর্বপ্রথম আমার কাছে এসে বলেনঃ “আমি তোমাকে একটি কথা বলছি, তাড়াহুড়া না করে পিতা-মাতার সাথে পরামর্শ করে জবাব দেবে।” তিনি ভাল করেই জানতেন আমার পিতা-মাতা আমাকে তাঁর থেকে বিচ্ছেদের অনুমতি দেবেন না। তিনি (আয়েশা) বলেন, অতপর তিনি [রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম] বলেন, আল্লাহ বলেছেনঃ “তোমার স্ত্রীদেরকে বলে দাও, তোমরা যদি পার্থিব জীবন ও তার চাকচিক্য চাও তবে আস, আমি তোমাদেরকে তা দান করি, এবং সুন্দরভাবে বিদায় দেই। আর যদি তোমরা আল্লাহ, তাঁর রাসূল এবং পরকাল চাও, তবে আল্লাহ তোমাদের মধ্যকার সৎকর্মশীলদের জন্য বিপুল প্রতিদান প্রস্তুত করে রেখেছেন।” আমি তাঁকে বললাম, এ এমন কোন্ বিষয় যাতে আমি পিতা-মাতার অনুমতি নেবো। কারণ, আল্লাহ, তাঁর রাসূল এবং পরকালই আমার কাম্য। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৮৬)

(খ) আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম আমাদেরকে [রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম]-এর স্ত্রীদেরকে পার্থিব সুখ-সম্ভোগ অথবা আল্লাহ, তাঁর রাসূল ও আখেরাত-এ দুটির মধ্যে যে কোন একটি (বেছে নেয়ার) ইখতিয়ার দিয়েছিলেন। আমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলকে বেছে নিয়েছিলাম। আর এ বেছে নেয়াকে আমাদের জন্য (তালাক বা অন্য কোন) কিছু বলে গণ্য করা হয়নি। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৬২)

৩১. তোমাদের মধ্যে যে কেউ আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি অনুগত হবে ও সৎকর্ম করবে তাকে আমি বিনিময় দিবো দু'বার এবং তার জন্যে তৈরি করে রেখেছি উত্তম রিযিক।

৩২. হে নবী-পত্নীরা! তোমরা অন্য নারীদের মত নও; যদি তোমরা আল্লাহকে ভয় কর তবে (পরপুরুষের সাথে) মিষ্টি কণ্ঠে এমনভাবে কথা বলো না যাতে অন্তরে যার ব্যাধি আছে, সে খারাপ ইচ্ছাপোষণ করে এবং তোমরা উপযোগী কথা বলবে।

৩৩. এবং তোমরা স্বগৃহে অবস্থান করবে; প্রাচীন জাহিলী যুগের সৌন্দর্য প্রদর্শনের মত নিজেদেরকে প্রদর্শন করে বেড়াবে না। তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা করবে ও যাকাত প্রদান করবে এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর অনুগত থাকবে; আল্লাহ তো শুধু চান তোমাদের হে আহলে বাইত আল্লাহ তো শুধু চান তোমাদের হতে নাপাকী দূর করতে এবং তোমাদেরকে সম্পূর্ণরূপে পূত-পবিত্র করতে।

৩৪. আল্লাহর আয়াত ও হিকমতের (হাদীসের) কথা যা তোমাদের গৃহে পঠিত হয়, তা তোমরা স্মরণ রাখবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতি সূক্ষ্মদর্শী, সর্ববিষয়ে অবহিত।

৩৫. অবশ্য মুসলমান পুরুষ ও মুসলমান নারী, মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারী, অনুগত পুরুষ ও অনুগত নারী, সত্যবাদী পুরুষ ও

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُمْ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُؤْتِهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْعَمَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ﴿٣٢﴾

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴿٣٣﴾

وَأذْكُرْنَ مَا يُتْلَى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ﴿٣٤﴾

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ

৩৬. আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) কোন বিষয়ে ফয়সালা করলে কোন মু'মিন পুরুষ কিংবা মু'মিন নারীর নিজেদের কোন ব্যাপারে অন্য কোন সিদ্ধান্তের ইখতিয়ার থাকবে না। কেউ আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে অমান্য করলে সে তো স্পষ্টই পথভ্রষ্ট হবে।

৩৭. (স্মরণ কর,) আল্লাহ যাকে (যায়েদকে) অনুগ্রহ করেছেন এবং তুমিও যার প্রতি অনুগ্রহ করেছো, তুমি তাকে বলছিলে: তুমি তোমার স্ত্রীকে নিজের নিকট রাখো এবং আল্লাহকে ভয় কর। আর তুমি তোমার অন্তরে যা গোপন রাখছো আল্লাহ তা প্রকাশ করে দিচ্ছেন; তুমি লোকদেরকে ভয় করছিলে, অথচ আল্লাহকে ভয় করাই তোমার পক্ষে অধিকতর উচিত ছিল। অতঃপর যায়েদ যখন তার (যয়নাবের) প্রয়োজন খতম করে দিল তখন আমি তাকে তোমার সাথে বিবাহ দিয়ে দিলাম, যাতে মু'মিনদের পোষ্যপুত্ররা নিজ স্ত্রীর প্রয়োজন খতম করলে সেসব রমণীকে বিয়ে করায় মু'মিনদের কোন দোষ না হয়। আল্লাহর আদেশ তো কার্যকরী হয়েই থাকে।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا مُّبِينًا ﴿۳۶﴾

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَ لِي لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿۳۷﴾

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) উল্লেখ করেন, তখন আল্লাহ তা'আলা ফেরেশতাদেরকে বলেন, তোমরা সাক্ষী থাক, আমি তাদের সবাইকে মাফ করে দিলাম। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বর্ণনা করেন, এ ফেরেশতাগণের একজন বলে, এ লোকদের মাঝে এমন এক ব্যক্তি রয়েছে, যে ওই বিকরকারীদের মধ্যে শামিল নয়। অন্য উদ্দেশ্যে ও প্রয়োজনে সে (ওখানে) এসেছিল। আল্লাহ তা'আলা বলেন, এ মজলিসের লোকগণ এত মর্যাদাবান যে, তাদের সাথে যারা বসে, তারাও বঞ্চিত হয় না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৮)

৩৮. আল্লাহ নবী (ﷺ)-এর জন্যে যা নির্ধারিত করেছেন তা করতে তার জন্যে কোন দোষ নেই। পূর্বে যেসব নবী অতীত হয়ে গেছে, তাদের ক্ষেত্রেও এটাই ছিল আল্লাহর বিধান। আল্লাহর বিধান সুনির্ধারিত।

৩৯. তারা (নবীগণ) আল্লাহর রিসালাত (বার্তাসমূহ) প্রচার করতেন এবং তাঁকে ভয় করতেন, আর আল্লাহকে ছাড়া অন্য কাউকে ভয় করতেন না। হিসাব গ্রহণে আল্লাহই যথেষ্ট।

৪০. মুহাম্মাদ (ﷺ) তোমাদের মধ্যে কোন পুরুষের পিতা নন; বরং তিনি আল্লাহর রাসূল এবং শেষ নবী। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

৪১. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহকে বেশি বেশি স্মরণ কর।

৪২. এবং সকাল-সন্ধ্যায় আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা বর্ণনা কর।

৪৩. তিনিই তোমাদের প্রতি রহমত বর্ষণ করেন এবং তাঁর ফেরেশ্তারাও (তোমাদের জন্যে রহমত প্রার্থনা করে) যেন তোমাদেরকে অঙ্ককার হতে আলোতে নিয়ে যায় এবং তিনি মু'মিনদের প্রতি পরম দয়ালু।

৪৪. যেদিন তারা আল্লাহর সাথে সাক্ষাৎ করবে, সেদিন তাদের অভিবাদন হবে 'সালাম'। তিনি তাদের জন্য প্রস্তুত রেখেছেন উত্তম প্রতিদান।

৪৫. হে নবী (ﷺ)! নিশ্চয়ই আমি তোমাকে পাঠিয়েছি সাক্ষীরূপে এবং সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۗ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ﴿٣٨﴾

الَّذِينَ يَبْلُغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾
وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۗ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾

تَجِدُهُمْ يَوْمَ يُقَوَّنُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاعْتَدَ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾

৪৬. আল্লাহর অনুমতিক্রমে তাঁর দিকে আহ্বানকারী রূপে এবং উজ্জ্বল প্রদীপ রূপে।

৪৭. তুমি মু'মিনদেরকে সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট রয়েছে মহা অনুগ্রহ।

৪৮. আর তুমি কাফির ও মুনাফিকদের অনুসরণ করো না; তাদের নির্যাতন উপেক্ষা করো এবং নির্ভর করো আল্লাহর উপর; উকিল হিসাবে আল্লাহই যথেষ্ট।

৪৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা মু'মিন নারীদেরকে বিয়ে করার পরে তাদেরকে স্পর্শ করার পূর্বে তালাক দিলে তোমাদের জন্যে তাদের পালনীয় কোন ইদ্দত নেই যা তোমরা গণনা করবে। বরং তোমরা তাদেরকে কিছু সম্পদ দিবে এবং সুন্দর পছন্দ তাদেদেরকে বিদায় করবে।

৫০. হে নবী (ﷺ)! আমি তোমার জন্যে তোমার ঐ সমস্ত স্ত্রীদেরকে বৈধ করেছি, যাদেরকে তুমি মহর প্রদান করেছো এবং বৈধ করেছি ঐ সমস্ত দাসীও যাদেরকে আল্লাহ তোমাকে গণীমত হিসেবে প্রদান করেছেন এবং (বিবাহের জন্যে বৈধ করেছি) তোমার চাচার কন্যা ও ফুফুর কন্যাকে, মামার কন্যা ও খালার কন্যাকে, যারা তোমার সাথে দেশ ত্যাগ করেছে এবং কোন মু'মিন নারী নবী (ﷺ)-এর নিকট নিজেকে হিবা করলে আর নবী (ﷺ) তাকে

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ﴿٤٦﴾

وَبَشِيرًا لِّلْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَثِيرًا ﴿٤٧﴾

وَلَا تُطِيعُ الْكُفْرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٤٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمِئَتُهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي أَتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمَتِكَ وَبَنَاتِ خَالَكَ وَبَنَاتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَأَمْرَأَةً مُّؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

বিয়ে করতে চাইলে সেও বৈধ, এটা বিশেষ করে তোমার জন্যে, অন্য মু'মিনদের জন্যে নয়; যাতে তোমার কোন অসুবিধা না হয়। মু'মিনদের স্ত্রী এবং তাদের মালিকানাধীন দাসীদের সম্বন্ধে যা আমি বিধান নির্ধারিত করেছি তা আমি জানি, আল্লাহ মহা ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৫১. যাকে ইচ্ছা তুমি তাদের মধ্যে তোমার নিকট হতে দূরে রাখতে পার এবং যাকে ইচ্ছা তোমার নিকট স্থান দিতে পার এবং তুমি যাকে পৃথক রেখেছিলে তাকে গ্রহণ করলে তোমার কোন অপরাধ নেই। এই বিধান এই জন্যে যে, এতে তাদের চক্ষু শীতল হবে এবং তারা দুঃখ পাবে না, আর তাদেরকে তুমি যা দিবে তাতে তাদের প্রত্যেকেই সন্তুষ্ট থাকবে। তোমাদের অন্তরে যা আছে আল্লাহ তা জানেন। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সহনশীল।

৫২. এরপর তোমার জন্যে কোন নারী বৈধ নয় এবং তোমার স্ত্রীদের পরিবর্তে অন্য স্ত্রী গ্রহণও বৈধ নয় যদিও তাদের সৌন্দর্য তোমাকে বিস্মিত করে, তবে তোমার অধিকারভুক্ত দাসীদের ব্যাপারে এই বিধান প্রযোজ্য নয়। আল্লাহ সব কিছুর উপর তীক্ষ্ণ দৃষ্টি রাখেন।

৫৩. হে মু'মিনগণ! তোমাদেরকে অনুমতি দেয়া না হলে তোমরা আহার প্রস্তুতির জন্যে অপেক্ষা না করে (ভোজনের জন্যে) নবী-গৃহ প্রবেশ করো না। তবে তোমাদেরকে

إِيَابَهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ط وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَّحِيمًا ٥١

تُرْجَىٰ ط مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤْتَىٰ إِلَيْكَ ط مَنْ تَشَاءُ ط
وَمَنْ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ط ذَلِكَ
أَدْنَىٰ أَنْ تَقْرَءَ عَيْنُهُمْ وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا
آتَيْنَهُنَّ كُلَّهُنَّ ط وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ط
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ٥١

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ
مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْبَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ
يَمِينُكَ ط وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ٥٢

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا
أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرِ نَظِيرِينَ إِنَّهُ
وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ

আহ্বান করা হলে তোমরা প্রবেশ করো এবং আহার শেষে তোমরা চলে যাও; তোমরা কথা-বার্তায় মশগুল হয়ে পড়ো না, কারণ তোমাদের এই আচরণ নবী (ﷺ)-কে পীড়া দেয়, অথচ তিনি তোমাদের থেকে (উঠিয়ে দিতে) সংকোচ বোধ করেন; কিন্তু আল্লাহ সত্য বলতে সংকোচ বোধ করেন না। তোমরা তার স্ত্রীদের নিকট কিছু চাইলে পর্দার পিছন হতে চাইবে। এই বিধান তোমাদের ও তাদের হৃদয়ের জন্যে অধিকতর পবিত্র। তোমাদের কারো পক্ষে আল্লাহর রাসূল (ﷺ)-কে কষ্ট দেয়া অথবা তাঁর (মৃত্যুর) পর তাঁর স্ত্রীদেরকে বিয়ে করা কখনও সংগত নয়। আল্লাহর দৃষ্টিতে এটা গুরুতর অপরাধ।

৫৪. তোমরা কোন বিষয়ে প্রকাশই কর অথবা গোপনই রাখো— আল্লাহ তো সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

৫৫. তাদের (নবী-স্ত্রীদের) জন্যে তাদের পিতৃগণ, পুত্রগণ, ভ্রাতৃগণ, ভ্রাতৃস্পুত্রগণ, ভগ্নিপুত্রগণ, স্বীয় মহিলাগণ এবং তাদের অধিকারভুক্ত দাস-দাসীগণের ব্যাপারে ওটা (পর্দা) পালন না করা অপরাধ নয়। হে নবী-স্ত্রীগণ! আল্লাহকে ভয় কর, আল্লাহ সবকিছু প্রত্যক্ষ করেন।

৫৬. নিঃসন্দেহে আল্লাহ ও তাঁর ফেরেশতামণ্ডলী নবীর উপর দরুদ (রহমত) প্রেরণ করেন। (অতএব) হে মু'মিনগণ তোমরাও তাঁর উপর দরুদ ও সালাম পেশ কর।

فَانْتَشَرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثِ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَجِئُ مِنْكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَجِئُ مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ط وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تُنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

إِنَّ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۝ وَاتَّقِينَ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

৫৭. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে কষ্ট দেয়, আল্লাহ তো তাদেরকে দুনিয়া ও আখিরাতে অভিশপ্ত করেন এবং তিনি তাদের জন্যে রেখেছেন লাঞ্ছনাজনক শাস্তি।

৫৮. মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারী কোন অপরাধ না করা সত্ত্বেও যারা তাদেরকে কষ্ট দেয়, তারা মিথ্যা অপবাদ ও স্পষ্ট পাপের বোঝা বহন করে।

৫৯. হে নবী (ﷺ)! তুমি তোমার স্ত্রীদেরকে, কন্যাদেরকে ও মু'মিনদের নারীদেরকে বলঃ তারা যেন তাদের চাদরের কিছু অংশ নিজেদের উপর টেনে দেয়। এতে তাদের চেনা সহজতর হবে; ফলে তাদেরকে উত্যক্ত করা হবে না। আল্লাহ ক্ষমাশীল পরম দয়ালু।

৬০. মুনাফিকরা এবং যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে এবং যারা নগরে গুজব রটনা করে, তারা বিরত না হলে আমি নিশ্চয়ই তাদের বিরুদ্ধে তোমাকে আরোপ করবো, এরপর এই নগরীতে তোমার প্রতিবেশীরূপে তারা অল্প সংখ্যক লোকই থাকবে।

৬১. তারা অভিশপ্ত হয়েছে; তাদেরকে যেখানেই পাওয়া যাবে সেখানেই ধরা হবে এবং টুকরা টুকরা করে হত্যা করা হবে।

৬২. পূর্বে যারা অতিবাহিত হয়ে গেছে তাদের ব্যাপারে এটাই ছিল আল্লাহর বিধান। তুমি কখনো আল্লাহর বিধানে কোন পরিবর্তন পাবে না।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغَيْرِ مَا كَتَبْنَا فَفَعِلْوا حَتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّهِينًا ﴿٥٨﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۗ ذٰلِكَ اَدْنٰى اَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذِينَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا رَحِيْمًا ﴿٥٩﴾

لَيْنَ لَمْ يَنْتَهِ السُّفْقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالرُّجْفُونَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾

مَعْرُوْنٍ ؕ اَيْنَمَا تُقِفُوْا اُخِذُوْا وَقْتَلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الدِّينِ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكُنْ تَجْدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

৬৩. লোকেরা তোমাকে কিয়ামত সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে। বলঃ এর জ্ঞান শুধু আল্লাহরই আছে। তুমি এটা কি করে জানবে, সম্ভবতঃ কিয়ামত শীঘ্রই হয়ে যেতে পারে?

৬৪. আল্লাহ কাফিরদেরকে লানত করেছেন এবং তাদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছেন জ্বলন্ত অগ্নি।

৬৫. সেখানে তারা স্থায়ীভাবে থাকবে এবং তারা কোন অভিভাবক ও সাহায্যকারী পাবে না।

৬৬. যেদিন তাদের মুখমন্ডল অগ্নিতে উলট-পালট করা হবে সেদিন তারা বলবেঃ হায়! আমরা যদি আল্লাহকে মানতাম ও রাসূল (ﷺ)-কে মানতাম!

৬৭. তারা আরো বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আমাদের নেতা ও বড়দের আনুগত্য করেছিলাম এবং তারা আমাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছিল।

৬৮. হে আমাদের প্রতিপালক! তাদের দ্বিগুণ শাস্তি প্রদান করুন এবং তাদেরকে দিন মহা অভিশাপ।

৬৯. হে মু'মিনগণ! মূসা (عليه السلام)-কে যারা কষ্ট দিয়েছে তোমরা তাদের মত হয়ো না, তারা যা রটনা করেছিল আল্লাহ তা হতে তাকে নির্দোষ প্রমাণিত করেছেন এবং আল্লাহর নিকট তিনি মর্যাদাবান।^১

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ ط وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفْرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ فِيهَا وَلِيًّا وَلَا يُصِيرًا ﴿٦٥﴾

يَوْمَ تَقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ﴿٦٦﴾

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلًا ﴿٦٧﴾

رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمُ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَى فَبَرَّاهُ اللَّهُ مِنَّمَا قَالَ وَأُوَّكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿٦٩﴾

১। জাবির ইবনে আব্দুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন রাতের আঁধার নেমে আসে; কিংবা বলেছেন, যখন সন্ধ্যা হয়ে যাবে, তখন তোমরা তোমাদের শিশুদের (ঘরে) আটকে রাখো। কেননা, এ সময় শয়তান ছড়িয়ে পড়ে। আর রাত কিছুটা কেটে গেলে তাদেরকে ছেড়ে দিতে পার এবং আল্লাহর নাম নিয়ে (ঘরের) দরজা বন্ধ কর। কারণ শয়তান বন্ধ দরজা খোলে না।

৭০. হে মু'মিনগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং সঠিক কথা বল।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا

قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٦٠﴾

৭১. তাহলে তিনি তোমাদের কর্মকে ত্রুটিমুক্ত করবেন এবং তোমাদের পাপসমূহ ক্ষমা করবেন। যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য করে, তারা অবশ্যই মহা সাফল্য অর্জন করবে।

يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ قَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٦١﴾

৭২. আমি তো আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও পর্বতমালার প্রতি এই আমানত পেশ করেছিলাম, অতঃপর তারা তা বহন করতে অস্বীকার করলো এবং এতে শঙ্কিত হলো; কিন্তু মানুষ তা বহন করলো, সে তো অতিশয় যালিম, অতিশয় অজ্ঞ।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٦٢﴾

৭৩. পরিণামে আল্লাহ মুনাফিক পুরুষ ও মুনাফিক নারী এবং মুশরিক পুরুষ ও মুশরিক নারীকে শাস্তি দিবেন এবং মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারীকে ক্ষমা করবেন। আল্লাহ ক্ষমাশীল পরম দয়ালু।

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٦٣﴾

হাদীস বর্ণনাকারী (ইবনে জুরাইহ) বলেছেনঃ আমাকে আমার ইবনে দীনার জানিয়েছেন যে, আতা যেমন রেওয়াজেত করেছেন, ঠিক অনুরূপ বর্ণনা জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ থেকে তিনিও শুনেছেন। তবে তিনি আল্লাহর খিকিরের উল্লেখ করেননি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩০৪)

সূরাঃ সাবা, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৪, রুকু'ঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহর, যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সব কিছুরই অধিপতি এবং আখিরাতেও প্রশংসা তারই। তিনি প্রজ্ঞাবান, সর্বজ্ঞ।

২. তিনি জানেন যা ভূমিতে প্রবেশ করে, যা তা হতে বের হয় এবং যা আকাশ হতে অবতীর্ণ হয় ও যা কিছু আকাশে উত্থিত হয়। তিনিই পরম দয়ালু, ক্ষমাশীল।

৩. কাফিররা বলেঃ আমাদের উপর কিয়ামত আসবে না। বলঃ হ্যাঁ আসবেই, শপথ আমার প্রতি-পালকের, নিশ্চয়ই তোমাদের নিকট ওটা আসবে। তিনি অদৃশ্য সম্বন্ধে সম্যক পরিজ্ঞাত, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে তাঁর অগোচর নয় অণু পরিমাণ কিছু কিংবা তদপেক্ষা ক্ষুদ্র অথবা বৃহৎ কিছু; বরং এর প্রত্যেকটি লিপিবদ্ধ আছে সুস্পষ্ট কিতাবে।

৪. এটা এ জন্য যে, যারা মু'মিন ও সৎকর্মপরায়ণ, তিনি তাদেরকে প্রতিদান দিবেন। তাদেরই জন্যে আছে ক্ষমা ও সম্মানজনক রিযিক।

৫. যারা আমার আয়াতসমূহকে ব্যর্থ করবার চেষ্টা করে তাদের জন্যে রয়েছে ভয়ঙ্কর পীড়াদায়ক শাস্তি।

سُورَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۵۴ رُكُوعَاتُهَا ۶

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ط وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ①

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا
يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ط
وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ①

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ط قُلْ
بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَلِيمُ الْغَيْبِ ١ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ
مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرَ
مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ①

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ط أُولَٰئِكَ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ①

وَالَّذِينَ سَعَوْا عَلَيْنَا فَعَدَاؤُنَا أُولَٰئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٍ ①

৬. যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা বিশ্বাস করে যে, তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা সত্য; এটা মানুষকে পরাক্রমশালী ও মহা প্রশংসিত আল্লাহর পথ নির্দেশ করে।

৭. কাফিররা বলেঃ আমরা কি তোমাদেরকে এমন ব্যক্তির সন্ধান দিব যে তোমাদেরকে বলেঃ তোমাদের দেহ সম্পর্ক ছিন্নভিন্ন হয়ে পড়লেও তোমরা নূতন সৃষ্টিরূপে উদ্ভিত হবে।

৮. সে কি আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করে অথবা সে কি উন্মাদ? বস্তুতঃ যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারা আযাবে ও ঘোর বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

৯. তারা কি তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে, আসমান ও যমীনে যা আছে তার প্রতি লক্ষ্য করে না? আমি ইচ্ছা করলে তাদেরকেসহ ভূমি ধ্বসিয়ে দিবো অথবা তাদের উপর আকাশের কোন খন্ডের পতন ঘটাবো, আল্লাহ অভিমুখী প্রতিটি বান্দার জন্যে এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

১০. আমি নিশ্চয়ই দাউদ (عليه السلام)-এর প্রতি আমার অনুগ্রহ করেছিলাম এবং আদেশ করেছিলামঃ হে পর্বতমালা! তোমরা দাউদ (عليه السلام)-এর সাথে আমার পবিত্রতা ঘোষণা কর এবং পান্থীসমূহকে, তার জন্যে নরম করেছিলাম লৌহকে

১১. যাতে তুমি পূর্ণ মাপের বর্ম তৈরি করতে ও পরিমাণ রক্ষা করতে পার

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطِ

الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ①

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَى رَجُلٍ يُنْبئُكُمْ إِذَا مُرِّتُمْ كُلَّ مُمْرِقٍ ۚ إِنَّكُمْ لَعَفَىٰ خَلْقٍ جَدِيدٍ ②

أَفَتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْمَعِيدِ ③

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ شَأْنَنَا خِصْفٌ بِهِمُ الْأَرْضِ أَوْ سُقُوطٌ عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ④

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا ۖ لِيَجِبَالَ أَوْبَىٰ مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۚ وَالتَّالِيَ الْهَدِيدِ ⑤

إِن أَعْمَلَ سِبْغَتٍ وَقَدِّرُ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا

এবং তোমরা সৎকর্ম কর, তোমরা যা কিছু কর আমি তা দেখি।

১২. আমি সুলাইমান (عليه السلام)-এর অধীন করেছিলাম বায়ুকে, যা প্রভাতে এক মাসের পথ অতিক্রম করতো। এবং সন্ধ্যায় এক মাসের পথ অতিক্রম করতো। আমি তার জন্যে গলিত তামার এক বরণা প্রবাহিত করেছিলাম। আল্লাহর অনুমতিক্রমে জ্বিনদের কতক তার সামনে কাজ করতো। তাদের মধ্যে যে আমার নির্দেশ অমান্য করে তাকে আমি জ্বলন্ত অগ্নির শাস্তি আন্বাদন করাবো।

১৩. তারা তাঁর সুলাইমান (عليه السلام) ইচ্ছানুযায়ী প্রাসাদ, ভাস্কর্য হাউজ সদৃশ বৃহদাকার পাত্র এবং সুদৃঢ়ভাবে স্থাপিত বৃহদাকার ডেগ নির্মাণ করতো। (আমি বলেছিলাম) হে দাউদ পরিবার! কৃতজ্ঞতার সাথে তোমরা কাজ করতে থাকো। আমার বান্দাদের মধ্যে অল্পই কৃতজ্ঞ।

১৪. যখন আমি সুলাইমান (عليه السلام)-এর মৃত্যু ঘটলাম তখন জ্বিনদেরকে তার মৃত্যুবিষয় জানালো শুধু মাটির পোকা (উইপোকা) যা সুলাইমান (عليه السلام)-এর লাঠি খাচ্ছিল। যখন সুলাইমান (عليه السلام) পড়ে গেলন তখন জ্বিনেরা বুঝতে পারলো যে, তারা যদি অদৃশ্য বিষয় জানতো তাহলে তারা লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তিতে আবদ্ধ থাকতো না।

১৫. সাবাবাসীদের জন্যে তাদের আবাসভূমিতে ছিল এক নিদর্শন,

صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غُدُوها شَهْرٌ وَرَوْحُها شَهْرٌ
وَاسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقَاطِرِ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ
بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ط وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ
أَمْرِنَا نَذْرُهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِبٍ وَتَآئِيلٍ وَجَفَّانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رُسِيَّتٍ ط اِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا ط
وَكَالِئُلٍ مِّنْ عِبَادِي الشُّكُورِ ﴿١٣﴾

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا
دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ
أَنْ لُّوْكَأُو يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ
الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّاتٍ

দু'টি বাগান, একটি ডান দিকে, অপরটি বামদিকে; তোমরা তোমাদের প্রতিপালক প্রদত্ত রিযিক ভোগ কর এবং তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। (কত) সুন্দরতম নগরী এবং ক্ষমাশীল তোমাদের প্রতিপালক।

১৬. পরে তারা আদেশ অমান্য করলো। ফলে আমি তাদের উপর প্রবাহিত করলাম বাঁধভাঙ্গা বন্যা এবং তাদের বাগান দু'টিকে পরিবর্তন করে দিলাম এমন দু'টি বাগানে যাতে উৎপন্ন হয় বিশ্বাদ ফলমূল, ঝাউগাছ এবং কিছু বরই গাছ।

১৭. আমি তাদেরকে এই শাস্তি দিয়েছিলাম তাদের কুফরীর কারণে। আমি অকৃতজ্ঞ ব্যতীত আর কাউকেও এমন শাস্তি দিই না।

১৮. তাদের এবং যেসব জনপদের প্রতি আমি অনুগ্রহ করেছিলাম সেগুলোর অন্তর্বর্তী স্থানে দৃশ্যমান বহু জনপদ স্থাপন করেছিলাম এবং ঐ সব জনপদে ভ্রমণের যথাযথ ব্যবস্থা করেছিলাম (এবং তাদেরকে বলে-ছিলামঃ) তোমরা এ সব জনপদে নিরাপদে ভ্রমণ কর দিবসে ও রজনীতে।

১৯. কিন্তু তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের সফরের (মনযিলগুলোর) ব্যবধান বর্ধিত করুন! এভাবে তারা নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল। ফলে আমি তাদেরকে উপখ্যানে পরিণত করলাম এবং তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে ছিন্নভিন্ন করে দিলাম। নিশ্চয় এতে প্রত্যেক

عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ هُمْ كُفُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ
وَاشْكُرُوا لَهُ طَبَقًا طَيِّبَةً وَرَبُّ غَفُورٌ ۝۱۶

فَاعْرَضُوا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ
بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ اٰكْلِ خَطِيْطٍ وَّالْاِثْلِ وَشِئْءٍ
مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ۝۱۷

ذٰلِكَ جَزٰٓئُهُمْ بِمَا كَفَرُوْا وَاَهْلٌ نُّجِزِيْٓ الْاِلَّا الْكٰفِرُوْا ۝۱۸

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقَرْيٰتِ الَّتِيْ بَرَكْنَا فِيْهَا
قُرًى ظٰهِرَةً وَّوَدَّرْنَا فِيْهَا السِّيْرَ سَيِّرُوْا فِيْهَا
لَيْلًا وَّاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ۝۱۹

فَقَالُوْا رَبَّنَا بَعْدَ بَيِّنٰتٍ اَسْفَارْنَا وَاظْمُوْا اَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَاَمْرًا لَهُمْ كُلُّ مَمْزُوْقٍ اِنْ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شٰكُوْرٍ ۝۲۰

ধৈর্যশীল, কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে
অবশ্যই অনেক নিদর্শন রয়েছে।

২০. তাদের সম্বন্ধে ইবলীস তার
ধারণা সত্য প্রমাণ করলো, ফলে
তাদের মধ্যে একটি মু'মিন দল
ব্যতীত সবাই তার অনুসরণ করলো।

২১. তাদের উপর তার (শয়তানের)
কোন আধিপত্য ছিল না। তবে কারা
আখেরাতে বিশ্বাসী এবং কারা ওতে
সন্দিহান তা অবহিত হওয়া ছিল
আমার উদ্দেশ্য। তোমার প্রতিপালক
সর্ববিষয়ের তত্ত্বাবধায়ক।

২২. তুমি বলঃ তোমরা আহ্বান কর
তাদেরকে যাদেরকে তোমরা
আল্লাহর পরিবর্তে (মা'বুদ) মনে
করতে, তারা আকাশমন্ডলী ও
পৃথিবীতে অণু পরিমাণ কিছুর মালিক
নয় এবং এতদুভয়ে তাদের কোন
অংশও নেই এবং তাদের কেউ তার
সহায়কও নয়।

২৩. যাকে অনুমতি দেয়া হয় তার
ছাড়া আল্লাহর নিকট কারো সুপারিশ
ফলপ্রসূ হবে না। পরে যখন তাদের
অন্তর হতে ভয় বিদূরিত হবে তখন
তারা পরস্পরের মধ্যে জিজ্ঞাসাবাদ
করবেঃ তোমাদের প্রতিপালক কি
বললেন? তদুত্তরে তারা বলবেঃ যা
সত্য তিনি তাই বলেছেন। তিনি
সর্বোচ্চ, মহান।

২৪. বলঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী
হতে কে তোমাদেরকে রিষিক প্রদান
করে? বলঃ আল্লাহ! হয় আমরা না
হয় তোমরা সৎপথে স্থিত অথবা
স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে পতিত।

وَلَقَدْ صَدَقَ عَلَيْهِمْ ابْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا
فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۲۰﴾

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَن
يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مَن هُوَ مِنْهَا فِي شَاكٍ وَرَبُّكَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿۲۱﴾

قُلْ اَدْعُوا الَّذِيْنَ رَعَبْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيْهَا مِنْ شَرِكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّنْ ظٰهِرٍ ﴿۲۲﴾

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ اِلَّا لِمَن اٰذِنَ لَهُ طَحٰتٰى
اِذَا فُرِعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَا ذَا قَالٍ رَبُّكُمْ قَالُوْا
الْحَقُّ ۗ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْكَبِيْرُ ﴿۲۩﴾

قُلْ مَنْ يَّرِثُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ
وَرِثًاۗ اَوْ اٰتَاكُمْ لَعَلَّ هُدٰى اَوْ فِى ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۪﴾

২৫. বলঃ আমাদের অপরাধের জন্যে তোমাদেরকে জবাবদিহি করতে হবে না এবং তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আমাদেরকেও জবাবদিহি করতে হবে না।

২৬. বলঃ আমাদের প্রতিপালক আমাদের সবাইকে একত্রিত করবেন, অতঃপর তিনি আমাদের মধ্যে সঠিকভাবে ফায়সালা করে দিবেন, তিনিই শ্রেষ্ঠ ফায়সালাকারী, সর্বজ্ঞ।

২৭. বলঃ তোমরা আমাকে দেখাও যাদেরকে তোমরা শরীকরূপে তাঁর সাথে জুড়ে দিয়েছো তাদেরকে। না, কখনো নয়; বরং তিনি আল্লাহ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

২৮. আমি তোমাকে সমগ্র মানব জাতির প্রতি সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে প্রেরণ করেছি; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ জানে না।

২৯. তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও (তবে বল,) এ (কিয়ামতের) প্রতিশ্রুতি কখন বাস্তবায়িত হবে?

৩০. বলঃ তোমাদের জন্যে আছে এক নির্ধারিত দিবস যা থেকে তোমরা মুহূর্তকাল বিলম্ব করতে পারবে না, আগেও আনতে পারবে না।

৩১. কাফিররা বলেঃ আমরা এই কুরআন কখনোও বিশ্বাস করবো না, এর পূর্ববর্তী কিতাবসমূহেও না। তুমি যদি দেখতে যালিমদেরকে যখন তাদের প্রতিপালকের সামনে

قُلْ لَا تَسْأَلُونَنَا عَمَّا آجُرَمْنَا وَلَا نَسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۱۵﴾

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ط
وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿۱۶﴾

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ ادَّعَيْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿۱۷﴾

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۱৮﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿۱৯﴾

قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا
تَسْتَقْدِرُونَ ﴿۲০﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا
بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ط وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ط يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ الْقَوْلِ ط

দন্ডায়মান করা হবে, তখন তারা পরস্পর বাদ-প্রতিবাদ করতে থাকবে, দুর্বলেরা অহংকারকারীদেরকে বলবেঃ তোমরা না থাকলে আমরা অবশ্যই মু'মিন হতাম।

৩২. অহংকারকারীরা দুর্বলদেরকে বলবেঃ তোমাদের নিকট সং পথের দিশা আসার পর আমরা কি তোমাদেরকে ওটা হতে নিবৃত্ত করেছিলাম? বস্তুতঃ তোমরাই তো ছিলে অপরাধী।

৩৩. দুর্বলেরা অহংকারকারীদেরকে বলবেঃ প্রকৃতপক্ষে তোমরাই তো দিবা-রাত্র চক্রান্তে লিপ্ত ছিলে, আমাদেরকে নির্দেশ দিয়েছিলে যেন আমরা আল্লাহকে অমান্য করি এবং তাঁর শরীক স্থাপন করি, যখন তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে তখন তারা অনুতাপ গোপন রাখবে এবং আমি কাফিরদের গলায় বেড়ী পরিয়ে দেবো। তাদেরকে তারা যা করতো তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

৩৪. যখনই আমি কোন জনপদে সতর্ককারী প্রেরণ করেছি তখনই তার বিপুলশালী অধিবাসীরা বলেছেঃ তোমরা যে বিষয়সহ প্রেরিত হয়েছো আমরা তা প্রত্যাখ্যান করি।

৩৫. তারা আরো বলতোঃ আমরা ধনে-জনে সমৃদ্ধশালী; সুতরাং আমাদেরকে কিছুতেই শাস্তি দেয়া হবে না।

৩৬. বলঃ আমার প্রতিপালক যার প্রতি ইচ্ছা রিযিক বর্ধিত করেন

يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا
أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعُّوْا اَنْحُنُ
صَدَدْنَكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَاءَكُمْ بَلْ لَنْتُمْ
مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ
مَكْرَ الْاَيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَامُرُوْنَ اَنْ نُّكْفِرَ بِاللّٰهِ
وَنَجْعَلَ لَهٗ اَنْدَادًا وَاَسْرُوْا الدّٰمَةَ لَمَّا رَاوْا
العَذَابَ وَاَجْعَلْنَا الْاَعْمٰلَ فِيْ اَعْتَاقِ الَّذِينَ
كَفَرُوْا هَلْ يَجْزَوْنَ الْاِمَا كَا نُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾

وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالِ مَثْرُوهَا
اِنَّا بِمَا اَرْسَلْتُمْ بِهِ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

وَقَالُوْا لَوْ اَنْحُنْ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَاَوْلَادًا وَاَمَّا نَحْنُ
بِعَدَدٍ بَيْنٍ ﴿٣٥﴾

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ

অথবা এটা সীমিত করেন; কিন্তু অধিকাংশ লোকই এটা জানে না।

৩৭. তোমাদের ধন-সম্পদ ও সম্ভান-সম্ভতি এমন কিছু নয় যা তোমাদেরকে আমার নিকটবর্তী করে দিবে; যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তারাই তাদের কর্মের জন্যে পাবে বহুগুণ পুরস্কার; আর তারা প্রাসাদসমূহে নিরাপদে থাকবে।

৩৮. যারা আমার আয়াতসমূহকে ব্যর্থ করার চেষ্টা করবে তাদেরকেই আযাবে একত্রিত করা হবে।

৩৯. বলঃ আমার প্রতিপালক তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা তার রিযিক বর্ধিত করেন অথবা ওটা সীমিত করেন। তোমরা যা কিছু ব্যয় করবে তিনি তার প্রতিদান দিবেন। তিনি শ্রেষ্ঠ রিযিকদাতা।

৪০. যেদিন তিনি তাদের সবাইকে একত্রিত করবেন এবং ফেরেশতাদেরকে জিজ্ঞেস করবেনঃ এরা কি তোমাদেরই পূজা করতো?

৪১. ফেরেশতারা বলবেঃ আপনি পবিত্র, মহান! তারা ব্যতীত আমাদের অভিভাবক আপনিই, তারা তো পূজা করতো জ্বিনদের এবং তাদের অধিকাংশই ছিল তাদের প্রতি বিশ্বাসী।

৪২. আজ তোমাদের একে অন্যের উপকার কিংবা অপকার করার ক্ষমতা নেই। যারা যুলুম করেছিল তাদেরকে বলবোঃ তোমরা যে অগ্নি-শান্তি অস্বীকার করতে তা আশ্বাদন কর।

وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرَّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ
إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعْفِ
بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿٤١﴾

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آلَيْنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي
الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ﴿٤٢﴾

كُلُّ إِنَّا رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ
وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٤٣﴾

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ
إِلَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٤﴾

قَالُوا سُبْحٰنَكَ أَنْتَ وَلِيِّنَا مَنْ دُونَهُمْ ۖ بَلْ
كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۗ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿٤٥﴾

فَأَيُّوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۗ
وَقَوْلُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ
بِهَا تَكْفُرُونَ ﴿٤٦﴾

৪৩. তাদের নিকট যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হয় তখন তারা বলেঃ তোমাদের পূর্বপুরুষ যার ইবাদত করতো এ ব্যক্তিই তো তাদের ইবাদতে তোমাদেরকে বাধা দিতে চায়। তারা বলেঃ এটা তো মিথ্যা উদ্ভাবন ব্যতীত কিছু নয় এবং কাফিরদের নিকট যখন সত্য আসে তখন তারা বলেঃ এটা তো এক সুস্পষ্ট যাদু।

৪৪. আমি তাদেরকে (পূর্বে) কোন কিতাব দিইনি যা তারা অধ্যয়ন করতো এবং তোমার পূর্বে তাদের নিকট কোন সতর্ককারীও প্রেরণ করিনি।

৪৫. তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল। তাদেরকে আমি যা দিয়েছিলাম এরা তার এক দশমাংশও পায়নি, তবুও তারা আমার রাসূলদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছিল। ফলে কত ভয়ঙ্কর হয়েছিল (আমার শাস্তি।)

৪৬. বলঃ আমি তোমাদেরকে একটি বিষয়ে উপদেশ দিচ্ছিঃ তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে দুই দুই জন অথবা এক এক জন করে দাঁড়াও, অতঃপর তোমরা চিন্তা করে দেখো- তোমাদের সঙ্গী আদৌ উন্মাদ নয়। সে তো আসন্ন কঠিন শাস্তি সম্পর্কে তোমাদের সতর্ককারী মাত্র।

৪৭. বলঃ আমি তোমাদের নিকট কোন পারিশ্রমিক চেয়ে থাকলে তা তোমাদের জন্যই থাক; আমার পুরস্কার তো আছে আল্লাহর নিকট এবং তিনি সর্ববিষয়ে সাক্ষী।

وَإِذَا تَتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَنْ آبَاءِكُمْ وَأَقْوَابِكُمْ مَا هَذَا إِلَّا آفَاكُ مُفْتَرِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ لَنَآ جَاءَهُمْ وَإِنْ هَذَا إِلَّا أَسْحَرُومِينٌ ﴿٤٣﴾

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كِتَابٍ يَذْرُؤُنَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ﴿٤٤﴾

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَّغُوا وَعْثَارَ مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رَسُولِي فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

قُلْ إِنَّمَا أَعْظَمُ بِوَأَحَدَةٍ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مَشْفَىٰ وَفِرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُونَ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

৪৮. বলঃ আমার প্রতিপালক সত্য (ওহী) অবতীর্ণ করেন; তিনি অদৃশ্যের পরিজ্ঞাত।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَفْضِلُ بِالْحَقِّ عَلَٰمُ الْغُيُوبِ ﴿۳۸﴾

৪৯. বলঃ সত্য এসেছে এবং অসত্য না পারে নতুন কিছু সৃজন করতে এবং না পারে পুনরাবৃত্তি করতে।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبَدِّلُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿۳۹﴾

৫০. বলঃ আমি বিভ্রান্ত হলে বিভ্রান্তির পরিণাম আমারই এবং যদি আমি সং পথে থাকি তবে তা এজন্যে যে, আমার প্রতি আমার প্রতিপালক ওহী প্রেরণ করেন। তিনি সর্বশ্রেষ্ঠা, অতি নিকটবর্তী।

قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُؤْتِي الرَّبِّيَّ إِذًا سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿۴۰﴾

৫১. তুমি যদি দেখতে যখন তারা ভীত-সন্ত্রস্ত হয়ে পড়বে, তারা অব্যাহতি পাবে না এবং তারা নিকটস্থ স্থান হতে ধৃত হবে।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فِرْعَوْنُ فَلَا فُوتَ وَأُخِذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿۴۱﴾

৫২. আর তারা বলবেঃ আমরা তাকে বিশ্বাস করলাম; কিন্তু এতো দূরবর্তী স্থান হতে তারা নাগাল পাবে কিরূপে?

وَقَالُوا أَمَّا بِهِ ؕ وَإِنِّي لَهُمُ التَّنَٰوُسُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿۴২﴾

৫৩. তারা তো পূর্বে তাকে প্রত্যাখ্যান করেছিল; তারা দূরবর্তী স্থান হতে অদৃশ্য বিষয়ে বাক্য ছুঁড়ে মারতো।

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿۴৩﴾

৫৪. তাদের ও তাদের বাসনার মধ্যে অন্তরাল করা হয়েছে, যেমন পূর্বে করা হয়েছিল তাদের সমপক্ষীদের ক্ষেত্রে। তারা ছিল বিভ্রান্তির সন্দেহের মধ্যে।

وَجِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿۴৪﴾

সূরাঃ ফাতির, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪৫, রুকু'ঃ ৫)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. যাবতীয় প্রশংসা আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা আল্লাহরই, যিনি ফেরেশতাদেরকে বার্তাবাহক করেছেন যারা দুই-দুই, তিন-তিন ও চার-চার পাখা বিশিষ্ট। তিনি (তাঁর) সৃষ্টিতে যা ইচ্ছা বৃদ্ধি করেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

২. আল্লাহ মানুষের জন্য যে অনুগ্রহের দরজা খুলে দেন কেউ তা' বিরত করতে পারে না এবং তিনি কিছু বন্ধ করতে চাইলে তৎপর কেউ ওর উন্মুক্তকারী নেই। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

৩. হে মানুষ! তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ স্মরণ কর। আল্লাহ ছাড়া কি কোন স্রষ্টা আছে, যে তোমাদেরকে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী হতে রিযিক দান করে? তিনি ছাড়া (সত্য) কোন মা'বুদ নেই। সুতরাং কোথায় তোমরা বিপথে চালিত হচ্ছে?

৪. তারা যদি তোমার প্রতি মিথ্যা আরোপ করে তবে তোমার পূর্বেও রাসূলদের প্রতি মিথ্যা আরোপ করা হয়েছিল। আল্লাহর নিকটই সবকিছু প্রত্যাবর্তিত হবে।

سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٥ رُكُوعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكِئَةِ رُسُلًا أَوْ أَجْنِحَةٍ مَّثْنَى وَثُلْثَ وَرُبْعَ طَيْرٍ يُزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ
وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهَا ۖ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

يَأْتِيهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَآتَى تُؤْفَكُونَ ②

وَأَنْ يَكْذِبُواكَ فَتَدَّ كَذِبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ ۖ
وَأَلَى اللَّهِ تَرْجَعُ الْأُمُورُ ②

৫. হে মানুষ। আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য; সুতরাং পার্থিব জীবন যেন তোমাদেরকে কিছুতেই প্রতারিত না করে এবং সে (শয়তান) যেন কিছুতেই আল্লাহ সম্পর্কে তোমাদেরকে প্রবঞ্চিত না করে।

৬. নিশ্চয়ই শয়তান তোমাদের শত্রু; সুতরাং তাকে শত্রু হিসেবে গ্রহণ কর। সে তো তার দলকে আহ্বান করে শুধু এই জন্যে যে, তারা যেন জাহান্নামী হয়।

৭. যারা কুফরী করে তাদের জন্যে আছে কঠিন শাস্তি এবং যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে আছে ক্ষমা ও মহা পুরস্কার।

৮. কাউকেও যদি তার মন্দ কর্ম সুন্দর করে দেখানো হয় এবং সে ওটাকে উত্তম মনে করে (সে ব্যক্তি কি তার সমান যে সৎকর্ম করে?) আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন। অতএব তুমি তাদের জন্যে আক্ষেপ করে তোমার প্রাণকে ধ্বংস করো না। তারা যা করে আল্লাহ্ তা জানেন।

৯. আল্লাহই বায়ু প্রেরণ করে তা দ্বারা মেঘমালা সঞ্চালিত করেন। অতঃপর আমি তা মৃত ভূ-খন্ডের দিকে প্রিচালিত করি, অতঃপর আমি ওটা দ্বারা যমীনকে ওর মৃত্যুর পর সঞ্জীবিত করি। পুনরাখান এই রূপেই হবে।

১০. কেউ ইয্যত-সম্মান চাইলে (সে জেনে রাখুক যে,) সমস্ত ইয্যত তো

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرُّكُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرُّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ①

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّهَا
يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ①

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ②

أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءٌ عَلَيْهِ فَرَأَاهُ حَسَنًا
فَأَنَّ اللَّهَ يَضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ③
فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
بِمَا يَصْنَعُونَ ④

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فُسْقِنَهُ
إِلَى بَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ⑤
كَذَلِكَ النُّشُورُ ⑥

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ⑦

আল্লাহরই। তাঁরই (আল্লাহর) দিকে পবিত্র বাণীসমূহ আরোহণ করে এবং সৎকর্ম গুণে উন্নীত করে, আর যারা মন্দকর্মের ফন্দি আঁটে তাদের জন্যে আছে কঠিন শাস্তি। তাদের ফন্দি ব্যর্থ হবেই।

১১. আল্লাহ তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন মৃত্তিকা হতে; অতঃপর শুক্রবিন্দু হতে, অতঃপর তোমাদেরকে করেছেন জোড়া জোড়া! আল্লাহর অজ্ঞাতসারে কোন নারী গর্ভধারণ করে না এবং প্রসবও করে না। কোন দীর্ঘায়ু ব্যক্তির আয়ু বৃদ্ধি করা হয় না অথবা তার আয়ু হ্রাস করা হয় না, কিন্তু তাতে রয়েছে কিতাবে (লাওহে মাহফুজে)। নিশ্চয় এটা আল্লাহর জন্যে সহজ।

১২. দু'টি সমুদ্র একরূপ নয়—একটির পানি সুমিষ্ট ও সুপেয়, অপরটির পানি লোনা, খর (কটু স্বাদবিশিষ্ট)। প্রত্যেকটি হতে তোমরা তাজা গোশত (মৎস) আহার কর এবং অলংকার আহরণ কর যা তোমরা পরিধান কর এবং তোমরা দেখো যে, ওর বুক চিরে নৌযান চলাচল করে যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ অনুসন্ধান করতে পার এবং যাতে তোমরা কৃতজ্ঞ হও।

১৩. তিনি রাত্রিকে দিবসে প্রবিষ্ট করান এবং দিবসকে প্রবিষ্ট করান রাত্রিতে, তিনি সূর্য ও চন্দ্রকে করেছেন নিয়ন্ত্রিত, প্রত্যেকে পরিভ্রমণ করে এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত। তিনিই আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক। সার্বভৌমত্ব তাঁরই।

إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ط وَمَكْرُ أُولَئِكَ هُوَ يُبْورُ ⑩

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ط وَمَا تَحْسِلُ مِنْ أَنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ط وَمَا يَعْمَرُ مِنْ مَعْعَرٍ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمُرَةٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ ط إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑩

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ ط هَذَا عَذَابٌ فَرَاتٌ سَائِغٌ شْرَابُهُ وَهَذَا مَلْحٌ أجاج ط وَمَنْ كُنَّ تَاكُفُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حَلِيَّةً تَلْبَسُونَهَا ط وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَازِرَ لَتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑪

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ط وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ط كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ط ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ط وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ⑫

আর তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো তারা তো খেজুরের আঁটির সামান্য আবরণেরও অধিকারী নয়।

১৪. তোমরা তাদেরকে আহ্বান করলে তারা তোমাদের আহ্বান শুনবে না এবং শুনলেও তোমাদের আহ্বানে সাড়া দিবে না। তোমরা তাদেরকে যে শরীক করেছো তা তারা কিয়ামতের দিন অস্বীকার করবে। সর্বজ্ঞের ন্যায় কেউই তোমাকে অবহিত করতে পারে না।

১৫. হে লোক সকল! তোমরা তো আল্লাহর মুখাপেক্ষী; কিন্তু আল্লাহ, তিনি অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

১৬. তিনি ইচ্ছা করলে তোমাদেরকে অপসরণ (ধ্বংস) করে নতুন সৃষ্টি আনয়ন করতে পারেন।

১৭. এটা আল্লাহর পক্ষে কঠিন নয়।

১৮. কোন বহনকারী অন্যের বোঝা বহন করবে না, কোন ভারাক্রান্ত ব্যক্তি যদি কাউকেও এটা বহন করতে আহ্বান করে তবে তার কিছুই বহন করা হবে না, নিকটাত্মীয় হলেও। তুমি শুধু সতর্ক করতে পার যারা তাদের প্রতিপালককে না দেখে ভয় করে এবং নামায কায়েম করে। যে কেউ নিজেকে পরিশোধন করে সে ছাড়া পরিশোধন করে নিজেরই কল্যাণের জন্যে। প্রত্যাবর্তন তো আল্লাহরই নিকট।

১৯. আর সমান নয় অন্ধ ও চক্ষুন্মান।

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْعَوْا دُعَاءَكُمْ وَلَا يَسْمَعُونَ
مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ
بِشْرِكِكُمْ وَلَا يَنْبِتُكَ مِثْلَ حَبِيبٍ ۝١٤

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ
هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝١٥

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝١٦

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝١٧

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ
إِلَىٰ جِبَالِهَا لَا يَحْمِلُ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ
إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ ۖ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۖ
وَالِى اللَّهِ الْبَصِيرُ ۝١٨

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۝١٩

২০. এবং না অন্ধকার ও আলো (সমান)।

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾

২১. এবং না ছায়া রৌদ্র (সমান)।

وَلَا الظُّلُّ وَلَا الْحُرُورُ ﴿٢١﴾

২২. আর সমান নয় জীবিত ও মৃতরাও। আল্লাহ যাকে ইচ্ছা শ্রবণ করান; তুমি শুনাতে সমর্থ হবে না যারা কবরে রয়েছে তাদেরকে।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ط إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾

২৩. তুমি একজন সতর্ককারী মাত্র।

إِنَّ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾

২৪. আমি তোমাকে সত্যসহ প্রেরণ করেছি সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রূপে; এমন কোন সম্প্রদায় নেই যার নিকট সতর্ককারী প্রেরিত হয়নি।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ط وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ
إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾

২৫. তারা যদি তোমার প্রতি মিথ্যা আরোপ করে তবে তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল, তাদের নিকট এসেছিল তাদের রাসূলগণ সুস্পষ্ট নিদর্শন, গ্রন্থাদি (সহীফা) ও দীপ্তিমান কিতাবসহ।

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ
جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ
الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾

২৬. অতঃপর আমি কাফিরদেরকে পাকড়াও করেছিলাম। কি ভয়ঙ্কর ছিল আমার শাস্তি!

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

২৭. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহ আকাশ হতে বৃষ্টিপাত করেন এবং এটা দ্বারা আমি বিচিত্র বর্ণের ফল-মূল উদগত করি? পাহাড়ের মধ্যে আছে বিচিত্র বর্ণের পথ—সুত্র, লাল ও বিভিন্ন রঙের এবং নিকষ কালো পাথরসমূহ।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَخْرَجْنَا
بِهِ ثَمَرَاتٍ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ط وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ
بَيْضٌ وَحُمْرٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَعَرَابِيٌّ سُودٌ ﴿٢٧﴾

২৮. এভাবে রং বেরং-এর মানুষ, জানোয়ার ও চতুষ্পদ জন্তু রয়েছে। আল্লাহর বান্দাদের মধ্যে যারা জ্ঞানী তারাই তাঁকে ভয় করে; আল্লাহ পরাক্রমশালী, ক্ষমশালী।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ
كَذَلِكَ ط إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ط
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

২৯. যারা আল্লাহর কিতাব পাঠ করে, নামায কায়েম করে, আমি তাদেরকে যে রিযিক দিয়েছি তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে, তারাই আশা করতে পারে তাদের এমন ব্যবসায়ের যার ক্ষয় নেই।

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ
تِجَارَةً لَّن تَبُورًا ﴿۲۹﴾

৩০. এ জন্যে যে, আল্লাহ তাদের কর্মের পূর্ণ প্রতিফল দিবেন এবং নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে আরো বেশি দিবেন। তিনি তো ক্ষমাশীল ও গুণগ্রাহী।

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ إِنَّهُ
عَفُورٌ شَكُورٌ ﴿۳۰﴾

৩১. আমি তোমার প্রতি যে কিতাব অবতীর্ণ করেছি তা সত্য, এটা পূর্ববর্তী কিতাবের সমর্থক। নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর বান্দাদের সবকিছু জানেন ও দেখেন।

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ
لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿۳۱﴾

৩২. অতঃপর আমি কিতাবের অধিকারী করলাম আমার বান্দাদের মধ্যে তাদেরকে যাদেরকে আমি মনোনীত করেছি; তবে তাদের কেউ নিজের প্রতি অত্যাচারী, কেউ মধ্যপন্থী এবং কেউ আল্লাহর ইচ্ছায় কল্যাণের কাজে অগ্রগামী। এটাই মহা অনুগ্রহ।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا
فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۗ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ
سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ ۖ يُأْتِي اللَّهُ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ ﴿۳ۨ﴾

৩৩. তারা প্রবেশ করবে স্থায়ী জান্নাতে, সেখানে তাদেরকে স্বর্ণ নির্মিত কঙ্কর ও মুক্তা দ্বারা অলংকৃত করা হবে এবং সেখানে তাদের পোশাক-পরিচ্ছদ হবে রেশমের।

جَاءَتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ
مِّن ذَهَبٍ وَوَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿۳۳﴾

৩৪. এবং তারা বলবে: যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহর যিনি আমাদের দুঃখ-দুর্দশা দূরীভূত করেছেন; আমাদের প্রতিপালক তো ক্ষমাশীল, গুণগ্রাহী।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ ط
إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿۳৪﴾

৩৫. যিনি নিজ অনুগ্রহে আমাদেরকে স্থায়ী আবাস দিয়েছেন যেখানে ক্রেশ আমাদেরকে স্পর্শ করে না এবং ক্লাস্তিও স্পর্শ করে না।

৩৬. কিন্তু যারা কুফরী করে তাদের জন্যে আছে জাহান্নামের আগুন। তাদের মৃত্যুর আদেশ দেয়া হবে না যে, তারা মরবে এবং তাদের জন্যে জাহান্নামের শাস্তিও লাঘব করা হবে না। এভাবে আমি প্রত্যেক অকৃতজ্ঞকে শাস্তি দিয়ে থাকি।

৩৭. সেখানে তারা আর্তনাদ করে বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে নিষ্কৃতি দিন, আমরা সংকর্ম করবো, পর্বে যা করতাম তা করবো না। আল্লাহ বলবেনঃ আমি কি তোমাদেরকে এতো দীর্ঘ জীবন দান করিনি যে, তখন কেউ সতর্ক হতে চাইলে সতর্ক হতে পারতে? তোমাদের নিকট তো সতর্ককারীরাও এসেছিলো। সুতরাং শাস্তি আশ্বাদন কর; যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

৩৮. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয় অবগত আছেন। অন্তরে যা রয়েছে সে সম্বন্ধে তিনি সবিশেষ অবহিত।

৩৯. তিনিই তোমাদেরকে পৃথিবীতে প্রতিনিধি করেছেন। সুতরাং কেউ কুফরী করলে তার কুফরীর জন্যে সে নিজেই দায়ী হবে। কাফিরদের কুফরী শুধু তাদের প্রতিপালকের ক্রোধই বৃদ্ধি করে এবং কাফিরদের কুফরী তাদের ক্ষতিই বৃদ্ধি করে।

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۗ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۖ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَافِرٍ ﴿٣٦﴾

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۖ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوْ لَمْ نَعْبُدْكَ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مِنْ تَذَكَّرٍ وَجَاءَكُمُ التَّنْذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٣٧﴾

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ ۖ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

৪০. বলঃ তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো সেই সব শরীক (দেব-দেবীর) কথা ভেবে দেখেছো কি? তারা পৃথিবীতে কিছু সৃষ্টি করে থাকলে আমাকে দেখাও; অথবা আকাশমন্ডলীতে (সৃষ্টিতে) তাদের কোন অংশ আছে কি? না কি আমি তাদেরকে এমন কোন কিতাব দিয়েছি যার প্রমাণের উপর এরা নির্ভর করে? বস্তুতঃ যালিমরা একে অপরকে মিথ্যা প্রতিশ্রুতি দিয়ে থাকে।

৪১. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীকে সংরক্ষণ করেন যাতে ওরা স্থানচ্যুত না হয়, ওরা স্থানচ্যুত হলে তিনি ব্যতীত কে ওদেরকে সংরক্ষণ করবে? তিনি অতি সহনশীল, ক্ষমাপরায়ণ।^১

৪২. তারা দৃঢ়তার সাথে আল্লাহর শপথ করে বলতো যে, তাদের নিকট কোন সতর্ককারী আসলে তারা অন্য সব সম্প্রদায় অপেক্ষা সংপথের অধিকতর অনুসারী হবে; কিন্তু তাদের নিকট যখন (এক) সতর্ককারী (মুহাম্মাদ ﷺ) আসলো তখন শুধু তাদের বিমুখতাই বৃদ্ধি পেল।

৪৩. পৃথিবীতে ঔদ্ধত্য (অহংকার) প্রকাশ এবং কূট ষড়যন্ত্রের কারণে। কূট ষড়যন্ত্র ওর উদ্যোক্তাদেরকেই পরিবেষ্টন করে। তবে কি তারা

قُلْ ادْعَيْتُمْ شُرَكَاءَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ أَرُونِي مَا ذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ
فِي السَّمَوَاتِ أَمْ آتَيْنَهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ وَمِنْهُ
بَلَاءٌ لِّإِن يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا الْإِعْرَاقَ ﴿٣٠﴾

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا
وَكَيِّنَ لِلنَّاسِ أَمْسُكُهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ
إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٣١﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَهُمْ
نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا
جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٣٢﴾

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۗ وَلَا يَجِئُ الْمُنْكَرُ
السَّيِّئِ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۗ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّمَاءَ الْأُولَىٰ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছিঃ (কিয়ামতের দিন) আল্লাহ পৃথিবীকে মূঠের মধ্যে এবং আকাশমন্ডলীকে ডান হাতে পেঁচিয়ে রাখবেন। অতঃপর বলবেনঃ আমি বাদশাহ পৃথিবীর বাদশাহরা আজ কোথায়? (বুখারী, হাদীস নং ৪৮১২)

প্রতীক্ষা করছে পূর্ববর্তীদের প্রতি প্রবর্তিত বিধানের? কিন্তু তুমি আল্লাহর বিধানের কখনো কোন পরিবর্তন পাবে না এবং আল্লাহর বিধানের কোন ব্যতিক্রমও দেখবে না।

৪৪. তারা কি পৃথিবীতে পরিভ্রমণ করেনি? তাহলে তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছিল তা দেখতে পেতো। তারা তো এদের অপেক্ষা অধিকতর শক্তিশালী ছিল। আল্লাহ এমন নন যে, আকাশমন্ডলী এবং পৃথিবীর কোন কিছুই তাঁকে অক্ষম করতে পারে; তিনি সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

৪৫. আল্লাহ মানুষকে তাদের কৃতকর্মের জন্যে শাস্তি দিলে ভূ-পৃষ্ঠে কোন জীব-জন্তুকেই রেহাই দিতেন না; কিন্তু তিনি এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত তাদেরকে অবকাশ দিয়ে থাকেন। অতঃপর তাদের নির্দিষ্টকাল এসে গেলে আল্লাহ তো আছেন তাঁর বান্দাদের সম্যক দ্রষ্টা।

فَكَرَنَ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ وَكَرَنَ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿۳۶﴾

أَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ط إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿۳۷﴾

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿۳۸﴾

সূরাঃ ইয়াসীন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮৩, রুকূঃ ৫)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. ইয়াসীন।

২. (শপথ) প্রজ্ঞাময় কুরআনের।

৩. তুমি অবশ্যই রাসূলদের
অন্তর্ভুক্ত।

سُورَةُ يَسِينَ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۸۳ رُكُوعَاتُهَا ۵

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَسِينَ ﴿۱﴾

وَالْقُرْآنَ الْحَكِيمَ ﴿۲﴾

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿۳﴾

৪. তুমি সরল পথে প্রতিষ্ঠিত।

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

৫. কুরআন অবতীর্ণ পরাক্রমশালী পরম দয়ালু (আল্লাহর) নিকট হতে।

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝

৬. যাতে তুমি সতর্ক করতে পার এমন এক জাতিকে যাদের পিতৃ-পুরষদেরকে সতর্ক করা হয়নি, যার ফলে তারা গাফিল।

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤَهُمْ فَهُمْ غٰفِلُونَ ۝

৭. তাদের অধিকাংশের জন্যে সেই বাণী অবধারিত হয়েছে; সুতরাং তারা ঈমান আনবে না।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

৮. আমি তাদের গলদেশে চিবুক (থুথনি) পর্যন্ত বেড়ি পরিয়েছি, ফলে তারা উর্ধ্বমুখী হয়ে গেছে।

إِنَّا جَعَلْنَا فِيْ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا لَّا يَهَيِّئُ لِيَّ الْاَذْقَانَ فَهُمْ مُّمَجِّحُونَ ۝

৯. আমি তাদের সম্মুখে প্রাচীর ও পশ্চাতে প্রাচীর স্থাপন করেছি এবং তাদেরকে আবৃত্ত করেছি, ফলে তারা দেখতে পায় না।

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ

سَدًّا فَأَعْشَيْنَهُمْ فَهُمْ لَا يَبْصُرُونَ ۝

১০. তুমি তাদেরকে সতর্ক কর বা না কর, তাদের পক্ষে উভয়ই সমান; তারা ঈমান আনবে না।

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

১১. তুমি শুধু তাকেই সতর্ক করতে পার যে উপদেশ মেনে চলে এবং না দেখে দয়াময় আল্লাহকে ভয় করে। অতএব তুমি তাকে ক্ষমা ও মহাপুরস্কারের সংবাদ দাও।

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ ۝

فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝

১২. আমিই মৃতকে করি জীবিত এবং লিখে রাখি যা তারা অগ্রে প্রেরণ করে ও যা তারা পশ্চাতে রেখে যায়, আমি প্রত্যেক জিনিস সম্পষ্ট কিতাবে সংরক্ষিত রেখেছি।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۝

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝

১৩. তাদের নিকট বর্ণনা কর এক জনপদের অধিবাসীদের দৃষ্টান্ত; যাদের নিকট এসেছিল রাসূলগণ।

وَأَضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ مِإِذْ جَاءَهَا

الْمُرْسَلُونَ ۝

১৪. যখন আমি তাদের নিকট পাঠিয়েছিলাম দু'জন রাসূল, কিন্তু তারা তাদেরকে মিথ্যাবাদী বললো; তখন আমি তাদেরকে শক্তিশালী করেছিলাম তৃতীয় একজন দ্বারা সুতরাং তারা বলেছিলেনঃ আমরা নিশ্চয়ই তোমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছি।

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ ﴿۱۴﴾

১৫. তারা বললেনঃ তোমরা তো আমাদের মতই মানুষ, দয়াময় (আল্লাহ) তো কিছুই অবতীর্ণ করেননি। তোমরা শুধু মিথ্যাই বলছো।

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا كَذِبُونَ ﴿۱۵﴾

১৬. তারা বললোঃ আমাদের প্রতিপালক জানেন যে আমরা অবশ্যই তোমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছি।

قَالُوا رَبَّنَا عَلِّمْنَا لِنَا إِلَيْكُمْ لِمَنْ لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ لَكُنَّا مُرْسَلُونَ ﴿۱۶﴾

১৭. স্পষ্টভাবে প্রচার করাই আমাদের দায়িত্ব।

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿۱۷﴾

১৮. তারা বললোঃ আমরা তোমাদেরকে অমঙ্গলের কারণ মনে করি, যদি তোমরা বিরত না হও তবে তোমাদেরকে অবশ্যই প্রস্তরাঘাতে হত্যা করবো এবং আমাদের পক্ষ হতে তোমাদের উপর যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি অবশ্যই আপতিত হবে।

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِن لَّمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَسَّسَنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱۸﴾

১৯. তারা (রাসূলগণ) বললেনঃ তোমাদের অমঙ্গল তোমাদেরই সাথে, এটা কি এ জন্যে যে, তোমাদেরকে উপদেশ দেয়া হবে? বস্তুতঃ তোমরা এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

قَالُوا طَائِفُكُمْ مَعَكُمْ ۖ وَإِن ذُكِّرْتُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿۱۹﴾

২০. নগরীর প্রান্ত হতে এক ব্যক্তি
ছুটে আসলো, সে বললোঃ হে আমার
সম্প্রদায়! রাসূলদের অনুসরণ কর।

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُوا
الرُّسُلِينَ ﴿٢٠﴾

২১. অনুসরণ কর তাদের যারা
তোমাদের নিকট কোন প্রতিদান চায়
না এবং তারা সৎপথ প্রাপ্ত।

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْئَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

২২. আমার কি হয়েছে যে, যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন এবং যাঁর নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে আমি তাঁর ইবাদত করবো না?

وَمَا لِي لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿۲۲﴾

২৩. আমি কি তাঁর পরিবর্তে অন্য মা'বুদ গ্রহণ করবো? দয়াময় (আল্লাহ) আমাকে ক্ষতিগ্রস্ত করতে চাইলে তাদের শাফায়াত আমার কোন কাজে আসবে না এবং তারা আমাকে উদ্ধার করতেও পারবে না।

أَتَّخِذُ مِنْ دُونِهَا إِلَهًا إِنَّ يُرِيدُ الرِّحْمَنُ بِضُرِّي لَأَ
تُغْنِنِي عَنْهُ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ﴿۲۳﴾

২৪. আমি অবশ্যই তখন স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে পড়বো।

إِنِّي إِذًا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿۲৪﴾

২৫. নিশ্চয়ই আমি তোমাদের প্রতিপালকের উপর ঈমান এনেছি, অতএব তোমরা আমার কথা শ্রবণ কর।

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ ﴿۲৫﴾

২৬. বলা হলোঃ জান্নাতে প্রবেশ কর। সে বললোঃ হায়! আমার সম্প্রদায় যদি জানতো।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿۲৬﴾

২৭. (একথা) যে, আমার প্রতিপালক আমাকে ক্ষমা করেছেন এবং আমাকে তিনি সম্মানিত করেছেন।

بِمَا عَفَرْتُ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿۲৭﴾

১। (ক) আবু মুসা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি এবং আমাকে যা দিয়ে পাঠান হয়েছে, তার দৃষ্টান্ত হলো এমন এক ব্যক্তির নাম, যে নিজ জাতির নিকট এসে বলল যে, আমি স্বচক্ষে (শক্র) সেনাদল প্রত্যক্ষ করেছি এবং আমি (তোমাদের) সুস্পষ্ট ভীতিপ্রদর্শনকারী। সুতরাং তোমরা আত্মরক্ষা করো। একদল তার কথা মেনে রাতের আঁধারে নিরাপদ স্থানে আশ্রয় নিল এবং বিপদমুক্ত হলো। আর অপর দল তাকে মিথ্যাবাদী সাব্যস্ত করল, (যার ফলে) সকাল বেলা (শক্র) সেনাদল তাদের ওপর এসে পড়ল এবং তাদেরকে ধ্বংস করে দিল। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮২)

(খ) আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বেহেশতে প্রবেশের পরে একমাত্র শহীদ ব্যতীত আর কেউ দুনিয়াতে ফিরে আসতে চাইবে না (অথচ তাঁর জন্য দুনিয়ার সবকিছুই নিয়ামত হিসেবে থাকবে।) সে দুনিয়ায় ফিরে এসে দশবার শহীদি মৃত্যুবরণের আকাঙ্ক্ষা পোষণ করবে। কেননা বাস্তবে সে শাহাদাতের মর্যাদা লাভ করেছে। (বুখারী, হাদীস নং ২৮১৭)

২৮. আমি তার (মৃত্যুর) পর তার সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আকাশ হতে কোন বাহিনী প্রেরণ করিনি এবং আমি প্রেরণকারীও ছিলাম না।

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ
مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٢٨﴾

২৯. ওটা ছিল শুধুমাত্র এক বিকট শব্দ। ফলে তারা নিস্তদ্ধ হয়ে গেল।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودٌ ﴿٢٩﴾

৩০. পরিতাপ (এরূপ) বান্দাদের জন্যে! তাদের নিকট যখনই কোন রাসূল এসেছে তখনই তারা তাকে ঠাট্টা-বিদ্‌ম্বপ করেছে।

يَحْسُرَةٌ عَلَىٰ الْعِبَادِ ۗ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ
إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٠﴾

৩১. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, তাদের পূর্বে কত সম্প্রদায় আমি ধ্বংস করেছি, যারা তাদের দিকে ফিরে আসবে না?

الْمَيُورَ ۚ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ
لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

৩২. এবং অবশ্যই তাদের সকলকে আমার নিকট উপস্থিত করা হবে।

وَإِن كُلُّ لَمَامٍ جَبِيحٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾

৩৩. মৃত যমীন, তাদের জন্যে একটি নিদর্শন যাকে আমি জীবিত করি এবং যা হতে উৎপন্ন করি (শস্য) দানা, যা হতে তারা ভক্ষণ করে।

وَأَيُّ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا
مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾

৩৪. তাতে আমি তৈরি করি খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান এবং প্রবাহিত করি ঝর্ণাধারা।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرْنَا
فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾

৩৫. যাতে তারা ভক্ষণ করতে পারে এর ফলমূল হতে, অথচ তাদের হাত ওটা তৈরি করে নি। তবুও কি তারা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করবে না?

لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ ۚ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. পবিত্র ও মহান তিনি, যিনি যমীন যা উৎপন্ন করে, তাদের নিজেদের মধ্য হতে মানুষ (নারী-পুরুষ) এবং তারা যাদেরকে জানে না তাদের প্রত্যেককে সৃষ্টি করেছেন জোড়া-জোড়া করে।

سُبْحٰنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ
وَمِنۢ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

৩৭. তাদের এক নিদর্শন রাত্রি, ওটা হতে আমি দিবালোক অপসারিত করি, তখন সকলেই অন্ধকারাচ্ছন্ন হয়ে পড়ে।

وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾

৩৮. এবং সূর্য ভ্রমণ করে ওর নির্দিষ্ট গন্তব্যের দিকে, এটা পরাক্রমশালী, সর্বাঙ্গের নিয়ন্ত্রণ।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾

৩৯. এবং চন্দ্রের জন্যে আমি নির্দিষ্ট করেছি বিভিন্ন মনযিল; অবশেষে ওটা শুকুবক্র, পুরাতন খেজুর শাখার আকার ধারণ করে।

وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٣٩﴾

৪০. সূর্যের পক্ষে সম্ভব নয় চন্দ্রের নাগাল পাওয়া এবং রজনীর পক্ষে সম্ভব নয় দিবসকে অতিক্রম করা; এবং প্রত্যেকে নিজ নিজ কক্ষপথে চলেছে।

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾

৪১. তাদের (জন্য) এক নিদর্শন এই যে, আমি তাদের বংশধরদেরকে বোঝাই নৌযানে আরোহণ করিয়েছিলাম।

وَآيَةٌ لَهُمُ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمُ فِي الْفُلِكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾

৪২. এবং তাদের জন্যে অনুরূপ যানবাহন সৃষ্টি করেছি যাতে তারা আরোহণ করে।

وَخَلَقْنَا لَهُمُ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾

৪৩. আমি ইচ্ছা করলে তাদেরকে নিমজ্জিত করতে পারি; সে অবস্থায় তারা কোন আর্তনাদ শ্রবণকারী পাবে না এবং তারা পরিত্রাণও পাবে না।

وَإِنْ نَشَاءُ نُفِطِّهِمْ فَلَا صَرِيحَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ﴿٤٣﴾

৪৪. কিন্তু আমার করুণা না হলে এবং কিছু কালের জন্যে জীবনোপভোগ করতে না দিলে।

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

৪৫. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ যা তোমাদের সম্মুখে ও তোমাদের পশ্চাতে আছে সে (পাপ কাজ)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾

সম্বন্ধে সাবধান হও যাতে তোমরা
অনুগ্রহ ভাজন হতে পার।

৪৬. আর যখনই তাদের
প্রতিপালকের নিদর্শনাবলীর কোন
নিদর্শন তাদের নিকট আসে তখন
তারা তা হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

৪৭. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ
আল্লাহ তোমাদেরকে যে রুখী
দিয়েছেন তা হতে ব্যয় কর, তখন
কাফিররা মু'মিনদেরকে বলেঃ আল্লাহ
ইচ্ছা করলে যাকে খাওয়াতে
পারতেন আমরা কেন তাকে
খাওয়ানো? তোমরা তো স্পষ্ট
বিভ্রান্তিতে রয়েছো।

৪৮. তারা বলেঃ তোমরা যদি
সত্যবাদী হও তবে বলঃ এই
প্রতিশ্রুতি কখন পূর্ণ হবে?

৪৯. তারা তো অপেক্ষায় আছে এক
বিকট শব্দের যা তাদেরকে আঘাত
করবে তাদের বাক-বিতণ্ডা কালে।

৫০. তখন তারা অসিয়ত করতে
সমর্থ হবে না এবং নিজেদের
পরিবার-পরিজনের নিকট ফিরে
আসতেও পারবে না।

৫১. যখন শিঙ্গায় ফুৎকার দেয়া হবে
তখনই তারা কবর হতে ছুটে আসবে
তাদের প্রতিপালকের দিকে।

৫২. তারা বলবেঃ হায়! দুর্ভোগ
আমাদের! কে আমাদেরকে আমাদের
নিদ্রাস্থল হতে উঠালো? দয়াময়
আল্লাহ তো এরই প্রতিশ্রুতি
দিয়েছিলেন এবং রাসূলগণ সত্যই
বলেছিলেন।

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا
عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْطَعِمُ مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ
أَطْعَمَهُ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٤٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ
يَخِصِّبُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
يَسِيرُونَ ﴿٥١﴾

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۚ إِنَّ هَذَا مَا
وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

৫৩. এটা হবে শুধুমাত্র এক বিকট আওয়াজ; তখনই তাদের সকলকে উপস্থিত করা হবে আমার সামনে।

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

৫৪. আজ কারো প্রতি কোন যুলুম করা হবে না এবং তোমরা যা করতে শুধু তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

فَالْيَوْمَ لَا تظَلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

৫৫. এই দিন জান্নাতবাসীরা আনন্দে মগ্ন থাকবে।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَكِهِونَ ﴿٥٥﴾

৫৬. তারা এবং তাদের স্ত্রীগণ (সুশীতল) ছায়ায় সুসজ্জিত আসনে হেলান দিয়ে বসবে।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرْبَابِ مُتَّكِنُونَ ﴿٥٦﴾

৫৭. সেথায় থাকবে তাদের জন্যে ফলমূল এবং তাদের জন্যে থাকবে যা তারা চাইবে।

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ﴿٥٧﴾

৫৮. পরম দয়ালু প্রতিপালকের পক্ষ হতে তাদেরকে বলা হবে 'সালাম'।

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾

৫৯. আর হে অপরাধীগণ! তোমরা আজ পৃথক হয়ে যাও।

وَأَمَّا أَزْوَاجُ الْيَوْمِ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾

৬০. হে বানী আদম! আমি কি তোমাদেরকে নির্দেশ দিইনি যে, তোমরা শয়তানের ইবাদত করো না, কারণ সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٠﴾

৬১. আর আমারই ইবাদত কর, এটাই সরল পথ।

وَأَنْ أَعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

৬২. শয়তান তো তোমাদের বহু দলকে বিভ্রান্ত করেছিল, তবুও কি তোমরা বুঝনি?

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

৬৩. এটা সেই জাহান্নাম যার প্রতিশ্রুতি তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

৬৪. আজ তোমরা এতে প্রবেশ কর; কারণ তোমরা একে অবিশ্বাস করেছিলে।

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾

৬৫. আমি আজ এদের মুখে মোহর লাগিয়ে দিবো, এদের হাত কথা বলবে আমার সাথে এবং এদের পা সাক্ষ্য দিবে এদের কৃতকর্মের।

৬৬. আমি ইচ্ছা করলে এদের চক্ষুগুলোকে বিলীন করে দিতে পারতাম, তখন এরা পথ চলতে চাইলে কি করে দেখতে পেতো?

৬৭. এবং আমি ইচ্ছা করলে এদেরকে স্ব-স্ব স্থানে (আকৃতি) বিকৃত করে দিতে পারতাম, ফলে এরা চলতে পারতো না এবং ফিরেও আসতে পারতো না।

৬৮. আমি যাকে দীর্ঘ জীবন দান করি তার স্বাভাবিক সৃষ্টি হতে আমি তাকে উল্টিয়ে দেই। তবুও কি তারা বুঝে না?

৬৯. আমি তাকে (রাসূলকে ﷺ) কবিতা রচনা করতে শিখাইনি এবং এটা তার পক্ষে উচিতও নয়। এটাতো শুধু উপদেশ এবং সুস্পষ্ট কুরআন।

৭০. যাতে সে সতর্ক করতে পারে যারা জীবিত তাদেরকে এবং যাতে কাফিরদের বিরুদ্ধে শাস্তির কথা সত্য হতে পারে।

৭১. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, নিজ হাতে সৃষ্ট বস্তুদের মধ্যে তাদের জন্যে আমি সৃষ্টি করেছি গৃহপালিত জন্তু এবং তারাই এগুলোর অধিকারী।

৭২. এবং আমি এগুলোকে তাদের বশীভূত করে দিয়েছি। এগুলোর কতক তাদের বাহন এবং এগুলোর কতক তারা আহার করে।

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ
وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
الْبَصِرَاطَ فَآتَىٰ يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَاتَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

وَمَنْ نَعْتِرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا
ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾

لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى
الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِيئِنَا
أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَلَكَوْنَ ﴿٧١﴾

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾

৭৩. তাদের জন্য এগুলোতে আছে বহু উপকারিতা আর আছে পানীয় বস্তু। তবুও কি তারা কৃতজ্ঞ হবে না?

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبٌ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿۷۳﴾

৭৪. তারা তো আল্লাহর পরিবর্তে অন্য মা'বুদ গ্রহণ করেছে এই আশায় যে, তারা সাহায্যপ্রাপ্ত হবে।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لَعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ۖ ﴿۷۴﴾

৭৫. (অথচ) এসব মা'বুদ তাদের সাহায্য করতে সক্ষম নয়; বরং তাদেরকে তাদের বাহিনীরূপে (সাহায্যকারী রূপে) উপস্থিত করা হবে।

لَا يَسْتَظِيلُونَ لِنُصْرِهِمْ ۖ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ﴿۷۵﴾

৭৬. অতএব তাদের কথা তোমাকে যেন দুঃখ না দেয়। আমি তো জানি যা তারা গোপন করে এবং যা তারা ব্যক্ত করে।

فَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسْرُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿۷۶﴾

৭৭. মানুষ কি দেখে না যে, আমি তাকে সৃষ্টি করেছি শুক্রবিন্দু হতে? অথচ হঠাৎ করেই সে হয়ে পড়ে প্রকাশ্য বিতণ্ডাকারী।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿۷۷﴾

৭৮. আর সে আমার সম্বন্ধে উপমা রচনা করে অথচ সে নিজের সৃষ্টির কথা ভুলে যায়; বলেঃ হাড্ডিতে প্রাণ সঞ্চার করবে কে, যখন গুটা পচে গলে যাবে?

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَوَسَّىٰ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُعْطِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿۷۸﴾

৭৯. বলঃ ওর মধ্যে প্রাণ সঞ্চার করবেন তিনিই যিনি এটা প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন এবং তিনি প্রত্যেকটি সৃষ্টি সম্বন্ধে সম্যক পরিজ্ঞাত।

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿۷۹﴾

৮০. তিনি তোমাদের জন্যে সবুজ বৃক্ষ হতে অগ্নি উৎপাদন করেন এবং তোমরা গুটা দ্বারা প্রজ্বলিত কর।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا ۖ فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ نُوقَدُونَ ﴿۸۰﴾

৮১. যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন তিনি কি তাদের অনুরূপ সৃষ্টি করতে সমর্থ নন? হ্যাঁ, নিশ্চয়ই তিনি মহাপ্রস্তু, সর্বজ্ঞ।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ يَقْدِرُ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ط بَلَىٰ ۗ وَهُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾

৮২. তাঁর ব্যাপার শুধু এই যে, যখন তিনি কোন কিছুর ইচ্ছা করেন তখন ওকে বলেনঃ হও, ফলে তা হয়ে যায়।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾

৮৩. অতএব, পবিত্র ও মহান তিনি যাঁর হাতে প্রত্যেক বিষয়ের সার্বভৌম ক্ষমতা এবং তাঁরই নিকট তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তিত করা হবে।

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

সূরাঃ সা-ফফা-ত, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৮২, রুকু'ঃ ৫)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الطُّفَّتِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٨٢ رُكُوعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ তাদের যারা (ফেরেশতা-গণ) সারিবদ্ধভাবে দন্ডায়মান।

وَالطُّفَّتِ صَفًّا ﴿١﴾

২. ও যারা কঠোর পরিচালক (মেঘমালার)।

فَالرُّجْرُوتِ زَجْرًا ﴿٢﴾

৩. এবং যারা কুরআন আবৃত্তিতে রত।

فَالثَّلِيلِ ذِكْرًا ﴿٣﴾

৪. নিশ্চয়ই তোমাদের মা'বুদ এক।

إِنَّ إِلَهُهُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾

৫. যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের অন্তর্বর্তী সব কিছুর প্রতিপালক এবং প্রতিপালক সকল উদয় স্থলের।

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾

৬. আমি পৃথিবীর আকাশকে নক্ষত্ররাজির শোভা দ্বারা সুশোভিত করেছি।

৭. এবং রক্ষা করেছি প্রত্যেক বিদ্রোহী শয়তান হতে।

৮. ফলে, তারা উর্ধ্ব জগতের কিছু শ্রবণ করতে পারে না এবং তাদের প্রতি (জ্বলন্ত তারকা) নিষ্কিণ্ত হয় সকল দিক হতে-

৯. বিতাড়নের জন্যে এবং তাদের জন্যে আছে অবিরাম শাস্তি।

১০. তবে কেউ হঠাৎ হেঁ মেরে কিছু শুনে ফেললে জ্বলন্ত উষ্ণপিণ্ড তাদের পশ্চাদ্ধাবন করে।

১১. তাদেরকে (কাফেরদেরকে) জিজ্ঞেস করঃ তাদেরকে সৃষ্টি করা কঠিনতর, না আমি অন্য যা কিছু সৃষ্টি করেছি তার সৃষ্টি কঠিনতর? তাদেরকে আমি সৃষ্টি করেছি আঠাল মাটি হতে।

১২. তুমি তো বিস্ময়বোধ করছো আর তারা করছে বিদ্রূপ।

১৩. এবং যখন তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয় তখন তারা তা গ্রহণ করে না।

১৪. তারা কোন নিদর্শন (মু'জিয়া) দেখলে উপহাস করে।

১৫. এবং বলেঃ এটা তো এক সুস্পষ্ট যাদু ব্যতীত আর কিছুই নয়।

১৬. আমরা যখন মরে যাবো এবং মাটি ও হাড়িডতে পরিণত হবো,

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَكِبِ ۝٦

وَحَفِظْنَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝٧

لَا يَسْتَعِينُونَ إِلَىٰ الْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ وَيُقَدِّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝٨

دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝٩

إِلَّا مَنْ خَطَفَ الْخَطْفَةَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠

فَأَسْتَفْتِيهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۝١١
إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ۝١٢

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝١٣

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ۝١٤

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخَرُونَ ۝١٥

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝١٦

عِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۝١٧

তখনো কি আমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে?

১৭. এবং আমাদের পূর্বপুরুষদেরও?

أَوِ آبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ⑬

১৮. বলঃ হ্যাঁ এবং তোমরা হবে লাঞ্চিত।

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ⑭

১৯. ওটা একটি মাত্র প্রচলিত শব্দ, আর তখনই তারা প্রত্যক্ষ করবে।

فَأْتَاهِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ⑮

২০. এবং তারা বলবেঃ হায়! দুর্ভোগ আমাদের! এটাই তো কর্মফল দিবস!

وَقَالُوا يَوْمَئِذٍ هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ⑯

২১. এটাই ফায়সালার দিন যা তোমরা অস্বীকার করতে।

هَذَا يَوْمُ الْقَضَلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ⑰

২২. (ফেরেশতাদেরকে বলা হবেঃ) একত্রিত কর যালিম ও তাদের সহচরদেরকে এবং তাদেরকে, যাদের তারা ইবাদত করতো—

أُحْشِرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ⑱

২৩. আল্লাহর পরিবর্তে এবং তাদেরকে হাঁকিয়ে নিয়ে যাও জাহান্নামের পথে।

مِنْ دُونِ اللَّهِ قَاهِدٌ وَهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ⑲

২৪. অতঃপর তাদেরকে থামাও, কারণ তাদেরকে প্রশ্ন করা হবেঃ

وَقِفُّهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ⑳

২৫. তোমাদের কি হলো যে, তোমরা একে অপরের সাহায্য করছো না?

مَا لَكُمْ لَا تَنْصُرُونَ ㉑

২৬. বস্তুতঃ সেদিন তারা আত্মসমর্পণ করবে।

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ㉒

২৭. এবং তারা একে অপরের সামনা সামনি হয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করবে—

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ㉓

২৮. তারা বলবেঃ তোমরা তো (শক্তি প্রয়োগ করে পথভ্রষ্ট করতে) ডান দিক থেকে আমাদের নিকট আসতে।

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ㉔

২৯. তারা বলবেঃ তোমরা তো বিশ্বাসীই ছিলে না।

৩০. এবং তোমাদের উপর আমাদের কোন কর্তৃত্ব ছিল না; বস্তুতঃ তোমরাই ছিলে সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

৩১. আমাদের বিরুদ্ধে আমাদের প্রতিপালকের কথা সত্য হয়েছে; আমাদেরকে অবশ্যই শাস্তি আন্বাদন করতে হবে।

৩২. আমরা তোমাদেরকে বিভ্রান্ত করেছিলাম, কারণ আমরা নিজেরাও ছিলাম বিভ্রান্ত।

৩৩. তারা সবাই সেই দিন আযাবে শরীক হবে।

৩৪. অপরাধীদের প্রতি আমি এরূপই করে থাকি।

৩৫. যখন তাদেরকে বলা হতো যে, আল্লাহ ছাড়া কোন (সত্য) মা'বুদ নেই তখন তারা অহংকার করতো।

৩৬. এবং বলতোঃ আমরা কি এক পাগল কবির কথায় আমাদের মা'বুদদেরকে বর্জন করবো?

৩৭. বরং সে তো সত্য নিয়ে এসেছে এবং সে সমস্ত রাসূলকে সত্য বলে স্বীকার করেছে।

৩৮. তোমরা অবশ্যই যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করবে।

৩৯. এবং তোমরা যা করতে তারই প্রতিফল পাবে।

৪০. তবে তারা নয় যারা আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দা।

قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾

فَحَقِّقْ عَلَيْنَا قَوْلَ رَبِّنَا ؕ اِنَّا لَذٰلِقُوْنَ ﴿٣١﴾

فَاَعْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾

وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّا لَتٰرِكُوْۤا الْهَيْتٰنَا لِسَاعِدِ مَجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾

اِنَّكُمْ لَذٰلِقُوْۤا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾

وَمَا تَجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾

اِلَّا الْعٰبِدَ اللّٰهِ الْمَخْلِصِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪১. তাদের জন্যে আছে নির্ধারিত
রিযিক—

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝

৪২. ফলমূল এবং তারা হবে
সম্মানিত;

فَوَاكِهَ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۝

৪৩. থাকবে নেয়ামতপূর্ণ জান্নাতে।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝

৪৪. তারা মুখোমুখি হয়ে আসনে
বসবে।

عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝

৪৫. তাদেরকে ঘুরে ঘুরে পরিবেশন
করা হবে বিশুদ্ধ জাম পানিও পাত্র
ঝর্ণাধারা হতে।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ۝

৪৬. সাদা উজ্জ্বল যা হবে
পানকারীদের জন্যে সুস্বাদু।

بِضَاءٍ لَّدَىٰ لِلشَّرِيبِ ۝

৪৭. তাতে (তাদের) মাথা ঘুরাবে না
এবং তারা তাতে মাতালও হবে না।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۝

৪৮. আর তাদের সঙ্গে থাকবে
আনত নয়না (অবনত ও বিনিত),
টানাটানা চক্ষু বিশিষ্ট হুরগণ।

وَإِنَّمَا هُنَّ حُصُرٌ مِّنَ الظَّرْفِ عِزٌّ ۝

৪৯. তারা যেন সুরক্ষিত ডিম্ব।

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكُونٌ ۝

৫০. তারা একে অপরের সামনা
সামনি হয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করবে।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝

৫১. তাদের মধ্যে কেউ বলবেঃ
আমার ছিল এক সঙ্গী।

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝

৫২. সে বলতোঃ তুমি কি
বিশ্বাসীদের অন্তর্ভুক্ত (যে,)?

يَقُولُ إِنَّكَ لَمِنَ الْبَصِيدِينَ ۝

৫৩. আমরা যখন মরে যাবো এবং
আমরা মৃত্তিকা ও হাড়িতে পরিণত
হবো তখনো কি আমাদেরকে
প্রতিফল দেয়া হবে?

إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۖ إِنََّّا لَنَسْتَأْتُونَ ۝

৫৪. সে বলবেঃ তোমরা কি (তাকে
উঁকি মেরে) দেখতে চাও?

قَالَ هَلْ أُنْتُمْ مُّظَلِّعُونَ ۝

৫৫. অতঃপর সে ঝুঁকে দেখবে এবং
তাকে দেখতে পাবে জাহান্নামের
মধ্যস্থলে;

فَأَظْلَعَ قَرَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝

৫৬. সে বলবেঃ আল্লাহর শপথ! তুমি তো আমাকে প্রায় ধ্বংসই করেছিলে।

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَ لَتُرْدِيْنَ ۙ

৫৭. আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ না থাকলে আমিও তো আটক ব্যক্তিদের মধ্যে शामिल হতাম।

وَلَوْ لَا نِعْمَةٌ رَّبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۙ

৫৮. আমাদের তো আর মৃত্যু হবে না?

اَمَّا نَحْنُ بِحَيٰتِيْنَ ۙ

৫৯. প্রথম মৃত্যুর পর এবং আমাদেরকে শাস্তিও দেয়া হবে না?

اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُولٰٓئِ وَ مَا نَحْنُ بِمُعَدِّيْنَ ۙ

৬০. এটা নিশ্চয়ই মহা সাফল্য।

اِنَّ هٰذَا لَهٗوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۙ

৬১. এরূপ সাফল্যের জন্যে আমলকারীদের উচিত আমল করা।

لِيُثِلَّ هٰذَا فَيَعْمَلَ الْعَمَلُوْنَ ۙ

৬২. আপ্যায়নের জন্যে কি এটাই শ্রেষ্ঠ, না যাক্কুম বৃক্ষ?

اٰذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقْوٰمِ ۙ

৬৩. অবশ্যই যালিমদের জন্যে আমি এটা তৈরি করেছি পরীক্ষা স্বরূপ।

اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظٰلِمِيْنَ ۙ

৬৪. এই বৃক্ষ বের হয় জাহান্নামের তলদেশ হতে।

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِىْ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۙ

৬৫. ওটার কলিগুলো যেন শয়তানের মাথা।

طَلْعُهَا كَاَنَّهُ رِءُوْسُ الشَّيْطٰنِ ۙ

৬৬. এটা হতে তারা নিশ্চয়ই আহার করবে এবং পেট পূর্ণ করবে তা' দ্বারা।

فَاِنَّهُمْ لَآكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَا لِكُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۙ

৬৭. তদুপরি তাদের জন্যে থাকবে ফুটন্ত পানির মিশ্রণ।

ثُمَّ اِنَّ لَّهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۙ

৬৮. অতঃপর তাদের প্রত্যাভর্তনস্থল হবে অবশ্যই জাহান্নামের দিকে।

ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَآ اِلٰى الْجَحِيْمِ ۙ

৬৯. তারা তাদের পিতৃপুরুষদেরকে পেয়েছিল পথভ্রষ্ট।

اِنَّهُمْ الْاَفْوَا اَبَآءَهُمْ ضَالِّيْنَ ۙ

৭০. আর তারা তাদের পদাঙ্ক অনুসরণে ধাবিত হয়েছিল।

فَهُمْ عَلَىٰ آثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿۷۰﴾

৭১. তাদের পূর্বেও পূর্ববর্তীদের অধিকাংশ পথভ্রষ্ট হয়েছিল।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿۷۱﴾

৭২. এবং আমি তাদের মধ্যে সতর্ককারী প্রেরণ করেছিলাম।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنذِرِينَ ﴿۷২﴾

৭৩. সুতরাং লক্ষ্য কর, যাদেরকে সতর্ক করা হয়েছিল, তাদের পরিণাম কি হয়েছিল।

فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ﴿۷৩﴾

৭৪. তবে আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দাদের কথা ভিন্ন।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿۷৪﴾

৭৫. নূহ (عليه السلام) আমাকে আহ্বান করেছিলেন, আর আমি কত উত্তম সাড়া দানকারী!

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ﴿۷৫﴾

৭৬. তাকে ও তার পরিবারবর্গকে আমি উদ্ধার করেছিলাম মহা বিপদ হতে।

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿۷৬﴾

৭৭. তার বংশধরদেরকেই আমি বিদ্যমান রেখেছি বংশ পরস্পরায়।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿۷৭﴾

৭৮. আমি তার নাম পরবর্তীদের স্মরণে রেখেছি।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿۷৮﴾

৭৯. সমগ্র জগতের মধ্যে নূহ (عليه السلام)-এর প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক।

سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ﴿۷৯﴾

৮০. এভাবেই আমি সংকমশীল-দেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿۸০﴾

৮১. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্যতম।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿৮১﴾

৮২. অবশিষ্ট সকলকে আমি নিমজ্জিত করেছিলাম।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿৮২﴾

৮৩. নিশ্চয়ই ইবরাহীম (عليه السلام) তার (নূহ عليه السلام এর) অনুসারীভুক্ত ছিলেন।

وَإِنَّ مِنْ شَيْعَتِهِ لِابْرَاهِيمَ ﴿٨٣﴾

৮৪. স্মরণ কর, যখন সে তার প্রতিপালকের নিকট উপস্থিত হয়েছিল বিশুদ্ধ চিত্তে।

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾

৮৫. যখন সে তার পিতা ও তার সম্প্রদায়কে জিজ্ঞেস করেছিল: তোমরা কিসের পূজা করছো?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾

৮৬. তোমরা কি আল্লাহর পরিবর্তে অলীক (বানিয়ে নেয়া) মা'বুদ-গুলোকে চাও?

أَفَبِمَا ظَنَّمَا آلِهَةٌ دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾

৮৭. বিশ্বজগতের প্রতিপালক সম্বন্ধে তোমাদের ধারণা কী?

فَمَا ظَنَّمَا بَرَّبِ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

৮৮. অতঃপর সে (ইবরাহীম عليه السلام) তারকারাজির দিকে একবার তাকালো।

فَنظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾

৮৯. অতঃপর বললো: আমি অসুস্থ।

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾

৯০. সুতরাং তারা তাকে পশ্চাতে রেখে চলে গেল।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾

৯১. পরে সে (অতি সাবধানে) তাদের দেবতাগুলোর নিকট গেল এবং বললো: তোমরা কেন আহ্বার করছো না?

فَرَأَى إِلَى آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾

৯২. তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা কথা বল না?

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾

৯৩. অতঃপর সে তাদের উপর ডান হাত দ্বারা সবলে আঘাত করতঃ বাপিয়ে পড়ল।

فَرَأَى عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾

৯৪. তখন ঐ লোকগুলো তার দিকে ছুটে আসলো।

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ﴿٩٤﴾

৯৫. সে বললোঃ তোমরা নিজেরা যাদেরকে খোদাই করে বানিয়েছ তোমরা কি তাদেরই পূজা কর?

قَالَ اتَّعْبُدُونَ مَا تَنْجِتُونَ ﴿٩٥﴾

৯৬. প্রকৃতপক্ষে আল্লাহই সৃষ্টি করেছেন তোমাদেরকে এবং তোমরা যা কর (তাও)।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿٩٦﴾

৯৭. তারা বললোঃ এর জন্যে এক ইমারত তৈরি কর, অতঃপর একে জ্বলন্ত অগ্নিতে নিক্ষেপ কর।

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾

৯৮. তারা তার (ইব্রাহীম عليه السلام - এর) বিরুদ্ধে চক্রান্তের সংকল্প করেছিল; কিন্তু আমি তাদেরকে পরাজিত করেছিলাম।

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾

৯৯. এবং সে (ইব্রাহীম عليه السلام) বললোঃ আমি আমার প্রতিপালকের দিকে চললাম, তিনি অবশ্যই আমাকে সৎপথে পরিচালিত করবেন।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾

১০০. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে সৎ সন্তান দান করুন।

رَبِّ هَبْ لِي مِن الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾

১০১. অতঃপর আমি তাকে এক সহনশীল পুত্রের সুসংবাদ দিলাম।

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾

১০২. অতঃপর সে (সন্তান) যখন তার পিতার সাথে কাজ করার মত বয়সে উপনীত হলো তখন ইব্রাহীম عليه السلام বললোঃ হে আমার বৎস! আমি স্বপ্নে দেখি যে, তোমাকে আমি যবেহ করছি, এখন তোমার অভিমত কী? সে বললোঃ হে আমার পিতা! আপনি যা আদিষ্ট হয়েছেন তাই করুন। আল্লাহ ইচ্ছা করলে আপনি আমাকে ধৈর্যশীলদের অন্তর্ভুক্ত পাবেন।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَئِي إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ قَالَ يَٰأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾

১০৩. যখন তারা উভয়ে আনুগত্য প্রকাশ করলো এবং তিনি (ইবরাহীম عليه السلام) তাকে (পুত্রকে) কাত করে শোয়ালেন,

فَلَبَّآ اَسْلَمَا وَتَلَهُ لِلْجِدِّينَ ﴿١٠٣﴾

১০৪. তখন আমি তাকে আহ্বান করে বললামঃ হে ইবরাহীম (عليه السلام)!

وَنَادَيْتُهُ اَنْ يَا بُرْهِيْمُ ﴿١٠٤﴾

১০৫. তুমি তো স্বপ্ন বাস্তবেই পালন করলে! এভাবেই আমি সৎকর্ম-শীলদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ؕ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৬. নিশ্চয়ই এটা ছিল এক স্পষ্ট পরীক্ষা।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْاَبْلٰؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾

১০৭. আমি তার (ইসমাজিলের) ফিদইয়া (পরিবর্তে) এক মহান কুরবানী (দুগ্ধ) প্রদান করলাম।

وَقَدَيْتُهُ بِذَبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

১০৮. আমি এটা (তার আদর্শ) পরবর্তীদের মধ্যে রেখেছি।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৯. ইবরাহীম (عليه السلام)-এর উপর শান্তি বর্ষিত হোক।

سَلَّمَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾

১১০. এভাবে আমি সৎকর্মশীল-দেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾

১১১. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্যতম।

اِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾

১১২. আমি তাকে সুসংবাদ দিয়েছিলাম ইসহাক (عليه السلام)-এর সে ছিল এক নবী, সৎকর্মশীলদের অন্যতম।

وَبَشَّرْنَاهُ بِاسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾

১১৩. আমি তাকে রবকত দান করেছিলাম এবং ইসহাককেও (عليه السلام) এবং উভয়ের বংশধরদের মধ্যে কতক সৎকর্মপরায়ণ এবং কতক নিজেদের প্রতি স্পষ্ট অত্যাচারী।

وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰى اِسْحٰقَ ط وَ مِنْ ذُرِّيَّتِهٰمَا مُّحْسِنٌ وَّظٰلِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُّبِيْنٌ ﴿١١٣﴾

১১৪. আমি অনুগ্রহ করেছিলাম মুসা (ﷺ) ও হারুন (ﷺ)-এর উপর।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۗ

১১৫. এবং তাদেরকে ও তাদের সম্প্রদায়কে আমি উদ্ধার করেছিলাম মহা বিপদ হতে।

وَنَجَّيْنَهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكُرْبِ الْعَظِيمِ ۗ

১১৬. আমি সাহায্য করেছিলাম তাদেরকে, ফলে তারা হয়েছিল বিজয়ী।

وَوَصَّرْنَاهُمْ فَمَا نَأُوهُمْ الْغُلَبِيْنَ ۗ

১১৭. আমি উভয়কে দিয়েছিলাম স্পষ্ট কিতাব।

وَآتَيْنَهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ۗ

১১৮. এবং উভয়কে আমি পরিচালিত করেছিলাম সরল পথে।

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۗ

১১৯. আমি তাদের উভয়ের সুখ্যাতি পরবর্তীদের স্মরণে রেখেছি।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۗ

১২০. মুসা (ﷺ) ও হারুন (ﷺ)-এর উপর শান্তি বর্ষিত হোক।

سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۗ

১২১. এভাবে আমি সৎকর্মশীল-দেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۗ

১২২. তারা দু'জনে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত।

إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۗ

১২৩. ইলিয়াসও (ﷺ) ছিল রাসূলদের একজন।

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۗ

১২৪. স্মরণ কর, যখন সে তার সম্প্রদায়কে বলেছিলঃ তোমরা কী আল্লাহকে ভয় করবে না?

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ آلَافَتَقُونَ ۗ

১২৫. তোমরা কি বা'আল দেবমূর্তিকে ডাকবে এবং পরিত্যাগ করবে সর্বোত্তম স্রষ্টাকে?

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۗ

১২৬. আল্লাহ, যিনি প্রতিপালক তোমাদের এবং প্রতিপালক তোমাদের পূর্বপুরুষদের।

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ۗ

১২৭. তখন তারা তাকে (ইলিয়াসকে) মিথ্যাবাদী বলেছিল, কাজেই তাদেরকে অবশ্যই শাস্তির জন্যে উপস্থিত করা হবে।

فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٢٧﴾

১২৮. তবে আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দাদের কথা ভিন্ন।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿١٢٨﴾

১২৯. আমি তাকে পরবর্তীদের স্মরণে রেখেছি।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾

১৩০. ইলিয়াস (ﷺ)-এর উপর শাস্তি বর্ষিত হোক।

سَلَّمَ عَلَىٰ آلِ يَأْسِينَ ﴿١٣٠﴾

১৩১. এভাবে আমি সৎকর্মশীলদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾

১৩২. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্যতম।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

১৩৩. লূতও (ﷺ) ছিল রাসূলদের একজন।

وَإِنَّ لُوطًا لِّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾

১৩৪. আমি তাকে ও তার পরিবারের সবাইকে উদ্ধার করেছিলাম।

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾

১৩৫. এক বৃদ্ধা (লূত ﷺ-এর স্ত্রী) ব্যতীত, যে ছিল পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٣٥﴾

১৩৬. অতঃপর অবশিষ্টদেরকে আমি সম্পর্করূপে ধ্বংস করেছিলাম।

ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخِرِينَ ﴿١٣٦﴾

১৩৭. তোমরা তো তাদের ধ্বংসাবশেষগুলো অতিক্রম করে থাকো সকালে।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾

১৩৮. এবং রাতে, তবুও কি তোমরা অনুধাবন করবে না?

وَبِاللَّيْلِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾

১৩৯. আর ইউনুসও (ﷺ) ছিলেন রাসূলদের একজন।

وَإِنَّ يُونُسَ لِمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾

১৪০. যখন তিনি পলায়ন করে বোঝাই নৌযানে পৌঁছিলেন।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلِّ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾

১৪১. অতঃপর সে লটারীতে যোগদান করলো এবং পরাভূত হলো।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿٣٧﴾

১৪২. পরে এক বৃহদাকার মৎস্য তাকে গিলে ফেললো, তখন তিনি নিজেকে ধিক্কার দিতে লাগলেন।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٣٨﴾

১৪৩. তিনি যদি আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা না করতেন,

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿٣٩﴾

১৪৪. তাহলে তাকে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত থাকতে হতো ওর উদরে।

لَلَيْثِ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٤٠﴾

১৪৫. অতঃপর ইউনুস (عَلَيْهِ السَّلَامُ)-কে আমি নিক্ষেপ কারলাম এক তৃণহীন প্রান্তরে এবং তিনি ছিলেন রুগ্ন।

فَبَدَّلْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿٤١﴾

১৪৬. পরে আমি তাঁর উপর একটি লতা বিশিষ্ট গাছ উৎপন্ন (লাউ গাছের মত) করলাম।

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ﴿٤٢﴾

১৪৭. তাঁকে আমি লক্ষ বা ততোধিক লোকের প্রতি প্রেরণ করেছিলাম।

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿٤٣﴾

১৪৮. এবং তারা ঈমান এনেছিল; ফলে আমি তাদেরকে কিছু কালের জন্যে জীবনোপভোগ করতে দিলাম।

فَأَمَنُوا فَمِتَّعْنَاهُمُ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

১৪৯. এখন তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ তোমার প্রতিপালকের জন্যেই কি রয়েছে কন্যা সন্তান এবং তাদের জন্যে পুত্র সন্তান?

فَأَسْتَفْتِيهِمُ الرِّبَّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبُيُوتُ ﴿٤٥﴾

১৫০. অথবা আমি কি ফেরেশতাদেরকে নারীরূপে সৃষ্টি করেছি আর তারা প্রত্যক্ষ করছিল?

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿٤٦﴾

১৫১. সাবধান! তারা তো মনগড়া কথা বলে (যে,

أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ أَفْكَهٍ لِّيقُولُونَ ﴿٤٧﴾

১৫২. আল্লাহ, সন্তান জন্ম দিয়েছেন। তারা নিশ্চয়ই মিথ্যাবাদী।

وَكَلَّمَ اللَّهُ لَوْلَا وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٨﴾

১৫৩. তিনি কি পুত্র সন্তানের উপরে কন্য সন্তান পছন্দ করতেন?

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ط (১৫৩)

১৫৪. তোমাদের কী হয়েছে, তোমরা কিরূপ বিচার কর?

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾

১৫৫. তবে কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

১৫৬. তোমাদের কি সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণ আছে?

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾

১৫৭. তোমরা সত্যবাদী হলে তোমাদের কিতাব উপস্থিত কর।

فَأْتُوا بِكِتٰبِكُمْ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٥٧﴾

১৫৮. তারা আল্লাহ ও জ্বিন জাতির মধ্যে আত্মীয়তার সম্পর্কে স্থির করেছে, অথচ জ্বিনেরা জানে যে, তাদেরকেও উপস্থিত করা হবে।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسْبًا ط وَلَقَدْ عَلِمْتِ

الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضِرُونَ ﴿١٥٨﴾

১৫৯. তারা যা বলে তা হতে আল্লাহ পবিত্র, মহান।

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٥٩﴾

১৬০. আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দারা ব্যতীত।

إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿١٦٠﴾

১৬১. তোমরা এবং তোমরা যাদের ইবাদত কর তারা—

فِرَاقِكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾

১৬২. তোমরা কেউই আল্লাহ সম্বন্ধে বিভ্রান্ত করতে পারবে না।

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنِينَ ﴿١٦٢﴾

১৬৩. শুধু জাহান্নামে প্রবেশকারীকে ব্যতীত।

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾

১৬৪. আমাদের (ফেরেশতাদের) প্রত্যেকের জন্যেই নির্ধারিত স্থান রয়েছে,

وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقٰمٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾

১৬৫. আমরা তো সারিবদ্ধভাবে দণ্ডয়মান।

وَأِنَّا لَنَحْنُ الصّٰفِقُونَ ﴿١٦٥﴾

১৬৬. এবং আমরা অবশ্যই তাঁর পবিত্রতা ঘোষণাকারী।

وَأِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾

১৬৭. তারাই (কাফিরগণ) তো বলে এসেছে,

وَأَنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾

১৬৮. পূর্ববর্তীদের কিতাবের মত যদি আমাদের কোন কিতাব থাকতো,

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾

১৬৯. তবে অবশ্যই আমরা আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দা হতাম।

لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمَخْلُصِينَ ﴿١٦٩﴾

১৭০. কিন্তু তারা তা (কুরআন) প্রত্যাখ্যান করলো এবং শীঘ্রই তারা জানতে পারবে।

فَكَفَرُوا بِهَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

১৭১. আমার প্রেরিত বান্দাদের সম্পর্কে আমার এই বাক্য পূর্বেই স্থির হয়েছে (যে),

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾

১৭২. অবশ্যই তারা সাহায্যপ্রাপ্ত হবে,

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٢﴾

১৭৩. এবং নিশ্চয়ই আমার বাহিনী হবে বিজয়ী।

وَأَنَّ جُنُودَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾

১৭৪. অতএব, কিছুকালের জন্যে তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾

১৭৫. তুমি তাদেরকে পর্যবেক্ষণ কর, শীঘ্রই তারা প্রত্যক্ষ করবে।

وَأَبْصُرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾

১৭৬. তারা কি আমার শাস্তির ব্যাপারে তাড়াহুড়া করছে?

أَفِعْدَابًا إِنَّآ يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾

১৭৭. তাদের আঙিনায় যখন শাস্তি নেমে আসবে তখন সতর্কীকৃতদের প্রভাত হবে খুবই মন্দ!

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٧﴾

১৭৮. অতএব কিছুকালের জন্যে তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾

১৭৯. তুমি (তাদেরকে) পর্যবেক্ষণ কর, শীঘ্রই তারা প্রত্যক্ষ করবে।

وَأَبْصُرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾

১৮০. তারা যা আরোপ করে তা হতে পবিত্র ও মহান তোমার প্রতিপালক, যিনি সকল ইয্যত-ক্ষমতার অধিকারী।

১৮১. আর শান্তি বর্ষিত হোক রাসূলদের উপর।

১৮২. যাবতীয় প্রশংসা জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহরই প্রাপ্য।

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٣٨﴾

وَسَلَّمَ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٩﴾

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٠﴾

সূরাঃ সোয়া-দ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮৮, রুকু'ঃ ৫)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ ص مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا ٨٨ رُكُوعًا ٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. সোয়া-দ, শপথ উপদেশপূর্ণ কুরআনের!

২. কিন্তু কাফিররা ঔদ্ধত্য (অহংকার) ও বিরোধিতায় (ডুবে আছে।)

৩. এদের পূর্বে আমি কত জনগোষ্ঠী ধ্বংস করেছি; তখন তারা আর্তচিৎকার করেছিল; কিন্তু তখন পরিত্রাণের কোনই উপায় ছিল না।

৪. তারা আশ্চর্যবোধ করছে যে, তাদের নিকট তাদেরই মধ্য হতে একজন সতর্ককারী আসলো এবং কাফিররা বলেঃ এতো এক যাদুকর, মিথ্যাবাদী।

৫. সে কি বহু মা'বুদের (পরিবর্তে) এক মা'বুদ বানিয়ে নিয়েছে? এতো এক আশ্চর্য ব্যাপার!

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ﴿٢﴾

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوا وَلا تِلْكَ جِبِينَ مَنَايِصٍ ﴿٣﴾

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَكَانَ الْكُفْرُونَ هَذَا سِحْرًا كَذَّابًا ﴿٤﴾

أَجْعَلِ الْاِلَهَةَ الْهَاءَ وَاحِدًا ۗ اِنَّ هَذَا الشَّيْءُ عَجَابٌ ﴿٥﴾

৬. তাদের প্রধানরা সরে পড়ে এই বলেঃ তোমরা চলে যাও এবং তোমাদের দেবতাগুলোর পূজায় তোমরা অবিচলিত থাকো। নিশ্চয়ই এই ব্যাপারটি উদ্দেশ্যমূলক।

وَأَنطَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۖ
إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۙ

৭. আমরা তো পূর্বের ধর্মে এরূপ কথা শুনিনি; এটা এক মনগড়া উক্তি মাত্র।

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ ۗ إِنْ هَذَا إِلَّا آخْتِلَاقٌ ۙ

৮. আমাদের মধ্য হতে কি তারই উপর কুরআন অবতীর্ণ হলো? প্রকৃতপক্ষে তারা তো আমার কুরআনে সন্দিহান, তারা এখনো আমার শান্তি আশ্বাদন করেনি।

ءَأَنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ
مِّنْ ذِكْرِي ۚ بَلْ لَمَّا يَدُوُّو قَوْمًا ءَعْدَابُ ۙ

৯. তাদের নিকট কি আছে তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহের ভান্ডার, যিনি পরাক্রমশালী, মহান দাতা?

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنٌ رَّحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۙ

১০. তাদের কি সার্বভৌমত্ব আছে, আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের অন্তর্বর্তী সবকিছুর উপর? থাকলে তারা সিঁড়ি বেয়ে আরোহণ করুক (আকাশের উপর)!

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ
فَلْيَدْرِكُوا فِي الْأَسْبَابِ ۙ

১১. বহু দলের এই বাহিনীও সেক্ষেত্রে অবশ্যই পরাজিত হবে।

جُذِّمًا ۗ هٰذَا لِكَ مَهْزُومٍ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۙ

১২. তাদের পূর্বেও রাসূলদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছিল নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়, আদ ও বহু পেরাগ ওয়ালা ফিরাউন।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۙ

১৩. আর সামূদ, লূত-সম্প্রদায় ও আইকার অধিবাসী; তারা ছিল এক একটা বিশাল বাহিনী।

وَسُودٌ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ ۗ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۙ

১৪. তাদের প্রত্যেকেই রাসূলদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছে। ফলে, তাদের ক্ষেত্রে আমার শান্তি হয়েছে সুসাব্যস্ত।

إِنَّ كُلَّ الْإِلَٰهِ كَذَّبَ الرَّسُلَ فَحَقَّ عِقَابُ ۙ

১৫. তারা তো অপেক্ষা করছে একটি মাত্র প্রচণ্ড শব্দের, যাতে কোন বিরাম থাকবে না।

১৬. তারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! বিচার দিবসের পূর্বেই আমাদের প্রাপ্য আমাদেরকে শীঘ্র দিয়ে দাও না!

১৭. তারা যা বলে তাতে তুমি ধৈর্যধারণ কর, আর স্মরণ কর, আমার শক্তিশালী বান্দা দাউদ (عليه السلام)-এর কথা; তিনি ছিলেন অতিশয় আল্লাহ অভিমুখী।

১৮. আমি পর্বতমালাকে তার বশীভূত করেছিলাম, এগুলো সকাল-সন্ধ্যায় তার সাথে আমার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতো।

১৯. এবং সমবেত পাখিসমূহকেও; সবাই ছিল তার দিকে প্রত্যাবর্তনকারী।

২০. আমি তার রাজ্যকে সুদৃঢ় করেছিলাম এবং তাকে দিয়েছিলাম প্রজ্ঞা ও ফায়সালাকারী বাচনভঙ্গী।

২১. তোমার নিকট বিবাদকারী লোকদের বৃত্তান্ত পৌছেছে কি? যখন তারা প্রাচীর ডিঙিয়ে আসলো ইবাদতখানায়,

২২. যখন তারা দাউদ (عليه السلام)-এর নিকট পৌছলো, তখন তাদের কারণে সে ভীত হয়ে পড়লো। তারা বললোঃ ভীত হবেন না, আমরা দুই বিবাদকারী পক্ষ— আমরা একে অপরের উপর বাড়াবাড়ি করেছি; অতএব আমাদের মধ্যে ন্যায়বিচার করুন; অবিচার করবেন না এবং

وَمَا يَنْظُرُ هُوَ إِلَّا الصَّيْحَةَ وَاجِدَةً مَا لَهَا
مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِسْمَ
يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾

إِصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَادْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ
ذَا الْأَيْدِ ۗ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحُنَ بِالْعَشِيِّ
وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَهُ الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

وَهَلْ أُنْتَبِهُ الْخَصِمُ إِذْ تَسَوَّرُوا الْحُرَابَ ﴿٢١﴾

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ خَصِمِينَ
بَغْيَ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ
وَلَا تَتَّبِعُوا الْوَهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

আমাদেরকে সঠিক পথনির্দেশ করুন।

২৩. এ হচ্ছে আমার ভাই, এর কাছে নিরানব্বইটি দুম্বা এবং আমার কাছে মাত্র একটি দুম্বা; তবুও সে বলেঃ আমার যিম্মায় এটিও দিয়ে দাও; এবং কথায় সে আমার প্রতি কঠোরতা প্রদর্শন করেছে।

২৪. (দাউদ عليه السلام) বললেনঃ তোমার দুম্বাটিকে তার দুম্বাগুলোর সাথে যুক্ত করার দাবী করে সে তোমার প্রতি যুলুম করেছে। শরীকদের অনেকে একে অন্যের উপর অবিচার করে থাকে, করে না শুধু মু'মিন ও সৎকর্মশীল ব্যক্তির। এবং তারা সংখ্যায় স্বল্প। দাউদ (عليه السلام) বুঝতে পারলেন যে, আমি তাকে পরীক্ষা করলাম। অতঃপর তিনি তাঁর প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করলেন এবং নত হয়ে লুটিয়ে পড়লেন ও তাঁর অভিমুখী হলেন।

২৫. অতঃপর আমি তাঁর ত্রুটি ক্ষমা করলাম। আমার নিকট তাঁর জন্যে রয়েছে উচ্চ মর্যাদা ও শুভ পরিণাম।

২৬. হে দাউদ (عليه السلام)! আমি তোমাকে পৃথিবীতে প্রতিনিধি করেছি, অতএব তুমি লোকদের মধ্যে সুবিচার কর এবং প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না, কেননা এটা তোমাকে আল্লাহর পথ হতে বিচ্যুত করবে। যারা আল্লাহর পথ পরিত্যাগ করে তাদের জন্যে রয়েছে কঠিন শাস্তি, কারণ তারা বিচার দিবসকে ভুলে রয়েছে।

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِي نَعْجَةٌ
وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَى نِعَاجِهِ
وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخَاطِئِ لَيَبْقَىٰ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ
دَاوُدُ أَنبَأَ قَتْلَهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ﴿٢٤﴾

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَأَنَّ لَهُ عِنْدَنَا كَرْوَىٰ
وَحَسَنَ مَّآبٍ ﴿٢٥﴾

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّ الَّذِينَ يَصِلُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾

২৭. আমি আকাশ ও পৃথিবী এবং এতোদূরভয়ের মধ্যস্থিত কোন কিছুই অনর্থক সৃষ্টি করিনি, যদিও কাফিরদের ধারণা তা-ই, সুতরাং কাফিরদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের দুর্ভোগ।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بِإِلَاطٍ
ذَلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾

২৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে এবং যারা পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করে বেড়ায়, আমি কি তাদেরকে সমগণ্য করবো? আমি কি মুত্তাকীদেরকে অপরাধীদের সমান গণ্য করবো?

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ
فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾

২৯. এ এক কল্যাণময় কিতাব, এটা আমি তোমার উপর অবতীর্ণ করেছি, যাতে মানুষ এর আয়াতসমূহ অনুধাবন করে এবং বোধশক্তি সম্পন্ন ব্যক্তির উপদেশ গ্রহণ করে।

كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو
الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

৩০. আমি দাউদ (عليه السلام)-কে দান করলাম সুলাইমান (عليه السلام)! তিনি ছিলেন উত্তম বান্দা এবং তিনি ছিলেন অতিশয় আল্লাহ অভিমুখী।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾

৩১. যখন অপরাহে তাঁর সামনে দ্রুতগামী উৎকৃষ্টমানের অশ্বরাজিকে উপস্থিত করা হলো,

إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفُفَتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾

৩২. তখন তিনি বললেনঃ আমি তো আমার প্রতিপালকের স্মরণ হতে বিমুখ হয়ে ঐশ্বর্য প্রীতিতে মগ্ন হয়ে পড়েছি, এদিকে (সূর্য) অস্তমিত হয়ে গেছে।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۗ حَتَّى
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

৩৩. এগুলোকে পুনরায় আমার সামনে আনয়ন কর। অতঃপর তিনি ওগুলোর পদ ও গলদেশ ছেদন করতে লাগলেন।

رُدُّوهَا عَلَيَّ طَفْفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

৩৪. আমি সুলাইমান (عليه السلام)-কে পরীক্ষা করলাম এবং তার আসনের উপর রাখলাম একটি দেহ; অতঃপর তিনি (আমার) অভিমুখী হলেন।

৩৫. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে ক্ষমা করুন! এবং আমাকে দান করুন এমন এক রাজ্য যার অধিকারী আমি ছাড়া আর কেউ না হয়। আপনি তো পরম দাতা।

৩৬. তখন আমি তাঁর অধীন করে দিলাম বায়ুকে, যা তার আদেশে, সে যেখানে ইচ্ছা করতো সেখানে মুদুমন্দ গতিতে প্রবাহিত হতো।

৩৭. এবং শয়তানদেরকে, যারা সবাই ছিল প্রাসাদ নির্মাণকারী ও ডুবুরী।

৩৮. এবং শৃঙ্খলে আবদ্ধ আরো অনেককে।

৩৯. এসব আমার অনুগ্রহ, এটা হতে তুমি অন্যকে দিতে অথবা নিজে রাখতে পার। এর জন্যে তোমাকে হিসাব দিতে হবে না।

৪০. এবং আমার নিকট রয়েছে তার জন্যে উচ্চ মর্যাদা ও শুভ পরিণাম।

৪১. স্মরণ কর আমার বান্দা আইয়ুব (عليه السلام)-কে যখন তিনি তার প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলেনঃ শয়তান তো আমাকে যন্ত্রণা ও কষ্টে ফেলেছে।

৪২. (আমি তাকে বললামঃ) তুমি তোমার পা দ্বারা ভূমিতে আঘাত কর, এই তো গোসলের সুশীতল পানি ও পানীয়।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَالْقَيْنَةَ عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿٣٤﴾

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِإِخْوَتِي مِنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٦﴾

وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَعَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾

وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٠﴾

وَإِذْ ذُرُّوهُنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ إِنَِّّي مُسَوِّئٌ الشَّيْطَانُ بَدَّ بِي وَعَدَّآبٍ ﴿٤١﴾

أُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

৪৩. আমি তাকে দিলাম তার পরিজনবর্গ ও তাদের মত আরো তাদের সাথে, আমার অনুগ্রহ স্বরূপ ও বোধশক্তি সম্পন্ন লোকদের জন্যে উপদেশ স্বরূপ।

৪৪. (আমি তাকে আদেশ করলামঃ) এক মুষ্টি ভূণ লও এবং তা দ্বারা আঘাত কর ও শপথ ভঙ্গ করো না। আমি তাকে পেলাম ধৈর্যশীল। কত উত্তম বান্দা সে! সে ছিল (আমার) অভিমুখী।

৪৫. স্মরণ কর, আমার বান্দা ইবরাহীম (عليه السلام), ইসহাক (عليه السلام) ও ইয়াকুব (عليه السلام)-এর কথা, তাঁরা ছিলেন শক্তিশালী ও সূক্ষ্মদর্শী।

৪৬. আমি তাঁদেরকে অধিকারী করেছিলাম এক বিশেষ গুণের- ওটা ছিল পরকালের স্মরণ।

৪৭. অবশ্যই তাঁরা ছিলেন আমার মনোনীত ও উত্তম বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত।

৪৮. স্মরণ কর ইসমাইল (عليه السلام), আল-ইয়াসা'আ (عليه السلام) ও যুলকিফলের (عليه السلام) কথা, তাঁরা প্রত্যেকেই ছিলেন উত্তম।

৪৯. এটা এক স্মরণীয় বর্ণনা। মুত্তাকীদের জন্যে রয়েছে উত্তম আবাস।

৫০. চিরস্থায়ী জান্নাত, তাদের জন্যে উন্মুক্ত যার দ্বার।

৫১. সেথায় তারা আসীন হবে হেলান দিয়ে, সেথায় তারা বহুবিধ ফলমূল ও পানীয়ের জন্যে আদেশ দিবে।

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا
وَذِكْرَى لَأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٣٧﴾

وَحَذِّبْنَاكَ ضَعْفًا فَاصْرَبْ بِهِ وَلَا تَحْنُطْ إِنَّا
وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٨﴾

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَأِسْحَقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي
وَالْأَبْصَارِ ﴿٣٩﴾

إِنَّا أَخَصَيْنَهُمْ بِخَالِصَةِ ذِكْرِي الدَّارِ ﴿٤٠﴾

وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤١﴾

وَأَذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ
وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٢﴾

هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَّآبٍ ﴿٤٣﴾

جَنَّاتٍ عَدْنٍ مَّفْتَحَةٌ لَهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٤٤﴾

مُتَّكِنِينَ فِيهَا يُدْعَوْنَ فِيهَا بِقَالَهَا
كَثِيرًا وَسَرَابٍ ﴿٤٥﴾

৫২. আর তাদের পার্শ্বে থাকবে
আনত নয়না সমবয়স্কা তরুণীগণ।

৫৩. এটাই হিসাব দিবসের জন্যে
তোমাদেরকে দেয়া প্রতিশ্রুতি।

৫৪. এটাই আমার দেয়া রিযিক যা
নিঃশেষ হবে না।

৫৫. এটাই (মুত্তাকীদের পরিণাম),
আর সীমালঙ্ঘনকারীদের জন্যে
রয়েছে নিকৃষ্টতম পরিণাম—

৫৬. জাহান্নাম, সেথায় তারা প্রবেশ
করবে, কত নিকৃষ্ট বিশ্রামস্থল!

৫৭. এটা তো তা (সীমালঙ্ঘন-
কারীদের জন্যে), সুতরাং তারা
আস্বাদন করুক ফুটন্ত পানি ও পুঁজ।

৫৮. আরো আছে এরূপ বিভিন্ন
ধরনের শাস্তি।

৫৯. এ তো এক বাহিনী, তোমাদের
সাথে (জাহান্নামে) প্রবেশকারী।
তাদের জন্যে নেই অভিনন্দন, তারা
তো জাহান্নামে জ্বলবে।

৬০. অনুসারীরা বলবেঃ বরং
তোমরাও, তোমাদের জন্যেও তো
অভিনন্দন নেই। তোমরাই তো পূর্বে
ওটা আমাদের জন্যে ব্যবস্থা
করেছো। কত নিকৃষ্ট এই আবাস-
স্থল!

৬১. তারা বলবেঃ হে আমাদের
প্রতিপালক! যে এটা আমাদের জন্যে
পেশ করেছে জাহান্নামে তার শাস্তি
আপনি দ্বিগুণ বর্ধিত করুন!

৬২. তারা আরো বলবেঃ আমাদের
কি হলো যে, আমরা যেসব লোককে
মন্দ বলে গণ্য করতাম। তাদেরকে
দেখতে পাচ্ছি না?

وَعِنْدَهُمْ قُصْرَاتُ الظُّرُفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾

إِنَّ هَذَا لِرِزْقِنَا مَا لَهُ مِنْ نَفَادٍ ﴿٥٤﴾

هَذَا وَإِنَّ لِلطَّغْيِينِ لَشَرَّ مَا بٍ ﴿٥٥﴾

جَهَنَّمَ يَصَلُّونَهَا فَمِنَسَ إِلَيْهَا ﴿٥٦﴾

هَذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَيِّمٌ وَعَسَاقٌ ﴿٥٧﴾

وَأُخْرَى مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾

هَذَا فَوْجٌ مُقْتَحِمٌ مَعَكُمْ لَا مَرْجَأَ لَهُمْ ﴿٥٩﴾

إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٦٠﴾

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ عَدَا مَرْجَبًا بِكُمْ أَنْتُمْ قَدْ مَتَّوْهُ لَنَا ﴿٦١﴾

فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٢﴾

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا ﴿٦٣﴾

فِي النَّارِ ﴿٦٤﴾

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ ﴿٦٥﴾

مِّنَ الْأَشْرَادِ ﴿٦٦﴾

৬৩. তবে কি আমরা তাদেরকে অহেতুক ঠাট্টা-বিদ্রোপের পাত্র মনে করতাম, না তাদের ব্যাপারে আমাদের দৃষ্টি বিলম্ব ঘটেছে?

أَتَّخَذْنَا لَهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

৬৪. এটা নিশ্চিত সত্য, জাহান্নামী-দের এই বাদ-প্রতিবাদ।

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

৬৫. বলঃ আমি তো একজন সতর্ককারী মাত্র এবং আল্লাহ্ ছাড়া (সত্য) কোন মা'বুদ নেই, যিনি এক, পরাক্রমশালী।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾

৬৬. যিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী এবং এগুলোর মধ্যস্থিত সবকিছুর প্রতিপালক, যিনি পরাক্রমশালী, মহাক্রমশালী।

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

৬৭. বলঃ এটা এক মহা সংবাদ,

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾

৬৮. যা হতে তোমরা মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছ।

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾

৬৯. উচ্চ মর্যাদা সম্পন্ন ফেরেশতাদের সম্পর্কে আমার কোন জ্ঞান ছিল না যখন তারা বাদানুবাদ করছিলেন।

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَائِكَةِ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾

৭০. আমার নিকট তো এই ওহী এসেছে যে, আমি একজন স্পষ্ট সতর্ককারী।

إِنْ يُوْحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنْبَاءٌ أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٠﴾

৭১. (স্মরণ কর,) যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশতাদেরকে বলে-ছিলেনঃ আমি মানুষ সৃষ্টি করছি মাটি হতে,

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ طِينٍ ﴿٧١﴾

৭২. যখন আমি ওকে সুষম করবো এবং ওতে আমার রূহ সঞ্চার করবো, তখন তোমরা ওর প্রতি সিজদাবনত হয়ো।

فَإِذَا سَوَّيْتَهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا

لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٧٢﴾

৭৩. তখন ফেরেশ্তারা সবাই
সিজদাবনত হলেন—

৭৪. শুধু ইবলীস ব্যতীত, সে
অহংকার করলো এবং কাফিরদের
অন্তর্ভুক্ত হলো।

৭৫. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ হে
ইবলীস। আমি যাকে নিজ হাতে সৃষ্টি
করেছি, তার প্রতি সিজদাবনত হতে
তোমাকে কিসে বাধা দিলো? তুমি কি
ঔদ্ধত্য প্রকাশ করলে, না তুমি উচ্চ
মার্যাদা সম্পন্ন?

৭৬. সে বললোঃ আমি তার চেয়ে
শ্রেষ্ঠ। আপনি আমাকে আশুন হতে
সৃষ্টি করেছেন এবং তাকে সৃষ্টি
করেছেন মাটি হতে।

৭৭. তিনি বললেনঃ তুমি এখান হতে
বের হয়ে যাও, নিশ্চয়ই তুমি
বিতাড়িত।

৭৮. এবং তোমার উপর আমার
লা'নত স্থায়ী হবে প্রতিদান দিবস
পর্যন্ত।

৭৯. সে বললোঃ হে আমার
প্রতিপালক! আপনি আমাকে অবকাশ
দিন পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত।

৮০. তিনি বললেনঃ তুমি অবকাশ-
প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হলে—

৮১. অবধারিত সময় উপস্থিত
হওয়ার দিন পর্যন্ত।

৮২. সে বললোঃ আপনার ইয্যতের
শপথ! আমি তাদের সবাইকে পথভ্রষ্ট
করবো,

৮৩. তবে তাদের মধ্যে আপনার
একনিষ্ঠ বান্দাদেরকে নয়।

৮৪. তিনি বললেনঃ তবে এটাই
সত্য, আর আমি সত্যই বলি—

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾

إِلَّا إِبْلِيسَ طَسْتَكْبَرُ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِينَ ﴿٧٤﴾

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ

بِيَدَيَّ طَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ﴿٧٥﴾

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ طَخَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ

مِنْ طِينٍ ﴿٧٦﴾

قَالَ فَأَخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٧٧﴾

وَأَنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٧٨﴾

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٨٠﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقْوَلُ ﴿٨٤﴾

৮৫. তোমার দ্বারা ও তোমার সমস্ত অনুসারীদের দ্বারা আমি জাহান্নাম পূর্ণ করবই।

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْعِلِينَ ﴿٥٧﴾

৮৬. বলঃ আমি এর জন্যে তোমাদের নিকট কোন প্রতিদান চাই না এবং আমি বানোয়াটদের অন্তর্ভুক্ত নই।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٥٨﴾

৮৭. এটা তো বিশ্বজগতের জন্যে উপদেশ মাত্র।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٩﴾

৮৮. এর সংবাদ তোমরা অবশ্যই জানবে, কিছু দিন পরে।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿٦٠﴾

সূরাঃ যুমার, মাক্কী

(আয়াতঃ ৭৫, রুকু'ঃ ৮)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٧٥ رُكُوعَاتُهَا ٨

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. এই কিতাব অবতীর্ণ পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাপূর্ণ আল্লাহর নিকট হতে।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾

২. আমি তোমার নিকট এই কিতাব সত্যতা সহকারে অবতীর্ণ করেছি; সুতরাং তুমি আল্লাহর ইবাদত কর তাঁর আনুগত্যে বিশুদ্ধ চিত্ত হয়ে।

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿٢﴾

৩. জেনে রেখো, অবিমিশ্র আনুগত্য আল্লাহরই প্রাপ্য। যারা আল্লাহর পরিবর্তে অন্যকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে, (তারা বলেঃ) আমরা তো এদের পূজা এজন্যেই করি যে, এরা আমাদেরকে আল্লাহর সান্নিধ্যে এনে দিবে। তারা যে বিষয়ে নিজেদের মধ্যে মতভেদ করছে আল্লাহ তার ফায়সালা করে দিবেন। যে মিথ্যাবাদী ও কাফির, আল্লাহ তাকে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

أَلَّا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَى ط
إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ؕ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾

৪. আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করতে ইচ্ছা করলে তিনি তাঁর সৃষ্টির মধ্যে যাকে ইচ্ছা মনোনীত করতে পারতেন। পবিত্র ও মহান তিনি! তিনি আল্লাহ, এক, প্রবল পরাক্রমশালী।

৫. তিনি যথাযথভাবে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন। তিনি রাত্রি দ্বারা দিবসকে আচ্ছাদিত করেন এবং রাত্রিকে আচ্ছাদিত করেন দিবস দ্বারা। সূর্য ও চন্দ্রকে তিনি করেছেন নিয়মাধীন প্রত্যেকেই পরিভ্রমণ করে এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত। জেনে রেখো, তিনি পরাক্রমশালী, ক্ষমাশীল।

৬. তিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন একই ব্যক্তি হতে। অতঃপর তিনি তা হতে তার সঙ্গিনী সৃষ্টি করেছেন। তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন আট প্রকার চতুঃপদ জন্তু। তিনি তোমাদেরকে তোমাদের মাতৃগর্ভের ত্রিবিধ অঙ্ককারে পর্যায়ক্রমে সৃষ্টি করেছেন। তিনিই আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক, সার্বভৌমত্ব তাঁরই, তিনি ছাড়া কোন (সত্য) মা'বুদ নেই। অতএব তোমরা মুখ ফিরিয়ে কোথায় চলেছো?

৭. তোমরা অকৃতজ্ঞ হলে আল্লাহ, তোমাদের মুখাপেক্ষী নন, তিনি তাঁর বান্দাদের অকৃতজ্ঞতা পছন্দ করেন না। যদি তোমরা কৃতজ্ঞ হও তবে তিনি তোমাদের জন্যে এটাই পছন্দ করেন। একের ভার অন্যে বহন করবে না। অতঃপর তোমাদের প্রতিপালকের নিকট তোমাদের প্রত্যাবর্তন এবং তোমরা যা করতে তিনি তোমাদেরকে তা অবগত

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ
مَا يَشَاءُ ۗ لَسُبْحٰنَهُ ۗهُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٧﴾

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى
النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ط كَلَّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ط
أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٨﴾

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا
وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ ثَمَنِيَّةَ أَزْوَاجٍ ط يَخْلُقُكُمْ
فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي
طَلْمِثٍ ثَلَاثٍ ط ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ط لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ ۗ فَآلِي تُصْرَفُونَ ﴿٩﴾

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضَىٰ
لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۗ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ط وَلَا تَزِرُ
وِزْرَةَ وِزْرٍ أُخْرَىٰ ط ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ
فِيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ط إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿١٠﴾

করাবেন। অন্তরে যা আছে তা তিনি সম্যক অবগত।

৮. মানুষকে যখন দুঃখ-দৈন্য স্পর্শ করে তখন সে একনিষ্ঠভাবে তার প্রতিপালককে ডাকে। পরে যখন (তিনি) তার প্রতি তাঁর পক্ষ হতে অনুগ্রহ করেন তখন সে ভুলে যায় তার পূর্বে যার জন্যে সে ডেকেছিল তাঁকে এবং সে আল্লাহর সমকক্ষ দাঁড় করায়, অপরকে তাঁর পথ হতে বিভ্রান্ত করবার জন্যে। বলঃ কুফরীর (জীবন) অবস্থায় তুমি কিছুকাল উপভোগ করে নাও। বস্তুত তুমি জাহান্নামীদের অন্যতম।

৯. যে ব্যক্তি রাত্রিকালে সিজদাবনত হয়ে ও দাঁড়িয়ে আনুগত্য প্রকাশ করে, আখিরাতকে ভয় করে এবং তার প্রতিপালকের রহমত প্রত্যাশা করে, (সে কি তার সমান যে তা করে না?) বলঃ যারা জানে এবং যারা জানে না তারা কি সমান? বোধশক্তি সম্পন্ন লোকেরাই শুধু উপদেশ গ্রহণ করে।

১০. বলঃ হে আমার মু'মিন বান্দারা! তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর। যারা এই দুনিয়াতে কল্যাণকর কাজ করে তাদের জন্যে আছে কল্যাণ। আর প্রশস্ত আল্লাহর পৃথিবী, ধৈর্যশীলদেরকে অপরিমিত প্রতিদান দেয়া হবে।

১১. বলঃ আমি আদিষ্ট হয়েছি, আল্লাহর আনুগত্য একনিষ্ঠ হয়ে তাঁর ইবাদত করতে।

১২. আর আদিষ্ট হয়েছি, আমি যেন আত্মসমর্পণকারীদের অগ্রণী হই।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا
إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ
يَدْعُوَ إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ
عَنْ سَبِيلِهِ ط قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۗ إِنَّكَ
مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝

أَمَّنْ هُوَ قَانِئٌ أَنَّهُ الْبَلِ السَّاجِدُ وَقَائِمًا
يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا رَحْمَةَ رَبِّهِ ط قُلْ هَلْ
يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ط
إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

قُلْ يُعْبَادُ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمُ ط الَّذِينَ
أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ط وَأَرْضُ اللَّهِ
وَاسِعَةٌ ط إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّادِرُونَ أَجْرَهُمْ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا
لَّهُ الدِّينَ ۝

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۝

১৩. বলঃ আমি যদি আমার প্রতিপালকের অবাধ্য হই তবে আমি ভয় করি মহা দিবসের শাস্তির।

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٣﴾

১৪. বলঃ আমি ইবাদত করি আল্লাহরই তাঁর প্রতি আমার আনুগত্যকে একনিষ্ঠ রেখে।

قُلْ اللَّهُ أَعْبَدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ﴿٣٤﴾

১৫. অতএব তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যার ইচ্ছা তার ইবাদত কর। বলঃ কিয়ামতের দিন ক্ষতিগ্রস্ত তারাই যারা নিজেদের ও নিজেদের পরিবারবর্গের ক্ষতিসাধন করে। জেনে রেখো, এটাই সুস্পষ্ট ক্ষতি।

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾

১৬. তাদের জন্যে থাকবে তাদের উর্ধ্ব দিকে অগ্নির আচ্ছাদন এবং তাদের নিম্ন দিকেও আচ্ছাদন। এতদ্বারা আল্লাহ তাঁর বান্দাদেরকে সতর্ক করেন। হে আমার বান্দারা। তোমরা আমাকে ভয় কর।

لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۗ ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهَ بِهِ عِبَادَهُ يُعْبَادُ فَاتَّقُونِ ﴿٣٦﴾

১৭. যারা তাগূতের পূজা থেকে দূরে থাকে এবং আল্লাহর অভিমুখী হয় তাদের জন্যে আছে সুসংবাদ। অতএব সুসংবাদ দাও আমার বান্দাদেরকে।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَى ۗ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿٣٧﴾

১৮. যারা মনোযোগ সহকারে কথা শুনে এবং ওর মধ্যে যা উত্তম তা গ্রহণ করে। তাদেরকে আল্লাহ সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তারাই বোধশক্তি সম্পন্ন।

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٣٨﴾

১৯. যার উপর দন্ডদেশ অবধারিত হয়েছে, তুমি কি রক্ষা করতে পারবে সেই ব্যক্তিকে, যে জাহান্নামে আছে?

أَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كِتَابُ الْعَذَابِ ۗ أَفَأَنْتَ تُنقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿٣٩﴾

২০. তবে যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে, তাদের জন্যে

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ عُرفٌ مِّنْ فَوْقِهَا

আছে বহু প্রাসাদ যার উপর নির্মিত আছে আরও প্রাসাদ, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন; আল্লাহ প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করেন না।

২১. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহ আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন, অতপর ভূমিতে নির্ঝররূপে প্রবাহিত করেন এবং তার দ্বারা বিবিধ বর্ণের ফসল উৎপন্ন করেন, অতঃপর এটা শুকিয়ে যায় এবং তোমরা এটা পীত বর্ণ দেখতে পাও, অবশেষে তিনি ওটা খড়কুটায় পরিণত করেন? এতে অবশ্যই উপদেশ রয়েছে বোধশক্তি সম্পন্নদের জন্যে।

২২. আল্লাহ ইসলামের জন্যে যার বক্ষ উন্মুক্ত করে দিয়েছেন এবং সে তার প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক আলোতে আছে, (সে কি তার সমান যে এরূপ নয়?) দুর্ভোগ তাদের জন্যে, যাদের অন্তর আল্লাহর স্মরণের ব্যাপারে কঠোর তারা স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

২৩. আল্লাহ অবতীর্ণ করেছেন সর্বোত্তম বাণী সম্বলিত কিতাব যা সামঞ্জস্যপূর্ণ এবং যা পুনঃ পুনঃ আবৃত্তি করা হয়। এতে যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে তাদের গাত্র (শিহরীত) হয়, অতঃপর তাদের দেহ-মন প্রশান্ত হয়ে আল্লাহর স্মরণে ঝুঁকি পড়ে; এটাই আল্লাহর পথ-নির্দেশ, তিনি যাকে ইচ্ছা ওটা দ্বারা পথ-প্রদর্শন করেন। আল্লাহ যাকে বিভ্রান্ত করেন তার কোন পথ-প্রদর্শক নেই।

عُرْفٌ مَّبْنِيَّةٌ لَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَعَدَّ اللَّهُ ط لَا يَخْلِفُ اللَّهُ الْبِعَادَ ⑥

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ
يَنَابِيعٌ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا
أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهَيِّجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ
حُطَامًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِأُولِي الْأَلْبَابِ ⑦

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَى نُورٍ مِّنْ
رَّبِّهِ ط قَوْلٍ لِّلْقَسِيَّةِ قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ
أُولِيكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑧

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِي
تَقْسُرُ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ⑨ ثُمَّ
تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ط ذَلِكَ
هُدًى لِّلَّذِينَ يَهْتَدُونَ بِهِ مَن يَشَاءُ ط وَمَن يُضَلِلْ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ⑩

২৪. যে ব্যক্তি কিয়ামতের দিন তার মুখমন্ডল দ্বারা কঠিন শাস্তি ঠেকাতে চাইবে, (সে কি তার মত যে নিরাপদ?) যালিমদেরকে বলা হবেঃ তোমরা যা অর্জন করতে তার শাস্তি আশ্বাদন কর।

أَفَمَنْ يَتَّقِ بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ط
وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾

২৫. তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল, ফলে শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করলো তাদের অজ্ঞাতসারে।

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاتَّهُمُ الْعَذَابُ مِنْ
حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾

২৬. ফলে আল্লাহ তাদেরকে পার্থিব জীবনে লাঞ্ছনা ভোগ করালেন এবং আখিরাতের শাস্তি তো কঠিনতর। যদি তারা জানতো।

فَإِذَا هَمُّ اللَّهُ الْخَزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَالْعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

২৭. আমি এই কুরআনে মানুষের জন্যে সর্বপ্রকার দৃষ্টান্ত উপস্থিত করেছি, যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ
مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

২৮. আরবী ভাষায় এই কুরআন বক্তৃতামুক্ত, যাতে মানুষ সাবধানতা অবলম্বন করে।

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

২৯. আল্লাহ একটি দৃষ্টান্ত পেশ করছেন। এক ব্যক্তির মালিক অনেক যারা পরস্পর বিরুদ্ধ ভাবাপন্ন এবং এক ব্যক্তির মালিক শুধু একজন; এই দুই জনের অবস্থা কি সমান? সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই প্রাপ্য; কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَكِّسُونَ
وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ ط هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا ط
الْحَصْدُ لِلَّهِ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

৩০. তুমি তো মরণশীল এবং তারাও মরণশীল।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣٠﴾

৩১. অতঃপর কিয়ামত দিবসে তোমরা পরস্পর তোমাদের প্রতিপালকের সামনে বাক-বিতণ্ডা করবে।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ
تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

৩২. যে ব্যক্তি আল্লাহ সন্মুখে মিথ্যা বলে এবং যখন তার নিকট সত্য আসে প্রত্যাখ্যান করে তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? কাফিরদের আবাসস্থল কি জাহান্নাম নয়?

فَسَنُأْظَمُهُ مِمَّنْ كَذَّبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ؕ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

৩৩. যারা সত্যসহ উপস্থিত হয়েছে এবং তাকে সত্য বলে মেনেছে তারাই তো মুত্তাকী।

وَالَّذِينَ جَاءُوا بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ؕ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٨﴾

৩৪. তারা যা চাইবে সব কিছুই আছে তাদের প্রতিপালকের নিকট। এটাই সৎকর্মশীলদের প্রতিদান।

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٩﴾

৩৫. যাতে তারা যেসব অপকর্ম করেছিল আল্লাহ তা ক্ষমা করে দিবেন এবং তাদেরকে তাদের সৎকর্মের জন্যে পুরস্কৃত করবেন।

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٠﴾

৩৬. আল্লাহ কি তাঁর বান্দার জন্যে যথেষ্ট নন? অথচ তারা তোমাকে আল্লাহর পরিবর্তে অপরের ভয় দেখায়। আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্যে কোন পথ প্রদর্শক নেই।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ؕ وَ يَخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ؕ وَمَنْ يَضِلَّ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٤١﴾

৩৭. আর যাকে আল্লাহ হিদায়াত দান করেন তার জন্যে কোন পথ-ভ্রষ্টকারী নেই, আল্লাহ কি পরাক্রম-শালী, প্রতিশোধ গ্রহণকারী নন?

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٤٢﴾

৩৮. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী কে সৃষ্টি করেছেন? তারা অবশ্যই বলবেঃ আল্লাহ। বলঃ তোমরা কি ভেবে দেখেছো যে, আল্লাহ আমার অনিষ্ট চাইলে তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো তারা কি সেই অনিষ্ট দূর করতে পারবে? অথবা তিনি আমার প্রতি অনুগ্রহ করতে

وَالَّذِينَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ؕ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّيهِ أَوْ إَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٤٣﴾

চাইলে তারা কি সে অনুগ্রহকে বন্ধ করতে পারবে? বলঃ আমার জন্যে আল্লাহই যথেষ্ট। নির্ভরকারীরা তাঁর উপর নির্ভর করে।

৩৯. বলঃ হে আমার সম্প্রদায়। তোমরা স্ব স্ব অবস্থানে আমল করতে থাকো, অবশ্য আমিও আমল করছি। তোমরা শীঘ্রই জানতে পারবে।

৪০. কে সে যার প্রতি আসবে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি এবং তার উপর আপত্তিত হবে স্থায়ী শাস্তি।

৪১. আমি তোমার প্রতি সত্যসহ কিতাব অবতীর্ণ করেছি মানুষের জন্যে, অতঃপর যে সৎপথ অবলম্বন করে সে তা করে নিজেরই কল্যাণের জন্যে এবং যে পথভ্রষ্ট হয় সে তো পথভ্রষ্ট হয় নিজেরই ধ্বংসের জন্যে এবং তুমি তাদের জিন্মাদার নও।

৪২. আল্লাহই জান কবজ করেন জীবসমূহের তাদের মৃত্যুর সময় এবং যাদের মৃত্যু আসেনি তাদের জানও ঘুমের সময়। অতঃপর যার জন্যে মৃত্যুর সিদ্ধান্ত করেন তার প্রাণ তিনি রেখে দেন এবং অপরগুলো ফিরিয়ে দেন, এক নির্দিষ্ট সময়ের জন্যে। অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে।

৪৩. তারা কি আল্লাহ ছাড়া অপরকে শাফায়াতকারী গ্রহণ করেছে? বলঃ যদিও তারা কোন ক্ষমতা রাখে না এবং তারা বুঝে না?

৪৪. বলঃ যাবতীয় শাফায়াত আল্লাহরই ইখতিয়ারে, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সার্বভৌমত্ব আল্লাহরই,

قُلْ يَقَوْمِ اعْبُدُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۗ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٌ ﴿٤١﴾

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَيَّءٍ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۗ قُلْ أَوْ لَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۗ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ

অতঃপর তারই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَالْأَرْضُ ط ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٧﴾

৪৫. এক আল্লাহর কথা বলা হলে যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তাদের অন্তর ঘৃণায় ভরে যায় এবং যখন আল্লাহর পরিবর্তে (তাদের দেবতাগুলোর) উল্লেখ করা হলে তারা আনন্দিত হয়ে যায়।

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٣٨﴾

৪৬. বলঃ হে আল্লাহ! আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য ও প্রকাশ্যের পরিজ্ঞাতা! আপনার বান্দারা যে বিষয়ে মতবিরোধ করে, আপনি তাদের মধ্যে গুর ফায়সালা করে দিবেন।

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٣٩﴾

৪৭. যারা যুলুম করেছে তাদের কাছে যদি সমস্ত পৃথিবীর যাবতীয় সম্পদ এবং তার সাথেও থাকে সমপরিমাণ সম্পদ, কিয়ামতের দিন কঠিন শাস্তি হতে পরিত্রাণ লাভের জন্য মুক্তিপণ স্বরূপ সকল কিছু তারা দিয়ে দিতে প্রস্তুত হবে। আর তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট হতে এমন কিছু প্রকাশিত হবে, যা তারা ধারণাও করেনি।

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَبَدَأَ اللَّهُ مَالَهُمْ لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٠﴾

৪৮. তাদের কৃতকর্মের খারাপী তাদের নিকট প্রকাশ হয়ে পড়বে এবং তারা যা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তা তাদেরকে ঘিরে ফেলবে।

وَبَدَأَ لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤١﴾

৪৯. মানুষকে দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করলে সে আমাকে ডাকে; অতঃপর যখন আমি তার প্রতি অনুগ্রহ প্রদান করি আমার পক্ষ থেকে তখন সে বলেঃ আমাকে তো এটা দেয়া হয়েছে

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِمَّا قَالِ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۗ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

আমার জ্ঞানের বিনিময়ে। বস্তুতঃ এটা এক পরীক্ষা; কিন্তু তাদের অধিকাংশই জানে না।

৫০. তাদের পূর্ববর্তীরাও এটাই বলতো; কিন্তু তাদের কৃতকর্ম তাদের কোন কাজে আসেনি।

৫১. তাদের কর্মের খারাপী তাদের উপর আপতিত হয়েছে, তাদের মধ্যে যারা যুলুম করে তাদের উপরও তাদের কর্মের খারাপী আপতিত হবে এবং তারা ব্যর্থও করতে পারবে না।

৫২. তারা কি জানে না, আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছা, তার রিযিক বর্ধিত করেন অথবা হ্রাস করেন। এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

৫৩. বলঃ হে আমার বান্দারা! তোমরা যারা নিজেদের প্রতি অবিচার করেছো— আল্লাহর রহমত হতে নিরাশ হয়ে না; আল্লাহ সমস্ত পাপ ক্ষমা করে দিবেন। তিনি তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৫৪. আর তোমরা তোমাদের প্রতি-পালকের অভিমুখী হও এবং তাঁর নিকট আত্মসমর্পণ কর তোমাদের নিকট শাস্তি আসার পূর্বে, তৎপর তোমাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

৫৫. এবং অনুসরণ কর তোমাদের প্রতি তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে উত্তম যা অবতীর্ণ করা হয়েছে তার, তোমাদের উপর হঠাৎ করে শাস্তি আসার পূর্বে— আর তোমাদের (সে ব্যাপারে) খবরও থাকবে না।

৫৬. এমন যেন না হয় যে, কোন ব্যক্তি বলেঃ হায়! আল্লাহর প্রতি

قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ
سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

قُلْ يُعْبَادِي الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا
مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا
إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلَبُوا آلَهُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾

وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مَنْ قَبْلِ
أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٥﴾

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ لِجَسَدِي عَلَىٰ مَا فَرَّطْتُ فِي

আমার কর্তব্যে আমি যে শৈথিল্য করেছি তার জন্যে আফসোস! আমি তো ঠাট্টাকারীদের অন্তর্ভুক্তই থাকতাম।

৫৭. অথবা বলে যে, আল্লাহ আমাকে পথ-প্রদর্শন করলে আমি তো অবশ্যই মুত্তাকীদের অন্তর্ভুক্ত হতাম!

৫৮. অথবা শাস্তি প্রত্যক্ষ করে বলেঃ আহা! যদি একবার পৃথিবীতে আমার প্রত্যাবর্তন ঘটতো তবে আমি সৎকর্মশীল হতাম।

৫৯. হ্যাঁ, অবশ্যই আমার নিদর্শন তোমার নিকট এসেছিল; কিন্তু তুমি এগুলোকে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিলে ও অহংকার করেছিলে; আর তুমি তো ছিলেই কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত।

৬০. তুমি কিয়ামতের দিন যারা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে, তাদের মুখ কালো দেখবে। অহংকারীদের আবাসস্থল কি জাহান্নাম নয়?

৬১. আল্লাহ মুত্তাকীদেরকে উদ্ধার করবেন তাদের সাফল্যসহ; তাদেরকে দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করবে না এবং তারা চিন্তিতও হবে না।

৬২. আল্লাহ সব কিছুই স্রষ্টা এবং তিনিই সব কিছুই ব্যবস্থাপক।

৬৩. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর চাবিকাঠি তাঁরই নিকট। যারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

৬৪. বলঃ ওহে মূর্খরা! তোমরা কি আমাকে আল্লাহ ব্যতীত অন্যের ইবাদত করতে বলছো?

جَنَّبَ اللَّهُ وَإِنْ كُنْتُمْ لَمِنَ الشَّخِرِينَ ﴿٥٧﴾

أَوْ تَقُولُ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٥٨﴾

أَوْ تَقُولُ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً
فَأَكُونُ مِنَ الْحَسَنِينَ ﴿٥٩﴾

بَلَىٰ قَدْ جَاءَ تَكَ الْيَقِي فَكَذَّبَتْ بِهَا وَاسْتَكْبَرَتْ
وَكَنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٠﴾

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُم
مُّسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦١﴾

وَيُنَبِّئُ اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ الشُّوْءُ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٣﴾

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يَأْتِي اللَّهُ أُولِيكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٦٤﴾

قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِي أَعْبُدُ إِلَيْهَا الْجَاهِلُونَ ﴿٦٥﴾

৬৫. নিশ্চয়ই তোমার প্রতি ও তোমার পূর্ববর্তীদের প্রতি ওহী হয়েছে, যদি তুমি আল্লাহর শরীক স্থির কর তবে নিঃসন্দেহে তোমার কর্ম তো নিষ্ফল হবে এবং অবশ্যই তুমি ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

৬৬. অতএব তুমি আল্লাহরই ইবাদত কর ও কৃতজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত হও।

৬৭. তারা আল্লাহর যথাযথ সম্মান করে না। সমস্ত পৃথিবী কিয়ামতের দিন থাকবে তাঁর হাতের মুষ্টিতে এবং আকাশমন্ডলী থাকবে ভাজকৃত তাঁর ডান হাতে। পবিত্র ও মহান তিনি, তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধ্বে।

৬৮. এবং শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, ফলে যাদেরকে আল্লাহ ইচ্ছা করেন তারা ব্যতীত আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সবাই অজ্ঞান হয়ে পড়বে। অতঃপর আবার শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, তৎক্ষণাৎ তারা দভায়মান হয়ে তাকাতে থাকবে।^১

৬৯. সমস্ত পৃথিবী তার প্রতিপালকের নূরে উদ্ভাসিত হবে, আমলনামা পেশ করা হবে এবং নবীগণকে ও সাক্ষীগণকে হাজির করা হবে এবং সকলের মধ্যে ন্যায্যবিচার করা হবে ও তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكَتَ لِيَجْطَنَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَلْوُنَنَّ مِنَ الْخَيْرِينَ ﴿٦٥﴾

بَلِ اللَّهِ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٦﴾

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٧﴾

وَتُنْفَخُ فِي السُّورِ فَصِيعٌ مِّنَ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ طُمُؤُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّظُنُّونَ ﴿٦٨﴾

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجَاءَتْ بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءَ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ দু'টি ফুৎকারের মধ্যখানে হবে চল্লিশ। লোকেরা বললোঃ আবু হুরাইরা, চল্লিশ দিন? তিনি বলেন আমি (উত্তর দিতে) অস্বীকার করি। তারা বলে, চল্লিশ বছর? তিনি বলেন আমি (উত্তর দিতে) অস্বীকার করি। তারা বলেঃ চল্লিশ মাস? তিনি বলেন, আমি (জবাব দিতে) অস্বীকার করে যোগ করলাম “মেরুদন্ডের হাঁড় ছাড়া মানুষের সব কিছুই পচে-গলে যাবে, এ হাঁড় দ্বারা তারা গোটা দেহের পক্ষন হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮১৪)

৭০. প্রত্যেক ব্যক্তি যা আমল করেছে তার পূর্ণ প্রতিফল পাবে। তারা যা করে সে সম্পর্কে আল্লাহ সর্বাধিক জ্ঞাত।

৭১. কাফিরদেরকে জাহান্নামের দিকে দলে দলে হাঁকিয়ে নিয়ে যাওয়া হবে। যখন তারা জাহান্নামের নিকট উপস্থিত হবে তখন ওর প্রবেশ দ্বারগুলো খুলে দেয়া হবে এবং জাহান্নামের দারোয়ানরা তাদেরকে বলবেঃ তোমাদের নিকট কি তোমাদের মধ্য হতে রাসূলগণ আসেন নি যারা তোমাদের নিকট তোমাদের প্রতিপালকের আয়াত তেলাওয়াত করতেন এবং তোমাদেরকে এই দিনের সাক্ষাত সম্বন্ধে সতর্ক করতেন? তারা বলবেঃ অবশ্যই এসেছিলেন। প্রকৃতপক্ষে কাফিরদের প্রতি শাস্তির হুকুম বাস্তবায়িত হয়েছে।

৭২. তাদেরকে বলা হবেঃ জাহান্নামের দ্বারসমূহে প্রবেশ কর তাতে স্থায়ীভাবে অবস্থানের জন্যে। কত নিকৃষ্ট অহংকারকারীদের আবাসস্থল!

৭৩. যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করতো তাদেরকে দলে দলে জান্নাতের দিকে নিয়ে যাওয়া হবে। যখন তারা জান্নাতের নিকট উপস্থিত হবে ও এর দ্বারসমূহ খুলে দেয়া হবে এবং জান্নাতের দারোয়ানরা তাদেরকে বলবেঃ তোমাদের প্রতি সালাম, তোমরা সুখী হও এবং জান্নাতে প্রবেশ কর স্থায়ীভাবে অবস্থানের জন্যে।

وَوَقَّيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهَا
يَفْعَلُونَ ﴿٤٠﴾

وَسَيُقَالُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا
جَاءَ وَهِيَ فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ
يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ
وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنْ
حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَىٰ الْكَافِرِينَ ﴿٤١﴾

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ فَبِئْسَ
مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٤٢﴾

وَسَيُقَالُ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَىٰ الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ
إِذَا جَاءَ وَهِيَ فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٤٣﴾

৭৪. যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহর, যিনি আমাদের প্রতি তাঁর প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করেছেন এবং আমাদেরকে অধিকারী করেছেন এই ভূমির; আমরা জান্নাতে যেখানে ইচ্ছা বসবাস করবো। সুতরাং (সং) আমলকারীদের বিনিময় কত উত্তম!

৭৫. এবং তুমি ফেরেশতাদেরকে দেখতে পাবে যে, তারা আরশের চতুঃপার্শ্বে ঘিরে তাদের প্রতিপালকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করছে। আর তাদের বিচার করা হবে ইনসাফ ভিত্তিক; বলা হবেঃ সমস্ত প্রশংসা জগতসূহের প্রতিপালক আল্লাহর প্রাপ্য।

সূরাঃ মু'মিন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮৫, রুকু'ঃ ৯)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. হা-মীম,

২. এই কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে পরাক্রমশালী সর্বজ্ঞ আল্লাহর নিকট হতে—

৩. যিনি পাপ ক্ষমাকারী, তাওবা কবুলকারী, যিনি শাস্তিদানে কঠোর, শক্তিশালী। তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বুদ নেই। তাঁরই নিকট প্রত্যাবর্তন।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَّهُ وَأَوْثَقَنَا
الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۗ فَنِعْمَ
أَجْرُ الْعَابِدِينَ ﴿٧٤﴾

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۗ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ
وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٥﴾

سُورَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٨٥ رُكُوعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ ١

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ١

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ
ذِي الْقَوْلِ طَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَهِيهِ الْبَصِيرُ ﴿١﴾

৪. শুধু কাফিররাই আল্লাহর নিদর্শন সম্বন্ধে ঝগড়া করে; সুতরাং শহরগুলিতে তাদের অবাধ বিচরণ যেন তোমাকে ধোকায় না ফেলে।

৫. তাদের পূর্বে নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায় এবং তাদের পরে অন্যান্য দলও মিথ্যারোপ করেছিল। প্রত্যেক সম্প্রদায় নিজ নিজ রাসূলকে শ্রেফতার করবার চক্রান্ত করেছিল এবং তারা বাজে তর্কে লিপ্ত হয়েছিল, এর দ্বারা সত্যকে নষ্ট করে দেয়ার জন্যে; ফলে আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম এবং কত কঠোর ছিল আমার শাস্তি!

৬. এভাবে কাফিরদের ক্ষেত্রে সাব্যস্ত হয়ে গেল তোমার প্রতিপালকের বাণী— এরা অবশ্যই জাহান্নামী।

৭. যারা আরশ ধারণ করে আছে এবং যারা এর চতুর্সপার্শ্বে রয়েছে, তারা তাদের প্রতিপালকের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে প্রশংসার সাথে এবং তাতে বিশ্বাস স্থাপন করে এবং মু'মিনদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে (বলেঃ) হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি সকল কিছুকেই (তোমার) রহমত ও জ্ঞান দ্বারা পরিবেষ্টন করেছ, অতএব যারা তাওবা করে ও আপনার পথের অনুসরণ করে আপনি তাদেরকে ক্ষমা করুন এবং তাদেরকে জাহান্নামের শাস্তি হতে রক্ষা করুন!

৮. হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি তাদেরকে প্রবেশ করান স্থায়ী

مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغُزُّكَ تَقْلِبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ①

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَدَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ②

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ③

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ④

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ

জান্নাতে, যার অঙ্গীকার আপনি তাদেরকে দিয়েছেন এবং তাদের বাপ-দাদা, স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততির মধ্যে যারা সৎকর্ম করেছে তাদেরকেও। আপনি তো পরাক্রম-শালী, প্রজ্ঞাবান।

৯. এবং আপনি তাদেরকে মন্দকাজসমূহ হতে রক্ষা করুন, আপনি যাকে মন্দকাজসমূহ হতে রক্ষা করেন, ঐদিন তো তার প্রতি অনুগ্রহই করলেন, এটাই তো মহা সাফল্য।

১০. নিশ্চয়ই যারা কুফরী করেছে তাদেরকে আহ্বান করা হবেঃ তোমাদের নিজেদের প্রতি তোমাদের ক্ষোভ অপেক্ষা আল্লাহর অসন্তুষ্টি ছিল অনেক বড়, যখন তোমাদেরকে ঈমানের প্রতি আহ্বান করা হতো তখন তোমরা তা অস্বীকার করত।

১১. তারা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে মৃত অবস্থায় দু'বার রেখেছেন এবং দু'বার আমাদেরকে প্রাণ দিয়েছেন। আমরা আমাদের অপরাধ স্বীকার করছি; এখন বহির্গমনের (নিস্কৃতির জন্য) কোন পথ মিলবে কি?

১২. তোমাদের (এই শাস্তি তো) এই জন্যে যে, যখন এক আল্লাহকে ডাকা হতো তখন তোমরা তাঁকে অস্বীকার করত এবং আল্লাহর শরীক স্থির করা হলে তোমরা তা মেনে নিতে। বস্তুতঃ সমুচ্চ মহান আল্লাহরই সমস্ত

صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ طُرُقًا
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٨﴾

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ يَتَّقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَجَعْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾

إِنَّ الدِّينَ لَفَرُّوْا يُنَادُوْنَ لِمَقْتِ اللَّهِ الْكَبْرِ مِنْ
مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ذُتُّدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾

قَالُوا رَبَّنَا أَمَتْنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ
فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ
سَبِيلٍ ﴿١١﴾

ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَإِنْ يُشْرَكَ
بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾

কর্তৃত্ব ৮

১৩. তিনিই তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনাবলী দেখান এবং আকাশ হতে অবতীর্ণ করেন তোমাদের জন্যে রিষিক; আল্লাহর অভিমুখী ব্যক্তিরই উপদেশ গ্রহণ করে থাকে।

১৪. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ডাকো তাঁর ইবাদতে একনিষ্ঠ হয়ে, যদিও কাফিররা এটা অপছন্দ করে।

১৫. তিনি সমুচ্চ মর্যাদার অধিকারী, আরশের অধিপতি, তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা রুহ (ওহী) প্রেরণ করেন স্বীয় আদেশসহ, যাতে সে সতর্ক করতে পারে সাক্ষাত (কিয়ামত) দিবস সম্পর্কে।

১৬. যেদিন তারা (করব হতে) বের হয়ে পড়বে, সেদিন আল্লাহর নিকট তাদের কিছুই গোপন থাকবে না। (আল্লাহ জিজ্ঞাসা করবেন) আজ কর্তৃত্ব কার? এক পরাক্রমশালী আল্লাহরই।

১৭. আজ প্রত্যেক ব্যক্তিকে তার কৃতকর্মের বিনিময় দেয়া হবে; আজ কারো প্রতি যুলুম করা হবে না। নিশ্চয়ই আল্লাহ দ্রুত হিসাব সম্পন্নকারী।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ﴿١٣﴾

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٤﴾

رَفِيعَ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾

يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ ۗ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ﴿١٦﴾ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۗ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٧﴾

الْيَوْمَ نُجْزِي كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ لَّا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٨﴾

১। আব্দুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ একদিন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি কথা বললেন। আমি (তার বিপরীতে) আরেকটি কথা বললাম। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ কেউ যদি এমন অবস্থায় মৃত্যুবরণ করে যে, সে আল্লাহর সাথে অন্য কাউকে শরীক করে বা সমকক্ষ হওয়ার দাবী করে তবে সে জাহান্নামে যাবে। আমি বললাম, আর কেউ যদি এমন অবস্থায় মৃত্যুবরণ করে যে, সে আল্লাহর সাথে আর কাউকে শরীক বা সমকক্ষ মনে করলো না, তাহলে সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৯৭)

১৮. তাদেরকে সতর্ক করে দাও আসন্ন দিন (কিয়ামত) সম্পর্কে দুঃখ-কষ্টে তাদের প্রাণ কঠাগত হবে। যালিমদের জন্যে কোন অন্তরঙ্গ বন্ধু নেই এবং যার সুপারিশ গ্রাহ্য হবে এমন কোন সুপারিশ-কারীও নেই।

১৯. চক্ষুর অপব্যবহার ও অন্তরে যা গোপন আছে সে সম্বন্ধে তিনি অবহিত।

২০. আল্লাহই ফয়সালা করেন ইনসাফের সাথে; আল্লাহর পরিবর্তে তারা যাদেরকে ডাকে তারা ফয়সালা করতে অক্ষম। নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

২১. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না? করলে দেখতো— তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছিল। পৃথিবীতে তারা ছিল এদের অপেক্ষা শক্তিতে এবং কীর্তিতে প্রবলতর, অতঃপর আল্লাহ তাদেরকে শাস্তি দিয়েছিলেন তাদের অপরাধের জন্যে এবং আল্লাহর শাস্তি হতে তাদেরকে রক্ষা করবার কেউ ছিল না।

২২. এটা এ জন্যে যে, তাদের নিকট তাদের রাসূলগণ নিদর্শনাবলীসহ আসলে তারা তাদেরকে অস্বীকার করেছিল। ফলে আল্লাহ তাদেরকে পাকড়াও করলেন। নিশ্চয়ই তিনি তো মহা শক্তিশালী, শাস্তি দানে কঠোর।

২৩. আমি আমার নিদর্শনাবলী ও স্পষ্ট প্রমাণসহ মুসা (عليه السلام)-কে প্রেরণ করেছিলাম।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْأَذْفَىٰ إِذْ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ
كَظِيمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَیْمٍ وَلَا شَفِيعٍ
يُطَاعُ ۖ

يَعْلَمُ خَائِبَةٌ الْعَيْنُ وَمَا تُخْفَى الصُّدُورُ ۝

وَاللَّهُ يُقْضَىٰ بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
لَا يَقْضُونَ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ ۖ فَاخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۖ وَمَا كَانَ
لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا
فَاخَذَهُمُ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝

২৪. ফিরআ'উন, হামান ও কারনের নিকট; কিন্তু তারা বলেছিলঃ এ তো এক যাদুকর, চরম মিথ্যাবাদী।

২৫. অতঃপর যখন (মূসা عليه السلام) আমার নিকট হতে সত্য নিয়ে তাদের নিকট উপস্থিত হলেন তখন তারা বললোঃ মূসা (عليه السلام)-এর উপর যারা ঈমান এনেছে, তাদের পুত্র সন্তানদেরকে হত্যা কর এবং তাদের নারীদেরকে জীবিত রাখো; কিন্তু কাফিরদের ষড়যন্ত্র ব্যর্থ হবেই।

২৬. ফিরআ'উন বললোঃ আমাকে ছেড়ে দাও আমি মূসা (عليه السلام)-কে হত্যা করি এবং সে তার প্রতিপালককে ডাকুক। আমি আশঙ্কা করি যে, সে তোমাদের দ্বীনকে পরিবর্তন করে ফেলবে অথবা সে পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে।

২৭. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ যারা হিসাব দিবসে বিশ্বাস করে না, সেই সব অহংকারী ব্যক্তি হতে আমি আমার ও তোমাদের প্রতিপালকের আশ্রয় প্রার্থনা করছি।

২৮. ফিরআ'উন বংশের এক ব্যক্তি যে মু'মিন ছিল এবং নিজ ঈমান গোপন রাখতো, বললোঃ তোমরা কি এ ব্যক্তিকে এ জন্যে হত্যা করবে যে, সে বলেঃ আমার প্রতিপালক আল্লাহ অথচ সে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে সুস্পষ্ট প্রমাণসহ তোমাদের নিকট এসেছে? সে মিথ্যাবাদী হলে তার মিথ্যার প্রতিফল সে ভোগ করবে, আর যদি সে সত্যবাদী হয় তবে সে

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سِحْرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾

فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ
الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا
كَيْدُ الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذُرُوْنِي اُقْتُلْ مُوسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ط
إِنِّي اَخَافُ اَنْ يُبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُظْهِرَ
فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

وَقَالَ مُوسٰى اِنِّي عُدْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ
لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِّنْ اِلٰى فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ
اٰيٰتِنَا اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ
جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَبِّكُمْ ط وَاِنْ يٰكُ كٰذِبًا
فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ؕ وَاِنْ يٰكُ صٰدِقًا يُصِْبْكُمْ بَعْضُ
الَّذِيْ يَعِدُّكُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ
كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾

তোমাদেরকে যে শাস্তির কথা বলে তার কিছু তো তোমাদের উপর আপতিত হবেই। আল্লাহ সীমলজ্ঞনকারী ও মিথ্যাবাদীকে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

২৯. হে আমার সম্প্রদায়! আজ কর্তৃত্ব তোমাদের, দেশে তোমরাই প্রবল; কিন্তু আমাদের উপর আল্লাহর শাস্তি এসে পড়লে কে আমাদেরকে সাহায্য করবে? ফিরআ'উন বললো: আমি যা বুঝি, আমি তোমাদেরকে তা-ই বলছি। আমি তোমাদেরকে শুধু সৎপথই দেখিয়ে থাকি।

৩০. মু'মিন ব্যক্তিটি বললো: হে আমার সম্প্রদায়! আমি তোমাদের জন্যে পূর্ববর্তী সম্প্রদায়সমূহের (শাস্তির) দিনের অনুরূপ আশঙ্কা করি।

৩১. যেমন ঘটেছিল নূহ (ﷺ)-এর সম্প্রদায়, আ'দ, সামূদ এবং তাদের পরবর্তীদের ক্ষেত্রে। আল্লাহ তো বান্দাদের প্রতি কোন যুলুম করতে চান না।

৩২. হে আমার সম্প্রদায়! আমি তোমাদের জন্যে আশঙ্কা করি ফরিয়াদ দিবসের।

৩৩. যেদিন তোমরা পশ্চাৎ ফিরে পলায়ন করতে চাইবে, আল্লাহর শাস্তি হতে তোমাদেরকে রক্ষা করবার কেউ থাকবে না। আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্যে কোন পথ প্রদর্শক নেই।

৩৪. পূর্বেও তোমাদের নিকট ইউসুফ (ﷺ) এসেছিল স্পষ্ট নিদর্শনসহ;

يَقُومُ لَكُمْ الْمَلِكُ الْيَوْمَ ظَهْرَيْنَ فِي الْأَرْضِ
فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا قَالَ
فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَى وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا
سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا يَوْمَ الْأَحْزَابِ ۝

مِثْلَ دَابِّ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ
بَعْدِهِمْ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظَلْمًا لِلْعِبَادِ ۝

وَيَقُومُ إِيَّيْ أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝

يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ
وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زُلْتُمْ

কিন্তু সে যা নিয়ে এসেছিল তোমরা তাতে বারবার সন্দেহ পোষণ করতে। পরিশেষে যখন তাঁর মৃত্যু হলো তখন তোমরা বলেছিলেঃ তারপরে আল্লাহ আর কখনও কাউকেও রাসূল করে প্রেরণ করবেন না। এভাবে আল্লাহ বিভ্রান্ত করেন সীমালঙ্ঘনকারী ও সংশয়শীলদেরকে।

৩৫. যারা নিজেদের নিকট কোন দলীল প্রমাণ না থাকা সত্ত্বেও আল্লাহর নিদর্শন সম্পর্কে বিতর্কে লিপ্ত হয় (তাদের এ কর্ম) আল্লাহ এবং মু'মিনদের নিকট অতিশয় ঘৃণার। এভাবে আল্লাহ প্রত্যেক অহংকারী ও স্বেচ্ছাচারী ব্যক্তির হৃদয়কে মোহর করে দেন।

৩৬. ফিরআ'উন বললোঃ হে হামান! আমার জন্যে তুমি নির্মাণ কর এক সুউচ্চ প্রাসাদ যাতে আমি দরজা সমূহে পৌছি—

৩৭. আসমানসমূহের দরজা, যেন আমি দেখতে পাই মুসা (عليه السلام)-এর মা'বুদকে; তবে আমি তো তাকে মিথ্যাবাদী মনে করি। এভাবেই ফিরাউনের নিকট শোভনীয় করা হয়েছিল তার মন্দ কর্মকে এবং তাকে প্রতিহত করা হয়েছিল সরল পথ হতে এবং ফিরাআ'উনের ষড়যন্ত্র ব্যর্থ হয়েছিল সম্পূর্ণরূপে।

৩৮. যে ব্যক্তিটি ঈমান এনেছিল সে বললোঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আমার অনুসরণ কর, আমি তোমাদেরকে সঠিক পথে পরিচালিত করবো।

فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُمْ بِهِ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن نَّبْعَثَ اللَّهَ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ﴿٣٥﴾

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ كَبْرًا مَّقْتَاتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ مُّتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٦﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَٰمَانَ ابْنِي لِي صَرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ﴿٣٧﴾

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَاطَّلَعَ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا وَكَذَلِكَ زَيْنَ فِرْعَوْنَ سَوْءَ عَمَلِهِ وَصَدَّ عَنِ السَّبِيلِ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ﴿٣٨﴾

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ﴿٣٩﴾

৩৯. হে আমার সম্প্রদায়! এ পার্শ্বিক জীবন তো (অস্থায়ী) উপভোগের এবং আখিরাতই হচ্ছে চিরস্থায়ী আবাস।

৪০. কেউ মন্দ আমল করলে সে শুধু তার আমলের অনুরূপ শাস্তি পাবে এবং পুরুষ কিংবা নারীর মধ্যে যারা মু'মিন হয়ে সৎ আমল করে তারা প্রবেশ করবে জান্নাতে, সেখানে তারা অসংখ্য রিযিক পাবে।

৪১. হে আমার সম্প্রদায়! এ কেমন কথা! আমি তোমাদেরকে আহ্বান করছি মুক্তির দিকে, আর তোমরা আমাকে আহ্বান করছো জাহান্নামের দিকে!

৪২. তোমরা আমাকে আল্লাহকে অস্বীকার করতে এবং তাঁর শরীক স্থাপন করতে ডাকছ, যা সম্পর্কে আমার কোন জ্ঞান নেই; পক্ষান্তরে আমি তোমাদেরকে আহ্বান করছি পরাক্রমশালী, ক্ষমশীল আল্লাহর দিকে।

৪৩. নিশ্চয়ই তোমরা আমাকে ডাকছ এমন একজনের দিকে যে দুনিয়া ও আখিরাতে কোথাও আহ্বানযোগ্য নয়। বস্তুতঃ আমাদের প্রত্যাবর্তন তো আল্লাহর নিকট এবং সীমালঙ্ঘনকারীরাই জাহান্নামের অধিবাসী।

৪৪. সুতরাং আমি তোমাদেরকে যা বলছি, তোমরা তা অচিরেই স্বরণ করবে এবং আমি আমার ব্যাপার আল্লাহর নিকট সমর্পণ করছি; নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর বান্দাদের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখেন।

يَقَوْمِ إِنَّمَا هُذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

وَيَقَوْمٍ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِنِّي أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

لَجْرَمِ إِنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنْتَ مَرْدَنًا إِلَى اللَّهِ وَأَنْتَ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ طَوَّافٍ وَمِنْ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

৪৫. অতঃপর আল্লাহ তাঁকে তাদের ষড়যন্ত্রের অনিষ্ট হতে রক্ষা করলেন এবং নিকৃষ্ট শাস্তি পরিবেষ্টন করলো ফিরআ'উন-সম্প্রদায়কে।

৪৬. সকাল-সন্ধ্যায় তাদেরকে উপস্থিত করা হয় আগুনের সম্মুখে এবং যেদিন কিয়ামত ঘটবে সেদিন (বলা হবেঃ) ফিরআ'উন সম্প্রদায়কে নিক্ষেপ কর কঠিন শাস্তিতে।

৪৭. যখন তারা জাহান্নামে পরস্পর ঝগড়ায় লিপ্ত হবে তখন দুর্বলেরা অহংকারীদেরকে বলবেঃ আমরা তো তোমাদেরই অনুসারী ছিলাম, এখন কি তোমরা আমাদের হতে জাহান্নামের আগুনের কোন অংশ নিবারণ করতে পারবে?

৪৮. দাঙ্গিকেরা বলবেঃ আমরা সবাই তো জাহান্নামে আছি; নিশ্চয়ই আল্লাহ বান্দাদের ফয়সালা করে ফেলেছেন।

৪৯. জাহান্নামের অধিবাসিরা তার প্রহরীদেরকে বলবেঃ তোমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা কর তিনি যেন আমাদের হতে একদিন আযাব হ্রাস করেন।

৫০. তারা বলবেঃ তোমাদের নিকট কি নিদর্শনাবলীসহ তোমাদের রাসূলগণ আসেনি? জাহান্নামীরা বলবেঃ অবশ্যই এসেছিল। প্রহরীরা বলবেঃ তবে তোমরাই প্রার্থনা কর, আর কাফিরদের প্রার্থনা ব্যর্থই হয়।

৫১. নিশ্চয়ই আমি আমার রাসূলদের ও মু'মিনদেরকে সাহায্য করবো পার্থিব জীবনে এবং যেদিন সাক্ষীগণ দণ্ডয়মান হবে।

قَوْلُهُ اللَّهُ سَيَاتٍ مَا مَكْرُوا وَحَاقَ بِأَلِ
فِرْعَوْنَ سُوءَ الْعَذَابِ ٤٥

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ
السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ٤٦

وَإِذْ يَتَحَاكَمُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعْفَاءُ
لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ
مُعْذِنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِنَ النَّارِ ٤٧

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ
قَدَّ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ٤٨

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِغَزْوَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ
يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِنَ الْعَذَابِ ٤٩

قَالُوا أَوْ لَمْ تَكُنْ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ط
قَالُوا بَلَى ط قَالُوا فَادْعُوا وَمَا دَعُوا الْكٰفِرِينَ
إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ٥٠

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ٥١

৫২. যেদিন যালিমদের কোন আপত্তি কোন উপকারে আসবে না, তাদের জন্যে রয়েছে লানত এবং তাদের জন্যে রয়েছে নিকৃষ্ট আবাস।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَهُمْ لَلْعَنَةِ
وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

৫৩. আমি অবশ্যই মুসা (عليه السلام)-কে দান করেছিলাম পথ-নির্দেশ এবং বানী ইসরাঈলকে উত্তরাধিকারী করেছিলাম সেই কিতাবের,

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي
إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

৫৪. পথ-নির্দেশ ও উপদেশ বোধশক্তি সম্পন্ন লোকদের জন্যে।

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

৫৫. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর; নিশ্চয়ই আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য, তুমি তোমার ক্রটির জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর এবং সকাল-সন্ধ্যায় তোমার প্রতিপালকের সপ্রশংসা পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذُنُوبِكَ
وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

৫৬. যারা নিজেদের নিকট কোন দলীল না থাকলেও আল্লাহর নিদর্শন সম্পর্কে বিতর্কে লিপ্ত হয়, তাদের অন্তরে আছে শুধু অহংকার, যা সফল হবার নয়। অতএব আল্লাহর শরণাপন্ন হও, তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ
أَتَهُمْ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَا هُمْ
بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

৫৭. মানব সৃজন অপেক্ষা আকাশ-মন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টি অবশ্যই অনেক বড় কাজ; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা জানে না।

لَخَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

৫৮. সমান নয় অন্ধ ও দৃষ্টিশক্তি সম্পন্ন এবং যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে এবং যারা গুনাহগার। তোমরা অল্লাই উপদেশ গ্রহণ করে থাকো।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

৫৯. কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী, এতে কোন সন্দেহ নেই; কিন্তু অধিকাংশ লোক বিশ্বাস করে না।

৬০. তোমাদের প্রতিপালক বলেনঃ তোমরা আমাকে ডাকো, আমি তোমাদের ডাকে সাড়া দিবো। যারা অহংকারে আমার ইবাদত বিমুখ, তারা অবশ্যই জাহান্নামে প্রবেশ করবে লাঞ্ছিত হয়ে।

৬১. আল্লাহই তোমাদের বিশ্রামের জন্যে সৃষ্টি করেছেন রাত্রি এবং আলোকোজ্জ্বল করেছেন দিবসকে। আল্লাহ তো মানুষের প্রতি অনুগ্রহশীল; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে না।

৬২. তিনি আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক, সব কিছুর স্রষ্টা; তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বুদ নেই, সুতরাং তোমরা কোথায় পথভ্রষ্ট হয়ে ঘুরছ?

৬৩. এভাবেই পথভ্রষ্ট হয়ে তারা ঘুরে, যারা আল্লাহর নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করে।

৬৪. আল্লাহই তোমাদের জন্যে পৃথিবীকে করেছেন বাসোপযোগী এবং আকাশকে করেছেন ছাদ এবং তোমাদের আকৃতি গঠন করেছেন এবং তোমাদের আকৃতি করেছেন উৎকৃষ্ট এবং তোমাদেরকে দান করেছেন উৎকৃষ্ট রিযিক। এই তো আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক। কত মহান জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহ!

إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرِينَ ﴿٦٠﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الَّيْلَ لَتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ مَلَأَ إِلَهَ الْإِلَهِ هُوَ فَآئِي تَوَكَّلُونَ ﴿٦٢﴾

كَذَلِكَ يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَتَبَرِكُ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٤﴾

৬৫. তিনি চিরঞ্জীব, তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বুদ নেই; সুতরাং তোমরা তাঁকেই ডাকো, তাঁর ইবাদতে একনিষ্ঠ হয়ে। যাবতীয় প্রশংসা জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহরই প্রাপ্য।

৬৬. বলঃ আমার প্রতিপালকের নিকট হতে আমার নিকট নিদর্শন আসার পরেও তোমরা আল্লাহ ব্যতীত যাদেরকে আহ্বান কর, তাদের ইবাদত করতে আমাকে নিষেধ করা হয়েছে এবং আমি আদিষ্ট হয়েছি জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকট আত্মসমর্পণ করতে।

৬৭. তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন মাটি হতে, পরে শুক্রবিন্দু হতে, তারপর রক্তপিণ্ড হতে, তারপর তোমাদেরকে বের করেন শিশুরূপে, অতঃপর যেন তোমরা উপনীত হও যৌবনে, তারপর হও বৃদ্ধ। তোমাদের মধ্যে কারো এর পূর্বেই মৃত্যু ঘটে এবং এটা এজন্যে যে, তোমরা নির্ধারিত কাল পৌছে যাও এবং যাতে তোমরা অনুধাবন করতে পার।

৬৮. তিনিই জীবন দান করেন ও মৃত্যু ঘটান এবং যখন তিনি কিছু করার সিদ্ধান্ত নেন তখন তিনি বলেনঃ হও এবং তা হয়ে যায়।

৬৯. তুমি কি লক্ষ্য কর না তাদের প্রতি যারা আল্লাহর নিদর্শনসমূহ সম্পর্কে পরস্পর বিতর্ক করে? কিভাবে তাদেরকে পরিচালিত করা হচ্ছে?

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ قَادِعُ عَوْهٍ مُّخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ط أَحَدٌ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ لَنَا جَاءَ فِي الْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّي نَوْ أُمِرْتُ أَنْ
أُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ نُطَفِقَهُ ثُمَّ
مِنْ عَاقِبَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلاً ثُمَّ لِتَبْلُغُوا
أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۖ وَمِنْكُمْ مَنْ يَتُوفَى
مِنْ قَبْلِ وَلِتَبْلُغُوا أَجْلًا مُّسَدَّدًا ۖ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّا
يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿١٨﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ ط أَنَّى
يُصْرَفُونَ ﴿١٩﴾

৭০. যারা অস্বীকার করে কিতাব ও যা সহ আমি রাসূলদেরকে প্রেরণ করেছিলাম তা, শীঘ্রই তারা জানতে পারবে—

৭১. যখন তাদের গলদেশে বেড়ি ও শৃঙ্খল থাকবে, তাদেরকে টেনে নিয়ে যাওয়া হবে।

৭২. ফুটন্ত পানিতে, অতঃপর তাদেরকে দক্ষ করা হবে অগ্নিতে।

৭৩. পরে তাদেরকে বলা হবেঃ কোথায় তারা যাদেরকে তোমরা (তঁার) শরীক করতে;

৭৪. আল্লাহ ব্যতীত? তারা বলবেঃ তারা তো আমাদের নিকট হতে অদৃশ্য হয়েছে; বস্তুতঃ পূর্বে আমরা এমন কিছুকেই আহ্বান করিনি। এভাবে আল্লাহ কাফিরদেরকে বিভ্রান্ত করেন।

৭৫. এটা এই কারণে যে, তোমরা পৃথিবীতে অযথা উল্লাস করতে এবং এই কারণে যে, তোমরা দম্ব করতে।

৭৬. তোমরা জাহান্নামের দ্বার সমূহে প্রবেশ কর তাতে স্থায়ীভাবে অবস্থানের জন্যে, আর কতই না নিকৃষ্ট অহংকারীদের আবাসস্থল!

৭৭. সুতরাং তুমি ধৈর্যধারণ কর। আল্লাহর অঙ্গীকার সত্য। আমি তাদেরকে যে অঙ্গীকার প্রদান করি তার কিছু যদি দেখিয়েই দেই অথবা তোমার মৃত্যু ঘটাই— তাদের প্রত্যাবর্তন তো আমারই নিকট।

৭৮. আমি তো তোমার পূর্বে অনেক রাসূল প্রেরণ করেছিলাম; তাদের

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ
رُسُلَنَا تَفْسُوفٌ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

إِذِ الْأَغْلُلُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾

فِي الْحَمِيمِ ۗ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ إِنَّ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ
نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ
الْكُفْرِينَ ﴿٧٤﴾

ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾

أَدْخَلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۗ فَأَمَّا نُورِيَّتَكَ
بَعْضَ الَّذِي نَعُدُّهُمْ أَوْ تَتَوَقَّيْتَكَ فَالْيَنَّا
يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَمِنْهُمْ مَنْ

কারো কারো কথা তোমার নিকট বর্ণনা করেছি এবং কারো কারো কথা তোমার নিকট বর্ণনা করিনি। আল্লাহর অনুমতি ছাড়া কোন নিদর্শন উপস্থিত করা কোন রাসূলের কাজ নয়। আল্লাহর আদেশ আসলে ন্যায়-সঙ্গতভাবে ফায়সালা হয়ে যাবে। তখন বাতিল পছীরা ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

৭৯. আল্লাহুই তোমাদের জন্যে চতুঃপদ জন্তু সৃষ্টি করেছেন, তার কতক তোমরা আরোহণ করে থাকো এবং কতক তোমরা আহারও করে থাকো।

৮০. এতে তোমাদের জন্যে রয়েছে প্রচুর উপকার, তোমরা যা প্রয়োজন বোধ কর, এটা দ্বারা তা পূর্ণ করে থাকো, এবং এদের উপর ও নৌযানের উপর তোমাদেরকে বহন করা হয়।

৮১. তিনি তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনাবলী দেখিয়ে থাকেন। সুতরাং তোমরা আল্লাহর নিদর্শন-সমূহের কোন্টি অস্বীকার করবে।

৮২. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করেনি ও দেখেনি তাদের পূর্ববর্তীদের কি পরিণাম হয়েছিল? পৃথিবীতে তারা ছিল এদের অপেক্ষা সংখ্যায় অধিক এবং শক্তিতে ও কীর্তিতে অধিক প্রবল। তারা যা করতো তা তাদের কোন কাজে আসেনি।

৮৩. তাদের নিকট যখন নিদর্শনাবলীসহ তাদের রাসূলগণ আসতো তখন তারা নিজেদের জ্ঞানের দম্ব করতো। তারা যা নিয়ে

قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَن لَّمْ يَنْقُصْ
عَلَيْكَ ط وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ ء فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فُضِيَ بِالْحَقِّ
وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٩﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٨٠﴾

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي
صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨١﴾

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۖ فَآيَىٰ آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ ﴿٨٢﴾

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ
وَآشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَعْنَىٰ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٣﴾

فَلَمَّا جَاءَ تَهُم رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا
عِنْدَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوا بِهِ

ঠাট্টা-বিদ্বপ করতো তা তাদেরকে
বেষ্টন করলো।

يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٢﴾

৮৪. অতঃপর যখন তারা আমার
শাস্তি প্রত্যক্ষ করলো তখন বললোঃ
আমরা এক আল্লাহতেই ঈমান
আনলাম এবং আমরা তাঁর সাথে
যাদেরকে শরীক করতাম তাদেরকে
প্রত্যাখ্যান করলাম।

فَلَبَّأَ رَاوُوا بِأَسْنَاءِ قَالُوا أَمَّنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٢٤﴾

৮৫. তারা যখন আমার শাস্তি প্রত্যক্ষ
করলো তখন তাদের ঈমান তাদের
কোন উপকারে আসলো না।
আল্লাহর এই বিধান পূর্ব হতেই তাঁর
বান্দাদের মধ্যে চলে আসছে এবং
সে ক্ষেত্রে কাফিররা ক্ষতিগ্রস্ত হয়।

فَلَمْ يَكْ يَنْفَعُهُمْ إِيْمَانُهُمْ لَبَّأَ رَاوُوا بِأَسْنَاءِ ط
سُنَّتَ اللّٰهُ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ؕ وَخَسِرَ
هٰنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٢٥﴾

সূরাঃ হা-মীম আসসাজদাহ, মাক্কী

سُورَةُ حَمَّ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৫৪, রুকু'ঃ ৬)

آيَاتُهَا ٥٢ رُكُوعَاتُهَا ٦

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

১. হা-মীম।

حَمَّ ﴿١﴾

২. এটা দয়াময়, পরম দয়ালুর নিকট
হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿٢﴾

৩. এটা (এমন) এক কিতাব,
বিশদভাবে বর্ণনা করা হয়েছে এর
আয়াতসমূহ, আরবী ভাষায় কুরআন-
রূপে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ آيٰتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ
يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

৪. সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে;
কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিমুখ
হয়েছে। সুতরাং তারা শুনবে না।

بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا ؕ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ
لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾

৫. তারা বলেঃ তুমি যার প্রতি আমাদেরকে আহ্বান করছো সে বিষয়ে আমাদের অন্তর আবরণ আচ্ছাদিত, কর্ণে আছে বধিরতা এবং তোমার ও আমাদের মধ্যে আছে অন্তরায়; সুতরাং তুমি তোমার কাজ কর এবং আমরা আমাদের কাজ করি।

৬. বলঃ আমি তো তোমাদের মতই একজন মানুষ, আমার প্রতি ওহী হয় যে, তোমাদের মা'বুদ একমাত্র মা'বুদ। অতএব তাঁরই পথ দৃঢ়ভাবে অবলম্বন কর এবং তারই নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর। দুর্ভোগ অংশীবাদীদের জন্যে—

৭. যারা যাকাত প্রদান করে না এবং তারা আখিরাতেও অবিশ্বাসী।

৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে অবিচ্ছিন্ন পুরস্কার।

৯. বলঃ তোমরা কি তাঁকে অস্বীকার করবেই যিনি পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন দুই দিনে এবং তোমরা তাঁর সমকক্ষ দাঁড় করাতে চাও? তিনি তো জগতসমূহের প্রতিপালক।

১০. তিনি স্থাপন করেছেন (অটল) পর্বতমালা ভূ-পৃষ্ঠে এবং তাতে রেখেছেন বরকত এবং চার দিনের মধ্যে এতে ব্যবস্থা করেছেন খাদ্যের, সমভাবে (এতে উত্তর) রয়েছে জিজ্ঞাসুদের জন্যে।

১১. অতঃপর তিনি আকাশের দিকে মনোনিবেশ করেন যা ছিল ধূম

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِيْ اَكْتَاةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَا اِلَيْهِ وَفِيْ اِذْنَانَا وَقُرْ وَّ مِنْ بَيْنِنَا وَ بَيْنِكَ حِجَابٌ فَاَعْمَلْ اِنَّا عَمِلُوْنَا ⑤

قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلَكُمْ يُؤْتِيْ اِلَى اَنَّمَا اِلَهُكُمْ اِلَهٌ وَّ اَحَدٌ فَاَسْتَقِيْمُوْا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ط وَوَيْلٌ لِّلشُّرَكِيْنَ ⑥

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ⑦

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرٌ مَّسْنُوْنٍ ⑧

قُلْ اِيْنكُمْ لَتَنفَرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهُ اَنْدَادًا ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ⑨

وَجَعَلَ فِيْهَا رَوٰسِيْ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَا اَمْوَاتَهَا فِيْ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ط سَوَآءٌ لِّلشَّآءِ لِيْلِيْنَ ⑩

ثُمَّ اسْتَوٰى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا

বিশেষ। অনন্তর তিনি গুটাকে ও পৃথিবীকে বললেনঃ তোমরা উভয়ে এসো ইচ্ছা অথবা অনিচ্ছায়। তারা বললোঃ আমরা আসলাম অনুগত হয়ে।

১২. অতঃপর তিনি তাকে দুই দিনে সজ্জাকাশে পরিণত করলেন এবং প্রত্যেক আকাশে তার বিধান ব্যক্ত করলেন এবং আমি দুনিয়ার আকাশকে সুশোভিত করলাম প্রদীপমালা দ্বারা এবং করলাম সুরক্ষিত। এটা পরাক্রমশালী সর্বজ্ঞ আল্লাহর ব্যবস্থাপনা।

১৩. তারা যদি বিমুখ হয় তবে বলঃ আমি তো তোমাদেরকে সতর্ক করছি এক (আযাবের) বজ্রের; আ'দ ও সামুদের বজ্রের অনুরূপ।

১৪. যখন তাদের নিকট রাসূলগণ এসেছিলেন তাদের সম্মুখ ও পশ্চাৎ হতে (এবং বলেছিলেন) তোমরা আল্লাহ ব্যতীত কারো ইবাদত করো না। তখন তারা বলেছিলঃ আমাদের প্রতিপালকের এইরূপ ইচ্ছা হলে তিনি অবশ্যই ফেরেশতা প্রেরণ করতেন। অতএব তোমরা যেসব সহ প্রেরিত হয়েছো, আমরা তা প্রত্যাখ্যান করছি।

১৫. আর আ'দ সম্প্রদায়ের ব্যাপার এই যে, তারা পৃথিবীতে অযথা দস্ত করতো এবং বলতোঃ আমাদের অপেক্ষা শক্তিশালী কে আছে? তারা কি তবে লক্ষ্য করেনি যে, আল্লাহ, যিনি তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, তিনি তাদের অপেক্ষা শক্তিশালী? অথচ

وَلِلْأَرْضِ اثْبَتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ط قَالَتَا أَتَيْنَا ط
طَاعِيَيْن ۝

فَقَضَيْنَ سَبْعَ سَلَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ
سَاءٍ أَمْرَهَا ط وَرَبَّنَا السَّبَاءُ الدُّنْيَا بَصَابِيحُ ط
وَحِفْظًا ط ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ طُغْيَانًا مِثْلَ
طُغْيَانِ عَادٍ وَثَمُودَ ۝

إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ط قَالُوا لَوْ شَاءَ
رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ
كٰفِرُونَ ۝

فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ط أَوْ لَمْ
يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ
قُوَّةً ط وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝

তারা আমার নিদর্শনাবলীকে
অস্বীকার করতো।

১৬. অতঃপর আমি তাদেরকে পার্থিব
জীবনে শান্তি আশ্বাদন করাবার জন্যে
তাদের বিরুদ্ধে অশুভ দিনে প্রেরণ
করেছিলাম প্রচন্ড ঘূর্ণিঝড়।
পরকালের শান্তি তো অধিকতর
লাঞ্ছনাদায়ক এবং তাদের সাহায্য
করা হবে না।

১৭. আর সামুদ সম্প্রদায়ের ব্যাপার
তো এই যে, আমি তাদেরকে পথ-
নির্দেশ করেছিলাম; কিন্তু তারা
সৎপথের পরিবর্তে অন্ধত্ব (ভ্রান্ত পথ)
অবলম্বন করেছিল। অতঃপর তাদের
কৃতকর্মের পরিণাম স্বরূপ লাঞ্ছনা-
দায়ক বজ্র (শান্তি) আঘাত হানলো।

১৮. আমি উদ্ধার করলাম তাদেরকে
যারা ঈমান এনেছিল এবং যারা
তাকওয়া অবলম্বন করতো।

১৯. যেদিন আল্লাহর শত্রুদেরকে
জাহান্নামে অভিমুখে সমবেত করা হবে
সেদিন তাদেরকে তাড়িয়ে নিয়ে
যাওয়া হবে বিভিন্ন দলে,

২০. পরিশেষে যখন তারা
জাহান্নামের সন্নিকটে পৌছবে তখন
তাদের কর্ণ, চক্ষু ও ত্বক (চামড়া)
তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে সাক্ষ্য দিবে।

২১. জাহান্নামীরা তাদের ত্বককে
জিজ্ঞেস করবেঃ তোমরা আমাদের
বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিচ্ছি কেন? উত্তরে
তারা বলবেঃ আল্লাহ, যিনি
সবকিছুকে বাকশক্তি দিয়েছেন তিনি
আমাদেরকেও বাকশক্তি দিয়েছেন।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَجَسَاتٍ
لِنُنذِرَنَّهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ط
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْزَىٰ وَهُمْ لَا يُنصُرُونَ ﴿١٦﴾

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعُلَىٰ عَلَى
الْهُدَىٰ فَآخَذْنَاهُمْ صِغَةً الْعَذَابِ الْهُونِ
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾

يَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ
يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ
وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

وَقَالُوا لِمَ يُجْلَدُونَهُمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا
أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَالْأَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾

তিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন প্রথম বার এবং তাঁরই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

২২. তোমরা কিছু গোপন করতে না এই বিশ্বাসে যে, তোমাদের কর্ণ, চক্ষু এবং ত্বক তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে না— উপরন্তু তোমরা মনে করতে যে, তোমরা যা করতে তার অনেক কিছুই আল্লাহ জানেন না।

২৩. তোমাদের প্রতিপালক সম্বন্ধে তোমাদের এই ধারণাই তোমাদের ধ্বংস এনেছে। ফলে তোমরা হয়েছো ক্ষতিগ্রস্ত।

২৪. এখন তারা ধৈর্যধারণ করলেও জাহান্নামই হবে তাদের আবাস এবং তারা অনুগ্রহ চাইলেও তারা অনুগ্রহ প্রাপ্ত হবে না।

২৫. আমি তাদের জন্যে নির্ধারণ করে দিয়েছিলাম সহচর যারা তাদের সম্মুখ ও পশ্চাতে যা আছে তা তাদের দৃষ্টিতে শোভন করে দেখিয়েছিল এবং তাদের ব্যাপারেও তাদের পূর্ববর্তী জ্বিন ও মানবদের ন্যায় শাস্তির কথা বাস্তব হয়েছে। তারা তো ছিল ক্ষতিগ্রস্ত।

২৬. কাফিররা বলেঃ তোমরা এই কুরআন শ্রবণ করো না এবং তা তিলাওয়াতকালে শোরগোল সৃষ্টি কর যাতে তোমরা জয়ী হতে পার।

২৭. আমি অবশ্যই কাফিরদেরকে কঠিন শাস্তি আন্বাদন করাবো এবং নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে নিকৃষ্ট কার্যকলাপের বিনিময় দিবো।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ اللَّهُ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا لَهُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾

فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

২৮. জাহান্নাম, এটাই আল্লাহর শত্রুদের পরিণাম; সেখানে তাদের জন্যে রয়েছে স্থায়ী আবাস আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকৃতির প্রতিফল স্বরূপ।

২৯. কাফিররা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! যেসব জ্বিন ও মানব আমাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছিল তাদের উভয়কে দেখিয়ে দিন, আমরা উভয়কে পদদলিত করবো, যাতে তারা নিম্ন শ্রেণীর অন্তর্ভুক্ত হয়।

৩০. নিশ্চয়ই যারা বলেঃ আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ, অতঃপর অবিচলিত থাকে, তাদের নিকট অবতীর্ণ হয় ফেরেশতা এবং বলেঃ তোমরা ভীত হয়ো না, চিন্তিত হয়ো না এবং তোমাদেরকে যে জান্নাতের প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছিল তার সুসংবাদ পেয়ে আনন্দিত হও।

৩১. আমরাই তোমাদের বন্ধু দুনিয়ার জীবনে ও আখিরাতে; সেখানে তোমাদের জন্যে রয়েছে যা কিছু তোমাদের মন চায় এবং সেখানে তোমাদের জন্যে রয়েছে যা তোমরা চাইবে।

৩২. এটা হলো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু আল্লাহর পক্ষ হতে আপ্যায়ন।

৩৩. ঐ ব্যক্তি অপেক্ষা কথায় কে উত্তম যে আল্লাহর দিকে মানুষকে আহ্বান করে, সৎ কর্ম করে এবং বলেঃ আমি তো আত্মসমর্পণকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

৩৪. ভাল এবং মন্দ সমান হতে পারে না। মন্দ প্রতিহত কর উৎকৃষ্ট

ذٰلِكَ جَزَاءُ اَعْدَاءِ اللّٰهِ النَّارُ ۗ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ
الْخٰلِدِ ۗ جَزَاءٌ لِّمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿۲۸﴾

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَا اٰرِنَا الَّذِيْنَ اَصَلْنَا
مِّنَ الْجِيْنِ وَالْاِنْسِ نَجْعَلُهُمَّ تَحْتِ اَقْدَامِنَا
لِيَكُوْنُوْا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿۲۹﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبَّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَفْتٰهُمْ اَنْتَزَلُوْا
عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخٰفُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشُرُوْا
بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُوْنَ ﴿۳০﴾

نَحْنُ اَوْلٰٓئِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاٰلِ الْاٰخِرَةِ ۗ
وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا
مَا تَدْعُوْنَ ﴿۳১﴾

نُّزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿۳২﴾

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ
صٰلِحًا وَقَالَ اِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۳৩﴾

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۗ ط اِدْفَعْ بِالَّتِي

দ্বারা; ফলে, তোমার সাথে যার শত্রুতা আছে, সে হয়ে যাবে অন্তরঙ্গ বন্ধুর মত।

৩৫. এই গুণের অধিকারী করা হয় শুধু তাদেরকেই যারা ধৈর্যশীল, এই গুণের অধিকারী করা হয় শুধু তাদেরকে যারা মহা ভাগ্যবান।

৩৬. যদি শয়তানের কুমন্ত্রনা তোমাকে প্ররোচিত করে তবে আল্লাহর আশ্রয় নিবে। তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

৩৭. তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে রজনী ও দিবস, সূর্য ও চন্দ্র। তোমরা সূর্যকে সিজদা করো না, চন্দ্রকেও নয়; সিজদা কর আল্লাহকে, যিনি এইগুলো সৃষ্টি করেছেন, যদি তোমরা তাঁরই ইবাদত কর।

৩৮. তারা অহংকার করলেও যারা তোমার প্রতিপালকের সান্নিধ্যে রয়েছে (ফেরেশতাগণ) তারা তো দিবস ও রজনীতে তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং তারা ক্লাস্তি ও বোধ করে না।

৩৯. আর তাঁর একটি নিদর্শন এই যে, তুমি ভূমিকে দেখতে পাও শুষ্ক, অতপর আমি তাতে বৃষ্টি বর্ষণ করলে তা আন্দোলিত ও স্ফীত হয়; যিনি ভূমিকে জীবিত করেন তিনিই মৃতের জীবন দানকারী। তিনি তো সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

৪০. যারা আমার আয়াতসমূহকে বিকৃত করে তারা আমার অগোচরে নয়। শ্রেষ্ঠ কে? যে ব্যক্তি জাহান্নামে

هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۗ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٦﴾

وَأَمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٧﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ الْبَيْتُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٨﴾

فَإِن اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٣٩﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَّتْ ۗ وَإِنِّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُبْحِي الْمَوْتَى ۗ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۗ أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا

নিষ্কিণ্ড হবে সে, না যে কিয়ামতের দিন নিরাপদে থাকবে সে! তোমাদের যা ইচ্ছা কর; তোমরা যা কর তিনি তার দ্রষ্টা।

৪১. যারা তাদের নিকট কুরআন আসার পর তা প্রত্যাখ্যান করে (তাদেরকে কঠিন শাস্তি দেয়া হবে;) এটা অবশ্যই এক মহিমাময় গ্রন্থ।

৪২. কোন মিথ্যা এতে অনুপ্রবেশ করবে না— অগ্র হতেও নয়, পশ্চাত হতেও নয়। এটা প্রজ্ঞাবান, প্রশংসনীয় আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ।

৪৩. তোমার সম্বন্ধে তো তাই বলা হয় যা বলা হতো তোমার পূর্ববর্তী রাসূলদের সম্পর্কে। তোমার প্রতিপালক অবশ্যই ক্ষমাশীল এবং কঠিন শাস্তিদাতা।

৪৪. আমি যদি আজমী ভাষায় কুরআন অবতীর্ণ করতাম তবে তারা অবশ্যই বলতো, এর আয়াতগুলো বিশদভাবে বর্ণনা হয়নি কেন? কি আশ্চর্য যে, এর ভাষা আজমী, অথচ রাসূল আরবীয়। বলঃ মু'মিনদের জন্যে এটা পথ-নির্দেশ ও ব্যাধির প্রতিকার; কিন্তু যারা অবিশ্বাসী তাদের কর্ণে রয়েছে বধিরতা এবং কুরআন হবে তাদের জন্যে অন্ধত্ব। তারা এমন যে, যেন তাদেরকে আহ্বান করা হয় বহু দূর হতে।

৪৫. আমি তো মূসা (ﷺ)-কে কিতাব দিয়েছিলাম, অতঃপর এতে মতভেদ ঘটেছিল। তোমার প্রতি-

يَوْمَ الْقِيَامَةِ ط اَعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ لَئِنَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤١﴾

لَئِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ
لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤٢﴾

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ
خَلْفِهِ ط تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَبِيدٍ ﴿٤٣﴾

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ط
لَئِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٤﴾

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَبِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ
آيَاتُهُ ط أَعْجَبِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ط قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا
هُدًى وَشِفَاءٌ ط وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ
وَقُرْءَانَهُمْ عَلَيْهِمْ عَسَى ط أُولَٰئِكَ يُنَادُونَ مِنْ
مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٥﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ط وَلَوْلَا

পালকের পক্ষ হতে পূর্ব সিদ্ধান্ত না থাকলে তাদের মীমাংসা হয়ে যেতো। তারা অবশ্যই এর সম্বন্ধে বিভ্রান্তিকর সন্দেহে রয়েছে।

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ
لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿٣٥﴾

৪৬. যে সৎ আমল করে সে নিজের কল্যাণের জন্যেই তা করে এবং কেউ মন্দ আমল করলে ওর প্রতিফল সেই ভোগ করবে। তোমার প্রতিপালক তাঁর বান্দাদের প্রতি কোন যুলুম করেন না।^১

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۚ
وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٣٦﴾

১। আবু মুসা আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মুসলমান, ইয়াহুদী ও খ্রিস্টানদের উদাহরণ হলো এরূপঃ যেমন কোন ব্যক্তি নির্দিষ্ট মজুরীতে একদিন সকাল থেকে সন্ধ্যা পর্যন্ত কাজ করার জন্য একদল লোক নিযুক্ত করলেন। তারা দুপুর পর্যন্ত কাজ করে বলল, আপনি আমাদেরকে যে মজুরী দিতে চেয়েছিলেন তাতে আমাদের প্রয়োজন নেই। আর আমরা যা করেছি তার জন্য কোন দাবীও নেই। তিনি (নিয়োগকর্তা) তাদেরকে বললেন, তোমরা এরূপ করিও না। বাকী কাজ সমাধা করে পুরা মজুরী নিয়ে নাও; কিন্তু তারা তা করতে অস্বীকার করল এবং কাজ ত্যাগ করল। তখন তিনি তাদের স্থলে অপর লোকদেরকে নিযুক্ত করলেন এবং তাদেরকে বললেন, তোমরা দিনের অবশিষ্টাংশ পুরা কর। আমি পূর্ববর্তীদের যে মজুরী দিতে চেয়েছিলাম তা তোমরা পাবে। তারা কাজ আরম্ভ করল; কিন্তু যখন আসর নামাযের সময় হল তখন তারা বলতে লাগল, আমরা আপনাদের জন্য যে কাজ করেছি তা ফ্রী আর আপনি এর জন্য যে মজুরী দিতে চেয়েছিলেন তা আপনারই থাকল। ঐ ব্যক্তি বললেন তোমাদের অবশিষ্টাংশ কাজ শেষ কর, দিনের তো আর সামান্যই বাকী রয়েছে; কিন্তু তারা অস্বীকার করল। তখন ঐ ব্যক্তি অপর এক (তৃতীয়) দলকে বাকী দিনের জন্য কাজে নিযুক্ত করলেন। তারা সূর্যাস্ত পর্যন্ত বাকী দিন কাজ করল এবং পূর্ববর্তী দু'দলের পুরো মজুরী নিয়ে নিল। এটাই হল তাদের এবং যে নূর (ইসলাম) তারা কবুল করেছে তার উপমা। (বুখারী, হাদীস নং ২২৭১)

৪৭. কিয়ামতের জ্ঞান আল্লাহর দিকেই প্রবর্তিত, তাঁর অজ্ঞাতসারে কোন ফল আবরণী হতে বের হয় না, কোন নারী গর্ভধারণ করে না এবং সন্তানও প্রসব করে না, যেদিন আল্লাহ তাদেরকে (মুশরিকদেরকে) ডেকে বলবেনঃ আমার শরীকরা কোথায়? তখন তারা বলবেঃ আমরা আপনাকে বলে দিয়েছি যে, এই ব্যাপারে আমাদের মধ্যে কেউ সাক্ষী নেই।

৪৮. পূর্বে তারা যাদেরকে আহ্বান করতো তারা অদৃশ্য হয়ে যাবে এবং অংশীবাদীরা উপলব্ধি করবে যে, তাদের মুক্তির কোন উপায় নেই।

৪৯. মানুষ কল্যাণ (ধন-সম্পদ) প্রার্থনায় কোন ক্লাস্তিবোধ করে না; কিন্তু যখন তাকে দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করে তখন সে অত্যন্ত নিরাশ ও হতাশ হয়ে পড়ে।

৫০. দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করবার পর যদি তাকে আমি অনুগ্রহের আশ্বাদ দিই তখন সে বলেই থাকেঃ এটা আমার প্রাপ্য এবং আমি মনে করি না যে, কিয়ামত সংঘটিত হবে, আর আমি যদি আমার প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তিত হইও তবে তাঁর নিকট তো আমার জন্যে কল্যাণই থাকবে। আমি কাফিরদেরকে তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে অবশ্যই অবহিত করবো এবং তাদেরকে আশ্বাদান করাবো কঠোর শাস্তি।

৫১. যখন আমি মানুষকে নেয়ামত প্রদান করি তখন সে অহংকারবশতঃ

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ
ثَمَرَاتٍ مِنَ الْكِبَاوِمَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى
وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيُّنَ
شُرَكَائِي قَالُوا أَدْذُكَ مَا مِنَّا مِنْ
شَهِيدٍ ۝

وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ
وَظَنُّوا مَا لَهُمْ مِنْ مَّجِيصٍ ۝

لَا يَسْعَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ
الشَّرُّ فَيَعْوِسُ فَنُوحُوتٍ ۝

وَلِئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ
لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۝
وَلِئِنْ رُجِعْتُ إِلَى رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْفَى ۝
فَلَنُنذِرَ تِلْكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُنذِرَنَّهُمْ
مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَى بِجَانِبِهِ ۝

মুখ ফিরিয়ে নেয় ও দূরে সরে যায় এবং তাকে অনিষ্ঠ স্পর্শ করলে সে তখন দীর্ঘ প্রার্থনায় রত হয়ে যায়।

৫২. বলঃ তোমাদের অভিমত কি, যদি (এই কুরআন) আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ হয়ে থাকে এবং তোমরা এটা প্রত্যাখ্যান কর তবে যে ব্যক্তি ঘোর বিরোধিতায় লিপ্ত আছে, তার অপেক্ষা অধিক পথভ্রষ্ট কে?

৫৩. আমি তাদেরকে অতিসত্ত্বর আমার নিদর্শনাবলী দেখাবো বিশ্বজগতে এবং তাদের নিজেদের মধ্যে; ফলে তাদের নিকট সুস্পষ্ট হয়ে উঠবে যে, ওটাই সত্য। এটা কি যথেষ্ট নয়, তোমার প্রতিপালক সর্ববিষয়ে অবহিত?

৫৪. জেনে রেখো এরা এদের প্রতিপালকের সাথে সাক্ষাৎকারে সঙ্কিহান; জেনে রেখো; সব কিছুকেই আল্লাহ পরিবেষ্টন করে রয়েছে।

وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَدُودُ دُعَاءِ عَرِيضٍ ①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ
كَفَرْتُمْ بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقِ
بُعِيدٍ ②

سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّى
يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ③

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مَرِيَّةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ وَالْآرَاءُ
بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ④

সূরাঃ শূরা, মাঝী

(আয়াতঃ ৫৩, রুকুঃ ৫)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الشُّرَىٰ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٥٣ رُكُوعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. হা-মীম,

حَمِّ ①

২. 'আঈন-সীন-কা'-ফ

عَسَق ②

৩. পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান আল্লাহ
এভাবেই তোমার প্রতি এবং তোমার
পূর্ববর্তীদের প্রতি ওহী করেন।

كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكَ ۗ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

৪. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা
কিছু আছে তা তাঁরই। তিনি সমুন্নত,
মহান।

لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ④

৫. আকাশমন্ডলী তার উর্ধদেশ হতে
ফেটে (ভেঙ্গে) পড়ার উপক্রম হয়
এবং ফেরেশতারা তাদের
প্রতিপালকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও
মহিমা ঘোষণা করে এবং জগ-
দ্বাসীদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে।
সাবধান! নিশ্চয় আল্লাহ, তিনি অতি
ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرٰنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِنَّ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِهِنَّ فِي
الْاَرْضِ ۗ اَلَا اِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑤

৬. যারা আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে
অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে, আল্লাহ
তাদের প্রতি কঠোর দৃষ্টি রাখেন।
তুমি তাদের তত্ত্বাবধায়ক নও।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۗ اللَّهُ
حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۗ وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ⑥

৭. এভাবে আমি তোমার প্রতি
কুরআন অবতীর্ণ করেছি আরবী
ভাষায়, যাতে তুমি সতর্ক করতে পার
মক্কা এবং ওর চতুর্দিকের জনগণকে
এবং সতর্ক করতে পার হাশর
(কিয়ামত) দিবস সম্পর্কে যাতে
কোন সন্দেহ নেই; (সেদিন) এক

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرَ
اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ۗ وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجُمُعِ
لَا رَيْبَ فِيْهِ ۗ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ
فِي السَّعِيْرِ ⑦

দল জান্নাতে প্রবেশ করবে এবং একদল জাহান্নামে প্রবেশ করবে।

৮. আল্লাহ ইচ্ছা করলে মানুষকে একই উম্মত করতে পারতেন; বস্তুত তিনি যাকে ইচ্ছা তাকে স্বীয় রহমতের অধিকারী করেন; যালিমদের কোন অভিভাবক নেই, কোন সাহায্যকারী ও নেই।

৯. তারা কি আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করেছে? কিন্তু আল্লাহ, অভিভাবক তো তিনিই এবং তিনি মৃতকে জীবিত করেন। তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

১০. তোমরা যে বিষয়েই মতভেদ কর না কেন, ওর ফয়সালা তো আল্লাহরই নিকট। (বলঃ) তিনিই আল্লাহ, আমার প্রতিপালক। আমি ভরসা করি তাঁর উপর এবং আমি তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন করি।

১১. তিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা, তিনি তোমাদের মধ্য হতে তোমাদের জোড়া সৃষ্টি করেছেন এবং চতুঃপদ জন্তুগুলোর মধ্য হতে (তাদের) জোড়া; এভাবে তিনি তাতে তোমাদের বংশ বিস্তার করেন; কোন কিছুই তাঁর সদৃশ নয়, তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

১২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর চাবিসমূহ তাঁরই নিকট। তিনি যার প্রতি ইচ্ছা তার রিযিক বর্ধিত করেন অথবা সংকুচিত করেন। তিনি সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَّرِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ①

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۗ قَالَ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۗ ذُكِّرْ لَكُمْ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۗ وَالْيَهُ أُنِيبُ ③

فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۗ يَذُرُّوكُمْ فِيهِ ۗ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ④

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑤

১৩. তিনি তোমাদের জন্যে নির্ধারণ করেছেন দ্বীন যার নির্দেশ দিয়েছিলেন তিনি নূহ (ﷺ)-কে আর যা আমি ওহী করেছিলাম তোমাকে এবং যার নির্দেশ দিয়েছিলাম ইবরাহীম (ﷺ), মুসা (ﷺ) ও ঈসা (ﷺ)-কে, এই বলে যে, তোমরা এই দ্বীনকে (তাওহীদকে) প্রতিষ্ঠিত কর এবং ওতে মতভেদ করো না। তুমি মুশরিকদেরকে যার প্রতি আস্থান করছো তা তাদের নিকট কঠিন মনে হয়। আল্লাহ যাকে ইচ্ছা তাঁর জন্যে চয়ন করে নেন এবং যে তাঁর দিকে প্রত্যাবর্তন করে, তাকে দ্বীনের দিকে পরিচালিত করেন।

১৪. তাদের নিকট তাওহীদের জ্ঞান আসার পরও শুধুমাত্র পারস্পরিক বাড়াবাড়ির কারণে তারা নিজেদের মধ্যে মতভেদ ঘটায়; এক নির্ধারিত কাল পর্যন্ত অবকাশ সম্পর্কে তোমার প্রতিপালকের পূর্ব সিদ্ধান্ত না থাকলে তাদের বিষয়ে ফায়সালা হয়ে যেতো। তাদের পর যারা কিভাবে উত্তরাধিকারী হয়েছে তারা বিভ্রান্তি কর সন্দেহে রয়েছে।

১৫. সুতরাং তুমি ওর দিকে (সবাইকে) আস্থান কর এবং এতেই দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত থাকো যেভাবে তুমি আদিষ্ট হয়েছে এবং তাদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না। বলঃ আল্লাহ যে কিভাবে অবতীর্ণ করেছেন আমি তাতে বিশ্বাস করি এবং আদিষ্ট হয়েছে তোমাদের মধ্যে ইনসাফ করতে।

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا
وَ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ
وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا
فِيهِ ط كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ
إِلَيْهِ ط اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ط

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ ط وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ
إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ ط وَإِنَّ الَّذِينَ
أُورِثُوا الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ
مُرِيْبٍ ۝

فَلِذَلِكَ فَادَعُ ۙ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۙ وَلَا تَتَّبِعْ
أَهْوَاءَهُمْ ۙ وَقُلْ آمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ
كِتَابٍ ۙ وَأُمِرْتُ لِإِعْدَالٍ بَيْنَكُمْ ط اللَّهُ رَبُّنَا
وَرَبُّكُمْ ط لَنَا أَعْمَالُنَا وَلكُمْ أَعْمَالُكُمْ ط

আল্লাহই আমাদের প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালক আমাদের আমল আমাদের এবং তোমাদের আমল তোমাদের; আমাদের এবং তোমাদের মধ্যে কোন ঝগড়া-বিবাদ নেই। আল্লাহই আমাদেরকে একত্রিত করবেন এবং প্রত্যাবর্তন তাঁরই নিকট।

১৬. যারা আল্লাহ সম্পর্কে বিতর্ক করে আল্লাহকে মেনে নেয়ার পর, তাদের যুক্তি-তর্ক তাদের প্রতিপালকের দৃষ্টিতে অসার এবং তাদের প্রতি রয়েছে (আল্লাহর) ক্রোধ এবং তাদের জন্যে রয়েছে কঠিন শাস্তি।

১৭. আল্লাহই অবতীর্ণ করেছেন সত্যসহ কিতাব এবং দাঁড়ি পাল্লা। তুমি কি জান, সম্ভবতঃ কিয়ামত নিকটবর্তী?

১৮. যারা এর প্রতি বিশ্বাস করে না তারাই এটার জন্য তড়িঘড়ি করে। আর যারা বিশ্বাসী তারা একে ভয় করে এবং জানে যে, গুটা সত্য। সাবধান! কিয়ামত সম্পর্কে যারা তর্ক-বিতর্ক করে তারা গভীর বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

১৯. আল্লাহ তাঁর বান্দাদের প্রতি অতি দয়ালু; তিনি যাকে ইচ্ছা রিযিক দান করেন। তিনি প্রবল শক্তিশালী, পরাক্রমশালী।

২০. যে আখিরাতের ফসল কামনা করে তার জন্যে আমি তার ফসল বর্ধিত করে দিই এবং যে দুনিয়ার

لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۗ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۗ
وَالِيهِ الْمَصِيرُ ۝

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ
لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ
غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ
وَمَا يَذُرُّكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۝

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۗ وَالَّذِينَ
آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا ۗ وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ
الْآنَ الَّذِينَ يُبَاؤُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۗ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۗ
وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۗ

ফসল কামনা করে আমি তাকে এরই কিছু দিই, আখিরাতে তার জন্যে কিছুই থাকবে না।

২১. তাদের কি এমন কতকগুলো শরীকও আছে যারা তাদের জন্যে স্বীনের এমন বিধান প্রবর্তন করেছে যার অনুমতি আল্লাহ দেননি? ফায়সালার ঘোষণা না থাকলে তাদের বিষয়ে তো সিদ্ধান্ত হয়েই যেতো। নিশ্চয়ই যালিমদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

২২. তুমি যালিমদেরকে ভীত-সন্ত্রস্ত দেখবে তাদের কৃতকর্মের জন্যে; আর এটাই আপত্তি হবে তাদের উপর। যারা ঈমান আনে ও আমল করে তারা থাকবে জান্নাতের বাগানসমূহে। তারা যা কিছু চাইবে তাদের প্রতিপালকের নিকট তাই পাবে। এটাই তো মহা অনুগ্রহ।

২৩. এই সুসংবাদই আল্লাহ দেন তাঁর সেই বান্দাদেরকে যারা ঈমান আনে ও সৎ আমল (সুন্নাত অনুযায়ী আমল) করে। বলঃ আমি এর বিনিময়ে তোমাদের নিকট হতে আত্মীয়তার ভালবাসা ব্যতীত অন্য কোন বিনিময় চাই না। যে উত্তম কাজ করে আমি তার জন্যে এতে কল্যাণ বর্ধিত করি। আল্লাহ ক্ষমাশীল, গুণগ্রাহী।

২৪. তারা কি বলে যে, সে (রাসূল) আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যা বানিয়েছে, সুতরাং যদি আল্লাহ ইচ্ছা করেন তবে তোমার হৃদয় মোহর করে দিবেন।

وَمَا لَهُ فِي الْأَخْرَجَةِ مِنْ نَصِيبٍ ﴿٢١﴾

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ
بِهِ اللَّهُ ط وَوَلَا كَلِمَةَ الْفَصْلِ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ ط
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

تَرَىٰ الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ
وَاقِعٌ بِهِمْ ط وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فِي رَوْضَةٍ أَلْبَنَةٍ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ط ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ط قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا
إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ ط وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً
نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا ط إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٢٤﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَإِنْ يَشَاءِ اللَّهُ
يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ط وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحْيِي

আল্লাহ মিথ্যাকে মুছে দেন এবং নিজ বানী দ্বারা সত্যকে প্রতিষ্ঠিত করেন। অন্তরে যা আছে সে বিষয়ে তিনি তো সবিশেষ অবহিত।

الْحَقُّ بِكَلِمَاتِهِ ط إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿۳۳﴾

২৫. তিনিই তাঁর বান্দাদের তাওবা কবুল করেন এবং পাপ মোচন করেন এবং তোমরা যা কর তিনি তা জানেন।

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿۳۴﴾

২৬. তিনি মু'মিন ও সৎ আমল-কারীদের আহ্বানে সাড়া দেন এবং তাদের প্রতি তাঁর অনুগ্রহ বর্ধিত করেন; কাফিরদের জন্যে রয়েছে কঠিন শাস্তি।

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ط وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿۳۵﴾

২৭. আল্লাহ তাঁর বান্দাদের রুখী বাড়িয়ে দিলে তারা পৃথিবীতে অবশ্যই সীমালঙ্ঘন করতো; কিন্তু তিনি তাঁর ইচ্ছামত পরিমাণেই দিয়ে থাকেন। তিনি তাঁর বান্দাদের সম্পর্কে সম্যক জানেন ও দেখেন।

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقَدَرٍ مَا يَشَاءُ ط إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿۳۬﴾

২৮. তারা তখন নিরাশ হয়ে পড়ে তখনই তিনি বৃষ্টি বর্ষণ করেন এবং

وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا

১। শাদ্দাদ ইবনে আউস (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, “সাইয়েদুল ইস্তিগফার (সর্বোৎকৃষ্ট ইস্তিগফার) হচ্ছে বান্দাহর এটা বলাঃ “আল্লাহুম্মা আনতা রাক্বী লা-ইলাহা ইল্লা আনতা, খালাকতানী ওয়া আনা আবদুকা ওয়া আনা ‘আলা ‘আহদিকা ওয়া ওয়া’দিকা মাসজাতা’তু, আউযুবিকা মিন শাররি মা সানা’তু আবু-উলাকা বিনি’মাতিকা আলাইয়্যা ওয়া আবুউলাকা বিযান্বী ইগফিরলী ফাইল্লাহ, লা-ইয়াগফিরখযুম্বা ইল্লা আনতা।” অর্থাৎ “হে আল্লাহ! তুমিই আমার রব, তুমি ভিন্ন আর ইলাহ নেই। তুমি আমাকে সৃষ্টি করেছ। আমি তোমার গোলাম। আমি যথাসাধ্য তোমার সাথে কৃত ওয়াদা অঙ্গীকারের ওপর দৃঢ় থাকব। আমার কৃত কর্মের কুফল ও মন্দ পরিণাম থেকে তোমার নিকট পানাহ চাই। তুমি আমাকে যে সব নেয়ামত দিয়েছ, আমি সেসব নেয়ামতের কথা স্বীকার করছি এবং স্বীকার করছি আমার গুনাহর কথাও। তুমি আমাকে মাফ কর। কেননা তুমি ছাড়া গুনাহ মাফ করার আর কেউ নেই।”

রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি এ কথাগুলি দিনের বেলায় দৃঢ় প্রত্যয়ের সাথে বলে এবং সন্ধ্যা হওয়ার আগে ওই দিনেই মারা যায় তবে সে জান্নাতবাসী। আর যে ব্যক্তি তা রাত্রিবেলা আন্তরিকতার সাথে বলে এবং সকাল হওয়ার আগেই মারা যায়, তবে সে ও জান্নাতী। (বুখারী, হাদীস নং ৬৩০৬)

তাঁর করুণা বিস্তার করেন। তিনিই তো অভিভাবক, সর্বপ্রশংসিত।

وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٩﴾

২৯. তাঁর মহা নিদর্শনের অন্তর্ভুক্ত হলো আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টি এবং এতোদুভয়ের মধ্যে তিনি যেসব জীবজন্তু ছড়িয়ে দিয়েছেন সেগুলো; তিনি যখন ইচ্ছা তখনই ওদেরকে সমবেত করতে সক্ষম।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ط وَهُوَ عَلَىٰ جَعِبِهِمْ إِذَا يُشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٣٠﴾

৩০. তোমাদের যে বিপদ-আপদ ঘটে তা তো তোমাদেরই হাতের কামাইয়ের ফল এবং তোমাদের অনেক অপরাধ তিনি ক্ষমা করে দেন।

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فِيمَا كَسَبْتُمْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣١﴾

৩১. তোমরা পৃথিবীতে (আল্লাহকে) ব্যর্থ করতে পারবে না এবং আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের কোন অভিভাবক নেই, সাহায্যকারীও নেই।

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ط وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣٢﴾

৩২. তাঁর মহা নিদর্শনের অন্তর্ভুক্ত হলো পর্বত সদৃশ সমুদ্রে চলমান নৌযানসমূহ।

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٣﴾

৩৩. তিনি ইচ্ছা করলে বায়ুকে স্তব্ধ করে দিতে পারেন; ফলে নৌযানসমূহ অচল হয়ে পড়বে সমুদ্র পৃষ্ঠে। নিশ্চয়ই এতে নিদর্শন রয়েছে ধৈর্যশীল ও কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে।

إِنْ يَشَاءُ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ط إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٤﴾

৩৪. অথবা তিনি তাদের কৃতকর্মের ফলে সেগুলোকে ধ্বংস করে দিতে পারেন এবং অনেককে তিনি ক্ষমাও করেন।

أَوْ يُوقِفَهُنَّ بِمَا كَسَبْنَ وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٥﴾

৩৫. আর আমার নিদর্শনাবলী সম্পর্কে যারা তর্কে লিপ্ত হয়। তারা যেন অবহিত থাকে যে, তাদের (আযাব হতে) কোন মুক্তি নেই।

وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَّجِيصٍ ﴿٣٦﴾

৩৬. বস্তুতঃ তোমরা যা প্রদত্ত হয়েছ তা পার্থিব জীবনের ভোগ; কিন্তু আল্লাহর নিকট যা আছে তা উত্তম ও স্থায়ী, (ওগুলি) তাদের জন্যে যারা ঈমান আনে ও তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

৩৭. (ওগুলি তাদের জন্য) যারা কবির গোনাসমূহ ও অশীল কর্ম হতে বেঁচে থাকে এবং যখন তারা ক্রোধান্বিত হয় ক্ষমা করে দেয়।

৩৮. (ওগুলি তাদের জন্য) যারা তাদের প্রতিপালকের আস্থানে সাড়া দেয়, নামায প্রতিষ্ঠা করে, নিজেদের মধ্যে পরামর্শের মাধ্যমে তাদের কর্ম সম্পাদন করে এবং তাদেরকে আমি যে রিষিক দিয়েছি তা হতে ব্যয় করে।

৩৯. এবং (ওগুলি তাদের জন্য) যারা অত্যাচারিত হলে প্রতিশোধ গ্রহণ করে।

৪০. মন্দের প্রতিফল অনুরূপ মন্দ এবং যে ক্ষমা করে দেয় ও সংশোধন করে নেয়, তার বিনিময় আল্লাহর নিকট আছে। নিশ্চয়ই আল্লাহ যালিমদেরকে পছন্দ করেন না।

৪১. তবে অত্যাচারিত হবার পর যারা প্রতিশোধ নেয়, করে তাদের বিরুদ্ধে দোষারোপের কোন সুযোগ নেই।

৪২. শুধু তাদের বিরুদ্ধে দোষারোপ করা হবে যারা মানুষের উপর অত্যাচার করে এবং পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে বিদ্রোহাচরণ করে

فَمَا أوتَيْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كِبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿٣٧﴾

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْصِرُونَ ﴿٣٩﴾

وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

وَكَلِمَ اتَّصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤١﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

বেড়ায়। তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

৪৩. যে ধৈর্যধারণ করে এবং ক্ষমা করে দেয় তা হবে অবশ্যই দৃঢ় সাহসীকতাপূর্ণ কর্মসমূহের অন্তর্ভুক্ত।

৪৪. আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্যে তিনি ব্যতীত কোন অভিভাবক নেই। যালিমরা যখন আযাব প্রত্যক্ষ করবে তখন তুমি তাদেরকে বলতে শুনবেঃ প্রত্যা-বর্তনের কোন উপায় আছে কি?

৪৫. তুমি তাদেরকে দেখতে পাবে যে, তাদেরকে জাহান্নামের সামনে উপস্থিত করা হচ্ছে; তারা অপমানে অবনত অবস্থায় গোপনে পার্শ্ব চোখে তাকাচ্ছে। মু'মিনরা কিয়ামতের দিন বলবেঃ প্রকৃত ক্ষতিগ্রস্ত তারাই যারা কিয়ামতের দিন নিজেদের ও নিজেদের পরিজনবর্গের ক্ষতি সাধন করেছে। জেনে রাখো যে, যালিমরা ভোগ করবে স্থায়ী আযাব।

৪৬. আল্লাহ ব্যতীত তাদেরকে সাহায্য করার জন্যে তাদের কোন অভিভাবক থাকবে না এবং আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার (আত্মরক্ষার) কোন পথ নেই।

৪৭. তোমরা তোমাদের প্রতি-পালকের আহ্বান সাড়া দাও সেই

وَلَكِنَّ صَبْرًا وَغَفْرًا إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ دَلِيلٍ مِنْ بَعْدِهِ ۗ
وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَبَّاءُ الرَّأْوِ الْعَذَابِ يَتَوَتُّونَ
هَلْ إِلَى مَرَدٍّ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَشِيعِينَ مِنَ الدَّلِيلِ
يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٥﴾

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءٍ يَنْصُرُونَهُمْ مِنْ دُونِ
اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾

إِسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ

১। আনাস বিন মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক ব্যক্তি বললঃ “হে আল্লাহর রাসূল! কাফিরদেরকে কি কিয়ামতের দিন নিম্নমুখী করে একত্রিত করা হবে? তিনি বললেনঃ যিনি এ দুনিয়ায় তাকে দু’পায়ের ওপর হাঁটাতে পারলেন তিনি কি কিয়ামতের দিন তাকে নিম্নমুখী করে চালাতে পারবেন না? কাতাদা বলেছেন, হ্যাঁ, আমাদের রবের ইয্যতের শপথ তিনি এটা করতে সক্ষম। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৬০)

দিবস আসার পূর্বে যা আল্লাহর বিধানের অপ্রতিরূদ্ধ, যেদিন তোমাদের কোন আশ্রয়স্থল থাকবে না এবং তোমাদের জন্য তা নিরোধ করবার কেউ থাকবে না।

৪৮. তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তোমাকে তো আমি তাদের রক্ষক করে পাঠাইনি। তোমার দায়িত্ব তো শুধু প্রচার করে যাওয়া। আমি মানুষকে যখন আমার রহমত আন্বাদন করাই তখন সে এতে উৎফুল্ল হয় এবং যখন তাদের কৃতকর্মের জন্যে তাদের বিপদ-আপদ ঘটে তখন মানুষ হয়ে যায় অকৃতজ্ঞ।

৪৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কর্তৃত্ব আল্লাহরই। তিনি যা ইচ্ছা তা-ই সৃষ্টি করেন। তিনি যাকে ইচ্ছা কন্যা সন্তান দান করেন এবং যাকে ইচ্ছা পুত্র সন্তান দান করেন।

৫০. অথবা তাদেরকে দান করেন পুত্র ও কন্যা উভয়ই এবং যাকে ইচ্ছা তাকে করে দেন বক্ষ্যা, তিনি সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

৫১. মানুষের জন্য অসম্ভব যে, আল্লাহর তার সাথে কথা বলবেন ওহীর মাধ্যম ছাড়া, অথবা পর্দার অন্তরাল ব্যতিরেকে অথবা এমন দূত প্রেরণ ছাড়া, যে দূত তাঁর অনুমতিক্রমে তিনি যা চান তা ব্যক্ত করে, তিনি সমুন্নত, প্রজ্ঞাবান।

৫২. আর এভাবেই আমি তোমার প্রতি ওহী করেছি রুহ (কুরআন)

لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَأٍ
يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِنْ تَكْوِينٍ ﴿٤٨﴾

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا
إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلْغُ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ
مِثْلًا حَسَمًا فَرِحَ بِهَا وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ
بِمَا قَدَّمْتْ أَيْدِيَهُمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٩﴾

لِلَّهِ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ط
يَهْبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَّا ط وَ يَهْبُ لِمَنْ يَشَاءُ الدُّكُورُ ﴿٥٠﴾

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَّا ط وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ
عَقِيمًا ط إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥١﴾

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ
وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ
مَا يَشَاءُ ط إِنَّهُ عَلَى حَكِيمٍ ﴿٥٢﴾

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِنْ أَمْرِنَا ط مَا كُنْتَ

আমার নির্দেশে; তুমি তো জানতে না
কিতাব কি ও ঈমান কি পক্ষান্তরে
আমি একে করেছি আলো যা দ্বারা
আমি আমার বান্দাদের মধ্যে যাকে
ইচ্ছা পথ-নির্দেশ করি; তুমি অবশ্যই
প্রদর্শন কর সরল পথ—

৫৩. ঐ আল্লাহর পথ, যাঁর অধিপত্বে
রয়েছে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা
কিছু আছে। সাবধান! সকল বিষয়
আল্লাহরই দিকে প্রত্যাবর্তন করে।

تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا
تَهْدِي بِهِ مَنْ نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا وَإِنَّكَ
لَتَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٣﴾

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ط إِلَّا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

সূরাঃ যুখরুফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮৯, রুকূ'ঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الرُّحُوفِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّاهَا ٨٩ رُكُوعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ ﴿١﴾

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٣﴾

وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيَّ حَكِيمٌ ﴿٤﴾

أَفَتَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ نَكْتُمَ
قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ﴿٥﴾

১. হা-মীম,

২. শপথ সুস্পষ্ট কিতাবের;

৩. আমি এটা (অবতীর্ণ) করেছি
আরবী ভাষায় কুরআনরূপে, যাতে
তোমরা বুঝতে পার।

৪. এটা রয়েছে আমার নিকট উম্মুল
কিতাবে; (লাওহে মাহফুজে) এটা
উচ্চমর্যাদা সম্পন্ন প্রজ্ঞাময়।

৫. আমি কি তোমাদের হতে এই
উপদেশ বাণী (কুরআন) সম্পূর্ণরূপে
প্রত্যাহার করে নিবো এই কারণে যে,
তোমরা সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়?

৬. পূর্ববর্তীদের নিকট আমি কত নবী
প্রেরণ করেছিলাম।

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ﴿٦﴾

৭. এবং যখনই তাদের নিকট কোন নবী এসেছে তারা তাকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করেছে।

৮. তাদের মধ্যে যারা এদের অপেক্ষা শক্তিতে প্রবল ছিল তাদেরকে আমি ধ্বংস করেছিলাম; আর এভাবে চলে আসছে পূর্ববর্তীদের অনুরূপ দৃষ্টান্ত।

৯. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ কে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছে? তারা অবশ্যই বলবেঃ এগুলো তো সৃষ্টি করেছেন পরাক্রমশালী, সর্বজ্ঞ আল্লাহ।

১০. যিনি তোমাদের জন্যে পৃথিবীকে করেছেন শয্যা এবং ওতে করেছেন তোমাদের চলার পথ যাতে তোমরা সঠিক পথ পেতে পার;

১১. এবং যিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন পরিমিতভাবে এবং আমি তার দ্বারা জীবিত করি নির্জীব ভূ-খন্ডকে। এভাবেই তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে।

১২. এবং যিনি জোড়াসমূহের প্রত্যেককে সৃষ্টি করেন এবং যিনি তোমাদের জন্যে সৃষ্টি করেন এমন নৌযান ও চতুঃপদজন্তু যাতে তোমরা আরোহণ কর।

১৩. যাতে তোমরা ওদের পৃষ্ঠে স্থির হয়ে বসতে পার, তারপর তোমাদের প্রতিপালকের নিয়ামত স্মরণ কর যখন তোমরা ওর উপর স্থির হয়ে বস; এবং বলঃ পবিত্র ও মহান তিনি, যিনি এদেরকে আমাদের বশীভূত করে দিয়েছেন, যদিও আমরা সমর্থ ছিলাম না এদেরকে বশীভূত করতে।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٧﴾

فَاهْلِكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَ مِثْلُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾

وَلَيْنُ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٩﴾

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا
سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ
بَلَدَةً مَيْتًا ۚ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١١﴾

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْفُلْكِ
وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾

لِتَسْتَوُوا عَلَى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ
إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي
سَخَّرَلَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾

১৪. আমরা আমাদের প্রতিপালকের নিকট অবশ্যই প্রত্যাভর্তন করবো।

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٤﴾

১৫. তারা তাঁর (আল্লাহর) বান্দাদের মধ্য হতে তাঁর অংশ সাব্যস্ত করেছে। মানুষ তো স্পষ্টই অকৃতজ্ঞ।

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

১৬. তিনি কি তাঁর সৃষ্টি হতে নিজের জন্যে কন্যা সন্তান গ্রহণ করেছেন এবং তোমাদেরকে চয়ন করেছেন পুত্র সন্তান দ্বারা?

أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾

১৭. দয়াময় আল্লাহর প্রতি তারা যা আরোপ করে যখন তাদের কাউকেও সেই (কন্যা সন্তানের) সংবাদ দেয়া হলে তার মুখমন্ডল কালো হয়ে যায় এবং সে দুঃখে ভারাক্রান্ত হয়ে পড়ে।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾

১৮. তারা কি আল্লাহর প্রতি আরোপ করে এমন সন্তান, যে অলংকারে মন্ডিত হয়ে লালিত-পালিত হয় এবং তর্ক-বিতর্ককালে স্পষ্ট বক্তব্যে অসমর্থ?

أَوْ مَنْ يُنْشَأُ فِي الْجَنَّةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾

১৯. তারা দয়াময় আল্লাহর বান্দা ফেরেশতাদেরকে নারী গণ্য করেছে; এদের সৃষ্টির সময় কি তারা উপস্থিত ছিল? তাদের সাক্ষী লিপিবদ্ধ করা হবে এবং তাদেরকে জিজ্ঞেস করা হবে।

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ إِنثًا أَطَّٰشَ أَشْهَدُوا وَخَلَقَهُمْ سَتَاتِبُ شَهَادَتُهُمْ وَيَسْئَلُونَ ﴿١٩﴾

২০. তারা বলেঃ দয়াময় আল্লাহ ইচ্ছা করলে আমরা এদের পূজা করতাম না। এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান নেই; তারা তো শুধু আন্দাজে কথা বলে।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَّا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

২১. আমি কি তাদেরকে এর (কুরআনের) পূর্বে কোন কিতাব দান করেছি যা তারা দৃঢ়ভাবে ধারণ করে আছে?

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَسْبِحُونَ ﴿٢١﴾

২২. বরং তারা বলেঃ আমরা তো আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে পেয়েছি এক মতাদর্শের উপর এবং আমরা তাদেরই পদাঙ্ক অনুসরণ করে হেদায়েতপ্রাপ্ত।

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ
آثَرِهِمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

২৩. অনুরূপ তোমার পূর্বে কোন জনপদে যখনই কোন সতর্ককারী প্রেরণ করেছি তখন ওর সমৃদ্ধশালী ব্যক্তির বলতোঃ আমরা তো আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে পেয়েছি এক মতাদর্শের উপর এবং আমরা তাদেরই পদাঙ্ক অনুসরণ করছি।

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ
مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا
آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. সে (সতর্ককারী) বলতোঃ তোমরা তোমাদের পূর্বপুরুষদেরকে যে পথে পেয়েছো, আমি যদি তোমাদের জন্যে তদপেক্ষা উৎকৃষ্ট পথ-নির্দেশ আনয়ন করি তবুও কি? (তোমরা তাদের পদাঙ্ক অনুসরণ করবে?) তারা বলতোঃ তোমরা যা সহ প্রেরিত হয়েছো আমরা তা প্রত্যাখ্যান করি।

قُلْ أَوَلَوْ جِئْتُمْ بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ
آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٢٤﴾

২৫. অতঃপর আমি তাদের থেকে প্রতিশোধ গ্রহণ করলাম; দেখো, মিথ্যাচারীদের পরিণাম কি হয়েছে!

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

২৬. (স্মরণ কর,) যখন ইবরাহীম (عليه السلام) তার পিতা এবং সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা যাদের পূজা কর তাদের সাথে আমার কোন সম্পর্ক নেই।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي
بِرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾

২৭. সম্পর্ক আছে শুধু তাঁরই সাথে যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন এবং তিনিই আমাকে হেদায়েত দিবেন।

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾

২৮. এই (তাওহীদের) ঘোষণাকে সে স্থায়ী কালেমারূপে রেখে গেছে তার পরবর্তীদের জন্যে যাতে তারা (শিরক থেকে) প্রত্যাবর্তন করে।

২৯. বরং আমিই তাদেরকে এবং তাদের পূর্বপুরুষদেরকে সুযোগ দিয়েছিলাম ভোগের, অবশেষে তাদের নিকট সত্য ও স্পষ্ট (প্রচারক) রাসূল আগমন করা পর্যন্ত।

৩০. যখন তাদের নিকট সত্য আসলো তখন তারা বললোঃ এটা তো যাদু এবং আমরা অবশ্যই এর প্রতি কুফরী করি।

৩১. এবং তারা বলেঃ এই কুরআন কেন অবতীর্ণ করা হলো না দুই জনপদের কোন প্রতিপত্তিশালী ব্যক্তির উপর?

৩২. তারা কি তোমার প্রতিপালকের রহমত বন্টন করে? আমিই তাদের মধ্যে জীবিকা বন্টন করি তাদের পার্থিব জীবনে এবং একজনকে অপরের উপর মর্ষাদায় উন্নত করি যাতে একে অপরের দ্বারা খেদমত করিয়ে নিতে পারে এবং তারা যা জমা করে তা হতে তোমার প্রতিপালকের রহমত উৎকৃষ্টতর।

৩৩. (সত্য অস্বীকারে) মানুষ যদি এক উম্মতে পরিণত হয়ে পড়বে, এই আশঙ্কা না থাকলে দয়াময় আল্লাহকে যারা অস্বীকার করে, তাদেরকে আমি দিতাম তাদের গৃহের জন্যে রৌপ্য নির্মিত ছাদ ও সিঁড়ি যাতে তারা আরোহণ করে।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ
الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿٢٩﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ
كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ
مِّنَ الْقَرِيبِينَ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ
مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سَخِرِيًّا ط
وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾

وَلَوْلَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ
يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُؤْتِيَهُمْ سُقْفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ
عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾

৩৪. এবং তাদের গৃহের জন্যে দিতাম দরজা, (বিশ্রামের জন্যে) পালঙ্ক, যাতে তারা হেলান দিয়ে বসত।

৩৫. এবং স্বর্ণের নির্মিতও। আর এই সবই তো শুধু পার্থিব জীবনের ভোগ সম্ভার। মুত্তাকীদের জন্যে তোমার প্রতিপালকের নিকট রয়েছে আখেরাত (-এর কল্যাণ)।

৩৬. যে ব্যক্তি দয়াময় আল্লাহর স্মরণে বিমুখ হয় আমি তার জন্যে নিয়োজিত করি এক শয়তান, অতঃপর সেই হয় তার সহচর।

৩৭. তারাই (শয়তানরা) মানুষকে সৎপথ হতে বিরত রাখে, অথচ মানুষ মনে করে যে তারা হেদায়েতের উপর পরিচালিত হচ্ছে।

৩৮. অবশেষে যখন সে আমার নিকট উপস্থিত হবে, তখন সে (শয়তানকে) বলবেঃ হায়! আমার ও তোমার মধ্যে যদি পূর্ব ও পশ্চিমের ব্যবধান থাকতো! কত নিকৃষ্ট সহচর সে!

৩৯. আর আজ তোমাদের (এই অনুতাপ) তোমাদের অবশ্যই কোন উপকারে আসবে না, যেহেতু তোমরা যুলুম করেছিলে। তোমরা তো সবাই শান্তিতে শরীক।

৪০. তুমি কি স্তন্যপান পারবে বধিরকে? অথবা যে অন্ধ ও যে ব্যক্তি সম্পূর্ণ বিভ্রান্তিতে আছে, তাকে কি পারবে সৎপথে পরিচালিত করতে?

৪১. আমি যদিও তোমার মৃত্যু ঘটাই, তবু আমি তাদের প্রতিশোধ নিব।

وَلِيُبَيِّنَ لَهُمُ الْآيَاتِ وَالْأَحْكَامَ وَاسْرُرًا عَلَيْهَا يَتَكُونُونَ ﴿٣٤﴾

وَزُخْرَفًا وَإِنَّ كُلَّ ذَلِكَ لِنَاءٌ مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقِضْ لَهُ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهُ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

وَإِنَّهُمْ لَيَبْصُرُونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ لِيَلَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بَعْدَ الْمَسْرِ قَيْنٌ فَيَسَّ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾

وَلَنْ يَنْفَعَكُمْ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنْكُمُ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾

إِنَّمَا تَسْمَعُ الصَّمَّةَ أَوْ تَهْدِي الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ فِي ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾

فَأَمَّا نَذَهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ﴿٤١﴾

৪২. অথবা আমি তাদেরকে যে আশাবের ওয়াদা করেছি যদি আমি তোমাকে তা প্রত্যক্ষ করাই, তবে তাদের উপর আমার তো অবশ্যই পূর্ণ ক্ষমতা রয়েছে।

أَوْ تُرِيكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَأَنَا عَلَيْهِمْ
مُقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾

৪৩. সুতরাং তোমার প্রতি যা ওহী করা হয়েছে তা দৃঢ়ভাবে অবলম্বন কর। তুমি তো সরল পথেই রয়েছে।

فَأَسْتَسِيكَ بِالَّذِي أَوْحَىٰ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾

৪৪. (কুরআন) তোমার ও তোমার সম্প্রদায়ের জন্যে তা সম্মানের বস্তু; তোমাদেরকে অবশ্যই এ বিষয়ে প্রশ্ন করা হবে।

وَأِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾

৪৫. তোমার পূর্বে আমি যেসব রাসূল প্রেরণ করেছিলাম তাদেরকে তুমি জিজ্ঞেস কর, আমি কি দয়াময় আল্লাহ ব্যতীত কোন মা'বুদ স্থির করেছিলাম যাদের ইবাদত করা যায়।

وَسَأَلَ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا
أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

৪৬. মুসা (عليه السلام)-কে তো আমি আমার নিদর্শনাবলী সহ ফিরআ'উন ও তার পরিষদবর্গের নিকট পাঠিয়েছিলাম; সে বলেছিলঃ আমি অবশ্যই জগতসমূহের প্রতিপালকের প্রেরিত।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

৪৭. সে (মূসা عليه السلام) তাদের নিকট আমার নিদর্শনাবলীসহ যাওয়া মাত্র তারা তা নিয়ে হাসি-ঠাট্টা করতে লাগলো।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾

৪৮. আমি তাদেরকে এমন কোন নিদর্শন দেখাইনি যা ওর অনুরূপ নিদর্শন অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ নয়। আমি তাদেরকে শাস্তি দিলাম যাতে তারা প্রত্যাবর্তন করে।

وَمَا تُرِيدُهُمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۗ
وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾

৪৯. তারা বলেছিলঃ হে যাদুকর! তোমার প্রতিপালকের নিকট তুমি আমাদের জন্যে তা প্রার্থনা কর যা তিনি তোমার সাথে অঙ্গীকার করেছেন; তাহলে আমরা অবশ্যই হেদায়েতপ্রাপ্ত।

৫০. অতঃপর যখন আমি তাদের উপর হতে শাস্তি দূর করলাম তখনই তারা অঙ্গীকার ভঙ্গ করে বসলো।

৫১. ফিরআউন তার সম্প্রদায়ের মধ্যে এ বলে ঘোষণা করলোঃ হে আমার সম্প্রদায়! মিসরের বাদশাহী কি আমার নয়? এই নদীগুলো আমার পাদদেশে প্রবাহিত, তোমরা কি দেখো না?।

৫২. বরং আমি তো শ্রেষ্ঠ এই ব্যক্তি হতে যে হীন এবং স্পষ্ট কথা বলতেও অক্ষম।

৫৩. (তিনি যদি নবী হতেন তবে) মূসা (عليه السلام)-কে কেন দেয়া হলো না স্বর্ণ বালা অথবা তার সাথে কেন আসলো না ফেরেশতারা দলবদ্ধভাবে।

৫৪. এভাবে সে তার সম্প্রদায়কে হতবুদ্ধি করে দিলো, ফলে তারা তার কথা মেনে নিলো। তারা তো ছিল এক অবাধ্য সম্প্রদায়।

৫৫. যখন তারা আমাকে ক্রোধান্বিত করলো তখন আমি তাদেরকে শাস্তি দিলাম এবং নিমজ্জিত করলাম তাদের সবাইকে।

৫৬. তৎপর পরবর্তীদের জন্যে আমি তাদেরকে করে রাখলাম অতীত ইতিহাস ও দৃষ্টান্ত।

وَقَالُوا يَا أَيُّهُ السَّجْرَادُ كُنَّا رَبَّكَ بِمَا عَاهَدَ
عِنْدَكَ ۚ إِنَّا لَكَاهِنُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾

وَتَأْدَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يُقَوْمِرَ أَلَيْسَ لِي
مُلْكُ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۚ
أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ ۚ
وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾

فَلَوْلَا أَلْقَىٰ عَلَيْهِ آسُورَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ
الْبَلْبَكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

فَأَسْتَحَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا
فُسِّقِينَ ﴿٥٤﴾

فَلَمَّا أَسْفَوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْعَعِينَ ﴿٥٥﴾

فَجَعَلْنَاهُمْ سَفَافًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾

৫৭. যখন মরিয়ম পুত্রের দৃষ্টান্ত উপস্থিত করা হয়, তখনই তোমার সম্প্রদায় (আনন্দে) শোরগোল শুরু করে দেয়।

৫৮. এবং বলেঃ আমাদের দেবতাগুলো শ্রেষ্ঠ, না ঈসা (ﷺ)? তারা শুধু ঝগড়া-বিবাদের উদ্দেশ্যেই তোমাকে এ কথা বলে। বস্তুত তারা তো শুধু ঝগড়া-বিবাদকারী সম্প্রদায়।

৫৯. তিনি তো ছিলেন আমারই এক বান্দা, যার প্রতি আমি অনুগ্রহ করেছিলাম এবং যাকে করেছিলাম বানী ইসরাঈলের জন্য দৃষ্টান্ত।

৬০. আমি ইচ্ছা করলে তোমাদের পরিবর্তে ফেরেশতা সৃষ্টি করতে পারতাম, যারা পৃথিবীতে (পরস্পর) প্রতিনিধিত্বকারী হতো।

৬১. তিনি (ঈসা (ﷺ)) তো কিয়ামতের নিদর্শন; সুতরাং তোমরা কিয়ামতে সন্দেহ পোষণ করো না এবং আমাকে অনুসরণ কর। এটাই সরল পথ।

৬২. শয়তান যেন তোমাদেরকে কিছুতেই নিবৃত্ত না করে, সে তো তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

৬৩. ঈসা (ﷺ) যখন স্পষ্ট নিদর্শনাবলী সহ আসলো, তখন সে বললোঃ আমি তো তোমাদের নিকট এসেছি প্রজ্ঞাসহ এবং তোমরা যে বিষয়ে মতভেদ করছো, তা স্পষ্ট করে দিবার জন্যে। সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার অনুসরণ কর।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ
يَصُدُّونَ ﴿٥٧﴾

وَقَالُوا آءِ الْهَيْتَنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا
جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾

إِنَّ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا
لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ
يَخْلُقُونَ ﴿٦٠﴾

وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا
وَاتَّبِعُونِ ط هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ
بِالْحِكْمَةِ وَالْبَيِّنَاتِ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ
فِيهِ ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿٦٣﴾

৬৪. আল্লাহই তো আমার প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক, অতএব তাঁর ইবাদত কর; এটাই সরল পথ।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَأَعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٧٧﴾

৬৫. অতঃপর তাদের কতিপয় দল মতানৈক্য সৃষ্টি করলো; সুতরাং যালিমদের জন্যে দুর্ভোগ যন্ত্রণাদায়ক দিনের শাস্তির।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ قَوْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ إِلْيَهِمْ ﴿٧٨﴾

৬৬. তারা তো তাদের অজ্ঞাতসারে আকস্মিকভাবে কিয়ামত আসারই অপেক্ষা করছে।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٧٩﴾

৬৭. বন্ধুরা সেইদিন হয়ে পড়বে একে অপরের শত্রু, তবে মুত্তাকীরা ব্যতীত।

الْإِخْلَاءُ يَوْمَ يُؤَيِّدُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوًّا ۗ وَالْمُتَّقِينَ ﴿٨٠﴾

৬৮. হে আমার বান্দাগণ! আজ তোমাদের কোন ভয় নেই এবং চিন্তিতও হবে না তোমরা—

يُعْبَادُ لِأَخَوْفٍ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٨١﴾

৬৯. যারা আমার আয়াতসমূহে বিশ্বাস করেছিল এবং আত্মসমর্পণ করেছিল।

الَّذِينَ آمَنُوا بِالْآيَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٨٢﴾

৭০. তোমার এবং তোমাদের সহধর্মিনীগণ জান্নাতে প্রবেশ কর, তোমাদেরকে সন্তুষ্ট করা হবে।

أُدْخِلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٨٣﴾

৭১. স্বর্ণের বালা ও পানপাত্র নিয়ে তাদেরকে প্রদক্ষিণ করা হবে; মন যা চায় এবং নয়ন যাতে তৃপ্ত হয় সেখানে রয়েছে এবং সেখানে তোমরা স্থায়ী হবে।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۚ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۗ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٤﴾

৭২. এটাই জান্নাত, তোমাদেরকে যার অধিকারী করা হয়েছে, তোমাদের কর্মের ফল স্বরূপ।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

৭৩. সেখানে তোমাদের জন্যে রয়েছে প্রচুর ফল-মূল, তোমরা আহার করবে তা হতে।

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُتُونَ ﴿۴۳﴾

৭৪. নিশ্চয়ই অপরাধীরা জাহান্নামের শাস্তিতে থাকবে চিরকাল—

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿۴৪﴾

৭৫. তাদের শাস্তি লাঘব করা হবে না এবং তারা হতাশ হয়ে পড়বে।

لَا يُفَقَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿۴৫﴾

৭৬. আমি তাদের প্রতি যুলুম করিনি, বরং তারা নিজেরাই ছিল যালিম।

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿۴৬﴾

৭৭. তারা চিৎকার করে বলবেঃ হে মালিক (জাহান্নামের অধিকর্তা)! তোমার প্রতিপালক আমাদেরকে নিঃশেষ করে দিন। সে বলবেঃ তোমরা তো এখানেই অবস্থান করবে।

وَنَادُوا يٰمَلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَيْبَ كَمَا تَأْتِيكُمْ مَكِينًا ﴿۴৭﴾

৭৮. (আল্লাহ বলবেনঃ) আমি তো তোমাদের নিকট সত্য পৌছিয়ে ছিলাম; কিন্তু তোমাদের অধিকাংশই ছিল সত্যকে অপছন্দকারী।

لَقَدْ جِئْتَكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كُرْهُونَ ﴿۴৮﴾

৭৯. তারা কি কোন ব্যাপারে চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত গ্রহণ করেছে? আমিই তো সিদ্ধান্তকারী।

أَمْ أBRُمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرَمُونَ ﴿۴৯﴾

৮০. তারা কি মনে করে যে, আমি তাদের গোপন বিষয় ও তাদের পরস্পরে চূপে চূপে যা বলে তার খবর রাখি না? অবশ্যই রাখি। আমার ফেরেশতারা তো তাদের নিকট থেকে সবকিছু লিপিবদ্ধ করে।

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ط بَلَىٰ وَرُسُلْنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿۵০﴾

৮১. বলঃ দয়াময় আল্লাহর কোন সম্ভান থাকলে আমি হতাম তার উপাসকগণের সর্বপ্রথম।

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ لَّأَنَّا أَوَّلُ الْعٰبِدِينَ ﴿۵১﴾

৮২. তারা যা আরোপ করে তা হতে পবিত্র ও মহান, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অধিপতি এবং আরশের অধিপতি।

৮৩. অতএব তাদেরকে যে দিবসের কথা বলা হয়েছে তার সম্মুখীন হওয়ার পূর্ব পর্যন্ত তাদেরকে তর্ক-বিতর্ক ও ক্রীড়া-কৌতুক করতে দাও।

৮৪. তিনিই মা'বুদ আকাশমন্ডলীতে, তিনিই মা'বুদ পৃথিবীতে এবং তিনি প্রজ্ঞাবান, সর্বজ্ঞ।

৮৫. কত মহান তিনি যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এগুলোর মধ্যবর্তী সবকিছুরই সার্বভৌম অধিপতি! কিয়ামতের জ্ঞান শুধু তাঁরই আছে এবং তাঁরই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

৮৬. আল্লাহর পরিবর্তে তারা যাদেরকে ডাকে, শাফায়াতের ক্ষমতা তাদের নেই, তবে যারা সত্য উপলব্ধি করে ওর সাক্ষ্য দেয় তারা ব্যতীত।

৮৭. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ কে তাদেরকে সৃষ্টি করেছে; তবে তারা অবশ্যই বলবে; আল্লাহ! তবুও তারা কোথায় ফিরে যাচ্ছে?

৮৮. তাঁর (মুহাম্মাদ ﷺ-এর) এ উক্তি—হে আমার প্রতিপালক! এই সম্প্রদায় তো ঈমান আনবে না।

৮৯. সুতরাং তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর এবং বলঃ সালাম; তারা শীঘ্রই জানতে পারবে।

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَظِيْمٍ ﴿٨٢﴾

فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يَلْقٰوْا يَوْمَهُمُ الَّذِى يُوعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

وَهُوَ الَّذِى فِى السَّمٰوٰتِ اِلٰهُ وَفِى الْاَرْضِ اِلٰهُ ط وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾

وَتَبٰرَكَ الَّذِى لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَالْيَوْمِ تَرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِىْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

وَلَيْنِ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِلٰهُ فَاَنّىٰ يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾

وَقَبِيْلَهٗ يَرْبِّ اِنَّ هٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

فَاَصْبَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

সূরাঃ দুখান, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৯, রুকু'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. হা-মীম,

২. শপথ সুস্পষ্ট কিতাবের,

৩. আমি তো এটা অবতীর্ণ করেছি
এক বরকতময় রজনীতে; (শবে
কদরে) আমি তো সতর্ককারী।৪. এ রাতে প্রত্যেক প্রজ্ঞাপূর্ণ বিষয়
ফয়সালা হয়।৫. আমার আদেশক্রমে, আমি তো
রাসূল প্রেরণ করে থাকি।৬. তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ
স্বরূপ; তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।৭. যিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও
ওগুলোর মধ্যস্থিত সবকিছুর
প্রতিপালক— যদি তোমরা নিশ্চিত
বিশ্বাসী হও।৮. তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বুদ
নেই, তিনি জীবন দান করেন এবং
তিনিই মৃত্যু ঘটান; তিনি তোমাদের
প্রতিপালক এবং তোমাদের পূর্ব-
পুরুষদেরও প্রতিপালক।৯. বস্তুতঃ তারা সন্দেহের বশবর্তী
হয়ে খেল-তামাশা করছে।১০. অতএব তুমি অপেক্ষা কর সেই
দিনের যেদিন স্পষ্ট ধূমাচ্ছন্ন হবে
আকাশ,

سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٥٩ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ ①

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُبْرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ②

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ③

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ④

رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑤

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مَرِئًا

كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ⑥

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ

أَبَائِكُمُ الْأُولِينَ ⑦

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ⑧

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ⑨

১১. এবং তা আবৃত করে ফেলবে মানব জাতিকে। এটা হবে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

১২. (তখন তারা বলবেঃ) হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এই শাস্তি হতে মুক্তি দিন, আমরা ঈমান আনবো।

১৩. (এখন) তারা কি করে আর উপদেশ গ্রহণ করবে? তাদের নিকট তো এসেছিলেন স্পষ্ট ব্যাখ্যা প্রদানকারী এক রাসূল;

১৪. অতঃপর তারা তাকে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করে বলেঃ সে তো শিখানো (বুলি বলছে,) সে তো এক পাগল।

১৫. আমি (যদি) তোমাদের শাস্তি কিছুকালের জন্যে সরিয়ে দেই তোমরা তো পুনরায় তাই করবে।

১৬. যেদিন আমি তোমাদেরকে প্রবলভাবে পাকড়াও করবো, সেদিন আমি প্রতিশোধ নিবই।

১৭. এদের পূর্বে আমি তো ফিরআ'উন সম্প্রদায়কে পরীক্ষা করেছিলাম এবং তাদের নিকটও এসেছিল এক মহান রাসূল।

১৮. তিনি বলেছিলেনঃ আল্লাহর বান্দাদেরকে আমার নিকট প্রত্যারণ কর। আমি তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

১৯. এবং তোমরা আল্লাহর বিরুদ্ধে উদ্ধত হয়ো না, আমি তোমাদের নিকট উপস্থিত করছি স্পষ্ট প্রমাণ।

২০. তোমরা যাতে আমাকে প্রস্তরা-ঘাতে হত্যা করতে না পার, তজ্জনে

يَعْشَى النَّاسَ طَهَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١﴾

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

أَلَيْسَ لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾

أَنْ أَدُّوْا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ طِرَئِي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾

وَأَنْ لَا تَعْلَوْا عَلَى اللَّهِ طِرَئِي أَيْتِكُمْ بِسُلْطِنٍ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾

وَإِنِّي عَذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجِسُونَنِي

আমি আমার প্রতিপালক ও তোমাদের প্রতিপালকের আশ্রয় চাচ্ছি।

২১. যদি তোমরা আমার কথায় বিশ্বাস স্থাপন না কর, তবে তোমরা আমার থেকে দূরে থাকো।

وَأِنْ لَّمْ تُوْمِنُوا لِي فَاَعْتَرُونِي ۝٢١

২২. অতঃপর মূসা (عليه السلام) তাঁর প্রতিপালকের নিকট দু'আ করলেনঃ এরা তো এক অপরাধী সম্প্রদায়।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هُوَ لَآءِ قَوْمٍ مُّجْرِمُونَ ۝٢٢

২৩. আমি বলেছিলামঃ তুমি আমার বান্দাদেরকে নিয়ে রাতে বের হয়ে পড়, তোমাদের পশ্চাদ্ধাবন করা হবে।

فَأَسْرِعْ بَعْدِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ۝٢٣

২৪. সমুদ্রকে স্থির থাকতে দাও, তান্না এমন এক বাহিনী যারা নিমজ্জিত হবে।

وَأَثْرِ لِي الْبَحْرَ رَهَوًا إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ۝٢٤

২৫. তারা ছেড়ে গিয়েছিল কত উদ্যান ও প্রস্রবণ,

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝٢٥

২৬. কত শস্যক্ষেত্র ও সুরম্য প্রাসাদ,

وَذُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝٢٦

২৭. কত বিলাস উপকরণ, যা তাদেরকে আনন্দ দিতো!

وَنَعْمَةً كَانُوا فِيهَا فِكْهِينَ ۝٢٧

২৮. এরূপই ঘটেছিল এবং আমি এগুলোর উত্তরাধিকারী করেছিলাম ভিন্ন সম্প্রদায়কে।

كَذَلِكَ تَدَاوَرَّتْهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝٢٨

২৯. আকাশ এবং পৃথিবী কেউই তাদের জন্যে অশ্রুপাত করেনি এবং তাদেরকে অবকাশও দেয়া হয়নি।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۝٢٩

৩০. আমি তো উদ্ধার করেছিলাম বানী ইসরাইলকে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি হতে—

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْبُهِينِ ۝٣٠

৩১. ফিরআ'উনের; সে তো ছিল পরাক্রান্ত সীমালঙ্ঘনকারীদের মধ্যে।

৩২. আমি জেনে শুনেই তাদেরকে বিশ্বে শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম,

৩৩. এবং তাদেরকে দিয়েছিলাম নিদর্শনাবলী, যাতে ছিল সুস্পষ্ট পরীক্ষা।

৩৪. তারা (কাফেররা) বলেই থাকে,

৩৫. আমাদের প্রথম মৃত্যু ব্যতীত আর কিছুই নেই এবং আমরা আর পুনরুত্থিত হবো না।

৩৬. অতএব তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে উপস্থিত কর।

৩৭. শ্রেষ্ঠ কি তারা, না তুঝা সম্প্রদায় ও তাদের পূর্ববর্তীরা? আমি তাদেরকে ধ্বংস করেছিলাম, অবশ্যই তারা ছিল অপরাধী।

৩৮. আমি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদূরের মধ্যস্থিত কোন কিছুই খেল-তামাশার ছলে সৃষ্টি করিনি।

৩৯. আমি এ দু'টি যথাযথ উদ্দেশ্য সৃষ্টি করেছি; কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

৪০. সকলের জন্যে নির্ধারিত রয়েছে তাদের বিচার দিবস।

৪১. যেদিন এক বন্ধু অপর বন্ধুর কোন কাজে আসবে না এবং তারা সাহায্যও পাবে না।

৪২. তবে আল্লাহ যার প্রতি দয়া করেন (তার কথা স্মরণ) তিনি তো পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

مَنْ فِرْعَوْنَ طَائِفَةً كَانَ عَلِيًّا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾

وَآتَيْنَاهُمْ مِنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ

بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾

فَأْتُوا بِآيَاتِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِنْ

قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

لَعِبِينَ ﴿٣٨﴾

مَا خَلَقْنَاهُمْ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

إِنَّ يَوْمَ الْقَضَائِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَوْلَىٰ شَيْئًا وَلَا

هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ طَائِفَةٌ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

৪৩. নিশ্চয় যাককুম বৃক্ষ হবে—

إِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّومِ ۙ

৪৪. পাপীর খাদ্য;

طَعَامُ الْإِثْمِيرِ ۙ

৪৫. গলিত তাম্বের মত; ওটা তার উদরে ফুটতে থাকবে।

كَالْمُهْلِ ۙ يُغْلَى فِي الْبُطُونِ ۙ

৪৬. ফুটন্ত পানির মত।

كغَلِي الْحَمِيمِ ۙ

৪৭. (বলা হবে) তাকে ধর এবং টেনে নিয়ে যাও জাহান্নামের মধ্যস্থলে,

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۙ

৪৮. অতঃপর তার মস্তকের উপর ফুটন্ত পানির শান্তি ঢেলে দাও।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۙ

৪৯. (এবং বলা হবেঃ) আশ্বাদ গ্রহণ কর, তুমি তো ছিলে সম্মানিত অভিজাত।

ذُقْ ۙ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۙ

৫০. এটা তো সেটাই, যে বিষয়ে তোমরা সন্দেহ করতে।

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۙ

৫১. মুজাক্কীরা থাকবে নিরাপদ স্থানে—

إِنَّ السَّقِيْنَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۙ

৫২. উদ্যান ও বর্ণার মাঝে,

فِي جَنَّتٍ وَعَيْوُنٍ ۙ

৫৩. তারা পরিধান করবে মিহি ও পুরু রেশমী বস্ত্র এবং তারা মুখোমুখী (হয়ে বসবে)।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ

مُتَقَابِلِينَ ۙ

৫৪. এরূপই ঘটবে; তাদেরকে সঙ্গীনি দিবো বড় বড় চক্ষু বিশিষ্ট পরমা সুন্দরী।

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۙ

৫৫. সেখানে তারা প্রশান্ত চিন্তে বিবিধ ফল-মূল আনতে বলবে।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۙ

৫৬. প্রথম মৃত্যুর পর তারা সেখানে আর মৃত্যু আশ্বাদন করবে না। তিনি তাদেরকে জাহান্নামের শান্তি হতে রক্ষা করবেন—

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ

الْأُولَى ۙ وَوَقَّعَهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۙ

৫৭. তোমার প্রতিপালকের নিজ অনুগ্রহে। এটাই তো মহা সাফল্য।

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۗ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

৫৮. আমি তোমার ভাষায় কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

فَاتِمًّا يَسِّرْنَاهُ بِلسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

৫৯. সুতরাং তুমি প্রতীক্ষা কর, তারাও তো প্রতীক্ষমান।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

সূরা: জাসিয়াহ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩৭, রুকু'ঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُورَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣٧ رُكُوعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. হা-মীম

حَمْدٌ ﴿١﴾

২. এ কিতাব পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাবান আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾

৩. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে অনেক নিদর্শন রয়েছে মু'মিনদের জন্যে।

إِنَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾

৪. তোমাদের সৃষ্টিতে এবং জীব-জন্তুর বিস্তারে নিদর্শনাবলী রয়েছে দৃঢ় বিশ্বাসীদের জন্যে।

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُذُّ مِنْ دَابَّةٍ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٤﴾

৫. রাত্রি ও দিবসের পরিবর্তনে, আল্লাহ আকাশ হতে যে পানি বর্ষণ দ্বারা পৃথিবীকে ওর মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত করেন তাতে এবং বায়ুর পরিবর্তনে নিদর্শনাবলী রয়েছে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে,

وَإِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٥﴾

৬. এগুলো আল্লাহর আয়াত, যা আমি তোমার নিকট আবৃত্তি করছি যথাযথভাবে; সুতরাং আল্লাহর এবং

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ

فِي آيَاتٍ حَدِيثٍ مُّبَدَّلٍ ۗ بَعَدَ اللَّهُ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

তাঁর আয়াতের পরিবর্তে তারা আর কোন বাণীতে বিশ্বাস করবে?

৭. দুর্ভোগ প্রত্যেক ঘোর মিথ্যাবাদী পাপীর।

৮. যে আল্লাহর আয়াতের আবৃত্তি শুনে অথচ অহংকারের সাথে অটল থাকে যেন সে তা শুনেনি। তাকে সংবাদ দাও যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির।

৯. যখন আমার কোন আয়াত সে অবগত হয় তখন সে তা ঠাট্টা-বিদ্রুপাচ্ছলে গ্রহণ করে। তাদের জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি।

১০. তাদের পশ্চাতে রয়েছে জাহান্নাম; তাদের কৃতকর্ম তাদের কোন কাজে আসবে না, তারা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে অভিভাবক স্থির করেছে তারাও নয়। তাদের জন্যে রয়েছে মহাশাস্তি।

১১. এটা (কুরআন) হেদায়েত স্বরূপ; যারা তাদের প্রতিপালকের আয়াতসমূহ অস্বীকার করে, তাদের জন্যে রয়েছে অতিশয় যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

১২. একমাত্র আল্লাহই তো সমুদ্রকে তোমাদের জন্যে নিয়োজিত করেছেন, যাতে তাঁর আদেশে তাতে নৌযানসমূহ চলাচল করতে পারে এবং যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ অনুসন্ধান করতে পার ও তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞ হও।

১৩. তিনি তোমাদের জন্য নিয়োজিত করে দিয়েছেন আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সব কিছুই তাঁর পক্ষ হতে,

وَيُنِ لِكُلِّ أَقَاكِ أَيِّمِ ۝

يَسْمَعُ أَيَّتُ اللَّهُ تُشَلِّ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا
كَانَ لَمْ يَسْعَهَا ۚ فَبَشِّرُهُ بِعَذَابِ أَيِّمِ ۝

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ أَيَّتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُؤًا
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

مِنْ وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ
مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
أُولِيَاءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

هَذَا هُدًى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ
لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزِ أَيِّمِ ۝

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمْ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ
الْفُلُكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا مِنْهُ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ

চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে, এতে অবশ্যই রয়েছে নিদর্শনাবলী।

১৪. মু'মিনদেরকে বলঃ তারা যেন ক্ষমা করে তাদেরকে, যারা আল্লাহর দিবসগুলোর আশা করে না, এটা এজন্যে যে, আল্লাহ কতিপয় লোকদেরকে তার কৃতকর্মের জন্যে প্রতিদান দিবেন।

১৫. যে সৎ আমল করে সে তার (কল্যাণের) জন্যেই তা করে এবং কেউ মন্দ কর্ম করলে তার প্রতিফল সেই ভোগ করবে, অতঃপর তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

১৬. আমি তো বানী ইসরাঈলকে কিতাব (তাওরাত), বিধান (সে অনুযায়ী) ও নবুওয়াত দান করেছিলাম এবং তাদেরকে উত্তম রিযিক এবং তাদেরকে বিশ্বজগতের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম।

১৭. এবং তাদেরকে সুস্পষ্ট প্রমাণ দান করেছিলাম দ্বীন সম্পর্কে, তাদের নিকট জ্ঞান আসবার পর তারা শুধু পরস্পর বিদেষবশতঃ বিরোধিতা করেছিল, তারা যে বিষয়ে মতবিরোধ করতো, অবশ্যই তোমার প্রতিপালক কিয়ামতের দিন তাদের মধ্যে সে বিষয়ের ফায়সালা করে দিবেন।

১৮. এরপর আমি তোমাকে প্রতিষ্ঠিত করেছি দ্বীনের বিশেষ শরীয়তের উপর; সুতরাং তুমি তার অনুসরণ করো, অজ্ঞদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না।

يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ
آيَاتَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ
وَالحِكمَ وَالتَّوْبَةَ وَرَزَقْنَهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا
مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۗ لَا بُغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا
تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾

১৯. তারা তোমার কোন উপকার করতে পারবে না; আল্লাহর (আযাব) হতে যালিমরা একে অপরের বন্ধু; আর আল্লাহ তো মুত্তাকীদের বন্ধু।

إِنَّهُمْ لَنْ يُغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ؕ وَاللَّهُ وَئِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩﴾

২০. এটা (কুরআন) মানব জাতির জন্যে সুস্পষ্ট দলীল এবং দৃঢ় বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্যে হেদায়েত ও রহমত।

هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٢٠﴾

২১. দুষ্কৃতিকারীরা কি মনে করে যে, আমি জীবন ও মৃত্যুর দিক দিয়ে তাদেরকে তাদের সমান গণ্য করবো যারা ঈমান আনে ও আমল করে? তাদের সিদ্ধান্ত কত মন্দ!

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾

২২. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন যথাযথভাবে এবং যাতে প্রত্যেক ব্যক্তি তার কর্মানুযায়ী ফল পেতে পারে আর তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِيُجْزِيَ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

২৩. তুমি কি লক্ষ্য করেছো তাকে, যে তার প্রবৃত্তিকে নিজের মা'বুদ বানিয়ে নিয়েছে? আল্লাহ জেনে-শুনেই তাকে বিভ্রান্ত করেছেন এবং তার কর্তব্য ও হৃদয়ে মোহর মেলে দিয়েছেন এবং তার চক্ষুর উপর রেখেছেন আবরণ। অতএব, আল্লাহর পর কে তাকে হেদায়েত করবে? তবুও কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمِهِ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَغَشِيَ قَلْبَهُ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ يَهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. তারা বলেঃ একমাত্র পার্থিব জীবনই আমাদের জীবন আমরা মরি ও বাঁচি, আর কালের আবর্তনই

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ তা'আলা বলেনঃ আমাকে আদম সন্তানরা কষ্ট দেয়। তারা যামানা বা কালকে গালি দেয়। অথচ আমি যামানা। আমার হাতেই নির্দেশ। রাত-দিনের আমি পরিবর্তন করি। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮২৬)

আমাদেরকে ধ্বংস করে। বস্তুতঃ এই ব্যাপারে তাদের কোন জ্ঞান নেই, তারা তো শুধু ধারণা প্রসূতই কথা বলে।

২৫. তাদের নিকট যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হয় তখন তাদের কোন যুক্তি থাকে না শুধু এই উক্তি ছাড়া যে, তোমরা সত্যবাদী হলে আমাদের পূর্ব-পুরুষদেরকে উপস্থিত কর।

২৬. বলঃ আল্লাহই তোমাদেরকে জীবিত করেন ও তোমাদের মৃত্যু ঘটান। অতঃপর তিনি তোমাদেরকে কিয়ামত দিবসে একত্রিত করবেন যাতে কোন সন্দেহ নেই; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ তা জানে না।

২৭. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর আধিপত্য আল্লাহরই; যেদিন কিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন বাতিল পন্থীরা হবে ক্ষতিগ্রস্ত।

২৮. এবং প্রত্যেক সম্প্রদায়কে দেখবে (ভয়ে) নতজানু, প্রত্যেক সম্প্রদায়কে তার আমলনামার প্রতি আহ্বান করা হবে, আজ তোমাদেরকে তারই বিনিময় দেয়া হবে যা তোমরা করতে।

২৯. এই আমার কিতাব, এটা তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে সত্যভাবে। তোমরা যা করতে তা আমি অবশ্যই লিপিবদ্ধ করিয়ে-ছিলাম।

৩০. যারা ঈমান আনে ও সৎ আমল করে, তাদের প্রতিপালক তাদেরকে

وَنَحِيًّا وَمَا يَهْتَكِنَّا إِلَّا الْدَّهْرُ وَمَا لَهُمْ
بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٥﴾

وَإِذَا تَثَلَىٰ عَلَيْهِمْ أَيُّنَّا يَئِينَتِ مَا كَانَ
حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتَّبَوْنَا أَبَاءَنَا
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٦﴾

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْعَلُكُمْ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَارِيبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَيَوْمَ تَقُومُ
السَّاعَةُ يُومِضُ يُّحْسِرُ الْبٰطِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جٰثِيَةً تَتَّبِعُ كُلَّ اُمَّةٍ تَدْعٰى
إِلَىٰ كِتٰبِهَا ط الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ط اِنَّا
كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٠﴾

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ

প্রবেশ করাবেন স্বীয় রহমতে। এটাই স্পষ্ট সাফল্য।

৩১. পক্ষান্তরে যারা কুফরী করেছে (তাদেরকে বলা হবেঃ) তোমাদের নিকট কি আমার আয়াতসমূহ পাঠ করা হয়নি? কিন্তু তোমরা অহংকার প্রকাশ করেছিলে এবং তোমরা ছিলে এক অপরাধী সম্প্রদায়।

৩২. যখন বলা হয়ঃ আল্লাহর প্রতিশ্রুতি তো সত্য এবং কিয়ামত— এতে কোন সন্দেহ নেই, তখন তোমরা বলে থাকোঃ আমরা জানি না কিয়ামত কি; আমরা মনে করি এটি একটি ধারণা মাত্র এবং আমরা এ বিষয়ে নিশ্চিত নই।

৩৩. তাদের মন্দ কর্মগুলো তাদের নিকট প্রকাশ হয়ে পড়বে এবং যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তা তাদেরকে পরিবেষ্টন করবে।

৩৪. আর বলা হবেঃ আজ আমি তোমাদেরকে ভুলে যাব যেমন তোমরা এই দিবসের সাক্ষাতকারকে ভুলে গিয়েছিলে। তোমাদের আশ্রয়-স্থল হবে জাহান্নাম এবং তোমাদের কোন সাহায্যকারী থাকবে না।

৩৫. এটা এজন্যে যে, তোমরা আল্লাহর আয়াতসমূহকে বিদ্রূপ করেছিলে এবং পার্থিব জীবন তোমাদেরকে প্রতারিত করেছিল।

رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣١﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُنزلُ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِنْ نَكُنُّنَّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُستَيْقِنِينَ ﴿٣٣﴾

وَبَدَأَ لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٤﴾

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسِكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نُصْرِينَ ﴿٣٥﴾

ذِكْرِكُمْ بِآيَاتِكُمْ إِنَّا خَذْنَا آيَاتِ اللَّهِ هُزُؤًا وَغَرَّتْكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তিনটি জিনিস মৃত ব্যক্তির সঙ্গীরূপে অনুসরণ করে। দু'টি তো ফিরে আসে এবং একটি তার সঙ্গে থাকে। সঙ্গে গমন করে আত্মীয়-স্বজন, ধন-সম্পদ ও তার আমল। তার জাতী-গোষ্ঠী ও মাল-দৌলত ফিরে আসে। আর (সঙ্গী হিসেবে) থেকে যায় শুধু আমল। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫১৪)

সুতরাং আজ তাদেরকে জাহান্নাম হতে বের করা হবে না এবং আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের জন্য তওবাও করতে বলা হবে না।

وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. প্রশংসা আল্লাহরই, যিনি আকাশমন্ডলীর প্রতিপালক, পৃথিবীর প্রতিপালক, জগতসমূহের প্রতিপালক।

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾

৩৭. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে তাঁরই বড়ত্ব এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾

সূরাঃ আহকাফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩৫, রুক্বঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْأَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣٥ رُكُوعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمَّ ①

১. হা-মীম

২. এ কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে
পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান আল্লাহর
নিকট হতে;

تَنْزِيلِ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①

৩. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং
এতোদূভয়ের মধ্যস্থিত সব কিছুই
আমি সত্যের সাথে ও নিদিষ্টকালের
জন্য সৃষ্টি করেছি; কিন্তু কাফিররা
তাদেরকে সতর্ক করা বিষয় হতে মুখ
ফিরিয়ে নেয়।

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا
بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا
أُنذِرُوا مُّعْرِضُونَ ②

৪. বলঃ তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে
যাদেরকে ডাকো তাদের কে দেখছো
কি? তারা পৃথিবীতে কি সৃষ্টি করেছে
আমাকে দেখাও অথবা আকাশ-
মন্ডলীতে তাদের কোন অংশীদারিত্ব
আছে কি? এর পূর্বে আসা কোন
কিতাব অথবা জ্ঞানের কোন অবশিষ্ট
থাকলে তা তোমরা আমার নিকট
নিয়ে আস, যদি তোমরা সত্যবাদী
হও।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي
مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ۖ
إِنِّي نَوَيْتُ يَكْتُبَ مِنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَثَرَةٌ مِنْ عَلِيمٍ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ③

৫. তার চেয়ে অধিক বিভ্রান্ত কে হবে
যে আল্লাহ ব্যতীত এমন কিছুকে
ডাকে যে কিয়ামত দিবস পর্যন্ত তার
ডাকে সাড়া দিবে না? এবং তারা
তাদের আহ্বান সম্বন্ধেও অনবহিত।

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ
لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَائِهِمْ غَفْلُونَ ④

৬. আর যখন মানুষকে একত্রিত করা
হবে তখন তারা তাদের শত্রু হবে

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا

এবং তারা যে তাদের ইবাদত করেছিল তা অস্বীকার করবে।

৭. যখন তাদের নিকট আমার আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হয় সুস্পষ্টভাবে এবং যখন কাফেরদের নিকট প্রকৃত সত্য উপস্থিত হয়; তখন তারা বলেঃ এটা তো সুস্পষ্ট যাদু।

৮. তারা কি একথা বলে যে, তার (মুহাম্মাদ ﷺ-এর) এটা (কুরআন) মনগড়া? বলঃ যদি আমার ওটা মনগড়া হয়ে থাকে, তবে তোমরা তো আল্লাহর পক্ষ হতে আমার জন্য কোন কিছুই অধিকার রাখ না। তোমরা তার (কুরআনের) ব্যাপারে যে সব কথা বল ও শ্রবণ কর তিনি তা ভালোভাবে জানেন। আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে তিনিই যথেষ্ট এবং তিনি অতি ক্ষমাকারী, অতি দয়াবান।

৯. বলঃ আমি তো রাসূলগণের মাঝে কোন নতুন নই এবং আমার ও তোমাদের সাথে কি আচরণ করা হবে; তা আমি জানি না, আমার প্রতি যা ওহী করা হয় আমি শুধু তারই অনুসরণ করি। আমি একজন স্পষ্ট সতর্ককারী ছাড়া অন্য কিছু নই।

১০. বলঃ তোমাদের কি অভিমত যদি এটি (কুরআন) আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ হয়ে থাকে আর তোমরা তা অবিশ্বাস কর এবং বানী ইসরাঈলের একজন এর অনুরূপ কিতাব সম্পর্কে সাক্ষ্য দিয়ে বিশ্বাস

بِعِبَادَتِهِمْ كَفَرِينَ ①

وَإِذَا تَنَزَّلَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَبَأٌ جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ①

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ط قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ط هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ط كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ط وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ①

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَعَا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ط إِنْ أَتَيْتُمْ إِلَّا مَا يُؤْتَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَأَمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ①

স্থাপন করলো অথচ তোমরা অহংকার করলে, আল্লাহ অত্যাচারী জাতিকে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

১১. মু'মিনদের সম্পর্কে কাফিররা বলেঃ এটা ভাল হলে তারা এর দিকে আমাদের অগ্রগামী হতো না। তারা যেহেতু এর (কুরআন) দ্বারা হেদায়েত পায়নি, অতএব তারা বলেঃ এটা তো সেই পুরনো মিথ্যা।

১২. এবং এর পূর্বে মূসা (عليه السلام)-এর কিতাব (তাওরাত) অনুসরণীয় এবং রহমত স্বরূপ এসেছিল। আর এ এমন কিতাব (কুরআন) যা আরবী ভাষায়, (তার) সত্যতা প্রমাণকারী যেন এটা যালিমদেরকে সতর্ক করার জন্য এবং যারা সৎকর্ম করে তাদের জন্য সুসংবাদ।

১৩. যারা বলেঃ আমাদের প্রতি-পালক আল্লাহ এবং এই বিশ্বাসে অবিচল থাকে, তাদের জন্য কোন ভয় নেই এবং তারা চিন্তাগ্রস্তও হবে না।

১৪. তারাই জান্নাতের অধিবাসী, সেখানে তারা স্থায়ী হবে, তারা যে আমল করত এটা তারই প্রতিদান।

১৫. আমি মানুষকে নির্দেশ দিয়েছি তার মাতা-পিতার প্রতি সন্ধ্যবহার করার জন্য। তার মাতা তাকে গর্ভে ধারণ করেছে কষ্টের সাথে এবং প্রসব করেছে কষ্টের সাথে, তাকে গর্ভে ধারণ ও তার জন্যে দুধপান ছাড়াতে লাগে ত্রিশ মাস, শেষ পর্যন্ত

الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٤

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إ فْكٌ قَدِيمٌ ٥

وَمَنْ قَبْلَهُ كَتَبُ مُوسَى إِمَامًا وَرَحْمَةً ط وَهَذَا كِتَابٌ مُصَدِّقٌ لِّسَانِ عَرَبِيًّا لِيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ٦ وَبُشْرَى لِلْمُحْسِنِينَ ٧

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ٨

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا ٩ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ١٠

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ط حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ط وَصَلَّهُ وَفِضْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ط حَتَّى إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً لَقِيَ رَبَّهُ أَوْزِعُنِي أَنْ أَشْكُرَ

যখন সে পূর্ণ শক্তি প্রাপ্ত হল এবং চল্লিশ বছরে পৌঁছল তখন সে বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে সামর্থ দিন, যাতে আমি আপনার নেয়ামতের শুকরিয়া আদায় করতে পারি। আমার প্রতি—আমার পিতা-মাতার প্রতি আপনি যে অনুগ্রহ করেছেন, তার জন্যে এবং যাতে আমি সৎকার্য করতে পারি যা আপনি পছন্দ করেন; আমার জন্যে আমার সন্তান-সন্ততিদেরকে সৎ-কর্মপরায়ণ করুন, নিশ্চয়ই আমি আপনারই দিকে প্রত্যাবর্তন করলাম এবং আমি আত্মসমর্পণকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

১৬. ওরা তো তারা যাদের আমি উত্তম আমলগুলি গ্রহণ করে থাকি এবং তাদের মন্দ আমলগুলো ক্ষমা করি, তারা জান্নাতবাসীদের অন্তর্ভুক্ত। এদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে তা সত্য প্রমাণিত হবে।

১৭. আর যে তার মাতা-পিতাকে (ঘৃণাচ্ছলে) বলেঃ তোমাদের জন্যে দুঃখ হয়! তোমরা কি আমাকে এ ভয় দেখাতে চাও যে, আমি পুনরুত্থিত হবো অথচ আমার পূর্বে বহু জাতি গত হয়েছে? আর তারা দু'জনে আল্লাহর নিকট ফরিয়াদ করে বলেঃ তুমি ধ্বংস হয়ে যাও, বিশ্বাস স্থাপন কর, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি অবশ্যই সত্য; কিন্তু সে বলেঃ এটা তো অতীতকালের গল্প-কাহিনী মাত্র।

১৮. ওরা তো তারা যাদের প্রতিও আল্লাহর কথা (আযাব) সত্য

نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى وَالِدَيَّْ وَأَنْ
أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي
إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ⑤

أُولَئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَّ
الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ⑤

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ إِفِ لَكُمَا اتَّعِدْنِي
أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي
وَهُمَا يَسْتَفْغِيثُنِ اللَّهُ وَبِكَ آمِنُ ⑥ وَإِنَّ اللَّهَ
حَقُّ ⑥ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ⑤

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْرٍ قَدْ خَلَّتْ

হয়েছে। এদের পূর্বেকার জ্বিন ও মানুষ সম্প্রদায়ের মত। এরাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

১৯. প্রত্যেকের মর্যাদা তার কর্মানুযায়ী হবে যেন (আল্লাহ) প্রত্যেকের কর্মের পূর্ণ প্রতিফল দিবেন এবং তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

২০. যেদিন অবিশ্বাসীদেরকে জাহান্নামের উপর দাঁড় করানো হবে। (সেদিন তাদেরকে বলা হবেঃ) তোমরা তো পার্থিব জীবনে পূর্ণ সুখ-শান্তি ভোগ করে নিয়েছ; সুতরাং আজ তোমাদেরকে দেয়া হবে অবমাননাকর শাস্তি, তোমরা পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে অহংকার করেছিলে এবং তোমরা ছিলে পাপাচারী।

২১. এবং স্মরণ কর, আ'দ সম্প্রদায়ের ভ্রাতার কথা, তিনি তার আহকাফবাসী সম্প্রদায়কে সতর্ক করেছিলেন এবং এর পূর্বে ও পরেও সতর্ককারী এসেছিল (এই বলে) যে, আল্লাহ ব্যতীত কারও ইবাদত করা না। আমি তোমাদের জন্যে মহাদিবসের শাস্তির আশঙ্কা করছি।

২২. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদেরকে আমাদের দেব-দেবীগুলোর পূজা হতে বাধা দিতে এসেছো? তুমি যার (যে আযাবের) ভয় দেখাচ্ছ তা আমাদের নিকট নিয়ে আস যদি তুমি সত্যবাদী হও।

مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا
خٰسِرِيْنَ ﴿١٩﴾

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَيُؤَقِّبُهُمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ
وَهُمْ لَا يُظَلُّوْنَ ﴿٢٠﴾

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلْهَبْتُمْ
كَيْبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا ۖ وَاسْتَنْعَمْتُمْ بِهَا ۖ
فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ
تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۖ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿٢١﴾

وَأَذْكُرُ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَّتِ الثُّرُودُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ
أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢٢﴾

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِتَأْفُكِنَا عَنْ إِلَهَاتِنَا ۖ فَاتِنَا بِمَا
تَعِدُنَا ۖ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তিনি বললেনঃ এর জ্ঞান তো শুধু আল্লাহরই রয়েছে; আমি যা নিয়ে প্রেরিত হয়েছি শুধু তাই তোমাদের নিকট প্রচার করি; কিন্তু আমি দেখছি, তোমরা এক মূর্খ সম্প্রদায়।

২৪. অতঃপর যখন তাদের উপত্যকার দিকে তারা মেঘ আসতে দেখলো তখন তারা বলতে লাগলোঃ সেটা তো মেঘ, আমাদেরকে বৃষ্টি দান করবে। (হুদ صَلَّى বললেনঃ) বরং এটাই তো ওটা যা তোমরা তাড়াতাড়ি চেয়েছো, এতে রয়েছে এক ঝড়-তুফান যার মাঝে রয়েছে ভয়াবহ আযাব।

২৫. এ ঝড়-তুফান তার প্রতিপালকের নির্দেশে সবকিছুকে ধ্বংস করে দিবে। অতঃপর তাদের পরিণাম এই হলো যে, তাদের বসতিগুলো ছাড়া আর কিছুই রইলো না। এভাবে আমি অপরাধী সম্প্রদায়কে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

২৬. আমি তাদেরকে (আ'দ সম্প্রদায়কে) যা দিয়েছিলাম তোমাদেরকে তা দেই নি; আমি তাদেরকে কর্ণ, চক্ষু ও হৃদয় দিয়েছিলাম; কিন্তু তাদের কর্ণ, তাদের চক্ষু ও তাদের হৃদয় তাদের কোন কাজে আসেনি; কেননা তারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে অমান্য করেছিল। তা-ই তাদেরকে পরিবেষ্টন করলো যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো।

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِن لَّيُخَلِّمُنَا
أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

فَلَبَّآ رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ ۖ قَالَ لَوْ هَذَا
عَارِضٌ مُّطِيرٌ نَّاطِلٌ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ ۗ رِيحٌ
فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَى
إِلَّا مَسْكِنُهُمْ ۗ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا إِن مَّكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
سَعَاءً وَابْصَارًا وَآفِدَةً ۗ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَعُهُمْ
وَلَا ابْصَارُهُمْ وَلَا آفِدَتُهُمْ مِّن شَيْءٍ إِذْ كَانُوا
يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٦﴾

২৭. আমি তো ধ্বংস করেছিলাম তোমাদের চতুর্স্পর্শবর্তী জনপদ-সমূহ; আমি নিদর্শনাবলী বর্ণনা করেছিলাম, যাতে তারা ফিরে আসে (সৎপথে)।

২৮. তারা (আল্লাহর) সান্নিধ্য লাভের জন্যে আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে মা'বুদ গ্রহণ করেছিল তারা তাদেরকে সাহায্য করলো না কেন? বস্তুতঃ তাদের মা'বুদগুলো তাদের নিকট হতে হারিয়ে যায়। তাদের মিথ্যা ও অলীক উদ্ভাবনের পরিণাম এরূপই।

২৯. (স্মরণ কর), আমি তোমার নিকট পাঠিয়েছিলাম একদল জ্বিনকে, যারা কুরআন পাঠ শুনছিল, যখন তারা তার (নবীর) নিকট উপস্থিত হলো, তারা বলতে লাগলোঃ নীরবে শ্রবণ কর। যখন (কুরআন পাঠ) সমাপ্ত হলো তখন তারা তাদের সম্প্রদায়ের নিকট সতর্ককারী রূপে ফিরে গেল—

৩০. তারা বললোঃ হে আমাদের সম্প্রদায়! আমরা এমন এক কিতাব শ্রবণ করেছি যা মূসা (عليه السلام)-এর পরে অবতীর্ণ করা হয়েছে, যা পূর্ব কিতাবের সত্যায়ন করে এবং সত্যের দিকে এবং সরল পথের দিকে পরিচালিত করে।

৩১. হে আমাদের সম্প্রদায়! আল্লাহর দিকে আহ্বানকারীর ডাকে সাড়া দাও এবং তার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর, তিনি তোমাদের পাপ

وَلَقَدْ أَهَلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ وَصَرَفْنَا
الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾

فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
قُرْبَانًا إِلَىٰ هَاتِهِ طَبَلٌ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۗ وَذَلِكَ أَفْهُمْ
وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿٢٨﴾

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ
الْقُرْآنَ ۗ فَلَمَّا حَصَرُوهُ قَالُوا يَا سَمِئِيلُ ۗ فَلَئِمَّا
فُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿٢٩﴾

قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِنْ
بَعْدِ مَوْلَىٰ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾

يَقَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ
مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣١﴾

ক্ষমা করবেন এবং যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হতে তোমাদেরকে রক্ষা করবেন।

৩২. এবং যে আল্লাহর দিকে আহ্বানকারীর ডাকে সাড়া না দেয় তবে সেও পৃথিবীতে আল্লাহর অভিপ্রায়কে ব্যর্থ করতে পারবে না এবং আল্লাহ ছাড়া তাদের কোন সাহায্যকারীও থাকবে না। তারাই সুস্পষ্ট গোমরাহীতে রয়েছে।

৩৩. তারা কি দেখে না যে, আল্লাহ, যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন এবং এসবের সৃষ্টিতে কোন ক্লাস্তিবোধ করেননি, তিনি মৃতের জীবন দান করতেও সক্ষম। কেন নয়? নিশ্চয়ই তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

৩৪. যেদিন কাফিরদেরকে উপস্থিত করা হবে জাহান্নামের নিকট, (সেদিন তাদেরকে জিজ্ঞাসা করা হবেঃ) এটা কি সত্য নয়? তারা বলবেঃ হ্যাঁ আমাদের প্রতিপালকের শপথ! (এটা সত্য)। তিনি (আল্লাহ) বলবেনঃ অতএব তোমরা যে কুফরী করতে তার পরিবর্তে শাস্তি আন্বাদন কর।

৩৫. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর যেমন ধৈর্যধারণ করেছিলেন দৃঢ় প্রতিজ্ঞ রাসূলগণ এবং তাদের জন্যে (শান্তির প্রার্থনায়) তাড়াতাড়ি করো না। তাদেরকে যে বিষয়ে সতর্ক করা হয়েছে তা সেদিন তারা প্রত্যক্ষ করবে, সেদিন তাদের মনে হবে, তারা যেন দিবসের কিছুক্ষণের

وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ط
أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٢﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْزُبْ عَنْهُم مَّخْلَقَهُنَّ بِقَدْرِ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ط بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ط أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ ط قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ط قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾

فَصَبِرْ كَمَا صَبَرِ أُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ط كَانَتْهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ ط لَمْ يَلْبُثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ط بَلَّغْ فَمَهْلُ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾

বেশি পৃথিবীতে অবস্থান করেনি।
এটা হলো সংবাদ দেয়া, সত্যতাগী
সম্প্রদায় ব্যতীত কাউকেও ধ্বংস
করা হবে না।

সূরাঃ মুহাম্মাদ, মাদানী

(আয়াতঃ ৩৮, রুকূ'ঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ۳۸ رُكُوعَاتُهَا ۴

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. যারা কুফরী করে এবং অপরকে
আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখে তিনি
তাদের আমল নষ্ট করে দেন।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ
أَعْمَالَهُمْ ①

২. এবং যারা ঈমান আনে, সং
আমল করে এবং মুহাম্মাদ (ﷺ)-
এর প্রতি যা অবতীর্ণ করা হয়েছে
বিশ্বাস করে, আর তাই তাদের
প্রতিপালক হতে সত্য; তিনি তাদের
অপকর্মগুলো দূরিভূত করবেন এবং
তাদের অবস্থা ভাল করবেন।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ
عَلَيْ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ②

৩. এটা এ জন্য যে, যারা কুফরী
করে তারা বাতিলের অনুসরণ করে
আর যারা ঈমান আনে তারা তাদের
প্রতিপালক প্রেরিত সত্যের অনুসরণ
করে। এভাবে আল্লাহ মানুষের জন্য
তাদের দৃষ্টান্ত পেশ করেন।

ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ كَذَلِكَ يَضْرِبُ
اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ③

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ সেই
সত্ত্বার শপথ! যাঁর হাতে (আমি) মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রাণ, বর্তমা: মানবগোষ্ঠীর
কোন ইয়াহুদী বা খ্রিস্টান আমা। আর্বিভাবের সংবাদ শুনার পর যে “ঈমান” নিয়ে আমি প্রেরিত হয়েছি, তার
প্রতি ঈমান না এনে মৃত্যুবরণ করলে সে নিশ্চিতই জাহান্নামীদের অঙ্কন হবে। (মুসহিফ, হাদীস নং
৩৮৬)

৪. অতএব যখন তোমরা কাফিরদের সাথে যুদ্ধে মিলিত হও তখন তাদের গর্দানে আঘাত কর, পরিশেষে যখন তোমরা তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে পরাভূত করবে তখন তাদেরকে কষে বেড়িতে বাঁধবে; অতঃপর তখন হয় অনুকম্পা; নয় মুক্তিপণ। (তোমরা জিহাদ চালাবে) যতক্ষণ না যুদ্ধ তার অস্ত্রের বোঝা নামিয়ে ফেলে। এটাই বিধান। এটা এই জন্যে যে, আল্লাহ ইচ্ছা করলে তাদেরকে (নিজেই) শাস্তি দিতে পারতেন; কিন্তু তিনি তোমাদেরকে পরস্পরের দ্বারা পরীক্ষা করতে চান। যারা আল্লাহর পথে নিহত তিনি তাদের কর্ম বিনষ্ট হতে দেবে না।

৫. তিনি তাদেরকে সৎপথে পরিচালিত করলে এবং তাদের অবস্থা ভাল করে দিবেন।

৬. তিনি তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে, যার কথা তিনি তাদেরকে জানিয়েছেন।

৭. হে মু'মিনগণ! যদি তোমরা আল্লাহকে সাহায্য কর, তবে তিনি তোমাদেরকে সাহায্য করবেন এবং তোমাদের (অবস্থান) সুদৃঢ় করবেন।

فَإِذَا لَقَيْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ
إِذَا أَتَخْتَبُّوهُمْ فَشُدُّوا الْوَتَاقَ ۖ فَمَا مَثَلًا بَعْدُ
وَإِمَّا فِدَاءٌ حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أوزَارَهَا ۗ ذَٰلِكَ
وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَآتَيْنَصَّرَ مِنْهُمْ ۖ وَلَٰكِنْ لِّيَبْلُوَ
بَعْضَكُمْ بَعْضًا ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَكُنْ
يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصَلِّحُ بِأَلْحَمِّ ۝

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ
وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝

১। আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ (জাহান্নামের) আগুন থেকে মুক্তি পাওয়ার পর মু'মিনদেরকে জান্নাত ও জাহান্নামের মাঝখানে অবস্থিত একটি পুলের ওপর এনে দাঁড় করানো হবে। আর (তথায়) তাদের দুনিয়াতে একে অপরের প্রতি কৃত অন্যায়ে-অবিচারের প্রতিশোধ গ্রহণ করা হবে। এক পর্যায়ে তারা পাক-পবিত্র হয়ে গেলে তাদেরকে বেহেশতে প্রবেশের অনুমতি দেয়া হবে। সেই সত্তার কসম! যাঁর হাতে মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর জীবনঃ প্রত্যেক ব্যক্তি তার জান্নাতের বাড়ি দুনিয়ার বাড়ির চেয়েও উত্তমরূপে চিনতে সক্ষম হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫৩৫)

৮. যারা কুফরী করেছে তাদের জন্য দুর্ভোগ এবং তিনি তাদের আমল নষ্ট করে দিবেন।

৯. এটা এজন্য যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তারা তা অপছন্দ করে। সে কারণে আল্লাহ তাদের কর্ম নিষ্ফল করে দিবেন।

১০. তারা কি পৃথিবীতে পরিভ্রমণ করেনি এবং দেখেনি তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছিল? আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করেছেন এবং কাফিরদের জন্যে রয়েছে অনুরূপ পরিণাম।

১১. এটা এজন্যে যে, আল্লাহ মু'মিনদের অভিভাবক এবং কাফিরদের কোন অভিভাবক নেই।

১২. নিশ্চয়ই যারা ঈমান আনয়ন করবে এবং সৎ আমল করবে আল্লাহ তাদেরকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; কিন্তু যারা কুফরী করে, তারা ভোগ-বিলাসে লিপ্ত থাকে এবং জীব-জন্তুর মত আহার করে, তাদের বাসস্থান জাহান্নাম।

১৩. তোমার যে জনপদ হতে তোমাকে বিতাড়িত করেছে তা অপেক্ষা অতি শক্তিশালী কত জনপদ ছিল; আমি তাদেরকে ধ্বংস করেছি এবং তাদেরকে সাহায্য করার কেউ ছিল না।

১৪. যে ব্যক্তি তার প্রতিপালক হতে সুস্পষ্ট প্রমাণের ওপর প্রতিষ্ঠিত সে

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعَسَا لَهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ⑧

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ⑨

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ طَدَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ نُولِكْفِرِينَ أَمْثَالَهَا ⑩

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكُفْرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ ⑪

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ⑫

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْنَاكَ ۖ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ⑬

أَفَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ كَذَّبَ زُتِينَ لَهُ سُوءٌ

কি তার ন্যায় যার নিকট নিজের মন্দ আমলগুলো সুশোভিত যারা নিজেদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে?

عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٣﴾

১৫. মুত্তাকীদেরকে যে জান্নাতের অঙ্গীকার দেয়া হয়েছে তার দৃষ্টান্ত হলো সেখানে থাকবে নির্মল পানির নহরসমূহ, আছে দুধের নহরসমূহ যার স্বাদ অপরিবর্তনীয় এবং পানকারীদের জন্যে সুস্বাদু সুরার নহরসমূহ এবং পরিশোধিত মধুর নহরসমূহ এবং সেখানে তাদের জন্যে থাকবে বিবিধ ফল-মূল ও তাদের প্রতিপালকের ক্ষমা। (মুত্তাকীরা কি তাদের ন্যায়) যারা জাহান্নামে স্থায়ী হবে এবং যাদেরকে পান করতে দেয়া হবে ফুটন্ত পানি যা তাদের নাড়ি-ভুড়ি ছিন্ন-ভিন্ন করে দিবে?

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرَ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَيْرِ لَدَّةٍ لِلشَّرْبِ بَيْنَهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ط كَسَنَ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَبِيبًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾

১৬. এবং তাদের মধ্যে কতক তোমার কথা শ্রবণ করে, অতঃপর তোমার নিকট হতে বের হয়ে যারা জ্ঞানবান তাদেরকে বলেঃ এই মাত্র সে কি বললো? তাদের অন্তরের উপর আল্লাহ মোহর মেরে দিয়েছেন এবং তারা নিজেদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۗ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِن عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنْفَأْتُمْ أَوَّلِيكَ الَّذِينَ ظَلَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾

১৭. যারা সৎপথ অবলম্বন করে আল্লাহ তাদের হিদায়েত বৃদ্ধি করেন এবং তাদেরকে তাকওয়া দান করেন।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَكَثُرَتْ قَوْلُهُمْ ﴿١٧﴾

১৮. তারা তো কিয়ামতেরই অপেক্ষা করছে যে, কিয়ামত তাদের নিকট এসে পড়ুক অকস্মিকভাবে? তবে

نَهَلٌ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ

কিয়ামতের লক্ষণসমূহ তো এসেই পড়েছে! যদি তা এসেই যায় তবে তারা উপদেশ গ্রহণ করবে কেমন করে!

১৯. সুতরাং তুমি জান যে, আল্লাহ ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বুদ নেই, ক্ষমা প্রার্থনা কর তোমার ক্রটি'র জন্য এবং মু'মিন নর-নারীদের ক্রটি'র জন্যে। আল্লাহ তোমাদের গতিবিধি এবং অবস্থান সম্বন্ধে অবগত আছেন।

২০. মু'মিনরা বলেঃ একটি সূরা অবতীর্ণ হয় না কেন? অতঃপর যখন সুস্পষ্ট মর্ম বিশিষ্ট কোন সূরা অবতীর্ণ হয় এবং তাতে জিহাদের কথা উল্লেখ করা হয় তুমি দেখবে যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তারা মৃত্যুভয়ে বিহ্বল মানুষের মত তোমার দিকে তাকাচ্ছে। তাদের জন্যে উত্তম ছিল যে,

২১. আনুগত্য করা ও ন্যায়সঙ্গত কথা বলা। অতঃপর যখন (জিহাদের) সিদ্ধান্ত চূড়ান্ত হয় আর তারা আল্লাহর সাথে সততা রক্ষা করে তবে তাদের জন্যে এটা মঙ্গলজনক হবে।

২২. ক্ষমতায় অধিষ্ঠিত হলে তোমাদের দ্বারা এমনও সম্ভব যে তোমরা পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং তোমাদের আত্মীয়তার বন্ধন ছিন্ন করবে।^১

ذِكْرُهُمْ ⑩

فَاعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُ لِدُنْيِكَ
وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ط وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مُتَقَلِّبِكُمْ وَمُتَوَلِّكُمْ ⑪

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ
فَإِذَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذِكْرَ فِيهَا
الْقِتَالِ ۚ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ط فَأُولَىٰ لَهُمْ ⑫

طَاعَةٌ وَ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ
فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ⑬

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا
فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ⑭

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেনঃ তিনি বলেন আল্লাহ তা'আলা সৃষ্টিকুলকে সৃষ্টি করেন। তা শেষ করলে 'রাহেম' বা 'রক্ত

২৩. ওরা তারাই যাদের প্রতি আল্লাহ লানত করেছেন এবং তাদেরকে বধির ও দৃষ্টিশক্তিহীন করেন।

২৪. তবে কি তারা কুরআন সম্বন্ধে গভীরভাবে চিন্তা-ভাবনা করে না? না তাদের অন্তর তালাবদ্ধ?

২৫. যাদের নিকট হিদায়েত স্পষ্ট হবার পরও পৃষ্ঠ-প্রদর্শন করে ফিরে যায় শয়তান তাদের কাজকে শোভন করে দেখায় এবং তাদেরকে ঢিল দিয়ে রাখে।

২৬. এটা এজন্যে যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন যারা তা অপছন্দ করে; তাদেরকে তারা বলেঃ আমরা কোন কোন বিষয়ে তোমাদের আনুগত্য করবো। আল্লাহ তাদের গোপন কথাও অবগত আছেন।

২৭. তাদের মরণ কালে ফেরেশ্তারা যখন তাদের মুখমন্ডলে ও পৃষ্ঠদেশে আঘাত করবে, তখন তাদের অবস্থা কেমন হবে!

২৮. এটা এজন্যে যে, যা আল্লাহর ক্রোধ সৃষ্টি করে তারা তার অনুসরণ করে এবং তাঁর সন্তুষ্টিতে অপছন্দ করে; ফলে তিনি তাদের কর্ম নষ্ট করে দেন।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّىٰ
أَبْصَارَهُمْ ﴿١٧﴾

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ
أَقْفَالُهَا ﴿١٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِن بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ
وَأَمَلَىٰ لَهُمْ ﴿١٩﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ
سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٠﴾

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ
وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢١﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا
رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٢﴾

সম্পর্ক' দাঁড়ালো (আল্লাহর দরবারে কিছু আরম্ভ করলো) আল্লাহ বলেনঃ থামো। সে (রক্ত-সম্পর্ক) বলেঃ যে ব্যক্তি আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্ন করে আমি তার থেকে তোমার নিকট পানাহ চাই। আল্লাহ বলেনঃ যে তোমাকে একত্রিত করবে আমি তার সাথে মিলিত হবো, আর যে তোমাকে ছিন্ন করবে আমি তার থেকে ছিন্ন হবো- এতেও কি তুমি সন্তুষ্ট নও? জবাবে সে বলেঃ হে পরওয়ারদিগার! অবশ্যই, তিনি (আল্লাহ) বলেন, তোমার জন্য তাই। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, তোমরা চাইলে পড়তে পারঃ “ক্ষমতায় অধিষ্ঠিত হলে সম্ভবতঃ তোমরা পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং আত্মীয়তার বন্ধন ছিন্ন করবে।” (সূরা মুহাম্মাদঃ ২২) (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৩০)

২৯. যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তারা কি মনে করে যে, আল্লাহ তাদের বিদেষ ভাব প্রকাশ করে দেবেন না?

৩০. আমি ইচ্ছা করলে তোমাকে তাদেরকে দেখাতাম। ফলে তুমি তাদের লক্ষণ দেখে তাদেরকে চিনতে পারতে, তবে তুমি অবশ্যই কথার ভঙ্গিতে তাদেরকে চিনতে পারবে। আল্লাহ তোমাদের কর্ম সম্পর্কে অবগত।

৩১. আমি অবশ্যই তোমাদেরকে পরীক্ষা করবো, যতক্ষণ না আমি অবগত হই তোমাদের মধ্যেকে জিহাদকারী ও ধৈর্যশীল এবং আমি তোমাদের অবস্থা সমূহেরও পরীক্ষা করি।

৩২. যারা কুফরী করে এবং মানুষকে আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখে এবং নিজেদের নিকট হিদায়েত স্পষ্ট হবার পরও রাসূল (ﷺ)-এর বিরোধিতা করে, তারা আল্লাহর কোন ক্ষতি করতে পারবে না। তিনি তো তাদের কর্ম নষ্ট করবেন।

৩৩. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর আনুগত্য কর এবং রাসূল (ﷺ)-এর

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَارَيْنَاكُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيئِهِمْ ط
وَلَعَرَفْتَهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ط وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْمُجْتَهِدِينَ مِنْكُمْ
وَالصَّابِرِينَ ۗ وَنَبْلُوَنَّكُمْ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَشَاقُوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ
الْهُدَى لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُجِطُّ
أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

১। আবু মুসা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে জ্ঞান ও সঠিক পথ-নির্দেশ দিয়ে আল্লাহ আমাকে পাঠিয়েছেন, তার দৃষ্টান্ত মাটির ওপর বর্ষিত প্রচুর বৃষ্টির মত। যে মাটি পরিষ্কার ও উর্বর, তা ঐ পানি গ্রহণ করে অনেক ঘাস ও শস্য উৎপন্ন করে। আর যে মাটি শক্ত, তা ঐ পানি ধরে রাখে। আল্লাহ তার সাহায্যে মানবজাতির কল্যাণ করেন। মানুষ তা নিজে পান করে, পশুদেরকে পান করায় এবং সেচের মাধ্যমে ফসল উৎপন্ন করে। আর কিছু অনুর্বর মাটি থাকে যা বৃষ্টির পানি ধরে রাখে না এবং ঘাস ও উৎপন্ন করে না। এটাই হচ্ছে তার দৃষ্টান্ত যে আল্লাহর ধ্বিনের জ্ঞান অর্জন করে এবং তাতে লাভবান হয়। আল্লাহ আমাকে যা দিয়ে পাঠিয়েছেন তা নিজে শিক্ষা করে এবং অন্যকে শিক্ষা দেয়। আর এটা সেই লোকেরও দৃষ্টান্ত যে তার দিকে মাথা তুলেও তাকায় না এবং আমাকে আল্লাহ্ যে পথ-নির্দেশ দিয়ে পাঠানো হয়েছে তাও গ্রহণ করে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৯)

আনুগত্য কর, আর (তা না করে) তোমাদের আমলসমূহ বিনষ্ট করো না।

الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٢٤﴾

৩৪. যারা কুফরী করে ও আল্লাহর পথ হতে মানুষকে বিরত রাখে, অতঃপর কাফির অবস্থায় মারা যায়, আল্লাহ তাদেরকে কখনই ক্ষমা করবেন না।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَكَانَ يُعْذِرُ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

৩৫. সূতরাং তোমরা হীনবল হয়ে না এবং সন্ধির জন্য আহ্বান করো না, (কেননা) তোমরাই বিজয়ী; আল্লাহ তোমাদের সঙ্গে আছেন (আরশের উপর হতে পর্যবেক্ষণ ও সাহায্য করার দিক দিয়ে), তিনি তোমাদের কর্মফল কখনো নষ্ট করবেন না।

فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ ۗ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ ۗ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٢٦﴾

৩৬. দুনিয়ার জীবন তো শুধু খেল-তামাশার, যদি তোমরা ঈমান আনো ও তাকওয়ার পথে চলো তবে আল্লাহ তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিফল দিবেন। আর তিনি তোমাদের ধন-সম্পদ চান না।

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ وَارٍ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أَجْرَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٢٧﴾

৩৭. তোমাদের নিকট হতে তিনি তা চাইলে ও সে জন্য তোমাদের উপর চাপ দিলে তোমরা তো কার্পণ্য করবে এবং তিনি তোমাদের বিদেষ্টা ভাব প্রকাশ করে দিবেন।

إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبَخَّلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٢٨﴾

৩৮. দেখো, তোমরাইতো তারা যাদেরকে আল্লাহর পথে ব্যয় করতে বলা হচ্ছে অথচ তোমাদের অনেকে কৃপণতা করছে; যারা কার্পণ্য করে তারা তো কার্পণ্য করে নিজেদেরই প্রতি। আল্লাহ অভাবমুক্ত এবং

هَآئِنْتُمْ هُوَ لِآءٍ تَدْعُونَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ ۚ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَبْخُلْ عَن نَّفْسِهِ ۗ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ ۗ وَأَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۗ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا

তোমরা অভাবহস্ত, যদি তোমরা বিমুখ হও তবে তিনি অন্য জাতিকে তোমাদের স্থলাভিষিক্ত করবেন; তারা তোমাদের মত হবে না।

يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ لَكُمْ لَا يَكُونُوا
أَمْثَلَكُمْ ﴿٢٨﴾

সূরাঃ ফাত্‌হ, মাদানী

(আয়াতঃ ২৯, রুকু'ঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٩ رُكُوعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. নিশ্চয়ই (হে রাসূল) আমি তোমাকে দান করেছি সুস্পষ্ট বিজয়।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿١﴾

২. আল্লাহ তোমার অতীত ও ভবিষ্যত^১ ক্রটিসমূহ যেন মার্জনা করেন এবং তাঁর অনুগ্রহ তোমার জন্য পূর্ণ করেন এবং তোমাকে সরল পথে পরিচালিত করেন।

لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ

وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا
مُسْتَقِيمًا ﴿٢﴾

৩. এবং তোমাকে আল্লাহ বলিষ্ঠভাবে সাহায্য দান করেন।

وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ﴿٣﴾

৪. তিনিই মু'মিনদের অন্তরে প্রশান্তি দান করেন যেন তারা নিজেদের ঈমানের সহিত ঈমান আরও বাড়িয়ে নেয়, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর বাহিনীসমূহ আল্লাহরই এবং আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান-

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ

لِيَزِدُوا إِيمَانًا مَعَ إِيْمَانِهِمْ ۗ وَاللَّهُ جَوُّدٌ

السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٤﴾

৫. এটা এজন্যে যে, তিনি মু'মিন পুরুষদেরকে ও মু'মিন নারীদেরকে

لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ

১। মুগীরা ইবনে ওয়'বা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) রাতে (নামাযে) এতটা দাঁড়াতেন, যাতে তাঁর দু'পা ফুলে যেতো। তাঁকে বলা হলো, আল্লাহ তো আপনার পূর্বাপর (সকল) গোনাহ মাফ করে দিয়েছেন। (এরপরও কেন এত দীর্ঘক্ষণ দাঁড়িয়ে নফল নামায পড়ছেন?) তিনি বললেনঃ আমি কি আল্লাহর শোকরগুজার বান্দা হবো না? (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৩৬)

এমন জান্নাতে প্রবেশ করিয়ে দেন যার নিম্নদেশে নদী প্রবাহিত, যেখানে তারা স্থায়ী হবে এবং তিনি তাদের অপকর্ম সমূহ দূর করবেন; এটাই আল্লাহর নিকট মহা বিজয়।

৬. এবং তিনি মুনাফিক পুরুষ মুনাফিক নারী, মুশরিক পুরুষ ও মুশরিক নারীকে শাস্তি দিবেন যারা আল্লাহ সম্বন্ধে মন্দ ধারণা পোষণ করে। তাদের উপর অকল্যাণের চক্র (আযাব), আল্লাহ তাদের প্রতি ক্রোধান্বিত হয়েছেন এবং তাদেরকে অভিশপ্ত করেছেন আর তাদের জন্যে জাহান্নাম প্রস্তুত রেখেছেন; ওটা কত নিকট আবাস!

৭. আল্লাহরই আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর বাহিনীসমূহ এবং আল্লাহই পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

৮. আমি তোমাকে প্রেরণ করেছি সাক্ষীরূপে, সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে।

৯. যাতে তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আন এবং তাকে রাসূল (ﷺ)-কে সাহায্য কর ও সম্মান কর; সকাল-সন্ধ্যায় তাঁর (আল্লাহর) পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

১০. যারা তোমার বায়'আত গ্রহণ করে তারা তো আল্লাহরই বায়'আত গ্রহণ করে। আল্লাহর হাত তাদের হাতের উপর। সুতরাং যে ওটা ভঙ্গ করে ওটা ভঙ্গ করবার পরিণাম তারই উপর বর্তাবে এবং যে আল্লাহর সাথে

تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفَّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قَوْلًا عَظِيمًا ⑥

وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّالِمِينَ يَا اللَّهُ ظَنَّ السَّوْءَ ط عَلَيْهِمُ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَعَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ⑦

وَاللَّهُ جُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ⑧

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ⑨

لِيُتُومِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ط وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ⑩

إِنَّ الَّذِينَ يَبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يَبَايِعُونَ اللَّهَ ط يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَى نَفْسِهِ ۚ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ

অঙ্গীকার পূর্ণ করে তিনি তাকে মহা প্রতিদান দিবেন।

فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٥﴾

১১. যেসব আরব বেদুঈনকে পশ্চাতে রেখে দেয়া হয়েছে, তারা তোমাকে বলবেঃ আমাদের ধন-সম্পদ ও পরিবার-পরিজন আমাদেরকে ব্যস্ত করে রেখেছিল, অতএব আমাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করুন। তারা মুখে যা বলে তা তাদের অন্তরে নেই। তাদেরকে বলঃ আল্লাহ্ তোমাদের কারো কোন ক্ষতি কিংবা উপকার সাধনের ইচ্ছা করলে কে ক্ষমতা রাখে যে, তাঁকে বাধা দান করতে পারে? বস্তুতঃ তোমরা যা কর সে বিষয়ে আল্লাহ্ ভালোভাবে অবহিত।

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۗ يَقُولُونَ بِالسِّنْتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١١﴾

১২. বরং, তোমরা মনে করেছিলে যে, রাসূল (ﷺ) ও মু'মিনগণ তাদের পরিবার-পরিজনের নিকট কখনই ফিরে আসতে পারবে না এবং এ ধারণাটা তোমাদের অন্তরে খুব চমৎকার মনে হয়েছিল; তোমরা মন্দ ধারণা করেছিলে, তোমরা তো ধ্বংসমুখী এক সম্প্রদায়।

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا ۖ وَآوَزِينَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۗ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾

১৩. যারা আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আনে না, আমি সেসব কাকিরের জন্যে প্রজ্জ্বলিত অগ্নি প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَأَنتَا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾

১৪. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর আধিপত্য; তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেন। আর আল্লাহ্ মহা ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٤﴾

১৫. তোমরা যখন যুদ্ধলব্ধ সম্পদ সংগ্রহের জন্য যেতে থাকবে তখন যাদেরকে পশ্চতে ছেড়ে যাওয়া হয়েছিল, তারা বলবে: আমাদেরকে তোমাদের সাথে যেতে দাও। তারা আল্লাহর কথা পরিবর্তন করতে চায়। বলঃ তোমরা কখনই আমাদের সাথে যেতে পারবে না। আল্লাহ পূর্বেই এরূপ ঘোষণা করেছেন। তারা বলবে: তোমরা তো আমাদের প্রতি বিদেষ পোষণ করছো। বস্তুতঃ অতি সামান্যই বুঝে।

১৬. যেসব আরব বেদুঈনকে পশ্চতে ছেড়ে যাওয়া হয়েছিল তাদেরকে বলঃ তোমাদেরকে শীঘ্রই ডাকা হবে এক প্রবল পরাক্রান্ত জাতির বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতে: তোমরা তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে অথবা তারা আত্মসমর্পণ করবে। তোমরা এই নির্দেশ পালন করলে আল্লাহ তোমাদেরকে উত্তম পুরস্কার দান করবেন। আর তোমরা যদি পূর্বানুরূপ পৃষ্ঠ প্রদর্শন কর; তবে তিনি তোমাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রদান করবেন।

১৭. অন্ধ, পঙ্গু এবং রুগ্নের জন্য এবং রুগ্নের জন্যে কোন অপরাধ হবে না। আর যে কেউই আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য করবে আল্লাহ তাঁকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; কিন্তু যে ব্যক্তি পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে তিনি তাকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি দিবেন।

১৮. আল্লাহ মু'মিনদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন যখন তারা বৃষ্কতলে তোমার

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَى مَغَائِمٍ
لِتَأْخُذُوا هَا ذُرُوءًا نَتَّبِعْكُمْ ؕ يُرِيدُونَ
أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ ط قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَلِكُمْ
قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ ؕ فَسَيَقُولُونَ بَلْ
تَحْسُدُونَنَا بَلْ كَاثِبُونَ لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَى قَوْمٍ
أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ اتَّقَاتُوا لَهُمْ أَوْ يُسَلِّمُوا ؕ
فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ؕ وَإِنْ
تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ
حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ ط وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ

নিকট বায়'আত গ্রহণ করেছেন, তিনি তাদের অন্তরে যা ছিল তা অবগত হলেন তাই তাদেরকে তিনি দান করলেন প্রশান্তি এবং তাদেরকে বিনিময় দিলেন আসন্ন বিজয়,

১৯. এবং বিপুল পরিমাণ গণীমতের সম্পদ যা তারা হস্তগত করবে; আল্লাহ্ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

২০. আল্লাহ্ তোমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন গণীমতের বিপুল সম্পদের যার অধিকারী হবে তোমরা। তিনি এটা তোমাদের জন্যে তড়িঘড়ি করেছিলেন এবং তিনি তোমাদের হতে মানুষের হস্তকে প্রতিহত করেছেন এবং এটা যেন হয় মু'মিনদের জন্যে এক নিদর্শন এবং (আল্লাহ্) তোমাদেরকে পরিচালিত করেন সরল পথে।

২১. আরো বহু (গণীমত) সম্পদ রয়েছে যা এখনো তোমাদের অধিকারে আসেনি, ওটা তো আল্লাহ্র নিকটে রক্ষিত আছে। আল্লাহ্ সর্ব বিষয়ে সর্ব শক্তিমান।

২২. কাফিররা তোমাদের মুকাবিলা করলে (পরিণামে তারা) অবশ্যই পৃষ্ঠ প্রদর্শন করতো, তখন তারা কোন অভিভাবক ও সাহায্যকারী পেতো না।

২৩. এটা আল্লাহ্র বিধান, যা পূর্ব হতে চলে আসছে; তুমি আল্লাহ্র এই বিধানে কোন পরিবর্তন পাবে না।

২৪. তিনি সেই সত্ত্বা যিনি মক্কা উপত্যকায় তাদের হাত তোমাদের

تَحَتَّ الشَّجَرَةَ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٩﴾

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ط وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٢٠﴾

وَعَدَّكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۖ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢١﴾

وَآخَرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ط وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢٢﴾

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٢٣﴾

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۗ وَكَانَ تَجَدُّ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٤﴾

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ

হতে এবং তোমাদের হাত তাদের হতে ফিরিয়ে রেখেছেন তাদের উপর তোমাদেরকে বিজয়ী করবার পর। তোমরা যা করছিলে আল্লাহ তা দেখেছিলেন।

২৫. তারাই তো কুফরী করেছিল এবং বাধা দিয়েছিল তোমাদেরকে মসজিদুল হারাম হতে ও কুরবানীর জন্যে আবদ্ধ পশুগুলোকে যথাস্থানে পৌছতে। যদি (মক্কায়) না থাকতো এমন কতকগুলো মু'মিন নর ও নারী যাদেরকে তোমরা জানো না, তাদেরকে তোমরা পদদলিত করতে অজ্ঞাতসারে; ফলে তাদের কারণে তোমরা কষ্ট পেতে আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা তাকে স্বীয় নেয়ামত দান করবেন। যদি তারা (উভয়ে) পৃথক হতো, আমি তাদের মধ্যে কাফিরদেরকে যজ্ঞাদায়ক শাস্তি দিতাম।

২৬. যখন কাফিররা তাদের অন্তরে পোষণ করতো (গোত্রীয়) অহমিকা-জাহিল যুগের অহমিকা, তখন আল্লাহ্ তাঁর রাসূল (ﷺ) ও মু'মিনদেরকে স্বীয় প্রশান্তি দান করলেন; আর তাদেরকে তাকওয়ার কথা সুদৃঢ় করলেন, এবং এরাই ছিল এর অধিকতর যোগ্য ও উপযুক্ত। আল্লাহ্ সমস্ত বিষয়ে পরিজ্ঞাত।

২৭. নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর স্বপ্ন বাস্তবায়ন করেছেন, আল্লাহ্‌র ইচ্ছায় তোমরা অবশ্যই মসজিদুল হারামে প্রবেশ করবে নিরাপদে— কেউ কেউ মস্তক মুন্ডন

عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٥﴾

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَجَلَّةٌ ۙ وَكُلًّا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوَّهُمْ فَنُصِيبِكُمْ مِنْهُمْ مَعَزَةٌ ۙ بِيغْيِرَ عَلَيْهِمْ لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٦﴾

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالزَّمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٧﴾

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۗ لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ أَمِينِينَ مُحَرِّقِينَ رُءُوسِكُمْ وَمُقْتَصِرِينَ ۗ لَا تَخَافُونَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ

করবে, কেউ কেউ চুল কাটবে; তোমার কোন ভয় থাকবে না। আল্লাহ্ জানেন তোমরা যা জানো না। এটা ছাড়াও তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন এক আসন্ন বিজয়।

২৮. তিনিই তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে হিদায়েত ও সত্য দ্বীনসহ প্রেরণ করেছেন, অপর সমস্ত দ্বীনের উপর তাকে জয়যুক্ত করবার জন্যে। সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট।

২৯. মুহাম্মাদ (ﷺ) আল্লাহ্‌র রাসূল; আর যারা এর সাথে আছে তারা কাফিরদের বিরুদ্ধে কঠোর এবং নিজেদের মধ্যে পরস্পরে সহানুভূতিশীল; আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি কামনায় তুমি তাদেরকে রুকু' ও সিজদায় অবনত দেখবে। তাদের মুখমন্ডলে সিজদার চিহ্ন থাকবে, তাওরাতে তাদের বর্ণনা এরূপই এবং ইঞ্জিলেও। তাদের দৃষ্টান্ত একটি শস্য ক্ষেত, যার চারা গাছগুলো অঙ্কুরিত হয় পরে সেগুলো শক্ত ও পুষ্ট হয় পরে কাণ্ডের উপর দাঁড়ায় দৃঢ়ভাবে যা চাষীকে আনন্দিত করে। এভাবে (আল্লাহ্ মু'মিনদের সমৃদ্ধি দ্বারা) কাফিরদের অন্তর্জ্বালা সৃষ্টি করেন। যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আল্লাহ্ তাদেরকে ক্ষমা ও মহা পুরস্কারের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন।

تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿٢٨﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ط وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٢٩﴾

مُحَمَّدًا رَسُولَ اللَّهِ ط وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ز سِيَّئَاتِهِمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ط ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ ط وَ مَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ ط كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَظَلَّ ط فَاسْتَوَىٰ عَلَى سَوْقِهِ يُعْجِبُ الزَّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ط وَعَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٣٠﴾

সূরাঃ হুজুরাত মাদানী

(আয়াতঃ ১৮, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সামনে তোমরা কোন বিষয়ে অগ্রগামী হয়ে না এবং আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

২. হে মু'মিনগণ! তোমরা নবী (ﷺ)-এর কণ্ঠস্বরের উপর নিজেদের কণ্ঠস্বর উঁচু করো না এবং নিজেদের মধ্যে যেভাবে উচ্চস্বরে কথা বল তার সাথে সেই রূপ উচ্চস্বরে কথা বলো না; এতে তোমাদের কর্ম নষ্ট হয়ে যাবে তোমাদের অজান্তে।

৩. যারা আল্লাহর রাসূলের সামনে নিজেদের কণ্ঠস্বর নীচু করে, আল্লাহ তাদের অন্তরকে তাকওয়ার জন্যে পরীক্ষা করেছেন। তাদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা ও মহাপুরস্কার।

৪. যারা কক্ষসমূহের পিছন হতে তোমাকে উচ্চস্বরে ডাকে তাদের অধিকাংশই নির্বোধ।

৫. তুমি বের হয়ে তাদের নিকট আসবে যদি তারা ধৈর্যধারণ করতো তবে তাই তাদের জন্যে উত্তম হতো। আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৬. হে মু'মিনগণ! যদি ফাসিক তোমাদের নিকট কোন বার্তা আনয়ন করে, তোমরা তা পরীক্ষা করে

سُورَةُ الْحُجُرَاتِ مَدْيَنِيَّةٌ

يَأْتِيهَا ١٨ رُكُوعًا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ①

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ
النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ
لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ②

إِنَّ الَّذِينَ يُعْضُونَ أَسْوَأَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ
أُولَئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَى ط
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ③

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ④

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ
خَيْرًا لَهُمْ ط وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ

দেখবে যাতে অজ্ঞতা বশতঃ তোমরা কোন সম্প্রদায়কে কষ্ট না পৌছাও যাতে পরে তোমাদের কৃতকর্মের জন্যে লজ্জিত হয়ে যাও।

৭. তোমরা জেনে রেখো যে, তোমাদের মধ্যে আল্লাহর রাসূল (ﷺ) রয়েছেন; তিনি বহু বিষয়ে তোমাদের কথা শুনে তোমরাই কষ্ট পাবে; কিন্তু আল্লাহ্ তোমাদের নিকট ঈমানকে প্রিয় করেছেন এবং ওকে তোমাদের হৃদয়গ্রাহীও করেছেন; কুফরী, পাপাচার ও অবাধ্যতাকে করেছেন তোমাদের নিকট অপ্রিয়। এরাই সৎপথের পথিক।

৮. (এটা) আল্লাহর দান ও অনুগ্রহ; আল্লাহ্ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

৯. মু'মিনদের দুই দল যদি দ্বন্দ্ব লিপ্ত হয় তবে তোমরা তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দিবে; যদি তাদের একদল অপর দলের বিরুদ্ধে বাড়াবাড়ি করে তবে তোমরা বাড়াবাড়িকারী দলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে যতক্ষণ না তারা আল্লাহর নির্দেশের দিকে ফিরে আসে, যদি তারা ফিরে আসে তবে তাদের মধ্যে ন্যায়ে সাধে ফায়সালা করবে এবং সুবিচার করবে। নিশ্চয়ই আল্লাহ সুবিচারকারীদেরকে ভালবাসেন।

১০. মু'মিনরা পরস্পর ভাই ভাই, সুতরাং তোমাদের দুই ভাই-এর মধ্যে মীমাংসা করে দাও এবং আল্লাহকে ভয় কর যাতে তোমরা অনুগ্রহ প্রাপ্ত হও।

فَتَّبِعُوا أَنْ تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْحَبُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ﴿١﴾

وَأَعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الرُّشِدُونَ ﴿٢﴾

فَضَلَّامِنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٣﴾

وَإِنْ طَافَيْتُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۚ فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤﴾

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥﴾

১১. হে মু'মিনগণ! কোন পুরুষ যেন অপর কোন পুরুষকে বিদ্রূপ না করে; কেননা তারা তাদের চেয়ে উত্তম হতে পারে এবং কোন নারী অপর কোন নারীকেও যেন বিদ্রূপ না করে; কেননা সে তাদের অপেক্ষা উত্তম হতে পারে। তোমরা একে অপরের প্রতি দোষারোপ করো না এবং তোমরা একে অপরকে মন্দ নামে ডেকো না; ঈমানের পরে মন্দ নামে ডাকা গর্হিত কাজ। যারা এ ধরনের আচরণ পরিত্যাগ করে না তারাই অত্যাচারী।

১২. হে মু'মিনগণ! তোমরা বহুবিধ ধারণা হতে বিরত থাকো; কারণ কোন কোন ধারণা পাপ এবং তোমরা একে অপরের গোপনীয় বিষয় অনুসন্ধান করো না এবং একে অপরের পশ্চাতে নিন্দা করো না। তোমাদের মধ্যে কেউ কি তার মৃত ভাইয়ের গোশত ভক্ষণ করতে ভালবাসবে? বস্তুতঃ তোমরাও এটাকে ঘৃণাই কর। তোমরা আল্লাহকে ভয় কর। আল্লাহ তাওবা গ্রহণকারী, দয়ালু।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ
عَلَيْهِمْ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن
نِّسَاءِ عَلَيْهِمْ أَنْ يُكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ ۗ وَلَا تَلْمِزُوا
أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ طَبِئْسَ الْإِسْمُ
الْفُسُوقَ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۗ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ
إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعضُكُمْ
بَعْضًا ط أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ
أَخِيهِ مِمَّا فَكَرَ هَتْمُوهُ ط وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ
تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা অবশ্যই ধারণা-অনুমান থেকে বেঁচে থাক। কেননা, ধারণা-অনুমান সবচেয়ে বড় মিথ্যা কথা। কারো দোষ খুঁজে বেড়িও না, গোয়েন্দাগিরিতে লিপ্ত হয়ো না। (বেচা-কেনায়) একে অন্যকে ধোঁকা দিও না, পরস্পরে হিংসা করো না, একে অন্যের প্রতি বিদেষ ভাব রেখো না, একজন থেকে আরেকজন বিচ্ছিন্ন হয়ে যেও না। বরং তোমরা সবাই এক আল্লাহর বান্দা হয়ে ভাই ভাই বনে যাও। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৬৬)

(খ) হাম্মাম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণনা করেছেন, একদিন আমরা ছয়াইফা (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর সাথে ছিলাম। তাঁর কাছে বলা হলো, একজন লোক মানুষের কথা ওসমান (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর নিকট বলে থাকে (অর্থাৎ চোগলখুরী করে থাকে)। তখন ছয়াইফা (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, চোগলখোর বেহেশতে যাবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৫৬)

১৩. হে লোকসকল! আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি এক পুরুষ ও এক নারী হতে, পরে তোমাদেরকে বিভক্ত করেছি বিভিন্ন জাতি ও গোত্রে, যাতে তোমরা একে অপরের সাথে পরিচিত হতে পার। তোমাদের মধ্যে ঐ ব্যক্তিই আল্লাহর নিকট অধিক মর্যাদা সম্পন্ন যে অধিক মুত্তাকী। আল্লাহ সবকিছু জানেন, সবকিছুর খবর রাখেন।

১৪. আরব বেদুঈনগণ বলেঃ আমরা ঈমান আনলাম; তুমি বলঃ তোমরা ঈমান আননি, বরং তোমরা বলঃ আমরা ইসলাম গ্রহণ করেছি মাত্র। কারণ ঈমান এখনো তোমাদের অন্তরে প্রবেশ করেনি। যদি তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর তবে তোমাদের কর্মফল সামান্য পরিমাণও লাঘব করা হবে না। আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়ালু।

১৫. তারাই প্রকৃত মু'মিন যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আনার পরে আর কোন সন্দেহ পোষণ করে না এবং জান ও মাল দ্বারা আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে, তারাই সতানিষ্ঠ।

১৬. বলঃ তোমরা কি তোমাদের দ্বীন সম্পর্কে আল্লাহকে অবহিত করছো? অথচ আল্লাহ যা কিছু আছে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে তা জানেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সম্যক অবহিত।

১৭. যারা ইসলাম গ্রহণ করে তারা তোমার উপকার করেছে বলে মনে

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَى
وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا
إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٧﴾

قَالَتِ الْأَعْرَابُ أَمَّا قُلُوبُنَا لَنْ نَسْلُبَ مِنْهَا
الْإِيمَانَ فِي شَيْءٍ مِمَّا كَفَرْنَا بِهِ
وَلَا نَحْمِلُ الْوِجْدَانَ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ﴿١٨﴾

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿١٩﴾

قُلْ أَتَعْلَمُونَ اللَّهُ بِذُنُوبِكُمْ ط وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَاللَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٠﴾

يَسْتُونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ

করে। বলঃ তোমাদের ইসলাম গ্রহণ আমাকে উপকৃত করেছে এমনটি মনে করো না। বরং আল্লাহই তোমাদেরকে ঈমানের পথ দেখিয়ে তোমাদেরকে ধন্য করেছেন, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

১৮. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে অবগত আছেন তোমরা যা কর আল্লাহ তা দেখেন।

إِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَيْكُمْ
لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨﴾

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط
وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

সূরাঃ কা'ফ মাক্কী

(আয়াতঃ ৪৫, রুকূ'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ ق مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٥ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. কা'ফ, শপথ কুরআন মাজীদের।

২. কিন্তু কাফিররা তাদের মধ্য হ'তে একজন সতর্ককারী আবির্ভূত হতে দেখে বিস্ময় বোধ করে ও বলেঃ এটা তো এক আশ্চর্য ব্যাপার।

৩. আমাদের মৃত্যু হলে আমরা মৃত্তিকায় পরিণত হব, (অতঃপর আমরা কি পুনরুজ্জীবিত হবো?) সে প্রত্যাবর্তন তো সুদূর পরাহত!

৪. আমি তো জানি মৃত্তিকা ক্ষয় কর তাদের কতটুকু এবং আমার নিকট আছে সংরক্ষিত একটি কিতাব।

৫. বস্তুতঃ তাদের নিকট সত্য আসার পর তারা তা প্রত্যাখ্যান করেছে। ফলে তারা সংশয়ে পড়ে আছে।

ق وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ﴿١﴾

بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ
الْكَافِرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾

عَ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا
كِتَابٌ حَفِيفٌ ﴿٤﴾

بَلْ كَذَّبُوا بِآلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي
أَمْرٍ مَرِيعٍ ﴿٥﴾

৬. এৱাকি কখন তাৱেৱ ওপৱেৱ আকাশেৱ দিকে তাকিয়ে দেখে না কিভাবে আমি তা তৈৱি কৱেছি ও তাকে সুশোভিত কৱেছি? আৱ তাতে কোন (সুস্মতম) ফাটলও নেই।

৭. আমি ভূমিকে বিস্মৃত কৱেছি ও তাতে পৰ্বতমালা স্থাপন কৱেছি এৱং সেখানে উৎপন্ন কৱেছি নয়ন প্ৰীতিকৰ সৰ্বপ্ৰকাৰ উদ্ভিদ।

৮. প্ৰত্যেক বিনীত ব্যক্তিৰ জন্যে জ্ঞান ও উপদেশ স্বৰূপ।

৯. আকাশ হতে আমি বৰ্ষণ কৱি কল্যাণকৰ বৃষ্টি এৱং তদ্বাৱা আমি সৃষ্টি কৱি উদ্যান ও পৰিপক্ক শস্যৱাজি।

১০. ও উঁচু উঁচু খেজুৱ বৃক্ষ যাতে আছে গুচ্ছ গুচ্ছ খেজুৱ।

১১. বান্দাদেৱ জীৱিকা স্বৰূপ; আমি বৃষ্টি দ্বাৱা জীৱিত কৱি মৃত ভূমিকে; এভাবেই পুনৰুত্থান ঘটবে।

১২. তাৱেৱ পূৰ্বেও সত্য প্ৰত্যাখ্যান কৱেছিল নূহ (عليه السلام)-এৱ সম্প্ৰদায়, ৱাস্‌স ও সামুদ সম্প্ৰদায়,

১৩. আ'দ, ফিৱ'আউন ও লূতেৱ ভাইয়েৱা,

১৪. এৱং আয়কাৱ অধিবাসী ও তুস্বা সম্প্ৰদায়; তাৱা সকলে ৱাসূলদেৱকে মিথ্যাবাদী বলেছিল, ফলে তাৱেৱ উপৱ আমাৱ শাস্তি কাৰ্যকৰ হয়েছে।

১৫. আমি কি প্ৰথমবাৱ সৃষ্টি কৱেই ক্লাস্ত হয়ে পড়েছি বৱং পুনঃসৃষ্টি বিষয়ে তাৱা সন্দেহ পোষণ কৱবে!

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا
وَزَيَّلْنَاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ⑤

وَالْأَرْضِ مَدَدْنَاهَا وَاللَّيْلِنَا فِيهَا دَرَائِسَ
وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ⑥

تَبَصَّرَةٌ وَذِكْرَى لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ⑦

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبْرَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ
جَبْتٍ وَحَبِّ الْحَبِيدِ ⑧

وَالنَّخْلِ بَسِقَتٍ لَهَا طَلْعٌ نَضِيدٌ ⑩

رِزْقًا لِّلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا
كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ⑪

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَشُودُ ⑫

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ⑬

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَيْعٍ ط كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَحَقَّ وَعِيدِ ⑭

أَفَعَيِينَا بِالْحَلْقِ الْأَوَّلِ ط بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ
خَلْقٍ جَدِيدٍ ⑮

১৬. আমিই মানুষকে সৃষ্টি করেছি এবং তার অন্তর তাকে যে কুমন্ত্রণা দেয় তা আমি জানি। আমি তার ঘাড়ের শাহ রগ অপেক্ষাও নিকটতর (জ্ঞানের দিক দিয়ে)।

১৭. স্মরণ রেখো, দুই গ্রহণকারী (ফেরেশতা) তার ডানে ও বামে বসে তার কর্ম লিপিবদ্ধ করে।

১৮. মানুষ যে কথাই উচ্চারণ করে তা লিপিবদ্ধ করার জন্যে তৎপর প্রহরী তার নিকটেই রয়েছে।

১৯. মৃত্যুবন্ত্রণা সত্যই আসবে; এটা সে জিনিস হতে তোমরা অব্যাহতি চেয়ে আসছো।

২০. আর শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, এটাই ঐ দিন, যার ভয় দেখানো হতো।

২১. সেদিন প্রত্যেক ব্যক্তি উপস্থিত হবে, তার সাথে থাকবে চালক ও সাক্ষী।

২২. তুমি এই দিবস সম্বন্ধে অজ্ঞ ছিলে, এখন তোমার সম্মুখ হতে আবরণ সরিয়েছি, অদ্য তোমার দৃষ্টি প্রথর।

২৩. তার সঙ্গী (ফেরেশতা) বলবেঃ এই তো আমার নিকট আমলনামা প্রস্তুত।

২৪. (আদেশ করা হবেঃ) তোমরা উভয়ে নিষ্কেপ কর জাহান্নামে প্রত্যেক উদ্ধত কাফিরকে-

২৫. কল্যাণকর কাজে বেশি বেশি বাঁধা দানকারী, সীমালঙ্ঘনকারী ও সন্দেহ পোষণকারীকে।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعَلْمُ مَا تُوَسَّوْسُ بِهِ
نَفْسُهُ ۗ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾

إِذْ يَنْكَلِفُ الْمُنْتَكَفِينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ
قَعِيدٌ ﴿١٧﴾

مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ
مِنْهُ تَجِيدٌ ﴿١٩﴾

وَنُفِّخَ فِي الصُّورِ ۗ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكُشِفْنَا عَنْكَ
غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾

وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَائِيَ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾

أَقِيًّا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾

مَّتَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾

২৬. যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে অন্য মার্বুদ গ্রহণ করতো তাকে কঠিন শাস্তিতে নিষ্ক্ষেপ কর।

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيهِ فِي الْعَذَابِ
الشَّدِيدِ ﴿٣٥﴾

২৭. তার সহচর (শয়তান) বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমি তাকে অবাধ্য হতে প্ররোচিত করিনি। বস্তুতঃ সে নিজেই ছিল দূরবর্তী ভ্রষ্টতায়।

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَيْتُهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٣٦﴾

২৮. (আল্লাহ বলবেনঃ) আমার সামনে ঝগড়া করো না; তোমাদেরকে আমি তো পূর্বেই সতর্ক করেছি।

قَالَ لَا تَخْصِمُوا لَدَيْي وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ
بِأَلْوَعِيدٍ ﴿٣٧﴾

২৯. আমার কথার রদ-বদল হয় না এবং আমি আমার বান্দাদের প্রতি অবিচারকারী নই।

مَا يَبْدُلُ الْقَوْلُ لَدَيْي وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٣٨﴾

৩০. সেদিন আমি জাহান্নামকে জিজ্ঞেস করবোঃ তুমি কি পূর্ণ হয়ে গেছো? (জাহান্নাম) বলবেঃ আরো আছে কি?১

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأَتْ وَنَقُولُ هَلْ
مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٩﴾

৩১. আর জান্নাতকে নিকটস্থ করা হবে মুত্তাকীদের, কোন দূরত্ব থাকবে না।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٤٠﴾

৩২. এরই প্রতিশ্রুতি তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল, প্রত্যেক আল্লাহ অভিমুখী, হিফায়তকারীর জন্যে।

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٤١﴾

৩৩. যারা না দেখে দয়ায় আল্লাহকে ভয় করে এবং অন. ৫ হৃদয়ে উপস্থিত হয়-

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٤٢﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে (জাহান্নামীদেরকে) জাহান্নামে নিষ্ক্ষেপ করি তিনি (* গাহ তা'আলা তার মধ্যে) আনাস ন করবেন তখন সে বলবে ব্যাস ব্যাস। (আর নয় আর নয় (২ পাঃ হাদী ১ নং ৪৮৪৮)

বর্ণিত নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বে এ-ং জাহান্নাম বলবে, আরও অধিক আছে কি? শেষ পর্যন্ত

৩৪. শান্তি পূর্ণভাবে তোমরা তাতে প্রবেশ কর; এটা অনন্ত জীবনের দিন।

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۗ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾

৩৫. সেখানে তারা যা কামনা করবে তাই পাবে এবং আমার নিকট রয়েছে তারও অধিক (আল্লাহর দর্শন)।

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾

৩৬. আমি তাদের পূর্বে আরো বহু জাতি ধ্বংস করেছি যারা ছিল তাদের অপেক্ষা শক্তিতে প্রবল, তারা দেশ-বিদেশে ভ্রমণ করে ফিরতো; পরে তাদের জন্য কোন আশ্রয়স্থল রইলো না।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ ۗ هَلْ مِنْ مَّجِيصٍ ﴿٣٦﴾

৩৭. এতে উপদেশ রয়েছে তার জন্যে যার আছে অন্তঃকরণ অথবা যে শ্রবণ করে একাগ্র চিত্তে।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرًا لِّمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾

৩৮. আমি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এগুলোর মধ্যস্থিত সব কিছু সৃষ্টি করেছি ছয় দিনে; আমাকে কোন ক্লাস্তি স্পর্শ করেনি।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ ۗ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لَّغْوٍ ۙ ﴿٣٨﴾

৩৯. অতএব, তারা যা বলে তাতে তুমি ধৈর্যধারণ কর এবং তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা সহকারে পবিত্রতা বর্ণনা করা সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তের পূর্বে।^১

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾

৪০. তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর রাত্রির একাংশে এবং নামাযের পরেও।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَادْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾

১। জারীর ইবনে আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক সময়ে আমরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে ছিলাম। এই সময়ে রাতের বেলায় তিনি চাঁদের দিকে তাকিয়ে বললেন, এই চাঁদকে যেমন তোমরা দেখতে পাচ্ছ, ঠিক তেমনি তোমাদের প্রভুকেও দেখতে পাবে। তাঁকে দেখার ব্যাপারে কোনরূপ সন্দেহ পোষণ করবে না। সুতরাং সূর্য উদিত হওয়ার আগে এবং অন্ত যাওয়ার আগে (শয়তানের ওপর বিজয়ী হয়ে) যদি তোমরা ঠিক সময়ে নামায আদায় করতে পার তবে তাই কর। এরপর তিনি ডিলাওয়াত করলেনঃ অর্থাৎ “সূর্য উদয়ের পূর্বে ও অন্ত যাওয়ার পূর্বে তুমি আল্লাহর পবিত্রতা বর্ণনা কর।” (সূরা কা'ফঃ ৩৯) [বুখারী, হাদীস নং ৫৫৪]

৪১. আর শ্রবণ কর, যেদিন এক আস্থানকারী নিকটবর্তী স্থান হতে আস্থান করবে,

وَاسْتَبِيحَ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾

৪২. যেদিন (মানুষ) অবশ্যই শ্রবণ করবে এক বিকট আওয়াজ, সেদিনই (কবর হতে মৃত্যুদের) বের হবার দিন।

يَوْمَ يَسْعَوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٥٢﴾

৪৩. আমিই জীবিত করি, আর মৃত্যুও ঘটাই এবং সকলেই ফিরে আসবে আমারই দিকে।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٥٣﴾

৪৪. যেদিন পৃথিবী বিদীর্ণ হবে এবং লোকেরা বের হয়ে আসবে দ্রুতবেগে, এই সমবেতকরণ আমার জন্যে সহজ।

يَوْمَ تَشَقُّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٥٤﴾

৪৫. তারা যা বলে, তা আমি জানি, তুমি তাদের উপর জবরদস্তিকারী নও; সুতরাং যে শাস্তিকে ভয় করে তাকে উপদেশ দান কর কুরআনের সাহায্যে।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكَرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٥٥﴾

সূরাঃ যারিয়াত, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬০, রুকু'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الدُّرِّيَّةِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا ٦٠ رُكُوعًا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ ধূলি ঝড় ঝঞ্ঝার, যা ধূলা-বালিকে উড়িয়ে নিয়ে যায়।

وَالدُّرِّيَّةِ ذُرْوًا ﴿١﴾

২. শপথ বোঝা বহনকারী মেঘপুঞ্জের,

فَالْحَبْلِ ذُرْوًا ﴿٢﴾

৩. শপথ স্বচ্ছন্দ গতিতে বয়ে যাওয়া নৌযানের,

فَالْجَرِيَّةِ يُسْرًا ﴿٣﴾

৪. শপথ কর্ম বন্টনকারীদের
(ফেরেশতাদের-)

فَالْمَقْسِمَاتِ أَمْرًا ۙ

৫. তোমাদেরকে প্রদত্ত প্রতিশ্রুতি
অবশ্যই সত্য।

إِنَّمَا تُوْعَدُونَ لَصَادِقٍ ۙ

৬. কর্মফল দিবস অবশ্যম্ভাবী।

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۙ

৭. শপথ বহু পথ বিশিষ্ট আকাশের,

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ

৮. তোমরা তো পরস্পর বিরোধী
কথায় লিপ্ত।

إِنكُم لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ

৯. যে ব্যক্তি সত্যশ্রুতি সে তা
পরিত্যাগ করে,

يُؤْذِكُ عَنْهُ مَنْ آفَكَ ۙ

১০. অভিশপ্ত হোক মিথ্যাচারীরা,

قَتَلَ الْخَاصُّونَ ۙ

১১. যারা অজ্ঞ ও উদাসীন!

الَّذِينَ هُمْ فِي عَمْرَةٍ سَاهُونَ ۙ

১২. তারা জিজ্ঞেস করেঃ কর্মফল
দিবস কবে হবে?

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ ۙ

১৩. (বলঃ) সেদিন যখন তাদেরকে
শাস্তি দেয়া হবে অগ্নিতে,

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُقْتَلُونَ ۙ

১৪. (এবং বলা হবেঃ) তোমরা
তোমাদের শাস্তি আশ্বাদন কর,
তোমরা এই শাস্তির জন্য তড়িঘড়ি
করছিলে।

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۙ

১৫. সেদিন মুস্তকীরা জান্নাতে ও
ঝরণার মধ্যে থাকবে।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۙ

১৬. যা তাদের প্রতিপালক তাদেরকে
প্রদান করবেন; তা তারা গ্রহণ করবে
নিশ্চয়ই তারা ইতিপূর্বে সৎকর্মপরায়ণ
ছিল।

أَخْذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۙ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ

مُحْسِنِينَ ۙ

১৭. তারা রাত্রির সামান্য অংশই
নিদ্রাবস্থায় অতিবাহিত করতো
নিদ্রায়।

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۙ

১৮. রাত্রির শেষ প্রহরে তারা ক্ষমা
প্রার্থনা করতো,

وَ بِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۙ

১৯. এবং তাদের ধন-সম্পদে রয়েছে অভাবহস্ত ও বঞ্চিতের হক।

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُورِ ﴿١٩﴾

২০. পৃথিবীতে বিশ্বাসীদের অনেক নিদর্শন রয়েছে।

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ﴿٢٠﴾

২১. এবং তোমাদের মধ্যেও! তোমরা কি অনুধাবন করবে না?

وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾

২২. আকাশে রয়েছে তোমাদের রিযিক আর যা কিছু প্রতিশ্রুতি তোমাদের দেয়া হয়েছে।

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾

২৩. আকাশ ও পৃথিবীর প্রতি-পালকের শপথ! অবশ্যই একথা তোমাদের কথোপকথনের মতই সত্য।

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطَفُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. হে নবী (ﷺ)! তোমার নিকট ইবরাহীম (عليه السلام) এর সম্মানীত মেহমানদের কাহিনী এসেছে কি?

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثٌ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾

২৫. যখন তারা তার নিকট উপস্থিত হয়ে বললোঃ (আপনার প্রতি) সালাম। উত্তরে তিনি বললেনঃ (আপনাদেরকেও) সালাম। এরা তো অপরিচিত লোক।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ ؕ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ﴿٢٥﴾

২৬. অতঃপর ইবরাহীম (عليه السلام) তাঁর স্ত্রীর নিকট গেলেন এবং একটি বাছুর গরুও ভাজা গোশত নিয়ে আসলেন।

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَبِينٍ ﴿٢٦﴾

২৭. ও তাদের সামনে রাখলেন এবং বললেনঃ আপনারা খাচ্ছেন না কেন?

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

২৮. এতে তাদের সম্পর্কে মনে মনে ভয় পেলেন। তারা বললেনঃ ভীত হবেন না। অতঃপর তারা তাকে এক জ্ঞানবান পুত্র-সন্তানের সুসংবাদ দিলেন।

فَأَجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَحْزَنْ وَبَشِّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

২৯. একথা শুনে তার স্ত্রী চীৎকার করতে করতে সামনে আসলেন এবং মুখ চাপড়িয়ে বললেন— আমি তো বৃদ্ধা, বন্ধ্যা!

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَخَةٍ فَصَكَتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ
عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

৩০. তারা বললেনঃ তোমার প্রতিপালক এরূপই বলেছেন ৷ তিনি প্রজ্ঞাবান, সর্বজ্ঞ।

قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

১। মু'আবিয়া (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি আমার উম্মতের একদল লোক সর্বাবস্থায় আল্লাহর হুকুমের ওপর প্রতিষ্ঠিত থাকবে। যারা তাদেরকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করতে চেষ্টা করবে কিংবা বিরোধিতা করবে তারা তাদের কোন ক্ষতি করতে পারবে না। তারা এ অবস্থায় থাকতেই কিয়ামত এসে যাবে। মালেক ইবনে ইউখামের বলেছেন, আমি মু'আয ইবনে জাবাল আনসারীকে বলতে শুনেছি, তাদের এলাকা হবে শাম (সিরিয়া)। (হাদীসটি বর্ণনা করার পরই) মু'আবিয়া বললেন, মালেক ইবনে ইউখামের বলেছেন যে, তিনি মু'আয ইবনে জাবাল আনসারীকে বলতে শুনেছেন, যে তাদের এলাকা হবে শাম। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪৬০)

৩১. তিনি (ইবরাহীম عَلَيْهِ السَّلَامُ) বললেনঃ হে শ্রেণিত (ফেরেশতা-গণ!) আপনাদের বিশেষ কাজ কি?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

৩২. তাঁরা বললেনঃ আমাদেরকে এক অপরাধী সম্প্রদায়ের [লুত জাতির] নিকট পাঠানো হয়েছে।

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

৩৩. তাদের উপর মাটির শক্ত কঙ্কর নিক্ষেপ করার জন্যে,

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جِجَارَةً مِّن طِينٍ ﴿٣٣﴾

৩৪. যা চিহ্নিত তোমার প্রতি-পালকের নিকট হতে সীমালঙ্ঘন-কারীদের জন্যে।

مُسَوَّمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾

৩৫. সেখানে যেসব মু'মিন ছিল আমি তাদেরকে বের করে নিলাম।

فَأَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

৩৬. এবং সেখানে একটি পরিবার [লুত عَلَيْهِ السَّلَامُ]-এর পরিবার] ব্যতীত কোন মুসলমান আমি পাইনি।

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾

৩৭. আমি ওতে একটি নির্দর্শন রেখেছি তাদের জন্যে, যারা যজ্ঞদায়ক আযাবকে ভয় করে।

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾

৩৮. এবং (নির্দর্শন রেখেছি) মূসা عَلَيْهِ السَّلَامُ-এর কাহিনীতেও, যখন আমি তাকে স্পষ্ট প্রমাণসহ ফিরাউনের কাছে পাঠালাম।

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

৩৯. তখন সে ক্ষমতার দস্তে মুখ ফিরিয়ে নিলো এবং বললোঃ (এই ব্যক্তি) এক যাদুকর অথবা উন্মাদ।

فَقَوْلِي يٰرُبُّكَ رَبُّكَ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾

৪০. সুতরাং আমি তাকে ও তার সৈন্যবাহিনীকে পাকড়াও করলাম এবং তাদেরকে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম এবং সে তিরস্কৃত হলো।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾

৪১. এবং (নির্দর্শন রয়েছে) 'আদের ঘটনায়, যখন আমি তাদের বিরুদ্ধে প্রেরণ করেছিলাম অকল্যাণকর বায়ু:

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾

৪২. এটা যা কিছুর উপর দিয়ে বয়ে গিয়েছিল তাকেই জরাজীর্ণ করে দিয়েছিল।

৪৩. আরো (নিদর্শন রয়েছে) সামুদের কাহিনীতে, যখন তাদেরকে বলা হলোঃ তোমরা ভোগ করে নাও কিছুকাল।

৪৪. কিন্তু তারা তাদের প্রতিপালকের আদেশ অমান্য করলো; ফলে তাদের প্রতি বজ্রাঘাত হলো এবং তারা দেখছিল।

৪৫. তারা উঠে দাঁড়াতে পারলো না, এবং তা প্রতিরোধ করতেও পারলো না।

৪৬. (ধ্বংস করেছিলাম) ইতিপূর্বে নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়কে, তারা ছিল ফাসেক সম্প্রদায়।

৪৭. আমি আকাশ নির্মাণ করেছি আমার (নিজ) হাতে এবং আমি অবশ্যই মহা সম্প্রসারণকারী।

৪৮. এবং আমি পৃথিবীকে বিছিয়ে দিয়েছি, সুতরাং আমি কত সুন্দরভাবে বিছিয়েছি!

৪৯. আমি প্রত্যেক বস্তু সৃষ্টি করেছি জোড়ায়-জোড়ায়, যাতে তোমরা উপদেশ গ্রহণ করতে পার।

৫০. আল্লাহর দিকে ধাবিত হও; আমি তোমাদের জন্য তাঁর পক্ষ হতে স্পষ্ট সতর্ককারী।

৫১. তোমরা আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বুদ স্থির করো না; আমি তোমাদের জন্য তাঁর পক্ষ হতে স্পষ্ট সতর্ককারী।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْتَهُ

كَالزَّمِيرِ ۝

وَفِي نَمُودٍ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۝

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْقَةُ وَهُمْ

يَنْظُرُونَ ۝

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُتَّبِعِينَ ۝

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِيقِينَ ۝

وَالسَّمَاءَ بَيْنَ يَدَيْهَا بَابِعْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۝

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْبُهْدُونَ ۝

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ

تَذَكَّرُونَ ۝

فَقَرُّوْا إِلَى اللَّهِ ط إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ط إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ

نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

৫২. এভাবে, তাদের পূর্ববর্তীদের নিকট যখনই কোন রাসূল এসেছে, তারা বলেছেঃ (তুমি তো) এক যাদুকর অথবা উন্নাদ!

كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾

৫৩. তারা কি একে অপরকে এই উপদেশই দিয়ে এসেছে? বস্তুতঃ তারা এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

أَتَوَصَّوْا بِهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوتٌ ﴿٥٣﴾

৫৪. অতএব, তুমি তাদের দিক হতে মুখ ফিরিয়ে নাও এতে তুমি তিরস্কৃত হবে না।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾

৫৫. এবং তুমি উপদেশ দিতে থাক, নিশ্চয়ই উপদেশ মু'মিনদের উপকারে আসে।

وَ ذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾

৫৬. আমি সৃষ্টি করেছি জ্বিন ও মানুষকে এজন্যে যে, তারা আমারই ইবাদত করবে।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

৫৭. আমি তাদের নিকট হতে কোন রিযিক চাই না এবং এও চাই না যে তারা আমার আহার যোগাবে।

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُونِ ﴿٥٧﴾

৫৮. আল্লাহই তো রিযিক দানকারী এবং তিনি অত্যন্ত পরাক্রমশালী।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾

৫৯. নিশ্চয়ই যালিমদের প্রাপ্য তাই যা (অতীতে) তাদের (পূর্বের ধ্বংসপ্রাপ্ত সঙ্গীরা) ভোগ করেছে। সুতরাং তারা যেন আমার নিকট তড়িঘড়ি না করে।

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥٩﴾

৬০. কাফেরদের জন্যে দুর্ভোগ তাদের ঐ দিনে, যে দিনের ভয় তাদেরকে দেখানো হয়েছে।^১

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) সরাসরি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। আল্লাহ্ তা'আলা জাহান্নামীদের মধ্যে সবচেয়ে লঘুদণ্ড ও সহজ আযাব ভোগকারীকে জিজ্ঞেস করবেন, যদি দুনিয়ার সমস্যা ধন-সম্পদ (এখন) তোমার হাসিল হয়ে যায়, তাহলে এ আযাবের বিনিময়ে তুমি কি তা সব দিয়ে দেবে? সে জবাব দেবে-হ্যাঁ। তখন আল্লাহ্ বলবেন, যখন তুমি আদমের পুষ্ঠে ছিলে, আমি তোমার থেকে এর চেয়েও অতি সহজ একটি জিনিস চেয়েছিলাম, আমার সাথে কাউকে শরীক করো না। কিন্তু তুমি (তা মানতে) অস্বীকার করলে এবং শিরকে লিপ্ত হলে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৩৪)

সূরাঃ তূর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪৯, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٩ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ তূর পর্বতের,
২. শপথ কিতাবের, যা লিখিত আছে
৩. খোলা পদ্রে;
৪. শপথ বায়তুল মা'মূরের,
৫. শপথ সমুদ্রত আকাশের,
৬. এবং শপথ উদ্বলিত সমুদ্রের—
৭. তোমার প্রতিপালকের আযাব
অবশ্যম্ভাবী,
৮. এর প্রতিহতকারী কেউ নেই।
৯. যেদিন আকাশ দুলিত হবে
প্রবলভাবে।
১০. এবং পাহাড় চলবে দ্রুত।
১১. দুর্ভোগ সে দিন মিথ্যাশ্রয়ীদের—
১২. যারা খেল-তামাশাচ্ছলে অসার
কার্যকলাপে লিপ্ত থাকে।
১৩. সেদিন তাদেরকে চরমভাবে
ধাক্কা মারতে মারতে নিয়ে যাওয়া
হবে জাহান্নামের অগ্নির দিকে,
১৪. এতো সেই অগ্নি যাকে তোমরা
মিথ্যা মনে করতে।
১৫. এটা কি যাদু? নাকি তোমরা
দেখছো না?

وَالطُّورِ ۝

وَكُتِبَ فِي سُورٍ مِّنْهُ ۝

فِي رَقٍ مِّنْ نُجُومٍ ۝

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝

مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ۝

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝

وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا يَوْمَ يَكُونُ

الَّذِينَ هُمْ فِي حُوزٍ يَبْعُونَ ۝

يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعَاً ۝

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

أَفَسِحْرٌ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

১৬. তোমরা এতে প্রবেশ কর, অতঃপর তোমরা ধৈর্যধর আর না ধর উভয়ই তোমাদের জন্যে সমান। নিশ্চয়ই তোমাদেরকে তারই প্রতিফল দেয়া হচ্ছে যা তোমরা করতে।

১৭. নিশ্চয়ই মুত্তাকীরা থাকবে জান্নাতে ও ভোগ-বিলাসে,

১৮. তাদের প্রতিপালক তাদেরকে যা দিবেন তারা তা উপভোগ করবে এবং তিনি তাদেরকে রক্ষা করবেন জাহান্নামের আযাব হতে,

১৯. তোমরা তৃপ্তির সাথে পানাহার করতে থাকো, তোমরা যা করতে তার প্রতিদান স্বরূপ।

২০. তারা শ্রেণীবদ্ধভাবে সজ্জিত আসনে হেলান দিয়ে বসবে; আমি তাদের মিলন ঘটাবো সুনয়না (বড় বড় চক্ষু বিশিষ্ট) হূরের সঙ্গে।

২১. এবং যারা ঈমান আনে আর তাদের সম্মান-সম্মতি ঈমানে তাদের অনুগামী হয়, তাদের সাথে মিলিত করবো তাদের সম্মান-সম্মতিকে এবং আমি তাদের কর্মফলের ঘাটতি করবো না, প্রত্যেক ব্যক্তি নিজ কৃতকর্মের জন্যে দায়ী।

২২. আমি তাদেরকে অনেক অনেক ফল-মূল এবং গোশত দিবো যা তারা পছন্দ করে।

২৩. সেখানে তারা একে অপরের নিকট হতে গ্রহণ করবে এমন পান-পাত্র, যার ফলে কেউ অসার কথা বলবে না এবং পাপ কর্মেও লিপ্ত হবে না।

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ
إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑩

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُيْمٍ ⑪

فَكِهِينَ بِمَا أَنَّهُمْ رَبُّهُمْ ⑫ وَوَقَّهْمُ رَبُّهُمْ
عَذَابَ الْجَحِيمِ ⑬

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑭

مُتَّكِنِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ⑮ وَرَوَّحَهُمْ
بِحُورٍ عِينٍ ⑯

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ
أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ
مِنْ شَيْءٍ طُغِّلْ أَمْرِي ⑰ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ⑱

وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ⑲

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْتِيْمٌ ⑳

২৪. তাদের সেবার জন্য নিয়োজিত থাকবে কিশোরেরা যেন তারা সুরক্ষিত মুক্তা সদৃশ।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكَنُونٌ ﴿٢٤﴾

২৫. তারা একে অপরের দিকে ফিরে জিজ্ঞেস করবে,

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

২৬. এবং বলবেঃ পূর্বে আমরা পরিবার-পরিজনের মধ্যে ভয়ে ভয়ে ছিলাম।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

২৭. অতঃপর আল্লাহ আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন এবং দক্ষকারী আযাব হতে আমাদেরকে রক্ষা করেছেন।

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَّنَا عَذَابَ السُّورِ ﴿٢٧﴾

২৮. নিশ্চয়ই আমরা এর আগে আল্লাহকে ডাকতাম, তিনি তো বড়ই উপকারী, পরম দয়ালু।

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

২৯. অতএব তুমি উপদেশ দিতে থাকো, তোমার প্রভুর অনুগ্রহে তুমি গণক নও, উন্যাদও নও।

فَذَكِّرْ ۚ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾

৩০. তারা কি বলতে চায় যে, সে একজন কবি? আমরা তার জন্যে কালের বিপর্যয়ের (মৃত্যুর) অপেক্ষা করছি।

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ ۗ تَتَّبِعُهُ رِيبَ الْمُنُونِ ﴿٣٠﴾

৩১. বলঃ তোমরা অপেক্ষা কর, অবশ্য আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষা কারীদের অন্তর্ভুক্ত।

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾

৩২. তবে কি তাদের বিবেক-বুদ্ধি তাদেরকে এ বিষয়ে প্ররোচিত করে, না তারা এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়?

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا ۗ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾

৩৩. তারা কি বলেঃ এ কুরআন তাঁর নিজের বানানো? বরং তারা বিশ্বাস করতে চায় না।

أَمْ يَقُولُونَ تَقْوِيلُ ۗ بَلْ لَا يَوْمُنُونَ ﴿٣٣﴾

৩৪. তারা যদি সত্যবাদী হয় তবে এর সদৃশ বানানো কিছু উপস্থিত করুক না।

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

৩৫. তারা কি কোন কিছু ব্যতীতই সৃষ্ট হয়েছে, না তারা নিজেরাই (নিজেদের) স্রষ্টা?

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. না কি তারা আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছে? বরং তারা তো বিশ্বাস করে না।

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۗ بَلْ لَا يُؤْفِقُونَ ﴿٣٦﴾

৩৭. তোমার প্রতিপালকের ভাভার কি তাদের নিকট রয়েছে, না তারা এ সমুদয়ের নিয়ন্ত্রক?

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رِزْقِ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُضَيِّطُونَ ﴿٣٧﴾

৩৮. না কি তাদের কোন সিঁড়ি আছে যাতে আরোহণ করে তারা শ্রবণ করে? তবে তাদের সেই শ্রোতা সুস্পষ্ট প্রমাণ উপস্থিত করুক!

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ مِمَّنْ سَبَّحُوهٗ ۗ فَكَيْفَ يُسْمِعُ هُمُ
بُسَاتِنَ مِمَّنْ سَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۗ قَلِيلٌ مِّمَّنْ يَسْمَعُونَ ﴿٣٨﴾

৩৯. তবে কি তাঁর জন্যে কন্যা-সন্তান এবং পুত্র-সন্তান তোমাদের জন্যে?

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

৪০. তবে কি তুমি তাদের নিকট পারিশ্রমিক চাচ্ছ যে, তারা একে একটি কঠিন বোঝা মনে করবে?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّعْرُومٍ مُثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾

৪১. না কি অদৃশ্য বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান আছে যে, তারা তা লিখছে?

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

৪২. অথবা তারা কি কোন ষড়যন্ত্র করতে চায়? কাফিররাই হবে ষড়যন্ত্রের শিকার।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۗ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

৪৩. না কি আল্লাহ ব্যতীত তাদের অন্য কোন (সত্য) মা'বুদ আছে? তারা যাকে শরীক স্থির করে আল্লাহ তা হতে পবিত্র।

أَمْ لَهُمْ آلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۗ سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

৪৪. যদি তারা আকাশের কোন খন্ড ভেঙ্গে পড়তে দেখলে বলেঃ এটা তো এক পুঞ্জীভূত মেঘ।

وَأِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يُقُولُوا
سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

৪৫. তাদেরকে উপেক্ষা করে চল সেদিন পর্যন্ত, যেদিন তারা ধ্বংসের সম্মুখীন হবে।

فَذَرَهُمْ حَتَّى يُلْقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ
يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

৪৬. সেদিন তাদের ষড়যন্ত্র কোন কাজে আসবে না এবং তারা সাহায্য প্রাপ্তও হবে না।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

৪৭. নিশ্চয়ই যালিমদের জন্যে এ ছাড়া আরোও শাস্তি রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না।

وَأِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

৪৮. তুমি তোমার প্রতিপালকের নির্দেশের অপেক্ষায় ধৈর্যধারণ কর; তুমি আমার চোখের সামনেই রয়েছে। তুমি তোমার প্রতিপালকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর যখন তুমি শয্যা ত্যাগ কর।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

৪৯. এবং তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা কর রাত্রিকালে ও তারকার অস্ত গমনের পর।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

সূরাঃ নাজম, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬২, রুকুঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٦٢ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ তারকারাজির, যখন সেটা হয় অস্তমিত,

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ﴿١﴾

২. তোমাদের সঙ্গী পথভ্রষ্ট নয়, বিভ্রান্তও নয়,

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ﴿٢﴾

৩. এবং তিনি প্রবৃষ্টি হতেও কথা বলেন না।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ٣

৪. এটা তো এক ওহী, যা তাঁর প্রতি প্রত্যাদেশ করা হয়।

إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ٤

৫. তাকে শিক্ষা দান করে মহা শক্তিশালী, (ফেরেশতা)

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ٥

৬. মহা শক্তিদর, তিনি (জিবরাঈল عليه السلام) নিজ আকৃতিতে) স্থির হয়েছিলেন,

ذُو مِرَّةٍ ٦ فَاسْتَوَىٰ ٧

৭. তখন তিনি উর্ধ্ব দিগন্তে ছিলেন,

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ٧

৮. অতঃপর তিনি তার (রাসূল ﷺ - এর) নিকটবর্তী হলেন, অতি নিকটবর্তী।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ٨

৯. ফলে তিনি দুই ধনুক অথবা ওরও কম ব্যবধানে হয়ে গেলেন।

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ٩

১০. তখন আল্লাহ তাঁর বান্দার প্রতি যা ওহী করার তা ওহী করলেন।

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ١٠

১১. যা সে দেখেছে অন্তকরণ তা অস্বীকার করেনি।

مَا كَذَّبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ١١

১২. তিনি যা দেখেছেন তোমরা কি সে বিষয়ে তাঁর সঙ্গে বিতর্ক করবে?

أَفْتَسْمُرُونَكَ عَلَىٰ مَا يَبْرِئُ ١٢

১। কাতাদা আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে, তিনি মালেক ইবনে সাসা'আ হতে বর্ণনা করেছেন। তিনি (মালেক) বলেন, নবী (সাদ্দাওয়্যাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি (কা'বা) ঘরের পাশে নিদ্দা ও জাগরণ উভয়ের মাঝামাঝি অবস্থায় ছিলাম। এরপর নবী (সাদ্দাওয়্যাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) দু'ব্যক্তির মাঝে নিজেকে উল্লেখ করে (বলেন) আমার নিকট সোনার তশতরী নিয়ে আসা হল-যা হিকমত ও ঈমানে পরিপূর্ণ ছিল। আমার বক্ষ থেকে পেটের নীচ পর্যন্ত বিদীর্ণ করা হল, তারপর পেট যমযমের পানিতে ধোঁত করা হল এবং তা হিকমত ও ঈমানে পরিপূর্ণ করে দেয়া হল। পরে আমার কাছে একটি সাদা চতুঃপদ জন্তু আনা হল, যা খচর থেকে ছোট এবং গাধা থেকে বড়। অর্থাৎ 'বোরাক'। অতঃপর (তাতে আরোহণ করে) আমি জিবরাঈল (عليه السلام) সহ চলতে লাগলাম এবং পৃথিবীর নিকটবর্তী আসমানে গিয়ে পৌঁছলাম। জিজ্ঞেস করা হলো, 'কে'? জবাব দেয়া হল, আমি জিবরাঈল (عليه السلام)। প্রশ্ন হলো তোমার সাথে কে? উত্তর দেয়া হল, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। জানতে চাওয়া হল তাঁকে কি আনতে পাঠানো

হয়েছিলো? জিবরাইল (ﷺ) জানালেন, হ্যাঁ। বলা হল, মারহাবা, আপনার শুভাগমন কতই না উত্তম। এরপর আমি আদমের (ﷺ) কাছে গেলাম। তাঁকে সালাম দিলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে পুত্র এবং নবী।

অতঃপর আমরা দ্বিতীয় আসমানে গেলাম। জিজ্ঞেস করা হল, কে? জানালেন, আমি জিবরাইল (ﷺ)। প্রশ্ন করা হল, তোমার সাথে কে? বললেন, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন হল, তাঁকে কি ডাকা হয়েছে? বললেন, হ্যাঁ। বলা হল, মারহাবা, আপনার শুভাগমন কতই না উত্তম। তারপর ইসা ও ইয়াহুইয়া (ﷺ)-এর কাছে পৌছলাম। তাঁরা বললেন, মারহাবা, হে ভাই ও নবী।

এরপর আমরা তৃতীয় আসমানে গেলাম। জিজ্ঞেস করা হল, কে? উত্তর দেয়া হল, জিবরাইল (ﷺ)। প্রশ্ন হল, সাথে কে? জবাব হল, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। জানতে চাওয়া হল, তাঁকে কি আনতে পাঠান হয়েছিল? জানান হল, হ্যাঁ। বলা হল, মারহাবা, আপনার আগমন কতই না আনন্দের! অতঃপর আমি ইউসুফ (ﷺ)-এর কাছে গেলাম এবং তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে ভাই ও নবী।

এবার আমরা চতুর্থ আসমানে গেলাম। প্রশ্ন হল, কে? বললেন, আমি জিবরাইল (ﷺ)। প্রশ্ন হল, সাথে কে? বলা হল, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। জিজ্ঞেস করা হল, তাঁকে কি ডাকা হয়েছে? জানান হল, হ্যাঁ। বলা হল, মারহাবা আপনার আগমন কতই না উত্তম! এরপর ইদরীস (ﷺ)-এর খেদমতে এসে তাঁকে সালাম দিলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে ভাই ও নবী।

তারপর আমরা পঞ্চম আসমানে পৌছলাম। (অনুরূপ প্রশ্নোত্তর হলো।) (যেমন) প্রশ্ন কে? উত্তর জিবরাইল (ﷺ)। প্রশ্ন সাথে কে? উত্তর 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন তাকে কি ডাকা হয়েছে? উত্তর- হ্যাঁ। বলা হল- মারহাবা, আপনার শুভাগমন কতইনা আনন্দের! পরে আমরা হারুন (ﷺ)-এর খেদমতে হাযির হলাম, তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা হে ভাই ও নবী।

অতঃপর আমরা ষষ্ঠ আসমানে গিয়ে পৌছলাম। (এখানেও অনুরূপ প্রশ্নোত্তর হল) প্রশ্ন- কে? উত্তর- জিবরাইল (ﷺ)। প্রশ্ন-সাথে কে? উত্তর 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন-ডাকা হয়েছে কি? উত্তর-হ্যাঁ। বলা হল- মারহাবা, তাঁর শুভাগমন কতই না উত্তম! তারপর আমি মুসা (ﷺ)-এর কাছে গেলাম এবং তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা হে ভাই ও নবী। যখন আমরা এগিয়ে চললাম, তখন মুসা (ﷺ) কঁদে দিলেন। জিজ্ঞেস করা হলো, কেন কঁদছেন? বললেন, হে আল্লাহ্! এই ছেলে আমার পরে নবী হয়েছে, তার উম্মত আমার উম্মতের চেয়ে অধিক পরিমাণে জান্নাতে যাবে।

এরপর সপ্তম আসমানে উঠলাম। (এখানেও সেই প্রশ্নোত্তর) প্রশ্ন- কে? উত্তর- জিবরাইল (ﷺ)। প্রশ্ন- তোমার সাথে কে? উত্তর- 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন তাঁকে কি ডাকা হয়েছে? জবাব-হ্যাঁ। বলা হল- মারহাবা, তাঁর শুভাগমন কতই না উত্তম! অতঃপর আমি ইবরাহীম-এর খেদমতে হাযির হয়ে তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে সন্তান ও নবী। তারপর আমার সামনে বায়তুল মা'মুর উন্মুক্ত করে আনা হল। আমি এটি সম্পর্কে জিবরাইল (ﷺ)-কে জিজ্ঞেস করলাম। তিনি বললেন, এটি বায়তুল মা'মুর। প্রতিদিন এখানে সত্তর হাজার ফেরেশতা নামায আদায় করে। এই সত্তর হাজার একবার এখান থেকে বের হলে দ্বিতীয়বার (কিয়ামত পর্যন্ত) তারা এখানে আর ফিরে আসবে না। তারপর আমাকে 'সিদরাতুল মুনতাহা' দেখান হল। দেখলাম, এর ফল (কুল) হাজারা নামক স্থানের মটকির সমান বিরাট ও পুরু। তার পাতাগুলো যেমন এক একটি হাতির কান। এর মূলদেশে চারটি স্বর্ণাধারা প্রবাহমান। এর দু'টি অভ্যন্তরে আর দু'টি বাইরে। আমি জিবরাইল (ﷺ)-কে জিজ্ঞেস করলাম, তিনি বললেন, অভ্যন্তরের দু'টি জান্নাতে অবস্থিত। আর বাইরের দু'টি হল (ইরাকের) ফুরাত ও (মিসরের) নীল নদ। অতঃপর আমার ওপর পঞ্চাশ গুণাক্ত নামায ফরয করা হয়। এরপর আমি ফিরে চলি এবং মুসা (ﷺ)-এর কাছে এসে পৌছি। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, কি করে আসলেন। বললাম, আমার ওপর পঞ্চাশ গুণাক্ত নামায ফরয করা হয়েছে। তিনি বললেন, আমি মানুষ সম্পর্কে আপনার চেয়ে অধিক জ্ঞাত আছি। আমি বনী ইসরাইলের (মানসিক) চিকিৎসার ভীষণ চেষ্টা চালিয়েছি। আপনার উম্মত (এত নামায আদায়ে) কিছুতেই সমর্থ হবে না। আল্লাহ্

১৩. নিশ্চয়ই তিনি তাকে আরেক
বার দেখেছিলেন।

وَلَقَدْ رَأَاهُ نَزْلَةً أُخْرَى ﴿١٣﴾

১৪. সিদরাতুল মুনতাহার নিকট,

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ﴿١٤﴾

১৫. যার নিকট অবস্থিত জান্নাতুল
মা'ওয়া।

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى ﴿١٥﴾

১৬. তখন সিরাহ বৃক্ষটি, যার দ্বারা
আচ্ছাদিত হবার তার দ্বারা
আচ্ছাদিত হচ্ছিল,

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى ﴿١٦﴾

১৭. তার দৃষ্টি ভ্রষ্ট হয়নি এবং দৃষ্টি
সীমালঙ্ঘনও করে নি।

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ﴿١٧﴾

১৮. অবশ্যই তিনি তাঁর প্রতি-
পালকের মহান নিদর্শনাবলী
দেখেছিলেন।

لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ﴿١٨﴾

১৯. তোমরা কি ভেবে দেখেছো
'লাত' ও 'উযা' সম্বন্ধে

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ﴿١٩﴾

২০. এবং তৃতীয় আরেকটি 'মানাত'
সম্বন্ধে?

وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْاُخْرَى ﴿٢٠﴾

২১. তবে কি তোমাদের জন্য পুত্র
তাঁর জন্য কন্যা সন্তান?

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنثَىٰ ﴿٢١﴾

২২. এই প্রকার বন্টন তো অসঙ্গত।

بَلْكَ إِذَا قَسَمَةً ضَيُّوٰى ﴿٢٢﴾

২৩. এগুলো কতক নাম মাত্র, যা
তোমাদের পূর্বপুরুষরা ও তোমরা
রেখেছো, এর সম্বন্ধে আদ্বাহ কোন
দলীল প্রেরণ করেন নি। তারা তো

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَبَّحُوا بِهَا آلَ الْاَمْرِ مِمَّا

أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ

কাছে ফিরে যান এবং (তা কমানোর) আবেদন করুন। আমি ফিরে গেলাম এবং আবেদন করলাম। সুতরাং তিনি নামায চল্লিষ্ণ ওয়াক্ত করে দিলেন। পুনরায় অনুরূপ ঘটলে ত্রিশে নেমে আসল। আবার সেরূপ হলে আদ্বাহ বিশ ওয়াক্ত করে দিলেন। আবারও ভদ্রপই ঘটল। আদ্বাহ দশে নামিয়ে দিলেন। তারপর মুসা (عليه السلام)-এর কাছে আসলাম। তিনি পূর্বের মতোই বললেন, এবার আদ্বাহ পাঁচ ওয়াক্ত নামায (ফরয) করলেন। অতঃপর মুসা (عليه السلام)-এর কাছে আসলাম। কি করে এসেছি তা তিনি জানতে চাইলেন। বললাম, আদ্বাহ নামায পাঁচ ওয়াক্ত করে দিয়েছেন। এবারও তিনি তা-ই বললেন। বললাম, আমি তা (সানন্দে) মেনে নিয়েছি। তখন (আদ্বাহর পক্ষ থেকে) ডাক আসল, "আমি আমার ফরয জারি করে দিয়েছি এবং আমার বান্দাহদের থেকে লাযব করে দিয়েছি। আমি প্রতিটি নেকীর দশ গুণ সওয়াব দেব। (বুখারী, হাদীস নং ৩২০৭)

শুধু অনুমান এবং তাদের প্রবৃত্তি যা চায় তারই অনুসরণ করে, অথচ তাদের নিকট তাদের প্রতিপালকের হিদায়েত এসেছে।

২৪. মানুষ যা চায় তাই কি সে পায়?

২৫. বস্তুতঃ শেষ ও প্রথম জগতের অধিপতি আল্লাহই।

২৬. আকাশসমূহে কত ফেরেশতা রয়েছে! তাদের কোন সুপারিশ কাজে আসবে না যতক্ষণ আল্লাহ যাকে ইচ্ছা এবং যার প্রতি সন্তুষ্ট তাকে অনুমতি না দেন।

২৭. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারাই ফেরেশতাদেরকে নারী বাচক নাম দিয়ে থাকে।

২৮. অথচ এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান নেই, তারা শুধু অনুমানের অনুসরণ করে; সত্যের মুকাবিলায় অনুমানের কোন মূল্য নেই।

২৯. অতএব তাকে উপেক্ষা করে চল যে আমার স্মরণ হতে বিমুখ; সে তো শুধু পার্শ্ব জীবনই কামনা করে।

৩০. তাদের জ্ঞানের দৌড় এই পর্যন্ত। তোমার প্রতিপালকই ভাল জানেন কে তাঁর পথ হতে বিচ্যুত, তিনিই ভাল জানেন কে হেদায়েত প্রাপ্ত।

৩১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই। যারা মন্দ আমল করে তাদেরকে তিনি মন্দ ফল এবং যারা সৎ আমল করে তাদেরকে মন্দ উত্তম প্রতিদান,

وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمْ
الْهُدَىٰ ۝

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَنَسَىٰ ۝

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۝

وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا
إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ ۝

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتَوُونَ
السَّيِّئَةَ النَّاطِقِي ۝

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ
وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝

فَاعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ هَٰ عَن ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ
إِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝

ذٰلِكَ مِمَّا لَبِغْتُمْ مِنْ عِلْمِ ۙ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
بِمَنْ صَلَّىٰ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ اهْتَدَىٰ ۝

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ
الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ
أَحْسَنُوا بِالْحُسْنٰى ۝

৩২. যারা বিরত থাকে গুরুতর পাপ ও অশ্লীল কর্ম হতে, ছোট খাট অপরাধ করে। তোমার প্রতি-পালকের ক্ষমা অপারিসীম; তিনি তোমাদের সম্পর্কে সম্যক অবগত—যখন তিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছিলেন মাটি হতে এবং এক সময় তোমরা মাতৃগর্ভে স্রুণরূপে ছিলে। অতএব তোমরা নিজেদের সাফাই গেয়ো না, তিনিই ভালো জানেন মুত্তাকী কে।

৩৩. তুমি কি দেখেছো সে ব্যক্তিকে যে মুখ ফিরিয়ে নেয়;

৩৪. এবং সামান্য দান করেই স্ফান্ত হয়ে যায়?

৩৫. তার নিকটে কি গায়েবের জ্ঞান আছে যে, সে সব কিছু দেখবে?

৩৬. তাকে কি অবগত করা হয়নি যা মূসা (عليه السلام) -এর কিতাবে আছে,

৩৭. এবং ইবরাহীম (عليه السلام) -এর কিতাবে, যিনি পূর্ণ করেছিলেন (স্বীয়) অঙ্গীকার?

৩৮. তা এই যে, অবশ্যই কোন বহনকারী অপরের বোঝা বহন করবে না,

৩৯. আর মানুষ তাই পায় যা সে চেষ্টা করে,

৪০. আর তার কর্ম অচিরেই দেখানো হবে—

৪১. অতঃপর তাকে দেয়া হবে পূর্ণ প্রতিদান।

৪২. আর সবকিছুর সমাপ্তি তো তোমার প্রতিপালকের নিকট।

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۗ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۗ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجْنَةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۗ فَلَا تُزَكُّوْا أَنْفُسَكُمْ ۗ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَى ۗ

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى ۙ

وَأَعْطَى قَلِيلًا ۗ أَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ

أَعْنَدًا ۗ أَلَمْ يَعْلَمِ الْغَيْبَ فَهُوَ يَرَى ۙ

أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَى ۙ

وَأُتْبِعَهُمُ الْغَيْبَ وَمَنْ يَنْتَهَى ۙ

أَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۙ

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى ۙ

وَأَنْ سَعِيَهُ سَوْفَ يَرَى ۙ

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَى ۙ

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَى ۙ

৪৩. আর তিনিই হাসান, তিনিই
কাঁদান,

وَأِنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى ﴿٣٧﴾

৪৪. এবং তিনিই মারেন, তিনিই
বাঁচান,

وَأِنَّهُ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا ﴿٣٨﴾

৪৫. আর তিনিই সৃষ্টি করেন
জোড়ায় জোড়ায় পুরুষ ও নারী,

وَأِنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ﴿٣٩﴾

৪৬. শুক্র বিন্দু হতে যখন তা
নিষ্ক্ষেপ করা হয়,

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُنْفِئُ ﴿٤٠﴾

৪৭. আর পুনরায় জীবিত করার
দায়িত্বও তাঁরই,

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْآخِرَى ﴿٤١﴾

৪৮. আর তিনিই ধনী ও সম্পদশালী
করেন ও সম্পদ দান করেন,

وَأِنَّهُ هُوَ غَفَىٰ وَآفَىٰ ﴿٤٢﴾

৪৯. আর তিনি শি'রা নক্ষত্রের
মালিক।

وَأِنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَىٰ ﴿٤٣﴾

৫০. এবং তিনিই প্রথম আ'দ
সম্প্রদায়কে ধ্বংস করেছিলেন,

وَأِنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٤٤﴾

৫১. এবং সামুদ সম্প্রদায়কেও—
তিনি বাকী রাখেননি—

وَتَمُودًا فَمَا أَبْقَىٰ ﴿٤٥﴾

৫২. আর এদের পূর্বে নূহ (ﷺ)—
এর সম্প্রদায়কেও তারা ছিল
অতিশয় যালিম ও অবাধ্য।

وَقَوْمِ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطَىٰ ﴿٤٦﴾

৫৩. উৎপাটিত আবাস ভূমিকে
উল্টিয়ে নিষ্ক্ষেপ করেছিলেন,

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿٤٧﴾

৫৪. ওকে আচ্ছন্ন করলো কি
সর্বগ্রাসী আযাব!

فَعَشَّهَا مَا تَغشىٰ ﴿٤٨﴾

৫৫. অতএব তুমি তোমার
প্রতিপালকের কোন অনুগ্রহ সম্পর্কে
সন্দেহ পোষণ করবে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَادَىٰ ﴿٤٩﴾

৫৬. অতীতের সতর্ককারীদের ন্যায়
এই নবী (ﷺ)—ও এক সতর্ককারী;

هَذَا نَذِيرٌ مِنَ النَّذِيرِ الْأُولَىٰ ﴿٥٠﴾

৫৭. কিয়ামত আসন্ন,

أَزَقَّتِ الْأَزْفَقُ ۞

৫৮. আল্লাহ ছাড়া কেউই এটা ব্যক্ত করতে সক্ষম নয়।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۞

৫৯. তোমরা কি এই কথায় (কুরআনে) বিস্ময়বোধ করছো?

أَفِينْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۞

৬০. হাসছো অথচ কাঁদছো না?

وَكُضْحُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۞

৬১. তোমরা তো উদাসীন,

وَأَنْتُمْ سِيدُونَ ۞

৬২. অতএব তোমরা আল্লাহকে সিজদা কর এবং তাঁর ইবাদত কর।^১

فَأَسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۞

সূরাঃ কামার, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৫, রুকূঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ৫৫ رُكُوعَاتُهَا ৩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. কিয়ামত আসন্ন, চন্দ্র ফেটে গেছে,

۞ اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ ۞ وَأَنْشَقَّ الْقَمَرُ ۞

২. তারা কোন নিদর্শন দেখলে মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং বলেঃ এটা তো পূর্ব হতে চলে আসা বড় যাদু।

۞ وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُسْتَعْتَبٌ ۞

৩. তারা মিথ্যারোপ করে এবং নিজেদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে, আর প্রত্যেকটি ব্যাপার নির্ধারিত লক্ষ্যে পৌছবে।

۞ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۞ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقَرٌّ ۞

৪. তাদের নিকট এসেছে সংবাদ, যাতে আছে সাবধান বাণী।

۞ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۞

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, মক্কাবাসী নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট একটি নিদর্শন দেখানোর দাবী করলো, তখন তিনি তাদেরকে (আল্লাহর নির্দেশে) চাঁদ দ্বিখন্ডিত হওয়ার নিদর্শন দেখালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৬৭)

৫. এটা পরিপূর্ণ জ্ঞান, তবে সতর্ক বাণীসমূহ তাদের উপর কার্যকর হয় নি।

৬. অতএব তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর। যেদিন আহ্বানকারী (ইসরাফীল) আহ্বান করবে এক ভয়াবহ বস্তুর দিকে,

৭. অপমানে শঙ্কিত নয়নে সেদিন তারা কবরসমূহ হতে বের হবে বিক্ষিপ্ত পঙ্গপালের ন্যায়,

৮. তারা আহ্বানকারীর দিকে ছুটে আসবে। কাফিররা বলবেঃ কঠিন এই দিন।

৯. এদের পূর্বে নূহ (ﷺ)-এর জাতিও মিথ্যারোপ করেছিল— তারা আমার বান্দার প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল এবং বলেছিলঃ এতো এক পাগল। আর তাকে ধমকিয়ে ছিল।

১০. তখন সে তার প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলঃ আমি তো পরাজিত, অতএব, তুমি আমাকে সাহায্য কর।

১১. তখন আমি আকাশের দুয়ার প্রবল বৃষ্টিসহ উন্মুক্ত করে দেই,

১২. এবং তুমি হতে উৎসারিত করলাম বর্ণাধারা; অতঃপর সকল পানি মিলিত হলো এক পরিকল্পনা অনুসারে।

১৩. তখন নূহ (ﷺ)-কে আরোহণ করলাম কাঠ ও পেরেক নির্মিত এক নৌযানে,

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ التُّدْرُ ۝

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ مِیْوَمَ یَدْعُ الدَّاعِ اِلَى شَیْءٍ ۝ تُكْذِرُ ۝

خُشَعًا اَبْصَارُهُمْ یَخْرُجُونَ مِنَ الْاَجْدَاثِ
كَانَهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ۝

مُهْطِعِينَ اِلَى الدَّاعِ یَقُولُ الْكٰفِرُونَ هٰذَا
یَوْمٌ عَسِرٌ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا
مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝

فَدَعَا رَبَّهُ اِنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝

فَفَتَحْنَا اَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَرٍ ۝

وَفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُیُوْنًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلٰی اَمْرِ
قَدِیْدٍ ۝

وَحَمَلْنَاهُ عَلٰی ذَاتِ الْاَوَاجِ وَدُسِّرَ ۝

১৪. যা আমার চোখের সামনে চললো, এটা তার পরিবর্তে যাকে অস্বীকার করা হয়েছিল।

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءٌ لِّمَن كَانَ كُفِرًا ﴿١٤﴾

১৫. রেখে দিয়েছি আমি এটাকে নিদর্শনরূপে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ﴿١٥﴾

১৬. সুতরাং (বলঃ) কেমন ছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ﴿١٦﴾

১৭. কুরআন আমি সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে, সুতরাং উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ﴿١٧﴾

১৮. আ'দ সম্প্রদায় মিথ্যা মনে করেছিল, ফলে কি কঠোর হয়েছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ﴿١٨﴾

১৯. আমি তাদের উপর প্রেরণ করেছিলাম ক্রমাগত প্রবাহমান প্রচলিত সম্পন্ন বায়ু, দুর্ভোগের দিনে,

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَبِيرٍ ﴿١٩﴾

২০. মানুষকে গুটা উৎখাত করেছিল উৎপাটিত খেজুর কাণ্ডের ন্যায়।

تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

২১. কত কঠোর ছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ﴿٢١﴾

২২. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ﴿٢٢﴾

২৩. সামূদ সম্প্রদায় সতর্কবাণীসমূহকে মিথ্যা মনে করেছিল,

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

২৪. তারা বলেছিলঃ আমরা কি আমাদেরই এক ব্যক্তির অনুসরণ করবো? তবে তো আমরা বিপথগামী এবং বিবেকহীনরূপে গণ্য হবো।

فَقَالُوا أَبَشْرًا مِّثْنَا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنْآ إِذَا بُعِثَ صَٰلِحٌ وَسُعِرَ ﴿٢٤﴾

২৫. আমাদের মধ্যে কি ওরই প্রতি ওহী হয়েছে? বরং সে তো একজন মিথ্যাবাদী, দাষ্টিক।

ءَأَنْتَى الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ
أَشْرُؤُ ۝

২৬. আগামীকাল (কিয়ামতের দিন) তারা জানবে, কে মিথ্যাবাদী, দাষ্টিক।

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَنِ الْكَذَّابُ الْأَشْرُؤُ ۝

২৭. আমি তাদের পরীক্ষার জন্যে পাঠিয়েছি এক উল্লী; অতএব তুমি (হে সালেহ!) তাদের আচরণ লক্ষ্য কর এবং ধৈর্যশীল হও।

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةَ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَبِعْهُمْ
وَاصْطَبِرْ ۝

২৮. আর তুমি তাদেরকে জানিয়ে দাও যে, তাদের মধ্যে পানি বন্টন নির্ধারিত এবং পানির অংশের জন্যে প্রত্যেকে হাজির হবে পালাক্রমে।

وَتَبَيَّنْهُمْ أَنْ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلٌّ
شَرِبَ مُحْتَضِرٌ ۝

২৯. অতঃপর তারা তাদের এক সঙ্গীকে আহ্বান করলো, সে ওটাকে (উল্লীকে) ধরে হত্যা করলো।

فَنَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ۝

৩০. কি কঠোর ছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۝

৩১. আমি তাদের উপর ছেড়েছি এক বিকট আওয়াজ; ফলে তারা হয়ে গেল খোয়াড় মালিকদের বিখণ্ডিত ভূমির ন্যায়।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا
كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝

৩২. আমি কুরআন সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۝

৩৩. লূত সম্প্রদায় মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল সতর্ককারীদেরকে,

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالَّذِي ۝

৩৪. আমি তাদের উপর প্রেরণ করেছিলাম প্রস্তর বর্ষণকারী প্রবল বাতাস; কিন্তু লূত পরিবারের উপর

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۝

নয়; তাদেরকে আমি উদ্ধার করেছিলাম রাত্রির শেষাংশে;

نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۝

৩৫. এটা আমার বিশেষ অনুগ্রহ; যারা কৃতজ্ঞ আমি এভাবেই তাদেরকে পুরস্কৃত করে থাকি।

تُعَمَّةٌ مِّنْ عِنْدِنَا ۗ كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝

৩৬. তিনি [লূত (عليه السلام)] তাদেরকে সতর্ক করেছিলেন আমার শক্ত পাকড়াও হতে; কিন্তু তারা সতর্কবাণী সম্বন্ধে বিতর্ক শুরু করলো।

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنَّذْرِ ۝

৩৭. তারা লূত (عليه السلام)-এর নিকট হতে তার মেহমানদেরকে দাবী করলো, তখন আমি তাদের চোখের দৃষ্টিশক্তি লোপ করে দিলাম (এবং বললামঃ) আশ্বাদন কর আমার আযাব এবং সতর্কবাণীর পরিণাম!

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا

عَذَابِنَا ۗ وَنَذِّرِ ۝

৩৮. প্রত্যুষে বিরামহীন আযাব তাদেরকে আঘাত করলো।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقَرٌّ ۝

৩৯. অতএব আশ্বাদন কর আমার আযাব এবং সতর্কবাণীর পরিণাম!

فَذُوقُوا عَذَابِنَا ۗ وَنَذِّرِ ۝

৪০. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝

৪১. ফিরআ'উন সম্প্রদায়ের নিকটও এসেছিল সতর্কবাণী,

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النَّذِيرُ ۝

৪২. কিন্তু তারা আমার সকল নিদর্শন মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, অতঃপর পরাক্রমশালী ও সর্বশক্তিমান রূপে আমি তাদেরকে কঠিন শাস্তি দিলাম।

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ

مُقْتَدِرٍ ۝

৪৩. তোমাদের মধ্যকার কাফের কি তাদের (পূর্বের কাফেরগণ) অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ? না কি তোমাদের মুক্তি সনদ রয়েছে পূর্ববর্তী কিতাবে?

الْقَارِئُ خَيْرٌ مِّنْ أَوْلِيكُمُ أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ

فِي الزُّبُرِ ۝

৪৪. তারা কি বলেঃ যে, আমরা এক বিজয়ী দল?

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَيْبِجٌ مُّتَّبِعُونَ ﴿٢٧﴾

৪৫. এই দল শীঘ্রই পরাজিত হবে এবং পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে,

سَيَهْرَمُ الْجَيْبُجُ وَيُؤْتُونَ الدُّبُرَ ﴿٢٨﴾

৪৬. অধিকন্তু কিয়ামত তাদের আযাবের নির্ধারিতকাল এবং কিয়ামত হবে কঠিনতর ও তিক্ততর।

بَلِ السَّاعَةِ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذْهَىٰ وَأَمْرٌ ﴿٢٩﴾

৪৭. নিশ্চয়ই অপরাধীরা বিভ্রান্তি ও আযাবে নিপতিত

إِنَّ الْجُرْمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٣٠﴾

৪৮. যেদিন তাদেরকে উপুড় করে টেনে নিয়ে যাওয়া হবে জাহান্নামের দিকে; (বলা হবেঃ) জাহান্নামের যন্ত্রণা আশ্বাদন কর।

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ط ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٣١﴾

৪৯. আমি প্রত্যেক কিছু সৃষ্টি করেছি নির্ধারিত পরিমাপে।

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٣٢﴾

৫০. আমার আদেশ তো একটি কথায় নিষ্পন্ন, চক্ষুর পলকের মত।

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٣٣﴾

৫১. আমি ধ্বংস করেছি তোমাদের মত দলগুলোকে, অতএব তা হতে উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ﴿٣٤﴾

৫২. তাদের সমস্ত কার্যকলাপ আছে আমল নামায় লিখিত আছে,

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٣٥﴾

৫৩. ছোট ও বড় সবকিছুই লিপিবদ্ধ;

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٣٦﴾

৫৪. মুত্তাকীরা থাকবে জান্নাতে ও নহরসমূহে।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٣٧﴾

৫৫. প্রকৃত সম্মানের আসনে, সার্বভৌম ক্ষমতার অধিকারী আল্লাহর সান্নিধ্যে।

فِي مَقْعَدٍ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٣٨﴾

সূরাঃ রহমান, মাদানী

(আয়াতঃ ৭৮, রুকু'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ

اَيَاتُهَا ٤٨ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. পরম দয়াময় (আল্লাহ),
২. তিনিই শিক্ষা দিয়েছেন কুরআন,
৩. তিনিই সৃষ্টি করেছেন মানুষ,
৪. তিনি তাকে শিখিয়েছেন ভাব প্রকাশ করতে,
৫. সূর্য ও চন্দ্র নির্ধারিত হিসাবের অধীনে,
৬. তারকা ও বৃক্ষাদি সেজদা করে,
৭. আকাশকে সমুন্নত করেছেন এবং স্থাপন ভারসাম্য করেছেন,
৮. যাতে তোমরা পরিমাপে সীমালঙ্ঘন না কর।
৯. ওজনের ন্যায্য মান প্রতিষ্ঠিত কর এবং ওজনে কম দিয়ো না।
১০. তিনি পৃথিবীকে বিছিয়ে দিয়েছেন সৃষ্টজীবের জন্যে;
১১. এতে রয়েছে ফলমূল এবং খেজুর বৃক্ষ যার ফল আবরণযুক্ত,
১২. এবং খোসাবিশিষ্ট দানা ও সুগন্ধী ফুল।
১৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

الرَّحْمٰنُ ①

عَلَّمَ الْقُرْآنَ ②

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ③

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ④

الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ⑤

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ⑥

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ⑦

الَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ⑧

وَاقْيُمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ⑨

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاِنَامِ ⑩

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ⑪

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ⑫

فَبِآيِ الْاِءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ⑬

১৪. মানুষকে (আদমকে) তিনি সৃষ্টি করেছেন পোড়া মাটির মত শুকনা মাটি হতে,

১৫. আর জ্বিনকে সৃষ্টি করেছেন অগ্নি শিখা হতে,

১৬. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

১৭. তিনিই দুই উদয়াচল ও দুই আস্তাচলের নিয়ন্ত্রণকারী।

১৮. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

১৯. তিনি দুই সমুদ্রকে প্রবাহিত করেন যারা পরস্পর মিলিত হয়,

২০. এ দুয়ের মধ্যে রয়েছে এক অন্তরাল যা ওরা অতিক্রম করতে পারে না।

২১. অতএব তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

২২. উভয় সমুদ্র হতে উৎপন্ন হয় মুক্তা ও প্রবাল।

২৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

২৪. সমুদ্রে বিচরণশীল পর্বত কোন জাহাজসমূহ তাঁরই নিয়ন্ত্রণাধীন;

২৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

২৬. ভূ-পৃষ্ঠে যা কিছু আছে সমস্তই ধ্বংসশীল,

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ﴿١٥﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٦﴾

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٨﴾

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيْنَ ﴿١٩﴾

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيْنَ ﴿٢٠﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢١﴾

يَخْرُجُ مِنْهُمَا النُّوْلُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٣﴾

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

২৭. এবং অবশিষ্ট থাকবে শুধু তোমার প্রতিপালকের মুখমন্ডল (সত্তা), যা মহিমাময়, মহানুভব;

২৮. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

২৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা আছে সবাই তাঁর নিকট প্রতিদিন প্রার্থনা করে, তিনি সর্বদা মহান কার্যে রত।

৩০. অতএব তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

৩১. হে মানুষ ও জ্বিন! আমি শীঘ্রই তোমাদের প্রতি (হিসাব-নিকাশের জন্য) মনোনিবেশ করবো,

৩২. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

৩৩. হে জ্বিন ও মানুষ জাতি! আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সীমা হতে যদি তোমরা বের হতে পার, তবে বের হয়ে যাও; কিন্তু তোমরা তা পারবে না, শক্তি ব্যতিরেকে (আর সে শক্তি তোমাদের নেই)।

৩৪. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

৩৫. তোমাদের উভয়ের প্রতি শ্রেণিত হবে অগ্নিশিখা ও ধোঁয়া, তোমরা তা প্রতিরোধ করতে পারবে না।

৩৬. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ كُذِّبْتُمْ ﴿٢٨﴾

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط كَلَّ يَوْمَ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ كُذِّبْتُمْ ﴿٣٠﴾

سَنَفَعُكُمْ لَكُمْ أَيُّهُ الثَّقَلَانِ ﴿٣١﴾

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ كُذِّبْتُمْ ﴿٣٢﴾

يُعِشَّرَ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ
أَنْ تَنْقُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
فَأَنْقُذُوا وَلَا تَنْقُذُوا إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿٣٣﴾

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ كُذِّبْتُمْ ﴿٣٤﴾

يُرْسَلُ عَلَيْكُمْ شَوَاطِئٌ مِّنْ نَّارٍ وَنَحَاسٍ
فَلَا تَنْصَرِفْنَ ﴿٣٥﴾

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ كُذِّبْتُمْ ﴿٣٦﴾

৩৭. যেদিন আকাশ বিদীর্ণ হবে
সেদিন ওটা লাল চামড়ার মত
রক্তবর্ণ ধারণ করবে;

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ۝

৩৮. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تَكْفُرُونَ ۝

৩৯. সেদিন মানুষ ও জ্বিনকে তার
অপরাধ সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করা হবে
না?

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۝

৪০. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تَكْفُرُونَ ۝

৪১. অপরাধীদেরকে যাবে তাদের
চেহারার আলামত হতে; তাদেরকে
পাকড়াও করা হবে কপাল (চুলের
ঝুঁটি) ও পা ধরে।

يَعْرِفُ الْمَجْرُمُونَ بِسِيَاهِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي
وَالْأَقْدَامِ ۝

৪২. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تَكْفُرُونَ ۝

৪৩. এটা সেই জাহান্নাম, যা
অপরাধীরা মিথ্যা প্রতিপন্ন করতো,

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمَجْرُمُونَ ۝

৪৪. তারা জাহান্নামের অগ্নি ও ফুটন্ত
পানির মধ্যে ছুটাছুটি করবে।

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ إِن ۝

৪৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تَكْفُرُونَ ۝

৪৬. আর যে ব্যক্তি আদ্বাহর সামনে
উপস্থিত হওয়ার ভয় রাখে, তার
জন্যে রয়েছে দু'টি বাগান;

وَلِسْنُ خَافٍ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَيْنِ ۝

৪৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تَكْفُرُونَ ۝

৪৮. উভয়টি বহু শাখাপল্লব বিশিষ্ট
বৃক্ষে ভরপুর;

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝

৪৯. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكذَّبِينَ ۝

৫০. উভয়টিতে রয়েছে দু'টি
ঝর্ণাধারা সদা প্রবহমান;

فِيهِمَا عَيْنُ تَجْرِي ۝

৫১. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكذَّبِينَ ۝

৫২. উভয় বাগানে রয়েছে প্রত্যেক
ফল দুই প্রকার;

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَأْكِهَةٍ زَوْجِينَ ۝

৫৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكذَّبِينَ ۝

৫৪. সেখানে তারা হেলান দিয়ে
বসবে পুরু রেশমের আস্তর বিশিষ্ট
বিছানায়, দুই বাগানের ফল হবে
তাদের নিকটবর্তী।

مُتَّكِنِينَ عَلَى فُرُشٍ بَطَّيْنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ
وَجَنَّاتٍ الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝

৫৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكذَّبِينَ ۝

৫৬. সে সবে মাবে রয়েছে বহু
আনত নয়না যাদেরকে তাদের পূর্বে
কোন মানুষ অথবা জ্বিন স্পর্শ
করেনি।

فِيهِنَّ قُصُورٌ الظَّرْفِ لَمْ يَطِئْتُهُنَّ
إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۝

৫৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكذَّبِينَ ۝

৫৮. তারা যেন হীরা ও মতি;

كَأَلْهِنَّ أَلْيَاقُوتٍ وَالْمَرْجَانُ ۝

৫৯. সুতরাং তোমরা উভয়ে
তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্
নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكذَّبِينَ ۝

৬০. উত্তম কাজের পুরস্কার উত্তম (জান্নাত) ব্যতীত আর কি হতে পারে?

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ﴿٦٠﴾

৬১. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦١﴾

৬২. এই বাগানদ্বয় ব্যতীত আরো দু'টি বাগান রয়েছে;

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ﴿٦٢﴾

৬৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٣﴾

৬৪. গাড় সবুজ এ বাগান দুটি;

مُدْهَامَتَيْنِ ﴿٦٤﴾

৬৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٥﴾

৬৬. উভয় বাগানে আছে উৎক্ষিপ্তমান দুই ঝর্ণাধারা;

فِيهِمَا عَيْنُتَيْنِ تَصَاحَتَانِ ﴿٦٦﴾

৬৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٧﴾

৬৮. সেখানে রয়েছে ফলমূল খেজুর ও ডালিম;

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

৬৯. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٩﴾

৭০. সে সকলের মাঝে রয়েছে উত্তম চরিত্রের সুন্দরীগণ;

فِيهِنَّ حَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾

৭১. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٧١﴾

৭২. তাঁবুতে থাকবে সুরক্ষিত হূর;

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾

৭৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَاتِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٣﴾

৭৪. তাদের পূর্বে কোন মানুষ অথবা জ্বিন তাদের স্পর্শ করেনি।

لَمْ يَطْمِئِنَّهُنَّ أَنُحْسُ قَبْلَهُمْ وَلَا جِآنُ ﴿٤٤﴾

৭৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَاتِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

৭৬. তারা হেলান দিয়ে বসবে এমন সবুজ আসনে যা অতি বিরল ও অতি উত্তম।

مُتَّكِبِينَ عَلَى رُفْرِفٍ خُضِرٍ وَ عَبَقَرِي حَسَانٍ ﴿٤٦﴾

৭৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِي أَيِّ آيَاتِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

৭৮. কত মহান তোমার প্রতিপালকের নাম যিনি মহিমাময় ও মহানুভব!

تَبَرَّكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَلِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٤٨﴾

সূরাঃ ওয়াকি'আহ্, মাক্কী

(আয়াতঃ ৯৬, রুকূ'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (গুরু করছি)।

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانُهَا ٩٦ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. যখন কিয়ামত সংঘটিত হবে,

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾

২. (তখন) এর সংঘটন অস্বীকার করার কেউ থাকবে না।

لَيْسَ لَوْفَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾

৩. এটা কাউকেও করবে নীচ, কাউকেও করবে সম্মুখত;

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾

৪. যখন প্রবল কম্পনে পৃথিবী প্রকম্পিত হবে।

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ﴿٤﴾

৫. এবং পর্বতমালা চূর্ণ-বিচূর্ণ হয়ে যাবে,

وَبَسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝

৬. তখন ওটা উৎক্ষিপ্ত ধূলিকণায় পরিণত হবে।

فَكَانَتْ هَبَاءً مُتَّبِنًا ۝

৭. এবং তোমরা তিন শ্রেণীতে বিভক্ত হবে।

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۝

৮. ডান হাতের দল; (যারা ডান হাতে আমলনামাপ্রাপ্ত) কত ভাগ্যবান ডান হাতের দল!

فَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۗ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝

৯. এবং বাম হাতের দল; (যারা বাম হাতে আমলনামা প্রাপ্ত) কত হতভাগ্য বাম হাতের দল!

وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمِ ۗ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمِ ۝

১০. আর অগ্রবর্তীগণই তো অগ্রবর্তী,

وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ۝

১১. তারাই নৈকট্য প্রাপ্ত

أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝

১২. (তারা) থাকবে নিয়ামতপূর্ণ জান্নাতসমূহে;

فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ۝

১৩. বহুসংখ্যক হবে পূর্ববর্তীদের মধ্য হতে;

كُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝

১৪. এবং অল্প সংখ্যক হবে পরবর্তীদের মধ্য হতে,

وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝

১৫. স্বর্ণখচিত আসনসমূহে

عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝

১৬. তারা তার উপরে হেলান দিয়ে, পরস্পর মুখোমুখি হয়ে বসবেন।

مُتَّكِلِينَ عَلَيْهَا مُتَّقِلِينَ ۝

১৭. তাদের সেবায় ঘোরাফেরা করবে চির কিশোররা

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۝

১৮. পানপাত্র, কুঁজা ও প্রস্রবণ নিঃসৃত সুরাপূর্ণ পেয়ালা নিয়ে, (এরা হাজির হবে।)

بِأَكْوَابٍ وَآبَارٍ ۗ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝

১৯. সেই সুরা পানে তাদের শিরপীড়া হবে না, তারা জ্ঞান হারাও হবে না—

لَّا يَصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْفُونَ ۝

২০. এবং তাদের পছন্দ মত
ফলমূল,

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٥٠﴾

২১. আর তাদের পছন্দ মত পাখীর
গোশত নিয়ে,

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥١﴾

২২. আর (তাদের জন্যে থাকবে)
সুন্দর চক্ষুধারী হূর,

وَحُورٍ عِينٍ ﴿٥٢﴾

২৩. সুরক্ষিত মুক্তা সদৃশ,

كَامْتَالِ الذُّرَى الْمَكْنُونِ ﴿٥٣﴾

২৪. তাদের আমলের পুরস্কার
স্বরূপ।

جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

২৫. তারা শুনবে না কোন অসার
অথবা পাপবাক্য,

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْتِيهِنَّ ﴿٥٥﴾

২৬. 'সালাম' আর 'সালাম' বাণী
ব্যতীত।

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٥٦﴾

২৭. আর ডান হাতের দল, কত
ভাগ্যবান ডান হাতের দল!

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ هُمْ مَا أَصْحَابُ الْيَسِينِ ﴿٥٧﴾

২৮. (তারা থাকবে এক উদ্যানে,
সেখানে আছে কাঁটাবিহীন বরই গাছ,

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٥٨﴾

২৯. কাঁদি ভরা কলা গাছ,

وَأَطْلَحٍ مَّنْضُودٍ ﴿٥٩﴾

৩০. সম্প্রসারিত ছায়া,

وَوَظِلٍّ مَّبْدُودٍ ﴿٦٠﴾

৩১. সদা প্রবহমান পানি,

وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٦١﴾

৩২. ও প্রচুর ফলমূল,

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٦٢﴾

৩৩. যা শেষ হবে না ও যা নিষিদ্ধও
হবে না।

لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٦٣﴾

৩৪. আর সমুচ্চ শয্যাসমূহ;

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٦٤﴾

৩৫. তাদেরকে আমি সৃষ্টি করেছি
নতুন রূপে

إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنِشَاءً ﴿٦٥﴾

৩৬. তাদেরকে করেছি কুমারী

فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٦٦﴾

৩৭. সোহাগিনী ও সমবয়স্কা,

عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٦٧﴾

৩৮. এসব ডান হাতের লোকদের
জন্মে।

لأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝٣٨

৩৯. তাদের অনেকে হবে
পূর্ববর্তীদের মধ্য হতে,

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝٣٩

৪০. এবং অনেকে হবে পরবর্তীদের
মধ্য হতে।

وَتِلْكَ مِنَ الْآخِرِينَ ۝٤٠

৪১. আর বাম হাতের দল, কত
হতভাগা বাম হাতের দল!

وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝٤١

৪২. তারা থাকবে লু-হাওয়ার প্রবাহ
ও উত্তপ্ত পানিতে,

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝٤٢

৪৩. কালো ধোঁয়ার ছায়ায়,

وَذِلِّ مِّنْ يَّخْضُمٍ ۝٤٣

৪৪. যা শীতলও নয়, আরামদায়কও
নয়।

لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝٤٤

৪৫. ইতিপূর্বে তারা তো মগ্ন ছিল
ভোগ-বিলাসে।

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۝٤٥

৪৬. এবং তারা অবিরাম লিঙ্গ ছিল
ঘোরতর পাপকর্মে।

وَكَانُوا يُصْرُونَ عَلَى الْجَنِّ الْعَظِيمِ ۝٤٦

৪৭. তারা বলতোঃ আমরা মরে গিয়ে
মাটিতে মিশে যাব। আর হাড়গুলো
পড়ে থাকবে তবুও কি পুনর্বীর
উত্থিত হব?

وَكَانُوا يَقُولُونَ ۝٤٧
هَٰذَا مِنَّا وَهَٰذَا مِنَّا وَكُنَّا ثَرَابًا
وَعِظَامًا ۝٤٨
وَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝٤٨

৪৮. এবং আমাদের পূর্বপুরুষগণও?

أَوْ آبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝٤٩

৪৯. বলঃ অবশ্যই পূর্ববর্তীগণ এবং
পরবর্তীগণও

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝٥٠

৫০. সকলকে একত্রিত করা হবে
এক নির্ধারিত দিনের নির্ধারিত
সময়ে;

لَمَجْمُوعُونَ لِمِيقَاتٍ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝٥١

৫১. অতঃপর হে বিভ্রান্ত মিথ্যা
প্রতিপন্নকারীরা!

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ۝٥٢

৫২. তোমরা অবশ্যই যাক্কুম বৃক্ষ
হতে আহার করবে,

لَا تَكُونُ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زُقُومٍ ۝٥٣

৫৩. এবং ওটা দ্বারা তোমরা উদর পূর্ণ করবে,

فَبَاثُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾

৫৪. তারপর তোমরা পান করবে ফুটন্ত টগবগে পানি—

فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَيِّمِ ﴿٥٤﴾

৫৫. পান করবে তৃষ্ণার্ত উটের ন্যায়।

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ﴿٥٥﴾

৫৬. কিয়ামতের দিন এটাই হবে তাদের আপ্যায়ন।

هَذَا نُزْلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٦﴾

৫৭. আমিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, তবে কেন তোমরা বিশ্বাস করছো না?

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ﴿٥٧﴾

৫৮. তোমরা কি ভেবে দেখেছো তোমাদের বীর্যপাত সম্বন্ধে?

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾

৫৯. ওটা কি তোমরা সৃষ্টি কর, না আমি সৃষ্টি করি?

ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهَا أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ﴿٥٩﴾

৬০. আমি তোমাদের জন্যে মৃত্যু নির্ধারিত করেছি এবং আমি অক্ষম নই—

نَحْنُ قَادِرَاتُ بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِسَبُّوقِينَ ﴿٦٠﴾

৬১. এ ব্যাপারে যে, আমি তোমাদের মত (অন্যকে) পরিবর্তন করে নিয়ে আসব এবং তৈরি করব তোমাদেরকে এমন (আকৃতিতে) যা তোমরা জান না।

عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

৬২. তোমরা তো অবগত হয়েছো প্রথম সৃষ্টি সম্বন্ধে, তবে তোমরা কেন উপদেশ গ্রহণ করো না?

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

৬৩. তোমরা যে বীজ বপন কর সে বিষয়ে চিন্তা করেছে কি?

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾

৬৪. তোমরা কি ওকে অঙ্কুরিত কর, না আমি অঙ্কুরিত করি?

ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهَا أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾

৬৫. আমি ইচ্ছা করলে একে খড়কুটায় পরিণত করতে পারি, তখন

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطًا مَّا فَظَلَّمْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾

তোমরা হতবুদ্ধি হয়ে পড়বে,

৬৬. (বলবেঃ) আমাদের তো বরবাদ হয়েছে!

إِنَّا لَبُغْرَمُونَ ﴿٣٧﴾

৬৭. বরং আমরা বঞ্চিত।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٣٨﴾

৬৮. তোমরা যে পানি পান কর সে বিষয়ে তোমরা চিন্তা করেছো কি?

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٣٩﴾

৬৯. তোমরাই কি ওটা মেঘ হতে বর্ষাও, না আমি বর্ষাই?

ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْبُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٤٠﴾

৭০. আমি ইচ্ছা করলে ওটাকে লবণাক্ত বানাতে পারি। তবুও তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করবে না কেন?

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أَجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٤١﴾

৭১. তোমরা যে আগুন জ্বালাও তা লক্ষ্য করে দেখেছো কি?

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٤٢﴾

৭২. তোমরাই কি ওর বৃক্ষ সৃষ্টি কর, না আমি সৃষ্টি করি?

ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٤٣﴾

৭৩. আমি একে করেছি একটি নিদর্শনস্বরূপ এবং মুসাফিরদের জন্য উপকারী।

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَرَمَاقًا لِلْمُقِيمِينَ ﴿٤٤﴾

৭৪. সুতরাং তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের নামের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٤٥﴾

৭৫. আমি শপথ করছি নক্ষত্র রাজির অস্তাচলের,

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْجِعِ النُّجُومِ ﴿٤٦﴾

৭৬. অবশ্যই এটা এক মহা শপথ, যদি তোমরা জানতে—

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٤٧﴾

৭৭. নিশ্চয়ই এটা সম্মানিত কুরআন,

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٤٨﴾

৭৮. যা আছে সুরক্ষিত কিতাবে,

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٤٩﴾

৭৯. পুত-পবিত্রতা ব্যতীত অন্য কেউ তা স্পর্শ করে না।

لَا يَمَسُّهَا إِلَّا الْمَطْهُرُونَ ﴿٥٠﴾

৮০. এটা জগতসমূহের প্রতি-
পালকের নিকট হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾

৮১. তবুও কি তোমরা এই হাদীসকে
(কুরআনকে) তুচ্ছ গণ্য করবে?

أَفِي هَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُذْهَبُونَ ﴿٨١﴾

৮২. এবং তোমরা মিথ্যারোপকেই
তোমাদের উপজীব্য করে নিয়েছো!

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْكُمْ تَكْذِبُونَ ﴿٨٢﴾

৮৩. তবে কেন নয়— প্রাণ যখন
কঠাগত হয়।

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ﴿٨٣﴾

৮৪. এবং তখন তোমরা তাকিয়ে
দেখো।

وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٨٤﴾

৮৫. আর আমি তোমাদের অপেক্ষা
(জানার দিক দিয়ে) তার নিকটতর;
কিন্তু তোমরা দেখতে পাও না।

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾

৮৬. তবে কেন নয়, যদি তোমরা
প্রতিদান প্রাপ্ত না হও,

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ عَيْرَ مَدْيَيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৭. তবে তোমরা ওটা ফিরাও না
কেন? যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾

৮৮. যদি সে নৈকট্য প্রাপ্তদের
একজন হয়,

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾

৮৯. তার জন্যে রয়েছে আরাম,
উত্তম রিযিক ও নিয়ামতময় জান্নাত;

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾

৯০. আর যদি সে ডান হাতের
একজন হয়,

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾

৯১. (তাকে বলা হবেঃ) হে ডান হাত
ওয়লা। তোমার জন্য নিরাপত্তা।

فَسَلِّمْ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾

৯২. কিন্তু সে যদি মিথ্যা
প্রতিপন্নকারী ও বিভ্রান্তদের অন্যতম
হয়,

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾

৯৩. তবে রয়েছে আপ্যায়ন টগবগে
ফুটন্ত পানির দ্বারা,

فَنَزْلٌ مِنْ حَيْمٍ ﴿٩٣﴾

৯৪. এবং দহন জাহান্নামের;

وَأَنْصِلِيَّةٌ جَبِينٍ ﴿٩٤﴾

৯৫. নিশ্চয়ই এটা চূড়ান্ত সত্য।

إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ﴿٩٥﴾

৯৬. অতএব, তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের নামের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٩٦﴾

সূরাঃ হাদীদ মাদানী

(আয়াতঃ ২৯, রুকূ'ঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْحَدِيدِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٩ رُكُوعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই আল্লাহর। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾

২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কর্তৃত্ব তাঁরই; তিনি জীবন দান করেন ও মৃত্যু ঘটান; তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ

وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢﴾

৩. তিনিই আদি, তিনিই অন্ত, তিনিই জাহের, তিনিই বাতেন এবং তিনি সর্ববিষয়ে অধিক অবহিত।

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ

وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾

৪. তিনিই ছয় দিবসে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন, অতপর আরশে সমুন্নীত হয়েছেন। তিনি জানেন যা কিছু ভূমিতে প্রবেশ করে ও যা কিছু তা হতে বের হয় এবং আকাশ হতে যা কিছু নামে ও আকাশে যা কিছু উখিত হয়। তোমরা যেখানেই থাকো না কেন তিনি (জানার দিক দিয়ে) তোমাদের সঙ্গে আছেন, তোমরা যা কিছু কর আল্লাহ তা দেখেন।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ

أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ط يَعْلَمُ مَا يَلِجُ

فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ

مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ط وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ

مَا كُنْتُمْ ط وَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾

৫. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কর্তৃত্ব তাঁরই, আর আল্লাহরই দিকে সব বিষয় প্রত্যাবর্তিত হবে।

৬. তিনিই রাত্রিকে প্রবেশ করান দিবসে এবং দিবসকে প্রবেশ করান রাত্রিতে এবং তিনি হৃদয় সমূহের গোপন রহস্যও জানেন।

৭. আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আন এবং তোমাদেরকে যা কিছুর উত্তরাধিকারী তিনি করেছেন তা হতে ব্যয় কর। তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনে ও ব্যয় করে, তাদের জন্যে আছে মহা পুরস্কার।

৮. তোমাদের কি হলো যে, তোমরা আল্লাহতে ঈমান আনতো না? অথচ রাসূল (ﷺ) তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিপালকের প্রতি ঈমান আনতে আহ্বান করছে এবং তিনি (আল্লাহ) তোমাদের নিকট হতে অঙ্গীকার গ্রহণ করেছেন, তোমরা যদি বিশ্বাস করতে।

৯. তিনিই তাঁর বান্দার প্রতি সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ অবতীর্ণ করেন, তোমাদেরকে সকল প্রকার অন্ধকার হতে আলোর দিকে আনার জন্যে; নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের প্রতি করুণাময়, পরম দয়ালু।

১০. তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা আল্লাহর পথে ব্যয় করছ না? অথচ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর মালিকানা আল্লাহরই। তোমাদের মধ্যে যারা (মক্কা) বিজয়ের পূর্বে ব্যয়

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ
الْأُمُورُ ①

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ط
وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ①

آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ
مُسْتَحْلِفِينَ فِيهِ ط فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ
وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ②

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوكُمْ
لِئْتُمُنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ③

هُوَ الَّذِي يُعَزِّلُ عَلَى عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ
لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ط وَإِنَّ اللَّهَ
بِكُمْ لَرَوْفٌ رَّحِيمٌ ④

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَ لِلَّهِ
مِيرَاتُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ
مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتَلَ ط وَأُولَئِكَ

করেছে ও সংগ্রাম করেছে, সমান নয়; তারা মর্যাদায় শ্রেষ্ঠ তাদের অপেক্ষা যারা পরবর্তীকালে ব্যয় করেছে ও সংগ্রাম করেছে। তবে আল্লাহ উভয়ের কল্যাণের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন। তোমরা যা কর আল্লাহ তা সবিশেষ অবহিত।

১১. কে আছে যে আল্লাহকে উত্তম ঋণ দিবে? তাহলে তিনি তা বহুগুণে তার জন্য বৃদ্ধি করবেন এবং তার জন্যে উত্তম পুরস্কার রয়েছে।

১২. সেদিন (কিয়ামতের দিন) তুমি দেখবে মু'মিন নর-নারীদেরকে তাদের সম্মুখ ভাগে ও ডান পার্শ্বে তাদের জ্যোতি প্রবাহিত হবে। (বলা হবেঃ) আজ তোমাদের জন্যে সুসংবাদ জান্নাতের যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত হবে, সেখানে তোমরা স্থায়ী হবে, এটাই মহাসাফল্য।

১৩. সেদিন মুনাফিক পুরুষ ও মুনাফিক নারী মু'মিনদেরকে বলবেঃ তোমরা আমাদের জন্যে একটু অপেক্ষা কর, যাতে আমরা তোমাদের নূর হতে কিছু গ্রহণ করতে পারি। বলা হবেঃ তোমরা তোমাদের পিছনে ফিরে যাও ও আলোর সন্ধান কর। অতঃপর উভয়ের মাঝামাঝি স্থাপিত হবে একটি প্রাচীর সেখানে একটি দরজা থাকবে, যার অভ্যন্তরে রহমত এবং বহির্ভাগে আযাব।

১৪. তারা তাদেরকে ডেকে জিজ্ঞেস করবেঃ আমরা কি তোমাদের সঙ্গে

أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ
وَقَتَلُوا ط وَكَلَّا وَعَدَّ اللَّهُ الْحُسْنَى ط وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑩

مَنْ ذَا الَّذِي يُقرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعَّهُ
لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ⑩

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَانُكَمُ الْيَوْمِ جَنَّاتٌ
تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑩

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ
أَمَنُوا انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُورِكُمْ ⑩ قِيلَ
ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ
سُورَةٌ لَهُ بَابٌ ط بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ
مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ⑩

يُنَادُوهُمْ أَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ ط قَالُوا بَلَى وَلَكِنَّكُمْ

ছিলাম না? তারা বলবে: হ্যাঁ, কিন্তু তোমরা নিজেরাই নিজেদেরকে বিপদগ্রস্ত করেছো; তোমরা প্রতীক্ষা করেছিলে, সন্দেহ পোষণ করেছিলে এবং মিথ্যা আশা-আকাঙ্ক্ষা তোমাদেরকে প্রভারিত করেছে, অবশেষে আল্লাহর হুকুম (মৃত্যু) এসেছে; আর মহাপ্রতারক (শয়তান) তোমাদেরকে আল্লাহ সম্পর্কে প্রভারিত করেছিল।

১৫. আজ তোমাদের নিকট হতে কোন মুক্তিপণ নেয়া হবে না এবং কাফিরদের নিকট হতেও নয়। জাহান্নামই তোমাদের আবাসস্থল, এটাই তোমাদের চিরসঙ্গী, কত নিকট এই পরিণাম!

১৬. মু'মিন লোকদের জন্য এখনও কি সময় আসেনি যে, আল্লাহর স্মরণ এবং যে সত্য অবতীর্ণ হয়েছে তার সম্মুখে অবনত হবে? এবং পূর্বে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তাদের মত যেন তারা না হয়, বহুকাল অতিক্রান্ত হয়ে গেলে যাদের হৃদয় কঠিন হয়ে পড়েছিল। তাদের অধিকাংশই ফাসেক।

১৭. জেনে রেখো যে, আল্লাহই পৃথিবীকে তার মৃত্যুর পর জীবন দান করেন। আমি নিদর্শনগুলো তোমাদের জন্যে বিশদভাবে ব্যক্ত করেছি যাতে তোমরা বুঝতে পার।

১৮. দানশীল পুরুষ ও দানশীল নারী এবং যারা আল্লাহকে উত্তম ঋণ দান করে তাদেরকে দেয়া হবে বহুশুণ বেশি এবং তাদের জন্যে রয়েছে সম্মানজনক বিনিময়।

فَأَنْتُمْ أَنْفُسُكُمْ وَتَرَىٰ بِصُغُرِكُمْ وَأَرْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ﴿١٥﴾

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ط مَا وَكُمُ النَّارُ ط هِيَ مَوْلَاكُمْ ط وَيَسَّ الْمَاصِئُ ﴿١٦﴾

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلَ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ط وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿١٧﴾

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُعْطِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط قَدْ بَيَّنَّا لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٨﴾

إِنَّ الْبَصِطِينَ وَالْبَصِطَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضْعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٩﴾

১৯. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের (ﷺ) প্রতি ঈমান আনে, তারাই তাদের প্রতিপালকের নিকট সত্যনিষ্ঠ ও সাক্ষী। তাদের জন্যে রয়েছে তাদের প্রাপ্য পুরস্কার ও জ্যোতি এবং যারা কুফরী করেছে ও আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করেছে, তারা জাহান্নামের অধিবাসী হবে।

২০. তোমরা ভালোভাবে জেনে রেখো, দুনিয়ার জীবন তো খেল-তামাশা, জাঁকজমক, পারস্পরিক অহংকার প্রকাশ, ধন-সম্পদ ও সম্মান-সম্মতি প্রাচুর্য লাভের প্রতিযোগিতা ব্যতীত আর কিছুই নয়; এর উপমা বৃষ্টি, যার দ্বারা উৎপন্ন শস্য-সম্ভার কৃষকদের চমৎকৃত করে, অতঃপর ওটা শুকিয়ে যায়, ফলে তুমি ওটা হলুদ বর্ণ দেখতে পাও, অবশেষে তা খড়্‌ খুটায় পরিণত হয়। পরকালে রয়েছে কঠিন শাস্তি এবং আল্লাহর ক্ষমা ও সম্ভৃষ্টি। দুনিয়ার জীবন ছলনাময় ধোকা ব্যতীত কিছুই নয়।

২১. তোমরা অগ্রণী হও তোমাদের প্রতিপালকের ক্ষমা ও সেই জান্নাত লাভের প্রয়াসে যা প্রশস্ততায় আকাশ ও পৃথিবীর মত, যা প্রস্তুত করা হয়েছে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণে বিশ্বাসীদের জন্যে। এটা আল্লাহর অনুগ্রহ, যাকে ইচ্ছা তিনি এটা দান করেন; আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহশীল।

২২. এমন কোন বিপদ নেই যা পৃথিবীতে অথবা ব্যক্তিগতভাবে তোমাদের উপর আসে আর আমি

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ۗ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط لَهُمْ
أَجْرُهُمْ وَوُورُهُمْ ط وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

إِعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ ۗ وَ لَهُوَ وَ
زِينَةٌ ۗ وَ تَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ
وَ الْأَوْلَادِ ط كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ
ثُمَّ يَهْبِجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا ط
وَ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَ مَغْفِرَةٌ مِّنَ
اللَّهِ وَ رِضْوَانٌ ط وَ مَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا
مَتَاعٌ الْعُرُورِ ۝

سَائِقُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا
كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَ الْأَرْضِ ۗ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ
آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ط ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ
مَن يَشَاءُ ط وَ اللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَ لَا فِي
أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا ط

তা সংঘটিত করার পূর্বে তা একটি কিতাবে লিপিবদ্ধ রাখিনি, আল্লাহর পক্ষে এটা খুবই সহজ।

২৩. এটা এজন্যে যে, তোমরা যা হারিয়েছো তাতে যেন তোমরা হতাশা গ্রস্ত না হও এবং যা তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন তার জন্যে গৌরবে ফেটে না পড়। আল্লাহ পছন্দ করেন উদ্ধত ও অহংকারীদেরকে।

২৪. যারা কার্পণ্য করে এবং মানুষকে কার্পণ্যের নির্দেশ দেয় এবং যে মুখ ফিরিয়ে নেয় (সে জেনে রাখুক যে,) আল্লাহ তো অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

২৫. নিশ্চয়ই আমি আমার রাসূলদেরকে প্রেরণ করেছি স্পষ্ট প্রমাণসহ এবং তাদের সঙ্গে দিয়েছি কিতাব ও তুলাদন্ড যাতে মানুষ সুবিচার প্রতিষ্ঠা করে এবং আমি লৌহ দিয়েছি যাতে রয়েছে প্রচন্ড শক্তি ও রয়েছে মানুষের জন্যে বহুবিধ কল্যাণ; এটা এই জন্যে যে, আল্লাহ প্রকাশ করে দিবেন কে প্রত্যক্ষ না করেও তাঁকে ও তাঁর রাসূলদেরকে সাহায্য করে। আল্লাহ শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

২৬. আমি নূহ (ﷺ) ও ইবরাহীম (ﷺ)-কে (রাসূলরূপে) প্রেরণ করেছিলাম এবং আমি তাদের দু'জনের বংশে নবুওয়াত ও কিতাবের ব্যবস্থা করেছিলাম; কিন্তু তাদের অল্পই সৎপথ অবলম্বন করেছিল এবং অধিকাংশই ছিল ফাসেক।

২৭. অতঃপর আমি একের পর এক আমার রাসূলগণ পাঠিয়েছি এবং

إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٧﴾

لِكَيْ لَا تَأْسَوْا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٨﴾

الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ط
وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٩﴾

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ط
وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ط إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٣٠﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُهْتَدٍ ط
وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٣١﴾

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَىٰ

মারইয়াম পুত্র ঈসা (ﷺ)-কে পাঠিয়েছি। আর তাকে দিয়েছিলাম ইঞ্জিল এবং তার অনুসারীদের অন্তরে দিয়েছিলাম করুণা ও দয়া; কিন্তু সন্ন্যাসবাদ (সংসার ত্যাগী) এটা তো তারা নিজেরাই আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের জন্যে প্রবর্তন করেছিল; আমি তাদেরকে এর বিধান দেইনি অথচ এটাও তারা যথাযথভাবে পালন করেনি। তাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছিল, তাদেরকে আমি পুরস্কার দিয়েছিলাম এবং তাদের অধিকাংশই ফাসিক।

২৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আন, তিনি তাঁর অনুগ্রহে তোমাদেরকে দ্বিগুণ পুরস্কার দিবেন এবং তিনি তোমাদেরকে দিবেন আলো, যার সাহায্যে তোমরা চলবে এবং তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন। আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

২৯. এটা এজন্যে যে, কিতাবীগণ যেন জানতে পারে, আল্লাহর সামান্যতম অনুগ্রহের উপরও তাদের কোন অধিকার নেই, অনুগ্রহ আল্লাহরই হাতে, যাকে ইচ্ছা তা দান করেন এবং আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহশীল।

ابن مريم و آتيناها الإنجيل و جعلنا في قلوب
الذين اتبعوه رافة ورحمة و رهبا نبي
ابتدعوها ما كتبنا عليهم إلا ابتغاء رضوان
الله فما رعوها حق رعايتها فاتينا الذين
آمنوا منهم أجرهم و كثير منهم فسقون ﴿٢٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَاٰمِنُوا بِرَسُولِهِ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا
تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٨﴾

لِيَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ الْآيَاتِ الْقَدِيرُونَ عَلَى شَيْءٍ
مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

১। (ক) আবু বুরদাহ তার পিতা [আবু মুসা আশআরী (রাযিআল্লাহু আনহু)] বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ “যার কাছে ক্রীতদাসী আছে এবং সে তাকে (শরীয়তের প্রয়োজনীয় মাসযালা) শিক্ষা দেয় এবং ভাল আচার-ব্যবহার ও শিষ্টাচার শিক্ষা দেয় অতঃপর তাকে আযাদ করে নিজেই বিবাহ করে নেয়, তার জন্য দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আহলে কিতাবদের মধ্য থেকে যে নিজেদের নবী এবং আমার ওপর ঈমান আনে তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আর যে গোলাম স্বীয় মালিক এবং তার রবের হক যথাযথভাবে আদায় করবে, তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৫০৮৩)

সূরাঃ মুজাদালাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ২২, রুকু'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. (হে রাসূল ﷺ)! আল্লাহ্ শুনেছেন সেই নারীর কথা, যে তার স্বামীর বিষয়ে তোমার সাথে তর্ক-বিতর্ক করছে এবং আল্লাহর নিকট ফরিয়াদ করছে। আল্লাহ তোমাদের কথোপকথন শুনেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ্ সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

২. তোমাদের মধ্যে যারা নিজেদের স্ত্রীদের সাথে “যিহার” করে, (নিজ স্ত্রীকে মার মত বলে) তাদের স্ত্রীরা তাদের মা নয়; যারা তাদেরকে জন্মান করে শুধু তারাই তাদের মা; তারা তো ঘৃণ্য ও মিথ্যা কথা বলে; নিশ্চয়ই আল্লাহ্ পাপমোচনকারী, ক্ষমাশীল।

৩. যারা নিজেদের স্ত্রীদের সাথে যিহার করে এবং পরে তাদের উক্তি প্রত্যাহার করে, তবে একে অপরকে স্পর্শ করার পূর্বে একটি দাস মুক্ত করতে হবে, এর দ্বারা তোমাদেরকে সদুপদেশ দেয়া হয়। তোমরা যা কর আল্লাহ তার খবর রাখেন।

৪. কিন্তু যার এ সামর্থ থাকবে না, একে অপরকে স্পর্শ করার পূর্বে তাকে পরস্পর দুই মাস রোযা পালন করতে হবে; যে তাতেও অসমর্থ হবে, সে ষাটজন অভাবগ্রস্তকে

سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٢ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ①

الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنكُم مِّن نِّسَائِهِمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ إِنَّ أُمَّهَاتَهُمْ إِلَّا الْآلُ ۗ وَلَدَنَّهُمْ وَاللَّهُمْ لَيَقُولُنَّ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ②

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِن نِّسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ مِن قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّاتِ ذَلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ③

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّاتِ ۗ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ مَسْكِينًا ۗ ذَلِكُمْ لِمَنْؤُمُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ

খাওয়াবে; এটা এই জন্যে যে, তোমরা যেন আল্লাহ ও তাঁর রাসূলে বিশ্বাস স্থাপন কর। এগুলো আল্লাহর নির্ধারিত বিধান, কাফিরদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক আযাব রয়েছে।

৫. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ করে, তাদেরকে অপদস্থ করা হবে যেমন অপদস্থ করা হয়েছে তাদের পূর্ববর্তীদেরকে; আমি সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ অবতীর্ণ করেছি; কাফিরদের জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাকর আযাব।

৬. সে দিন, যেদিন আল্লাহ তাদের সকলকে একত্রে পুনরুত্থিত করবেন এবং তাদেরকে জানিয়ে দিবেন যা তারা করতো; আল্লাহ ওর হিসাব রেখেছেন, যদিও তারা তা ভুলে গেছে। আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সম্যক সাক্ষী।

৭. ভূমি কি অনুধাবন কর না, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে আল্লাহ তা জানেন; তিন ব্যক্তির মধ্যে এমন কোন গোপন পরামর্শ হয় না যাতে চতুর্থজন হিসাবে তিনি থাকেন না; এবং পাঁচ ব্যক্তির মধ্যে এমন কোন গোপন পরামর্শ হয় না যাতে ষষ্ঠজন হিসেবে তিনি থাকেন না; তারা এতদপেক্ষা কম হোক বা বেশি হোক; তারা যেখানেই থাকুক না কেন আল্লাহ (জানার দিক দিয়ে) তাদের সঙ্গে

وَالْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَقَبُوتُوا كَمَا كَبِتَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ط
وَالْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٨﴾

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا وَأَحْصَاهُ
اللَّهُ وَسُوءُهُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٩﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط
مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خُمْسَةَ
إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ
مَعَهُمْ أَيُّنَ مَا كَانُوا ؕ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ط إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٠﴾

আছেন। তারা যা করে; তিনি তাদেরকে কিয়ামতের দিন তা জানিয়ে দিবেন। আল্লাহ্ সর্ব বিষয়ে সম্যক অবগত।

৮. তুমি কি তাদেরকে লক্ষ্য কর না, যাদেরকে কানাঘুষা করতে নিষেধ করা হয়েছিল; অতঃপর তারা যা নিষিদ্ধ তারই পুনরাবৃত্তি করে এবং পাপাচারণ, সীমালঙ্ঘন ও রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণের জন্যে কানাঘুষা করে। তারা যখন তোমার নিকট আসে তখন তারা তোমাকে এমন কথা দ্বারা অভিবাদন (সালাম) করে যার দ্বারা আল্লাহ্ তোমাকে অভিবাদন করেননি। তারা মনে মনে বলেঃ আমরা যা বলি তার জন্যে আল্লাহ্ আমাদেরকে শাস্তি দেন না কেন? জাহান্নামই তাদের উপযুক্ত শাস্তি যেখানে তারা প্রবেশ করবে, কত নিকৃষ্ট সেই আবাস!

৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা যখন কানাঘুষা (গোপন পরামর্শ) কর, সে পরামর্শ যেন পাপাচারণ, সীমালঙ্ঘন ও রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ সম্পর্কে না হয়। তোমরা কল্যাণকর কাজ ও তাকওয়া অবলম্বনের পরামর্শ করো এবং ভয় কর আল্লাহকে যার নিকট সমবেত হবে তোমরা।

১০. কানাঘুষা তো শয়তানদের কাজ যা মু'মিনদেরকে দুঃখ দেয়ার জন্যে করা হয়; তবে আল্লাহ্র ইচ্ছা ব্যতীত শয়তান তাদের সমান্যতম ক্ষতি করতে পারবে না। মু'মিনদের কর্তব্য আল্লাহ্র উপর নির্ভর করা।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ التَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعْوَدُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْآثِمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصَلُّونَهَا فَمِئْسَ الصَّيْرِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْآثِمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبَيِّنِ وَالتَّقْوَىٰ وَأَتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ①

إِنَّمَا التَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُونَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ①

১১. হে মু'মিনগণ! যখন তোমাদেরকে বলা হয়ঃ মজলিসে স্থান প্রশস্ত করে দাও তখন তোমরা স্থান করে দিয়ো, আল্লাহ তোমাদের জন্যে স্থান প্রশস্ত করে দিবেন এবং যখন বলা হয়ঃ উঠে যাও তখন উঠে যাবে। তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে এবং যাদেরকে জ্ঞান দান করা হয়েছে আল্লাহ তাদেরকে উচ্চ মর্যাদা দান করবেন; তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্পর্কে পূর্ণ অবহিত।

১২. হে মু'মিনগণ! তোমরা যদি রাসূল (ﷺ)-এর সাথে চুপি চুপি (কানাঘুবা) কথা বলতে চাও তার পূর্বে সাদকা প্রদান করবে, এটাই তোমাদের জন্যে উত্তম ও পবিত্রম; যদি তাতে অক্ষম হও (তবে অপরাধী হবে না, কেননা) আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

১৩. তোমরা কি চুপে চুপে কথা বলার পূর্বে সাদকা প্রদানকে ভয় পাও? যখন তোমরা সাদকা দিতে পারলে না, আর আল্লাহ তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিলেন; তখন তোমরা নামায প্রতিষ্ঠিত কর, যাকাত প্রদান কর ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর। তোমরা যা কর আল্লাহ তা সম্যক অবগত।

১৪. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি আল্লাহ যে সম্প্রদায়ের প্রতি অসন্তুষ্ট তাদের সাথে যারা বন্ধুত্ব করে? তারা (মুনাফিকগণ) তোমাদের দলভুক্ত নয়, তাদের দলভুক্তও নয় এবং তারা জেনে শুনে মিথ্যা শপথ করে।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ
فَاتَفَسَّحُوا يُفَسِّحَ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا
فَانشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَجَّيْتُمُ الرَّسُولَ
فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوِكُمْ صَدَقَةٌ ذَٰلِكَ
خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنِ اللَّهُ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

ءَأَسْفَقْتُمْ أَن تَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوِكُمْ
صَدَقَاتٍ ۗ فَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ
فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضَبَ اللَّهُ
عَلَيْهِمْ مَّا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ
عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

১৫. আল্লাহ তাদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছেন কঠিন আযাব। তারা যা করে তা কতই না মন্দ।

১৬. তারা তাদের শপথগুলোকে ঢাল হিসেবে ব্যবহার করে, (এভাবে) তারা আল্লাহর পথ হতে মানুষকে প্রতিহত করে; তাদের জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাদায়ক আযাব।

১৭. আল্লাহর আযাবের মুকাবিলায় তাদের ধন-সম্পদ ও সম্মান-সম্মতি তাদের কোন কাজে আসবে না, তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা স্থায়ী হবে।

১৮. যেদিন আল্লাহ পুনরুত্থিত করবেন তাদের সকলকে, তখন তারা আল্লাহর নিকট সেরূপ শপথ করবে যে রূপ শপথ তোমাদের নিকট করে এবং তারা মনে করে যে, এমন কিছু উপর রয়েছে যাতে তারা উপকৃত হবে। সাবধান! তারাই তো মিথ্যাবাদী।

১৯. শয়তান তাদের উপর প্রভাব বিস্তার করেছে, ফলে তাদেরকে ভুলিয়ে দিয়েছে আল্লাহর স্মরণ। তারা শয়তানেরই দল। সাবধান! শয়তানের দল অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত।

২০. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ করে তারা হবে চরম লাঞ্ছিতদের অন্তর্ভুক্ত।

২১. আল্লাহ সিদ্ধান্ত চূড়ান্ত করেছেনঃ আমি এবং আমার রাসূল (ﷺ) অবশ্যই বিজয়ী হবো। নিশ্চয়ই আল্লাহ শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

إِنَّمَا تَحِبُّوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾

لَنْ نُنْفِئَهُمْ عَنْهُمُ أَمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

يَوْمَ يَبْعَهُمُ اللَّهُ جَبِينًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ إِلَّا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾

اسْتَعْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ إِلَّا الْإِنَّا حِزْبُ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ فِي الْأَذَىٰ ﴿٢٠﴾

كَتَبَ اللَّهُ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَا وَرَسُولِي أَنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾

২২. তুমি পাবে না আল্লাহ ও আখিরাতের বিশ্বাসী এমন কোন সম্প্রদায়; যারা ভালবাসে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচারীদেরকে, হোক না এই বিরুদ্ধাচারীরা তাদের পিতা, পুত্র, ভ্রাতা অথবা তাদের জ্ঞাতি-গোত্র। তাদের অন্তরে আল্লাহ সুদৃঢ় করেছেন ঈমান এবং তাদেরকে শক্তিশালী করেছেন তাঁর পক্ষ হতে এক রুহ দ্বারা। তিনি তাদেরকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; সেখানে তারা স্থায়ী হবে; আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট এবং তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট, তাই আল্লাহর দল। জেনে রেখো যে, আল্লাহর দলই সফলকাম হবে।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ
حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ
إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ
وَآيَدَهُمْ يُرْجِحُ مِنْهُمْ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ
أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥٩﴾

সূরাঃ হাশ্বর মাদানী

(আয়াতঃ ২৪, রুক্বঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٤ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে, তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٥٩﴾

২. তিনিই আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কাফির তাদেরকে প্রথম সমাবেশেই তাদের আবাসভূমি হতে বিতাড়িত করেছিলেন। তোমরা কল্পনাও করনি যে, তারা নির্বাসিত

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۗ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا
أَنْهُمْ مَبْعُوثٌ لِحَافِهِمْ ۗ فَاتَّخَذْتُمُ اللَّهَ قَائِلَهُمْ ۗ

হবে এবং তারা মনে করেছিল যে, তাদের দুর্ভেদ্য দুর্গগুলো তাদেরকে রক্ষা করবে আল্লাহ হতে; কিন্তু আল্লাহ এমন এক দিক হতে তাদের উপর চড়াও হলেন যা ছিল তাদের ধারণাতীত এবং তিনি তাদের অন্তরে ত্রাসের সঞ্চার করলেন। তারা ধ্বংস করে ফেললো তাদের বাড়ী-ঘর নিজেদের হাতে এবং মু'মিনদের হাতেও; অতএব হে চক্ষুস্মান ব্যক্তিগণ! তোমরা উপদেশ গ্রহণ কর।

৩. আল্লাহ তাদের নির্বাসনের সিদ্ধান্ত গ্রহণ না করলে তাদেরকে পৃথিবীতে (অন্য) শাস্তি দিতেন; আর পরকালে তাদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের আযাব।

৪. এটা এজন্যে যে, তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ করেছিল, এবং কেউ আল্লাহর বিরুদ্ধাচরণ করলে আল্লাহ তো শাস্তি দানে কঠোর।

৫. তোমরা যে খেজুর বৃক্ষগুলো কেটেছো এবং যেগুলো কাভের উপর স্থির রেখে দিয়েছো, তা তো আল্লাহরই অনুমতিক্রমে; এটা এ জন্যে যে, আল্লাহ পাপাচারীদেরকে লাঞ্চিত করবেন।

৬. আল্লাহ তাদের (ইয়াহুদীদের) নিকট হতে যে ফায় (সম্পদ) তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে দিয়েছেন, তার জন্যে তোমরা ঘোড়া কিংবা উষ্ট্রে আরোহণ (করে যুদ্ধ) করনি; আল্লাহ তো যার উপর ইচ্ছা তাঁর

مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْسِبُوا وَقَدَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ
يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ
فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ①

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ النَّارِ ②

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ③ وَمَنْ
يُشَاقِقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ④

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَيْبَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى
أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْرِىَ الْفَاسِقِينَ ⑤

وَمَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ
مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ
عَلَى مَنْ يَشَاءُ ط وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑥

রাসূলদেরকে বিজয়ী দান করেন;
আল্লাহ্ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

৭. আল্লাহ্ এই জনপদবাসীদের নিকট হতে তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে যা কিছু দিয়েছেন, তা আল্লাহ্, তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর, (রাসূল (ﷺ)-এর) স্বজনগণের এবং ইয়াতীমদের, অভাবগ্রস্ত ও মুসাফিরদের, যাতে তোমাদের মধ্যে যারা বিত্তবান শুধু তাদের মধ্যেই ঐশ্বর্য আবর্তন না করে। রাসূল (ﷺ) তোমাদেরকে যা দেয় তা তোমরা গ্রহণ কর এবং যা হতে তোমাদেরকে নিষেধ করে তা হতে বিরত থাকো এবং তোমরা আল্লাহ্কে ভয় কর, আল্লাহ্ শাস্তি দানে কঠোর।

مَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَابْنِ
السَّبِيلِ ۚ كُنِيَ لَا يَكُونُ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ وَمِنْكُمْ ط
وَمَا اتَّكُمْ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ ۚ وَمَا نَهَكُمُ عَنْهُ
فَأَنْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ طِرَانًا اللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা লান'ত করেছেন ওসব নারীর ওপর, যারা (অন্যের) শরীরে (নাম বা চিহ্ন) অংকন করে এবং যারা নিজ শরীরে (অন্যের দ্বারা) অংকন করায়; যারা ললাট বা কপালের উপরস্থ চুল উপরিয়ে কপাল প্রশস্ত করে এবং সৌন্দর্যের জন্য (রেত ইত্যাদির সাহায্যে) দাঁত সরু ও (দু'দাঁতের মাঝে) ফাঁক সৃষ্টি করে। এসব নারী (এরূপে) আল্লাহ্‌র সৃষ্টির (আকৃতি) বিকৃত করে ফেলে।

অতঃপর বনী আসাদ গোত্রের উম্মে ইয়াকুব নামীয় এক মহিলা এই বর্ণনা শুনে [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর নিকট] আসলো এবং বললো, আমি জ্ঞানতে পেরেছি যে, আপনি এ ব্যাপারে লান'ত করেছেন। তিনি বললেন, আল্লাহ্‌র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যার ওপর লান'ত করেছেন আল্লাহ্‌র কিভাবে যার প্রতি লান'ত করা হয়েছে, তার ওপর আমি লান'ত করব না কেন? তখন মহিলাটি বললো, আমি তো কুরআন শরীফ শুরু থেকে শেষ পর্যন্ত পড়েছি, তাতে তো আপনি যা বলছেন, তা পেলাম না। আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, যদি তুমি (মনোযোগ দিয়ে) তা পড়তে তবে অবশ্যই পেতে। তুমি কি (কুরআনে) পড়নিঃ রাসূল তোমাদেরকে যা নির্দেশ দেন তা গ্রহণ করো আর যা থেকে বারণ করেন তা থেকে বিরত থাকো এবং আল্লাহ্কে ভয় করে চলো। মহিলাটি বললো, হ্যাঁ, নিশ্চয়ই। [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)] বললেন, অতঃপর অবশ্যই [রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)] ও থেকে নিষেধ করেছেন। তখন মহিলাটি বললো, আমার মনে হয়, আপনার বিবি ও তো ঐ কাজ করে। [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)] বললেন, তুমি (আমার ঘরে) যাও এবং ভালরূপে দেখেওনে এসো। অতঃপর মহিলাটি (তাঁর ঘরে) গেল এবং দেখে শুনে নিল; কিন্তু সে যে প্রয়োজনে গিয়েছিল, তার কিছুই দেখলো না। তখন [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)] বললেন, যদি আমার স্ত্রী ওরূপ কাজ করতো, তবে আমার সঙ্গে তার মিলন হতো না। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৮৬)

(খ) আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, যে নারী পর চূলা লাগায়, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তার ওপর লান'ত করেছেন। অতঃপর তিনি বললেন, আমি হাদীসটি এমন এক নারীর নিকট থেকে শুনেছি যাকে উম্মে ইয়াকুব বলা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৮৭)

৮. (এ সম্পদ) অভাবগ্রস্ত মুহাজির-দের জন্যে যারা নিজেদের ঘরবাড়ি ও সম্পত্তি হতে বহিস্কৃত হয়েছে। তারা আল্লাহর অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি কামনা করে এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সাহায্য করে। তারাই তো সত্যাবাদী।

৯. এবং মুহাজিরদের (আগমনের) পূর্বে যারা এ নগরীতে (মদীনায়ে) বসবাস করেছে ও ঈমান এনেছে তারা তাদেরকে (মুহাজিরদেরকে) ভালবাসে এবং মুহাজিরদেরকে যা দেয়া হয়েছে তার জন্যে তারা অন্তরে আকাজ্জিকা পোষণ করে না, আর তারা তাদেরকে নিজেদের উপর প্রাধান্য দেয় নিজেরা অভাবগ্রস্ত হলেও; যারা কার্পণ্য হতে নিজেদেরকে মুক্ত করেছে তারাই সফলকাম।

১০. যারা তাদের পরে এসেছে (পৃথিবীতে), তারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এবং আমাদের সেই সব ভাইকে ক্ষমা করুন যারা আমাদের পূর্বে ঈমান এনেছে এবং মু'মিনদের বিরুদ্ধে আমাদের অন্তরে হিংসা-বিদ্বেষ সৃষ্টি করবেন না। হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি তো দয়ালু, পরম দয়ালু।

১১. তুমি কি মুনাফিকদেরকে দেখিনি? তারা আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কুফরী করেছে তাদের ঐ সব সঙ্গীকে বলেঃ তোমরা যদি বহিস্কৃত হও, তবে আমরা অবশ্যই

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا
وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿٥﴾

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ
مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً
مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ
خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُقِيمُونَ ﴿٦﴾

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ
وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا
إِنَّكَ رءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَاقَبُوا يَقُولُونَ إِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ
مَعَكُمْ وَلَا نُنَاطِعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ

তোমাদের সাথে দেশত্যাগী হবো এবং আমরা তোমাদের ব্যাপারে কখনো কারো কথা মানবো না এবং যদি তোমরা আক্রান্ত হও তবে আমরা অবশ্যই তোমাদেরকে সাহায্য করবো; কিন্তু আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে, তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

১২. বস্তুতঃ তারা বহিস্কৃত হলে মুনাফিকরা তাদের সাথে দেশ ত্যাগ করবে না এবং তারা আক্রান্ত হলে তারা তাদেরকে সাহায্য করবে না এবং তারা সাহায্য করতে আসলেও অবশ্যই পৃষ্ঠ-প্রদর্শন করবে, অতঃপর তারা কোন সাহায্য প্রাপ্ত হবে না।

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُوهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلِّنَنَّ الْأَدْبَارَ عَنْهُمْ ۚ لَا يَنْصُرُونَ ۝

১৩. তাদের অন্তরে আল্লাহ অপেক্ষা তোমরাই অধিকতর ভয়ঙ্কর; এটা এই জন্যে যে, তারা এক নির্বোধ সম্প্রদায়।

لَا تَنْتُمُ أَشَدَّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِّنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

১৪. তারা সমবেতভাবে তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে না; কিন্তু শুধু সুরক্ষিত জনপদের অভ্যন্তরে অথবা দুর্গ-প্রাচীরের অন্তরালে থেকে; পরস্পরের মধ্যে তাদের লড়াই-ঝগড়া প্রচণ্ড। তুমি মনে কর তারা ঐক্যবদ্ধ; কিন্তু তাদের হৃদয় বিচ্ছিন্ন মিল নেই; এটা এই জন্যে যে, তারা এক নির্বোধ সম্প্রদায়।

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قَوْمٍ مَّحْضَنَةٍ ۚ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝

১৫. এরা তাদের ন্যায়, যারা নিকট অতীতে নিজেদের কৃত কর্মের পরিণাম আন্বাদন করেছে। আর তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاتُ أُولَىٰ وَأَبَالٍ ۚ أَمْرِهِمْ ۚ وَهُمْ عَدَاؤُا لِلَّيْمِ ۝

১৬. তাদের দৃষ্টান্ত শয়তানের মত—
যে মানুষকে বলেঃ কুফরী কর।
অতঃপর যখন সে কুফরী করে তখন
শয়তান বলেঃ তোমার সাথে আমার
কোন সম্পর্ক নেই, আমি জগত-
সমূহের প্রতিপালক আল্লাহকে ভয়
করি।

১৭. ফলে উভয়ের পরিণাম হবে
জাহান্নাম। সেখানে তারা স্থায়ী হবে
এবং এটাই যালিমদের কর্মফল।

১৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা
আল্লাহকে ভয় কর, প্রত্যেকেই ভেবে
দেখুক যে, আগামীকালের
(কিয়ামতের) জন্যে সে কি
পাঠিয়েছে। আর আল্লাহকে ভয় কর;
তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্পর্কে
সর্বাধিক জ্ঞাত।

১৯. আর তাদের মত হয়ো না যারা
আল্লাহকে (অনুস্মরণ করা) ভুলে
গেছে, ফলে আল্লাহ তাদেরকে
আত্মভুলা করেছেন। তারাই তো
পাপাচারী।

২০. জাহান্নামের অধিবাসী এবং
জান্নাতের অধিবাসী সমান নয়।
জান্নাতবাসীরাই সফলকাম।

২১. যদি আমি এই কুরআন পর্বতের
উপর অবতীর্ণ করতাম তবে তুমি
দেখতে যে, ওটা আল্লাহর ভয়ে
বিনীত ও বিদীর্ণ হয়ে গেছে। আমি
এসব দৃষ্টান্ত বর্ণনা করি মানুষের
জন্যে যাতে তারা চিন্তা করে।

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلنَّاسِ اكْفُرْ فَلَبَّأ كَفَرًا
قَالَ إِنِّي بِرِئِي مِنكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ
فِيهَا ط وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ
مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ
بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَهُمُ
أَنفُسَهُمْ ط أُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ط أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا
مُتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

১। জাবের ইবনে আবদুল্লাহ (রাযিআল্লাহ আনহ) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)
জুম'আর দিন একটি বৃক্ষ অথবা খেজুরের খুঁটির (রাবীর সন্দেহ) সাথে হেলান দিয়ে দাঁড়াতেন। একজন

২২. তিনিই আল্লাহ্, তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বুদ নেই, তিনি অদৃশ্য এবং দৃশ্যের সব কিছুই জানেন; তিনি দয়াময়, পরম দয়ালু।

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾

২৩. তিনিই আল্লাহ্, তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বুদ নেই। তিনিই অধিপতি, অতীব পবিত্র, পরিপূর্ণ শান্তিদাতা, নিরাপত্তা দানকারী, রক্ষক, পরাক্রমশালী, প্রবল, অতীব মহিমান্বিত, যারা তার শরীক স্থির করে আল্লাহ্ তা হতে পবিত্র, মহান।

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْبُنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. তিনিই আল্লাহ্ সৃজনকর্তা, উদ্ভাবন কর্তা, রূপদাতা, সকল উত্তম নাম তাঁরই। আকাশ ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে, সবই তাঁর মহিমা ঘোষণা করে। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾

আনসার মহিলা কিংবা কোন একটি লোক বলল, হে আল্লাহর রাসূল (সাদ্বাদ্বাহ আল্লাইহি ওয়াসাদ্বাহাম)! আমরা আপনার জন্য একটি মিথার তৈরি করব কি? তিনি বললেন, তোমাদের ইচ্ছা হলে (তৈরি) করতে পার। তখন তারা তাঁর জন্য একটি মিথার তৈরি করলো। জুম'আর দিন যখন নবী (সাদ্বাদ্বাহ আল্লাইহি ওয়াসাদ্বাহাম) মিথারে আরোহণ করলেন তখন খেজুরের খুঁটিটা বাচা ছেলের ন্যায় চিৎকার দিয়ে কাঁদতে শুরু করলো। [নবী (সাদ্বাদ্বাহ আল্লাইহি ওয়াসাদ্বাহাম) মিথার থেকে] নেমে এলেন এবং খুঁটিটাকে নিজের বুকের সাথে মিলালেন। বাচা ছেলেকে যেমন আদর করে পিঠ চাপড়ে কান্না থামানো হয় নবী (সাদ্বাদ্বাহ আল্লাইহি ওয়াসাদ্বাহাম)ও ঠিক তেমনি তার কান্না থামাবার জন্য তার গা চাপড়াতে লাগলেন। জাবের (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, এতদিন তার নিকট যেসব বীনের আলোচনা হতো তার কথা স্মরণ করেই খুঁটিটা কান্নাকাটি করছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৫৮৪)

সূরাঃ মুমতাহিনাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ১৩, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. হে মু'মিনগণ! আমার শত্রু ও তোমাদের শত্রুকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না; তোমরা কি তাদের সাথে বন্ধুত্ব করছো, অথচ তারা তোমাদের নিকট যে সত্য এসেছে, তার সাথে কুফরী করেছে, রাসূল (ﷺ)-কে এবং তোমাদেরকে বহিস্কৃত করেছে এ কারণে যে, তোমরা তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহকে বিশ্বাস কর। যদি তোমরা আমার সন্তুষ্টি লাভের জন্যে আমার পথে জিহাদের উদ্দেশ্যে বের হয়ে থাকো, তবে তোমরা তাদের সাথে গোপনে বন্ধুত্ব প্রতিষ্ঠা করো না, যেহেতু তোমরা যা গোপন কর এবং তোমরা যা প্রকাশ কর তা আমি সম্যক অবগত। তোমাদের যে এটা করে সে তো পথভ্রষ্ট হয় সরল পথ হতে।

২. যদি তারা তোমাদেরকে পেয়ে যায় তারা হবে তোমাদের শত্রু এবং তারা স্বীয় হাত ও মুখ দ্বারা তোমাদের অনিষ্ট সাধন করবে এবং চাইবে যে, তোমরা কুফরী কর।

৩. তোমাদের আত্মীয়-স্বজন ও সন্তান-সন্ততি কিয়ামতের দিন কোন কাজে আসবে না। আল্লাহ তোমাদের মধ্যে ফায়সালা করে দিবেন; তোমরা যা কর তিনি সে সম্পর্কে মহা দ্রষ্টা।

سُورَةُ الْمُتَحَنِّةِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٣ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ
أَوْلِيَاءَ تَلْقَوْنَ إِلَيْهِمْ بِالْمُؤَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا
جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ
أَنْ تُوْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ۗ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ جِهَادًا فِي
سَبِيلِي وَاتَّبَعَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُؤَدَّةِ ۗ
وَإِنَّا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۗ وَمَنْ يَفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ①

إِنْ يَتَّقُواكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَسْطُورُوا
إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْنُنَتَهُم بِالسُّوءِ وَوَدُّوا
لَوْ كَفَرُوا ۗ ①

لَنْ تَنفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

৪. তোমাদের জন্যে ইবরাহীম (عليه السلام) ও তার অনুসারীদের মধ্যে রয়েছে উত্তম আদর্শ; তাঁরা তাদের সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমাদের সঙ্গে এবং তোমরা আল্লাহ্র পরিবর্তে যার ইবাদত কর তার সঙ্গে আমাদের কোন সম্পর্ক নেই; আমরা তোমাদের সাথে কুফরী করি। তোমাদের ও আমাদের মধ্যে সৃষ্টি হলো শত্রুতা ও বিদেহ চিরকালের জন্যে, যখন পর্যন্ত তোমরা এক আল্লাহয় ঈমান না আন। তবে ব্যতিক্রম তাঁর পিতার প্রতি ইবরাহীম (عليه السلام)-এর উক্তিঃ “আমি নিশ্চয়ই তোমার জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবো এবং তোমার ব্যাপারে আমি আল্লাহ্র নিকট কোন অধিকার রাখি না।” (ইবরাহীম عليه السلام ও তার অনুসারীগণ বলেছিলেনঃ) হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা তো আপনারই উপর নির্ভর করেছি, আপনারই অভিমুখী হয়েছি এবং প্রত্যাবর্তন তো আপনারই নিকট।

৫. হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে কাফিরদের জন্যে পরীক্ষার বস্তুতে পরিণত করবেন না, হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে ক্ষমা করুন! আপনি তো পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

৬. তোমরা যারা আল্লাহ্ (এর সাথে সাক্ষাতের) ও আখিরাতের প্রত্যাশা কর, নিশ্চয়ই তাদের জন্যে রয়েছে উত্তম আদর্শ তাদের মধ্যে। কেউ মুখ ফিরিয়ে নিলে সে জেনে রাখুক যে, আল্লাহ্ তো অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَّاءُ
مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ زَكَّرْنَا
بِكُمْ وَبَدَأ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةَ وَالْبُغْضَاءَ
أَبَدًا حَتَّى تُوْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَّثَهُ الْإِقْوَالِ إِبْرَاهِيمَ
لَأَبِيهِ أَلا تَسْتَعْفِفُونَ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنْبَأْنَا
وَإِلَيْكَ الْبَصِيرُ ①

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفِرْ لَنَا
رَبَّنَا ② إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ
يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْعَلِيُّ الْحَمِيدُ ④

৭. যাদের সাথে তোমাদের শত্রুতা রয়েছে সম্ভবতঃ আল্লাহ্ তাদের ও তোমাদের মধ্যে বন্ধুত্ব সৃষ্টি করে দিবেন; আল্লাহ্ সর্বশক্তিমান এবং আল্লাহ্ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৮. দ্বীনের ব্যাপারে যারা তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করেনি এবং তোমাদেরকে স্বদেশ হতে বহিস্কার করেনি তাদের প্রতি সদ্যবহার ও ন্যায় বিচার করতে আল্লাহ্ তোমাদেরকে নিষেধ করেন না। আল্লাহ্ তো ন্যায়-পরায়ণদেরকে ভালবাসেন।

৯. আল্লাহ্ শুধু তাদের সাথে বন্ধুত্ব করতে নিষেধ করেন যারা দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের সাথে যুদ্ধ করেছে, তোমাদেরকে স্বদেশ হতে বহিস্কার করেছে এবং তোমাদেরকে বহিস্কারে সাহায্য করেছে। সুতরাং তাদের সাথে যারা বন্ধুত্ব করে তারা তো অত্যাচারী।

১০. হে মু'মিনগণ! তোমাদের নিকট মু'মিন নারীরা হিজরত করে আসলে তোমরা তাদেরকে পরীক্ষা করা, আল্লাহ্ তাদের ঈমান সম্বন্ধে সম্যক অবগত আছেন। যদি তোমরা জানতে পার যে, তারা মু'মিন তবে তাদেরকে কাফিরদের নিকট ফেরত পাঠিয়ে দিয়ো না। মু'মিন নারীরা কাফিরদের জন্যে বৈধ নয় এবং কাফিররা মু'মিন নারীদের জন্যে বৈধ নয়। কাফিররা যা ব্যয় করেছে তা তাদেরকে ফিরিয়ে দিবে। অতঃপর তোমরা তাদেরকে বিয়ে করলে

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً ط وَاللَّهُ قَدِيرٌ ط وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ①

لَا يَنْهَى اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَنُقِطَ إِلَيْهِمْ ط إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ①

إِنَّمَا يَنْهَى اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوهُمْ ① وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ مِنْهُنَّ فَامْتَحِنُوهُنَّ ط اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ① فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حِلٌّ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ط وَأَتَوْهُنَّ مِمَّا أَنْفَقُوا ط وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجْرَهُنَّ ط وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكُوفِرِ وَسَلُّوا مِمَّا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ أَنْفِقُوا ط ذَلِكَ حُكْمُ اللَّهِ ط يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ

তোমাদের কোন অপরাধ হবে না যদি তোমরা তাদেরকে তাদের মহর দিয়ে দাও। তোমরা কাফির নারীদের সাথে বৈবাহিক সম্পর্ক (যা পূর্বে ছিল) বজায় রেখো না। তোমরা যা ব্যয় করেছো তা ফেরত চাইবে এবং কাফিররা ফেরত চাইবে যা তারা ব্যয় করেছে। এটাই আল্লাহর বিধান; তিনি তোমাদের মধ্যে ফায়সালা করে থাকেন। আল্লাহ্ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

১১. তোমাদের স্ত্রীদের মধ্যে যদি কেউ কাফিরদের নিকট চলে যায় এবং তোমাদের যদি প্রতিশোধ নেওয়ার কোন সুযোগ আসে তখন যাদের স্ত্রীরা চলে গেছে তাদেরকে, তারা যা ব্যয় করেছে তার সমপরিমাণ অর্থ প্রদান করবে, ভয় কর আল্লাহ্কে যাঁর প্রতি তোমরা বিশ্বাসী।

১২. হে নবী (ﷺ)! মু'মিন নারীরা যখন তোমার নিকট এসে বায়'আত করে এই মর্মে যে, তারা আল্লাহর সাথে কোন শরীক স্থির করবে না, চুরি করবে না, ব্যভিচার করবে না, নিজেদের সন্তানদের হত্যা করবে না, তারা সজ্ঞানে কোন অপবাদ রচনা করে রটাবে না এবং সংকার্কে তোমাকে অমান্য করবে না তখন তাদের বায়'আত গ্রহণ করো এবং তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করো। আল্লাহ্ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

حَكِيمٌ ⑩

وَأِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَأَقِبْتُمْ فَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ
مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا ط وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ
مُؤْمِنُونَ ⑩

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يَبَايِعْنَكَ عَلَى
أَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا
يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ
يُفْتَرِيْنَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ
فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ ط
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑩

১৩. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ যে সম্প্রদায়ের প্রতি অসন্তুষ্ট তোমরা তাদের সাথে বন্ধুত্ব করো না, তারা তো পরকাল সম্পর্কে হতাশ হয়ে পড়েছে যেমন হতাশ হয়েছে কাফিররা কবরবাসীদের বিষয়ে।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا خُذِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
قَدَیْسُوا مِنَ الْاُخْرٰۤی كَمَا یَدَیْسُ الْكٰفِرُ مِنَ
اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ۝۱۳

সূরাঃ সাফ্ফ, মাদানী

(আয়াতঃ ১৪, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ

اٰیٰتُهَا ۱۴ رُكُوْعَاتُهَا ۲

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সমস্তই আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۗ وَهُوَ
الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ①

২. হে মু'মিনগণ! তোমরা যা কর না তা তোমরা কেন বল?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ①

৩. তোমরা যা কর না তোমাদের তা বলা আল্লাহর নিকট অতিশয় অসন্তোষজনক।

كَبْرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُولُوْا مَا لَا تَفْعَلُونَ ②

৪. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে সারিবদ্ধভাবে শীশা ঢালা সুদৃঢ় প্রাচীরের মত, আল্লাহ তাদেরকে ভালবাসেন।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِيْلِهِ صَفًّا
كَانَهُمْ بُنْيَانًا مُّرْصُوْسًا ③

১। আবু সাঈদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করা হলঃ হে আল্লাহর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)! সবচেয়ে ভাল মানুষ কে? রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, যে মুমিন আল্লাহর পথে তাঁর জীবন ও সম্পদ দিয়ে জিহাদ করে। লোকেরা বলল, এরপর কে? তিনি বললেন, যে ব্যক্তি আল্লাহকে ভয় করে এবং নিজের অনিষ্টকারিতা থেকে মানুষকে নিষ্কৃতি দেয়ার জন্য পাহাড়ের কোন নির্জন গুহায় অবস্থান করে। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৮৬)

৫. (স্মরণ কর), মূসা (ﷺ) তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আমাকে কেন কষ্ট দিচ্ছ যখন তোমরা জান যে, আমি তোমাদের নিকট আল্লাহর রাসূল! অতঃপর তারা যখন বক্রপথ অবলম্বন করলো তখন আল্লাহ তাদের হৃদয়কে বক্র করে দিলেন। আল্লাহ ফাসেক সম্প্রদায়কে হিদায়াত করেন না।

৬. (স্মরণ কর) মারইয়াম পুত্র ঈসা (ﷺ) বলেছিলেনঃ হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদের নিকট আল্লাহর রাসূল এবং আমার পূর্বে হতে তোমাদের নিকট যে তাওরাত রয়েছে আমি তার সত্যায়নকারী এবং আমার পরে আহমাদ (ﷺ) নামে যে রাসূল আসবেন আমি তাঁর সুসংবাদদাতা। পরে তিনি যখন স্পষ্ট নিদর্শনাবলীসহ তাদের নিকট আসলেন তখন তারা বলতে লাগলোঃ এটা তো এক স্পষ্ট যাদু।^১

৭. অথচ তাকে ইসলামের দিকে আহ্বান করা হয়, যে ব্যক্তি আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা রচনা করে তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? আল্লাহ যালিম সম্প্রদায়কে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

৮. তারা আল্লাহর নূর (শরীয়ত) তাদের মুখ দিয়ে নিভিয়ে দিতে চায়;

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ لِمَ تُوذُّونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑤

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑥

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑦

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ সেই মহান সত্তার শপথ যাঁর হাতের মুঠোর আমার প্রাণ! অচিরেই ইবনে মারইয়াম ঈসা (ﷺ) ন্যায়বান শাসক হয়ে তোমাদের মাঝে অবতরণ করবেন। তিনি ত্রুশ ভেঙে ফেলবেন, শূকর হত্যা করে ফেলবেন এবং জিয়ুয়া উঠিয়ে দিবেন। আর সম্পদের প্রাচুর্য এত বেশি হবে যে, কেউই তা (দান) গ্রহণ করতে চাইবে না। (বুখারী, হাদীস নং ২২২২)

কিন্তু আল্লাহ তাঁর নূর পূর্ণরূপে প্রকাশকারী যদিও কাফিররা তা অপছন্দ করে।

৯. তিনিই তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে প্রেরণ করেছেন হিদায়েত এবং সত্য দ্বীনসহ সকল দ্বীনের উপর ওকে বিজয়ী করার জন্যে, যদিও মুশরিকরা তা অপছন্দ করে।

১০. হে মু'মিনগণ! আমি কি তোমাদেরকে এমন এক বাণিজ্যের সন্ধান দিবো যা তোমাদেরকে রক্ষা করবে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হতে?

১১. (তা এই যে) তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) এ বিশ্বাস স্থাপন করবে এবং তোমাদের ধন-সম্পদ ও জীবন দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করবে। এটাই তোমাদের জন্যে শ্রেষ্ঠতম যদি তোমরা জানতে!

১২. (আল্লাহ) তোমাদের পাপরাশি ক্ষমা করে দিবেন এবং তোমাদেরকে প্রবেশ করাবেন এমন জান্নাতে যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত এবং স্থায়ী জান্নাতের উত্তম বাসগৃহ। এটাই মহা সাফল্য।

১৩. আরোও তিনি দান করবেন যা তোমরা পছন্দ কর— আল্লাহর সাহায্য ও আসন্ন বিজয়, মু'মিনদেরকে এর সুসংবাদ দাও।

১৪. হে মু'মিনগণ! আল্লাহর দ্বীনের সাহায্যকারী হও, যেমন মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليها السلام) বলেছিলেন হাওয়ারীদের উদ্দেশ্যে আল্লাহর পথে কে আমার সাহায্যকারী হবে? হাওয়ারীগণ বলেছিল: আমরাই তো

نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٩﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۗ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿١٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ﴿١١﴾

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۗ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٢﴾

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۗ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾

وَ أُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۗ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَ بَشِيرٍ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِحَوَارِيِّنَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۗ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ

আল্লাহর পথে সাহায্যকারী। অতঃপর বানী ইসরাঈলের একদল ঈমান আনলো এবং একদল কুফরী করলো। পরে আমি মু'মিনদেরকে শক্তিশালী করলাম তাদের শত্রুদের মুকাবিলায়; ফলে তারা বিজয়ী হলো।

فَأَمَّتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرْتُ
طَّائِفَةٌ ؕ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ
عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ٤

সূরাঃ জুম'আহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ১১, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ١١ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে আল্লাহর, যিনি মহা অধিপতি, মহা পবিত্র, পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

يَسْبِغُ لَكُمْ فِي الْمَالِ الْغَنَىٰ وَأَلْبَسَكُمْ
لِجُزْءِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن مِّنْهُ لِيَأْتِ
الْمَدِينُ بِالسَّلَامِ وَأَنبِئْهُم بِ
آيَاتِنَا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ١

২. তিনিই উম্মীদের (নিরক্ষর জাতির) মধ্যে তাদের একজনকে পাঠিয়েছেন রাসূলরূপে, যিনি তাদের নিকট আবৃত্তি করেন তাঁর আয়াতসমূহ, তাদেরকে পবিত্র করেন এবং শিক্ষা দেন কিতাব ও হিকমত (সুনাত); যদিও ইতিপূর্বে তারা ছিল স্পষ্ট গোমরাহীতে।

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو
عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ٢

৩. আর তাদের অন্যান্যের জন্যেও যারা এখনো তাদের সাথে মিলিত হয়নি। আল্লাহ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ
يُؤْتِيهِم مِّنْهُم مَّا يَشَاءُونَ
وَيُزَكِّيهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ٣

৪. এটা আল্লাহ্রই অনুগ্রহ, যাকে ইচ্ছা তিনি এটা দান করেন। আল্লাহ তো মহা অনুগ্রহশীল।

ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ
وَإِنَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ④

৫. যাদেরকে তাওরাতের দায়িত্বভার অর্পণ করা হয়েছিল, অতঃপর তা তারা বহন করেনি, তাদের দৃষ্টান্ত কিতাবসমূহ বহনকারী গাধার ন্যায়। কত নিকৃষ্ট সেই সম্প্রদায়ের দৃষ্টান্ত যারা আল্লাহ্র আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, আল্লাহ্ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

مَثَلُ الَّذِينَ حَبَلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ
الْجَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا طِبْسٌ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑤

৬. বলঃ হে ইয়াহুদীগণ! যদি তোমরা মনে কর যে, তোমরাই আল্লাহ্র বন্ধু, অন্য কোন মানুষ নয়; তবে তোমরা মৃত্যু কামনা কর যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنكُمْ أَوْلِيَاءُ
لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ⑥

৭. কিন্তু তারা তাদের হস্ত যা পূর্বে প্রেরণ করেছে তার কারণে কখনো মৃত্যু কামনা করবে না। আল্লাহ্ যালিমদের সম্পর্কে সম্যক অবগত।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهَا أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ
وَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ⑦

৮. বলঃ তোমরা যে মৃত্যু হতে পলায়ন কর সেই মৃত্যু তোমাদের অবশ্যই মুখোমুখি হবে। অতঃপর তোমাদেরকে হাজির করা হবে অদৃশ্য ও দৃশ্যের পরিজ্ঞাতা আল্লাহ্র নিকট এবং তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দিবেন যা তোমরা করতে।

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ
مُلقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ
وَاللَّهِ آدِةٌ فَيَنْبِئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑧

৯. হে মু'মিনগণ! জুম'আহ্‌র দিনে যখন নামাযের জন্যে আহ্বান (আযান) করা হবে তখন তোমরা আল্লাহ্র স্মরণে ধাবিত হও এবং ক্রয়-বিক্রয় ত্যাগ কর, এটাই

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ
الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ط
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑨

তোমাদের জন্যে শ্রেয় যদি তোমরা
উপলব্ধি কর।

১০. নামায সমাপ্ত হলে তোমরা
পৃথিবীতে ছড়িয়ে পড়বে এবং
আল্লাহর অনুগ্রহ সন্ধান করবে ও
আল্লাহকে অধিক স্মরণ করবে যাতে
তোমরা সফলকাম হও।

১১. যখন তারা কোন ক্রয়-বিক্রয় বা
খেল-তামাশা দেখে তখন তারা
তোমাকে দাঁড়ানো অবস্থায় রেখে
সেদিকে ছুটে যায়। বলঃ আল্লাহর
নিকট যা আছে তা খেল-তামাশা ও
ক্রয়-বিক্রয় অপেক্ষা উৎকৃষ্ট। আল্লাহ
সর্বশ্রেষ্ঠ বিধিকদাতা।

সূরাঃ মুনাফিকুন, মাদানী

(আয়াতঃ ১১, বুকুঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. যখন মুনাফিকরা তোমার নিকট
আসে তখন তারা বলেঃ আমরা
সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আপনি নিশ্চয়ই
আল্লাহর রাসূল। আল্লাহ জানেন যে,
তুমি নিশ্চয়ই তাঁর রাসূল এবং আল্লাহ
সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে, মুনাফিকরা
অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

২. তারা তাদের শপথগুলোকে
ঢালরূপে ব্যবহার করে, আর তারা
আল্লাহর পথ হতে (মানুষকে)
প্রতিহত করে। তারা যা করছে তা
কত মন্দ!

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ
وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُوا إِلَيْهَا
وَتَرَكُوا قَائِلًا ط قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّن
اللَّهِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ط وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١﴾

سُورَةُ الْمُنْفِقُونَ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ١١ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَكَ الْمُنْفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ
وَ اللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ط وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ
الْمُنْفِقِينَ لَكَاذِبُونَ ﴿١﴾

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ

اللَّهِ ط إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢﴾

৩. এটা এজন্যে যে, তারা ঈমান আনার পর কুফরী করেছে, ফলে তাদের হৃদয়ে মোহর মেরে দেয়া হয়েছে। অতএব তারা কিছুই বুঝে না।

৪. তুমি যখন তাদেরকে দেখবে তখন তাদের দেহাকৃতি তোমার নিকট প্রীতিকর মনে হয় এবং তারা যখন কথা বলে তখন তুমি (সাম্রহে) তাদের কথা শ্রবণ কর, যেন তারা দেয়ালে ঠেকানো কাঠের স্তম্ভ সদৃশ; তারা যে কোন বড় আওয়াজকে তাদেরই বিরুদ্ধে মনে করে। তাড়াই শত্রু, অতএব তাদের সম্পর্কে সতর্ক হও, আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করুন! বিভ্রান্ত হয়ে তারা কোথায় চলেছে?

৫. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা এসো, আল্লাহর রাসূল (ﷺ) তোমাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবেন, তখন তারা মাথা ফিরিয়ে নেয় এবং তুমি তাদেরকে দেখতে পাও যে, তারা অহংকার করতঃ ফিরে যায়।

৬. তুমি তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর অথবা না কর, উভয়ই তাদের জন্যে সমান। আল্লাহ তাদেরকে কখনো ক্ষমা করবেন না। আল্লাহ ফাসেক সম্প্রদায়কে হেদায়েত দান করেন না।

৭. ওরা তো তাড়াই যারা বলেঃ আল্লাহর রাসূল (ﷺ)-এর নিকট যারা, তাদের জন্যে ব্যয় করো না, যতক্ষণ তারা না সরে পড়ে। আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর ধন-ভান্ডার

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطَغَعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ⑤

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ط وَإِنْ يَقُولُوا
تَسْمِعُ لِقَوْلِهِمْ ط كَأَنَّهُمْ خُشْبٌ مُسْنَدَةٌ ط
يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ط هُمُ الْعَدُوُّ
فَأَحْذَرُهِمْ ط قَتَلَهُمُ اللَّهُ ذَاتِي يَوْمِكُونِ ⑥

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ
لَوَّا بِهِمْ وَوَجَّهُوهُمُ وَأَوَّيَّهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ⑦

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ط
لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ⑧

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ
رَسُولِ اللَّهِ حَتَّى يَنْفَضُوا ط وَ لِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ⑨

তো আল্লাহরই; কিন্তু মুনাফিকরা তা বুঝে না।

৮. তারা বলেঃ আমরা যদি মদীনায় প্রত্যাবর্তন করি, তবে সেখান হতে সম্মানিতরা হীনদেরকে বহিস্কার করবে; কিন্তু মান-সম্মান তো আল্লাহরই আর তাঁর রাসূল (ﷺ) ও মু'মিনদের; কিন্তু মুনাফিকরা এটা জানে না।

৯. হে মু'মিনগণ! তোমাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি যেন তোমাদেরকে আল্লাহর স্মরণ হতে উদাসীন না করে— যারা এমন করবে (উদাসীন হবে) তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

১০. আমি তোমাদেরকে যে রিষিক দিয়েছি তোমরা তা হতে ব্যয় করবে তোমাদের কারো মৃত্যু আসার পূর্বে; (অন্যথায় মৃত্যু আসলে সে বলবে,) হে আমার প্রতিপালক! আমাকে আরো কিছু কালের জন্যে কেন অবকাশ দাও না, দিলে আমি সাদকা করতাম এবং সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত হতাম!²

১১. নির্ধারিত কাল যখন উপস্থিত হবে, তখন আল্লাহ্ কাউকেও অবকাশ দিবেন না। তোমরা যা কর আল্লাহ্ সে সম্বন্ধে সবিশেষ অবহিত।

يَقُولُونَ لِنَنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ
الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ط وَ لِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَ لَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا
أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ①

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ
أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولُ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ
أَجَلٍ قَرِيبٍ لِفَاصِّدَقٍ وَأَلَّنْ مِنَ الضَّالِّجِينَ ①

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ط
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ①

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ প্রতিদিন প্রত্যুষে যখন (আল্লাহর) বান্দারা ঘুম থেকে ওঠে তখন দু'জন ফেরেশতা আসমান থেকে নেমে আসে। তাদের একজন বলতে থাকে, হে আল্লাহ্! দাতাকে পুরস্কৃত কর এবং অপরজন বলতে থাকে, হে আল্লাহ্! কৃপণকে ধ্বংস কর। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৪২)

সূরাঃ তাগাবুন, মাদানী

(আয়াতঃ ১৮, রুকূঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٨ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে, কর্তৃত্ব তাঁরই এবং সমস্ত প্রশংসা তাঁরই, তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

يَسْبِغُ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

২. তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাদের মধ্যে কেউ হয় কাফির এবং কেউ মু'মিন। তোমরা যা কর আল্লাহ তার সম্যক দৃষ্টি।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

৩. তিনি সৃষ্টি করেছেন আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী যথাযথভাবে এবং তোমাদেরকে আকৃতি দান করেছেন, আর তোমাদের আকৃতি করেছেন অতি সুন্দর, আর প্রত্যাবর্তন তো তাঁরই দিকে।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۗ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۗ وَاللَّهُ الْمَبْصِيرُ ②

৪. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তিনি জানেন এবং তিনি জানেন তোমরা যা গোপন কর ও তোমরা যা প্রকাশ কর এবং আল্লাহ অন্তর্যামী।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرَوْنَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۖ بِذَاتِ الصُّدُورِ ③

৫. তোমাদের নিকট কি পৌঁছেনি পূর্ববর্তী কাফিরদের খবর? তারা তাদের কর্মের মন্দফল আন্বাদন করেছিল এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ ۖ قَدِ افْتَوَىٰ بآلِ أَمْرِهِمْ وَإِلَهُمُ عَدَابُ الْيَوْمِ ④

৬. তা এজন্যে যে, তাদের নিকট তাদের রাসূলগণ স্পষ্ট নিদর্শনাবলীসহ আসতেন তখন তারা বলতোঃ মানুষই কি আমাদেরকে পথের সন্ধান দিবে? অতঃপর তারা কুফরী করলো ও মুখ ফিরিয়ে নিলো; কিন্তু আল্লাহর কিছু যায় আসে না। আর আল্লাহ তো অভাবমুক্তই, অতি প্রশংসিত।

৭. কাফিররা ধারণা করে যে, তারা কখনো পুনরুত্থিত হবে না। বলঃ নিশ্চয়ই হবে, আমার প্রতিপালকের শপথ! তোমরা অবশ্যই পুনরুত্থিত হবে। অতঃপর তোমরা যা করতে তোমাদেরকে সে সম্বন্ধে অবশ্যই অবহিত করা হবে। এটা আল্লাহর পক্ষে অতি সহজ।

৮. অতএব তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল এবং যে জ্যোতি আমি অবতীর্ণ করেছি তাতে বিশ্বাস স্থাপন কর। তোমাদের কৃতকর্ম সম্পর্কে আল্লাহ সবিশেষ অবহিত।

৯. (স্মরণ কর,) যেদিন তিনি তোমাদেরকে সমবেত করবেন সমাবেশ দিবসে সেদিন হবে লাভ লোকসানের দিন। যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস করে ও সৎকর্ম করে তিনি তার পাপরাশি মোচন করবেন এবং তাকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা হবে চিরস্থায়ী। এটাই মহা সাফল্য।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُ كَانَتْ تَاْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَقَالُوْا اَبَشْرٌ يَّهْدُوْنَنا ۚ فَكَفَرُوْا وَكَوَّبُوْا
وَاسْتَغْنٰى اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝۱

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا قُلٌۢ بَلٰى
وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّوْنَ بِمَا عَمِلْتُمْ ۗ
وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝۲

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ ۗ وَالنُّوْرَ الَّذِيْ
اَنْزَلْنَا ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝۳

يَوْمَ يَجْعَلُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ
وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صٰلِحًا يُكْفِرْ عَنّٰهُ
سَيِّئَاتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنَّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۴

১০. কিন্তু যারা কুফরী করে এবং আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা স্থায়ী হবে। কত মন্দ ঐ প্রত্যাবর্তন স্থল!

১১. আল্লাহর অনুমতি ব্যতীত কোন বিপদই আপতিত হয় না এবং যে আল্লাহকে বিশ্বাস করে তিনি তার অন্তরকে সুপথে পরিচালিত করেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

১২. তোমরা আল্লাহর আনুগত্য কর এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর, যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তবে আমার রাসূলের দায়িত্ব শুধু স্পষ্টভাবে প্রচার করা।

১৩. আল্লাহ্, তিনি ব্যতীত কোন (সত্য) মা'বুদ নেই; সুতরাং মু'মিনরা যেন আল্লাহর উপরই নির্ভর করে।

১৪. হে মু'মিনগণ! তোমাদের স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততিদের মধ্যে কেউ কেউ তোমাদের স্ত্র, অতএব তাদের সম্পর্কে তোমরা সতর্ক থেকে। তোমরা যদি তাদেরকে মার্জনা কর, তাদের দোষ-ত্রুটি উপেক্ষা কর এবং তাদেরকে ক্ষমা কর, তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহ্ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

১৫. তোমাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি তো তোমাদের জন্যে পরীক্ষা; আল্লাহ্রই নিকট রয়েছে মহা প্রতিদান।

১৬. তোমরা আল্লাহকে যথাসাধ্য ভয় কর, শুন, আনুগত্য কর ও ব্যয় কর

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَسَاءَ الْمَصِيرُ ۝

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِرْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَّغُ الْمُبِينُ ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمِنْ أَنْزَلْنَاكُمْ وَأَوْلَادَكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۗ وَاللَّهُ عِنْدَآ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْأِعُوا وَأَطِيعُوا

তোমাদের নিজেদেরই কল্যাণে, যারা অন্তরের কার্পণ্য হতে মুক্ত, তারাই সফলকাম।

১৭. যদি তোমরা আল্লাহকে উত্তম ঋণ দান কর তবে তিনি তোমাদের জন্যে এটা বহু গুণ বৃদ্ধি করবেন এবং তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন। আল্লাহ্ গুণগ্রাহী, সহনশীল।

১৮. তিনি দৃশ্য ও অদৃশ্যের পরিজ্ঞাতা, পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ط وَمَنْ يُوقِ شُحَّ
نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٧﴾

إِنْ تَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضْعِفُهُ لَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ط وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٨﴾

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

সূরাঃ তালাক, মাদানী

(আয়াতঃ ১২, রুকুঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٢ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. হে নবী (ﷺ)! তোমরা যখন তোমাদের স্ত্রীদেরকে তালাক দিতে ইচ্ছা কর তবে তাদেরকে তালাক দিয়ে ইন্দতের প্রতি লক্ষ্য রেখে, ইন্দতের হিসাব রেখো^১ এবং তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহকে ভয় করো; তোমরা তাদেরকে তাদের

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ
لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۚ
لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا
أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ ط وَتِلْكَ

১। আবদুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর জীবদ্দশায় তিনি তাঁর ঋতুবতী স্ত্রীকে তালাক দিলে উমর ইবনুল খাতাব রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে এ বিষয়ে জিজ্ঞেস করলেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ তাকে (তোমার পুত্রকে) বলো সে যেনো তার স্ত্রী 'রুকু' করে (ফিরিয়ে নেয়) এবং 'তুহর' বা ঋতু থেকে পবিত্র হওয়া পর্যন্ত এবং তারপর ঋতুবতী হয়ে (পুনরায়) পাক না হওয়া পর্যন্ত স্ত্রী হিসেবেই রেখে দেয়। অতঃপর ইচ্ছা করলে তাকে রাখবে অন্যথায় যৌন-মিলন না করে তালাক দেবে। এভাবে ইন্দত পালনের সুযোগ রেখে আল্লাহ্ তা'আলা স্ত্রীদেরকে তালাক দিতে আদেশ করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৫১)

বাসগৃহ হতে বের করে দিও না এবং তারাও যেন বের না হয়, যদি না তারা লিগু হয় স্পষ্ট অশ্লীলতায়; এগুলো আল্লাহর বিধান; যে আল্লাহর বিধান লঙ্ঘন করে সে নিজেরই উপর যুলুম করে। তুমি জান না, হয়তো আল্লাহ এর পর কোন উপায় বের করে দিবেন।

২. যখন তারা তাদের ইদতে পৌঁছে যায় তখন তোমরা হয় যথাবিধি তাদেরকে রেখে দিবে না হয় তাদেরকে যথাবিধি বিচ্ছিন্ন করে দিবে এবং তোমাদের মধ্য হতে দুই জন ন্যায়পরায়ণ লোককে সাক্ষী রাখবে; তোমরা আল্লাহর জন্যে সঠিক সাক্ষ্য দিয়ো। এটা দ্বারা তোমাদের মধ্যে যে আল্লাহ ও আখিরাতে বিশ্বাস করে তাকে উপদেশ দেয়া হচ্ছে। যে আল্লাহকে ভয় করে আল্লাহ তার পথ করে দিবেন।

৩. আর তাকে তার ধারণাতীত উৎস হতে দান করবেন রিযিক; যে ব্যক্তি আল্লাহর উপর নির্ভর করে তার জন্যে আল্লাহই যথেষ্ট, আল্লাহ তাঁর ইচ্ছা পূরণ করবেনই, আল্লাহ সবকিছুর জন্যে স্থির করেছেন নির্দিষ্ট মাত্রা।

৪. তোমাদের যেসব স্ত্রীর ঋতুবতী হবার আশা নেই তাদের ইদত সম্পর্কে তোমরা সন্দেহ করলে তাদের ইদতকাল হবে তিন মাস এবং যাদের এখনো ঋতুকাল শুরু হয়নি তাদেরও (তিন মাস ইদত) পালন করবে এবং গর্ভবতী নারীদের

حُدُودَ اللَّهِ ط وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ط لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ①

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِّنكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ط ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ط وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ①

وَيَرْزُقْهُ مِمَّنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ط وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ط إِنَّ اللَّهَ بِالْبَالِغِ أَمْرِهِ ط قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ①

وَالَّذِي يَبْتَسِنُ مِنَ الْمَحِيضِ مِّن نِّسَائِكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ وَالَّذِي لَمْ يَحِضْنَ ط وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ط وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ

ইদতকাল সন্তান প্রসব পর্যন্ত।
আল্লাহকে যে ভয় করে আল্লাহ তার
কাজ-কর্ম সহজ করে দিবেন।

৫. এটা আল্লাহর বিধান যা তিনি
তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করেছেন;
আল্লাহকে যে ভয় করে তিনি তার
পাপরাশি মোচন করবেন এবং তাকে
দিবেন মহাপুরস্কার।

৬. তোমরা তোমাদের সামর্থ
অনুযায়ী যে স্থানে বাস কর তাদেরকে
সে স্থানে বাস করতে দিয়ে;
তাদেরকে কষ্ট দিওনা সংকটে
ফেলার জন্যে, তারা গর্ভবতী থাকলে
সন্তান প্রসব পর্যন্ত তাদের জন্যে ব্যয়
করবে, যদি তারা তোমাদের
সন্তানদেরকে স্তন্যদান করে তবে
তাদেরকে পারিশ্রমিক দিবে এবং
সন্তানের কল্যাণ সম্পর্কে তোমরা
সঙ্গতভাবে নিজেদের মধ্যে পরামর্শ
করবে; তোমরা যদি নিজ নিজ
দাবীতে অনমনীয় হও তাহলে অন্য
নারী তার পক্ষে স্তন্য দান করবে।

৭. সামর্থবান নিজ সামর্থ অনুযায়ী
ব্যয় করবে এবং যার জীবনোপকরণ
সীমিত সে আল্লাহ যা দান করেছেন
তা হতে ব্যয় করবে। আল্লাহ যাকে
যে সামর্থ্য দিয়েছেন তদপেক্ষা
অতিরিক্ত বোঝা তিনি তার উপর
চাপান না। আল্লাহ কষ্টের পর সহজ
করে দিবেন।

৮. কত জনপদ তাদের প্রতিপালকের
ও তাঁর রাসূলদের নির্দেশের
বিরুদ্ধাচারণ করেছিল দৃষ্টান্তে। ফলে
আমি তাদের নিকট হতে কঠোর

مِنْ أَمْرِهٖ يُسْرًا ⑥

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗ اِلَيْكُمْ ط وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ
يُكْفِرْ عَنْهٗ سَيِّئَاتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗ اَجْرًا ⑥

اَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وَّجْدِكُمْ
وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ط وَاِنْ كُنَّ
اُولٰٓئِكَ حَبِيْلًا فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ
حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاَتُوهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ
وَاْتِمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِسَعْرِوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعٰسَرْتُمْ
فَسَتَرْضَعُ لَهٗ اٰخَرٰى ⑦

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ط وَمَنْ قَدَرَ عَلَيْهِ
رِزْقُهٗ فَاَلْيُنْفِقْ مِمَّا اٰتاهُ اللّٰهُ ط لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ
نَفْسًا اِلَّا مَا اٰتٰهَا ط سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ⑥

وَكَآيِنٍ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ
فَاَحْسَبْنٰهَا حَسَابًا شَدِيْدًا ۗ وَعَدَّ بِنِهَا

হিসাব নিয়েছিলাম এবং তাদেরকে কঠিন আযাব দিয়েছিলাম।

عَدَابًا تَكْرَرًا ৯

৯. অতঃপর তারা তাদের কৃতকর্মের আযাব আশ্বাদন করলো; ক্ষতিই ছিল তাদের কর্মের পরিণাম।

فَدَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ১০

১০. আল্লাহ তাদের জন্যে কঠিন শাস্তি প্রস্তুত রেখেছেন। অতএব হে বোধ সম্পন্ন ব্যক্তিগণ! তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, যারা ঈমান এনেছো। নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করেছেন উপদেশ—

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۗ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ১১

১১. প্রেরণ করেছেন এমন এক রাসূল (ﷺ), যিনি তোমাদের নিকট আল্লাহর সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করেন, যারা মু'মিন ও সৎকর্মপরায়ণ তাদেরকে অন্ধকার হতে আলোকে আনার জন্যে। যে কেউ আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস করে ও সৎকর্ম করে তিনি তাকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে; আল্লাহ তাকে উত্তম রিযিক দিবেন।

رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ১২

১২. আল্লাহই সৃষ্টি করেছেন সত্ত্ব আকাশ এবং পৃথিবী ও গুগুলোর অনুরূপভাবে, গুগুলোর মধ্যে নেমে আসে তাঁর নির্দেশ; ফলে তোমরা বুঝতে পার যে, আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান এবং জ্ঞানে (দ্বারা) আল্লাহ সবকিছুকে পরিবেষ্টন করে রয়েছেন।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَ مِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ১৩

সূরাঃ তাহরীম, মাদানী

(আয়াতঃ ১২, রুকুঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ التَّحْرِيمِ مَدَانِيَّةٌ

آيَاتُهَا ۱۲ رُكُوعَاتُهَا ۲

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. হে নবী (ﷺ)! আল্লাহ তোমার জন্যে যা হালাল করেছেন তুমি তা হারাম করছো কেন? তুমি তোমার স্ত্রীদের সম্ভ্রুটি চাচ্ছ; আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۚ
تَبَتَّغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

২. আল্লাহ তোমাদের শপথ হতে মুক্তি লাভের ব্যবস্থা করেছেন, আল্লাহ তোমাদের সহায়; তিনি সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحْلَةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللَّهُ
مَوْلَاكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ①

৩. স্মরণ কর, নবী (ﷺ) তার স্ত্রীদের একজনকে গোপনে কিছু বলেছিলেন। অতঃপর যখন সে তা অন্যকে বলে দিয়েছিল এবং আল্লাহ নবী (ﷺ)-কে তা জানিয়ে দিয়েছিলেন, তখন নবী (ﷺ) এই বিষয়ে কিছু প্রকাশ করলেন এবং কিছু অব্যক্ত রাখলেন, যখন নবী (ﷺ) তা তাঁর সেই স্ত্রীকে জানালেন তখন সে বললঃ কে আপনাকে এটা অবহিত করলো? নবী বললেনঃ আমাকে অবহিত করেছেন তিনি যিনি সর্বজ্ঞ, সম্যক অবহিত।

وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا ۚ
فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ
بَعْضَهُ ۚ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّأَهَا
بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَذَا ۚ قَالَ نَبَّأَنِي
الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ①

৪. যদি তোমরা উভয়ে (অনুতপ্ত হয়ে) আল্লাহর দিকে প্রত্যাবর্তন কর, যেহেতু তোমাদের হৃদয় ঝুঁকে পড়েছে (তবে আল্লাহ তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন); কিন্তু তোমরা যদি নবী (ﷺ)-এর বিরুদ্ধে একে

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۚ
وَإِنْ تَظْهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ
وَجَنبُرِيٌّ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ

অপরের সাহায্য কর তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহ্ই তার বন্ধু এবং জিবরাঈল (عليه السلام) ও সংকর্মপরায়ণ মু'মিনগণও, উপরন্তু সমস্ত ফেরেশতাগণও তার সাহায্যকারী।

৫. যদি নবী (ﷺ) তোমাদের সকলকে পরিত্যাগ করেন তবে তাঁর প্রতিপালক দিতে পারেন তাঁকে তোমাদের অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর স্ত্রী-যারা হবে মুসলমান ঈমানদার, আনুগত্যকারিনী, তাওবা-কারিনী, ইবাদতকারিনী, রোযা পালনকারিনী, অকুমারী এবং কুমারী।

৬. হে মু'মিনগণ! তোমরা নিজেদেরকে এবং তোমাদের পরিবার পরিজনকে রক্ষা কর ঐ অগ্নি হতে, যার ইন্ধন হবে মানুষ ও পাথর, যাতে নিয়োজিত আছে নির্মম হৃদয়, কঠোর স্বভাব ফেরেশতাগণ, যারা অমান্য করে না আল্লাহ যা তাদেরকে আদেশ করেন তা এবং তাঁরা যা করতে আদিষ্ট হন তাই করেন।

৭. হে কাফিরগণ! আজ তোমরা কোন প্রকার অজুহাত দাঁড় করো না। তোমরা যে আমল করতে তোমাদেরকে তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর নিকট তাওবা কর একান্ত বিশুদ্ধ তাওবা; যাতে তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের মন্দ কর্মগুলোকে মোচন করে দেন এবং তোমাদেরকে প্রবেশ করান জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত। সেই দিন আল্লাহ নবী এবং তাঁর মু'মিন বান্দাদেরকে

بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ﴿٦٦﴾

عَسَىٰ رَبُّهُٓٓ إِن طَلَّقَكُنَّ أَن يُبَدِّلَهُٓٓ
أَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكَنَّ مَسْلُوبَاتٍ مِّنْهُنَّ
فَبَدَّلَ لِكُلِّ نَفْسٍ مِّنْهُنَّ مَا يَشَاءُ
وَأَبْكَرًا ﴿٦٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ
نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ
مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ
إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً
صَّوْحًا عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَن يَكْفُرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا

অপদস্ত করবেন না। তাদের নূর তাদের সম্মুখে ও ডান পার্শ্বে ধাবিত হবে, তাঁরা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের নূরকে পূর্ণতা দান করুন এবং আমাদেরকে ক্ষমা করুন, আপনি সর্ববিষয়ে ক্ষমতাবান।

৯. হে নবী (ﷺ)! কাফির ও মুনাফিকদের বিরুদ্ধে জিহাদ করুন এবং তাদের প্রতি কঠোর হন। তাদের আশ্রয়স্থল জাহান্নাম, ওটা কত নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তন স্থল!

১০. আল্লাহ কাফিরদের জন্যে নূহ (ﷺ) ও লূত (ﷺ)-এর স্ত্রীর দৃষ্টান্ত উপস্থিত করেছেন; তারা ছিল আমার বান্দাদের মধ্যে দুই সৎকর্মপরায়ণ বান্দার অধীন; কিন্তু তারা তাদের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করেছিল, ফলে নূহ (ﷺ) ও লূত (ﷺ) তাদেরকে আল্লাহর শাস্তি হতে রক্ষা করতে পারলেন না এবং তাদেরকে বলা হলোঃ জাহান্নামে প্রবেশকারীদের সাথে তোমরাও তাতে প্রবেশ কর।

১১. আল্লাহ মু'মিনদের জন্যে উপস্থিত করছেন ফিরআ'উন স্ত্রীর দৃষ্টান্ত, যিনি প্রার্থনা করেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনার নিকট জান্নাতে আমার জন্যে একটি গৃহ নির্মাণ করুন এবং আমাকে উদ্ধার করুন ফিরআ'উন ও তার দুষ্কৃতি হতে এবং আমাকে উদ্ধার করুন যালিম সম্প্রদায় হতে।

مَعَهُ ۚ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَ
بِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتَيْنَا لَنَا نُورًا
وَآغْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ
عَلَيْهِمْ ط وَاوَاهِبْهُمْ جَهَنَّمَ ط وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ①

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتِ نُوحٍ
وَ امْرَأَتِ لُوطٍ ط كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ
عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتُهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدَّٰخِلِينَ ①

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتِ
فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا
فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ
وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ①

১২. (আরো দৃষ্টান্ত দিচ্ছেন)
ইমরানের কন্যা মরিয়মের— যিনি
তাঁর সতীত্ব রক্ষা করেছিলেন, ফলে
আমি তাঁর মধ্যে আমার রুহ হতে
ফুঁকে দিয়েছিলাম এবং তিনি তাঁর
প্রতিপালকের বাণী ও তাঁর
কিতাবসমূহ সত্য বলে গ্রহণ
করেছিলেন; তিনি ছিলেন অনুগতদের
একজন।^১

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَدَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقَتْ
بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ لَهَا مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٢﴾

১। আবু মুসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, পুরুষদের মধ্যে বহুসংখ্যক লোক কামালিয়াত (পূর্ণতা) হাসিল করেছে; কিন্তু নারীদের মধ্যে ফির'আউনের স্ত্রী আসিয়া এবং ইমরানের কন্যা মারইয়াম ছাড়া আর কেউই পূর্ণতা অর্জনে সক্ষম হয়নি। তবে আয়েশার মর্যাদা সব নারীর ওপর এমন, যেমন সারীদের (শুরুয়া ও ঝোলে ভিজা রুটি) মর্যাদা সর্বপ্রকার খাদ্যের ওপর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪১১)

সূরাঃ মূলক, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩০, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. বরকতময় তিনি, যাঁর হাতে
সর্বময় কর্তৃত্ব; তিনি সব কিছুর উপর
ক্ষমতাবান।

২. তিনি মৃত্যু ও জীবন সৃষ্টি করেছেন
তোমাদেরকে পরীক্ষা করবার জন্য-
কে তোমাদের মধ্যে আমলের দিক
দিয়ে সর্বোত্তম। আর তিনি
পরাক্রমশালী, ক্ষমাশীল।

৩. তিনি সৃষ্টি করেছেন স্তরে স্তরে
সাতটি আকাশ। দয়াময় আল্লাহর
সৃষ্টিতে তুমি কোন খুঁত দেখতে পাবে
না; আবার তাকিয়ে দেখো, কোন
ক্রটি দেখতে পাও কি?

৪. অতঃপর তুমি দুই বার করে দৃষ্টি
ফিরাও, সেই দৃষ্টি ব্যর্থ ও ক্লান্ত হয়ে
তোমার দিকে ফিরে আসবে।

৫. আমি নিকটবর্তী আকাশকে
সুশোভিত করেছি প্রদীপমালা
(তারকারাজী) দ্বারা এবং ওগুলোকে
শয়তানদেরকে প্রহার করার উপকরণ
করেছি এবং তাদের জন্যে প্রস্তুত
রেখেছি জাহান্নামের আযাব।

৬. আর যারা তাদের প্রতিপালকের
সাথে কুফরী করে তাদের জন্যে
রয়েছে জাহান্নামের আযাব, ওটা কত
মন্দ প্রত্যাভর্তনস্থল!

৭. যখন তারা তাতে (জাহান্নামে)
নিষ্কিণ্ড হবে তখন তারা তার গর্জনের

سُورَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣٠ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبْرَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ

شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ

أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ②

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَا تَرَى فِي خَلْقِ

الرَّحْمَنِ مِنْ تَفْوُتٍ ط فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَى مِنْ

فُطُورٍ ③

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ

خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ④

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا

رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ⑤

وَالَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمٌ ط وَيَسْ

الْبَصِيرِ ⑥

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَعَوْا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورٌ ⑦

শব্দ শুনবে, আর ওটা টগবগ করে ফুটবে।

৮. অত্যাধিক ক্রোধে তা ফেটে পড়ার উপক্রম হবে, যখনই তাতে কোন দলকে নিষ্ক্ষেপ করা হবে, তাদেরকে রক্ষীরা জিজ্ঞেস করবে: তোমাদের নিকট কি কোন সতর্ককারী আসেনি?

৯. তারা উত্তরে বলবে, হ্যাঁ আমাদের নিকট সতর্ককারী এসেছিল, আমরা তাদেরকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলাম এবং বলেছিলাম: আল্লাহ কিছুই অবতীর্ণ করেনি, তোমরা তো গুমরাহীতে রয়েছো।

১০. এবং তারা আরো বলবে: যদি আমরা গুনতাম অথবা বিবেক-বুদ্ধি দিয়ে অনুধাবন করতাম, তবে আমরা জাহান্নামবাসী হতাম না।

১১. অতঃপর তারা তাদের অপরাধ স্বীকার করবে। সুতরাং অভিশাপ জাহান্নামবাসীদের জন্যে!

১২. যারা না দেখেও তাদের প্রতিপালককে ভয় করে তাদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা ও মহাপুরস্কার।

১৩. তোমরা তোমাদের কথা চুপে চুপে বল অথবা উচ্চস্বর বল, তিনি তো অন্তরের গোপনীয়তা সম্পর্কেই সর্বজ্ঞ।

১৪. যিনি সৃষ্টি করেছেন, তিনিই কি জানেন না? তিনি সৃষ্টিদর্শী, ভালোভাবে অবগত।

১৫. তিনিই তো তোমাদের জন্যে যমীনকে চলাচলের উপযোগী

تَكَادُ تَمَيِّرُ مِنَ الْغَيْظِ كَلِمًا أَلْقَى فِيهَا فَوْجٌ
سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ①

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا
مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۗ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي
ضَلَالٍ كَبِيرٍ ②

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ
السَّعِيرِ ③

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ ۗ فَسُحِّقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ④

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑤

وَأَسْرُوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاتِ الصُّدُورِ ⑥

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۗ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ⑦

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي

করেছেন; অতএব তোমরা ওর দিক-দিগন্তে ও রাস্তাসমূহে বিচরণ কর এবং তাঁর দেয়া রিযিক হতে আহাৰ কর, পুনরুত্থান তো তাঁরই নিকট।

১৬. তোমরা কি নিরাপত্তা পেয়ে গেছ যে, আকাশে যিনি রয়েছেন তিনি তোমাদেরকে সহ ভূমিকে ধ্বসিয়ে দিবেন না? আর ওটা আকস্মিকভাবে ধরধর করে কাঁপতে থাকবে।

১৭. অথবা তোমরা কি নিরাপদ হয়ে গেছ যে, আকাশে যিনি রয়েছেন তিনি তোমাদের উপর পাথর বর্ষণকারী বাতাস প্রেরণ করবেন না? তখন তোমরা জানতে পারবে কিরূপ ছিল আমার সতর্কবাণী!

১৮. আর তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল; ফলে কিরূপ হয়েছিল আমার শাস্তি?

১৯ তারা কি লক্ষ্য করে না তাদের উপরে পাখিসমূহের প্রতি, যারা ডানা বিস্তার করে ও সংকুচিত করে? দয়াময় আল্লাহই তাদেরকে স্থির রাখেন। তিনি সর্ববিষয়ে সম্যক দ্রষ্টা।

২০. দয়াময় আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের এমন কোন সৈন্য বাহিনী আছে কি, যারা তোমাদের সাহায্য করবে? কাফিররা তো ধোঁকায় পড়ে আছে মাত্র।

২১. এমন কে আছে যে, তোমাদেরকে রিযিক দান করবে, তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন? বস্তুতঃ তারা অবাধ্যতা ও সত্য বিমুখতায় অবিচল রয়েছে।

مَنَّاكِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾

ءَأَمِنْتُمْ مَن فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ الْأَرْضَ
فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾

أَمْ أَمِنْتُمْ مَن فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا ۗ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ ﴿١٧﴾

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَذِيرٍ ﴿١٨﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الظَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفْصِفٌ وَيَقْبِضْنَ مَرَّ
مَا يُنْسِفُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ ۗ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّن
دُونِ الرَّحْمَنِ ۗ إِنَّ الْكُفْرَونَ إِلَّا فِي عُرُوقٍ ﴿٢٠﴾

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرِزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۗ
بَلْ لَّجُوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

২২. যে ব্যক্তি উপুড় হয়ে মুখে ভর দিয়ে চলে, সে-ই কি সঠিক পথপ্রাপ্ত, না কি সেই ব্যক্তি যে সোজা হয়ে সরল পথে চলে?

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ
أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

২৩. বলঃ তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন এবং তোমাদেরকে দিয়েছেন শ্রবণশক্তি, দৃষ্টিশক্তি ও অস্তঃকরণ। তোমরা অল্পই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে থাকো।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ طَقِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. বলঃ তিনিই পৃথিবী ব্যাপী তোমাদেরকে ছড়িয়ে দিয়েছেন এবং তাঁরই কাছে তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে।

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

২৫. আর এরা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও (তবে বলঃ) এই প্রতিশ্রুতি কবে বাস্তবায়িত হবে?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

২৬. বলঃ এ জ্ঞান শুধু আল্লাহরই নিকট আছে; আমি স্পষ্ট সতর্ককারী মাত্র।

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾

২৭. যখন ওটা নিকটে দেখবে তখন কাফিরদের মুখমন্ডল বিবর্ণ হয়ে যাবে এবং তাদেরকে বলা হবেঃ এটাই তোমরা দাবী করতে।

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾

২৮. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি? যদি আল্লাহ আমাকে ও আমার সঙ্গীদেরকে ধ্বংস করেন অথবা আমাদের প্রতি রহম করেন তবে কাফিরদের কে রক্ষা করবে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হতে?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَهْلَكِنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ
أَوْ رَحِمَنَا لَفَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ
عَذَابِ إِلَهِهِ ﴿٢٨﴾

২৯. বলঃ তিনিই দয়াময়, আমরা তাঁর প্রতি বিশ্বাস রেখেছি এবং তাঁরই উপর ভরসা করেছি, অচিরেই

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾

তোমরা জানতে পারবে কে স্পষ্ট
গোমরাহীতে রয়েছে।

৩০. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি
যদি তোমাদের পানি ভূ-গর্ভের
তলদেশে চলে যায় তবে কে
তোমাদেরকে এনে দিবে প্রবহমান
পানি?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ
يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾

সূরাঃ কলম, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫২, রুকূঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٥٢ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. নূন-শপথ কলমের এবং তারা
(ফেরেশতাগণ) যা লিপিবদ্ধ করে
তার,

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿١﴾

২. তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহে
তুমি উন্মাদ নও।

مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِسَجُونٍ ﴿٢﴾

৩. এবং নিশ্চয়ই তোমার জন্য
রয়েছে অফুরন্ত পুরস্কার,

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ﴿٣﴾

৪. নিশ্চয় তুমি মহান চরিত্রের উপর
রয়েছ।

وَإِنَّكَ لَعَلَّ خُلِقْتَ عَظِيمٍ ﴿٤﴾

৫. সহসাই তুমিও দেখবে এবং
তারাও দেখবে—

فَسَتَبْصُرُ وَيُبْصُرُونَ ﴿٥﴾

৬. তোমাদের মধ্যে কে বিকারগ্রস্ত।

بِأَيْتِكُمُ الْمَفْتُونِ ﴿٦﴾

৭. তোমার প্রতিপালক ভালোভাবে
অবগত আছেন যে, কে তাঁর পথ
হতে বিচ্যুত হয়েছে এবং তিনি
তাদের সম্পর্কেও অধিক জ্ঞাত যারা
হেদায়েত প্রাপ্ত।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ
أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾

৮. অতএব তুমি মিথ্যাপ্রতিপন্ন-
কারীদের অনুসরণ করো না।

فَلَا تَطْعَمُ الْمُكْذِبِينَ ①

৯. তারা চায় যে, যদি তুমি নমনীয়
হতে, তাহলে তারাও নমনীয় হবে,

وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ ②

১০. এবং অনুসরণ করো না তার—
যে কথায় কথায় শপথ করে, যে
অতি নগণ্য,

وَلَا تَطْعَمُ كُلَّ حَلَا فِي مَهِينٍ ③

১১. দোষারোপকারী, যে একের কথা
অপরের নিকট লাগিয়ে বেড়ায়,

هَبَّازٍ مَّشَاءٍ بِنَبِيمٍ ④

১২. যে কল্যাণের কাজে শক্ত বাধা
দেয়, যে সীমালঙ্ঘনকারী, পাপিষ্ঠ,

مَنَاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ⑤

১৩. রুঢ় স্বভাবের তা সত্ত্বেও তার
কোন ভিত্তি নেই, জঘন্য প্রকৃতির।

عُتْلٍ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ ⑥

১৪. (এ জন্যে যে) সে ধন-সম্পদ
ও সম্ভান-সম্ভতিতে সমৃদ্ধশালী।

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ⑦

১৫. তার নিকট আমার আয়াতসমূহ
আবৃত্তি করা হলে সে বলেঃ এটা তো
প্রাচীনকালের রূপকথা মাত্র।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ⑧

১৬. অতিসত্ত্বর আমি তার গুঁড়
দাগিয়ে দিবো।

سَنَسِفُهُ عَلَى الْخُرُطُومِ ⑨

১৭. আমি তাদেরকে পরীক্ষা করেছি,
যেভাবে পরীক্ষা করেছিলাম বাগানের
মালিকদেরকে যখন তারা শপথ
করেছিল যে, তারা প্রত্যুষেই ফল
কেটে নেবে বাগান হতে,

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ ⑩ إِذْ أَقْسَمُوا

لَيَصْرُنَّ مِنْهَا مُصْبِحِينَ ⑪

১৮. এবং তারা ইনশাআল্লাহ বলেনি।

وَلَا يَسْتَتِنُونَ ⑫

১৯. অতঃপর তোমার প্রতিপালকের নিকট
হতে এক আযাব অতিবাহিত হলো সেই
বাগানে, যখন তারা ছিল নিদ্রিত।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ⑬

২০. ফলে ওটা পুড়ে ছাই বর্ণ ধারণ
করলো।

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ⑭

২১. প্রভাতে তারা একে অপরকে ডেকে বললোঃ

فَتَنَادُوا مُصْحِحِينَ ﴿٢١﴾

২২. তোমরা যদি ফল কাটতে চাও তবে সকাল সকাল বাগানে চলো।

أَنْ اَعْدُوا عَلَى حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ طَرْمِيزِينَ ﴿٢٢﴾

২৩. অতঃপর তারা চললো ফিস ফিস করে কথা বলতে বলতে,

فَأَنطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. আজ বাগানে যেন তোমাদের নিকটে কোন অভাবগ্রস্ত ব্যক্তি প্রবেশ করতে না পারে।

أَنْ لَا يَدْخُلَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ ﴿٢٤﴾

২৫. অতঃপর তারা (অভাবীদেরকে) প্রতিহত করতে সক্ষম—এই বিশ্বাস নিয়ে প্রভাতকালে (বাগানে) যাত্রা করলো।

وَعَدُوا عَلَى حَرْدٍ قَدِيرِينَ ﴿٢٥﴾

২৬. অতঃপর তারা যখন ঐ বাগান প্রত্যক্ষ করলো, তারা বললোঃ আমরা তো দিশা হারিয়ে ফেলেছি।

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُونَ ﴿٢٦﴾

২৭. (না) বরং; আমরাই বঞ্চিত হয়েছি!

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾

২৮. তাদের শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি বললোঃ আমি কি তোমাদেরকে বলিনি? যদি তোমরা আল্লাহর পবিত্রতা ঘোষণা করতে?

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْ لَا تَسْبِحُونَا ﴿٢٨﴾

২৯. তখন তারা বললোঃ আমরা আমাদের প্রতিপালকের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করছি, আমরা অত্যাচারী ছিলাম।

قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾

৩০. এভাবে তারা একে অপরকে দোষা দিতে লাগলো।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَلَوْمُونَ ﴿٣٠﴾

৩১. তারা বললোঃ হায়, দুর্ভোগ আমাদের! আমরা তো ছিলাম সীমালঙ্ঘনকারী।

قَالُوا يَوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٣١﴾

৩২. আমরা আশা রাখি— আমাদের রব-এর পরিবর্তে আমাদেরকে দিবেন উৎকৃষ্টতর বাগান; আমরা আমাদের রবের দিকে প্রত্যাভর্তনকারী।

عَلَىٰ رَبِّنَا أَنْ يُبَدِّلَنَا خَيْرًا مِّمَّهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ﴿٣٢﴾

৩৩. শাস্তি এভাবেই এসে থাকে এবং পরকালের শাস্তি কঠিনতর হবে যদি তারা জানতো!

كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَالْعَذَابُ الْآخِرَةُ الْكَبِيرُ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

৩৪. নিশ্চয়ই মুত্তাকীদের জন্যে তাদের প্রতিপালকের নিকট নেয়ামত ভরা জান্নাত রয়েছে।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾

৩৫. আমি কি মুসলমানদেরকে অপরাধীদের মত করবো?

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾

৩৬. কি হয়েছে তোমাদের? তোমরা কিরূপ ফয়সালা কর?

مَا لَكُمْ تَكَيْفٌ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾

৩৭. তোমাদের নিকট কি কোন কিতাব আছে যাতে তোমরা অধ্যয়ন কর?

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾

৩৮. নিশ্চয়ই তোমাদের জন্যে ওতে রয়েছে যা তোমরা পছন্দ কর?

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾

৩৯. তোমাদের সাথে কিয়ামত পর্যন্ত চলবে এমন কোন প্রতিজ্ঞায় আমি আবদ্ধ আছি কি যে, তোমরা নিজেদের জন্যে যা স্থির করবে সেখানে তা-ই পাবে?

أَمْ لَكُمْ آيَاتٌ عَلَيْنَا بِالْغَةِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾

৪০. তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর— তাদের মধ্যে এই দাবীর যিম্মাদার কে?

سَأَلَهُمْ أَيُّهُمْ بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾

৪১. তাদের কি এমন শরীকরাও আছে? থাকলে তারা তাদের শরীকদেরকে উপস্থিত করুক যদি তারা সত্যবাদী হয়।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۖ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾

৪২. (স্মরণ কর,) সেই দিন যেদিন হাঁটুর নিম্নাংশ^১ উন্মোচিত করা হবে এবং তাদেরকে আহ্বান করা হবে সিজদা করার জন্যে; কিন্তু তারা তা করতে সক্ষম হবে না।

৪৩. তাদের দৃষ্টি হবে অবনত, অপমানবোধ তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে অথচ যখন তারা নিরাপদ ছিল তখন তো তাদেরকে আহ্বান করা হয়েছিল সিজদা করতে। (তারা অমান্য করেছে)

৪৪. আমাকে এবং এই বাণীকে যারা মিথ্যা বলেছে তাদের ব্যাপারটি ছেড়ে দাও, আমি তাদেরকে এমনভাবে ক্রমে ক্রমে ধরবো তারা জানতে পারবে না।

৪৫. আর আমি তাদেরকে অবকাশ দিয়ে থাকি, নিশ্চয়ই আমার কৌশল শক্তিশালী।

৪৬. তুমি কি তাদের নিকট কোন বিনিময় চাচ্ছ যে, তারা একে একটি দুর্বহ জরিমানা মনে করবে!

৪৭. তাদের কি অদৃশ্যের জ্ঞান আছে যে, তারা লিখে রাখে!

৪৮. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর তোমার রবের নির্দেশের অপেক্ষায়, তুমি মাছওয়ালার (ইউনুস عَلِيُّ بْنُ أَبِي هَالَةَ) ন্যায় (অধৈর্য) হয়ো না, সে চিন্তাগ্রস্ত অবস্থায় ডেকে ছিলো।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢٧﴾

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذِلَّةٌ وَوَقَدْ كَانُوا
يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ ﴿٢٨﴾

فَدَارِنِي وَمَنْ يُكْذِبُ بِهَذَا الْحَدِيثِ ط
سَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

وَأُمْلِي لَهُمْ ط إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿٣٠﴾

أَمْ سَأَلْتَهُمُ أَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّتَّقُونَ ﴿٣١﴾

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ﴿٣٢﴾

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ
الْحُوتِ مِرَازٍ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٣٣﴾

১। (ক) আবু সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি নবী (সালাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, কিয়ামতের দিন আমাদের প্রভূ স্বীয় পায়ের পিভলী খুলবেন, তখন তাকে প্রত্যেক মোমেন পুরুষ এবং মহিলা সিজদা করবে। আর যারা পৃথিবীতে মানুষকে দেখানোর এবং শুনানোর জন্য সিজদা করত তারাই শুধু বাকী থাকবে। তারাও সেজদা করতে চাইবে; কিন্তু তারা তাদের পিঠ শক্ত কাঠের ন্যায় হয়ে যাবে, ফলে সিজদা করতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৪১১৯)

৪৯. তার রবের অনুগ্রহ তার নিকট না পৌছলে সে অপমানিত হয়ে নিষ্কিঞ্চ হতো খোলা প্রান্তরে।

لَوْلَا أَنْ تَذَرُكَ نِعْمَةً مِّنْ رَبِّهِ لَكُنَّ مِنَ الْبَعْرَاءِ
وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٥٩﴾

৫০. পরিশেষে তার রব তাকে মনোনীত করলেন এবং তাকে সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত করলেন।

فَأَجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٦٠﴾

৫১. কাফিররা যখন উপদেশ বাণী (কুরআন) শ্রবণ করে তখন তারা যেন তাদের তীক্ষ্ণ দৃষ্টি দ্বারা তোমাকে আছড়িয়ে ফেলতে চায় এবং বলেঃ সে তো এক পাগল।

وَأِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ
لَمَّا سَعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٦١﴾

৫২. এটাতো (কুরআন) বিশ্বজগতের জন্যে উপদেশ বাণী।

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٦٢﴾

সূরাঃ হাক্কাহ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫২, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٥٢ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. সেই অবশ্যস্ভাবী ঘটনা।

الْحَاقَّةُ ﴿١﴾

২. সেই অবশ্যস্ভাবী ঘটনা কী?

مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾

৩. তুমি কি জান যে, অবশ্যস্ভাবী ঘটনা কী?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾

৪. আ'দ ও সামূদ সম্প্রদায় মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল মহাপ্রলয়।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾

৫. আর সামূদ সম্প্রদায়, তাদেরকে ধ্বংস করা হয়েছিল এক ভয়ঙ্কর আওয়াজ দ্বারা।

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾

৬. আর আ'দ সম্প্রদায়, তাদেরকে ধ্বংস করা হয়েছিল এক প্রচন্ড ঘূর্ণিঝড়ের দ্বারা।

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

৭. যা তিনি তাদের উপর প্রবাহিত করেছিলেন সাত রাত ও আট দিন বিরামহীনভাবে, তুমি (সেখানে থাকলে) সেই সম্প্রদায়কে দেখতে খেজুর কাণ্ডের ন্যায় সেখানে পড়ে আছে।

৮. তাদের কাউকেও তুমি অবশিষ্ট পাচ্ছ কি?

৯. আর ফিরআ'উন এবং তার পূর্ববর্তীরা এবং উল্টে যাওয়া বস্তি বাসীরা (লুত সম্প্রদায়) গুরুতর পাপ কাজে লিপ্ত ছিল।

১০. তারা তাদের প্রতিপালকের রাসূলকে অমান্য করেছিল, ফলে তিনি তাদেরকে কঠোরভাবে পাকড়াও করলেন।

১১. যখন পানি উথলিয়ে উঠেছিল তখন আমি তোমাদেরকে আরোহণ করিয়েছিলাম জাহাজে।

১২. আমি এটা করেছিলাম তোমাদের উপদেশের এবং শ্রবণকারী কর্ণ যেন এটা স্মরণ রাখে।

১৩. যখন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে-একটি মাত্র ফুৎকার।

১৪. আর পৃথিবী ও পর্বত মালাকে উত্তোলন করা হবে এবং একই ধাক্কায় চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দেয়া হবে।

১৫. সেদিন যা সংঘটিত হওয়ার (কিয়ামত) সংঘটিত হয়ে যাবে।

১৬. এবং আকাশ চূর্ণ-বিচূর্ণ হয়ে শক্তিহীন হয়ে পড়বে।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَنِيَةَ أَيَّامٍ ۙ
حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ ۙ كَأَنَّهُمْ
أَعْجَازٌ نَّخْلٍ خَاوِيَةٌ ۝٧

فَهَلْ تَرَى لَهُم مِّنْ بَاقِيَةٍ ۝٨

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَتْ
بِالْخَاطِئَةِ ۝٩

فَصَوَّرَ رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخَذَةً رَّابِيَةً ۝١٠

إِنَّا لَنَبَأُ طَغَا الْمَاءِ حَمَلُكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝١١

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكُرَةً وَتَعِيهَا أُذُنٌ وَأَعْيَةٌ ۝١٢

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝١٣

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝١٤

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١٥

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝١٦

১৭. ফেরেশতাগণ তার পার্শ্বে পার্শ্বে থাকবে এবং সেদিন আটজন ফেরেশতা তোমার প্রতিপালকের আরাশকে নিজেদের উপরে বহন করবে।

১৮. সেই দিন তোমাদেরকে উপস্থিত করা হবে এবং তোমাদের কিছুই গোপন থাকবে না।

১৯. অনন্তর যার আমলনামা তার ডান হাতে দেয়া হবে, সে বলবেঃ নাও, আমার আমলনামা পড়ে দেখো;

২০. আমি জানতাম যে, আমাকে অবশ্যই হিসাবের সম্মুখীন হতে হবে।

২১. সুতরাং সে সন্তোষজনক জীবন যাপন করবে;

২২. সুমহান জান্নাতে

২৩. যার ফলরাশি অতি নিকটে থাকবে নাগালের মধ্যে।

২৪. খাও এবং পান কর তৃষ্ণির সাথে, তোমরা অতীত দিনসমূহে যা করেছিলে তার বিনিময়ে।

২৫. কিন্তু যার আমলনামা তার বাম হাতে দেয়া হবে, সে বলবেঃ হায়! আমাকে যদি আমার আমলনামা না দেয়া হত।

২৬. এবং আমি যদি আমার হিসাব কি তা না জানতাম!

২৭. হায়! আমার মৃত্যুই যদি আমার শেষ হতো!

২৮. আমার ধন-সম্পদ আমার কোন কাজেই আসলো না।

وَالْمَلِكُ عَلَىٰ رُجَائِبِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ
فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَّةٌ ﴿١٧﴾

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۖ فَيَقُولُ هَٰؤُمُ
أَقْرَبُ وَكَتَيْبَةٌ ﴿١٩﴾

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْكٌ حَسَابِيَةٌ ﴿٢٠﴾

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

فُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ
الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۖ فَيَقُولُ
يَلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَةٌ ﴿٢٥﴾

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَةٌ ﴿٢٦﴾

يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَا لِيَّاهُ ﴿٢٨﴾

২৯. আমার ক্ষমতা ও বিনাশ হয়েছে।

هَلَّاكَ عَنِّي سَطْنِيَّةٌ ۝

৩০. তাকে ধর। অতঃপর তার গলায় বেড়ি পরিয়ে দাও।

خُدُّوهُ فَعْلُوهُ ۝

৩১. অতঃপর তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ কর।

ثُمَّ الْجَحِيمِ صَلْوَةٌ ۝

৩২. পুনরায় তাকে বেঁধে ফেলো এমন শিকল দ্বারা যার মাপ সত্তর হাত লম্বা।

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَّرَعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝

৩৩. সে মহান আল্লাহতে বিশ্বাসী ছিল না,

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝

৩৪. এবং অভাবগ্রস্তকে খাদ্য দানে উৎসাহিত করতো না;

وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝

৩৫. অতএব এই দিন সেখানে তার কোন অন্তরঙ্গ বন্ধু থাকবে না,

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَبِيبٌ ۝

৩৬. এবং ক্ষত নিঃসৃত কোন খাদ্য থাকবে না রক্ত ও পূঁজ ব্যতীত,

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَسِيلِينَ ۝

৩৭. যা শুধুমাত্র অপরাধীরাই ভক্ষণ করবে।

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

৩৮. আমি শপথ করি ওর যা তোমরা দেখতে পাও,

فَلَا أَقْسِمُ بِمَا تُبْصَرُونَ ۝

৩৯. এবং যা তোমরা দেখতে পাও না।

وَمَا لَا تُبْصَرُونَ ۝

৪০. নিশ্চয়ই এটা (কুরআন) এক সম্মানিত রাসূলের তেলাওয়াত,

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

৪১. এটা কোন কবির কথা নয়; তোমরা অল্পই বিশ্বাস কর,

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۝

৪২. এটা কোন গণকের কথাও নয়, তোমরা অল্পই উপদেশ গ্রহণ কর।

وَلَا يَقُولُ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, এক ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে প্রশ্ন করল যে, ইসলামের কোন কাজটি সবচেয়ে উত্তম? তিনি বললেনঃ (অপরকে) খাদ্য খাওয়ানো এবং পরিচিত এবং অপরিচিত ব্যক্তিকে সালাম দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ১২)

৪৩. এটা জগতসমূহের প্রতি-
পালকের নিকট হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾

৪৪. যদি সে নিজে কোন কথা
বানিয়ে আমার কথা বলে চালিয়ে
দিতো,

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ﴿٣٨﴾

৪৫. তবে অবশ্যই আমি তার ডান
হাত ধরে ফেলতাম,

لَا خِذَانًا مِنهُ بِأَيْمِينِي ﴿٣٩﴾

৪৬. এবং কেটে দিতাম তার জীবন-
ধমনী (শাহরগ)।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنهُ الْوَتِينَ ﴿٤٠﴾

৪৭. অতঃপর তোমাদের মধ্যে এমন
কেউ নেই, যে তার ব্যাপারে আমাকে
বিরত রাখতে পারে।

فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤١﴾

৪৮. এটা (কুরআন) মুত্তাকীদের
জন্যে অবশ্যই এক উপদেশ।

وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٢﴾

৪৯. আমি অবশ্যই জানি যে,
তোমাদের মধ্যে মিথ্যা প্রতিপন-
কারীও রয়েছে।

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٣﴾

৫০. এবং এই (কুরআন) নিশ্চয়ই
কাফিরদের অনুশোচনার কারণ হবে,

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٤٤﴾

৫১. অবশ্যই এটা নিশ্চিত সত্য।

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٤٥﴾

৫২. অতএব তুমি তোমার মহান
প্রতিপালকের নামের মহিমা ঘোষণা
কর।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾

সূরাঃ মা'আরিজ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪৪, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(গুরু করছি)।

১. এক ব্যক্তি আবেদন করল সেই আযাবের যা সংঘটিত হবে—
২. কাফিরদের হতে তা প্রতিরোধ করার কেউ নেই।
৩. আল্লাহর নিকট হতে যিনি উর্ধ্বারোহণের বাহনসমূহের অধিকারী।
৪. ফেরেশতা এবং রুহ (জিবরাঈল عليه السلام) তাঁর দিকে উর্ধ্বগামী হয় এমন এক দিন যার পরিমাণ পঞ্চাশ হাজার বছরের সমান।
৫. সুতরাং তুমি উত্তম ধৈর্যধারণ কর।
৬. তারা ঐ দিনকে অনেক দূরে মনে করে,
৭. কিন্তু আমি তা দেখছি নিকটে।
৮. সেদিন আকাশ হবে গলিত রূপার মত,
৯. এবং পর্বতসমূহ হবে ধুনিত রঙ্গীন পশমের মত,
১০. আর কোন অন্তরঙ্গ বন্ধু কোন অন্তরঙ্গ বন্ধুর খোঁজ নিবে না,
১১. তাদেরকে করা হবে একে অপরের দৃষ্টিগোচর। অপরাধী সেই দিনের আযাবের বদলে দিতে চাইবে সন্তান-সন্ততিকে,

سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٣ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝١
- لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝٢
- مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝٣
- تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ
- مُقَدَّرًا ۝٤ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝٥
- فَاصْبِرْ صَبْرًا جَبِيلًا ۝٦
- إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝٧
- وَأَنَّهُ قَرِيبٌ ۝٨
- يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْهَيْلِ ۝٩
- وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝١٠
- وَلَا يَسْأَلُ حَبِيبٌ حَبِيبًا ۝١١
- يُبْصِرُونَهُمْ يُودُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ
- عَذَابِ يَوْمٍ يُبْذَرُ ۝١٢

১২. তার স্ত্রী ও ভাইকে,

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝۱۲

১৩. তার জ্ঞাতি-গোষ্ঠীকে, যারা
তাকে আশ্রয় দিতো।

وَقَوْمِيَّاتِهِ الَّتِي تَتَّبِعُونَهُ ۝۱৩

১৪. এবং পৃথিবীর সকলকে, যাতে
এই মুক্তিপণ তাকে মুক্তি দেয়।

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝۱৪

১৫. না, কখনো নয়, এটা তো
লেলিহান অগ্নি শিখা,

كَلَّا لَإِنَّهَا لَظِلٌّ ۝۱৫

১৬. যা মাথা হতে চামড়া খসিয়ে
দিবে।

نَزَاعَةٌ لِّلشُّوٰى ۝۱৬

১৭. জাহান্নাম ঐ ব্যক্তিকে ডাকবে,
যে (সত্যের প্রতি) পৃষ্ঠ প্রদর্শন
করেছিল ও মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিল।

تَدْعُوهُ مِّنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝۱৭

১৮. সে সম্পদ জমা করে এবং
সংরক্ষিত করে রেখেছিল।

وَجَمَعَ فَأَوْعَى ۝۱৮

১৯. মানুষ তো সৃজিত হয়েছে
অতিশয় অস্থির চিত্তরূপে

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝۱৯

২০. যখন তাকে বিপদ স্পর্শ করে
তখন সে হয় হা-হুতাকারী।

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝ۨ০

২১. আর যখন কল্যাণ তাকে স্পর্শ
করে তখন সে হয় অতি কৃপণ;

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝ۨ১

২২. তবে নামাযীরা এমন নয়।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝ۨ২

২৩. যারা তাদের নামাযে সদা
নিয়মানুবর্তিতা অবলম্বনকারী,

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝ۨ৩

২৪. আর তাদের সম্পদে নির্ধারিত
হক রয়েছে।

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝ۨ৪

২৫. ভিক্ষুক ও বঞ্চিতদের,

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُورِ ۝ۨ৫

২৬. এবং বিচার দিবসকে সত্য বলে
মানে।

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ أَيَّامَ الدِّينِ ۝ۨ৬

২৭. আর যারা তাদের প্রতীপালকের
আযাব সম্পর্কে ভীত-সন্ত্রস্ত

وَالَّذِينَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ۝ۨ৭

২৮. নিশ্চয়ই তাদের প্রতিপালকের আযাব হতে নির্ভয় থাকা যায় না—

২৯. এবং যারা নিজেদের লজ্জাস্থানকে হেফযত করে,১

৩০. তাদের স্ত্রী অথবা অধিকারভুক্ত দাসীদের ক্ষেত্র ব্যতীত, এতে তারা নিন্দনীয় হবে না—

৩১. তবে কেউ এদেরকে ছাড়া অন্যকে কামনা করলে তারা হবে সীমালঙ্ঘনকারী,২

৩২. এবং যারা তাদের আমানত রক্ষা করে ও প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করে,

৩৩. আর যারা তাদের সাক্ষ্য দানে (সততার ওপর) অটল,

৩৪. এবং নিজেদের নামাযে যত্নবান—

৩৫. তারা সম্মানিত হবে জান্নাতে।

৩৬. কান্ফিরদের হলো কি যে, তারা তোমার দিকে ছুটে আসছে

৩৭. ডান ও বাম দিক হতে, দলে দলে?

৩৮. তাদের প্রত্যেকে কি এ আশা করে যে, তাকে প্রবেশ করান হবে নিয়ামতপূর্ণ জান্নাতে?

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَعْتَابِهِمْ حَفِظُونَ ﴿٢٩﴾

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ
فَأِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

فَمَنْ ابْتغى وراءك فأولئك هم العادون ﴿٣١﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قَبْلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

أَيَسْمَعُ كُلُّ أَمْرٍ مِنْهُمْ أَنْ يَدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾

১। সাহাল ইবনে সা'দ (রাযিআল্লাহু আনহু) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি তার দুই চোয়ালের মাঝখান (জবানের) এবং দু'পায়ের মাঝখানের (লজ্জাস্থানের) যামানত আমাকে দিবে। আমি তার জান্নাতের যামীন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭৪)

২। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, আমি তোমাদের কাছে একটি হাদীস বর্ণনা করব, যা আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছ থেকে শুনেছি এবং আমি ব্যতীত আর কেউ তোমাদেরকে বলবে না। আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, তিনি বলেছেনঃ কিয়ামতের শর্তসমূহের মধ্যে রয়েছেঃ (দ্বীনের) ইলুম উঠে যাবে, জাহালত বা মুর্খতা বেড়ে যাবে, অবৈদ যৌন-মিলন বেড়ে যাবে, মদ্যপানের মাত্রা বেড়ে যাবে, পুরুষের সংখ্যা কমে যাবে এবং নারীদের সংখ্যা এত মাত্রায় বেড়ে যাবে যে, প্রতি একজন পুরুষকে পঞ্চাশজন মহিলার দেখাশুনা করতে হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৩১)

৩৯. না, তা হবে না, আমি তাদেরকে যা হতে সৃষ্টি করেছি তা তারা জানে।

كَلَّا ط إِنَّا خَلَقْنَهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

৪০. আমি শপথ করছি উদয়াচল ও অস্তাচলের প্রভুর— নিশ্চয়ই আমি সক্ষম—

فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِيرُونَ ﴿٤٠﴾

৪১. আমি তাদের অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর মানবগোষ্ঠীকে তাদের স্থলবর্তী করতে আমাকে পেছনে ফেলে যাওয়ার মত কেউ নেই।

عَلَىٰ أَنْ تُبَدَّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ لَمَّا نَحْنُ بِسَبُّوبِينَ ﴿٤١﴾

৪২. অতএব তাদেরকে অসার কর্ম ও খেল-তামাশায় মত্ত থাকতে দাও, তার সম্মুখীন হওয়ার পূর্ব পর্যন্ত যে দিবস সম্পর্কে তাদেরকে সতর্ক করা হয়েছিল।

فَذَرَّهُمْ يُخَوِّضُونَ وَيَلْعَبُونَ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾

৪৩. সে দিন তারা কবর হতে বের হবে দ্রুত বেগে, মনে হবে যে, তারা কোন একটি আস্তানার দিকে ছুটে আসছে।

يَوْمَ يُخْرَجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصْبٍ يُؤَفِّضُونَ ﴿٤٣﴾

৪৪. অবনত হবে তাদের দৃষ্টি; লাঞ্ছনা তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে; এটাই সেই দিন, যার প্রতিশ্রুতি এদেরকে দেয়া হয়েছিল।

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُفُهُمْ ذِلَّةٌ ط ذَلِكَ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

সূরাঃ নূহ, মাক্কী

(আয়াতঃ ২৮, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٨ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. নূহ (عليه السلام)-কে আমি প্রেরণ করেছিলাম তাঁর জাতির কাছে (নির্দেশসহঃ) যে তুমি তোমার জাতির লোকদেরকে সতর্ক কর তাদের প্রতি আযাব আসার পূর্বে।

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾

২. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার জাতি। আমি তো তোমাদের জন্যে স্পষ্ট সতর্ককারী—

قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي كُنْتُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ①

৩. তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর ও তাঁকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর;

إِنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا ②

৪. তিনি তোমাদের পাপরাশি ক্ষমা করবেন এবং তিনি তোমাদেরকে অবকাশ দিবেন এক নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত। নিশ্চয়ই আল্লাহ কর্তৃক নির্ধারিত সময় উপস্থিত হলে তা বিলম্বিত হয় না, যদি তোমরা এটা জানতে!

يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ③ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ مَوْكِنًا ④ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑤

৫. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো আমার সম্প্রদায়কে দিবারাত্র ডেকেছি,

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ⑥

৬. কিন্তু আমার আহ্বান তাদের দূরে সরে থাকার প্রবণতাকেই বৃদ্ধি করেছে।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ⑦

৭. আমি যখনই তাদেরকে আহ্বান করি যাতে আপনি তাদেরকে ক্ষমা করেন, তখনই তারা কানে আঙ্গুলী দেয়, বস্ত্রবৃত্ত করে নিজেদেরকে ও যদি করতে থাকে এবং অতিশয় অহংকার প্রকাশ করে।

وَإِنِّي كَلِمًا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا ⑧ اسْتِكْبَارًا ⑨

৮. অতঃপর আমি তাদেরকে আহ্বান করেছি সুউচ্চস্বরে,

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهْرًا ⑩

৯. পরে আমি তাদেরকে প্রকাশ্যে উপদেশ দিয়েছি এবং অতি গোপনে।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ⑪

১০. বলেছিঃ তোমরা তোমাদের প্রতি পালকের ক্ষমা প্রার্থনা কর, তিনি তো অতিশয় ক্ষমাশীল,

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ⑫

১১. তিনি তোমাদের জন্যে আকাশ হতে প্রচুর বৃষ্টিপাত করবেন,

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝

১২. তিনি তোমাদেরকে সমৃদ্ধ করবেন ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততিতে এবং তোমাদের জন্যে বাগানসমূহ তৈরি করবেন ও প্রবাহিত করবেন নদী-নালা।

وَيُؤْتِكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝

১৩. তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা আল্লাহর শ্রেষ্ঠত্ব স্বীকার করতে চাচ্ছ না?

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝

১৪. অথচ তিনিই তোমাদেরকে পর্যায়ক্রমে সৃষ্টি করেছেন,

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝

১৫. তোমরা লক্ষ্য করনি? আল্লাহ কিভাবে সাত আসমানকে স্তরে স্তরে সৃষ্টি করেছেন?

أَلَمْ تَرَ وَكَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۝

১৬. এবং সেখানে চাঁদকে আলো ও সূর্যকে প্রদীপরূপে স্থাপন করেছেন?

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۝

১৭. তিনি তোমাদেরকে উদ্ভূত করেছেন মাটি হতে উদ্ভিদ উৎপন্নের ন্যায়।

وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝

১৮. অতঃপর তোমাদেরকে তাতে তিনি প্রত্যাবৃত্ত করবেন ও পরে পুনরুত্থিত করবেন,

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝

১৯. এবং আল্লাহ তোমাদের জন্যে ভূমিকে করেছেন বিস্তৃত –

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝

২০. যাতে তোমরা এর প্রশস্ত পথে চলাফেরা করতে পার।

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝

২১. নূহ (عليه السلام) বলেছিলঃ হে আমার প্রতিপালক! তারা তো আমাকে অমান্য করেছে এবং অনুসরণ করেছে এমন লোকের যার

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ يَزِدْهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا ۝

ধন-সম্পদ ও সম্ভান-সম্ভতি তার ক্ষতি
ব্যতীত আর কিছুই বৃদ্ধি করেনি।

২২. আর তারা ভয়ানক ষড়যন্ত্র
করেছে।

২৩. এবং বলেছিলঃ পরিত্যাগ করো
না তোমরা কখনও তোমাদের
উপাস্যগুলিকে এবং ওয়াদ,
সুওয়া'আ, ইয়াগুস, ইয়াউক ও
নাসরকেও পরিত্যাগ করো না।

২৪. তারা অনেককে বিভ্রান্ত করেছে
এবং যালিমদের বিভ্রান্তি ব্যতীত আর
কিছুই বৃদ্ধি করবেন না।

২৫. তাদের অপরাধের জন্যে
তাদেরকে নিমজ্জিত করা হয়েছিল
এবং পরে তাদেরকে প্রবেশ করানো
হয়েছিল জাহান্নামে, অতঃপর তারা
কাউকেও আল্লাহর মুকাবিলায়
সাহায্যকারী পায়নি।

২৬. নূহ (عليه السلام) আরো বলেছিলেনঃ
হে আমার প্রতিপালক! পৃথিবীতে
কাফিরদের মধ্য হতে কোন
গৃহবাসীকে ছেড়ে দিবেন না।

২৭. আপনি যদি তাদেরকে ছেড়ে
দেন তারা আপনার বান্দাদেরকে
বিভ্রান্ত করবে এবং যারা জন্মালাভ
করবে তারা হবে দুষ্কৃতিকারী ও কাফির।

২৮. হে আমার প্রতিপালক! আপনি
আমাকে, আমার পিতা-মাতাকে এবং
যারা মু'মিন হয়ে আমার গৃহে প্রবেশ
করে তাদেরকে এবং মু'মিন পুরুষ ও
মু'মিন নারীদেরকে জমা করুন, আর
যালিমদের জন্যে ধ্বংস ছাড়া অন্য
কিছু বৃদ্ধি করবেন না।

وَمَكْرُوهًا مَكْرًا كِبَارًا ﴿٢٢﴾

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا
وَلَا سَوَاعًا ۗ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۗ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ
إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾

مِمَّا خَطَبْتَهُمْ أُعْرِفُوا فَاذْخُلُوا نَارًا ۗ فَلَمْ
يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنْ
الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

إِنَّكَ إِنْ تَذَرَهُمْ يُضِلُّوكَ عِبَادَكَ وَلَا
يَلِدُوا إِلَّا فِاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي
مُؤْمِنًا ۗ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

সূরাঃ জ্বীন মাক্কী

(আয়াতঃ ২৮, রুক্বঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. বলঃ আমার প্রতি ওহী শ্রেণিত হয়েছে যে, জ্বীনদের একটি দল মনোযোগ সহকারে শ্রবণ করেছে এবং বলেছেঃ আমরা তো এক বিশ্বয়কর কুরআন শ্রবণ করেছি।

২. যা সঠিক পথ-নির্দেশ করে; সে কারণে আমরা এতে ঈমান আনয়ন করেছি এবং আমরা কখনও আমাদের প্রতি পালকের কোন শরীক স্থাপন করবো না।

৩. এবং নিশ্চয়ই আমাদের প্রতিপালকের মর্খাদা সমুচ্চ; তিনি কোন স্ত্রী গ্রহণ করেন নি এবং কোন সন্তান।

৪. এবং আমাদের মধ্যকার নির্বোধরা আল্লাহর সম্বন্ধে অতি মিথ্যা উক্তি করতো।

৫. অথচ আমরা মনে করতাম যে, মানুষ এবং জ্বীন আল্লাহ সম্বন্ধে কখনো মিথ্যা বলবে না।

৬. আর কতিপয় মানুষ কতক জ্বিনের আশ্রয় প্রার্থনা করতো, ফলে তারা নিজেদের সীমালঙ্ঘন আরো বাড়িয়ে দিয়েছে।

৭. তোমাদের মত তারাও (মানুষ) মনে করেছিল যে, আল্লাহ কাউকেও (রাসূল হিসেবে) পাঠাবেন না।

سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ

أَيَاتُهَا ٢٨ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا
إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ط وَكُنْ نُشْرِكَ
بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝

وَإِنَّهُ تَعَلَّى جَدًّا رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً
وَلَا وَلَدًا ۝

وَإِنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نَقُولَ الْإِنسَ وَالْجِنُّ عَلَى
اللَّهِ كَذِبًا ۝

وَإِنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالِ
مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ
أَحَدًا ۝

৮. এবং আমরা আকাশমন্ডলীকে স্পর্শ (পর্যবেক্ষণ) করেছি আর আমরা সেটা পেয়েছি কঠোর প্রহরী ও উচ্চাপিত্ত দ্বারা পরিপূর্ণ।

وَإِنَّا لَنَسْنَأُ السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا مُلْأَتًا حَرَسًا
شَدِيدًا وَشُهَبًا ۝

৯. আর পূর্বে আমরা আকাশের বিভিন্ন ঘাঁটিতে (সংবাদ) শুনবার জন্যে বসতাম; কিন্তু এখন কেউ সংবাদ শুনতে চাইলে সে তখন প্রস্তুত জ্বলন্ত উচ্চাপিত্তের সম্মুখীন হয়।

وَإِنَّا لَكُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَنْ
يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شُهَابًا رَّصَدًا ۝

১০. আমরা জানি না যে, জগদ্বাসীর সাথে কোন খারাপ আচরণের ইচ্ছা করা হয়েছে না কি তাদের প্রতিপালক তাদের হেদায়েত চান।

وَإِنَّا لَا نَسْأَلُكَ أَشْرًا تُرِيدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ
أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝

১১. এবং আমাদের কতক সৎকর্মপরায়ণ এবং কতক এর ব্যতিক্রম, আমরা ছিলাম বিভিন্ন পথের অনুসারী।

وَإِنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَلِكَ ۖ كُنَّا
طَرَائِقَ قَدَدًا ۝

১২. আর আমাদের একান্ত বিশ্বাস হয়ে গেছে যে, আমরা পৃথিবীতে আল্লাহকে কোনক্রমে পরাভূত করতে পারবো না এবং পলায়ন করেও তাঁকে ব্যর্থ করতে পারব না।

وَإِنَّا ظَنَنَّا أَنْ لَنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ
نُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝

১৩. এবং আমরা যখন হেদায়েতের বাণী শুনলাম তখন তাতে আমরা বিশ্বাস স্থাপন করলাম। যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের উপর বিশ্বাস স্থাপন করে সে তার কোন ক্ষতি ও কোন অন্যায়ে আশঙ্কা যেন না করে।

وَإِنَّا لَنَاصِعُنَا الْهُدَىٰ أَمَّا بِهِ فَمَنْ
يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝

১৪. আমাদের কতক মুসলমান এবং কতক অত্যাচারী, যারা ইসলাম গ্রহণ করে তারা মুক্তির পথ খুঁজে পেয়েছে।

وَإِنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ
أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝

১৫. অপর পক্ষে অত্যাচারীরা তো জাহান্নামেরই ইন্ধন।

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

১৬. তারা যদি সত্যপথে প্রতিষ্ঠিত থাকতো তবে তাদেরকে আমি অবশ্যই প্রচুর বারি বর্ষণের মাধ্যমে সমৃদ্ধ করতাম।

১৭. যার দ্বারা আমি তাদেরকে পরীক্ষা করব। যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের স্মরণ হতে বিমুখ হয় তিনি তাকে কঠিন আযাবে প্রবেশ করাবেন।

১৮. এবং নিশ্চয়ই সিজদার স্থানসমূহ (সমস্ত ইবাদত) আল্লাহরই জন্যে। সুতরাং আল্লাহর সাথে তোমরা অন্য কাউকেও ডেকো না।

১৯. আর যখন আল্লাহর বান্দা তাঁকে ডাকবার জন্যে দাঁড়ায় তখন তারা তার নিকট ভিড় জমায়।

২০. বলঃ নিশ্চয়ই আমি আমার প্রতিপালককেই ডাকি এবং তাঁর সাথে কাউকেও শরীক করি না।

২১. বলঃ আমি তোমাদের অনিষ্টের ও পথ প্রদর্শনের ক্ষমতা রাখি না।

২২. বলঃ আল্লাহ-এর শাস্তি হতে কেউই আমাকে রক্ষা করতে পারবে না এবং আল্লাহ ব্যতীত আমি কোন আশ্রয়ও পাবো না।

২৩. শুধু আল্লাহর পক্ষ হতে পৌছানো এবং তাঁর বাণী প্রচারই আমাকে রক্ষা করবে। যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে অমান্য করে তাদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের আগুন, সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে।

وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقِينَهُمْ مَاءً غَدَقًا ۝

لِنَقْتَدِيَهُمْ فِيهِ ط وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝

وَأَنَّ السُّجُودَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝

وَأَنَّهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَدْعُونَ ۝ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۝ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ط وَمَنْ يَعِصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا أَبَدًا ۝

৪. অথবা তদপেক্ষা বেশি। আর কুরআন পাঠ কর ধীরে ধীরে, (থেমে থেমে সুন্দরভাবে)

أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝

৫. আমি অচিরেই তোমার প্রতি অবতীর্ণ করবো ভারত্বপূর্ণ বাণী।

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝

৬. নিশ্চয়ই রাত্রিজাগরণ প্রবৃত্তি দমনে অধিক সহায়ক এবং উত্তম বাক্য প্রয়োগে অধিক অনুকূল।

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝

৭. নিশ্চয়ই দিনে তোমার জন্যে রয়েছে দীর্ঘ কর্মব্যস্ততা।

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝

৮. সুতরাং তুমি তোমার প্রতি পালকের নাম স্মরণ কর এবং (অন্য ব্যস্ততা ছিন্ন করে) একনিষ্ঠভাবে তাতে মগ্ন হও।

وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝

৯. তিনি পূর্ব ও পশ্চিমের প্রভু, তিনি ব্যতীত কোন (সত্য) মা'বুদ নেই। অতএব তাঁকেই কর্মবিধায়ক রূপে গ্রহণ কর।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝

১০. লোকেরা যা বলে, তাতে তুমি ধৈর্যধারণ কর এবং উত্তম পন্থায় তাদেরকে পরিহার করে চল।

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا

جَبِيلًا ۝

১১. ছেড়ে দাও আমাকে এবং প্রাচুর্যবান মিথ্যাপ্রতিপন্নকারীদের; আর কিছুকালের জন্যে তাদেরকে অবকাশ দাও।

وَذُرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهْلَهُمْ

قَلِيلًا ۝

১২. আমার নিকট আছে শক্ত বেড়ী ও জ্বলন্ত আগুন,

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۝

১৩. আর আছে গলায় আটকে যায় এমন খাদ্য এবং যন্ত্রণাদায়ক আযাব।

وَوَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝

১৪. (এসব হবে) সেদিন যেদিন পৃথিবী ও পর্বতমালা প্রকম্পিত হবে এবং পর্বতসমূহ বহমান বালুকারাশির ন্যায় হবে।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ

كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝

১৫. আমি তোমাদের নিকট এক রাসূল পাঠিয়েছি তোমাদের জন্যে সাক্ষী স্বরূপ যেমন ফিরআ'উনের নিকট একজন রাসূল পাঠিয়েছিলাম,

১৬. কিন্তু ফিরআ'উন সেই রাসূলকে অমান্য করেছিল, ফলে আমি তাকে কঠোরভাবে পাকড়াও করেছিলাম।

১৭. অতএব কিভাবে তোমরা বাঁচতে পারবে যদি তোমরা কুফরী কর সেই দিনের প্রতি, যেদিন কিশোরকে বৃদ্ধ বানিয়ে দিবে,

১৮. যেদিনের কঠোরতায় আকাশ ফেটে যাবে; তাঁর প্রতিশ্রুতি অবশ্যই বাস্তবায়িত হবে।

১৯. নিশ্চয়ই এটি উপদেশ, অতএব যার ইচ্ছা সে তার প্রতিপালকের পথ অবলম্বন করুক।

২০. তোমার প্রতিপালক তো জানেন যে, তুমি জাগরণ কর কখনো রাত্রির প্রায় দুই তৃতীয়াংশ, কখনো অর্ধাংশ এবং কখনো এক তৃতীয়াংশ এবং তোমার সাথে যারা আছে তাদের একটি দলও জাগে এবং আল্লাহই রাত ও দিনের হিসাব রাখেন। তিনি জানেন যে, তোমরা কখনও এর সঠিক হিসাব রাখতে পারবে না, অতএব আল্লাহ তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন। কাজেই কুরআনের যতটুকু পাঠ করা তোমাদের জন্যে সহজ, ততটুকু পাঠ কর, তিনি (আল্লাহ) জানেন যে, তোমাদের মধ্যে কেউ কেউ অসুস্থ হয়ে পড়বে,

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا هُ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ
كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِئْسَ

كَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ
الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٦﴾

السَّمَاءِ مُنْقَطِرًا بِهِ ط كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٧﴾

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ؕ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ
سَبِيلًا ﴿١٨﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثِي
الَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ
مَعَكَ ط وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ط عَلِمَ أَنَّ
كُن تُحْصِيهِ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ
مِنَ الْقُرْآنِ ط عَلِمَ أَنَّ سَيِّئُونَ مِنْكُمْ مَّرْضُونَ
وَآخِرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِّن
فَضْلِ اللَّهِ ۗ وَآخِرُونَ يُفَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ ۗ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۗ وَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاقْرَءُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ط

অন্যান্যরা আল্লাহর অনুগ্রহ সন্ধানে দেশ ভ্রমণ করবে আবার কেউ আল্লাহর পথে সংগ্রামে লিপ্ত হবে। কাজেই কুরআন হতে যতটুকু সহজসাধ্য তা-ই পাঠ কর এবং নামায প্রতিষ্ঠিত কর, যাকাত প্রদান কর এবং আল্লাহকে দাও উত্তম ঋণ। তোমরা তোমাদের আত্মার মঙ্গলের জন্যে ভাল যা কিছু অগ্রিম প্রেরণ করবে তোমরা তা আল্লাহর নিকট পাবে। ওটা অধিক ভালো এবং পুরস্কার হিসেবে অনেক বড়। আর তোমরা ক্ষমা প্রার্থনা কর আল্লাহর নিকট, নিশ্চয়ই আল্লাহ পরম ক্ষমাশীল, দয়ালু।

وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمَ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤٠﴾

সূরাঃ মুদ্দাস্‌সির মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৬, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٥٦ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. হে কমলাচ্ছাদিত।

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾

২. ওঠো, অতঃপর জীতি প্রদর্শন কর।

قُمْ فَأَنْذِرْ ﴿٢﴾

৩. এবং তোমার রবের শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা কর।

وَرَبِّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾

৪. তোমার পোশাক পবিত্র রাখো,

وَتِبْيَاكَ فَطَهِّرْ ﴿٤﴾

৫. অপবিত্রতা হতে দূরে থাকো,

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾

৬. অধিক লাভের আশায় দান (ইহুসান) করো না।

وَلَا تَمُنْ بِتَسْكَرٍ ﴿٦﴾

৭. এবং তোমার প্রতিপালকের
উদ্দেশ্যে ধৈর্যধারণ কর।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ④

৮. যেদিন শিংগায় ফুস্কার দেয়া হবে।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ⑤

৯. সেদিন হবে এক সংকটের দিন।

فَذَلِكَ يَوْمٌ عَسِيرٌ ⑥

১০. যা কাফিরদের জন্যে সহজ নয়।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ⑦

১১. আমাকে ছেড়ে দাও এবং তাকে
যাকে আমি সৃষ্টি করেছি একাই।

ذُرِّي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ⑧

১২. আমি তাকে বিপুল ধন-সম্পদ
দিয়েছি।

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَبْدُودًا ⑨

১৩. এবং সাক্ষ্য দানকারী পুত্রগণ।

وَبَنِينَ شُهَدَاءَ ⑩

১৪. এবং তাকে দিয়েছি স্বচ্ছন্দ
জীবনের বহু উপকরণ,

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَهْجِيدًا ⑪

১৫. এরপরও সে কামনা করে, যেন
আমি তাকে আরো অধিক দিই।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ⑫

১৬. তা কখনও নয়, সে তো আমার
নিদর্শনসমূহের হিংসা ও বিরুদ্ধচারী।

كَلَّا ط إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ⑬

১৭. আমি অচিরেই তাকে কঠিন
স্থানে উঠাব।

سَأَرْهِفُهُ صَعُودًا ⑭

১৮. সে তো চিন্তা করলো এবং
সিদ্ধান্ত গ্রহণ করলো।

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ⑮

১৯. ধ্বংস হোক সে! কেমন করে সে
এই সিদ্ধান্ত নিলো!

فَقَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ⑯

২০. আরোও ধ্বংস হোক তার!
কেমন করে সে এই সিদ্ধান্তে উপনীত
হলো!

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ⑰

২১. সে আবার চেয়ে দেখলো।

ثُمَّ نَظَرَ ⑱

২২. অতঃপর সে অকুণ্ঠিত ও মুখ
বিকৃত করলো।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ⑲

২৩. অতঃপর সে পিছনে ফিরলো
এবং দম্ভ প্রকাশ করলো।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ⑳

২৪. এবং বললোঃ এটা চিরাচরিত
যাদু ছাড়া আর কিছু নয়,

২৫. এটা তো মানুষেরই কথা।

২৬. আমি তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ
করবো,

২৭. তুমি কি জান “জাহান্নাম” কী?

২৮. ওটা তাদেরকে (জীবিতবস্থায়)
রাখবে না ও (মৃত অবস্থায়) ছেড়ে
দিবে না

২৯. এটা তো শরীরের চামড়া
ঝলসিয়ে দেবে,

৩০. সেখানে (জাহান্নামে) রয়েছে
উনিশ জন (প্রহরী)।

৩১. আমি ফেরেশতাদেরকে
জাহান্নামের প্রহরী করেছি কাফিরদের
পরীক্ষার জন্য আমি তাদের এই
সংখ্যা উল্লেখ করেছি যাতে আহলে
কিতাবের দৃঢ় বিশ্বাস জন্মে,
ঈমানদারদের ঈমান বর্ধিত হয় এবং
বিশ্বাসীগণ এবং আহলে কিতাব যেন
সন্দেহ পোষণ না করেন। এর ফলে
যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তারা ও
কাফিররা বলবেঃ আল্লাহ্ এ বর্ণনা
দ্বারা কি বুঝাতে চেয়েছেন? এইভাবে
আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা পথভ্রষ্ট করেন
এবং যাকে ইচ্ছা হেদায়েত দান
করেন। তোমার প্রতিপালকের
বাহিনী সম্পর্কে একমাত্র তিনিই
জানেন। (জাহান্নামের) এই বর্ণনা
তো সমস্ত মানুষের জন্য নিছক
উপদেশ।

فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْتَرُ ﴿٢٤﴾

إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾

سَاصِلِيهِ سَقَرٌ ﴿٢٦﴾

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ﴿٢٧﴾

لَا تَبْقَى وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

لَوَاحَةٌ لِلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۖ وَمَا جَعَلْنَا

عَدُوَّهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۗ لَيْسَتِ يَتِيمِينَ

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا

إِيمَانًا ۗ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ وَيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ

مَرَضٌ ۗ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا

مَثَلًا ۗ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ

وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۗ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ

إِلَّا هُوَ ۗ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

৩২. কখনই না চন্দ্ৰের শপথ,

كَلَّا وَالْقَمَرِ ۙ

৩৩. শপথ রাত্রির, যখন ওর অবসান ঘটে,

وَاللَّيْلِ إِذَا أَدْبَرَ ۙ

৩৪. শপথ প্রভাতকালের, যখন ওটা হয় আলোকোজ্জ্বল-

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ۙ

৩৫. এটি (জাহান্নাম) বড় ভয়াবহ বিষয়ের অন্যতম,

إِنَّهَا لِأَحَدَى الْكَبِيرِ ۙ

৩৬. সমস্ত মানুষের জন্যে সতর্ককারী

نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ۙ

৩৭. তোমাদের মধ্যে যে অগ্রসর হতে চায় কিংবা যে পিছিয়ে পড়ে, তার জন্যে

لِيَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۙ

৩৮. প্রত্যেক ব্যক্তি নিজ কৃতকর্মের কাছে দায়বদ্ধ,

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۙ

৩৯. তবে দক্ষিণপার্শ্বস্থ ব্যক্তির (ডান হাতে আমলনামা প্রাপ্তগণ) নয়,

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۙ

৪০. তারা জান্নাতে থাকবে এবং তারা পরস্পর পরস্পরকে জিজ্ঞেস করবে।

فِي جَنَّتٍ شَدَّ يَتَسَاءَلُونَ ۙ

৪১. অপরাধীদের সম্পর্কে,

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۙ

৪২. তোমাদেরকে কিসে সাকার (জাহান্নাম)-এ নিষ্ক্ষেপ করেছে?

مَا سَأَلْتُمْ فِي سَفَرِ ۙ

৪৩. তারা বলবেঃ আমরা নামাযীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলাম না।

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۙ

৪৪. আমরা অভাবহস্তদেরকে খাবার দিতাম না,

وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْمُسْكِينِ ۙ

৪৫. এবং আমরা সমালোচনা-কারীদের সাথে সমালোচনায় মগ্ন থাকতাম।

وَكُنَّا نَحْوُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۙ

৪৬. আমরা কর্মফল দিবসকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করতাম,

وَكُنَّا نَكْذِبُ يَوْمَ الدِّينِ ۙ

৪৭. আমাদের নিকট মৃত্যুর আগমন পর্যন্ত ।

حَتَّىٰ آتِنَا الْيَقِينَ ۝

৪৮. ফলে (সে সময়) শাফায়াতকারীদের শাফায়াত তাদের কোন কাজে আসবে না ।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۝

৪৯. তাদের কী হলো যে, উপদেশবাণী (কুরআন) হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়?

فَبَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۝

৫০. তারা যেন ছুটাছুটিকারী গাধা ।

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝

৫১. যা সিংহের সম্মুখ হতে পলায়নপর ।

فَزَتْ مِنْ قُورَةٍ ۝

৫২. বরং তাদের প্রত্যেকেই চায় যে, তাকে একটি উন্মুক্ত কিতাব দেয়া হোক ।

بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝

৫৩. কখনও নয়, বরং তারা আদৌ আখিরাতের ভয় করে না ।

كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝

৫৪. কখনও নয়, ওটা তো (কুরআনই) উপদেশ বাণী ।

كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ۝

৫৫. অতএব, যার ইচ্ছা সে এটা হতে উপদেশ গ্রহণ করুক ।

فَمَنْ شَاءَ ذَكَّرَهُ ۝

৫৬. আল্লাহর ইচ্ছা ব্যতিরেকে কেউ উপদেশ গ্রহণ করবে না একমাত্র তিনিই ভয়ের যোগ্য এবং তিনিই ক্ষমা করার অধিকারী ।

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ
وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

সূরাঃ কিয়ামাহ্, মাঝী

(আয়াতঃ ৪০, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. আমি শপথ করছি কিয়ামত
দিবসের,

২. আরো শপথ করছি তিরস্কারকারী
আত্মার।

৩. মানুষ কি মনে করে যে, আমি
তার হাড়গুলো কোনক্রমে একত্র
করতে পারবো না।

৪. বরং হ্যাঁ অবশ্যই আমি তার
অঙ্গুলীর অগ্রভাগ পর্যন্ত পুনর্বিন্যস্ত
করতে সক্ষম।

৫. তবুও মানুষ ভবিষ্যতেও অপকর্ম
করতে চায়;

৬. সে প্রশ্ন করে কখন কিয়ামত
দিবস আসবে?

৭. অতঃপর যখন চক্ষু স্থির হয়ে
যাবে,

৮. এবং চাঁদ আলোহীন হয়ে পড়বে,

৯. যখন সূর্য ও চন্দ্রকে একত্রিত করা
হবে,

১০. সেদিন মানুষ বলবেঃ আজ
পালাবার স্থান কোথায়?

১১. কখনো না. কোন আশ্রয়স্থল
নেই।

১২. সেদিন তোমার প্রতিপালকেরই
নিকট দাঁড়াতে হবে।

سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٠ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ①

وَلَا أَقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ②

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ ③

بَلَى قَدِيرِينَ عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ ④

بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ⑤

يَسْئَلُ أَيَّانَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ⑥

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ⑦

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ⑧

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ⑨

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْرُ ⑩

كَلَّا لَا وَزَرَ ⑪

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ⑫

১৩. সেদিন মানুষকে অবহিত করা হবে যা সে, অগ্রে পাঠিয়েছে ও পশ্চাতে রেখে গেছে।

يُنَبِّئُوا الْإِنْسَانَ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝٧

১৪. বরং মানুষ নিজের সম্বন্ধে ভালো করে জানে,

بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بِصِيرَةٍ ۝٨

১৫. যদিও সে নানা অজুহাত পেশ করে।

وَلَوْ أَلْفٌ مَّعَازِيرَ ۝٩

১৬. তাড়াতাড়ি ওহী আয়ত্ব করার জন্যে তুমি তোমার জিহ্বা ওর সাথে দ্রুত সঞ্চালন করো না।

لَا تَحْرِكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝١٠

১৭. তা সংরক্ষণ ও পাঠ করাবার দায়িত্ব আমারই।

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝١١

১৮. সুতরাং যখন আমি তা (জিবরাঈল-এর মাধ্যমে) পাঠ করি তুমি তখন সেই পাঠের অনুসরণ কর।

فَإِذَا قَرَأَهُ فَأْتِعْ بِقُرْآنِهِ ۝١٢

১৯. অতঃপর এর বিশদ ব্যাখ্যার দায়িত্ব আমারই।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝١٣

২০. কখনও না, বরং তোমরা প্রকৃতপক্ষে দ্রুত লাভ করাকে (দুনিয়াকে) ভালবাস;

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝١٤

২১. এবং আখিরাতকে উপেক্ষা কর।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝١٥

২২. কোন কোন মুখমন্ডল সেদিন উজ্জ্বল হবে,

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاطِرَةٌ ۝١٦

২৩. নিজেরা প্রতিপালকের দিকে তাকিয়ে থাকবে।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝١٧

২৪. কোন কোন মুখমন্ডল সেদিন বিবর্ণ হবে

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝١٨

২৫. এই আশঙ্কায় যে, এক ধ্বংসকারী বিপর্যয় আসন্ন।

تَظُنُّنَّ أَنَّ يَنْفَعَلَنَّ بِهَا فَاتُورَةٌ ۝١٩

২৬. কখনই না, যখন প্রাণ ওষ্ঠাগত হবে,

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝٢٠

২৭. এবং বলা হবেঃ কে তাকে
ঝাড়-ফুক করবে (রক্ষার জন্য)?

وَقِيلَ مَنْ مَكَّنَ رَاقِي ۝

২৮. এবং মনে করবে এটা
বিদায়ক্ষণ।

وَوَطَّنَ أَتَّهُ الْفِرَاقُ ۝

২৯. এবং পায়ের সাথে পা জড়িয়ে
যাবে।

وَالْتَقَّتْ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝

৩০. আজ তোমার প্রতিপালকের
নিকট যাওয়ার দিন।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝

৩১. সে বিশ্বাস করেনি এবং নামাযও
পড়েনি।

فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّى ۝

৩২. বরং সে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করেছিল
ও মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিল।

وَلَكِنَّ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝

৩৩. অতঃপর সে তার পরিবার-
পরিজনের নিকট ফিরে গিয়েছিল
দম্ভভরে,

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَمْتَطِي ۝

৩৪. এটি তোমার জন্য প্রযোজ্য এবং
এটা তোমাকেই মানায়।

أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝

৩৫. হ্যাঁ! এটা তোমারই প্রাপ্য,
তুমিই এর হকদার।

ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝

৩৬. মানুষ কি মনে করে যে, তাকে
নিরর্থক ছেড়ে দেয়া হবে?

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۝

৩৭. সে কি নিষ্কিণ্ড শুক্রবিন্দু ছিল
না?

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُنثَىٰ ۝

৩৮. অতঃপর সে রক্তপিণ্ডে পরিণত
হয়। তারপর তাকে আকৃতি দান
করেন এবং সূঠাম করেন।

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَحَاقَ فَسَوَىٰ ۝

৩৯. তারপর তিনি তা হতে সৃষ্টি
করেন জোড়া জোড়া পুরুষ ও নারী।

فَجَعَلَ مِنْهُ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝

৪০. তবুও কি তিনি মৃতকে
পুনর্জীবিত করতে সক্ষম নন?

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۝

সূরাঃ দাহর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩১, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

سُورَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣١ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. মানুষের উপর অন্তহীন মহাকালের এমন এক সময় কি এসেছিল যখন সে উল্লেখযোগ্য কিছুই ছিল না?

هَلْ آتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا

مَذْمُورًا ①

২. আমি তো মানুষকে সৃষ্টি করেছি সংমিশ্রিত শুক্র বিন্দু হতে, তাকে পরীক্ষা করবো, এই জন্যে আমি তাকে শ্রবণ ও দৃষ্টিশক্তি দিয়েছি।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ ۗ نَّبْتَلِيهِ

فَجَعَلْنَاهُ سَبِيحًا بَصِيرًا ②

৩. আমি তাকে পথ দেখিয়েছি এরপর হয় সে কৃতজ্ঞ হবে, নয়তো হবে অকৃতজ্ঞ।

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ ۖ إِمَّا شَاكِرًا ۖ وَإِمَّا كَفُورًا ③

৪. আমি কাফিরদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছি শৃঙ্খল, বেড়ি ও লেলিহান অগ্নি।

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ④

৫. নিশ্চয়ই সৎকর্মশীলরা পান করবে এমন পানীয় যার মিশ্রণ হবে কাফুর (কপূর)

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا

كَافُورًا ⑤

৬. এমন একটি ঝর্ণা যা হতে আল্লাহর বান্দারা পান করবে, তারা এই ঝর্ণাকে যথা ইচ্ছা প্রবাহিত করবে।

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا

تَفْجِيرًا ⑥

৭. তারা মানত পূর্ণ করে এবং সেদিনের ভয় করে, যেদিনের অনিষ্টতা হবে ব্যাপক।

يَوْمُونَ بِالْقَدْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ

مُسْتَضِيرًا ⑦

৮. এবং খাদ্যের প্রতি আসক্তি সত্ত্বেও অভাবগ্রস্ত, ইয়াতীম ও বন্দীকে আহাৰ্য দান করে,

وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا

وَآسِيرًا ⑧

৯. (এবং বলেঃ) শুধু আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের উদ্দেশ্যে আমরা তোমাদেরকে খাদ্য দান করি, আমরা তোমাদের নিকট হতে কোন প্রতিদান চাই না, কৃতজ্ঞতাও নয়।

১০. আমরা আশঙ্কা করি আমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে এক ভীতিপ্রদ ভয়ঙ্কর দিনের।

১১. পরিণামে আল্লাহ তাদেরকে রক্ষা করবেন সে দিবসের অনিষ্ট হতে এবং তাদেরকে উৎফুল্লতা ও আনন্দ দান করবেন।

১২. আর তাদের ধৈর্যশীলতার পুরস্কার স্বরূপ তাদেরকে জান্নাত ও রেশমী পোশাক দান করবেন।

১৩. সেখানে তারা সুসজ্জিত আসনে হেলান দিয়ে বসবে তারা সেখানে অতিশয় গরম অথবা অতিশয় শীত কোনটিই দেখবে না।

১৪. জান্নাতের বৃক্ষছায়া তাদের উপর ঝুকে থাকবে এবং ওর ফলমূল সম্পূর্ণরূপে তাদের আয়ত্বাধীন থাকবে।

১৫. তাদেরকে পরিবেশন করা হবে রৌপ্যপাত্রে এবং কাঁচের মত স্বচ্ছ পান পাত্রে—

১৬. রৌপ্য জাতীয় কাঁচের পাত্রে, পরিবেশনকারীরা যথাযথ পরিমাণে তা পূর্ণ করবে।

১৭. সেখানে তাদেরকে পান করতে দেয়া হবে যানজাবীল (আদা দিয়ে তৈরি) মিশ্রিত পানীয়,

إِنَّمَا نَطْعُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً
وَلَا شُكُورًا ⑨

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ⑩

فَوَقَّعَهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّهْمُ نَصْرَةً
وَسُرُورًا ⑪

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ⑫

مُتَّكِنِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا
شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ⑬

وَدَابِيَّةٍ عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا
تَذْلِيلًا ⑭

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِأَنْبِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ
كَأَنَّ قَوَارِيرًا ⑮

قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ⑯

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ⑰

১৮. জান্নাতের এক বর্ণা থাকবে যার নাম হবে সালসাবীল।

عَيْنًا فِيهَا تُسْقَى سَالْسَبِيلًا ﴿١٨﴾

১৯. তাদেরকে পরিবেশন করবে চির কিশোরগণ, যখন তাদেরকে দেখবে মনে করবে তারা যেন ছড়ানো-ছিটানো মুজা,

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ﴿١٩﴾

إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ﴿٢٠﴾

২০. তুমি যখন সেখানে দেখবে, দেখতে পাবে কত নিয়ামত এবং বিশাল রাজ্য।

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾

২১. তাদের পরিধানে থাকবে মিহি রেশমের সবুজ পোশাক, তারা অলংকৃত হবে রৌপ্য নির্মিত কংকনে, আর তাদের প্রতিপালক তাদেরকে পান করাবেন বিশুদ্ধ পানীয়।

عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌ وَاسْتَبْرَقٌ ز

وَحُلُوفٌ أَسْوَدٌ مِنْ فِضَّةٍ ۗ وَسَقَمَهُمْ رَبُّهُمْ

شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾

২২. অবশ্যই, এটা তোমাদের পুরস্কার এবং তোমাদের কর্মপ্রচেষ্টা স্বীকৃত।

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيَكُمْ

مَشْكُورًا ﴿٢٢﴾

২৩. আমি তোমার ওপরে কুরআন ক্রমান্বয়ে অবতীর্ণ করেছি,

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾

২৪. অতএব তুমি তোমার প্রতিপালকের নির্দেশের জন্য ধৈর্যধারণ কর এবং তাদের মধ্যকার পাপি অথবা কাফিরের আনুগত্য করো না।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا

أَوْ كُفُورًا ﴿٢٤﴾

২৫. এবং তোমাদের প্রতিপালকের নাম স্মরণ কর সকাল-সন্ধ্যায়।

وَإِذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾

২৬. রাতে তাঁর জন্য সিজদায় নত হও এবং রাতে দীর্ঘ সময় তাঁর পবিত্রতা বর্ণনা কর।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾

২৭. নিশ্চয়ই তারা ভালবাসে দ্রুত লাভ করাকে এবং তারা পরবর্তী কঠিন দিবসকে উপেক্ষা করে চলে।

إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ

وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾

২৮. আমি তাদেরকে সৃষ্টি করেছি এবং আমি তাদের গঠন সুদৃঢ় করেছি। আমি যখন ইচ্ছা করবো তখন তাদের পরিবর্তে তাদের অনুরূপ এক জাতিকে প্রতিষ্ঠিত করবো।

২৯. এটা এক উপদেশ বাণী, অতএব যার ইচ্ছা সে তার প্রতিপালকের দিকে যাওয়ার পথ অবলম্বন করুক।

৩০. তোমরা ইচ্ছা করবে না যদি না আল্লাহ ইচ্ছা করেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

৩১. তিনি যাকে ইচ্ছা তাঁর অনুগ্রহের অন্তর্ভুক্ত করেন; আর যালিমরা, তাদের জন্যে তিনি প্রস্তুত রেখেছেন যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

نَحْنُ خَلَقْنَهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا
بَدَلْنَا أُمَّتَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾

إِنَّ هَذِهِ تَذَكُّرٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ
سَبِيلًا ﴿٢٩﴾

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۗ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾

সূরাঃ মুরসালাত্, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫০, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)।

১. শপথ কল্যাণ স্বরূপ প্রেরিত বায়ুর,

২. আর প্রলয়ঙ্কারী ঝড়ের,

৩. শপথ বহনকারী বায়ুর,

৪. আর (মেঘপুঞ্জ) বিচ্ছিন্নকারী বায়ুর,

৫. এবং তার যে মানুষের অন্তরে পৌঁছিয়ে দেয় উপদেশ-

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٥٠ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ﴿١﴾

فَالْعَصْفِ عَصْفًا ﴿٢﴾

وَالنَّشْرَاتِ نَشْرًا ﴿٣﴾

فَالْفِرْقَاتِ فَرْقًا ﴿٤﴾

فَالْبَلْقِيَّتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾

৬. অনুশোচনা স্বরূপ বা সতর্কতা স্বরূপ।

عُدْرًا أَوْ نُذْرًا ﴿٧﴾

৭. নিশ্চয়ই তোমাদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দেয়া হচ্ছে তা অবশ্যই সংঘটিত হবে।

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ﴿٨﴾

৮. যখন নক্ষত্র রাজির আলো নিভিয়ে দেয়া হবে,

فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ﴿٩﴾

৯. যখন আকাশ ফেঁড়ে দেয়া হবে

وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ﴿١٠﴾

১০. এবং যখন পর্বতমালা ধুনিত হবে,

وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ﴿١١﴾

১১. এবং রাসূলগণকে নির্ধারিত সময়ে উপস্থিত করা হবে,

وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِتَتْ ﴿١٢﴾

১২. কোন দিবসের জন্যে বিলম্বিত করা হচ্ছে?

لَا يَوْمٍ يُؤَمَّرُ الْإِجْلَتْ ﴿١٣﴾

১৩. তুমি কী জান চূড়ান্ত বিচার দিবসের জন্যে?

لِيَوْمِ الْقَضِئِ ﴿١٤﴾

১৪. চূড়ান্ত বিচার দিবস সম্বন্ধে

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْقَضِئِ ﴿١٥﴾

১৫. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে।

وَيَلُومُنَّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٦﴾

১৬. আমি কী পূর্ববর্তীদেরকে ধ্বংস করিনি?

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

১৭. আবার আমি পরবর্তীদেরকে তাদের অনুগামী করবো।

ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ﴿١٨﴾

১৮. অপরাধীদের সাথে আমি এরূপই করে থাকি।

كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿١٩﴾

১৯. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে।

وَيَلُومُنَّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٠﴾

২০. আমি কি তোমাদেরকে নগণ্য পানি হতে সৃষ্টি করিনি?

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ﴿٢١﴾

২১. অতঃপর আমি ওটাকে স্থাপন করেছি নিরাপদ স্থানে,

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿٢٢﴾

২২. এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত,

إِلَى قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢٢﴾

২৩. আমি একে গঠন করেছি
পরিমিতভাবে, অতএব আমি কত
নিপুণ নিরূপণকারী।

فَقَدَرْنَا ۗ فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা
আরোপকারীদের জন্যে।

وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾

২৫. আমি কি ভূমিকে একত্রিতকারী
রূপে বানাই নি,

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

২৬. জীবিত ও মৃতের জন্যে?

أَحْيَاءَ ۖ وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾

২৭. আমি তাতে স্থাপন করেছি সুদৃঢ়
উচ্চ পর্বতমালা এবং তোমাদেরকে
পান করিয়েছি সুপেয় পানি।

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شِجَاتٍ ۚ وَأَسْقَيْنَكُم مَّاءً فَرَاتًا ﴿٢٧﴾

২৮. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা
আরোপকারীদের জন্যে।

وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾

২৯. তোমরা চল তারই দিকে যাকে
মিথ্যা মনে করতে।

إِنطَلِقُوا إِلَى مَا كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾

৩০. চল সে ছায়ার দিকে যার তিনটি
শাখা রয়েছে,

إِنطَلِقُوا إِلَى ظِلِّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾

৩১. যে ছায়া শীতল নয় এবং যা
হতে রক্ষাও করে না অগ্নিশিখা,

لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ النَّهَبِ ﴿٣١﴾

৩২. নিশ্চয়ই সে নিষ্ফল করবে
প্রাসাদতুল্য স্কুলিঙ্গ।

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

৩৩. যা দেখে মনে হবে হলুদ বর্ণের
উট।

كَأَنَّهُ جِلْتُ صُفْرٍ ﴿٣٣﴾

৩৪. সেই দিন দুর্ভোগ মিথ্যা-
রোপকারীদের জন্যে।

وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾

৩৫. এটা এমন একদিন যেদিন তারা
কিছু বলতে পারবে না।

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾

৩৬. এবং না তাদেরকে অনুমতি
দেয়া হবে ওয়র পেশ করার।

وَلَا يُؤَدُّن لَهُمْ فِيعْتَدِرُونَ ﴿٣٦﴾

৩৭. সেই দিন ধ্বংস মিথ্যারোপ
কারীদের জন্যে

وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

৩৮. এটা চূড়ান্ত ফায়সালার দিন, আমি একত্রিত করেছি তোমাদেরকে এবং পূর্ববর্তীদেরকে ।

هَذَا يَوْمَ الْقُصَلِ جَمَعْنَكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

৩৯. তোমাদের কোন অপকৌশল থাকলে তা প্রয়োগ কর আমার বিরুদ্ধে ।

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ﴿٣٩﴾

৪০. সেই দিন ধ্বংস মিথ্যা-রোপকারীদের জন্যে ।

وَيَلُؤْ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

৪১. মুত্তাকীরা থাকবে সুশীতল ছায়ায় ও ঝর্ণাবহুল স্থানে ।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾

৪২. এবং যে ফল-মূল তারা কামনা করবে ।

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾

৪৩. তোমরা মজা করে খাও এবং পান কর তোমাদের কাজের বিনিময় স্বরূপ ।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

৪৪. এভাবে আমি সৎকর্মপরায়ণদেরকে পুরস্কৃত করে থাকি ।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾

৪৫. সেদিন ধ্বংস মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে ।

وَيَلُؤْ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

৪৬. তোমরা খাও, আর আনন্দ-ফুর্তি কর অল্প কিছুদিন, প্রকৃতপক্ষে তো তোমরা অপরাধী ।

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾

৪৭. সেদিন ধ্বংস মিথ্যা-আরোপকারীদের জন্যে ।

وَيَلُؤْ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

৪৮. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা রুকু কর (নামায আদায় কর) তখন তারা রুকু করে না ।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾

১। আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমাকে লোকদের সঙ্গে জিহাদ করার হুকুম দেয়া হয়েছে। যতক্ষণ না তারা বলে, 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ' অর্থাৎ "আল্লাহ ছাড়া সত্য কোন মা'বুদ নেই।" যখন তারা তা বলবে এবং আমাদের মত নামায পড়বে, আমাদের কিবলার দিকে মুখ করবে এবং আমাদের যবেহ করা প্রাণী খাবে, তখন তাদের রক্ত ও সম্পদ আমাদের জন্য হারাম সাব্যস্ত হবে। তবে ইসলাম তাদের জন্য যে হক নির্ধারণ করে দিয়েছে তা ছাড়া এবং তাদের আন্তরিকতার হিসেব আল্লাহর নিকট। (বুখারী. হাদীস নং ৩৯)

৪৯. সেদিন ধ্বংস মিথ্যা
আরোপকারীদের জন্যে।

৫০. সুতরাং তারা এর (কুরআনের)
পরিবর্তে আর কোন কথায় বিশ্বাস
স্থাপন করবে?

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

সূরাঃ নাবা, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪০ রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٠ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. এরা পরস্পর কোন বিষয়ে
জিজ্ঞাসাবাদ করছে?

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ①

২. মহান সংবাদটি সম্বন্ধে,

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيمِ ②

৩. যে বিষয়ে তারা মতবিরোধ
করছে!

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ③

৪. অবশ্যই (তাদের ধারণা অবাস্তব)
তারা শীঘ্রই তা জানতে পারবে;

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ④

৫. অতঃপর বলি অবশ্যই তারা তা
অচিরেই অবগত হবে।

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ⑤

৬. আমি কি পৃথিবীকে বিছানা
বানিয়ে দেয়নি?

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا ⑥

৭. ও পাহাড়সমূহকে পেরেক রূপে
গেঁড়ে দেইনি?

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ⑦

৮. জোড়ায় জোড়ায় সৃষ্টি করেছি
আমি তোমাদেরকে,

وَوَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ⑧

৯. তোমাদের নিদ্রাকে করে দিয়েছি
বিশ্রামের মাধ্যম,

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ⑨

১০. আর রাত্তিকে করেছি আবরণ,

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ⑩

১১. এবং দিবসকে করেছি উপযোগী
জীবিকা আহরণের জন্যে।

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ⑪

১২. আর নির্মাণ করেছি তোমাদের
ওপর সুদৃঢ় সাত আকাশ।

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ⑫

১৩. এবং সৃষ্টি করেছি একটি অতি
উজ্জ্বল প্রদীপ (সূর্য)।

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ⑬

১৪. আর বর্ষণ করেছি মেঘমালা
হতে অবিশ্রান্ত পানি।

وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ⑭

১৫. এর দ্বারা আমি উৎপন্ন করি শস্য
ও উদ্ভিদ,

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ﴿١٥﴾

১৬. এবং নিবিড়-ঘন বাগানসমূহ।

وَجَنَّاتٍ أَلْفَافًا ﴿١٦﴾

১৭. নিশ্চয়ই নির্ধারিত আছে বিচার
দিবস;

إِنَّ يَوْمَ الْفُصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿١٧﴾

১৮. যে দিন শিংগায় ফুৎকার দেয়া
হবে তখন তোমরা দলে দলে
আসবে,

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

১৯. আকাশকে খুলে দেয়া হবে,
ফলে ওটা হয়ে যাবে বহু দরজা
বিশিষ্ট।

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾

২০. এবং চলমান করা হবে
পাহাড়সমূহকে, ফলে সেগুলো
মরীচিকায় পরিণত হবে।

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾

২১. নিশ্চয়ই জাহান্নাম ওৎপেতে
রয়েছে;

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾

২২. যা সীমালঙ্ঘনকারীদের আশ্রয়
স্থল।

لِلظَّالِمِينَ مَا بَأْسًا ﴿٢٢﴾

২৩. সেখানে তারা যুগ যুগ ধরে
থাকবে,

لِيُثَبِّتِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

২৪. সেখানে তারা কোন শীতল
বস্তুর স্বাদ এবং কোন পানীয়ও পাবে
না,

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

২৫. ফুটন্ত পানি ও পূজ ব্যতীত;

إِلَّا حَيْبَمًا وَعَسَاقًا ﴿٢٥﴾

২৬. এটাই পরিপূর্ণ প্রতিফল।

جَزَاءٌ وَفَاءًا ﴿٢٦﴾

২৭. তারা কখনো হিসাব-নিকাশের
আশা পোষণ করতো না,

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

২৮. এবং তারা দৃঢ়তার সাথে আমার
আয়াতসমূহকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করেছিল।

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ﴿٢٨﴾

২৯. আমি সবকিছুই গণনা করেছি
লিখিতভাবে।

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ﴿٢٩﴾

৩০. অতঃপর তোমরা আশ্বাদ গ্রহণ কর, এখন আমি তো তোমাদের যাতনাই শুধু বৃদ্ধি করতে থাকবো।

فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝

৩১. নিশ্চয়ই মুত্তাকীদের জন্যে সফলতা;

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝

৩২. (সুশোভিত) বাগানসমূহ ও নানাবিধ আঙ্গুর;

حَدَائِقٍ وَأَعْنَابًا ۝

৩৩. এবং সমবয়স্কা নব্য কুমারীবৃন্দ;

وَكَوَاعِبَ أُنثَىٰ ۝

৩৪. এবং পরিপূর্ণ পানপাত্র।

وَكَأْسًا مِّمَّا قُتِبَ ۝

৩৫. সেখানে তারা অসার ও মিথ্যা বাক্য শুনবে না;

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِدًّا ۝

৩৬. তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে যথেষ্ট পুরস্কার ও অনুগ্রহের প্রতিদান।

جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ۝

৩৭. যিনি প্রতিপালক আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও ওগুলোর মধ্যবর্তী সবকিছুর, যিনি দয়াময়; তাঁর নিকট কারো কথা বলার শক্তি থাকবে না।

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ ۝

لَا يَلْبِسُونَ مِنْهُ خُطَابًا ۝

৩৮. সেদিন রুহ (জিবরীল) ও ফেরেশতাগণ সারিবদ্ধভাবে দাঁড়াবেন; দয়াময় যাকে অনুমতি দিবেন তিনি ব্যতীত অন্যেরা কথা বলতে পারবে না এবং সে সঠিক কথা বলবে।

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا ۝ لَا يَتَكَبَّرُونَ

إِلَّا مَن أِذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝

৩৯. এ দিবস সুনিশ্চিত; অতএব যে চায়, সে যেন তার প্রতিপালকের নিকট স্থান করে নেয়।

ذَلِكَ الْيَوْمِ الْحَقِّ ۝ فَمَنُ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ

رَبِّهِ مَأْتًا ۝

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ যখন তোমাদের কেউ তাঁর ইসলামকে সুন্দর করে তোলে, তখন সে যে ভাল কাজ করে তার বিনিময় দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত তার জন্য সওয়াব লেখা হয়; কিন্তু সে যে মন্দ কাজ করে তার বিনিময় তার জন্য (কেবলমাত্র) ততটুকুই লেখা হয়। (বুখারীঃ ৪২)

৪০. নিশ্চয়ই আমি তোমাদেরকে নিকটতম শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করলাম; সেদিন মানুষ তার হাতের অর্জিত কৃতকর্মকে দেখবে আর কাফির বলতে থাকবেঃ হায়! আমি, যদি মাটি হয়ে যেতাম!

إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ لِيَلَيْتَنِي كُنْتُ تُرَابًا ﴿٤٠﴾

সূরাঃ নাযি'আত, মাঙ্কী

(আয়াতঃ ৪৬ রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে

(শুরু করছি)

سُورَةُ الزُّعْتِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣٦ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ ঐ সমস্ত ফেরেশতার যারা ডুব দিয়ে নির্মমভাবে রুহ টেনে বের করে,

وَالزُّعْتِ غَرْقًا ﴿١﴾

২. শপথ ঐ সমস্ত ফেরেশতার যারা সহজভাবে রুহ বের করে নিয়ে যায়।

وَالنَّشِطِ نَشْطًا ﴿٢﴾

৩. শপথ ঐ সমস্ত ফেরেশতার যারা তীব্র গতিতে সাঁতরে চলে,

وَالسَّيْحِ سَيْحًا ﴿٣﴾

৪. অতঃপর শপথ দ্রুত বেগে অগ্রসর হয় সে সমস্ত ফেরেশতার।

فَالسَّيْقِ سَيْقًا ﴿٤﴾

৫. অতঃপর শপথ যারা সকল কর্ম নির্বাহ করে, তাদের।

فَالْمُدْبِرِ أَمْرًا ﴿٥﴾

৬. সেদিন প্রকম্পকারী প্রকম্পিত হবে,

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ﴿٦﴾

৭. তাকে অনুসরণ করবে পরবর্তী প্রকম্পন।

تَتَّبِعُهَا الرَّادِفَةُ ﴿٧﴾

৮. হৃদয়সমূহ সেদিন ভীত-সন্ত্রস্ত হবে,

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ﴿٨﴾

৯. তাদের দৃষ্টিসমূহ হবে ভীত-বিহ্বলতায় অবনমিত।

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ﴿٩﴾

১০. তারা বলেঃ আমরা কি পূর্বাভাসে প্রত্যাবর্তিত হবই ?

يَقُولُونَ إِنَّا لَنَرُدُّوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۝

১১. গলিত হাড্ডিতে পরিণত হওয়ার পরও ।

إِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخْرَةً ۝

১২. তারা বলেঃ তা-ই যদি হয় তবে তো এটা বড়ই লোকসানের প্রত্যাবর্তন!

قَالُوا تِلْكَ إِذَا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝

১৩. এটা তো একটি ভয়ঙ্কর ধমক মাত্র;

وَأَنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ۝

১৪. ফলে হঠাৎ প্রশস্ত ময়দানে তাদের আবির্ভাব হবে ।

فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝

১৫. (হে মুহাম্মাদ ﷺ) তোমার নিকট মুসা (عَلَيْهِ السَّلَام)-এর কাহিনী পৌছেছে কি?

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝

১৬. যখন তাঁর প্রতিপালক পবিত্র তোওয়া উপত্যকায় তাকে ডেকে বলেছিলেনঃ

إِذْ تَأَذَّرَ رَبُّهُ بِالْأَوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝

১৭. ফিরআ'উনের নিকট যাও, সে তো সীমালঙ্ঘন করেছে,

إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۝

১৮. এবং (তাকে) বলঃ তুমি কি পবিত্র হতে চাও?

فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ تَزُولَ ۝

১৯. আর আমি তোমাকে তোমার প্রতিপালকের দিকে পথ দেখাবো যাতে তুমি তাঁকে ভয় কর ।

وَ أَهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ۝

২০. অতঃপর তিনি তাকে বড় নিদর্শন দেখালেন ।

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝

২১. কিন্তু সে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করলো এবং অবাধ্য হলো ।

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝

২২. আবার সে পিছনে ফিরে পূর্বের কর্মে সচেতন হলো ।

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝

২৩. সে সকলকে সমবেত করলো এবং ঘোষণা করলো,

وَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝

২৪. অতঃপর বললোঃ আমিই তোমাদের সর্বোচ্চ প্রতিপালক।

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى ﴿٢٤﴾

২৫. ফলে আল্লাহ তাকে পরকালের ও ইহকালের আযাবে পাকড়াও করলেন,

فَأَخَذَهُ اللَّهُ تَكَالُ الْإِخْرَةِ وَالْأُولَى ﴿٢٥﴾

২৬. এতে অবশ্যই উপদেশ রয়েছে যে ভয় করে তার জন্যে।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَى ﴿٢٦﴾

২৭. তোমাদেরকে সৃষ্টি করা কঠিন কাজ, না আকাশের? তিনিই এটা নির্মাণ করেছেন।

ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾

২৮. তিনি তার ছাদ সুউচ্চ ও সুবিন্যস্ত করেছেন।

رَفَعَ سَكِّهَا فَسَوَّيَهَا ﴿٢٨﴾

২৯. এবং তিনি এর রজনীকে অন্ধকারাচ্ছন্ন করেছেন এবং স্পষ্ট করেছেন তার দিবসকে।

وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾

৩০. এবং পৃথিবীকে এরপর বিস্তৃত করেছেন।

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ﴿٣٠﴾

৩১. তিনি তা'থেকে বের করেছেন পানি ও উদ্ভিদ,

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَهَا ﴿٣١﴾

৩২. আর পাহাড়সমূহকে তিনি দৃঢ়ভাবে গেঁড়ে দিয়েছেন,

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

৩৩. এসব তোমাদের ও তোমাদের জন্তুগুলোর ভোগের সামগ্রীরূপে।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

৩৪. অতঃপর যখন মহা বিপর্যয় (কিয়ামত) উপস্থিত হবে,

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ﴿٣٤﴾

৩৫. সেদিন মানুষ যা করেছে তা স্মরণ করবে,

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ﴿٣٥﴾

৩৬. এবং প্রকাশ করা হবে জাহান্নামকে যে দেখবে তার জন্যে।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَى ﴿٣٦﴾

৩৭. অনন্তর যে সীমালঙ্ঘন করেছে,

فَأَمَّا مَنْ طَغَى ﴿٣٧﴾

৩৮. এবং দুনিয়ার জীবনকে অগ্রাধিকার দিয়েছে,

وَإِثْرَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

৩৯. নিশ্চয়ই জাহান্নামই হবে তার ঠিকানা।

৪০. পক্ষান্তরে যে নিজ প্রতিপালকের সামনে দাঁড়ানোর ভয় রেখেছে এবং কুপ্রবৃত্তি হতে নিজেকে বিরত রেখেছে,

৪১. অবশ্য জান্নাতই হবে তার ঠিকানা।

৪২. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করে কিয়ামত সম্পর্কে যে, ওটা কখন ঘটবে?

৪৩. এর আলোচনার সাথে তোমার কি সম্পর্ক?

৪৪. এর চরম জ্ঞান তো তোমার প্রতিপালকের নিকট,

৪৫. যে ওর ভয় রাখে তুমি কেবল তারই সতর্ককারী।

৪৬. সেদিন তারা যেন এটা দেখবে, তাতে তাদের মনে হবে যে, যেন তারা (পৃথিবীতে) এক সন্ধ্যা অথবা এক সকালের অধিক অবস্থান করেনি।

সূরাঃ আবাসা, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪২ রুকূঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আদ্বাহর নামে
(গুরু করছি)

১. ক্র কুঞ্চিত করল এবং মুখ ফিরিয়ে নিলো,

২. কারণ তার নিকট অন্ধ লোকটি এসেছিল।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۖ

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ
عَنِ الْهَوَىٰ ۖ

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۖ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا ۖ

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ۖ

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَّنْ يَحْشَاهَا ۖ

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً
أَوْ ضُحَاهُ ۖ

سُورَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۲۲ رُكُوعُهَا ۱

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ۖ

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ۖ

৩. তুমি কী জানো সে হয় তো
পরিশুদ্ধ হতো,

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يُزَكَّى ⑥

৪. অথবা উপদেশ গ্রহণ করতো,
ফলে উপদেশ তার উপকারে
আসতো।

أَوْ يُدْرِكُ فَيَنْتَفَعَهُ الذِّكْرَى ⑦

৫. পক্ষান্তরে যে পরওয়া করে না,

أَمَّا مَنِ اسْتَعْتَفَى ⑧

৬. তুমি তার প্রতি মনোযোগ
দিচ্ছে।

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّى ⑨

৭. অথচ সে নিজে পরিশুদ্ধ না হলে
তোমার কোন দায়িত্ব নেই,

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَكَّى ⑩

৮. পক্ষান্তরে যে তোমার নিকট ছুটে
আসলো,

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَى ⑪

৯. আর সে সশংকচিত্ত, (ভীত
অবস্থায়)

وَهُوَ يَخْشَى ⑫

১০. তুমি তাকে অবজ্ঞা করলে!

فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّى ⑬

১১. কখনও নয়, এটা তো
উপদেশবাণী;

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ⑭

১২. যে ইচ্ছা করবে সে এটা স্মরণ
রাখবে,

فَمَنْ شَاءَ ذَكَّرَهُ ⑮

১৩. ওটা সম্মানিত কিতাবে (লাওহ
মাহফুজে) লিপিবদ্ধ

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ⑯

১৪. যেটা উচ্চ মর্যাদাসম্পন্ন পবিত্র।

مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ⑰

১৫. এমন লেখকদের হাতে থাকে।

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ⑱

১৬. যিনি সম্মানিত ও সৎ।

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ⑲

১৭. মানুষ ধ্বংস হোক! সে কত
অকৃতজ্ঞ!

قِيلَ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ⑳

১৮. তাকে তিনি কোন্ বস্তু হতে সৃষ্টি
করেছেন?

مِنْ أَيْ شَيْءٍ خَلَقَهُ ㉑

১৯. শুক্র বিন্দু হতে তিনি তাকে সৃষ্টি
করেন, পরে তার তাকদীর নির্ধারণ
করেন,

مِنْ نُطْفَةٍ طَخَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ㉒

২০. অতঃপর তার জন্যে পথ সহজ করে দেন;

ثُمَّ السَّيْلَ يَسْرَهُ ﴿١٠﴾

২১. অতঃপর তার মৃত্যু ঘটান এবং তাকে কবরস্থ করেন।

ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ﴿١١﴾

২২. এরপর যখন ইচ্ছা তিনি তাকে পুনরুজ্জীবিত করবেন।

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ﴿١٢﴾

২৩. কখনও নয়, তিনি তাকে যে আদেশ করেছেন, সে তা এখনো সমাধা করেনি।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ﴿١٣﴾

২৪. মানুষ তার খাদ্যের প্রতি লক্ষ্য করুক।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانَ إِلَى طَعَامِهِ ﴿١٤﴾

২৫. আমিই প্রচুর পানি বর্ষণ করি,

أَنَا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ﴿١٥﴾

২৬. অতঃপর আমি ভূমিকে অজুদভাবে বিদীর্ণ করি,

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ﴿١٦﴾

২৭. এবং ওতে আমি উৎপন্ন করি শস্য;

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿١٧﴾

২৮. আঙ্গুর, শাক-শব্জি,

وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿١٨﴾

২৯. যায়তুন, খেজুর,

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿١٩﴾

৩০. বহু নিবিড়-ঘন বাগান,

وَحَدَائِقَ غُلْبًا ﴿٢٠﴾

৩১. ফল এবং গবাদির খাদ্য (ঘাস),

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ﴿٢١﴾

৩২. তোমাদের ও তোমাদের পশুগুলোর ভোগের সামগ্রী হিসাবে।

مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٢٢﴾

৩৩. যখন ঐ বিকট ধ্বনি এসে পড়বে;

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٢٣﴾

৩৪. সেদিন মানুষ পলায়ন করবে তাঁর নিজের ভাই হতে,

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٢٤﴾

৩৫. এবং তার মাতা, তার পিতা,

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٢٥﴾

৩৬. তার স্ত্রী ও তার সন্তান হতে,

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٢٦﴾

৩৭. তাদের প্রত্যেকের সেদিন এমন গুরুতর অবস্থা হবে যা তাকে সম্পূর্ণরূপে ব্যস্ত রাখবে।

لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٢٧﴾

৩৮. সেদিন অনেক মুখমন্ডল উজ্জ্বল হবে;

وَوُجُوهُ يُؤْمِنِينَ مُسْفِرَةً ۝

৩৯. হাসি মুখ ও প্রফুল্ল।

ضَاحِكَةً مُسْتَبْشِرَةً ۝

৪০. এবং অনেক মুখমন্ডল হবে সেদিন ধূলি মিশ্রিত।

وَوُجُوهُ يُؤْمِنِينَ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝

৪১. সেগুলোকে আচ্ছন্ন করবে কালো বর্ণ।

تَرَهْقُهَا قَتْرَةٌ ۝

৪২. তারাই কাফির ও পাপাচারী।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكٰفِرَةُ الْفٰجِرَةُ ۝

সূরাঃ তাক্বীর, মাক্কী

(আয়াতঃ ২৯ রুক্বঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. সূর্যকে যখন দীপ্তিহীন করা হবে;

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝

২. যখন নক্ষত্ররাজি খসে পড়বে,

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝

৩. পর্বতসমূহকে যখন চলমান করা হবে,

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝

৪. যখন পূর্ণ-গর্ভা (দশ মাসের গর্ভবতী) উল্লী উপেক্ষিত হবে,

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝

৫. যখন বন্য পশুগুলিকে একত্রিত করা হবে,

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝

৬. এবং সমুদ্রগুলিকে যখন উদ্বেলিত করা হবে;

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝

৭. (দেহে) যখন প্রাণগুলিকে মিলিত করা হবে,

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের দিন সূর্য এবং চন্দ্র আলোহীন হয়ে পড়বে। (বুখারীঃ ৩২০০)

৮. যখন জীবন্ত-প্রথিতা (জীবন কবর) কন্যাকে জিজ্ঞেস করা হবে;

وَإِذَا الْمَوْءُدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾

৯. কি অপরাধে তাকে হত্যা করা হয়েছিল?

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾

১০. যখন আমলনামাসমূহ প্রকাশ করা হবে,

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾

১১. যখন আকাশের আবরণ অপসারিত করা হবে,

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾

১২. জাহান্নামের অগ্নি যখন উদ্দীপিত করা হবে,

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِرَتْ ﴿١٢﴾

১৩. এবং জান্নাতকে যখন নিকটবর্তী করা হবে।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

১৪. তখন প্রত্যেক ব্যক্তিই জানবে সে কি নিয়ে এসেছে।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

১৫. কিন্তু না, আমি শপথ করছি প্রভাবর্তনকারী তারকারাজির;

فَلَا أُقْسِمُ بِاللُّخْصِ ﴿١٥﴾

১৬. যা গতিশীল ও স্থিতিবান;

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

১৭. শপথ রাতের যখন সে চলে যেতে থাকে।

وَالْيَلِ إِذَا عَسَّسَ ﴿١٧﴾

১৮. আর প্রভাতের যখন এর আবির্ভাব হয়,

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

১৯. নিশ্চয়ই এই কুর'আন সম্মানিত বার্তাবাহের আনীত বাণী,

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾

২০. সে সামর্থশালী, আরশের মালিকের নিকট মর্যাদা সম্পন্ন,

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾

২১. যাকে সেখানে মান্য করা হয় এবং যে বিশ্বাসভাজন।

مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾

১। মুগীরা ইবনে শো'বা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তোমাদের উপর মায়ের অবাধ্য হওয়া, কন্যা সন্তানদেরকে জীবন্ত কবর দেয়া, কাউকে কিছু না দেওয়া অথচ অন্যের নিকট চাওয়া, অপ্রয়োজনীয় কথা বলা, অধিক প্রশ্ন করা এবং সম্পদের অপচয় করা হারাম করেছেন। (বুখারী : ২৪০৮)

২২. এবং তোমাদের সহচর
(মুহাম্মাদ ﷺ) উন্মাদ নয়,

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِجُنُونٍ ﴿٢٢﴾

২৩. তিনি তো তাঁকে স্পষ্ট দিগন্তে
দেখেছিল।

وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفْقِ الْبُعِيدِ ﴿٢٣﴾

২৪. তিনি অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে
বর্ণনা করতে কৃপণ নন।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾

২৫. এবং এটা (কুর'আন) কোন
অভিশপ্ত শয়তানের বাক্য নয়।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿٢٥﴾

২৬. সুতরাং তোমরা কোথায়
চলেছো?

فَإِنَّ تَذٰهُبُونَ ﴿٢٦﴾

২৭. এটা তো শুধু বিশ্বজগতের
(অধিবাসীদের) জন্যে উপদেশ, ১

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾

২৮. তোমাদের মধ্যে যে সরল পথে
চলতে চায়, তার জন্যে।

لِّمَن شَاءَ مِنْكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾

২৯. তোমরা কিছুই চাইবে না, যদি
জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহ তা
না চান।

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। তিনি বলেছেন, প্রত্যেক নবীকেই তার (যুগ) উপযোগী মু'জ্জযা (বিশেষ নিদর্শন) প্রদান করা হয়েছে। সে অনুসারে ঈমান আনা হয়েছে। অথবা বলেছেন, তাঁর ওপরই লোকেরা ঈমান এনেছে। আর নিশ্চয়ই আমাকে ওহী দেয়া হয়েছে, যা আল্লাহ তা'আলা আমার ওপর নাযিল করেছেন। অতএব, আমি আশা করছি যে, কিয়ামতের দিন আমার অনুগামী তাদের থেকে অধিক সংখ্যায় হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৭৪)

(খ) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন সেই সন্তার শপথ! যাঁর হাতে (আমি) মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রাণ, বর্তমান মানবগোষ্ঠীর কোন ইয়াহুদী বা নাসারা আমার আবির্ভাবের সংবাদ শনার পর, যে দ্বীন নিয়ে আমি শ্রেণিত হয়েছি, তার প্রতি ঈমান না এনে মৃত্যুবরণ করলে সে নিশ্চিতই জাহান্নামীদের অন্তর্ভুক্ত হবে। (মুসলিম : ৩৮৬)

সূরাঃ ইনফিতার, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৯ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۱۹ رُكُوعُهَا ۱

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. যখন আকাশ ফেটে যাবে,
২. যখন তারকারাজী বিক্ষিপ্তভাবে
ঝরে পড়বে,
৩. যখন সমুদ্রগুলি উদ্বেলিত হবে,
৪. এবং যখন কবরসমূহ উন্মোচিত
হবে;
৫. তখন প্রত্যেকে যা পূর্বে প্রেরণ
করেছে এবং পশ্চাতে পরিত্যাগ
করেছে তা জেনে নেবে।
৬. হে মানুষ! কিসে তোমাকে
তোমার মহান প্রতিপালকের ব্যাপারে
ধোঁকায় ফেলেছে?
৭. যিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন,
অতঃপর তোমাকে সুঠাম করেছেন
এবং তৎপর সুবিন্যস্ত করেছেন,
৮. যে আকৃতিতে চেয়েছেন, তিনি
তোমাকে সংযোজিত করেছেন।
৯. না কখনই না, তোমরা তো বিচার
দিবসকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে থাকো;
১০. অবশ্যই রয়েছে তোমাদের উপর
সংরক্ষকগণ;

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ①

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ②

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ③

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعِثِرَتْ ④

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ⑤

يَأْتِيهَا الْإِنْسَانُ مَا عَزَاكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ⑥

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ⑦

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ⑧

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالَّذِينَ ⑨

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ⑩

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ফেরেশতাগণ একদলের পিছনে আরেক দল যাতায়াত করে থাকে। একদল ফেরেশতা রাতে আসে, আরেক দল দিনে। আর তারা ফজর এবং আসরের নামাযের সময় একত্রিত হয়। অতঃপর যারা তোমাদের মাঝে রাত্রি যাপন করেছিল তারা আল্লাহর কাছে চলে যায়। তিনি তাদের (মানুষের অবস্থা) জিজ্ঞেস করেন অথচ তাদের চেয়ে তিনি (এ সম্পর্কে) অধিক জানেন। জিজ্ঞেস করেন, তোমরা আমার বান্দাহদের কি অবস্থায় ছেড়ে এসেছ? তারা জবাব দেয়-তাদের নামাযরত অবস্থায় ছেড়ে এসেছি এবং নামাযরত অবস্থায়ই তাদের কাছে গিয়েছি। (বুখারীঃ ৩২২৩)

১১. সম্মানিত লেখকবর্গ;২

كِرَامًا كَاتِبِينَ ﴿١١﴾

১২. তোমরা যা কর তাঁরা অবগত হন।

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾

১৩. নিশ্চয়ই পুণ্যবানগণ নিয়ামত সমূহে অবস্থান করবে;

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾

১৪. এবং দুষ্কর্মকারীরা থাকবে জাহান্নামে;

وَأَنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾

১৫. প্রতিদান দিবসে তারা তাতে প্রবেশ করবে;

يَصَلُّونَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾

১৬. তারা ওটা হতে সরে থাকতে পারবে না।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾

১৭. প্রতিদান দিবস কি তা কি তুমি জানো?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٧﴾

১৮. অতঃপর বলিঃ প্রতিদান দিবস কি তা কি তুমি অবগত আছ?

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾

১৯. সেদিন কোন ব্যক্তি অপর ব্যক্তির জন্য কোন কিছু করার অধিকার রাখবে না এবং সেদিন সমস্ত কর্তৃত্ব হবে একমাত্র আল্লাহর।

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ

يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্ সম্পর্কে বলেন, আল্লাহ্ ভাল এবং মন্দ লিখে দিয়েছেন আর তা সুস্পষ্ট করে দিয়েছেন। সুতরাং যে ব্যক্তি কোন সং কাজের ইচ্ছা করল অথচ কাজটা করল না, আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (কাজের) সওয়াব দিবেন। আর যদি সে সং কাজের ইচ্ছা করল আর বাস্তবে তা করেও ফেলল, আল্লাহ্ তার জন্য দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত এমনকি এর চেয়েও অধিক সওয়াব লিখে দেন। আর যে ব্যক্তি কোন মন্দ কাজের ইচ্ছা করল, কিন্তু বাস্তবে তা করল না তবে আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (সং কাজের) সওয়াব দিবেন। পক্ষান্তরে সে যদি মন্দ কাজের ইচ্ছা করে এবং (তদানুযায়ী) কাজটা করে ফেলে তবে, আল্লাহ্ তার জন্য একটাই মাত্র গুনাহ লিখেন। (বুখারী : ৬৪৯১)

সূরাঃ মুতাফ্ফিযীন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩৬ রুক্বঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(ওকর করছি)

سُورَةُ الطّٰفِیْنِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۳۶ رُكُوعُهَا ۱

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. মন্দ পরিণাম তাদের জন্যে যারা
মাপে কম দেয়,

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝۱

২. যারা লোকের নিকট হতে নেয়ার
সময় পূর্ণ মাত্রায় গ্রহণ করে,

الَّذِينَ إِذَا أَكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝۲

৩. এবং যখন তাদের জন্যে মেপে
অথবা ওজন করে দেয়, তখন কম
দেয়।

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝۳

৪. তারা কি চিন্তা করে না যে,
তাদেরকে পুনরুস্থিত করা হবে।

أَلَا يَتَنَّبَأُ آلَافِكُمْ أَهْمٌ مَّبْعُوثُونَ ۝۴

৫. সে মহান দিবসে;

لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝۵

৬. যেদিন সমস্ত মানুষ জগতসমূহের
প্রতিপালকের সামনে দাঁড়াবে।

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝۶

৭. কখনই না, নিশ্চয়ই পাপাচারীদের
আমলনামা সিজ্জীনে থাকে;

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝۷

৮. সিজ্জীন কি তা কি তুমি জান?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝۸

৯. গুটা হচ্ছে লিখিত কিতাব।

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝۹

১০. সেদিন মন্দ পরিণাম হবে
মিথ্যাপ্রতিপন্নকারীদের,

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝۱০

১১. যারা কর্মফল দিবসকে
মিথ্যাপ্রতিপন্ন করেছিল,

الَّذِينَ يَكْتَدِبُونَ بِبُيُوتِهِمُ الدِّينَ ۝۱১

১২. আর সীমালঙ্ঘনকারী মহাপাপী
ব্যতীত, কেউই ওকে মিথ্যা বলতে
পারে না।

وَمَا يَكْتَدِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝۱২

১৩. যখন তার নিকট আমার
আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হয়
তখন সে বলেঃ এটা তো পূর্বকালীন
কাহিনী!

إِذَا تَتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝۱৩

১৪. না এটা কখনও নয়; বরং তাদের কৃতকর্মই তাদের মনের উপর মরিচারূপে জমে গেছে।

كَلَّا بَلْ سَخَّرَانِ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

১৫. কখনও নয়, অবশ্যই সেদিন তারা তাদের প্রতিপালকের দর্শন লাভ হতে বাধাগ্রস্ত হবে।

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾

১৬. নিশ্চয়ই তারা জাহান্নামে প্রবেশ করবে;

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾

১৭. তৎপর বলা হবে: এটাই তা যাকে তোমরা মিথ্যা প্রতিপন্ন করতে।

ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾

১৮. অবশ্যই পুণ্যবানদের আমল-নামা ইল্লিয়ীনে থাকবে,

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾

১৯. ইল্লিয়ূন কি তা কি তুমি জান?

وَمَا آذُرُكَ مَا عَلَيْهِنَ ﴿١٩﴾

২০. (তা হচ্ছে) লিখিত কিতাব।

كِتَابٌ مَّرْجُومٌ ﴿٢٠﴾

২১. (আল্লাহর) সান্নিধ্যপ্রাপ্ত ফেরেশ্তারা ওটা প্রত্যক্ষ করবে।

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾

২২. পুণ্যবানগণ তো থাকবে অতি স্বাচ্ছন্দ্যে (জান্নাতে)

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

২৩. তারা সুসজ্জিত আসনে বসে দেখতে থাকবে।

عَلَىٰ الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٢٣﴾

২৪. তুমি তাদের মুখমন্ডলে স্বাচ্ছন্দ্যের দীপ্তি অনুভব করবে,

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

২৫. তাদেরকে মোহর করা বিশুদ্ধতম শরাব হতে পান করানো হবে,

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْمُومٍ ﴿٢٥﴾

২৬. এর মোহর হচ্ছে কস্তুরীর। সুতরাং প্রতিযোগীরা এ বিষয়ে প্রতিযোগীতা করুক।

حُتْبَةُ مَسْكِ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾

২৭. এর মিশ্রণ হবে তাসনীমের,

وَمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

২৮. এটা একটি ঝর্ণা, যা হতে নৈকট্যপ্রাপ্ত ব্যক্তির পান করবে।

২৯. যারা অপরাধী তারা মু'মিনদেরকে উপহাস করতো।

৩০. এবং তারা যখন তাদের নিকট দিয়ে যেতো তখন চোখ টিপে কটাক্ষ করতো।

৩১. এবং যখন তারা আপনজনের নিকট ফিরে আসতো তখন তারা ফিরত উৎফুল্ল হয়ে,

৩২. এবং যখন তাদেরকে দেখতো তখন বলতোঃ নিশ্চয়ই এরা পথভ্রষ্ট,

৩৩. তাদেরকে তো এদের সংরক্ষক-রূপে পাঠানো হয়নি!

৩৪. তাই আজ, মু'মিনগণ উপহাস করছে কাফিরদেরকে,

৩৫. সুসজ্জিত আসনে বসে দেখছে তাদেরকে।

৩৬. কাফিররা তাদের কৃতকর্মের ফল পেলা তো?

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝ ط

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا

يُضْحَكُونَ ۝ ٢٩

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝ ٣٠

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝ ٣١

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝ ٣٢

وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ۝ ٣٣

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝ ٣٤

عَلَىٰ الْأَرَآئِكِ يَنْظُرُونَ ۝ ٣٥

هَلْ تُؤْتِبُ الْكُفَّارَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ ٣٦

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক ব্যক্তি বললঃ হে আল্লাহর রাসূল! কাফেরদেরকে কি কিয়ামতের দিন নিম্নমুখী করে একত্রিত করা হবে? তিনি (উত্তরে) বললেনঃ যিনি এ দুনিয়ায় তাকে দু'পায়ের ওপর হাটাতে পারলেন তিনি কি কিয়ামতের দিন তাকে নিম্নমুখী করে চালাতে সক্ষম নন? কাতাদা বলেছেনঃ হ্যাঁ, আমাদের প্রতিপালকের ইয্যতের শপথ! (তিনি এটা করতে সক্ষম)। (বুখারী : ৪৭৬০)

সূরাঃ ইনশিকাক, মাকী

(আয়াতঃ ২৫ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. যখন আকাশ ফেটে যাবে,
২. এবং স্বীয় প্রতিপালকের আদেশ পালন করবে এবং এটিই তার উপযুক্ত করণীয়।
৩. এবং পৃথিবীকে যখন সম্প্রসারিত করা হবে।
৪. এবং পৃথিবী তার অভ্যন্তরে যা আছে তা বাইরে নিষ্ক্ষেপ করবে এবং খালি হয়ে যাবে,
৫. এবং তার প্রতিপালকের আদেশ পালন করবে এবং তার এটিই উপযুক্ত করণীয়।
৬. হে মানব! তুমি তোমার প্রতিপালকের নিকট পৌছানোর জন্য কঠোর সাধনা করছ পরে তুমি তাঁর সাক্ষাৎ লাভ করবে।
৭. অনন্তর যাকে তার ডান হাতে তার আমলনামা দেয়া হবে,
৮. তার হিসাব-নিকাশ নেয়া হবে অতি সহজ ভাবে।
৯. এবং সে তার স্বজনদের নিকট আনন্দিত হয়ে ফিরে যাবে;
১০. এবং যাকে তার আমলনামা তার পৃষ্ঠের পশ্চাৎগে দেয়া হবে।
১১. ফলতঃ অচিরেই সে মৃত্যুকে ডাকবে।

سُورَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٥ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

- ١ إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ١
- ٢ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ٢
- ٣ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ٣
- ٤ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ٤
- ٥ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ٥
- ٦ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ٦
- ٧ فَأَمَّا مَنْ أُوثِقَ كِتَابُهُ بِمِيزِينِهِ ٧
- ٨ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ٨
- ٩ وَيُنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ٩
- ١٠ وَأَمَّا مَنْ أُوثِقَ كِتَابُهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ١٠
- ١١ فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ١١

১২. এবং জ্বলন্ত অগ্নিতেই সে প্রবেশ করবে।

وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝

১৩. অবশ্য সে তো স্বজনদের মধ্যে সানন্দে ছিল,

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

১৪. যেহেতু সে ভাবতো যে, তাকে কখনই (আল্লাহর নিকট) ফিরে যেতে না হবে।

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يُّحْدِثَ ۝

১৫. হ্যাঁ (অবশ্যই প্রত্যাবর্তিত হবে) নিশ্চয়ই তার প্রতিপালক তার উপর সবিশেষ দৃষ্টি রাখেন।

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

১৬. আমি শপথ করি আকাশের লালিমার।

فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّقِيقِ ۝

১৭. এবং রজনীর আর তাতে যা কিছুর সমাবেশ ঘটে তার,

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝

১৮. এবং শপথ চন্দ্রের, যখন তা' পরিপূর্ণ হয়,

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝

১৯. নিশ্চয়ই তোমরা এক স্তর হতে অন্য স্তরে আরোহণ করবে।

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝

২০. সুতরাং তাদের কি হলো যে, তারা ঈমান আনে না?

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

২১. এবং তাদের নিকট কুর'আন পঠিত হলে তারা সিজদাহ করে না?

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝

২২. বরং কাফিরগণই মিথ্যা প্রতিপন্নকারী করে।

بَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا يَكِيدُونَ ۝

২৩. (অথচ) তারা মনে যা পোষণ করে থাকে আল্লাহ তা সবিশেষ পরিজ্ঞাত।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝

২৪. সুতরাং তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সংবাদ প্রদান কর।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

২৫. কিন্তু যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে অফুরন্ত পুরস্কার।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ

مَمْنُونٍ ۝

সূরাঃ বুরূজ, মাক্কী

(আয়াতঃ ২২ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢٢ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ বুরূজ (তারকা-রাশিচক্র)
বিশিষ্ট আকাশের,

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝١

২. শপথ প্রতিশ্রুত দিবসের,

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝٢

৩. শপথ যা উপস্থিত হয় এবং যা
উপস্থিতকৃত,

وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ۝٣

৪. ধ্বংস করা হয়েছিল গুহাবাসী-
দেরকে,

فُقِتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ ۝٤

৫. যা ছিল ইক্ষন পূর্ণ অগ্নি,

النَّارِ ذَاتِ الْوُكُودِ ۝٥

৬. যখন তারা তার উপর উপবিষ্ট
ছিল;

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۝٦

৭. এবং তারা মু'মিনদের সাথে যা
করেছিল তাই প্রত্যক্ষ করছিল।

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝٧

৮. তারা তাদেরকে নির্যাতন করেছিল
শুধু এই (অপরাধের) কারণে যে,
তারা সে পরাক্রান্ত প্রশংসাভাজন
আল্লাহর প্রতি ঈমান এনেছিল।

وَمَا نَقَبُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ

الْحَمِيدِ ۝٨

৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর
আধিপতি য়ার, আর আল্লাহ সর্ব
বিষয়ে দেখেন।

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝٩

১০. যারা ঈমানদার নর-নারীর উপর
যুলুম-নির্যাতন করেছে এবং পরে
তাওবা'ও করেনি, তাদের জন্যে
জাহান্নামের আযাব ও দহন যন্ত্রণা
রয়েছে।

إِنَّ الَّذِينَ قَتَلُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ كَفَرُوا

فَأَهُمَّ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَأَهُمَّ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝١٠

১১. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম
করে তাদের জন্যেই রয়েছে এমন
জান্নাত যার নিম্নে নদীসমূহ
প্রবাহিত; এটাই বড় সফলতা।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَدَّتْ تَجْرِي

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝١١

১২. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালকের
পাকড়াও বড়ই কঠিন।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝۱۲

১৩. তিনিই প্রথমবার সৃষ্টি করেন ও
পুনরাবর্তন করবেন।

إِنَّهُ هُوَ بَرِيءٌ وَيُعِيدُ ۝۱۳

১৪. এবং তিনি ক্ষমাশীল, প্রেমময়।

وَهُوَ الْعَفُورُ الرَّؤُوفُ ۝۱৪

১৫. আরশের অধিপতি মহিমাময়।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝۱৫

১৬. (ইচ্ছাময় তিনি) যা চান তাই
করেন।

فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝۱৬

১৭. তোমার নিকট কি সৈন্যবাহিনীর
কথা পৌছেছে?

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝۱৭

১৮. ফিরআ'উন ও সামুদের?

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝۱৮

১৯. তবু কাফিররা মিথ্যা আরোপ
করায় রত,

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝۱৯

২০. এবং আল্লাহ তাদেরকে সর্বদিক
হতে পরিবেষ্টন করে রয়েছেন।

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝২০

২১. বরং এটা অতি উচ্চ মর্যাদা
সম্পন্ন কুরআন।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ۝২১

২২. সংরক্ষিত ফলকে লিপিবদ্ধ।

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۝২২

সূরাঃ তা'-রিক, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৭ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۱۷ رُكُوعُهَا ۱

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ আকাশের এবং রাত্রিতে যা
প্রকাশ পায়;

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝۱

২. তুমি কী জান রাত্রিতে যা প্রকাশ
পায় তা কি?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝۲

৩. ওটা দীপ্তিমান নক্ষত্র!

النَّجْمِ الثَّاقِبِ ۝۳

৪. নিশ্চয়ই প্রত্যেক জীবের উপরই এক সংরক্ষক রয়েছে।^১

إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَّتَأْتِيهَا حَافِظٌ ۝

৫. সুতরাং মানুষের লক্ষ্য করা উচিত যে, তাকে কিসের দ্বারা সৃষ্টি করা হয়েছে।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝

৬. তাকে সৃষ্টি করা হয়েছে প্রবল বেগে নিঃসৃত পানি হতে,

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۝

৭. যা বের হয় পিঠ ও বুকের হাড়ের মধ্য হতে।

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝

৮. নিশ্চয় তিনি তার পুনরাবর্তনে ক্ষমতাবান।

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝

৯. যেদিন গোপন বিষয়সমূহের যাঁচাই-বাছাই হবে,

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝

১০. সেদিন তার কোন শক্তি থাকবে না এবং সাহায্যকারীও থাকবে না।

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝

১১. শপথ বেশি বেশি বৃষ্টি বর্ষণকারী আকাশের,

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

১২. এবং শপথ যমীনের যা ফেটে যায়,

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝

১৩. নিশ্চয় এটি (কুর'আন) মীমাংসাকারী কথা।

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝

১৪. এবং এটা হাসি-তামাশা নয়।

وَمَا هُوَ بِأَهْزَلٌ ۝

১৫. নিশ্চয় তারা (কাফেররা) ভীষণ এক ষড়যন্ত্র করেছে।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্ সম্পর্কে বলেন, আল্লাহ ভাল এবং মন্দ লিখে দিয়েছেন আর তা সুস্পষ্ট করে দিয়েছেন। সুতরাং যে ব্যক্তি কোন সং কাজের ইচ্ছা করল অথচ কাজটা করল না, আল্লাহ তাকে পূর্ণ (কাজের) সওয়াব দিবেন। আর যদি সে সং কাজের ইচ্ছা করল আর বাস্তবে তা করেও ফেলল, আল্লাহ তার জন্য দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত এমনকি এর চেয়েও অধিক সওয়াব লিখে দেন। আর যে ব্যক্তি কোন মন্দ কাজের ইচ্ছা করল, কিন্তু বাস্তবে তা করল না, তবে আল্লাহ তাকে পূর্ণ (সং কাজের) সওয়াব দিবেন। পক্ষান্তরে সে যদি মন্দ কাজের ইচ্ছা করে এবং (তদানুযায়ী) কাজটা করে ফেলে তবে, আল্লাহ তার জন্য একটিই মাত্র গুনাহ লিখেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৯১)

১৬. আর আমিও একটি কৌশল
করি।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝١٦

১৭. অতএব কাফিরদেরকে অবকাশ
দাও, তাদেরকে অবকাশ দাও
কিছুকালের জন্যে।

فَهَبِلِ الْكَافِرِينَ أَمَهُلَهُمْ رُوَيْدًا ۝١٧

সূরাঃ আ'লা, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৯ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْأَعْلَى مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٩ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তুমি তোমার সর্বোচ্চ
প্রতিপালকের নামের ঘোষণা কর,

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۝١

২. যিনি সৃষ্টি করেছেন। অতঃপর
পরিপূর্ণভাবে ঠিক করেছেন,

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ۝٢

৩. এবং যিনি নিরূপণ করেছেন,
তারপর হেদায়েত দিয়েছেন,

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ۝٣

৪. এবং যিনি উদ্ভিদ উৎপন্ন
করেছেন,

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ۝٤

৫. পরে ওকে বিষুদ্ধ বিমলিন
করেছেন।

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ۝٥

৬. অচিরেই আমি তোমাকে পাঠ
করানো, ফলে তুমি আর ভুলবে না,

سَنُقَرِّبُكَ فَلَا تَنْسَى ۝٦

৭. আল্লাহ্ যা ইচ্ছা করবেন
তদ্ব্যতীত, নিশ্চয়ই তিনি প্রকাশ্য ও
গুপ্ত বিষয় পরিজ্ঞাত আছেন।

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ط إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ط

৮. আমি তোমার জন্যে সহজের
সামর্থ্য দিবো।

وَيُسِّرُكَ لِلْيُسْرَى ۝٨

৯. অতএব উপদেশ দাও যদি
উপদেশ উপকারী হয়।

فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَى ۝٩

১০. যারা ভয় করে তারা উপদেশ গ্রহণ করবে।

سَيَذَكَّرُ مَنْ يَخْشَى ۝

১১. আর তা' উপেক্ষা করবে সে, যে নিতান্ত হতভাগ্য,

وَيَتَجَبَّهَهَا الْأَشْقَى ۝

১২. সে বৃহৎ অগ্নিতে প্রবেশ করবে,

الَّذِي يَصَلِّي النَّارَ الْكُبْرَى ۝

১৩. অতঃপর সে সেখানে মরবেও না, বাঁচবেও না।

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝

১৪. নিশ্চয় সে সাফল্য লাভ করে যে পবিত্রতা অবলম্বন করে।

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۝

১৫. এবং তদ্বীয় প্রতিপালকের নাম স্মরণ করে ও নামায আদায় করে।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۝

১৬. কিন্তু তোমরা পার্থিব জীবনকে অগ্রাধিকার দিয়ে থাকো।

بَلْ تُؤْتُونَ الدُّنْيَا ۝

১৭. অথচ আখেরাত (জীবন) উত্তম ও চিরস্থায়ী।

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

১৮. নিশ্চয়ই এটা পূর্ববর্তী কিতাবসমূহে আছে,

إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝

১৯. (বিশেষতঃ) ইবরাহীম (عليه السلام) ও মুসা (عليه السلام)-এর কিতাবসমূহে।

صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝

সূরাঃ গাশিয়াহ্, মাক্কী

(আয়াতঃ ২৬ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۲۶ رُكُوعُهَا ۱

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তোমার কাছে কি আচ্ছন্নকারীর (কিয়ামতের) সংবাদ এসেছে?

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝

২. সেদিন বহু মুখমন্ডল ভীত হবে;

وَجُودٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝

৩. কর্মক্লাস্ত পরিশ্রান্ত হবে; ۛ

عَامِلَةٌ تَأْتِبَةٌ ۛ

৪. তারা প্রবেশ করবে জ্বলন্ত
আগুনে;

تَصَلُّنَّ نَارًا حَامِيَةً ۛ

৫. তাদেরকে উত্তপ্ত ঝর্ণা হতে
(পানি) পান করানো হবে;

تَسْقَى مِنْ عَيْنٍ آتِيَةٍ ۛ

৬. তাদের জন্যে বিষাক্ত কাঁটায়ুক্ত
ব্যতীত কোন খাদ্য নেই;

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيحٍ ۛ

৭. তা তাদেরকে পুষ্ট করবে না এবং
তাদের ক্ষুধাও মেটাতে না।

لَا يُسِينُ وَلَا يُغْنِي عَنْ جُوعٍ ۛ

৮. বহু মুখমন্ডল হবে সেদিন
আনন্দোজ্জ্বল,

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُنِيرَةٌ ۛ

৯. নিজেদের কর্মসাফল্যে সন্তুষ্ট
হবে।

لَسَعِيهَا رَاضِيَةٌ ۛ

১০. উচ্চ মর্যাদার জান্নাতে অবস্থান
করবে।

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۛ

১১. সেখানে তারা আবাস্তর বাক্য
শুনবে না,

لَا تَسْمَعُ فِيهَا لِأَعْيُنٍ ۛ

১২. সেখানে আছে প্রবহমান ঝর্ণা-
সমূহ,

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۛ

১৩. তন্মাধ্যে রয়েছে সমুচ্চ
আসনসমূহ

فِيهَا سُرُرٌ مَرْفُوعَةٌ ۛ

১৪. এবং সুরক্ষিত পান পাত্রসমূহ

وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ۛ

১৫. ও সারি সারি বালিশসমূহ;

وَنَبَارِقٌ مَصْفُوفَةٌ ۛ

১৬. এবং সম্প্রসারিত গালিচাসমূহ।

وَرَزَائِبٌ مَبْثُوثَةٌ ۛ

১। আবদুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ একদিন (নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি কথা বললেন। আমি (তার বিপরীত) আরেকটি কথা বললাম। নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বললেনঃ কেউ যদি এমন অবস্থায় মরে যায় যে, সে আল্লাহর সাথে অন্য কাউকে শরীক করে বা সমকক্ষ ও প্রতিদ্বন্দ্বী হওয়ার দাবী করে তবে সে দোজখে যাবে। আমি বললাম, আর কেউ যদি এমন অবস্থায় মরে যায় যে, সে আল্লাহর সাথে আর কাউকে শরীক, সমকক্ষ বা প্রতিদ্বন্দ্বী মনে করলো না তাহলে? (তিনি বললেনঃ) সে জান্নাতে যাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৯৭)

১৭. তবে কি তারা উদ্ভিপালের দিকে লক্ষ্য করে না যে, কিভাবে ওকে সৃষ্টি করা হয়েছে?

১৮. এবং আকাশের দিকে যে, কিভাবে ওটাকে সমুচ্চ করা হয়েছে?

১৯. এবং পর্বতমালার দিকে যে, কিভাবে ওটাকে বসানো হয়েছে?

২০. এবং ভূতলের দিকে যে, কিভাবে ওটাকে সমতল করা হয়েছে?

২১. অতএব তুমি উপদেশ দিতে থাকো, তুমি তো একজন উপদেশ দাতা মাত্র।

২২. তুমি তাদের যিম্মাদার নও।

২৩. তবে কেউ মুখ ফিরিয়ে নেবে ও কুফরী করবে,

২৪. আল্লাহ তাকে আযাব দিবেন কঠোর আযাব।

২৫. নিশ্চয়ই আমারই নিকট তাদের প্রত্যাবর্তন।

২৬. অতঃপর আমার উপরই তাদের হিসাব-নিকাশ (গ্রহণের ভার)।

সূরাঃ ফাজর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩০ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(ওরু করছি)

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

فَذَكِّرْهُنَّ إِنَّهُنَّ أُمَّتٌ مُّذَكَّرَةٌ ﴿٢١﴾

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ ﴿٢٢﴾

إِلَّا مَن تَوَلَّى وَكُفِّرَ ﴿٢٣﴾

فِيَعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

إِنَّ إِلَيْنَا أِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣٠ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ ফজরের,

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾

২. শপথ দশটি রাতের,

وَلَيْلٍ عَشِيرٍ ﴿٢﴾

৩. শপথ জোড় ও বেজোড়ের,

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾

৪. এবং শপথ রাতের, যখন তা বিদায় হতে থাকে,

وَاللَّيْلِ إِذَا يَسِيرٌ ٧

৫. এর মধ্যে জ্ঞানবান ব্যক্তির জন্যে বড় শপথ রয়েছে।

هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ٨

৬. তুমি কি দেখো নি তোমার প্রতিপালক কি করেছিলেন আ'দ বংশের সাথে।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ٩

৭. ইরাম গোত্রের প্রতি যারা সুউচ্চ স্তম্ভের অধিকারী ছিল?

إِرْمَ ذَاتِ الْاِصْبَادِ ١٠

৮. যার সমতুল্য অন্য কোন নগরে সৃষ্টি করা হয়নি,

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ١١

৯. এবং সামুদের সাথে? যারা উপত্যকার পাথর কেটে গৃহ নির্মাণ করেছিল?

وَتَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ١٢

১০. এবং বহু সৈন্য শিবিরের অধিপতি ফিরআ'উনের সাথে?

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ١٣

১১. যারা নগরসমূহে সীমালঙ্ঘন করেছিল।

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ١٤

১২. অন্তর সেখানে তারা বহু অনাচার করেছিল।

فَاكْتَرُوا فِيهَا الْفِسَادَ ١٥

১৩. সুতরাং তোমার প্রতিপালক তাদের উপর শাস্তির কশাঘাত হানলেন।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ١٦

১৪. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক ঘাটিতে (ওঁৎ পেতে) আছেন।

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمُرْصَادِ ١٧

১৫. মানুষ তো এরূপ যে, তার প্রতিপালক যখন তাকে পরীক্ষা করেন, পরে তাকে সম্মানিত করেন এবং সুখ ও সম্পদ দান করেন, তখন সে বলেঃ আমার প্রতিপালক আমাকে সম্মানিত করেছেন।

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ

وَنَعَّمَهُ هَٰذَا فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ١٨

১৬. এবং আবার যখন তাকে পরীক্ষা করেন, তৎপর তার রিযিক সংকীর্ণ করেন, তখন সে বলেঃ আমার প্রতিপালক আমাকে হেয় করেছেন।

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ
فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ﴿١٦﴾

১৭. কখনই নয়। বস্তুতঃ তোমরা ইয়াতীমকে সম্মান কর না।

كَلَّا بَلْ لَّا تَكْرُمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾

১৮. এবং তোমরা পরস্পরকে উৎসাহিত কর না অভাবগ্রস্তকে খাদ্য দানে,

وَلَا تَحْضُونَهُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمُسْكِينِ ﴿١٨﴾

১৯. এবং তোমরা উত্তরাধিকারীদের প্রাপ্য সম্পদ সম্পূর্ণরূপে ভক্ষণ কর,

وَتَأْكُلُونَ التَّرَاثَ أَكْلًا لَّمِيًّا ﴿١٩﴾

২০. এবং তোমরা ধন সম্পদের অত্যধিক মায়্যা করে থাকো।

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾

২১. এটা সঙ্গত নয়। পৃথিবীকে যখন ভেঙ্গে চূর্ণ-বিচূর্ণ করা হবে;

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾

২২. এবং যখন তোমার প্রতিপালক আগমন করবেন, আর ফেরেশতাগণ সারিবদ্ধভাবে; (থাকবে)

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾

২৩. সেদিন জাহান্নামকে আনয়ন করা হবে এবং সেদিন মানুষ উপলব্ধি করবে; কিন্তু এই উপলব্ধি তার কি কাজে আসবে?

وَجَاءِي ۚ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ
الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

২৪. সে বলেবেঃ হায়! আমার এ জীবনের জন্যে আমি যদি কিছু অগ্রীম পাঠাতাম!

يَقُولُ لِيَأْتِنِي قَدِّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾

২৫. সেদিন তাঁর (আল্লাহর) আযাবের মত আযাব কেউ দিতে পারবে না,

فِيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾

২৬. এবং তাঁর বন্ধনের মত বন্ধন কেউ করতে পারবে না।

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾

২৭. হে প্রশান্ত আত্মা!

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الطَّمِينَةُ ﴿٢٧﴾

২৮. তুমি তোমার প্রতিপালকের নিকট ফিরে এসো সন্তুষ্ট ও প্রিয়পাত্র হয়ে।

ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ رَاضِيَةً مُّرْضِيَةً ﴿٢٨﴾

২৯. অনন্তর তুমি আমার বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত হও,

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾

৩০. এবং আমার জান্নাতে প্রবেশ কর।

وَادْخُلِي جَنَّاتِي ﴿٣٠﴾

সূরাঃ বালাদ, মাক্কী

(আয়াতঃ ২০ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا ٢٠ رُكُوعَهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ করছি এই (মক্কা) নগরের,

لَا أَقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾

২. আর তুমি এই নগরের হালালকারী।

وَأَنْتَ حَلَّالٌ بِهَذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

৩. শপথ পিতার (আদম عَلَيْهِ السَّلَام) আর যা সে জন্ম দিয়েছে তার।

وَوَالِدٍ وَمَا وَكَّدَ ﴿٣﴾

৪. অবশ্যই আমি মানুষকে সৃষ্টি করেছি কষ্টের মধ্যে।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾

৫. সে কি মনে করে যে, কখনো তার উপর কেউ ক্ষমতাবান হবে না?

أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ﴿٥﴾

৬. সে বলেঃ আমি বহু অর্থ নষ্ট করেছি।

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُبَدًا ﴿٦﴾

৭. সে কি ধারণা করে যে, তাকে কেউই দেখছে না?

أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ﴿٧﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ মক্কা বিজয়ের দিন রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এ শহরকে আল্লাহ্ মহিমাশিথ ও মরখাদাসম্পন্ন করেছেন। এর কাটা (গাছ) ও কাটা যাবে না, শিকার তাড়া করা যাবে না, রাস্তায় পড়ে থাকা জিনিস প্রচারের উদ্দেশ্য ব্যতীত কেউ ফুড়িয়ে নিতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ১৫৮৭)

৮. আমি কি তার জন্যে দু'টি চোখ বানাইনি?

أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝۸

৯. আর জিহ্বা ও গুষ্ঠদ্বয়?

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝ۯ

১০. এবং আমি কি তাকে দু'টি পথই দেখাইনি?

وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝۱০

১১. কিন্তু সে দুর্গম গিরি পথে প্রবেশ করলো না।

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝۱১

১২. তুমি কী জান যে, দুর্গম গিরি পথটি কি?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝۱২

১৩. এটা হচ্ছেঃ কোন দাসকে মুক্ত করা; ১

فَكَرْبَةً ۝۱৩

১৪. অথবা, দুর্ভিক্ষের দিনে খাদ্য দান;

أَوْ اطْعَمٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝۱৪

১৫. কোন ইয়াতীম, আত্মীয়কে,

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝۱৫

১৬. অথবা ধূলায় লুপ্তিত দরিদ্রকে,

أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝۱৬

১৭. তারপর তাদের মধ্যে অন্তর্ভুক্ত হওয়া যারা ঈমান এনেছে এবং যারা পরস্পরকে উপদেশ দেয় ধৈর্যধারণের ও দয়া করুণার;

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝۱৭

১৮. এরাই ডান হাতওয়ালা।

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝۱৮

১৯. আর যারা আমার নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করেছে, তারা ই বাম হাতওয়ালা।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝۱৯

২০. তাদের উপরই রয়েছে আচ্ছন্ন অবস্থায় অগ্নি।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ۝۲০

১। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি কোন মুসলমানকে দাসত্ব শৃঙ্খল থেকে মুক্ত করবে, তার (আযাদকৃত দাসের) প্রতিটি অঙ্গের বিনিময়ে আল্লাহ তার (মুক্তিদানকারী ব্যক্তির) প্রতিটি অঙ্গকে জাহান্নামের আগুন থেকে রক্ষা করবেন। সাঈদ ইবনে মারজানা বলেছেন, আমি আলী ইবনে হুসাইন-এর নিকটে গিয়ে হাদীসটি বর্ণনা করলে আলী ইবনে হুসাইন তাঁর এমন একটি ক্রীতদাসকে মুক্ত করে দেয়ার সংকল্প করলেন, যাকে খরিদ করার জন্য আবদুল্লাহ ইবনে জাফর দশ হাজার দিরহাম অথবা এক হাজার দীনার দিতে প্রস্তুত ছিলেন। এরপর তিনি তাকে (দাসত্ব শৃঙ্খল থেকে) মুক্ত করে দিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৫১৭)

সূরাঃ শামস, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৫ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুকর করছি)

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٥ رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ সূর্যের ও তার রৌদ্রের,
২. শপথ চন্দ্রের, যখন তা সূর্যের পেছনে পেছনে আসে।
৩. শপথ দিবসের, যখন তা' (সূর্যকে) প্রকাশ করে,
৪. শপথ রজনীর, যখন তা' সূর্যকে ঢেকে দেয়,
৫. শপথ আকাশের এবং তাঁর যিনি তা' নির্মাণ করেছেন,
৬. শপথ পৃথিবীর এবং তাঁর যিনি তা' বিস্তৃত করেছেন,
৭. শপথ (মানুষের) নফসের এবং তাঁর, যিনি তাকে সুঠাম করেছেন,
৮. অতঃপর তাকে তার অসৎকর্ম ও তার সৎকর্মের জ্ঞান দান করেছেন,
৯. অবশ্যই সে সফলকাম হবে, যে নিজেকে পরিশুদ্ধ করবে।
১০. এবং নিশ্চয়ই সে ব্যর্থ হবে, যে নিজেকে কলুষিত করবে।
১১. সামুদ সম্প্রদায় সীমালঙ্ঘন করতঃ মিথ্যাপ্রতিপন্ন করলো।
১২. সুতরাং তাদের মধ্যে যে সর্বাধিক হতভাগ্য, সে যখন তৎপর (ক্ষিপ্ত) হয়ে উঠলো,
১৩. তখন আল্লাহর রাসূল (সালেহ عليه السلام) তাদেরকে বললোঃ আল্লাহর

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ①

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ②

وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا ③

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ④

وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ⑤

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ⑥

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ⑦

فَاللَّهِمَّهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ⑧

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ رَزَقَهَا ⑨

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ⑩

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ⑪

إِذِ انبَعَثَ أَشْقَاهَا ⑫

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ⑬

উল্লী ও তাকে পানি পান করাবার বিষয়ে সাবধান হও (বাধা দিও না)।

১৪. কিন্তু তারা তাকে মিথ্যাবাদী বললো, অতপর ঐ উল্লীকে কেটে ফেললো। অবশেষে তাদের পাপের কারণে তাদের প্রতিপালক তাদেরকে সমূলে ধ্বংস করে একাকার করে দিলেন।

১৫. আর তিনি ওর পরিণামকে ভয় করলেন না।

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهُمَا ۖ فَمُدَّمْ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمُ
بِذُنُوبِهِمْ فَنَسَوُهَا ۗ ﴿١٤﴾

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۗ ﴿١٥﴾

সূরাঃ লাইল, মাক্কী

(আয়াতঃ ২১ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٢١ رُكُوعًا ۙ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ রজনীর, যখন তা' আচ্ছন্ন হয়ে যায়,

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى ۙ ﴿١﴾

২. শপথ দিনের, যখন তা' আলোকিত হয়,

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ۙ ﴿٢﴾

৩. এবং শপথ তাঁর যিনি নর ও নারী সৃষ্টি করেছেন—

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۙ ﴿٣﴾

৪. অবশ্যই তোমাদের প্রচেষ্টা বিভিন্ন মুখী।

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۙ ﴿٤﴾

৫. অনন্তর যে দান করে ও মুত্তাকী হয়,

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۙ ﴿٥﴾

৬. যা উত্তম তাকে সত্য মনে করল,

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۙ ﴿٦﴾

৭. অচিরেই আমি তার জন্যে সুগম করে দেবো সহজ পথ।

فَسَنِّيِّرُهُ لِّلْيُسْرَىٰ ۙ ﴿٧﴾

৮. পক্ষান্তরে কেউ কার্পণ্য করল ও বেপরওয়া হল।

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۙ ﴿٨﴾

৯. আর উত্তম জিনিসকে মিথ্যা মনে করলো,

وَكَذَّبَ بِالْحَسَنَىٰ ۙ

১০. অচিরেই তার জন্যে আমি সুগম করে দেবো কঠোর পরিণামের পথ।

فَسَنِيَّسِرُهُ لِّلْعُسْرَىٰ ۙ

১১. এবং তার সম্পদ তার কোন কাজে আসবে না, যখন সে পতিত হবে (জাহান্নামে)।

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ۙ

১২. আমার দায়িত্ব শুধু পথ নির্দেশ করা,

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۙ

১৩. আর নিশ্চয়ই আমি পরকাল ও ইহকালের মালিক।

وَإِنَّا لَنَّا لِلْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۙ

১৪. আমি তোমাদেরকে সতর্ক করে দিয়েছি;

فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۙ

১৫. নিতান্ত হতভাগ্য ব্যতীত কেউ তাতে প্রবেশ করবে না,

لَا يَصِلُهَا إِلَّا الْاَشَقَىٰ ۙ

১৬. যে মিথ্যারোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়;

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۙ

১৭. আর তা হতে অতি সত্বর মুক্ত রাখা হবে বড় মুত্তাকীদেরকে,

وَسَيَجْزِيهَا الْاِتَّقَىٰ ۙ

১৮. যে স্বীয় সম্পদ দান করে আত্মশুদ্ধির জন্য,

الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۙ

১৯. এবং তার প্রতিকারও অনুগ্রহের প্রতিদান হিসেবে নয়,

وَمَا لِاحِدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۙ

২০. বরং শুধু তার মহান প্রতিপালকের মুখমন্ডল (সন্তোষ) লাভের প্রত্যাশায়;

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلَىٰ ۙ

২১. সে তো অচিরেই সন্তোষ লাভ করবে।

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۙ

সূরাঃ দুহা, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الضَّحِيِّ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١١ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ পূর্বাহের,

وَالضَّحِيِّ ①

২. শপথ রজনীর যখন তা' আচ্ছন্ন
করে ফেলে;

وَالَيْلِ إِذَا سَجَى ②

৩. তোমার প্রতিপালক তোমাকে
পরিত্যাগ করেননি এবং তোমার প্রতি
অসন্তুষ্টও হননি।

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى ③

৪. আর অবশ্যই তোমার জন্যে
আখেরাত দুনিয়া অপেক্ষা উত্তম।

وَلِلْآخِرَةِ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَى ④

৫. অচিরেই তোমার প্রতিপালক
তোমাকে এরূপ দান করবেন যাতে
তুমি সন্তুষ্ট হবে।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى ⑤

৬. তিনি কি তোমাকে ইয়াতীম
অবস্থায় পাননি? অতঃপর তিনি
তোমাকে আশ্রয় দান করেন।

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَى ⑥

৭. তিনি তোমাকে পথ সম্পর্কে
অনবহিত পেয়েছেন, তারপর তিনি
দেখিয়েছেন পথ।

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَى ⑦

৮. তিনি তোমাকে নিঃশব্দ অবস্থায়
পান তারপর তোমাকে ধনবান
করেন।

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَى ⑧

৯. অতএব, তুমি ইয়াতীমের প্রতি
কঠোর হয়ো না,

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑨

১০. আর ভিক্ষুককে ধমক দিও না।

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ⑩

১১. তুমি তোমার প্রতিপালকের
অনুগ্রহের কথা ব্যক্ত করতে থাকো।

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ⑪

সূরাঃ আলাম নাশরাহ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْمُنَشَّرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٨ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. আমি কি তোমার বক্ষদেশ
তোমার জন্য উন্মুক্ত করে দেইনি?

أَلَمْ نُنشِرْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١

২. আমি তোমার ওপর হতে ভারী
বোঝা অপসারণ করেছি,

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝٢

৩. যা তোমার পৃষ্ঠকে ভেঙ্গে
দিচ্ছিল;

الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣

৪. এবং আমি তোমার জন্য তোমার
চর্চা (খ্যাতি)-কে সুউচ্চ করেছি।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤

৫. নিশ্চয়ই কষ্টের সাথেই স্বস্তি
আছে।

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥

৬. অবশ্যই কষ্টের সাথে স্বস্তি আছে।

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦

৭. অতএব যখনই অবসর পাও
সাধনা করো,

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝٧

৮. এবং তোমার প্রতিপালকের প্রতি
মনযোগ দাও।

وَالِإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

সূরাঃ তীন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٨ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ 'তীন' ও 'যায়তূনে'র,

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝١

২. শপথ 'সিনাই' পর্বতের

وَطُورِ سَيْنِينَ ۝٢

৩. এবং শপথ এই নিরাপদ বা
শান্তিময় (মক্কা) নগরীর,

وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝٣

৪. আমি অবশ্যই সৃষ্টি করেছি
মানুষকে সুন্দরতম গঠনে,

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝

৫. অতঃপর আমি তাকে প্রত্যাখ্যান
করেছি নীচতমদের নীচে।

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝

৬. কিন্তু তাদেরকে নয় যারা মুমিন ও
সৎকর্মপরায়ণ; তাদের জন্যে আছে
অবিচ্ছিন্ন পুরস্কার।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَ لَهُمْ أَجْرٌ
غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

৭. সুতরাং এরপর কিসে তোমাকে
(হে মানুষ) কর্মফল সম্বন্ধে
মিথ্যাপ্রতিপন্নকারী?

فَمَا يَكِيدُكَ بَعْدُ بِالذِّينِ ۝

৮. আল্লাহ কি বিচারকদের মধ্যে
শ্রেষ্ঠ বিচারক নন?

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَاكِمِينَ ۝

সূরাঃ আ'লাক, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৯ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٩ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তুমি পড়ো কর তোমার
প্রতিপালকের নামে, যিনি সৃষ্টি
করেছেন।

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝

২. সৃষ্টি করেছেন মানুষকে রক্তপিণ্ড
হতে।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝

৩. পড়ো এবং তোমার প্রতিপালক
মহামহিমাম্বিত,

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝

৪. যিনি কলমের সাহায্যে শিক্ষা
দিয়েছেন—

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝

৫. তিনি শিক্ষা দিয়েছেন মানুষকে
(এমন জ্ঞান) যা সে জানতো না।

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمُ ۝

৬. কখনও নয়, মানুষ তো
সীমালঙ্ঘন করেই থাকে,

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِكَيْفَى ۝

৭. কারণ সে নিজেকে অভাবমুক্ত মনে করে।

أَنَّ رَأَاهُ اسْتَعْفَى ٤

৮. তোমার প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তন সুনিশ্চিত।

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَى ٥

৯. তুমি কি তাকে (আবু জাহলকে) দেখেছো, যে বাধা দেয়,

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُنْهَى ٦

১০. এক বান্দাকে (রাসূলুল্লাহ্ ﷺ) যখন সে নামায আদায় করে?

عَبْدًا إِذَا صَلَّى ٧

১১. তুমি লক্ষ্য করেছো কি, যদি সে সৎপথে থাকে।

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ ٨

১২. অথবা তাকওয়ার নির্দেশ দেয়,

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ٩

১৩. তুমি লক্ষ্য করেছো কি যদি সে মিথ্যারোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়,

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ١٠

১৪. সে কি অবগত নয় যে, আল্লাহ দেখছেন?

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ١١

১৫. সাবধান! সে যদি বিরত না হয় তবে আমি তাকে অবশ্যই হেঁচড়িয়ে নিয়ে যাবো, মস্তকের সম্মুখ ভাগের কেশগুচ্ছ ধরে।

كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ١٢

১৬. মিথ্যাবাদী, পাপিষ্ঠ সম্মুখের কেশগুচ্ছ ওয়ালা।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ١٣

১৭. অতএব সে তার পরিষদবর্গকে আহ্বান করুক।

فَلْيَنْعِ نَادِيَهُ ١٤

১৮. আমিও অচিরে আহ্বান করবো আযাবের ফেরেশতাদেরকে,

سَنَنْعِ الزَّكَايَةَ ١٥

১৯. সাবধান! তুমি তার অনুসরণ করো না, সিজদা কর ও (আল্লাহর) নৈকট্য অর্জন কর।

كَلَّا لَا تَطْعَهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ١٦

সূরাঃ কাদর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. নিশ্চয়ই আমি এটা (আল-কুরআন) অবতীর্ণ করেছি মহিমান্বিত রজনীতে;

২. আর মহিমান্বিত রজনী সম্বন্ধে ভূমি কী জান?

৩. মহিমান্বিত রজনী হাজার মাস অপেক্ষা উত্তম।

৪. ঐ রাত্রিতে ফেরেশতাগণ ও রূহ (জিবরাঈল) অবতীর্ণ হন প্রত্যেক কাজের জন্য তাদের প্রতিপালকের অনুমতিক্রমে।

৫. শান্তিময়, এই রাত ফজরের উদয় পর্যন্ত।

সূরাঃ বাইয়্যিনাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ৮ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কুফরী করেছিল এবং মুশরিকরাও আপন মত হতে পৃথক হবে এমন ছিল না, যতক্ষণ তাদের নিকট সুস্পষ্ট প্রমাণ না আসবে (তা হলো)।

২. আল্লাহর নিকট হতে এক রাসূল যিনি, পাঠ করেন পবিত্র সহীফা।

سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّاهَا ٥ رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ①

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ①

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ①

تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ①

سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطَلَعِ الْفَجْرِ ⑤

سُورَةُ الْبَيِّنَاتِ مَدَنِيَّةٌ

أَيَّاهَا ٨ رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ

مُنْفَكِينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ①

رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً ①

৩. যাতে সঠিক বিধি-বিধান রয়েছে।

৪. যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তারা বিভক্ত হলো তাদের নিকট সুস্পষ্ট প্রমাণ আসার পরও।

৫. তারা তো আদিষ্ট হয়েছিল আল্লাহর আনুগত্যে বিশুদ্ধ চিত্ত হয়ে একনিষ্ঠভাবে তাঁর ইবাদত করতে এবং নামায কয়েম করতে ও যাকাত প্রদান করতে, এটাই সুপ্রতিষ্ঠিত সঠিক দ্বীন।

৬. আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কুফরী করেছে এবং মুশরিকরা জাহান্নামের আগুনের মধ্যে স্থায়ীভাবে অবস্থান করবে; তারাই সৃষ্টির সর্ব নিকৃষ্ট।

৭. যারা ঈমান আনে ও সৎআমল করে, তারাই সৃষ্টির সর্বোৎকৃষ্ট।

৮. তাদের প্রতিপালকের নিকট আছে তাদের পুরস্কার স্থায়ী জান্নাত, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে; আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন এবং তারাও তাঁর উপর সন্তুষ্ট; এটা তার জন্য যে তার প্রতিপালককে ভয় করে।

সূরাঃ যিলযাল, মাদানী

(আয়াতঃ ৮ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. পৃথিবীকে যখন প্রবলভাবে প্রকম্পিত করা হবে,

فِيهَا كُتِبَ قِتْمَةٌ ۝

وَمَا تَفَرَّقَى الَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ

مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ

حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ

دِينُ الْقَبِيَّةِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ

فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ أُولَئِكَ هُمْ

شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمْ

خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝

جَزَاءُ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جُثَّتْ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۗ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ

وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذَلِكَ لِمَنْ حَسِيَ رَبَّهُ ۗ ۝

سُورَةُ الزُّوَالِ مَدَنِيَّةٌ

آيَاتُهَا ٨ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝

২. এবং পৃথিবী যখন তার অভ্যন্তরের
ভারসমূহ বের করে দিবে,

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝

৩. এবং মানুষ বলবেঃ এর কি হলো?

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۝

৪. সেদিন পৃথিবী তার সবতত্ত্ব বর্ণনা
করে দিবে,

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝

৫. কারণ তোমার প্রতিপালক তাকে
আদেশ করবেন,

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝

৬. সেদিন মানুষ ভিন্ন ভিন্ন দলে বের
হবে, তাদের কৃতকর্ম দেখানোর
জন্য।

يَوْمَئِذٍ يَصُدُّرُ النَّاسُ أَسْتَاتًا ۚ لِيُرَوَّاْ أَعْمَالَهُمْ ۝

৭. কেউ অণু পরিমাণ সৎকর্ম করলে
তাও দেখবে।

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝

৮. এবং কেউ অণু পরিমাণ অসৎকর্ম
করলে তাও দেখবে।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

সূরাঃ আদিয়াত, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْعَدِيَّتِ مَكِّيَّةٌ

يَأْتِيهَا ۙ اِلَّا رُكْعًا ۙ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

১. শপথ উর্ধ্বশ্বাসে ধাবমান
ঘোড়াসমূহের,

وَالْعَدِيَّتِ صُبْحًا ۝

২. যারা ক্ষুরাঘাতে অগ্নিস্ফুলিঙ্গ
ঝরায়,

فَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا ۝

৩. যারা আক্রমণ চালায় প্রভাত-
কালে,

فَالْمُعْرِیَّتِ صُبْحًا ۝

৪. এবং ঐ সময়ে ধূলা উড়ায়;

فَأُتْرِنَ بِهِ نَقْعًا ۝

৫. অতঃপর (শত্রু) দলের অভ্যন্তরে
চুকে পড়ে—

فَوْسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝

৬. মানুষ অবশ্যই তার প্রতিপালকের
বড়ই অকৃতজ্ঞ,

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝

৭. এবং নিশ্চয়ই সে নিজেই এ বিষয়ে সাক্ষী;

وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝

৮. এবং অবশ্যই সে ধন-সম্পদের আসক্তিতে অত্যন্ত কঠিন।

وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝

৯. তবে কি সে ঐ সম্পর্কে অবহিত নয় যখন কবরে যা আছে তা বের করা হবে?

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعِثَ رَمًا فِي الْقُبُورِ ۝

১০. এবং অন্তরে যা আছে তা প্রকাশ করা হবে?

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝

১১. অবশ্য সেদিন তাদের কি ঘটবে, তাদের প্রতিপালক অবশ্যই তা সবিশেষ অবহিত।

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ۝

সূরাঃ কারি'আহ্, মাক্কী

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ১১ রুকূ'ঃ ১)

آيَاتُهَا ۱۱ رُكُوعُهَا ۱

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(গুরু করছি)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. (হৃদয়ে) প্রচন্ড আঘাতকারী
(মহাপ্রলয়),

الْقَارِعَةُ ۝

২. (হৃদয়ে) প্রচন্ড আঘাতকারী
(মহাপ্রলয়) কি?

مَا الْقَارِعَةُ ۝

৩. (হৃদয়ে) প্রচন্ড আঘাতকারী
(মহাপ্রলয়) সম্বন্ধে তুমি কি জান?

وَمَا آدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝

৪. সেদিন মানুষ হবে বিক্ষিপ্ত
পতঙ্গের মতো,

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝

৫. এবং পর্বতসমূহ হবে ধূনিত রঙীন
পশমের মতো।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝

৬. তখন যার পাল্লা ভারী হবে,

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝

৭. সে সন্তোষজনক জীবন লাভ
করবে।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝

৮. কিন্তু যার পাল্লা হালকা হবে,
 ৯. তার স্থান হবে হাবিয়াহ্।
 ১০. হাবিয়াহ্ কি তুমি জান?
 ১১. (এটা) অতি উত্তম অগ্নি।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝
 فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝
 وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ۝
 نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

সূরাঃ তাকাসূর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الشَّكَاوِرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٨ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. পরস্পর ধন-সম্পদের অহংকার
তোমাদেরকে মোহাচ্ছন্ন রাখে।
 ২. যতক্ষণ না তোমরা কবরসমূহে
উপস্থিত হচ্ছ।
 ৩. এটা কখনও ঠিক নয়, শীঘ্রই
তোমরা জানতে পারবে;
 ৪. অতঃপর, এটা কখনও ঠিক নয়,
শীঘ্রই তোমরা এটা জানতে পারবে।
 ৫. সাবধান! যদি তোমরা নিশ্চিত
জ্ঞান দ্বারা অবহিত হতে (তবে এমন
কাজ করতে না)।
 ৬. তোমরা অবশ্যই জাহান্নাম
দেখবে।
 ৭. এটা কখনো নয়, তোমরা ওটা
চাক্ষুশ প্রত্যয়ে দেখবেই,
 ৮. এরপর অবশ্যই সেদিন
তোমাদেরকে সুখ ও সম্পদ সম্বন্ধে
জিজ্ঞাস করা হবে।

الْهَكْمُ الشَّكَاوِرِ ۝

حَقٌّ زَرْتُمْ الْمَقَابِرَ ۝

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝

ثُمَّ لَتَسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ النَّعِيمَ ۝

সূরাঃ আসর, মাকী

(আয়াতঃ ৩ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. কালের শপথ,

وَالْعَصْرِ ۝

২. মানুষ অবশ্যই ক্ষতির মধ্যে
রয়েছে।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكْفُورٌ ۝

৩. কিন্তু তারা নয়, যারা ঈমান আনে
ও সৎআমল করে এবং পরস্পরকে
সত্যের উপদেশ দেয়, ধৈর্যধারণে
পরস্পরকে উদ্বুদ্ধ করে থাকে।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّاصَوْا

بِالْحَقِّ ۝ وَتَوَّاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

সূরাঃ হুমায়ূহ, মাকী

(আয়াতঃ ৯ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٩ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. ধ্বংস প্রত্যেক ঐ ব্যক্তির জন্য,
যারা পশ্চাতে ও সম্মুখে লোকের
নিন্দা করে;

وَيَلِّ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝

২. যে অর্থ জমায় ও তা গণনা করে
রাখে;

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝

৩. সে মনে করে যে, তার অর্থ তাকে
চিরস্থায়ী করে রাখবে;

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝

৪. কখনো নয়, সে অবশ্যই নিষ্কিণ্ড
হবে হতামায়;

كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝

৫. আর তুমি কি জানো হতামা কী?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝

৬. (এটা) আল্লাহর প্রজ্বলিত আগুন,

نَارُ اللَّهِ الْمَوْقَدَةِ ۝

৭. যা হৃদয় অভ্যন্তরে পৌছে যাবে।

الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْإِنْدَادَةِ ۝

৮. নিশ্চয়ই তা' (আগুন) তাদের
ওপর দিয়ে বন্ধ করে দেয়া হবে।

إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ ۝

৯. উঁচু উঁচু স্তম্ভসমূহে।

فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

সূরাঃ ফীল, মাকী

(আয়াতঃ ৫ রুকূঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٥ رُكُوعًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তুমি কি দেখনি যে, তোমার
প্রতিপালক হাতিওয়ালাদের সাথে কি
করেছেন?

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝

২. তিনি কি তাদের চক্রান্ত
(সম্পর্করূপে) ব্যর্থ করে দেন নি?

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝

৩. তাদের বিরুদ্ধে তিনি ঝাঁকে ঝাঁকে
পাখিসমূহ প্রেরণ করেছিলেন।

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝

৪. যারা তাদের ওপর পোড়া মাটির
কংকর নিক্ষেপ করেছিল।

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝

৫. অতঃপর তিনি তাদেরকে ভক্ষিত
ভূষির মতো করে দেন।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

সূরাঃ কুরাইশ, মাকী

(আয়াতঃ ৪ রুকূঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٤ رُكُوعًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. কুরাইশদের অনুরাগের কারণ।

لَا يَلْفُ قُرَيْشٍ ۝

২. তাদের অনুরাগ শীত ও গ্রীষ্ম
সফরের।

الْفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝

৩. অতএব তারা ইবাদত করুক এই গৃহের প্রতিপালকের,

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ۝

৪. যিনি তাদেরকে ক্ষুধায় খাদ্য দান করেছেন এবং ভয় হতে তাদেরকে নিরাপদ করেছেন।

الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ ۖ وَآمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ ۝

সূরাঃ মাউন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৭ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٤ رُكُوعًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. তুমি কি দেখেছ তাকে, যে পরকালকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে?

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالذِّكْرِ ۝

২. সে তো ঐ ব্যক্তি, যে ইয়াতীমকে ধাক্কা দিয়ে তাড়িয়ে দেয়।

فَذَلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۝

৩. এবং সে অভাবগ্রস্তকে খাদ্যদানে উৎসাহ প্রদান করে না।

وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝

৪. সুতরাং ধ্বংস সেই নামায আদায়কারীদের জন্যে,

قَوْلِيلٌ لِّلْمَصْلُومِينَ ۝

৫. যারা তাদের নামাযে অমনোযোগী।

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝

৬. যারা লোক দেখানোর জন্যে তা' করে,

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝

৭. এবং তারা প্রয়োজনীয় ছোটখাট জিনিস সাহায্য দানে বিরত থাকে।

وَيَسْتَعِينُونَ الْمَاعُونَ ۝

১। সাহাল বিন সা'দ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি এবং ইয়াতীমের তত্ত্বাবধানকারী জান্নাতে এরূপ (কাছাকাছি) থাকবো। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) শাহাদাত ও মধ্যম আঙ্গুল দ্বারা ইশারা করে (দু'জনের) দূরত্ব দেখালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬০০৫)

সূরাঃ কাওসার, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. আমি অবশ্যই তোমাকে (হাউজে)
কাওসার প্রদান করেছি ।^১

২. সুতরাং তোমার প্রতিপালকের
উদ্দেশ্যে নামায আদায় কর এবং
কুরবানী কর ।

৩. নিশ্চয় তোমার প্রতি বিদ্বেশ
পোষণকারীই তো শিকড়কাটা
(নির্মূল) ।^২

سُورَةُ الْكُوْثَرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣ رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

إِنَّا أَعْطَيْنَكَ الْكُوْثَرَ ۝١

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَأَنْحَرْ ۝٢

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝٣

সূরাঃ কা'ফিরান, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. বলঃ হে কাফিরগণ!

২. আমি তার ইবাদত করি না যার
ইবাদত তোমরা কর,

৩. এবং তোমরাও তাঁর ইবাদতকারী
নও যাঁর ইবাদত আমি করি,

سُورَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٦ رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢

وَلَا أَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَا أَعْبُدُ ۝٣

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ মিরাজ হলে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে আসমানে উঠিয়ে নেয়া হয়। রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমি এমন একটি নদীর ধারে পৌছলাম। যার উভয় তীরে ফাঁপা মোতির তৈরি পাতা আছে। আমি বললাম, হে জিবরাঈল এটি কি? উত্তরে জিবরাঈল বললেন, এটিই হলো হাউজে কাওসার। (বুখারী, হাদীস নং ৪৯৬৪)

২। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহু (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের মধ্যে কেউ ততক্ষণ পর্যন্ত মো'মিন হতে পারবে না, যতক্ষণ পর্যন্ত আমি তার নিকট, তার পিতা, তার সন্তান এবং সমস্ত মানুষের চেয়েও প্রিয়তর না হবো। (বুখারী, হাদীস নং ১৫)

৪. এবং আমি ইবাদতকারী নই তার,
যার ইবাদত তোমরা করে আসছো।

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۝

৫. এবং তোমরা তাঁর ইবাদতকারী
নও যাঁর ইবাদত আমি করি।

وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَّا عَبَدُ ۝

৬. তোমাদের দ্বীন (কুফর)
তোমাদের জন্য এবং আমার দ্বীন
(ইসলাম) আমার জন্য।

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝

সূরাঃ নাসূর, মাদানী

(আয়াতঃ ৩ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. যখন আসবে আল্লাহর সাহায্য ও
বিজয়।

২. এবং তুমি মানুষকে দলে দলে
আল্লাহর দ্বীনে প্রবেশ করতে
দেখবে।

৩. তখন তুমি তোমার প্রতিপালকের
সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা
করো এবং তাঁর সমীপে ক্ষমা প্রার্থনা
করো তিনি তো বড়ই তাওবা
গ্রহণকারী।

سُورَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ

يَأْتِيهَا ٣ رُكُوعًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝

وَرَأَيْتِ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَأَسْتَغْفِرْ لَهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

সূরাঃ লাহাব্, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

১. ধ্বংস হোক আবু লাহাবের হস্তদ্বয়
এবং ধ্বংস হোক সে নিজেও।

سُورَةُ الْهَيْبِ مَكِّيَّةٌ

يَأْتِيهَا ٥ رُكُوعًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝

১। আবদুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ “তোমরা নিকটাত্মীয় এবং তাদের মধ্যেও বিশেষ করে নিজের গোত্রকে সাবধান করে দাও।” আয়াতটি

২. তার ধন-সম্পদ ও তার উপার্জন
তার কোন উপকারে আসেনি।

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۖ

৩. অচিরেই সে লেলিহান শিখাময়
জাহান্নামের আগুনে প্রবেশ করবে,

سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۖ

৪. এবং তার স্ত্রীও যে ইক্ষন বহন
করে,

وَأَمْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۗ

৫. তার গলদেশে শক্ত পাকানো রশি
(খেজুরের আঁশ দিয়ে বানানো)
রয়েছে।

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝

সূরাঃ ইখলাস, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ

اَيَّانَهَا ۴ رُكُوعًا ۱

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

১. বলঃ তিনিই আল্লাহ্ একক (ও
অদ্বিতীয়),

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ۝

২. আল্লাহ্ কারো মুখাপেক্ষী নন,
(সবাই তাঁর মুখাপেক্ষী);

اللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

নাযিল হলে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বের হয়ে সাফা পাহাড়ে গিয়ে উঠলেন এবং 'ইয়া সাবাহাহ' (সকাল বেলায় বিপদ, সাবধান) বলে চিৎকার করে ডাকলেন। সবাই সচকিত হয়ে বলে উঠলো, এভাবে কে ডাকছে? তারপর সবাই তার পাশে গিয়ে সমবেত হলো তিনি বললেনঃ আচ্ছা, আমি যদি এখন তোমাদেরকে বলি যে, এ পাহাড়ের অপর দিক থেকে একটি অশ্বারোহী সৈন্যবাহিনী আক্রমণের জন্য প্রস্তুত হয়ে আছে, তাহলে কি তোমরা আমাকে বিশ্বাস করবে? সমবেত সবাই বললো, আপনার ব্যাপারে আমাদের মিথ্যার অভিজ্ঞতা নাই। তখন তিনি বললেনঃ আমি তোমাদেরকে একটি কঠিন আযাব সম্পর্কে সাবধান করে দিচ্ছি। একথা শুনে আবু লাহাব বললো, তোমার অকল্যাণ হোক। তুমি কি এ জন্যই আমাদেরকে সমবেত করেছো? এরপর সে সেখান থেকে চলে গেল। তখন নাযিল হলো- "তাবাত ইয়াদা আবী লাহাব" "আবু লাহাবের হস্তদ্বয় ধ্বংস হোক।" (বুখারী, হাদীস নং ৪৯৭১)

৩. তিনি কাউকে জন্ম দেননি এবং
তাকেও জন্ম দেয়া হয়নি,১

لَمْ يَلِدْ لَهُ وَلَمْ يُولَدْ ۝

৪. এবং কেহই তাঁর সমকক্ষ নয়।

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

সূরাঃ ফালাক, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۵ رُكُوعًا ۱

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি উম্মার
স্রষ্টার,

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝

২. তিনি যা সৃষ্টি করেছেন তার অনিষ্ট
হতে,

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝

৩. অনিষ্ট হতে অন্ধকার রাত্রির যখন
তা আচ্ছন্ন হয়;

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝

৪. এবং গিরায় ফুকদান কারিগীর।

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝

৫. এবং হিংস্কের অনিষ্ট হতেও
যখন সে হিংসা করে।

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

১। মু'আয ইবনে জাবাল (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [তাকে] বললেন হে মু'আয, তুমি কি জানো বান্দার কাছে আল্লাহর কি হক আছে? মু'আয বললেন, আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, (বান্দার কাছে আল্লাহর হক হলো) সে তার ইবাদত বা দাসত্ব করবে এবং তার সাথে অন্য কিছুকে অংশীদার বানাবে না। তিনি [নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)] আবার বললেন, তুমি কি জানো আল্লাহর কাছে বান্দার হক কি? মু'আয ইবনে জাবাল বললেন, বিষয়টি আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহর কাছে বান্দার হক হলো আল্লাহ কর্তৃক বান্দাকে আযাব না দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৭৩, ৭৩৭৪, ৭৩৭৫)

সূরাঃ নাস, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُورَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٦ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি মানুষের
প্রতিপালকের,১

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١

২. যিনি মানবমন্ডলীর বাদশাহ।

مَلِكِ النَّاسِ ۝٢

৩. যিনি মানবমন্ডলীর প্রকৃত মা'বুদ।

إِلَهُ النَّاسِ ۝٣

৪. আত্মগোপনকারী কুমন্ত্রণাদাতার
অনিষ্ট হতে,২

مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝٤

৫. যে লোকদের অন্তরে কুমন্ত্রনার
উদ্বেক করে।

الَّذِي يُوسِّسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝٥

৬. জ্বিনের মধ্য হতে অথবা মানুষের
মধ্য হতে।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যখন বিছানায় আসতেন, তখন আপন দু'হাতের তালুতে 'কুলহআল্লাহু আহাদ' এবং সূরা নাস ও সূরা ফালাক পড়ে দম করতেন। তারপর উভয় কজির তালু মুখের ওপর মুছে নিতেন আর দেহের যতটুকু হাত দু'খান পৌছতো ততটুকুতে হাত বুলিয়ে দিতেন। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) বলেছেন, যখন রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অসুস্থ হতেন, তখন আমাকে অনুরূপভাবে করতে হুকুম দিতেন। ইউনুস বলেছেন, ইবনে শিহাব যখন তাঁর বিছানায় যেতেন, তখন তাঁকে অনুরূপ করতে আমি দেখতাম। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭৪৮)

২। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, জাহান্নামকে কামনা-বাসনা দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। আর জান্নাতকে বিপদ-মুসীবত দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮৭)

This Online Version of Qu'ran is Published By

www.QuranerAlo.com

Scanned By

SHADMAN SAQUIB

and

NURUL HASSAN RAKIB

May Allaah accept us, our Vows and Allegiance and Da'wah efforts and help us to fulfill all our dreams and mission!

Ameen.